لا إله إلا الله محمد رسول الله

जिल्द-3

हदीस नं. 4628-6294

مشكاة المصابيح

मिश्कातुल मसाबिह

वलियुद्दीन अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद इब्ने

अब्दुल्लाह अल ख़तीब तबरेज़ी (वफ़ात 740 ही.)

तहकिम व तखरिज

हाफिज जुबैर अली ज़ई(वफ़ात 10 Nov. 2013)

उर्दू तर्जुमा

अबू अनस मुहम्मद सरवर गौहर

हिंदी तर्जुमा(Transliteration)

मुहम्मद शोएब इब्ने डॉ. अब्दुल करीम

नज़र ए शानी

अलाउद्दीन अन्सारी फलाही

*अगर आप pdf मैं ये देख रहे है तो पेज नंबर पे क्लिक(CLICK) करने पर वो पेज खुल जाएगा इंशाअल्लाह

किताबुल आदाब

किताबुल अर्रीकाक

किताबुल फितन

किताबुल अहवाल ए कियामत व बदइल खल्क

किताबुल फ़ज़ाइल ए शमाइल

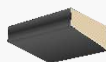
किताबुल मनाकिब

*अगर आप pdf मैं ये देख रहे है तो पेज नंबर पे क्लिक(CLICK) करने पर वो पेज खुल जाएगा इंशाअल्लाह

मुकद्दमा हिंदी तर्जुमा

الحمد لله رب العالمين و الصلوة والسلم على رسول الأمين أما بعض

तमाम तारीफे अल्लाह ही के लिए है, हम इसी की तारीफ़ करते हैं, इसी से मदद तलब करते हैं, इसी से मगफिरत चाहते हैं, और हम अपने नफ्स की शरारतों और अपने आमाल की बुराइयों से अल्लाह तआला की पनाह चाहते हैं, जिस शख्स को अल्लाह तआला हिदायत अता फरमादे इसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिस को दो गुमराह कर दे इसे कोई हिदायत नहीं दे सकता, और में गवाही देता हूँ के अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, एसी गवाही जो निजात के लिए वसीला और बुलंद दरजात के लिए ज़ामिन हो, और में गवाही देता हूँ के मुहम्मद ﷺ इस के बंदे और इस के रसूल है, अल्लाह तआला फैसल भाई पर रहम करे जिन्होंने मुझे मिशाकतुल मसाबिह के हिंदी तर्जुमे के इस मुक़द्दस काम पे चलाया, इस के आगे के पढ़ने वाले आगे पढ़े मैं कुछ पढ़ने वालों के लिए कुछ बाते कहना चाहता हूँ,

1. अल्हम्दुलिल्लाह, मिश्कातुल मसाबिह का तर्जुमा आज 7 नवम्बर 2022 के रोज़ तक मुकम्मल हो चूका है|
2. आज 29 जनवरी 2023 को पिछले संस्करण का सुधरा हुआ संस्करण अपलोड किया जा रहा है
3. वैसे ये तर्जुमा तो देवनागरी लिपि मैं है लेकिन इन को जहाँ तक हो सके आसान उर्दू और हिंदी के मिले जुले अलफ़ाज़ से किया गया है, और तर्जुमा करते वक़्त पूरी कोशीश की गई है के वो अलफ़ाज़ का इस्तेमाल किया जाए जो आम बोलचाल में इस्तेमाल हो रहे हों|
4. फिर भी इंसान होने के नाते मुझ से जो गलती हुई है उस के लिए मैं अल्लाह की पनाह चाहता हूँ और अल्लाह की मगफिरत चाहता हूँ, कोई इंसान गलती से पाक नहीं हो सकता गलती से पाक सिर्फ अल्लाह की ज़ात है| और आगे मेरी कोशिश होगी के में इस मजीद गलतियों में सुधार ला सकूं| और इस की जो भी गलती की निशानदेही की जाएगी उसे सुधार के pdf को http://archive.org पे अपलोड कर दिया जाएगा इन्शालाह उस की लिंक ये है 
5. इस किताब में जो अरबी मतन है उसकी तहकिम शैख़ अल्बानी ﷺ की है और जो हिंदी मतन मैं तहकिम है वो शैख़ ज़ुबैर अली ज़ई ﷺ की है|
6. इस तर्जुमे मैं जो तखरिज और तहकिम का हिंदी तर्जुमा का काम अभी बाकी है, और इंशाअल्लाह जैसे है वो मुकम्मल होगा वैसे ही उसका pdf book भी online कर दी जाएगी|

अल्लाह तआला से दुआ है के वो मेरी इस कोशिश को मेरे लिए और मेरे वालिद मरहूम डॉ. अब्दुलकरीम और मुहतरम फैसल भाई के लिए तोषे आखिरत बनाए और पढ़ने वालो के लिए इल्म व तहकीक की दलील और रोशन मीनार बनाए, ताकि सहीह अहादीस पर अमल हो और ज़ईफ़ रिवायत से बचा जाए आमीन|

मुहम्मद शोएब इब्ने अब्दुल करीम इब्ने दोस्त मुहम्मद

7 नवम्बर 2022

गुजारिश

मैं ने मिश्कातुल मसाबीह के इस हिन्दी तर्जुमे को पढा है और बहुत सारी जगहों पर तसहीह भी की है । खास तौर पर उसके बाब और फसल के तर्जुमें को बेहतर से बेहतर बनाने की कोशिश की है । इस में कोइ बड़ी गलती नहीं है । इस को छापना और फैलाना बहुत अज़ीम काम है ।

इस किताब की तयारी में असल मेहनत मोहतरम मोहम्मद शुऐब साहब ने की है । उन के अलावह इरफान अली और दुसरे भाइयौं ने उन का साथ दिया है । हम सब की मेहनत के बावजुद इस में गलतीयौं का इमकान है । कारेइने किराम से दरखास्त है कि इसको हिदायत और सवाब की नियत से पढें और दूसरों तक पहुंचाएं । कोइ भी गलती मिलने पर हमें इत्तेला करें ताकि दूसरी बार छापने से पहले इसलाह कर सकें । अल्लाह से दुआ है कि इस किताब की तैयारी, छापने, पढने, अमल करने और फैलाने वाले सारे लोगों को जज़ाए खैर दे, दुनिया और आखिरत दोनों की कामयाबी अता फरमाए । आमीन ।

आप का दीनी भाइ

अलाउद्दीन अन्सारी फलाही

नेपाली जुबान में कुरआन का मुतर्जिम

हरीनगर- 7, सुन्सरी नेपाल

पी एच डी स्कालर, इस्लामिक स्टडीज (तफसीर)

एम ए, इस्लामिक स्टडीज (तफसीर)

सुल्तान शरीफ अली इस्लामिक युनिवरसीटी ब्रुनाइ दारुस्सलाम

बी ए आनर्स, इस्लामिक स्टडीज (अकीदा व कमपेरेटिभ रिलिजियन) इन्टरनेश्नल इस्लामिक युनिवर्सीटी इस्लामाबाद, पाकिस्तान

आलिमियत फजीलत, जामेअतुल फलाह बिलेरया गंज आजमगढ, यू पी इन्डिया

मुकद्दमा तखरिज व तहकिम मिश्कातुल मसाबिह

الحمد لله رب العالمين و الصلوة والسلم على رسول الأمين أما بعض

आठवीं सदी हीजरी में अल्लामा वलियुद्दीन अबू अब्दुल्लाह अल ख़तीब अल उमरी अल तबरेज़ी राहिमुल्लाह (वफात करीब 740 ही.) ने मशहूर सिका मुहद्दिस अब मुहम्मद हुसैन बिन मसूद बिन मुहम्मद अल फराअ अल बगवी राहिमुल्लाह (वफात 516 ही.) की किताब **मसाबिह अल सुन्नाह** को हदिसे इज़ाफो के साथ **मिश्कात उल मसाबिह** के नाम से मुरत्तब किया और इसे बर्रे सगीर पाक व हिन्द बलके आलमे इस्लाम में खूब पज़ेराई मिली, नेज़ बहुत से मदारिस में ये किताब दाखले निसाब भी है|

तबरेज़ी मज़कुर के बारे में उन के दोस्त अल्लामा शरफुद्दीन हुसैन बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अल तय्बी राहिमुल्लाह (वफात 743 ही.) ने फ़रमाया: “दिनी भाई यकीं में हिस्सेदार यानी काबिल इ एतमाद साथी. औलिया में बाकी रह जाने वाले...”(**अल काशिफ अन हकाइक अल सुनन** जास 18)

तय्बी मजकुर ने **“अल काशिफ अन हकाइक अल सुनन”** के नाम से मिश्कातुल मसाबिह की मशहूर और अज़ीम शरह लिखी जो बारह (12) जिल्दों में मअल फहारिस मतबूअ है|

इस लिखनेवाले ने अल्लाह तआला के फज़्ल व करम से मिश्कातुल मसाबिह पर “इज़ाअअल मसाबिह” के नाम से जो बड़े और अहम काम किए है वो निचे लिखे है:

1. तर्जुमा
2. तखरिज व तहकीक
3. सेहत व जईफ के लिहाज़ से हर रिवायत पर हुक्म
4. फिकहल हदीस के उनवान से मसाइल व फवाइद के इस्तंबात

इस की पहली जिल्द (हदीस अता 280) जो किताबुल इमान और किताबुल इल्म पर मुश्तमिल है, मुक्कम्मल हुई, और मेरे मुहतरम दोस्त मौलाना मुहम्मद सरूर आसिम हाफ़िज़ उल्लाह के अज़ीम क़ुतुब खाने (मक्तबा ए इस्लामिया फैसलाबाद लाहोर) से आला मीअयार पर मतबूअ है|

बाकी हिस्सा अभी ज़ैरे तकमील है और इस पर मक्दुर भर काम जारी है| जब दूसरी जिल्द मुकम्मल होगी तो इसे भी शै कर दिया जाए गा इंशाअल्लाह|

मिश्कात की मकबूलियत और अवाम की ज़रूरत के पेशे नज़र फिलहाल मक्तबा इ इस्लामिया की शाए करदा मिश्कात को ही तहकीक व तखरिज के साथ तीन जिल्दो में शाए किया जा रहा है|

मेरे नज़दीक सहीहैन(सहीह बुखारी और मुस्लिम) की तमाम मर्फ़ुअ मुसनद मुत्तसिल रिवायत बिलकुल सहीह है और इन में से बाज़ रिवायत हसन लिज़ाती भी है, यानी हुज्जत है, नेज़ सहीहैन में मज़कूरा शर्त के मुताबिक़एक भी जईफ रिवायत नहीं, लिहाज़ा सहीहैन की अहादीस की सिर्फ तखरिज पर इक्तेफा किया गया है और उन के अलावा तमाम रिवायात की तखरिज व तहकीक कर दी गई है और ज़ईफ़ रिवायात की वजह ज़ईफ़ भी बयान करदी है, ताके जो ज़िन्दा रहे दलील देख कर जिए और जो मरे तो दलील देख कर मरे|

इस किताब की तर्किम(अहादीस की नंबरिंग) दारुल कुतुब अल इल्मिया बैरुत,लेबनान के दो जिल्दो में मतबूअ नुस्खे और मक्तबा इ इस्लामिया की शाएशुदा मिश्कातूल मसाबिह के ऐन मुताबिक़ है|

एक अहम् तरीन बात ये है के हदीस नंबर से लेकर नंबर 5972 तक ये तमाम नंबर मशहूर मुहद्दिस शैख़ मुहम्मद नासिरुद्दीन अल्बानी राहिमुल्लाह की तहकीक व तालिक वाल्ली मिश्कातुल मसाबिह के भी मुकम्मल मुवाफिक है और 5973 से आखिर तक मामूली फर्क है|

तंबीह: साहबे मिश्कात कई मकामत पर हदीस को जिस किताब के हवाले से ज़िक्र करते है, मसलन कॉल: रवाह मुस्लिम या रवाह अल बुखारी तो बाज़ मकामात पर असल किताब को देखने के बाद मालुम होता है के ये अलफ़ाज़ मिन्नोअन (बिलकुल समान) वो किताब में नहीं है, बलके इन्हें बतौर मफ्हुमया बतौर ए मुख्तलिफ रिवायत बयान किया गया है| लिहाज़ाहदीस का हवाला असल ज़िक्र की गई किताब से मिला लेना चाहिए, या फिर मिश्कात के ज़रिए से हवाला लिखते वक्त मिश्कात का ही ज़िक्र किया जाए, यानी वल लफ्ज़ की सराहत कर दी जाए, ताकि किसी किस्म का भ्रम बाकी न रहे|

अल्लाह तआला से दुआ है के वो मेरी इस कोशिश को मेरे लिए और मुहतरम मुहम्मद सरवर आसिम हाफिज़ाउल्लाह के लिए तोषे आखिरत बनाए और पढ़ने वालो के लिए इल्म व तहकीक की दलील और रोशन मीनार बनाए, ताकि सहीह अहादीस पर अमल हो और ज़ईफ़ रिवायत से बचा जाए आमीन|

हाफ़िज़ ज़ुबैर अली ज़इ

26 जून 2011 इसवी

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

इमाम तबरेज़ी ﷺ का मुकद्दमा

तमाम तारीफे अल्लाह ही के लिए है, हम इसी की तारीफ़ करते हैं, इसी से मदद तलब करते हैं, इसी से मगफिरत चाहते हैं, और हम अपने नफ्स की शरारतों और अपने आमाल की बुराइयों से अल्लाह तआला की पनाह चाहते हैं, जिस शख्स को अल्लाह तआला हिदायत अता फरमादे इसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिस को दो गुमराह कर दे इसे कोई हिदायत नहीं दे सकता, और में गवाही देता हूँ के अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, एसी गवाही जो निजात के लिए वसीला और बुलंद दरजात के लिए ज़ामिन हो, और में गवाही देता हूँ के मुहम्मद ﷺ इस के बंदे और इस के रसूल है, जिस ने उन्हें इस हालात में मबउस फ़रमाया के ईमान की राहों के निशान मिट चुके थे, इस के अनवार बुझ चुके थे, इस के अरकान कमज़ोर हो चुके थे और इस की जगहें मझहुल हो चुकी थी, तो आप ﷺ ने इस के निशानात, जो के मिट चुके थे, को बुलंद और उजागर किया, और आप ने कलमा ए तौहीद की ताईद में ऐसे इलिय्यिल शख्स को जो के (जहन्नम के) किनारे पर पहुँच चूका था, बचाया और आप ने राहे हिदायत के तलबगार पर इस रोशन राह को वाज़ेह किया, और आप ने सआदत के खज़ानो को इन पर वाज़ेह किया जो इन के मिल्कीयत का इरादा रखते है|

अम्मा बाद! नबी ए अकरम ﷺ की सीरत के साथ तमसिक तब ही टिकाऊ और लंबे वक्त तक चल सकता है जब आप से जारी होने वाले अहकामात (हुक्म) की इत्तेबा की जाए, और अल्लाह तआला की रस्सी (कुरान ए करीम) के साथ तमसिक आप ﷺ की सुन्नत के बयान के साथ ही मुकम्मल हो सकता हैं, और "किताब अल मसाबिह" जिसे मुह्यी अल सुनना और कातेअ बिदात इमाम अबू मुहम्मद हुसैन बिन मसउद अल फराअ अल बगवी, अल्लाह तआला इन के दरजात बुलंद फरमाए, ने लिखी, इस मौज़ू पर एक निहायत जामेअ किताब थी, और मुतफ़र्रिक अहादीस को एक जगह इकट्ठा करने के हवाले से इन्तहाई मुरत्तब किताब थी और जब मुसन्निफ़ ﷺ ने इख्तेसार का उस्लूब इख्तियार करते हुए सनदों को ख़त्म कर दिया तो बाज़ नाकेदीन (आलोचक) ने इस पर कलाम किया अगर छे इस का विश्वास के साथ नक़ल करना (और सनदों को ख़त्म करना) इन के ज़िक्र करने की तरह ही है, लेकिन जो इसनादें बयान बलाग हैं वो इस्नाद ख़त्म करने में नहीं, पस मैंने इस्तिखारा के ज़रिए तौफीके इलाही तलब करते हुए जिस चीज़ की तरफ इन्होंने तवज्जो नहीं की इस की निशानदेही कर दी और हर हदीस को बिला तक्दिम व ताखीर मुनासिब जगह पर लिख दिया, जैसा की मुत्तकिन व सिका और रसिखे इल्म आइम्मा ने इसे रिवायत किया, जैसे अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माइल बुखारी, अबुल हुसैन मुस्लिम बिन हज्जाज कुशैरी, अबू अब्दुल्लाह मालिक बिन अनस अस्बई,अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इदरिस शाफीअ, अबू अब्दुल्लाह अहमद बिन मुहम्मद बिन हंबल शैबानी, अबू इसा मुहम्मद बिन इसा तिरमिज़ी, अबू दावुद सुलेमान बिन अशअष सिजिस्तानी, अबू अब्दुल रहमान अहमद बिन शुएब नसई, अबू अब्दुल्लाह

मुहम्मद बिन यज़ीद बिन माजा क़ज्विनी,अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह बिन अब्दुल रहमान दारमी, अबूल हसनअली बिन उमर दारकुतनी, अबू बक्र अहमद बिन ,हुसैन बय्हकी, अबुल हुसैन राजीन बिन मुआविया अब्दरी ﷺ और इन के अलावा भी कुछ इन्ही के मिस्ल है जिन्होंने रिवायत किया है जबके वो क़लील है| और जब मैंने हदीस को इन आइम्मा की तरफ मंसूब कर दिया तो गोया मैंने इस हदीस को नबी ﷺ तक पहुंचा दिया, क्यूंकि वो (आइम्मा) इस (इस्नाद) से गरीग हो चुके और उन्होंने हमें भी नियाज़ कर दिया, और मैंने कुतब (जैसे किताबुल इल्म वगैरा) और अबवाब को वैसे ही रखा जैसे उन्होंने (इमाम बगवी ﷺ) ने तरतीब दिया था, और इस बारे में मैंने इन की इत्तेबा की, मैंने हर बाब को गालब तौर पर तीन फसलों में तकसीम किया| पहली फस्ल उन अहादीस पर मुश्तमिल हैं जिन्हें इमाम बुखारी और मुस्लिम दौनों ने रिवायत किया है या उन में से एक ने, और आर इस हदीस के इन के सिवा किसी और ने भी रिवायत किया है तो मैंने रिवायत में इन दोनों के आला दर्जे पर फैज़ होने की वजह से इन दोनों की रिवायत पर इक्तेफा किया हैं|

दूसरी फस्ल उन अहादीस पर मुश्तमिल हैं जिन को इमाम बुखारी और इमाम मुस्लिम के अलावा पहले ज़िक्र किए गए आइम्मा में से किसी ने रिवायत किया है, और तीसरी फस्ल उन अहादीस पर मुश्तमिल है जो मानी बाब पर मुश्तमिल हो और मनासब मुल्हकात में से हो, लेकिन यहाँ भी (रावी और रिवायत नक़ल करने वाले इमाम के ज़िक्र की) शर्त का ख़याल रखा गया है, अगर वो सलफ (सहबा किराम) और खल्फ (ताबेइन) से मन्कुल व मरवी हो|

फिर अगर आप किसी बाब में कोई हदीस न पाए तो वो इस लिए है, की मैंने तकरार की वजह से इसे नक़ल नहीं किया, और अगर आप हदीस का कुछ हिस्सा मतरुक पाए तो वो इस का इक्तेसार या इस के साथ मिला हुआ इस का इत्माम इस की अहमियत की वजह से होगा, और अगर आप को दोनों फसलो में कोई इख्तिलाफ नज़र आए के पहली फस्ल में सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम के अलावा कोई हदीस है और फस्ल दुम में सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम की कोई हदीस है, तो आप जान ले के मैंने अल जामेअ बैन अल सहीहैन ली हुमैदी और जामेअ अल उसूल दानों किताबो की पूरी छानबीन के बाद मैंने शेखैन और इन दोनों के मतन पर ऐतमाद किया है|

और अगर आप हदीस के मतन में इख्तिलाफ देखें तो वो हदीस के मुख्तलिफ तरिक की वजह से हैं, मुमकिन है के मुझे इस रिवायत का पता न चला हो जिसे अल शैख़ इमाम बगवी ﷺ ने (मसाबिह में) नक़ल किया हो, और आप ये बहुत कम पाएंगे के में कहूँ: मैंने ये रिवायत कुतुबे असल में नहीं पाई, या मैंने इस से मुखतलिफ़ इस में पाई है, पस जब आप को ऐसी बात का पता चले तो आप मेरी समझ की कमी की वजह इस तासीर को मेरी तरफ मंसूब करे जनाब शैख़, अल्लाह तआला दारेनमें इन की कदर व मंज़िलात बढ़ाए, की तरफ नहीं, इस (तकसीर को जनाब अल शैख़ की तरफ मंसूब करने) से अल्लाह तआला की पनाह, जिस शख्स को, अल्लाह तआला इस पर रहम फरमाए, इस बारे में पता चले तो वो इस के मुतल्लिक हमें आगाह करे और दुरुस्त तारिक की तरफ हमारी रहनुमाई फरमाए, मैंने वुसअत व ताकत के मुताबिक़ (तर्क हदीस और इख्तिलाफ अलफ़ाज़ की) तहकीक व तफतीस में कोई कमी नहीं छोड़ी, और मैंने जिसे पाया वो इख्तिलाफ नक़ल कर दिया, और अल शैख़ ﷺ ने जहाँ हदीस के गरीब या जईफ होने की तरफ इशारा किया है, मैंने ग़ालिब तौर पर वहां इस की वजह बयान कर दी हैं, और

जहाँ उन्होंने जो के अलसौल (मसलन मुन्कते, मौकूफ, मुरसल) यही हैं, इशारा नहीं किया तो, किसी मसलिहत के पेशे नज़र चंद मकामत के सिवा, मैंने भी इन की इत्तेबा में उसे वैसे ही छोड़ दिया, और बसा अवकात आप कुछ ऐसे मकामात पाएंगे जो के मह्मुल और वो इस लिए है के मुझे इस के रावी का पता नहीं चला, तो मैंने वहाँ कुछ नहीं लिखा इसे वैसे छोड़ दिया, पास अगर आप को पता चले तो आप इसे वहां लिख दे, अल्लाह तआला आप को बेहतर बदला अता फरमाए| मैंने किताब का नाम **"मिश्कतुल मस्सबिह"** रखा है, मैंने अल्लाह तआला से तौफिक और मदद करें, हिदायत दें और हमारी हिफाज़त फरमाए(गलती और लग्ज़िशसे बचाओ) अपने मकसद की तेसर तलब करता हो, और दरख्वास्त करता हूँ, वो हयात और बाद अलममात मुझे और तमाम मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को फाइदा पहुंचाए| मेरे लिए अल्लाह ही काफी है और वो बतारिन कारज़ाश है|

وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ

١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّمَا الْأَعْمَال بِالنِّيَّاتِ وَإِنَّمَا لكل امْرِئ مَا نَوَى فَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ فَهِجْرَتُهُ إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ إِلَى دُنْيَا يُصِيبُهَا أَوِ امْرَأَةٍ يَتَزَوَّجُهَا فَهجرَته إِلَى مَا هَاجر إِلَيْهِ»

1. उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तमाम आमाल का दारोमदार नियतो पर है, हर शख़्स को वही कुछ मिलेगा जो उस ने नियत की, पस जिस शख़्स की हिजरत अल्लाह और उस के रसूल की खातिर हुई तो उसकी हिजरत अल्लाह और उस के रसूल ﷺ की खातिर है, और जिस की हिजरत हसूले दुनिया या किसी औरत से शादी करने की खातिर हुई तो उसकी हिजरत इस की खातिर है, जिस की खातिर उस ने हिजरत की"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (1 ، 54 ، 2529 ، 3898 ، 5070 ، 6689 ، 6953) و مسلم (1907 ، الامارۃ : 155)، (4927) [و النسائی ، الایمان و النذور : النیة فی المیمن ح 3825 ، السلفیة 2 / 135 ، و اللفظ له الا عنده ’’ لدنیا ‘‘ بدل ’’ الی دنیا ‘‘ وجاء فی بعض نسخ النسائی ’’ الی دنیا ‘‘]

بَاب السَّلَام • सलाम का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٤٦٢٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " خَلَقَ اللَّهُ آدَمَ على صورته طوله ذِرَاعًا فَلَمَّا خَلَقَهُ قَالَ اذْهَبْ فَسَلِّمْ عَلَى أُولَئِكَ النَّفَرِ وَهُمْ نَفَرٌ مِنَ الْمَلَائِكَةِ جُلُوسٌ فَاسْتَمِعْ مَا يُحَيُّونَكَ فَإِنَّهَا تَحِيَّتُكَ وَتَحِيَّةُ ذُرِّيَّتِكَ فَذَهَبَ فَقَالَ: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ فَقَالُوا: السَّلَامُ عَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللَّهِ " قَالَ: «فَزَادُوهُ وَرَحْمَةُ اللَّهِ» . قَالَ: «فَكُلُّ مَنْ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ عَلَى صُورَةِ آدَمَ وَطُولُهُ سِتُّونَ ذِرَاعًا فَلَمْ يَزَلِ الْخَلْقُ يَنْقُصُ بعدَه حَتَّى الْآن»

4628. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अल्लाह ने आदम अलैहिस्सलाम को उसकी सूरत पर तखलीक फ़रमाया, उनका कद साठ हाथ था, जब उस ने उन्हें पैदा किया तो फ़रमाया: जाओ इस जमाअत को सलाम करो, इस जमाअत में चंद फ़रिश्ते बैठें हुए थे वह आप को जो जवाब दें, वह गौर से सुने, चुनांचे वही जवाब तुम्हारा और तुम्हारी औलाद का होगा, वह गए और उन्होंने उन से कहा: السَّلَامُ عَلَيْكَ (सलामती हो तुम पर)! उन्होंने कहा: السَّلَامُ عَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللَّهِ (सलामती हो तुम पर और अल्लाह की रहमत हो)!'' उन्होंने उन्हें लफ्ज़ व रहमतुल्लाह का इज़ाफ़ी (ज़्यादा) जवाब दिया", फ़रमाया: "जन्नत में जाने वाला हर शख़्स सूरत ए आदम अलैहिस्सलाम पर होगा, उस का कद साठ हाथ होगा, उन के बाद फिर मुसलसल अब तक कद व कामत में कमी वाकेअ होती चली आ रही है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (6227) و مسلم (28 / 2841)، (7163)

٤٦٢٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو: أَنَّ رَجُلًا سَأَلَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَيُّ الْإِسْلَامِ خَيْرٌ؟ قَالَ: «تُطْعِمُ الطَّعَامَ وَتَقْرَأُ السَّلَامَ عَلَى مَنْ عَرَفْتَ وَمَنْ لم تعرف»

4629. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के एक आदमी ने रसूलुल्लाह ﷺ से दरियाफ्त किया कौन सा (आदाब) इस्लाम बेहतर है, फ़रमाया: "(ये के) तुम खाना खिलाओ और तुम जिसे जानते हो इसे भी और जिसे नहीं जानते इसे भी सलाम करो"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (6236) و مسلم (63 / 39)، (160)

٤٦٣٠ - و (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لِلْمُؤْمِنِ عَلَى الْمُؤْمِنِ سِتُّ خِصَالٍ: يَعُودُهُ إِذَا مَرِضَ وَيَشْهَدُهُ إِذَا مَاتَ وَيُجِيبُهُ إِذَا دَعَاهُ وَيُسَلِّمُ عَلَيْهِ إِذَا لَقِيَهُ وَيُشَمِّتُهُ إِذَا عَطَسَ وَيَنْصَحُ لَهُ إِذَا غَابَ أَوْ شَهِدَ «لَمْ أَجِدْهُ» فِي الصَّحِيحَيْنِ «وَلَا فِي كِتَابِ الْحُمَيْدِيِّ وَلَكِنْ»» ذَكَرَهُ صَاحِبُ» الْجَامِع " بِرِوَايَةِ النَّسَائِيِّ

4630. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मोमिन के मोमिन पर छे हक़ है: जब वह बीमार हो जाए तो उसकी मिलने जाए, जब वह फौत हो जाए तो उस के जनाज़े में शरीक हो, जब वह दावत दे तो उसे कबूल करे, जब वह उस से मुलाकात करे तो उसे सलाम करे, जब इसे छींक आए (और الْحَمد لله (तमाम तारीफ़े अल्लाह के लिए है) कहे) तो वह इसे يَرْحَمُكَ اللَّهُ (अल्लाह तुम पर रहम करे) कह कर जवाब दे और उसकी मौजूदगी और गैर मौजूदगी में उस से खैरख्वाही करे”| # साहबे मिश्कात कहते हैं और मैंने इसे ने तो सहीहैन में पाया है न किताब अल हुमैदी में लेकिन जामेअ अल अस्वल के मुअल्लिफ इब्ने असीर ने इसे नसई की रिवायत से ज़िक्र किया है. (हसन)

اسناده حسن ، رواه النسائی (4 / 53 ح 1940) [و الترمذی (2737) وقال هذا حديث صحيح]

٤٦٣١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّى تُؤْمِنُوا وَلَا تُؤْمِنُوا حَتَّى تَحَابُّوا أَوَ لَا أدلكم على شَيْء إِذا فعلتموه تحاببتم؟ أفشوا السَّلَام بَيْنكُم» رَوَاهُ مُسلم

4631. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम इस वक़्त तक जन्नत में दाखिल नहीं हो सकते जब तक तुम मोमिन नहीं बन जाते, तुम इस वक़्त तक मोमिन नहीं बन सकते जब तक तुम बाहम मुहब्बत नहीं करते, क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बताऊँ! जब तुम उसे करने लग जाओगे तो तुम्हारी बाहम मुहब्बत हो जाए आपस में सलाम फैलाओ”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (93 / 54)، (194)

٤٦٣٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يُسَلِّمُ الرَّاكِبُ عَلَى الْمَاشِي وَالْمَاشِي عَلَى الْقَاعِدِ وَالْقَلِيلُ عَلَى الْكَثِيرِ»

4632. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सवार, पैदल चलने वाले को, पैदल चलने वाला बैठें हुए को और मुख़्तसर कसीर को सलाम करे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6232) و مسلم (1 / 2160)، (5646)

٤٦٣٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يُسَلِّمُ الصَّغِيرُ عَلَى الْكَبِيرِ وَالْمَارُّ عَلَى الْقَاعِدِ وَالْقَلِيلُ عَلَى الْكَثِيرِ»

4633. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “छोटा बड़े को, चलने वाला बैठें हुए को और मुख़्तसर कसीर को सलाम करे”| (बुखारी)

رواه البخاری (6231)

٤٦٣٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أَنَسٍ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مر على غلْمَان فَسلم عَلَيْهِم

4634. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि रसूलुल्लाह ﷺ बच्चो के पास से गुज़रे और उन्हें सलाम किया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6247) و مسلم (14 / 2168)، (5663)

٤٦٣٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم: «لَا تبدؤوا الْيَهُودَ وَلَا النَّصَارَى بِالسَّلَامِ وَإِذَا لَقِيتُمْ أَحَدَهُمْ فِي طريقٍ فَاضْطَرُّوهُ إِلَى أضيَقِه»

4635. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “यहूद नसारा को सलाम करने में पहल न करो, और जब तुम उनमें से किसी को रास्ते में मिले तो उन्हें रास्ते के एक तरफ चलने पर मजबूर कर दो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (13 / 2167)، (5661)

٤٦٣٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا سَلَّمَ عَلَيْكُمُ الْيَهُودُ فَإِنَّمَا يَقُولُ أَحَدُهُمْ: السَّامُ عَلَيْك. فَقل: وَعَلَيْك "

4636. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब यहूदी तुम्हें सलाम करते हैं, तो उनमें से एक तुम्हें हमें कहता है, السَّامُ عَلَيْك (तुम पर मौत वाकेअ हो) लिहाज़ा तुम उन्हें यह जवाब दो وَعَلَيْك (और तुम पर हो)”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6257) و مسلم (8 / 2164)، (5654)

٤٦٣٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا سَلَّمَ عَلَيْكُمْ أَهْلُ الكتابِ فَقولُوا: وَعَلَيْكُم "

4637. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब अहले किताब तुम्हें सलाम करे तो तुम जवाब में इतना) कहो : “وَعَلَيْك (तुम पर हो)”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6258) و مسلم (6 / 2163)، (5652)

٤٦٣٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن عائشةَ قَالَتْ: اسْتَأْذَنَ رَهْطٌ مِنَ الْيَهُودِ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالُوا السَّامُ عَلَيْكُمْ.

فَقُلْتُ: بَلْ عَلَيْكُمُ السَّامُ وَاللَّعْنَةُ. فَقَالَ: «يَا عَائِشَةُ إِنَّ اللَّهَ رَفِيقٌ يُحِبُّ الرِّفْقَ فِي الْأَمْرِ كُلِّهِ» قُلْتُ: أَوَلَمْ تَسْمَعْ مَا قَالُوا؟ قَالَ: «قَدْ قُلْتُ وَعَلَيْكُمْ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «عَلَيْكُمْ» وَلم يذكر الْوَاو»» وَفِي رِوَايَةٍ لِلْبُخَارِيِّ. قَالَتْ: إِنَّ الْيَهُودَ أَتَوُا النَّبِي صلى الله عَلَيْهِ وَسلم [ص:١٣١ فَقَالُوا: السَّام عَلَيْك. قَالَ: «وَعَلَيْكُمْ» فَقَالَتْ عَائِشَةُ: السَّامُ عَلَيْكُمْ وَلَعَنَكُمُ اللَّهُ وَغَضِبَ عَلَيْكُمْ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَهْلًا يَا عَائِشَةُ عليكِ بالرِّفق وإِياك والعنفَ والفُحْشَ» . قَالَت: أَو لم تسمع مَا قَالُوا؟ قَالَ: «أَو لم تَسْمَعِي مَا قُلْتُ رَدَدْتُ عَلَيْهِمْ فَيُسْتَجَابُ لِي فِيهِمْ وَلَا يُسْتَجَابُ لَهُمْ فِيَّ»»» وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ. قَالَ: «لَا تَكُونِي فَاحِشَةً فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُحبُّ الفُحْشَ والتفحُّش»

4638. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, यहूदियों की एक जमाअत ने नबी ﷺ से इजाज़त तलब की तो उन्होंने कहा: السَّامُ عَلَيْك (तुम पर मौत वाकेअ हो), मैंने कहा: "بَلْ عَلَيْكُمُ السَّامُ وَاللَّعْنَةُ (बल्के तुम पर मौत और लानत वाकेअ हो)", आप ﷺ ने फ़रमाया: "आइशा! बेशक अल्लाह मेहरबान है के हर मुआमले में मेहरबान जो नरमी करने को पसंद फरमाता है", मैंने अर्ज़ किया: क्या आप ने नहीं सुना के उन्होंने क्या कहा है? आप ﷺ ने फ़रमाया: "मैंने कह दिया था: وَعَلَيْك (और तुम पर हो) और एक दूसरी रिवायत में: "عَلَيْك (तुम पर हो)" के अल्फाज़ है, उन्होंने وَ (वाव) का ज़िक्र नहीं किया| और बुखारी की रिवायत में है: आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया: "यहूदी नबी ﷺ के पास आए और उन्होंने कहा: السَّامُ عَلَيْك (तुम पर मौत वाकेअ हो), आप ﷺ ने फ़रमाया: "وَعَلَيْك (तुम पर हो)", आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया: السَّامُ عَلَيْكُمْ وَلَعَنَكُمُ اللَّهُ وَغَضِبَ (तुम पर मौत वाकेअ हो अल्लाह तुम पर लानत फरमाए और तुम पर नाराज़ हो), (ये सुन कर) रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "आइशा! ठहरो नरमी इख़्तियार करो, सख्ती और बदगोई से बचा करो", उन्होंने अर्ज़ किया, क्या आप ने नहीं सुना जो उन्होंने कहा? आप ﷺ ने फ़रमाया: "क्या तुम ने नहीं सुना जो मैंने कहा, मैंने उन्हें जवाब दे दिया था, उन के मुतल्लिक मेरी बद्दुआ कबूल हो गई जबकि उनकी मेरे मुतल्लिक बद्दुआ कबूल नहीं हुई", और मुस्लिम की रिवायत में है: आप ﷺ ने फ़रमाया: "आप बदगोई करने वाली न बने, क्योंकि अल्लाह बे तकल्लुफ और बे तकल्लुफ बदगोई को पसंद नहीं फरमाता"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6927) و الرواية الثانية (6030) و مسلم (10 / 2165) و الرواية الثانية (11 / 2165)، (5656 و 5657)

٤٦٣٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أُسامة بن زيد: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرَّ بِمَجْلِسٍ فِيهِ أَخْلَاطٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُشْرِكِينَ عَبَدَةِ الْأَوْثَانِ وَالْيَهُودِ فَسَلَّمَ عَلَيْهِمْ

4639. उसामा बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ का एक ऐसी मजलिस से गुज़र हुआ जिस में मुसलमान, बुतों के पुजारी मुशरिक और यहूदी बैठें हुए थे, तो आप ﷺ ने उन्हें सलाम किया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (2654) و مسلم (116 / 1798)، (4659)

٤٦٤٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِيَّاكُمْ وَالْجُلُوسَ بِالطُّرُقَاتِ» . فَقَالُوا:

يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا لَنَا مِنْ مَجَالِسِنَا بُدٌّ نَتَحَدَّثُ فِيهَا. قَالَ: «فَإِذَا أَبَيْتُمْ إِلَّا الْمَجْلِسَ فَأَعْطُوا الطَّرِيقَ حَقَّهُ» . قَالُوا: وَمَا حَقُّ الطَّرِيقِ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: «غَضُّ الْبَصَرِ وَكَفُّ الْأَذَى وَرَدُّ السَّلَام والأمرُ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّهْي عَن الْمُنكر»

4640. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: रास्तो में बैठनेसे बचा करो", सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! वहां बेठना हमारी मज़बूरी है उस के बगैर गुज़ारा नहीं, हम वहां बैठ कर बाते करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "अगर तुमने ज़रूर बेठना ही है तो फिर रास्ते का हक़ अदा करो", उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! रास्ते का हक़ क्या है? आप ﷺ ने फ़रमाया: "नज़रे झुकाना, तकलीफ न पहुचाना, सलाम का जवाब देना, नेकी का हुक्म देना और बुराई से मना करना"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6229) و مسلم (114 / 2121)، (5563)

٤٦٤١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي هَذِهِ الْقِصَّةِ قَالَ: «وَإِرْشَادُ السَّبِيلِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ عَقِيبَ حَدِيثِ الْخُدْرِيِّ هَكَذَا

4641. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से इस (हदीस पिछली ज़िक्र की गई) किस्से के मुतल्लिक रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "और रास्ता बताना"| इमाम अबू दावुद ने अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु से मरवी हदीस के बाद इसी तरह रिवायत किया है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4816)

٤٦٤٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عُمَرَ»» عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي هَذِهِ الْقِصَّةِ قَالَ: «وَتُغِيثُوا الْمَلْهُوفَ وَتَهْدُوا الضالَّ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد عقيب حَدِيث أبي هُرَيْرَة هَكَذَا وَلم أجدهما فِي «الصَّحِيحَيْنِ»

4642. उमर रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से इस किस्से के बारे में रिवायत करते हैं, फ़रमाया: "मज़लूम की मदद करो और रास्ता भटके हुए शख़्स की रहनुमाई करो"| इमाम अबू दावुद ने अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु की हदीस के बाद इसी तरह रिवायत किया है, और मैंने इन दोनों हदीसो को सहीहैन में नहीं पाया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4817) * ابن حجير العدوى : مستور و فى السند علة أخرى و للحديث شواهد ضعيفة

سلام का बयान • بَاب السَّلَام

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٤٦٤٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَلِيٍّ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لِلْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ سِتٌّ بِالْمَعْرُوفِ: يُسَلِّمُ عَلَيْهِ إِذَا لَقِيَهُ وَيُجِيبُهُ إِذَا دَعَاهُ وَيُشَمِّتُهُ إِذَا عَطَسَ وَيَعُودُهُ إِذَا مَرِضَ وَيَتْبَعُ جِنَازَتَهُ إِذَا مَاتَ وَيُحِبُّ لَهُ مَا يُحِبُّ لِنَفْسِهِ " رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ والدارمي

4643. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुसलमान के मुसलमान पर दस्तूर के मुताबिक छे हुकुक है जब उस से मुलाकात करे तो उसे सलाम करे, जब वह दावत दे तो उसे कबूल करे, जब वह छींक मारे और वह الْحَمد لله (तमाम तारीफ़े अल्लाह के लिए है) कहे तो उसे يَرْحَمُكَ اللَّهُ (अल्लाह तुम पर रहम करे) कहे, जब वह बीमार हो जाए तो उसकी मिलने जाए, जब वह फौत हो जाए तो उस के जनाज़े में शरीक हो और उस के लिए वही कुछ पसंद करे जो वह अपने लिए पसंद करता है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (2736 وقال : ھذا حدیث حسن) و الدارمی (2 / 275276 ح 2636) [و ابن ماجه (1433) و احمد (1 / 8889)]
* الحارث الاعور ضعيف و حديث مسلم (2162)، (5651) يغنى عنه

٤٦٤٤ - (حسن) وعن»» عمرَان بن حُصَيْن أَنَّ رَجُلًا جَاءَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ فَرَدَّ عَلَيْهِ ثُمَّ جَلَسَ. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «عشر» . ثمَّ جَاءَ لآخر فَقَالَ: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ فَرَدَّ عَلَيْهِ فَقَالَ: «ثَلَاثُونَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

4644. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक आदमी रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में आया और उस ने कहा السَّلَامُ عَلَيْكَ (सलामती हो तुम पर)! आप ﷺ ने इसे जवाब दिया, फिर वह बैठ गया तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: “(इस के लिए) दस (नेकियाँ) हैं”, फिर दूसरा शख़्स आया और उस ने कहा السَّلَامُ عَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللَّهِ (सलामती हो तुम पर और अल्लाह की रहमत हो)! आप ﷺ ने इसे जवाब दिया, जब वह बैठ गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “(इस के लिए) बीस (नेकियाँ) हैं”, फिर एक और शख़्स आया और उस ने कहा السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ (सलामती हो तुम पर और अल्लाह की रहमत हो और उसकी बरकत हो)! आप ﷺ ने इसे जवाब दिया, जब वह बैठ गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “(इस के लिए) तीस (नेकियाँ) हैं”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2689 وقال : حسن غریب) و ابوداؤد (5195)

٤٦٤٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن معَاذ»» بْنِ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَعْنَاهُ وَزَاد ثُمَّ أَتَى آخَرُ فَقَالَ: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ وَمَغْفِرَتُهُ فَقَالَ: «أَرْبَعُونَ» وَقَالَ: «هَكَذَا تكون الْفَضَائِل» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4645. मुआज़ बिन अनस रदियल्लाहु अन्हु ने नबी ﷺ से इसी मफ्हुम की हदीस नकल करते हुए यह इज़ाफा नकल किया है फिर एक और आया और उस ने कहा السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ وَمَغْفِرَتُهُ (सलामती हो तुम पर और अल्लाह की रहमत हो और उसकी बरकत हो और उसकी मगफिरत हो)! आप ﷺ ने फ़रमाया: "(इस के लिए) चालीस (नेकियाँ) है", और फ़रमाया: "फ़ज़ाइल इसी तरह होते हैं"| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه ابوداؤد (5196) * سنده معلول لان الراوی شک فی اتصاله وله شاهد ضعیف فی التاریخ الکبیر للبخاری (1 / 330)

٤٦٤٦ - (إِسْنَاده صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي أُمَامَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِاللَّهِ مَنْ بَدَأَ السَّلَام» . رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

4646. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "सलाम में पहल करने वाला शख़्स अल्लाह का सबसे ज़्यादा करीबी है"| (सहीह)

صحیح ، رواه احمد (5 / 254 ح 22545) و الترمذی (2694 وقال : حسن) و ابوداؤد (5197)

٤٦٤٧ - (صَحِيح) وَعَن»» جَرِيرٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرَّ عَلَى نِسْوَةٍ فَسَلَّمَ عَلَيْهِنَّ. رَوَاهُ أَحْمَدُ

4647. जरीर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ औरतों के पास से गुज़रे तो आप ﷺ ने उन्हें सलाम किया| (हसन)

حسن ، رواه احمد (4 / 357 ح 19367) * السند ضعیف جدًا ، فیه جابر الجعفی (ضعیف جدًا رافضی) قال : حدثنی رجل (مجهول) عن طارق التمیمی عن جریر به ، و للحدیث شواهد حسنهعند ابی داود (5204 حسن) و الترمذی (2697) و البخاری فی الادب المفرد (10471048) و انظر الحدیث الآتی (4663)

٤٦٤٨ - (حسن) وَعَنْ»» عَلِيِّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: يُجْزِئُ عَنِ الْجَمَاعَةِ إِذَا مَرُّوا أَنْ يُسَلِّمَ أَحَدُهُمْ وَيُجْزِئُ عَنِ الْجُلُوسِ أَنْ يَرُدَّ أَحَدُهُمْ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ [ص:١٣١ الْإِيمَانِ» مَرْفُوعا. وروى أَبُو دَاوُد وَقَالَ: وَرَفعه الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ وَهُوَ شَيْخُ أَبِي دَاوُدَ

4648. अली बिन अबी तालिब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब लोगों की जमाअत का गुज़र हो तो उनकी तरफ से एक आदमी का सलाम करना काफी है और जो बैठें हुए हैं उनकी तरफ से एक आदमी का जवाब देना काफी है"| बयहकी ने शौबुल ईमान में उसे मरफ़ुअ रिवायत किया है, और अबू दावुद ने इस हदीस को रिवायत करने के बाद कहा हसन बिन अली ने इसे मरफ़ुअ रिवायत किया है और वह अबू दावुद के उस्ताद है| (हसन)

حسن ، رواه البیهقی فی شعب الایمان (8922) و ابوداؤد (5210)

٤٦٤٩ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ»» عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَيْسَ مِنَّا مَنْ تَشَبَّهَ بِغَيْرِنَا لَا تَشَبَّهُوا بِالْيَهُودِ وَلَا بِالنَّصَارَى فَإِنَّ تَسْلِيمَ الْيَهُودِ الْإِشَارَةُ بِالْأَصَابِعِ وَتَسْلِيمَ النَّصَارَى الْإِشَارَةُ بِالْأَكُفِّ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: إِسْنَاده ضَعِيف

4649. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं की रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: जिस ने हमारे अलावा किसी और से मुशाबिहत इख़्तियार की वह हम में से नहीं, तुम यहूद व नसारा से मुशाबिहत इख़्तियार न करो, क्योंकि यहूदियों का सलाम उंगलियों के साथ इशारा करना है जबकि इसाइयों का सलाम हथेलियों के साथ इशारा करना है”| तिरमिज़ी, और उन्होंने कहा: उसकी सनद जईफ है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (2695) * ابن لهيعة مدلس و عنعن و للحديث شواهد ضعيفة عند الطبرانى فى الاوسط (7376) و النسائى (الكبرى : 10172) وغيرهما

٤٦٥٠ - (لَهُ إسنادان أَحدهمَا صَحِيحٌ)»» وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اتا: «إِذَا لَقِيَ أَحَدُكُمْ أَخَاهُ فَلْيُسَلِّمْ عَلَيْهِ فَإِنْ حَالَتْ بَيْنَهُمَا شَجَرَةٌ أَوْ جِدَارٌ أَوْ حَجَرٌ ثُمَّ لَقِيَهُ فَلْيُسَلِّمْ عَلَيْهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

4650. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब तुम में से कोई अपने (मुसलमान) भाई से मिले तो उसे सलाम करे, अगर इन दोनों के दरमियान कोई दरख़्त या दिवार या कोई पत्थर हाइल हो जाए फिर उस से मुलाकात हो जाए तो चाहिए के इसे सलाम करे”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (5200)

٤٦٥١ - (ضَعِيف) وَعَن»» قَتَادَة قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا دَخَلْتُمْ بَيْتًا فَسَلِّمُوا عَلَى أَهْلِهِ وَإِذَا خَرَجْتُمْ فَأَوْدِعُوا أَهْلَهُ بِسَلَامٍ» رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ» مُرْسَلًا

4651. क़तादाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जब तुम किसी घर में जाओ तो वहां के रहने वालो को सलाम करो और जब तुम (वहां से) निकलो तो इस घरवालो को अलविदाई सलाम कहो”| बयहकी ने इसे शौबुल ईमान में मुरसल रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (8845 ، نسخة محققة : 8459) و عبد الرزاق فى المصنف (10 / 389 ح 19450) * السند مرسل اى منقطع

٤٦٥٢ - [وَعَنْ أَنَسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «يَا بُنَيِّ إِذَا دَخَلْتَ عَلَى أَهْلِكَ فَسَلِّمْ يَكُونُ بَرَكَةً عَلَيْكَ وَعَلَى أَهْلِ بَيْتك» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4652. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेटा! जब तुम अपने घरवालो के पास जाओ तो सलाम करो (इस तरह) तुम पर और तेरे अहले खाना पर बरकत होगी”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (2698 وقال : حسن صحيح غريب) * فيه على بن زيد بن جدعان : ضعيف مشهور

٤٦٥٣ - وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «السَّلَامُ قَبْلَ الْكَلَامِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيث مُنكر

4653. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “पहले सलाम फिर कलाम”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस मुनकर है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه الترمذى (2699) * عنبسة و محمد بن زاذان : متروكان ، و للحديث شواهد ضعيفة عند ابن عدى (الكامل 5 / 1929) و ابن السنى (عمل اليوم و الليلة : 214 و نسخة سليم الهلالى : 215) وغيرهما فالحديث ضعيف

٤٦٥٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عِمْرَانَ»» بْنِ حُصَيْنٍ قَالَ: كُنَّا فِي الْجَاهِلِيَّةِ نَقُولُ: أَنْعَمَ اللَّهُ بِكَ عَيْنًا وَأَنْعَمَ صَبَاحًا. فَلَمَّا كَانَ الْإِسْلَامُ نُهِينَا عَنْ ذَلِكَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4654. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम दौरे जाहिलियत में (मुलाक़ात के वक्त) कहा करते थे अल्लाह तेरी आँख ठंडी रखे और तुम तरोताज हो खुश खुर्रम हालत में सुबह करो, जब इस्लाम आया तो हमें उस से रोक दिया गया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (5227) * قتادة : لم يسمع من عمران بن حصين رضى الله عنه ، انظر تحفة الاشراف (8 / 186) فالخبر منقطع

٤٦٥٥ - وَعَن غَالب قَالَ: إِنَّا لَجُلُوسٌ بِبَابِ الْحَسَنِ الْبَصْرِيِّ إِذْ جَاءَ رَجُلٌ فَقَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ جَدِّي»» قَالَ: بَعَثَنِي أَبِي إِلَى رَسُولِ اللَّهِ [ص:١٣٢ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ائته فَأَقْرِئْهُ السَّلَامَ. قَالَ: فَأَتَيْتُهُ»» فَقُلْتُ: أَبِي يُقْرِئُكَ السَّلَامَ. فَقَالَ: عَلَيْكَ وَعَلَى أَبِيكَ السَّلَامُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد»» :

4655. ग़ालिब बयान करते हैं, हम हसन बसरी रहिमहुल्लाह के दरवाज़े पर बैठें थे की एक आदमी आया और उस ने कहा मेरे वालिद ने मेरे दादा से रिवायत किया, उन्होंने कहा: मेरे वालिद ने मुझे रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में भेजा फ़रमाया: आप की खिदमत में हाज़िर होकर उन्हें सलाम अर्ज़ करना, उन्होंने कहा: में आप की खिदमत में पहुंचा और मैंने अर्ज़ किया: के मेरे वालिद आप को सलाम अर्ज़ करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम पर और तुम्हारे वालिद पर सलाम हो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (5231) * قال المنذرى :’’ هذا الاسناد فيه مجاهيل ‘‘

٤٦٥٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي»» الْعَلَاء بن الْحَضْرَمِيّ أَنَّ الْعَلَاءَ الْحَضْرَمِيَّ كَانَ عَامِلَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَكَانَ إِذَا كَتَبَ إِلَيْهِ بدأَ بنفسِه. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4656. अबू अल अलाइ बिन हज़्रमी से रिवायत है के अलाअ हज़्रमी रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ के (मुकर्रर करदा बहरीन के) हुक्मरान थे, और जब वह आप की तरफ ख़त लिखते तो अपने नाम से शुरू किया करते थे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (5134) * بعض ولد العلاء (ابن العلاء) مجهول

٤٦٥٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٌ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذا كتب أحدكُم كتابا فليترِ بِهِ فَإِنَّهُ أَنْجَحُ لِلْحَاجَةِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيث مُنكر

4657. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जब तुम में से कोई ख़त लिखे तो वह इसे खाक आलूद कर दे क्योंकि इस तरह करने से काम जल्द व आसान हो जाता है”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस मुनकर है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه الترمذى (2713) * حکمزة : متروک متهم بالوضع و للحديث طريق آخر عند ابن حزم (3774) فيه مجهول و فى السندين : ابو الزبير مدلس و عنعنان صح السند اليه

٤٦٥٨ - عَن زيدٍ بن ثابتٍ قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَبَيْنَ يَدَيْهِ كَاتِبٌ فَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: " ضَعِ الْقَلَمَ عَلَى أُذُنِكَ فَإِنَّهُ أَذْكَرُ لِلْمَآلِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ وَفِي إِسْنَادِهِ ضعفٌ

4658. ज़ैद बिन साबित रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो आप ﷺ के सामने कातिब था, मैंने आप ﷺ को फरमाते हुए सुना: “कलम अपने कान पर रखो क्योंकि ऐसा करना (कान पर कलम रखना) मकसद व अंजाम जल्द याद करा देता है”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है और उसकी सनद में जईफ है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه الترمذى (2714) * عنبسة و محمد بن زاذان متروکان ، تقدما (4653)

٤٦٥٩ - (صَحِيح) وَعَنْهُ»» قَالَ: أَمَرَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ أَتَعَلَّمَ السُّرْيَانِيَّةَ. وَفِي رِوَايَةٍ: إِنَّهُ أَمَرَنِي أَنْ أَتَعَلَّمَ كِتَابَ يَهُودَ وَقَالَ: «إِنِّي مَا آمَنُ يَهُودَ عَلَى كِتَابٍ» . قَالَ: فَمَا مَرَّ بِيَ نِصْفُ شَهْرٍ حَتَّى تَعَلَّمْتُ فَكَانَ إِذَا كَتَبَ إِلَى يَهُودَ كَتَبْتُ وَإِذَا كَتَبُوا إِلَيْهِ قَرَأْتُ لَهُ كِتَابَهُمْ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

4659. ज़ैद बिन साबित रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे हुक्म फ़रमाया की मैं सिरियानी

ज़ुबान सीखूं| एक दूसरी रिवायत में है की आप ﷺ ने फ़रमाया की मैं यहूदियों की किताबत सीखूं और फ़रमाया: “मुझे यहूद की किताबत का अंदेशा है”, ज़ैद बिन साबित रदियल्लाहु अन्हु ने कहा: मैंने आधे माह से पहले ही उनकी ज़ुबान सिख ली, जब आप ﷺ यहूद के नाम ख़त लिखाते तो मैं तहरीर करता और जब वह आप ﷺ के नाम ख़त लिखते तो उन के मक्तूब में आप को पढ़ कर सुनाता था| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2706 وقال : حسن) و ابوداؤد (5208)

٤٦٦٠ - (حَسَنٍ) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا انْتَهَى أَحَدُكُمْ إِلَى مَجْلِسٍ فَلْيُسَلِّمْ فَإِنْ بَدَا لَهُ أَنْ يَجْلِسَ فَلْيَجْلِسْ ثُمَّ إِذَا قَامَ فَلْيُسَلِّمْ فَلَيْسَتِ الْأُولَى بِأَحَقَّ مِنَ الْآخِرَةِ» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

4660. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब तुम में से कोई किसी मजलिस में आए तो वह सलाम करे, फिर अगर वह बेठना चाहे तो बैठ जाए, और जब वह वहां से उठे तो वह सलाम करे, पहला (सलाम) दूसरे सलाम से ज़्यादा हक़ नहीं रखता”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2706 وقال : حسن) و ابوداؤد (5208)

٤٦٦١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ أَنَّ»» رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا خَيْرَ فِي جُلُوسٍ فِي الطُّرَقَاتِ [ص:١٣٢ إِلَّا لِمَنْ هَدَى السَّبِيلَ وَرَدَّ التَّحِيَّةَ وَغَضَّ الْبَصَرَ وَأَعَانَ عَلَى الْحُمُولَةِ» رَوَاهُ فِي «شَرْحِ السُّنَّةِ»»» وَذَكَرَ حَدِيثَ أَبِي جُرَيٍّ فِي «بَاب فضل الصَّدَقَة»

4661. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: रास्तो में बैठनेमें कोई खैर व भलाई नहीं, मगर इस शख़्स के लिए (खैर) है जो रास्ता बताए, सलाम का जवाब दे, नज़र झुकाए और जो सवारी पर बोझ रखवाने में मदद करे”, और अबू जुरय्यी से मरवी हदीस “بَاب فضل الصَّدَقَة (सदके की फ़ज़ीलत का बयान)” में ज़िक्र की गई है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف جذا ، رواه البغوی فی شرح السنة (12 / 305 ح 3339) * فیه یحیی بن عبدالله (ضعیف جدًا) عن ابیه عن ابی ھریرة الخ و حدیث ابی داود (4816 و سنده حسن) یغنی عنه و کذا حدیث البخاری فی الادب المفرد (1149) 0 حدیث ابی جری تقدم (1918)

बَاب السَّلَام • सलाम का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٤٦٦٢ - (صَحِيح) عَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَمَّا خَلَقَ اللَّهُ آدَمَ وَنَفَخَ فِيهِ الرُّوحَ عَطَسَ فَقَالَ: الْحَمْدُ لِلَّهِ فَحَمِدَ اللَّهَ بِإِذْنِهِ فَقَالَ لَهُ رَبُّهُ: يَرْحَمُكَ اللَّهُ يَا آدَمَ اذْهَبْ إِلَى أُولَئِكَ الْمَلَائِكَةِ إِلَى مَلَأٍ مِنْهُمْ جُلُوسٍ فَقُلِ: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ. فَقَالَ: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ. قَالُوا: عَلَيْكَ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللَّهِ. ثُمَّ رَجَعَ إِلَى رَبِّهِ فَقَالَ: إِنَّ هَذِهِ تَحِيَّتُكَ وَتَحِيَّةُ بَنِيكَ بَيْنَهُمْ. فَقَالَ لَهُ اللَّهُ وَيَدَاهُ مَقْبُوضَتَانِ: اخْتَرْ أَيَّتَهُمَا شِئْتَ؟ فَقَالَ: اخْتَرْتُ يَمِينَ رَبِّي وَكِلْتَا يَدَيْ رَبِّي يَمِينٌ مُبَارَكَةٌ ثُمَّ بَسَطَهَا فَإِذَا فِيهَا آدَمُ وَذُرِّيَّتُهُ فَقَالَ: أَيْ رَبِّ مَا هَؤُلَاءِ؟ قَالَ: هَؤُلَاءِ ذُرِّيَّتُكَ فَإِذَا كُلُّ إِنْسَانٍ مَكْتُوبٌ عُمْرُهُ بَين عَيْنَيْهِ فَإِذا فيهم رجلٌ أضوؤهُم - أَوْ مِنْ أَضْوَئِهِمْ - قَالَ: يَا رَبِّ مَنْ هَذَا؟ قَالَ: هَذَا ابْنُكَ دَاوُدُ وَقَدْ كَتَبْتُ لَهُ عُمْرَهُ أَرْبَعِينَ سَنَةً. قَالَ: يَا رَبِّ زِدْ فِي عُمْرِهِ. قَالَ: ذَلِكَ الَّذِي كَتَبْتُ لَهُ. قَالَ: أَيْ رَبِّ فَإِنِّي قَدْ جَعَلْتُ لَهُ مِنْ عُمْرِي سِتِّينَ سَنَةً. قَالَ: أَنْتَ وَذَاكَ. قَالَ: ثُمَّ سَكَنَ الْجَنَّةَ مَا شَاءَ اللَّهُ ثُمَّ أُهْبِطَ مِنْهَا وَكَانَ آدَمُ يَعُدُّ لِنَفْسِهِ فَأَتَاهُ مَلَكُ الْمَوْتِ فَقَالَ لَهُ آدَمُ: قَدْ عَجَّلْتَ قَدْ كَتَبَ لِي أَلْفَ سَنَةٍ. قَالَ: بَلَى وَلَكِنَّكَ جَعَلْتَ لِابْنِكَ [ص:١٣٢] دَاوُدَ سِتِّينَ سَنَةً فَجَحَدَ فَجَحَدَتْ ذُرِّيَّتُهُ وَنَسِيَ فَنَسِيَتْ ذُرِّيَّتُهُ " قَالَ: «فَمن يؤمئذ أَمر بِالْكتاب وَالشُّهُود» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4662. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जब अल्लाह ने आदम अलैहिस्सलाम को पैदा फ़रमाया और उनमें रूह फूंकी तो उन्होंने छींक मारी और الْحَمد لله (तमाम तारीफ़े अल्लाह के लिए है) कहा, उन्होंने अल्लाह की तौफिक से उसकी हम्द बयान की, तो उन के रब ने उन्हें कहा: يَرْحَمُكَ اللَّهُ (अल्लाह तुम पर रहम करे), आदम! फरिश्तो की इस जमाअत की तरफ जाओ जो बैठी हुई है, वहां जा कर कहो السَّلَامُ عَلَيْكَ (सलामती हो तुम पर)! उन्होंने कहा: السَّلَامُ عَلَيْكَ (सलामती हो तुम पर)! उन्होंने कहा: عَلَيْكَ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللَّهِ (तुम पर सलामती हो और अल्लाह की रहमत हो) फिर वह वहां से अपने रब के पास वापस आए तो उस ने फ़रमाया: "बेशक यह तुम्हारा और तेरी औलाद का बाहमी सलाम है, अल्लाह ने उन्हें हुक्म दिया जबकि उस के दोनों हाथ बंद थे, तुम दोनों में से जिसे चाहो इख़्तियार कर लो उन्होंने कहा: मैंने अपने रब का दायाँ हाथ मुन्तखब कर लिया जबकि मेरे रब के दोनों हाथ दाएँ बा बरकत है, फिर अल्लाह तआला ने अपने दाएँ हाथ को फेलाया तो उस में आदम अलैहिस्सलाम और उनकी औलाद थी, उन्होंने अर्ज़ किया, रब जी! यह कौन है? फ़रमाया यह तुम्हारी औलाद है, हर इंसान की उमर उसकी दोनों आंखो के दरमियान लिखी हुई थी, और उनमें एक ऐसा आदमी था जो उन सबसे ज़्यादा रोशन (चहरे वाला) था, उन्होंने अर्ज़ किया, रब जी! यह कौन है? फ़रमाया यह आप के बेटे दाउद अलैहिस्सलाम है और मैंने उनकी उमर चालीस साल लिखी है, उन्होंने अर्ज़ किया, रब जी! उसकी उमर में इज़ाफा फरमा अल्लाह तआला ने फ़रमाया: बस यही है जो मैंने उस के लिए लिख दी है, उन्होंने अर्ज़ किया, रब जी! मैंने अपनी उमर से साठ साल इसे अता कर दिए, अल्लाह तआला ने फ़रमाया: यह तेरा मुआमला है, फ़रमाया फिर वह जिस क़दर अल्लाह ने चाहा जन्नत में रहे फिर वहां से उतार दिए गए, और आदम अलैहिस्सलाम अपने उमर शुमार किया करते थे, जब मौत का फ़रिश्ता उन के पास आया तो उन्होंने ने फ़रमाया: तुम जल्दी आ गए हो क्योंकि मेरी उम्र तो हज़ार बरस लिखी गई थी. उस ने अर्ज़ किया, जी हाँ! (दुरुस्त है) लेकिन आप ने अपने बेटे दाउद (अ) को साठ साल दे दिए थे, उन्होंने इनकार किया इसी वजह

से उनकी औलाद ने भी इनकार किया, और वह भूल गए इसी वजह से उनकी औलाद भी भूल जाती है"| आप ﷺ ने फ़रमाया: "इसी दिन से लिखने और गवाही देने का हुक्म फ़रमाया गया"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3368 وقال : حسن غریب)

٤٦٦٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أسماءَ»» بنت يزيدَ قَالَتْ: مَرَّ عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي نِسْوَةٍ فَسَلَّمَ عَلَيْنَا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه والدارمي

4663. अस्मा बिन्ते यज़ीद रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ हमारी औरतों की जमाअत के पास से गुज़रे तो आप ने हमें सलाम किया| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (5204) و ابن ماجه (3701) و الدارمی (2 / 277 ح 2640)

٤٦٦٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن الطفيلِ»» بن أَبِي بن كعبٍ: أَنَّهُ كَانَ يَأْتِي ابْنَ عُمَرَ فَيَغْدُو مَعَهُ إِلَى السُّوقِ. قَالَ فَإِذَا غَدَوْنَا إِلَى السُّوقِ لَمْ يَمُرَّ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ عَلَى سَقَّاطٍ وَلَا عَلَى صَاحِبِ بَيْعَةٍ وَلَا مِسْكِينٍ وَلَا أَحَدٍ إِلَّا سَلَّمَ عَلَيْهِ. قَالَ الطُّفَيْلُ: فَجِئْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ يَوْمًا فَاسْتَتْبَعَنِي إِلَى السُّوقِ فَقُلْتُ لَهُ: وَمَا تَصْنَعُ فِي السُّوقِ وَأَنْتَ لَا تَقِفُ عَلَى الْبَيْعِ وَلَا تَسْأَلُ عَن السّلع وتسوم بِهَا وَلَا تَجْلِسُ فِي مَجَالِسِ السُّوقِ فَاجْلِسْ بِنَا هَهُنَا نتحدث. قَالَ: فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ: يَا أَبَا بَطْنٍ - قَالَ وَكَانَ الطُّفَيْلُ ذَا بَطْنٍ - إِنَّمَا نَغْدُو مِنْ أَجْلِ السَّلَامِ نُسَلِّمُ عَلَى مَنْ لَقِينَاهُ. رَوَاهُ مَالك وَالْبَيْهَقِيّ فِي «شعب الْإِيمَان»

4664. तुफैल बिन उबई बिन काब से रिवायत है के वह इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा के पास आया करते थे और वह उन के साथ सुबह के वक़्त बाज़ार जाते, रावी बयान करते हैं, जब हम बाज़ार जाते तो अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा वहां मामूली कारोबार करने वाले, बड़े सरमाया दार, मिस्किन और जिस किसी शख़्स के पास से भी गुज़रते तो उसे सलाम करते, तुफैल बयान करते हैं, मैं एक रोज़ अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा के पास आया तो उन्होंने मुझे बाज़ार जाने के लिए कहा, मैंने उन्हें कहा: आप बाज़ार में क्या करोंगे? जबकि आप किसी बेअ पर रुकते नहीं, न सोदे के मुतल्लिक दरियाफ्त करते हैं, न उसकी कीमत पूछते है और न आप बाज़ार की मजालिस में बैठते है, लिहाज़ा आप यहा ही तशरीफ़ रखे और हम बात चित करते हैं रावी बयान करते हैं, अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा ने मुझे फ़रमाया पेट वाले! रावी बयान करते हैं, तुफैल का पेट बड़ा था, हम सलाम की गर्ज़ से जाते हैं, हम हर मिलने वाले को सलाम करते हैं| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه مالک فی الموطا (2 / 961962 ح 1859) و البیهقی فی شعب الایمان (8790)

٤٦٦٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن جَابر»» قَالَ: أَتَى رَجُلٌ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: لِفُلَانٍ فِي حَائِطِي عَذْقٌ وَأَنَّهُ آذَانِي مَكَانُ عَذْقِهِ فَأَرْسَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَنْ بِعْنِي عَذْقَكَ» قَالَ: لَا. قَالَ: «فَهَبْ لِي» . قَالَ: لَا. قَالَ: «فَبِعْنِيهِ

بِعَذْقٍ فِي الْجَنَّةِ» ؟ فَقَالَ: لَا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا رَأَيْتُ الَّذِي هُوَ أَبْخَلُ مِنْكَ إِلَّا الَّذِي يَبْخَلُ بِالسَّلَامِ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ»

4665. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी नबी ﷺ के पास आया और उस ने अर्ज़ किया, फलां शख़्स का मेरे बाग़ में खजूर का एक दरख्त है, वह इस खजूर के दरख्त की वजह से मुझे तकलीफ पहुंचाता है, रसूलुल्लाह ﷺ ने पैग़ाम भेजा के अपना खजूर का दरख्त मुझे फरोख्त कर दो, उस ने कहा: नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “चलो मुझे हिब्बा कर दो”, उस ने कहा: नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जन्नत में खजूर के दरख्त के बदले में मुझे फरोख्त कर दो”, उस ने कहा: नहीं, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैंने सलाम कहने में बुखल करने वाले के अलावा तुझ से ज़्यादा बखील कोई और नहीं देखा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (3 / 328 ح 14571) [و عبد بن حميد (1037)] و البيهقى فى شعب الايمان (8771 ، نسخة محققة : 8396 و السنن 6 / 157158) و الحاكم (2 / 20) * فيه عبدالله بن محمد بن عقيل ضعيف ، ضعفه الجمهور

٤٦٦٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عَبْدِ» اللَّهِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْبَادِئُ بِالسَّلَامِ بَرِيءٌ مِنَ الْكِبْرِ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي «شعب الْإِيمَان»

4666. अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “सलाम में पहल करने वाला तकब्बुर से बरी होता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (8786 ، نسخة محققة : 8407) * سفيان الثورى و ابو اسحاق السبيعى مدلسان و عنعنا

بَاب الاسْتِئْذَان • इजाज़त तलब करने का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٤٦٦٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: أَتَانَا أَبُو مُوسَى قَالَ: إِنَّ عُمَرَ أَرْسَلَ إِلَيَّ أَنْ آتِيَهُ فَأَتَيْتُ بَابَهُ فَسَلَّمْتُ ثَلَاثًا فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيَّ فَرَجَعْتُ. فَقَالَ: مَا مَنَعَكَ أَنْ تَأْتِيَنَا؟ فَقُلْتُ: إِنِّي أَتَيْتُ فَسَلَّمْتُ عَلَى بَابِكَ ثَلَاثًا فَلم تردَّ عليَّ فَرَجَعْتُ وَقَدْ قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا اسْتَأْذَنَ أَحَدُكُمْ ثَلَاثًا فَلَمْ يُؤْذَنْ لَهُ فَلْيَرْجِعْ» . فَقَالَ عُمَرُ: أَقِمْ عَلَيْهِ الْبَيِّنَةَ. قَالَ أَبُو سَعِيدٍ: فَقُمْتُ مَعَهُ فذهبتُ إِلى عمرَ فشهِدتُ

4667. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु हमारे पास आए उन्होंने कहा के उमर रदियल्लाहु अन्हु ने मुझे अपने पास बुला भेजा, मैं उन के दरवाज़े पर आया और तीन बार सलाम किया, मुझे जवाब न मिला तो मेंलौट गया, उन्होंने (मुझे से) पूछा तुम्हें किसी चीज़ ने हमारे पास न आने दीया?

मैंने कहा में आया था और आप के दरवाज़े पर तीन बार सलाम किया था लेकिन तुमने मुझे जवाब दिया इसलिए में वापस चला गया, क्योंकि रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाया था: “जब तुम में से कोई तीन बार इजाज़त तलब करे और इसे इजाज़त न मिले तो वह वापस चला जाए”, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: उस पर दलील पेश करो अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु ने कहा में उन के साथ खड़ा हुआ और उमर रदियल्लाहु अन्हु के पास जा कर गवाही दी| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6245) و مسلم (33 / 2153)، (5626)

٤٦٦٨ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ لِي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذْنُكَ عَلَيَّ أَنْ تَرْفَعَ الْحِجَابَ وَأَنْ تَسْمَعَ سِوَادِي حَتَّى أَنهَاك»

4668. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “तुम्हारा मुझ से इजाज़त लेना यही है के तुम परदा उठाओ और तुम मेरी पोशीदा बाते सुन लो! (तो आ जाओ) जब तक में तुझे ऐसे करने से मना न करू”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (16 / 2169)، (5666)

٤٦٦٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي دَيْنٍ كَانَ عَلَى أَبِي فَدَقَقْتُ الْبَابَ فَقَالَ: «مَنْ ذَا؟» فَقُلْتُ: أَنَا. فَقَالَ: «أَنَا أَنَا» . كَأَنَّهُ كرهها

4669. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं अपने वालिद के ज़िम्मा क़र्ज़ के मुतल्लिक नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ और मैंने दरवाज़ा खटखटाया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “कौन है?” मैंने कहा: में, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं में”, गोया आप ने इसे नापसंद फ़रमाया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6250) و مسلم (38 / 2155)، (5635)

٤٦٧٠ - (صَحِيح) وَعَن أبي هريرةَ قَالَ: دَخَلْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَوَجَدَ لَبَنًا فِي قَدَحٍ. فَقَالَ: «أَبَا هِرٍّ الْحَقْ بِأَهْلِ الصُّفَّةِ فَادْعُهُمْ إِلَيَّ» فَأَتَيْتُهُمْ فَدَعَوْتُهُمْ فَأَقْبَلُوا فَاسْتَأْذَنُوا فَأَذِنَ لَهُمْ فَدَخَلُوا

4670. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं रसूलुल्लाह ﷺ के साथ आप के घर में दाखिल हुआ, आप ﷺ ने एक प्याले में दूध पाया तो फ़रमाया: “ अबू हिर्र! अहले सुफ्फा के पास जाओ और उन्हें मेरे पास बूला लाओ”, मैं उन के पास गया और उन्हें बुला लाया, वह आए और (अंदर आने की) इजाज़त तलब की, आप ने उन्हें इजाज़त दे दि तो वह अन्दर गए| (बुखारी)

رواه البخاری (6246)

بَاب الاسْتِئْذَان • इजाज़त तलब करने का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٤٦٧١ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ كَلَدَةَ بْنِ حَنْبَلٍ: أَنَّ صَفْوَانَ بْنَ أمية بعث بِلَبن أَو جداية وَضَغَابِيسَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالنَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِأَعْلَى الْوَادِي قَالَ: فَدَخَلْتُ عَلَيْهِ وَلَمْ أُسَلِّمْ وَلَمْ أَسْتَأْذِنْ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " ارْجِعْ فَقُلِ: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ أَأَدْخُلُ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد

4671. कलद: बिन हंबल से रिवायत है के सफवान बिन उमय्य रदियल्लाहु अन्हु ने (मेरे हाथ) दूध या हिरन का बच्चा और ककड़ी, नबी ﷺ की खिदमत में भेजी, जबकि नबी ﷺ ऊपरी इलाके में थे, रावी बयान करते हैं, मैं आप के पास गया तो ना मैंने सलाम किया और न इजाज़त तलब की, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “वापिस जाओ और कहो السَّلَامُ عَلَيْكَ (सलामती हो तुम पर)! क्या मैं आ सकता हूँ ? (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2710 وقال : حسن غریب) و ابوداؤد (5176)

٤٦٧٢ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا دُعِيَ أَحَدُكُمْ فجاءَ مَعَ الرسولِ فَإِن ذَلِك إِذْنٌ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد. وَفِي رِوَايَةٍ لَهُ قَالَ: «رَسُول الرجل إِلَى الرجل إِذْنه»

4672. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से किसी को बुलाया जाए और वह पैग़ाम लाने वाले के साथ ही आजाए तो यह उस के लिए इजाज़त ही है|” और इन्ही की रिवायत में है फ़रमाया: “आदमी का आदमी की तरफ कासिद भेजना उसकी इजाज़त ही है|” जईफ रवाह अबू दावुद| (सहीह)

ضعیف ، رواه ابوداؤد (5190) * قتادۃ مدلس و عنعنصحیح ، رواہ ابوداؤد (5189)

٤٦٧٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عبد الله بن بُسرٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَتَى بَابَ قَوْمٍ لَمْ يَسْتَقْبِلِ الْبَابَ تِلْقَاءِ وَجْهِهِ وَلَكِنْ مِنْ رُكْنِهِ الْأَيْمَنِ أَوِ الْأَيْسَرِ فَيَقُولُ: «السَّلَامُ عَلَيْكُمْ السَّلَامُ عَلَيْكُمْ» وَذَلِكَ أَنَّ الدُّورَ لَمْ يَكُنْ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا سُتُورٌ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ»» وَذَكَرَ حَدِيثَ أَنَسٍ قَالَ E: «السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ» فِي «بَابِ الضِّيَافَةِ»

4673. अब्दुल्लाह बिन बूसर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ किसी के दरवाज़े पर तशरीफ़ लाते तो आप अपना चेहरा दरवाज़े के सामने न करते, बल्कि उस के दाएँ कोने या बाएँ कोने पर आते तो फरमाते: “السَّلَامُ عَلَيْكَ (सलामती हो तुम पर) ! السَّلَامُ عَلَيْكَ (सलामती हो तुम पर)!‘‘ उन दिनों दरवाज़ो पर परदे नहीं होते थे| # और अनस (र) से मरवी हदीस आप ﷺ ने फ़रमाया: “ السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ (सलामती हो तुम

पर और अल्लाह की रहमत हो)” بَابِ الضِّيَافَةِ (मेहमान नवाज़ी का बयान) में ज़िक्र की गई है. (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ ابوداؤد (5186) 0 حدیث انس تقدم (4249)

بَاب الاسْتِئْذَان • इजाज़त तलब करने का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٤٦٧٤ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَطَاءٍ أَنَّ رَجُلًا سَأَلَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: [ص:١٣٢ أَسْتَأْذِنُ عَلَى أُمِّي؟ فَقَالَ: «نَعَمْ» فَقَالَ الرَّجُلُ: إِنِّي مَعَهَا فِي الْبَيْتِ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اسْتَأْذِنْ عَلَيْهَا» فَقَالَ الرَّجُلُ: إِنِّي خَادِمُهَا. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اسْتَأْذِنْ عَلَيْهَا أَتُحِبُّ أَنْ تَرَاهَا عُرْيَانَةً؟» قَالَ: لَا. قَالَ: «فَاسْتَأْذِنْ عَلَيْهَا» . رَوَاهُ مَالِكٌ مُرسلاً

4674. अता इब्ने यस्सार से रिवायत है के एक आदमी ने रसूलुल्लाह ﷺ से मसअला दरियाफ्त करते हुए अर्ज़ किया, क्या मैं अपने माँ (के पास जाते वक़्त इस) से इजाज़त तलब करू? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ”, इस आदमी ने अर्ज़ किया, मैं घर में उस के साथ ही रहता हूँ, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “फिर भी उस से इजाज़त तलब करो”, इस आदमी ने अर्ज़ किया, मैं उस का खादिम हूँ, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “फिर भी इजाज़त तलब करो, क्या तुम उसे उरिया हालत में देखना पसंद करते हो?” उस ने अर्ज़ किया, नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस से इजाज़त तलब करो”, इमाम मालिक रहिमहुल्लाह ने इसे मुरसल रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف لا رسالہ ، رواہ مالک فی الموطا (2 / 963 ح 1862) * السند مرسل

٤٦٧٥ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ لِي مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَدْخَلٌ بِاللَّيْلِ وَمَدْخَلٌ بِالنَّهَارِ فَكُنْتُ إِذَا دخلتُ بِاللَّيْلِ تنحنح لي. رَوَاهُ النَّسَائِيّ

4675. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मुझे रसूलुल्लाह ﷺ के पास रात के वक़्त और दिन के वक़्त जाने की इजाज़त थी, जब में रात के वक़्त जाता तो आप ﷺ मेरे लिए (बतौर ए अलामते इजाज़त) खांस देते थे| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ النسائی (3 / 12 ح 1213) [و ابن ماجہ (3708) و احمد (1 / 80 ح 608)] * فی سماع عبداللہ بن نجی من علی رضی اللہ عنہ نظر و حدیث النسائی (1214 ، و سندہ حسن) یغنی عنہ

٤٦٧٦ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» جَابِرٌ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا تَأْذَنُوا لِمَنْ لَمْ يَبْدَأْ بالسلامِ» رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي

«شعب الْإِيمَان»

4676. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स (इजाज़त लेने की खातिर) सलाम से इब्तिदा न करे तो उसे इजाज़त दो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (8816 ، نسخة محققة : 8433) * ابو الزبير مدلس و عنعنان صح السند اليه ، و تلميذه ابو اسماعيل ابراهيم بن يزيد الخوزى : ضعيف جدًا

بَاب المصافحة و المعانقة • मुसाफह और मुआनकह का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٤٦٧٧ - (صَحِيح) عَن قتادةَ قَالَ: قُلْتُ لِأَنَسٍ: أَكَانَتِ الْمُصَافَحَةُ فِي أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَ: نعم. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

4677. क़तादाह रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने अनस रदियल्लाहु अन्हु से कहा क्या रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबा में मुसाफा (पर अमल) था? उन्होंने ने फ़रमाया: हां| (बुखारी)

رواه البخارى (6263)

٤٦٧٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَبَّلَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْحَسَنَ بْنَ عَلِيٍّ وَعِنْدَهُ الْأَقْرَعُ بْنُ حَابِسٍ. فَقَالَ الْأَقْرَعُ: إِنَّ لِي عَشَرَةً مِنَ الْوَلَدِ مَا قَبَّلْتُ مِنْهُمْ أَحَدًا فَنَظَرَ إِلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ قَالَ: «مَنْ لَا يَرْحَمْ لَا يُرْحَمْ» مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ»» وَسَنَذْكُرُ حَدِيثَ أَبِي هُرَيْرَةَ: «أَثَمَّ لُكَعُ» فِي «بَابِ مَنَاقِبِ أَهْلِ بَيْتِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ» إِنْ شَاءَ تَعَالَى»» وَذَكَرَ حَدِيثَ أُمِّ هَانِئٍ فِي «بَاب الْأمان»

4678. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हसन बिन अली रदियल्लाहु अन्हु का बोसा लिया, इस वक़्त इकरा बिन हाबिस रदियल्लाहु अन्हु भी आप के पास थे, इकराअ रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, मेरे दस बच्चे है, मैंने उनमें से किसी का बोसा नहीं लिया, रसूलुल्लाह ﷺ ने (ताज्जुब से) उसकी तरफ देखा फिर फ़रमाया: “जो शख़्स रहम नहीं करता उस पर रहम नहीं किया जाता”| # और हम अबू हुरैरा (र) से मरवी हदीस (أَثَمَّ لُكَعُ) بَابِ مَنَاقِبِ أَهْلِ بَيْتِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ (रसूलुल्लाह ﷺ के घर वालों के मनाकिब) मैं इनशाअल्लाह तआला ज़िक्र करेंगे जबकि उम्म हानी (र) से मरवी हदीस بَاب الْأمان (अमान देने का बयान) में ज़िक्र की गई है. (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5997) و مسلم (65 / 2318)، (6028) * حديث اثم لكع ؟ ياتى (6134) و حديث ام هانى تقدم (3977)

मुसाफह और मुआनकह का बयान • بَاب المصافحة والمعانقة

दूसरी फस्ल • الْفَصْلُ الثَّانِي

٤٦٧٩ - (صَحِيح) عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا مِنْ مُسْلِمَيْنِ يَلْتَقِيَانِ فَيَتَصَافَحَانِ إِلَّا غُفِرَ لَهُمَا قَبْلَ أَنْ يَتَفَرَّقَا» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ»» [ص:١٣٢ وَفِي رِوَايَةِ أَبِي دَاوُدَ قَالَ: «إِذَا الْتَقَى الْمُسْلِمَانِ فَتَصَافَحَا وَحَمِدَا اللَّهَ وَاسْتَغْفَرَاهُ غفر لَهما»

4679. बराअ बिन आजीब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जब दो मुसलमान मुलाकात करते वक़्त मुसाफा करते हैं तो उन के अलग होने से पहले उन्हें बख्श दिया जाता है"| अहमद तिरमिज़ी, इब्ने माजा और अबू दावुद की रिवायत में है फ़रमाया: "जब दो मुसलमान मुलाकात करते वक़्त मुसाफा करते हैं, अल्लाह की हम्द बयान करते हैं, और उस से मगफिरत तलब करते हैं तो उन्हें बख्श दिया जाता है"| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه احمد (4 / 289 ح 18746) و الترمذى (2727 وقال : حسن غريب) و ابن ماجه (3703) و ابوداؤد (5212) * ابو اسحاق مدلس و عنعن و للحديث شواهد ضعيفة* و رواية :'' و حمدا الله و استغفراه غفرلهما '' رواها ابوداؤد (5211) و سنده ضعيف ، فيه ابو الحكم زيد بن ابى الشعثاء العنزى ، وثقه ابن حبان وحده

٤٦٨٠ - (حسن أَو صَحِيح) وَعَن أنس قَالَ: قَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ الرَّجُلُ مِنَّا يَلْقَى أَخَاهُ أَوْ صَدِيقَهُ أَيَنْحَنِي لَهُ؟ قَالَ: «لَا» . قَالَ: أَفَيَلْتَزِمُهُ وَيُقَبِّلُهُ؟ قَالَ: «لَا» . قَالَ: أَفَيَأْخُذُ بِيَدِهِ وَيُصَافِحُهُ؟ قَالَ: «نَعَمْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4680. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, किसी आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हम में से आदमी अपने भाई या अपने दोस्त से मुलाकात करता है, तो क्या यह उस के सामने सर झुकाए? फ़रमाया: "नहीं ?" उस ने कहा क्या यह इसे गले लगाए और उस का बोसा ले? फ़रमाया: "नहीं ?" उस ने अर्ज़ क्या यह उस का हाथ पकड़ कर उस से मुसाफा करे फ़रमाया: "हाँ"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (2728 وقال : حسن) [و ابن ماجه (3702)] * فيه حنظلة بن عبدالله الدوسى : ضعيف

٤٦٨١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي أُمَامَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم قَالَ: " تَمَامُ عِيَادَةِ الْمَرِيضِ أَنْ يَضَعَ أَحَدُكُمْ يَدَهُ عَلَى جَبْهَتِهِ أَوْ عَلَى يَدِهِ فَيَسْأَلَهُ: كَيْفَ هُوَ؟ وَتَمَامُ تَحِيَّاتِكُمْ بَيْنَكُمُ الْمُصَافَحَةُ ". رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ وَضَعفه

4681. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मरीज़ की मुलाक़ात इस तरह पूरी होती है के तुम में से कोई एक अपना हाथ उसकी पेशानी पर या उस के हाथ पर रख कर उस से दरियाफ्त करे: "क्या हाल है?" और तुम्हारा आपस में पूरा सलाम दुआ, मुसाफा करना है"| अहमद तिरमिज़ी,

और इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह ने इसे जईफ करार दिया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (5 / 260 ح 22591) و الترمذی (2731) * فیه علی بن یزید : ضعیف مجروح ، و عبدالله بن زحر : ضعیف

٤٦٨٢ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَدِمَ زَيْدُ بْنُ حَارِثَةَ الْمَدِينَةَ وَرَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي بَيْتِي فَأَتَاهُ فَقَرَعَ الباب فقامَ إِلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عُرْيَانًا يَجُرُّ ثَوْبَهُ وَاللَّهِ مَا رَأَيْتُهُ عُرْيَانًا قَبْلَهُ وَلَا بَعْدَهُ فَاعْتَنَقَهُ وَقَبَّلَهُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

4682. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, ज़ैद बिन हारिस रदियल्लाहु अन्हु मदीना तशरीफ़ लाए तो इस वक़्त रसूलुल्लाह ﷺ मेरे घर में तशरीफ़ फरमा थे, वह आप के पास आए तो उन्होंने दरवाज़ा खटखटाया, रसूलुल्लाह ﷺ अपना कपड़ा घसीटते हुए, कमीज़ पहने बगैर ही उसकी तरफ चले, अल्लाह की क़सम! मैंने उस से पहले और न उस के बाद आप को कमीज़ के बगैर देखा, आप ﷺ ने इसे गले लगाया और उस का बोसा लिया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2732 وقال : حسن غريب) * ابراهيم بن يحيى بن محمد : حسن الحديث و ابوه يحيى : ضعيف وكان ضريرًا يتلقن و محمد بن اسحاق بن يسار مدلس و عنعنان صح السند اليه

٤٦٨٣ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَيُّوبَ بْنِ بُشَيْرٍ عَنْ رَجُلٍ مِنْ عَنَزَةَ أَنَّه قَالَ: قُلْتُ لِأَبِي ذَرٍّ: هَلْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَافِحُكُمْ إِذَا لَقِيتُمُوهُ؟ قَالَ: مَا لَقِيتُهُ قَطُّ إِلَّا صَافَحَنِي وَبَعَثَ إِلَيَّ ذَاتَ يَوْمٍ وَلَمْ أَكُنْ فِي أَهْلِي فَلَمَّا جِئْتُ أُخْبِرْتُ فَأَتَيْتُهُ وَهُوَ عَلَى سَرِيرٍ فَالْتَزَمَنِي فَكَانَتْ تِلْكَ أَجْوَدَ وَأَجْوَدَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4683. अय्यूब बिन बशीर अन्ज़ः कबिले के एक आदमी से रिवायत करते हैं की उस ने कहा: मैंने अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु से कहा: क्या जब तुम रसूलुल्लाह ﷺ से मुलाकात करते थे तो वह तुम से मुसाफा किया करते थे? उन्होंने ने फ़रमाया: में जब भी आप से मिला हूँ, आप ﷺ ने मुझ से मुसाफा किया है, आप ने एक रोज़ मुझे तलब फ़रमाया लेकिन में घर पर नहीं था, जब में आया तो मुझे बताया गया, मैं आप ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ आप इस वक़्त चार पाई पर तशरीफ़ फरमा थे, आप ﷺ ने मुझे गले लगाया यह (गले लगाना) बहोत ही बेहतर था बहोत ही बेहतर| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (5214) * ايوب بن بشير : مستور و رجل من بنی عنزة : مجهول ، قاله المنذری

٤٦٨٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عكرمةَ بن أبي جهلٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ جِئْتُهُ: «مَرْحَبًا بِالرَّاكِبِ الْمُهَاجِرِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4684. इकरिमा बिन अबी जहल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जिस रोज़ में (बैते इस्लाम के लिए) रसूलुल्लाह

ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुहाजर सवार के लिए खुशामदीद”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (2735 وقال : لیس اسناده بصحیح) * سفیان الثوری و ابو اسحاق مدلسان و عنعنا و مصعب بن سعد ارسل عن عکرمة بن ابی جهل ، فالسند منقطع

٤٦٨٥ - (صَحِيح) وَعَن أَسَيدِ بن حُضَيرٍ - رَجُلٌ مِنَ الْأَنْصَارِ - قَالَ: بَيْنَمَا هُوَ يُحَدِّثُ الْقَوْمَ - وَكَانَ فِيهِ مُزَاحٌ - بَيْنَا يُضْحِكُهُمْ فَطَعَنَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي خَاصِرَتِهِ بِعُودٍ فَقَالَ: أَصْبِرْنِي. قَالَ: «أَصْطَبِرُ» . قَالَ: إِنَّ عَلَيْكَ قَمِيصًا وَلَيْسَ عَلَيَّ قَمِيصٌ فَرَفَعَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ قَمِيصِهِ فَاحْتَضَنَهُ وَجَعَلَ يُقَبِّلُ كَشْحَهُ قَالَ: إِنَّمَا أَرَدْتُ هَذَا يَا رسولَ الله. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4685. उसैद बिन हज़िर रदियल्लाहु अन्हु का ताल्लुक अंसार के एक कबिले से था, वह बयान करते हैं: एक दिन वह लोगों से बाते कर रहे थे और वह मज़ाह तबियत थे और वह उन्हें (अपनी बातो के ज़रिए) हंसा रहे थे, तो नबी ﷺ ने एक लकड़ी से उस के पहलु पर चौब लगाईं, उन्होंने कहा: मुझे बदल दें, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं बदल देता हूँ”, उन्होंने अर्ज़ किया, आप पर तो कमीज़ है जबकि मुझ पर कमीज़ नहीं, नबी ﷺ ने कमीज़ उठाई तो मैं आप ﷺ से चिमट गया और आप के पहलु को बोसा देने लगा, और अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैं बस यही चाहता था| (सहीह)

صحیح ، رواه ابوداؤد (5224)

٤٦٨٦ - (ضَعِيف) وَعَنِ»» الشَّعْبِيِّ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَلَقَّى جَعْفَرَ بْنَ أَبِي طَالِبٍ فَالْتَزَمَهُ وقبَّلَ مابين عَيْنَيْهِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ» مُرْسَلًا»» وَفِي بَعْضِ نُسَخِ «الْمَصَابِيحِ» وَفِي «شرح السّنة» عَن البياضي مُتَّصِلا

4686. शअबी से रिवायत है के नबी ﷺ ने जाफर बिन अबी तालिब रदियल्लाहु अन्हु का इस्तेकबाल किया तो उन्हें गले लगाया और उनकी आंखो के दरमियान (पेशानी पर) बोसा दीया| अबू दावुद, बयहकी की शौबुल ईमान मुरसल, जबकि मसाबिह के बाज़ नुस्खों में और शरह सुन्ना में अल बियादी की सनद से मुतस्सिल है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (5220) و البیهقی فی شعب الایمان (8968 ، والسنن الکبری 7 / 101) * السند مرسل و رواه البیهقی بسند ضعیف عن الشعبی عن عبدالله بن جعفر به مسندًا و للحدیث طرق ضعیفة کلها0 و ذکره البغوی فی مصابیح السنة (3630) و شرح السنة (12 / 292 بعد ح 3327) بدون سند ولم اجده مسندًا وله شواهد ضعیفة عند ابی القاسم البغوی فی معجم الصحابة (277) و الطبرانی فی الکبیر (2 / 108 ح 1470) وغیرهما

٤٦٨٧ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» جَعْفَرِ بْنِ أَبِي طَالِبٍ فِي قِصَّةِ رُجُوعِهِ مِنْ أَرْضِ الْحَبَشَةِ قَالَ: فَخَرَجْنَا حَتَّى أَتَيْنَا الْمَدِينَةَ

فَتَلَقَّانِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاعْتَنَقَنِي ثُمَّ قَالَ: " مَا أَدْرِي: أَنَا بِفَتْحِ خَيْبَرَ أَفْرَحُ أَمْ بِقُدُومِ جَعْفَرٍ؟ «. وَوَافَقَ ذَلِكَ فَتْحَ خَيْبَرَ. رَوَاهُ فِي» شَرْحِ السّنة "

4687. जाफर बिन अबी तालिब रदियल्लाहु अन्हु से सर ज़मीन हबशा से वापसी के वाकिए के बारे में मरवी है, उन्होंने ने फ़रमाया: जब हम मदीना पहुंचे तो रसूलुल्लाह ﷺ ने मेरा इस्तेकबाल किया और मुझे गले लगा लिया, फिर फ़रमाया: "मैं नहीं जानता के मुझे फतह खैबर की ज़्यादा ख़ुशी है या जाफर की आमद की"| इत्तेफाक से उनकी आमद फतह खैबर के रोज़ थी| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه البغوى فى شرح السنة (12 / 291 بعد ح 3327) بدون سند* و رواه الطبرانى فى الصغير (1 / 19 ح 30) و الكبير (2 / 108 ح 1470 ، 22 / 100 ح 244) فيه احمد بن خالد بن عبدالملك بن سرح ، ليس بشى (لسان الميزان 1 / 165) و انس بن سالم الخولانى ، ترجمته فى تاريخ دمشق (2 / 232) ولم اجد من و ثقه

٤٦٨٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن زارِع»» وَكَانَ فِي وَفْدِ عَبْدِ الْقَيْسِ قَالَ: لَمَّا قَدِمْنَا الْمَدِينَةَ [ص:١٣٢ فَجَعَلْنَا نَتَبَادَرُ مِنْ رَوَاحِلِنَا فَنُقَبِّلُ يَدُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَرجله. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4688. जराई रदियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं और वह वफद अब्दुल कैस में शामिल थे: जब हम मदीना पहुंचे तो हम अपने सवारियों से जल्दी जल्दी उतरे और हमने रसूलुल्लाह ﷺ के हाथ और पाँव को बोसा दिया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (5225) * فيه ام ابان : لم اجد وثقها و للحافظ الهيشمى كلام مشوش فى مجمع الزوائد (9 / 390) فانتبه

٤٦٨٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ»» عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: مَا رَأَيْتُ أَحَدًا كَانَ أَشْبَهَ سَمْتًا وَهَدْيًا وَدَلًّا. وَفِي رِوَايَةٍ حَدِيثًا وَكَلَامًا بِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ فَاطِمَةَ كَانَتْ إِذَا دَخَلَتْ عَلَيْهِ قَامَ إِلَيْهَا فَأَخَذَ بِيَدِهَا فَقَبَّلَهَا وَأَجْلَسَهَا فِي مَجْلِسِهِ وَكَانَ إِذَا دَخَلَ عَلَيْهَا قَامَتْ إِلَيْهِ فَأَخَذَتْ بِيَدِهِ فَقَبَّلَتْهُ وَأَجْلَسَتْهُ فِي مجلسِها. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4689. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ की कद, काठी, सीरी व सूरत एक रिवायत में है: बात चित में फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा से ज़्यादा किसी को मुशाबह (अनुरूप) नहीं पाया, जब वह आती तो आप ﷺ उनका इस्तेकबाल करते, आप उनका हाथ पकड़ते और उनका (पेशानी पर) बोसा लेते और उन्हें अपने जगह पर बिठाते और जब आप ﷺ उन के पास तशरीफ़ ले जाते तो वह भी आप का इस्तेकबाल करती आप का हाथ पकड़ती और आप का बोसा लेती और आप को अपनी जगह पर बिठाती| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (5217)

٤٦٩٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن البراءِ»» قَالَ: دَخَلْتُ مَعَ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أولَ مَا قدمَ المدينةَ فَإِذا عَائِشَة مُضْطَجِعَة قد أصابتها حُمَّى فَأَتَاهَا أَبُو بَكْرٍ فَقَالَ: كَيْفَ أَنْتِ يَا بُنَيَّةُ؟ وَقَبَّلَ خَدَّهَا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

4690. बराअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, (किसी गज़वा से वापसी पर) में सबसे पहले अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु के साथ मदीना आया तो उनकी बेटी आइशा रदियल्लाहु अन्हा लेटी हुई थी और वह बुखार में मुब्तिला थी, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु उन के पास आए तो फ़रमाया: प्यारी बेटी तुम्हारा क्या हाल है? और उन्होंने उनके रुखसार पर बोसा दिया| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابوداؤد (5222) [و البخاری (3918)]

٤٦٩١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ»» رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَتِيَ بِصَبِيٍّ فَقَبَّلَهُ فَقَالَ: «أَمَا إِنَّهُمْ مَبْخَلَةٌ مَجْبَنَةٌ وَإِنَّهُمْ لَمِنْ ريحَان الله» . رَوَاهُ فِي «شرح السّنة»

4691. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के नबी ﷺ के पास एक बच्चा लाया गया तो आप ﷺ ने उस का बोसा लिया और फ़रमाया: “सुन लो! यह (बच्चे) बुखल और बुज़दिली का बाईस होते हैं, और बेशक यह अल्लाह तआला की तरफ से अतिया है”| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواه البغوی فی شرح السنة (13 / 35 ح 3448) * ابن لھیعة مدلس و عنعن و للحدیث شواھد عند الترمذی (1910 و سند ضعیف و ابن ماجه (3666 مختصرًا بلفظ :’’ ان الولد مبخلة مجبنة ‘‘ حدیث حسن) و احمد (5 / 211 سنده ضعیف) وغیرھم

मुसाफह और मुआनकह का बयान — بَاب المصافحة و المعانقة

तीसरी फस्ल — الْفَصْل الثَّالِث

٤٦٩٢ - (لم تتمّ دراسته) عَن يعلى»» قَالَ: إِنَّ حسنا وحُسيناً رَضِي الله عَنْهُم اسْتَبَقَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَضَمَّهُمَا إِلَيْهِ وَقَالَ: «إِنَّ الْوَلَدَ مَبْخَلَةٌ مجبنَةٌ» . رَوَاهُ أَحْمد

4692. यअली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि हसन और हुसैन रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ की तरफ तेज़ी से दौड़ते आए तो आप ﷺ ने इन दोनों को गले लगा लिया, और फ़रमाया: “बेशक औलाद बुखल और बुज़दिली का बाईस होती है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (4 / 172 ح 17705) [و الترمذی (3775 وقال : حسن) و ابن ماجه (3666) و صححه الحاکم (3 / 164) علی شرط مسلم]

٤٦٩٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَطَاءٍ»» الْخُرَاسَانِيِّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «تَصَافَحُوا يَذْهَبِ الْغِلُّ وَتَهَادَوْا تَحَابُّوا وَتَذْهَبِ الشَّحْنَاءُ» رَوَاهُ مَالِكٌ مُرْسَلًا

4693. अता खुरासानी से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुसाफा किया करो (इस से) किना जाता रहता है, हदिया (तहाईफ) दिया करो, बाहम मुहब्बत पैदा होगी और दुश्मन व रंजिश जाती रहेगी”,| इमाम मालिक ने इसे मुरसल रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ مالک فی الموطا (2 / 908 ح 1750) * سندہ ضعیف لا رسالہ ولہ شاھد ضعیف فی جامع عبداللہ بن وھب (ص 38 ح 246) و فی الباب احادیث أخری تغنی عنہ

٤٦٩٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ الْبَرَاءِ»» بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ صَلَّى أَرْبَعًا قَبْلَ الْهَاجِرَةِ فَكَأَنَّمَا صَلَّاهُنَّ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ وَالْمُسْلِمَانِ إِذَا تَصَافَحَا لَمْ يَبْقَ بَيْنَهُمَا ذَنْبٌ إِلَّا سَقَطَ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ»

4694. बराअ बिन आजीब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने दोपहर से पहले चार रक्अत (नमाज़ चाश्त) पढ़ी गोया उस ने वह रकआत शबे कद्र में अदा की, और जब दो मुसलमान मुसाफा करते हैं तो उन के सारे गुनाह गिर जाते हैं”| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ البیھقی فی شعب الایمان (8955 ، نسخۃ محققۃ : 8553) [و البخاری فی التاریخ الکبیر (9 / 344) مختصرًا جدًا] * فیہ منصور بن عبداللہ (و یقال : ابن عبد الرحمن) وثقہ ابن حبان وحدہ بذکرہ فی الثقات (7 / 476)

बतौर ए ताज़ीम खड़े होने का बयान — بَاب الْقيام

पहली फस्ल — الْفَصْل الأول

٤٦٩٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن أبي سعيد الْخُدْرِيّ قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ بَنُو قُرَيْظَةَ عَلَى حُكْمِ سَعْدٍ بَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَيْهِ وَكَانَ قَرِيبًا مِنْهُ فَجَاءَ عَلَى حِمَارٍ فَلَمَّا دَنَا مِنَ الْمَسْجِدِ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِلْأَنْصَارِ: «قُومُوا إِلَى سيِّدكم» . مُتَّفق عَلَيْهِ. وَمَضَى الْحَدِيثُ بِطُولِهِ فِي «بَابِ حِكَمِ الْإِسْرَاءِ»

4695. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब बनू कुरैज़ा, साद रदियल्लाहु अन्हु का फैसला कबूल करने पर राज़ी हुए तो रसूलुल्लाह ﷺ ने किसी को उनकी तरफ भेजा, और वह आप के करीब ही थे, चुनांचे वह एक गधे पर सवार हो कर आए, और जब वह मस्जिद के करीब पहुंचे तो रसूलुल्लाह ﷺ ने अंसार से फ़रमाया: “अपने सरदार की तरफ खड़े हो जाओ”| # और यह हदीस मुकम्मल तौर पर بَابِ حِكَمِ الْإِسْرَاءِ (कैदियों के हुक्म का बयान) में गुज़र चुकी है (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (4121) و مسلم (64 / 1768)، (4596)

٤٦٩٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يُقِيمُ الرَّجُلُ الرَّجُلَ مِنْ مَجْلِسِهِ ثُمَّ يَجْلِسُ فِيهِ وَلَكِنْ تَفَسَّحُوا وَتَوَسَّعُوا» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

4696. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “कोई आदमी किसी आदमी को उसकी जगह से उठाकर वहां मत बेठे, बल्कि वुसअत व कुशादगी पैदा करो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (6269) و مسلم (27 / 2177)، (5683)

٤٦٩٧ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ قَامَ مِنْ مَجْلِسِهِ ثُمَّ رَجَعَ إِلَيْهِ فَهُوَ أَحَقُّ بِهِ» . رَوَاهُ مُسلم

4697. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स अपने जगह से उठे और वह फिर वहीं वापस आ जाए तो इस जगह का वही ज़्यादा हक़दार है”| (मुस्लिम)

رواہ مسلم (31 / 2179)، (5689)

بَاب الْقيام • बतौर ए ताज़ीम खड़े होने का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٤٦٩٨ - (صَحِيح) عَن أنس بن مَالك قَالَ: لَمْ يَكُنْ شَخْصٌ أَحَبَّ إِلَيْهِمْ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَكَانُوا إِذَا رَأَوْهُ لَمْ يَقُومُوا لِمَا يَعْلَمُونَ مِنْ كَرَاهِيَتِهِ لِذَلِكَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ

4698. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन को रसूलुल्लाह ﷺ से बढ़कर कोई शख़्स ज़्यादा महबूब नहीं था, उस के बावजूद जब वह आप को देखते तो वह खड़े नहीं होते थे, क्योंकि वह जानते थे की आप ﷺ इसे नापसंद करते हैं, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है| (सहीह)

صحیح ، رواہ الترمذی (2754)

٤٦٩٩ - (صَحِيح) وَعَن مُعَاوِيَة قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ سَرَّهُ أَنْ يَتَمَثَّلَ لَهُ الرِّجَالُ قِيَامًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد

4699. मुआविया रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स को यह पसंद हो के लोग उस के सामने खड़े रहे तो वह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (2755 وقال : حسن) و ابوداؤد (5229)

٤٧٠٠ - (ضَعِيف) وَعَن أَبِي أُمَامَةَ قَالَ: خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُتَّكِئًا عَلَى عَصًا فَقُمْنَا فَقَالَ: «لَا تَقُومُوا كَمَا يَقُومُ الْأَعَاجِمُ يُعَظِّمُ بَعْضُهَا بَعْضًا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4700. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ लाठी का सहारा लेकर बाहर तशरीफ़ लाए तो हम आप की खातिर खड़े हो गए आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम ऐसे न खड़े हुआ करो जैसे अजमी लोग एक दूसरे की ताज़ीम में खड़े होते हैं”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (5230) * فیه ابو مرزوق : لین و ابو العدبس و تلمیذه : مستوران و لبعض الحدیث شواھد عند مسلم وغیره

٤٧٠١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن سعيد بن أبي الْحسن قَالَ: جَاءَنَا أَبُو بكرَة فِي شَهَادَةٍ فَقَامَ لَهُ رَجُلٌ مِنْ مَجْلِسِهِ فَأَبَى أَنْ يَجْلِسَ فِيهِ وَقَالَ: أَنَّ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْ ذَا وَنَهَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَمْسَحَ الرَّجُلُ يَدَهُ بِثَوْبِ مَنْ لَمْ يَكْسُهُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4701. सईद बिन अबूल हसन रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, अबू बकरह रदियल्लाहु अन्हु गवाही के सिलसिला में हमारे पास आए तो एक आदमी उन की खातिर अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ, उन्होंने वहां बैठनेसे इनकार कर दिया और फ़रमाया के नबी ﷺ ने उस से मना फ़रमाया है, और नबी ﷺ ने उस से भी मना फ़रमाया है के कोई शख़्स ऐसे आदमी के कपड़े से अपना हाथ साफ़ करे जो उस ने इसे नहीं पहनाया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (4827) * ابو عبدالله مولی آل ابی بردة : مجھول

٤٧٠٢ - (ضَعِيف) وَعَن أبي الدرداءِ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا جلس - جلسنا حوله - فَأَرَادَ الرُّجُوعَ نَزَعَ نَعْلَهُ أَوْ بَعْضَ مَا يَكُونُ عَلَيْهِ فَيَعْرِفُ ذَلِكَ أَصْحَابُهُ فَيَثْبُتُونَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4702. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ बैठ जाते तो हम आप के इर्दगिर्द बैठ जाते थे, फिर आप खड़े होते और आप का वापस आने का इरादा होता तो आप अपना जूता उतार कर या अपने कोई चीज़ वहां रख जाते जिस से सहाबा समझ जाते (के आप ﷺ वापस आएँगे) और वह वहीँ बैठें रहते| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (4854) * تمام بن نجیح : ضعیف و کعب بن ذھل : فیه لین

٤٧٠٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عبد الله بن عَمْرو عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يَحِلُّ لِرَجُلٍ أَنْ يُفَرِّقَ بَيْنَ اثْنَيْنِ إِلَّا بِإِذْنِهِمَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ

4703. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "किसी आदमी के लिए जाईज़ नहीं के वह दो आदमियों के दरमियान, उनकी इजाज़त के बगैर अलायेदगी पैदा करे (और खुद इन दोनों के दरमियान बैठ जाए)"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2752) و ابوداؤد (4845)

٤٧٠٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَمْرِو»» بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا تَجْلِسْ بَيْنَ رَجُلَيْنِ إِلَّا بإذنهما» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4704. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तुम दो आदमियों के दरमियान उनकी इजाज़त के बगैर मत बेठो"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4844)

بَاب الْقيام • बतौर ए ताज़ीम खड़े होने का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٤٧٠٥ - (ضَعِيف) عَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَجْلِسُ مَعَنَا فِي الْمَسْجِدِ [ص:١٣٣ يُحَدِّثُنَا فَإِذَا قَامَ قُمْنَا قِيَامًا حَتَّى نَرَاهُ قد دخل بعض بيُوت أَزْوَاجه

4705. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ हमारे साथ मस्जिद में तशरीफ़ रखते और हमारे साथ गुफ्तगू फ़रमाया करते थे, और जब आप खड़े होते तो हम देर तक खड़े रहते हत्ता के हम आप को देखते के आप अपने किसी ज़ौजा ए मोहतरमा के घर दाखिल हो जाते| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه البیهقی فی شعب الایمان (8930) [و ابوداؤد (4775)] * فیه هلال بن ابی هلال : مستور ، لم یوثقه احد من المتقدمین والله اعلم

٤٧٠٦ - (ضَعِيف) وَعَن»» وَاثِلَة بن الخطابِ قَالَ: دَخَلَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ فِي الْمَسْجِدِ قَاعِدٌ فَتَزَحْزَحَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَقَالَ الرَّجُلُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ فِي الْمَكَانِ سَعَةً. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ لِلْمُسْلِمِ لَحَقًّا إِذَا رَآهُ أَخُوهُ أَنْ يَتَزَحْزَحَ لَهُ» . رَوَاهُمَا الْبَيْهَقِيُّ فِي «شعب الْإِيمَان»

4706. वासिलत बिन ख़िताब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ, जबकि आप मस्जिद में तशरीफ़ फरमा थे, रसूलुल्लाह ﷺ इस की खातिर अपने जगह से हट गए तो आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! जगह तो काफी है, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक मुसलमान का हक़ है की जब उस का भाई इसे देखे तो वह उस के लिए (अपनी जगह से कुछ) हट जाए”| इमाम बयहकी ने दोनों अहादीस शौबुल ईमान में ज़िक्र की है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه البیهقی فی شعب الایمان (8933 ، نسخة محققة : 8534) * مجاهد بن فرقد : حدیثه منکر و تکلم فیه

بَاب الْجُلُوس وَالنَّوْم وَالْمَشْي • बैठने,सोने और चलने का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٤٧٠٧ - (صَحِيح) عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِفِنَاء الْكَعْبَة مُحْتَبِيًا بيدَيْهِ. رَوَاهُ البُخَارِيّ

4707. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को काबा के सहन में अपने हाथो के साथ गोठ मार कर बैठें हुए देखा| (बुखारी)

رواه البخاری (6272)

٤٧٠٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن عبَّادِ بن تَمِيم عَنْ عَمِّهِ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْمَسْجِدِ مُسْتَلْقِيًا وَاضِعًا إِحْدَى قدمَيه على الْأُخْرَى. مُتَّفق عَلَيْهِ

4708. उबादा बिन तमीम अपने चचा से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को मस्जिद में चित्ता लेटे हुए देखा, आप ने अपना एक पाँव दूसरे पर रखा हुआ था| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6287) و مسلم (75 / 2100)، (5508)

٤٧٠٩ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَرْفَعَ الرَّجُلُ إِحْدَى رِجْلَيْهِ عَلَى الْأُخْرَى وَهُوَ مُسْتَلْقٍ عَلَى ظَهْرِهِ. رَوَاهُ مُسلم

4709. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मना फ़रमाया के आदमी चित्ता लेटे हुए अपना

एक पाँव उठाकर दूसरे पर रखे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (72 / 2099)، (5501)

٤٧١٠ - (صَحِيح) وَعَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يستلقين أحدكُم ثمَّ يضع رجلَيْهِ على الْأُخْرَى» . رَوَاهُ مُسلم

4710. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “तुम में से कोई शख़्स चित्ता लेट कर अपना एक पाँव दूसरे पर न रखे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (74 / 2099)، (5503)

٤٧١١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «بَيْنَمَا رَجُلٌ يَتَبَخْتَرُ فِي بُرْدَيْنِ وَقد أعجبتْه نَفسه خسف بِهِ لأرض فَهُوَ بتجلجل فِيهَا إِلَى يَوْم الْقِيَامَة» . مُتَّفق عَلَيْهِ. لفصل الثَّانِي

4711. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “एक दफा एक आदमी जोड़ा पहने हुए तकब्बुर के अंदाज़ में चल रहा था और उस के नफ्स ने इसे गुरुर में डाल रखा था, इसे ज़मीन में धंसा दिया गया, और वह रोज़ ए कियामत तक उस में उतरता चला जाएगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (5789) و مسلم (49 / 2088)، (5465)

बैठने,सोने और चलने का बयान • بَاب الْجُلُوس وَالنَّوْم وَالْمَشْي

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٤٧١٢ - (لم تتمّ دراسته) عَن جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُتَّكِئًا عَلَى وِسَادَةٍ عَلَى يَسَارِهِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

4712. जाबिर बिन समुराह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ को बाएँ पहलू तकिए पर टेक लगाए हुए देखा| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه الترمذی (2770 وقال : حسن غریب)

٤٧١٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم إِذَا جَلَسَ فِي الْمَسْجِد احتبى بيدَيْهِ. رَوَاهُ رزين

4713. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ मस्जिद में बैठते तो आप अपने हाथो से गोठ मार लेते थे| (ज़ईफ़)

ضعيف جذا ، رزين (لم اجده) [و ابوداؤد (4846) و الترمذى فى الشمائل (128) و اللفظ له ، فيه عبدالله بن ابراهيم المدنى : منكر الحديث متروک متهم و حديث البخارى (6272) يغنى عنه ، تقدم (4707)]

٤٧١٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن قيلة بنت مخرمَة أَنَّهَا رَأَتْ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْمَسْجِدِ وَهُوَ قَاعِدٌ الْقُرْفُصَاءَ. قَالَتْ: فَلَمَّا رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمُتَخَشِّعَ أُرْعِدْتُ مِنَ الْفَرَقِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4714. कय्लत बिन्ते मखरम रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, के उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को मस्जिद में करफिज़ाअ के तौर पर बैठें हुए देखा (पैर पर बैठें हुए थे और बाज़ुओ को पिंडलियों के गिर्द लपेट रखा था) वह बयान करती हैं, जब मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को खाशीअ व मुतवाज़ी हालत में देखा तो खौफ की वजह से में लरज़ गई| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4847) [و اصله عند الترمذى (2814 و سنده ضعيف) ولم يذكر هذا اللفظ] * فيه عبدالله بن حسان العنبرى : لم اجد من وثقه و صفية و دحيبة : لم يوثقهما غير ابن حبان

٤٧١٥ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا صَلَّى الْفَجْرَ تَرَبَّعَ فِي مَجْلِسِهِ حَتَّى تطلع الشَّمْس حسناء. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4715. जाबिर बिन समुराह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब नबी ﷺ फजर की नमाज़ पढ़ते तो सूरज के अच्छी तरह तुलुअ हो जाने तक आलती पालती मार कर (चार ज़ानो हो कर) अपनी जगह पर बैठें रहते| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (4850)

٤٧١٦ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَبِي قَتَادَةَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا عَرَّسَ بِلَيْلٍ اضْطَجَعَ عَلَى شِقِّهِ الْأَيْمَنِ وَإِذَا عَرَّسَ قُبَيْلَ الصُّبْحِ نَصَبَ ذِرَاعَهُ وَوَضَعَ رَأْسَهُ عَلَى كَفِّهِ. رَوَاهُ فِي «شَرْحِ السُّنَّةِ»

4716. अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब नबी ﷺ रात के वक़्त पड़ाव डालते तो आप अपने

दाएँ पहलु पर लेटते थे और जब सुबह से थोड़ा पहले पड़ाव डालते तो आप अपने कोहनी खड़ी करते और हथेली पर सर रख लेते थे| (सहीह)

صحيح ، رواه البغوى فى شرح السنة (12 / 325 ح 3359) [و مسلم (683)، (1565) و الترمذی فی الشمائل (259) و احمد (5 / 309)]

٤٧١٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ بَعْضِ»» آلِ أُمِّ سَلَمَةَ قَالَ: كَانَ فِرَاشُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَحْوًا مِمَّا يُوضَعُ فِي قَبْرِهِ وَكَانَ الْمَسْجِدُ عِنْد رَأسه. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4717. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा की आल से किसी शख़्स ने बयान किया के रसूलुल्लाह ﷺ का बिस्तर बस इसी क़दर था जिस क़दर कपड़े में मय्यत को कब्र में रखा जाता है और मस्जिद (बाज़ ने कहा जाए नमाज़) आप ﷺ के सर के पास थी| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (5044) * بعض آل ام سلمة : مجهول

٤٧١٨ - (صَحِيح) وَعَن»» أبي هريرةَ قَالَ: رَأَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلًا مُضْطَجِعًا عَلَى [ص:١٣٣ بَطْنِهِ فَقَالَ: «إِنَّ هَذِهِ ضِجْعَةٌ لَا يُحِبُّهَا اللَّهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

4718. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने एक आदमी को मस्जिद में पेट के बल लपटे हुए देखा तो फ़रमाया: “इस तरह लेटते को अल्लाह पसंद नहीं फरमाता”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2768)

٤٧١٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ يَعِيشَ»» بْنِ طِخْفَةَ بْنِ قَيْسٍ الْغِفَارِيِّ عَن أبيهِ - وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ الصُّفَّةِ - قَالَ: بَيْنَمَا أَنَا مُضْطَجِعٌ مِنَ السَّحَرِ عَلَى بَطْنِي إِذَا رَجُلٌ يحركني بِرجلِهِ فَقَالَ: «هَذِهِ ضِجْعَةٌ يَبْغَضُهَا اللَّهُ» فَنَظَرْتُ فَإِذَا هُوَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

4719. बईश बिन तिख्फत बिन कैस गफ्फारी अपने वालिद से रिवायत करते हैं, और वह असहाबे सुफ्फा में से थे उन्होंने ने फ़रमाया: में सीने के दर्द की वजह से पेट के बल लेटा हुआ था के अचानक एक आदमी अपने पाँव से मुझे हिलाने लगा और उस ने कहा: “इस तरह लेटते से अल्लाह नाराज़ होता है” मैंने देखा तो वह रसूलुल्लाह ﷺ थे| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (5040) و ابن ماجه (752)

٤٧٢٠ - (صَحِيح) وَعَن»» عليِّ بن شَيبَان قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَنْ بَاتَ عَلَى ظَهْرِ بَيْتٍ لَيْسَ عَلَيْهِ حِجَابٌ - وَفِي رِوَايَةٍ: حِجَارٌ - فَقَدْ بَرِئَتْ مِنْهُ الذِّمَّةُ «. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ. وَفِي» مَعَالِمِ السّنَن «للخطابي» حجى "

4720. अली बिन शय्बान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स रात के वक़्त घर की छत पर सो जाए और इस (छत) के परदे न हो और एक रिवायत में है उस पर पत्थर न हो तो उस से ज़िम्मा उठ गया”| अबू दावुद और मआलिम अल सुनन अल खत्ताबी में (हिज्जी) के अल्फाज़ है| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (5041) و ذکره الخطابی فی معالم السنن (4 / 132 ح 1381)

٤٧٢١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٍ»» قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَنَامَ الرَّجُلُ عَلَى سطحٍ لَيْسَ بمحجورٍ عَلَيْهِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4721. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मना फ़रमाया के आदमी किसी ऐसी छत पर सोए जिसके परदे न हो| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ الترمذی (2854 وقال : غریب) * عبدالجبار بن عمر ضعیف و ابن وھب عنعن و روی احمد (5 / 271 ح 22333) عن بعض اصحاب النبی صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم عن النبی صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم انی قال :’’ من نام علی اجار لیس علیہ ما یرفع قدمیہ فخر فبرئت منہ الذمۃ ‘‘ و سندہ حسن لذاتہ

٤٧٢٢ - (ضَعِيف) وَعَن»» حذيفةَ قَالَ: مَلْعُونٌ عَلَى لِسَانِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ قَعَدَ وَسْطَ الْحَلْقَةِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

4722. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जो शख़्स मजलिस के बिच में बेठता है वह मुहम्मद ﷺ की ज़ुबान पर मलउन है| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ الترمذی (2753 وقال : حسن صحیح) و ابوداؤد (4826) * ابو مجلز لم یدرک حذیفۃ رضی اللہ عنہ کما قال شعبۃ ، انظر جامع التحصیل (ص 296) وغیرہ

٤٧٢٣ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «خَيْرُ الْمَجَالِسِ أَوْسَعُهَا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

4723. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेहतरीन मजलिस वह है जो फराख हो”, (जहाँ लोगों को बैठने में तंगी न हो)| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ ابوداؤد (4820)

٤٧٢٤ - (صَحِيح) وَعَن»» جَابر بن سَمُرَة قَالَ: جَاءَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَصْحَابُهُ جُلُوسٌ فَقَالَ: «مَا لِي أَرَاكُمْ عِزِينَ؟» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4724. जाबिर बिन समुराह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ लाए तो आप के सहाबा किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन बैठें हुए थे आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या वजह है की मैं तुम्हें अलग अलग बैठें हुए देख रहा हूँ|" (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (4823)

٤٧٢٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا كَانَ أَحَدُكُمْ فِي [ص:١٣٣] الْفَيْء فقلص الظِّلُّ فَصَارَ بَعْضُهُ فِي الشَّمْسِ وَبَعْضُهُ فِي الظل فَليقمْ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4725. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई साए में हो, फिर वह (साया) उस से बुलंद हो जाए और इस शख़्स का कुछ हिस्सा धूप में हो जाए और कुछ साए में तो वह (वहां से) उठ जाए”| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (4821)

٤٧٢٦ - (لم تتمّ دراسته) وَفِي «»» شرح السّنة» عَنهُ. قَالَ: «وَإِذا كَانَ أَحَدُكُمْ فِي الْفَيْءِ فَقَلَصَ عَنْهُ فَلْيَقُمْ فَإِنَّهُ مَجْلِسُ الشَّيْطَانِ» . هَكَذَا رَوَاهُ مَعْمَرٌ مَوْقُوفًا

4726. शरह अल सुनना में अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है आप ﷺ ने कहा: “जब तुम में से कोई साए में हो और वह साया उस से बुलंद हो जाए तो वह शख़्स (वहां से) उठ जाए, क्योंकि वह शैतान की मजलिस है”| मअमर ने इसी तरह इसे मौकूफ रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه البغوى فى شرح السنة (12 / 301 ح 3335) و فى سماع محمد بن المنكدر من سيدنا ابى هريرة رضى الله عنه لهذا الحديث نظر و باقى السند حسن و رواه احمد (2 / 283) من طريق آخر عن محمد بن المنكدر به

٤٧٢٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي»» أسيد الأنصاريِّ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ وَهُوَ خَارِجٌ مِنَ الْمَسْجِدِ فَاخْتَلَطَ الرجالُ مَعَ النِّسَاء فِي الطَّرِيق فَقَالَ النِّسَاء: «اسْتَأْخِرْنَ فَإِنَّهُ لَيْسَ لَكُنَّ أَنْ تُحْقِقْنَ الطَّرِيقَ عَلَيْكُنَّ بِحَافَاتِ الطَّرِيقِ» . فَكَانَتِ الْمَرْأَةُ تَلْصَقُ بِالْجِدَارِ حَتَّى إِنَّ ثَوْبَهَا لَيَتَعَلَّقُ بِالْجِدَارِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ»

4727. अबू उसैद अंसारी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना जबकि आप मस्जिद से बाहर तशरीफ़ ला रहे थे, रास्ते में मर्द औरतो के साथ शामिल हो गए, आप ﷺ ने औरतो से

फ़रमाया: “रास्ते के एक तरफ चलो तुम्हें रास्ते के बिच में चलने का कोई हक़ नहीं, लिहाज़ा तुम रास्ते के किनारों पर चलो”, चुनांचे (ये हुक्म सुन कर) औरत (चलते वक़्त) दिवार के साथ लग जाती थी हत्ता के उस का कपड़ा दिवार के साथ अटक जाता था| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (5272) و البيهقى فى شعب الايمان (7822) * فيه شداد بن ابى عمرو : مجهول و ابوه : مستور و للحديث شاهد ضعيف عند ابن حبان (الموارد : 1969)

٤٧٢٨ - (ضَعِيف) وَعَنِ»» ابْنِ عُمَرَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم نهى أنْ يمشيَ - يَعْنِي الرجلٌ - بَين المرأتينِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4728. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने मना फ़रमाया के आदमी दो औरतो के दरमियान चले| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه ابوداؤد (5273) * فيه داود بن ابى صالح المدنى : منكر الحديث و قال : ابو حاتم الرازى :’’ مجهول حدث بحديث منكر ‘‘

٤٧٢٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن جابرِ»» بن سمرةَ قَالَ: كُنَّا إِذَا أَتَيْنَا النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَلَسَ أَحَدُنَا حَيْثُ يَنْتَهِي. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد»» وَذكر حَدِيثا عبد الله بن عَمْرٍو فِي «بَابِ الْقِيَامِ»»» وَسَنَذْكُرُ حَدِيثَ عَلِيٍّ وَأَبِي هُرَيْرَةَ فِي «بَابِ أَسْمَاءِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَصِفَاتِهِ» إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى

4729. जाबिर बिन समुराह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब हम नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर होते तो हम में से हर शख़्स को जहाँ जगह मिलती वह वहीँ बैठ जाता था| # और अब्दुल्लाह बिन उमर (र अ) से मरवी दो हदीसे بَابِ الْقِيَامِ (बतौरे ताज़ीम खड़े होने का बयान) में ज़िक्र की गई है और अली व अबू हुरैरा (र) से मरवी दो हदीसे हम इंशाअल्लाह तआला بَابِ أَسْمَاءِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَصِفَاتِهِ (नबी ﷺ के नाम मुबारक और सिफत का बयान) में ज़िक्र करेंगे. (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4825) [و الترمذى (2725)] * شريک القاضى مدلس و عنعن ولم اجد من تابعه و للحديث شاهد ضعيف فى المعجم الكبير الطبرانى (7197) و حديث البخارى (66) و مسلم (2176)، (5681) يغنى عنه0 حديث عبدالله بن عمرو تقدم (4703) و حديث على ياتى (5790) و حديث ابى هريرة ياتى 5795)

बैठने,सोने और चलने का बयान • بَاب الْجُلُوس وَالنَّوْم وَالْمَشْي

तीसरी फस्ल • الْفَصْلُ الثَّالِثُ

٤٧٣٠ - (لم تتمّ دراسته) عَن عمْرِو»» بن الشَّرِيدِ عَن أبيهِ قَالَ: مَرَّ بِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنَا جَالِسٌ هَكَذَا وَقَدْ وَضَعْتُ يَدِي الْيُسْرَى خَلْفَ ظَهْرِي وَاتَّكَأْتُ عَلَى أَلْيَةِ يَدِي. قَالَ: «أَتَقْعُدُ قِعْدَةَ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4730. अमर बिन शरीद अपने बाप से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: में इस तरह बैठा हुआ था के मैंने अपना बायाँ हाथ अपने पुश्त के पीछे रखा हुआ था और दाएँ हाथ के अंगूठे की जड़ के पास जो गोश्त है उस पर टेक लगाईं थी, इसी हालत मैं रसूलुल्लाह ﷺ मेरे पास से गुज़रे तो आप ने फ़रमाया: क्या तुम उन लोगों की तरह बैठते हो जिन पर गज़ब हुआ(यानी यहूद)”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4848) * فيه ابن جريج مدلس و عنعن ولم اجد تصريح سماعه فی السند الموصول

٤٧٣١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي»» ذرٍّ قَالَ: مرَّ بِي النبيُّ وَأَنَا مُضْطَجِعٌ عَلَى بَطْنِي فَرَكَضَنِي بِرِجْلِهِ وَقَالَ: «يَا جُنْدُبُ إِنَّمَا هِيَ ضِجْعَةُ أَهْلِ النَّارِ» . رَوَاهُ ابنُ مَاجَه

4731. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ मेरे पास से गुज़रे जबकि मैं अपने पेट के बल लेटा हुआ था, आप ﷺ ने अपने पाँव से मुझे चुंगा मारा और फ़रमाया: “जुन्दुब यह तो जहन्नुमियो का सा लेटना है”| (सहीह)

صحيح ، رواه ابن ماجه (3724)

छींक मारने और जमाई लेने का बयान • بَاب العطاس والتثاؤب

पहली फस्ल • الْفَصْلُ الأول

٤٧٣٢ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْعُطَاسَ وَيَكْرَهُ التَّثَاؤُبَ فَإِذَا عَطَسَ أَحَدُكُمْ وَحَمِدَ اللَّهَ كَانَ حَقًّا عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ سَمِعَهُ أَنْ يَقُولَ: يَرْحَمُكَ اللَّهُ. فَأَمَّا التَّثَاؤُبُ فَإِنَّمَا هُوَ مِنَ الشَّيْطَان فَإِذا تثاءب أحدكُم فليرده مااستطاع فَإِنَّ أَحَدَكُمْ إِذَا تَثَاءَبَ ضَحِكَ مِنْهُ الشَّيْطَانُ ". رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ»» وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ: " فَإِنَّ أَحَدَكُمْ إِذا قَالَ: هَا ضحك الشَّيْطَان مِنْهُ "

4732. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक अल्लाह छींक ने को पसंद फरमाता है और जिमाई लेने को नापसंद फरमाता है, जब तुम में से कोई छींक मारे और الْحَمد لله (तमाम तारीफ़े अल्लाह के लिए है) कहे तो उसे सुनने वाले हर मुसलमान पर लाज़िम है के वह इसे يَرْحَمُکَ اللهُ (अल्लाह तुम पर रहम फरमाए) कहे, रही जिमाई तो वह शैतान की तरफ से है, जब तुम में से कोई जिमाई लेता है तो वह रोकने की मक्दोर भर कोशिश करे, क्योंकि जब तुम में से कोई जिमाई लेता है तो शैतान उस से मुस्कुराता है”| बुखारी, और सहीह मुस्लिम की रिवायत में है: “क्योंकि तुम में से कोई एक (जमाई के वक़्त) आवाज़ निकालता है तो शैतान उस से हँसता है”| (मुस्लिम)

رواه البخاری (6226 ، الرواية الاولى ، 6223 و الرواية الثانية) و مسلم (56 / 2994 الرواية الثانية)، (7490)

٤٧٣٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: " إِذا عطسَ أحدُكم فلْيقلِ: الحمدُ لِلَّهِ وَلْيَقُلْ لَهُ أَخُوهُ - أَوْ صَاحِبُهُ - يَرْحَمُكَ اللَّهُ. فإِذا قَالَ لَهُ يَرْحَمك الله فليقل: يهديكم الله وَيصْلح بالكم " رَوَاهُ البُخَارِيّ

4733. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई छींक मारे तो वह الْحَمد لله (तमाम तारीफ़े अल्लाह के लिए है) कहे और उस का मुसलमान भाई या उस का साथी इसे يَرْحَمُکَ اللهُ (अल्लाह तुम पर रहम फरमाए) कहे, जब वह इसे يَرْحَمُکَ اللهُ (अल्लाह तुम पर रहम फरमाए) कहे, तो यह (छींक मारे वाला) कहे يهديكم الله وَيصْلح بالكم (अल्लाह तुम्हें हिदायत दे और तुम्हारी हालत दुरुस्त कर दे)”| (बुखारी)

رواه البخاری (6224)

٤٧٣٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أنسٍ قَالَ: عَطَسَ رَجُلَانِ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَشَمَّتَ أَحَدَهُمَا وَلَمْ يُشَمِّتِ الْآخَرَ. فَقَالَ الرَّجُلُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ شَمَّتَّ هَذَا وَلَمْ تُشَمِّتْنِي قَالَ: «إِنَّ هَذَا حَمِدَ اللَّهَ وَلم تحمَدِ الله» . مُتَّفق عَلَيْهِ

4734. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, दो आदमियों ने नबी ﷺ के पास छींक मारी तो आप ने उनमें से एक को छींक का जवाब दिया जबकि दूसरे को ना कहा, तो इस शख़्स ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप ने उस के लिए दुआ फरमाई जबकि मेरे लिए दुआ नहीं फरमाई, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसलिए के उस ने الْحَمد لله (तमाम तारीफ़े अल्लाह के लिए है) कहा जबकि तुमने الْحَمد لله (तमाम तारीफ़े अल्लाह के लिए है) नहीं कहा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6225) و مسلم (53 / 2991)، (7486)

٤٧٣٥ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِذَا عَطَسَ أَحَدُكُمْ فَحَمِدَ اللَّهَ

فَشَمِّتُوهُ وَإِنْ لَمْ يَحْمَدِ اللَّهَ فَلَا تُشَمِّتُوهُ» . رَوَاهُ مُسلم

4735. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जब तुम में से कोई छींक मारे और الْحَمد لله (तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिए है) कहे तो तुम उसे दुआ दो, और अगर वह الْحَمد لله (तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिए है) ना कहे तो तुम उस के लिए दुआ न करो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (54 / 2992)، (7488)

٤٧٣٦ - (صَحِيح) وَعَن سلمةَ بن الْأَكْوَع أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم وَعَطَس رَجُلٌ عِنْدَهُ فَقَالَ لَهُ: «يَرْحَمُكَ اللَّهُ» ثُمَّ عَطَسَ أُخْرَى فَقَالَ: «الرَّجُلُ مَزْكُومٌ» . رَوَاهُ مُسلم وَفِي رِوَايَة التِّرْمِذِيّ أَنَّهُ قَالَ لَهُ فِي الثَّالِثَةِ: «إِنَّهُ مَزْكُومٌ»

4736. सलमा बिन अकवा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने नबी ﷺ को सुना, जबकि एक आदमी ने आप के पास छींक मारी, तो आप ﷺ ने उस के लिए कहा: يَرْحَمُکَ اللهُ (अल्लाह तुम पर रहम फरमाए) फिर उस ने दूसरी मर्तबा छींक मारी तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “बन्दे को ज़ुकाम लगा हुआ है”| और तिरमिज़ी की रिवायत में है की आप ﷺ ने इसे तीसरी मर्तबा छींक आने पर फ़रमाया के “ इसे ज़ुकाम लगा हुआ है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (55 / 2993)، (7489) و الترمذی (2743)

٤٧٣٧ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ»» : «إِذَا تَثَاءَبَ أَحَدُكُمْ فَلْيَمْسِكْ بِيَدِهِ عَلَى فَمه فإِنَّ الشيطانَ يدخلُ» . رَوَاهُ مُسلم

4737. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से किसी को जिमाई आए तो वह अपना हाथ अपने मुंह पर रखे क्योंकि शैतान (मुंह में) दाखिल हो जाता है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (57 / 2995)، (7491)

छींक मारने और जमाई लेने का बयान • بَاب العطاس والتثاؤب

दूसरी फस्ल • الْفَصْلُ الثَّانِي

٤٧٣٨ - (إِسْنَاده جيد) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كَانَ إِذَا عَطَسَ غَطَّى وَجْهَهُ بِيَدِهِ أَوْ ثَوْبِهِ وَغَضَّ بِهَا صَوْتَهُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ. وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيح

4738. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ जब छींक मारते तो आप अपने हाथ या अपने कपड़े से अपना चेहरा ढांप लेते और उस के साथ वह अपने आवाज़ पस्त करते थे| तिरमिज़ी, अबू दावुद, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2745) و ابوداؤد (5029)

٤٧٣٩ - (إِسْنَاده جيد) وَعَن أبي أَيُّوب أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " إِذا عطسَ أحدكُم فلْيقلْ: الحمدُ لله عَلَى كُلِّ حَالٍ وَلْيَقُلِ الَّذِي يَرُدُّ عَلَيْهِ: يَرْحَمك الله وَليقل هُوَ: يهديكم وَيصْلح بالكم " رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ والدارمي

4739. अबू अय्यूब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई छींक मारे तो वह कहे: الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ (हर हाल पर अल्लाह का शुक्र है), और जो शख़्स इसे जवाब दे तो वह कहे: अल्लाह तुम पर रहम फरमाए, और वह (छींक मारने वाला) कहे يهديكم الله وَيصْلح بالكم (अल्लाह तुम्हें हिदायत दे और तुम्हारी हालत दुरुस्त कर दे)”| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه الترمذی (2741) [و ابن ماجه (3715)] و الدارمی (2 / 283 ح 2662) * محمد بن ابی لیلی ضعیف و حدیث البخاری (6224) یغنی عنه

٤٧٤٠ - (إِسْنَاده جيد) وَعَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: كَانَ الْيَهُودُ يَتَعَاطَسُونَ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْجُونَ أَنْ يَقُولَ لَهُمْ: يَرْحَمُكُمُ اللَّهُ فَيَقُولُ: «يَهْدِيكُمُ اللَّهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ

4740. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, यहूद, नबी ﷺ के पास इस उम्मीद पर छींक मारा करते थे की आप उन्हें يَرْحَمُکَ اللهُ (अल्लाह तुम पर रहम फरमाए) कहे आप ﷺ कहा करते थे: “يهديكم الله وَيصْلح بالكم (अल्लाह तुम्हें हिदायत दे और तुम्हारी हालत दुरुस्त कर दे)”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه الترمذی (2739 وقال : حسن صحیح) و ابوداؤد (5038)

٤٧٤١ - (صَحِيح) وَعَن»» هلالِ بن يسَاف قَالَ: كُنَّا مَعَ سَالِمِ بْنِ عُبَيْدٍ فَعَطَسَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ فَقَالَ: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ. فَقَالَ لَهُ سَالِمٌ: وَعَلَيْكَ وَعَلَى أُمِّكَ. فَكَأَنَّ الرَّجُلَ وَجَدَ فِي نَفْسِهِ فَقَالَ: أَمَا إِنِّي لَمْ أَقُلْ إِلَّا مَا قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذْ عَطَسَ رَجُلٌ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " عَلَيْكَ وَعَلَى أُمِّكَ إِذَا عَطَسَ أَحَدُكُمْ فَلْيَقُلْ: الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَلْيَقُلْ لَهُ مَنْ يَرُدُّ عَلَيْهِ: يرحمكَ اللَّهُ وَليقل: [ص:١٣٤ يغْفر لي وَلكم " رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

4741. हिलाल बिन यसाफ बयान करते हैं, हम सालिम बिन उबैद के साथ थे की इतने में लोगों में से एक आदमी ने छींक मारा तो उस ने कहा: السَّلَامُ عَلَيْكَ (सलामती हो तुम पर)! (ये सुन कर) सालिम ने कहा: तुझ पर और

तेरी माँ पर, गोया इस आदमी ने अपने दिल में कुछ नाराज़ी महसूस की, उन्होंने ने फ़रमाया: सुन लो! मैंने तुम्हें सिर्फ वही कुछ कहा है जो नबी ﷺ ने कहा था (एक दफा) एक आदमी ने नबी ﷺ के पास छींक मारी तो उस ने कहा: السَّلَامُ عَلَيْكَ (सलामती हो तुम पर)! नबी ﷺ ने फ़रमाया: "तुझ पर और तेरी माँ पर, (फिर आप ﷺ ने फ़रमाया) जब तुम में से कोई छींक मारे तो वह اَلْحَمْدُ لِلهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ कहे, और जो इसे जवाब दे तो वह कहे يَرْحَمُکَ اللهُ (अल्लाह तुम पर रहम फरमाए) और फिर वह कहे अल्लाह मुझे और तुम्हें बख्श दे"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2740) و ابوداؤد (5031) * قال الحاكم :'' الوهم فی رواية جرير (بن عبدالحميد) هذا ظاهر فإن هلال بن يساف لم يدرک سالم بن عبيد ولم يروه و بينهما رجل مجهول '' فالسند معلل

٤٧٤٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عبيد»» بن رِفَاعَة عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم قَالَ: «شَمِّتِ الْعَاطِسَ ثَلَاثًا فَإِنْ زَادَ فَشَمِّتْهُ وَإِنْ شِئْتَ فَلَا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيب

4742. उबैद बिन रफाअ रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "छींक मारने वाले को तीन मर्तबा दुआएं जवाब दो, वह अगर उस से ज़्यादा मर्तबा छींक मारे तो फिर अगर तुम चाहो तो उसे दुआएं (जवाब) दो और अगर तुम चाहो तो (जवाब) न दो"| अबू दावुद, तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (5036) و الترمذی (2744) * عبيدة : لايعرف حالها و حميدة لم يوثقها غير ابن حبان و ابو خالد يزيد بن عبد الرحمن الدالانی مدلس و عنعن

٤٧٤٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي»» هريرةَ قَالَ: «شَمِّتْ أَخَاكَ ثَلَاثًا فَإِنْ زَادَ فَهُوَ زُكَامٌ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَقَالَ: لَا أَعْلَمُهُ إِلَّا أَنَّهُ رَفَعَ الْحَدِيثَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

4743. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं,: "अपने (मुसलमान) भाई को (छींक मारने के जवाब में) तीन बार दुआएं जवाब दो, अगर छीकों में इज़ाफा हो जाए तो वह ज़ुकाम है"| # और उन्होंने (रावी सईद अल मुक्बरी) ने कहा में उन के मुतल्लिक यही जानता हूँ कि उन्होंने हदीस को नबी ﷺ की तरफ मरफ़ुअ किया है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (5034)

بَاب العطاس والتثاؤب • छींक मारने और जमाई लेने का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٤٧٤٤ - (إِسْنَاده جيد) عَنْ نَافِعٍ: أَنَّ رَجُلًا عَطَسَ إِلَى جَنْبِ ابْن عمرَ فَقَالَ: الْحَمْدُ لِلَّهِ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ ابْنُ عُمَرَ: وَأَنَا أَقُولُ: الْحَمْدُ لِلَّهِ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ وَلَيْسَ هَكَذَا. عَلَّمَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ نَقُولَ: الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

4744. नाफेअ से रिवायत है के एक आदमी ने इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा के पहलु में छींक मारा तो कहा: “الْحَمْدُ لِلَّهِ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ (अल्लाह के लिए तमाम तारीफे हैं और रसूलुल्लाह ﷺ पर सलाम हो), (ये सुन कर) इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: मैं भी कहता हूँ: الْحَمْدُ لِلَّهِ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ (अल्लाह के लिए तमाम तारीफे है और रसूलुल्लाह ﷺ पर सलाम हो), मगर इस तरह कहना साबित नहीं है, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें सिखाया था के हम कहे الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ (हर हाल पर अल्लाह का शुक्र है)| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2738)

بَاب الضحك • हंसने का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٤٧٤٥ - (صَحِيح) عَن عائشةرضي اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: مَا رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُسْتَجْمِعًا ضَاحِكًا حَتَّى أَرَى مِنْهُ لَهَوَاتِهِ إِنَّمَا كَانَ يتبسم. رَوَاهُ البُخَارِيّ

4745. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने नबी ﷺ को खिलखिला कर हँसते हुए नहीं देखा कि मैं आप के हलक का कव्वा देख सकूं, आप तो सिर्फ मुस्कुराया करते थे| (बुखारी)

رواه البخاری (6092)

٤٧٤٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن جرير قَالَ: مَا حَجَبَنِي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُنْذُ أَسْلَمْتُ وَلَا رَآنِي إِلَّا تَبَسَّمَ. مُتَّفق عَلَيْهِ

4746. जरीर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने जब से इस्लाम कबूल किया, नबी ﷺ ने मुझे (मजलिस में

आने से) मना नहीं किया और आप जब भी मुझे देखते तो मुस्कुराते| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6089) و مسلم (134 / 2475)، (6363)

٤٧٤٧ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يَقُومُ مِنْ مُصَلَّاهُ الَّذِي يُصَلِّي فِيهِ الصُّبْحَ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ فَإِذَا طَلَعَتِ الشَّمْسُ قَامَ وَكَانُوا يَتَحَدَّثُونَ فَيَأْخُذُونَ فِي أَمْرِ الْجَاهِلِيَّة فيضحكون ويبتسم صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ. وَفِي رِوَايَة لِلتِّرْمِذِي: يتناشدون الشِّعْرَ

4747. जाबिर बिन समुराह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ जिस जगह नमाज़ पढ़ते तो वहां से तुलुए आफ़ताब तक नहीं उठते थे, और जब सूरज तुलुअ हो जाता तो आप खड़े होते, और (इस दोरान) सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन बाते करते और उमुरे जाहिलियत पर गुफ्तगू किया करते और हँसते थे जबकि आप ﷺ फ़क़त तबस्सुम फ़रमाया करते थे| और तिरमिज़ी की रिवायत में है वह शेर पढ़ा करते थे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (69 / 2322)، (6035) و الترمذى (2850 وقال : حسن صحيح)

• بَاب الضحك — हंसने का बयान

• الْفَصْل الثَّانِي — दूसरी फस्ल

٤٧٤٨ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ جَزْءٍ قَالَ: مَا رَأَيْتُ أَحَدًا أَكْثَرَ تَبَسُّمًا مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

4748. अब्दुल्लाह बिन हारिस बिन जज़अ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से ज़्यादा किसी को मुस्कुराते हुए नहीं देखा| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (3641 وقال : غريب ابن لهيعة عنعن)

بَاب الضحك • हंसने का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٤٧٤٩ - (لم تتمّ دراسته) عَن قتادةَ قَالَ: سُئِلَ ابْنُ عُمَرَ: هَلْ كَانَ أَصْحَابُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَضْحَكُونَ؟ قَالَ: نَعَمْ وَالْإِيمَانُ فِي قُلُوبِهِمْ أَعْظَمُ مِنَ الْجَبَلِ. وَقَالَ بِلَالُ بْنُ سَعْدٍ: أَدْرَكْتُهُمْ يَشْتَدُّونَ بَيْنَ الْأَغْرَاضِ وَيَضْحَكُ بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ فَإِذَا كَانَ اللَّيْلُ كَانُوا رُهْبَانًا. رَوَاهُ فِي «شَرْحِ السّنة»

4749. क़तादाह रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से दरियाफ्त किया गया: क्या रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबा हंसा करते थे? उन्होंने ने फ़रमाया: हां, और उन के दिलों में ईमान पहाड़ से भी ज़्यादा अज़ीम था, और बिलाल बिन साद रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, वह तीर अन्दाज़ी करते थे और एक दूसरे की तरफ देख कर हँसते थे, और जब रात हो जाती तो वह राहिब (यानी तारीके दुनिया) बन जाते थे (अल्लाह की इबादत में मसरूफ हो जाते थे)| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه البغوى فى شرح السنة (12 / 318 قبل ح 3352 بدون سند) * لم اجد له سندًا متصلاً فهو مردود و حديث مسلم (670)، (1525) و البخارى (الادب المفرد : 266) يغنى عنه

بَاب الْأَسَامِي • नामों का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٤٧٥٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي السُّوقِ فَقَالَ رَجُلٌ: يَا أَبَا الْقَاسِمِ فَالْتَفَتَ إِلَيْهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: إِنَّمَا دَعَوْتُ هَذَا. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم: «سموا باسمي وَلَا تكنوا بكنيتي» . مُتَّفق عَلَيْهِ

4750. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ बाज़ार में थे की किसी आदमी ने कहा: अबुल कासिम! जब नबी ﷺ उसकी तरफ मुतवज्जे हुए तो उस ने कहा: मैंने तो उसे बुलाया था, तब नबी ﷺ ने फ़रमाया: “मेरे नाम पर नाम रखो लेकिन मेरी कुनियत पर कुनियत मत रखो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (2120) و مسلم (1 / 2131)، (5586)

٤٧٥١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ جَابِرٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «سموا باسمي وَلَا تكنوا بِكُنْيَتِي فَإِنِّي إِنَّمَا جُعِلْتُ

قَاسِمًا أَقْسِمُ بَيْنَكُمْ» مُتَّفق عَلَيْهِ

4751. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “मेरे नाम पर नाम रखो और मेरी कुनियत पर कुनियत मत रखो, क्योंकि मुझे तो कासिम बनाया गया है, मैं तुम्हारे मबिन तकसीम करता हूँ”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3114) و مسلم (4 / 2133)، (5589)

٤٧٥٢ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ أَحَبَّ أَسْمَائِكُمْ إِلَى اللَّهِ: عَبْدُ اللَّهِ وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ " رَوَاهُ مُسلم

4752. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम्हारे नामों में से अब्दुल्लाह और अब्दुल रहमान अल्लाह को ज़्यादा पसंद है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (2 / 2132)، (5587)

٤٧٥٣ - (صَحِيح) وَعَن سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: " لَا تسمين غُلَامًا يسارا وَلَا رباحا ولانجيحا وَلَا أَفْلَحَ فَإِنَّكَ تَقُولُ: أَثَمَّ هُوَ؟ فَلَا يَكُونُ فَيَقُولُ لَا " رَوَاهُ مُسْلِمٌ. وَفِي رِوَايَةٍ لَهُ قَالَ: «لَا تسم غُلَاما رَبَاحًا وَلَا يَسَارًا وَلَا أَفْلَحَ وَلَا نَافِعًا»

4753. समुरह बिन जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अपने गुलाम (बच्चे या गुलाम) का नाम यस्सार (आसानी), रबाह (मुनाफ़ी) नजीह (कामियाब) और अफलह (फौज व फलाह) मत रखो, क्योंकि तुम कहोगे: क्या यह यहाँ है? वह नहीं होगा तो कहने वाला कहेगा: वह नहीं है”| और उन्हें की रिवायत में है फ़रमाया: “अपने गुलाम का रबाह, यस्सार, अफलह और नाफेअ नाम न रखो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (12 ، 11 / 2137)، (5601)

٤٧٥٤ - (صَحِيح) وَعَن جَابر قَالَ أَرَادَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَنْهَى عَنْ أَنْ يُسَمَّى بِيَعْلَى وَبِبَرَكَةَ وَبِأَفْلَحَ وَبِيَسَارٍ وَبِنَافِعٍ وَبِنَحْوِ ذَلِكَ. ثُمَّ سَكَتَ بَعْدُ عَنْهَا ثُمَّ قُبِضَ وَلَمْ يَنْهَ عَنْ ذَلِك. رَوَاهُ مُسلم

4754. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने इरादा फ़रमाया के वह यअली, बरका (बरकत), अफलह, यस्सार, नाफेअ और इस तरह के नाम रखने से मना फरमादे, फिर मैंने आप को देखा के आप ने बाद में उस से ख़ामोशी इख़्तियार फरमाई, फिर आप ﷺ वफात पा गए और उस से मना न फ़रमाया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (13 / 2138)، (5603)

٤٧٥٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَخْنَى الْأَسْمَاءِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِنْدَ اللَّهِ رَجُلٌ يُسَمَّى مَلِكَ الْأَمْلَاكِ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ. وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ قَالَ: «أَغْيَظُ رَجُلٍ عَلَى اللَّهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَأَخْبَثُهُ رَجُلٌ كَانَ يُسَمَّى مَلِكَ الْأَمْلَاكِ لَا مَلِكَ إِلَّا لله»

4755. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रोज़ ए कियामत अल्लाह के यहाँ इस शख़्स का नाम सबसे ज़्यादा कबिह होगा जिस का नाम शहंशाह रखा गया हो”| बुखारी, और मुस्लिम की रिवायत में है फ़रमाया: “रोज़ ए कियामत अल्लाह के यहाँ वह शख़्स सबसे ज़्यादा नाराज़कुन और खबीस नाम वाला होगा जिस का नाम शहंशाह रखा गया होगा हालाँकि शहंशाह तो सिर्फ अल्लाह ही है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6206) و مسلم (21 ، 20 / 2143)، (5610 و 5611)

٤٧٥٦ - (صَحِيح) وَعَن زينبَ بنتِ أبي سلَمةَ قَالَتْ: سُمِّيتُ بَرَّةَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ «لَا تُزَكُّوا أَنْفُسَكُمْ اللَّهُ أَعْلَمُ بِأَهْلِ الْبِرِّ مِنْكُمْ سَمُّوهَا زَيْنَبَ» . رَوَاهُ مُسلم

4756. ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, मेरा नाम बरह रखा गया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम अपने तारीफ़ खुद न किया करो तुम में से जो नेक है, अल्लाह उन्हें खूब जानता है उस का नाम जैनब रखो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (19 / 2142)، (5609)

٤٧٥٧ - (صَحِيح) وَعَن ابنِ عبَّاسٍ قَالَ: كَانَتْ جُوَيْرِيَةُ اسْمُهَا بَرَّةُ فَحَوَّلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اسْمَهَا جُوَيْرِيَةَ وَكَانَ يَكْرَهُ أَنْ يُقَالَ: خَرَجَ مِنْ عِنْدِ برة. رَوَاهُ مُسلم

4757. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जुरियह रदियल्लाहु अन्हु का नाम बरह था, रसूलुल्लाह ﷺ ने उनका नाम बदल कर जुरियह रख दिया, और आप ﷺ नापसंद करते थे के यूँ कहा जाए: वह बरह के पास से चले गए है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (16 / 2140)، (5606)

٤٧٥٨ - (صَحِيح) وَعَن ابْن عمر أَنَّ بِنْتًا كَانَتْ لِعُمَرَ يُقَالُ لَهَا: عَاصِيَةُ فَسَمَّاهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جميلَة. رَوَاهُ مُسلم

4758. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के उमर रदियल्लाहु अन्हु की एक बेटी को आसिया कहा

जाता था, रसूलुल्लाह ﷺ ने उस का नाम जमीला रख दिया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (15 / 2139)، (5605)

٤٧٥٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ أُتِيَ بِالْمُنْذِرِ بْنِ أَبِي أَسَيْدٍ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ وُلِدَ فَوَضعه على فَخذه فَقَالَ: «وَمَا اسْمه؟» قَالَ: فلَان: «لاولكن اسْمه الْمُنْذر» . مُتَّفق عَلَيْهِ

4759. सहल बिन साद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मुन्ज़िर बिन अबी असिदी जब पैदा हुए तो उसे नबी ﷺ की खिदमत में लाया गया, आप ﷺ ने इसे अपने रान पर रखा और फ़रमाया: “उस का नाम क्या है?” उस ने कहा फलां, आप ﷺ ने फ़रमाया: “नहीं, बल्कि उस का नाम मुन्ज़िर है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6191) و مسلم (29 / 2149)، (5621)

٤٧٦٠ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَا يَقُولَنَّ أَحَدُكُمْ عَبدِي وَأمتِي كلكُمْ عباد اللَّهِ وَكُلُّ نِسَائِكُمْ إِمَاءُ اللَّهِ. وَلَكِنْ لِيَقُلْ: غُلَامِي وَجَارِيَتِي وَفَتَايَ وَفَتَاتِي. وَلَا يَقُلِ الْعَبْدُ: رَبِّي ولكنْ ليقلْ: سَيِّدِي " وَفِي رِوَايَةٍ: " لِيَقُلْ: سَيِّدِي وَمَوْلَايَ ". وَفِي رِوَايَةٍ: " لَا يَقُلِ الْعَبْدُ لِسَيِّدِهِ: مَوْلَايَ فَإِنَّ مولاكم اللَّهُ ". رَوَاهُ مُسلم

4760. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम में से कोई यूँ न कहे मेरे बंदे (गुलाम) मेरी बंदी (लोंदी), तुम सब अल्लाह के बंदे और गुलाम हो जबकि तुम्हारी सब औरतें अल्लाह की लोंदिया है, बल्कि तुम यूँ कहा करो: मेरे लड़के, मेरी लड़की, और गुलाम भी यूँ न कहे: मेरे रब! बल्कि यूँ कहे मेरे आका”| एक दूसरी रिवायत में है वह यूँ कहे: मेरे सय्यिद, मेरे मौला”, एक दूसरी रिवायत में है: “गुलाम अपने आका से मेरे मौला न कहे, क्योंकि तुम्हारा मौला अल्लाह है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (13 / 2249 ، الرواية الثانية 15 / 2249 ، و الثالثة 14 / 2249)، (5874 و 5875 و 5877)

٤٧٦١ - (صَحِيح) وَعَنْهُ»» عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم قَالَ: " لَا تَقُولُوا: الْكَرْمُ فَإِنَّ الْكَرْمَ [ص:١٣٤ قَلْبُ الْمُؤمن ". رَوَاهُ مُسلم

4761. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम (अंगूर को) “कर्म” न कहो क्योंकि “कर्म” तो कल्बे मोमिन है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (7 / 2247)، (5868)

٤٧٦٢ - (صَحِيح) وَفِي»» رِوَايَةٍ لَهُ عَنْ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ قَالَ: " لَا تَقُولُوا: الْكَرْمُ وَلَكِنْ قُولُوا: الْعِنَبُ والحبلة "

4762. और मुस्लिम ही की वाइल बिन हुज्र रदियल्लाहु अन्हु से मरवी हदीस में है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम “कर्म” न कहो, बल्कि तुम इनब और हबलह (अंगूर) कहो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (12 / 2248)، (5873)

٤٧٦٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَا تُسَمُّوا الْعِنَبَ الْكَرْمَ وَلَا تَقُولُوا: يَا خَيْبَةَ الدَّهْرِ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الدهرُ ". رَوَاهُ البُخَارِيّ

4763. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम अंगूर का नाम “कर्म” रखो न ज़माने को बुरा कहो क्योंकि अल्लाह ही तो ज़माना है”| (बुखारी)

رواه البخاری (6182)

٤٧٦٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَسُبَّ أَحَدُكُمُ الدَّهْرَ فَإِنَّ اللَّهَ هوَ الدَّهْر» . رَوَاهُ مُسلم

4764. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम में से कोई ज़माने को बुरा भुला न कहे, क्योंकि अल्लाह ही तो ज़माना है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (6 / 2247)، (5867)

٤٧٦٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَا يَقُولَنَّ أَحَدُكُمْ: خَبُثَتْ نَفْسِي وَلَكِنْ لِيَقُلْ: لَقِسَتْ نَفْسِي ". مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ»» وَذُكِرَ حديثُ أبي هريرةَ: «يُؤذيني ابنُ آدمَ» فِي «بَاب الْإِيمَان»

4765. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम में से कोई शख़्स यह न कहे मेरा नफ्स (दिल) खबीस हो गया बल्कि यूँ कहे मेरा नफ्स बोझल हो गया”| # और अबू हुरैरा (र) से मरवी हदीस: “इब्ने आदम मुझे तकलीफ पहुंचाता है” بَاب الْإِيمَان (ईमान का बयान) में ज़िक्र हो चुकी है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6179) و مسلم (16 / 2250)، (5878) 0 حدیث ’’ یؤذینی ابن آدم ‘‘ تقدم (22)

بَاب الْأَسَامِي • नामों का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٤٧٦٦ - (إِسْنَاده جيد) عَن شُرَيْح بن هَانِئ عَن أَبِيهِ أَنَّهُ لَمَّا وَفَدَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم مَعَ قَوْمِهِ سَمِعَهُمْ يُكَنُّونَهُ بِأَبِي الْحَكَمِ فَدَعَاهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَكَمُ فَلِمَ تُكَنَّى أَبَا الْحَكَمِ؟» قَالَ: إِنَّ قَوْمِي إِذَا اخْتَلَفُوا فِي شَيْءٍ [ص:١٣٤] أَتَوْنِي فَحَكَمْتُ بَيْنَهُمْ فَرَضِيَ كِلَا الْفَرِيقَيْنِ بِحُكْمِي. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا أَحْسَنَ هَذَا فَمَا لَكَ مِنَ الْوَلَدِ؟» قَالَ: لِي شُرَيْحٌ وَمُسْلِمٌ وَعَبْدُ اللَّهِ»» قَالَ: «فَمَنْ أَكْبَرُهُمْ؟» قَالَ قُلْتُ: شُرَيْحٌ. قَالَ فَأَنْتَ أَبُو شُرَيْحٍ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

4766. शरीह बिन हानी अपने वालिद से रिवायत करते हैं की जब वह अपनी कौम के साथ रसूलुल्लाह ﷺ के पास आए तो आप ने उन्हें सुना के वह मेरे वालिद को अबिल हकम की कुनियत से पुकारते है, रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें बुलाकर फ़रमाया: “बेशक अल्लाह ही हकम है और हुक्म का इख़्तियार इसे ही हासिल है, तुम्हारी कुनियत अबिल हकम क्यों रखी गई ?” उस ने कहा जब मेरी कौम में किसी चीज़ में इख्तिलाफ हो जाता तो वह मेरे पास आते और मैं उन के दरमियान फैसला कर देता हूँ तो वह दोनों फरीक मेरे फैसले पर राज़ी हो जाते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ये कितना अच्छा है, तेरे कितने बच्चे है?” उस ने कहा शरीह, मुस्लिम और अब्दुल्लाह आप ﷺ ने फ़रमाया: “उन में से बड़ा कौन है” रावी बयान करते हैं, मैंने कहा शरीह आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम अबू शरीह हो”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4955) و النسائی (8 / 226227 ح 5389)

٤٧٦٧ - (ضَعِيف) وَعَن»» مسروق قَالَ: لَقِيتُ عُمَرَ فَقَالَ: مَنْ أَنْتَ؟ قُلْتُ: مَسْرُوقُ بْنُ الْأَجْدَعِ. قَالَ عُمَرُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «الْأَجْدَعُ شيطانٌ» رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وابنُ مَاجَه

4767. मसरुक बयान करते हैं, मैं उमर रदियल्लाहु अन्हु से मिला तो उन्होंने ने फ़रमाया: तुम कौन हो? मैंने कहा मसरुक बिन अजदअ, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “अजदअ शैतान (का नाम) है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (4957) و ابن ماجه (3731) * فيه مجالد بن سعيد وهو ضعيف من جهة سوء حفظه

٤٧٦٨ - (ضعيفٌ) وَعَنْ»» أَبِي الدَّرْدَاءِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تُدْعَوْنَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِأَسْمَائِكُمْ وَأَسْمَاءِ آبَائِكُمْ فَأَحْسِنُوا أسمائكم» رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد

4768. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रोज़ ए कियामत तुम्हें तुम्हारे और तुम्हारे आबाअ के नाम से पुकारा जाएगा, अपने नाम अच्छे रखो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (5 / 194 ح 22035) و ابوداؤد (4948) * قال ابو حاتم الرازى ’’ عبدالله بن ابى زكريا لم يسمع ابا الدرداء ‘‘

٤٧٦٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» هُرَيْرَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ نَهَى أَنْ يَجْمَعَ أَحَدٌ بَيْنَ اسْمه وكُنيتِه وَيُسمى أَبَا الْقَاسِم. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4769. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने उस से मना फ़रमाया के कोई शख़्स अपने नाम और अपने कुनियत को इस तरह इकट्ठा कर के मुहम्मद अबुल कासिम नाम रख ले| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذى (2841 وقال : حسن صحيح)

٤٧٧٠ - (مُنكر) وَعَنْ»» جَابِرٌ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَ: «إِذَا سَمَّيْتُمْ بِاسْمِي فَلَا تَكْتَنُوا بِكُنْيَتِي» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ. وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ. وَفِي رِوَايَةِ أَبِي دَاوُدَ قَالَ: «مَن تسمَّى باسمي فَلَا يَكْتَنِ بِكُنْيَتِي وَمَنْ تَكَنَّى بِكُنْيَتِي فَلَا يَتَسَمَّ باسمي»

4770. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जब तुम मेरे नाम पर नाम रखो तो फिर मेरी कुनियत पर कुनियत मत रखो”| और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है, और अबू दावुद की रिवायत में है, फ़रमाया: “जिस ने मेरे नाम पर नाम रखा तो वह मेरी कुनियत न रखे, और जिस ने मेरी कुनियत पर कुनियत रखी तो वह मेरे नाम पर नाम न रखे”| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذى (2842) و ابن ماجه (3535) و ابوداؤد (4966)

٤٧٧١ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ»» عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ امْرَأَةً قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي وَلَدْتُ غُلَامًا فَسَمَّيْتُهُ مُحَمَّدًا وَكَنَّيْتُهُ أَبَا الْقَاسِمِ فَذُكِرَ لِي أَنَّكَ تَكْرَهُ ذَلِكَ. فَقَالَ: «مَا الَّذِي أَحَلَّ اسْمِي وَحرم كنيتي؟ أَو ماالذي حَرَّمَ كُنْيَتِي وَأَحَلَّ اسْمِي؟» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ. وَقَالَ محيي السّنة: غَرِيب

4771. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के एक औरत ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मेरे वहां एक बच्चा पैदा हुआ है और मैंने उस का नाम मुहम्मद और उसकी कुनियत अबुल कासिम रखी है, लेकिन मुझे पता चला है के आप इसे नापसंद फरमाते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “कौन है के जिस ने हलाल करार दिया मेरा नाम रखना और हराम किया मेरी कुनियत रखना, या कौन है के जिस ने हराम किया मेरी कुनियत रखना और हलाल किया

मेरा नाम रखना ?” अबू दावुद, और मुह्यी अल सुन्नी रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4968) * فيه محمد بن عمران الحجبى : مستور

٤٧٧٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن مُحَمَّد»» بن الحنفيَّةِ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَأَيْتَ إِنْ وُلِدَ لِي بَعْدَكَ وَلَدٌ أَسَمِّيهِ بِاسْمِكَ وَأُكَنِّيهِ بِكُنْيَتِكَ؟ قَالَ: «نَعَمْ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4772. मुहम्मद बिन हनफिया अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मुझे बताइए अगर आप के बाद मेरे वहां बच्चा पैदा हो तो में आप के नाम पर उसका नाम और आप की कुनियत पर उसकी कुनियत रख लूँ? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4967)

٤٧٧٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أنس»» قَالَ: كَنَّانِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ بِبَقْلَةٍ كُنْتُ أَجْتَنِيهَا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ لَا نَعْرِفُهُ إِلَّا مِنْ هَذَا الْوَجْه. وَفِي «المصابيح» صَححهُ

4773. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं एक बोटी चुना करता था, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उस पर मेरी कुनियत (अबू हम्ज़ा) रखी| इसे तिरमिज़ी ने बयान किया और फ़रमाया इस हदीस को हम सिर्फ इसी तरीक से जानते हैं, और मसाबिह में है की उस ने इसे सहीह करार दिया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه الترمذى (3830 ولم يصححه فى نسختنا ، بل قال : غريب) و ذكره البغوى فى مصابيح السنة (3 / 307 ح 3708)
* فيه جابر الجعفى : ضعيف رافضى مدلس و شيخه ابو نصر خيثمة بن ابى خيثمة : لين الحديث

٤٧٧٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ»» رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ كَانَ يُغَيِّرُ الِاسْم الْقَبِيح. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4774. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, के नबी ﷺ बुरा नाम तब्दील कर दिया करते थे| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذى (2839)

٤٧٧٥ - (إِسْنَاده جيد) وَعَن بشير بن مَيْمُون عَن أَسَامَةَ بْنِ أَخْدَرِيٍّ أَنَّ رَجُلًا يُقَالُ لَهُ أَصْرمُ كانَ فِي النَّفرِ الَّذِينَ أَتَوْا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا اسْمك؟» قَالَ: «بَلْ أَنْتَ زُرْعَةُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

4775. बशीर बिन मय्मुन अपने चचा उसामा बिन अख्दरी से रिवायत करते हैं की असरम नामी एक आदमी उन लोगों में शामिल था जो रसूलुल्लाह ﷺ के पास आए थे, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम्हारा नाम क्या है?” उस ने कहा: असरम, आप ﷺ ने फ़रमाया: “नहीं? बल्कि तुम ज़ुरअ हो”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4954)

٤٧٧٦ - (لم تتمّ دراسته) وَقَالَ:»» وَغَيَّرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اسْمَ الْعَاصِ وعزيز وَعَتَلَةَ وَشَيْطَانٍ وَالْحَكَمِ وَغُرَابٍ وَحُبَابٍ وَشِهَابٍ وَقَالَ: تركت أسانيدها للاختصار

4776. और अबू दावुद ने कहा, और नबी ﷺ ने आस, अज़ीज़, अत्लह, शैतान हकम, गुराब, हुबाब और शिहाब नाम बदल दिए थे और उन्होंने कहा: मैंने इख्तिसार की खातिर उनकी इसनाद बयान नहीं है| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (4956)

٤٧٧٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي»» مسعودٍ الأنصاريِّ قَالَ لِأَبِي عَبْدِ اللَّهِ أَوْ قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ لِأَبِي مَسْعُودٍ: مَا سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ فِي (زَعَمُوا)»» قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «بِئْسَ مَطِيَّةُ الرَّجُلِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَقَالَ: إِنَّ أَبَا عَبْدِ اللَّهِ حُذَيْفَة

4777. अबू मसउद अंसारी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है उन्होंने अबू अब्दुल्लाह से या अबू अब्दुल्लाह ने अबू मसउद से कहा तुमने लफ्ज़ “ ज़अमु” (लोगो का ख़याल) है के बारे में रसूलुल्लाह ﷺ को क्या फरमाते हुए सुना? उन्होंने कहा: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “आदमी का ऐसे अंदाज़ में गुफ्तगू करना बुरा है”| अबू दावुद, और उन्होंने कहा: अबू अब्दुल्लाह से मुराद हुज़ैफ़ा हैं| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (4972)

٤٧٧٨ - (صَحِيح) وَعَنْ»» حُذَيْفَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " لَا تَقُولُوا: مَا شَاءَ اللَّهُ وَشَاءَ فُلَانٌ وَلَكِنْ قُولُوا: مَا شَاءَ اللَّهُ ثُمَّ شَاءَ فلَان ". رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد

4778. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “यूँ न कहा करो जो अल्लाह चाहे और फलां चाहे, बल्कि यूँ कहो जो अल्लाह चाहे फिर फलां चाहे”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه احمد (5 / 384 ح 23654) و ابوداؤد (4980)

٤٧٧٩ - (لم تتمّ دراسته) وَفِي رِوَايَةٍ»» مُنْقَطِعًا قَالَ: " لَا تَقُولُوا: مَا شَاءَ اللَّهُ وَشَاءَ مُحَمَّدٌ وَقُولُوا مَا شَاءَ اللَّهُ وحْدَه «. رَوَاهُ فِي» شرح السّنة "

4779. और एक मुन्कतेअ रिवायत में है, फ़रमाया: “यूँ न कहा करो जो अल्लाह चाहे और जो मुहम्मद ﷺ चाहे, बल्कि यूँ कहा करो को अकेला अल्लाह चाहे”| (हसन)

حسن ، رواه البغوی فی شرح السنة (12 / 361 بعد ح 3389 بدون سند وقال : باسناد منقطع) * و للحديث شواهد منها الحديث السابق (4778) و شاهد آخر عند ابن ماجه (2117) و النسائی فی عمل اليوم و الليلة (988 ، السنن الکبری : 10825) و سنده حسن

٤٧٨٠ - (صَحِيح) وَعَنْهُ»» عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا تَقُولُوا لِلْمُنَافِقِ سَيِّدٌ فَإِنَّهُ إِنْ يَكُ سَيِّدًا فَقَدْ أَسْخَطْتُمْ رَبَّكُمْ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4780. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुनाफ़िक़ के लिए लफ़्ज़े सय्यिद (आका) न कहो, क्योंकि अगर वह सय्यिद (सरदार आका) है तो तुमने अपने रब को नाराज़ कर दिया”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4977) * قتادة مدلس و عنعن و لحديثه شاهد ضعيف عند الحاکم (4 / 311)

بَاب الْأَسَامِي • नामों का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٤٧٨١ - (صَحِيح) عَنْ»» عَبْدِ الْحَمِيدِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ شَيْبَةَ قَالَ: جَلَسْتُ إِلَى سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ فَحَدَّثَنِي أَنَّ جَدَّهُ حَزْنًا قَدِمَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «مَا اسْمُكَ؟» قَالَ: اسْمِي حَزْنٌ قَالَ: «بَلْ أَنْتَ سَهْلٌ» قَالَ: مَا أَنَا بِمُغَيِّرٍ اسْمًا سَمَّانِيهِ أَبِي. قَالَ ابْنُ الْمُسَيَّبِ: فَمَا زَالَتْ فِينَا الْحُزُونَةُ بَعْدُ. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

4781. अब्दिल हुमैद बिन ज़ुबैर बिन शैबा बयान करते हैं, मैं सईद बिन मुसय्यिब के पास बैठा था, उन्होंने मुझे हदीस बयान की के उन के दादा हज़न, नबी ﷺ के पास आए तो आप ﷺ ने दरियाफ्त फ़रमाया: “तुम्हारा नाम क्या है?” उस ने कहा मेरा नाम हज़न है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “(नहीं) बल्कि तुम सहल हो”, उस ने कहा में अपने वालिद के रखे हुए नाम को तब्दील नहीं करूँगा इब्ने मुसय्यिब ने फ़रमाया: उस के बाद हम में “हुज़ुनत” (सख्ती) बरक़रार रही| (बुखारी)

رواه البخاری (6190)

٤٧٨٢ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» أَبِي وَهَبٍ الْجُشَمِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَسَمُّوا أَسْمَاءَ الْأَنْبِيَاءِ وَأَحَبُّ الْأَسْمَاءِ إِلَى اللَّهِ عَبْدُ اللَّهِ وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ وَأَصْدَقُهَا حَارِثٌ وهمامٌ أقبحها حربٌ ومُرَّة» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4782. अबू वहब जश्मी बयान करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अंबिया अलैहिस्सलाम के नामों पर नाम रखा करो, अल्लाह के यहां पसंदीदा नाम अब्दुल्लाह और अब्दुल रहमान है, सबसे सच्चा नाम हारिस और हम्माम है जबकि सबसे कबिह नाम हरबी और मरह है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4950) [و النسائی (3595)] * فيه عقيل : مجهول

بَاب الْبَيَان وَالشعر • तकरीर और शेरो शायरी का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٤٧٨٣ - (صَحِيح) عَن ابْن عمر قَالَ: قَدِمَ رَجُلَانِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَخَطَبَا فَعَجِبَ النَّاسُ لِبَيَانِهِمَا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ مِنَ الْبَيَانِ لَسِحْرًا» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

4783. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, दो आदमी मशरिक की (जानब) से आए और उन्होंने ख़िताब किया, लोगों ने उन के बयान पर ताज्जुब किया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक बाज़ बयान जादू कि सी असर रखते है”| (बुखारी)

رواه البخاری (5767)

٤٧٨٤ - (صَحِيح) وَعَنْ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ مِنَ الشِّعْرِ حِكْمَةً» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

4784. उबई बिन काब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक बाज़ शेर हिकमत से भरे होते हैं”| (बुखारी)

رواه البخاری (6145)

٤٧٨٥ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هَلَكَ الْمُتَنَطِّعُونَ» . قَالَهَا ثَلَاثًا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

4785. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तकलीफ से कलाम करने वाले

हलाक हो गए”, आप ने तीन मर्तबा यही फ़रमाया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (7 / 2670)، (6784)

٤٧٨٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " أَصَدِّقُ كَلِمَةٍ قَالَهَا الشَّاعِرُ كَلِمَةُ لَبِيدٍ: أَلَا كُلُّ شَيْءٍ مَا خَلَا اللَّهَ بَاطِلُ ". مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

4786. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सबसे ज़्यादा दुरुस्त बात जो किसी शायर ने की है वह लबीद शायर की यह बात है, أَلَا كُلُّ شَيْءٍ مَا خَلَا اللَّهَ بَاطِلُ (सुन लो! अल्लाह के सिवा हर चीज़ फानी है)”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6147) و مسلم (3 / 2256)، (5889)

٤٧٨٧ - (صَحِيح) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ الشَّرِيدِ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: رَدِفْتُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمًا فَقَالَ: «هَلْ مَعَكَ مِنْ شِعْرِ أُمَيَّةَ بْنِ أَبِي الصَّلْتِ شَيْءٌ؟» قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: «هِيهِ» [ص:١٣٥ فَأَنْشَدْتُهُ بَيْتًا. فَقَالَ: «هيهِ» ثمَّ أنشدته بَيْتا فَقَالَ: «هيه» ثمَّ أنشدته مائَة بَيت. رَوَاهُ مُسلم

4787. अमर बिन शरीद अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: में एक रोज़ रसूलुल्लाह ﷺ के पीछे सवार था आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम्हें उमय्य बिन अबी स्वलय्त का कोई शेर याद है” मैंने अर्ज़ किया: जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “सुनाओ !‘‘ मैंने आप को एक शेर सुनाया, आप ﷺ ने फ़रमाया: “और सुनाओ !‘‘ फिर मैंने आप को एक और शेर सुनाया आप ﷺ ने फ़रमाया: “और सुनाओ !‘‘ हत्ता के मैंने आप को सौ शेर सुनाए| (मुस्लिम)

رواه مسلم (1 / 2255)، (5885)

٤٧٨٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن جُنْدُبٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ فِي بَعْضِ الْمَشَاهِدِ وَقَدْ دَمِيَتْ أَصْبُعُهُ فَقَالَ:»« هَلْ أَنْتِ إِلَّا أُصْبُعٌ دَمِيتِ وَفِي سَبِيلِ الله مَا لقِيت»» مُتَّفق عَلَيْهِ

4788. जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ किसी गज़वा में शरीक थे की आप की ऊँगली से खून निकलने लगा तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “एक ऊँगली ही तो हो जो खून आलूद हुई है और तुझे जो तकलीफ पहुंची है के अल्लाह की राहे में है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (2802) و مسلم (112 / 1796)، (4654)

٤٧٨٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن البَراءِ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ قُرَيْظَةَ لِحَسَّانَ بْنِ ثَابِتٍ: «اهْجُ الْمُشْرِكِينَ فَإِنَّ جِبْرِيلَ مَعَكَ» وَكَانَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ لِحَسَّانَ: «أَجِبْ عَنِّي اللَّهمَّ أَيِّدْه بروحِ الْقُدس» . مُتَّفق عَلَيْهِ

4789. बराअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने बनू कुरैज़ा (के मुहासरे) के दिन हस्सान बिन साबित रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: “मुशरिको की शेर बयान करो अल्लाह (की नुसरत) तुम्हारे साथ है” और रसूलुल्लाह ﷺ हस्सान रदियल्लाहु अन्हु से फरमा रहे थे: “मेरी तरफ से जवाब दो, ऐ अल्लाह! जिब्राइल अलैहिस्सलाम के ज़रिए उसकी मदद फरमा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (3212) و مسلم (51 / 2485)، (6384)

٤٧٩٠ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «اهْجُوا قُرَيْشًا فَإِنَّهُ أَشَدُّ عَلَيْهِمْ مِنْ رَشْقِ النَّبْلِ» . رَوَاهُ مُسلم

4790. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के उन्होंने कहा: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “कुरैश की शेर बयान करो क्योंकि यह इन पर तीर अन्दाज़ी से भी ज़्यादा शदीद है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (157 / 2490)، (6395)

٤٧٩١ - (صَحِيح) وَعَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ لِحَسَّانَ: «إِنَّ رُوحَ الْقُدُسِ لَا يَزَالُ يُؤَيِّدُكَ مَا نَافَحْتَ عَنِ اللَّهِ وَرَسُوله» . سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «هَجَاهُمْ حَسَّانُ فَشَفَى وَاشْتَفَى» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

4791. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को हस्सान रदियल्लाहु अन्हु से फरमाते हुए सुना: “जब तक तुम अल्लाह और उस के रसूल ﷺ के दिफ़ाअ में मुशरिकीन की हिजो करते रहते हो इस वक़्त तक जिब्राइल अलैहिस्सलाम तुम्हारी मदद करते रहते है”, आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने कहा मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “हस्सान ने उनकी हिजो बयान की और मुसलमानों को सुकून पहुँचाया और खुद भी सुकून पाया”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (157 / 2490)، (6395)

٤٧٩٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنِ الْبَرَّاءِ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَنْقُلُ التُّرَابَ يَوْمَ الْخَنْدَقِ حَتَّى اغْبَرَّ بَطْنُهُ يَقُولُ:»» وَاللَّهِ لَوْلَا اللَّهُ مَا اهْتَدَيْنَا وَلَا تَصَدَّقْنَا وَلَا صلَّينا»» فأنزلنْ سكينَة علينا وثبِّتِ الْأَقْدَام إن لاقينا»» إنَّ الأولى

قَدْ بَغَوْا عَلَيْنَا إِذَا أَرَادُوا فِتْنَةً أَبَيْنَا»»   يَرْفَعُ بِهَا صَوْتَهُ: «أَبَيْنَا أَبَيْنَا» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

4792. बराअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ खंदक के रोज़ मिट्टी उठा रहे थे हत्ता के उनका पट गुबार आलूद हो गया आप ﷺ (अशआर) कह रहे थे: “अल्लाह की क़सम! अगर अल्लाह हमें हिदायत न देते तो हम हिदायत याफ्ता न होते, सदका देते और ना ही नमाज़ पढ़ते, हम पर सकिनत नाज़िल फरमाता जब हम उन (दुश्मनाने दिन) से मिली, तो हमें साबित कौम रख क्योंकि उन्होंने हम पर ज़्यादती की है, जब भी उन्होंने फितने का इरादा किया तो हमने इनकार किया”, आप लफ्ज़ “हमने इनकार किया, हमने इनकार किया” पर आवाज़ बुलंद फरमाते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (4104) و مسلم (125 / 1803)، (4670)

٤٧٩٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أنسٍ قَالَ: جَعَلَ الْمُهَاجِرُونَ وَالْأَنْصَارُ يَحْفِرُونَ الْخَنْدَقَ وَيَنْقُلُونَ الترابَ وهم يَقُولُونَ:»» نَحن الذينَ بَايعُوا محمَّداً عَلَى الْجِهَادِ مَا بَقِينَا أَبَدَا»»   يَقُولُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يُجِيبُهُمْ:»»   اللَّهُمَّ لَا عَيْشَ إِلَّا عَيْشُ الْآخِرَهْ فَاغْفِرْ لِلْأَنْصَارِ والمهاجرة»»   مُتَّفق عَلَيْهِ

4793. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मुहाज हो अंसार सहाबा कर उम्म रदियल्लाहु अन्हु खंदक खोद रहे थे मिट्टी उठा रहे थे और कह रहे थे हम वह लोग है जिन्होंने मौत तक जिहाद करने पर मुहम्मद ﷺ की बैत की है? नबी ﷺ उन के जवाब में फरमा रहे थे: “अल्लाह ज़िन्दगी तो आखिरत की जिंदगी है, अंसार व मुहाजरिन की मगफिरत फरमा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2835) و مسلم (13 / 1805)، (4673)

٤٧٩٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لِأَنَّ يمتلىءَ جَوْفُ رَجُلٍ قَيْحًا يَرِيهِ خَيْرٌ مِنْ أَنْ يمتلئ شعرًا» مُتَّفق عَلَيْهِ

4794. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “किसी आदमी के पेट का पिप से भर कर ख़राब हो जाना उस से बेहतर है के उस का पेट (मज़मूम) अशआर से भर जाए”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6155) و مسلم (7 / 2257)، (5893)

तकरीर और शेरो शायरी का बयान • بَاب الْبَيَان وَالشعر

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٤٧٩٥ - (صَحِيح) عَن كعبِ بنِ مالكٍ أَنَّهُ قَالَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى قد أنزلَ فِي الشعرِ مَا أَنْزَلَ. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الْمُؤْمِنَ يُجَاهِدُ بِسَيْفِهِ وَلِسَانِهِ وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَكَأَنَّمَا تَرْمُونَهُمْ بِهِ نَضْحَ النَّبْلِ» رَوَاهُ فِي شَرْحِ السُّنَّةِ»» وَفِي «الِاسْتِيعَابِ» لِابْنِ عَبْدِ الْبَرِّ أَنَّهُ قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَاذَا تَرَى فِي الشِّعْرِ؟ فَقَالَ: «إِنَّ الْمُؤْمِنَ يُجَاهد بِسَيْفِهِ وَلسَانه»

4795. काब बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने नबी ﷺ से अर्ज़ किया, के अल्लाह तआला ने शेर की मुजम्मत के बारे में हुक्म उतारा है, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक मोमिन अपने तलवार और अपने ज़ुबान से जिहाद करता है, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! (ये हिजो इस तरह है) गोया तुम इन पर तीर अन्दाज़ी कर रहे हो”| इस्तीयाबिल इब्ने अब्दुल बर्र में है की उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप शेर के मुताल्लिक क्या फरमाते हैं? आप ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक मोमिन अपने तलवार और अपने ज़ुबान के साथ जिहाद करता है”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه البغوى فى شرح السنة (12 / 378 ح 3409) [و احمد (3 / 456 و الزهرى صرح بالسماع عنده) و رواه احمد (3 / 460 ، 6 / 387) و صححه ابن حبان (الموارد : 2018)] * عبد الرحمن بن عبدالله بن کعب بن مالک سمع من جده کما فی صحیح البخاری (2948)

٤٧٩٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» أُمَامَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْحَيَاءُ وَالْعِيُّ شُعْبَتَانِ مِنَ الْإِيمَانِ وَالْبَذَاءُ وَالْبَيَانُ شُعْبَتَانِ مِنَ النِّفَاقِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4796. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “हया और कम गोई ईमान की शाखें है, जबकि फहश गोई और बयान (मुबालिगा आराई) निफ़ाक़ की दो शाखें है”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (2027 وقال : حسن غريب)

٤٧٩٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي»» ثَعلبةَ الخُشنيِّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ أَحَبَّكُمْ [ص:١٣٥ إِلَيَّ وَأَقْرَبَكُمْ مِنِّي يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَحَاسِنُكُمْ أَخْلَاقًا وَإِنَّ أَبْغَضَكُمْ إِلَيَّ وَأَبْعَدَكُمْ مني مساويكم أَخْلَاقًا الثرثارون المتشدقون المتفيقهون» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي «شعب الْإِيمَان»

4797. अबू सअलबा खुशनी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक (दुनिया में) तुम में से मुझे ज़्यादा पसंद व महबूब और रोज़ ए कियामत मेरे ज़्यादा करीब वह शख़्स होगा जो तुम में से ज़्यादा

बा इखलाक होगा और तुम में से (दुनिया में) मुझे सबसे ज़्यादा नापसंद और रोज़ ए कियामत मुझ से सबसे ज़्यादा दूर वह शख़्स होगा जो तुम में से बदअख़लाक़, बहोत बाते करने वाले, ज़ुबान दराज़ और गला फाड़ कर बाते करने वाले हैं"| (हसन)

حسن ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (4969 ، نسخة محققة : 4616) [و احمد (4 / 193194) و صححه ابن حبان (الموارد : 19171918)]
* مكحول عن ابى ثعلبة رضى الله عنه منقطع و للحديث شواهد منها الحديث الآتى (4798)

٤٧٩٨ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَى التِّرْمِذِيُّ»» نَحْوَهُ عَنْ جَابِرٍ وَفِي رِوَايَتِهِ قَالُوا: يَا رَسُول الله قد علمنَا الثرثارونَ والمتشدقون فَمَا المتفيقهون؟ قَالَ: «المتكبرون»

4798. इमाम तिरमिज़ी ने जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से इसी तरह रिवायत किया है, उनकी रिवायत में है सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! हम बातूनी और मुंह फट शख़्स के मुताल्लिक तो जानते हैं लेकिन "المتفيهقون" से मुराद कौन है? आप ﷺ ने फ़रमाया: "तकब्बुर करने वाले"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (2018 وقال : حسن غريب)

٤٧٩٩ - (حسن) وَعَنْ»» سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تُقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَخْرُجَ قَوْمٌ يَأْكُلُونَ بِأَلْسِنَتِهِمْ كَمَا تَأْكُلُ الْبَقَرَةُ بألسنتها» رَوَاهُ أَحْمد

4799. साद बिन अबी वकास रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "कियामत काइम नहीं होगी हत्ता के एक कौम का जुहूर होगा वह अपने ज़ुबान के ज़रिए (बड़ाई कर के माल कमा कर) ऐसे खाएंगे जैसे गाय अपने ज़ुबान के साथ खाती है"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (1 / 184 ح 1597) * السند منقطع ، زيد بن اسلم لم يسمع من سعد رضى الله عنه و للحديث شواهد ضعيفة فى مسند الامام احمد (1 / 175176) و الصحيحة (419) وغيرهما و الحديث الآتى يغنى عنه

٤٨٠٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ»» اللَّهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ اللَّهَ يُبْغِضُ الْبَلِيغَ مِنَ الرِّجَالِ الَّذِي يَتَخَلَّلُ بِلِسَانِهِ كَمَا يَتَخَلَّلُ الْبَاقِرَةُ بِلِسَانِهَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيث غَرِيب

4800. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "बेशक अल्लाह चर्ब ज़ुबान और मुबालिगा से काम लेने वाले इस शख़्स से दुश्मनी रखता है जो ज़ुबान की कमाई खाता है जैसा

के गाय ज़ुबान से चाराह खाती है"| तिरमिज़ी, अबू दावुद, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2853) و ابوداؤد (5005)

٤٨٠١ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ»» أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَرَرْتُ لَيْلَةَ أَسْرِيَ بِي بقومٍ تُقْرَضُ شفاهُهم بمقاريض النَّارِ فَقُلْتُ: يَا جِبْرِيلُ مَنْ هَؤُلَاءِ؟ قَالَ: هَؤُلَاءِ خُطَبَاءُ أُمَّتِكَ الَّذِينَ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

4801. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मेअराज की रात में कुछ ऐसे लोगों के पास से गुज़रा जिन के होठ आग की कैंचियो से काटे जा रहे थे, मैंने कहा जिब्राइल यह कौन लोग है? उन्होंने कहा: यह आप की उम्मत के खतिब हज़रात है, जिन के कौल व फ़ैल में तज़ाद था"| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

حسن وياتی (5149) و رواه الترمذی (لم اجده) [و احمد (3 / 180)] * فيه علی بن زيد بن جدعان ضعيف و للحديث شواهد عند ابن حبان (الموارد : 35 ، الاحسان : 53) و ابی نعيم (حلية الاولياء 8 / 172) و ابن ابی حاتم فی التفسير (1 / 100101 ح 472 و سنده حسن) وغيرهم

٤٨٠٢ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ تَعَلَّمَ صَرْفَ [ص:١٣٥ الْكَلَامِ لِيَسْبِيَ بِهِ قُلُوبَ الرِّجَالِ أَوِ النَّاسِ لَمْ يَقْبَلِ اللَّهُ مِنْهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ صَرْفًا وَلَا عدلا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4802. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स कलाम सिर्फ इसलिए सीखता है ताकि वह उस के ज़रिए मर्दों या लोगों के दिलों पर काबू पा सके तो रोज़ ए कियामत अल्लाह उसकी तरफ से कोई नफ्ल और फ़र्ज़ इबादत कबूल नहीं करेगा"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (5006) * فی سماع الضحاک بن شرجيل من الصحابة نظر كما اشار المنذری رحمه الله فالسند مظنة الانقطاع

٤٨٠٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عمْرِو»» بن العاصِ أَنَّهُ قَالَ يَوْمًا وَقَامَ رَجُلٌ فَأَكْثَرَ الْقَوْلَ. فَقَالَ عَمْرٌو: لَوْ قَصَدَ فِي قَوْلِهِ لَكَانَ خَيْرًا لَهُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَقَدْ رَأَيْتُ - أَوْ أُمِرْتُ - أَنْ أَتَجَوَّزَ فِي الْقَوْلِ فَإِنَّ الْجَوَازَ هُوَ خير» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4803. अमर बिन आस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने एक रोज़ फ़रमाया एक आदमी खड़ा हुआ तो उस ने (इज़हारे फ़साहत के लिए) बात को तुल दिया तो अम्र रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: अगर यह बात करते वक़्त मियाने रिवाय (संयम) (कम बोलता) इख़्तियार करता तो उस के लिए बेहतर होता, क्योंकि मैंने

रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “मैंने जाना या मुझे हुक्म दिया गया कि मैं बात में इख्तिसार (यानी जितनी बात काफी हो इसी पर ख़त्म करो) करू क्योंकि इख्तिसार बेहतर है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (5008)

٤٨٠٤ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» صَخْرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ بُرَيْدَةَ عَن أَبِيه عَن جدِّه قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ مِنَ الْبَيَانِ سِحْرًا وَإِنَّ مِنَ الْعِلْمِ جَهْلًا وَإِنَّ مِنَ الشِّعْرِ حُكْمًا وَإِنَّ مِنَ الْقَوْلِ عِيَالًا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

4804. सखर बिन अब्दुल्लाह बिन बुरैदा अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “बेशक बाज़ बयान जादू जैसे असर रखते है, बाज़ इल्म जहालत होते हैं, बाज़ शेर हिकमत होते हैं और बाज़ कौल बोझ होते हैं”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (5012) * عبدالله بن ثابت النحوى : مجهول و شيخه : مستور

بَاب الْبَيَان وَالشعر • तकरीर और शेरो शायरी का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٤٨٠٥ - (صَحِيح) عَنْ»» عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم يَضَعُ لِحَسَّانَ مِنْبَرًا فِي الْمَسْجِدِ يَقُومُ عَلَيْهِ قَائِمًا يُفَاخِرُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أوينافح. وَيَقُولُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ يُؤَيِّدُ حَسَّانَ بِرُوحِ الْقُدُسِ مَا نَافَحَ أَوْ فَاخَرَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

4805. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ हस्सान रदियल्लाहु अन्हु के लिए मस्जिद में मिम्बर रखवाते, वह उस पर खड़े हो कर रसूलुल्लाह ﷺ की तरफ से फख्र करते या आप ﷺ का दिफ़ाअ करते, और रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते: “बेशक अल्लाह जिब्राइल अलैहिस्सलाम के ज़रिए हसान की मदद फरमाता है जब तक वह रसूलुल्लाह ﷺ की तरफ से दिफ़ाअ करता है या फख्र करता है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه البخارى (تعليقًا انظر تحفة الاشراف 12 / 10 ح 16351 ، و رواه البخارى (3531 ببعضه) [و الترمذى (2846 وقال : حسن صحيح) و ابوداؤد (5015)]

٤٨٠٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أنسٍ قَالَ: كَانَ لِلنَّبِيِّ حَادٍ يُقَالُ لَهُ: أَنْجَشَةُ وَكَانَ حَسَنَ الصَّوْتِ. فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «رُوَيْدَكَ يَا أَنْجَشَةُ لَا تَكْسِرِ الْقَوَارِيرَ» . قَالَ قَتَادَةُ: يَعْنِي ضَعْفَةَ النِّسَاءِ. مُتَّفق عَلَيْهِ

4806. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक शख़्स आप का हद्दिख्वान (ऊँट चलाने वाला) था इसे अन्जुश के नाम से याद किया जाता था, उसकी आवाज़ बहोत अच्छी थी, नबी ﷺ ने इसे फ़रमाया: “अन्जुश! ठहरो ठहरो, शिशो को मत चूर करो”, क़तादाह रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: आप ने यह औरतों की नज़ाकत के पेशे नज़र फ़रमाया था| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (6211) و مسلم (73 / 2323)، (6040)

٤٨٠٧ - (حَسَنٌ) وَعَنْ»» عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ذُكِرَ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الشِّعْرُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هُوَ كَلَامٌ فَحَسَنُهُ حَسَنٌ وَقَبِيحُهُ قَبِيحٌ» . رَوَاهُ الدَّارَقُطْنِيّ

4807. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के पास शेर ज़िक्र किया गया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “वो एक कलाम है, उस में से जो अच्छा है वह अच्छा है और जो बुरा है वह बुरा है”| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ الدارقطنی (4 / 155 ح 4261) [و البیھقی (10 / 239)] * فیه عبد العظیم بن حبیب ، قال الدارقطنی :’’ لیس بثقة ‘‘

٤٨٠٨ - (لم تتمّ دراسته) وروى الشَّافِعِي»» عَن عُرْوَة مُرْسلا

4808. इमाम शाफ़ई रहिमहुल्लाह ने इसे उरवा से मुरसल रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف جدا ، رواہ الشافعی فی مسندہ (ص 366 ح 1666) * فیه ابراھیم (بن ابی یحیی) متروک

٤٨٠٩ - (صَحِيح) وَعَن»» أبي سعيدٍ الخدريِّ قَالَ: بَيْنَا نَحْنُ نَسِيرُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بالعرج إِذْ عَرَضَ شَاعِرٌ يُنْشِدُ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «خُذُوا الشَّيْطَانَ أَوْ أَمْسِكُوا الشَّيْطَانَ لِأَنْ يَمْتَلِئَ جَوْفُ رَجُلٍ قَيْحًا خَيْرٌ لَهُ مِنْ أَنْ يَمْتَلِئَ شِعْرًا» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

4809. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ (यमन के इलाके) अरज में सफ़र कर रहे थे की एक शायर सामने आया और वह अशआर कहने लगा, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “(इस) शैतान को पकड़ो, या फ़रमाया: “इस शैतान को (शेर कहने से) रोको, यह कि किसी आदमी के पेट का पिप से भरना उस के लिए शेर के साथ भरने से बेहतर है”| (मुस्लिम)

رواہ مسلم (9 / 2259)، (5895)

٤٨١٠ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْغِنَاءُ يُنْبِتُ النِّفَاقَ فِي الْقَلْبِ كَمَا يُنْبِتُ

الْمَاءُ الزَّرْعَ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي «شعب الْإِيمَان»

4810. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "गाना दिल में निफ़ाक़ पैदा कर देता है जिस तरह पानी खेती उगा देता है"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه البیھقی فی شعب الایمان (5100 ، نسخة محققة : 4746) * ابو الزبیر مدلس و عنعن ان صح السند الیه و فیه عبدالله بن عبد العزیز بن ابی رواد '' احادیثه منکرة ''

٤٨١١ - (حسن) وَعَنْ»» نَافِعٍ C قَالَ: كُنْتُ مَعَ ابْنِ عُمَرَ فِي طَرِيقٍ فَسَمِعَ مِزْمَارًا فَوَضَعَ أَصْبُعَيْهِ فِي أُذُنَيْهِ وَنَاءَ عَنِ الطَّرِيقِ إِلَى الْجَانِبِ الْآخَرِ ثُمَّ قَالَ لِي بَعْدَ أَنْ بَعُدَ: يَا نَافِعُ هَلْ تسمعُ شَيْئا؟ قلتُ: لَا فرفعَ أصبعيهِ عَن أُذُنَيْهِ قَالَ: كُنْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَمِعَ صَوْتَ يَرَاعٍ فَصَنَعَ مِثْلَ مَا صَنَعْتُ. قَالَ نَافِعٌ: فَكُنْتُ إِذْ ذَاكَ صَغِيرًا. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ

4811. नाफेअ बयान करते हैं, मैं इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा के साथ एक रास्ते में था तो उन्होंने बांसुरी की आवाज़ सुनी, तो उन्होंने अपने दोनों उंगलिया अपने दोनों कानों में डाल ली, और वह रास्ते में दूसरी जानिब हट गए, फिर दूर जा कर मुझे फ़रमाया: नाफेअ! क्या तुम कुछ सुन रहे हो? मैंने कहा: नही, उन्होंने कानों से उंगलिया निकाली और फ़रमाया: मैं रसूलुल्लाह ﷺ के साथ था आप ने बांसुरी की आवाज़ सुनी, तो आप ने ऐसे ही किया था जैसे मैंने किया, नाफेअ ने कहा में तब छोटा था| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (2 / 8 ح 4535) و ابوداؤد (4924)

بَابُ حِفْظِ اللِّسَانِ وَالْغِيبَةِ وَالشَّتْمِ • हिफाज़त ए ज़बान, गीबत और गाली का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٤٨١٢ - (صَحِيح) عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ يَضْمَنْ لِي مَا بَيْنَ لَحْيَيْهِ وَمَا بَيْنَ رِجْلَيْهِ أضمنْ لَهُ الجنَّةَ» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

4812. सहल बिन साद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स मुझे ज़ुबान और शर्मगाह (की हिफाज़त) की ज़मानत दे दे तो में उसे जन्नत की ज़मानत देता हूँ"| (बुखारी)

رواه البخاری (6474)

٤٨١٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الْعَبْدَ لَيَتَكَلَّمُ بِالْكَلِمَةِ مِنْ رِضْوَانِ اللَّهِ لَا يُلْقِي لَهَا بَالًا يَرْفَعُ اللَّهُ بِهَا دَرَجَاتٍ وَإِنَّ الْعَبْدَ لِيَتَكَلَّمُ بِالْكَلِمَةِ مِنْ سَخَطِ اللَّهِ لَا يُلْقِي لَهَا بَالًا يَهْوِي بِهَا فِي جَهَنَّمَ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ. وَفِي رِوَايَةٍ لَهُمَا: «يَهْوِي بِهَا فِي النَّارِ أَبْعَدَ مَا بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ»

4813. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक बंदा ऐसी बात करता है जिस में अल्लाह की रज़ा होती है और वह इसे कोई अहमियत नहीं देता, लेकिन अल्लाह उसकी वजह से दरजात बुलंद फरमा देता है, और बंदा ऐसी बात करता है जिस में अल्लाह की नाराज़ी होती है और वह इसे कोई अहमियत नहीं देता, लेकिन वह उस के बाईस जहन्नम में गिर जाता है”| यह अल्फाज़ बुखारी के है| और बुखारी, मुस्लिम की रिवायत में है: “वो इस (बात) की वजह से जहन्नम में इस क़दर गहरा गिर जाता है, जिस क़दर मशरिक व मगरिब के दरमियान दूरी है”| (मुस्लिम)

رواه البخارى (6474 ، 4677 ، و الرواية الثانية ، 6478) و مسلم (50 / 2988)، (7482)

٤٨١٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «سِبَابُ الْمُسْلِمِ فُسُوقٌ وَقِتَالُهُ كُفْرٌ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

4814. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुसलमान को गाली देना फिस्क और उस से लड़ाई झगड़ा करना कुफ्र है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (48) ومسلم (116 / 64)، (221)

٤٨١٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَيُّمَا رَجُلٍ قَالَ لِأَخِيهِ كَافِرُ فَقَدْ بَاءَ بِهَا أَحدهمَا» . مُتَّفق عَلَيْهِ

4815. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने अपने (मुसलमान) भाई से कहा काफ़िर, तो इन दोनों में से एक ज़रूर (ईमान से) कुफ्र की तरफ लौटा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6104) و مسلم (111 / 60)، (215)

٤٨١٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَرْمِي رَجُلٌ رَجُلًا بِالْفُسُوقِ وَلَا يَرْمِيهِ بِالْكُفْرِ إِلَّا ارْتَدَّتْ عَلَيْهِ إِنْ لَمْ يَكُنْ صَاحِبُهُ كَذَلِكَ» رَوَاهُ البُخَارِيّ

4816. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगर कोई शख़्स किसी शख़्स को फ़ासिक या काफ़िर कह कर पुकारता है और अगर वह शख़्स (जिसे पुकारा जा रहा है) ऐसे न हो तो फिर वह (बात) इस (कहने वाले) परलौट आती है”| (बुखारी)

رواه البخاری (6045)

٤٨١٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَنْ دَعَا رَجُلًا بِالْكُفْرِ أَوْ قَالَ: عَدُوَّ اللَّهِ وَلَيْسَ كَذَلِكَ إِلاَّ حارَ عليهِ ". مُتَّفق عَلَيْهِ

4817. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने किसी शख़्स को काफ़िर कह कर पुकारा या कहा अल्लाह के दुश्मन! जबकि वह ऐसे न हो तो वह बात इस (कहने वाले) पर लौट आती है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6044) و مسلم (112 / 61)، (217)

٤٨١٨ - (صَحِيح) وَعَن أنس وَأَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْمُسْتَبَّانِ مَا قَالَا فَعَلَى الْبَادِئِ مالم يعْتد الْمَظْلُوم» . رَوَاهُ مُسلم

4818. अनस और अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बाहम गाली गलोच करने वाले दो लोगों में से इस वक़्त तक गुनेहगार वह है जो पहले गाली देता है जब तक मज़लूम एक के बदले में दो गालिया न दे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (68 / 2587)، (6591)

٤٨١٩ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يَنْبَغِي لِصِدِّيقٍ أنْ يكونَ لعَّاناً» . رَوَاهُ مُسلم

4819. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सच्चे शख़्स के लिए मुनासिब नहीं के वह बहोत ज़्यादा लानत करने वाला हो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (84 / 2597)، (6608)

٤٨٢٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ اللَّعَّانِينَ لَا يَكُونُونَ شُهَدَاءَ

وَلَا شُفَعَاء يَوْم الْقِيَامَة» . رَوَاهُ مُسلم

4820. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “कसरत से लानत करने वाले रोज़ ए कियामत न गवाह होंगे और न सिफारिशी”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (86 / 2598)، (6610)

٤٨٢١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا قَالَ الرَّجُلُ: هَلَكَ النَّاسُ فَهُوَ أَهْلَكُهُمْ ". رَوَاهُ مُسْلِمٌ

4821. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब आदमी कहता है लोग (अपने बुरे आमाल के बदले में) हलाक हो गए तो वह उन सबसे ज़्यादा हलाक होने वाला है”| (मुस्लिम)

مسلم (139 / 2623)، (6683)

٤٨٢٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ: قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَجِدُونَ شَرَّ النَّاسِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ذَا الْوَجْهَيْنِ الَّذِي يَأْتِي هَؤُلَاءِ بوجهٍ وَهَؤُلَاء بوجهٍ» . مُتَّفق عَلَيْهِ

4822. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम कियामत के रोज़ सबसे बदतरीन इस शख़्स को पाओगे जो दोगला है, इधर लोगों से कुछ बात करता है और उधर लोगों से कुछ बात करता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6058) و مسلم (100 / 2526)، (6454)

٤٨٢٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ حُذَيْفَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ قَتَّاتٌ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَفِي رِوَايَةِ مُسْلِمٍ: «نَمَّامٌ»

4823. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “चुगलखोर जन्नत में नहीं जाएगा”, और मुस्लिम की रिवायत में نَمَّامٌ (चुगल खोर) का लफ्ज़ है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6056) و مسلم (169 ، 168 / 105)، (290)

٤٨٢٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «عَلَيْكُمْ

بِالصِّدْقِ فَإِنَّ الصِّدْقَ يَهْدِي إِلَى الْبِرِّ وَإِنَّ الْبِرَّ يَهْدِي إِلَى الْجَنَّةِ وَمَا يَزَالُ الرَّجُلُ يَصْدُقُ وَيَتَحَرَّى الصِّدْقَ حَتَّى يُكْتَبَ عِنْدَ اللَّهِ صِدِّيقًا. وَإِيَّاكُمْ وَالْكَذِبَ فَإِنَّ الْكَذِبَ يَهْدِي إِلَى الْفُجُورِ وَإِنَّ الْفُجُورَ يَهْدِي إِلَى النَّارِ وَمَا يَزَالُ الرَّجُلُ يَكْذِبُ [ص:١٣٥ وَيَتَحَرَّى الْكَذِبَ حَتَّى يُكْتَبَ عِنْدَ اللَّهِ كَذَّابًا» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَفِي رِوَايَة مُسلم قَالَ: «إِنَّ الصِّدْقَ بِرٌّ وَإِنَّ الْبِرَّ يَهْدِي إِلَى الْجَنَّةِ. وَإِنَّ الْكَذِبَ فُجُورٌ وَإِنَّ الْفُجُورَ يهدي إِلَى النَّار»

4824. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सच्चाई को इख़्तियार करो क्योंकि सच्चाई नेकी की तरफ रहनुमाई करती है, और नेकी जन्नत की तरफ रहनुमाई करती है, आदमी सच बोलता रहता है और सच्चाई का मुतलाशी रहता है, हत्ता के वह अल्लाह के यहाँ सिद्दीक (बहोत सच्चा) लिख दिया जाता है, और तुम झूठ से बचो क्योंकि झूठ गुनाहों की तरफ रहनुमाई करता है और गुनाह जहन्नम की तरफ रहनुमाई करते हैं, आदमी झूठ बोलता रहता है और झूठ का तलबगार रहता है हत्ता के वह अल्लाह के यहाँ झूठा लिख दिया जाता है”| और मुस्लिम की रिवायत में है फ़रमाया: “बेशक सच नेकी है, और नेकी जन्नत की तरफ रहनुमाई करती है, और बेशक झूठ गुनाह है, और गुनाह जहन्नम की तरफ रहनुमाई करते हैं”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (6094) و مسلم (105 / 2607)، (6639)

٤٨٢٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ أَمِّ كُلْثُومٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «لَيْسَ الْكَذَّابُ الَّذِي يُصْلِحُ بَيْنَ النَّاسِ وَيَقُولُ خيرا وينمي خيرا» . مُتَّفق عَلَيْهِ

4825. उम्म कुलसुम रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “लोगो के दरमियान सुलह कराने वाला शख़्स झूठा नहीं, वह खैर व भलाई की बात करता है और खैर व भलाई की बात ही आगे पहुंचाता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (2692) و مسلم (101 / 2605)، (6633)

٤٨٢٦ - (صَحِيح) وَعَنِ»» الْمِقْدَادِ بْنِ الْأَسْوَدِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا رَأَيْتُمُ الْمَدَّاحِينَ فَاحْثُوا فِي وُجُوهِهِمُ التُّرَاب» . رَوَاهُ مُسلم

4826. मिकदाद बिन असवद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम तारीफ़ करने वालो को देखो तो उन के चेहरो पर मिट्टी फेंको”| (मुस्लिम)

رواہ مسلم (69 / 3002)، (7506)

٤٨٢٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أبي بكرَة قَالَ: أَثْنَى رَجُلٌ عَلَى رَجُلٌ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «وَيْلَكَ قَطَعْتَ عُنُقَ أَخِيكَ» ثَلَاثًا " مَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَادِحًا لَا محَالة فَلْيقل: أَحسب فلَانا وَالله حسيبه إِنْ كَانَ يُرَى أَنَّهُ كَذَلِكَ وَلَا يُزَكِّي على الله أحدا ". مُتَّفق عَلَيْهِ

4827. अबू बकरह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी ने नबी ﷺ की मौजूदगी में दूसरे आदमी की तारीफ़ की तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “तेरी तबाही हो तुमने अपने भाई की गर्दन काट दी”, आप ﷺ ने यह तीन मर्तबा फ़रमाया “ जिस ने ज़रूर ही तारीफ़ करनी हो तो वह कहे, मैं फलां को इस इस तरह ख़याल करता हूँ, जबकि अल्लाह उसकी हकीक़त से आगाह है, अगर बयान किया हुआ ऐसा ही हो जैसे उस ने ख़याल किया, वह अल्लाह पर किसी शख़्स की निस्बत तज़किरा का हुक्म यकीनी तौर पर न लगाए”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6162) و مسلم (65 / 3000)، (7501)

٤٨٢٨ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَتَدْرُونَ مَا الْغِيبَةُ؟» قَالُوا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: ذِكْرُكَ أَخَاكَ بِمَا يَكْرَهُ ". قِيلَ أَفَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ فِي أَخِي مَا أَقُولُ؟ قَالَ: «إِنْ كَانَ فِيهِ مَا تَقُولُ فَقَدِ اغْتَبْتَهُ وَإِنْ لَمْ يَكُنْ فِيهِ مَا تَقُولُ فَقَدْ بَهَتَّهُ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ. وَفِي رِوَايَةٍ: «إِذَا قُلْتَ لِأَخِيكَ مَا فِيهِ فَقَدِ اغْتَبْتَهُ وَإِذَا قُلْتَ مَا لَيْسَ فِيهِ فقد بَهته»

4828. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “क्या तुम जानते हो गीबत क्या है?” सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने अर्ज़ किया, अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तेरा अपने भाई को उन अल्फाज़ से याद करना जिसे वह नापसंद करता हो”, अर्ज़ किया गया, आप मुझे बताइए की जो बात में कर रहा हूँ वह मेरे भाई में मौजूद हो तो फिर? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर तो वह चीज़ इस में है जो तुम कह रहे हो तो फिर तुमने उसकी गीबत की, और जब तुम ने ऐसी बात की जो उस में नहीं तो फिर तुमने उस पर बोहतान लगाया”| एक दूसरी रिवायत में है: “जब तुम ने अपने भाई के मुतल्लिक ऐसी बात की जो इस में है तो तुमने उसकी गीबत की और जब तुम ने ऐसी बात की जो उस में नहीं है तो फिर तुमने उस पर बोहतान बाज़ी की”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (70 / 2589)، (6593)

٤٨٢٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ رَجُلًا اسْتَأْذَنَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَقَالَ: «ائْذَنُوا لَهُ فَبِئْسَ أَخُو الْعَشِيرَةِ» فَلَمَّا جَلَسَ تَطَلَّقَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي وَجْهِهِ [ص:١٣٥ وَانْبَسَطَ إِلَيْهِ. فَلَمَّا انْطَلَقَ الرَّجُلُ قَالَتْ عَائِشَةُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ قُلْتَ لَهُ: كَذَا وَكَذَا ثُمَّ تَطَلَّقْتَ فِي وَجْهِهِ وَانْبَسَطْتَ إِلَيْهِ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَتى عهدتني فحاشا؟ ؟ إِن شَرّ النَّاس مَنْزِلَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَنْ تَرَكَهُ النَّاسُ اتِّقَاءَ شَرِّهِ» وَفِي رِوَايَةٍ: «اتِّقَاءَ فُحْشِهِ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

4829. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के एक आदमी ने नबी ﷺ से अन्दर आने की इजाज़त तलब की तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे इजाज़त दे दो और वह अपने कौम का बुरा शख़्स है”, जब वह बैठ गया तो नबी ﷺ ने अपने चेहरे पर ख़ुशी का इज़हार फ़रमाया और उस के लिए तबस्सुम फ़रमाया: जब वह आदमी चला गया तो आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप ने उस के मुतल्लिक इस तरह इस तरह कहा, फिर (इस के आने पर) आप ने अपने चेहरे पर ख़ुशी का इज़हार फ़रमाया और उस के लिए तबस्सुम फ़रमाया, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुमने मुझे कब फहश गो पाया? क्योंकि रोज़ ए कियामत अल्लाह के यहाँ मक़ाम व मर्तबा में से बदतर वह शख़्स होगा जिसके शर से बचने के लिए लोगों इसे छोड़ दे”| एक दूसरी रिवायत में है: “उस की फहश गोई से बचने के लिए”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (60326054) و مسلم (73 / 2591)، (6596)

٤٨٣٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " كُلُّ أُمَّتِي مُعَافًى إِلَّا الْمُجَاهِرُونَ وَإِنَّ مِنَ الْمَجَانَةِ أَنْ يَعْمَلَ الرَّجُلُ عَمَلًا بِاللَّيْلِ ثُمَّ يُصْبِحَ وَقَدْ سَتَرَهُ اللَّهُ. فَيَقُولَ: يَا فُلَانُ عَمِلْتُ الْبَارِحَةَ كَذَا وَكَذَا وَقَدْ بَاتَ يَسْتُرُهُ رَبُّهُ وَيُصْبِحُ يَكْشِفُ سِتْرَ اللَّهِ عَنْهُ ". مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ»» وَذكر فِي حَدِيث أبي هُرَيْرَة: «من كَانَ يُؤمن بِاللَّه» فِي «بَاب الضِّيَافَة»

4830. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरी सारी उम्मत के गुनाह काबिल मुआफी है, मगर वह लोग जो एलानिया गुनाह करते हैं, और एलानिया गुनाह करना यह है कि आदमी रात के वक़्त कोई (गुनाह का) अमल करे, फिर सुबह होने पर कहता फिरे: ए फलां! मैंने रात को इस तरह इस तरह किया था, हालाँकि अल्लाह ने उसकी परदापोशी की हुई थी, और उस ने रात इस तरह बसर की के उस के रब ने इसे छिपा रखा था और जब सुबह करता है तो अपने ऊपर से अल्लाह के परदे को उठा देता है”| # और अबू हुरैरा (र) से मरवी हदीस: “जो शख़्स अल्लाह पर ईमान रखता हो”, بَابِ الضِّيَافَةِ (मेहमान नवाज़ी का बयान) में ज़िक्र की गई है. (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6069) و مسلم (52 / 2990)، (7485) 0 حديث ابی هريرة رضی الله عنه : من كان يؤمن بالله تقدم (4243)

बَابُ حِفْظِ اللِّسَانِ وَالْغِيبَةِ وَالشَّتْمِ • हिफाज़त ए ज़बान, गीबत और गाली का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٤٨٣١ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَنَسٍ»» رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم: «من تَرَكَ الْكَذِبَ وَهُوَ بَاطِلٌ بُنِيَ لَهُ فِي ربض الْجنَّة وَمن ترك المراء وَهُوَ مُحِقٌّ بُنِيَ لَهُ فِي وَسَطِ الْجَنَّةِ وَمَنْ حَسَّنَ خُلُقَهُ بُنِيَ لَهُ فِي أَعْلَاهَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ. وَكَذَا فِي شَرْحِ السُّنَّةِ وَفِي الْمَصَابِيحِ قَالَ غَرِيبٌ

4831. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स झूठ बोलना छोड़ देता है दर हालांकि दौरान वह बातिल पर था, उस के लिए जन्नत के किनारे पर एक घर बना दिया जाता है, और जिस ने हक़ पर होते हुए भी झगड़ा तर्क कर दिया तो उस के लिए जन्नत के बिच में घर बना दिया जाता है, और जिस ने अपना अख़लाक़ संवार लिया, उस के लिए उस में बुलंद जगह पर घर बना दिया जाता है”| इमाम तिरमिज़ी ने इस हदीस को बयान किया है और इसे हसन कहा है, और इसी तरह शरह सुन्ना और मसाबिह में है, फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (1993) و البغوى فى شرح السنة (13 / 82 ح 3502) و ذكره فى مصابيح السنة (3 / 322323 ح 3760) [و رواه ابن ماجه (51)] * سلمة بن وردان ضعيف و حديث ابى داود (4800) يغنى عنه

٤٨٣٢ - (لم تتمّ دراسته) وعنن أَبِي»» هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " أَتَدْرُونَ مَا أَكْثَرُ مَا يُدْخِلُ النَّاسَ الْجَنَّةَ؟ تَقْوَى اللَّهِ وَحُسْنُ الْخُلُقِ. أَتَدْرُونَ مَا أَكْثَرُ مَا يُدْخِلُ النَّاسَ النَّارَ؟ الْأَجْوَفَانِ: الْفَمُ وَالْفَرْجُ " رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

4832. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “क्या तुम जानते हो की कौन सी चीज़ ज़्यादातर लोगों को जन्नत में दाखिल करेगी? (फिर फ़रमाया) अल्लाह का तकवा और हुस्ने खल्क, क्या तुम जानते हो के कौन सी चीज़ ज़्यादातर लोगों को जहन्नम में दाखिल करेगी? (फिर फ़रमाया) दो चीज़े, मुंह और शर्मगाह”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (2004 وقال : صحيح غريب) و ابن ماجه (4246)

٤٨٣٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن بلالِ»» بن الحارثِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الرَّجُلَ لَيَتَكَلَّمُ بِالْكَلِمَةِ مِنَ الْخَيْرِ مَا يَعْلَمُ مَبْلَغَهَا يَكْتُبُ اللَّهُ لَهُ بِهَا رِضْوَانَهُ إِلَى يَوْمِ يَلْقَاهُ. وَإِنَّ الرَّجُلَ لَيَتَكَلَّمُ بِالْكَلِمَةِ مِنَ الشَّرِّ مَا يَعْلَمُ مَبْلَغَهَا يَكْتُبُ اللَّهُ بِهَا عَلَيْهِ سَخَطَهُ إِلَى يَوْمِ يَلْقَاهُ» . رَوَاهُ فِي شَرْحِ السُّنَّةِ»» وَرَوَى مَالِكٌ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْن مَاجَه نَحوه

4833. बिलाल बिन हारिस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक आदमी भलाई की बात करता है और वह उसकी कदर व मंज़िलत से आगाह नहीं होता जिसके बदले में अल्लाह इस शख़्स के लिए रोज़ ए कियामत तक अपने रज़ा लिख देता है, और बेशक आदमी कोई बुरी बात कर देता है और वह उसकी भी अहमियत नहीं जानता तो उसकी वजह से अल्लाह रोज़ ए कियामत तक के लिए अपनी नाराज़ी लिख देता है”| शरह सुन्ना और इमाम मालिक, तिरमिज़ी और इब्ने माजा ने इसी की मिस्ल रिवायत किया है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه البغوى فى شرح السنة (14 / 315 ح 4125) و مالک فى الموطا (2 / 985 ح 1914) و الترمذى (2319 وقال : حسن صحيح) و ابن ماجه (3969)

٤٨٣٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ بَهْزِ»» بْنِ حَكِيمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جده قا ل: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَيْلٌ لِمَنْ يُحَدِّثُ فَيَكْذِبُ لِيُضْحِكَ بِهِ الْقَوْمَ وَيْلٌ لَهُ وَيْلٌ لَهُ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد والدارمي

4834. बहज़ बिन हकिम अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इस शख़्स के लिए हलाकत है जो बात करते वक़्त झूठ बोलता है ताकि वह उस के ज़रिए लोगों को हँसाए, तो उस के लिए हलाकत है, उस के लिए हलाकत है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (5 / 3 ، 5 ، 7 ح 20333 وغيره) و الترمذی (2315 وقال : حسن) و ابوداؤد (4990) و الدارمی (2 / 296 ح 2705)

٤٨٣٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الْعَبْدَ لَيَقُولُ الْكَلِمَةَ لَا يَقُولُهَا إِلَّا لِيُضْحِكَ بِهِ النَّاسَ يَهْوِي بِهَا أَبْعَدَ مَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَإِنَّهُ لَيَزِلُّ عَنْ لِسَانِهِ أَشَدَّ مِمَّا يَزِلُّ عَنْ قَدَمِهِ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ»» (لم تتمّ دراسته)

4835. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक बंदा महज़ लोगों को हंसाने के लिए बात करता है और वह उसकी वजह से ज़मीन व आसमान की दरमियानी मुसाफ़त से भी ज़्यादा दूर जहन्नम में गिर जाता है, और वह अपने पाँव की तरफ से फिसलने से इतना नहीं फिसलता जितना के वह ज़ुबान के फिसलने से फिसलता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف جذا ، رواه البیهقی فی شعب الایمان (4832 ، نسخة محققة : 4492) [و البغوی فی شرح السنة (14 / 319) و اللفظ له] * فیه یحیی بن عبید الله التیمی : متروک ، روی عن ابیه الخ

٤٨٣٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ»» اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «من صَمَتَ نَجَا» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي " شعب الْإِيمَان

4836. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस ने ख़ामोशी इख़्तियार की उस ने निजात पाई”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (2 / 177 ح 6654) و الترمذی (2501) و الدارمی (2 / 299 ح 2716) و البیهقی فی شعب الایمان (4983)

٤٨٣٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عُقْبَةَ»» بن عامرٍ قَالَ: لَقِيتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ: مَا النَّجَاةُ؟ فَقَالَ: «أَمْلِكْ عَلَيْكَ لِسَانَكَ وَلْيَسَعْكَ بَيْتُكَ وَابْكِ عَلَى خَطِيئَتِكَ» . رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ

4837. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से मुलाकात की और मैंने अर्ज़ किया: निजात का बाईस क्या चीज़े है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अपने ज़ुबान पर काबू रख, तेरा घर तेरे लिए

काफी होना चाहिए और अपने खताओं पर रोया कर”| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه احمد (5 / 259 ح 22590) و الترمذی (2406 وقال : حسن) * علی بن یزید : ضعیف جدًا و تلمیذہ عبیداللہ بن زحر ضعیف و للحدیث شواھد ضعیفة

٤٨٣٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي»» سعيدٍ رَفَعَهُ قَالَ: " إِذَا أَصْبَحَ ابْنُ آدَمَ فَإِنَّ الْأَعْضَاءَ [ص:١٣٦ كُلَّهَا تُكَفِّرُ اللِّسَانَ فَتَقُولُ: اتَّقِ اللَّهَ فِينَا فَإِنَّا نَحْنُ بِكَ فَإِنِ اسْتَقَمْتَ اسْتَقَمْنَا وَإِنِ اعْوَجَجْتَ اعوَججْنا ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4838. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु ने इस हदीस को मरफ़ुअ रिवायत किया है फ़रमाया: “जब इब्ने आदम सुबह करता है तो सारे आज़ाअ (शरीर के अंग) ज़ुबान से दरख्वास्त करते हैं की हमारे (हुकुक के ताहिफ्ज़ के) बारे में अल्लाह से डरना, क्योंकि हम तेरे रहम व करम पर है, अगर तू सीधी रही तो हम भी सीधे रहेंगे और अगर तू टेढ़ी हो गई तो हम भी टेढ़े हो जाएँगे”| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ الترمذی (2407)

٤٨٣٩ - (صَحِيح) وَعَنْ»» عَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مِنْ حُسْنِ إِسْلَامِ الْمَرْءِ تَرْكُهُ مَا لَا يَعْنِيهِ» . رَوَاهُ مَالك وَأحمد

4839. अली बिन हुसैन रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आदमी के इस्लाम की खूबी यह है कि वह गैर मुतल्लिका (फ़िज़ूल बातो) को छोड़ दे”| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ مالک فی الموطا (2 / 903 ح 1737) و احمد (1 / 201 ح 1737) * السند مرسل ای ضعیف و للحدیث شواھد ضعیفة ، انظر الحدیث الآتی (4840)

٤٨٤٠ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ»» ابْن مَاجَه عَن أبي هُرَيْرَة

4840. इमाम इब्ने माजा ने इसे अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ ابن ماجه (3976) [و الترمذی (2317)] * قرة ضعیف ضعفه الجمھور و الزھری عنعن

٤٨٤١ - (صَحِيح) وَالتِّرْمِذِيّ»» وَالْبَيْهَقِيّ فِي «شعب الْإِيمَان» عَنْهُمَا

4841. इमाम तिरमिज़ी और बयहकी ने शौबुल ईमान में उसे इन दोनों (अली बिन हुसैन और अबू हुरैरा

रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه الترمذی (2318 وقال : غریب) و البیهقی فی شعب الایمان (10805) * الزهری عنعن و الحدیث مرسل

٤٨٤٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أنسٍ»» قَالَ: تُوُفِّيَ رَجُلٌ مِنَ الصَّحَابَةِ. فَقَالَ رَجُلٌ: أَبْشِرْ بِالْجَنَّةِ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَوَ لَا تَدْرِي فَلَعَلَّهُ تَكَلَّمَ فِيمَا لَا يَعْنِيهِ أَوْ بخل بِمَا لَا ينقصهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4842. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, सहाबा रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन में से एक आदमी फौत हो गया तो एक आदमी ने कहा: जन्नत की बशारत हो, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “क्या तुम नहीं जानते के शायद उस ने किसी गैर मुतल्लिका चीज़ के बारे में बात की हो या किसी ऐसी चीज़ में बुखल किया तो जो उस में कमी नहीं कर सकती थी”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (2316 وقال : غریب) * الاعمش مدلس و عنعن ولم یسمع من انس رضی الله عنه

٤٨٤٣ - (صَحِيح) وَعَن»» سُفْيَان بن عبد الله الثَّقَفِيّ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا أَخْوَفُ مَا تَخَافُ عَلَيَّ؟ قَالَ: فَأَخَذَ بِلِسَانِ نَفْسِهِ وَقَالَ: «هَذَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَصَححهُ

4843. सुफियान बिन अब्दुलाह सक्फी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! आप को मेरे बारे में सबसे ज़्यादा किस चिज़ का अंदेशा है? रावी बयान करते हैं, आप ﷺ ने अपनी ज़ुबान पकड़ कर फ़रमाया: “इस का”| तिरमिज़ी, और उन्होंने इसे सहीह करार दिया है| (सहीह)

صحیح ، رواه الترمذی (2410)

٤٨٤٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ»» عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا كَذَبَ الْعَبْدُ تَبَاعَدَ عَنْهُ الْمَلَكُ مِيلًا مِنْ نَتْنِ مَا جاءَ بِهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4844. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब बंदा झूठ बोलता है तो उसकी बदबू की वजह से फ़रिश्ता इस (बन्दे) से एक मिल दूर चला जाता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف جذا ، رواه الترمذی (1972 وقال : حسن غریب) * فیه عبد الرحیم بن هارون ضعیف ، کذبه الدارقطنی

٤٨٤٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن سُفيان»» بن أسدٍ الحضرميِّ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «كَبُرَتْ خِيَانَةً أَنْ تُحَدِّثَ أَخَاكَ حَدِيثًا هُوَ لَكَ بِهِ مُصَدِّقٌ وَأَنْتَ بِهِ كاذبٌ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4845. सुफियान बिन असद हज़्रमी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "बड़ी खयानत यह है कि तू अपने (मुसलमान) भाई से कोई बात करे, वह उस में तुम्हें सच्चा जानता हो जबकि तू उस से झूठ बोल रहा हो"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4971) * ضبارة و ابوه مجهولان و فيه ولة أخرى

٤٨٤٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عمار»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ كَانَ ذَا وَجْهَيْنِ [ص:١٣٦ فِي الدُّنْيَا كَانَ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لِسَانَانِ مِنْ نَارٍ» . رَوَاهُ الدَّارِمِيّ

4846. अम्मार रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स दुनिया में दोगला होगा तो रोज़ ए कियामत उसकी ज़ुबान आग की होगी"| (हसन)

حسن ، رواه الدارمی (2 / 314 ح 2767) [و ابوداؤد (4873)] * شریک القاضی صرح بالسماع عند ابن ابی الدنیا فی کتاب الصمت (274) فالسند حسن و للحديث شواهد

٤٨٤٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَيْسَ الْمُؤْمِنُ بِالطَّعَّانِ وَلَا بِاللَّعَّانِ وَلَا الْفَاحِشِ وَلَا الْبَذِيءِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ» . وَفِي أُخْرَى لَهُ «وَلَا الْفَاحِشِ الْبَذِيءِ» . وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيث غَرِيب

4847. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मोमिन न तो तान करने वाला होता है और न लानत करने वाला, न वह फहश गो होता है और न ज़ुबान दराज़"| तिरमिज़ी, बयहकी की शौबुल ईमान| और बयहकी की दूसरी रिवायत में है " न वह फहश गोई करने वाला होता है और न ज़ुबान दराज़ी करने वाला"| इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (1977) و البیهقی فی شعب الایمان (5150 ، 5149)

٤٨٤٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَكُونُ الْمُؤْمِنُ لعانا» . وَفِي رِوَايَة: «لاينبغي لِلْمُؤمنِ أَن يكون لعانا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4848. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मोमिन लानत करने वाला नहीं होता"| एक दूसरी रिवायत में है: "मोमिन के लिए मुनासिब नहीं के वह लानत करने वाला हो"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2019)

٤٨٤٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَلَاعَنُوا بِلَعْنَةِ اللَّهِ وَلَا بِغَضَبِ اللَّهِ وَلَا بِجَهَنَّمَ» . وَفِي رِوَايَةٍ «وَلَا بِالنَّارِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

4849. समुरह बिन जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “एक दूसरे को ऐसे न कहो, तुम पर अल्लाह की लानत हो, तुम पर अल्लाह का गज़ब हो और तुम जहन्नम में जाओ”| और एक रिवायत में है: “ऐसे भी ना कहो तुम (जहन्नम की) आग में जाओ”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (1976 وقال : حسن صحيح) و ابوداؤد (4906) * قتادة مدلس و عنعن و لحديثه مرسل عند البغوى فى شرح السنة (3557) و مصنف عبد الرزاق (19531)

٤٨٥٠ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ الْعَبْدَ إِذَا لَعَنَ شَيْئًا صَعِدَتِ اللَّعْنَةُ إِلَى السَّمَاءِ فَتُغْلَقُ أَبْوَابُ السَّمَاءِ دُونَهَا ثُمَّ تَهْبِطُ إِلَى الْأَرْضِ فَتُغْلَقُ أَبْوَابُهَا دُونَهَا ثُمَّ تَأْخُذُ يَمِينًا وَشِمَالًا فَإِذَا لَمْ تَجِدْ مَسَاغًا رَجَعَتْ إِلَى الَّذِي لُعِنَ فَإِنْ كَانَت لِذَلِكَ أَهْلًا وَإِلَّا رَجَعَتْ إِلَى قَائِلِهَا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4850. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जब बंदा किसी चीज़ पर लानत भेजता है तो वह लानत आसमान की तरफ चढ़ती है, तो उस के पहुँचने से पहले आसमान के दरवाज़े बंद कर दिए जाते हैं, फिर वह ज़मीन की तरफ उतरी है, उस के दरवाज़े भी बंद कर दिए जाते हैं, फिर वह दाएँ बाएँ जाती है, जब वह कोई रास्ता नहीं पाती तो वह इस शख़्स की तरफ जाती है जिस पर लानत की गई थी, बशर्तेकी वह उस का मुस्तहक हो वरना वह कहने वाले की तरफलौट आती है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4905) * نمران بن عتبة الذمارى مجهول

٤٨٥١ - (صَحِيح) وَعَن ابنِ عبَّاسٍ أَنَّ رَجُلًا نَازَعَتْهُ الرِّيحُ رِدَاءَهُ فَلَعَنَهَا. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَلْعَنْهَا فَإِنَّهَا مَأْمُورَةٌ وَأَنَّهُ مَنْ لَعَنَ شَيْئًا لَيْسَ لَهُ بِأَهْلٍ رَجَعَتِ اللَّعْنَةُ عَلَيْهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد

4851. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के हवा ने एक आदमी की चादर उड़ा दी तो उस ने उस पर लानत की तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “उस पर लानत न भेजो क्योंकि वह तो हुक्म की पाबंद है, और जो शख़्स किसी चीज़ पर लानत भेजता है, जबकि वह उसकी मुस्तहक नहीं होती तो फिर वह लानत इसी शख़्स परलौट आती है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (1978 وقال : حسن غريب) و ابوداؤد (4908) * قتادة مدلس و عنعن

٤٨٥٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ»» مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يُبَلِّغُنِي أَحَدٌ مِنْ أَصْحَابِي عَنْ أَحَدٍ شَيْئًا فَإِنِّي أُحِبُّ أَنْ أَخْرُجَ إِلَيْكُمْ وَأَنَا سَلِيمُ الصَّدْرِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4852. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरा कोई सहाबी किसी दूसरे सहाबी के बारे में मुझे कोई (नापसंदिदाह) बात न पहुंचाए, क्योंकि मैं पसंद करता हूँ की जब में तुम्हारे पास आऊँ तू मेरा सीना साफ़ हो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (4860) * ولید بن ابی هشام : مستور و شیخه زید بن زائد : لم یوثقه غیر ابن حبان

٤٨٥٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عَائِشَة»» قَالَتْ: قُلْتُ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: حَسبك صَفِيَّةَ كَذَا وَكَذَا - تَعْنِي قَصِيرَةً - فَقَالَ: «لَقَدْ قُلْتِ كَلِمَةً لَوْ مُزِجَ بِهَا الْبَحْرُ لَمَزَجَتْهُ» . رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

4853. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने नबी ﷺ से अर्ज़ किया, आप को सफिया से बस यह यह काफी है यानी उनका कद छोटा है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुमने एक ऐसी बात कही अगर इसे समुन्दर में मिला दिया जाए तो उस पर ग़ालिब आ-जाए (यानी उसकी कैफियत बदल डाले)”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه احمد (6 / 189 ح 26075) و الترمذی (2502) و ابوداؤد (4875)

٤٨٥٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا كَانَ الْفُحْشُ فِي شَيْءٍ إِلَّا شَانَهُ وَمَا كَانَ الْحَيَاءُ فِي شيءٍ إِلا زانَهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4854. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “फहश गोई जिस चीज़ में हो, वह इसे मायूब बना देती है और हया जिस चीज़ में हो वह इसे सजावट कर देता है”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه الترمذی (1974 وقال : حسن غریب)

٤٨٥٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن خالدِ»» بن معدانَ عَنْ مُعَاذٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ عَيَّرَ أَخَاهُ بِذَنْبٍ لَمْ يَمُتْ حَتَّى يَعْمَلَهُ» يَعْنِي مِنْ ذَنْبٍ قَدْ تَابَ مِنْهُ -. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ وَلَيْسَ إِسْنَادُهُ بِمُتَّصِلٍ لِأَنَّ خَالِدًا لَمْ يُدْرِكْ معَاذ بن جبل

4855. खालिद बिन मअदान, मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स अपने (मुसलमान) भाई को इस के (पिछले किसी) गुनाह पर मलामत करता है तो यह शख़्स मरने से पहले इस (गुनाह) का इर्तिकाब कर लेता है”, उस से वह गुनाह मुराद है जिस से वह तौबा कर चूका हो| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है, उसकी सनद मुतस्सिल नहीं क्यूंकि खालिद की मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु से मुलाकात नहीं हुई| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (2505) * محمد بن الحسن الهمدانی ضعیف و السند منقطع

٤٨٥٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن وَاثِلَة»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «لَا تظهر الشماتة لأخيك فِيC وَيَبْتَلِيَكَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

4856. वासिलत रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अपने (मुसलमान) भाई (के मुसीबत में मुब्तिला होने) पर ख़ुशी का इज़हार न कर, मुमकिन है अल्लाह उस पर रहम फरमादे और तुम्हें (इस मुसीबत में) मुब्तिला कर दे”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2506) * مکحول لم یسمعه من واثلة رضی الله عنه فالسند منقطع

٤٨٥٧ - (صَحِيح) وَعَن»» عَائِشَة قَالَتْ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا أُحِبُّ أَنِّي حَكَيْتُ أَحَدًا وَأَنَّ لي كَذَا وَكَذَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَصَححهُ

4857. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “मैं किसी की नकल उतारना पसंद नहीं करता ख्वाह मुझे इतना इतना माल दिया जाए”| तिरमिज़ी ने इसे रिवायत किया और इसे सहीह करार दिया है| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه الترمذی (2503)

٤٨٥٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن جُنْدُبٍ»» قَالَ: جَاءَ أَعْرَابِيٌّ فَأَنَاخَ رَاحِلَتَهُ ثُمَّ عَقَلَهَا ثُمَّ دَخَلَ الْمَسْجِدَ فَصَلَّى خَلْفَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمَّا سَلَّمَ أَتَى رَاحِلَتَهُ فَأَطْلَقَهَا ثُمَّ رَكِبَ ثُمَّ نَادَى: اللَّهُمَّ ارْحَمْنِي وَمُحَمَّدًا وَلَا تُشْرِكْ فِي رَحْمَتِنَا أَحَدًا. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَتَقُولُونَ هُوَ أَضَلُّ أَمْ بَعِيرُهُ؟ أَلَمْ تَسْمَعُوا إِلَى مَا قَالَ؟» قَالُوا: بَلَى؟ . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد»» وَذَكَرَ حَدِيثَ أَبِي هُرَيْرَةَ: «كَفَى بِالْمَرْءِ كَذِبًا» فِي «بَاب الِاعْتِصَام» فِي الْفَصْل الأول

4858. जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आराबी आया, उस ने अपना ऊंट बिठाया फिर इसे बांधा और मस्जिद में आया, इस ने रसूलुल्लाह ﷺ के पीछे नमाज़ पढ़ी, जब आप ने सलाम फेरा तो वह अपने सवारी के पास आया, इसे खोला और उस पर सवार हो कर बुलंद आवाज़ से कहा: ऐ अल्लाह! मुझ पर और मुहम्मद ﷺ पर रहम फरमा और हमारी रहमत में किसी और को शरीक न करना, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “क्या तुम गुमान करते हो वह ज़्यादा नादान है या उस का ऊंट? क्या तुम ने उसकी बात नहीं सुनी ?” सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने अर्ज़ किया, क्यों नहीं, सुनी है| # और अबू हुरैरा (र) से मरवी हदीस: “बन्दे के झूठा होने के लिए काफी है” بَاب الِاعْتِصَام بِالْكتاب وَالسّنة (किताब व सुन्नत के साथ तम्सक इख्तियार करना) की फसल ए अव्वल में बयान हो चुकी है? (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (4885) * فیه ابو عبدالله الجشمی : مجهول0 حدیث ’’ کفی بالمرء کذبًا ‘‘ تقدم (156)

हिफाज़त ए ज़बान, गीबत और गाली का बयान • بَابُ حِفْظِ اللِّسَانِ وَالْغِيبَةِ وَالشَّتْمِ

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٤٨٥٩ - (ضَعِيف) عَنْ»» أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا مُدِحَ الْفَاسِقُ غَضِبَ [ص:١٣٦ الرَّبُّ تَعَالَى وَاهْتَزَّ لَهُ الْعَرْشُ» رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي «شعب الْإِيمَان»

4859. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब फासिक़ की तारीफ़ की जाती है तो रब तआला नाराज़ होता है और उसकी (तारीफ़ की) वजह से उस का अर्श लरज़ जाता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه البيهقی فی شعب الایمان (4886 ، نسخۃ محققة : 4544) * فیه سابق البربری مجھول الحال (انظر لسان المیزان 3 / 23) عن ابی خلف خادم انس (متروک ورماہ ابن معین بالکذب / التقریب 4 / 187 ت 8083) عن انس رضی اللہ عنه به الخ

٤٨٦٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» أَمَامَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يُطْبَعُ الْمُؤْمِنُ عَلَى الْخِلَالِ كلِّها إِلا الخيانةَ وَالْكذب» . رَوَاهُ أَحْمد

4860. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुअमिन में खयानत और झूठ की आदत नहीं हो सकती अलबत्ता उनके अलावा सब कुछ हो सकता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه احمد (5 / 252 ح 22523) * الاعمش قال :'' حدیث عن ابی امامة '' الخ و للحدیث طرق ضعیفة وقال ابن ابی شیبة فی کتاب الایمان (81) :'' حدثنا یحیی بن سعید عن سفیان عن سلمة بن کھیل عن مصعب بن سعد عن سعد قال : المؤمن یطبع علی الخلال کلھا الا الخیانة و الکذب '' و سندہ صحیح ، روایة یحیی القطان عن سفیان الثوری محمولة علی السماع

٤٨٦١ - (لم تتمّ دراسته) وَالْبَيْهَقِيّ فِي»» شُعَبِ الْإِيمَانِ»» عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقاص

4861. इमाम बय्हकी ने साद बिन अबी वकास रदियल्लाहु अन्हु से शौबुल ईमान में रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ البیھقی فی شعب الایمان (4809 ، نسخۃ محققة : 4469 و ضعفه) * ابو اسحاق و الاعمش مدلسان و عنعنا و فیه علة أخری و انظر تخریج الحدیث السابق (4860)

٤٨٦٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ صَفْوَانَ»» بْنِ سَلِيمٍ أَنَّهُ قِيلَ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَيَكُونُ الْمُؤْمِنُ جَبَانًا؟ قَالَ: «نعم» . فَقِيل: أَيَكُونُ الْمُؤْمِنُ بَخِيلًا؟ قَالَ: «نَعَمْ» . فَقِيلَ: أَيَكُونُ الْمُؤْمِنُ كَذَّابًا؟ قَالَ: «لَا» . رَوَاهُ مَالِكٌ وَالْبَيْهَقِيُّ

فِي «شعب الْإِيمَان» مُرْسلا

4862. सफवान बिन सुलैम से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ से अर्ज़ किया गया, क्या मोमिन बुज़दिल हो सकता है? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ”, फिर अर्ज़ किया गया: क्या मोमिन बखील हो सकता है? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ”, फिर आप से अर्ज़ किया गया, क्या मोमिन झूठा हो सकता है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “नहीं ?” मालिक, बयहकी ने इसे शौबुल ईमान में मुरसल रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه مالک فی الموطا (2 / 990 ح 1928) و البيهقی فی شعب الايمان (4812) * السند مرسل و انظر الحديث السابق (4860 بتحقيقى) فهو يغنى عنه

٤٨٦٣ - (صَحِيح) وَعَن»» ابْن مسعودٍ قَالَ: " إِنَّ الشَّيْطَانَ لَيَتَمَثَّلُ فِي صُورَةِ الرَّجُلِ فَيَأْتِي الْقَوْمَ فَيُحَدِّثُهُمْ بِالْحَدِيثِ مِنَ الْكَذِبِ فَيَتَفَرَّقُونَ فَيَقُولُ الرَّجُلُ مِنْهُمْ: سَمِعْتُ رَجُلًا أَعْرِفُ وَجْهَهُ وَلَا أَدْرِي مَا اسْمُهُ يُحَدِّثُ ". رَوَاهُ مُسْلِمٌ

4863. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, शैतान इंसानी रूप धार कर लोगों के पास आता है, उन से झूठी बातें करता है, फिर जब लोग मुन्तशर हो जाते हैं, तो उनमें से एक आदमी कहता है, मैंने एक आदमी को सुना, मैं उस के चेहरे को पहचानता हूँ, लेकिन मैं उस का नाम नहीं जानता वह यह बात बयान करता था”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (المقدمة باب 4 ، 1 / 12 بعد ح 7 ، ترقيم دارالسلام : 17)

٤٨٦٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عِمْرَانَ»» بْنِ حِطَّانَ قَالَ: أَتَيْتُ أَبَا ذَرٍّ فَوَجَدْتُهُ فِي الْمَسْجِدِ مُحْتَبِيًا بِكِسَاءٍ أَسْوَدَ وَحده. فَقلت: يَا أَبَا ذَر ماهذه الْوَحْدَةُ؟ فَقَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «الْوَحْدَةُ خَيْرٌ مِنْ جَلِيسِ السُّوءِ وَالْجَلِيسُ الصَّالِحُ خَيْرٌ مِنَ الْوَحْدَةِ وَإِمْلَاءُ الْخَيْر خيرٌ من السكوتِ والسكوتُ خيرٌ من إملاءِ الشَّرّ»

4864. इमरान बिन हटान रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैं अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु के पास आया, तो मैंने उन्हें काली चादर से गोठ मारे हुए मस्जिद में अकेले पाया तो मैंने कहा: अबू ज़र! यह तन्हाई केसी? उन्होंने कहा: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “बुरे हम नशींन से तन्हाई बेहतर है और नेक हम नशींन तन्हाई से बेहतर है और अच्छी बात तहरीर करना ख़ामोशी से बेहतर है जबकि बुरी बात तहरीर करने से ख़ामोशी बेहतर है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقی فی شعب الايمان (4993 ، نسخة محققة : 4639) [ولم يصححه الحاكم (3 / 343) و ضعفه الذهبی] * شريک القاضی مدلس و عنعن

٤٨٦٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عِمْرَانَ»» بْنِ حُصَيْنٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَقَامُ الرَّجُلِ بِالصَّمْتِ

أَفْضَلُ مِنْ عِبَادَةِ سِتِّينَ سنة»

4865. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “आदमी का (बुरी बात करने से) ख़ामोशी बरक़रार रखना साठ बरस की इबादत से बेहतर है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقی فی شعب الايمان (4953 ، نسخة محققة : 4602) [و الدارمی (598) و الحاكم (2 / 68)] * الحسن البصری و هشام بن حسان مدلسان و عنعنا ، قوله :'' بالصمت '' يعنی فی الجهاد۔ ان صح الحديث

٤٨٦٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي»» ذرٍّ قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرَ الْحَدِيثَ بِطُولِهِ إِلَى أَنْ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَوْصِنِي قَالَ: «أُوصِيكَ بِتَقْوَى اللَّهِ فَإِنَّهُ أَزْيَنُ لِأَمْرِكَ كُلِّهِ» قُلْتُ: زِدْنِي قَالَ: «عَلَيْكَ بِتِلَاوَةِ الْقُرْآنِ وَذِكْرِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ [ص:١٣٦ فَإِنَّهُ ذِكْرٌ لَكَ فِي السَّمَاءِ وَنُورٌ لَكَ فِي الْأَرْضِ» . قُلْتُ: زِدْنِي. قَالَ: «عَلَيْكَ بِطُولِ الصَّمْتِ فَإِنَّهُ مَطْرَدَةٌ لِلشَّيْطَانِ وَعَوْنٌ لَكَ عَلَى أَمْرِ دِينِكَ» قُلْتُ: زِدْنِي. قَالَ: «إِيَّاكَ والضحك فَإِنَّهُ يُمِيتُ الْقَلْبَ وَيَذْهَبُ بِنُورِ الْوَجْهِ» قُلْتُ: زِدْنِي. قَالَ: قُلِ الْحَقَّ وَإِنْ كَانَ مُرًّا ". قُلْتُ: زِدْنِي. قَالَ: «لَا تَخَفْ فِي اللَّهِ لومة لائم» . قلت: زِدْنِي. لِيَحْجُزْكَ عَنِ النَّاسِ مَا تَعْلَمُ مِنْ نَفْسِكَ "

4866. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ, उन्होंने पूरी हदीस ज़िक्र की और यहाँ तक बयान किया उन्होंने कहा: मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मुझे वसीयत फरमाइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं तुम्हें अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करने की वसीयत करता हूँ, क्योंकि वह तेरे तमाम उमूर के लिए ज़्यादा बाईसे ज़ीनत है” मैंने अर्ज़ किया: मज़ीद फरमाइए! आप ﷺ ने फ़रमाया: “कुरान की तिलावत और अल्लाह अज्ज़वजल का ज़िक्र कर, क्योंकि वह आसमान में तेरे ज़िक्र और ज़मीन में तेरे लिए नूर का बाईस है”, मैंने अर्ज़ किया: मुझे मज़ीद वसीयत फरमाइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “हमेशा ख़ामोशी इख़्तियार करो, क्योंकि वह शैतान को दूर करने और तेरे दीन के मुआमले में तेरी मददगार है”, मैंने अर्ज़ किया: मज़ीद फरमाइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ज़्यादा हंसने से बचो, क्योंकि दिल को मुर्दा कर देता है और चेहरे के नूर को ख़तम कर देता है”, मैंने अर्ज़ किया: मज़ीद वसीयत फरमाइए, रावी बयान करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “हक़ बयान कर ख्वाह वह कड़वा हो”, मैंने अर्ज़ किया: मज़ीद फरमाइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह के मुआमले में किसी मलामत गिर की मलामत से न डर”, मैंने अर्ज़ किया: मज़ीद फरमाइए आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुझे तेरी खामियो का इल्म, लोगों को बुरा भला कहने से रोके रखे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقی فی شعب الايمان (4942 ، نسخة محققة : 4592)* فيه يحيی بن سعيد السعدی البصری مجروح ، جرحه العقيلی و ابن حبان ولم يوثق البتة و لحديثه شاهد ضعيف ، انظر تنقيح الرواة (3 / 318)

٤٨٦٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ»» عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «يَا أَبَا ذَرٍّ أَلَا أَدُلُّكَ عَلَى خَصْلَتَيْنِ هُمَا أَخَفُّ عَلَى الظَّهْرِ وَأَثْقَلُ فِي الْمِيزَانِ؟» قَالَ: قُلْتُ: بَلَى. قَالَ: «طُولُ الصَّمْتِ وَحُسْنُ الْخُلُقِ وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ مَا عَمِلَ الْخَلَائق بمثلهما»

4867. अनस रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अबू ज़र! क्या मैं तुम्हें दो खसलते न बताऊँ जो पुश्त पर (इंसान के अमल के लिहाज़ से) बहोत हल्की है जबकि मीज़ान में बहोत भारी है?” वह बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: जी हाँ! बताइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ख़ामोश रहना और अच्छे अख़लाक़ इख़्तियार करना, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! मखलूक ने उन जैसे दो अमल नहीं है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (4941 ، نسخة محققة : 4591) [و ابو يعلى (6 / 53 ح 3298)] * فيه بشار بن الحكم الضبى : منكر الحديث

٤٨٦٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عَائِشَة»» قَالَتْ: مَرَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِأَبِي بَكْرٍ وَهُوَ يَلْعَنُ بَعْضَ رَقِيقِهِ فَالْتَفَتَ إِلَيْهِ فَقَالَ: «لَعَّانِينَ وَصِدِّيقِينَ؟ كَلَّا وَرَبِّ الْكَعْبَةِ» فَأَعْتَقَ أَبُو بَكْرٍ يَوْمَئِذٍ بَعْضَ رَقِيقِهِ ثُمَّ جَاءَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَالَ: لَا أَعُودُ. رَوَى الْبَيْهَقِيُّ الْأَحَادِيثَ الْخَمْسَةَ فِي «شعب الْإِيمَان»

4868. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नबी ﷺ, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु के पास से गुज़रे तो वह अपने किसी गुलाम पर लानत कर रहे थे आप ﷺ ने उनकी तरफ देख कर फ़रमाया: “(क्या) लानत करने वाले और सिद्दिकिन (इकट्ठे हो सकते है?) रब्बे काबा की क़सम! हरगिज़ नहीं”, चुनांचे अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने इस दिन अपने बाज़ गुलाम (बतौर कफ्फारा) आज़ाद किए, फिर नबी ﷺ की खिदमत में आकर अर्ज़ किया: में आइन्दा ऐसे नहीं करूँगा| इमाम बयहकी ने पांचो अहादीस शौबुल ईमान में रिवायत की है| (हसन)

حسن ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (5154 ، نسخة محققة : 4791) [و البخارى فى الادب المفرد (319) و سنده حسن]

٤٨٦٩ - (صَحِيح) وَعَنْ أَسْلَمَ قَالَ: إِنَّ عُمَرَ دَخَلَ يَوْمًا على أبي بكر الصّدّيق رَضِي الله عَنْهُم وَهُوَ يَجْبِذُ لِسَانَهُ. فَقَالَ عُمَرُ: مَهْ غَفَرَ الله لَك. فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: إِنَّ هَذَا أَوْرَدَنِي الْمَوَارِدَ. رَوَاهُ مَالك

4869. असलम रदियल्लाहु अन्हु (उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु के आज़ाद करदा गुलाम) बयान करते हैं, के एक रोज़ उमर रदियल्लाहु अन्हु अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहु अन्हु के पास गए तो वह अपने ज़ुबान खींच रहे थे, (ये मंजर देख कर) उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: अल्लाह आप की मगफिरत फरमाए! इसे छोड़ दे, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: उस ने मुझे हलाकत के घड़ो तक पहुँचाया है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه مالک فى الموطا (2 / 988 ح 1921)

٤٨٧٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " اضْمَنُوا لِي سِتًّا مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَضْمَنُ لَكُمُ الْجَنَّةَ: اصْدُقُوا إِذَا حَدَّثْتُمْ وَأَوْفُوا إِذَا وَعَدْتُمْ وأدوا إِذا ائتمنتم واحفظوا فروجكم وغضوا أبصاركم وَكفوا أَيْدِيكُم "

4870. उबादा बिन सामित रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “तुम मुझे अपनी तरफ से छे चीजों की ज़मानत दे दो तो मैं तुम्हें जन्नत की ज़मानत देता हूँ: जब तुम बात करो तो सच बोलो, जब वादा करो तो पूरा करो, जब तुम्हारे पास अमानत रखी जाए तो उसे अदा करो, अपने शर्मगाहो की हिफाज़त करो, अपने नज़रे नीची रखो और अपने हाथो को (ज़ुल्म से) रोको”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه احمد (5 / 323) و البيهقى فى شعب الايمان (5256 ، نسخة محققة : 44640 ، 4877) [و ابن حبان فى صحيحه (الموارد : 2547) و صححه الحاكم (4 / 359)] * مطلب بن عبدالله لم يسمع من عبادة رضى الله عنه و للحديث شواهد ضعيفة عند الحاكم (4 / 359 ح 8067) وغيره

٤٨٧١ - ، ٤٨٧٢ - (لم تتمّ دراسته)»» وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ غَنْمٍ وَأَسْمَاءَ بِنْتِ يَزِيدَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «خِيَارُ عِبَادِ اللَّهِ الَّذِينَ إِذَا رُؤُوا ذُكِرَ اللَّهُ. وَشِرَارُ عِبَادِ اللَّهِ الْمَشَّاؤُونَ بِالنَّمِيمَةِ وَالْمُفَرِّقُونَ بَيْنَ الْأَحِبَّةِ الْبَاغُونَ الْبُرَآءَ الْعَنَتَ» . رَوَاهُمَا أَحْمَدُ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَان»

4871. अब्दुल रहमान बिन गन्मी और अस्मा बिन्ते यज़ीद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह के बेहतरीन बंदे वह रहेगी जब उन्हें देखा जाए तो अल्लाह याद आ जाए, जबकि अल्लाह के बंदो में से बदतरीन लोग चुगलखोर, प्यारो के दरमियान जुदाई डालने वाले और (गुनाहों से) ला ताअल्लूक लोगों पर बुराई का इलज़ाम लगाने वाले हैं”| (हसन)

حسن ، رواه احمد (4 / 227 ح 17998 ، 6 / 459 ح 27599 و سنده حسن) و البيهقى فى شعب الايمان (11105 ، نسخة محققة : 10596) [و ابو نعيم فى معرفة الصحابة (4 / 1867 ح 4700)] [و انظر الحديث الآتى (48720) فانه شاهد له]

٤٨٧١ - ، ٤٨٧٢ - (لم تتمّ دراسته)»» وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ غَنْمٍ وَأَسْمَاءَ بِنْتِ يَزِيدَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «خِيَارُ عِبَادِ اللَّهِ الَّذِينَ إِذَا رُؤُوا ذُكِرَ اللَّهُ. وَشِرَارُ عِبَادِ اللَّهِ الْمَشَّاؤُونَ بِالنَّمِيمَةِ وَالْمُفَرِّقُونَ بَيْنَ الْأَحِبَّةِ الْبَاغُونَ الْبُرَآءَ الْعَنَتَ» . رَوَاهُمَا أَحْمَدُ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَان»

4872. अब्दुल रहमान बिन गन्मी और अस्मा बिन्ते यज़ीद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह के बेहतरीन बंदे वह रहेगी जब उन्हें देखा जाए तो अल्लाह याद आ जाए, जबकि अल्लाह के बंदो में से बदतरीन लोग चुगलखोर, प्यारो के दरमियान जुदाई डालने वाले और (गुनाहों से) ला ताअल्लूक लोगों पर बुराई का इलज़ाम लगाने वाले हैं”| (हसन)

حسن ، رواه احمد (6 / 459) [و انظر سنن ابن ماجه (4119) و الحديث السابق]

٤٨٧٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن ابنِ»» عبَّاسٍ أَنَّ رَجُلَيْنِ صَلَّيَا صَلَاةَ الظُّهْرِ أَوِ الْعَصْرِ وَكَانَا صَائِمَيْنِ فَلَمَّا قَضَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الصَّلَاةَ قَالَ: «أَعِيدَا وُضُوءَكُمَا وَصَلَاتَكُمَا وامْضِيا فِي صومكما واقضيا يَوْمًا آخَرَ» . قَالَا: لِمَ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟

قَالَ: «اغتبتم فلَانا»

4873. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के दो आदमियों ने ज़ुहर या असर की नमाज़ पढ़ी जबकि वह रोज़े से थे, जब नबी ﷺ नमाज़ पढ़ चुके तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम दोनों अपना वुज़ू दोबारा करो, नमाज़ दोहराओ और रोज़ा पूरा करो, और किसी दूसरे रोज़ उसकी कज़ा दो”, इन दोनों ने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! क्यों? आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुमने फलां शख़्स की गीबत की है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان : 6729 ، نسخة محققة : 6303) * فيه عباد بن منصور : ضعيف ، و مثنى بن بكر : مجهول

٤٨٧٤ - ، ٤٨٧٥ (لم تتمّ دراسته)»» وَعَن أبي سعيدٍ وجابرٍ قَالَا: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْغِيبَةُ أَشَدُّ مِنَ الزِّنَا» . قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَكَيْفَ الْغِيبَةُ أَشَدُّ مِنَ الزِّنَا؟ قَالَ: «إِنَّ الرَّجُلَ لَيَزْنِي فَيَتُوبُ فَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِ» - وَفِي رِوَايَةٍ: «فَيَتُوبُ فَيَغْفِرُ اللَّهُ لَهُ وَإِنَّ صَاحِبَ الْغِيبَةِ لَا يُغْفَرُ لَهُ حَتَّى يغفِرَها لَهُ صَاحبه»

4874. अबू सईद और जाबिर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “गीबत ज़िना से भी ज़्यादा संगीन है? सहाबा रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! गीबत ज़िना से कैसे ज़्यादा संगीन है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक आदमी ज़िना करता है तो वह तौबा करता है और अल्लाह उसकी तौबा कबूल फरमा लेता है”, एक दूसरी रिवायत में है: “वो तौबा करता है तो अल्लाह इसे बख्श देता है, जबकि गीबत करने वाले को मुआफ़ नहीं किया जाता हत्ता के वह शख़्स जिस की गीबत की गई है, वह इसे मुआफ़ कर दे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (6741 ، نسخة محققة : 6315) * فيه عباد بن كثير : متروك و الجريرى اختلط و فيه علة أخرى

٤٨٧٤ - ، ٤٨٧٥ (لم تتمّ دراسته)»» وَعَن أبي سعيدٍ وجابرٍ قَالَا: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْغِيبَةُ أَشَدُّ مِنَ الزِّنَا» . قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَكَيْفَ الْغِيبَةُ أَشَدُّ مِنَ الزِّنَا؟ قَالَ: «إِنَّ الرَّجُلَ لَيَزْنِي فَيَتُوبُ فَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِ» - وَفِي رِوَايَةٍ: «فَيَتُوبُ فَيَغْفِرُ اللَّهُ لَهُ وَإِنَّ صَاحِبَ الْغِيبَةِ لَا يُغْفَرُ لَهُ حَتَّى يغفِرَها لَهُ صَاحبه»

4875. अबू सईद और जाबिर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “गीबत ज़िना से भी ज़्यादा संगीन है? सहाबा रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! गीबत ज़िना से कैसे ज़्यादा संगीन है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक आदमी ज़िना करता है तो वह तौबा करता है और अल्लाह उसकी तौबा कबूल फरमा लेता है”, एक दूसरी रिवायत में है: “वो तौबा करता है तो अल्लाह इसे बख्श देता है, जबकि गीबत करने वाले को मुआफ़ नहीं किया जाता हत्ता के वह शख़्स जिस की गीबत की गई है, वह इसे मुआफ़ कर दे”| (ज़ईफ़)

ايضًا

٤٨٧٦ - (لم تتمّ دراسته) وَفِي رِوَايَةِ»» أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: «صَاحِبُ الزِّنَا يَتُوبُ وَصَاحِبُ الْغِيبَةِ لَيْسَ لَهُ تَوْبَةٌ» . رَوَى الْبَيْهَقِيُّ الْأَحَادِيثَ الثَّلَاثَةَ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ»

4876. और अनस रदियल्लाहु अन्हु की रिवायत में है फ़रमाया: “ज़िना करने वाला तौबा कर लेता है जबकि गीबत करने वाले के लिए तौबा नहीं”, (क्यूंकि वह इसे अहमियत नहीं देता के यह भी गुनाह है और वह तौबा नहीं कर पाता) | इमाम बयहकी ने तीनो अहादीस शौबुल ईमान में रिवायत की हैं| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (6742 ، نسخة محققة : 6316) * فيه رجل مجهول و فى السند اليه نظر

٤٨٧٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ مِنْ كَفَّارَةِ الْغِيبَةِ أَنْ تَسْتَغْفِرَ لِمَنِ اغْتَبْتَهُ تَقُولُ: اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَنَا وَلَهُ «. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي» الدَّعَوَاتِ الْكَبِيرِ " وَقَالَ: فِي هَذَا الْإِسْنَاد ضعف

4877. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “गीबत का कफ्फारा यह है कि तुमने जिस की गीबत की है उस के लिए दुआएं मगफिरत करो, कहो: ऐ अल्लाह! हमारी और उसकी मगफिरत फरमा”|, बयहकी की अल दअवात अल कुबरा और फ़रमाया उसकी सनद में जईफ है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه البيهقى فى الدعوات الكبير (2 / 294 ح 507) [و اورده ابن الجوزى فى الموضوعات (3 / 118119)] * فيه عنبسة بن عبد الرحمن القرشى : متروک متهم

بَاب الْوَعْد • वादे का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٤٨٧٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن جابرٍ قَالَ: لَمَّا مَاتَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَجَاء أَبُو بَكْرٍ مَالٌ مِنْ قِبَلِ الْعَلَاءِ بْنِ الْحَضْرَمِيِّ. فَقَالَ أَبُو بكر: من كَانَ لَهُ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَيْنٌ أَوْ كَانَتْ لَهُ قِبَلَهُ عِدَةٌ فَلْيَأْتِنَا. قَالَ جَابِرٌ: فَقُلْتُ: وَعَدَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يُعْطِيَنِي هَكَذَا وَهَكَذَا وَهَكَذَا. فَبَسَطَ يَدَيْهِ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ. قَالَ جَابِرٌ: فَحَثَا لِي حَثْيَةً فَعَدَدْتُهَا فَإِذَا هِيَ خَمْسُمِائَةٍ وَقَالَ: خُذْ مثلَيها. مُتَّفق عَلَيْهِ

4878. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ ने वफात पाई और अलाअ बिन हज़्रमी रदियल्लाहु अन्हु की तरफ से अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु के पास माल आया तो अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: जिस शख़्स का नबी ﷺ पर कोई क़र्ज़ थी या आप ने किसी को कुछ देने का वादा फ़रमाया था तो वह हमारे पास आए)हम वह क़र्ज़ अदा करेंगे और आप का वादावफ़ा करेगे) जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने कहा रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझ से वादा फ़रमाया था के आप मुझे इस क़दर इस क़दर और इस क़दर अता

फरमाइएगे और जाबिर रदियल्लाहु अन्हु ने तीन मर्तबा हाथ फेलाए, जाबिर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया के उन्होंने चुल्लू भर कर मुझे अता फ़रमाया, मैंने उन्हें गिना तो वह पांच सौ थे, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: इतने दो बार और लो"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (2296) و مسلم (61 ، 60 / 2314)، (6023)

بَاب الْوَعْد • वादे का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٤٨٧٩ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي جُحَيْفَةَ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَبْيَضَ قَدْ شَابَ وَكَانَ الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ يُشْبِهُهُ وَأَمَرَ لَنَا بِثَلَاثَةَ عَشَرَ قَلُوصًا فَذَهَبْنَا نَقْبِضُهَا فَأَتَانَا مَوْتُهُ فَلَمْ يُعْطُونَا شَيْئًا. فَلَمَّا قَامَ أَبُو بَكْرٍ قَالَ: مَنْ كَانَتْ لَهُ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عِدَةٌ فَلْيَجِئْ فَقُمْتُ إِلَيْهِ فَأَخْبَرْتُهُ فَأَمَرَ لَنَا بِهَا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

4879. अबू जुहैफा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूल अल्लाह को (सुरख माइल) सफ़ेद रंगत में देखा और आप के कुछ बाल सफ़ेद हो चुके थे और हसन बिन अली रदियल्लाहु अन्हु आप ﷺ से मुशाबिहत रखते थे, आप ने हमारे लिए तेरह ऊंटनियो का हुक्म फ़रमाया जब हम उन्हें लेने गए तो आप की वफात की खबर हमें पहुंची चुनांचे हमें कुछ न मिल सका, अलबत्ता जब अबू बक्र ने खिलाफत की ज़िम्मेदारी संभाली तो उन्होंने ने फ़रमाया: अगर रसूलुल्लाह ﷺ की तरफ से किसी के पास कोई अहद हो तो वह तशरीफ़ लाए में उन के पास गया और उन्हें बताया तो उन्होंने हमें ऊंट अता करने का हुक्म दिया| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذى (2826)

٤٨٨٠ - (ضَعِيف) وَعَن عبدِ الله بن أبي الحَسْماءِ قَالَ: بَايَعْتُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَبْلَ أَنْ يُبْعَثَ وَبَقِيَتْ لَهُ بَقِيَّةٌ فَوَعَدْتُهُ أَنْ آتِيَهُ بِهَا فِي مَكَانِهِ فَنَسِيتُ فَذَكَرْتُ بَعْدَ [ص:١٣٦ ثَلَاثٍ فَإِذَا هُوَ فِي مَكَانِهِ فَقَالَ: «لَقَدْ شَقَقْتَ عَلَيَّ أَنَا هَهُنَا مُنْذُ ثَلَاثٍ أنتظرك» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4880. अब्दुल्लाह बिन अबी हस्माअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ से आप के एलाने नबूवत से पहले कोई चीज़ खरीदी और आप का कुछ बकाया मेरे जिम्मे बाकी रह गया तो मैंने आप से वह बकाया इसी जगह लाने का वादा किया और फिर मैं भूल गया, तीन दिन बाद मुझे याद आया (और में गया) तो आप इसी जगह पर थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुमने मुझे मशक्क़त में मुब्तिला कर दिया में तीन दिन से यहाँ तुम्हारा इंतज़ार कर रहा हूँ"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4996) * فيه عبد الكريم بن عبدالله بن شقيق : مجهول

٤٨٨١ - (ضَعِيف) وَعَن زيد بن أَرقم عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا وَعَدَ الرَّجُلُ أَخَاهُ وَمِنْ نِيَّتِهِ أَنْ يَفِيَ لَهُ فَلَمْ يَفِ وَلَمْ يَجِئْ لِلْمِيعَادِ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ

4881. ज़ैद बिन अरक़म रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब आदमी वादा वफाई की नियत से अपने भाई से कोई वादा कर लेता है लेकिन उस से वादा वफ़ा नहीं हुआ और न वह वक्ते मुकर्रर पर पहुंचा तो उस पर कोई गुनाह नहीं”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (4995) و الترمذی (2633 وقال : لیس اسناده بالقوی ،،، و ابو النعمان مجهول و ابو وقاص مجهول)

٤٨٨٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عبدِ الله بن عامرٍ قَالَ: دَعَتْنِي أُمِّي يَوْمًا وَرَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَاعِدٌ فِي بَيْتِنَا فَقَالَتْ: هَا تَعَالَ أُعْطِيكَ. فَقَالَ لَهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا أَرَدْتِ أَنْ تُعْطِيهِ؟» قَالَتْ: أَرَدْتُ أَنْ أُعْطِيَهُ تَمْرًا. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَمَا إِنَّكِ لَوْ لَمْ تُعْطِيهِ شَيْئًا كُتِبَتْ عَلَيْكِ كَذِبَةٌ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ»

4882. अब्दुल्लाह बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक रोज़ मेरी वालिद ने मुझे बुलाया जबकि रसूलुल्लाह ﷺ हमारे घर में तशरीफ़ फरमा थे मेरी वालिदा ने फ़रमाया: सुनो आओ में तुम्हें कुछ दूंगी, रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: “तुमने इसे किया देने का इरादा किया है?” उन्होंने अर्ज़ किया, मैंने इसे एक खजूर देने का इरादा किया है रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सुन लो! अगर तुम उसे कोई चीज़ न देती तो तुम्हारे जिम्मे एक झूठ लिख दिया जाता”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (4991) و البیهقی فی شعب الایمان (4822) * مولی عبدالله : مجهول

بَاب الْوَعْد • वादे का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٤٨٨٣ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم قَالَ: «مَنْ وَعَدَ رَجُلًا فَلَمْ يَأْتِ أَحَدُهُمَا إِلَى وَقْتِ الصَّلَاةِ وَذَهَبَ الَّذِي جَاءَ لِيُصَلِّيَ فَلَا إِثْمَ عليهِ» . رَوَاهُ رزين

4883. ज़ैद बिन अरक़म रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने किसी आदमी से वादा किया, लेकिन इन दोनों में से एक वक़्त नमाज़ तक न आया जबकि वह शख़्स जो आ चूका था वह नमाज़ पढ़ने चला जाए तो उस पर कोई गुनाह नहीं”| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواه رزین (لم اجده) [و ابن ابی حاتم فی علل الحدیث (2 / 274 ح 2321) وقال : فی الاسناد مجهولان : ابو النعمان و ابو وقاص]

मज़ाह (खुश तबियत) का बयान
بَاب المزاح •

पहली फस्ल
الْفَصْلُ الأول •

٤٨٨٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن أنس قَالَ: إِنْ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيُخَالِطُنَا حَتَّى يَقُول لِأَخٍ لِي صَغِيرٍ: «يَا أَبَا عُمَيْرٍ مَا فَعَلَ النُّغَيْرُ؟» كَانَ لَهُ نُغَيْرٌ يَلْعَبُ بِهِ فَمَاتَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

4884. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि नबी ﷺ हमारे साथ तकलीफ नह बरतते थे (घुल मिल कर रहते थे) हत्ता के आप मेरे छोटे भाई से फरमाते: अबू उमैर “चिड़िया ने क्या किया ?” अबू उमैर की एक चिड़िया थी वह उस के साथ खेला करता था वह मर गई| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (6129) و مسلم (30 / 2150)، (5622)

मज़ाह (खुश तबियत) का बयान
بَاب المزاح •

दूसरी फस्ल
الْفَصْلُ الثَّانِي •

٤٨٨٥ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّكَ تُدَاعِبُنَا. قَالَ: «إِنِّي لَا أَقُولُ إِلَّا حَقًّا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4885. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, सहाबा रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप तो हम से हंसी मज़ाख कर लेते है आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं हक़ बात ही कहता हूँ”| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ الترمذی (1990 وقال : حسن)

٤٨٨٦ - (صَحِيح) وَعَن أنسٍ أَنَّ رَجُلًا اسْتَحْمَلَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «إِنِّي حَامِلُكَ عَلَى وَلَدِ نَاقَةٍ؟» فَقَالَ: مَا أَصْنَعُ بِوَلَدِ النَّاقَةِ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَهَلْ تَلِدُ الْإِبِلَ إِلَّا النُّوقُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد

4886. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक आदमी ने रसूलुल्लाह ﷺ से सवारी तलब की तो आप ने फ़रमाया: “मैं तुम्हें ऊंटनी के बच्चे पर सवार करूँगा”, उस ने अर्ज़ किया, मैं ऊंटनी के बच्चे को किया करूँगा? रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ऊंटनीया ही ऊंट को जन्म देती हैं”| (सहीह)

اسنادہ صحیح ، رواہ الترمذی (1991 وقال : صحیح غریب) و ابوداؤد (4998)

٤٨٨٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَهُ: «يَا ذَا الْأُذُنَيْنِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالتِّرْمِذِيّ

4887. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने इसे फ़रमाया: “ए दो कानों वाले!” (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (5007) و الترمذی (1991) * و للحديث شاهد حسن عند الطبرانی فی الکبير (1 / 240 ح 662)

٤٨٨٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِامْرَأَةٍ عَجُوزٍ: «إِنَّهُ لَا تَدْخُلُ الْجَنَّةَ عَجُوزٌ» فَقَالَتْ: وَمَا لَهُنَّ؟ وَكَانَتْ تَقْرَأُ الْقُرْآنَ. فَقَالَ لَهَا: «أَمَا تَقْرَئِينَ [ص:١٣٧ الْقُرْآنَ؟ (إِنَّا أَنْشَأْنَاهُنَّ إنشاءً فجعلناهُنَّ أَبْكَارًا)»» رَوَاهُ رَزِينٌ. وَفِي»» شَرْحِ السُّنَّةِ» بِلَفْظِ «الْمَصَابِيحِ»

4888. अनस रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने एक बुढ़िया औरत से फ़रमाया: “कोई बुढ़िया जन्नत में नहीं जाएगी”, इस (औरत) ने अर्ज़ किया, इन के लिए किया (मानेअ) है? और वह कुरान पढ़ती थी, आप ﷺ ने इसे फ़रमाया: “क्या तुम कुरान नहीं चढ़ती हो? बेशक हमने उन (हूरो) को एक खास तरीके पर पैदा किया है फिर इनको कुँवारा रखा”| रजिन शरह सुन्ना में मसाबिह के अल्फाज़ है| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه رزين (لم اجده) و البغوی فی شرح السنة (13 / 183 بعد ح 3606) [و الترمذی فی الشمائل (239) و البغوی فی مصابيح السنة (3 / 335336 ح 3796)] * مبارک بن فضالة مدلس و عنعن و الحسن البصری : مرسل ، وله شاهد ضعيف عند ابن الجوزی فی کتاب الوفاء و سنده ضعيف فيه رجل لم يسم ، انظر تنقيح الرواة (3 / 321)

٤٨٨٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ أَنَّ رَجُلًا مِنْ أَهْلِ الْبَادِيَةِ كَانَ اسْمه زَاهِر بن حرَام وَكَانَ يهدي النَّبِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنَ الْبَادِيَةِ فَيُجَهِّزُهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَخْرُجَ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ زَاهِرًا بَادِيَتُنَا وَنَحْنُ حَاضِرُوهُ» . وَكَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُحِبُّهُ وَكَانَ دَمِيمًا فَأَتَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمًا وَهُوَ يَبِيعُ مَتَاعَهُ فَاحْتَضَنَهُ مِنْ خلفه وَهُوَ لَا يُبصره. فَقَالَ: أَرْسِلْنِي مَنْ هَذَا؟ فَالْتَفَتَ فَعَرَفَ النَّبِيَّ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم فَجعل لَا يألوا مَا أَلْزَقَ ظَهْرَهُ بِصَدْرِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ عَرَفَهُ وَجَعَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ يَشْتَرِي الْعَبْدَ؟» فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِذًا وَاللَّهِ تَجِدُنِي كَاسِدًا فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَكِنْ عِنْدَ اللَّهِ لَسْتَ بِكَاسِدٍ» رَوَاهُ فِي «شرح السّنة»

4889. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के ज़ाहिर बिन हराम नामी एक गंवार शख़्स जंगल से नबी ﷺ के लिए तहाईफ लाया करता था, और जब वह वापसी का इरादा करते तो रसूलुल्लाह ﷺ इसे (सामान) दिया करते थे, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “ज़ाहिर जंगल में हमारा कारिन्दाह है और हम शहर में उस के देने वाले हैं”, और नबी ﷺ उस से मुहब्बत किया करते थे हालाँकि वह कोई खुबसूरत नहीं था, चुनांचे एक रोज़ नबी ﷺ तशरीफ़ लाए तो वह अपना सामान फरोख्त कर रहा था, आप ने उस के पीछे से अपने गोथ में ले लिया और वह आप को नहीं देखता था, उस ने अर्ज़ किया: मुझे छोड़ दो, यह कौन है? उस ने एक तरफ से देखा तो पहचान लिया के वह नबी ﷺ है, जब उस ने आप को पहचान लिया तो वह बड़े इह्तेमाम के साथ अपने पुश्त नबी ﷺ के सीना मुबारक के साथ लगाने लगा, और नबी ﷺ फरमाने लगे: “इस गुलाम को कौन खरीदेगा ?” उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के

रसूल! अल्लाह की क़सम! मेरी बहोत कम कीमत आप को मिलेगी, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “लेकिन तुम अल्लाह के यहाँ कम कीमत के नहीं हो”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه البغوی فی شرح السنة (13 / 181 ح 3604) [و احمد (3 / 161) و الترمذی فی الشمائل (238)] و اخطا من ضعفه

٤٨٩٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَوْفِ بْنِ مَالِكٍ الْأَشْجَعِيِّ قَالَ: أَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ وَهُوَ فِي قُبَّةٍ مِنْ أَدَمٍ فَسَلَّمْتُ فَرَدَّ عَلَيَّ وَقَالَ: «ادْخُلْ» فَقُلْتُ: أَكُلِّي يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: «كُلُّكَ» فَدَخَلْتُ. قَالَ عُثْمَان بن أبي عَاتِكَة: إِنَّمَا قَالَ أَدْخُلُ كُلِّي مِنْ صِغَرِ الْقُبَّةِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4890. ऑफ बिन मालिक अशजई रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं गज़वा ए तबुक के मौके पर रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ आप चमड़े के छोटे से खैमे में थे, मैंने सलाम अर्ज़ किया तो आप ﷺ ने मुझे सलाम का जवाब दिया और फ़रमाया: “अन्दर जाओ”, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मैं सारा (अंदर आ जाऊं)? आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम सारे के सारे (अंदर आ जाओ)”, मैं अन्दर चला गया, उस्मान बिन अबी आतिक (रावी) बयान करते हैं, उस ने कहा क्या मैं छोटे से खैमे में सारे का सारा आ जाऊं ? (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (5000)

٤٨٩١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن النعمانِ بن بشيرٍ قَالَ: اسْتَأْذَنَ أَبُو بَكْرٍ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فَسَمِعَ صَوْتَ عَائِشَةَ عَالِيًا فَلَمَّا دَخَلَ تَنَاوَلَهَا لِيَلْطِمَهَا وَقَالَ: لَا أَرَاكِ تَرْفَعِينَ صَوْتَكِ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَجَعَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يحجزه وَأَبُو بَكْرٍ مُغْضَبًا. فَقَالَ [ص:١٣٧ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ خَرَجَ أَبُو بَكْرٍ: «كَيْفَ رَأَيْتِنِي أَنْقَذْتُكِ مِنَ الرَّجُلِ؟» . قَالَتْ: فَمَكَثَ أَبُو بَكْرٍ أَيَّامًا ثُمَّ اسْتَأْذَنَ فَوَجَدَهُمَا قَدِ اصْطَلَحَا فَقَالَ لَهُمَا: أَدْخِلَانِي فِي سِلْمِكُمَا كَمَا أَدْخَلْتُمَانِي فِي حَرْبِكُمَا فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «قَدْ فَعَلْنَا قَدْ فَعَلْنَا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

4891. नौमान बिन बशीर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने नबी ﷺ से आने की इजाज़त तलब की और उन्होंने आइशा रदियल्लाहु अन्हा की आवाज़ बुलंद होते हुए सुनी, जब वह अन्दर तशरीफ़ ले आए तो उन्होंने आइशा रदियल्लाहु अन्हा को पकड़ा ताकि उन्हें तमाचे मारे और उन्होंने ने फ़रमाया: में तुम्हें रसूलुल्लाह ﷺ की आवाज़ पर आवाज़ बुलंद करते हुए न देखूं, नबी ﷺ अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु को रोकने लगे और वह गुस्से की हालत में बाहर तशरीफ़ ले गए जब अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु बाहर निकल गए तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: “तुमने मुझे कैसे देखा के मैंने तुम्हें इस आदमी (यानी अबू बक्र (र)) से बचाया”| रावी बयान करते हैं, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु चंद दिनों के बाद फिर तशरीफ़ लाए और अन्दर आने की इजाज़त तलब की तो इन दोनों रसूलुल्लाह ﷺ और आइशा रदियल्लाहु अन्हु को सुलह की हालत में पाया और उन्होंने उन दोनो से कहा तुम मुझे अपने सुलह में दाखिल करो जैसे तुमने अपने लड़ाई में मुझे दाखिल किया था, नबी ﷺ ने फ़रमाया:

“हम कर चुके, हम कर चुके”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4999) * ابو اسحاق مدلس و عنعن و سقط ذكره من السنن الكبرى للنسائى (8495)

٤٨٩٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا تُمَارِ أَخَاكَ وَلَا تُمَازِحْهُ وَلَا تَعِدْهُ مَوْعِدًا فَتُخْلِفَهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حديثٌ غَرِيب»»

4892. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अपने (मुसलमान) भाई से झगड़ा न कर और न उस से (तकलीफ देह) मज़ाक न कर और ना ही उस से ऐसा वादा कर जिस की तू खिलाफर्ज़ी करे”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (1995) * ليث بن ابى سليم : ضعيف

بَاب الْمُفَاخَرَة • फख्र जताने और घमंड करने का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٤٨٩٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَي النَّاس أكْرم؟ فَقَالَ: «أَكْرَمُهُمْ عِنْدَ اللَّهِ أَتْقَاهُمْ» . قَالُوا: لَيْسَ عَنْ هَذَا نَسْأَلُكَ. قَالَ: «فَأَكْرَمُ النَّاسِ يُوسُفُ نَبِيُّ اللَّهِ ابْنُ نَبِيِّ اللَّهِ ابْنِ خَلِيلِ اللَّهِ» . قَالُوا: لَيْسَ عَن هَذَا نَسْأَلك. قَالَ: «فَمِمَّنْ مَعَادِنِ الْعَرَبِ تَسْأَلُونِي؟» قَالُوا: نَعَمْ. قَالَ: فَخِيَارُكُمْ فِي الْجَاهِلِيَّةِ خِيَارُكُمْ فِي الْإِسْلَامِ إِذَا فَقُهُوا ". مُتَّفق عَلَيْهِ

4893. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ से दरियाफ्त किया गया लोगों में से ज़्यादा मुअज़्ज़ज़ शख़्स कौन है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “उन में से अल्लाह के यहाँ ज़्यादा मुअज़्ज़ज़ शख़्स वह है जो उनमें से ज़्यादा मुत्तकी व परहेज़गार है”, सहाबा रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, हम उस के मुतल्लिक आप से नहीं पूछ रहे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तब मुअज़्ज़ज़ शख़्स युसूफ अलैहिस्सलाम अल्लाह के नबी, अल्लाह के नबी के बेटे, अल्लाह के नबी के पोते, अल्लाह के खलील इब्राहीम अलैहिस्सलाम के परपोते है”, सहाबा ने अर्ज़ किया, हम उस के बारे में आप से दरियाफ्त नहीं कर रहे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम अरब क़बीलो के मुतल्लिक मुझ से दरियाफ्त कर रहे हो?” उन्होंने अर्ज़ किया, जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम में से जो जाहिलियत में बेहतर थे वही तुम्हारे इस्लाम में बेहतर है, बशर्तेकी वह (आदाबे शरियत के मुत्तल्लिक) समझबुझ हासिल करे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (4689) و مسلم (168 / 2378)، (6161)

٤٨٩٤ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْكَرِيمُ ابْنُ الْكَرِيمِ ابْنِ الْكَرِيمِ ابْنِ الْكَرِيمِ يُوسُفُ بْنُ يَعْقُوبَ بنِ إِسحاقَ بن إِبراهيمَ» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

4894. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "करीम बिन करीम बिन करीम बिन करीम युसूफ बिन याक़ूब बिन इसहाक बिन इब्राहीम अलैहिस्सलाम है"| (बुखारी)

رواه البخارى (3390)

٤٨٩٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: فِي يَوْمِ حُنَيْنٍ كَانَ أَبُو سُفْيَانَ بْنُ الْحَارِثِ آخِذًا بِعِنَانِ بَغْلَتِهِ يَعْنِي بَغْلَةَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمَّا غَشِيَهُ الْمُشْرِكُونَ نَزَلَ فَجَعَلَ يَقُولُ «أَنَا النَّبِيُّ لَا كَذِبَ أَنَا ابْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبْ»»» قَالَ: فَمَا رُئِيَ مِنَ النَّاسِ يَوْمَئِذٍ أَشَدُّ مِنْهُ. مُتَّفق عَلَيْهِ

4895. बराअ बिन आजीब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, गज़वा ए हुनैन के रोज़ अबू सुफियान बिन हारिस रदियल्लाहु अन्हु आप यानी रसूलुल्लाह ﷺ के खच्चर की लगाम थामे हुए थे, जब मुशरिकीन ने आप को हर तरफ से घेर लिया तो आप (सवारी से) नीचे उतरे और फरमाने लगे: "मैं नबी हूँ कोई झूठ नहीं, और मैं अब्दुल मूत्तलीब का बेटा हूँ" रावी बयान करते हैं, इस दिन तमाम लोगों में से आप ﷺ से ज़्यादा शिजाअ कोई नहीं देखा गया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3042) و مسلم (78 / 1776)، (4616)

٤٨٩٦ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا خَيْرَ الْبَرِيَّةِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «ذَاكَ إِبْرَاهِيم» . رَوَاهُ مُسلم

4896. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने आप से पूछा: मखलूक में से बेहतरीन शख्शियत! रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "वो इब्राहीम अलैहिस्सलाम है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (150 / 2369)، (6138)

٤٨٩٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَا تُطْرُونِي كَمَا أَطْرَتِ النَّصَارَى ابْنَ مَرْيَمَ فَإِنَّمَا أَنَا عَبْدُهُ فَقُولُوا: عبدُ الله ورسولُه ". مُتَّفق عَلَيْهِ

4897. उमर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मेरे मर्तबे को ऐसे न बढ़ाना जैसे नसारा ने इसा इब्ने मरियम का रुतबा बढ़ा दिया, मैं तो उस का बंदा हूँ, तुम कहो अल्लाह का बंदा और उस का

रसूल”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3445) و مسلم (5 / 1691)

٤٨٩٨ - (صَحِيح) وَعَن عياضِ بن حمارٍ المجاشعيِّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " إِنَّ اللَّهَ أَوْحَى إِلَيَّ: أَنْ تَوَاضَعُوا حَتَّى لَا يَفْخَرَ أَحَدٌ عَلَى أَحَدٍ وَلَا يبغيَ أحدٌ على أحد ". رَوَاهُ مُسلم

4898. इयाज़ बिन हिमार मुजाशीई रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक अल्लाह ने मेरी तरफ वही की है के तुम आजिज़ी इख़्तियार करो हत्ता के कोई किसी पर फख्र न करे और कोई किसी पर ज़ुल्म करे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (64 / 2865)، (7207)

بَاب الْمُفَاخَرَة • फख्र जताने और घमंड करने का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٤٨٩٩ - (حسن) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَيَنْتَهِيَنَّ أَقْوَامٌ يَفْتَخِرُونَ بِآبَائِهِمُ الَّذِينَ مَاتُوا إِنَّمَا هُمْ فَحْمٌ مِنْ جَهَنَّمَ أَوْ لَيَكُونُنَّ أَهْوَنَ عَلَى اللَّهِ مِنَ الْجُعَلِ الَّذِي يُدَهْدِهُ الْخِرَاءَ بِأَنْفِهِ إِنَّ اللَّهَ قَدْ أَذْهَبَ عَنْكُمْ عُبِّيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ وَفَخْرَهَا بِالْآبَاءِ إِنَّمَا هُوَ مُؤْمِنٌ تَقِيٌّ أَوْ فَاجِرٌ شَقِيٌّ النَّاسُ كُلُّهُمْ بَنُو آدَمَ وَآدَمُ مِنْ تُرَابٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

4899. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “लोग अपने फौत शुदा आबाओ अजदाद पर फख्र करने से बाज़ आजाए वह तो दोज़ख के कोइले है, या वह अल्लाह के यहाँ करम नजासत से भी ज़्यादा हकीर है जो के अपने नाक से गलाज़त धकेलता है, बेशक अल्लाह ने आबाओ अजदाद पर तुम्हारे जाहली फख्र गुरुर को ख़तम कर दिया है, बस वह (फख्र करने वाला) मुअमिन मुत्तकी है या फ़ाजिर बदबख्त, तमाम लोग आदम अलैहिस्सलाम की औलाद है और आदम अलैहिस्सलाम मिट्टी से (पैदा हुए) है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (39553956 وقال : حسن) و ابوداؤد (5116)

٤٩٠٠ - (صَحِيح) وَعَن مطرف بن عبد الله الشِّخّيرِ قَالَ: قَالَ أَبِي: انْطَلَقْتُ فِي وَفْدِ بَنِي عَامِرٍ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْنَا: أَنْتَ سَيِّدُنَا. فَقَالَ: «السَّيِّدُ اللَّهُ» فَقُلْنَا وَأَفْضَلُنَا فَضْلًا وَأَعْظَمُنَا طَوْلًا. فَقَالَ: «قُولُوا قَوْلَكُمْ أَوْ بَعْضَ قَوْلِكُمْ وَلَا يَسْتَجْرِيَنَّكُمُ الشَّيْطَانُ» . رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد

4900. मतरफ बिन अब्दुल्लाह बिन शखियर से रिवायत है वह (अपने वालिद से) बयान करते हैं, मैं बनू आमिर के वफद मैं रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो हमने अर्ज़ किया: आप ﷺ हमारे सय्यिद है, आप ने फ़रमाया: “सय्यिद तो अल्लाह है”, फिर हमने अर्ज़ किया: आप फ़ज़ीलत में हम से अफज़ल है और हम से अज़ीम तर है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो कह रहे हो वह कहो या अपनी बात का कुछ हिस्सा कहो और शैतान तुम्हें (बाते बनाने पर) दिलेर न बना दे”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه احمد (4 / 25 ح 16420) و ابوداؤد (4806)

٤٩٠١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن الْحسن عَن سَمُرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْحَسَبُ الْمَالُ وَالْكَرَمُ التَّقْوَى» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وابنُ مَاجَه

4901. हसन बसरी रहिमहुल्लाह समुरह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दुनिया में बाईस एजाज़ माल है जबकि अल्लाह के यहाँ आखिरत में बाईस एजाज़ तक़्वा है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (3271 وقال : حسن غريب) و ابن ماجه (4219) * قتادة عنعن و حديث النسائى (4 / 65 ح 3227 سنده صحيح) يغنى عنه

٤٩٠٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أُبيٍّ»» بن كعبٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ تَعَزَّى بِعَزَاءِ الْجَاهِلِيَّةِ فَأَعِضُّوهُ بِهَنِ أَبِيهِ وَلَا تُكَنُّوا» . رَوَاهُ فِي «شَرْحِ السّنة»

4902. उबई बिन काब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जो शख़्स जाहली नसब की तरफ निस्बत करे (और उस पर फख्र करे) तो उस से कहो अपने बाप का आले तनासुल (लिंग) काट कर मुंह में ले लो और यह बात किनाया से मत कहो”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه البغوى فى شرح السنة (13 / 120121 ح 3541) [و احمد (5 / 136) و البخارى فى الادب المفرد (936 ، 946)] * الحسن البصرى عنعن و للحديث شواهد ضعيفة عند عبدالله بن احمد فى زوائد المسند (5 / 133 ، فيه مدلس و عنعن) وغيره

٤٩٠٣ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي عُقْبَةَ عَنْ أبي عُقبةَ وَكَانَ مَوْلًى مِنْ أَهْلِ فَارِسَ قَالَ: شَهِدْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أُحُدًا فَضَرَبْتُ رَجُلًا مِنَ الْمُشْرِكِينَ فَقُلْتُ خُذْهَا مِنِّي وَأَنَا الْغُلَامُ الْفَارِسِيُّ فَالْتَفَتَ إِلَيَّ فَقَالَ: " هَلَّا قُلْتَ: خُذْهَا مِنِّي وَأَنَا الْغُلَامُ الْأَنْصَارِيُّ؟ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4903. अब्दुल रहमान बिन अबी उक्बा रहिमहुल्लाह अबू उक्बा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, और वह अहल ए फारस के आज़ाद करदा गुलाम थे, उन्होंने कहा: में गज़वा ए उहद मैं रसूलुल्लाह ﷺ के साथ शरीक था, मैंने एक मुशरिक पर वार किया तो मैंने कहा: इसे मेरी तरफ से वुसुल (बर्दाश्त) करो, मैं फ़ारसी उल नस्ल हूँ,

आप ﷺ मेरी तरफ मुतवज्जे हुए और फ़रमाया: “तुमने ऐसे क्यों न कहा, इसे मेरी तरफ से वुसुल (बर्दाश्त) करो और मैं अंसारी जवान हूँ”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (5123) * محمد بن اسحاق مدلس : عنعن و عبد الرحمن بن ابی عقبة مستور لم یوثقه غیر ابن حبان

٤٩٠٤ - (صَحِيح) وَعَن»» ابْنِ مَسْعُودٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ نَصَرَ قَوْمَهُ عَلَى غَيْرِ الْحَقِّ فَهُوَ كَالْبَعِيرِ الَّذِي رَدَى فَهُوَ يُنزَعُ بِذَنَبِهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4904. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिस शख़्स ने अपने कौम की नाहक हिमायत व नुसरत की तो वह इस ऊंट की तरह है जो कुंवो में गिर जाए और इसे उसकी दुम से पकड़ कर खिचां जाए”| (सहीह)

صحیح ، رواه ابوداؤد (5118)

٤٩٠٥ - (ضَعِيف) وَعَن»» واثلةَ بن الأسقَعِ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا الْعَصَبِيَّةُ؟ قَالَ: «أَنْ تُعِينَ قَوْمَكَ عَلَى الظُّلْمِ» رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4905. वासिला बिन अस्कअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! अस्बियत किया है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “यह कि तुम नाहक अपने कौम की मदद करो”| (ज़ईफ़)

ضعیف جذا ، رواه ابوداؤد (5119) [و ابن ماجه (3949)] * فیه سلمة الدمشقی : مستور ، لم یوثقه غیر ابن حبان و دلس عن عباد بن کثیر و لحدیثه شاهد ضعیف جدًا یاتی (4909)

٤٩٠٦ - (ضَعِيف) وَعَن»» سُراقَة بن مالكِ بن جُعْشُم قَالَ: خَطَبَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «خير كم الْمُدَافِعُ عَنْ عَشِيرَتِهِ مَا لَمْ يَأْثَمْ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4906. सुराका बिन मालिक बिन जूअशुम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें खुत्बा देते हुए इरशाद फ़रमाया: “तुम में से बेहतरीन दिफ़ाअ करने वाला वह है जो अपने खानदान का दिफ़ाअ करता है बशर्तेकी वह गुनाह का इर्तिकाब न करे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (5120) * فیه ایوب بن سوید : ضعیف علی الراجح و سعید لم یسمع من سراقة رضی الله عنه

٤٩٠٧ - (ضَعِيف) وَعَن»» جُبَيْرُ بْنُ مُطْعِمٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَيْسَ مِنَّا مَنْ دَعَا إِلَى عَصَبِيَّةٍ

وَلَيْسَ مِنَّا مَنْ قَاتَلَ عَصَبِيَّةً وَلَيْسَ مِنَّا من مَاتَ علىعصبية» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4907. जुबेर बिन मुतइम रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “वो शख़्स हम में से नहीं जिस ने अस्बियत की तरफ बुलाया, वह शख़्स हम में से नहीं जो अस्बियत पर किताल करे और वह शख़्स हम में से नहीं जो अस्बियत पर फौत हो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (5121 وقال : هذا مرسل ، عبدالله بن ابی سلیمان لم یسمع من جبیر) * و ابن ابی لبیبة ضعیف ، ضعفه الجمهور و حدیث مسلم ، ح : 1848 یغنی عنه

٤٩٠٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» الدَّرْدَاءَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «حُبُّكَ الشَّيْءَ يُعْمِي وَيُصِمُّ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4908. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “किसी चीज़ से तेरी मुहब्बत अंधा और बहरा बना देती है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (5130) * ابوبکر بن ابی مریم : ضعیف وکان قد سرق بیته فاختلط ، و روی البیهقی فی شعب الایمان (412) عن ابی الدرداءؓ قال : حبک الشیء یعمی ویصم و سنده صحیح و الحمدلله

बَاب الْمُفَاخَرَة • फख्र जताने और घमंड करने का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٤٩٠٩ - (لم تتمّ دراسته) عَن عُبَادَةَ»» بْنِ كَثِيرٍ الشَّامِيِّ مِنْ أَهْلِ فِلَسْطِينَ عَن امْرَأَةٍ مِنْهُمْ يُقَالُ لَهَا فَسِيلَةُ أَنَّهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ أَبِي يَقُولُ: سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَمِنَ الْعَصَبِيَّةِ أَنْ يُحِبَّ الرَّجُلُ قَوْمَهُ؟ قَالَ: «لَا وَلَكِنْ مِنَ الْعَصَبِيَّةِ أَنْ يَنْصُرَ الرَّجُلُ قَوْمَهُ عَلَى الظُّلْمِ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَابْنُ مَاجَهْ

4909. अहले फिलिस्तीन से अब्बाद बिन कसीर शामी अपने (फिलिस्तीनि) फसिला नामी औरत से रिवायत करते हैं की उस ने कहा, मैंने अपने वालिद को बयान करते हुए सुना, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से मसअला दरियाफ्त करते हुए अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! क्या यह भी अस्बियत के ज़िमरे में आता है के आदमी अपने कौम से मुहब्बत करे? आप ﷺ ने फ़रमाया: “नहीं? बल्कि अस्बियत तो यह है कि आदमी अपने कौम की नाहक हिमायत व नुसरत करे”| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواه احمد (4 / 107) و ابن ماجه (3949) * عباد بن کثیر : متروک فالسند ضعیف جدًا و للحدیث طریق آخر عند ابی داود (5119) و سنده ضعیف جدًا کما تقدم (4905)

٤٩١٠ - (صَحِيح) وَعَنْ»» عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَنْسَابُكُمْ هَذِهِ لَيْسَتْ بِمَسَبَّةٍ عَلَى أَحَدٍ كُلُّكُمْ بَنُو آدَمَ طَفُّ الصَّاعِ بِالصَّاعِ لَمْ تملؤوه لَيْسَ لِأَحَدٍ عَلَى أَحَدٍ فَضْلٌ إِلَّا بِدِينٍ وَتَقْوَى كَفَى بِالرَّجُلِ أَنْ يَكُونَ بَذِيًّا فَاحِشًا بَخِيلًا» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ»

4910. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम्हारे यह अन्साब (ज़ात क़बीले) किसी के लिए बाईस ए आर नहीं, तुम सब आदम की औलाद हो और तुम सब बाहम इस तरह बराबर हो जिस तरह एक साअ दूसरे साअ के बराबर होता है, दीन और तक़्वा के अलावा किसी को किसी पर कोई फ़ज़ीलत नहीं, आदमी के लिए आर के लिहाज़ से यही काफी है के वह ज़ुबान दराज़, फहश गो और बखील हो”| (हसन)

حسن ، رواه احمد (4 / 145 ، 158) [و الطبرانی فی الکبیر (17 / 295 ح 814)] و البیھقی فی شعب الایمان (5146) ، نسخۃ محققۃ : 4783)]
* عبدالله بن لهيعة صرح بالسماع عند الطبرانی ، و ھذا الحدیث روی عنه یحیی بن اسحاق السیلحینی وھو سمع منه قبل اختلاطه ، و للحدیث شواھد معنویة کثیرة جدًا

بَاب الْبر والصلة • हुस्ने सुलूक और सिलह रहमीका बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٤٩١١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَنْ أَحَقُّ بِحُسْنِ صَحَابَتِي؟ قَالَ: «أُمَّكَ» . قَالَ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: «أُمَّكَ» . قَالَ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ «أُمَّكَ» . قَالَ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: «أَبُوكَ» . وَفِي رِوَايَةٍ قَالَ: «أُمَّكَ ثُمَّ أُمَّكَ ثُمَّ أُمَّكَ ثُمَّ أَبَاكَ ثمَّ أدناك أدناك» . مُتَّفق عَلَيْهِ

4911. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, किसी आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मेरे हुस्ने सुलूक का सबसे ज़्यादा हक़दार कौन है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “तेरी वालिदा”, उस ने अर्ज़ किया: फिर कौन? आप ﷺ ने फ़रमाया: “तेरी माँ”, उस ने अर्ज़ किया: फिर कौन? आप ﷺ ने फ़रमाया: “तेरी माँ”, उस ने अर्ज़ किया: फिर कौन? आप ﷺ ने फ़रमाया: “तेरा बाप”, एक दूसरी रिवायत में है आप ﷺ ने फ़रमाया: “तेरी माँ, फिर तेरी माँ, फिर तेरी माँ, फिर तेरा बाप, फिर तेरा करीबी रिश्तेदार, फिर उस से कम करीबी रिश्तेदार”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (5971) و مسلم (4 ، 1 / 2548)، (6500 و 6501)

٤٩١٢ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «رَغِمَ أَنْفُهُ رَغِمَ أَنْفُهُ رَغِمَ أَنْفُهُ» . قِيلَ: مَنْ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: «مَنْ أَدْرَكَ وَالِدَيْهِ عِنْدَ الْكِبَرِ أَحَدَهُمَا أَوْ كِلَاهُمَا ثمَّ لم يدْخل الْجنَّة» . وَرَاه مُسلم

4912. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “उस की नाक खाक आलूद हो, उसकी नाक खाक आलूद हो, उसकी नाक खाक आलूद हो!“ अर्ज़ किया गया: अल्लाह के रसूल! किस की आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो अपने वालिदेन में से किसी एक या या दोनों को बुढ़ापे में पा ले, फिर वह (इन के साथ हुस्ने सुलूक कर के) जन्नत में दाखिल न हो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (9 / 2551)، (6510)

٤٩١٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنهُ قَالَتْ: قَدِمَتْ عَلَيَّ أَمِّي وَهِيَ مُشْرِكَةٌ فِي عَهْدِ قُرَيْشٍ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ أُمِّي قَدِمَتْ عَلَيَّ وَهِيَ رَاغِبَةٌ أَفَأَصِلُهَا؟ قَالَ: «نعم صِليها» . مُتَّفق عَلَيْهِ

4913. अस्मा बिन्ते अबी बक्र रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, मेरी वालिदा मेरे पास तशरीफ़ लाई, जबकि वह मुशरिक थी, यह इस वक़्त की बात है जब कुरैश से (हुदेबिया का) मुआयदा हुआ था, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! बेशक मेरी वालिदा मेरे पास आई है, जबकि वह बेहतर सुलूक की हक़दार है, तो क्या मैं उस से सिलह रहमी करू? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ, उस से सिलह रहमी करो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (2620) و مسلم (50 / 1003)، (2325)

٤٩١٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " إِنَّ آل فُلَانٍ لَيْسُوا لِي بِأَوْلِيَاءَ إِنَّمَا وَلِيِّيَ اللَّهُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ وَلَكِنْ لَهُمْ رَحِمٌ أَبُلُّهَا [ص:١٣٧ بِبَلَالِهَا. مُتَّفق عَلَيْهِ

4914. अमर बिन आस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “आले अबू फलां, मेरे दोस्त व हिमायती नहीं, मेरा हिमायती तो अल्लाह और स्वालेह मोमिन है, लेकिन उन के साथ रिश्तेदारी है जिसे में सिलह रहमी के ज़रिए बरक़रार रखूँगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5990) و مسلم (366 / 215)، (519)

٤٩١٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن الْمُغِيرَةِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَ عَلَيْكُمْ عُقُوقَ الْأُمَّهَاتِ وَوَأْدَ الْبَنَاتِ وَمَنَعَ وَهَاتِ. وَكَرِهَ لَكُمْ قِيلَ وَقَالَ وَكَثْرَةَ السُّؤَالِ وَإِضَاعَةَ الْمَالِ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

4915. मुगिरह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक अल्लाह ने माओ की

नाफ़रमानी करने, बेटियों को जिंदा दफ़नाने, बुखल करने और दस्त सवाल दराज़ करने को तुम पर हराम करार दिया है, और फ़िज़ूल बाते करने (लोगो के अहवाल जानने के लिए) ज़्यादा सवाल करने और माल ज़ाए करने को तुम्हारे मुतल्लिक नापसंद फ़रमाया है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری 2408) و مسلم (12 / 593)، (4483)

٤٩١٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مِنَ الْكَبَائِرِ شَتْمُ الرَّجُلِ وَالِدَيْهِ» . قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَهَلْ يَشْتُمُ الرَّجُلُ وَالِدَيْهِ؟ قَالَ: «نَعَمْ يَسُبُّ أَبَا الرَّجُلِ فَيَسُبُّ أَبَاهُ ويسبُّ أمه فيسب أمه» . مُتَّفق عَلَيْهِ

4916. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "आदमी का अपने वालिदेन को गाली देना कबिराह गुनाह है", सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या आदमी अपने वालिदैन को गाली देता है? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ, वह किसी आदमी के वालिद को गाली देता है तो (बदले में) वह उस के वालिद को गाली देता है और यह उसकी माँ को गाली देता है, तो (बदले में) वह उसकी माँ को गाली देता है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (5973) و مسلم (146 / 90)، (263)

٤٩١٧ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ مِنْ أَبَرِّ الْبِرِّ صِلَةَ الرَّجُلِ أَهْلَ وُدِّ أَبِيهِ بَعْدَ أَن يولي» . رَوَاهُ مُسلم

4917. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "बेशक आदमी का अपने वालिद के फौत हो जाने के बाद, उस के दोस्तों से सिलह रहमी करना सबसे बड़ी नेकी है"| (मुस्लिम)

رواہ مسلم (13 / 2552)، (6514)

٤٩١٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَحَبَّ أَنْ يُبْسَطَ لَهُ فِي رِزْقِهِ وَيُنْسَأَ لَهُ فِي أَثَره فَليصل رَحمَه» . مُتَّفق عَلَيْهِ

4918. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स यह पसंद करता है की उस का रीज़्क फराख कर दिया जाए और उसकी उमर दराज़ कर दी जाए तो वह सिलह रहमी करे"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (5976) و مسلم (21 / 2557)، (6524)

٤٩١٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " خُلِقَ اللَّهُ الْخَلْقَ فَلَمَّا فَرَغَ مِنْهُ قَامَتِ الرَّحِمُ فَأَخَذَتْ بِحَقْوَيِ الرَّحْمَنِ فَقَالَ: مَهْ؟ قَالَتْ: هَذَا مقَام العائذ بك من القطيعةِ. قَالَ: أَلَا تَرْضَيْنَ أَنْ أَصِلَ مَنْ وَصَلَكِ وَأَقْطَعَ مَنْ قَطَعَكِ؟ قَالَتْ: بَلَى يَا رَبِّ قَالَ: فَذَاك ". مُتَّفق عَلَيْهِ

4919. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह ने मखलूक को पैदा फ़रमाया और जब वह उस से फारिग़ हुआ तो रहम खड़ा हो गया और उस ने रहमान की कमर पकड़ ली, उस पर (रहमान) ने फ़रमाया: हट जा, इस (रहम) ने अर्ज़ किया, यह मक़ाम उस का है जो तेरे साथ कतअ रहमी से पनाह तलब करता है, फ़रमाया: क्या तुम उस पर राज़ी नहीं की मैं उस से ताल्लुक काइम रखु जो तुझ से ताल्लुक काइम रखे, और जो तुझ से ताल्लुक तोड़ दे में उस से ताल्लुक तोड़ दू, रहम ने अर्ज़ किया, रब जी! क्यों नहीं (में राज़ी हूँ), फ़रमाया: “ये मैंने जो कहा ऐसे ही होगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (4830) و مسلم (16 / 2554)، (6518)

٤٩٢٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " الرَّحِمُ شِجْنَةٌ مِنَ الرَّحْمَنِ. [ص:١٣٧ فَقَالَ اللَّهُ: مَنْ وَصَلَكِ وَصَلْتُهُ وَمَنْ قَطَعَكِ قَطَعْتُهُ ". رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

4920. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रहम रहमान से जुड़ा हुआ है, अल्लाह ने फ़रमाया: “जिस ने तुझ से ताल्लुक काइम किया मैं उस से ताल्लुक काइम करूँगा और जिस ने तुझ से ताल्लुक तोड़ा में उस से ताल्लुक तोड़ दूंगा”| (बुखारी)

رواه البخارى (5988)

٤٩٢١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " الرَّحِمُ مُعَلَّقَةٌ بِالْعَرْشِ تَقُولُ: مَنْ وَصَلَنِي وَصَلَهُ اللَّهُ وَمَنْ قَطَعَنِي قَطَعَهُ الله ". مُتَّفق عَلَيْهِ

4921. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रहम अर्श के साथ मुअल्लक है, वह अर्ज़ करता है जिस ने मुझे जोड़ा अल्लाह इसे जोड़े और जिस ने मुझे तोड़ा अल्लाह इसे तोड़े”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5989) و مسلم (17 / 2555)، (6519)

٤٩٢٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ قَاطِعٌ» . مُتَّفِقٌ عَلَيْهِ

4922. जुबेर बिन मुतअम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कतअ रहमी करने वाला जन्नत में नहीं जाएगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5984) و مسلم (19 / 2555)، (6521)

٤٩٢٣ - (صَحِيح) وَعَن»» ابْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «لَيْسَ الواصِلُ بالمكافىء»» وَلَكِنَّ الْوَاصِلَ الَّذِي إِذَا قُطِعَتْ رَحِمُهُ وَصَلَهَا» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

4923. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सिलह रहमी के बदले में सिलह रहमी करने वाला, सिलह रहमी करने वाला नहीं, बल्कि सिलह रहमी करने वाला तो वह है की जब उसके साथ कतअ रहमी की जाए तो वह सिलह रहमी करे”| (बुखारी)

رواه البخارى (5991)

٤٩٢٤ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَجُلًا قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ لِي قَرَابَةً أصلهم ويقطعوني وَأحسن إِلَيْهِم ويسيؤون إِلَيّ وأحلم عَلَيْهِم وَيَجْهَلُونَ عَلَيَّ. فَقَالَ: «لَئِنْ كُنْتَ كَمَا قُلْتَ فَكَأَنَّمَا تُسِفُّهُمُ الْمَلَّ وَلَا يَزَالُ مَعَكَ مِنَ اللَّهِ ظَهِيرٌ عَلَيْهِمْ مَا دُمْتَ عَلَى ذَلِكَ» . رَوَاهُ مُسلم

4924. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मेरे कुछ रिश्तेदार है, मैं उन से सिलह रहमी करता हूँ और वह मुझ से कतअ रहमी करते हैं, मैं उन से हुस्ने सुलूक करता हूँ और वह मुझ से बदसुलूकी करते हैं, मैं उन से दरगुज़र करता हूँ और वह मुझ पर ज़्यादती करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर तुम्हारा बयान दुरुस्त है तो फिर तुम उन के मुंह में गरम राख डाल रहे हो, जब तक तुम इस रवीश पर काइम रहोगे तो उन के खिलाफ अल्लाह की तरफ से तुम्हें मदद पहुँचती रहेगी”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (22 / 2558)، (6525)

हुस्ने सुलूक और सिलह रहमीका बयान • بَاب الْبر والصلة

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٤٩٢٥ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ ثَوْبَانَ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَرُدُّ الْقَدَرَ إِلَّا الدُّعَاءُ وَلَا يَزِيدُ فِي الْعُمْرِ إِلَّا الْبِرُّ وَإِنَّ الرَّجُلَ لَيُحْرَمُ الرِّزْقَ بِالذَّنْبِ يُصِيبُهُ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ

4925. सौबान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दुआ, तकदीर को बदल देती है, हुस्ने सुलूक से उमर में इज़ाफा हो जाता है, बेशक आदमी गुनाह के इर्तिकाब की वजह से रीज़्क से महरूम कर दिया जाता है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه ابن ماجه (90 ، [4022]) * سفیان الثوری مدلس و عنعن

٤٩٢٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ»» قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " دَخَلْتُ الْجَنَّةَ فَسَمِعْتُ فِيهَا قِرَاءَةً فَقُلْتُ: مَنْ هَذَا؟ قَالُوا: حَارِثَةُ بْنُ النُّعْمَانِ كَذَلِكُمُ الْبِرُّ كَذَلِكُمُ [ص:١٣٧ الْبِرُّ «. وَكَانَ أَبَرَّ النَّاسِ بِأُمِّهِ. رَوَاهُ فِي» شَرْحِ السُّنَّةِ «. وَالْبَيْهَقِيُّ فِي» شعب الْإِيمَان "»» وَفِي رِوَايَة: قَالَ: «نِمْتُ فرأيتني فِي الْجنَّة» بدل «دخلت الْجنَّة»

4926. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैं जन्नत में दाखिल हुआ तो मैंने वहां किराअत सुनी तो मैंने कहा: यह कौन (कीराअत कर रहा) है? उन्होंने कहा: हारिस बिन नुअमान है, हुस्ने सुलूक की यही जज़ा होती है, हुस्ने सुलूक की जज़ा ऐसी ही होती है”, और वह अपने वालिद के साथ सबसे बढ़कर हुस्ने सुलूक करने वाले थे, बयहकी ने इसे शौबुल ईमान में रिवायत किया है और एक रिवायत में है: “मैं जन्नत में दाखिल हुआ” की बजाए “ मैंने ख्वाब में अपने आप को जन्नत में देखा”, के अल्फाज़ है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه البغوی فی شرح السنة (13 / 7 ح 3418) و البیهقی فی شعب الایمان (7851) * الزهری مدلس و عنعن ولم یثبت تصریح سماعه فی السند المتصل ، راجع مسند الحمیدی (285 بتحقیقی) و صرح بالسماع فی الروایة المرسلة عند ابن وهب فی الجامع (ح 133)

٤٩٢٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ»» اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «رَضِيَ الربِّ فِي رضى الْوَالِدِ وَسُخْطُ الرَّبِّ فِي سُخْطِ الْوَالِدِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4927. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “वालिद राज़ी तो रब राज़ी, वालिद नाराज़ तो रब नाराज़”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1900)

٤٩٢٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي»» الدَّرْدَاء أَنَّ رَجُلًا أَتَاهُ فَقَالَ: إِنَّ لِي امْرَأَةً وَإِن لي أُمِّي تَأْمُرُنِي بِطَلَاقِهَا؟ فَقَالَ لَهُ أَبُو الدَّرْدَاءِ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْوَالِدُ أَوْسَطُ أَبْوَابِ الْجَنَّةِ فَإِنْ شِئْتَ فَحَافِظْ عَلَى الْبَابِ أَوْ ضَيِّعْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَه

4928. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक आदमी उस के पास आया तो उस ने कहा मेरी एक बीवी है, जबकि मेरी वालिदा इसे तलाक देने का मुझे हुक्म देती है, (ये सुन कर) अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु ने इसे

कहा, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “वालिद जन्नत का बेहतरीन दरवाज़ा है, अगर तुम चाहो तो दरवाज़े की हिफाज़त कर लो और चाहो तो ज़ाए कर लो”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (1900 وقال : صحیح) و ابن ماجه (2089)

٤٩٢٩ - (حسن) وَعَنْ»» بَهْزِ بْنِ حَكِيمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جدِّه قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَنْ أَبَرُّ؟ قَالَ: «أَمَّكَ» قُلْتُ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: «أُمَّكَ» قُلْتُ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: «أُمَّكَ» قُلْتُ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: «أَبَاكَ ثُمَّ الْأَقْرَبَ فَالْأَقْرَبَ» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

4929. बहज़ बिन हकिम अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मैं किस से हुस्ने सुलूक करू? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अपने माँ से”, मैंने अर्ज़ किया: फिर कौन? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अपने माँ के साथ”, मैंने अर्ज़ किया: फिर कौन? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अपने माँ के साथ”, मैंने अर्ज़ किया: फिर किसी के साथ आप ﷺ ने फ़रमाया: “अपने वालिद के साथ, फिर करीब तरीन और फिर करीब तर रिश्ते दार के साथ (अच्छा सुलूक कर)”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1897 وقال : حسن) و ابوداؤد (5139)

٤٩٣٠ - (حسن صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يَقُول: " قَالَ الله تبَارك: أَنَا اللَّهُ وَأَنَا الرَّحْمَنُ خَلَقْتُ الرَّحِمَ وَشَقَقْتُ لَهَا مِنِ اسْمِي فَمَنْ وَصَلَهَا وَصَلْتُهُ وَمَنْ قطعهَا بتته ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4930. अब्दुल रहमान बिन ऑफ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “अल्लाह तबारक व तआला फरमाता है, मैं अल्लाह हूँ और मैं रहमान हूँ, मैंने रहम तखलीक किया और उस का नाम अपने नाम (रहमान) से तजवीज़ किया, जिस ने इसे जोड़ा में उसे जोड़ूंगा और जिस ने इसे तोड़ा मैं उसे अपनी (रहमत से) महरूम करूँगा”| (सहीह)

صحیح ، رواه ابوداؤد (1694) [و الترمذی (1907 وقال : صحیح)]

٤٩٣١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدُ»» اللَّهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَا تَنْزِلُ الرَّحْمَةُ عَلَى قَوْمٍ فِيهِمْ قَاطِعُ الرَّحِمِ» رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَان»

4931. अब्दुल्लाह बिन अबी अव्फी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जिस कौम में कतअ रहमी करने वाला शख़्स हो उस पर रहमत नाज़िल नहीं होती”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف جذا ، رواه البیهقی فی شعب الایمان (7962 ، نسخة محققة : 7590) [و البغوی فی شرح السنة (13 / 28 ح 34393440) و

البخاری فی الادب المفرد (63) و فیه ابو ادام سلیمان بن زید المحاربی وھو ضعیف جدًا متھم]

٤٩٣٢ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَبِي بَكْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا مِنْ ذَنْبٍ أَحْرَى أَنْ يُعَجِّلَ اللَّهُ لصَاحبه الْعقُوبَة فِي الدُّنْيَا مَعَ مايدخر لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْبَغْيِ وَقَطِيعَةِ الرَّحِمِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

4932. अबू बकरह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ज़ुल्म व सरकशी और कतअ रहमी ऐसे गुनाह है की उन के मुर्तकिब को अल्लाह दुनिया में सज़ा देने के साथ साथ इसे आखिरत मैं भी ज़खीरा कर लेता है”| (सहीह)

اسنادہ صحیح ، رواہ الترمذی (2511 وقال : صحیح) و ابوداؤد (4902)

٤٩٣٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ»» اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مَنَّانٌ وَلَا عَاقٌّ وَلَا مُدْمِنُ خمر» . رَوَاهُ النَّسَائِيّ والدارمي

4933. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इहसान जतलाने वाला, वालिदेन का नाफरमान और मुश्तकिल शराब नोश जन्नत में नहीं जाएगा”| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ النسائی (8 / 318 ح 5675) و الدارمی (2 / 112 ح 2099)

٤٩٣٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَعَلَّمُوا مِنْ أَنْسَابِكُمْ مَا تَصِلُونَ بِهِ أَرْحَامَكُمْ فَإِنَّ صِلَةَ الرَّحِمِ مَحَبَّةٌ فِي الْأَهْلِ مَثْرَاةٌ فِي الْمَالِ مَنْسَأَةٌ فِي الْأَثَرِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيب

4934. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अपने नसब को इस क़दर ज़रूर सीखो जिसके मुताबिक तुम सिलह रहमी करते हो, क्योंकि सिलह रहमी अहल रहम में मुहब्बत, माल में इज़ाफे और दराज़े उमर का बाईस है”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ الترمذی (1979)

٤٩٣٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن ابْن»» عمر أَنَّ رَجُلًا أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي أَصَبْتُ ذَنْبًا عَظِيمًا فَهَلْ لِي مِنْ تَوْبَةٍ؟ قَالَ: «هَلْ لَكَ مِنْ أُمٍّ؟» قَالَ: لَا. قَالَ: «وَهَلْ لَكَ مِنْ خَالَةٍ؟» . قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: «فبرها» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4935. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के एक आदमी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैंने एक बहोत बड़े गुनाह का इर्तिकाब किया है, तो किया मेरे लिए तौबा (की

गुंजाईश) है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम्हारी वालिदा है” उस ने अर्ज़ किया: नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम्हारी खाला है?” उस ने अर्ज़ किया, जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस के साथ हुस्ने सुलूक करो”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (1904 وقال : صحيح) * و صححه ابن حبان (الموارد : 2022) و الحاكم على شرط الشيخين (4 / 155) و وافقه الذهبى

٤٩٣٦ - (ضَعِيف) وَعَن»» أبي أسيد السَّاعِدِيّ قَالَ: بَيْنَا نَحْنُ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذْ جَاءَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي سَلَمَةَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ هَلْ بَقِي من برِّ أبويَّ شيءٌ أَبَرُّهُمَا بِهِ بَعْدَ مَوْتِهِمَا؟ قَالَ: «نَعَمْ الصَّلَاةُ عَلَيْهِمَا وَالِاسْتِغْفَارُ لَهُمَا وَإِنْفَاذُ عَهْدِهِمَا مِنْ بَعْدِهِمَا وَصِلَةُ الرَّحِمِ الَّتِي لَا تُوصَلُ إِلَّا بِهِمَا وَإِكْرَامُ صَدِيقِهِمَا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

4936. अबू उसय्द अस्साइदी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, इस असना में के हम रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर थे की इतने में बनू सलमा (के क़बीले) से एक आदमी आप की खिदमत में हाज़िर हुआ और उस ने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! क्या वालिदेन के साथ हुस्ने सुलूक की कोई ऐसी सूरत है जिसके ज़रिए मैं इन की वफात के बाद उन से हुस्ने सुलूक कर सकू? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ, इन के लिए दुआ करो, इन के लिए मगफिरत तलब करो, उन के बाद उनकी वसीयत पर अमल करो, वह जो सिलह रहमी किया करते थे इसे जारी रखो और उन के दोस्तों की तकरीम करो”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (5142) و ابن ماجه (3664)

٤٩٣٧ - (ضَعِيف) وَعَن»» أبي الطُّفَيْل قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقْسِمُ لَحْمًا بِالْجِعْرَانَةِ إِذْ أَقْبَلَتِ امْرَأَةٌ حَتَّى دَنَتْ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَبَسَطَ لَهَا رِدَاءَهُ فَجَلَسَتْ عَلَيْهِ. فَقُلْتُ: مَنْ هِيَ؟ فَقَالُوا: هِيَ أُمُّهُ الَّتِي أَرْضَعَتْهُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4937. अबू तुफैल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ को जीअरान के मक़ाम पर गोश्त तकसीम करते हुए देखा, अचानक एक औरत आई हत्ता के वह नबी ﷺ के करीब हो गई और आप ने उस के लिए अपनी चादर बिछा दि और वह उस पर बैठ गई, मैंने पूछा यह कौन है? तो उन्होंने बताया: यह आप ﷺ की रिज़ाई वालिद है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (5144) * عمارة بن ثوبان : مستور و جعفر بن يحيى مثله

بَاب الْبر والصلة • हुस्ने सुलूक और सिलह रहमीका बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٤٩٣٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " بَيْنَمَا ثَلَاثَة نفر يماشون [ص:١٣٨ أَخَذَهُمُ الْمَطَرُ فَمَالُوا إِلَى غَارٍ فِي الْجَبَلِ فَانْحَطَّتْ عَلَى فَمِ غَارِهِمْ صَخْرَةٌ مِنَ الْجَبَلِ فَأَطْبَقَتْ عَلَيْهِمْ فَقَالَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ: انْظُرُوا أَعْمَالًا عَمِلْتُمُوهَا لِلَّهِ صَالِحَةً فَادْعُوا اللَّهَ بِهَا لَعَلَّهُ يُفَرِّجُهَا. فَقَالَ أَحَدُهُمْ: اللَّهُمَّ إِنَّهُ كَانَ لِي وَالِدَانِ شَيْخَانِ كَبِيرَانِ وَلِي صِبْيَةٌ صِغَارٌ كُنْتُ أَرْعَى عَلَيْهِمْ فَإِذَا رُحْتُ عَلَيْهِمْ فَحَلَبْتُ بَدَأْتُ بِوَالِدَيَّ أَسْقِيهِمَا قَبْلَ وَلَدِي وَإِنَّهُ قَدْ نَأَى بِي الشَّجَرُ فَمَا أَتَيْتُ حَتَّى أَمْسَيْتُ فَوَجَدْتُهُمَا قَدْ نَامَا فَحَلَبْتُ كَمَا كُنْتُ أَحْلُبُ فَجِئْتُ بِالْحِلَابِ فَقُمْتُ عِنْدَ رُؤُوسِهِمَا أَكْرَهُ أَنْ أُوقِظَهُمَا وَأَكْرَهُ أَنْ أَبْدَأَ بِالصِّبْيَةِ قَبْلَهُمَا وَالصِّبْيَةُ يَتَضَاغَوْنَ عِنْدَ قَدَمَيَّ فَلَمْ يَزَلْ ذَلِكَ دَأْبِي وَدَأْبَهُمْ حَتَّى طَلَعَ الْفَجْرُ فَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنِّي فَعَلْتُ ذَلِكَ ابْتِغَاءَ وَجْهِكَ فَافْرُجْ لَنَا فُرْجَةً نَرَى مِنْهَا السَّمَاءَ فَفَرَجَ اللَّهُ لَهُمْ حَتَّى يرَوْنَ السماءَ»» قَالَ الثَّانِي: اللَّهُمَّ إِنَّه كَانَ لِي بِنْتُ عَمٍّ أُحِبُّهَا كَأَشَدِّ مَا يُحِبُّ الرِّجَالُ النِّسَاءَ فَطَلَبْتُ إِلَيْهَا نَفْسَهَا فَأَبَتْ حَتَّى آتيها بِمِائَة دِينَار فلقيتها بِهَا فَلَمَّا قَعَدْتُ بَيْنَ رِجْلَيْهَا. قَالَتْ: يَا عَبْدَ اللَّهِ اتَّقِ اللَّهَ وَلَا تَفْتَحِ الْخَاتَمَ فَقُمْتُ عَنْهَا. اللَّهُمَّ فَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنِّي فَعَلْتُ ذَلِكَ ابْتِغَاءَ وَجْهِكَ فَافْرُجْ لَنَا مِنْهَا فَفَرَجَ لَهُمْ فُرْجَةً»» وَقَالَ الْآخَرُ: اللَّهُمَّ إِنِّي كُنْتُ اسْتَأْجَرْتُ أَجِيرًا بِفَرْقِ أَرُزٍّ فَلَمَّا قَضَى عَمَلَهُ قَالَ: أَعْطِنِي حَقِّي. فَعَرَضْتُ عَلَيْهِ حَقَّهُ فَتَرَكَهُ وَرَغِبَ عَنْهُ فَلَمْ أَزَلْ أَزْرَعُهُ حَتَّى جَمَعْتُ مِنْهُ بَقَرًا وَرَاعِيهَا فَجَاءَنِي فَقَالَ: اتَّقِ اللَّهَ وَلَا تَظْلِمْنِي وَأَعْطِنِي حَقِّي. فَقُلْتُ: اذْهَبْ إِلَى ذَلِكَ الْبَقَرِ وَرَاعِيهَا فَقَالَ: اتَّقِ اللَّهَ وَلَا تَهْزَأْ بِي. فَقُلْتُ: إِنِّي لَا أَهْزَأُ بك فخذْ ذلكَ البقرَ وراعيها فَأخذ فَانْطَلَقَ بِهَا. فَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنِّي فَعَلْتُ ذَلِكَ ابْتِغَاءَ وَجْهِكَ فَافْرُجْ مَا بَقِيَ فَفَرَجَ الله عَنْهُم ". مُتَّفق عَلَيْهِ

4938. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इस दौरान के तीन आदमी सफ़र कर रहे थे, बारिश आ गई, उन्होंने पहाड़ में एक ग़ार में पनाह ली, इतने में पहाड़ से एक चट्टान गिरी और उस ने उनकी ग़ार का मुंह बंद कर दिया, चुनांचे उन्होंने एक दुसर इसे कहा: अपने आमाल का जाइज़ा लो जो तुमने खालिस अल्लाह की रज़ा की खातिर किए थे, फिर उन के ज़रिए अल्लाह से दुआ करो शायद के वह इस तकलीफ (चट्टान) को दूर कर दे, उनमें से एक ने कहा: ऐ अल्लाह! मेरे बूढ़े वालिदेन थे और मेरे छोटे छोटे बच्चे थे, मैं उन के नान व नफ्का का ज़िम्मेदार था, जब में शाम के वक़्त मवेशी लेकर वापस आता तो मैं दूध दोह कर अपने औलाद से पहले, अपने वालिदेन की खिदमत में पेश किया करता था, एक मर्तबा में जंगल में दूर निकल गया जिस की वजह से में शाम के वक़्त (देर से) घर पहुंचा तो मैंने इन दोनों को सोया हुआ पाया, मैंने हस्बे मामूल दूध धोया, फिर मैं दूध का बर्तन लेकर आया और उन के सिरहाने खड़ा हो गया, मैंने उन्हें जगाना मुनासिब न समझा और उन से पहले बच्चो को पिलाना भी ना मुनासिब जाना जबकि बच्चे मेरे कदमो के पास भूके बिलकते रहे, मेरी और उनकी हमें सूरते हाल रही हत्ता के सुबह हो गई (ए अल्लाह !) अगर तू जानता है के मैंने तेरी रज़ा की खातिर ऐसे किया था तो फिर हमारे लिए इस क़दर रास्ता बना दे की हम वहां से आसमान देख लें, अल्लाह ने इन के लिए रास्ता खोल दिया हत्ता के वह आसमान देखने लगे, दूसरे ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह! मेरी एक चचाज़ाद बहन थी, मैं उसे इतना चाहता था जितना के ज़्यादा से ज़्यादा मर्द औरतों को चाहते है, मैंने उन से

बुराई करने का इरादा ज़ाहिर किया लेकिन उस ने इनकार कर दिया, हत्ता के में उसे सौ दीनार दू, मैंने कोशिश कर के सौ दीनार जमा किए और वह लेकर उस के पास गया, और जब में (इस से बुरा फ़ैल करने के लिए) उसकी दोनों टांगो के दरमियान बैठ गया तो उस ने कहा: अल्लाह के बन्दे! अल्लाह से डर जा और इस मोहर को न तोड़, (ये सुनते ही) में उन से उठ खड़ा हुआ, ऐ अल्लाह! अगर तू जानता है के मैंने यह तेरी रज़ा की खातिर किया था तो हमारे लिए रास्ता खोल दे! अल्लाह ने इन के लिए कुछ रास्ता खोल दिया, तीसरे शख़्स ने कहा: ऐ अल्लाह! मैंने एक फर्क (16 रतल) चावलों की उजरत पर एक मज़दूर काम पर लगा रखा था, पस जब उस ने अपना काम मुकम्मल कर लिया तो उस ने कहा: मेरा हक़ मुझे अदा करो, जब मैंने उस का हक़ उस पर पेश किया तो वह इसे कमतर समझते हुए छोड़ कर चला गया में उन से ज़राअत करता रहा हत्ता के मैंने उन से गाय और चरवाहे जमा कर लिए, वह मेरे पास आया और उस ने कहा: अल्लाह से डर जा और मुझ पर ज़ुल्म न कर और मेरा हक़ मुझे अदा कर, मैंने कहा यह गाय और उस के चराने वाले को ले जा, उस ने कहा: अल्लाह से डर! मुझ से मज़ाक न कर, मैंने कहा: में तुम से मज़ाक नहीं कर रहा, तुम यह गाय और उस के चरवाहे को ले जाओ, वह इसे लेकर चला गया, अगर तू जानता है के मैंने यह काम तेरी रज़ा हासिल करने के लिए किया था तो बाकी रास्ता भी खोल दे, चुनांचे अल्लाह ने इन के लिए रास्ता खोल दिया (और वह तकलीफ दूर कर दी)”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3465) و مسلم (100 / 2743)، (6949)

٤٩٣٩ - (إِسْنَاده جيد) وَعَن معاويةَ بن جاهِمةُ أَنَّ جَاهِمَةَ جَاءَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَدْتُ أَنْ أَغْزُوَ وَقَدْ جِئْتُ أَسْتَشِيرُكَ. فَقَالَ: «هَلْ لَكَ مِنْ أُمٍّ؟» قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: «فَالْزَمْهَا فَإِنَّ الْجَنَّةَ عِنْدَ رِجْلِهَا» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالنَّسَائِيُّ وَالْبَيْهَقِيّ فِي «شعب الْإِيمَان»

4939. मुआविया बिन जाहिम से रिवायत है के जाहिम रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ की खिदमत में आए और उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैं जिहाद में शरीक होने के लिए आप से मशवरा करना चाहता हूँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम्हारी वालिदा है?” उस ने अर्ज़ किया, जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “जाओ उस के पास रहो क्योंकि जन्नत उस के कदमो के पास है”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه احمد (3 / 429 ح 15623) و النسائی (6 / 11 ح 3106) و البیهقی فی شعب الایمان (7833)

٤٩٤٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن ابنِ»» عمَرَ قَالَ: كَانَتْ تَحْتِي امْرَأَةٌ أُحِبُّهَا وَكَانَ عُمَرُ يَكْرَهُهَا. فَقَالَ لِي: طَلِّقْهَا فَأَبَيْتُ. فَأَتَى عُمَرُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرَ ذَلِكَ لَهُ فَقَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «طَلِّقْهَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد

4940. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मेरी एक बीवी थी जिसे में पसंद करता था, जबकि उमर रदियल्लाहु अन्हु से नापसंद करते थे, उन्होंने मुझे फ़रमाया: “इसे तलाक दे दो, मैंने इनकार कर दिया तो उमर

रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए और आप से यह वाकिए बयान किया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाया: "इसे तलाक दे दो"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1189 وقال : حسن صحیح) و ابوداؤد (5138)

٤٩٤١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي»» أُمامةَ أَنَّ رَجُلًا قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا حَقُّ الْوَالِدَيْنِ عَلَى وَلَدِهِمَا؟ قَالَ: «هُمَا جَنَّتُكَ ونارُكَ» . رَوَاهُ ابنُ مَاجَه

4941. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के किसी आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! वालिदेन का अपने औलाद पर क्या हक़ है? आप ﷺ ने फ़रमाया: "दोनों तुम्हारी जन्नत (का सबब) है और तुम्हारी जहन्नम (का सबब) हैं"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابن ماجه (3662) * قال البوصیری :'' هذا اسناد ضعیف وقال الساجی : اتفق اهل النقل علی ضعف علی بن یزید '' و علی بن یزید الالهانی ضعیف جدًا متروک ، تقدم مرارا

٤٩٤٢ - (مَوْضُوع) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الْعَبْدَ لَيَمُوتُ وَالِدَاهُ أَوْ أَحَدُهُمَا وَإِنَّهُ لَهُمَا لَعَاقٌّ فَلَا يَزَالُ يَدْعُو لَهُمَا وَيَسْتَغْفِرُ لَهُمَا حَتَّى يَكْتُبَهُ اللَّهُ بَارا»

4942. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "एक बंदे के वालिदेन या इन दोनों में से एक फौत हो जाता है जबकि वह इन दोनों का नाफरमान होता है, और वह (उन की मौत के बाद) इन के लिए दुआ करता रहता है और इन दोनों के लिए मगफिरत तलब करता रहता है तो अल्लाह ऐसे शख़्स को हुस्ने सुलूक करने वाला लिख देता है"| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواه البیهقی فی شعب الایمان (7902 ، نسخة محققة : 7524) [و ابن عدی فی الکامل (7 / 26792680)] * فیه یحیی بن عقبة بن ابی مالک وھو کذاب خبیث عدو الله کما قال اب معین رحمه الله و للحدیث شواھد ضعیفة کما فی تنقیح الرواۃ (2 / 331) فالسند موضوع و الحدیث ضعیف

٤٩٤٣ - (ضَعِيف جدا) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَصْبَحَ مُطِيعًا لِلَّهِ فِي وَالِدَيْهِ أَصْبَحَ لَهُ بَابَانِ مَفْتُوحَانِ مِنَ الْجَنَّةِ وَإِنْ كَانَ وَاحِدًا فَوَاحِدًا. وَمَنْ أَمْسَى عَاصِيًا لِلَّهِ فِي وَالِدَيْهِ أَصْبَحَ لَهُ بَابَانِ مَفْتُوحَانِ مِنَ النَّارِ وَإِنْ كَانَ وَاحِدًا فَوَاحِدًا» قَالَ رَجُلٌ: وَإِنْ ظَلَمَاهُ؟ قَالَ: «وَإِنْ ظلماهُ وإِن ظلماهُ وإِنْ ظلماهُ»

4943. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स अपने वालिदेन (के हक़) के मुतल्लिक अल्लाह की इताअत में सुबह करता है तो उस के लिए जन्नत के दरवाज़े खुल जाते हैं और अगर एक हो तो (दरवाज़ा भी) एक और जो शख़्स अपने वालिदेन (के हक़) के मुतल्लिक अल्लाह की नाफ़रमानी

में सुबह करता है तो उस के लिए जहन्नम के दरवाज़े खुल जाते हैं और अगर वह एक हो तो जहन्नम का दरवाज़ा भी एक", एक आदमी ने अर्ज़ किया, अगरचे वह उस पर ज़ुल्म करे? आप ﷺ ने फ़रमाया: "अगरचे वह उस पर ज़ुल्म करे, अगरचे वह उस पर ज़ुल्म करे और अगरचे वह उस पर ज़ुल्म करे"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (7916 ، نسخة محققة : 7538) * فيه ابو محمد عبدالله بن يحيى بن موسى السرخسى متهم بالكذب و للحديث شواهد ضعيفة عند هناد بن السرى (الزهد : 993) وغيره

٤٩٤٤ - (مَوْضُوع) وَعَنْهُ»» أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مامن وَلَدٍ بَارٍّ يَنْظُرُ إِلَى وَالِدَيْهِ نَظْرَةَ رَحْمَةٍ إِلَّا كَتَبَ اللَّهُ لَهُ بِكُلِّ نَظْرَةٍ حَجَّةً مَبْرُورَةً» . قَالُوا: وَإِنْ نَظَرَ كُلَّ يَوْمٍ مِائَةَ مرّة؟ قَالَ: «نعم الله أكبر وَأطيب»

4944. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "नेक बच्चा जब अपने वालिदेन को नज़रे रहमत से देखता है तो अल्लाह उस के हर बार देखने के बदले में, उस के लिए हज ए मबरुर का सवाब लिख देता है", सहाबा रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अगरचे वह हर रोज़ सौ मर्तबा देखे? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ अल्लाह (तसव्वुर से) बहोत बड़ा और (हर नुक्स से) पाक तर है"| (मौज़ू)

اسناده موضوع ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (7859 ، نسخة محققة : 7475) * فيه نهشل بن سعيد : كذان و السند اليه مظلم و الضحاك عن ابن عباس : منقطع

٤٩٤٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» بَكْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كلُّ الذنوبِ يغفرُ اللَّهُ مِنْهَا مَا شاءَ إِلَّا عُقُوقَ الْوَالِدَيْنِ فَإِنَّهُ يُعَجِّلُ لِصَاحِبِهِ فِي الحياةِ قبلَ المماتِ»

4945. अबू बकरह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "वालिदेन की नाफ़रमानी के अलावा अल्लाह जितने चाहे गुनाह मुआफ़ कर देता है? क्योंकि वह इस (गुनाह) के मुर्तकिब को मरने से पहले जिंदगी ही में सज़ा दे देता है"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (7890 ، نسخة محققة : 75006) و الحاكم (4 / 156) * فيه بكار بن عبد العزيز بن ابى بكرة : ضعيف

٤٩٤٦ - (ضَعِيف) وَعَن»» سعيدِ بْنِ الْعَاصِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «حقُّ كبيرِ الإِخوَةِ على صَغِيرِهِمْ حَقُّ الْوَالِدِ عَلَى وَلَدِهِ» . رَوَى الْبَيْهَقِيُّ الأحاديثَ الخمسةَ فِي «شعب الْإِيمَان»

4946. सईद बिन आस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "बड़े भाई का अपने छोटे भाइयो पर ऐसे हक़ है जैसे वालिद का अपने औलाद पर हक़ है"| इमाम बयहकी ने पांचो अहादीस शौबुल ईमान

में रिवायत की है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (7929 ، نسخة محققة : 7553) * فيه محمد بن السائب النكرى وهو لين الحديث و الوليد بن مسلم مدلس و عنعن و روى النكرى فى بعض الروايات عن ابيه به و ابوه مجهول ، و للحديث لون آخر عند ابى نعيم فى اخبار اصبهان (1 / 122)

بَابُ الشَّفَقَةِ وَالرَّحْمَةِ عَلَى الْخَلْقِ • मखलूक पर शफकत व रहमत का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٤٩٤٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن جَرِيرِ بْنِ عَبْدُ اللَّهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَرْحَمُ اللَّهُ مَنْ لَا يَرْحَمُ النَّاسَ» . مُتَّفق عَلَيْهِ

4947. जरीर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह इस शख़्स पर रहम नहीं फरमाता जो लोगों पर रहम नहीं करता”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (7376) و مسلم (66 / 3219)، (6030)

٤٩٤٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن عائشة قَالَتْ: جَاءَ أَعْرَابِيٌّ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: أَتُقَبِّلُونَ الصِّبْيَانَ؟ فَمَا نُقَبِّلُهُمْ. فَقَالَ النَّبِي صلى الله عَلَيْهِ وَسلم: «أَوَ أملكُ لَكَ أَنْ نَزَعَ اللَّهُ مِنْ قَلْبِكَ الرَّحْمَةَ» . مُتَّفق عَلَيْه

4948. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, एक आराबी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने पूछा क्या आप बच्चो का बोसा लेते है? जबकि हम तो उनका बोसा नहीं लेते, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “मैं तुम्हारे मुतल्लिक इख़्तियार नहीं रखता जबकि अल्लाह ने तेर दिल से रहमत निकाल दि है (के में उसे वापस ला सकू)”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5998) و مسلم (64 / 2317)، (6027)

٤٩٤٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهَا قَالَتْ: جَاءَتْنِي امْرَأَةٌ وَمَعَهَا ابْنَتَانِ لَهَا تَسْأَلُنِي فَلَمْ تَجِدْ عِنْدِي غَيْرَ تَمْرَةٍ وَاحِدَةٍ فَأَعْطَيْتُهَا إِيَّاهَا فَقَسَمَتْهَا بَيْنَ ابْنَتَيْهَا وَلَمْ تَأْكُلْ مِنْهَا ثُمَّ قَامَتْ فَخَرَجَتْ. فَدَخَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَحَدَّثْتُهُ فَقَالَ: «مَنِ ابْتُلِيَ مِنْ هَذِهِ الْبَنَاتِ بِشَيْءٍ فَأَحْسَنَ إِلَيْهِنَّ كُنَّ لَهُ سِتْرًا مِنَ النَّارِ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

4949. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, एक औरत मेरे पास आई और उस के साथ उसकी दो बेटियाँ

भी थी उस ने मुझ से सवाल किया मेरे पास सिर्फ एक खजूर ही थी मैंने वही इसे दे दी, उस ने इसे अपने दोनों बेटियों के दरमियान तकसीम कर दिया, और खुद न खाई, फिर वह खड़ी हुई और चली गई, नबी ﷺ मेरे पास तशरीफ़ लाए तो मैंने आप से उस का तज़किरह किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "जिस शख़्स की उन बेटियों से किसी तरह आज़माइश की गई और उस ने ऊन से हुस्ने सुलूक किया तो वह उस के लिए जहन्नम से आड़ बन जाएगी"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5995) و مسلم (147 / 2629)، (6693)

٤٩٥٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ عَالَ جَارِيَتَيْنِ حَتَّى تَبْلُغَا جَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَنَا وَهُوَ هَكَذَا» وضمَّ أصابعَه. رَوَاهُ مُسلم

4950. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिस शख़्स ने दो बच्चियों की परवरिश की हत्ता के वह बालिग़ हो गई तो वह रोज़ ए कियामत इस तरह आएगा की मैं और वह इस तरह होंगे", और आप ने अपनी उंगलिया मिलाइ| (मुस्लिम)

رواه مسلم (149 / 2631)، (6695)

٤٩٥١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «السَّاعِي عَلَى الْأَرْمَلَةِ وَالْمِسْكِينِ كَالسَّاعِي فِي سَبِيلِ اللَّهِ» وَأَحْسَبُهُ قَالَ: «كَالْقَائِمِ لَا يَفْتُرُ وَكَالصَّائِمِ لَا يفْطر» . مُتَّفق عَلَيْهِ

4951. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "बेवा और मिस्किन की ज़रुरतो का ख़याल रखने वाला, अल्लाह की राह में जिहाद करने वाले की तरह है", और मेरा ख़याल है के आप ﷺ ने फ़रमाया: "वो कयाम करने (तहज्जुद पढ़ने) वाले की तरह है जो सुस्ती नहीं करता, और इस रोज़दार की तरह है जो इफ्तार नहीं करता (मुसलसल रोज़े रखता है)"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6007) و مسلم (41 / 2982)، (7468)

٤٩٥٢ - (صَحِيح) وَعَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَنَا وَكَافِلُ الْيَتِيمِ [ص:١٣٨ لَهُ وَلِغَيْرِهِ فِي الْجَنَّةِ هَكَذَا» وَأَشَارَ بِالسَّبَّابَةِ وَالْوُسْطَى وفرَّجَ بَينهمَا شَيْئا. رَوَاهُ البُخَارِيّ

4952. सहल बिन साद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मैं और यतीम की किफ़ालत करने वाला, ख्वाह यतीम उस का अपना हो या किसी और का, जन्नत में इस तरह होंगे", और आप ﷺ

ने अन्गुंश्ते शहादत और दरमियानी ऊँगली के साथ इरशाद फ़रमाया और फिर इन दोनों (उंगलियों) के दरमियान कुछ फर्क किया| (बुखारी)

رواه البخاری (5304)

٤٩٥٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَرَى الْمُؤْمِنِينَ فِي تراحُمِهم وتوادِّهم وتعاطفِهم كمثلِ الجسدِ إِذا اشْتَكَى عضوا تَدَاعَى لَهُ سَائِرُ الْجَسَدِ بِالسَّهَرِ وَالْحُمَّى» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

4953. नौमान बिन बशीर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आप मोमिनो को बाहम रहमत व मेहरबान करने, बाहम मुहब्बत और मदद करने में, जिस्म की तरह पाएंगे जब कोई आज़ा तकलीफ में मुब्तिला होता है तो उसकी वजह से उस का सारा जिस्म बेदारी और बुखार में मुब्तिला रहता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6011) و مسلم (66 / 2586)، (6586)

٤٩٥٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْمُؤْمِنُونَ كَرَجُلٍ وَاحِدٍ إِنِ اشْتَكَى عَيْنُهُ اشْتَكَى كُلُّهُ وَإِنِ اشْتَكَى رَأْسُهُ اشْتَكَى كُله» . رَوَاهُ مُسلم

4954. नोमान बिन बशीर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तमाम मोमिन फरदे वाहिद की तरह है, अगर उसकी आँख दुखती है तो उसका सारा जिस्म दुखता है, और अगर उस का सर तकलीफ में मुब्तिला होता है तो भी उसका सारा जिस्म तकलीफ महसूस करता है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (67 / 2586)، (6589)

٤٩٥٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْمُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِ كَالْبُنْيَانِ يَشُدُّ بَعْضُهُ بَعْضًا» ثُمَّ شَبكَ بَين أَصَابِعه. مُتَّفق عَلَيْهِ

4955. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मोमिन (दुसरे) मोमिन के लिए इमारत की तरह है, जिस का एक हिस्सा दूसरे हिस्से को मज़बूत करता है”, फिर आप ﷺ ने एक हाथ की उंगलिया दूसरे हाथ की उंगलियों मैं डाली| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6026) و مسلم (65 / 2585)، (6585)

٤٩٥٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ كَانَ إِذَا أَتَاهُ السَّائِلُ أَوْ صَاحِبُ الْحَاجَةِ قَالَ: «اشْفَعُوا

فَلْتُؤْجَرُوا وَيَقْضِي اللَّهُ عَلَى لِسَان رَسُوله مَا شَاءَ» . مُتَّفق عَلَيْهِ

4956. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, जब साइल या कोई ज़रूरत मंद शख़्स आप के पास आता तो आप ﷺ फरमाते: “तुम (मुझे से) सिफारिश करो तुम्हें अज़्र मिलेगा, और अल्लाह जो चाहेगा वह अपने रसूल की ज़ुबान पर जारी फरमादेगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (7476) و مسلم (145 / 2627)، (6691)

٤٩٥٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «انْصُرْ أَخَاكَ ظَالِمًا أَوْ مَظْلُومًا» . فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَنْصُرُهُ مَظْلُومًا فَكَيْفَ أَنْصُرُهُ ظَالِمًا؟ قَالَ: «تَمنعهُ من الظُّلم فَذَاك نصرك إِيَّاه» . مُتَّفق عَلَيْهِ

4957. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अपने (मुसलमान) भाई की मदद करो, वह ज़ालिम हो या मज़लूम”, किसी आदमी ने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मैं मज़लूम की तो मदद करूँगा लेकिन ज़ालिम की मदद कैसे करू? आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हारा इसे ज़ुल्म से रोकना, यही तुम्हारा उसकी मदद करना है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6952) و مسلم (62 / 2584)، (6582)

٤٩٥٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْمُسْلِمُ أَخُو الْمُسْلِمِ لَا يَظْلِمُهُ وَلَا يُسْلِمُهُ وَمَنْ كَانَ فِي حَاجَةِ أَخِيهِ كَانَ اللَّهُ فِي حَاجَتِهِ وَمَنْ فَرَّجَ عَنْ مُسْلِمٍ كُرْبَةً فَرَّجَ اللَّهُ عَنْهُ كُرْبَةً مِنْ كُرُبَاتِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَمَنْ سَتَرَ مُسْلِمًا سَتَرَهُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . مُتَّفق عَلَيْهِ

4958. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुसलमान मुसलमान का भाई है न तो वह उस पर ज़ुल्म करता है और न इसे (ज़ालिम के) सुपुर्द करता है और जो शख़्स अपने भाई की हाजत पूरी करने में लगा हो तो अल्लाह उसकी हाजत पूरी फरमाता है, और जो शख़्स किसी मुसलमान की कोई परेशानी दूर करता है तो अल्लाह उस से कियामत के रोज़ की परेशानियों में से कोई परेशानी दूर फरमादेगा, और जो शख़्स किसी मुसलमान की परदापोशी करता है तो रोज़ ए कियामत अल्लाह उसकी परदापोशी फरमाएगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2442) و مسلم (58 / 2580)، (6578)

٤٩٥٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْمُسْلِمُ أَخُو الْمُسْلِمِ [ص:١٣٨ لَا يَظْلِمُهُ وَلَا يَخْذُلُهُ وَلَا يَحْقِرُهُ التَّقْوَى هَهُنَا» . وَيُشِير إِلَى صَدره ثَلَاث مرار " بِحَسْبِ امْرِئٍ مِنَ الشَّرِّ أَنْ يَحْقِرَ أَخَاهُ الْمُسْلِمَ

كُلُّ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ حَرَامٌ: دَمُهُ ومالهُ وَعرضه ". رَوَاهُ مُسلم

4959. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुसलमान मुसलमान का भाई है, वह न उस पर ज़ुल्म करता है और न इसे बेयारो मददगार छोड़ता है और ना ही इसे हकीर ख़याल करता है, तक़्वा यहाँ है”, और आप ने अपने सीने की तरफ तीन मर्तबा इरशाद किया, किसी आदमी के बुरा होने के लिए यही काफी है के वह अपने मुसलमान भाई को हकीर ख़याल करे, हर मुसलमान का खून उस का माल और उसकी इज्ज़त दूसरे मुसलमान पर हराम है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (32 / 2564)، (6541)

٤٩٦٠ - (صَحِيح) وَعَنْ»» عِيَاضِ بْنِ حِمَارٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " أَهْلُ الْجَنَّةِ ثَلَاثَةٌ: ذُو سُلْطَانٍ مُقْسِطٌ متصدِّقٌ موفق وَرجل رَحِيم رَفِيق الْقلب لكلِّ ذِي قربى وَمُسْلِمٍ وَعَفِيفٌ مُتَعَفِّفٌ ذُو عِيَالٍ. وَأَهْلُ النَّارِ خَمْسَةٌ: الضَّعِيفُ الَّذِي لَا زَبْرَ لَهُ الَّذِينَ هم فِيكُمْ تَبَعٌ لَا يَبْغُونَ أَهْلًا وَلَا مَالًا وَالْخَائِنُ الَّذِي لَا يَخْفَى لَهُ طَمَعٌ وَإِنْ دَقَّ إِلَّا خَانَهُ وَرَجُلٌ لَا يُصْبِحُ وَلَا يُمْسِي إِلَّا وَهُوَ يُخَادِعُكَ عَنْ أَهْلِكَ وَمَالِكَ وَذَكَرَ الْبُخْلَ أَوِ الْكَذِبَ وَالشِّنْظِيرُ الْفَحَّاشُ ". رَوَاهُ مُسلم

4960. इयाज़ बिन हिमार रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अहल जन्नत तीन किस्म के है, मन्सफ़, खैरात करने वाला और नेकी करने की तौफिक से नवाज़ा गया बादशाह, (दूसरा) हर रिश्ते दार से (खुसूसन) और हर मुसलमान से (उमुमन) मेहरबान और नरम दिली के जज़्बात रखने वाला शख़्स और (तीसरा) अयाल दार जो के हराम चीजों और सवाल करने से बचा करता है, जबकि जहन्नुमियो की पांच इक्साम है: वह जईफ जिस में अक़्ल नहीं (जिस के ज़रिए वह बुरी बात से बचे), वह लोग जो तुम्हारे मातेहत है, जिन्हें (हलाल) अहल व अयाल और माल की ख्वाहिश नहीं, खाईन शख़्स के अगर उस का दिल में किसी मामूली सी चिज़ का ताअम पैदा हो तो वह उसकी खयानत कर लेता है, वह आदमी जो सुबह व शाम (हर मौके पर) तेरे अहल व अयाल और तेरे माल के बारे में तुझ से धोका करता है”, और आप ने बखील या झूठे का ज़िक्र किया” और बदअख्लाक जो फहश गो हो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (63 / 2865)، (7207)

٤٩٦١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَا يُؤمن أحد حَتَّى يُحِبَّ لِأَخِيهِ مَا يُحِبُّ لِنَفْسِهِ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

4961. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! कोई बंदा इस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक वह अपने भाई के लिए वही चीज़ पसंद न

करे जो वह अपने लिए पसंद करता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (13) و مسلم (72 / 45)، (171)

٤٩٦٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَاللَّهِ لَا يُؤْمِنُ وَاللَّهِ لَا يُؤْمِنُ وَاللَّهِ لَا يُؤْمِنُ» . قِيلَ: مَنْ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: «الَّذِي لَا يَأْمَنُ جَارُهُ بَوَائِقَهُ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

4962. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह की क़सम! वह मोमिन नहीं, अल्लाह की क़सम! वह मोमिन नहीं, अल्लाह की क़सम! वह मोमिन नहीं,” अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल! कौन मोमिन नहीं? आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिस की शरारतो से उस का पड़ोसी महफ़ूज़ नहीं”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6016) [و مسلم (73 / 46)، (172) بلفظ آخر ، و لفظ المشکوة لم اجد عنده]

٤٩٦٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ»» أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مَنْ لَا يَأْمَنُ جَارُهُ بَوَائِقَهُ» . رَوَاهُ مُسلم

4963. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “वो शख्स, जिस की शर अनन्गेज़ियो से उस का पड़ोसी महफ़ूज़ न हो वह जन्नत में नहीं जाएगा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (71 / 45)، (172)

٤٩٦٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ وَابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم قَالَ: «مَا زَالَ جِبْرِيلُ يُوصِينِي بِالْجَارِ حَتَّى ظَنَنْتُ أَنَّهُ سَيُوَرِّثُهُ» . مُتَّفق عَلَيْهِ

4964. आइशा और इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिब्राइल अलैहिस्सलाम पड़ोसी के मुतल्लिक मुझे मुसलसल वसीयत करते रहे यहाँ तक के मैंने ख़याल किया के वह इसे वारिस बना देंगे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6014 ، 6015) و مسلم (141 ، 140 / 2625)، (6685 و 6687)

٤٩٦٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا كُنْتُمْ ثَلَاثَةً فَلَا يَتَنَاجَى اثْنَانِ دُونَ الْآخَرِ حَتَّى تَخْتَلِطُوا بِالنَّاسِ مِنْ أَجْلِ أَن يحزنهُ» . مُتَّفق عَلَيْهِ

4965. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम तीन हो तो तीसरे को छोड़ कर दो एक दूसरे से सरगोशी न करे हत्ता कि तुम लोगों के साथ मिल जाओ, उस के लिए यह तर्ज़े अमल इस तीसरे शख़्स को गम में मुब्तिला कर देगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6290) و مسلم (37 / 2184)، (5696)

٤٩٦٦ - (صَحِيح) وَعَن»» تَمِيم الدَّارِيّ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الدِّينُ النَّصِيحَةُ» ثَلَاثًا. قُلْنَا: لِمَنْ؟ قَالَ: «لِلَّهِ وَلِكِتَابِهِ وَلِرَسُولِهِ وَلِأَئِمَّةِ الْمُسْلِمِينَ وَعَامَّتِهِمْ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

4966. तमीम दारी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने तीन मर्तबा फ़रमाया: “दिन इखलास व खैरख्वाही (का नाम) है”, हमने अर्ज़ किया: किस के लिए? फ़रमाया: “अल्लाह के लिए, उसकी किताब के लिए, उस के रसूल के लिए, मुसलमानों के हुक्मरानों के लिए और आम मुसलमानों के लिए”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (95 / 55)، (196)

٤٩٦٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن جرير بن عبد الله قَالَ: بَايَعْتُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى إِقَامِ الصَّلَاةِ وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ وَالنُّصْحِ لكل مُسلم. مُتَّفق عَلَيْهِ

4967. जरीर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नमाज़ काइम करने, ज़कात अदा करने और हर मुसलमान के साथ खैरख्वाही करने पर रसूलुल्लाह ﷺ की बैत की| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2715) و مسلم (97 / 56)، (200)

بَابُ الشَّفَقَةِ وَالرَّحْمَةِ عَلَى الْخَلْقِ • मखलूक पर शफकत व रहमत का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٤٩٦٨ - (لم تتمّ دراسته) عَن أبي»» هُرَيْرَة قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا الْقَاسِمِ الصَّادِقَ الْمَصْدُوقَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَا تُنْزَعُ الرَّحْمَةُ إِلاَّ مَن شقي» . رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ

4968. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अबुल कासिम सच्चे और मुखलिस ﷺ को फरमाते हुए सुना: "किसी बदनसीब शख़्स ही से रहमत सलब की जाती है"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (2 / 442 ح 9700) و الترمذی (1923 وقال : حسن)

٤٩٦٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ»» اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الرَّاحِمُونَ يَرْحَمُهُمُ الرَّحْمَنُ ارْحَمُوا مَنْ فِي الْأَرْضِ يَرْحَمْكُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ

4969. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "रहम करने वालो पर रहमान रहम फरमाता है, ज़मीन वालो पर तुम रहम करो, आसमान वाला तुम पर रहम फरमाएगा"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4941) و الترمذی (1924 وقال : حسن صحیح)

٤٩٧٠ - (ضَعِيف) وَعَنِ»» ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ:»» لَيْسَ مِنَّا مَنْ لَمْ يَرْحَمْ صَغِيرَنَا وَلَمْ يُوَقِّرْ كَبِيرَنَا وَيَأْمُرْ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ»» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

4970. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स हमारे छोटो पर रहम नहीं करता और हमारे बड़ो की तोकिर नहीं करता, नेकी का हुक्म नहीं करता और न वह बुराई से रोकता है, वह हम में से नहीं"| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه الترمذی (1921) * لیث بن ابی سلیم ضعیف و لبعض الحدیث شواھد

٤٩٧١ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ»» أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا أَكْرَمَ شَابٌّ شَيْخًا مِنْ أَجْلِ سِنِّهِ إِلَّا قَيَّضَ اللَّهُ لَهُ عِنْد سنه من يُكرمهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4971. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो नोजवान किसी बुढ़ा शख़्स की उस के बुढ़ा होने की वजह से इज्ज़त करता है तो अल्लाह उस के बुढ़ा होने पर ऐसा शख़्स मुतय्यीन फरमाएगा जो उसकी इज्ज़त करेगा"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (2022 وقال : غریب) * فیه یزید بن بیان و شیخه خالد بن محمد البصری : ضعیفان

٤٩٧٢ - (حسن) وَعَنْ»» أَبِي مُوسَى قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ مِنْ إِجْلَالِ الله إِكْرَامَ ذِي الشَّيبَةِ

المسلمِ وَحَامِلُ الْقُرْآنِ غَيْرَ الْغَالِي فِيهِ وَلَا الْجَافِي عَنْهُ وَإِكْرَامُ السُّلْطَانِ الْمُقْسِطِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ»

4972. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बूढ़े मुसलमान की इज्ज़त करना, ऐसे हाफ़िज़े कुरान की इज्ज़त करना जो गुलू से काम न लेता हो और आदिल बादशाह की इज्ज़त करना अल्लाह की अज़मत से है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4843) و البيهقى فى شعب الايمان (10986) * ابو كنانة مجهول

٤٩٧٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «خَيْرُ بَيْتٍ فِي الْمُسْلِمِينَ بَيْتٌ فِيهِ يَتِيمٌ يُحْسَنُ إِلَيْهِ وَشَرُّ بَيت فِي المسلمينَ بيتٌ فِي يَتِيم يساء إِلَيْهِ» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

4973. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुसलमानों के घरो में से वह घर बेहतर है जिस में कोई यतीम हो और उसके साथ अच्छा सलूक किया जाता हो, और मुसलमानों का वह घर बुरा है जिस में कोई यतीम हो और उस के साथ बुरा सलूक किया जाता हो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (3679) * يحيى بن ابى سليمان ضعيف ضعفه الجمهور انظر نيل المقصود (893) و السند ضعفه البوصيرى و العراقى

٤٩٧٤ - أ (لم تتمّ دراسته) بِي أَمَامَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ مَسَحَ رَأْسَ يَتِيمٍ لَمْ يمسحه إلالله كَانَ لَهُ بِكُلِّ شَعْرَةٍ تَمُرُّ عَلَيْهَا يَدُهُ حَسَنَاتٌ وَمَنْ أَحْسَنَ إِلَى يَتِيمَةٍ أَوْ يَتِيمٍ عِنْدَهُ كُنْتُ أَنَا وَهُوَ فِي الْجَنَّةِ كَهَاتَيْنِ» وَقرن بِي أُصْبُعَيْهِ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

4974. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स अल्लाह की रज़ा की खातिर किसी यतीम के सर पर (शफकत से) हाथ फेरता है तो उस के हाथ के नीचे आने वाले हर बाल के बदले में उसे एक नेकी मिलती है, और जो शख़्स अपने ज़ेरे किफ़ालत किसी यतीम बच्ची या बच्चे के साथ अच्छा सुलूक करता है तो वह और मैं जन्नत में इस तरह होंगे”, और आप ने अपनी दोनों उंगलिया मिलाइ| अहमद तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه احمد (5 / 250 ، 265 ح 22640) و الترمذى (لم اجده) [و البغوى فى شرح السنة (13 / 44 ح 3456) من طريق ابن المبارك به وهو فى الزهد لابن المبارك (655)]

٤٩٧٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ»» عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ آوَى يَتِيمًا إِلَى طَعَامِهِ وَشَرَابِهِ أَوْجَبَ اللَّهُ لَهُ الْجَنَّةَ أَلْبَتَّةَ إِلَّا أَنْ يَعْمَلَ ذَنْبًا لَا يُغْفَرُ. وَمَنْ عَالَ ثَلَاثَ بَنَاتٍ أَوْ

مِثْلَهُنَّ مِنَ الْأَخَوَاتِ فَأَدَّبَهُنَّ وَرَحِمَهُنَّ حَتَّى يُغْنِيَهُنَّ اللَّهُ أَوْجَبَ اللَّهُ لَهُ الْجَنَّةَ» . فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ الله واثنتين؟ قَالَ: «واثنتين» حَتَّى قَالُوا: أَوْ وَاحِدَةً؟ لَقَالَ: وَاحِدَةً «وَمَنْ أَذْهَبَ اللَّهُ بِكَرِيمَتَيْهِ وَجَبَتْ لَهُ الْجَنَّةُ» قِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَمَا كَرِيمَتَاهُ؟ قَالَ: «عَيْنَاهُ» . رَوَاهُ فِي «شرح السّنة»

4975. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स किसी यतीम को अपने खाने पीने (दस्तरख्वान) में शरीक करता है तो अल्लाह उस के लिए लाज़मी तौर पर जन्नत वाजिब कर देता है, बशर्तेकी उस ने कोई नाकाबिले मुआफी गुनाह न किया हो, और जो शख़्स तीन बेटी या उतनी ही बहनों की किफ़ालत करता है और उनकी अच्छी तरबियत करता है, इन पर रहम करता है हत्ता के वह उनकी तमाम ज़रूरते पूरी कर देता है तो अल्लाह इस शख़्स के लिए जन्नत वाजिब कर देता है”, किसी आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या दो (की किफ़ालत करने वाला) भी आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ, वह भी”, हत्ता कि अगर वह कहते, क्या एक भी? आप ﷺ फरमा देते: एक भी”, और अल्लाह जिस शख़्स की दो उम्दा चीज़े सलब कर ले तो उस के लिए जन्नत वाजिब हो गई”, अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल! दो उम्दा चीजों से क्या मुराद है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस की दो आँखे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه البغوی فی شرح السنة (13 / 44 ح 3457) [و الطبرانی (8 / 162)] * فیه حسین بن قیس الرحبی وھو متروک

٤٩٧٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرِ»» بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَأَنْ يُؤَدِّبَ الرَّجُلُ وَلَدَهُ خَيْرٌ لَهُ مِنْ أَنْ يَتَصَدَّقَ بِصَاعٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ وَنَاصِحٌ الرَّاوِي لَيْسَ عِنْدَ أصحابِ الحَدِيث بِالْقَوِيّ

4976. जाबिर बिन समुराह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आदमी का अपने बच्चे की अच्छी तरबियत करना उस के लिए एक साअ सदका करने से बेहतर है”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है, और नासिह रावी अस्हाबुल हदीस के यहाँ क़वी नहीं| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (1951) * فیه ناصح الحائک : ضعیف

٤٩٧٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَيُّوبَ»» بْنِ مُوسَى عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَا نَحَلَ وَالِدٌ وَلَدَهُ مِنْ نُحْلٍ أَفْضَلَ مِنْ أَدَبٍ حَسَنٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ» وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا عِنْدِي حَدِيث مُرْسل

4977. अय्यूब बिन मूसा अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं की रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “वालिदेन अपने औलाद को जो बेहतरीन अतिय्या देता है के उनकी अच्छी तरबियत है”| तिरमिज़ी, बयहकी

की शौबुल ईमान और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: मेरे नज़दीक यह हदीस मुरसल है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (1952) و البیھقی فی شعب الایمان (8653) * موسی ابو ایوب : مستور ، وفیه علة أخری

٤٩٧٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عَوْف»» بن مَالك الْأَشْجَعِيّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَنَا وَامْرَأَةٌ سَفْعَاءُ الْخَدَّيْنِ كَهَاتَيْنِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . وَأَوْمَأَ يَزِيدُ بْنُ ذُرَيْعٍ إِلَى الْوُسْطَى وَالسَّبَّابَةِ «امْرَأَةٌ آمَتْ مِنْ زَوْجِهَا ذَاتُ مَنْصِبٍ وجمالٍ حبَستْ نفسهاعلى يتاماها حَتَّى بانوا أوماتوا» رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4978. ऑफ बिन मालिक अशजई रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैं और सियाह रुखसारो वाली औरत (वो बेवा जिसके चेहरे का रंग मेहनत मज़दूरी करने की वजह से सियाह हो गया) रोज़ ए कियामत इस तरह होंगे”, और यज़ीद बिन ज़ुरइ ने दरमियानी ऊँगली और अन्गुंश्ते शहादत की तरफ इरशाद किया“, निज़ मंसब व जमाल वाली औरत जिस का खाविंद फौत हो जाए और वह अपने यतीम बच्चो की वजह से शादी न करे हत्ता कि वह बड़े हो जाए या फौत हो जाए”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (5149) * فیه النھاس بن قھم : ضعیف

٤٩٧٩ - (ضَعِيف) وَعَن»» ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ كَانَتْ لَهُ أُنْثَى فَلَمْ يَئِدْهَا وَلَمْ يُهِنْهَا وَلَمْ يُؤْثِرْ وَلَدَهُ عَلَيْهَا - يَعْنِي الذُّكُورَ - أَدْخَلَهُ اللَّهُ الْجَنَّةَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4979. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स की बेटी हो और वह इसे जिंदा दफन न करे और न उसकी अहानत करे और ना ही वह अपने बेटे को उस पर तरजीह दे तो अल्लाह इसे जन्नत में दाखिल फरमाएगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (5146) * ابو معاویة مدلس و عنعن و ابن حدیر غیر مشھور کما قال المنذری

٤٩٨٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ»» عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنِ اغْتِيبَ عِنْدَهُ أَخُوهُ الْمُسْلِمُ وَهُوَ يَقْدِرُ على نصرِهِ فنصرَه نصرَه اللَّهُ فِي الدِّينَا وَالْآخِرَةِ. فَإِنْ لَمْ يَنْصُرْهُ وَهُوَ يَقْدِرُ عَلَى نَصْرِهِ أَدْرَكَهُ اللَّهُ بِهِ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ» . رَوَاهُ فِي «شرح السّنة»

4980. अनस रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिस शख़्स के पास उस के मुसलमान भाई की गीबत की जाए और वह उसकी नुसरत व दिफ़ाअ पर कादिर हो और उस ने उस का दिफ़ाअ किया तो अल्लाह दुनिया व आखिरत में उसकी नुसरत व दिफ़ाअ फरमाएगा अगर वह उसकी नुसरत पर कादिर

होने के बावजूद उसकी नुसरत नहीं करता तो अल्लाह दुनिया व आखिरत में उसे बेयारो मददगार छोड़ देगा”| (ज़ईफ़,मौज़ू)

ضعيف جذا موضوع ، رواه البغوى فی شرح السنة (13 / 107 ح 3530) * فیه ابان بن ابی عیاش کذاب متروک

٤٩٨١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أسماءَ»» بنت يزِيد قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ ذَبَّ عَنْ لَحْمِ أَخِيهِ بِالْمَغِيبَةِ كَانَ حَقًّا عَلَى اللَّهِ أَنْ يُعْتِقَهُ مِنَ النَّارِ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي «شعب الْإِيمَان»

4981. अस्मा बिन्ते यज़ीद रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस ने अपने (मुसलमान) भाई की गैर मौजूदगी में उसकी गीबत न होने दी तो अल्लाह पर हक़ है के वह इसे जहन्नम की आग से आज़ाद कर दे”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه البیهقی فی شعب الایمان (7643 ، نسخۃ محققۃ : 7237) [و احمد (2 / 461) و البغوی فی شرح السنة (13 / 107 ح 3529)] * عبید الله بن ابی زیاد القداح حسن الحدیث انظر نیل المقصود (1496)

٤٩٨٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» الدَّرْدَاءِ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَا مِنْ [ص:١٣٩] مُسْلِمٍ يَرُدُّ عَنْ عِرْضِ أَخِيهِ إِلَّا كَانَ حَقًّا عَلَى اللَّهِ أَنْ يَرُدَّ عَنْهُ نَارَ جَهَنَّمَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . ثُمَّ تَلَا هَذِهِ الْآيَةَ: (وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نصر الْمُؤمنِينَ)»» رَوَاهُ فِي «شرح السّنة»

4982. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जो मुसलमान अपने किसी मुसलमान भाई की इज्ज़त का दिफ़ाअ करता है तो अल्लाह पर हक़ है के वह रोज़ ए कियामत उस का जहन्नम से दिफ़ाअ करे, फिर आप ने यह आयत तिलावत फरमाई: “मोमिनो की मदद करना हम पर लाज़िम है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه البغوی فی شرح السنة (13 / 106 ح 3528) * فیه لیث بن ابی سلیم ضعیف مدلس و عنعن

٤٩٨٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٌ»» أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَا مِنِ امْرِئٍ مُسْلِمٍ يَخْذُلُ امْرَأً مُسْلِمًا فِي مَوْضِعٍ يُنْتَهَكُ فِيهِ حُرْمَتُهُ وَيُنْتَقَصُ فِيهِ مِنْ عِرْضِهِ إِلَّا خَذَلَهُ اللَّهُ تَعَالَى فِي مَوْطِنٍ يُحِبُّ فِيهِ نُصْرَتَهُ وَمَا مِنِ امْرِئٍ مُسْلِمٍ يَنْصُرُ مُسْلِمًا فِي مَوْضِعٍ يُنْتَقَصُ فِيهِ حُرْمَتِهِ إِلَّا نَصَرَهُ اللَّهُ فِي مَوْطِنٍ يُحِبُّ فِيهِ نصرته» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4983. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जो कोई मुसलमान किसी मुसलमान को किसी ऐसी जगह तन्हा छोड़ दे जहाँ उसकी बेहुरमती और बेईज्ज़ती की जा रही हो तो अल्लाह इस शख़्स को ऐसी जगह तन्हा, बेयारो मददगार छोड़ देगा जहाँ वह मदद का मुहताज होगा, और अगर कोई मुसलमान

किसी मुसलमान की किसी ऐसी जगह मदद करता है जहाँ उसकी बेईज्ज़ती और बेहुरमती की जाती हो तो अल्लाह ऐसी जगह उसकी मदद फरमाएगा जहाँ वह पसंद करता हो के उसकी नुसरत हो"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4884) * اسماعيل بن بشير و تلميذه : مجهولان

٤٩٨٤ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ رَأَى عَوْرَةً فَسَتَرَهَا كَانَ كَمَنْ أَحْيَا مؤودة» . رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ وَصَححهُ

4984. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिस ने (किसी का) कोई ऐब देखा और उसकी परदापोशी की तो वह इस शख़्स की तरह है जिस ने जिंदा दरगोर (जिंदा दफनाई लड़की) को जिंदा किया"| अहमद तिरमिज़ी, और उन्होंने इसे सहीह करार दिया| (हसन)

حسن ، رواه احمد (4 / 147 ح 17464) و الترمذی (بعد 1930) [و ابوداؤد (4891)]

٤٩٨٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ أَحَدَكُمْ مِرْآةُ أَخِيهِ فَإِنْ رَأَى بِهِ أَذًى فَلْيُمِطْ عَنْهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَضَعَّفَهُ. وَفِي رِوَايَةٍ لَهُ وَلِأَبِي دَاوُدَ: «الْمُؤْمِنُ مِرْآةُ الْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنُ أَخُو الْمُؤْمِنِ يَكُفُّ عَنْهُ ضَيْعَتَهُ وَيَحُوطُهُ مِنْ وَرَائِهِ»

4985. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "बेशक तुम में से हर एक अपने (मुसलमान) भाई के लिए आइना है, अगर वह उस में कोई ऐब देखे तो वह उस से ज़ाइल कर दे"| तिरमिज़ी, और उन्होंने इसे जईफ करार दिया है| तिरमिज़ी और अबू दावुद की रिवायत में है: "मोमिन मोमिन का आइना है और मोमिन मोमिन का भाई है, वह उस का नुकसान नहीं होने देता और वह उसकी गैर मौजूदगी में इस (के जान व माल और इज्जत) की हिफाज़त करता है"| (ज़ईफ़,हसन)

ضعيف جذا ، رواه الترمذی (1929) و اسناد ضعيف جدًا ، فيه يحيى بن عبيد الله : متروكحسن ، رواه ابوداؤد (4918) [و اسناده حسن] [و الترمذی (لم اجده)]

٤٩٨٦ - وَعَن معَاذ بن أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ حَمَى مُؤْمِنًا مِنْ مُنَافِقٍ بَعَثَ اللَّهُ مَلَكًا يَحْمِي لَحْمَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ نَارِ جَهَنَّمَ وَمَنْ رَمَى مُسْلِمًا بِشَيْءٍ يُرِيدُ بِهِ شَيْنَهُ حَبَسَهُ اللَّهُ عَلَى جِسْرِ جَهَنَّمَ حَتَّى يَخْرُجَ مِمَّا قَالَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4986. मुआज़ बिन अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स किसी मोमिन की इज्ज़त किसी मुनाफ़िक़ से बचाता है तो अल्लाह एक फ़रिश्ता भेजेगा जो रोज़ ए कियामत उस के गोश्त को

जहन्नम की आग से बचाएगा, और जिस ने किसी मुसलमान शख़्स पर उस को बदनाम करने के लिए कोई तोहमत लगाइ तो अल्लाह उस को जहन्नम के पुल पर रोक लेगा हत्ता कि वह (सज़ा भुगत कर) अपने कही हुई बात से पाक हो जाए”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد 4883) * فيه اسماعيل بن يحيى المعافرى : مجهول و لم يوثقه غير ابن حبان

٤٩٨٧ - (صَحِيح) وَعَنْ»» عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «خَيْرُ الْأَصْحَابِ عِنْدَ اللَّهِ خَيْرُهُمْ لِصَاحِبِهِ وَخَيْرُ الْجِيرَانِ عِنْدَ اللَّهِ خَيْرُهُمْ لِجَارِهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

4987. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह के नज़दीक बेहतरीन साथी वह है जो उनमें अपने साथी के लिए बेहतर है और अल्लाह के नज़दीक बेहतरीन पड़ोसी वह है जो अपने पड़ोसी के लिए बेहतर है”| तिरमिज़ी, दारमी और तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (1944) و الدارمى (2 / 215 ح 2442)

٤٩٨٨ - (صَحِيح) وَعَن»» ابْن مَسْعُود قَالَ: قَالَ رجل للنَّبِي اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ كَيْفَ لِي أَنْ أَعْلَمَ إِذَا أَحْسَنْتُ أَوْ إِذَا أَسَأْتُ؟ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا سَمِعْتَ جِيرَانَكَ يَقُولُونَ: [ص:١٣٩ قَدْ أَحْسَنْتَ فَقَدْ أَحْسَنْتَ. وَإِذَا سَمِعْتَهُمْ يَقُولُونَ: قَدْ أَسَأْتَ فقد أَسَأْت ". رَوَاهُ ابْن مَاجَه

4988. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी ने नबी ﷺ से अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मुझे कैसे पता चले की मैं अच्छा हूँ या बुरा? नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जब तुम अपने पड़ोसियों को कहते हुए सुनो की तुम अच्छे हो तो तुम अच्छे हो और जब तुम उन्हें कहते हुए सुनो की तुम बुरे हो तो तुम बुरे हो”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابن ماجه (4223)

٤٩٨٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ»» أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أنزِلوا النَّاس منازَلهم» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4989. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “लोगो से उन के मक़ाम व मर्तबे के मुताबिक बर्ताव करो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4842) * حبيب بن ابى ثابت و سفيان الثورى مدلسان و عنعنا و السند منقطع ، و لعله اشار مسلم فى مقدمة صحيحة الى ضعفه لانه ذكره بصيغة التمريض ، والله اعلم

मखलूक पर शफकत व रहमत का बयान • بَابُ الشَّفَقَةِ وَالرَّحْمَةِ عَلَى الْخَلْقِ •

तीसरी फस्ल • الْفَصْلُ الثَّالِث •

٤٩٩٠ - (حسن) عَنْ»» عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي قُرَادٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم تَوَضَّأَ يَوْمًا فَجَعَلَ أَصْحَابُهُ يَتَمَسَّحُونَ بِوَضُوئِهِ فَقَالَ لَهُمُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا يَحْمِلُكُمْ عَلَى هَذَا؟» قَالُوا: حَبُّ اللَّهِ وَرَسُولِهِ. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ سَرَّهُ أَنْ يحب الله وَرَسُوله أويحبه اللَّهُ وَرَسُولُهُ فَلْيُصَدِّقْ حَدِيثَهُ إِذَا حَدَّثَ وَلْيُؤَدِّ أَمَانَتَهُ إِذَا أُؤْتُمِنَ وَلِيُحْسِنَ جِوَارَ مَنْ جَاوَرَهُ»

4990. अब्दुल रहमान बिन अबी कुराद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने एक रोज़ वुज़ू फ़रमाया तो आप के सहाबा रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन आप के वुज़ू के पानी को जिस्मों पर मिलने लगे तो नबी ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: “किस चीज़ ने तुम्हें उस पर अमादा किया ?” उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह और उस के रसूल की मुहब्बत ने, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स यह पसंद करता हो के वह अल्लाह और उस के रसूल से मुहब्बत करे या अल्लाह और उस के रसूल इसे पसंद फरमाए तो वह जब बात करे सच बोले, जब उस के पास अमानत रखी जाए तो उसे अदा करे और अपने पड़ोसियों और मेलजोल रखने वालो से हुस्ने सुलूक करे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعيب الايمان (1533 ، نسخة محققة : 1440) [و ابو نعيم فى معرفة الصحابة (4 / 1838)] * الحسن بن ابى جعفر : ضعيف ، ولاصل الحديث شواهد

٤٩٩١ - (حسن) وَعَنِ»» ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَيْسَ الْمُؤْمِنُ بِالَّذِي يَشْبَعُ وَجَارُهُ جَائِع إِلَى جنبه» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي «شعب الْإِيمَان»

4991. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “वो शख़्स मोमिन नहीं जो शक्म सैर हो कर खाए जबकि उस का करीबी हम साया भूखा हो”| इमाम बयहकी ने दोनों अहादीस शौबुल ईमान में रिवायत की | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (3389 ، نسخة محققة : 3117([و البخارى فى الادب المفرد (112) و صححه الحاكم (4 / 167) و وافقه الذهبى] * سفيان الثورى مدلس و عنع و للحديث شواهد ضعيفة

٤٩٩٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ فُلَانَةً تُذْكَرُ مِنْ كَثْرَةِ صَلَاتِهَا وَصِيَامِهَا وَصَدَقَتِهَا غَيْرَ أَنَّهَا تُؤْذِي جِيرَانَهَا بِلِسَانِهَا. قَالَ: «هِيَ فِي النَّارِ» . قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ فَإِنَّ فُلَانَةً تُذْكَرُ قِلَّةَ صِيَامِهَا وَصَدَقَتِهَا وَصَلَاتِهَا وَإِنَّهَا تَصَدَّقُ بِالْأَثْوَارِ مِنَ الْأَقِطِ وَلَا تؤذي جِيرَانَهَا. قَالَ: «هِيَ فِي الْجَنَّةِ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالْبَيْهَقِيّ فِي «شعب الْإِيمَان»

4992. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! फलां औरत अपनी नमाज़ो, रोज़ो और सदकात की कसरत के हवाले से मशहूर है लेकिन वह अपने ज़ुबान दराज़ी से अपने पड़ोसियों को तकलीफ पहुंचाती है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो जहन्नमी है”, उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! फलां औरत अपने नमाज़ो रोज़ो और सदकात की किल्लत के हवाले से मशहूर है, और वह पनीर के चंद टुकड़े सदका करती हैं और वह अपने ज़ुबान दराज़ी के ज़रिए अपने पड़ोसियों को तकलीफ नहीं पहुंचाती, आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो जन्नती है”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه احمد (2 / 440 ح 9673) و البيهقى فى شعب الايمان (95459546 ، نسخة محققة ؛ 90989099) [و البخارى فى الادب المفرد (119) و ابن حبان (الموارد : 2054 و الاعمش صرح بالسماع عنده و نعد البيهقى) و صححه الحاكم (4 / 166) و وافقه الذهبى]

٤٩٩٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ»» قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَفَ عَلَى نَاسٍ جُلُوسٍ فَقَالَ: «أَلَا أُخْبِرُكُمْ بِخَيْرِكُمْ مِنْ شَرِّكُمْ؟» . قَالَ: فَسَكَتُوا فَقَالَ ذَلِكَ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ. فَقَالَ رَجُلٌ: بَلَى يَا رَسُولَ اللَّهِ أَخْبِرْنَا بِخَيْرِنَا مِنْ شَرِّنَا. فَقَالَ: «خَيْرُكُمْ مَنْ يُرْجَى خَيْرُهُ وَيُؤْمَنُ شَرُّهُ وَشَرُّكُمْ مَنْ لَا يُرْجَى خَيْرُهُ وَلَا يُؤْمَنُ شَرُّهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ» وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيث حسن صَحِيح

4993. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि रसूलुल्लाह ﷺ चंद ऐसे लोगों के पास, खड़े हुए जो बैठें हुए थे तो फ़रमाया: “क्या मैं तुम्हें तुम्हारे बुरे और अच्छे लोगों के मुतल्लिक न बताऊँ ?” रावी बयान करते हैं, वह ख़ामोश रहे, आप ﷺ ने तीन मर्तबा ऐसे फ़रमाया, तो एक आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्यों नहीं! आप हमारे बुरे में से बेहतर के मुतल्लिक हमें ज़रूर बताइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम में से बेहतर शख़्स वह है जिस से खैर की तोकीअ की जाए और उस के शर से अमन हो जबकि तुम में से बुरा वह है जिस से खैर की तोकीअ की जाए और उस के शर से अमन न हो”| तिरमिज़ी, बयहकी की शौबुल ईमान और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (2263) و البيهقى فى شعب الايمان (11268)

٤٩٩٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ»» مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى قَسَمَ بَيْنَكُمْ أَخْلَاقَكُمْ كَمَا قَسَمَ بَيْنَكُمْ أَرْزَاقَكُمْ إِن الله يُعْطِي الدُّنْيَا مَنْ يُحِبُّ وَمَنْ لَا يُحِبُّ وَلَا يُعْطِي الدِّينَ إِلَّا مَنْ أَحَبَّ فَمَنْ أَعْطَاهُ اللَّهُ الدِّينَ فَقَدْ أَحَبَّهُ وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَا يُسْلِمُ عَبْدٌ حَتَّى يُسْلِمَ قَلْبُهُ وَلِسَانُهُ وَلَا يُؤْمِنُ حَتَّى يَأْمَنَ جَارُهُ بَوَائِقَهُ»

4994. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक अल्लाह तआला ने तुम्हारे दरमियान तुम्हारे अख़लाक़ तकसीम किए है जिस तरह उस ने तुम्हारे अमवाल तकसीम किए है, बेशक अल्लाह तआला हर शख़्स को दुनिया अता करता है ख्वाह वह शख़्स इसे पसंद है या नापसंद, जबकि वह दीन सिर्फ इसे अता करता है जिसे पसंद फरमाता है, जिस शख़्स को अल्लाह दीन अता फरमा दें तो (समझो की) वह

अल्लाह का पसंदीदा शख़्स है, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! कोई बंदा मुसलमान नहीं हो सकता जब तक के उस का दिल और उसकी ज़ुबान मुसलमान नहीं हो जाते, और वह इस वक़्त तक मोमिन नहीं होता जब तक उस का पड़ोसी उसकी शरारतो से महफ़ूज़ न हो जाए"। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (1 / 387 ح 3672) و البيهقى فى شعب الايمان (5524 ، نسخه محققة : 5136) * فيه صباح بن محمد : ضعيف وله شاهد ضعيف عند الحاكم (1 / 3334) فيه سفيان الثورى مدلس و عنعن و علة أخرى

٤٩٩٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْمُؤْمِنُ مَأْلَفٌ وَلَا خَيْرَ فِيمَنْ لَا يَأْلَفُ وَلَا يُؤْلَفُ» رَوَاهُمَا أَحْمد وَالْبَيْهَقِيّ فِي «شعب الْإِيمَان»

4995. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मुअमिन उल्फत (प्यार) का ठिकाना (सरासर उल्फ़त (प्यार)) है और इस शख़्स में कोई खैर नहीं जो किसी से उल्फत (प्यार) नहीं करता और न उस से कोई उल्फत (प्यार) करता है"। अहमद और इमाम बयहकी ने दोनों अहादीस शौबुल ईमान में बयान की हैं। (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (2 / 400 ح 9187) و البيهقى فى شعب الايمان (8119 ، نسخة محققة : 7766 فى السنن الكبرى 10 / 236237) [و الحاكم (1 / 23 و فى سنده خطا)] * سنده حسن و للحديث شواهد

٤٩٩٦ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ»» أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ قَضَى لِأَحَدٍ مِنْ أُمَّتِي حَاجَةً يُرِيدُ أَنْ يَسُرَّهُ بِهَا فَقَدْ سَرَّنِي وَمَنْ سَرَّنِي فَقَدْ سَرَّ اللَّهَ وَمَنْ سرَّ الله أدخلهُ الله الْجنَّة»

4996. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिस ने मेरे किसी उम्मती की ज़रूरत पूरी की जिसके ज़रिए वह इसे खुश करना चाहता हो तो उस ने मुझे खुश किया, जिस ने मुझे खुश किया तो उस ने अल्लाह को खुश किया, और जिस ने अल्लाह को खुश किया तो अल्लाह इसे जन्नत में दाखिल फरमाएगा"। (मौज़ू)

اسناده موضوع ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (7653 ، نسخة محققة : 7247) [من طريق احمد بن على بن افطح عن يحيى بن زهدم بن الحارث عن ابيه عن انس الخ و هذا النسخة موضوعة ، المتهم بها زهدم ، و الله اعلم]

٤٩٩٧ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْهُ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَغَاثَ مَلْهُوفًا كَتَبَ اللَّهُ لَهُ ثَلَاثًا وَسَبْعِينَ مَغْفِرَةً وَاحِدَةٌ فِيهَا صَلَاحُ أَمْرِهِ كُلِّهِ وَثِنْتَانِ وَسَبْعُونَ لَهُ دَرَجَاتٌ يَوْمَ الْقِيَامَة»

4997. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो किसी मुसीबत ज़दाह शख़्स की फ़रियादरसी करता है तो अल्लाह उस के लिए तिहत्तर (73) मग्फिरते लिख देता है, उनमें से एक में उस के तमाम

मुआमलात की दुरुस्ती है जबकि बहत्तर (72) रोज़ ए कियामत उस के लिए दरजात के हुसूल का बाईस होगी”| (मौज़ू)

اسناده موضوع ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (7670 ، نسخة محققة : 7264) * فيه زياد بن ابى حسان و احاديث موضوعة كما فى لسان الميزان وغيره

٤٩٩٨ - ، ٤٩٩٩ - (ضَعِيف)»» وَعنهُ وَعَن عبد الله قَالَا: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْخَلْقُ عِيَالُ اللَّهِ فَأَحَبُّ الْخَلْقِ إِلَى اللَّهِ مَنْ أَحْسَنَ إِلَى عِيَالِهِ» . رَوَى الْبَيْهَقِيُّ الْأَحَادِيثَ الثَّلَاثَةَ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ»

4998. अनस और अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मखलूक अल्लाह की अयाल (ज़ेरे किफ़ालत) है और मखलूक में से वह शख़्स अल्लाह को ज़्यादा पसंद है जो उसकी अयाल से अच्छा सुलूक करता है”| इमाम बयहकी ने तीनो अहादीस शौबुल ईमान में बयान की है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (7446 ، نسخة محققة : 7046) * فيه يوسف بن عطية الصفار : متروک و علل أخرى

٥٠٠٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عُقْبَةَ»» بْنِ عَامِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَوَّلُ خَصْمَيْنِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ جَارَانِ» . رَوَاهُ أَحْمد

5000. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रोज़ ए कियामत सबसे पहले दो पड़ोसियों का मुकदमा पेश होगा”| (हसन)

حسن ، رواه احمد (4 / 151 ح 17507) * فيه عبدالله بن لهيعة تابعه عمرو بن الحارث عند الطبرانى فى الكبير (17 / 303 ح 836) و سنده حسن

٥٠٠١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي»» هُرَيْرَة أَنَّ رَجُلًا شَكَا إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَسْوَةَ قَلْبِهِ فَقَالَ: «امْسَحْ رَأْسَ الْيَتِيم وَأَطْعم الْمِسْكِين» . رَوَاهُ أَحْمد

5001. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के किसी आदमी ने अपने संगदिली की नबी ﷺ से शिकायत की तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “यतीम के सर पर हमदर्दी से हाथ फेरा कर और मिस्कीनो को खाना खिलाया कर”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (2 / 263 ح 7566) * فيه رجل لم يسم : مجهول

٥٠٠٢ - (ضَعِيف) وَعَن»» سراقة بْنِ مَالِكٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَلَا أَدُلُّكُمْ عَلَى أَفْضَلِ الصَّدَقَةِ؟ ابْنَتُكَ مَرْدُودَةً إِلَيْكَ لَيْسَ لَهَا كَاسِبٌ غَيْرُكَ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ

5002. सुराका बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: "क्या मैं तुम्हें बेहतरीन सदका के मुतल्लिक बताऊँ ?" वह तेरी इस बेटी पर सदका करना है जो (तलाक वगैरा की वजह से) तेरे पासलौट आए और तेरे सिवा उस के लिए कमाने वाला भी न हो"| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابن ماجه (3667) * علته الانقطاع بين سراقة رضی الله عنه و علی کما صرح به البوصیری وغیره فالسند منقطع

بَابُ الْحُبِّ فِي اللَّهِ وَمِنَ اللَّهِ • अल्लाह के लिए और अल्लाह की तरफ से मुहब्बत का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٥٠٠٣ - (صَحِيح) عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْأَرْوَاحُ جُنُودٌ مُجَنَّدَةٌ فَمَا تَعَارَفَ مِنْهَا ائْتَلَفَ وَمَا تَنَاكَرَ مِنْهَا اخْتَلَفَ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

5003. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "रूहें मुख्तलिफ किस्म के लश्कर है जो बाहम मूतआरिफ (एक जैसी) होती है वह दुनिया में बाहम मुहब्बत से रहती है और जिन में अजनबियत थी उसमें इख्तिलाफ रहता है"| (बुखारी)

رواه البخاری (3336)

٥٠٠٤ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ مُسلم عَن أبي هُرَيْرَة

5004. और इमाम मुस्लिम रहिमहुल्लाह ने इसे अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (मुस्लिम)

رواہ مسلم (159 / 2638)، (6708)

٥٠٠٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ اللَّهَ إِذَا أَحَبَّ عَبْدًا دَعَا جِبْرِيلَ فَقَالَ: إِنِّي أُحِبُّ فُلَانًا فَأَحِبَّهُ قَالَ: فَيُحِبُّهُ جِبْرِيلُ ثُمَّ يُنَادِي فِي السَّمَاءِ فَيَقُولُ: إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ فُلَانًا فَأَحِبُّوهُ فَيُحِبُّهُ أَهْلُ السَّمَاءِ ثُمَّ يُوضَعُ لَهُ الْقَبُولُ فِي الْأَرْضِ. وَإِذَا أَبْغَضَ عَبْدًا دَعَا جِبْرِيلَ فَيَقُولُ: إِنِّي أُبْغِضُ فُلَانًا فَأَبْغِضْهُ. فَيُبْغِضُهُ جِبْرِيلُ ثُمَّ يُنَادِي فِي أَهْلِ السَّمَاءِ: إِنَّ اللَّهَ يُبْغِضُ فَلَانَا فَأَبْغِضُوهُ. قَالَ:

فَيُبْغِضُونَهُ. ثُمَّ يُوضَعُ لَهُ الْبَغْضَاءُ فِي الْأَرْضِ ". رَوَاهُ مُسلم

5005. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक जब अल्लाह किसी बंदे से मुहब्बत करता है तो वह जिब्राइल अलैहिस्सलाम को बुलाकर फरमाता है, बेशक में फलां शख़्स से मुहब्बत करता हूँ लिहाज़ा तुम भी उस से मुहब्बत करो, फ़रमाया: जिब्राइल अलैहिस्सलाम उस से मुहब्बत करते हैं, फिर वह आसमान वालो में मुनादी (एलान) करते हैं: बेशक अल्लाह फलां शख़्स से मुहब्बत करता है लिहाज़ा तुम उस से मुहब्बत करो, आसमान वाले उस से मुहब्बत करते हैं, फिर ज़मीन वालो (के दिलों) में उसकी मकबूलियत पैदा कर दी जाती है, और जब अल्लाह तआला किसी बंदे से बुग्ज़ रखता है तो वह जिब्राइल अलैहिस्सलाम को बुलाकर फरमाता है, बेशक में फलां शख़्स से बुग्ज़ रखता हूँ, लिहाज़ा तुम भी उस से बुग्ज़ रखो, जिब्राइल अलैहिस्सलाम उस से बुग्ज़ रखते है, फिर वह आसमान वालो में एलान करते हैं की अल्लाह फलां शख़्स से बुग्ज़ रखता है, लिहाज़ा तुम भी उस से बुग्ज़ रखो, फ़रमाया: वह उस से बुग्ज़ रखते है, फिर ज़मीन वालो के दिलों में उस के लिए बुग्ज़ पैदा कर दिया जाता है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (157 / 2637)، (6705)

٥٠٠٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ اللَّهَ يَقُولُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ: أَيْنَ الْمُتَحَابُّونَ بِجَلَالِي؟ الْيَوْمَ أُظِلُّهُمْ فِي ظِلِّي يَوْمَ لَا ظِلَّ إِلَّا ظِلِّي ". رَوَاهُ مُسْلِمٌ

5006. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक अल्लाह रोज़ ए कियामत फरमाएगा: मेरी अज़मत व ताज़ीम की खातिर बाहम मुहब्बत करने वाले कहाँ है? में आज इनको अपने साए में जगह दूंगा, इस दिन मेरे साए के सिवा कोई साया नहीं”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (37 / 2566)، (6548)

٥٠٠٧ - (صَحِيح) وَعَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " أَنَّ رَجُلًا زَارَ أَخًا لَهُ فِي قَرْيَةٍ أُخْرَى فَأَرْصَدَ اللَّهُ لَهُ عَلَى مَدْرَجَتِهِ مَلَكًا قَالَ: أَيْنَ تُرِيدُ؟ قَالَ: أُرِيدُ أَخًا لِي فِي هَذِهِ الْقَرْيَةِ. قَالَ: هَلْ لَكَ عَلَيْهِ مِنْ نِعْمَةٍ تَرُبُّهَا؟ قَالَ: لَا غَيْرَ أَنِّي أَحْبَبْتُهُ فِي اللَّهِ. قَالَ: فَإِنِّي [ص:١٣٩ رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكَ بِأَنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَبَّكَ كَمَا أَحْبَبْتَهُ فِيهِ ". رَوَاهُ مُسلم

5007. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं की एक आदमी किसी दूसरी बस्ती में अपने किसी (मुसलमान) भाई की ज़ियारत के लिए गया तो अल्लाह ने उस के रास्ते में एक फ़रिश्ता बेठा दिया जो उस के इंतज़ार मैं था, (जब वह इस फ़रिश्ते के पास से गुज़रा तो) उस ने कहा: कहाँ का इरादा है? इस आदमी ने कहा: मैं इस बस्ती में अपने एक (मुसलमान) भाई से मिलने जा रहा हूँ, उस ने पूछा, क्या उसका तुम पर कोई इहसान है जिस का तुम बदला चुकाने जा रहे हो? उस ने कहा: उस के अलावा और कोई वजह नहीं? की मैं उस से अल्लाह

की खातिर मुहब्बत करता हूँ, इस (फ़रिश्ते) ने कहा: में अल्लाह की तरफ से तुम्हारे पास पैग़ाम लेकर आया हूँ कि जिस तरह तुम अल्लाह की खातिर इस शख़्स से मुहब्बत करते हो वैसे ही अल्लाह तुम से मुहब्बत करता है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (38 / 2567)، (6549)

٥٠٠٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ كَيْفَ تَقُولُ فِي رَجُلٍ أَحَبَّ قَوْمًا وَلَمْ يَلْحَقْ بِهِمْ؟ فَقَالَ: «المرءُ معَ من أحب» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5008. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप इस शख़्स के मुतल्लिक क्या फरमाते हैं जो कुछ लोगों से मुहब्बत करता है लेकिन वह (सोहबत या इल्म व अमल के लिहाज़ से) उन से मिला नहीं? आप ﷺ ने फ़रमाया: “आदमी उन के साथ होगा जिस से उसकी मुहब्बत होगी”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6169) و مسلم (165 / 2640)، (6718)

٥٠٠٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ أَنَّ رَجُلًا قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَتَى السَّاعَةُ؟ قَالَ: «وَيْلَكَ وَمَا أَعْدَدْتَ لَهَا؟» قَالَ: مَا أَعْدَدْتُ لَهَا إِلَّا أَنِّي أُحِبُّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ. قَالَ: «أَنْتَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ» . قَالَ أَنَسٌ: فَمَا رَأَيْتُ الْمُسْلِمِينَ فَرِحُوا بِشَيْءٍ بَعْدَ الْإِسْلَامِ فَرَحَهُمْ بِهَا. مُتَّفق عَلَيْهِ

5009. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! कियामत कब आएगी? आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुझ पर अफ़सोस है, तुमने उस के लिए क्या तय्यारी की है?” उस ने अर्ज़ किया, मेरी तय्यारी सिर्फ यही है की मैं अल्लाह और उस के रसूल से मुहब्बत करता हूँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: तू उस के साथ होगा जिस से तू मुहब्बत रखता है”| अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने मुसलमानों को इस्लाम कबूल करने के बाद इस बात से ज़्यादा किसी और चीज़ से खुश होते हुए नहीं देखा| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6167) و مسلم (161 / 1639)، (6710)

٥٠١٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَثَلُ الْجَلِيسِ الصَّالِحِ وَالسَّوْءِ كَحَامِلِ الْمِسْكِ وَنَافِخِ الْكِيرِ فَحَامِلُ الْمِسْكِ إِمَّا أَنْ يُحْذِيَكَ وَإِمَّا أَنْ تبتاعَ مِنْهُ وإِمَّا أَن تجدَ مِنْهُ رِيحًا طَيِّبَةً وَنَافِخُ الْكِيرِ إِمَّا أَنْ يَحْرِقَ ثيابَكَ وإِمَّا أَنْ تجدَ مِنْهُ ريحًا خبيثةً» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5010. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “नेक हम नशीन और बुरे हम

नशीन की मिसाल ऐसी है जैसे कस्तूरी वाला और आग की भट्टी धोंकने, वाला कस्तूरी वाला या तो वह तुम्हें अतिय्या दे देगा या तुम खुद उस से खरीद लोगे या फिर तुम उस से अच्छी खुशबू पा लोगे, जबकि भट्टी धोंकने वाला या तो वह तुम्हारे कपड़े जला देगा या तुम उस से गन्दी बू पाओगे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (5534) و مسلم (146 / 2648)، (6692)

बाब अल्लाह के लिए और अल्लाह की तरफ से मुहब्बत का बयान • بَابُ الْحُبِّ فِي اللهِ وَمِنَ اللهِ

दूसरी फस्ल • الْفَصْلُ الثَّانِي

٥٠١١ - (صَحِيح) وَعَن مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: وَجَبَتْ مَحَبَّتِي لِلْمُتَحَابِّينَ فِيَّ وَالْمُتَجَالِسِينَ فِيَّ وَالْمُتَزَاوِرِينَ فِيَّ وَالْمُتَبَاذِلِينَ فِيَّ ". رَوَاهُ مَالِكٌ. وَفِي رِوَايَةِ التِّرْمِذِيِّ قَالَ: " يَقُولُ اللَّهُ تَعَالَى: الْمُتَحَابُّونَ فِي جَلَالِي لَهُمْ مَنَابِرُ مِنْ نُورٍ يَغْبِطُهُمُ النَّبِيُّونَ وَالشُّهَدَاء "

5011. मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “अल्लाह तआला फरमाता है, उन लोगों के लिए जो मेरी खातिर बाहम मुहब्बत करते हैं, मेरी खातिर बाहम मुलाकाते करते हैं, और मेरी खातिर ही एक दूसरे पर खर्च करते हैं, मेरी मुहब्बत वाजिब हो गई”| मालिक, और तिरमिज़ी की रिवायत में है, फ़रमाया: “अल्लाह तआला फरमाता है, मेरी जलाल व अज़मत की खातिर बाहम मुहब्बत करने वालो के लिए नूर के मिम्बर है, इन पर अंबिया अलैहिस्सलाम और शुहदा भी रश्क करेंगे”| (सहीह)

صحيح ، رواه مالک فی الموطا (2 / 953954 ح 1843) و الترمذی (2390 وقال : حسن صحيح)

٥٠١٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عُمَرَ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ مِنْ عِبَادِ اللَّهِ لَأُنَاسًا مَا هُمْ بِأَنْبِيَاءٍ وَلَا شُهَدَاءَ يَغْبِطُهُمُ الأنبياءُ والشهداءُ يومَ القيامةِ بِمَكَانِهِمْ مِنَ اللَّهِ» . قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ تُخْبِرُنَا مَنْ هُمْ؟ قَالَ: «هُمْ قَوْمٌ تَحَابُّوا بِرُوحِ اللَّهِ عَلَى غَيْرِ أَرْحَامٍ بَيْنَهُمْ وَلَا أَمْوَالٍ يَتَعَاطَوْنَهَا فَوَاللَّهِ إِنَّ وُجُوهَهُمْ لَنُورٌ وَإِنَّهُمْ لَعَلَى نُورٍ لَا يَخَافُونَ إِذَا خَافَ النَّاسُ وَلَا يَحْزَنُونَ إِذَا حَزَنَ النَّاسُ» وَقَرَأَ الْآيَةَ: (أَلَا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُم يحزنونَ)»» رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5012. उमर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह के बंदो में से कुछ ऐसे लोग भी है जो न तो अंबिया है और न शुहदा, लेकिन रोज़ ए कियामत अल्लाह के यहाँ उन के मक़ाम व मर्तबा पर अंबिया अलैहिस्सलाम और शुहदा भी रश्क करेंगे”, सहाबा रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप ﷺ हमें बताइए के वह कौन लोग है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो लोग है जो आपस में न तो किसी रिश्तेनाते की वजह से मुहब्बत करते हैं न किसी माली शराकत की बिना पर बल्कि वह महज़ अल्लाह के हुक्म

और कुरान इत्तेबा में बाहम मुहब्बत करते और लेन देन करते हैं, अल्लाह की क़सम! उन के चेहरे चमकते होंगे और वह नूर (के मिन्बरो) पर होंगे, और जब दीगर लोग खौफ में मुब्तिला होंगे तो वह खौफ ज़दाह नहीं होंगे और जब दीगर लोग गम का शिकार होंगे तो वह ग़मज़दा नहीं होंगे", फिर आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाई: "सुन लो! बेशक अल्लाह के दोस्तों पर ना कोई खौफ होगा और न वह ग़मगीन होंगे"| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (3527)

٥٠١٣ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَاهُ فِي»» شَرْحِ السُّنَّةِ»» عَنْ أَبِي مَالِكٍ بِلَفْظِ «الْمَصَابِيحِ» مَعَ زَوَائِدَ وَكَذَا فِي «شُعَبِ الْإِيمَان»

5013. और उन्होंने (इमाम बगवी) ने इसे अबू मालिक की सनद से कुछ ज़वाईद के साथ मसाबिह के अल्फ़ाज़ से शरह सुन्ना में रिवायत किया है, और इसी तरह शौबुल ईमान मैं भी है| (हसन)

حسن ، رواه البغوی فی شرح السنة (13 / 50 ح 3464) و ذکره فی مصابیح السنة (3 / 379 ح 3897) و البیھقی فی شعب الایمان (9001 ، نسخة محققة : 8588) [و احمد (5 / 431 ، 343 و سندہ حسن) و عبد الرزاق (11 / 201202 ح 20324) * و للحدیث شواھد عند ابن حبان (الموارد : 2508) و الحاکم (4 / 170171) وغیرھما

٥٠١٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ»» عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِأَبِي ذَرٍّ: «يَا أَبَا ذَرٍّ أَيُّ عُرَى الْإِيمَانِ أَوْثَقُ؟» قَالَ: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: «الْمُوَالَاةُ فِي اللَّهِ وَالْحُبُّ فِي اللَّهِ وَالْبُغْضُ فِي اللَّهِ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي «شعب الْإِيمَان»

5014. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: "अबू ज़र! ईमान का कौन सा हिस्सा (हल्का) ज़्यादा मजबूत व मुहकम है?" उन्होंने अर्ज़ किया: अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह की खातिर एक दूसरे से मुहब्बत व तआवुन करना अल्लाह की खातिर मुहब्बत करना और अल्लाह की खातिर बुग्ज़ रखना"| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواہ البیھقی فی شعب الایمان (9513 ، نسخة محققة : 9068) * فیہ حنش بن قیس الحبی متروک فالسند ضعیف و للحدیث شواھد ضعیفة فھو ضعیف

٥٠١٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» هُرَيْرَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " إِذَا عَادَ الْمُسْلِمُ أَخَاهُ أَوْ زَارَهُ قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: طِبْتَ وَطَابَ مَمْشَاكَ وَتَبَوَّأْتَ مِنَ الْجَنَّةِ مَنْزِلًا ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيث غَرِيب

5015. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जब मुसलमान अपने (मुसलमान) भाई की इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) करता है या उस से मुलाकात करता है तो अल्लाह तआला

फरमाता है, तेरी दुनिया व आखिरत अच्छी हो गई है, तेरा चलना अच्छा हो गया और तुमने जन्नत में जगह बना ली है”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (2008) [و ابن ماجه (1443)] * ابو سنان عيسى بن سنان ضعيف و لابن حبان وهم عجيب فى تسمية ابن سنان

٥٠١٦ - (صَحِيح) وَعَن»» الْمِقْدَام بن معديكرب عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذا أحب الرجل أَخَاهُ فليخبره أَنه أحبه» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالتِّرْمِذِيّ

5016. मिक्दाम बिन मअदीकरीब रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब आदमी अपने (मुसलमान) भाई से मुहब्बत करे तो वह इसे बताए के वह उस से मुहब्बत करता है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (5124) و الترمذى (2392 وقا ل : غريب)

٥٠١٧ - (حسن) وَعَنْ»» أَنَسٍ قَالَ: مَرَّ رَجُلٌ بِالنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعِنْدَهُ نَاسٌ. فَقَالَ رَجُلٌ مِمَّنْ عِنْده: إِني لأحب هَذَا فِي اللَّهِ. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَعْلَمْتَهُ؟» قَالَ: لَا. قَالَ: «قُمْ إِلَيْهِ فَأَعْلِمْهُ» . فَقَامَ إِلَيْهِ فَأَعْلَمَهُ فَقَالَ: أَحَبَّكَ الَّذِي أَحْبَبْتَنِي لَهُ. قَالَ: ثُمَّ رَجَعَ. [ص:١٣٩] فَسَأَلَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرَهُ بِمَا قَالَ. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَنْتَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَكَ مَا احْتَسَبْتَ» رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ» . وَفِي رِوَايَةِ التِّرْمِذِيِّ: «الْمَرْءُ مَعَ من أحبَّ ولَه مَا اكْتسب»

5017. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी नबी ﷺ के पास से गुज़रा जबकि कुछ लोग आप के पास थे, उन लोगों में से किसी ने कहा: में इस शख़्स से अल्लाह की खातिर मुहब्बत करता हूँ, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम ने इसे बताया है?” उस ने अर्ज़ किया, नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस की तरफ जाओ और इसे बताओ”, चुनांचे वह इस शख़्स के पास गया और इसे बताया (के में तुझ से अल्लाह की खातिर मुहब्बत करता हूँ) तो उस ने कहा: जिस ज़ात की खातिर तुम मुझ से मुहब्बत करते हो वह ज़ात तुझ से मुहब्बत करे, रावी बयान करते हैं, फिर वह आदमी वापस आया तो नबी ﷺ ने उस से दरियाफ्त किया तो उस ने आप को उस के जवाब से आगाह किया, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “तुम उस के साथ ही होगे जिस से तुम मुहब्बत करते हो, और तुमने जो सवाब चाहा वह तुम्हें मिलेगा”| बयहकी की शौबुल ईमान और तिरमिज़ी की रिवायत में है: “आदमी जिस से मुहब्बत करता है इसी के साथ होगा, और जो उस ने किया उस का वह सिलह पाएगा”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (9011) و الترمذى (2386 وقال : حسن غريب) * الحسن البصرى عنعن و حديث المرء مع من احب صحيح متواتر دون الزيادة و حديث ابى داود (5125) يغنى عنه

٥٠١٨ - (حسن) وَعَن»» أبي سعيد أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَا تُصَاحِبْ إِلَّا مُؤْمِنًا وَلَا يَأْكُلْ طَعَامَكَ

إِلَّا تَقِيٌّ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ والدارمي

5018. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने नबी ﷺ को फरमाते हुए सुना: “तुम सिर्फ किसी मोमिन शख़्स की हम नाशिनी इख़्तियार करो और तुम्हारा खाना सिर्फ मुत्तकी शख़्स ही खाए”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (2395 وقال : حسن صحيح) و ابوداؤد (4832) و الدارمى (2 / 103 ح 2063)

٥٠١٩ - (حَسَنٌ غَرِيبٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْمَرْءُ عَلَى دِينِ خَلِيلِهِ فَلْيَنْظُرْ أَحَدُكُمْ مَنْ يُخَالِلْ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ» وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ. وَقَالَ النَّوَوِيُّ: إِسْنَادُهُ صَحِيحٌ

5019. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है, लिहाज़ा तुम में से हर एक को चाहिए के वह देखे के वह किसी से दोस्ती कर रहा है”| अहमद तिरमिज़ी, अबू दावुद, बयहकी की शौबुल ईमान, और इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब है, और इमाम नववी रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: उसकी इसनाद सहीह है| (हसन)

حسن ، رواه احمد (2 / 303 ح 8015) و الترمذى (2378) و ابوداؤد (4833) و البيهقى فى شعب الايمان (9436)

٥٠٢٠ - (ضَعِيف) وَعَن»» يزِيد بن نَعامة قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا آخَى الرَّجُلُ الرَّجُلَ فَلْيَسْأَلْهُ عَنِ اسْمِهِ وَاسْمِ أَبِيهِ وَمِمَّنْ هُوَ؟ فَإِنَّهُ أَوْصَلُ للمودَّة» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5020. यज़ीद बिन नआम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब आदमी किसी आदमी से भाई चाराह काइम करे तो वह उस से उस के नाम, उस के वालिद के नाम और उस के कबिले के मुतल्लिक दरियाफ्त कर ले, क्योंकि यह मुहब्बत (दोस्ती) को ज़्यादा मिलाने (बढ़ाने) वाला है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (2392 ب وقال : غريب) * يزيد بن نعامة : تابعى و السند مرسل

अल्लाह के लिए और अल्लाह की तरफ से मुहब्बत का बयान • بَابُ الْحُبِّ فِي اللَّهِ وَمِنَ اللَّهِ

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الأول

٥٠٢١ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي»» ذَرٍّ قَالَ: خَرَجَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَتَدْرُونَ أَيُّ الْأَعْمَالِ أَحَبُّ إِلَى اللَّهِ تَعَالَى؟» قَالَ قَائِلٌ: الصَّلَاةُ وَالزَّكَاةُ. وَقَالَ قَائِلٌ: الْجِهَادُ. قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ أَحَبَّ الْأَعْمَالِ إِلَى اللَّهِ تَعَالَى الْحُبُّ فِي اللَّهِ وَالْبُغْضُ فِي اللَّهِ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَرَوَى أَبُو دَاوُد الْفَصْل الْأَخير

5021. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ हमारे पास तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया: “क्या तुम जानते हो के अल्लाह तआला को कौन से आमाल ज़्यादा पसंद है?” सहाबा में से किसी ने अर्ज़ किया: नमाज़, ज़कात और किसी ने अर्ज़ किया, जिहाद है, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह के नज़दीक पसंदीदा अमल, अल्लाह की खातिर मुहब्बत करना और अल्लाह की खातिर बुग्ज़ रखना है”| अहमद और अबू दावुद ने आखिरी हिस्सा रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (5 / 146 ح 21628) و ابوداؤد (4599) * يزيد بن ابی زیاد : ضعیف و الرجل : مجهول

٥٠٢٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» أُمَامَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا أَحَبَّ عَبْدٌ عَبْدًا لِلَّهِ إِلَّا أَكْرَمَ رَبَّهُ عَزَّ وَجَلَّ» . رَوَاهُ أَحْمد

5022. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स अल्लाह की रज़ा की खातिर किसी शख़्स से मुहब्बत करता है तो वह अपने हो अज्ज़वजल की तकरीम करता है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (5 / 259 ح 22582 ، نسخة محققة : 22229)

٥٠٢٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أَسمَاء»» بنت يزِيد أَنَّهَا سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «أَلَا أُنَبِّئُكُمْ بِخِيَارِكُمْ؟» قَالُوا: بَلَى يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: «خِيَارُكُمُ الَّذِينَ إِذَا رُؤُوا ذُكِرَ الله» رَوَاهُ ابْن مَاجَه

5023. अस्मा बिन्ते यज़ीद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के इस ने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “क्या मैं तुम्हें तुम्हारे बेहतरीन लोगों के मुतल्लिक न बताऊँ ?” सहाबा रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के

रसूल! ज़रूर बताइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हारे बेहतरीन लोग वह हैं की जब इन पर नज़र पड़े तो अल्लाह याद आ जाए”| (हसन)

حسن ، رواه ابن ماجه (4119)

٥٠٢٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَوْ أَنَّ عَبْدَيْنِ تَحَابَّا فِي اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ وَاحِدٌ فِي الْمَشْرِقِ وَآخَرُ فِي الْمَغْرِبِ لَجَمَعَ اللَّهُ بَيْنَهُمَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ. يَقُولُ: هَذَا الَّذِي كُنْتَ تُحِبُّهُ فِي "

5024. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगर दो बंदे अल्लाह अज़्ज़वजल की खातिर आपस में मुहब्बत करते हैं, एक मशरिक में है और एक मग़रिब में, तो रोज़ ए कियामत अल्लाह इन दोनों को इकट्ठा कर देगा और फरमाएगा: यह है वह जिस से तुम मेरी रज़ा की खातिर मुहब्बत किया करते थे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (9022 ، نسخة محققة : 8606) * حكيم بن نافع الرقى ضعفه الجمهور و الاعمش عنعن ان صح السند اليه

٥٠٢٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي»» رَزِينٍ أَنَّهُ قَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " أَلَا أَدُلُّكَ عَلَى مِلَاكِ هَذَا الْأَمْرِ الَّذِي تُصِيبُ بِهِ خَيْرَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ؟ عَلَيْكَ بِمَجَالِسِ أَهْلِ الذِّكْرِ وَإِذَا خَلَوْتَ فَحَرِّكْ لِسَانَكَ مَا اسْتَطَعْتَ بِذِكْرِ اللَّهِ وَأَحِبَّ فِي اللَّهِ وَأَبْغِضْ فِي اللَّهِ يَا أَبَا رَزِينٍ هَلْ شَعَرْتَ أَنَّ الرَّجُلَ إِذَا خَرَجَ مَنْ بَيْتِهِ زَائِرًا أَخَاهُ شَيَّعَهُ سَبْعُونَ أَلْفَ مَلَكٍ كُلُّهُمْ يُصَلُّونَ عَلَيْهِ وَيَقُولُونَ: رَبَّنَا إِنَّهُ وَصَلَ فِيكَ فَصِلْهُ؟ فَإِنِ اسْتَطَعْتَ أَنْ تُعْمِلَ جَسَدَكَ فِي ذَلِك فافعل "

5025. अबू रजीन (लकिट बिन आमिर बिन सबर) रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे फ़रमाया: “क्या मैं तुम्हें इस दीन की बुनियाद के मुतल्लिक न बताऊँ जिसके ज़रिए तुम दीन व दुनिया की भलाई हासिल कर लो? तुम अहले ज़िक्र की मजालिस इख़्तियार करो, जब खलवत में हो तो फिर जिस क़दर हो सके अपने ज़ुबान पर अल्लाह का ज़िक्र जारी रखो और अल्लाह की खातिर मुहब्बत करो और अल्लाह की खातिर बुग्ज़ रखो, अबू रजीन! क्या तुम्हें मालूम है? के आदमी जब अपने (मुसलमान) भाई की ज़ियारत के लिए (घर से) निकलता है तो सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उस के साथ चलते है और वह सब उस के लिए दुआए करते जाते हैं और वह कहते हैं: हमारे परवरदिगार! उस ने तेरी रज़ा की खातिर ताल्लुक जोड़ा है तो इसे (अपनी रहमत व मगफिरत के साथ) जोड़ दे, अगर तुम अपने जिस्म को उन कामो पर लगा सको तो लगाओ”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (9024 ، نسخة محققة : 8608) * عثمان بن عطاء بن ابى مسلم الخراسانى : ضعيف و ابوه مدلس

٥٠٢٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» هُرَيْرَةَ قَالَ: كُنْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ فِي الْجَنَّةِ لَعُمُدًا مِنْ يَاقُوتٍ عَلَيْهَا غُرَفٌ مِنْ زَبَرْجَدٍ لَهَا أَبْوَابٌ مُفَتَّحَةٌ تُضِيءُ كَمَا يُضِيءُ الْكَوْكَبُ الدُّرِّيُّ» . فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَنْ يَسْكُنُهَا؟ قَالَ: «الْمُتَحَابُّونَ فِي اللَّهِ وَالْمُتَجَالِسُونَ فِي اللَّهِ وَالْمُتَلَاقُونَ فِي اللَّهِ» . رَوَى الْبَيْهَقِيُّ الْأَحَادِيثَ الثَّلَاثَةَ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ»

5026. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं रसूलुल्लाह ﷺ के साथ था आप ﷺ ने फ़रमाया: “जन्नत में याकुत के सुतून है, इन पर पन्ना के बाला खाने है, उन के दरवाज़े खुले है, वह चमक दार सितारे की तरह चमकते है”, सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! उनमें कौन लोग रहेंगे? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह की खातिर आपस में मुहब्बत करने वाले, अल्लाह की खातिर आपस में हम नशीनी इख़्तियार करने वाले और अल्लाह की खातिर आपस में मुलाकात करने वाले”| इमाम बयहकी ने तीनो अहादीस शौबुल ईमान में रिवायत की है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (9002 ، نسخة محققة : 8589) * فيه محمد بن ابى حميد : ضعيف

बَابُ مَا يُنْهَى عَنْهُ مِنَ التَّهَاجُرِ وَالتَّقَاطُعِ وَاتِّبَاعِ العورات • कतअ ताल्लुक और ऐब जोईका बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٥٠٢٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي أَيُّوبَ الْأَنْصَارِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَحِلُّ لِلرَّجُلِ أَنْ يَهْجُرَ أَخَاهُ فَوْقَ ثَلَاثِ لَيَالٍ يَلْتَقِيَانِ فَيعرض هَذَا ويعرض هذاوخيرهما الَّذِي يَبْدَأُ بِالسَّلَامِ» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5027. अबू अय्यूब अंसारी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “किसी आदमी के लिए जाईज़ नहीं के वह अपने (मुसलमान) भाई से तीन दिन से इज़ाफ़ी (ज़्यादा) तर्क ए तालुकात करे, दोनों मिलते है तो वह उस से एअराज़ करता है और वह उस से एअराज़ करता है और इन दोनों में से बेहतर वह है जो सलाम में पहल करता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6077) و مسلم (25 / 2560)، (6532)

٥٠٢٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِيَّاكُمْ وَالظَّنَّ فَإِنَّ الظَّنَّ أَكْذَبُ الْحَدِيثِ وَلَا تَحَسَّسُوا وَلَا تَجَسَّسُوا وَلَا تَنَاجَشُوا وَلَا تَحَاسَدُوا وَلَا تَبَاغَضُوا وَلَا تَدَابَرُوا وَكُونُوا عِبَادَ اللَّهِ إِخْوَانًا» . وَفِي رِوَايَةٍ: «وَلَا تنافسوا» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5028. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बदगुमानी से बचो, क्योंकि बदगुमानी सबसे बड़ा झूठ है, तुम किसी के ऐब मत तलाश करो और न जासूसी करो, कीमत बढ़ाने के लिए बोली मत दो और न बाहम हसद करो, बुग्ज़ मत रखो और न कतअ तअल्लुक करो और अल्लाह के बन्दों! भाई भाई बन जाओ”, एक दूसरी रिवायत में है: “(और हसद की बिना पर) बाहम एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश न करो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6066) و مسلم (28 / 2563)، (6536)

٥٠٢٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " تُفْتَحُ أَبْوَابِ الْجَنَّةِ يَوْمَ الِاثْنَيْنِ وَيَوْمَ الْخَمِيسِ فَيُغْفَرُ لِكُلِّ عَبْدٍ لَا يُشْرِكُ بِاللَّهِ شَيْئًا إِلَّا رجلا كَانَتْ بَيْنَهُ وَبَيْنَ أَخِيهِ شَحْنَاءُ فَيُقَالُ: انْظُرُوا هذَيْن حَتَّى يصطلحا ". رَوَاهُ مُسلم

5029. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “पीर और जुमेरात के रोज़ जन्नत के दरवाज़े खोले जाते हैं, शिर्क से बेज़ार हर शख़्स को बख्श दिया जाता है, अलबत्ता इस शख़्स की मगफिरत नहीं होती जिस की अपने भाई के साथ रंजिश व अदावत हो, कहा जाता है: इन दोनों को मुहलत दो हत्ता कि वह सुलह कर ले”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (35 / 2565)، (6544)

٥٠٣٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " تُعْرَضُ أَعْمَالُ النَّاسِ فِي كُلِّ جُمُعَةٍ [ص:١٤٠ مَرَّتَيْنِ يَوْمَ الِاثْنَيْنِ وَيَوْمَ الْخَمِيسِ فَيُغْفَرُ لِكُلِّ مُؤْمِنٍ إِلَّا عبدا بَينه بَين أَخِيهِ شَحْنَاءُ فَيُقَالُ: اتْرُكُوا هَذَيْنِ حَتَّى يَفِيئَا ". رَوَاهُ مُسلم

5030. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हर जुमे (सात दिनों में) लोगों के आमाल दो मर्तबा पीर और जुमेरात के रोज़ पेश किए जाते हैं, हर बंदा मोमिन को बख्श दिया जाता है, अलबत्ता इस बंदे की मगफिरत नहीं होती जिस की अपने भाई के साथ रंजिश व अदावत हो, कहा जाता है: इन दोनों को छोड़ दो हत्ता कि वह (अदावत से) रुजू कर ले”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (36 / 2565)، (6546)

٥٠٣١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ أَمِّ كُلْثُومٍ بِنْتُ عُقْبَةَ بْنِ أَبِي مَعِيطٍ قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَيْسَ الْكَذَّابُ الَّذِي يُصْلِحُ بَيْنَ النَّاسِ وَيَقُولُ خَيْرًا وَيَنْمِي خَيْرًا» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَزَادَ مُسْلِمٌ قَالَتْ: وَلَمْ أَسْمَعْهُ - تَعْنِي النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - يُرَخِّصُ فِي شَيْءٍ مِمَّا يَقُولُ النَّاسُ كَذِبٌ إِلَّا فِي ثَلَاثٍ: الْحَرْبُ وَالْإِصْلَاحُ بَيْنَ النَّاسِ وَحَدِيثُ الرَّجُلِ امْرَأَتَهُ وَحَدِيثُ الْمَرْأَةِ زَوْجَهَا

5031. उम्मे कुलसुम बिन उक्बा बिन मुअय्त रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “लोगो के दरमियान सुलह कराने वाला शख़्स झूठा नहीं, वह (दोनों से) खैर व भलाई की बात करता है और (दोनों को) खैर व भलाई की बात पहुंचाता है”| इमाम मुस्लिम ने यह इज़ाफा नकल किया है: उम्म कुलसुम रदियल्लाहु अन्हा ने कहा मैंने उन्हें यानी नबी ए करीम ﷺ को तीन उमूर के अलावा किसी मुआमले में झूठ बोलने की इजाज़त देते हुए नहीं सुना: लड़ाई (जंग) में, लोगों के दरमियान सुलह कराने में और मियां बीवी की बाहम गुफ्तगू करने में”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2692) و مسلم (101 / 2605)، (6633)

٥٠٣٢ - وَذكر حَدِيث جَابر: «إِن الشَّيْطَان قد أيس» فِي «بَاب الوسوسة»

5032. और जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से मरवी हदीस: “शैतान मायूस हो चूका”, بَاب الوسوسة (वसवसे का बयान) में ज़िक्र की गई है| (मुस्लिम)

رواه مسلم ، تقدم (72)، (7103)

بَابُ مَا يُنْهَى عَنْهُ مِنَ التَّهَاجُرِ وَالتَّقَاطُعِ وَاتِّبَاع العورات

कतअ ताल्लुक और ऐब जोईका बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي

दूसरी फस्ल

٥٠٣٣ - (لم تتمّ دراسته) عَن أَسمَاء بنت يزِيد قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَا يَحِلُّ الْكَذِبُ إِلَّا فِي ثَلَاثٍ: كَذِبُ الرَّجُلِ امْرَأَتَهُ لِيُرْضِيَهَا وَالْكَذِبُ فِي الْحَرْبِ وَالْكَذِبُ لِيُصْلِحَ بَيْنَ النَّاسِ ". رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ

5033. अस्मा बिन्ते यज़ीद रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सिर्फ तीन मुवाके पर झूठ बोलना जाईज़ है, आदमी का अपने बीवी को खुश करने के लिए झूठ बोलना, लड़ाई में झूठ बोलना और लोगों के दरमियान सुलह कराने के लिए झूठ बोलना”| (सहीह)

صحیح ، رواه احمد (6 / 461 ح 28160) و الترمذی (1939 وقال : حسن)

٥٠٣٤ - (إِسْنَاده جيد) وَعَنْ عَائِشَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يَحِلُّ لِمُسْلِمٍ أَنْ يَهْجُرَ أَخَاهُ فَوْقَ ثَلَاثٍ

فَمِنْ هَجَرَ فَوْقَ ثَلَاثٍ مَرَّاتٍ كُلُّ ذَلِكَ لَا يَرُدُّ عَلَيْهِ فَقَدْ بَاء بِإِثمه» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5034. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “किसी मुसलमान के लिए मुनासिब नहीं के वह किसी मुसलमान से तीन दिन से इज़ाफ़ी (ज़्यादा) तर्के ताल्लुक करे, जब वह उन से मुलाकात करे तो तीन मर्तबा इसे सलाम करे, हर मर्तबा वह इसे सलाम का जवाब न दे तो यह सलाम करने वाला इस (तरके मुलाक़ात) के गुनाह से पाक हो जाता है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4913)

٥٠٣٥ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يَحِلُّ لِمُسْلِمٍ أَنْ يَهْجُرَ أَخَاهُ فَوْقَ ثَلَاثٍ فَمِنْ هَجَرَ فَوْقَ ثَلَاثٍ فَمَاتَ دَخَلَ النَّارَ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُد

5035. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “किसी मुसलमान के लिए जाईज़ नहीं के वह अपने (मुसलमान) भाई से तीन दिन से इज़ाफ़ी (ज़्यादा) तर्के ताल्लुक करे, जिस शख़्स ने तीन दिन से इज़ाफ़ी (ज़्यादा) तर्के ताल्लुक रखा और वह इस हालत में फौत हो गया तो वह जहन्नम में जाएगा”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه احمد (2 / 392 ح 9081) و ابوداؤد (4914)

٥٠٣٦ - (إِسْنَاده لين) وَعَن أبي خرَاش السُّلَمِيِّ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ هَجَرَ أَخَاهُ سَنَةً فَهُوَ كسفك دَمه» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5036. अबू खराश स्सुलुमी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जिस ने अपने भाई से साल फिर तर्के मुलाक़ात की तो वह उस के खून बहाने के बराबर है”| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (4915)

٥٠٣٧ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَحِلُّ لِمُؤْمِنٍ أَنْ يَهْجُرَ مُؤْمِنًا فَوْقَ ثَلَاثٍ فَإِنْ مَرَّتْ بِهِ ثلاثُ فَلْيلقَهُ فليسلم عَلَيْهِ فَإِن ردَّ عَلَيْهِ السَّلَامَ فَقَدِ اشْتَرَكَا فِي الْأَجْرِ وَإِنْ لَمْ يَرُدَّ عَلَيْهِ فَقَدْ بَاءَ بِالْإِثْمِ وَخَرَجَ الْمُسلِّمُ من الْهِجْرَة» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5037. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “किसी मोमिन के लिए जाईज़ नहीं के वह किसी मोमिन से तीन दिन से इज़ाफ़ी (ज़्यादा) तर्के मुलाक़ात करे, जब तीन दिन गुज़र जाए तो उसे चाहिए के वह उस से मुलाकात करे और इसे सलाम करे, अगर उस ने सलाम का जवाब दे दिया तो वह दोनों

अज़र में शरीक है, और अगर वह सलाम का जवाब न दे तो वही शख़्स गुनाहगार होगा जबकि सलाम करने वाला तर्के मुलाक़ात के ज़िमरे से निकल जाएगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4912) * فيه هلال بن ابی هلال المدنی مستور ، وثقه ابن حبان وحده وقال الذهبی : لايعرف

٥٠٣٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» الدَّرْدَاءِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَلَا أُخْبِرُكُمْ بِأَفْضَلَ من درجةِ الصِّيامِ والصدقةِ وَالصَّلَاة؟» قُلْنَا: بَلَى. قَالَ: «إِصْلَاحُ ذَاتِ الْبَيْنِ وَفَسَادُ ذَاتِ الْبَيْنِ هِيَ الْحَالِقَةُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ صَحِيح

5038. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “क्या मैं तुम्हें रोज़े, सदके और नमाज़ से बेहतर दरजे वाले अमल के मुतल्लिक न बताऊँ ?” रावी बयान करते हैं, हमने अर्ज़ किया: ज़रूर बताइए आप ﷺ ने फ़रमाया: “दो फरीको दोस्तों, रिश्तेदारों के दरमियान सुलह् कराना, जबकि दो फरीको के दरमियान फसाद ऐसी खसलत है जो (नेकियो को) ज़ाइल कर देने वाली है”| अबू दावुद, तिरमिज़ी, और इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: यह हदीस सहीह है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4919) و الترمذی (2509) * فيه الاعمش و ابو معاوية مدلسان و عنعنا و للحديث شواهد ضعيفة

٥٠٣٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ الزُّبَيْرِ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «دَبَّ إِلَيْكُمْ دَاءُ الْأُمَمِ قَبْلَكُمُ الْحَسَدُ وَالْبَغْضَاءُ هِيَ الْحَالِقَةُ لَا أَقُولُ تَحْلِقُ الشَّعْرَ ولكنْ تحلق الدّين» . رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ

5039. जुबैर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “साबिका उम्मतो की बीमारी (गैर महसूस तरीके से) तुम्हारी तरफ मुन्तकिल हो गई है, हसद और बुग्ज़ व अदावत और वह नेकियो को ज़ाइल करने वाली है, मैं यह नहीं कह रहा के वह (बीमारी) बाल मुंडता है बल्कि वह दीन को ख़तम कर देती है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (1 / 167 ح 1430) و الترمذی (2510) * فيه مولی للزبير : مجهول ، لم اجد من و ثقه و انظر تحفة الاحوذی (3 / 320) لمزيد التحقيق

٥٠٤٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِيَّاكُمْ وَالْحَسَدَ فَإِنَّ الْحَسَدَ يَأْكُلُ الْحَسَنَاتِ كَمَا تَأْكُلُ النَّارُ الْحَطَبَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5040. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “हसद से बचो क्योंकि हसद नेकियो को इस तरह खा जाता है जिस तरह आग लकड़ी को खा जाती है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4903) * جد ابراهيم بن ابی اسيد : لايعرف و الحديث ضعفه البخاری

٥٠٤١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ»»   عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِيَّاكُمْ وَسُوءَ ذَاتِ الْبَيْنِ فَإِنَّهَا الْحَالِقَةُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5041. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “दो (फरीको, दोस्तों, रिश्तेदारों) के दरमियान बुराई डालने से बचो क्योंकि वह (दीन को) ज़ाइल करने वाली है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2508 وقال : صحیح غریب)

٥٠٤٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي»»   صرمة أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ ضَارَّ ضَارَّ اللَّهُ بِهِ وَمَنْ شَاقَّ شَاقَّ اللَّهُ عَلَيْهِ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيب

5042. अबू सिरमा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स किसी (मुसलमान) को तकलीफ पहुंचाता है तो उस के बदले में अल्लाह इसे तकलीफ पहुंचाता है, और जो शख़्स किसी को मशक्क़त में मुब्तिला करता है तो अल्लाह इसे मशक्क़त में मुब्तिला कर देता है”| इब्ने माजा तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابن ماجه (2342) و الترمذی (1940) [و ابوداؤد (3635)] * لؤلؤة یو ثقها غیر الترمذی و للحدیث شواھد کثیرۃ کلھا ضعیفة

٥٠٤٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»»   بَكْرٍ الصِّدِّيقِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَلْعُونٌ مَنْ ضَارَّ مُؤْمِنًا أَوْ مَكَرَ بِهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

5043. अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “वो शख़्स मलउन है जो किसी मोमिन को नुकसान पहुंचाता है या इसे धोका देता है”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (1941) * ابو سلمة الکندی : مجھول و فرقد السبخی : ضعیف

٥٠٤٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن ابنِ»»   عمَرَ قَالَ: صَعِدَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمِنْبَرَ فَنَادَى بِصَوْتٍ رَفِيعٍ فَقَالَ: «يَا مَعْشَرَ مَنْ أَسْلَمَ بِلِسَانِهِ وَلَمْ يُفْضِ الْإِيمَانُ إِلَى قَلْبِهِ لَا تُؤْذُوا الْمُسْلِمِينَ وَلَا تُعَيِّرُوهُمْ وَلَا تَتَّبِعُوا عَوْرَاتِهِمْ فَإِنَّهُ مَنْ يَتَّبِعْ عَوْرَةَ أَخِيهِ الْمُسْلِمِ يَتَّبِعِ اللَّهُ عَوْرَتَهُ وَمَنْ يَتَّبِعِ اللَّهُ عَوْرَتَهُ يَفْضَحْهُ وَلَوْ فِي جَوْفِ رَحْلِهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5044. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ मिम्बर पर चढ़े और बा आवाज़े बुलंद फ़रमाया: “ए लोगो! जो अपनी ज़ुबान से इस्लाम लाए हो जबकि ईमान उन के दिलों तक नहीं पहुंचा, तुम

मुसलमानों को तकलीफ मत पहुँचाओ और न उन्हें आर दिलाओ और ना ही उन के ऐब (कमी) तलाश करो, क्योंकि जो शख़्स अपने (मुसलमान) भाई के ऐब (कमी) तलाश करता है तो अल्लाह उस के ऐब (कमी) का पीछा करता है, और जिसके ऐब (कमी) का अल्लाह पीछा करता है तो वह इसे रुसवा कर देता है ख्वाँ वह अपने घर के बिच में हो”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (2032 وقال :حسن غريب)

٥٠٤٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن سعيد»» بْنِ زَيْدٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ مِنْ أَرْبَى الرِّبَا الِاسْتِطَالَةُ فِي عِرْضِ الْمُسْلِمِ بِغَيْرِ حَقٍّ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ»

5045. सईद बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “सूद की सबसे संगीन सूरत मुसलमान की इज्ज़त के बारे में ज़ुबान दराज़ी करना है”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (4876) و البيهقى فى شعب الايمان (6710)

٥٠٤٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم: " لما عرجَ بِي ربِّي مَرَرْتُ بِقَوْمٍ لَهُمْ أَظْفَارٌ مِنْ نُحَاسٍ يَخْمِشُونَ وجوهَهم وصدورهم فَقُلْتُ: مَنْ هَؤُلَاءِ يَا جِبْرِيلُ؟ قَالَ: هَؤُلَاءِ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ لُحُومَ النَّاسِ وَيَقَعُونَ فِي أَعْرَاضِهِمْ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5046. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब मेरे रब ने मुझे मेअराज कराइ तो मैं ऐसे लोगों के पास से गुज़रा जिन के नाख़ून तांबे के थे, वह अपने चेहरो और सीनों को नोच रहे थे, मैंने कहा: जिब्राइल! यह कौन लोग है? उन्होंने कहा: यह वह लोग है जो लोगों का गोश्त खाया करते थे (उन की गीबत किया करते थे) और उनकी इज्ज़तो के मुतल्लिक ऐब जोई करते थे”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (4878)

٥٠٤٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن الْمُسْتَوْرد»» عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ أَكَلَ بِرَجُلٍ مُسْلِمٍ أَكْلَةً فَإِنَّ اللَّهَ يُطعِمُه مثلَها منْ جهنَّمَ ومَن كَسا ثَوْبًا بِرَجُلٍ مُسْلِمٍ [ص:١٤٠ فَإِنَّ اللَّهَ يَكْسُوهُ مِثْلَهُ مِنْ جَهَنَّمَ وَمَنْ قَامَ بِرَجُلٍ مَقَامَ سُمْعَةٍ وَرِيَاءٍ فَإِنَّ اللَّهَ يَقُومُ لَهُ مَقَامَ سُمْعَةٍ ورياءٍ يَوْم الْقِيَامَة» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5047. मुस्तवरिद रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिस ने किसी मुसलमान आदमी (की गीबत) की वजह से एक लुकमे खाया तो अल्लाह इस शख़्स को उसकी मिस्ल जहन्नम से खिलाएगा और जिस शख़्स ने किसी मुसलमान आदमी की (गीबत की) की वजह से कोई कपड़ा पहना तो अल्लाह इस शख़्स

को उसकी मिस्ल जहन्नम से (कपड़ा) पहनाएगा और जो शख़्स शोहरत व रियाकारी की जगह खड़ा हुआ तो अल्लाह उस को रोज़ ए कियामत शोहरत व रियाकारी की जगह पर खड़ा करेगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4881) [و البخارى فى الادب المفرد : 240] * فيه بقية ولم يصرح بالسماع و لحديثه شواهد ضعيفة عند احمد (4 / 229) و الحاكم (4 / 127 ، 128 فيه ابن جريج ولم يصرح بالسماع الا فى رواية سفيان بن وكيع (ضعيف) عنه) وغيرهما

٥٠٤٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «حُسْنُ الظَّنِّ مِنْ حسْنِ العِبادةِ» . رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد

5048. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हुस्नेज़न, हुस्ने इबादत में से है”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه احمد (2 / 407 ح 9269) و ابوداؤد (4992)

٥٠٤٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عائشةَ»» قَالَتْ: اعْتَلَّ بَعِيرٌ لِصَفِيَّةَ وَعِنْدَ زَيْنَبَ فَضْلُ ظَهْرٍ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِزَيْنَبَ: «أَعْطِيهَا بَعِيرًا» . فَقَالَتْ: أَنَا أُعْطِي تِلْكَ الْيَهُودِيَّةَ؟ فَغَضِبَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَهَجَرَهَا ذَا الْحُجَّةِ وَالْمُحَرَّمَ وَبَعْضَ صَفَرٍ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ»» وَذُكِرَ حَدِيثُ مُعَاذِ بْنِ أَنَسٍ: «مَنْ حَمَى مُؤْمِنًا» فِي «بَابِ الشَّفَقَة وَالرَّحْمَة»

5049. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, सफिया रदियल्लाहु अन्हु का ऊंट बीमार हो गया, जबकि जैनब रदियल्लाहु अन्हु के पास इज़ाफ़ी (ज़्यादा) सवारी थी, रसूलुल्लाह ﷺ ने जैनब रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: “इस (सफिया (र)) को ऊंट दे दो”, उन्होंने कहा: में इस यहुदन को दू! रसूलुल्लाह ﷺ नाराज़ हुए और आप ﷺ ने ज़ुलहिज्जा मुहर्र्रम और सफ़र के चंद अय्याम तक उन से सोहबत तर्क कर दी| # और मुआज़ बिन अनस (र) से मरवी हदीस: “जो शख़्स किसी मोमिन की इज्ज़त बचाता है” بَابِ الشَّفَقَة وَالرَّحْمَة (शफकत और रहमत का बयान) में गुज़र चुकी है? (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (4602) 0 حديث من حمى مؤمنًا تقدم (4986)

بَابُ مَا يُنْهَى عَنْهُ مِنَ التَّهَاجُرِ وَالتَّقَاطُعِ وَاتِّبَاع العورات • कतअ ताल्लुक और ऐब जोईका बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٥٠٥٠ - (صَحِيح) عَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم: " رأى عِيسَى بن مَرْيَم رَجُلًا يَسْرِقُ فَقَالَ لَهُ عِيسَى: سَرَقْتَ؟ قَالَ: كَلَّا وَالَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ. فَقَالَ عِيسَى: آمَنْتُ بِاللَّهِ وَكَذَّبْتُ نَفْسِي ". رَوَاهُ مُسلم

5050. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इसा बिन मरियम अलैहिस्सलाम ने एक आदमी को चोरी करते हुए देखा तो इसा अलैहिस्सलाम ने इसे फ़रमाया: तुमने चोरी की है, उस ने कहा उस ज़ात की क़सम जिसके सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं! हरगिज़ नहीं, इस पर इसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: में अल्लाह पर ईमान लाया, और मैंने अपने नफ्स की तकज़ीब की”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (149 / 2368)، (6137)

٥٠٥١ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ»» أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كَادَ الْفَقْرُ أَنْ يَكُونَ كفرا وكادَ الحسدُ أَن يغلب الْقدر»

5051. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “करीब है के फकीर (अल्लाह पर एतराज़ करने की वजह से) कुफ्र बन जाए और करीब है के हसद तकदीर पर ग़ालिब जाए”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (6612 ، نسخة محققة : 6188) * فيه يزيد الرقاشى : ضعيف و سفيان الثورى مدلس و عنعن

٥٠٥٢ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» جَابِرٍ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنِ اعْتَذَرَ إِلَى أَخِيهِ فَلَمْ يَعْذِرْهُ أَوْ لَمْ يَقْبَلْ عُذْرَهُ كَانَ عَلَيْهِ مثلُ خَطِيئَة صَاحب المكس» . رَوَاهُمَا الْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ» وَقَالَ: الْمَكَّاسُ: الْعَشَّارُ

5052. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स अपने (मुसलमान) भाई के सामने उज़्र पेश करे और वह इसे माज़ूर न समझे या वह उस का उज़्र कबूल न करे तो उस पर टेक्स वुसुल करने वाले की मिस्ल गुनाह होता है”| # यह दोनों रिवायतों इमाम बयहकी ने शौबुल ईमान में रिवायत की है और फ़रमाया (ألمكأس) (अल मकास) से अशरा लेने वाला मुराद है? (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (8338 ، نسخة محققة : 7985) * فيه ابراهيم بن اعين العجلى : ضعيف و ابو الزبير مدلس و عنعن ان صح السند اليه و فيه ابو عمرو العبدى (؟) و للحديث شاهد ضعيف عند ابن ماجه (3718) وغيره

بَاببَابُ الْحَذَرِ وَالتَّأَنِّي فِي الْأُمُورِ المزاح • मुआमलात में अहतियात व तहम्मुल इख़्तियार करने का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٥٠٥٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يلْدغ الْمُؤمن من جُحر مرَّتَيْنِ» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5053. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मोमिन एक सुराख़ से दो मर्तबा नहीं दसा जाता"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6133) و مسلم (63 / 2998)، (7498)

٥٠٥٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِأَشَجِّ عَبْدِ الْقَيْسِ: " إِنَّ فِيكَ لَخَصْلَتَيْنِ يُحِبُّهُمَا الله: الْحلم والأناة ". رَوَاهُ مُسلم

5054. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने अब्द अल कैस के सरदार आशज से फ़रमाया: "तुम में दो खसलते ऐसी हैं जिन्हें अल्लाह पसंद फरमाता है, हिल्म और वक़ार"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (25 / 17)، (117)

بَاببَابُ الْحَذَرِ وَالتَّأَنِّي فِي الْأُمُورِ المزاح • मुआमलात में अहतियात व तहम्मुल इख़्तियार करने का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٥٠٥٥ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْأَنَاةُ مِنَ اللَّهِ وَالْعَجَلَةُ مِنَ الشَّيْطَانِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ. وَقَدْ تَكَلَّمَ بَعْضُ أَهْلِ الْحَدِيثِ فِي عَبْدِ الْمُهَيْمِنِ بْنِ عَبَّاس الرَّاوِي من قبل حفظه

5055. सहल बिन साद साअदि रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: "बर्दबारी (धीरज)

अल्लाह की जानिब से है और जल्द बाज़ी शैतान की जानिब से है"| इमाम तिरमिज़ी ने इस हदीस को रिवायत किया है, और इसे ग़रीब कहा है और बाज़ मुहद्दीसिन ने इस हदीस के रावी अब्दुल मुहयमिन बिन अब्बास के हाफ़िज़े के मुतल्लिक कलाम किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (2012) * عبد المهيمن بن عباس : ضعيف

٥٠٥٦ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا حَلِيمَ إِلَّا ذُو تَجْرُبَةٍ» رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيب

5056. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "लगजिश करने वाला ही बर्दबार (सहनशील) होता है और तजरुबा कार ही दाना होता है"| अहमद तिरमिज़ी, और इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह कहते हैं यह हदीस हसन ग़रीब है| (हसन)

حسن ، رواه احمد (3 / 69 ح 11684) و الترمذى (2033) [و ابن حبان (الاحسان : 193) و صححه الحاكم (4 / 293) و وافقه الذهبى]

٥٠٥٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ أَنَّ رَجُلًا قَالَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَوْصِنِي. فَقَالَ: «خُذِ [ص:١٤٠] الْأَمْرَ بِالتَّدْبِيرِ فَإِنْ رَأَيْتَ فِي عَاقِبَتِهِ خَيْرًا فَأَمْضِهِ وَإِنْ خِفْتَ غَيًّا فَأَمْسِكْ» . رَوَاهُ فِي «شَرْحِ السّنة»

5057. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक आदमी ने नबी ﷺ से अर्ज़ किया, आप मुझे वसीयत फरमाइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: "मुआमले पर गौर व फिकर कर, अगर तो उस के अंजाम में खैर व भलाई देखे तो उसे कर गुज़र और अगर तुझे गुमराही का अंदेशा लगे तो उसे मत कर"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا منكر ، رواه البغوى فى شرح السنة (13 / 178 ح 3600) * فيه ابان بن ابى عياش متروک متهم

٥٠٥٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مُصْعَبِ بْنِ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ الْأَعْمَشُ: لَا أَعْلَمُهُ إِلَّا عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «التُّؤَدَةُ فِي كُلِّ شَيْءٍ إِلَّا فِي عَمَلِ الْآخِرَةِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

5058. मुसअब बिन साद रहिमहुल्लाह अपने वालिद से रिवायत करते हैं, जबकि आमश ने फ़रमाया: में तो इस (हदीस) को नबी ﷺ ही से जानता हूँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: "अमल आखिरत के अलावा हर चीज़ में जल्दबाज़ी से काम न लेना बेहतर है"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4810) * الاعمش مدلس و عنعن

٥٠٥٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عبد الله بن جرجس أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «السَّمْتُ الْحَسَنُ وَالتُّؤَدَةُ وَالِاقْتِصَادُ جُزْءٌ مِنْ أَرْبَعٍ وَعِشْرِين جُزْءا من النُّبُوَّة» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5059. अब्दुल्लाह बिन सरजिस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अच्छी सीरत, तहम्मल व वक़ार (गरिमा) और मियाने रिवाय (संयम) नबूवत का चोबिस्वा हिस्सा है”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (2010 وقال : حسن غریب)

٥٠٦٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ الْهَدْيَ الصَّالِحَ وَالِاقْتِصَادَ جُزْءٌ مِنْ خَمْسٍ وَعِشْرِينَ جُزْءًا مِنَ النُّبُوَّة» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5060. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अच्छा तरीक और अच्छी सीरत नबूवत का पच्चीसवा हिस्सा है”| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (4776) وله شاهد عند الترمذی (2010) و انظر الحدیث السابق (5059)

٥٠٦١ - (حسن) وَعَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا حَدَّثَ الرَّجُلُ الْحَدِيثَ ثُمَّ الْتَفَتَ فَهِيَ أَمَانَةٌ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

5061. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब आदमी बात करते हुए इधर उधर देखे (के कहे कोई और तो नहीं सुन रहा) तो वह अमानत है”| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواه الترمذی (1959 وقال : حسن) و ابوداؤد (4868)

٥٠٦٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» هُرَيْرَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لأبي الهيثمِ بن التَّيِّهان: «هَلْ لَكَ خَادِمٌ؟» فَقَالَ: لَا. قَالَ: فَإِذَا أَتَانَا سَبْيٌ فَأْتِنَا " فَأُتِيَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِرَأْسَيْنِ فَأَتَاهُ أَبُو الْهَيْثَمِ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اخْتَرْ مِنْهُمَا» . فَقَالَ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ اخْتَرْ لِي فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الْمُسْتَشَارَ مُؤْتَمَنٌ. خُذْ هَذَا فَإِنِّي رَأَيْتُهُ يُصَلِّي وَاسْتَوْصِ بِهِ مَعْرُوفًا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5062. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने अबुल हैश्मी बिन अत्तिहान से फ़रमाया: “क्या तुम्हारे पास कोई खादिम है?” उस ने अर्ज़ किया: नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब हमारे पास कैदी आए तो फिर तुम हमारे पास आना”, नबी ﷺ के पास दो गुलाम लाए गए तो अबुल हैश्मी भी आप के पास आ गए, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “उन में से कोई एक पसंद कर लो”, उन्होंने अर्ज़ किया: अल्लाह के नबी! आप ही पसंद फरमादे,

नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जिस शख़्स से मशवरा तलब किया जाए तो वह अमिन होता है, इसे ले लो क्योंकि मैंने इसे नमाज़ पढ़ते हुए देखा है, मैं तुम्हें उस के साथ अच्छा सुलूक करने की वसीयत करता हूँ”| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه الترمذی (2369 وقال : حسن صحیح غریب) * عبدالملک بن عمیر مدلس و عنعن و حدیث الترمذی (2822) حسن بالشواھد

٥٠٦٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٍ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: " المجالسُ بالأمانةِ إِلَّا [ص:١٤٠] ثلاثَةَ مَجَالِسَ: سَفْكُ دَمٍ حَرَامٍ أَوْ فَرْجٌ حَرَامٌ واقتطاع مَالٍ بِغَيْرِ حَقٍّ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ»» وَذَكَرَ حَدِيثَ أَبِي سَعِيدٍ: «إِنَّ أَعْظَمَ الْأَمَانَةِ» فِي «بَاب المباشرةِ» فِي «الْفَصْل الأول»

5063. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तीन मजालिस (जहाँ) नाहक क़त्ल करने या ज़िना करने या नाहक माल हासिल करने के मुतल्लिक बाते हो रही हो के अलावा मजालिस (की बाते) अमानत होती है”| और अबू सईद (र) से मरवी हदीस के: “बेशक बड़ी अमानत” بَاب المباشرةِ (मुबाशरत) की फसल ए अव्वल में ज़िक्र हो चुकी है| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ ابوداؤد (4869) * ابن اخی جابر : مجھول ، لم اجد من وثقه0 حدیث ابی سعید تقدم (3190)

بَاببَابُ الْحَذَرِ وَالتَّأَنِّي فِي الْأُمُورِ المزاح — मुआमलात में अहतियात व तहम्मुल इख़्तियार करने का बयान

الْفَصْل الثَّالِث — तीसरी फस्ल

٥٠٦٤ - (مَوْضُوع) عَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " لَمَّا خَلَقَ اللَّهُ الْعَقْلَ قَالَ لَهُ: قُمْ فَقَامَ ثُمَّ قَالَ لَهُ: أدبر ثُمَّ قَالَ لَهُ: أَقْبِلْ فَأَقْبَلَ ثُمَّ قَالَ لَهُ: اقْعُدْ فَقَعَدَ ثُمَّ قَالَ: مَا خَلَقْتُ خَلْقًا هُوَ خَيْرٌ مِنْكَ وَلَا أَفْضَلُ مِنْكَ وَلَا أَحْسَنُ مِنْكَ بِكَ آخُذُ وَبِكَ أُعْطِي وَبِكَ أُعْرَفُ وَبِكَ أُعَاتِبُ وَبِكَ الثَّوَابُ وَعَلَيْكَ العقابُ ". وَقد تكلم فِيهِ بعض الْعلمَاء

5064. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब अल्लाह ने अक़्ल को पैदा फ़रमाया तो उसे फ़रमाया: खड़ी हो जा, वह खड़ी हो गई, फिर इसे कहा: पीछे मुड़ तो वह पीछे मुड़ गई, फिर इसे कहा सामने तवज्जो कर, तो वह सामने आ गई, फिर इसे कहा: बैठ जा, तो वह बैठ गई, फिर इसे फ़रमाया: मैंने अपनी पूरी मखलूक में तुझे सबसे ज़्यादा बेहतर व अफज़ल और सबसे अच्छा बनाया है, मैं तेरी वजह से मुआखिज़ा (इलज़ाम लगाना) करूँगा, तेरी वजह से इनायत करूँगा और तेरी वजह से में पहचाना जाता

हूँ, मैं तेरी वजह से सज़ा दूंगा, जज़ा और सवाब का सहारा भी तुझ पर है”| उस के मुतल्लिक बाज़ उलेमा ने कलाम किया है| (मौज़ू)

اسناده موضوع ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (46330 ، نسخه محققه : 4313) * الفضل بن عيسى الرقاشى : منكر الحديث و حفص بن عمر يروى الموضوعات

٥٠٦٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ»» عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الرَّجُلَ لِيَكُونُ مِنْ أَهْلِ الصَّلَاةِ وَالصَّوْمِ وَالزَّكَاةِ وَالْحَجِّ وَالْعُمْرَةِ» . حَتَّى ذَكَرَ سِهَامَ الْخَيْرِ كُلَّهَا: «وَمَا يُجْزَى يَوْم الْقِيَامَة إِلا بقدرِ عقله»

5065. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बिला शुबा एक शख़्स नमाज़ पढ़ने वालो, रोज़ा रखने वालो, ज़कात देने वालों, हज और उमरा करने वालो में होगा”, यहाँ तक के आप ﷺ ने तमाम अच्छे कामो का ज़िक्र किया”, लेकिन इस शख़्स को सवाब उसकी अक़्ल के तनासब (हिसाब) से दीया जाएगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (4637 ، نسخة محققة : 4316) * منصور بن سقير او صقير : ضعيف وقال ابن معين فى حديثه : هذا حديث باطل

٥٠٦٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» ذَرٍّ قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا أَبَا ذَرٍّ لَا عَقْلَ كَالتَّدْبِيرِ وَلَا ورع كالكفِّ ولاحسب كحسن الْخلق»

5066. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “अबू ज़र! तदबीर जैसी कोई अक़्ल नहीं और मुश्तःबात (शक) से रुक जाने जैसे कोई तक़्वा नहीं और ना ही हुस्ने खल्क जैसे कोई हसब व खुश किस्मती है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (4646 ، نسخة محققة : 4325 ، 7668) [و ابن ماجه (4218 بسند آخر و سنده ضعيف)] * ابراهيم بن يحيى الغسانى : ضعيف مجروح

٥٠٦٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ»» عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الِاقْتِصَادُ فِي النَّفَقَةِ نِصْفُ الْمَعِيشَةِ وَالتَّوَدُّدُ إِلَى النَّاسِ نِصْفُ الْعَقْلِ وَحُسْنُ السُّؤَالِ نِصْفُ الْعِلْمِ» رَوَى الْبَيْهَقِيُّ الْأَحَادِيثَ الْأَرْبَعَةَ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ "

5067. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “खर्च करने में मियाने रिवाय

(संयम) आधी मैशत है, (अच्छे) लोगों से दोस्ती और मुहब्बत आधी अक़्ल है, और हसन सवाल आधा इल्म है" इमाम बयहक़ी ने यह चारो अहादीस शौबुल ईमान में नकल की है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف منكر ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (6568 ، نسخة محققة : 6148) * فيه مخيس بن تميم و حفص بن عمر : مجهولان (انظر الجرح و التعديل 8 / 442 وغيره) وقال ابو حاتم :'' حديث باطل '' (علل الحديث 2 / 284 ح 2354)

بَابُ الرِّفْقِ وَالْحَيَاءِ وَحُسْنِ الْخُلُقِ • नरमी, हया और हुस्ने अख़लाक़ का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٥٠٦٨ - (صَحِيح) عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى رَفِيقٌ يُحِبُّ الرِّفْقَ وَيُعْطِي عَلَى الرِّفْقِ مَا لَا يُعْطِي عَلَى الْعُنْفِ وَمَا لَا يُعْطِي عَلَى مَا سِوَاهُ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ. وَفِي رِوَايَةٍ لَهُ: قَالَ لِعَائِشَةَ: «عَلَيْكِ بِالرِّفْقِ وَإِيَّاكِ وَالْعُنْفَ وَالْفُحْشَ إِنَّ الرِّفْقَ لَا يَكُونُ فِي شَيْءٍ إِلَّا زَانَهُ وَلَا يُنْزَعُ مِنْ شَيْء إِلَّا شانه»

5068. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "बेशक अल्लाह तआला नरमी करने वाला है, नरमी को पसंद फरमाता है, और वह जिस क़दर नरमी पर अता करता है, वह सख्ती पर अता नहीं करता न उस के अलावा किसी और चीज़ पर अता करता है"| और मुस्लिम ही की रिवायत में है आप ﷺ ने आइशा रदियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया: "नरमी इख़्तियार करो, सख्ती और बद्ज़ुबानी से बचा करो, बेशक जिस चीज़ में नरमी होती है तो वह इस (चीज़) की खुबसूरत कर देती है और जिस चीज़ से इसे निकाल लिया जाता है तो वह इसे ऐब दार बना देती है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه مسلم (7977 / 2593)، (6601 و 6602) و البخارى (الرواية الثانية : 6030)

٥٠٦٩ - (صَحِيح) وَعَنْ جَرِيرٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مِنْ يُحْرَمِ الرِّفْقَ يُحْرَمِ الْخَيْرَ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

5069. जरीर रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "नरमी से महरूम शख़्स (हर किस्म की) खैर व भलाई से महरूम है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (74 / 2592)، (6598)

٥٠٧٠ - (مُتَّفقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرَّ عَلَى رَجُلٍ مِنَ الْأَنْصَارِ وَهُوَ يَعِظُ أَخَاهُ فِي الْحَيَاءِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «دَعْهُ فَإِنَّ الْحَيَاءَ مِنَ الْإِيمَانِ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5070. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ अंसार के एक आदमी के पास से गुज़रे जो अपने भाई को हया के मुतल्लिक नसीहत कर रहा था (के इतने शर्मीले न बनो) रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इसे छोड़ दो, क्योंकि हया ईमान का हिस्सा है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (24) و مسلم (59 / 36)، (154)

٥٠٧١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْحَيَاءُ لَا يَأْتِي إِلَّا بِخَيْرٍ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «الْحيَاء خير كُله» مُتَّفق عَلَيْهِ

5071. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हया खैर ही लाता है” एक रिवायत में है: “हया तो सरापा खैर है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6117) و مسلم (61 ، 60 / 37)، (156 و 157)

٥٠٧٢ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ مِمَّا أَدْرَكَ النَّاسُ مِنْ كَلَامِ النُّبُوَّةِ الْأُولَى: إِذَا لَمْ تَسْتَحى فاصنعْ مَا شئْتَ " رَوَاهُ البُخَارِيّ

5072. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “लोगों ने पिछले अंबिया अलैहिस्सलाम के कलाम से जो पाया है उस में यह (बात) भी है की जब तू हया नहीं करता तो फिर जो चाहे सो कर”| (बुखारी)

رواه البخارى (6120)

٥٠٧٣ - (صَحِيح) وَعَن النَّواس بن سمْعَان قَالَ: سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْبِرِّ [ص:١٤٠ وَالْإِثْمِ فَقَالَ: «الْبِرُّ حُسْنُ الْخُلُقِ وَالْإِثْمُ مَا حَاكَ فِي صَدْرِكَ وَكَرِهْتَ أَن يطلع عَلَيْهِ النَّاس» . رَوَاهُ مُسلم

5073. नव्वास बिन समआन रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से नेकी और गुनाह के मुतल्लिक दरियाफ्त किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “नेकी, अच्छा अख़लाक़ है, जबकि गुनाह वह है जो तेर दिल में खटके और तू नापसंद करे के लोग उस से मुत्तिला (बाखबर) हो जाए”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (14 / 2553)، (6516)

٥٠٧٤ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «إِن مِنْ أَحَبِّكُمْ إِلَيَّ أَحْسَنَكُمْ أَخْلَاقًا»

. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

5074. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम में से मुझे सबसे ज़्यादा महबूब शख़्स वह है जो तुम में अख़लाक़ में सबसे ज़्यादा अच्छा है”| (बुखारी)

رواه البخارى (3759)

٥٠٧٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ مِنْ خِيَارِكُمْ أحسنَكم أَخْلَاقًا» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5075. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम में सबसे बेहतर शख़्स वह है जो तुम में अख़लाक़ में सबसे ज़्यादा अच्छा है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3559) و مسلم (68 / 2321)، (6033)

बَابُ الرِّفْقِ وَالْحَيَاءِ وَحُسْنِ الْخُلُقِ • नरमी, हया और हुस्ने अख़लाक़ का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٥٠٧٦ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَعْطِيَ حَظَّهُ مِنَ الرِّفْقِ أُعْطِي حَظَّهُ مِنْ خَيْرِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَنْ حُرِمَ حَظَّهُ مِنَ الرِّفْقِ حُرِمَ حَظَّهُ مِنْ خَيْرِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ» . رَوَاهُ فِي «شرح السّنة»

5076. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जिस शख़्स को नरमी से उस का हिस्सा दिया गया तो उसे दुनिया व आखिरत की भलाई से उस का हिस्सा दिया गया और जो शख़्स नरमी से अपने हिस्से से महरूम कर दिया गया तो वह दुनिया व आखिरत में अपने हिस्से की भलाई से महरूम कर दिया गया”| (हसन)

حسن ، رواه البغوى فى شرح السنة (13 / 74 ح 3491) [و احمد (6 / 159) و الترمذى (2013 وقال : و هذا حديث حسن صحيح)]

٥٠٧٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْحَيَاءُ مِنَ الْإِيمَانِ وَالْإِيمَانُ فِي الْجَنَّةِ. وَالْبَذَاءُ مِنَ الْجَفَاءِ وَالْجَفَاءُ فِي النَّار» . رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ

5077. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हया ईमान का हिस्सा है और

ईमान (वाले) जन्नत में होंगे जबकि फहश गोई बुराई है और बुराई (वाले) जहन्नम में जाएंगे”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (2 / 501 ح 10519) و الترمذی (2009 وقال : حسن صحیح)

٥٠٧٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ رَجُلٍ»» مِنْ مُزَيْنَةَ قَالَ: قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا خَيْرُ مَا أَعْطِيَ الْإِنْسَانُ؟ قَالَ: «الْخُلُقُ الْحَسَنُ» رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَان»

5078. मुज़ैनाह कबिले के आदमी से रिवायत है उन्होंने कहा: सहाबा रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! इंसान को जो अता किया गया है उस में सबसे बेहतर चीज़ कौन सी है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “हुस्ने खल्क”| (सहीह)

صحیح ، رواه البیهقی فی شعب الایمان (7992 ، نسخة محققة : 7625) * و للحدیث شواهد عند ابن ماجه (3436) و ابی داود (3855) و الترمذی (2038) وغیرهم

٥٠٧٩ - (صَحِيح) وَفِي»» شَرْحِ السُّنَّةِ»» عَنْ أَسَامَةَ بْنِ شَرِيكٍ

5079. और शरह सुन्ना में उसामा बिन शरीक से मरवी है| (सहीह)

صحیح ، رواه البغوی فی شرح السنة (12 / 138 ، 139 ح 3226 وقال : حدیث حسن) [و ابن ماجه (3436) و اصله عند ابی داود (3855)]

٥٠٨٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ حَارِثَةَ»» بْنِ وَهْبٌ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ الْجَوَّاظُ وَلَا الْجَعْظَرِيُّ» قَالَ: وَالْجَوَّاظُ: الْغَلِيظُ الْفَظُّ رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ [ص:١٤٠ فِي «سُنَنِهِ» . وَالْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ وَصَاحِبُ» جَامِعِ الْأُصُولِ «فِيهِ عَنْ حَارِثَةَ. وَكَذَا فِي» شَرْحِ السُّنَّةِ " عَنْهُ وَلَفْظُهُ قَالَ: «لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ الْجَوَّاظُ الْجَعْظَرِيُّ» . يُقَالُ: الْجَعْظَرِيُّ: الْفَظُّ الْغَلِيظُ»» وَفِي نُسَخِ «الْمَصَابِيحِ» عَنْ عِكْرِمَةَ بْنِ وَهْبٍ وَلَفْظُهُ قَالَ: " وَالْجَوَّاظُ: الَّذِي جَمَعَ وَمَنَعَ. وَالْجَعْظَرِيُّ: الغليظ الْفظ

5080. हारिस बिन वहब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ बदअख्लाक और सख्त दिल इंसान जन्नत में दाखिल नहीं होगा|‘‘ अबू दावुद, बयहकी की शौबुल ईमान, और जामेअ अल अस्वल वाले ने भी इसे रिवायत किया है, और उस में हारिस से मरवी है, और इसी तरह इन्ही से शरह सुन्ना में भी मरवी है, और उस के अल्फाज़ यह है, फ़रमाया: “जवाज़ व जाज़री ‘‘ जन्नत में नहीं जाएगा.‘‘ जाज़री का यह मानी कहा जाता है ’’ सख्त खो और सख्त गो.‘‘ और मसाबिह के नुस्खों में इकरमा बिन वहब से मरवी है और उस के अल्फाज़

है :'' जवाज़ '' का मानी है, माल जमा करने वाला बखील और '' जाज़री '' का मानी है '' सख्त खो और सख्त गो| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (4801) و البيهقى فى شعب الايمان (8173) و البغوى فى شرح السنة (13 / 170 ح 3593 بدون سند) و ذكره فى مصابيح السنة (3 / 397 ح 3953)

٥٠٨١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» الدَّرْدَاءَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ أَثْقَلَ شَيْءٍ يُوضَعُ فِي ميزانِ الْمُؤمن يومَ الْقِيَامَة خُلُقٌ حسنٌ وَإِنَّ اللَّهَ يُبْغِضُ الْفَاحِشَ الْبَذِيءَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: حَدِيث حسن صَحِيح. وروى أَبُو دَاوُد الفصلَ الأول

5081. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "रोज़ ए कियामत मोमिन की मीज़ान में हुस्ने खल्क से ज़्यादा भारी चीज़ कोई नहीं रखी जाएगी और अल्लाह यक़ीनन बद्ज़ूबान और बेहूदा बाते करने वाले को पसंद नहीं फरमाता"| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस हसन सहीह है, और अबू दावुद ने पहला हिस्सा रिवायत किया है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (2002) و ابوداؤد (4799)

٥٠٨٢ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ»» عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ الْمُؤْمِنَ لَيُدْرِكُ بِحُسْنِ خُلُقِهِ دَرَجَةَ قَائِمِ اللَّيْل وصائم النَّهار» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5082. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "बेशक मोमिन अपने हुस्ने खल्क की वजह से रोज़े दार और तहज्जुद गुज़ार शख़्स का दर्जा पा लेता है"| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (4798)

٥٠٨٣ - (حسن) وَعَنْ»» أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اتَّقِ اللَّهَ حَيْثُمَا كُنْتَ وَأَتْبِعِ السَّيِّئَةَ الْحَسَنَةَ تَمْحُهَا وَخَالِقِ النَّاسَ بِخُلُقٍ حَسَنٍ» . رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ والدارمي

5083. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाया: "तुम जहाँ भी हो अल्लाह से डरते रहो, और बुराई के बाद नेकी करो वह इस (बुराई) को मिटा देगी, और लोगों के साथ हसन अख़लाक़ के साथ पेश आओ"| (हसन)

حسن ، رواه احمد (5 / 153 ح 21681) و الترمذى (1987 وقال : حسن صحيح) و الدارمى (2 / 323 ح 2794)

٥٠٨٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ»» اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِلَّا أُخْبِرُكُمْ بِمَنْ يَحْرُمُ عَلَى النَّارِ وَبِمَنْ تَحْرُمُ النَّارُ عَلَيْهِ؟ عَلَى كُلِّ هَيِّنٍ لَيِّنٍ قَرِيبٍ سَهْلٍ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيب

5084. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “क्या मैं तुम्हें ऐसे लोगों के मुताल्लिक न बताऊँ जो जहन्नम की आग पर या जहन्नम की आग इन पर हराम है? वह हर आसानी करने वाले, नरमी करने वाले, करीब रहने वाले नरम खो पर हराम है”| अहमद तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस हसन ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (1 / 415 ح 3938) و الترمذی (2488)

٥٠٨٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْمُؤْمِنُ غِرٌّ كَرِيمٌ وَالْفَاجِرُ خَبٌّ لَئِيمٌ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ

5085. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मोमिन भोला भाला सखी होता है जबकि फ़ाजिर धोका बाज़ बखील होता है”| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ احمد (2 / 394 ح 9107) و الترمذی (1964 وقال : غریب) و ابوداؤد (4790) * رجل مجھول و یحیی بن ابی کثیر مدلس و عنعن و بشیر بن رافع ضعیف

٥٠٨٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مَكْحُولٍ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْمُؤْمِنُونَ هَيِّنُونَ لَيِّنُونَ كَالْجَمَلِ الْآنِفِ إِنْ قِيدَ انْقَادَ وَإِنْ أُنِيخَ عَلَى صخرةٍ استَنَاخَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ مُرْسلا

5086. मकहुल बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मोमिन नरम मिज़ाज और बावकार होते हैं जैसे महार दार ऊंट जब इसे चलाया जाता है तो चल पड़ता है और अगर इसे चट्टान पर बिठाया जाता है तो वह बैठ जाता है”| इमाम तिरमिज़ी ने इसे मुरसल रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ الترمذی (لم اجدہ) [و ابن المبارک فی الزھد (387) و السند مرسل ولہ شاھد ضعیف جدًا عند العقیلی فی الضعفاء (2 / 279) فیہ عبداللہ بن عبد العزیز بن ابی رواد : ضعیف جدًا مجروح ، و لبعضہ شاھد عند ابن ماجہ (43) بلفظ :’’ فان المومن کالجمل الانف حیثما قید انقاد ‘‘ و سندہ صحیح)

٥٠٨٧ - (صَحِيح) وَعَن»» ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْمُسْلِمُ الَّذِي يُخَالِطُ النَّاسَ وَيَصْبِرُ عَلَى أَذَاهُمْ أَفْضَلُ مِنَ الَّذِي لَا يُخَالِطُهُمْ وَلَا يَصْبِرُ عَلَى أَذَاهُمْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وابنُ مَاجَه

5087. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ऐसा मुसलमान जो लोगों के साथ मिल जुल कर रहता है और उनकी ज्यादतियों पर सब्र करता है वह उस से अफज़ल है जो उन के साथ मिल जुल कर नहीं रहता और न उनकी ज्यादतियों पर सब्र करता है”| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (2507) و ابن ماجه (4032)

٥٠٨٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن سهلِ»» بن معاذٍ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ كَظَمَ غَيْظًا وَهُوَ يَقْدِرُ عَلَى أَنْ يُنفِّذَه دعاهُ اللَّهُ على رؤوسِ الْخَلَائِقِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حَتَّى يُخَيِّرَهُ فِي أَيِّ الْحُورِ شَاءَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيث غَرِيب

5088. सहल बिन मुआज़ अपने वालिद से रिवायत करते हैं की नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स गुस्से पर काबू पाता है जबकि वह इस (गुस्से) को निकाल सकता है तो अल्लाह रोज़ ए कियामत इसे सारी मखलूक के सामने लाएगा और इसे अपनी पसंद की हुर पसंद करने का इख़्तियार देगा”| तिरमिज़ी, अबू दावुद, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2021) و ابوداؤد (4777)

٥٠٨٩ - (لم تتمّ دراسته) وَفِي رِوَايَةٍ»» لِأَبِي دَاوُدَ عَنْ سُوَيْدِ بْنِ وَهْبٍ عَنْ رَجُلٍ مِنْ أَبْنَاءِ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: «مَلأَ اللَّهُ قلبَه أمْناً وإِيماناً»»» وَذُكِرَ حَدِيثُ سُوَيْدٍ: «مَنْ تَرَكَ لِبْسَ ثَوْبِ جما ل» فِي «كتاب اللبَاس»

5089. और अबू दावुद की रिवायत में है की, सुवैद बिन वहब ने नबी ﷺ के असहाब की औलाद में से किसी आदमी से रिवायत किया, उस ने अपने वालिद से फ़रमाया: “अल्लाह उस का दिल को अमन व ईमान के साथ भर देगा”| और सुवैद से मरवी हदीस: “जिस ने खुबसूरत लिबास पहनना तर्क कर दिया”| كتاب اللبَاس (किताब अल लिबास) में ज़िक्र की गई है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (4778) * محمد بن عجلان مدلس و عنعن و شیخه سوید بن وهب مجهول و فیه علة أخرى0 حدیث ’’ من ترک لبس ثوب جمال ‘‘ تقدم (4348)

بَابُ الرِّفْقِ وَالْحَيَاءِ وَحُسْنِ الْخُلُقِ • नरमी, हया और हुस्ने अख़लाक़ का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٥٠٩٠ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ زَيْدٍ»» بْنِ طَلْحَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ لِكُلِّ دِينٍ خُلُقًا وَخُلُقُ الْإِسْلَامِ الْحَيَاءُ» . رَوَاهُ مَالِكٌ مُرْسلا

5090. ज़ैद बिन तल्हा रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "बेशक हर दीन की कुछ इम्तियाज़ी खुसुसियात हैं और इस्लाम की इम्तियाज़ी खुसूसियत हया है"| इमाम मालिक ने इसे मुरसल रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه مالک فی الموطا (2 / 905 ح 1743) * السند مرسل

٥٠٩١ - ، ٥٠٩٢ (لم تتمّ دراسته) وَرَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ» عَن أنس وَابْن عَبَّاس

5091. इब्ने माजा ने और बयहकी ने शौबुल ईमान में अनस और इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواه ابن ماجه (4182) و البیهقی فی شعب الایمان (7716) * صالح بن حسان متروک و للحدیث شواھد ضعیفة عند ابن ماجه (4181) وغیره

٥٠٩١ - ، ٥٠٩٢ (لم تتمّ دراسته) وَرَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ» عَن أنس وَابْن عَبَّاس

5092. इब्ने माजा ने और बयहकी ने शौबुल ईमान में अनस और इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواه ابن ماجه (4182) و البیهقی فی شعب الایمان (7716) * صالح بن حسان متروک و للحدیث شواھد ضعیفة عند ابن ماجه (4181) وغیره

٥٠٩٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ»» عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ الْحَيَاءَ وَالْإِيمَانَ قُرَنَاءُ جَمِيعًا فإذا رفع أَحدهمَا رفع الآخر»

5093. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक हया और ईमान साथ साथ हैं, जब इन दोनों में से एक उठा लिया जाता है तो दूसरा भी उठा लिया जाता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (7727 ، نسخة محققة : 7331) و فيه قال جرير بن حازم :’’ انا يعلى بن حكيم ، اظنه عن سعيد بن جبير عن ابن عباس ‘‘ الخ فالراوى شک فى السند

٥٠٩٤ - (لم تتمّ دراسته) وَفِي رِوَايَةِ»» ابْنِ عَبَّاسٍ: «فَإِذَا سُلِبَ أَحَدُهُمَا تَبِعَهُ الْآخَرُ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ»

5094. और इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा की रिवायत में है फ़रमाया: “जब उनमें से एक को सलब कर लिया जाता है तो दूसरा भी उस के पीछे चला जाता है”| (ज़ईफ़,मौज़ू)

اسناده ضعيف جذا موضوع ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (7726 ، نسخة محققة : 7330) * فيه محمد بن يونس الكديمى كذاب و علل أخرى

٥٠٩٥ - وَعَن مُعاذٍ قَالَ: كانَ آخرُ مَا وصَّاني بِهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ وَضَعْتُ رِجْلِي فِي الْغَرْزِ أَنْ قَالَ: «يَا مُعَاذُ أحسُنْ خُلُقكَ للنَّاس» . رَوَاهُ مَالك

5095. मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब मैंने रकाब में पाँव रखा तो रसूलुल्लाह ﷺ ने आखिरी वसीयत करते हुए मुझे फ़रमाया: “मुआज़! लोगों के साथ अच्छे अख़लाक़ से पेश आना”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه مالک فى الموطا (2 / 902 ح 1735 بدون سند) * السند معضل ، الامام مالک ولد بعد وفاة سيدنا معاذ بن جبل رضى الله عنه

٥٠٩٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن مَالك»» بَلَغَهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «بُعِثْتُ لِأُتَمِّمَ حُسْنَ الْأَخْلَاقِ» رَوَاهُ الْمُوَطَّأ "

5096. इमाम मालिक रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मुझे यह बात पहुंची है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुझे अच्छे अख़लाक़ की तकमील के लिए मबउस किया गया है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه مالک فى الموطا (2 / 904 ح 1742 بدون سند) [وله شواهد ضعيفة عند احمد (2 / 381 و البخارى فى الادب المفرد (273) وغيرهما و انظر الحديث الآتى : 5770)]

٥٠٩٧ - (حسن) وَرَوَاهُ»» أَحْمد عَن أبي هُرَيْرَة

5097. इमाम अहमद ने अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه احمد (2 / 381 ح 8939) * فيه محمد بن عجلان مدلس و عنعن و للحديث شواهد ضعيفة

٥٠٩٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَعْفَرِ»» بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا نَظَرَ فِي الْمِرْآةِ قَالَ: «الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي حَسَّنَ خُلُقِي وَخَلْقِي وَزَانَ مِنِّي مَا شَانَ مِنْ غَيْرِي» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَان» مُرْسلا

5098. जाफर बिन मुहम्मद अपने वालिद से रिवायत करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ जब आइना देखते तो यह दुआ पढ़ते: “हर किस्म की तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिस ने मेरी सूरत सीरत को बेहतर बनाया और मेरे अलावा किसी में जो ऐब था मुझे उस से महफ़ूज़ कर के खुबसूरत बनाया”| बयहकी की शौबुल ईमान में मुरसल रिवायत है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (4459 ، نسخة محققة : 4145) * قال ابن ابى فديک : بلغنى عن جعفر بن محمد الخ فالسند منقطع ضعيف و للحديث شواهد ضعيفة

٥٠٩٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ»» عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «اللَّهُمَّ حسَّنَت خَلقي فأحسِنْ خُلقي» . رَوَاهُ أَحْمد

5099. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ दुआ किया करते थे: “ए अल्लाह! तूने मुझे अच्छी तरह तखलीक फ़रमाया है, पस मेरे अख़लाक़ भी संवार दे”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه احمد (6 / 68 ح 24896) [و صححه ابن حبان (الموارد : 2423 ، الاحسان : 959) بسند آخر نحوه]

٥١٠٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَلَا أُنَبِّئُكُمْ بِخِيَارِكُمْ؟» قَالُوا: بَلَى. قَالَ: «خِيَارُكُمْ أَطْوَلُكُمْ أَعْمَارًا وَأَحْسَنُكُمْ أَخْلَاقًا» رَوَاهُ أَحْمد

5100. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “क्या मैं तुम में सबसे बेहतर लोगों के बारे में बताऊँ ?” उन्होंने अर्ज़ किया: ज़रूर बताइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम में से सबसे बेहतर लोग वह है जिन की तुम में से उमरे दराज़ हो और वह तुम में से बेहतरीन अख़लाक़ के हामिल हो”| (हसन)

حسن ، رواه احمد (2 / 403 ح 9224) [و ابن حبان (الاحسان : 2970 / 2971 ، و ابن اسحاق صرح بالسماع عنده)]

٥١٠١ - (حسن) وَعَنْهُ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَكْمَلُ الْمُؤْمِنِينَ إِيمَانًا أَحْسَنُهُمْ خُلُقًا» . رَوَاهُ أَبُو

دَاوُد والدارمي

5101. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "सबसे कामिल(सर्वोत्तम) ईमान वाले वह लोग है जो उनमें सबसे बेहतर अख़लाक़ वाले हैं"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4682) و الدارمی (2 / 323 ح 2795)

٥١٠٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ»» أَنَّ رَجُلًا شَتَمَ أَبَا بَكْرٍ وَالنَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَالِسٌ يَتَعَجَّبُ [ص:١٤١ وَيَتَبَسَّمُ فَلَمَّا أَكْثَرَ رَدَّ عَلَيْهِ بَعْضَ قَوْلِهِ فَغَضِبَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَامَ فَلَحِقَهُ أَبُو بَكْرٍ وَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ كَانَ يَشْتُمُنِي وَأَنْتَ جَالِسٌ فَلَمَّا رَدَدْتُ عَلَيْهِ بَعْضَ قَوْلِهِ غَضِبْتَ وَقُمْتَ. قَالَ: «كَانَ مَعَكَ مَلَكٌ يَرُدُّ عَلَيْهِ فَلَمَّا رَدَدْتَ عَلَيْهِ وَقَعَ الشَّيْطَانُ» . ثُمَّ قَالَ: " يَا أَبَا بَكْرٍ ثَلَاثٌ كُلُّهُنَّ حقٌّ: مَا منْ عبدٍ ظلم بمظلمة فِي غضي عَنْهَا لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ إِلَّا أَعَزَّ اللَّهُ بِهَا نَصْرَهُ وَمَا فَتَحَ رَجُلٌ بَابَ عَطِيَّةٍ يُرِيدُ بِهَا صِلَةً إِلَّا زَادَ اللَّهُ بِهَا كَثْرَةً وَمَا فَتَحَ رَجُلٌ بَابَ مَسْأَلَةٍ يُرِيدُ بِهَا كَثْرَةً إِلَّا زَادَ اللَّهُ بِهَا قِلَّةً ". رَوَاهُ أَحْمد

5102. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के किसी आदमी ने अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु को गाली दी, जबकि नबी ﷺ तशरीफ़ फरमा थे, आप ताज्जुब कर रहे थे और मुस्कुरा रहे थे, जब उस ने ज़्यादा बदतमीज़ी की तो अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने उसकी किसी बात का जवाब दिया उस पर नबी ﷺ नाराज़ हो कर उठ खड़े हुए, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु आप के पास गए और अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! वह मुझे गालिया दिए जा रहा था जबकि आप तशरीफ़ फरमा थे, जब मैंने उसकी किसी बात का जवाब दिया तो आप नाराज़ हो कर उठ खड़े हुए, आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुम्हारे साथ फ़रिश्ता था जो इसे जवाब दे रहा था, और जब तुम ने इसे जवाब दिया तो शैतान वाकेअ हो गया", फिर फ़रमाया: "अबू बकर! तीन चीज़े मुकम्मल तौर पर हक़ हैं, जिस शख़्स की हक़ तलफी की जाए और वह अल्लाह अज्ज़वजल की खातिर उस से नज़र अन्दाज़ी करता है तो उस के बदले में अल्लाह इसे कुव्वत व नुसरत अता फरमाता है, जो शख़्स सिलह रहमी की खातिर अतिय्या देता है तो अल्लाह उस के बदले में उसे ज़्यादा अता फरमाता है और जो शख़्स कसरत (माल) की खातिर दस्त हाथ फैलाता है तो अल्लाह मज़ीद किल्लत फरमा देता है"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (2 / 436 ح 9622) [و ابوداؤد (4897 مختصرًا)]

٥١٠٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ»» قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا يُرِيدُ اللَّهُ بِأَهْلِ بَيْتٍ رِفْقًا إِلَّا نَفَعَهُمْ وَلَا يَحْرِمُهُمْ إِيَّاهُ إِلَّا ضَرَّهُمْ «. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي» شُعَبِ الْإِيمَانِ "

5103. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अल्लाह जिस घरवालो के साथ

नरमी का इरादा फरमाता है तो वह उन्हें नफा पहुंचाता है, और जिस घरवालो को उस से महरूम कर देता है तो वह उन्हें उसकी वजह से नुकसान पहुंचा देता है”| (सहीह)

صحيح ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (6557 ، نسخة ثانية : 6137 و سنده ضعيف) * وله شاهد فى معرفة الصحابة لابى نعيم (4 / 1877 ح 4722) بسند صحيح عن عبيد الله بن معمر رضى الله عنه و اختلف فى صحابيته و رجح الحافظ ابن حجر و الذهبى بانه صحابى (انظر تجريد اسماء الصحابة الذهبى 1 / 364 والاصابة)

بَاب الْغَضَب وَالْكبر • गुस्से और तकब्बुर का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٥١٠٤ - (صَحِيح) عَن أبي هريرةَ أَنَّ رَجُلًا قَالَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: أوصني. قَالَ: «لَا تغضبْ» . فردَّ ذَلِكَ مِرَارًا قَالَ: «لَا تَغْضَبْ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

5104. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक आदमी ने नबी ﷺ से दरख्वास्त की मुझे वसीयत फरमाइए आप ﷺ ने फ़रमाया: “गुस्सा न किया कर”, उस ने कई बार यही दरख्वास्त की आप ﷺ ने (हर बार यही) फ़रमाया: “गुस्सा न किया कर”| (बुखारी)

رواه البخارى (6016)

٥١٠٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَيْسَ الشَّدِيدُ بِالصُّرَعَةِ إِنَّمَا الشَّدِيدُ الَّذِي يَمْلِكُ نَفْسَهُ عِنْدَ الْغَضَبِ» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5105. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “किसी को पछाड़ने वाला शख़्स ज़्यादा ताकतवर नहीं, ताकतवर शख़्स तो वह है जो गुस्से के वक़्त अपने आप पर काबू रखे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6114) و مسلم (107 / 2609)، (6643)

٥١٠٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ حَارِثَةَ بْنِ وَهْبٌ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَلَا أُخْبِرُكُمْ بِأَهْلِ الْجَنَّةِ؟ كُلُّ ضَعِيفٍ مُتَضَعِّفٍ لَوْ أَقْسَمَ عَلَى اللَّهِ لَأَبَرَّهُ. أَلَا أُخْبِرُكُمْ بِأَهْلِ النَّارِ؟ كُلُّ عُتُلٍّ جَوَّاظٍ مُسْتَكْبِرٍ» . مُتَّفق عَلَيْهِ. وَفِي رِوَايَة مُسلم: «كل جواظ زنيم متكبر»

5106. हारिस बिन वहब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “क्या मैं तुम्हें जन्नतियो

के बारे में बताऊँ? हर जईफ शख़्स के लोग इसे जईफ व नातो समझे अगर वह अल्लाह पर क़सम उठा ले तो वह इसे पूरा फरमादे, क्या मैं तुम्हें जहन्नुमियो के बारे में बताऊँ? हर सरकश, हरामखोर और मुतकब्बर"| और मुस्लिम की रिवायत में है: "हर हरामखोर, दुष्ट और मुतकब्बर शख़्स"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (4918) و مسلم (47 ، 46 / 2853)، (7187 و 7189)

٥١٠٧ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَدْخُلُ النَّارَ أحد فِي قلبه مِثْقَال حَبَّة خَرْدَلٍ مِنْ إِيمَانٍ. وَلَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ أَحَدٌ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالُ حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ مِنْ كبر» . رَوَاهُ مُسلم

5107. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिस शख़्स के दिल में राइ के दाने के बराबर ईमान होगा वह जहन्नम में नहीं जाएगा और जिस शख़्स के दिल में राइ के दाने के बराबर तकब्बुर होगा वह जन्नत में नहीं जाएगा"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (148 / 91)، (266)

٥١٠٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مَنْ كَانَ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ مِنَ كِبْرٍ» . فَقَالَ رَجُلٌ: إِنَّ الرَّجُلَ يُحِبُّ أَنْ يَكُونَ ثَوْبُهُ حَسَنًا وَنَعْلُهُ حَسَنًا. قَالَ: «إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى جَمِيلٌ يُحِبُّ الْجَمَالَ. الْكِبَرُ بَطَرُ الْحَقِّ وَغَمْطُ النَّاس» . رَوَاهُ مُسلم

5108. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिस शख़्स के दिल में राइ के दाने के बराबर तकब्बुर होगा वह जन्नत में नहीं जाएगा", एक आदमी ने अर्ज़ किया, आदमी पसंद करता है की उस का लिबास और उस के जूते अच्छे हो, (क्या यह भी तकब्बुर है) आप ﷺ ने फ़रमाया: "बेशक अल्लाह साहबे जमाल है, और वह जमाल को पसंद फरमाता है, तकब्बुर से मुराद हक़ बात को ठुकराना और लोगों को हकीर जानना है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (147 / 91)، (265)

٥١٠٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «ثَلَاثَةٌ لَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ» . وَفِي رِوَايَةٍ: " وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ: شَيْخٌ زَانٍ وَمَلِكٌ كَذَّابٌ وَعَائِلٌ مُسْتَكْبِرٌ ". رَوَاهُ مُسلم

5109. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तीन आदमी ऐसे है, जिन से

अल्लाह रोज़ ए कियामत कलाम नहीं फरमाएगा और न उन्हें पाक करेगा”| एक रिवायत में है और ना ही उनकी तरफ नज़रे रहमत से देखेगा और इन के लिए दर्दनाक अज़ाब होगा: बुढा ज़ानि, झूठा बादशाह और मुतकब्बर फ़क़ीर”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (172 / 107)، (296)

٥١١٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يَقُولُ اللَّهُ تَعَالَى: الْكِبْرِيَاءُ رِدَائِي وَالْعَظَمَةُ إِزَارِي فَمَنْ نَازَعَنِي وَاحِدًا مِنْهُمَا أَدْخَلْتُهُ النَّارَ ". وَفِي رِوَايَةٍ: «قَذَفْتُهُ فِي النَّارِ» . رَوَاهُ مُسلم

5110. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह तआला फरमाता है: बड़ाई मेरी चादर है और अज़मत मेरा आज़ार है, जो शख़्स इन दोनों में से किसी एक को खींचेगा में उसे आग में दाखिल करूँगा”| एक दूसरी रिवायत में है: “मैं उसे आग में भड़काऊँगा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (136 / 2620)، (6680)

بَاب الْغَضَب وَالْكبر • गुस्से और तकब्बुर का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٥١١١ - (لم تتمّ دراسته) عَن سَلَمَةَ بْنِ الْأَكْوَعِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَزَالُ الرَّجُلُ يَذْهَبُ بِنَفْسِهِ حَتَّى يُكْتَبَ فِي الْجَبَّارِينَ فَيُصِيبَهُ مَا أَصَابَهُمْ» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5111. सलमा बिन अकवा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आदमी अपने आप को बड़ा समझता रहता है हत्ता कि वह सरकशो ज़ालिमो के ज़िमरे में लिखा जाता है, चुनांचे जिस (अज़ाब) में वह मुब्तिला हुए यह भी इसी में मुब्तिला होगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2000 وقال : حسن غريب) * فيه عمر بن راشد : ضعيف

٥١١٢ - و (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " يُحْشَرُ الْمُتَكَبِّرُونَ أَمْثَالَ الذَّرِّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِي صُوَرِ الرِّجَالِ يَغْشَاهُمُ الذُّلُّ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ يُسَاقُونَ إِلَى سِجْنٍ فِي جَهَنَّمَ يُسَمَّى: بُولَسُ تَعْلُوهُمْ نَارُ الْأَنْيَارِ يُسْقَوْنَ مِنْ عُصَارَةِ أَهْلِ النَّارِ طِينَةَ الْخَبَالِ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

5112. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ से

रिवायत किया, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तकब्बुर करने वालो को रोज़ ए कियामत आदमियों की सूरत में चीटियों की मिस्ल जमा किया जाएगा, हर जगह से ज़िल्लत उन्हें ढांप लेगी, उन्हें जहन्नम में बव्लस नामी जेल की तरफ हांका जाएगा, आगो की आग (सब से बड़ी आग) उन्हें घेर लेगी और उन्हें जहन्नुमियो की टीनतील खबाल नामी पिप पिलाई जाएगी”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (2492 وقال : حسن)

٥١١٣ - (ضَعِيف) وَعَن»» عَطِيَّة بن عُرْوَة السعديّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الْغَضَبَ مِنَ الشَّيْطَانِ وَإِنَّ الشَّيْطَانَ خُلِقَ مِنَ النَّارِ وَإِنَّمَا يُطْفَأُ النَّارُ بِالْمَاءِ فَإِذَا غَضِبَ أَحَدُكُمْ فَلْيَتَوَضَّأْ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

5113. अतिया बिन उरवा सअदी बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “गुस्सा शैतान की तरफ से है, जबकि शैतान आग से पैदा किया गया है, और आग पानी ही से बुझाई जाती है, जब तुम में से किसी को गुस्सा आए तो वह वुज़ू करे”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4784)

٥١١٤ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم قَالَ: «إِذَا غَضِبَ أَحَدُكُمْ وَهُوَ قَائِمٌ فَلْيَجْلِسْ فَإِنْ ذَهَبَ عَنْهُ الْغَضَبُ وَإِلَّا فَلْيَضْطَجِعْ» رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيّ

5114. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से किसी को गुस्सा आए और वह खड़ा हो तो बैठ जाए, अगर गुस्सा ख़तम हो जाए तो ठीक वरना लेट जाए”| (सहीह)

صحیح ، رواه احمد (5 / 152 ح 21675) و الترمذی (لم اجده) [و ابوداؤد (4782) و صححه ابن حبان (الموارد : 1973)]

٥١١٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَسْمَاءَ»» بِنْتِ عُمَيْسٍ قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «بِئْسَ الْعَبْدُ عَبْدٌ تَخَيَّلَ وَاخْتَالَ وَنَسِيَ الْكَبِيرَ الْمُتَعَالِ بِئْسَ الْعَبْدُ عَبْدٌ تَجَبَّرَ وَاعْتَدَى وَنَسِيَ الْجَبَّارَ الْأَعْلَى بِئْسَ الْعَبْدُ عَبْدٌ سَهَى وَلَهَى وَنَسِيَ الْمَقَابِرَ وَالْبِلَى بِئْسَ الْعَبْدُ عَبْدٌ عَتَى وَطَغَى وَنَسِيَ الْمُبْتَدَأَ وَالْمُنْتَهَى بِئْسَ الْعَبْدُ عَبْدٌ يَخْتِلُ الدُّنْيَا بِالدِّينِ بِئْسَ الْعَبْدُ عَبْدٌ يَخْتِلُ الدِّينَ بِالشُّبَهَاتِ بِئْسَ الْعَبْدُ عَبْدٌ طَمَعٌ يَقُودُهُ بِئْسَ الْعَبْدُ عَبْدٌ هَوًى يُضِلُّهُ بِئْسَ الْعَبْدُ عَبْدٌ رَغَبٌ يُذِلُّهُ» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ» . وَقَالَا: لَيْسَ إِسْنَادُهُ بِالْقَوِيِّ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ أَيْضًا: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

5115. अस्मा बिन्ते उमैश रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “बुरा है वह बंदा जिस ने तकब्बुर किया और इस बड़ी बुलंद ज़ात (अल्लाह तआला) को भूल गया, बुरा है वह बंदा जिस ने ज़ुल्म व ज़्यादती की और वह ग़ालिब व आअला ज़ात को भूल गया, बुरा है के बंदा जो भूल गया, खेल कूद में

मशगुल रहा और वह क़बरो और अपने पोशीदा होने को भूल गया, बुरा है के बंदा जिस ने तकब्बुर किया और सरकशी की और वह (अपने) आगाज़ व अंजाम को भूल गया, बुरा है वह बंदा जो दीन के बदले दुनिया तलब करता है, बुरा है वह बंदा जो शुबहात के ज़रिए दीन को ख़राब करता है, बदतरीन वह बंदा है जिसे लालच अपनी तरफ खींच ले जाती है, बुरा है के बंदा के ख्वाहिश इसे गुमराह कर देती है, बुरा है के बंदा जिसे दुनिया की रगबत ज़लील कर देती है"| तिरमिज़ी, बयहकी की शौबुल ईमान दोनों ने फ़रमाया: उसकी सनद क़वी नहीं, और इमाम तिरमिज़ी ने यह भी फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (2448) و البیهقی فی شعب الایمان (8181) * فیه زید الخثعمی : مجهول و هاشم بن سعید الکوفی : ضعیف

بَاب الْغَضَب وَالْكِبر • गुस्से और तकब्बुर का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٥١١٦ - (لم تتمّ دراسته) عَنِ ابْنِ»» عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا تَجَرَّعَ عَبْدٌ أَفْضَلَ عِنْدَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ مِنْ جُرْعَةِ غَيْظٍ يكظمها ابتغاء وَجه الله تَعَالَى» . رَوَاهُ أَحْمد

5116. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "वो बंदा जो अल्लाह तआला की रज़ा की खातिर गुस्से का घूंट पि जाता है के घूंट अल्लाह अज्ज़वजल के नज़दीक सबसे बेहतर है"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه احمد (2 / 128 ح 6114) * علی بن عاصم : ضعیف علی الراجح و الحسن البصری عنعن عن ابن عمر رضی الله عنه ان صح السند الیه

٥١١٧ - (صَحِيح) وَعَنِ»» ابْنِ عَبَّاسٍ فِي قَوْلِهِ تَعَالَى: (ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أحسن)»» قَالَ: الصَّبْرُ عِنْدَ الْغَضَبِ وَالْعَفْوُ عِنْدَ الْإِسَاءَةِ فَإِذَا فَعَلُوا عَصَمَهُمُ اللَّهُ وَخَضَعَ لَهُمْ عَدُوُّهُمْ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ قَرِيبٌ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ تَعْلِيقًا

5117. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने अल्लाह तआला के इस फरमान (اِدْفَعْ بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ) की तफसीर करते हुए फ़रमाया: गुस्से के वक़्त सब्र करना, गलती सरज़द हो जाने पर दरगुज़र करना, जब वह ऐसे करेगा तो अल्लाह उन्हें बचाएगा और उन के दुश्मन भी आजिज़ आ जाएँगे गोया वह करीबी जिगरी दोस्त है"| इमाम बुखारी ने इसे मुअल्लक रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه البخاری فی التفسیر (باب 4 قبل ح 4816 تعلیقًا بدون سند) [و اسنده البیهقی (7 / 45) و ابن حجر فی تغلیق التعلیق (4 / 303) و سنده ضعیف ، علی بن ابی طلحة لم یدرک ابن عباس ، ولا ینفعه ان یروی عن ثقات اصحابه رضی الله عنه لانه لم یصرح بانه سمع جمیع روایاته عن ابن عباس من فلان و فلان : الثقات]

٥١١٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ بَهْزِ»» بْنِ حَكِيمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الْغَضَبَ لَيُفْسِدُ الْإِيمَانَ كَمَا يُفْسِدُ الصبرُ الْعَسَل»

5118. बहज़ बिन हकिम अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “गुस्सा ईमान को इस तरह ख़राब कर देता है जिस तरह कीड़ा शहद को ख़राब कर देता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقی فی شعب الایمان (8294 ، نسخة محققة : 7941) [و الطبرانی فی الکبیر (19 / 417 ح 1007)] * فيه مخيس بن تميم : مجھول (تقدم : 5067)

٥١١٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عمر»» قَالَ وَهُوَ عَلَى الْمِنْبَرِ: يَا أَيُّهَا النَّاسُ تَوَاضَعُوا فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ تَوَاضَعَ لِلَّهِ رَفَعَهُ اللَّهُ فَهُوَ فِي نَفْسِهِ صَغِيرٌ وَفِي أَعْيُنِ النَّاسِ عَظِيمٌ وَمَنْ تَكَبَّرَ وَضَعَهُ اللَّهُ فَهُوَ فِي أَعْيُنِ النَّاسِ صَغِيرٌ وَفِي نَفْسِهِ كَبِيرٌ حَتَّى لَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِمْ مِنْ كَلْبٍ أَوْ خنزيرٍ»

5119. उमर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है उन्होंने मिम्बर पर फ़रमाया: लोगो! आजिज़ी इख़्तियार करो, क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जो शख़्स अल्लाह की खातिर आजिज़ी इख़्तियार करता है तो अल्लाह इसे बड़ा दर्जा अता करता है, वह खुद को अपनी नज़रो में तो छोटा ख़याल करता है जबकि लोगों की नज़रों में अज़ीम होता है, और जो शख़्स तकब्बुर करता है, अल्लाह इसे पस्ती का शिकार कर देता है, वह लोगों की निगाहों में छोटा होता है जबकि वह अपने आप को बड़ा तसव्वुर करता है, हत्ता कि वह उन के नज़दीक कुत्ते या खिंजिर से भी ज़लील व हकीर होता है”| (मौज़ू)

اسناده موضوع ، رواه البيهقی فی شعب الایمان (8140 ، نسخة محققة : 7790) * فيه محمد بن يونس الكديمی و سعيد بن سلام العطار كذابان و علل أخرى

٥١٢٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " قَالَ مُوسَى بْنُ عِمْرَانَ عَلَيْهِ السَّلَامُ: يَا رَبِّ مَنْ أَعَزُّ عِبَادِكَ عِنْدَكَ؟ قَالَ: مَنْ إِذَا قَدَرَ غَفَرَ "

5120. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मूसा बिन इमरान अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया, रब जी! तेरे बंदो में से कौन सा शख़्स तेरे नज़दीक ज़्यादा मुअज्ज़ज़ है? फ़रमाया: वह शख़्स जो कुदरत होने के बावजूद मुआफ़ कर दे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقی فی شعب الایمان (8327 ، نسخة محققة : 7974) * فيه ابو العباس الحسن بن سعيد بن جعفر بن الفضل بن شاذان ضعيف

٥١٢١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ»» أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ خَزَنَ لِسَانَهُ سَتَرَ اللَّهُ عَوْرَتَهُ وَمَنْ كَفَّ غَضَبَهُ كَفَّ اللَّهُ عَنْهُ عَذَابَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَمَنِ اعْتَذَرَ إِلَى الله قَبِلَ الله عذره»

5121. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स अपनी ज़ुबान की हिफाज़त करता है, अल्लाह उस के एबो पर परदा डाल देता है, जो शख़्स अपने गुस्से को रोक लेता है, रोज़ ए कियामत अल्लाह उस से अपना अज़ाब रोक लेगा और जो शख़्स अल्लाह के हुज़ूर माज़रत करता है, अल्लाह उसकी माज़रत कबूल फरमा लेता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه البیهقی فی شعب الایمان (8311 ، نسخة محققة : 7958) [و ابو یعلی (7 / 302 ح 4338)] * الربیع بن سلیم الخلقانی ضعیف و ابو عمرو مولی انس بن مالک : مجھول و للحدیث شواھد ضعیفة

٥١٢٢ - (حسن بشواهده) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " ثَلَاثٌ مُنْجِيَاتٌ وَثَلَاثٌ مُهْلِكَاتٌ فَأَمَّا الْمُنْجِيَاتُ: فَتَقْوَى اللَّهِ فِي السِّرِّ والعلانيةِ والقولُ بالحقِّ فِي الرضى وَالسُّخْطِ وَالْقَصْدُ فِي الْغِنَى وَالْفَقْرِ. وَأَمَّا الْمُهْلِكَاتُ: فَهَوًى مُتَّبَعٌ وَشُحٌّ مُطَاعٌ وَإِعْجَابُ الْمَرْءِ بِنَفْسِهِ وَهِيَ أَشَدُّهُنَّ «. رَوَى الْبَيْهَقِيُّ الْأَحَادِيثَ الْخَمْسَةَ فِي» شعب الْإِيمَان "

5122. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तीन चीज़े बाईसे निजात है और तीन चीज़े बाईसे हलाकत है, बाईस निजात चीज़े यह है: ज़ाहिर व बातिन में अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करना, रज़ा व नाराज़ी में हक़ बात करना, और तवंगरी व मुहताजी में मियाने रिवाय (संयम) इख़्तियार करना और बाईसे हलाकत चीज़े यह है: ऐसी ख्वाहिश जिस की इत्तेबा की जाए, ऐसा बुखल जिस की इताअत की जाए और इंसान की खुद्पसंदी और यह उन सबसे ज़्यादा खतरनाक है”| इमाम बयहकी ने पांचो अहादीस शौबुल ईमान में नकल की है| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه البیهقی فی شعب الایمان (7252 ، نسخة محققة : 6865) * بکر بن سلیم ضعفه الجمهور و باقی السند حسن ، و للحدیث شواھد ضعیفة

बَاب الظُّلم • जुल्म का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٥١٢٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الظُّلْمُ ظُلُمَاتٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5123. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “ज़ुल्म रोज़ ए कियामत कई अंधेरो का बाईस होगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2447) و مسلم (57 / 2579)، (6577)

٥١٢٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وسلم: «إِن اللَّهَ لَيُمْلِي لِلظَّالِمِ حَتَّى إِذَا أَخَذَهُ لَمْ يفلته» ثمَّ يقْرَأ (وَكَذَلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَا أَخَذَ الْقُرَى وَهِيَ ظالمة)»» الْآيَة. مُتَّفق عَلَيْهِ

5124. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक अल्लाह ज़ालिम को ढील देता रहता है लेकिन वह जब इसे पकड़ता है तो फिर इसे छोड़ता नहीं”, फिर आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाई: “तेरे रब की पकड़ इसी तरह होती है जब वह बस्ती के ज़ालिमो को पकड़ता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (4686) و مسلم (61 / 2583)، (6581)

٥١٢٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا مَرَّ بِالْحِجْرِ قَالَ: «لَا تَدْخُلُوا مَسَاكِنَ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ إِلَّا أَنْ تَكُونُوا بَاكِينَ أَنْ يُصِيبَكُمْ مَا أَصَابَهُمْ» ثُمَّ قَنَّعَ رَأْسَهُ وَأَسْرَعَ السَّيْرَ حَتَّى اجتاز الْوَادي. مُتَّفق عَلَيْهِ

5125. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ जब मक़ाम हुज्र के पास से गुज़रे तो फ़रमाया: “तुम उन मसाकिन में जहाँ के बासिंदों ने अपने ऊपर ज़ुल्म किया, रोते हुए दाखिल होना क्योंकि जिस अज़ाब में वह मुब्तिला हुए कहीं तुम भी उस में मुब्तिला न हो जाओ”, फिर आप ﷺ ने अपना सर ढांप लिया और रफ़्तार तेज़ कर दी हत्ता कि वह वादी से गुज़र गए| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (4419) و مسلم (39 / 2980)، (7465)

٥١٢٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ كَانَتْ لَهُ مَظْلِمَةٌ لِأَخِيهِ مِنْ عِرْضِهِ أَوْ شَيْءٍ مِنْهُ الْيَوْمَ قَبْلَ أَنْ لَا يَكُونَ دِينَارٌ وَلَا دِرْهَمٌ إِنْ كَانَ لَهُ عَمَلٌ صَالِحٌ أُخِذَ مِنْهُ بِقَدْرِ مَظْلِمَتِهِ وَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ حَسَنَاتٌ أُخِذَ

مِنْ سَيِّئَاتِ صَاحِبِهِ فَحُمِلَ عَلَيْهِ» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

5126. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स पर अपने (मुसलमान) भाई का, उसकी इज्ज़त से मुतल्लिक या किसी और चीज़ से मुतल्लिक कोई हक़ हो तो वह (दुनिया में), उस से मुआफी तलाफी कर ले कबल उस के के वह दिन आ जाए जब उस के पास दिरहम व दीनार नहीं होंगे, अगर उस के पास अमल ए स्वालेह होंगे तो वह उस से उस के ज़ुल्म के बकदर ले लिए जाएँगे, और अगर उसकी नेकियाँ नहीं हूइ तो हक़दार के गुनाह लेकर उस पर डाल दिए जाएँगे”| (बुखारी)

رواه البخارى (2449)

٥١٢٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم قَالَ: «أَتَدْرُونَ مَا الْمُفْلِسُ؟» . قَالُوا: الْمُفْلِسُ فِينَا مَنْ لَا دِرْهَمَ لَهُ وَلَا مَتَاعَ. فَقَالَ: «إِنَّ الْمُفْلِسَ مِنْ أُمَّتِي مَنْ يَأْتِي يَوْم الْقِيَامَة بِصَلَاة وَصِيَام وَزَكَاة وَيَأْتِي وَقَدْ شَتَمَ هَذَا وَقَذَفَ هَذَا. وَأَكَلَ مَالَ هَذَا. وَسَفَكَ دَمَ هَذَا وَضَرَبَ هَذَا فَيُعْطَى هَذَا مِنْ حَسَنَاتِهِ وَهَذَا مِنْ حَسَنَاتِهِ فَإِنْ فَنِيَتْ حَسَنَاتُهُ قَبْلَ أَنْ يَقْضِيَ مَا عَلَيْهِ أُخِذَ مِنْ خَطَايَاهُمْ فَطُرِحَتْ عَلَيْهِ ثُمَّ طُرح فِي النَّار» . رَوَاهُ مُسلم

5127. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “क्या तुम जानते हो मुफलिस कौन है?” उन्होंने अर्ज़ किया, जिस शख़्स के पास दिरहम हो न माल व मताअ, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मेरी उम्मत में से मुफलिस वह शख़्स है जो रोज़ ए कियामत नमाज़, रोज़े और ज़कात लेकर आएगा और वह भी आ जाएगा जिसे उस ने गाली दी होगी, जिस किसी पर बोहतान लगाया होगा, जिस किसी का माल खाया होगा, जिस किसी का खून बहाया होगा और जिस किसी को मारा पिटा होगा इस (मज़लूम) को उसकी नेकियो में से नेकियाँ दे दिया जाएगी, और अगर उस के जिम्मे हुकुक की अदाइगी से पहले ही उसकी नेकियाँ ख़तम हो गई तो उन (हकदारों) के गुनाह लेकर इस शख़्स पर डाल दिए जाएँगे फिर इसे जहन्नम में फेंक दीया जाएगा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (59 / 2581)، (6579)

٥١٢٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَتُؤَدُّنَّ الْحُقُوقُ إِلَى أَهْلِهَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ حَتَّى يُقَادَ لِلشَّاةِ الْجَلْحَاءِ مِنَ الشَّاةِ الْقَرْنَاءِ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ»» وَذَكَرَ حَدِيثَ جَابِرٍ: «اتَّقُوا الظُّلم» . فِي «بَاب الإنفاق»

5128. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम रोज़ ए कियामत हक़ दारो को उन के हुकुक ज़रूर अदा करोगे, हत्ता कि सींगो वाली बकरी से सींगो के बगैर बकरी को बदला दिलाया जाएगा”| और जाबिर (र) से मरवी हदीस: “ज़ुल्म से बचो”, بَاب الْإِنْفَاق وكراهية الْإِمْسَاك (सखावत की फ़ज़ीलत और बुखल की मज़म्मत का बयान) में ज़िक्र की गई है. (मुस्लिम)

رواه مسلم (60 / 2582)، (6580) 0 حديث جابر تقدم (1865)

بَاب الظُّلم • जुल्म का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٥١٢٩ - (ضَعِيف) وَعَنْ حُذَيْفَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَا تَكُونُوا إِمَّعَةً تَقُولُونَ: إِنْ أَحْسَنَ النَّاسُ أَحْسَنَّا وَإِنْ ظَلَمُوا ظَلَمْنَا وَلَكِنْ وَطِّنُوا أَنْفُسَكُمْ إِنْ أَحْسَنَ النَّاسُ أَنْ تُحْسِنُوا وإِن أساؤوا فَلَا تظلموا ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ. وَيصِح وَقفه على ابْن مَسْعُود

5129. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अम्मअह न बनो (वो इस तरह के) तुम कहो: अगर लोगों ने अच्छा सुलूक किया तो, हम भी अच्छा सुलूक करेंगे, और अगर उन्होंने ज़ुल्म किया तो हम भी ज़ुल्म करेंगे, बल्कि तुम अपने आप से अज़म करो की अगर लोगों ने अच्छा सुलूक किया तो तुम भी अच्छा सुलूक करोगे और अगर उन्होंने बुरा सुलूक किया तो तुम ज़ुल्म नहीं करोगे”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2007 وقال : حسن غریب)

٥١٣٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مُعَاوِيَةَ أَنَّهُ كَتَبَ إِلَى عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنِ اكْتُبِي إِلَيَّ كِتَابًا تُوصِينِي فِيهِ وَلَا تُكْثِرِي. فَكَتَبَتْ: سَلَامٌ عَلَيْكَ أَمَّا بَعْدُ: فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُول: «من التمَس رضى الله بسخط النَّاس كفاهُ اللَّهُ مؤونة النَّاس وَمن التمس رضى النَّاسِ بِسَخَطِ اللَّهِ وَكَلَهُ اللَّهُ إِلَى النَّاسِ» وَالسَّلَام عَلَيْك. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5130. मुआविया रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने आइशा रदियल्लाहु अन्हा के नाम ख़त लिखा के आप इख्तिसार के साथ मुझे वसीयत लिखे, चुनांचे उन्होंने लिखा: सलाम अलयकुम! अम्मा बाद मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जो शख़्स लोगों की नाराज़ी के बदले में अल्लाह की रज़ा तलाश करता है तो अल्लाह इसे लोगों के शर से काफी हो जाता है, और जो शख़्स अल्लाह की नाराज़ी के बदले में लोगों की ख़ुशी तलाश करता है तो अल्लाह इसे लोगों के सुपुर्द कर देता है” वल सलाम अलयकुम| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه الترمذی (2414) * رجل من اهل المدینة مجهول و روی ابن حبان (الاحسان : 277) عن عائشة رضی الله عنها ان رسول الله صلی علیه و آله وسلم قال : ((من ارضی الناس بسخط الله کفاه الله و من اسخط الله برضا الناس و کله الله الی الناس)) و سند صحیح و رواه احمد فی الزهد (ص 164 ح 908) عن عائشة موقوفًا و سنده صحیح و حدیث ابن حبان و احمد یغنی عن حدث الترمذی

بَاب الظُّلم • जुल्म का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٥١٣١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن ابْن مَسْعُود قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ: (الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمانهم بظُلْم)»» شَقَّ ذَلِكَ عَلَى أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَالُوا: يَا رَسُول اله: أَيُّنَا لَمْ يَظْلِمْ نَفْسِهِ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَيْسَ ذَاكَ إِنَّمَا هُوَ الشِّرْكُ أَلَمْ تَسْمَعُوا قَوْلَ لُقْمَانَ لِابْنِهِ: (يَا بني لَا تُشْرِكْ بِاللَّهِ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ؟)»» فِي رِوَايَةٍ: «لَيْسَ هُوَ كَمَا تَظُنُّونَ إِنَّمَا هُوَ كَمَا قَالَ لُقْمَان لِابْنِهِ» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5131. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब यह आयत नाज़िल हुई: “जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अपने ईमान के साथ ज़ुल्म की मिलावट नहीं की”, यह रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबा रदियल्लाहु अन्हु पर गिराह गुज़री और उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हम में से कौन है जिस ने अपने आप पर ज़ुल्म नहीं किया, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “उस से यह मुराद नहीं, बल्कि उस से मुराद शिर्क है, क्या तुम ने लुकमान अलैहिस्सलाम का कौल नहीं सुना जो उन्होंने अपने बेटे से कहा: “बेटे! अल्लाह के साथ शिर्क न करना, क्योंकि शिर्क ज़ुल्मे अज़ीम है” एक दूसरी रिवायत में है: “ऐसे नहीं जो तुम गुमान करते हो, यह तो वह है जैसे लुकमान अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे से फ़रमाया था”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (4776) و مسلم (197 / 124)، (327)

٥١٣٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» أَمَامَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وسلم قَالَ: «مِنْ شَرِّ النَّاسِ مَنْزِلَةً عِنْدَ اللَّهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَبْدٌ أَذْهَبَ آخِرَتَهُ بِدُنْيَا غَيْرِهِ» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

5132. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रोज़ ए कियामत मक़ाम व मर्तबे के लिहाज़ से वह शख़्स बदतरीन होगा जिस ने किसी की दुनिया (बनाने) की खातिर अपने आखिरत ज़ाए कर ली”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابن ماجه (3966) [و حسنه البوصیری المتاخر !] * فیه عبد الحکیم السدوسی لم یوثقه غیر ابن حبان من المتقدمین و روی عنه جماعة

٥١٣٣ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " الدَّوَاوِينُ ثَلَاثَةٌ: دِيوَانٌ لَا يَغْفِرُهُ اللَّهُ: الْإِشْرَاكُ بِاللَّهِ. يَقُولُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ (إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ)»» وَدِيوَانٌ لَا يَتْرُكُهُ اللَّهُ: ظُلْمُ الْعِبَادِ فِيمَا بَيْنَهُمْ حَتَّى يَقْتَصَّ بَعْضُهُمْ مِنْ بَعْضٍ وَدِيوَانٌ لَا يَعْبَأُ اللَّهُ بِهِ ظُلْمُ الْعِبَادِ فِيمَا بينهم وبينَ الله فَذَاك إِلَى اللَّهِ فَذَاكَ إِلَى اللَّهِ: إِنْ شَاءَ عَذَّبَهُ وَإِنْ شَاءَ تَجَاوز عَنهُ "

5133. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आमाल नामे तीन किस्म के है: एक वह आमाल नामा जिसे अल्लाह मुआफ़ नहीं फरमाएगा, वह अल्लाह के साथ शरीक करना है, अल्लाह अज्ज़वजल फरमाता है: “बेशक अल्लाह मुआफ़ नहीं करता के उस के साथ शिर्क किया जाए”, एक वह आमाल नामा है जिसे अल्लाह नहीं छोड़ेगा, वह है बंदो का आपस में ज़ुल्म करना हत्ता कि वह एक दूसरे से बदला ले लें, और एक वह नाम ए आमाल है जिस की अल्लाह परवाह नहीं करेगा, वह है बंदो का अपने और अल्लाह के दरमियान ज़ुल्म करना, यह अल्लाह के सुपुर्द है, अगर वह चाहे तो इसे अज़ाब दे दे और अगर चाहे तो उस से दरगुज़र फरमाए”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (7473 ، نسخة محققة : 70697070) [و احمد (6 / 240 ح 26559)] * صححه الحاكم (4 / 575) فتعقبة الذهبى ، قال :'' صدقة (بن موسى) ضعفوه و ابن بابنوس فيه جهالة '' و صححه الحاكم مرة أخرى حديثه الآخر (2 / 392) و وافقه الذهبى ، قلت : صدقة بن موسى ضعفه الجمهور فهو ضعيف

٥١٣٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَلِيٍّ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِيَّاكَ وَدَعْوَةَ الْمَظْلُومِ فَإِنَّمَا يَسْأَلُ اللَّهَ تَعَالَى حَقَّهُ وَإِنَّ اللَّهَ لَا يَمْنَعُ ذَا حق حَقه»

5134. अली बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मज़लूम की बद्दुआ से बचो, वह अल्लाह तआला से अपने हक़ का मुतालबा करता है और बेशक अल्लाह हक़दार से उस का हक़ नहीं रोकता”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (7464 ، نسخة محققة : 7061) * فيه صالح بن حسان (كما فى النسخة المحققة) : وهو متروک جدًا

٥١٣٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أَوْسٍ»» بن شَرحبيل أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ مَشَى مَعَ ظَالِمٍ لِيُقَوِّيَهُ وَهُوَ يَعْلَمُ أَنَّهُ ظَالِمٌ فَقَدْ خَرَجَ مِنَ الْإِسْلَام»

5135. औस बिन शुर्हबिल रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जो शख़्स ज़ालिम के साथ चलता है ताकि वह उस को तकवियत (मजबूती) पहुंचाए हालाँकि वह जानता है के वह ज़ालिम है, ऐसा शख़्स इस्लाम से ख़ारिज हो जाता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (7675 ، نسخة محققة : 7269) [و الطبرانى فى الكبير (619)] * قال الهيشمى :'' و فيه عياش بن مؤنس ولم اجد من ترجمه '' (مجمع الزوائد 4 / 205) قلت : وثقه ابن حبان وحده فهو مجهول الحال و ابو الحسن نمران بن مخمر : مجهول الحال

٥١٣٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» هُرَيْرَةَ أَنَّهُ سَمِعَ رَجُلًا يَقُولُ: إِنَّ الظَّالِمَ لَا يَضُرُّ إِلَّا نَفْسَهُ فَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: بَلَى وَاللَّهِ حَتَّى الْحُبَارَى لَتَمُوتُ فِي وَكْرِهَا هُزْلًا لِظُلْمِ الظَّالِمِ. رَوَى الْبَيْهَقِيُّ الْأَحَادِيثَ الْأَرْبَعَةَ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ»

5136. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने एक आदमी को बयान करते हुए सुना के ज़ालिम शख़्स अपने आप ही को नुकसान पहुंचाता है, अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: हां, अल्लाह की क़सम! हत्ता कि सरख्वाब ज़ालिम के ज़ुल्म की वजह से दुबली पतली हो कर अपने आशियाने ही में मर जाती है, इमाम बयहक़ी ने चारो अहादीस शौबुल ईमान में रिवायत की हैं| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (7479 ، نسخة محققة : 7075) * عمر بن جابر الحنفى : مقبول اى مجهول الحال و ثقه ابن حبان وحده و اسماعيل بن حكيم الخزاعى لم اجد من و ثقه و اما نعيم بن حماد فهو صدوق حسن الحديث ولم يصب من ضعفه

नेकी का हुकुम देने का बयान • بَاب الْأَمر بِالْمَعْرُوفِ

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٥١٣٧ - (صَحِيح) عَن أبي سعيدٍ الخدريِّ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ رَأَى مِنْكُمْ مُنْكَرًا فَلْيُغَيِّرْهُ بِيَدِهِ فَإِنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَبِلِسَانِهِ فَإِنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فبقلبه وَذَلِكَ أَضْعَفُ الْإِيمَان» . رَوَاهُ مُسلم

5137. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम में से जो शख़्स बुराई देखे तो वह इसे अपने हाथ से बदल दे, अगर वह ताकत न रखे तो फिर अपने ज़ुबान से, अगर वह (इस की भी) इस्तिताअत न रखे तो फिर अपने दिल से (बदल ने के लिए मंसूबा बंदी करे और उन से नफ़रत रखे) और यह ईमान का कमज़ोर तरीन दर्जा है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (78 / 49)، (177)

٥١٣٨ - (صَحِيح) وَعَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وسلم: " مثلُ المدهنِ فِي حُدُودِ اللَّهِ وَالْوَاقِعِ فِيهَا مَثَلُ قَوْمٍ استهموا سفينة فَصَارَ بَعْضُهُمْ فِي أَسْفَلِهَا وَصَارَ بَعْضُهُمْ فِي أَعْلَاهَا فَكَانَ الَّذِي فِي أَسْفَلِهَا يَمُرُّ بِالْمَاءِ عَلَى الَّذِينَ فِي أَعْلَاهَا فَتَأَذَّوْا بِهِ فَأَخَذَ فَأْسًا فَجَعَلَ يَنْقُرُ أَسْفَلَ السَّفِينَةِ فَأَتَوْهُ فَقَالُوا: مَالك؟ قَالَ: تَأَذَّيْتُمْ بِي وَلَا بُدَّ لِي مِنَ الْمَاءِ. فَإِنْ أَخَذُوا عَلَى يَدَيْهِ أَنْجَوْهُ وَنَجَّوْا أَنْفُسَهُمْ وَإِنْ تَرَكُوهُ أَهْلَكُوهُ وَأَهْلَكُوا أَنْفُسَهُمْ ". رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

5138. नौमान बिन बशीर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह की हुदूद (काइम करने) में सुस्ती करने वाले और उनमें मुब्तिला होने वाले शख़्स की मिसाल इस कौम की मिस्ल है जिन्होंने एक कश्ती (में सवार होने) के मुतल्लिक कुरा अन्दाज़ी की तो उनमें से बाज़ उसकी नीचली मंजिल पर और बाज़ ऊपरी मंजिल पर बैठ गए, जो नीचली मंजिल में थे वह पानी लेने के लिए ऊपरी मंजिल वालो के ऊपर से गुज़रते, जिस से ऊपर वाले तकलीफ महसूस करते, लिहाज़ा चली मंजिल वालो ने कुल्हाड़ा पकड़ा और कश्ती के निचले

हिस्से में सुराख़ करने लगे, चुनांचे ऊपर वाले उन के पास आए और पूछा: तुम्हें क्या हुआ? उन्होंने जवाब दिया के (हमारे ऊपर जाने से) तुम्हें तकलीफ होती है और पानी भी हमारी मज़बूरी है, अगर ऊपर वालो ने उस के हाथ रोक लिए तो वह इसे भी बचा लेंगे और अपने आप को भी बचा लेंगे, और अगर इसे (इस के हाल पर) छोड़ देंगे तो वह इसे भी हलाक कर देंगे और अपने आप को भी हलाक कर लेंगे"| (बुखारी)

رواه البخاری (6286)

٥١٣٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يُجَاءُ بِالرَّجُلِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيُلْقَى فِي النَّارِ فَتَنْدَلِقُ أَقْتَابُهُ فِي النَّارِ فَيَطْحَنُ فِيهَا كَطَحْنِ الْحِمَارِ بِرَحَاهُ فَيَجْتَمِعُ أَهْلُ النَّارِ عَلَيْهِ فَيَقُولُونَ: أَيْ فُلَانُ مَا شَأْنُكَ؟ أَلَيْسَ كُنْتَ تَأْمُرُنَا بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَانَا عَنِ الْمُنْكَرِ؟ قَالَ: كُنْتُ آمُرُكُمْ بِالْمَعْرُوفِ وَلَا آتِيهِ وَأَنْهَاكُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَآتِيهِ ". مُتَّفق عَلَيْهِ

5139. उसामा बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "रोज़ ए कियामत एक आदमी लाया जाएगा और इसे जहन्नम में डाल दीया जाएगा, उसकी अंतड़ियाँ आग में निकल आएगी, वह उन के गिर्द इस तरह चक्कर लगाएगा जिस तरह गधा चक्की के गिर्द चक्कर लगाता है, जहन्नमी उस पर जमा हो जाएँगे और उस से दरियाफ्त करेंगे: ए फलां! तुम्हें क्या हुआ? क्या तू हमें नेकी करने का हुक्म नहीं देता था और हमें बुराई करने से नहीं रोकता था? वह कहेगा में तुम्हें नेकी का हुक्म देता था लेकिन खुद नेकी नहीं करता था और मैं तुम्हें बुराई से रोकता था और खुद उस का इर्तिकाब करता था"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2267) و مسلم (51 / 2989)، (7483)

नेकी का हुकुम देने का बयान • بَاب الْأَمر بِالْمَعْرُوف

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٥١٤٠ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ حُذَيْفَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَتَأْمُرُنَّ بِالْمَعْرُوفِ وَلَتَنْهَوُنَّ عَنِ الْمُنْكَرِ أَوْ لَيُوشِكَنَّ اللَّهُ أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِنْ عِنْدِهِ ثُمَّ لَتَدْعُنَّهُ وَلَا يُسْتَجَاب لكم» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5140. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: "उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! तुम ज़रूर नेकी का हुक्म करो और बुराई से मना करो, वरना करीब है के अल्लाह तुम पर अपना अज़ाब नाज़िल कर दे, फिर तुम उस से दुआए करोगे लेकिन वह कबूल न होगी"| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (2169 وقال : حسن)

٥١٤١ - (حسن) وَعَن الْعرس بن عَمِيرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا عُمِلَتِ الْخَطِيئَةُ فِي الْأَرْضِ مَنْ شَهِدَهَا فَكَرِهَهَا كَانَ كَمَنْ غَابَ عَنْهَا وَمَنْ غَابَ عَنْهَا فَرَضِيَهَا كَانَ كَمَنْ شَهِدَهَا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5141. उर्स बिन उमैर रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "जब ज़मीन पर गुनाह किया जाए और वहां मौजूद शख़्स इसे नापसंद करे तो वह इस शख़्स की तरह है जो वहां मौजूद नहीं, और जो शख़्स इस वक़्त वहां मौजूद न हो लेकिन वह उस पर राज़ी हो तो वह इस शख़्स की तरह है जो वहां मौजूद हो"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4345)

٥١٤٢ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنكم تقرؤونَ هذهِ الْآيَة: (يَا أيُّها الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنْفُسَكُمْ لَا يَضُرُّكُمْ مَنْ ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ)»» فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ النَّاسَ إِذَا رَأَوْا مُنْكَرًا فَلَمْ يُغَيِّرُوهُ يُوشِكُ أَنْ يَعُمَّهُمُ اللَّهُ بِعِقَابِهِ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ وَالتِّرْمِذِيُّ وَصَحَّحَهُ. وَفِي رِوَايَةِ أَبِي دَاوُد: «إِذا رَأَوْا الظَّالِم فَم يَأْخُذُوا عَلَى يَدَيْهِ أَوْشَكَ أَنْ يَعُمَّهُمُ اللَّهُ بِعِقَابٍ» . وَفِي أُخْرَى لَهُ: «مَا مِنْ قَوْمٍ يُعْمَلُ فِيهِمْ بِالْمَعَاصِي ثُمَّ يَقْدِرُونَ عَلَى أَنْ يُغَيِّرُوا ثُمَّ لَا يُغَيِّرُونَ إِلَّا يُوشِكُ أَنْ يَعُمَّهُمُ اللَّهُ بِعِقَابٍ» . وَفِي أُخْرَى لَهُ: «مَا مِنْ قَوْمٍ يُعْمَلُ فِيهِمْ بِالْمَعَاصِي هُمْ أَكْثَرُ مِمَّن يعمله»

5142. अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है उन्हों ने फ़रमाया: "लोगो! तुम यह आयत तिलावत करते हो: "ईमान वालो! (तुम गुनाहों के मुत्तल्लिक) अपना ख़याल रखो, जब तुम हिदायत पर हो तो फिर गुमराह शख़्स तुम्हें नुकसान नहीं पहुंचा सकता", मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "बेशक जब लोग किसी बुराई को देंखेंगे और इसे रोकेंगे नहीं तो फिर करीब है के अल्लाह इन सब को अपने अज़ाब की लपेट में ले ले"| इब्ने माजा तिरमिज़ी, और इमाम तिरमिज़ी ने इसे सहीह करार दिया है| और अबू दावुद की रिवायत में है: "जब वह ज़ालिम को (ज़ुल्म करते हुए) देखते और वह उस के हाथो को न रोके तो फिर करीब है के अल्लाह इन सब को अज़ाब की लपेट में ले ले"| और अबू दावुद की दूसरी रिवायत में है: "जिस कौम में गुनाह होते हो फिर वह उन्हें रोकने की ताकत के बावजूद न रोके तो करीब है के अल्लाह उन्हें अज़ाब की लपेट में ले ले", एक और रिवायत में है: "जिस कौम की अकलियत गुनाह में मुब्तिला हो जाए और वह अक्सरियत जो गुनाह तो नहीं करती मगर करने वालो को रोकती भी नहीं (वो भी अज़ाब से दो चार हो जाएगी)"| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابن ماجه (4005) و الترمذی (2168) و ابوداؤد (4338)

٥١٤٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن جَرِير بن عبد الله قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَا مِنْ [ص:١٤٢] رَجُلٍ يَكُونُ فِي قَوْمٍ يَعْمَلُ فِيهِمْ بِالْمَعَاصِي يَقْدِرُونَ عَلَى أَنْ يُغَيِّرُوا عَلَيْهِ وَلَا يُغَيِّرُونَ إِلَّا أَصَابَهُمُ اللَّهُ مِنْهُ بِعِقَابٍ قبل أَن يموتو» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

5143. जरीर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना :" अगर कोई शख़्स किसी कौम में गुनाह करता हो और वह लोगों से रोकने की ताकत के बावजूद न रोके तो फिर अल्लाह उन के मरने से पहले उन्हें अपने अज़ाब में मुब्तिला कर देता है|" (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4339) و ابن ماجه (4009) [و احمد (4 / 364) و الطيالسى (663) و صححه ابن حبان (18391804)] * عبيد الله بن جرير مجهول الحال لم يوثقه غير ابن حبان و للحديث شواهد ضعيفة

٥١٤٤ - (ضَعِيف ولبعض فقره شَوَاهِد)»» وَعَن أبي ثعلبةَ فِي قَوْلُهُ تَعَالَى: (عَلَيْكُمْ أَنْفُسَكُمْ لَا يَضُرُّكُمْ مَنْ ضل إِذا اهْتَدَيْتُمْ)»» فَقَالَ: أَمَا وَاللَّهِ لَقَدْ سَأَلْتُ عَنْهَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: " بَلِ ائْتَمَرُوا بِالْمَعْرُوفِ وَتَنَاهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ حَتَّى إِذَا رأيتَ شُحّاً مُطاعاً وَهوى مُتَّبَعاً ودينا مُؤْثَرَةً وَإِعْجَابَ كُلِّ ذِي رَأْيٍ بِرَأْيِهِ وَرَأَيْتَ أَمْرًا لَا بُدَّ لَكَ مِنْهُ فَعَلَيْكَ نَفْسَكَ وَدَعْ أَمْرَ الْعَوَامِّ فَإِنَّ وَرَاءَكُمْ أَيَّامَ الصَّبْرِ فَمَنْ صَبَرَ فِيهِنَّ قَبَضَ عَلَى الْجَمْرِ لِلْعَامِلِ فِيهِنَّ أَجْرُ خَمْسِينَ مِنْهُمْ؟ قَالَ: «أَجْرُ خَمْسِينَ مِنْكُمْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

5144. अल्लाह तआला के फरमान: "तुम अपने जानो को लाज़िम पकड़ो, जब तुम खुद हिदायत पर होंगे तो गुमराह लोग तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकेंगे", के बारे में अबू सअलबा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, उन्होंने कहा: सुन लो! अल्लाह की क़सम! मैंने उस के मुतल्लिक रसूलुल्लाह ﷺ से दरियाफ्त किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "बल्के तुम नेकी करने का हुक्म देते रहो और बुराई से रोकते रहो, हत्ता कि जब तुम देखो के बुखल की इताअत की जाती है, ख्वाहिश की इत्तेबा की जाती है, दुनिया को तरजीह दी जाती है और हर शख़्स अपने राय व अक़ल पर खुश है, और तुम देखो के एक ऐसा अम्र जिस से बचना मुश्किल है तो फिर तुम अपने जानो को लाज़िम पकड़ो और आम लोगों के मुआमले को छोड़ दो, क्योंकि आगे अय्यामे सब्र आने वाले हैं, जिस शख़्स ने उन अय्याम में सब्र किया गोया उस ने अंगारा पकड़ा, उन अय्याम में अमल करने वाले के लिए पचास आदमियों के अमल करने के बराबर अज्र व सवाब है", सहाबा रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! उन के पचास आदमियों के अज़र की तरह? आप ﷺ ने फ़रमाया: "उन पचास आदमियों के अज़र की तरह जो तुम में से है"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (3058 وقال : حسن غريب) و ابن ماجه (4014) [عمرو بن جارية وثقه الترمذى و ابن حبان فحديثه حسن]

٥١٤٥ - (ضَعِيف وَبَعض فقره صَحِيحَة الْأَسَانِيد)»» وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَامَ فِينَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَطِيبًا بَعْدَ الْعَصْرِ فَلَمْ يَدَعْ شَيْئًا يَكُونُ إِلَى قِيَامِ السَّاعَةِ إِلَّا ذَكَرَهُ حَفِظَهُ مَنْ حَفِظَهُ وَنَسِيَهُ مَنْ نَسِيَهُ وَكَانَ فِيمَا قَالَ: «إِنَّ الدُّنْيَا حُلْوَةٌ خَضِرَةٌ وَإِنَّ اللَّهَ مُسْتَخْلِفُكُمْ فِيهَا فَنَاظِرٌ كَيْفَ تَعْمَلُونَ أَلَا فَاتَّقُوا الدُّنْيَا وَاتَّقُوا النِّسَاءَ» وَذَكَرَ: «إِنَّ لِكُلِّ غَادِرٍ لِوَاءً يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِقَدْرِ غَدْرَتِهِ فِي الدُّنْيَا وَلَا غَدْرَ أَكْبَرُ مِنْ غَدْرِ أَمِيرِ الْعَامَّةِ يُغْرَزُ لِوَاؤُهُ عِنْدَ اسْتِهِ» . قَالَ: «وَلَا يَمْنَعَنَّ أَحَدًا مِنْكُمْ هَيْبَةُ النَّاسِ أَنْ يَقُولَ بِحَقٍّ إِذَا عَلِمَهُ» وَفِي رِوَايَةٍ: «إِنْ رَأَى مُنْكَرًا أَنْ يُغَيِّرَهُ» فَبَكَى أَبُو سَعِيدٍ وَقَالَ: قَدْ رَأَيْنَاهُ فَمَنَعَتْنَا هَيْبَةُ النَّاسِ أَنْ نَتَكَلَّمَ فِيهِ. ثُمَّ قَالَ: «أَلَا إِنَّ بَنِي آدَمَ خُلِقُوا عَلَى طَبَقَاتٍ شَتَّى فمنهم مَن يولَدُ مُؤمنا وَيحيى مُؤْمِنًا وَيَمُوتُ مُؤْمِنًا وَمِنْهُمْ مَنْ يُولَدُ كَافِرًا وَيحيى كَافِرًا وَيَمُوتُ كَافِرًا وَمِنْهُمْ مَنْ يُولَدُ مُؤْمِنًا وَيحيى مُؤْمِنًا وَيَمُوتُ كَافِرًا وَمِنْهُمْ مَنْ يُولَدُ

كَافِرًا وَيحيى كَافِرًا وَيَمُوتُ مُؤْمِنًا» قَالَ: وَذَكَرَ الْغَضَبَ «فَمِنْهُمْ مَنْ يَكُونُ سَرِيعَ الْغَضَبِ سَرِيعَ الْفَيْءِ [ص:١٤٢ فَإِحْدَاهُمَا بِالْأُخْرَى وَمِنْهُمْ مَنْ يَكُونُ بَطِيءَ الْغَضَبِ بَطِيءَ الْفَيْءِ فَإِحْدَاهُمَا بِالْأُخْرَى وَخِيَارُكُمْ مَنْ يَكُونُ بَطِيءَ الْغَضَبِ سَرِيعَ الْفَيْءِ وَشِرَارُكُمْ مَنْ يَكُونُ سَرِيعَ الْغَضَبِ بَطِيءَ الْفَيْءِ» . قَالَ: «اتَّقُوا الْغَضَبَ فَإِنَّهُ جَمْرَةٌ عَلَى قَلْبِ ابْنِ آدَمَ أَلَا تَرَوْنَ إِلَى انْتِفَاخِ أَوْدَاجِهِ؟ وَحُمْرَةِ عَيْنَيْهِ؟ فَمَنْ أَحَسَّ بِشَيْءٍ مِنْ ذَلِكَ فَلْيَضْطَجِعْ وَلْيَتَلَبَّدْ بِالْأَرْضِ» قَالَ: وَذَكَرَ الدَّيْنَ فَقَالَ: «مِنْكُمْ مَنْ يَكُونُ حَسَنَ الْقَضَاءِ وَإِذَا كَانَ لَهُ أَفْحَشَ فِي الطَّلَبِ فإحداهُما بِالْأُخْرَى وَمِنْهُم مَن يكونُ سيِّءَ الْقَضَاءِ وَإِنْ كَانَ لَهُ أَجْمَلَ فِي الطَّلَبِ فَإِحْدَاهُمَا بِالْأُخْرَى وَخِيَارُكُمْ مَنْ إِذَا كَانَ عَلَيْهِ الدَّيْنُ أَحْسَنَ الْقَضَاءِ وَإِنْ كَانَ لَهُ أَجْمَلَ فِي الطَّلَبِ وَشِرَارُكُمْ مَنْ إِذَا كَانَ عَلَيْهِ الدَّيْنُ أَسَاءَ الْقَضَاءَ وَإِنْ كَانَ لَهُ أَفْحَشَ فِي الطَّلَبِ» . حَتَّى إِذَا كَانَتِ الشَّمْسُ عَلَى رؤوسِ النَّخْلِ وَأَطْرَافِ الْحِيطَانِ فَقَالَ: «أَمَا إِنَّهُ لَمْ يَبْقَ مِنَ الدُّنْيَا فِيمَا مَضَى مِنْهَا إِلَّا كَمَا بَقِيَ مِنْ يَوْمِكُمْ هَذَا فِيمَا مَضَى مِنْهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5145. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ ए असर के बाद हमें खुत्बा इरशाद फरमाने के लिए खड़े हुए तो आप ने कयामे कियामत तक पेश आने वाले तमाम वाकिअत बयान फरमाए, कुछ लोगों ने इसे याद रखा और कुछ लोगों ने इसे भुला दिया, आप के ख़िताब में यह भी था, आप ﷺ ने फ़रमाया: “दुनिया शिरीन व शादाब है, बेशक अल्लाह तुम्हें उस में खलीफा व जानशीन बनाने वाला है, वह देखेगा की तुम कैसे अमल करते हो, सुन लो! दुनिया से बचो, और औरतो (के फितने) से बचो”, और आप ﷺ ने ज़िक्र फ़रमाया: “रोज़ ए कियामत हर दगाबाज़ी के लिए, दुनिया में उसकी दगाबाज़ी के मुताबिक एक झंडा होगा और लोगों के अमीर (नेता) की दगाबाज़ी से बढ़कर कोई दगाबाज़ी नहीं होगी, उस का झंडा उसकी सुरिन पर नसब किया जाएगा, और लोगों का खौफ तुम में से किसी को हक़ बात कहने से न रोके जबकि वह इसे जानता हो”, एक दूसरी रिवायत में है: “अगर वह कोई बुराई देखे तो उसे रोक दे, लोगों का खौफ इसे ऐसा करने से न रोके”, चुनांचे (ये बयान कर के) अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु रोने लगे और फ़रमाया: यक़ीनन हमने उस को देखा लेकिन लोगों के खौफ ने हमें उस के मुतल्लिक बात करने से रोक दिया, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “सुन लो! आदम अलैहिस्सलाम की औलाद मुख्तलिफ तबकात पर पैदा की गई उनमें से कोई तो मोमिन पैदा किया गया, वह इसी हालत में जिंदा रहा और इसी हालत पर फौत हुआ, और उनमें से कुछ को काफ़िर पैदा किया गया, वह हालते कुफ्र पर जिंदा रहे और काफ़िर ही फौत हुए, और उनमें से कुछ मोमिन पैदा होते हैं, हालत ईमान पर जिंदा रहते है और हालते कुफ्र पर फौत हो जाते हैं, और उनमें से कुछ हालते कुफ्र पर पैदा होते हैं, इसी हालत पर जिंदा रहते है और हालते ईमान पर फौत होते हैं”, और रावी बयान करते हैं, आप ﷺ ने गुस्से का ज़िक्र फ़रमाया: “उन में से कुछ को जल्द गुस्सा आ जाता है और जल्दी ही उतर जाता है, उनमें से एक (खसलत) दूसरी (खसलत) का बदल है, और उनमें से कुछ ऐसे है जिन्हें गुस्सा देर से आता है और देर से जाता है यह भी एक (खसलत) दूसरी का बदल है, और तुम में से बेहतरीन शख़्स वह है जिसे गुस्सा देर से आता हो और जल्द ज़ाइल होता हो और तुम में से बदतरीन शख़्स वह है जिसे गुस्सा तो जल्द आता हो जबकि वह ज़ाइल देर से होता हो”, आप ﷺ ने फ़रमाया: “गुस्से से बचो, क्योंकि वह इब्ने आदम का दिल पर एक अंगारा है, क्या तुम उसकी रगों के फूलने और उसकी आंखो की सुरखी की तरफ नहीं देखते, जो शख़्स ऐसी कैफियत महसूस करे तो उसे चाहिए के वह लेट जाए और ज़मीन के साथ लग जाए”, रावी बयान करते हैं, आप ﷺ ने क़र्ज़ का ज़िक्र किया तो फ़रमाया: “तुम में से कोई अदाइगी में अच्छा होता है लेकिन जब उस ने किसी से क़र्ज़ लेना हो तो वह वुसुली में सख्ती करता है, यह (खसलत) दूसरी का बदल है, (ताहम यह बात काबिले तारीफ़ नहीं) कुछ ऐसे होते हैं के वह अदाइगी में बुरे होते हैं जबकि वुसुली में अच्छे होते हैं तो यह भी दूसरी (खसलत) का बदल है, (ताहम यह बात काबिले

तारीफ़ नहीं) और तुम में से बेहतर शख़्स वह है की जब उस पर क़र्ज़ हो तो वह अच्छी तरह अदा करता है, और जब उस ने क़र्ज़ लेना हो तो वह वुसुली में अच्छा होता है, और तुम में से बदतरीन शख़्स वह है जो क़र्ज़ की अदाइगी में बुरा हो और अगर उस ने क़र्ज़ लेना हो तो वह वुसुली में सख्त हो", हत्ता कि जब धुप खजूर के दरख्तों की चोटियों और दीवारों की अतराफ़ पर आ गई तो फ़रमाया: "सुन लो! दुनिया बस उतनी ही बाकी रह गई है जितना आज के दिन का यह हिस्सा बाकी रह गया है"| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (2191 وقال : حسن) * على بن زيد بن جدعان ضعيف

٥١٤٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» الْبَخْتَرِيِّ عَنْ رَجُلٍ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «لن يهْلك النَّاس حَتَّى يعذروا فِي أنفسهم» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5146. अबू बख्तरी, नबी ﷺ के एक सहाबी से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "लोग इस वक़्त तक गुनाहों की वजह से तबाह व बर्बाद नहीं है जाएँगे जब तक वह गुनाहों के जवाज़ के लिए झूठे उज़्र पेश नहीं करेंगे"| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (4347)

٥١٤٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَدِيٍّ»» بْنِ عَدِيٍّ الْكِنْدِيِّ قَالَ: حَدَّثَنَا مَوْلًى لَنَا أَنَّهُ سَمِعَ جَدِّي رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى لَا يُعَذِّبُ الْعَامَّةَ بِعَمَلِ الْخَاصَّةِ حَتَّى يَرَوُا الْمُنْكَرَ بَيْنَ ظَهْرَانِيهِمْ وَهُمْ قَادِرُونَ عَلَى أَنْ يُنْكِرُوهُ فَلَا يُنْكِرُوا فَإِذَا فَعَلُوا ذَلِكَ عَذَّبَ اللَّهُ العامَّةَ والخاصَّةَ» . رَوَاهُ فِي «شرح السّنة»

5147. अदि बिन अदि किंडिय बयान करते हैं, हमारे आज़ाद करदा गुलाम ने हमें हदीस बयान की के उस ने मेरे दादा को बयान करते हुए सुना उन्होंने कहा: की मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "बेशक अल्लाह तआला कुछ लोगों की नाफ़रमानी की वजह से सब लोगों को अज़ाब में मुब्तिला नहीं करता हत्ता कि वह अपने सामने बुराई होती देखते और वह इसे रोकने की ताकत रखने के बावजूद इसे न रोके, जब वह इस तरह के हो जाए तो फिर अल्लाह आम व खास (ज़्यादा और थोड़ो सब को) अज़ाब में मुब्तिला कर देता है"| (हसन)

حسن ، رواه البغوی فی شرح السنة (14 / 346 ح 4155) * فيه ’’ مولی لنا ‘‘ مجهول وله شاهد عند الطبرانی و رجاله ثقات (مجمع الزوائد 7 / 267)و شاهد آخر عند الترمذی (2168 حسن صحيح) و ابی داود (4338) و ابن ماجه (4005) تقدم (5142) و صححه ابن حبان (الاحسان : 304)

٥١٤٨ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: [ص:١٤٢] «لَمَّا وَقَعَتْ بَنُو إِسْرَائِيلَ فِي الْمَعَاصِي نَهَتْهُمْ عُلَمَاؤُهُمْ فَلَمْ يَنْتَهُوا فَجَالَسُوهُمْ فِي مَجَالِسِهِمْ وَآكَلُوهُمْ وَشَارَبُوهُمْ فَضَرَبَ اللَّهُ قُلُوبَ بَعْضِهِمْ بِبَعْضٍ فَلَعَنَهُمْ عَلَى لسانِ دَاوُد وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ذَلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ» . قَالَ: فَجَلَسَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ

وَسَلَّمَ وَكَانَ مُتَّكِئًا فَقَالَ: «لَا وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ حَتَّى تَأْطِرُوهُمْ أَطْرًا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَفِي رِوَايَتِهِ قَالَ: «كَلَّا وَاللَّهِ لَتَأْمُرُنَّ بِالْمَعْرُوفِ وَلَتَنْهَوُنَّ عَنِ الْمُنْكَرِ وَلَتَأْخُذُنَّ عَلَى يَدَيِ الظَّالِمِ ولنأطرنه على الْحق أطرا ولنقصرنه عَلَى الْحَقِّ قَصْرًا أَوْ لَيَضْرِبَنَّ اللَّهُ بِقُلُوبِ بَعْضِكُمْ عَلَى بَعْضٍ ثُمَّ لَيَلْعَنَنَّكُمْ كَمَا لَعَنَهُمْ»

5148. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब बनू इसराइल गुनाहों में मुब्तिला हो गए तो उन के उलेमा ने उन्हें मना किया, वह बाज़ न आए तो वह (उलमा) उन के हम नशीन और उन के हम निवाले व हम प्याला बन गए, अल्लाह ने उन के दिलों को एक दूसरे के मुशाबह (अनुरूप) कर दिया और दावुद व इसा बिन मरियम अलैहिस्सलाम की ज़ुबान पर इन पर लानत फरमाई, और यह इसलिए हुआ की उन्होंने नाफ़रमानी की और वह ज़्यादती करते थे”, रावी बयान करता है, रसूलुल्लाह ﷺ टेक लगाए हुए थे और आप बैठ गए, फिर फ़रमाया: “नहीं, (तुम भी कामियाब नहीं होंगे) उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! हत्ता कि तुम उन (गुनाहगारों ज़ालिमो) को सख्ती मना करो”| और अबू दावुद की रिवायत में है फ़रमाया: “हरगिज़ नहीं, अल्लाह की क़सम! तुम ज़रूर नेकी का हुक्म करो, तुम ज़रूर बुराई से मना करो और तुम ज़रूर ज़ालिम के हाथो को पकड़ो, तुम ज़रूर इसे हक़ की तरफ माइल करो और तुम ज़रूर इसे हक़ पर काइम रखो वरना फिर अल्लाह तुम्हारे दिलों को एक दूसरे के मुशाबह (अनुरूप) कर देगा फिर वह तुम पर भी लानत फरमाएगा जिस तरह उस ने इन पर लानत फरमाई”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (3047 وقال : حسن) و ابوداؤد (4337) * ابو عبیدة لم یسمع من ابیه فالسند منقطع

٥١٤٩ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» أَنَسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " رَأَيْتُ لَيْلَةَ أَسْرِيَ بِي رِجَالًا تُقْرَضُ شِفَاهُهُمْ بِمَقَارِيضَ مِنْ نَارٍ قُلْتُ: مَنْ هؤلاءِ يَا جبريلُ؟ قَالَ: هؤلاءِ خُطباءُ أُمَّتِكَ يَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَيَنْسَوْنَ أَنْفُسَهُمْ «. رَوَاهُ فِي» شرح السّنة «وَالْبَيْهَقِيّ فِي» شعب الْإِيمَان " وَفِي رِوَايَتِهِ قَالَ: «خُطَبَاءُ مِنْ أُمَّتِكَ الَّذِينَ يقولونَ مَا لَا يفعلونَ ويقرؤونَ كتابَ اللَّهِ وَلَا يعملونَ»

5149. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैंने मेअराज की रात कुछ आदमियों को देखा के उन के होठ आग की कैंचियो से कतरे जा रहे थे, मैंने कहा: जिब्राइल, यह कौन लोग हैं? उन्होंने बताया: यह आप की उम्मत के खतिब हज़रात हैं, यह लोगों को तो नेकी का हुक्म करते थे, मगर खुद को भूल जाते थे”| शरह सुन्ना बयहकी की शौबुल ईमान| और उनकी रिवायत में है फ़रमाया: “आप की उम्मत के वह खतिब हज़रात हैं जो यह कहते थे वह करते नहीं थे, वह अल्लाह की किताब पढ़ते थे लेकिन अमल नहीं करते थे”| (हसन)

حسن ، رواہ البغوی فی شرح السنة (14 / 353 ح 4159 وقال : حسن) و البیھقی فی شعب الایمان (1773) تقدم (4801) فراجعه للشواھد]

٥١٥٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَمَّارٍ»» بْنِ يَاسِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أُنْزِلَتِ الْمَائِدَةُ مِنَ السَّمَاءِ خُبْزًا وَلَحْمًا وَأُمِرُوا أَنْ لَا يَخُونُوا وَلَا يَدَّخِرُوا لِغَدٍ فَخَانُوا وَادَّخَرُوا وَرَفَعُوا لغَدٍ فمُسِخوا قِردةً وخَنازيرَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5150. अम्मार बिन यासिर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आसमान से रोटी और गोश्त पर मुश्तमिल दस्तरखान उतारा गया और उन्हें हुक्म दिया गया के वह ना खयानत करे और न कल के लिए ज़खीरा करे, लेकिन उन्होंने खयानत की, ज़खीरा किया और कल के लिए उठा रखा, जिस की वजह से उन्हें बंदर और खिंजिर बना दिया गया”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3061 وقال : غريب) * سعيد بن ابی عروبة و قتادة مدلسان عنعنا و للحديث شواهد ضعيفة

نेकी का हुकुम देने का बयान — بَاب الْأَمر بِالْمَعْرُوفِ •

तीसरी फस्ल — الْفَصْل الثَّالِث •

٥١٥١ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عُمَرَ»» بْنِ الْخَطَّابِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّهُ تُصِيبُ أُمَّتِي فِي آخِرِ الزَّمَانِ مِنْ سُلْطَانِهِمْ شَدَائِدُ لَا يَنْجُو مِنْهُ إِلَّا رَجُلٌ عَرَفَ دِينَ اللَّهِ فَجَاهَدَ [ص:١٤٢ عَلَيْهِ بِلِسَانِهِ وَيَدِهِ وَقَلْبِهِ فَذَلِكَ الَّذِي سَبَقَتْ لَهُ السَّوَابِقُ وَرَجُلٌ عَرَفَ دِينَ اللَّهِ فَصَدَّقَ بِهِ وَرَجُلٌ عَرَفَ دِينَ اللَّهِ فَسَكَتَ عَلَيْهِ فَإِنْ رَأَى مَنْ يَعْمَلُ الْخَيْرَ أَحَبَّهُ عَلَيْهِ وَإِنْ رَأَى مَنْ يَعْمَلُ بِبَاطِلٍ أَبْغَضَهُ عَلَيْهِ فَذَلِكَ يَنْجُو على إبطانه كُله»

5151. उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आखरी दौर में मेरी उम्मत को उन के बादशाहो की तरफ से मसाइब (तकलीफ) व परेशानियों का सामना करना पड़ेगा और उन से सिर्फ वही शख़्स बचेगा, जो अल्लाह के दीन को पहचान कर अपनी ज़ुबान, अपने हाथ और अपने दिल के ज़रिए उस के खिलाफ जिहाद करेगा, यह वह शख़्स है जिसे पहली सआदते हासिल होगी, और वह शख़्स जिस ने अल्लाह के दीन की मारिफत हासिल की और उसकी तस्दीक भी की, और वह आदमी जिस ने अल्लाह के दीन को पहचाना लेकिन इस (के बयान व तफसील) पर ख़ामोशी इख़्तियार की, अगर उस ने किसी को अच्छा काम करते हुए देखा तो उस पर उस को पसंद किया, और अगर किसी को बुरा काम करते हुए देखा तो उस पर उन से नाराज़ हुआ, यह शख़्स अपने छुपे हुए पसंद व नापसंद पर कामियाब हो गया”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقی فی شعب الايمان (7587 ، نسخة محققة بعد ح 7170) * فيه سهل بن عمار : ضعيف كما يظهر من ترجمته فی لسان الميزان (3 / 143144) و جابر بن زيد عن عمر : منقطع

٥١٥٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٍ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " أَوْحَى اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ إِلى جبريلَ عَلَيْهِ السَّلَامُ: أَنِ اقْلِبْ مَدِينَةَ كَذَا وَكَذَا بِأَهْلِهَا قَالَ: يارب إِنَّ فِيهِمْ عَبْدَكَ فُلَانًا لَمْ يَعْصِكَ طَرْفَةَ عَيْنٍ ". قَالَ: " فَقَالَ: اقْلِبْهَا عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمْ فَإِنَّ وَجهه لم يتمعر فِي سَاعَة قطّ "

5152. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह अज्ज़वजल ने जिब्राइल

अलैहिस्सलाम की तरफ वही फरमाई के फलां फलां शहर को उस के बासियो समेत उलट दो, उस ने अर्ज़ किया: रब जी! उनमे, तो तेरा फलां बंदा है जिस ने आँख झपकने के बराबर तेरी नाफ़रमानी नहीं की", नबी ﷺ ने बयान फ़रमाया: "अल्लाह तआला ने फ़रमाया: इस (शहर) को उस पर और इन पर उलट दे क्योंकि उस का चेहरा मेरी खातिर कभी लम्हा भर के लिए भी मुत्गिर (साफ़) नहीं हुआ"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (7595 ، نسخة محققة : 7189) * فيه عبيد بن اسحاق العطار : ضعيف ، و فيه علة أخرى

٥١٥٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ يَسْأَلُ الْعَبْدَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيَقُولُ: مَا لَكَ إِذَا رَأَيْتَ الْمُنْكَرَ فَلَمْ تُنْكِرْهُ؟ " قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " فَيُلَقَّى حُجَّتَهُ فَيَقُولُ: يَا رَبِّ خِفْتُ النَّاسَ وَرَجَوْتُكَ «. رَوَى الْبَيْهَقِيُّ الْأَحَادِيثَ الثَّلَاثَةَ فِي» شُعَبِ الْإِيمَانِ "

5153. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "बेशक अल्लाह अज्ज़वजल रोज़ ए कियामत बंदे से सवाल करते हुए फरमाएगा: तुझे क्या हुआ था की ज, तूने बुराई देखी तो तू ने इसे क्यों नहीं रोका? रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "उस को उसकी दलील सिखा दी जाएगी और वह अर्ज़ करेगा: रब जी! मैं लोगों से डर गया और तुझ से उम्मीद रखी"| इमाम बयहकी ने तीनो अहादीस शौबुल ईमान में नकल की है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (7575 ، نسخة محققة : 7168) * سفيان الثورى مدلس ولم يصرح بالسماع ، و اخاف الانقطاع فى السند

٥١٥٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ إِنَّ الْمَعْرُوفَ وَالْمُنْكَرَ خَلِيقَتَانِ تُنْصَبَانِ لِلنَّاسِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَأَمَّا الْمَعْرُوفُ فَيُبَشِّرُ أَصْحَابَهُ وَيُوعِدُهُمُ الْخَيْرَ وَأَمَّا الْمُنْكَرُ فَيَقُولُ: إِلَيْكُمْ إِلَيْكُمْ وَمَا يَسْتَطِيعُونَ لَهُ إِلَّا لُزُومًا «. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالْبَيْهَقِيّ فِي» شعب الإيمان "

5154. अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद ﷺ की जान है! बेशक नेकी और बुराई दो (अलग अलग) मखलूक है, रोज़ ए कियामत उन्हें लोगों के सामने खड़ा किया जाएगा, चुनांचे नेकी तो अपने साथियो (यानी नेकोकारों) को खुशखबरी देगी और उन से खैर का वादा करेगी, जबकि बुराई कहेगी दूर रहो, दूर रहो, लेकिन वह (बुराई करने वाले) उन से जुदा नहीं हो सकेंगे"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (4 / 391 ح 19716) و البيهقى فى شعب الايمان (11180 نسخة محققة : 10666) * قتادة و الحسن مدلسان و عنعنا

كتاب الرقَاق • दिलों को नरम बनाने वाली बातों का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٥١٥٥ - (صَحِيح) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " نِعْمَتَانِ مَغْبُونٌ فِيهِمَا كَثِيرٌ مِنَ النَّاسِ: الصِّحَّةُ وَالْفَرَاغُ ". رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

5155. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "दो नेअमतें ऐसी है जिन के बारे में बहोत से लोग ख़सारे में है: सेहत और फरागत"| (बुखारी)

رواه البخاری (6412)

٥١٥٦ - (صَحِيح) وَعَنِ الْمُسْتَوْرِدِ بْنِ شَدَّادٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «وَاللَّهِ مَا الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا مِثْلُ مَا يجعلُ أحدُكم إصبعَه فِي اليمِّ فَلْينْظر بِمَ يرجع» . رَوَاهُ مُسلم

5156. मुसतवरिद बिन सद्दाद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "अल्लाह की क़सम! आखिरत के मुकाबले में दुनिया की मिसाल बस ऐसे ही है जैसे तुम में से कोई अपने ऊँगली समुद्र में डुबोई फिर वह देखे के वह (ऊँगली पानी की) कितनी मिकदार के साथ लौटती है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (55 / 2858)، (7197)

٥١٥٧ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرَّ بِجَدْيٍ أَسَكَّ مَيِّتٍ. قَالَ: «أَيُّكُمْ يُحِبُّ أَنَّ هَذَا لَهُ بِدِرْهَمٍ؟» فَقَالُوا: مَا نحبُّ أَنه لنا بشيءقال: «فَوَاللَّهِ لَلدُّنْيَا أَهْوَنُ عَلَى اللَّهِ مِنْ هَذَا عَلَيْكُم» . رَوَاهُ مُسلم

5157. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ बकरी के एक छोटे कानों वाले मुरदार बच्चे के पास से गुज़रे तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुम में से कौन इसे एक दिरहम में लेना पसंद करेगा ?" सहाबा रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया: हम तो उसे किसी मामूली चीज़ के बदले में लेना भी पसंद नहीं करते, आप ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह की क़सम! अल्लाह के नज़दीक दुनिया उस से भी ज़्यादा हकीर है जितना यह (बकरी का मुर्दा बच्चा) तुम्हारे नज़दीक हकीर है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (2 / 2957)، (7418)

٥١٥٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الدُّنْيَا سِجْنُ المؤمنِ وجنَّةُ الكافرِ» . رَوَاهُ مُسلم

5158. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "दुनिया मोमिन के लिए क़ैद खाना जबकि काफ़िर के लिए जन्नत है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (1 / 2956)، (7417)

٥١٥٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ مُؤْمِنًا حَسَنَةً يُعْطَى بِهَا فِي الدُّنْيَا وَيُجْزَى بِهَا فِي الْآخِرَةِ وَأَمَّا الْكَافِرُ فَيُطْعَمُ بِحَسَنَاتِ مَا عَمِلَ بِهَا لِلَّهِ فِي الدُّنْيَا حَتَّى إِذَا أَفْضَى إِلَى الْآخِرَةِ لَمْ يَكُنْ لَهُ حَسَنَة يجزى بهَا» . رَوَاهُ مُسلم

5159. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अल्लाह किसी मोमिन की कोई नेकी ज़ाए नहीं करता, उस को इस (नेकी) के बदले में दुनिया में अता किया जाता है और उस के बदले में उसे आखिरत में जज़ा दी जाएगी, और काफ़िर को उसकी दुनिया में अल्लाह के लिए की गई नेकियो के बदले में खिलाया जाता है, हत्ता कि जब वह आखिरत को पहुंचेगा तो उसकी कोई नेकी नहीं होगी जिस की इसे जज़ा दिया जाए| (मुस्लिम)

رواه مسلم (56 / 2808)، (7089)

٥١٦٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «حُجِبَتِ النَّارُ بِالشَّهَوَاتِ وَحُجِبَتِ الْجَنَّةُ بِالْمَكَارِهِ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. إِلَّا أَنْ عِنْدَ مُسْلِمٍ: «حُفَّتْ» . بَدَلَ «حُجِبَتْ»

5160. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जहन्नम को हुआ के साथ ढांप दिया गया है और जन्नत को नागवार चीजों से ढांप दिया गया है"| बुखारी, मुस्लिम, अलबत्ता सहीह मुस्लिम में (حُجِبَتْ) के बदले (حفت) के अल्फाज़ है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6487) و مسلم (1 / 2823) [و رواه مسلم (1 / 2822)، (7130 و 7131) من حديث سيدنا انس رضى الله عنه]

٥١٦١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَعِسَ عَبْدُ الدِّينَارِ وَعَبْدُ الدِّرْهَمِ وَعَبْدُ الْخَمِيصَةِ إِنْ أُعْطِيَ رَضِيَ وَإِنْ لَمْ يُعْطَ سَخِطَ تَعِسَ وَانْتَكَسَ وَإِذَا شِيكَ فَلَا انْتُقِشَ. طُوبَى لِعَبْدٍ أَخَذَ بِعِنَانِ فَرَسِهِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَشْعَثُ رَأْسُهُ مُغْبَرَّةٌ قَدَمَاهُ إِنْ كَانَ فِي الْحِرَاسَةِ كَانَ فِي الْحِرَاسَةِ وَإِنْ كَانَ فِي السَّاقَة كَانَ فِي السَّاقَة وَإِن اسْتَأْذَنَ لَمْ يُؤْذَنْ لَهُ وَإِنْ شَفَعَ لَمْ يشفع» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

5161. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दीनार व दिरहम और खमिसा (जैसे पैसा,एशो आराम वाले कपड़े) का बंदा हलाक हुआ, अगर इसे दिया जाए तो खुश और अगर न दिया जाए तो नाराज़ होता है, वह हलाक हुआ और ज़लील हुआ, जब इसे कांटा चुभे तो वह निकाला न जाए, खुशहाली हो इस शख़्स के लिए जो अल्लाह की राह में अपने घोड़े की लगाम थामे हुए है, उस के बाल परान्दा और पाँव गर्द आलूद है, अगर वह पहरे पर मामूर है तो वह पहरे पर डटा हुआ है और अगर लश्कर के आखिरी दस्ते में है तो वह वहां भी डटा हुआ है, अगर वह (महफ़िल में शिरकत के लिए) इजाज़त तलब करे तो उसे इजाज़त न दि जाए और अगर वह सिफारिश करे तो सिफारिश कबूल न की जाए”| (बुखारी)

رواه البخاری (2887)

٥١٦٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيُّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ مِمَّا أَخَافُ عَلَيْكُمْ مِنْ بَعْدِي مَا يُفْتَحُ عَلَيْكُمْ مِنْ زَهْرَةِ الدُّنْيَا وَزِينَتِهَا» . فَقَالَ رجلٌ: يَا رَسُول الله أَوَ يَأْتِي الْخَيْرُ بِالشَّرِّ؟ فَسَكَتَ حَتَّى ظَنَنَّا أَنَّهُ يُنَزَّلُ عَلَيْهِ قَالَ: فَمَسَحَ عَنْهُ الرُّحَضَاءَ وَقَالَ: «أَيْنَ السَّائِلُ؟» . وَكَأَنَّهُ حَمِدَهُ فَقَالَ: «إِنَّهُ لَا يَأْتِي الْخَيْرُ بِالشَّرِّ وَإِنَّ مِمَّا يُنْبِتُ الرَّبِيعُ مَا يَقْتُلُ حَبَطًا أَوْ يُلِمُّ إِلَّا آكِلَةَ الْخَضِرِ أكلت حَتَّى امتدت خاصرتاها اسْتقْبلت الشَّمْسِ فَثَلَطَتْ وَبَالَتْ ثُمَّ عَادَتْ فَأَكَلَتْ. وَإِنَّ هَذَا الْمَالَ خَضِرَةٌ حُلْوَةٌ فَمَنْ أَخَذَهُ بِحَقِّهِ وَوَضَعَهُ فِي حَقِّهِ فَنِعْمَ الْمَعُونَةُ هُوَ وَمَنْ أَخَذَهُ بِغَيْرِ حَقِّهِ كَانَ كَالَّذِي يَأْكُلُ وَلَا يَشْبَعُ وَيَكُونُ شَهِيدًا عَلَيْهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5162. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुझे अपने बाद तुम्हारे मुतल्लिक जिस चिज़ का अंदेशा है वह यह है कि तुम पर दुनिया की रोनक और उसकी ज़ीनत का दरवाज़ा खोल दिया जाएगा”, एक आदमी ने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! क्या खैर, बुराई को साथ लाएगी? आप ख़ामोश रहे हत्ता कि हमने गुमान किया के आप पर वही उतारी जा रही है, रावी बयान करते हैं, फिर आप ﷺ ने अपने (चहरे मुबारक) से पसीना साफ़ किया, और फ़रमाया: “वो साइल कहाँ है?” गोया आप ने उसकी तारीफ़ की, आप ﷺ ने फ़रमाया: “खैर, शर को साथ नहीं लाएगी, बेशक मौसमे बहार जो चारा उगाता है, उस से वह बाज़ चाराह जानवर को मार डालता है, बीमार कर देता है या हलाकत के करीब कर देता है, अलबत्ता सब्ज़ घास खाने वाला जानवर खाता है हत्ता कि उस के कोख निकल आती है, वह सूरज की तरफ रुख कर के जुगाली करता है, गोबर करता है और पेशाब करता है, और वह दोबारा (चरने) चला जाता है और दोबारा (सब्ज़ घास) खाता है, यह माल सरसब्ज़ व शादाब शिरीन है जिस ने इसे अपने ज़रूरत के मुताबिक लिया और इसे उस के हक़ के मुताबिक खर्च किया तो वह बेहतरीन मददगार है, और जिस ने इसे अपने ज़रूरत के बगैर हासिल किया तो वह इस शख़्स की तरह है जो खाता है लेकिन सैर नहीं होता और वह (माल) रोज़ ए कियामत उस के खिलाफ गवाही देगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1465) و مسلم (123 / 1052)، (2423)

٥١٦٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ عَوْفٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «فَوَاللَّهِ لَا الْفَقْرُ أَخْشَى عَلَيْكُمْ وَلَكِنْ أَخْشَى عَلَيْكُمْ أَنْ تُبْسَطَ عَلَيْكُمُ الدُّنْيَا كَمَا بُسِطَتْ عَلَى مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ فَتَنَافَسُوهَا كَمَا تَنَافَسُوهَا وتهلككم كَمَا أهلكتهم» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5163. अमर बिन ऑफ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हारे मुतल्लिक फकीरी से नहीं डरता लेकिन मुझे तुम्हारे मुतल्लिक इस बात का अंदेशा है के दुनिया तुम पर फराख कर दी जाएगी जैसे तुम से पहले लोगों पर फराख की गई थी, फिर तुम उस के मुतल्लिक वैस दी रगबत रखोगे जैसे उन्होंने उस के मुतल्लिक रगबत रखी, और वह तुम्हें हलाक कर देगी जैसे उस ने उन्हें हलाक कर दिया”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (4015) و مسلم (6 / 2961)، (7425)

٥١٦٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «اللَّهُمَّ اجْعَلْ رِزْقَ آلِ مُحَمَّدٍ قُوتًا» وَفِي رِوَايَةٍ «كفافا» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5164. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने दुआ फरमाई: “अल्लाह आले मुहम्मद ﷺ को सिर्फ इतना रीज़्क अता फरमा के उन के जिस्म व जान का रिश्ता बरक़रार रह सके”| एक दूसरी रिवायत में है: “बकदर कुफाफ” (गुज़ारा लायक रोज़ी अता फरमा)| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (6460) و مسلم (18 / 1055)، (2427)

٥١٦٥ - (صَحِيح) وَعَنْ»» عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «قَدْ أَفْلَحَ مَنْ أَسْلَمَ وَرُزِقَ كَفَافًا وَقَنَّعَهُ اللَّهُ بِمَا آتَاهُ» . رَوَاهُ مُسلم

5165. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इस शख़्स ने फलाह पाई जिस ने (अपने रब की) इताअत कर ली और इसे बकदर ज़रूरत रीज़्क अता किया गया और अल्लाह ने जो इसे अता किया उस पर उस ने किनाअत (संतुष्टि) इख़्तियार की”| (मुस्लिम)

رواہ مسلم (125 / 1054)، (2426)

٥١٦٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يَقُولُ الْعَبْدُ: مَالِي مَالِي. وَإِن مَاله مِنْ مَالِهِ ثَلَاثٌ: مَا أَكَلَ فَأَفْنَى أَوْ لَبِسَ فَأَبْلَى أَوْ أَعْطَى فَاقْتَنَى. وَمَا سِوَى ذَلِك فَهُوَ ذاهبٌ وتاركهُ للنَّاس ". رَوَاهُ مُسلم

5166. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बंदा कहता है, मेरा माल, मेरा माल, हालाँकि उस का माल फ़क़त तीन सूरतो में है जो उस ने खा कर ख़तम कर दिया, या पहन कर पोशीदा कर दिया, या (अल्लाह की राह में) दे कर ज़खीरा कर लिया, और जो उन के अलावा है वह तो उसे लोगों के लिए छोड़ कर जाने वाला है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (4 / 2959)، (7422)

٥١٦٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يَتْبَعُ الْمَيِّتَ ثَلَاثَةٌ: فَيَرْجِعُ اثْنَانِ وَيَبْقَى مَعَهُ وَاحِدٌ يَتْبَعُهُ أَهْلُهُ وَمَالُهُ وَعَمَلُهُ فَيَرْجِعُ أَهْلُهُ وَمَالُهُ وَيَبْقَى عمله ". مُتَّفق عَلَيْهِ

5167. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मय्यत के साथ तीन चीज़े जाती है, उनमें से दो वापस आ जाती है, और एक उस के साथ बाकी रहती है, उस के घर वाले, उस का माल और उस के आमाल उस के साथ जाते हैं, उस के घर वाले और उस का माल वापस आ जाते हैं, और उस के आमाल इस के साथ बाकी रह जाते हैं”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6514) و مسلم (5 / 2960)، (7424)

٥١٦٨ - (صَحِيح) وَعَنْ»» عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَيُّكُمْ مَالُ وَارِثِهِ أَحَبُّ إِلَيْهِ مِنْ مَالِهِ؟» قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا مِنَّا أَحَدٌ إِلَّا مَالُهُ أَحَبُّ إِلَيْهِ مِنْ مَالِ وَارِثِهِ. قَالَ: «فَإِنَّ مَالَهُ مَا قَدَّمَ وَمَالَ وَارِثِهِ مَا أخر» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

5168. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम में से कौन है जिसे अपने वारिसो का माल अपने माल से ज़्यादा पसंद है?” सहाबा ने अर्ज़ किया, हम में से हर एक को अपना माल अपने वारिसो के माल से ज़्यादा पसंद है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक उस का माल तो वह है जो उस ने आगे भेजा जबकि वह माल जो उस ने पीछे छोड़ा वह उस के वारिसो का है”| (बुखारी)

رواه البخارى (6442)

٥١٦٩ - (صَحِيح) وَعَن»» مُطرّف عَنْ أَبِيهِ قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يقْرَأ: (آلهاكم التكاثر)»» قَالَ: " يَقُولُ ابْنُ آدَمَ: مَالِي مَالِي ". قَالَ: «وَهَلْ لَكَ يَا ابْنَ آدَمَ إِلَّا مَا أَكَلْتَ فَأَفْنَيْتَ أَوْ لَبِسْتَ فَأَبْلَيْتَ أَوْ تصدَّقت فأمضيت؟ ؟» . رَوَاهُ مُسلم

5169. मुतर्रिफ अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: में नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ, आप

(इस वक़्त) सुरह तकासुर की तिलावत फरमा रहे थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इब्ने आदम कहता है: मेरा माल, मेरा माल, ए इब्ने आदम! हालाँकि तेरा माल तो सिर्फ वह है जो तूने खाया और ख़तम कर दिया, या पहन लिया और पोशीदा कर दिया या सदका कर के (आखिरत के लिए) आगे भेज दिया”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (3 / 2958)، (7420)

٥١٧٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَيْسَ الْغِنَى عَنْ كَثْرَةِ الْعَرَضِ وَلَكِنَّ الْغِنَى غِنَى النَّفس» مُتَّفق عَلَيْهِ.

5170. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “माल दारी, माल और साज़ो सामान की कसरत से हासिल नहीं होती, बल्कि मालदारी तो नफ्स की माल दारी (यानी किनाअत (संतुष्टि)) है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6446) و مسلم (120 / 1051)، (2420)

दिलों को नरम बनाने वाली बातों का बयान	• كتاب الرقاق
दूसरी फस्ल	• الْفَصْلُ الثَّانِي

٥١٧١ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي»» هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم: «من أَخذ عَنِّي هَؤُلَاءِ الْكَلِمَاتِ فَيَعْمَلُ بِهِنَّ أَوْ يُعَلِّمُ مَنْ يَعْمَلُ بِهِنَّ؟» قُلْتُ: أَنَا يَا رَسُولَ الله فَأخذ بيَدي فَعَدَّ خَمْسًا فَقَالَ: «اتَّقِ الْمَحَارِمَ تَكُنْ أَعْبَدَ النَّاسِ وَارْضَ بِمَا قَسَمَ اللَّهُ لَكَ تَكُنْ أَغْنَى النَّاسِ وَأَحْسِنْ إِلَى جَارِكَ تَكُنْ مُؤْمِنًا وَأَحِبَّ لِلنَّاسِ مَا تُحِبُّ لِنَفْسِكَ تَكُنْ مُسْلِمًا وَلَا تُكْثِرِ الضَّحِكَ فَإِنَّ كَثْرَةَ الضَّحِكَ تُمِيتُ الْقَلْبَ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

5171. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कौन है जो मुझ से यह कलिमात सीखे और इन पर अमल करे या किसी ऐसे शख़्स को सिखाए जो इन पर अमल करे ?” मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! में, चुनांचे आप ने मेरा हाथ पकड़ा और पांच चीज़े शुमार की, आप ﷺ ने फ़रमाया: “महारिम (अल्लाह की हराम करदा चीजों) से बच जाओ, इस तरह तुम सब लोगों से ज़्यादा इबादत गुज़ार बन जाओगे, अल्लाह ने जो तुम्हारी किस्मत में लिख दिया है उस पर राज़ी हो जाओ, इस तरह तुम सब लोगों से ज़्यादा गनी बन जाओगे, अपने पड़ोसी से अच्छा सुलूक करोगे तो मोमिन बन जाओगे, लोगों के लिए वही चीज़ पसंद करो जो तुम अपनी ज़ात के लिए पसंद करते हो, तो मुसलमान बन जाएगा ज़्यादा, मत हंसा करो क्योंकि ज़्यादा हँसना दिल को

मुर्दा कर देता है”| अहमद तिरमिज़ी, और इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ احمد (2 / 310 ح 8081) و الترمذی (2305) * ابو طارق مجھول و الحسن البصری مدلس و عنعن

٥١٧٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ اللَّهَ يَقُولُ: ابْنَ آدَمَ تَفَرَّغْ لِعِبَادَتِي أَمْلَأْ صَدْرَكَ غِنًى وَأَسِدَّ فَقْرَكَ وَإِنْ لَا تَفْعَلْ مَلَأْتُ يَدَكَ شُغُلًا وَلَمْ أسُدَّ فقرك ". رَوَاهُ أَحْمد وَابْن مَاجَه

5172. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक अल्लाह फरमाता है: इंसान मेरी इबादत के लिए फारिग़ हो जा, मैं तेरे दिल को माल दारी (किनाअत (संतुष्टि)) से भर दूंगा, तेरी मुहताजी ख़तम करूँगा और अगर तू (ऐसे) नहीं करेगा तो मैं तुम्हें कामो में मसरूफ करूँगा और तेरी मुहताजी ख़तम नहीं करूँगा”| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ احمد (2 / 358 ح 8681) و ابن ماجہ (4107)

٥١٧٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٍ»» قَالَ: ذُكِرَ رَجُلٌ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِعِبَادَةٍ وَاجْتِهَادٍ وَذُكِرَ آخَرُ بِرِعَّةٍ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَعْدِلْ بِالرِّعَّةِ» . يَعْنِي الْوَرَعَ. رَوَاهُ التِرمذيُّ

5173. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के पास एक आदमी की इबादत और इज्तीहाद का ज़िक्र किया गया और दूसरे आदमी का तक़्वा व एहतियात बरतने का ज़िक्र किया गया तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: “तक्वा के साथ (इस इबादत व इज्तीहाद का) मुकाबला न करो”| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ الترمذی (2519 وقال : غریب) * محمد بن عبد الرحمن بن نبیه : مجھول الحال

٥١٧٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَمْرِو»» بْنِ مَيْمُونٍ الْأَوْدِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِرَجُلٍ وَهُوَ يَعِظُهُ: " اغْتَنِمْ خَمْسًا قَبْلَ خَمْسٍ: شَبَابَكَ قَبْلَ هَرَمِكَ وَصِحَّتَكَ قَبْلَ سَقَمِكَ وَغِنَاكَ قَبْلَ فَقْرِكَ وَفَرَاغَكَ قَبْلَ شُغْلِكَ وَحَيَاتَكَ قَبْلَ مَوْتِكَ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ مُرْسلا

5174. अमर बिन मयमुन अल अवदी रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने एक आदमी को नसीहत करते हुए फ़रमाया: “पांच चीजों को पांच चीजों से पहले गनीमत समझो: अपनी जवानी को अपने बुढ़ापे से पहले, अपने सेहत को अपने मर्ज़ से पहले, अपने माल दार होने को अपने मुहताजी से पहले, अपने फरागत को

अपने मसरूफियत से पहले और अपने जिंदगी को अपने मौत से पहले”| इमाम तिरमिज़ी ने इसे मुरसल रिवायत किया है| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (لم اجده) [و البغوی فی شرح السنة (14 / 224 ح 2021) و ابن المبارک فی الزھد (2) و النسائی فی الکبری کما فی تحفة الاشراف (13 / 328 ح 19179)] * السند مرسل و رواہ الحاکم (4 / 306) موصولاً من حدیث ابن عباس و صححه علی شرط الشیخین و وافقه الذھبی و سنده حسن

٥١٧٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَا يَنْتَظِرُ أَحَدُكُمْ إِلَّا غِنًى مُطْغِيًا أَوْ فَقْرًا مُنْسِيًا أَوْ مَرَضًا مُفْسِدًا أَوْ هَرَمًا مُفَنِّدًا أَوْ مَوْتًا مُجْهِزًا أَوِ الدَّجَّالَ فَالدَّجَّالُ شَرٌّ غَائِبٌ يُنْتَظَرُ أَوِ السَّاعَةَ وَالسَّاعَةُ أَدْهَى وَأَمَرُّ» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ

5175. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम में से कोई हद से तजावुज़ कर देने वाली तवंगरी का इंतज़ार करता है, या (इबादत व इताअत से) भुला देने वाली मुहताजी का इंतज़ार करता है, या ख़राब कर देने वाले मर्ज़ का, या बेहूदा गोई कराने वाले बुढ़ापे का, या अचानक आ जाने वाली मौत का, या दज्जाल का, दज्जाल तो पोशीदा फितना है जिस का इंतज़ार है, या कियामत का और कियामत बड़ी आफत और नागवार चीज़ है”| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف جدا ، رواہ الترمذی (2306 وقال : غریب حسن) و النسائی (لم اجدہ) * محرز بن ھارون : متروک ضعفه الجمھور

٥١٧٦ - (حسن) وَعَنْهُ»» أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَلَا إِنَّ الدُّنْيَا مَلْعُونَةٌ مَلْعُونٌ مَا فِيهَا إلا ذكرُ الله وَمَا وَالَاهُ وَعَالِمٌ أَوْ مُتَعَلِّمٌ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

5176. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सुन लो! दुनिया और जो कुछ इस में है सब मलऊन हैं, हाँ! अलबत्ता अल्लाह का ज़िक्र, अल्लाह के पसंदीदा आमाल और आलिम व मुतअल्लिम उस से मुशतश्ना है”| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ الترمذی (2322 وقال : حسن غریب) و ابن ماجه (4112)

٥١٧٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ سَهْلِ»» بْنِ سَعْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَوْ كَانَتِ الدُّنْيَا تَعْدِلُ عِنْدَ اللَّهِ جَنَاحَ بَعُوضَةٍ مَا سَقَى كَافِرًا مِنْهَا شربة» رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

5177. सहल बिन साद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगर दुनिया (की अहमियत) अल्लाह के नज़दीक मच्छर के पर के बराबर भी होती तो वह किसी काफ़िर को उस में से पानी का

घूंट भी न पिलाता”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه احمد (لم اجده) و الترمذى (2320 وقال : صحيح غريب) و ابن ماجه (4110) * عبدالحميد بن سليمان ضعيف و للحديث شاهد ضعيف عند القضاعى فى مسند الشهاب (1439)

٥١٧٨ - (إِسْنَاده جيد) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَتَّخِذُوا الضَّيْعَةَ فَتَرْغَبُوا فِي الدُّنْيَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي «شعب الْإِيمَان»

5178. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जागीरे मत बनाओ वरना तुम दुनिया में की रगबत आ जाएगी”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذى (2328 وقال : حسن) و البيهقى فى شعب الايمان (10391)

٥١٧٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» مُوسَى قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَحَبَّ دُنْيَاهُ أَضَرَّ بِآخِرَتِهِ وَمَنْ أَحَبَّ آخِرَتَهُ أَضَرَّ بِدُنْيَاهُ فَآثِرُوا مَا يَبْقَى عَلَى مَا يَفْنَى» . رَوَاهُ أَحْمد وَالْبَيْهَقِيّ فِي «شعب الْإِيمَان»

5179. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस ने दुनिया को पसंद किया, उस ने आखिरत का नुकसान किया और जिस ने आखिरत को पसंद किया तो उस ने दुनिया को नुकसान पहुँचाया, तुम बाकी रहने वाली चीज़ को फ़ना (नष्ट) होने वाली चीज़ पर तरजीह दो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (4 / 412 ح 1993) و البيهقى فى شعب الايمان (10337 ، نسخة محققة : 9854 و فى السنن الكبرى 3 / 370) [و الحاكم (3 / 319 ، 4 / 308)] * وقال المنذرى :’’ المطلب : لم يسمع من ابى موسى ‘‘

٥١٨٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «لُعِنَ عَبْدُ الدِّينَارِ وَلُعِنَ عَبْدُ الدِّرْهَمِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5180. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “दिरहम दीनार का बंदा मलउन है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (2375 وقال : حسن غريب) * يونس بن عبيد و شيخه الحسن البصرى مدلسان و عنعنا و صح الحديث بلفظ :’’ تعس عبد الدينار و الدرهم ‘‘ (رواه البخارى : 886 وغيره)

٥١٨١ - (صَحِيح) وَعَنْ»» كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا ذِئْبَانِ جَائِعَانِ أُرْسِلَا فِي غَنَمٍ

بِأَفْسَدَ لَهَا مِنْ حِرْصِ الْمَرْءِ عَلَى الْمَالِ والشرف لدِينِهِ» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ والدارمي

5181. काब बिन मालिक अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दो भूके भेड़िये, जिन्हें बकरियों के रेवड़ में छोड़ा जाए तो वह इन के लिए इतना नुकसान देह नहीं जितनी आदमी के माल वजाह की हरस उस के दीन के लिए नुकसान देह है”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (2376 وقال : حسن صحیح) و الدارمی (2 / 304 ح 2733)

٥١٨٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن خباب»» عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَا أَنْفَقَ مُؤْمِنٌ مِنْ نَفَقَةٍ [ص:١٤٣] إِلَّا أُجِرَ فِيهَا إِلَّا نَفَقَتَهُ فِي هَذَا التُّرَابِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

5182. खबाब रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मोमिन जो भी खर्च करता है तो उस पर इसे अज़र मिलता है लेकिन उस ने जो खर्च इस मिट्टी पर (ज़रूरत से ज़्यादा) किया उस पर इसे अज़र नहीं मिलता”| (सहीह)

صحیح ، رواه الترمذی (2483 وقال : صحیح) و ابن ماجه (4163)

٥١٨٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «النَّفَقَةُ كُلُّهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ إِلَّا الْبِنَاءَ فَلَا خَيْرَ فِيهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

5183. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सारा खर्च अल्लाह की राह में सिवाय तामिरात के, इस (पर खर्च करने) में कोई खैर नहीं”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (2482) * زافر : صدوق ضعیف الحدیث ضعفه الجمھور من کثرة اوھامه کما حققته فی التعلیق علی تھذیب التھذیب

٥١٨٤ - (ضَعِيف) وَعَنْهُ»» أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَرَجَ يَوْمًا وَنَحْنُ مَعَهُ فَرَأَى قُبَّةً مُشْرِفَةً فَقَالَ: «مَا هَذِهِ؟» قَالَ أَصْحَابُهُ: هَذِهِ لِفُلَانٍ رَجُلٍ مِنَ الْأَنْصَارِ فَسَكَتَ وَحَمَلَهَا فِي نَفْسِهِ حَتَّى إِذَا جَاءَ صَاحِبُهَا فَسَلَّمَ عَلَيْهِ فِي النَّاسِ فَأَعْرَضَ عَنْهُ صَنَعَ ذَلِكَ مِرَارًا حَتَّى عرفَ الرجلُ الغضبَ فِيهِ والإعراضَ فَشَكَا ذَلِكَ إِلَى أَصْحَابِهِ وَقَالَ: وَاللَّهِ إِنِّي لَأُنْكِرُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. قَالُوا: خَرَجَ فَرَأَى قُبَّتَكَ. فَرَجَعَ الرَّجُلُ إِلَى قُبَّتِهِ فَهَدَمَهَا حَتَّى سَوَّاهَا بِالْأَرْضِ. فَخَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَاتَ يَوْمٍ فَلَمْ يَرَهَا قَالَ: «مَا فَعَلَتِ الْقُبَّةُ؟» قَالُوا: شَكَا إِلَيْنَا صَاحِبُهَا إِعْرَاضَكَ فَأَخْبَرْنَاهُ فَهَدَمَهَا. فَقَالَ: «أَمَا إِنَّ كُلَّ بِنَاءٍ وَبَالٌ عَلَى صَاحِبِهِ إِلَّا مَا لَا إِلَّا مَا لَا» يَعْنِي مَا لَا بُدَّ مِنْهُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

5184. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ एक रोज़ बाहर तशरीफ़ लाए और हम आप के साथ थे, आप ने एक ऊँचा सा गुंबज देखा तो फ़रमाया: “ये क्या है?” आप के सहाबा ने अर्ज़ किया, यह एक अंसारी शख़्स का है, आप ख़ामोश हो गए और इसे अपने दिल में रखा हत्ता कि जब उस का मालिक आया तो उस ने लोगों की मौजूदगी में आप को सलाम किया, लेकिन आप ने उस से एअराज़ किया, उस ने कई मर्तबा ऐसे किया हत्ता कि इस आदमी ने आप में नाराज़ी और अपने से बेरुखी पहचान ली, उस ने अपने साथियो से वजह दरियाफ्त की और कहा: अल्लाह की क़सम! मैं रसूलुल्लाह ﷺ को नाराज़ महसूस करता हूँ लेकिन वजहे नाराज़ी मालुम नहीं, उन्होंने बताया आप बाहर तशरीफ़ लाए थे और आप ने तुम्हारा गुंबज देखा था वह आदमी अपने गुंबज की तरफ गया और इसे गिरा कर ज़मीन के बराबर कर दिया, फिर एक रोज़ रसूलुल्लाह ﷺ बाहर तशरीफ़ लाए तो आप ने इस (गुंबज) को न देखा तो फ़रमाया: “गुंबज को क्या हुआ ?” सहाबा ने अर्ज़ किया, उस के मालिक ने आप की बेरुखी की हम से वजह दरियाफ्त की तो हमने इसे बता दिया, बस उस ने इसे गिरा दिया आप ﷺ ने फ़रमाया: “सुन लो! हर इमारत जिसके बगैर गुज़ारा हो सकता हो वह अपने मालिक के लिए वबाल है”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (5238)

٥١٨٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي»» هَاشم بن عُتبَةَ قَالَ: عَهِدَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّمَا يَكْفِيكَ مِنْ جَمْعِ الْمَالِ خَادِمٌ وَمَرْكَبٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ. وَفِي بَعْضِ نسخ «المصابيح» عَن أبي هَاشم بن عتيد بِالدَّال بدل التَّاء وَهُوَ تَصْحِيف

5185. अबू हाशिम बिन उत्बा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे वसीयत करते हुए फ़रमाया: “तुम्हारे लिए इतना माल जमा करना ही काफी है के एक खादिम हो और अल्लाह की राह में (जिहाद करने के लिए) एक सवारी हो”| अहमद, तिरमिज़ी, नसई, इब्ने माजा और मसाबिह के बाज़ नुस्खों में अबू हाशिम बिन उत्बद यानी ता (ت) के बजाए दाल (د) का ज़िक्र है और यह तकहिफ है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه احمد (5 / 290 ح 22863) و الترمذی (2327) و النسائی (8 / 218219 ح 5374) و ابن ماجه (4103) و ذکره البغوی فی مصابیح السنة (3 / 423424 ح 4027 و فیه '' عتبة '' بالتاء) * ابو وائل رواه عن سمرة بن سهم وھو رجل مجھول و روی النسائی فی الکبری (5 / 507 ح 9812) بسند حسن عن بریدة رضی الله عنه رفعه : ((یکفی احدکم من الدنیا خادم و مرکب)) وھو یغنی عنه

٥١٨٦ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " لَيْسَ لِابْنِ آدَمَ حَقٌّ فِي سِوَى هَذِهِ الْخِصَالِ: بَيْتٌ يَسْكُنُهُ وَثَوْبٌ يُوَارِي بِهِ عَوْرَتَهُ [ص:١٤٣ وجلف الْخبز وَالْمَاء ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5186. उस्मान रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “इंसान को उन तीन चीजों: रिहाइश के

लिए घर, सतर ढांपने के लिए कपड़े और रोटी पानी के सिवा किसी चिज़ का हक़ नहीं”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2341 وقال : صحیح)

٥١٨٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ سَهْلِ»» بْنِ سَعْدٍ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ دُلَّنِي عَلَى عَمَلٍ إِذَا أَنَا عَمِلْتُهُ أَحَبَّنِي اللَّهُ وَأَحَبَّنِي النَّاسُ. قَالَ: «ازْهَدْ فِي الدُّنْيَا يُحِبُّكَ اللَّهُ وَازْهَدْ فِيمَا عِنْدَ النَّاسِ يُحِبَّكَ النَّاسُ» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْن مَاجَه

5187. सहल बिन साद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी आया और उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मुझे ऐसा अमल बताइए जब में वह अमल कर लू तो मैं अल्लाह और लोगों का महबूब बन जाऊ आप ﷺ ने फ़रमाया: “दुनिया से बे रगबत हो जा, अल्लाह तुझ से मुहब्बत करेगा और जो कुछ लोगों के पास है उस से बे रगबत हो जा तो लोग तुझ से मुहब्बत करेंगे”| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواه الترمذی (لم اجده) و ابن ماجه (4102) * فیه خالد بن عمرو القرشی : کذاب قضاع وله متابعات مردودة و شواهد ضعیفة فالسند موضوع و الحدیث ضعیف

٥١٨٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن ابْنِ»» مَسْعُودٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَامَ عَلَى حَصِيرٍ فَقَامَ وَقَدْ أَثَّرَ فِي جَسَدِهِ فَقَالَ ابْنُ مَسْعُودٍ: يَا رَسُولَ اللَّهِ لَوْ أَمَرْتَنَا أَنْ نَبْسُطَ لَكَ وَنَعْمَلَ. فَقَالَ: «مَا لِي وَلِلدُّنْيَا؟ وَمَا أَنَا وَالدُّنْيَا إِلَّا كَرَاكِبٍ اسْتَظَلَّ تَحْتَ شَجَرَةٍ ثُمَّ رَاحَ وَتَرَكَهَا» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْن مَاجَه

5188. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ एक चटाई पर सो गए जब उठो तो आप के जसद अतहर पर इस (चटाई) के निशानात थे, इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! अगर आप हमें हुक्म फरमाए तो हम आप के लिए नरम बिस्तर तैयार कर दे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मेरा दुनिया से क्या सारोकार में और दुनिया तो ऐसे हैं जैसे कोई सवार किसी दरख्त के नीचे साया हासिल करने के लिए रुकता है और फिर कुच कर जाता है और इसे वहीँ छोड़ जाता है”| (हसन)

حسن ، رواه احمد (1 / 391 ح 3709) و الترمذی (2377 وقال : صحیح) و ابن ماجه (4109)

٥١٨٩ - (حسن) وَعَنْ»» أَبِي أَمَامَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَغْبَطُ أَوْلِيَائِي عِنْدِي لَمُؤْمِنٌ خَفِيفُ الْحَاذِ ذُو حَظٍّ مِنَ الصَّلَاةِ أَحْسَنَ عِبَادَةَ رَبِّهِ وَأَطَاعَهُ فِي السِّرِّ وَكَانَ غَامِضًا فِي النَّاسِ لَا يُشَارُ إِلَيْهِ بِالْأَصَابِعِ وَكَانَ رِزْقُهُ كَفَافًا فَصَبَرَ عَلَى ذَلِكَ» ثُمَّ نَقَدَ بِيَدِهِ فَقَالَ: «عُجِّلَتْ مَنِيَّتُهُ قَلَّتْ بَوَاكِيهِ قَلَّ تُرَاثُه» . رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

5189. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मेरे दोस्तों में से वह मोमिन मेरे नज़दीक ज़्यादा काबिले रश्क है, जिसके पास साज़ो सामान कम हो, नमाज़ में उसे लज्ज़त हासिल

होती हो, अपने रब की इबादत खूब अच्छी तरह करता हो, और वह पोशीदा हालत मैं भी उसकी इताअत करता हो, लोगों में मशहूर न हो, उसकी तरफ उंगलिया न उठती हो, उस का रीज़्क गुज़ार लायक हो और वह उस पर साबिर हो”, फिर आप ﷺ ने एक चुटकी बजाई और फ़रमाया: “उस की मौत जल्दी आ गई, इसे रोने वालिया कम है, और उसकी मीरास भी कम है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (5 / 252 ح 22520) و الترمذی (2347) [و ابن ماجه (4117) بسند آخر فيه صدقة بن عبدالله و ايوب بن سليمان ضعيفان)] * على بن يزيد : ضعيف جدًا و عبيد الله بن زحر : ضعيف ، و للحديث طرق كلها ضعيفة كما حققته فى تخريج مسند الحميدی (911) و النهاية (30)

٥١٩٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " عَرَضَ عَلَيَّ رَبِّي لِيَجْعَلَ لِي يطحاء مَكَّة ذَهَبا فَقلت: لَا يارب وَلَكِنْ أَشْبَعُ يَوْمًا وَأَجُوعُ يَوْمًا فَإِذَا جُعْتُ تَضَرَّعْتُ إِلَيْكَ وَذَكَرْتُكَ وَإِذَا شَبِعَتُ حَمِدْتُكَ وَشَكَرْتُكَ ". رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ

5190. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरे रब ने मुझे पेश कश की के वह मक्का की वादी बतहा (या मक्का के संगरेज़ो) को सोना बना दे, मैंने कहा: रब जी! नहीं, बल्कि मैं चाहता हूँ की मैं एक रोज़ शक्म सैर हूँ और एक रोज़ भूखा रहूँ जब में भूखा रहूँ तो तेरे हुज़ूर आजिज़ी करू और तेरा ज़िक्र करू और जब शक्म सैर होऊं तो तेरी हम्द बयान करू और तेरा शुक्र अदा करू”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه احمد (5 / 254 ح 22543) و الترمذی (2347) * على بن يزيد ضعيف جدًا و عبيد الله بن زحر ضعيف ، انظر الحديث السابق (5189)

٥١٩١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عبيدِ»» الله بنِ مِحْصَنٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ: «مَنْ أَصْبَحَ مِنْكُمْ آمِنًا فِي سِرْبِهِ مُعَافًى فِي جَسَدِهِ عِنْدَهُ قُوتُ يَوْمِهِ فَكَأَنَّمَا حِيزَتْ لَهُ الدُّنْيَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

5191. उबैदुल्लाह बिन मुह्सन रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम में से जो शख़्स इस हाल में सुबह करे के इसे अपने अहल व अयाल के मुतल्लिक कोई खतरा न हो और वह तंदुरस्त हो, और उस के पास एक दिन का खाना मौजूद हो तो गोया उस के लिए तमाम अतराफ़ से दुनिया जमा कर दी गई”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2346)

٥١٩٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن مقدامٍ»» بْنِ مَعْدِي كَرِبَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَا مَلَأَ آدَمِيٌّ وِعَاءً شَرًّا مِنْ بَطْنٍ بِحَسْبِ ابْنِ آدَمَ أُكُلَاتٌ يُقِمْنَ صُلْبَهُ فَإِنْ كَانَ لَا مَحَالَةَ فَثُلُثٌ طَعَامٌ وَثُلُثٌ شَرَابٌ وَثُلُثٌ لِنَفَسِهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

5192. मिक्दाम बिन मअदीकरीब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “किसी आदमी ने ऐसा कोई बर्तन नहीं भरा जो उस के पेट से ज़्यादा बड़ा हो, इंसान के लिए चंद लुकमे ही काफी है जो उसकी कमर सीधी रख सके, अगर ज़्यादा खाना ज़रूर रही हो तो फिर (पेट का) तिहाई हिस्सा खाने के लिए तिहाई पानी के लिए और तिहाई सांस के लिए हो”| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (2380 وقال : حسن صحيح) و ابن ماجه (3349)

٥١٩٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ»» عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَمِعَ رَجُلًا يَتَجَشَّأُ فَقَالَ: «أَقْصِرْ مِنْ جُشَائِكَ فَإِنَّ أَطْوَلَ النَّاسِ جُوعًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَطْوَلُهُمْ شِبَعًا فِي الدُّنْيَا» . رَوَاهُ فِي «شرح السّنة» . وروى التِّرْمِذِيّ نَحوه

5193. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने एक आदमी को डकार लेते हुए सूना तो फ़रमाया: “अपना डकार कम कर, क्योंकि रोज़ ए कियामत वह शख़्स लोगों से बहोत देर तक भूखा रहेगा जो दुनिया में खूब सैर हो कर खाता था”, शरह सुन्ना और इमाम तिरमिज़ी ने इसी तरह रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه البغوی فی شرح السنة (14 / 250 تحت 4049) بلا سند عن يحيی البکاء عن ابن عمر ، و اسنده الترمذی (2478) وقال :’’ حسن غريب ‘‘ و سنده ضعيف* يحيی البکاء ضعيف و للحديث شواهد ضعيفة عند ابن ماجه (3351) وغيره

٥١٩٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن كَعْب»» بن عِياضٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ لِكُلِّ أُمَّةٍ فِتْنَةً وَفِتْنَةُ أُمتي المالُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5194. काब बिन इयाज़ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “हर उम्मत के लिए एक फितना (आज़माइश व इम्तेहान) रहा है और मेरी उम्मत का फितने माल है”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذی (2336 وقال : حسن صحيح غريب)

٥١٩٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " يُجَاءُ بِابْنِ آدَمَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ كَأَنَّهُ بَذَجٌ فَيُوقَفُ بَيْنَ يَدَيِ اللَّهِ فَيَقُولُ لَهُ: أَعْطَيْتُكَ وَخَوَّلْتُكَ وَأَنْعَمْتُ عَلَيْكَ فَمَا صَنَعْتَ؟ فَيَقُولُ: يَا رَبِّ جَمَعْتُهُ وَثَمَّرْتُهُ وَتَرَكْتُهُ أَكْثَرَ مَا كَانَ فَارْجِعْنِي آتِكَ بِهِ كُلِّهِ. فَيَقُولُ لَهُ: أَرِنِي مَا قَدَّمْتَ. فَيَقُولُ: رَبِّ جَمَعْتُهُ وَثَمَّرْتُهُ وَتَرَكْتُهُ أكثر ماكان فَارْجِعْنِي آتِكَ بِهِ كُلِّهِ. فَإِذَا عَبْدٌ لَمْ يُقَدِّمْ خَيْرًا فَيُمْضَى بِهِ إِلَى النَّارِ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَضَعفه

5195. अनस रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इंसान को रोज़ ए कियामत बकरी के बच्चे की तरह (ज़िल्लत के साथ) पेश किया जाएगा, और इसे अल्लाह के हुज़ूर खड़ा किया जाएगा तो वह उस से फरमाएगा मैंने तुझे (हयात व हवास, सेहत व आफियत) अता की, मैंने तुझे खादिम, मुलाज़िम अता

किए और (अंबिया व किताब नाज़िल फरमा कर) तुझ पर इनाम फ़रमाया, तूने क्या किया? वह अर्ज़ करेगा: रब जी! मैंने इस (माल) को जमा किया और उस को बढ़ाया और जितना था उस से ज़्यादा छोड़ा तो मुझे वापस भेज में वह सारा तेरी खिदमत में ले आता हूँ, इसे कहा जाएगा: तुमने जो आगे भेजा था वह मुझे दिखाओ, तो वह फिर वही कहेगा, मैंने इसे जमा किया, इसे बढ़ाया और वह जितना था उस से ज़्यादा इसे छोड़ा, लिहाज़ा तू मुझे वापस भेज में वह सारा तेरी खिदमत मे ले आता हूँ, चुनांचे वह ऐसा (बदकिस्मत) इंसान होगा जिस ने कोई नेकी आगे नहीं थी भेजी होगी, इसे जहन्नम की तरफ भेज दिया जाएगा”| तिरमिज़ी, और उन्होंने इसे जईफ करार दिया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2427) * اسماعیل بن مسلم : ضعیف الحدیث و للحدیث شاھد ضعیف

٥١٩٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ [ص:١٤٣ أَوَّلَ مَا يُسْأَلُ الْعَبْدُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنَ النَّعِيمِ أَنْ يُقَالَ لَهُ: أَلَمْ نُصِحَّ جِسْمَكَ؟ وَنَرْوِكَ من المَاء الْبَارِدِ؟ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5196. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रोज़ ए कियामत बंदे से नेअमतो के बारे में सबसे पहले यूँ सवाल किया जाएगा: क्या हम ने तेरे जिस्म को दुरुस्त नहीं बनाया था, और (क्या) हमने तुझे ठंडे पानी से सेराब नहीं किया था ?” (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه الترمذی (3358)

٥١٩٧ - (صَحِيح لشواهده) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " لَا تَزُولُ قَدَمَا ابْنِ آدَمَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حَتَّى يُسْأَلَ عَنْ خَمْسٍ: عَنْ عُمُرِهِ فِيمَا أَفْنَاهُ وَعَنْ شَبَابِهِ فِيمَا أَبْلَاهُ وَعَنْ مَالِهِ مِنْ أَيْنَ اكْتَسَبَهُ وَفِيمَا أَنْفَقَهُ وَمَاذَا عَمِلَ فِيمَا عَلِمَ؟ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

5197. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “रोज़ ए कियामत इंसान के कदम (अल्लाह के दरबार में बराबर जमे रहेंगे हत्ता कि उस से पांच चीजों के मुतल्लिक न पूछ लिया जाए: उसकी उमर के मुतल्लिक के उस ने इसे किन कामो में ख़तम किया, उसकी जवानी के मुतल्लिक के उस ने इसे कहाँ ज़ाए किया, उस के माल के मुतल्लिक के उस ने इसे कहाँ से हासिल किया और इसे किन मसारिफ़ में खर्च किया और अपने इल्म के मुताबिक कितना अमल किया” तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه الترمذی (2416)* حسین بن قیس الرحبی متروک و للحدیث شواھد ضعیفة

दिलों को नरम बनाने वाली बातों का बयान • كتاب الرقَاق

तीसरी फस्ल • الْفَصْلُ الثَّالِث

٥١٩٨ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي»» ذَرٍّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَهُ: «إِنَّكَ لَسْتَ بِخَيْرٍ مِنْ أَحْمَرَ وَلَا أَسْوَدَ إِلَّا أَنْ تفضلَه بتقوى» . رَوَاهُ أَحْمد

5198. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे फ़रमाया: “ना तुम सुर्ख से बेहतर हो न सियाह से मगर यह कि तुम उस से तक़्वा के ज़रिए फ़ज़ीलत हासिल करो”| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ احمد (5 / 158 ح 21736) * قال المنذری :’’ رجالہ ثقات الا ان بکر بن عبداللہ المزنی لم یسمع من ابی ذر فالسند منقطع ‘‘ و حدیث احمد (5 / 411 ، مجمع الزوائد 8 / 84 و سندہ صحیح) یغنی عنہ

٥١٩٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا زَهِدَ عَبْدٌ فِي الدُّنْيَا إِلَّا أَنْبَتَ اللَّهُ الْحِكْمَةَ فِي قَلْبِهِ وَأَنْطَقَ لِسَانَهُ وَبَصَّرَهُ عَيْبَ الدُّنْيَا وَدَاءَهَا وَدَوَاءَهَا وَأَخْرَجَهُ مِنْهَا سَالِمًا إِلَى دَارِ السَّلَامِ» رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي «شعب الْإِيمَان»

5199. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बंदा दुनिया से बे रगबती इख़्तियार करता है तो अल्लाह उस का दिल में हिकमत पैदा फरमा देता है, इस (हिकमत) को उसकी ज़ुबान पर जारी फरमा देता है, दुनिया का ऐब, उसकी बीमारिया और उस के इलाज पर इसे बसीरत अता फरमा देता है और इसे उस से सहीह सलाम दारुल सलाम (जन्नत) की तरफ निकाल ले जाता है”| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف جدا ، رواہ البیھقی فی شعب الایمان (10532 ، نسخۃ محققۃ : 10050) * فیہ عمر بن صبح : متروک متھم و بشیر بن زاذان : ضعیف جدًا

٥٢٠٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ»» أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «قَدْ أَفْلَحَ مَنْ أَخْلَصَ اللَّهُ قلبَه للْإِيمَان وجعلَ قلبَه سليما ولسانَه صَادِقا وَنَفْسَهُ مُطْمَئِنَّةً وَخَلِيقَتَهُ مُسْتَقِيمَةً وَجَعَلَ أُذُنَهُ مُسْتَمِعَةً وَعَيْنَهُ نَاظِرَةً فَأَمَّا الْأُذُنُ فَقَمِعٌ وَأَمَّا الْعَيْنُ فَمُقِرَّةٌ لِمَا يُوعَى الْقَلْبُ وَقَدْ أَفْلَحَ مَنْ جَعَلَ قَلْبَهُ وَاعِيًا» رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي «شعب الْإِيمَان»

5200. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इस शख़्स ने फलाह पाई जिस का दिल को अल्लाह ने ईमान के लिए खालिस कर दिया, उस का दिल को (हसद व बुग्ज़ वगैरा से) सलामत रखा, उसकी ज़ुबान को रास्तगो बनाया, उस के नफ्स को मुतमईन बनाया, उसकी तबियत को मुस्तकीम बनाया उस के कानों को गौर से (हक़) सुनने वाला और उसकी आँख को (दलाइल) देखने वाला बनाया, कान इस चीज़

के लिए जिसे दील महफ़ूज़ रखता है, कैफ हैं और आँख महल करार व सबात है और इस शख़्स ने फलाह पाई जिस ने अपने दिल को मुहाफ़िज़ बनाया"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (5 / 147 ح 21635) و البيهقى فى شعب الايمان (108 ، نسخة محققة : 107) * خالد بن معدان عن ابى ذر رضى الله عنه : منقطع

٥٢٠١ - (إِسْنَاده جيد) وَعَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا رَأَيْتَ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ يُعْطِي الْعَبْدَ مِنَ الدُّنْيَا عَلَى مَعَاصِيهِ مَا يُحِبُّ فَإِنَّمَا هُوَ اسْتِدْرَاجٌ» ثُمَّ تَلَا [ص:١٤٣ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: (فَلَمَّا نسوا ماذكروا بِهِ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ أَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ حَتَّى إِذَا فَرِحُوا بِمَا أُوتُوا أَخَذْنَاهُمْ بَغْتَةً فَإِذَا هم مبلسون)»» رَوَاهُ أَحْمد

5201. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "जब तुम अल्लाह अज़्ज़वजल को देखो के वह बंदे को अपने नज़र अंदाज़गी के बावजूद दुनिया दे रहा है जिस (नज़रंदाज़ी) को वह पसंद नहीं करता तो वह कोई तदबीर है", फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाई: "जब उन्होंने इस चीज़ को भुला दिया जिसके ज़रिए उन्हें समझाया गया था तो हमने इन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिए, हत्ता कि जब वह अता करदा चीजों पर खुश हो गए तो हमने उन्हें अचानक पकड़ लिया, तब वह हैरत ज़दा और ना उम्मीद हो गए"| (हसन)

حسن ، رواه احمد (4 / 145 ح 17444) * رشدين بن سعد ابو الحجاج : ضعيف و للحديث شاهد عند البيهقى (شعب الايمان : 4540 ، نسخة محققة : 4220) و سنده حسن

٥٢٠٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» أَمَامَةَ أَنَّ رَجُلًا مِنْ أَهْلِ الصُّفَّةِ تُوُفِّيَ وَتَرَكَ دِينَارًا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كَيَّةٌ» قَالَ: ثُمَّ تُوُفِّيَ آخَرُ فَتَرَكَ دِينَارَيْنِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كَيَّتَانِ» رَوَاهُ أَحْمَدُ والبيهقيُّ فِي «شعب الْإِيمَان»

5202. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि अहले सुफ्फा में से एक आदमी फौत हो गया तो उस ने एक दीनार छोड़ा तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "(ये दीनार) एक दाग (देने के बाईस)"| रावी बयान करते हैं, फिर दूसरा आदमी फौत हुआ तो उस ने दो दीनार छोड़े तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "(ये दो दीनार) दो दाग (देने का बाईस) है"| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (5 / 253 ح 22533) و البيهقى فى شعب الايمان (6963) * و للحديث شواهد صحيحة عند احمد (5 / 253 ، 258) و ابن حبان (الموارد : 2481 سنده حسن) وغيرهما وهوبها صحيح

٥٢٠٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن مُعَاوِيَة»» أَنَّهُ دَخَلَ عَلَى خَالِهِ أَبِي هَاشِمِ بْنِ عتبَة يعودهُ فَبَكَى أَبُو هَاشِمٍ فَقَالَ: مَا يُبْكِيكَ

يَا خَالِ؟ أَوَجَعٌ يُشْئِزُكَ أَمْ حِرْصٌ عَلَى الدُّنْيَا؟ قَالَ: كلا ولكنَّ رَسُول الله عهد إلينا عَهْدًا لَمْ آخُذْ بِهِ. قَالَ: وَمَا ذَلِكَ؟ قَالَ: سَمِعْتُهُ يَقُولُ: «إِنَّمَا يَكْفِيكَ مِنْ جَمْعِ الْمَالِ خَادِمٌ وَمَرْكَبٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ» . وَإِنِّي أَرَانِي قَدْ جَمَعْتُ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْن مَاجَه

5203. मुआविया रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि वह अपने मामू अबू हाशिम बिन उत्बा रदियल्लाहु अन्हु की इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) के लिए गए तो अबू हाशिम रदियल्लाहु अन्हु रोने लगे, उन्होंने पूछा मामू जान! कौन सी चीज़ आप को रुला रही है, क्या कोई तकलीफ तुम्हें बेचेनी में डाल रही है या दुनिया की हरस? उन्होंने कहा: हरगिज़ नहीं, बल्कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें वसीयत फरमाई थी लेकिन मैंने उस पर अमल न किया, उन्होंने ने फ़रमाया: वह (वसीयत) कि थी? उन्होंने कहा: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "तुम्हारे लिए इतना माल जमा करना ही काफी है के एक खादिम हो और अल्लाह की राह में जिहाद करने के लिए एक सवारी हो", और मैं ख़याल करता हूँ की मैं माल जमा कर चूका हूँ| (ज़ईफ़)

ضعيف ، تقدم طرفه (5185) و رواه احمد (3 / 444 ح 15749) و الترمذی (2327 و سنده ضعيف) و النسائی (8 / 218219 ح 5374) و ابن ماجه (4103 و سنده ضعيف) * ابو وائل رواه عن سمرة بن سهم وهو رجل مجهول (انظر ح 5185)

٥٢٠٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَمِّ»» الدَّرْدَاءِ قَالَتْ: قُلْتُ: لِأَبِي الدَّرْدَاءِ: مَالك لَا تَطْلُبُ كَمَا يَطْلُبُ فُلَانٌ؟ فَقَالَ: أَنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ أَمَامَكُمْ عَقَبَةً كَؤُودًا لَا يَجُوزُهَا المثقلون» . فَأحب أَن أتخفف لِتِلْك الْعقبَة

5204. उम्म दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, मैंने अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु से कहा: आप को किया है की आप फलां की तरह (माल व मंसब) तलब नहीं करते? उन्होंने ने फ़रमाया: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "तुम्हारे आगे एक दुश्वार घाटी है जिसे भारी वज़न उठाने वाले पार नहीं कर सकेंगे", मैं चाहता हूँ की मैं इस घाटी (से गुज़रने) के लिए वज़न हल्का रखु| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقی فی شعب الايمان (10408 ، نسخة محققة : 99239924) [و صححه الحاكم (4 / 573574) و وافقه الذهبی] * ابو معاوية الضرير مدلس و عنعن و صرح بالسماع فی رواية محمد بن سليمان ابن بنت مطر الوراق وهو ضعيف فالسند معلل

٥٢٠٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هَلْ مِنْ أَحَدٍ يَمْشِي عَلَى الْمَاءِ إِلَّا ابْتَلَّتْ قَدَمَاهُ؟» قَالُوا: لَا يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: «كَذَلِكَ صَاحِبُ الدُّنْيَا لَا يسلمُ منَ الذُّنُوب» . رَوَاهُمَا الْبَيْهَقِيّ فِي «شعب الْإِيمَان»

5205. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "क्या कोई ऐसा शख़्स है जो पानी पर चलता हो लेकिन उस के पाँव गिले न होते हो?" उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "दुनिया दार शख़्स इसी तरह है, वह गुनाहों से महफ़ूज़ नहीं रह सकता", इन दोनों अहादीस को

इमाम बयहकी ने शौबुल ईमान में रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (10457 ، نسخة محققة : 9973) * خضر بن ابان الهاشمى و هلال بن محمد العجلى ضعيفان و فى السند علل أخرى

٥٢٠٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن جُبَير»» بن نفير رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ مُرْسَلًا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا أُوحِيَ إِلَيَّ أَنْ أَجْمَعَ الْمَالَ وَأَكُونَ مِنَ التَّاجِرِينَ وَلَكِنْ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنْ [ص:١٤٣ (سَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِنَ السَّاجِدِينَ. واعبد ربَّك حَتَّى يَأْتِيك الْيَقِين)»» رَوَاهُ فِي»» شَرْحِ السُّنَّةِ» وَأَبُو نُعَيْمٍ فِي «الْحِلْية» عَن أبي مُسلم

5206. जुबेर बिन नुफैर रहिमहुल्लाह मुरसल रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरी तरफ यह वही नहीं की गई की मैं माल जमा करू और ताज़िरो में से हो जाऊं, बल्कि मेरी तरफ वही की गई है की “अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह बयान करे और सजदाह करने वालो में से हो जाए, और अपने रब की इबादत करते रहे हत्ता कि आप वफात पा जाए”, शरह सुन्ना और अबू नुअयम ने अबू मुस्लिम से हिलियत में रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البغوى فى شرح السنة (14 / 237 ح 4036) و ابو نعيم فى حلياة الاولياء (2 / 171 ح 1778) * السند مرسل

٥٢٠٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ طَلَبَ الدُّنْيَا حَلَالًا اسْتِعْفَافًا عَنِ الْمَسْأَلَةِ وَسَعْيًا عَلَى أَهْلِهِ وَتَعَطُّفًا عَلَى جَارِهِ لَقِيَ اللَّهَ تَعَالَى يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَوَجْهُهُ مِثْلُ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ. وَمَنْ طَلَبَ الدُّنْيَا حَلَالًا مُكَاثِرًا مفاخرا مرائيا لَقِي الله وَهُوَ عَلَيْهِ غَضْبَانُ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ» وَأَبُو نُعَيْمٍ فِي «الْحِلْية»

5207. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने हलाल तरीके से मांगने से बचने के लिए, अपने अहल व अयाल पर खर्च करने के लिए और अपने पड़ोसी पर मेहरबान करने के लिए दुनिया तलब की तो वह रोज़ ए कियामत अल्लाह तआला से मुलाकात करेगा तो उस का चेहरा चौदवी रात के चाँद की तरह (चमकता) होगा और जिस शख़्स ने हलाल तरीके से, माल में इज़ाफा करने के लिए, बाहम फख्र करने के लिए और रियाकारी के लिए दुनिया तलब की तो वह अल्लाह तआला से इस हाल में मुलाकात करेगा के वह उस पर नाराज़ होगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (1037410375 ، نسخة محققة : 98899890) و ابو نعيم فى حلية الاولياء (8 / 215) [و عبد بن حميد فى المنتخب من السند (1433)] * مكحول لم يسمع من ابى هريرة رضى الله عنه و فى السند الآخر رجل (مجهول) و فى السندين علل أخرى

٥٢٠٨ - (ضَعِيف جدا) وَعَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ هَذَا الْخَيْرَ خَزَائِنُ لِتِلْكَ الْخَزَائِنِ

مَفَاتِيحُ فَطُوبَى لِعَبْدٍ جَعَلَهُ اللَّهُ مِفْتَاحًا لِلْخَيْرِ مِغْلَاقًا لِلشَّرِّ وَوَيْلٌ لَعَبْدٍ جَعَلَهُ اللَّهُ مِفْتَاحًا لِلشَّرِّ مِغْلَاقًا لِلْخَيْرِ» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

5208. सहल बिन साद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक यह खैर के खज़ाने हैं, उन खज़ानो की चाबियां हैं इस बंदे के लिए खुशखबरी है जिसे अल्लाह ने खैर के लिए चाबी (खोलने वाला) बना दिया और शर को बंद करने वाला बना दिया, और इस बंदे के लिए हलाकत है जिसे अल्लाह ने शर खोलने वाला और खैर को बंद करने वाला बनाया”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه ابن ماجه (238) * عبد الرحمن بن زيد بن اسلم ضعيف جدًا ، يروى الموضوعات عن ابيه

٥٢٠٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَلِيٍّ»» رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا لَمْ يُبَارَكْ لِلْعَبْدِ فِي مَالِهِ جَعَلَهُ فِي المَاء والطين»

5209. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब बंदे के किसी माल में बरकत न रखी जाए तो वह इस माल को पानी और मिट्टी यानी उमैर पर सर्फ करता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (10719 ، نسخة محققة : 10234) * فيه عبد الاعلى بن ابى المساور (متروک) عن خالد الاحول عن على الخ و فى السند علة أخرى

٥٢١٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ»» عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «اتَّقُوا الْحَرَامَ فِي الْبُنْيَانِ فَإِنَّهُ أَسَاسُ الْخَرَابِ» . رَوَاهُمَا الْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَان»

5210. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “तामिरात के सिलसिले में (इर्तिकाब) हराम से बचो, क्योंकि वह खराबी की इसास है”, दोनों रिवायत को इमाम बयहकी ने शौबुल ईमान में रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (10722 ، نسخه محققة : 10237) * فيه معاوية بن يحيى الصدفى ضعيف و علل أخرى

٥٢١١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ»» رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الدُّنْيَا دَارُ مَنْ لَا دَارَ لَهُ وَمَالُ مَنْ لَا مَالَ لَهُ وَلَهَا يَجْمَعُ مَنْ لَا عَقْلَ لَهُ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَان»

5211. आइशा रदियल्लाहु अन्हा रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करती हैं आप ﷺ ने फ़रमाया: “दुनिया उस का घर है जिस का कोई घर नहीं, उस का माल है जिस का कोई माल नहीं, और इस (दुनिया) के लिए वही जमा करता

है जो अकलमंद नहीं”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (6 / 71 ح 24923) و البيهقى فى شعب الايمان (10638 ، نسخة محققة : 10154) [و ابن ابى الدنيا فى ذم الدنيا (182) و احمد (6 / 71)] * ابو اسحاق مدلس و عنعن فى السند علة أخرى

٥٢١٢ - (لاأصل لَهُ مَرْفُوعا) وَعَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ فِي خُطْبَتِهِ: «الْخَمْرُ جِمَاعُ الْإِثْمِ وَالنِّسَاءُ حَبَائِلُ الشَّيْطَانِ وَحُبُّ الدُّنْيَا رَأْسُ كُلِّ خَطِيئَةٍ» [ص:١٤٣]»   قَالَ: وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: «أَخِّرُوا النِّسَاءَ حَيْثُ أَخَّرَهُنَّ اللَّهُ» . رَوَاهُ رزين

5212. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को दौराने खुत्बा फरमाते हुए सुना: “शराब तमाम गुनाहों का मजमुआ है, औरते शैतान के जाल है और दुनिया की मुहब्बत हर गुनाह की असल व बुनियाद है”| रावी बयान करते हैं, मैंने आप ﷺ को फरमाते हुए सुना: “औरतो को पीछे रखो जैसे अल्लाह ने उन्हें पीछे रखा”| (मझे नहीं मिली रवाह रजिन.)

لم اجده ، رواه رزين (لم اجده) * و للحديث شاهد عند الدارقطنى (4 / 247 ح 4564) وغيره من حديث زيد بن خالد به و سنده ضعيف ، فيه عبدالله بن مصعب و ابوه مجهولان0 قوله :’’ أخر و النساء حيث أخرهن الله ‘‘ رواه عبدالرزاق (3 / 194 ح 5115 موقوفًا) عن ابن مسعود رضى الله عنه و سنده ضعيف و للاثر شاهد ضعيف منقطع عند الطبرانى فى الكبير (9 / 342 ح 9485)

٥٢١٣ - (لم تتمّ دراسته) وروى اليهقي»»   مِنْهُ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ» عَنِ الْحَسَنِ مُرْسَلًا: «حب الدُّنْيَا رَأس كل خَطِيئَة»

5213. और इमाम बयहकी ने शौबुल ईमान में उसे हसन से मुरसल रिवायत किया है: “दुनिया की मोहब्बत तमाम गुनाहों की बुनियाद है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (10501 ، نسخة محققة : 10019) [و ابن ابى الدنيا فى ذم الدنيا (90)] * راجاله ثقات و فيه شک الراوى بين المدلس فالسند ضعيف ، و ضعيف الى الحسن رحمه الله ولو صح فمرسل و المرسل رده جمهور المحدثين و تحقيقهم هو الراجح

٥٢١٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٍ»»   رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عَلَيْهِ وسم: «إِنَّ أَخْوَفَ مَا أَتَخَوَّفُ عَلَى أُمَّتِي الْهَوَى وَطُولُ الْأَمَلِ فَأَمَّا الْهَوَى فَيَصُدُّ عَنِ الْحَقِّ وَأما طول الأمل فيُنسي الْآخِرَةَ وَهَذِهِ الدُّنْيَا مُرْتَحِلَةٌ ذَاهِبَةٌ وَهَذِهِ الْآخِرَةُ مُرْتَحِلَةٌ قَادِمَةٌ وَلِكُلٍّ وَاحِدَةٍ مِنْهُمَا بَنُونَ فَإِنِ اسْتَطَعْتُم أَن لَا تَكُونُوا بَنِي الدُّنْيَا فَافْعَلُوا فَإِنَّكُمُ الْيَوْمَ فِي دَارِ الْعَمَلِ وَلَا حِسَابَ وَأَنْتُمْ غَدًا فِي دَارِ الْآخِرَةِ وَلَا عَمَلَ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَان»

5214. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुझे अपनी उम्मत के मुतल्लिक ख्वाहिश ए नफ्स और तुल आरज़ू का सबसे ज़्यादा अंदेशा है, क्योंकि ख्वाहिश नफ्स एव हक़ से रोकती है, जबकि

तुल आरज़ू आखिरत भुला देती है, और यह दुनिया (गैर महसूस तरीके से) चली जा रही है जबकि आखिरत (इसी तरह) चली आ रही है, और दोनों में से हर एक के तलबगार है, तुम दुनिया के तलबगार न बनो, अमल करते रहो, क्योंकि आज तुम दारे अमल में हो और कोई हिसाब नहीं, और कल दारे आखिरत में होगे और कोई अमल नहीं होगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (10616 ، نسخة محققة : 10132) * فيه على بن ابى على اللهبى : منكر الحديث متروک

٥٢١٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَلِيٍّ»» رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ارْتَحَلَتِ الدُّنْيَا مُدْبِرَةً وَارْتَحَلَتِ الْآخِرَةُ مُقْبِلَةً وَلِكُلٍّ وَاحِدَةٍ مِنْهُمَا بَنُونَ فَكُونُوا مِنْ أَبْنَاءِ الْآخِرَةِ وَلَا تَكُونُوا مِنْ أَبْنَاءِ الدُّنْيَا فَإِنَّ الْيَوْمَ عَمَلٌ وَلَا حِسَابَ وَغَدًا حِسَابٌ وَلَا عَمَلَ. رَوَاهُ البُخَارِيّ

5215. अली रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है उन्होंने ने फ़रमाया: दुनिया गुज़र रही है जबकि आखिरत आ रही है, और दोनों में से हर एक के तलबगार हैं, तुम आखिरत के तलबगार बनो और दुनिया के तलबगार न बनो क्योंकि आज अमल (का वक़्त) है और हिसाब नहीं बाकी कल हिसाब होगा और अमल नहीं होगा”| (बुखारी)

رواه البخارى فى الرقاق (باب : 4 قبل ح 6417) و انظر تغليق التعليق (5 / 158 ، 159)

٥٢١٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَمْرٍو»» رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَطَبَ يَوْمًا فَقَالَ فِي خُطْبَتِهِ: «أَلَا إِنَّ الدُّنْيَا عَرَضٌ حَاضِرٌ يَأْكُلُ مِنْهُ الْبَرُّ وَالْفَاجِرُ أَلَا وَإِن الآحرة أَجَلٌ صَادِقٌ وَيَقْضِي فِيهَا مَلِكٌ قَادِرٌ أَلَا وَإِنَّ الْخَيْرَ كُلَّهُ بِحَذَافِيرِهِ فِي الْجَنَّةِ أَلَا وَإِنَّ الشَّرَّ كُلَّهُ بِحَذَافِيرِهِ فِي النَّارِ أَلَا فَاعْمَلُوا وَأَنْتُمْ مِنَ اللَّهِ عَلَى حَذَرٍ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ مَعْرُوضُونَ عَلَى أَعْمَالِكُمْ فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شرا يره» . للشَّافِعِيّ

5216. अमर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने एक रोज़ खुत्बा इरशाद फ़रमाया तो आप ﷺ ने अपने खुत्बे में फ़रमाया: “सुन लो! दुनिया एक हाज़िर माल है, नेक भी उस से खाता है और फ़ाजिर भी, सुन लो! आखिरत एक अटल हकीक़त है, इस वक़्त कादिर मुतल्लक बादशाह (नेक व फ़ाजिर के दरमियान) फैसला करेगा, सुन लो! खैर मुकम्मल तौर पर जन्नत में है और सुन लो! शर मुकम्मल तौर पर जहन्नम में है, और सुन लो! अमल करते रहो, तुम अल्लाह की तरफ से (वाकिए शर के खौफ से) डरते रहो और जान लो के तुम्हें तुम्हारे आमाल पर पेश किया जाएंगे, जिस शख़्स ने ज़र्रा बराबर नेकी की होगी इसे देख लेगा और जिस ने ज़र्रा बराबर बुराई की होगी वह भी इसे देख लेगा”| इमाम शाफ़ई ने इसे रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه الشافعى فى الام (1 / 202) * فيه ابراهيم بن محمد بن ابى يحيى : متروک و السند مرسل

٥٢١٧ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» شَدَّادٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يَقُول: «يَا أَيُّهَا

النَّاسُ إِنَّ الدُّنْيَا عَرَضٌ حَاضِرٌ يَأْكُلُ مِنْهَا الْبَرُّ وَالْفَاجِرُ وَإِنَّ الْآخِرَةَ وَعْدٌ صَادِقٌ يَحْكُمُ فِيهَا مَلِكٌ عَادِلٌ قَادِرٌ يُحِقُّ فِيهَا الْحَقَّ وَيُبْطِلُ الْبَاطِلَ كُونُوا مِنْ أَبْنَاءِ الْآخِرَةِ وَلَا تَكُونُوا مِنْ أَبْنَاءِ الدُّنْيَا فَإِنَّ كل أم يتبعهَا وَلَدهَا»

5217. शद्दाद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “लोगो! बेशक दुनिया हाज़िर माल है, हर नेक व फ़ाजिर उस से खाता है, आखिरत अटल हकीक़त और सच्चा वादा है, आदिल कादिर बादशाह इस वक़्त फैसला फरमाएगा, वह उस में हक़ को साबित कर देगा और बातिल को नापैद (तबाह) कर देगा, आखिरत के तलबगार बनो दुनिया के तलबगार न बनो, बेशक हर बच्चा अपने माँ के पीछे चलता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه ابو نعيم فى حلية الاولياء (1 / 264 ، 265) * فيه ابو مهدى سعيد بن سنان : متروک متهم

٥٢١٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ»» أَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَا طَلَعَتِ الشَّمْسُ إِلَّا وَبِجَنْبَتَيْهَا مَلَكَانِ يُنَادِيَانِ يُسْمِعَانِ الْخَلَائِقَ غَيْرَ الثَّقَلَيْنِ: يَا أَيُّهَا النَّاسُ هَلُمُّوا إِلَى رَبِّكُمْ مَا قَلَّ وَكَفَى خَيْرٌ مِمَّا كَثُرَ وَأَلْهَى «رَوَاهُمَا أَبُو نُعَيْمٍ فِي» الْحِلْيَة "

5218. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सूरज तुलुअ होता है तो उस के दोनों किनारों पर दो फ़रिश्ते आवाज़ देते है, वह जिन्नो और इंसानों के सिवा सारी मखलूक को (अपनी आवाज़) सुनाते है: लोगो! अपने रब की तरफ आओ, जो (माल) ठहरा और काफी हो वह इस (माल) से बेहतर है जो ज़्यादा हो और (अल्लाह की याद से) गाफ़िल कर दे”| दोनों अहादीस को अबू नुअयम ने अल हिलयत में रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابو نعيم فى حلية الاولياء (1 / 226) [و احمد (5 / 197 ح 22064)] * قتادة مدلس و عنعن و مع ذلک صححه ابن حبان (الموارد : 814 ، 2476) و الحاکم (2 / 444445) و وافقه الذهبى (!) و حديث البخارى (1442) و مسلم (1010)، (2336) يغنى عنه

٥٢١٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَبْلُغُ بِهِ قَالَ: " إِذَا مَاتَ الْمَيِّتُ قَالَتِ الْمَلَائِكَةُ: مَا قَدَّمَ؟ وَقَالَ بَنُو آدَمَ: مَا خَلَّفَ؟ «. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي» شعب الْإِيمَان "

5219. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु मरफुअ रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब फौत होने वाला फौत होता है तो फ़रिश्ते कहते हैं: उस ने (आमाल में से) आगे क्या भेजा है? और इंसान कहते हैं, उस ने माल में से पीछे क्या छोड़ा है?”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (10475 ، نسخة محققة : 9992) * الاعمش مدلس و عنعن و کذا عبد الرحمن بن محمد المحاربى من المدلسين و فيه علة أخرى

٥٢٢٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مَالِكٍ»» رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: أَنَّ لُقْمَانَ قَالَ لِابْنِهِ: «يَا بُنَيَّ إِنَّ النَّاسَ قَدْ تَطَاوَلَ عَلَيْهِمْ مَا يُوعَدُونَ وَهُمْ إِلَى الْآخِرَةِ سرَاعًا يذهبون وَإِنَّك قداستدبرت الدُّنْيَا مُنْذُ كُنْتَ وَاسْتَقْبَلْتَ الْآخِرَةَ وَإِنَّ دَارًا تسيرإليها أقربُ إِليك من دارٍ تخرج مِنْهَا» . رَوَاهُ رزين

5220. इमाम मालिक से रिवायत है के लुकमान ने अपने बेटे से फ़रमाया: “बेटे! बेशक लोगों से जिस चिज़ का वादा किया गया है वह इन पर दराज़ हो चला है, और वह आखिरत की तरफ तेज़ चले जा रहे हैं, और जब से तू दुनिया में आया है जिस वक़्त से तो उसे (आहिस्ता आहिस्ता) पीछे छोड़ रहा है और आखिरत की तरफ पेश कदमी कर रहा है, बेशक वह घर जिस की तरह तू सफ़र कर रहा है, वह तेरे इस घर से जहाँ से तू रवाना हुआ है, ज़्यादा करीब है”| (मझे नहीं मिली रवाह रजिन.)

لم اجده ، رواه رزين (لم اجده)

٥٢٢١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ»» اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قِيلَ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَيُّ النَّاسِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: «كُلُّ مَخمومُ الْقلب صَدُوق اللِّسَان» . قَالُوا: صدزق اللِّسَانِ نَعْرِفُهُ فَمَا مَخْمُومُ الْقَلْبِ؟ قَالَ: «هُوَ النَّقِيُّ التَّقِيُّ لَا إِثْمَ عَلَيْهِ وَلَا بَغْيَ وَلَا غِلَّ وَلَا حَسَدَ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ»

5221. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ से अर्ज़ किया गया, कौन सा आदमी सबसे बेहतर है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “हर साफ दिल, रास्त गो”, सहाबा ने अर्ज़ किया, हर रास्त गो के मुताल्लिक तो जानते हैं, साफ़ दिल से क्या मुराद है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो साफ व पाक जिस पर ना कोई गुनाह है न कोई ज़ुल्म और ना ही कोई किना व हसद”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابن ماجه (4216) و البيهقى فى شعب الايمان (6604)

٥٢٢٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ»» أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " أَرْبَعٌ إِذَا كُنَّ فِيكَ فَلَا عَلَيْكَ مَا فَاتَكَ مِنَ الدُّنْيَا: حِفْظُ أَمَانَةٍ وَصِدْقُ حَدِيثٍ وَحُسْنُ خَلِيقَةٍ وَعِفَّةٌ فِي طُعْمَةٍ «. رَوَاهُ أَحْمد وَالْبَيْهَقِيّ فِي» شعب الْإِيمَان "

5222. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “चार चीज़े ऐसी हैं जब वह तुम में हो तो फिर अगर तुम्हें दुनिया न भी मिले तो कोई हरज व बुराई नहीं, हिफ्ज़ अमानत, सच्चा कलाम, हसन अख़लाक़ और (हराम) खाने से परहेज़ करना”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (2 / 177 ح 6652) و البيهقى فى شعب الايمان (4801) [و ابن وهب فى الجامع (546)] * فيه عبدالله بن لهيعة مدلس و عنعن و فى الحديث علة أخرى ، انظر شعب الايمان (5258) و مكارم الاخلاق للخرائطى (31 ، 159 306) وهى مظنة الانقطاع بين الحارث بن يزيد الحضرمى و بين عبدالله بن عمرو ابن العاص رضى الله عنه ، و الله اعلم و بنحو هذا الحديث روى ابن وهب (547) و ابن المبارك فى الزهد (1204) موقوفًا على عبدالله بن عمرو رضى الله عنه و سنده حسن

٥٢٢٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مَالِكٍ»» رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: بَلَغَنِي أَنَّهُ قِيلَ لِلُقْمَانَ الْحَكِيمِ: مَا بَلَغَ بِكَ مَا ترى؟ يَعْنِي الْفَضْلَ قَالَ: صِدْقُ الْحَدِيثِ وَأَدَاءُ الْأَمَانَةِ وَتَرْكُ مَا لَا يَعْنِينِي. رَوَاهُ فِي «الْمُوَطَّأ»

5223. इमाम मालिक से रिवायत है उन्होंने कहा: मुझे हदीस पहुंची है के लुकमान हकिम से पूछा गया, जिस मक़ाम पर हम आप को देख रहे हैं इस मक़ाम पर आप को कौन सी बातो ने पहुँचाया? उन्होंने ने फ़रमाया: रास्त गोई, अमानत की अदाइगी और फ़िज़ूल बातो चीज़ को छोड़ देना| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه مالک فی الموطا (2 / 990 ح 1926 بدون سند)

٥٢٢٤ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " تَجِيء الْأَعْمَال فتجيء الصَّلَاة قتقول: يارب أَنَا الصَّلَاةُ. فَيَقُولُ: إِنَّكِ عَلَى خَيْرٍ. فَتَجِيءُ الصَّدَقَة فتَقول: يارب أَنَا الصَّدَقَةُ. فَيَقُولُ: إِنَّكِ عَلَى خَيْرٍ ثُمَّ يَجِيء الصّيام فَيَقُول: يارب أَنَا الصِّيَامُ. فَيَقُولُ: إِنَّكَ عَلَى خَيْرٍ. ثُمَّ تَجِيءُ الْأَعْمَالُ عَلَى ذَلِكَ. يَقُولُ اللَّهُ تَعَالَى: إِنَّكِ عَلَى خَيْرٍ. ثُمَّ يَجِيءُ الْإِسْلَامُ فَيَقُولُ: يَا رَبِّ أَنْتَ السَّلَامُ وَأَنَا الْإِسْلَامُ. فَيَقُولُ اللَّهُ تَعَالَى: إِنَّكَ عَلَى خَيْرٍ بِكَ الْيَوْمَ آخُذُ وَبِكَ أُعْطِي. قَالَ اللَّهُ تَعَالَى فِي كِتَابِهِ: (وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَة من الحاسرين)

5224. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आमाल (अल्लाह के हुज़ूर सिफारिश करने के लिए) आएँगे, नमाज़ आएगी, और अर्ज़ करेगी, रब जी! मैं नमाज़ हूँ, वह फरमाएगा: तू खैर पर है, सदका आएगा वह अर्ज़ करेगा, रब जी! मैं सदका हूँ, वह फरमाएगा: तू खैर पर है, फिर रोज़ा आएगा वह अर्ज़ करेगा, रब जी! मैं रोज़ा हूँ, वह फरमाएगा: तू खैर पर है, फिर इसी तरह आमाल आते जाएँगे, अल्लाह तआला फरमाता जाएगा तू खैर पर है, फिर इस्लाम आएगा, वह अर्ज़ करेगा: रब जी! तू सलाम है और मैं इस्लाम हूँ, अल्लाह तआला फरमाएगा: तू खैर पर है, आज में तेरी वजह से मुआखिज़ा (इलज़ाम लगाना) करूँगा और तेरी वजह से अता करूँगा, अल्लाह तआला ने अपने किताब में फ़रमाया: “जो शख़्स इस्लाम के अलावा कोई और दीन तलाश करेगा तो वह उस से हरगिज़ कबूल नहीं किया जाएगा और वह आखिरत में नुकसान उठाने वालो में से होगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (2 / 362 ح 8727) * عباد بن راشد صدوق لکنه وهم فی قوله :’’ الحسن ثنا ابو هريرة ‘‘ و الصواب ان الحسن لم يسمع من ابی هريرة رضی الله عنه

٥٢٢٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ»» رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ لَنَا سِتْرٌ فِيهِ تَمَاثِيلُ طَيْرٍ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ:»» يَا عَائِشَةُ حوِّليه فإِني إِذا رَأَيْته ذكرت الدُّنْيَا "

5225. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, हमारा एक पर्दा था जिस में परिंदों की तस्वीरे थी (ये देख

कर) रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आइशा इसे बदल डालो, क्योंकि जब में उसे देखता हूँ तो मैं दुनिया याद करता हूँ (मुझे दुनिया याद जाती है)”| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (6 / 241 ح 26571) [و مسلم (88 / 2107)]

٥٢٢٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» أَيُّوبَ الْأَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ رَجل إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: عِظْنِي وَأَوْجِزْ. فَقَالَ: «إِذَا قُمْتَ فِي صَلَاتِكَ فَصَلِّ صَلَاةَ مُوَدِّعٍ وَلَا تَكَلَّمْ بِكَلَامٍ تَعْذِرُ مِنْهُ غَدًا وَأَجْمِعِ الْإِيَاسَ مِمَّا فِي أَيْدِي النَّاس»

5226. अबू अय्यूब अंसारी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ और उस ने अर्ज़ किया, मुझे मुख़्तसर सी वसीयत फरमाइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब तू नमाज़ पढ़े तो ऐसे पढ़ो जैसे अलविदाई नमाज़ हो, ऐसी बात न कर जिस की वजह से कल माज़रत करनी पड़े और जो कुछ लोगों के पास है उस से मुकम्मल तौर पर ना उम्मीद और ला ताअल्लूक हो जा”| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه احمد (5 / 412 ح 23894) [و ابن ماجه (4171 و سنده ضعيف)] * عثمان بن جبير مجهول الحال و للحديث شواهد ضعيفة

٥٢٢٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مُعَاذِ»» بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا بَعَثَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى الْيَمَنِ خَرَجَ مَعَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُوصِيهِ وَمُعَاذٌ رَاكِبٌ وَرَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَمْشِي تَحْتَ رَاحِلَتِهِ فَلَمَّا فَرَغَ قَالَ: يَا مُعَاذُ إِنَّكَ عَسَى أَنْ لَا تَلْقَانِي بَعْدَ عَامِي هَذَا وَلَعَلَّكَ أَنْ تَمُرَّ بِمَسْجِدِي هَذَا وَقَبْرِي " فَبَكَى مُعَاذٌ جَشَعًا لِفِرَاقِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ الْتَفَتَ فَأَقْبَلَ بِوَجْهِهِ نَحْوَ الْمَدِينَةِ فَقَالَ: «إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِيَ الْمُتَّقُونَ مَنْ كَانُوا وَحَيْثُ كَانُوا» رَوَى الْأَحَادِيث الْأَرْبَعَة أَحْمد

5227. मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे यमन की तरफ मबउस फ़रमाया तो रसूलुल्लाह ﷺ से वसीयत करने के लिए उस के साथ बाहर तशरीफ़ लाए इस वक़्त मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु सवार थे, जबकि रसूलुल्लाह ﷺ उसकी सवारी के साथ साथ पैदल चल रहे थे, जब आप फारिग़ हुए तो फ़रमाया: “मुआज़ मुमकिन है के तुम इस साल के बाद मुझ से मुलाकात न कर सको, शायद की तुम मेरी मस्जिद और मेरी कब्र के पास से गुज़रो”, मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ की जुदाई की वजह से घबरा कर रोने लगे, फिर आप ﷺ ने मदीना की तरफ रुख फेर कर फ़रमाया: “मुत्तकी लोग मेरी क़राबत व शफाअत के ज़्यादा हक़दार है, वह जो भी हो और जहाँ भी हो”| चारो अहादीस इमाम अहमद ने रिवायत की है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (5 / 235 ح 22402) [و ابن حبان (الاحسان : 1647)]

٥٢٢٨ - (ضَعِيف) وَعَن»» ابْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: تَلَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: (فَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ أَنْ يَهْدِيَهُ

يَشْرَحْ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ)»» فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ النُّورَ إِذَا دَخَلَ الصَّدْرَ انْفَسَحَ» . فَقِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ هَلْ لِتِلْكَ مِنْ عِلْمٍ يُعْرَفُ بِهِ؟ قَالَ: «نَعَمْ التَّجَافِي مِنْ دَارِ الْغُرُورِ وَالْإِنَابَةُ إِلَى دَارِ الْخُلُودِ وَالِاسْتِعْدَادُ لِلْمَوْتِ قبل نُزُوله»

5228. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाई: “अल्लाह जिसे हिदायत देने का इरादा फरमाता है तो उस के सीने को इस्लाम के लिए खोल देता है”, फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “नूर जब सीने में दाखिल हो जाता है तो सीना खुल जाता है”, अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल! क्या उसकी कोई अलामत भी है जिसके ज़रिए उस का पता चल सके? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ, धोके के घर (दुनिया) से दूरी हमेशा के घर (आखिरत) की तरफ रुजू और मौत आने से पहले मौत की तय्यारी”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (10552 ، نسخة محققة : 10068) * عدى بن الفضل : متروك

٥٢٢٩ - ، ٥٢٣٠ (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ وَأَبِي خَلَّادٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا رَأَيْتُمُ الْعَبْدَ يُعْطِي زُهْدًا فِي الدُّنْيَا وَقِلَّةَ مَنْطِقٍ فَاقْتَرِبُوا مِنْهُ فَإِنَّهُ يلقى الْحِكْمَة» . رَوَاهُمَا الْبَيْهَقِيّ فِي «شعب الْإِيمَان»

5229. अबू हुरैरा और अबू खल्लाद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम बंदे को देखो के इसे दुनिया से बे रगबती अता की गई है और वह कम गो है तो उस का कुर्ब हासिल करो, क्योंकि इसे हिकमत अता की गई है”| दोनों रिवायतों इमाम बयहकी ने शौबुल ईमान में नकल की हैं| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (4985 ، نسخة محققة : 4631 من حديث ابى هريرة رضى الله عنه) * سنده ضعيف ، فيه ابن لهيعة وهو ضعيف لاختلاطه و للحديث طريق آخر عند ابن ماجه (4101) من حديث ابى خلاد به و سنده ضعيف و للحديث طريق موضوع فى حلية الاولياء (7 / 317) !!

٥٢٢٩ - ، ٥٢٣٠ (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ وَأَبِي خَلَّادٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا رَأَيْتُمُ الْعَبْدَ يُعْطِي زُهْدًا فِي الدُّنْيَا وَقِلَّةَ مَنْطِقٍ فَاقْتَرِبُوا مِنْهُ فَإِنَّهُ يلقى الْحِكْمَة» . رَوَاهُمَا الْبَيْهَقِيّ فِي «شعب الْإِيمَان»

5230. अबू हुरैरा और अबू खल्लाद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम बंदे को देखो के इसे दुनिया से बे रगबती अता की गई है और वह कम गो है तो उस का कुर्ब हासिल करो, क्योंकि इसे हिकमत अता की गई है”| दोनों रिवायतों इमाम बयहकी ने शौबुल ईमान में नकल की हैं| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (4985 ، نسخة محققة : 4631 من حديث ابى هريرة رضى الله عنه) * سنده ضعيف ، فيه ابن لهيعة وهو ضعيف لاختلاطه و للحديث طريق آخر عند ابن ماجه (4101) من حديث ابى خلاد به و سنده ضعيف و للحديث طريق موضوع فى حلية الاولياء (7 / 317) !!

فकीरों की फ़ज़ीलत और नबी ﷺ की जिंदगी का बयान

بَابُ فَضْلِ الْفُقَرَاءِ وَمَا كَانَ مِنْ عَيْشِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

पहली फस्ल

الْفَصْلُ الأول

٥٢٣١ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «رُبَّ أَشْعَثَ مَدْفُوعٍ بِالْأَبْوَابِ لَوْ أَقْسَمَ عَلَى اللَّهِ لَأَبَرَّهُ» . رَوَاهُ مُسلم

5231. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "बहोत से परान्दा बालो वाले जिन्हें दरवाज़ो से धकेला जाता है अगर वह अल्लाह पर क़सम उठा ले तो अल्लाह इसे पूरी फरमा देता है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (138 / 2622)، (6682)

٥٢٣٢ - (صَحِيح) وَعَن مُصعب بن سعدٍ قَالَ: رَأَى سَعْدٌ أَنَّ لَهُ فَضْلًا عَلَى مَنْ دُونَهُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هَلْ تُنْصَرُونَ وَتُرْزَقُونَ إِلَّا بِضُعَفَائِكُمْ؟» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

5232. मुसअब बिन साद बयान करते हैं, के साद रदियल्लाहु अन्हु ने ख़याल किया के इसे अपने से कम दर्जा लोगों पर (सखावत करने में) फ़ज़ीलत बढ़त हासिल है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तुम्हारे कमज़ोर लोगों की वजह ही से तुम्हारी मदद की जाती है और इन्ही की वजह से तुम्हें रीज़्क दिया जाता है"| (बुखारी)

رواه البخاری (2896)

٥٢٣٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «قُمْتُ عَلَى بَابِ الْجَنَّةِ فَكَانَ عَامَّةُ مَنْ دَخَلَهَا الْمَسَاكِينَ وَأَصْحَابُ الْجَدِّ مَحْبُوسُونَ غَيْرَ أَنَّ أَصْحَابَ النَّارِ قَدْ أُمِرَ بِهِمْ إِلَى النَّارِ وَقُمْتُ عَلَى بَابِ النَّارِ فَإِذَا عَامَّةُ مَنْ دَخلهَا النِّسَاء» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5233. उसामा बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' में (मेअराज की रात) जन्नत के दरवाज़े पर खड़ा हुआ तो देखा के उस में ज़्यादातर दाखिल होने वाले मसाकिन थे, जबकि साहबे सरवत रोक लिए गए थे, और आग वालो (यानी काफ़िरो) के लिए जहन्नम का हुक्म दे दिया गया था, और मैं बाब जहन्नम पर खड़ा हुआ और देखा के उस में जाने वालो की अक्सरियत औरतो की थी"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6547) و مسلم (93 / 2736)، (6937)

٥٢٣٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اطَّلَعْتُ فِي الْجَنَّةِ فَرَأَيْتُ أَكْثَرَ أَهْلِهَا الْفُقَرَاءَ. وَاطَّلَعْتُ فِي النَّارِ فَرَأَيْتُ أَكْثَرَ أَهْلِهَا النِّسَاءَ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5234. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैंने जन्नत में झांक कर देखा तो उस में अक्सरियत फुकरा की थी, और मैंने जहन्नम में झांक कर देखा तो मैंने देखा कि वहां अक्सरियत औरतो की है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6546) و مسلم (94 / 2737)، (6938)

٥٢٣٥ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ فُقَرَاءَ الْمُهَاجِرِينَ يَسْبِقُونَ الْأَغْنِيَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِلَى الْجَنَّةِ بِأَرْبَعِينَ خَرِيفًا» . رَوَاهُ مُسلم

5235. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया मुहाजिर फुकरा, रोज़े कयामत माल दारो से चालीस साल पहले जन्नत में दाखिल होंगे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (37 / 2979)، (7463)

٥٢٣٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: مَرَّ رَجُلٌ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ لِرَجُلٍ عِنْدَهُ جَالِسٍ: «مَا رَأْيُكَ فِي هَذَا؟» فَقَالَ رَجُلٌ مِنْ أَشْرَافِ النَّاسِ: هَذَا وَاللَّهِ حَرِيٌّ إِنْ [ص:١٤٤ خَطَبَ أَنْ يُنْكَحَ وَإِنْ شَفَعَ أَنْ يُشَفَّعَ. قَالَ: فَسَكَتَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ مر على رَجُلٌ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا رَأْيُكَ فِي هَذَا؟» فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ هَذَا رَجُلٌ مِنْ فُقَرَاءِ الْمُسْلِمِينَ هَذَا حَرِيٌّ إِنْ خَطَبَ أَنْ لَا ينْكح. وإِن شفع أَن لَا يُشفع. وإِن قَالَ أَنْ لَا يُسْمَعَ لِقَوْلِهِ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هَذَا خَيْرٌ مِنْ مِلْءِ الْأَرْضِ مِثْلَ هَذَا» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5236. सहल बिन साद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी रसूलुल्लाह ﷺ के पास से गुज़रा तो आप ﷺ ने अपने पास बैठें हुए शख़्स से फ़रमाया: “इस (शख्स) के मुतल्लिक तुम्हारी क्या राय है?” उस ने कहा: मुअज्ज़ज़ लोगों में से है, अल्लाह की क़सम! यह इस लायक है के अगर कहीं पैग़ामे निकाह भेजे तो उसकी शादी कर दी जाए, और अगर कहीं सिफारिश करे तो वह कबूल की जाए, रावी बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ख़ामोश रहे, फिर एक आदमी गुज़रा तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे फ़रमाया: “इस शख़्स के मुतल्लिक तुम्हारी क्या राय है?” उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! यह शख़्स ग़रीब मुसलमानों में से है, यह इस लायक है के अगर कहीं पैग़ामे निकाह भेजे तो उसकी शादी न की जाए और अगर कहीं सिफारिश करे तो उसकी सिफारिश कबूल न की जाए और अगर बात करे तो उसकी बात न सुनी जाए, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ये (तन्हा) शख़्स इस शख़्स जैसे लोगों से भरी ज़मीन से बेहतर है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6447) و مسلم (لم اجده)

٥٢٣٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: مَا شَبِعَ آل مُحَمَّد من خبر الشَّعِيرِ يَوْمَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ حَتَّى قُبِضَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ". مُتَّفق عَلَيْهِ

5237. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, आले मुहम्मद ﷺ ने दो दिन मुतवातिर जौ की रोटी पेट भर कर नहीं खाई हत्ता के रसूलुल्लाह ﷺ वफात पा गए| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5416) و مسلم (22 / 2970)، (7445)

٥٢٣٨ - (صَحِيح) وَعَن سعيد المَقْبُري عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: أَنَّهُ مَرَّ بِقَوْمٍ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ شَاةٌ مَصْلِيَّةٌ فَدَعَوْهُ فَأَبَى أَنْ يَأْكُلَ وَقَالَ: خَرَجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَمْ يَشْبَعْ مِنْ خُبْزِ الشَّعِيرِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

5238. सईद मुक्बुरिय रहिमहुल्लाह अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, के वह कुछ लोगों के पास से गुज़रे इन के सामने भुनी हुई बकरी थी, उन्होंने उन्हें दावत दे तो उन्होंने इसे खाने से इनकार कर दिया और फ़रमाया: नबी ﷺ दुनिया से तशरीफ़ ले गए और आप ने पेट भर कर जौ की रोटी नहीं खाई| (बुखारी)

رواه البخارى (5414)

٥٢٣٩ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ أَنَّهُ مَشَى إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِخُبْزِ شَعِيرٍ وَإِهَالَةٍ سَنِخَةٍ وَلَقَدْ رَهَنَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دِرْعًا لَهُ بِالْمَدِينَةِ عِنْدَ يَهُودِيٍّ وَأَخَذَ مِنْهُ شَعِيرًا لِأَهْلِهِ وَلَقَدْ سَمِعْتُهُ يَقُولُ: «مَا أَمْسَى عِنْدَ آلِ مُحَمَّدٍ صَاعُ بُرٍّ وَلَا صَاعُ حَبٍّ وَإِنَّ عِنْدَهُ لَتِسْعُ نِسْوَةٍ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

5239. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के वह जौ की रोटी और रंगत बदली] हुई चरबी लेकर नबी ﷺ की तरफ गए जबकि नबी ﷺ की ज़िराह मदीना में एक यहूदी के पास गिरवी थी, आप ने उस से अपने घरवालो के लिए जौ लिए थे, और मैं (रावी) ने अनस रदियल्लाहु अन्हु को बयान करते हुए सुना: आले मुहम्मद ﷺ के यहाँ शाम के वक़्त न एक साअ गंदुम होती थी और न एक साअ कोई और अनाज होता था जबकि आप ﷺ की नौ अज़वाज ए मूतहरात थी| (बुखारी)

رواه البخارى (2069)

٥٢٤٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن عمر قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَإِذَا هُوَ مُضْطَجِعٌ عَلَى رِمَالِ حَصِيرٍ لَيْسَ بَيْنَهُ وَبَيْنَهُ فِرَاشٌ قَدْ أَثَّرَ الرِّمَالُ بِجَنْبِهِ مُتَّكِئًا عَلَى وِسَادَةٍ مِنْ أَدَمٍ حَشْوُهَا لِيفٌ. قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ: ادْعُ اللَّهَ فَلْيُوَسِّعْ عَلَى أُمَّتِكَ فَإِنَّ فَارِسَ وَالرُّومَ قَدْ وُسِّعَ عَلَيْهِمْ وَهُمْ لَا يَعْبُدُونَ اللَّهَ. فَقَالَ: «أَوَ فِي هَذَا أَنْتَ يَا ابْنَ الْخطاب؟ أُولئكَ قوم عجلت لَهُم طيبتاتهم فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا» . وَفِي رِوَايَةٍ: «أَمَا تَرْضَى أَنْ تَكُونَ لَهُمُ الدُّنْيَا وَلَنَا الْآخِرَةُ؟» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5240. उमर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो आप खजूर की चटाई पर लेटे हुए थे और आप ने कोई बिस्तर वगैरा नहीं बिछाया हुआ था, और इस चटाई के निशानात आप के पहलु पर थे, और आप ने चमड़े के किए पर टेक लगाईं हुई थी, जिस में खजूर के दरख्त के पत्ते भरे हुए थे, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! अल्लाह के हुज़ूर दुआ फरमाइए के वह आप की उम्मत पर फराखी फरमाए, क्योंकि फारसियो और रुमियो पर बहोत नवाज़ा है हालाँकि वह अल्लाह की इबादत नहीं करते, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इब्ने खत्ताब! क्या तुम अभी तक इसी मक़ाम पर हो? यह (कुफ्फार) वह लोग है की उन्हें उनकी लज्ज़ते इस दुनिया की जिंदगी में जल्द अता कर दी गई है”| एक दूसरी रिवायत में है: “क्या तुम खुश नहीं के इन के लिए दुनिया में हो और हमारे लिए आखिरत में”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2468) و مسلم (31 ، 30 / 1479)، (3691 و 3692)

٥٢٤١ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: لَقَدْ رَأَيْتُ سَبْعِينَ مِنْ أَصْحَابِ الصُّفَّةِ مَا مِنْهُمْ [ص:١٤٤ رَجُلٌ عَلَيْهِ رِدَاءٌ إِمَّا إِزَارٌ وَإِمَّا كِسَاءٌ قَدْ رُبِطُوا فِي أَعْنَاقِهِمْ فَمِنْهَا مَا يَبْلُغُ نِصْفَ السَّاقَيْنِ وَمِنْهَا مَا يَبْلُغُ الْكَعْبَيْنِ فَيَجْمَعُهُ بِيَدِهِ كَرَاهِيَةَ أَن ترى عَوْرَته ". رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

5241. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मेरी सत्तर असहाब सूफा से मुलाकात हुई है, उनमें से किसी एक आदमी पर भी बड़ी चादर नहीं थी, उन के पास यह तो एक एक तहबंद थी या एक चादर थी, उन्होंने उस के किनारे को गर्दनो के साथ बांध रखा था, उनमें से कुछ चादरे ऐसी थी जो आधी पिंडलियों तक पहुँचती थी कुछ की टखनो तक पहुँचती थी और वह इसे अपने हाथ के साथ इकट्ठा करता था के कहीं उस का सतर न खुल जाए| (बुखारी)

رواه البخاری (442)

٥٢٤٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا نَظَرَ أَحَدُكُمْ إِلَى مَنْ فُضِّلَ عَلَيْهِ فِي الْمَالِ وَالْخَلْقِ فَلْيَنْظُرْ إِلَى مَنْ هُوَ أَسْفَلَ مِنْهُ» مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ قَالَ: «انْظُرُوا إِلَى مَنْ هُوَ أَسْفَلَ مِنْكُمْ وَلَا تَنْظُرُوا إِلَى من هُوَ قوقكم فَهُوَ أَجْدَرُ أَنْ لَا تَزْدَرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُم»

5242. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई माल और सूरत जमाल में अपने से बेहतर शख़्स को देखे तो वह अपने से कम तर शख़्स को देख ले”| और मुस्लिम की रिवायत में है फ़रमाया: “(दुन्यवी उमूर में) अपने से कम तर शख़्स को देखो और अपने से बेहतर शख़्स को न देखो, क्योंकि यह ज़्यादा लायक है के तुम अल्लाह की उन नेअमतो को हकीर न जानो जो उस ने तुम पर इनाम की है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6490) و مسلم (9 ، 8 / 2963)، (7428)

بَابُ فَضْلِ الْفُقَرَاءِ وَمَا كَانَ مِنْ عَيْشِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ •

फकीरों की फ़ज़ीलत और नबी ﷺ की जिंदगी का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي •

दूसरी फस्ल

٥٢٤٣ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي»» هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَدْخُلُ الْفُقَرَاءُ الْجَنَّةَ قَبْلَ الْأَغْنِيَاءِ بِخَمْسِمِائَةِ عَامٍ نِصْفِ يَوْمٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5243. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “फुकरा, माल दारो से पांच सौ साल पहले जन्नत में जाएँगे जो के आधा दिन है”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (2353 وقال : حسن صحيح) [و ابن ماجه (4122)] سفيان الثوری صرح بسماع عند ابی يعلى (10 / 411 ح 6018 و سنده حسن) و صححه ابن حبان (2567)

٥٢٤٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ»» أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «اللَّهُمَّ أَحْيِنِي مِسْكِينًا وَأَمِتْنِي مِسْكِينًا وَاحْشُرْنِي فِي زُمْرَةِ الْمَسَاكِينِ» فَقَالَتْ عَائِشَةُ: لِمَ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: «إِنَّهُمْ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ قَبْلَ أَغْنِيَائِهِمْ بِأَرْبَعِينَ خَرِيفًا يَا عَائِشَةُ لَا تَرُدِّي الْمِسْكِينَ وَلَوْ بِشِقِّ تَمْرَةٍ يَا عَائِشَةُ أَحِبِّي الْمَسَاكِينَ وَقَرِّبِيهِمْ فَإِنَّ اللَّهَ يُقَرِّبُكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ»

5244. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह मुझे मिस्किन जिंदा रखना, मिस्किन ही फौत करना और मुझे मसाकिन के गिरोह में जमा फरमाना”, आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! क्यों? आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्योंके, वह माल दारो से चालीस साल पहले जन्नत में जाएँगे, आइशा! किसी मिस्किन को खाली हाथ न मोड़ना ख्वाह खजूर का एक टुकड़ा हो, आइशा! मसाकिन से मुहब्बत करना, उन्हें करीब रखना चुनांचे रोज़ ए कियामत अल्लाह तुझे (अपने) करीब करेगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2352 وقال : غريب) و البيهقی فی شعب الايمان (10507) * الحارث بن النعمان : ضعيف و للحديث شواهد كلها ضعيفة

٥٢٤٥ - (لم تتمّ دراسته) وروى ابْنُ»» مَاجَهْ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ إِلَى قَوْلِهِ «زمرة الْمَسَاكِينِ»

5245. और इब्ने माजा ने अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु से “मालकिन के गिरोह में उठा‘‘ तक रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (4126) * يزيد بن سنان : ضعيف و ابو المبارك مجهول و للحديث شواهد ضعيفة ولم يصب من صححه

٥٢٤٦ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَبِي الدَّرْدَاءَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «ابْغُونِي فِي ضُعَفَائِكُمْ فَإِنَّمَا تُرْزَقُونَ - أَوْ تُنْصَرُونَ - بِضُعَفَائِكُمْ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

5246. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुझे अपने ज़ईफो में तलाश करो, तुम अपने उन कमज़ोरो ही की वजह से रीज़्क दिए या मदद किए जाते हो”| (सहीह)

صحیح ، رواہ ابوداؤد (3594)

٥٢٤٧ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» أُمَيَّةَ بْنِ خَالِدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بن أسيد عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَنَّهُ كَانَ [ص:١٤٤] يَسْتَفْتِحُ بِصَعَالِيكِ الْمُهَاجِرِينَ. رَوَاهُ فِي «شَرْحِ السّنة»

5247. उमय्या बिन खालिद बिन अब्दुल्लाह बिन असिदी, नबी ﷺ से रिवायत करते हैं की आप मुहाजर फुकरा की दुआओं के ज़रिए फतह तलब किया करते थे| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ البغوی فی شرح السنۃ (14 / 264 ح 4062) * السند مرسل و سفیان الثوری و ابو اسحاق مدلسان و عنعنا

٥٢٤٨ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَغْبِطَنَّ فَاجِرًا بِنِعْمَةٍ فَإِنَّكَ لَا تَدْرِي مَا هُوَ لَاقٍ بَعْدَ مَوْتِهِ إِنَّ لَهُ عِنْدَ اللَّهِ قَاتِلًا لَا يَمُوتُ» . يَعْنِي النَّارَ. رَوَاهُ فِي «شَرْحِ السّنة»

5248. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “किसी फ़ाजिर शख़्स को नेअमतो में देख कर उस पर रश्क न करना क्योंकि तुम नहीं जानते के उसकी मौत के बाद उस के साथ क्या सुलूक होने वाला है, उस के लिए अल्लाह के यहाँ एक खतरनाक चीज़ है जो मरेगी नहीं” यानी जहन्नम| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ البغوی فی شرح السنۃ (14 / 294295 ح 4103) * فیہ جھم بن اوس : لایعرف و عبداللہ بن ابی مریم : لم یوثقہ غیر ابن حبان

٥٢٤٩ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الدُّنْيَا سِجْنُ الْمُؤْمِنِ وَسَنَتُهُ وَإِذَا فَارَقَ الدُّنْيَا فَارَقَ السجنَ والسنةَ» . رَوَاهُ فِي «شرح السّنة»

5249. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दुनिया मोमिन के लिए क़ैद खाना और कहत है, जब वह दुनिया से जुदा होता है तो वह क़ैद खाने और कहत से जुदा हो जाता है”| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ البغوی فی شرح السنۃ (14 / 297 ح 4106) [و احمد (2 / 197 ح 6855) و الحاکم (4 / 315)] * عبداللہ بن جنادۃ المعافری : لم یوثقہ غیر ابن حبان

٥٢٥٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن قَتَادَة»» بن النُّعْمَان أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذا أحب الله عبداحماه الدُّنْيَا كَمَا يَظَلُّ أَحَدُكُمْ يَحْمِي سَقِيمَهُ الْمَاءَ» . رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ

5250. क़तादाह बिन नुअमान रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब अल्लाह किसी बंदे को पसंद फरमाता है तो इसे दुनिया (के माल व मंसब) से बचा लेता है जैसे तुम में से कोई अपने मरीज़ को पानी से बचाता है”| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (لم اجده) و الترمذی (2036 وقال : حسن غريب)

٥٢٥١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن مَحْمُود»» بن لبيد أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " اثْنَتَانِ يَكْرَهُهُمَا ابْنُ آدَمَ: يَكْرَهُ الْمَوْتَ وَالْمَوْتُ خَيْرٌ لِلْمُؤْمِنِ مِنَ الْفِتْنَةِ وَيَكْرَهُ قِلَّةَ الْمَالِ وَقلة المَال أقل لِلْحساب ". رَوَاهُ أَحْمد

5251. महमूद बिन लबीद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “दो चीज़े हैं जिन्हें इंसान नापसंद करता है, इंसान मौत को नापसंद करता है, हालाँकि मौत मोमिनो के लिए फितने से बेहतर है और वह किल्लते माल को नापसंद करता है जबकि किल्लते माल का हिसाब कम है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (5 / 427 ح 24024)

٥٢٥٢ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مُغَفَّلٍ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: " إِنِّي أُحِبُّكَ. قَالَ: «انْظُرْ مَا تَقُولُ» . فَقَالَ: وَاللَّهِ إِنِّي لَأُحِبُّكَ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ. قَالَ: «إِنْ كُنْتَ صَادِقًا فَأَعِدَّ لِلْفَقْرِ تِجْفَافًا لَلْفَقْرُ أسرعُ إِلى من يحبُّني من السَّيْل إِلَى مُنْتَهَاهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

5252. अब्दुल्लाह बिन मुगफ्फल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ और उस ने अर्ज़ किया, मैं आप से मुहब्बत करता हूँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: “देख लो तुम क्या कह रहे हो?” उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह की क़सम! मैं आप से मुहब्बत करता हूँ, उस ने तीन मर्तबा कहा, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर तुम (अपने दावे में) सच्चे हो तो फिर फकर व फाका का मुक़ाबला करने के लिए ढाल तैयार रखो क्योंकि जो शख़्स मुझ से मुहब्बत करता है तो उसकी तरफ फकीर सैलाब की रफ़्तार से भी ज़्यादा तेज़ी से आता है”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (2350) * روح بن اسلم ضعيف ضعفه الجمهور و للحديث شواهد ضعيفة عند البغوی (شرح السنة : 4067) وغيره

٥٢٥٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ»» أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَقَدْ أُخِفْتُ فِي اللَّهِ وَمَا يُخَافُ أَحَدٌ وَلَقَدْ أُوذِيتُ فِي اللَّهِ وَمَا يُؤْذَى أَحَدٌ وَلَقَدْ أَتَتْ عَلَيَّ ثَلَاثُونَ مِنْ بَيْنِ [ص:١٤٤ لَيْلَةٍ وَيَوْمٍ وَمَا لِي وَلِبِلَالٍ طَعَامٌ يَأْكُلُهُ ذُو كَبِدٍ إِلَّا

شَيْءٌ يُوَارِيهِ إِبْطُ بِلَالٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ قَالَ: وَمَعْنَى هَذَا الْحَدِيثِ: حِينَ خَرَجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَارِبًا مِنْ مَكَّةَ وَمَعَهُ بِلَالٌ إِنَّمَا كَانَ مَعَ بِلَالٍ مِنَ الطَّعَامِ مَا يَحْمِلُ تحتَ إبطه

5253. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुझे अल्लाह की राह में जितना डराया गया है इतना किसी को नहीं डराया गया, अल्लाह की राह में जितनी मुझे अज़ीयत दी गई है इतनी किसी को अज़ीयत नहीं दी गई, मुझ पर तीस दिन-रात भी गुज़रे हैं की मेरे और बिलाल रदियल्लाहु अन्हु के लिए ऐसी कोई चीज़ नहीं थी जिसे कोई जानदार खाता है, अलबत्ता इतनी (कलिल) चीज़ थी जिसे बिलाल रदियल्लाहु अन्हु की बगल छिपा लेती थी”| और इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: इस हदीस का मानी यह है कि जब नबी ﷺ मक्का से भाग निकले थे तो बिलाल रदियल्लाहु अन्हु आप के साथ थे, और बिलाल रदियल्लाहु अन्हु के पास पस इतना सा खाना था जो वह अपने बगल के नीचे रखते थे| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (2472)

٥٢٥٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» طَلْحَةَ قَالَ: شَكَوْنَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْجُوعَ فَرَفَعْنَا عَنْ بُطُونِنَا عَنْ حَجَرٍ حَجَرٍ فَرَفَعَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ بَطْنِهِ عَن حجرين. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَقَالَ: حَدِيث غَرِيب

5254. तल्हा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हमने रसूलुल्लाह ﷺ से भूख की शिकायत की और हमने अपने पेट से कपड़ा उठाकर एक पत्थर बंधा हुआ दिखाया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने पेट पर दो पत्थर बंधे हुए दिखाए| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (2371) * سيار بن حاتم : حسن الحديث ، وثقه الجمهور

٥٢٥٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي»» هُرَيْرَة أَنَّهُ أَصَابَهُمْ جُوعٌ فَأَعْطَاهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَمْرَةً تَمْرَةً. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

5255. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्हें भूख लगी तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें एक एक खजूर दी| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (2474 وقال : صحيح)

٥٢٥٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَمْرِو»» بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " خَصْلَتَانِ مَنْ كَانَتَا فِيهِ كَتَبَهُ اللَّهُ شاكراً: مَنْ نَظَرَ فِي دِينِهِ إِلَى مَنْ هُوَ فَوْقَهُ فَاقْتَدَى بِهِ وَنَظَرَ فِي دُنْيَاهُ إِلَى مَنْ هُوَ دُونَهُ فَحَمِدَ اللَّهَ عَلَى مَا فَضَّلَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ كَتَبَهُ اللَّهُ شَاكِرًا صَابِرًا. وَمَنْ نَظَرَ فِي دِينِهِ إِلَى مَنْ هُوَ دُونَهُ وَنَظَرَ فِي دُنْيَاهُ إِلَى مَنْ هُوَ فَوْقَهُ فَأَسِفَ عَلَى مَا فَاتَهُ مِنْهُ لَمْ يَكْتُبْهُ اللَّهُ شَاكِرًا وَلَا صَابِرًا ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ»» وَذَكَرَ حَدِيثَ أَبِي سَعِيدٍ: «أَبْشِرُوا يَا مَعْشَرَ

صَعَالِيكِ الْمُهَاجِرِينَ» فِي بَابٍ بَعْدَ فَضَائِلِ الْقُرْآنِ

5256. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत किया, आप ﷺ ने फ़रमाया: “दो खसलते जिस शख़्स में हो अल्लाह इसे शुक्र गुज़ार और साबिर लिख देता है, जो शख़्स अपने दीन के मुआमले में अपने से ऊपर वाले को देखता है और फिर उसकी इक्तेदा करता है, और दुनिया के मुआमले में वह अपने से नीचे वाले को देखता है और अल्लाह ने जो उस को उस पर फ़ज़ीलत अता की है उस पर अल्लाह का शुक्र अदा करता है, तो अल्लाह इसे शुक्र गुज़ार और सब्र करने वाला लिख देता है, और जो शख़्स अपने दीन के मुआमले में अपने से कम तर को और दुनिया के मुआमले में अपने से बढ़तर को देखता है और जो चीज़ इसे नहीं मिली उस पर अफ़सोस करता है तो अल्लाह इसे शुक्र गुज़ार व साबिर नहीं लीखता”|, और अबू सईद से मरवी हदीस: “मुहाजरिन की फ़क़ीर जमाअत खुश हो जाओ” فَضَائِلِ الْقُرْآنِ (फ़ज़ाइल ए कुरान) के बाब के बाद ज़िक्र की गई है. (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (2512) * مثنى بن الصباح : ضعيف0 حديث ابى سعيد تقدم (2198)

बَابُ فَضْلِ الْفُقَرَاءِ وَمَا كَانَ مِنْ عَيْشِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ • फकीरों की फ़ज़ीलत और नबी ﷺ की जिंदगी का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٥٢٥٧ - (صَحِيح) عَن»» أبي عبد الرَّحْمَن الحُبُلِيِّ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرٍو وَسَأَلَهُ رَجُلٌ قَالَ: أَلَسْنَا مِنْ فُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ؟ فَقَالَ لَهُ عَبْدُ اللَّهِ: أَلَكَ امْرَأَةٌ تَأْوِي إِلَيْهَا؟ قَالَ: [ص:١٤٤ نَعَمْ. قَالَ: أَلَكَ مَسْكَنٌ تَسْكُنُهُ؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: فَأَنْتَ مِنَ الْأَغْنِيَاءِ. قَالَ: فَإِنَّ لِي خَادِمًا. قَالَ: فَأَنْتَ مِنَ الْمُلُوكِ. قَالَ: عَبْدُ الرَّحْمَنِ: وَجَاءَ ثَلَاثَةُ نَفَرٍ إِلَى عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو وَأَنَا عِنْدَهُ. فَقَالُوا: يَا أَبَا مُحَمَّد إناوالله مَا نَقْدِرُ عَلَى شَيْءٍ لَا نَفَقَةَ وَلَا دَابَّةَ وَلَا مَتَاعَ. فَقَالَ لَهُمْ: مَا شِئْتُمْ إِنْ شِئْتُمْ رَجَعْتُمْ إِلَيْنَا فَأَعْطَيْنَاكُمْ مَا يَسَّرَ اللَّهُ لَكُمْ وَإِنْ شِئْتُمْ ذَكَرْنَا أَمْرَكُمْ لِلسُّلْطَانِ وَإِنْ شِئْتُمْ صَبَرْتُمْ فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ فُقَرَاءَ الْمُهَاجِرِينَ يَسْبِقُونَ الْأَغْنِيَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِلَى الْجَنَّةِ بِأَرْبَعِينَ خَرِيفًا» . قَالُوا: فَإِنَّا نَصْبِرُ لَا نَسْأَلُ شَيْئا. رَوَاهُ مُسلم ."

5257. अबू अब्दुल रहमान हुबलीय बयान करते हैं, मैंने अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से सुना एक आदमी ने उनसे सवाल पूछा: क्या हम मुहाजर फुकरा में से नहीं? अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु ने इसे फ़रमाया: क्या तुम्हारी बीवी है जिसके पास तुम रात बसर करते हो? उस ने कहा: जी हाँ, उन्होंने ने फ़रमाया: क्या तेरे रहने के लिए घर है? उस ने कहा: जी हाँ, उन्होंने ने फ़रमाया: तूम तो माल दारो में से हो, उस ने कहा: मेरे पास तो एक खादिम भी है, उन्होंने ने फ़रमाया: तुम तो बादशाह हो, अब्दुल रहमान ने कहा, तीन आदमी अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा के पास आए, मैं इस वक़्त उन के पास था, उन्होंने कहा: अबू मुहम्मद! अल्लाह की क़सम! हमारे पास कुछ भी नहीं, ना कोई खर्च है न सवारी और ना ही साज़ व सामान, उन्होंने उन्हें फ़रमाया

तुम क्या चाहते हो? अगर तुम कुछ चाहो तो तुम हमारे पास आना, अल्लाह ने तुम्हारे लिए जो मयस्सर फ़रमाया वह हम तुम्हें अता करेंगे, और अगर तुम चाहो तो हम तुम्हारा मुआमला बादशाह से ज़िक्र करेंगे? और अगर तुम चाहो तो सब्र करो, क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “मुहाजर फुकरा रोज़ ए कियामत माल दारो से चालीस साल पहले जन्नत में जाएँगे”, उन्होंने कहा: हम सब्र करते हैं और हम कोई चीज़ नहीं मांगेंगे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (37 / 2979)، (7462 و 7463)

٥٢٥٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عبد»» الله بن عَمْرو قَالَ: بَيْنَمَا أَنَا قَاعِدٌ فِي الْمَسْجِدِ وَحَلْقَةٌ مِنْ فُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ قُعُودٌ إِذْ دَخَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَعَدَ إِلَيْهِمْ فَقُمْتُ إِلَيْهِمْ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لِيُبْشِرْ فُقَرَاءُ الْمُهَاجِرِينَ بِمَا يَسُرُّ وُجُوهَهُمْ فَإِنَّهُمْ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ قَبْلَ الْأَغْنِيَاءِ بِأَرْبَعِينَ عَامًا» قَالَ: فَلَقَدْ رَأَيْتُ أَلْوَانَهُمْ أَسْفَرَتْ. قَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَمْرٍو: حَتَّى تَمَنَّيْتُ أَنْ أَكُونَ مَعَهُمْ أَو مِنْهُم. رَوَاهُ الدَّارِمِيّ

5258. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैं मस्जिद में बैठा हुआ था जबकि फुकरा मुहाजरिन का भी एक हल्का लगा हुआ था, जब नबी ﷺ तशरीफ़ लाए तो आप उन के हलके में शामिल हो गए, मैं भी उठ कर उनकी तरफ चला गया, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “फुकरा मुहाजरिन को इस बात की बशारत दि जाए जिस से उन के चेहरे खुश हो जाए, क्योंकि वह माल दारो से चालीस साल पहले जन्नत में जाएँगे”| रावी बयान करते हैं, मैंने देखा के उन के चेहरे चमकने लगे और अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा ने बयान किया हत्ता कि मैंने तमन्ना की मैं उन के साथ होता या उनमें से होता| (सहीह)

صحيح ، رواه الدارمی (2 / 339 ح 2847) [و النسائی فی السنن الکبری 3 / 443 ح 5876) و سنده حسن وله شاهد عند مسلم فی صححه (2979)، (7463)]

٥٢٥٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي»» ذرٍّ قَالَ: أَمَرَنِي خَلِيلِي بِسَبْعٍ: أَمَرَنِي بِحُبِّ الْمَسَاكِينِ وَالدُّنُوِّ مِنْهُمْ وَأَمَرَنِي أَنْ أَنْظُرَ إِلَى مَنْ هُوَ دُونِي وَلَا أَنْظُرَ إِلَى مَنْ هُوَ فَوْقِي وَأَمَرَنِي أَنْ أَصِلَ الرَّحِمَ وَإِنْ أَدْبَرَتْ وَأَمَرَنِي أَنْ لَا أَسْأَلَ أَحَدًا شَيْئًا] وَأَمَرَنِي أَنْ أَقُولَ بِالْحَقِّ وَإِنْ كَانَ مُرًّا وَأَمَرَنِي أَنْ لَا أخافَ فِي اللَّهِ لومة لَا ئم وَأَمَرَنِي أَنْ أُكْثِرَ مِنْ قَوْلِ: لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ فَإِنَّهُنَّ مِنْ كَنْزٍ تَحت الْعَرْش. رَوَاهُ أَحْمد

5259. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मेरे खलील ने मुझे सात चीजों के मुतल्लिक हुक्म फ़रमाया, आप ﷺ ने मसाकिन से मुहब्बत करने और उन के करीब रहने का मुझे हुक्म फ़रमाया, आप ने मुझे हुक्म फ़रमाया की मैं अपने से कमतर की तरफ देखूं और जो मुझ से (दुनिया के लिहाज़ से) बढ़तर है उसकी तरफ न देखूं, आप ने मुझे सिलह रहमी का हुक्म फ़रमाया अगरचे वह कतअ रहमी करे, आप ने मुझे हुक्म फ़रमाया की मैं किसी से कोई चीज़ न मंगू, आप ने मुझे हुक्म फ़रमाया की मैं हक़ बात करू अगरचे वह कड़वी हो, आप ने मुझे हुक्म

फ़रमाया की मैं अल्लाह के (हक़ के) बारे में किसी मलामत गिर की मलामत से न डरु, और आप ने मुझे हुक्म फ़रमाया की मैं لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ (नहीं कोई ताक़त और नहीं कोई कुव्वत सिवा अल्लाह के) कसरत से पढ़ा करू, क्योंकि वह (कलीमात) अर्श के नीचे खज़ानो में से एक खज़ाना है"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (5 / 159 ح 21745)

٥٢٦٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ»» قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُعْجِبُهُ مِنَ [ص:١٤٤ الدُّنْيَا ثَلَاثَةٌ الطَّعَامُ وَالنِّسَاءُ وَالطِّيبُ فَأَصَابَ اثْنَيْنِ وَلَمْ يُصِبْ وَاحِدًا أَصَابَ النِّسَاءَ وَالطِّيبَ وَلَمْ يُصِبِ الطَّعَامَ. رَوَاهُ أَحْمد

5260. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ को दुनिया की तीन चीज़े पसंद थी, खाना, औरते और खुशबु, आप को दो चीज़े मिल गई और एक न मिल सकी, आप को औरते (अज़वाजे मुतहरात (रअअ)) और खुशबू मिल गई लेकिन (शुक्म शेर (पेट भर)) खाना न मिला"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (6 / 72 ح 24944) * فيه رجل : مجهول و الحديث الآتى (5261) يغنى عنه

٥٢٦١ - (حسن) وَعَنْ»» أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «حُبِّبَ إِلَيَّ الطِّيبُ وَالنِّسَاءُ وَجُعِلَتْ قُرَّةُ عَيْنِي فِي الصَّلَاةِ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالنَّسَائِيُّ. وَزَادَ ابْنُ الْجَوْزِيِّ بَعْدَ قَوْلِهِ: «حُبِّبَ إِلَيَّ» منَ الدُّنْيَا "

5261. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "खुशबु और औरते मेरे लिए पसंदीदा बना दी गई है, और मेरी आंखो की ठंडक नमाज़ में है"| अहमद नसई, और इब्ने जौज़ी ने (حُبِّبَ إِلَيَّ) के बाद (مِنَ الدُّنْيَا) का इज़ाफा नकल किया है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (3 / 199 ح 13088) و النسائى (7 / 61 ح 3391)

٥٢٦٢ - (صَحِيح) وَعَنْ»» مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا بَعَثَ بِهِ إِلَى الْيَمَنِ قَالَ: «إِيَّاكَ وَالتَّنَعُّمَ فَإِنَّ عِبَادَ الله لَيْسُوا بالمتنعمين» . رَوَاهُ أَحْمد

5262. मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे यमन की तरफ भेजा तो फ़रमाया: "ज़्यादा नाज़ व नेअमत की जिंदगी से बचना क्योंकि अल्लाह के (मुखलस) बंदे ज़्यादा नेअमत गुज़ार नहीं होते"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (5 / 243 ح 22456) [و ابو نعيم فى حلية الاولياء (5 / 155)] * مريح بن مسروق روى عنه جماعة و وثقه ابن حبان وحده و ارسل عن عمر ففى سماعه من معاذ نظر لانه توفى قبل عمر رضى الله عنهما

٥٢٦٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَلِيٍّ»» رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ رَضِيَ مِنَ اللَّهِ بِالْيَسِيرِ مِنَ الرِّزْقِ رَضِيَ الله مِنْهُ بِالْقَلِيلِ من الْعَمَل»

5263. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स अल्लाह की तरफ से मिलने वाले थोड़े से रीज़्क पर राज़ी हो जाता है तो अल्लाह उस के थोड़े अमल से राज़ी हो जाता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه البیهقی فی شعب الایمان (4585 ، نسخة محققة : 4265) * اسحاق بن محمد الفروی ضعیف ضعفه الجمهور و الراوی شک فی سماعه من ابیه و السند منقطع

٥٢٦٤ - (ضَعِيف) وَعَنِ»» ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ جَاعَ أَوِ احْتَاجَ فَكَتَمَهُ النَّاسُ كَانَ حَقًّا عَلَى اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ أَنْ يَرْزُقَهُ رِزْقَ سَنَةٍ مِنْ حلالٍ» . رَوَاهُمَا الْبَيْهَقِيّ فِي «شعب الْإِيمَان»

5264. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स भूख में मुब्तिला हुआ या किसी चिज़ का ज़रूरत मंद हुआ और उस ने इसे लोगों से छुपाए रखा तो अल्लाह अज्ज़वजल पर हक़ है के वह इसे साल फिर के लिए रिज़्के हलाल अता फरमाए”, दोनों रिवायतों को इमाम बयहकी ने शौबुल ईमान में नकल किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف جذا ، رواه البیهقی فی شعب الایمان (10054 ، نسخة محققة : 9581) * فیه ابو عبد الرحمن السلمی ضعیف جدًا ، ولاعمش مدلس و عنعن ان صح السند الیه و علل أخری

٥٢٦٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ عَبْدَهُ الْمُؤْمِنَ الْفَقِيرَ الْمُتَعَفِّفَ أَبَا الْعِيَالِ» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

5265. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक अल्लाह अपने इस मोमिन अयाल दार बंदे को पसंद करता है जो ज़रूरत मंद होने के बावजूद सवाल नहीं करता”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابن ماجه (4121) * فیه موسی بن عبیدة ضعیف و القاسم بن مهران لم یثبت سماعه من عمران و فیه علة أخری وله شاهد ضعیف جدًا

٥٢٦٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن زيدٍ»» بنِ أسلمَ قَالَ: اسْتَسْقَى يَوْمًا عُمَرُ فَجِيءَ بِمَاءٍ قَدْ شيبَ [ص:١٤٤] بعسلٍ فَقَالَ: إِنَّه لطيِّبٌ لكني أَسْمَعُ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ نَعَى عَلَى قَوْمٍ شَهَوَاتِهِمْ فَقَالَ (أَذْهَبْتُمْ طَيِّبَاتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا)»» فَأَخَافُ أَنْ تَكُونَ حَسَنَاتُنَا عُجِّلَتْ لَنَا فَلَمْ يشربْه. رَوَاهُ رزين

5266. ज़ैद बिन असलम रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, एक रोज़ उमर रदियल्लाहु अन्हु ने पानी तलब किया तो

उन्हें शहद मिला पानी पेश किया गया, उन्होंने ने फ़रमाया: यह तो बहोत अच्छा है, लेकिन में अल्लाह अज्ज़वजल का फरमान सुनता हूँ कि उस ने एक कौम को उनकी शह्वात पर मायूब करार देते हुए फ़रमाया: "तुमने अपनी अच्छी चीज़े दुनिया की ज़िन्दगानी में हासिल कर ली और तुमने उन से इस्तेफ़ादा कर लिया, मैं तो डरता हूँ कि हमारी नेकियो का सवाब दुनिया ही में न दे दिया जाए लिहाज़ा उन्होंने इसे न पिया| (मझे नहीं मिली रवाह रजिन.)

لم اجده ، رواه رزين (لم اجده)

٥٢٦٧ - (صَحِيح) وَعَن»» ابنِ عمَرَ قَالَ: مَا شبِعنا من تمر حَتَّى فتحننا خَيْبَرَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

5267. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, हमने फतह खैबर से पहले कभी भी सैर हो कर खजूरे नहीं खाई| (बुखारी)

رواه البخارى (4243)

بَاب الأمل والحرص • उम्मीद और लालच का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٥٢٦٨ - (صَحِيح) عَن عبد الله قَالَ: خَطَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَطًّا مُرَبَّعًا وَخَطَّ خَطًّا فِي الْوَسَطِ خَارِجًا مِنْهُ وَخَطَّ خُطُطًا صِغَارًا إِلَى هَذَا الَّذِي فِي الْوَسَطِ مِنْ جَانِبِهِ الَّذِي فِي الْوَسَطِ وفقال: «هَذَا الْإِنْسَانُ وَهَذَا أَجَلُهُ مُحِيطٌ بِهِ وَهَذَا الَّذِي هُوَ خَارِجُ أَمَلِهِ وَهَذِهِ الْخُطُوطُ الصِّغَارُ الْأَعْرَاضُ فَإِنْ أَخْطَأَهُ هَذَا نَهَسَهُ هَذَا وَإِنْ أخطأه هَذَا نهسه هَذَا» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

5268. अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने एक मिरबअ शकल लकीर खिचां और एक लकीर (इस मिरबअ के) बिच में उस से बाहर जाती हुई खिंची और कुछ इस बिच वाली लकीर के पहलु में छोटी छोटी लकीर और खिंची और फ़रमाया: "ये इंसान है और यह उसकी अजल (मौत) है जो इसे घेरे हुए हैं और जो बाहर की तरफ निकल रही है के उसकी उम्मीद है, और यह छोटी छोटी लकीर आने वाले हादसात है, अगर एक उस से खता कर जाता है तो यह (दूसरा) इसे दबोच लेता है और अगर यह उस से खता कर जाता है तो यह इसे दबोच लेता है"| (बुखारी)

رواه البخارى (6417)

٥٢٦٩ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: خَطَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خُطُوطًا فَقَالَ: «هَذَا الْأَمَلُ وَهَذَا أَجَلُهُ فَبَيْنَمَا هُوَ كَذَلِكَ إِذْ جَاءَهُ الْخَطُّ الأقربُ» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

5269. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने कुछ लकीर खिंची तो फ़रमाया: “ये उम्मीद है और यह उसकी मौत है, वह इसी असना में होता है तो ज़्यादा करीब वाली लकीर अचानक उस तक पहुँचती है”| (बुखारी)

رواه البخاری (6418)

٥٢٧٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يَهْرَمُ ابْنُ آدَمَ وَيَشِبُّ مِنْهُ اثْنَانِ: الْحِرْصُ عَلَى الْمَالِ وَالْحِرْصُ عَلَى الْعُمُرِ ". مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5270. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “इंसान बुढा हो जाता है लेकिन उसकी दो चीज़े जवान रहती है माल की हरस और उमर की हरस”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6421) و مسلم (115 / 1047)، (2412)

٥٢٧١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " لَا يَزَالُ قَلْبُ الْكَبِيرِ شَابًّا فِي اثْنَيْنِ: فِي حُبِّ الدُّنْيَا وَطول الأمل ". مُتَّفق عَلَيْهِ

5271. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “बूढ़े शख़्स का दिल दो चीजों के बारे में जवान ही रहता है, दुनिया की मुहब्बत के बारे में और लम्बी ख्वाहिशो के बारे में”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6420) و مسلم (114 / 1046)، (2411)

٥٢٧٢ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَعْذَرَ اللَّهُ إِلَى امْرِئٍ أَخَّرَ أَجَلَهُ حَتَّى بَلَّغَهُ سِتِّينَ سَنَةً» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

5272. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह ने इस शख़्स से (तौबा न करने और नेक अमल न करने का) उज़्र ज़ाइल कर दिया जिस की अजल (मौत) को मोअख़्ख़र किया हत्ता कि इसे साठ साल तक पहुंचा दीया”| (बुखारी)

رواه البخاری (6419)

٥٢٧٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَوْ كَانَ [ص:١٤٥ لِابْنِ آدَمَ وَادِيَانِ مِنْ مَالٍ لَابْتَغَى ثَالِثًا وَلَا يَمْلَأُ جَوْفَ ابْنِ آدَمَ إِلَّا التُّرَابُ وَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَى مَنْ تَابَ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5273. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर इंसान के लिए माल की दो वादियाँ हो तो वह तीसरी तलाश करता है, इंसान के पट को सिर्फ (कब्र की) मिट्टी ही भरेगी और अल्लाह तौबा करने वाले शख़्स की तौबा कबूल फरमाता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6436) و مسلم (118 / 1049)، (2418)

٥٢٧٤ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: أَخَذَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِبَعْضِ جَسَدِي فَقَالَ: «كُنْ فِي الدُّنْيَا كَأَنَّكَ غَرِيبٌ أَوْ عَابِرُ سبيلٍ وعُدَّ نفسَكَ فِي أهل الْقُبُور» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

5274. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मेरे जिस्म के किसी हिस्से को पकड़ कर फ़रमाया: “दुनिया में ऐसे रहो गोया तुम एक परदेसी या राहगीर हो और अपने आप को अहल क़बुर (मुर्दों) में से शुमार करो”| (बुखारी)

رواه البخاری (6416)

उम्मीद और लालच का बयान • بَاب الأمل والحرص

दूसरी फस्ल • الْفَصْلُ الثَّانِي

٥٢٧٥ - (لم تتمّ دراسته) عَن عبد الله بن عَمْرو قَالَ: مَرَّ بِنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنَا وَأُمِّي نُطَيِّنُ شَيْئًا فَقَالَ: «مَا هَذَا يَا عَبْدَ اللَّهِ؟» قُلْتُ شَيْءٌ نُصْلِحُهُ. قَالَ: «الْأَمْرُ أَسْرَعُ مِنْ ذَلِكَ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

5275. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ हमारे पास से गुज़रे तो मैं और मेरी वालिद (अपने मकान के) किसी हिस्सा की लिपाई कर रहे थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अब्दुल्लाह! क्या हो रहा है?” मैंने अर्ज़ किया: हम (मकान के किसी) हिस्से की मरम्मत कर रहे हैं आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुआमला (मौत) उस से ज़्यादा तेज़ है”| अहमद तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (सहीह)

صحیح ، رواه احمد (2 / 161 ح 6502) و الترمذی (2335)

٥٢٧٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يُهَرِيقُ الْمَاءَ فَيَتَيَمَّمُ بِالتُّرَابِ

فَأَقُولُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ الْمَاءَ مِنْكَ قَرِيبٌ يَقُولُ: «مَا يُدْرِينِي لَعَلِّي لَا أَبْلُغُهُ» . رَوَاهُ فِي «شَرْحِ السُّنَّةِ» وَابْنُ الْجَوْزِيِّ فِي كتاب «الْوَفَاء»

5276. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ कभी पेशाब करते तो मिट्टी से तयम्मुम करते, मैं अर्ज़ करता अल्लाह के रसूल! पानी तो आप के करीब ही है, आप ﷺ फरमाते: "मुझे किया पता शायद की मैं वहां तक न पहुँच सकू"| शरह सुन्ना और इब्ने जौज़ी ने किताब "الوفاء' अल वफ़ाअ' में उसे रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البغوى فى شرح السنة (14 / 232 ح 4031) [و احمد (1 / 288 و ابن المبارك فى الزهد : 292) و الطبرانى فى الكبير (12 / 238 ح 12987 ، بلون آخر) * ابن لهيعة مدلس و عنعن

٥٢٧٧ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَنَسٍ»» أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «هَذَا ابْنُ آدَمَ وَهَذَا أَجَلُهُ» وَوَضَعَ يَدَهُ عِنْدَ قَفَاهُ ثُمَّ بَسَطَ فَقَالَ: «وَثَمَّ أمله» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5277. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: "ये इंसान है और यह उसकी मौत है", और आप ﷺ ने अपना हाथ अपने गुद्दी के पास रखा, फिर खोला तो फ़रमाया: "और वहां उसकी आरज़ूए हैं"| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (2334 وقال : حسن صحيح)

٥٢٧٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غَرَزَ عُودًا بَيْنَ يَدَيْهِ وَآخَرَ إِلَى جَنْبِهِ وَآخَرَ أَبْعَدَ مِنْهُ. فَقَالَ: «أَتَدْرُونَ مَا هَذَا؟» قَالُوا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: «هَذَا الْإِنْسَانُ وَهَذَا الْأَجَلُ» أُرَاهُ قَالَ: «وَهَذَا الْأَمَلُ فَيَتَعَاطَى الْأَمَلَ فَلَحِقَهُ الْأَجَلُ دُونَ الْأَمَلِ» . رَوَاهُ فِي «شَرْحِ السّنة»

5278. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने अपने सामने एक लकड़ी गाड़ी, एक उस के पहलु में और एक उस के दौर गाड़ी, आप ﷺ ने फ़रमाया: "क्या तुम जानते हो, यह क्या है?" सहाबा रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह और उस के रसूल ज़्यादा जानते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "ये इंसान है और यह अजल (मौत) है", रावी बयान करते हैं, मेरा ख़याल है, आप ﷺ ने फ़रमाया: "ये आरज़ूए है वह आरज़ूए हासिल करने के लिए कोशिश करता है तो उसकी आरज़ू के पूरा होने से पहले इसे मौत आ जाती है"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه البغوى فى شرح السنة (14 / 285 ح 4091) [و احمد (3 / 18 ح 11149)]

٥٢٧٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «عُمُرُ أُمَّتِي مِنْ سِتِّينَ سَنَةً إِلَى سَبْعِينَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

5279. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मेरी उम्मत की उमर साठ और सत्तर साल के दरमियान है”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2331)

٥٢٨٠ - (حسن) وَعَنْهُ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَعْمَارُ أُمَّتِي مَا بَيْنَ السِتِّينَ إِلَى السَبْعِينَ وَأَقَلُّهُمْ مَنْ يَجُوزُ ذَلِكَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ»» وَذُكِرَ حَدِيثُ عَبْدِ اللَّهِ بنِ الشِّخيرِ فِي «بَاب عِيَادَة الْمَرِيض»

5280. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरी उम्मत की उमरें साठ और सत्तर साल के दरमियान है और इस (साठ, सतर) से तजावुज़ करने वाले उनमें से कम है”| तिरमिज़ी, इब्ने माजा| और अब्दुल्लाह बिन शखिय इसे मरवी हदीस بَابُ عِيَادَةِ الْمَرِيضِ وَثَوَابِ الْمَرَضِ (मरीज़ की इयादत और मर्ज़ के सवाब का बयान) मरीज़ में ज़िक्र हो चुकी है? (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (3550 وقال : غریب حسن) و ابن ماجه (4236) 0 حدیث عبدالله بن الشخیر تقدم (1469)

بَاب الأمل والحرص • उम्मीद और लालच का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٥٢٨١ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَمْرِو»» بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَوَّلُ صَلَاحِ هَذِهِ الْأُمَّةِ الْيَقِينُ وَالزُّهْدُ وَأَوَّلُ فَسَادِهَا الْبُخْلُ وَالْأَمَلُ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي «شعب الْإِيمَان»

5281. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं की नबी ﷺ ने फ़रमाया: “इस उम्मत की पहली सलाह (आखिरत का) यकीन और दुनिया से बे रगबती है, जबकि उस का अव्वल फसाद बुखल और (लामहदूद) आरज़ूए है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه البیهقی فی شعب الایمان (10844 ، نسخة محققة : 10350) * فیه ابو عبد الرحمن السلمی ضعیف جدًا و عبدالله بن لهيعة مدلس و عنعن ان صح السند اليه و للحديث لون آخر عند احمد (الزهد ص 10 ص 51) و سنده ضعیف لانقطاعه

٥٢٨٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ سُفْيَانَ»» الثَّوْرِيِّ قَالَ: لَيْسَ الزُّهْدُ فِي الدُّنْيَا بِلُبْسِ الْغَلِيظِ وَالْخَشِنِ وَأَكْلِ الْجَشِبِ إِنَّمَا الزُّهْدُ فِي الدُّنْيَا قِصَرُ الْأَمَلِ. رَوَاهُ فِي «شرح السّنة»

5282. सुफियान सौरी रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: “मोटा, झूठा कपड़ा पहनने और रुखा सुखा खाने का नाम दुनिया से बे रगबत नहीं, बल्कि आरज़ूओ का कम होना दुनिया से बे रगबती है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البغوى فى شرح السنة (14 / 286 بدون سند ولم اجد مسندًا)

٥٢٨٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ زَيْدِ»» بْنِ الْحُسَيْنِ قَالَ: سَمِعْتُ مَالِكًا وَسُئِلَ أَيُّ شَيْءٍ الزُّهْدُ فِي الدُّنْيَا؟ قَالَ: طِيبُ الْكَسْبِ وَقِصَرُ الْأَمَلِ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي «شعب الْإِيمَان»

5283. ज़ैद बिन हुसैन रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने इमाम मालिक से सुना, उन से दरियाफ्त किया गया, दुनिया से बे रगबती से क्या मुराद है? उन्होंने ने फ़रमाया: हलाल कमाई और उम्मीदों का कम होना| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (10779 ، نسخة محققة : 10293) * زيد بن الحسين مجهول : لم اجد من وثقه

بَابُ اسْتِحْبَابِ الْمَالِ وَالْعُمُرِ لِلطَّاعَةِ • अल्लाह की इताअत व इबादत के लिए माल और उम्र से मुहब्बत रखने का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٥٢٨٤ - (صَحِيح) عَن سَعْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْعَبْدَ التَّقِيَّ الْغَنِيَّ الْخَفِيَّ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ»» وَذُكِرَ حَدِيثُ ابْنِ عُمَرَ: «لَا حَسَدَ إِلَّا فِي اثْنَيْنِ» فِي «بَاب فَضَائِل الْقُرْآن»

5284. साअद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक अल्लाह ऐसे मालदार को पसंद फरमाता है जो परहेज़गार, गुम नाम हो”| और इब्ने उमर (र अ) से मरवी हदीस: “हसद सिर्फ दो आदमियों पर है” बाब فَضَائِلِ الْقُرْآنِ (फ़ज़ाइल ए कुरान) में बयान हो चुकी है? (मुस्लिम)

رواه مسلم (11 / 2965)، (7432) 0 حديث ابن عمر تقدم (2113)

بَابُ اسْتِحْبَابِ الْمَالِ وَالْعُمُرِ لِلطَّاعَةِ • अल्लाह की इताअत व इबादत के लिए माल और उम्र से मुहब्बत रखने का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٥٢٨٥ - (لم تتمّ دراسته) عَن أبي بكرةَ أَنَّ رَجُلًا قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَيُّ النَّاسِ خيرٌ؟ قَالَ: «مَن طالَ عمُرُه وحسُنَ عَمَلُهُ» . قَالَ: فَأَيُّ النَّاسِ شَرٌّ؟ قَالَ: «مَنْ طَالَ عُمُرُهُ وَسَاءَ عَمَلُهُ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ والدارمي

5285. अबू बकरह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! कौन सा आदमी बेहतर है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिस की उमर दराज़ हो और उस का अमल अच्छा (यानी कुरआन व सुन्नत के मुताबिक) हो”, इस शख़्स ने अर्ज़ किया, सबसे बुरा शख़्स कौन है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिस की उमर दराज़ हो और उस का अमल बुरा हो”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه احمد (5 / 40 ح 20686) و الترمذی (2330 وقال : حسن صحيح) و الدارمی (2 / 308 ح 27452746) * علی بن زيد بن جدعان ضعيف و حديث الترمذی (2329) يغنی عنه

٥٢٨٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عبيد بن خَالِد أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ آخى بَيْنَ رَجُلَيْنِ فَقُتِلَ أَحَدُهُمَا ثُمَّ مَاتَ الْآخَرُ بَعْدَهُ بِجُمُعَةٍ أَوْ نَحْوِهَا فَصَلَّوْا عَلَيْهِ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا قُلْتُمْ؟» قَالُوا: دَعَوْنَا اللَّهَ أَنْ يَغْفِرَ لَهُ وَيَرْحَمَهُ وَيُلْحِقَهُ بِصَاحِبِهِ. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «فَأَيْنَ صَلَاتُهُ بَعْدَ صَلَاتِهِ وَعَمَلُهُ بَعْدَ عَمَلِهِ؟» أَوْ قَالَ: «صِيَامُهُ بَعْدَ صِيَامِهِ لِمَا بَيْنَهُمَا أَبْعَدُ مِمَّا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

5286. उबैद बिन खालिद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने दो आदमियों के दरमियान भाई चाराह काइम किया, उनमें से एक अल्लाह की राह में शहीद कर दिया गया, फिर दूसरा उस के तकरीबन एक हफ्ते बाद फौत हो गया, सहाबा रदियल्लाहु अन्हु ने उसकी नमाज़ ए जनाज़ा पढ़ी तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: “तुमने उस के लिए क्या दुआ की ?” उन्होंने अर्ज़ किया, हमने अल्लाह से दुआ की के वह उसकी मगफिरत फरमाए, उस पर रहम फरमाए और इसे उस के साथी से मिलाए, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “उस की वह नमाज़े जो उस ने उसकी नमाज़ो के बाद पढ़ि वह कहाँ गई और उस ने उस के बाद जो अमल किए वह कहाँ गए? या फ़रमाया: “उस ने उस के बाद जो रोज़े रखे तो वह कहाँ गए ?” इन दोनों के बिच में तो ज़मीन व आसमान के बिच में फासले से ज़्यादा फासला है”| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (2524) و النسائی (4 / 74 ح 1987)

٥٢٨٧ - (صَحِيح) وَعَن أبي كبشةَ الأنماريِّ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «ثَلَاثٌ أُقْسِمُ عَلَيْهِنَّ

وَأَحَدِّثُكُمْ حَدِيثًا فَاحْفَظُوهُ فَأَمَّا الَّذِي أُقْسِمُ عَلَيْهِنَّ فَإِنَّهُ مَا نَقَصَ مَالُ [ص:١٤٥ عَبْدٍ مِنْ صَدَقَةٍ وَلَا ظُلِمَ عَبْدٌ مَظْلِمَةً صَبَرَ عَلَيْهَا إِلَّا زَادَهُ اللَّهُ بِهَا عِزًّا وَلَا فَتَحَ عَبْدٌ بَابَ مَسْأَلَةٍ إِلَّا فَتَحَ اللَّهُ عَلَيْهِ بَابَ فَقْرٍ وَأَمَّا الَّذِي أُحَدِّثُكُمْ فَاحْفَظُوهُ» فَقَالَ: " إِنَّمَا الدُّنْيَا لِأَرْبَعَةِ نفرٍ: عبدٌ رزقَه اللَّهُ مَالا وعلماً فهوَ يَتَّقِي فِيهِ رَبَّهُ وَيَصِلُ رَحِمَهُ وَيَعْمَلُ لِلَّهِ فِيهِ بِحَقِّهِ فَهَذَا بِأَفْضَلِ الْمَنَازِلِ. وَعَبْدٍ رَزَقَهُ اللَّهُ عِلْمًا وَلَمْ يَرْزُقْهُ مَالًا فَهُوَ صَادِقُ النيَّةِ وَيَقُول: لَوْ أَنَّ لِي مَالًا لَعَمِلْتُ بِعَمَلِ فُلَانٍ فأجرُهما سواءٌ. وعبدٌ رزَقه اللَّهُ مَالا وَلم يَرْزُقْهُ عِلْمًا فَهُوَ يَتَخَبَّطُ فِي مَالِهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ لَا يَتَّقِي فِيهِ رَبَّهُ وَلَا يَصِلُ فِيهِ رَحِمَهُ وَلَا يَعْمَلُ فِيهِ بِحَقٍّ فَهَذَا بأخبثِ المنازلِ وعبدٌ لم يرزُقْه اللَّهُ مَالا وَلَا عِلْمًا فَهُوَ يَقُولُ: لَوْ أَنَّ لِي مَالًا لَعَمِلْتُ فِيهِ بِعَمَلِ فُلَانٍ فَهُوَ نِيَّتُهُ وَوِزْرُهُمَا سَوَاءٌ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ صَحِيح

5287. अबू कब्शा अन्मारी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “तीन खसलते हैं, मैं इन पर क़सम उठाता हूँ और मैं तुम्हें एक हदीस बयान करता हूँ, तुम उसे याद कर लो, वह चीज़े जिन पर में क़सम उठाता हूँ यह हैं: सदका करने से बंदे का माल कम नहीं होता, जिस बंदे की हक़ तलफी की जाए और वह उस पर सब्र करे तो उस के बदले में अल्लाह उसकी इज्ज़त में इज़ाफा फरमाता है, और बंदा जब किसी से सवाल करता है तो अल्लाह इसे फकीरी में मुब्तिला कर देता है, रही वह बात जो में तुम्हें बताने जा रहा हूँ उस को खूब याद रखना”, पस फ़रमाया: “दुनिया चार किस्म के लोगों के लिए है: एक वह बंदा जिसे अल्लाह ने माल और इल्म अता किया हो और वह इस (इल्म) के बारे में अपने रब से डरता हो, सिलह रहमी करता हूँ और वह इस (इल्म) के मुताबिक अल्लाह की खातिर अमल करता हो, यह सबसे अफज़ल दर्जा है, एक वह बंदा जिसे अल्लाह ने इल्म दिया हो लेकिन इसे रीज़्क न दिया हो, और वह नियत का अच्छा है, वह कहता है: अगर मेरे पास माल होता तो मैं भी फलां (मालदार) शख़्स की तरह खर्च करता, इन दोनों के लिए अज़र बराबर है, और एक वह बंदा है जिसे अल्लाह ने माल अता किया लेकिन इल्म नहीं दिया तो वह इल्म के बगैर अपने माल की वजह से बेराह रिवाय का शिकार हो जाता है, और वह न तो अपने रब से डरता है और न सिलह रहमी करता है और ना ही इसे हक़ के मुताबिक खर्च करता है, यह शख़्स इन्तिहाई बुरे दरजे पर है, और एक वह बंदा है जिसे अल्लाह ने माल दिया न इल्म वह कहता है: अगर मेरे पास माल होता तो मैं भी फलां शख़्स की तरह अमल (यानी खर्च) करता, वह सिर्फ नियत ही करता है जबकि दोनों का गुनाह बराबर है”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस सहीह है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (2325) * يونس بن خباب ضعيف رافضى و للحديث طريق آخر معلول (ضعيف) عند احمد (4 / 230 ح 1802) بمتن آخر

٥٢٨٨ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى إِذَا أَرَادَ بِعَبْدٍ خَيْرًا اسْتَعْمَلَهُ» . فَقِيلَ: وَكَيْفَ يَسْتَعْمِلُهُ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: «يُوَفِّقُهُ لِعَمَلٍ صَالِحٍ قَبْلَ الموتِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5288. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक अल्लाह तआला जब किसी बंदे के साथ भलाई का इरादा करता है तो वह इसे (इताअत वाले) कामो पर लगा देता है”, अर्ज़ किया गया: अल्लाह

के रसूल! वह इसे किस तरह काम पर लगाता है? फ़रमाया: “मौत से पहले इसे स्वालेह अमल करने की तौफिक अता फरमा देता है”| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (2142 وقال : صحيح)

٥٢٨٩ - (ضَعِيف) وَعَنْ شَدَّادِ بْنِ أَوْسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ»» : «الْكَيِّسُ مَنْ دَانَ نَفْسَهُ وَعَمِلَ لِمَا بَعْدَ الْمَوْتِ. وَالْعَاجِزُ مَنْ أَتْبَعَ نَفْسَهُ هَوَاهَا وَتَمَنَّى عَلَى اللَّهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

5289. शद्दाद बिन अवसी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दाना शख़्स वह है, जिस ने अपने नफ्स का मुहासबा किया और मौत के बाद के लिए अमल किए, और कम अक़्ल शख़्स वह है जिस ने अपने नफ्स को ख्वाहिश के ताबेअ किया और अल्लाह पर उम्मीद बांध ली (के वह गफुर व रहीम) है”| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ الترمذی (2459) و ابن ماجہ (4260) * ابوبکر بن ابی مریم ضعیف مختلط

بَابُ اسْتِحْبَابِ الْمَالِ وَالْعُمُرِ لِلطَّاعَةِ • अल्लाह की इताअत व इबादत के लिए माल और उम्र से मुहब्बत रखने का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٥٢٩٠ - (صَحِيح) عَنْ رَجُلٌ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: كُنَّا فِي مَجْلِسٍ فَطَلَعَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلَى رَأْسِهِ أَثَرُ مَاءٍ فَقُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ نَرَاكَ طَيِّبَ النَّفْسِ. قَالَ: أَجَلْ. قَالَ: ثُمَّ خَاضَ الْقَوْمُ فِي ذِكْرِ الْغِنَى فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا بَأْسَ بِالْغِنَى لِمَنِ اتَّقَى اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ وَالصِّحَّةُ لِمَنِ اتَّقَى خَيْرٌ مِنَ الْغِنَى وَطِيبُ النَّفس من النَّعيم» رَوَاهُ أَحْمد

5290. नबी ﷺ के एक सहाबी से रिवायत है उन्होंने कहा: हम एक मजलिस में थे की अचानक रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ लाए और आप के सर पर पानी (यानी गुसल) के असरात थे, हमने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! हम आप को खुश तिब्ब देख रहे हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ठीक है”, रावी बयान करते हैं, फिर लोगों ने माल दारी के मुतल्लिक गौर व खोज़ करना शुरू कर दिया (क्या वह जाईज़ है या नाजाइज़ ?) रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स अल्लाह अज्ज़वजल से डरता है उस के लिए माल दारी में कोई बुराई नहीं, तक़्वा वाले शख़्स के लिए सेहत माल दारी से बेहतर है, और हकीकी ख़ुशी नेअमतो में से है”| (सहीह)

اسنادہ ضعیف ، رواہ احمد (5 / 372 ح 23545) [و ابن ماجہ (2141)]

٥٢٩١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ سُفْيَانَ الثَّوْرِيِّ قَالَ كَانَ الْمَالُ فِيمَا مَضَى يُكْرَهُ فَأَمَّا الْيَوْمَ فَهُوَ تُرْسُ الْمُؤْمِنِ وَقَالَ لَوْلَا هَذِهِ الدَّنَانِيرُ لَتَمَنْدَلَ بِنَا هَؤُلَاءِ الْمُلُوكُ وَقَالَ مَنْ كَانَ فِي يَدِهِ مِنْ هَذِهِ شَيْءٌ فَلْيُصْلِحْهُ فَإِنَّهُ زَمَانٌ إِنِ احْتَاجَ كَانَ أَوَّلَ مَنْ يَبْذُلُ دِينَهُ وَقَالَ: الْحَلَالُ لايحتمل السَّرف. رَوَاهُ فِي شرح السّنة

5291. सुफियान सौरी रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, माज़ी में माल नापसंदीदा चीज़ थी, जबकि आज वह मोमिन की ढाल है, और फ़रमाया अगर (हमारे पास) दीनार न होते तो यह बादशाह हमें हकीर (तुच्छ) समझते और फ़रमाया जिस शख़्स के हाथ में माल हो वह इसे कारआमद (काम के लायक) बनाए (ज़ाए न करे) क्योंकि यह ऐसा दौर है के अगर वह ज़रूरत मंद हुआ तो वह पहला शख़्स होगा जो (हुसूले दुनिया के लिए) अपना दीन बेच डालेगा, और फ़रमाया हलाल फ़िज़ूल खर्ची का मुतहम्मल नहीं हो सकता| (ज़ईफ़)

ضعيف مردود ، رواه البغوى فى شرح السنة (14 / 291 بعد 4098 بدون سند ولم اجده مسندًاوقوله من اكن المال الى ترس المومن ، رواه ابو نعيم فى حلية الاولياء (6 / 381) و سنده ضعيف جدًافيه داود (رواد) بن الجراح وهو متروک و شطر الثانى رواه ابو نعيم ايضًا فى الحليه (6 / 381) و سنده ضعيف فيه جماعة لم اجد لهم توثيقًا يعتمد عليه)

٥٢٩٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يُنَادِي مُنَادٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ: أَيْنَ أَبْنَاءُ السِّتِّينَ؟ وَهُوَ الْعُمُرُ الَّذِي قَالَ اللَّهُ تَعَالَى [أَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَا يَتَذَكَّرُ فِيهِ مَن تذكَّر وجاءكُم النذير] رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي شعب الْإِيمَان

5292. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रोज़ ए कियामत मुनादी (एलान) करने वाला मुनादी (एलान) करेगा : साठ साले कहाँ है?” और यह (साठ साल) वह उमर है जो अल्लाह तआला ने फ़रमाया: “क्या हम ने तुम्हें उमर अता नहीं की थी, जिस ने नसीहत पकड़नी थी वह नसीहत पकड़ता, और तुम्हारे पास आगाह करने वाले भी आए”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (10254 ، نسخة محققة : 9773) * فيه ابراهيم بن الفضل المخزومى : متروک و ابوبکر بن ابى دارم : کذاب و لکنه توبع ، انظر المعجم الکبير للطبرانى (11 / 177178 ح 11415)

٥٢٩٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عبدِ»» الله بنِ شدَّادٍ قَالَ إِنَّ نَفرا من بني عذرةثلاثة أَتَوُا النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَسْلَمُوا قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ يَكْفِينِيهِمْ؟» قَالَ طَلْحَةُ: أَنَا. فَكَانُوا عِنْدَهُ فَبَعَثَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ»» بَعْثًا فَخَرَجَ فِيهِ أَحَدُهُمْ فَاسْتُشْهِدَ ثُمَّ بَعَثَ بَعْثًا فَخَرَجَ فِيهِ الْآخَرُ فَاسْتُشْهِدَ ثُمَّ مَاتَ الثَّالِثُ عَلَى فِرَاشِهِ. قَالَ: قَالَ طَلْحَةُ: [ص:١٤٥ فَرَأَيْتُ هَؤُلَاءِ الثَّلَاثَةَ فِي الْجَنَّةِ وَرَأَيْتُ الْمَيِّتَ عَلَى فِرَاشِهِ أَمَامَهُمْ وَالَّذِي اسْتُشْهِدَ آخِرًا يَلِيهِ وَأَوَّلَهُمْ يَلِيهِ فَدَخَلَنِي مِنْ ذَلِكَ فَذَكَرْتُ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم فَقَالَ: «وَمَا أَنْكَرْتَ مِنْ ذَلِكَ؟ لَيْسَ أَحَدٌ أَفْضَلَ عِنْدَ اللَّهِ مِنْ مُؤْمِنٍ يُعَمَّرُ فِي الْإِسْلَام لتسبيحه»» وتكبيره وتهليله»

5293. अब्दुल्लाह बिन शद्दाद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, बनू अज़्रह के तीन आदमी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए और उन्होंने इस्लाम कबूल कर लिया, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कौन है जो उन के (खाने पीने

की) मुझ से ज़िम्मेदारी उठा ले ?” तल्हा रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, में, चुनांचे वह (तीनो) उन्हीं के पास थे की नबी ﷺ ने एक लश्कर रवाना किया तो उनमें से एक इस लश्कर के साथ हो गया और वह शहीद हो गया, फिर आप ने एक लश्कर रवाना किया तो दूसरा शख़्स उस के साथ गया तो वह भी शहीद हो गया, फिर तीसरा शख़्स अपने बिस्तर पर फौत हो गया, रावी बयान करते हैं, तल्हा रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: मैंने (ख्वाब में) तीनो को जन्नत में देखा और बिस्तर पर वफात पाने वाले को उन के आगे देखा, जो बाद में शहीद हुआ था वह उस के साथ था, जबकि पहले शहीद होने वाला शख़्स इस दूसरे (शहीद) के साथ था, चुनांचे उस से मुझे अश्काल पैदा हुआ तो मैंने नबी ﷺ से उस का तज़किरह किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम को उस से कौन सी चीज़ अजीब लगी? अल्लाह के यहाँ इस मोमिन से अफज़ल कोई शख़्स नहीं जिसे इस्लाम में अल्लाह तआला की तस्बीह व तकबीर और तहलील “لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ” कहने के लिए तवील उमर दि जाए| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه احمد (1 / 163 ح 1401) * السند مرسل وله طريق آخر عند البزار (954 كشف الاستار) و ابى يعلى (634) و سنده ضعيف

٥٢٩٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مُحَمَّدِ»» بْنِ أَبِي عَمِيرَةَ وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ عَبْدًا لَوْ خَرَّ عَلَى وَجْهِهِ مِنْ يَوْمَ وُلِدَ إِلَى أَنْ يَمُوتَ هَرَمًا فِي طَاعَةِ اللَّهِ لَحَقَّرَهُ فِي ذَلِكَ الْيَوْمِ وَلَوَدَّ أَنَّهُ رُدَّ إِلَى الدُّنْيَا كَيْمَا يَزْدَادَ من الْأجر والثَّواب رَوَاهُمَا أَحْمد

5294. मुहम्मद बिन अबी उमैर रदियल्लाहु अन्हु जो के रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबी थे, उन से रिवायत है उन्होंने ने फ़रमाया: अगर बंदा अपने यौम ए पैदाइश से लेकर बुढा हो कर मरने तक अल्लाह की इताअत में सजदाह रेज़ रहे तो वह रोज़ ए कियामत उस को भी हकीर समझेगा और वह आरज़ू करेगा के काश इसे दुनिया में दोबारा भेज दिया जाए ताकि वह अज्र व सवाब में इज़ाफा कर सके”| दोनों रिवायत को इमाम अहमद ने नकल किया है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه احمد (4 / 185 ح 17800)

तवक्कुल और सब्र का बयान • بَاب التَّوَكُّل وَالصَّبْر

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٥٢٩٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مِنْ أَمَّتِي سَبْعُونَ أَلْفًا بِغَيْرِ حِسَابٍ هُمُ الَّذِينَ لَا يَسْتَرْقُونَ وَلَا يَتَطَيَّرُونَ وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ» مُتَّفق عَلَيْهِ

5295. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरी उम्मत के सत्तर हज़ार लोग हिसाब के बगैर जन्नत में जाएँगे, यह वह लोग है जो न दम झाड़ कराते है और न बद्शुगनी लेते थे और वह अपने रब पर तवक्कुल करते थे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6472) و مسلم (371 / 218)، (524)

٥٢٩٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمًا فَقَالَ: " عُرِضَتْ عَلَيَّ الْأُمَمُ فَجَعَلَ يَمُرُّ النَّبِيُّ وَمَعَهُ الرَّجُلُ وَالنَّبِيُّ وَمَعَهُ الرَّجُلَانِ وَالنَّبِيُّ وَمَعَهُ الرَّهْطُ وَالنَّبِيُّ وَلَيْسَ مَعَهُ أَحَدٌ فَرَأَيْتُ سَوَادًا كَثِيرًا سَدَّ الْأُفُقَ فَرَجَوْتُ أَنْ يَكُونَ أُمَّتِي فَقِيلَ هَذَا مُوسَى فِي قَوْمِهِ ثُمَّ قِيلَ لِي انْظُرْ فَرَأَيْتُ سَوَادًا كَثِيرًا سَدَّ الْأُفُقَ فَقِيلَ لِي انْظُرْ هَكَذَا وَهَكَذَا فَرَأَيْتُ سَوَادًا كَثِيرًا سَدَّ الْأُفق فقيل: هَؤُلَاءِ أُمَّتُكَ وَمَعَ هَؤُلَاءِ سَبْعُونَ أَلْفًا قُدَّامَهُمْ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ بِغَيْرِ حِسَابٍ هُمُ الَّذِينَ لَا يَتَطَيَّرُونَ ولايسترقون وَلَا يَكْتَوُونَ وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ فَقَامَ عُكَّاشَةُ بْنُ مِحْصَنٍ فَقَالَ: ادْعُ اللَّهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ. قَالَ «اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ مِنْهُمْ» . ثُمَّ قَامَ رجل فَقَالَ: ادْعُ اللَّهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ. فَقَالَ سَبَقَكَ بِهَا عُكَّاشَةُ. مُتَّفق عَلَيْهِ

5296. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, एक रोज़ रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया: “मुझ पर उम्मते पेश की गई, चुनांचे एक नबी गुज़रे उन के साथ एक आदमी था, एक और नबी थे और उन के साथ दो आदमी थे, और एक और नबी थे उन के साथ चंद आदमी थे, जबकि किसी नबी के साथ कोई एक भी नहीं था, मैंने एक बड़ा गिरोह देखा जो अफक तक फैला हुआ था, मैंने उम्मीद की के यह मेरी उम्मत होगी लेकिन मुझे बताया गया के यह मूसा अलैहिस्सलाम अपने कौम के साथ है, फिर मुझे कहा गया: देखो, मैंने बहोत बड़ा गिरोह देखा जो अफक तक फैला हुआ था, मुझे कहा गया: इस तरफ (दाए, बाए) देखो, मैंने बहोत बड़ा गिरोह देखा जो अफक पर फैला हुआ था, मुझे बताया गया के यह आप की उम्मत, और उन के साथ उन के आगे सत्तर हज़ार है जो हिसाब के बगैर जन्नत में जाएँगे, यह वह लोग है जो के बद्शुगनी लेते थे न दम झाड़ कराते थे, और ना ही दागते थे और वह सिर्फ अपने रब पर तवक्कुल करते थे”, इतने में उकाशत बिन मुह्सन रदियल्लाहु अन्हु ने खड़े हो कर अर्ज़ किया, अल्लाह से दुआ फरमाइए के वह मुझे उनमें शामिल फरमाए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह उस को उनमें से कर दे”, फिर एक और आदमी खड़ा हुआ और उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह से दुआ फरमाइए के वह मुझे भी उनमें कर दे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस में उकाशत तुझ से सबकत ले गया है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5752) و مسلم (374 / 220)، (527)

٥٢٩٧ - (صَحِيح) وَعَنْ صُهَيْبٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم «عجبا لأمر الْمُؤمن كُله خَيْرٌ وَلَيْسَ ذَلِكَ لِأَحَدٍ إِلَّا لِلْمُؤْمِنِ إِنْ أَصَابَتْهُ سَرَّاءُ شَكَرَ [ص:١٤٥]» فَكَانَ خَيْرًا لَهُ وَإِنْ أَصَابَتْهُ ضَرَّاءُ صَبَرَ فَكَانَ خَيْرًا لَهُ» رَوَاهُ مُسلم

5297. सहियब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मोमिन का मुआमला भी अजीब है, उस का हर मुआमला उस के लिए बाईसे खैर है और यह चीज़ सिर्फ मोमिन के लिए खास है, अगर इसे कोई

नेअमत मयस्सर आती है तो वह शुक्र करता है और यह उस के लिए बेहतर है, और अगर इसे कोई तकलीफ पहुँचती है तो वह सब्र करता है और यह भी उस के लिए बेहतर है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (64 / 2999)، (7500)

٥٢٩٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْمُؤْمِنُ الْقَوِيُّ خَيْرٌ وَأَحَبُّ إِلَى اللَّهِ مِنَ الْمُؤْمِنِ الضَّعِيفِ وَفِي كُلٍّ خَيْرٌ احْرِصْ عَلَى مَا يَنْفَعُكَ واستعن بِاللَّه ولاتعجز وَإِنْ أَصَابَكَ شَيْءٌ فَلَا تَقُلْ لَوْ أَنِّي فَعَلْتُ كَانَ كَذَا وَكَذَا وَلَكِنْ قُلْ قَدَّرَ اللَّهُ وَمَا شَاءَ فَعَلَ فَإِنَّ لَوْ تَفْتَحُ عمل الشَّيْطَان»»» رَوَاهُ مُسلم

5298. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कवी मोमिन, जईफ मोमिन से बेहतर है निज़ वह अल्लाह को ज़्यादा पसंद है, और सब (मोमिनों) में खैर है, तो अपने लिए नफा बख्श चीज़ के लिए मेहनत व कोशिश कर और अल्लाह से मदद तलब कर और आजिज़ी व सुस्ती न कर, और अगर तुझे कोई नुकसान पहुंचे तो ऐसे न कहो: अगर में (इस तरह, इस तरह) करता तो इस तरह, इस तरह होता बल्कि ऐसे कहो अल्लाह ने मुकद्दर किया और जो उस ने चाहा सो किया, क्योंकि (लफ्ज़) “ अगर” अमल शैतान खोलता है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (34 / 2664)، (6774)

तवक्कुल और सब्र का बयान • بَاب التَّوَكُّل وَالصَّبْر

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٥٢٩٩ - (لم تتمّ دراسته) عَن عمر بن الْخطاب قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: لَوْ أَنَّكُمْ تَتَوَكَّلُونَ عَلَى اللَّهِ حَقَّ تَوَكُّلِهِ لَرَزَقَكُمْ كَمَا يَرْزُقُ الطَّيْرَ تَغْدُو خِمَاصًا وَتَرُوحُ بِطَانًا ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

5299. उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “अगर तुम अल्लाह पर इस तरह तवक्कुल करो जिस तरह उस पर तवक्कुल करने का हक़ है, तो वह तुम्हें इस तरह रीज़्क फराहम करेगा जिस तरह वह परिंदों को रीज़्क फराहम करता है, वह सुबह के वक़्त भूके निकलते है और शाम के वक़्त शक्म सैर हो कर वापस आते है”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (2344 وقال : حسن صحیح) و ابن ماجه (4164)

٥٣٠٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " أَيُّهَا النَّاسُ لَيْسَ مِنْ شَيْءٍ يُقَرِّبُكُمْ إِلَى الْجَنَّةِ وَيُبَاعِدُكُمْ مِنَ النَّارِ إِلَّا قَدْ أَمَرْتُكُمْ بِهِ وَلَيْسَ شَيْءٌ يُقَرِّبُكُمْ مِنَ النَّارِ وَيُبَاعِدُكُمْ مِنَ الْجَنَّةِ إِلَّا قَدْ نَهَيْتُكُمْ عَنْهُ وَإِنَّ الرُّوحَ الْأَمِينَ - وَفِي رِوايةٍ: وإِن رُوحَ الْقُدُسِ - نَفَثَ فِي رُوعِي أَنَّ نَفْسًا لَنْ تَمُوتَ حَتَّى تَسْتَكْمِلَ رِزْقَهَا أَلَا فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَجْمِلُوا فِي الطَّلَبِ وَلَا يَحْمِلَنَّكُمُ اسْتِبْطَاءُ الرِّزْقِ أَنْ تَطْلُبُوهُ بِمَعَاصِي اللَّهِ فَإِنَّهُ لَا يُدْرَكُ مَا عِنْدَ اللَّهِ إِلَّا بِطَاعَتِهِ «. رَوَاهُ فِي» شرح السّنة «وَالْبَيْهَقِيّ فِي» شعب الإيمان " إِلَّا أَنَّهُ لَمْ يَذْكُرْ: «وَإِنَّ رُوحَ الْقُدُسِ»

5300. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “लोगो! हर वह चीज़ जो तुम्हें जन्नत के करीब कर दे और तुम्हें जहन्नम से दूर कर दे में उस के मुतल्लिक हुक्म दे चूका हूँ, और हर वह चीज़ जो तुम्हें जहन्नम के करीब कर दे और तुम्हें जन्नत से दूर कर दे में उस से तुम्हें मना कर चूका हूँ, बेशक रुहुल अमीन और एक दूसरी रिवायत में है बेशक रुहुल कुदुसने मेरा दिल में यह बात डाली के कोई नफ्स अपना रीज़्क पूरा किए बगैर फौत नहीं होगा, सुन लो! अल्लाह से डरो और अच्छे तरीके से रीज़्क तलाश करो और रीज़्क की ताखीर तुम्हें इस बात पर अमादा न करे की तुम अल्लाह की नाफ़रमानी के साथ इसे तलब करो, क्योंकि अल्लाह के यहाँ जो (इनामात) वह तो महज़ उसकी इताअत के ज़रिए ही हासिल किए जा सकते है”| शरह सुन्ना बयहकी की शौबुल ईमान अलबत्ता इमाम बयहकी ने “وَإِنَّ رُوْحَ الْقُدُسِ‘‘ (और बेशक रुहुल कुदुस) का ज़िक्र नहीं किया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البغوی فی شرح السنة (14 / 303304 ح 4111) و البیھقی فی شعب الایمان (10376 ، نسخة محققة : 9891) * السند منقطع ، زبید الایامی لم یدرک ابن مسعود و للحدیث شاھدان ضعیفان

٥٣٠١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الزَّهَادَةُ فِي الدُّنْيَا لَيْسَتْ بِتَحْرِيمِ وَلَا إِضَاعَةِ الْمَالِ وَلَكِنَّ الزَّهَادَةَ فِي الدُّنْيَا أَنْ لَا تَكُونَ بِمَا فِي يَدَيْكَ أَوْثَقَ بِمَا فِي يَد اللَّهِ وَأَنْ تَكُونَ فِي ثَوَابِ الْمُصِيبَةِ إِذَا أَنْتَ أُصِبْتَ بِهَا أَرْغَبَ فِيهَا لَوْ أَنَّهَا أُبْقِيَتْ لَكَ» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ وَعَمْرُو بْنُ وَاقِدٍ الرَّاوِي مُنكر الحَدِيث

5301. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “दुनिया से बे रगबती, हलाल को हराम करने और माल ज़ाए करने का नाम नहीं, बल्कि दुनिया से बे रगबती यह है कि जो कुछ तेरे हाथ में है वह इस चीज़ से जो अल्लाह के हाथो में है, ज़्यादा काबिल एतमाद न हो, और यह कि न हो तो मुसीबत के सवाब में जब तू उस में मुब्तिला कर दिया जाए, रगबत करने वाला के वह (मुसीबत) तुझे न पहुँचती”| तिरमिज़ी, इब्ने माजा इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है, और अम्र बिन वाकिद रावी मुनकर उल हदीस है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه الترمذی (2340) و ابن ماجه (4100) * عمرو بن واقد : متروک

٥٣٠٢ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كُنْتُ خَلْفَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمًا فَقَالَ: «يَا غُلَامُ احْفَظِ اللَّهَ

يَحْفَظْكَ احْفَظِ اللَّهَ تَجِدْهُ تُجَاهَكَ وَإِذَا سَأَلْتَ فَاسْأَلِ اللَّهَ وَإِذَا اسْتَعَنْتَ فَاسْتَعِنْ بِاللَّهِ وَاعْلَمْ أَنَّ الْأُمَّةَ لَوِ اجْتَمَعَتْ عَلَى أَنْ يَنْفَعُوكَ بِشَيْءٍ لَمْ يَنْفَعُوكَ إِلَّا بِشَيْءٍ قَدْ كَتَبَهُ اللَّهُ لَكَ وَلَوِ اجْتَمَعُوا عَلَى أَنْ يَضُرُّوكَ بِشَيْءٍ»» لَمْ يَضُرُّوكَ إِلَّا بِشَيْءٍ قَدْ كَتَبَهُ اللَّهُ عَلَيْكَ رُفِعَتِ الأقلام وجفَّت الصُّحُف» رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ

5302. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, एक रोज़ मैं रसूलुल्लाह ﷺ के पीछे (सवारी पर बैठा हुआ) था आप ﷺ ने फ़रमाया: “लड़के! तू अल्लाह (के अहकाम) की हिफाज़त कर, अल्लाह तेरी हिफाज़त फरमाएगा, तू अल्लाह (के हुकुक) का ख़याल रख, तू उसे अपने सामने पाएगा और जब तू सवाल करे तो सिर्फ अल्लाह से कर, जब तू मदद तलब करे तो सिर्फ अल्लाह से मदद तलब कर, और जान ले के अगर पूरी उम्मत भी जमा हो कर तुझे कुछ फ़ायदा पहुचाना चाहे तो वह तुझे उस से ज़्यादा कुछ फ़ायदा नहीं पहुंचा सकती जो अल्लाह ने तेरे लिए लिख दिया है, और अगर वह तुझे नुकसान पहुँचाने के लिए जमा हो जाए तो वह तुझे उस से ज़्यादा कुछ नुकसान नहीं पहुंचा सकती जो अल्लाह ने तेरे लिए लिख दिया है, कलम उठा लिए गए और सहिफे खुश्क हो गए”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (1 / 293 ح 2669) و الترمذی (2516 وقال : حسن صحيح)

٥٣٠٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ سَعْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مِنْ سَعَادَةِ ابْنِ آدَمَ رِضَاهُ بِمَا قَضَى اللَّهُ لَهُ وَمِنْ شَقَاوَةِ ابْنِ آدَمَ تَرْكُهُ اسْتِخَارَةِ اللَّهِ وَمِنْ شَقَاوَةِ ابْنِ آدَمَ سُخْطُهُ بِمَا قَضَى اللَّهُ لَهُ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

5303. साअद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इंसान की सआदतमंदी इसी में है के वह अपने बारे में अल्लाह के हुक्म और क़दर पर राज़ी हो, इंसान की बदनसीबी है के वह अल्लाह से खैर तलब करना छोड़ दे और इंसान की बदनसीबी है के वह अपने बारे में अल्लाह के हुक्म और क़दर पर राज़ी न हो”| अहमद तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (1 / 168 ح 1444) و الترمذی (2151) * محمد بن ابی حمید : ضعيف

तवक्कुल और सब्र का बयान • بَاب التَّوَكُّل وَالصَّبْر

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٥٣٠٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن جَابر أَنَّهُ غَزَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قبل نجد فَلَمَّا قَفَلَ مَعَهُ فَأَدْرَكَتْهُمُ الْقَائِلَةُ فِي وَادٍ كَثِيرِ الْعِضَاهِ فَنَزَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَتَفَرَّقَ النَّاسُ يَسْتَظِلُّونَ بِالشَّجَرِ فَنَزَلَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَحْتَ سَمُرَةٍ فَعَلَّقَ بِهَا سَيْفَهُ وَنِمْنَا نَوْمَةً فَإِذَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدْعُونَا وَإِذَا عِنْدَهُ أَعْرَابِيٌّ فَقَالَ: " إِنَّ هَذَا

اخْتَرَطَ [ص:١٤٦ عَلَيَّ سَيْفِي وَأَنَا نَائِمٌ فَاسْتَيْقَظْتُ وَهُوَ فِي يَدِهِ صَلتا. قَالَ: مَا يَمْنَعُكَ مِنِّي؟ فَقُلْتُ: اللَّهُ ثَلَاثًا " وَلَمْ يُعَاقِبْهُ وَجلسَ. مُتَّفق عَلَيْهِ

5304. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने नबी ﷺ के साथ नज्द की तरफ जिहाद किया, जब रसूलुल्लाह ﷺ वापस आए तो वह भी आप के साथ वापस आए, सहाबा किराम को घने खारदार दरख्तों की वादी में दो पहर को नींद ने आ लिया चुनांचे रसूलुल्लाह ﷺ ने (आराम की गर्ज़ से) यहाँ पड़ाव डाला और सहाबा किराम दरख्तों के साए की तलाश में अलग अलग हो गए, रसूलुल्लाह ﷺ ने केकड़ के दरख्त के नीचे पड़ाव डाला और अपने तलवार इस (दरख्त) के साथ लटका दी, और हम थोड़ी देर के लिए सो गए, अचानक रसूलुल्लाह ﷺ हमें बुलाने लगे हमने देखा के एक आराबी आप के पास है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस ने मुझ पर मेरी तलवार सोंट ली जबकि मैं इस वक़्त आराम कर रहा था, मैं बेदार हुआ तो तलवार उस के हाथ में सोंटी हुई थी, उस ने कहा तुझे मुझ से कौन बचाएगा? मैंने तीन मर्तबा कहा: “अल्लाह (बचाएगा)”| आप ﷺ ने उसको कोई सज़ा नहीं दी और आप बैठ गए| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (2910) و مسلم (311 / 843)، (1949)

٥٣٠٥ - (لم تتمّ دراسته) وَفِي رِوَايَةِ»» أَبِي بَكْرٍ الْإِسْمَاعِيلِيِّ فِي «صَحِيحِهِ» فَقَالَ: مَنْ يَمْنَعُكَ مِنِّي؟ قَالَ: «اللَّهُ» فَسَقَطَ السيفُ من يَده فَأخذ السَّيْفَ فَقَالَ: «مَنْ يَمْنَعُكَ مِنِّي؟» فَقَالَ: كُنْ خَيْرَ آخِذٍ. فَقَالَ: «تَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنِّي رَسُولُ اللَّهِ» . قَالَ: لَا وَلَكِنِّي أُعَاهِدُكَ عَلَى أَنْ لَا أُقَاتِلَكَ وَلَا أَكُونَ مَعَ قَوْمٍ يُقَاتِلُونَكَ فَخَلَّى سَبِيلَهُ فَأَتَى أَصْحَابَهُ فَقَالَ: جِئْتُكُمْ مِنْ عِنْدِ خَيْرِ النَّاسِ. هَكَذَا فِي «كتاب الْحميدِي» و «الرياض»

5305. और अबू बक्र इस्माइली ने अपने सहीह में यूँ रिवायत की है, उस ने कहा तुझे मुझ से कौन बचाएगा? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह! तलवार उस के हाथ से गिर गई, रसूलुल्लाह ﷺ ने तलवार पकड़ कर फ़रमाया: “तुझे मुझ से कौन बचाएगा ?” उस ने अर्ज़ किया, आप बेहतर पकड़ने वाले हैं (यानी मुआफ़ कर दें) आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम गवाही देते हो के अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, और यह कि में अल्लाह का रसूल हूँ ?” उस ने कहा: नहीं? लेकिन में आप ﷺ से यह अहद करता हूँ की मैं आप से ने तो किताल करूँगा और न आप से किताल करने वालो का साथ दूंगा, आप ﷺ ने उस का रास्ता छोड़ दिया (इसे जाने दीया) वह (आराबी) अपने साथियो के पास आया और कहा: में बेहतरीन शख़्स के पास से तुम्हारे पास आया हूँ| किताब अल हुमैदी और रियाज़ अल स्वालेहीन में इसी तरह है| (सहीह)

اسناده صحيح ، ذكره النووى فى رياض الصالحين (78 بتحقيقى) و رواه البيهقى فى دلائل النبوة (3 / 375376 من طريق الاسماعيلى به و لعله اسلم بعد كما يظهر من كلامه و من اجله ذكر فى الصحابة)

٥٣٠٦ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» أَبِي ذَرٍّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " إِنِّي لَأَعْلَمُ آيَةً لَو أَخذ النَّاسُ بهَا لكفتهم: (من يتق الله يَجْعَل لَهُ مخرجاويرزقه من حيثُ لَا يحتسبُ)»» رَوَاهُ أَحْمد وَابْن مَاجَه والدارمي

5306. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैं एक ऐसी आयत जानता हूँ कि अगर लोग उस पर अमल करे तो वह इन के लिए काफी हो जाए: “जो शख़्स अल्लाह से डर जाए तो वह उस के लिए (तमाम मुश्किलात से) निकलने की राहे पैदा फरमादेगा और इसे ऐसी जगह से रीज़्क फराहम करे जिसके बारे में उसे वह हो गुमान भी न था”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه احمد (5 / 178 ح 21884) و ابن ماجه (4220) و الدارمی (2 / 303 ح 2728) * اعله البوصیری بالانقطاع لان ابا السلیل لم یدرک ابا ذر رضی الله عنه کما فی التهذیب وغیره

٥٣٠٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ»» مَسْعُودٍ قَالَ: أَقْرَأَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: (إِنِّي أَنَا الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ)»» رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حسن صَحِيح

5307. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे यह आयत सिखाई: “बेशक मैं ही रीज़्क अता करने वाला, कुव्वत व ताकत वाला हूँ”| अबू दावुद, तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है| (सहीह)

صحیح ، رواه ابوداؤد (3993) و الترمذی (2940)

٥٣٠٨ - (إِسْنَاده جيد) وَعَن أنسٍ قَالَ: كَانَ أَخَوَانِ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَانَ أَحَدُهُمَا يَأْتِي النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالْآخَرُ يَحْتَرِفُ فَشَكَا المحترف أَخَاهُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «لَعَلَّكَ تُرْزَقُ بِهِ» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيث صَحِيح غَرِيب

5308. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के दौर में दो भाई थे, उनमें से एक नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर होता था जबकि दूसरा कारोबार किया करता था, कारोबार करने वाले ने अपने भाई की नबी ﷺ से शिकायत की, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “शायद के तुम्हें इसी की वजह से रीज़्क दिया जाता है”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस सहीह ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2345)

٥٣٠٩ - وَعَنْ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ قَلْبَ ابْنِ آدَمَ بِكُلِّ وَادٍ شُعْبَةٌ فَمَنْ أَتْبَعَ قَلْبَهُ الشُّعَبَ كُلَّهَا لَمْ يُبَالِ اللَّهُ بِأَيِّ وَادٍ أَهْلَكَهُ وَمَنْ [ص:١٤٦ تَوَكَّلَ عَلَى اللَّهِ كَفَاهُ الشّعب» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

5309. अमर बिन आस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक इंसान का दिल का हर वादी में हिस्सा है, जो शख़्स अपने दिल को तमाम हिस्सों के पीछे लगाता है तो अल्लाह को उसकी परवाह

नहीं ख्वाह वह इसे किसी भी वादी में हलाक कर दे, और जो शख़्स अल्लाह पर तवक्कुल करता है तो वह तमाम हिस्सों से किफ़ायत कर जाता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (4166) * فيه صالح بن رزين : مجهول وقال الذهبى :’’ حديثه منكر ‘‘ و السند ضعفه البوصيرى من اجل صالح هذا

٥٣١٠ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " قَالَ رَبُّكُمْ عَزَّ وَجَلَّ: لَوْ أَنَّ عَبِيدِي أَطَاعُونِي لَأَسْقَيْتُهُمُ الْمَطَرَ بِاللَّيْلِ وَأَطْلَعْتُ عَلَيْهِمُ الشَّمْسَ بِالنَّهَارِ وَلَمْ أُسْمِعْهُمْ صَوْتَ الرَّعدِ ". رَوَاهُ أَحْمد

5310. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हारे रब अज्ज़वजल ने फ़रमाया: अगर मेरे बंदे मेरी इताअत करे तो मैं रात के वक़्त इन पर बारिश बरसाऊ और दिन के वक़्त इन पर सूरज निकालू और उन्हें गरज की आवाज़ भी न सुनाउ”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (2 / 359 ح 8693) [و الحاكم (4 / 256)] * صدقة بن موسى الدقيقى السلمى ضعيف ضعفه المجهور

٥٣١١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ»» قَالَ: دَخَلَ رَجُلٌ عَلَى أَهْلِهِ فَلَمَّا رَأَى مَا بِهِمْ مِنَ الْحَاجَةِ خَرَجَ إِلَى الْبَرِيَّةِ فَلَمَّا رَأَتِ امْرَأَتُهُ قَامَتْ إِلَى الرَّحَى فَوَضَعَتْهَا وَإِلَى التَّنُّورِ فَسَجَرَتْهُ ثُمَّ قَالَتْ: اللَّهُمَّ ارْزُقْنَا فَنَظَرَتْ فَإِذَا الْجَفْنَةُ قَدِ امْتَلَأَتْ. قَالَ: وَذَهَبَتْ إِلَى التَّنُّورِ فَوَجَدَتْهُ مُمْتَلِئًا. قَالَ: فَرَجَعَ الزَّوْجُ قَالَ: أَصَبْتُمْ بَعْدِي شَيْئًا؟ قَالَتِ امْرَأَتُهُ: نَعَمْ مِنْ رَبِّنَا وَقَامَ إِلَى الرَّحَى فَذُكِرَ ذَلِكَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «أَمَا إِنَّهُ لَوْ لَمْ يَرْفَعْهَا لَمْ تَزَلْ تَدور إِلَى يَوْم الْقِيَامَة» . رَوَاهُ أَحْمد

5311. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी अपने अहल व अयाल के पास गया, जब उस ने उनकी (भूख की) ज़रूरत देखी तो वह सहरा (रेगिस्तान) की तरफ चला गया, जब उसकी अहलिया ने देखा तो वह चक्की की तरफ गई तो उसे दुरुस्त किया और तंदूर की तरफ गई और इसे जलाया, फिर इस औरत ने दुआ की, ऐ अल्लाह! हमें रीज़्क अता फरमा, उस ने देखा के अचानक डब्बा (रोटियों) से भर चूका है, रावी बयान करते हैं, वह तंदूर की तरफ गई तो उसे भी (रोटियों से) भरा हुआ पाया, रावी बयान करते हैं, शोहर वापस आया तो उस ने कहा, क्या मेरे बाद तुम्हें कोई चीज़ मिली है? अहलिया ने कहा: जी हाँ, हमारे रब की तरफ से, वह चक्की की तरफ गया (ताके इसे देखे) नबी ﷺ से इस का ज़िक्र किया गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर वह इस (चक्की के पाट) को न उठाता तो वह रोज़ ए कियामत तक चलती रहती”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (2 / 513 ح 10667) [و الطبرانى فى الاوسط (5584)] * هشام بن حسان مدلس و عنعن عن محمد بن سرين الخ

٥٣١٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» الدَّرْدَاءِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الرِّزْقَ لَيَطْلُبُ الْعَبْدَ كَمَا يَطْلُبُهُ أَجَلُهُ» . رَوَاهُ أَبُو نُعَيْمٍ فِي «الْحِلْيَة»

5312. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “यक़ीनन रीज़्क बंदे को इस तरह तलाश करता है जिस तरह उसकी मौत इसे तलाश करती है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابو نعيم فى حلية الاولياء (6 / 86) * الوليد بن مسلم كان يدلس تدليس التسوية ولم يصرح بالسماع المسلسل و للحديث شاهدان ضعيفان فى الحلية (7 / 90 ، 246) و الكامل لابن عدى وغيرهما

٥٣١٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَحْكِي نَبِيًّا مِنَ الْأَنْبِيَاءِ ضَرَبَهُ قَوْمُهُ فَأَدْمَوْهُ وَهُوَ يَمْسَحُ الدَّمَ عَنْ وَجْهِهِ وَيَقُولُ: «اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِقَوْمِي فَإِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُونَ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5313. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, गोया मैं रसूलुल्लाह ﷺ को देख रहा हूँ कि आप अंबिया अलैहिस्सलाम में से एक नबी का वाकिया बयान कर रहे हैं, उनकी कौम ने उन्हें मारा और लहुलुहान कर दिया और वह अपने चेहरे से खून साफ़ कर रहे हैं और फरमा रहे हैं, ऐ अल्लाह! मेरी कौम की मगफिरत फरमा क्योंकि वह शउर नहीं रखते| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3477) و مسلم (105 / 1792)، (4646)

بَاب الرِّيَاء والسمعة • रिया व शोहरत का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٥٣١٤ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ لَا ينظر إِلَى صوركُمْ وَلَا أموالِكم وَلَكِنْ يَنْظُرُ إِلَى قُلُوبِكُمْ وَأَعْمَالِكُمْ» . رَوَاهُ مُسلمٌ

5314. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “यक़ीनन अल्लाह तुम्हारी सूरतो और अमवाल को नहीं देखता, बल्कि वह तुम्हारे दिलों और आमाल को देखता है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (34 /2564)، (6543)

٥٣١٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: أَنَا أَغْنَى الشُّرَكَاءِ عَنِ الشِّرْكِ مَنْ عَمِلَ عَمَلًا أَشْرَكَ فِيهِ مَعِي غَيْرِي تَرَكْتُهُ وَشِرْكَهُ " وَفِي رِوَايَةٍ: فَأَنَا مِنْهُ بَرِيءٌ هُوَ لِلَّذِي عَمِلَهُ ". رَوَاهُ مُسلم

5315. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह तआला फरमाता है,

मैं (दुसरे) तमाम शरीको के मुकाबले में शिर्क से सबसे ज़्यादा बेनियाज़ हूँ, जो कोई ऐसा अमल करे जिस में वह मेरे साथ मेरे अलावा किसी और को भी शरीक करे तो मैं उस को उस के शिर्क समेत छोड़ देता हूँ"| एक और रिवायत में है: "मैं इस अमल करने वाले से बेज़ार हूँ वह अमल इसी के लिए है जिसके लिए उस ने किया है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (46 / 2985)، (7475)

٥٣١٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ جُنْدُبٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ سَمَّعَ سَمَّعَ اللَّهُ بِهِ وَمَنْ يُرَائِي يُرَائِي اللَّهُ بِهِ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5316. जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स शोहरत की खातिर कोई अमल करता है तो (रोज़ ए कियामत) अल्लाह इस शख़्स को (लोगो के सामने) ज़लील फरमाएगा (के उस ने इस नियत से अमल किया था) और जो दिखलावा करता है तो अल्लाह इसे (लोगो को) दिखला देगा की यह शख़्स रियाकार है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6499) و مسلم (48 / 2987)، (7477)

٥٣١٧ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قِيلَ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَرَأَيْتَ الرَّجُلَ يَعْمَلُ الْخَيْرِ وَيَحْمَدُهُ النَّاسُ عَلَيْهِ. وَفِي رِوَايَةٍ: يُحِبُّهُ النَّاسُ عَلَيْهِ قَالَ: «تِلْكَ عَاجِلُ بُشْرَى الْمُؤْمِنِ» . رَوَاهُ مُسلم

5317. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ से अर्ज़ किया गया, आप बताइए, एक आदमी नेकी का काम करता है, उस पर लोग उसकी तारीफ़ करते हैं, एक दूसरी रिवायत में है, उस पर लोगों इसे पसंद करते हैं (इस का क्या हुक्म है?) आप ﷺ ने फ़रमाया: "ये मोमिन के लिए पेशगी बशारत है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (166 / 2642)، (6721)

बَاب الرِّيَاء والسمعة • रिया व शोहरत का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٥٣١٨ - (حسن) عَن أبي سعدِ بن أبي فَضَالَةَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " إِذَا جَمَعَ [ص:١٤٦ اللَّهُ النَّاسَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيهِ نَادَى مُنَادٍ: مَنْ كَانَ أشركَ فِي عملٍ عمله لِلَّهِ أحدا فَلْيَطْلُبْ ثَوَابَهُ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ

أَغْنَى الشُّرَكَاءِ عَنِ الشِّرْكِ ". رَوَاهُ أَحْمَدُ

5318. अबू सईद बिन अबी फ़ुज़ालह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब अल्लाह लोगों को रोज़ ए कियामत, जिस में कोई शक नहीं, (हिसाब के लिए) जमा फरमाएग, तो एक एलान करने वाला एलान करेगा: जिस ने किसी ऐसे अमल में, जिसे उस ने अकेले अल्लाह के लिए किया था, शरीक बनाया तो वह अपना सवाब अल्लाह के अलावा किसी और से तलब करे, क्योंकि अल्लाह (दुसरे) तमाम शरीको के मुकाबले में शिर्क से सबसे ज़्यादा बेनियाज़ है”| (हसन)

حسن ، رواه احمد (3 / 466 ح 15932) [و الترمذی (3154) و ابن ماجه (4203)]

٥٣١٩ - (صَحِيح) وَعَن عبد الله بن عَمْرو أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ سَمَّعَ النَّاسَ بِعَمَلِهِ سَمَّعَ اللَّهُ بِهِ أَسَامِعَ خَلْقِهِ وَحَقَّرَهُ وَصَغَّرَهُ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي «شعب الْإِيمَان»

5319. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जो शख़्स अपने अमल के मुतल्लिक लोगों को सुनाता है तो अल्लाह उस के मुतल्लिक अपने मखलूक के कानों तक सुना देता है और वह इसे हकीर व ज़लील कर देता है”| (सहीह)

صحیح ، رواہ البیھقی فی شعب الایمان (6822 ، نسخۃ محققۃ : 6403) [و احمد (2 / 162 ، 212 ، 223)] * قلت : فیہ رجل یقال له ابو یزید وھو خیثمة بن عبد الرحمن کما فی حلیة الاولیاء (4 / 123) و مجمع الزوائد (10 / 222) فالحدیث صحیح و الحمد لله

٥٣٢٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ كَانَتْ نِيَّتُهُ طَلَبَ الْآخِرَةِ جَعَلَ اللَّهُ غِنَاهُ فِي قَلْبِهِ وَجَمَعَ لَهُ شَمْلَهُ وَأَتَتْهُ الدُّنْيَا وَهِيَ رَاغِمَةٌ وَمَنْ كَانَتْ نِيَّتُهُ طَلَبَ الدُّنْيَا جَعَلَ اللَّهُ الْفَقْرَ بَيْنَ عَيْنَيْهِ وَشَتَّتَ عَلَيْهِ أَمْرَهُ وَلَا يَأْتِيهِ مِنْهَا إِلاَّ مَا كُتِبَ لَهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَرَوَاهُ أَحْمد

5320. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जिस शख़्स की नियत तलबे आखिरत हो तो अल्लाह उस का दिल को गनी कर देता है, और उस के मुआमले को मजतमअ (जटिल) फरमा देता है और दुनिया ज़लील हो कर उस के पास चली आती है, और जिस शख़्स की नियत तलबे दुनिया हो तो अल्लाह उसकी पेशानी पर फकीरी सब्त (लिख) फरमा देता है, उस के मुआमले को मुन्तशर कर देता है और दुनिया इसे उतनी ही मिलती है जितनी अल्लाह ने उस के लिए लिख दी है”| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ الترمذی (2465 وقال : حسن غریب) و احمد (5 / 183 ح 21925) و للحدیث الآتی یغنی عنه) * یزید بن ابان الرقاشی زاھد ضعیف

٥٣٢١ - (لم تتمّ دراسته) وَالدَّارِمِيُّ عَنْ أَبَانٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ

5321. इमाम दारमी ने इसे अबान की सनद से ज़ैद बिन साबित रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (सहीह)

صحيح ، رواه الدارمی (1 / 75 ح 235) * ابان ھو ابن عثمان و سندہ صحیح ، و انظر سنن ابی داود (3660) و الترمذی (2656) وغیرھما

٥٣٢٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ بَيْنَا أَنَا فِي بَيْتِي فِي مُصَلَّايَ إِذْ دَخَلَ عَلَيَّ رَجُلٌ فَأَعْجَبَنِي الْحَالُ الَّتِي رَآنِي عَلَيْهَا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " رَحِمَكَ اللَّهُ يَا أَبَا هُرَيْرَةَ لَكَ أَجْرَانِ: أَجْرُ السِّرِّ وَأَجْرُ الْعَلَانِيَةِ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيث غَرِيب

5322. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! इस असना में की मैं अपने घर में अपने जाए नमाज़ पर होता हूँ तो अचानक एक आदमी मेरे पास आता है मुझे वह अपनी हालत अच्छी लगती है जिस में वह मुझे देखता है, (क्या यह भी रियाकारी है?) रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अबू हुरैरा! अल्लाह तुम पर रहम फरमाए, तुम्हारे लिए दुगना अज़र है, पोशीदा का अज़र और ज़ाहिर का अज़र”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ الترمذی (2384) [و ابن ماجہ (4226)] * حبیب بن ابی ثابت مدلس و عنعن

٥٣٢٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يَخْرُجُ فِي آخِرِ الزَّمَانِ رِجَالٌ يَخْتِلُونَ الدُّنْيَا بِالدِّينِ يَلْبَسُونَ لِلنَّاسِ جُلُودَ الضَّأْنِ مِنَ اللِّينِ أَلْسِنَتُهُمْ أَحْلَى مِنَ السُّكَّرِ [ص:١٤٦ وَقُلُوبُهُمْ قُلُوبُ الذِّئَابِ يَقُولُ اللَّهُ: «أَبِي يَغْتَرُّونَ أَمْ عليَّ يجترؤون؟ فَبِي حَلَفْتُ لَأَبْعَثَنَّ عَلَى أُولَئِكَ مِنْهُمْ فِتْنَةً تدع الْحَلِيم فيهم حيران» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5323. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आखरी ज़माने में कुछ ऐसे लोग ज़ाहिर होंगे जो दीन के बदले में दुनिया तलब करेंगे, वह लोगों को खुश करने के लिए बकरी की खाल पहनेंगे उनकी ज़बाने (यानी गुफ्तगू) चीनी से ज़्यादा मीठी होगी, और उन का दिल भेड़ीयों के दिलों जैसे होंगे, अल्लाह फरमाता है, वह धोके में मुब्तिला है (के में उन्हें मुहलत दे रहा हूँ) या वह मेरे खिलाफ जिरात (जुर्रत) करते हैं, मैं अपनी क़सम उठाता हूँ की मैं ऐसे लोगों पर उन्हीं में से एक फितने बरपा करूँगा के वह उन के हलिम बर्दबार (सहनशील) शख़्स को भी हैरान छोड़ देगा”| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف جدا ، رواہ الترمذی (2404) * فیہ یحیی بن عبیداللہ متروک و افحش الحاکم فرماہ بالوضع ، قلت : روایۃ المتروک مثل روایۃ الکذاب ، لا یستشھد بہ ولا یعتبر ابدًا

٥٣٢٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ»» عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " إِنَّ اللَّهَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى قَالَ: لَقَدْ خَلَقْتُ خَلْقًا أَلْسِنَتُهُمْ أَحْلَى مِنَ السُّكَّرِ وَقُلُوبُهُمْ أَمَرُّ مِنَ الصَّبْرِ فَبِي حَلَفْتُ لَأُتِيحَنَّهُمْ فِتْنَةً تَدَعُ الْحَلِيمَ فِيهِمْ حَيْرَانَ فَبِي يغترّون أم عليَّ يجترؤونَ؟ " رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَقَالَ: هَذَا حديثٌ غَرِيب

5324. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह तबारक व तआला ने फ़रमाया: “मैंने एक ऐसी मखलूक पैदा की है के उनकी ज़बाने चीनी से ज़्यादा शिरीन और उन का दिलएल्वे (एक बूटी) से ज़्यादा कड़वे है में अपनी ज़ात की क़सम उठाता हूँ में उन्हें एक फितने में मुब्तिला करूँगा के वह उन के हलिम (अक्लमंद व बर्दबार (सहनशील)) शख़्स को भी हैरान छोड़ देगा, क्या यह मेरी वजह से धोके में मुब्तिला हुए हैं या मेरे खिलाफ जिरात (जुर्रत) करते हैं ?” तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيفرواه الترمذی (2405) * حمزة بن ابی محمد : ضعيف

٥٣٢٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ لِكُلِّ شَيْءٍ شِرَّةٌ وَلِكُلِّ شِرَّةٍ فَتْرَةٌ فَإِنْ صَاحِبُهَا سَدَّدَ وَقَارَبَ فَارْجُوهُ وَإِنْ أُشِيرَ إِلَيْهِ بِالْأَصَابِعِ فَلَا تعدوه» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5325. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक हर चीज़ के लिए रगबत व निशाट (अमल) होती है और हर रगबत व निशाट (अमल) के लिए ज़ईफ़ व सुस्ती भी होती है, अगर इस रगबत रखने वाले ने मियाने रिवाय (संयम) रखी और इफरात से दुरी रखी तो उसकी (कामियाबी की) उम्मीद रखो और अगर उसकी तरफ उंगलिया उठाई जाए (इस की मशहूरी हो जाए) तो उसे शुमार न करो”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (2452 وقال : حسن صحيح غريب)

٥٣٢٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ»» عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «بِحَسب امريءٍ مِنَ الشَّرِّ أَنْ يُشَارَ إِلَيْهِ بِالْأَصَابِعِ فِي دِينٍ أَوْ دُنْيَا إِلَّا مَنْ عَصَمَهُ اللَّهُ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ»

5326. अनस रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “किसी आदमी के लिए यही शर काफी है के उस के दीन या दुनिया के मुआमले में उसकी तरफ उंगलिया उठाई जाए (इस की शोहरत हो जाए) मगर वह शख़्स जिसे अल्लाह महफ़ूज़ रखे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقی فی شعب الايمان (6978 ، نسخة محققة : 6580) * کلثوم بن محمد بن ابی سدرة الحلبی ضعيف علی الراجح و عطاء بن ابی مسلم الخراسانی عن ابی هريرة : مرسل

رِيَا و شोहरत का बयान • بَاب الرِّيَاء والسمعة

तीसरी फस्ल • الْفَصْلُ الثَّالِثُ

٥٣٢٧ - (صَحِيح) عَن»» أَبِي تَمِيمَة قَالَ: شَهِدْتُ صَفْوَانَ وَأَصْحَابَهُ وَجُنْدَبٌ يُوصِيهِمْ فَقَالُوا: هَلْ سَمِعْتُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَيْئًا؟ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " مَنْ سَمَّعَ إِنَّ أَوَّلَ مَا يُنْتِنُ مِنَ الْإِنْسَانِ بَطْنُهُ فمن اسْتَطَاعَ أَن لَا يَأْكُل إِلا طيبا فَلْيَفْعَلْ وَمَنِ اسْتَطَاعَ أَنْ لَا يَحُولَ بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجَنَّةِ مِلْءُ كَفٍّ مِنْ دَمٍ أَهَرَاقَهُ فَلْيفْعَل. رَوَاهُ البُخَارِيّ

5327. अबू तमीम रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैं सफवान रहिमहुल्लाह और उन के साथियो के पास मौजूद था और जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु उन्हें वाज़ व नसीहत फरमा रहे थे, उन्होंने पूछा: क्या आप ने रसूलुल्लाह ﷺ से कुछ सुना है? उन्होंने कहा: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "जो शख़्स शोहरत की खातिर कोई अमल करता है तो रोज़ ए कियामत अल्लाह उस को रुसवा करेगा (की यह इस नियत से अमल करता था) और जो अपने जान को मशक्कत में डालता है तो अल्लाह रोज़ ए कियामत इसे मशक्कत में मुब्तिला कर देगा", उन्होंने कहा: हमें वसीयत फरमाइए: उन्होंने ने फ़रमाया: इंसान के जिस्म से उस का पेट सबसे पहले ख़राब होता है, लिहाज़ा जो शख़्स इस्तिताअत रखता हो के वह सिर्फ हलाल ही खाएगा तो उसे ऐसे ही करना चाहिए और जो शख़्स इस्तिताअत रखे के उस के और जन्नत के दरमियान एक चुल्लू खून, जो उस ने नाजायज़बहाया हो वह हाइल न हो तो वह ज़रूर नाजायज़खून बहाने से बचे| (बुखारी)

رواه البخارى (7152)

٥٣٢٨ - (ضَعِيف) وَعَن»» عمر بن الْخطاب أَنَّهُ خَرَجَ يَوْمًا إِلَى مَسْجِدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَوَجَدَ مُعَاذَ بْنَ جَبَلٍ قَاعِدًا عِنْدَ قَبْرِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَبْكِي فَقَالَ: مَا يُبْكِيكَ؟ قَالَ: يُبْكِينِي شَيْءٌ سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ يَسِيرَ الرِّيَاءِ شِرْكٌ وَمَنْ عَادَى لِلَّهِ وَلِيًّا فَقَدْ بَارَزَ اللَّهَ بِالْمُحَارَبَةِ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْأَبْرَارَ الْأَتْقِيَاءَ الْأَخْفِيَاءَ الَّذِينَ إِذَا غَابُوا لَمْ يُتَفَقَّدُوا وَإِنْ حَضَرُوا لَمْ يُدْعَوْا وَلَمْ يُقَرَّبُوا قُلُوبُهُمْ مَصَابِيحُ الْهُدَى يَخْرُجُونَ مِنْ كُلِّ غَبْرَاءَ مُظْلِمَةٍ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ»

5328. उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के वह एक रोज़ रसूलुल्लाह ﷺ की मस्जिद की तरफ आए तो उन्होंने मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु को नबी ﷺ की कब्र के पास रोता हुआ देख कर उन से पूछा: तुम्हें कौन सी चीज़ रुला रही है? उन्होंने ने फ़रमाया: मुझे वह चीज़ रुला रही है जो मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से सुनी थी, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "मामूली सी रियाकारी भी शिर्क है, और जिस शख़्स ने मेरे किसी दोस्त से दुश्मनी रखी तो वह शख़्स अल्लाह के साथ जंग करने के लिए मैदान में उतर आया, बेशक अल्लाह ऐसे नेक, मुत्तकी और गुम नाम लोगों को पसंद करता है की जब वह गायब हो तो उन्हें तलाश न किया जाता हो और

अगर मौजूद हो तो उन्हें मदउ (बुलाया) नहीं किया जाता और न उन्हें करीब किया जाता है, उन का दिल हिदायत के चिराग हैं, वह हर किस्म के गर्द व गुबार से दूर हैं", (किसी फितने का शिकार नहीं होते)| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه ابن ماجه (3989) و البيهقى فى شعب الايمان (6812)

٥٣٢٩ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ الْعَبْدَ إِذَا صَلَّى فِي الْعَلَانِيَةِ فَأَحْسَنَ وَصَلَّى فِي السِّرِّ فَأَحْسَنَ قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: هَذَا عَبْدِي حَقًّا ". رَوَاهُ ابْن مَاجَه

5329. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "बेशक बंदा जब एलानिया नमाज़ पढ़ता है तो अच्छे तरीके से पढ़ता है और तन्हाई में नमाज़ पढ़ता है तो भी अच्छे तरीके से पढ़ता है, अल्लाह तआला फरमाता है, यह मेरा बंदा मुखलिस है"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (4200) * بقية مدلس و عنعن وقال ابو حاتم :'' هذا حديث منكر ، يشبه ان يكون من حديث عباد بن كثير ''

٥٣٣٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مُعَاذِ»» بْنِ جَبَلٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «يَكُونُ فِي آخِرِ الزَّمَانِ أَقْوَامٌ إِخْوَانُ الْعَلَانِيَةِ أَعْدَاءُ السَّرِيرَةِ» . فَقِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَكَيْفَ يَكُونُ ذَلِكَ. قَالَ: «ذَلِكَ بِرَغْبَةِ بَعْضِهِمْ إِلَى بَعْضٍ وَرَهْبَةِ بَعْضِهِمْ من بعض»

5330. मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: "आखरी दौर में कुछ ऐसे लोग होंगे के वह ज़ाहिरी तौर पर दोस्त होंगे जबकि बातिनी तौर पर दुश्मन होंगे", अर्ज़ किया गया: अल्लाह के रसूल! यह किस तरह होगा? आप ﷺ ने फ़रमाया: "ये एक दूसरे से रगबत (यानी मफाद) और एक दूसरे से खौफ यानी नुकसान के पेशे नज़र होगा"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (5 / 235 ح 22405) * فيه ابوبكر بن ابى مريم الغسانى : ضعيف مختلط ، رواه عن حبيب بن عبيد عن معاذ به و حبيب بن عبيد الرحبى لم يدرک سيدنا معاذ بن جبل رضى الله عنه فالسند منقطع

٥٣٣١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ شَدَّادِ»» بْنِ أَوْسٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يَقُول: «من صَلَّى يُرَائِي فَقَدْ أَشْرَكَ وَمَنْ صَامَ يُرَائِي فَقَدْ أَشْرَكَ وَمَنْ تَصَدَّقَ يُرَائِي فَقَدْ أَشْرَكَ» رَوَاهُمَا أَحْمد

5331. शद्दाद बिन अवसी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "जो शख़्स दिखलावे की खातिर नमाज़ पढ़ता है तो उस ने शिर्क किया, तो शख़्स दिखलावे की खातिर रोज़ा रखता है तो उस ने शिर्क किया, और जो शख़्स दिखलावे की खातिर सदका करता है तो उस ने शिर्क किया"| दोनों अहादीस

को इमाम अहमद ने रिवायत किया है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (4 / 126 ح 17270)

٥٣٣٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ»» أَنَّهُ بَكَى فَقِيلَ لَهُ: مَا يُبْكِيكَ؟ قَالَ: شَيْءٌ سَمِعْتُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ فَذَكَرْتُهُ فَأَبْكَانِي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُول: «أَتَخوَّفُ على أمتِي الشِّرْكِ وَالشَّهْوَةِ الْخَفِيَّةِ» قَالَ: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَتُشْرِكُ أُمَّتُكَ مِنْ بَعْدِكَ؟ قَالَ: «نَعَمْ أَمَا إِنَّهُمْ لَا يَعْبُدُونَ شَمْسًا وَلَا قَمَرًا وَلَا حَجَرًا وَلَا وَثَنًا وَلَكِنْ يُرَاؤُونَ بِأَعْمَالِهِمْ. وَالشَّهْوَةُ الْخَفِيَّةُ أَنْ يُصْبِحَ أَحَدُهُمْ صَائِمًا فَتَعْرِضَ لَهُ شَهْوَةٌ مِنْ شَهَوَاتِهِ فَيَتْرُكَ صَوْمَهُ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيِّ فِي «شعب الْإِيمَان»

5332. शद्दाद बिन अवसी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के वह रोने लगे, उन से पूछा गया, तुम्हें कौन सी चीज़ रुला रही है? उन्होंने कहा: वह चीज़ जो मैंने रसूलुल्लाह ﷺ की ज़बानी सुनी, मैंने इसे याद किया तो उस ने मुझे रुला दीया, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “मुझे अपनी उम्मत के बारे में शिर्क और छुपा ख्वाहिश का अंदेशा है” रावी बयान करता है, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! क्या आप के बाद आप की उम्मत शिर्क करेगी? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ, अलबत्ता वह सूरज की चाँद की पूजा नहीं करेंगे और ना ही पत्थर और मूर्ति की, बल्कि वह अपने आमाल का दिखलावा करेंगे, और छुपि ख्वाहिश यह है कि उनमें से कोई रोज़े की हालत में सुबह करेगा लेकिन उसकी ख्वाहिशात में से कोई ख्वाहिश उस के सामने जाएगी तो वह अपना रोज़ा तोड़ देगा”| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (6830 ، نسخة محققة : 6411) [و احمد (4 / 123124)] * فيه عبد الواحد بن زيد البصرى ضعيف متروک كما فى الجرح و التعديل (6 / 20)و للحديث طريق آخر عند ابن ماجه (4205) و سنده ضعيف و للحديث شواهد ضعيفة و الاحاديث الصحيحة تخالفه فى عبادة الاوثان

٥٣٣٣ - (حسن) وَعَن»» أبي سعيد الْخُدْرِيّ قَالَ: خَرَجَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَحْنُ نَتَذَاكَرُ الْمَسِيحَ الدَّجَّالَ فَقَالَ: «أَلَا أُخْبِرُكُمْ بِمَا هُوَ أَخْوَفُ عَلَيْكُمْ عِنْدِي مِنَ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ؟» فَقُلْنَا: بَلَى يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: «الشِّرْكُ الْخَفِيُّ أَنْ يَقُومَ الرَّجُلُ فَيُصَلِّيَ فَيَزِيدَ صَلَاتَهُ لِمَا يَرَى مِنْ نَظَرِ رجلٍ» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه "

5333. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ हमारे पास तशरीफ़ लाए तो हम मसीह दज्जाल के बारे में बात चित कर रहे थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या मैं तुम्हें इस चीज़ के मुतल्लिक न बताऊँ? जिस का मुझे तुम्हारे मुतल्लिक मसीह दज्जाल से भी ज़्यादा अंदेशा है?” हमने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! ज़रूर बताइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ शिर्के ख़फी, वह यह है कि एक आदमी नमाज़ पढ़ रहा है और जब वह देखता है के कोई शख़्स मुझे देख रहा है तो वह (इसे दीखाने के लिए) अपनी नमाज़ लम्बी कर देता है (आहिस्ता आहिस्ता लम्बी किराअत के साथ ज़्यादा वक़्त लगाता है)”| (हसन)

حسن ، رواه ابن ماجه (4204)

٥٣٣٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن مَحْمُود»» بن لبيد أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ أَخْوَفَ مَا أَخَافُ عَلَيْكُمُ الشِّرْكُ الْأَصْغَرُ» قالول: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَمَا الشِّرْكُ الْأَصْغَرُ؟ قَالَ: «الرِّيَاءُ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ. وَزَادَ الْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ» : " يَقُولُ اللَّهُ لَهُمْ يَوْمَ يُجَازِي الْعِبَادَ بِأَعْمَالِهِمْ: اذْهَبُوا إِلَى الَّذِينَ كُنْتُمْ تُرَاؤُونَ فِي الدُّنْيَا فَانْظُرُوا هَلْ تَجِدُونَ عِنْدَهُمْ جَزَاءً وَخَيْرًا؟ "

5334. महमूद बिन लबीद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “मुझे तुम्हारे मुतल्लिक शिर्के अज़गर का सबसे ज़्यादा अंदेशा है”, उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! शिर्के अज़गर से क्या मुराद है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “रियाकार”| और इमाम बयहकी ने शौबुल ईमान में यह इज़ाफा नकल किया है: “जिस रोज़ अल्लाह बंदो को उन के आमाल की जज़ा देगा तो वह उन (रियाकारों) को फरमाएगा: इन्ही की तरफ चले जाओ जिन को तुम दुनिया में (अपने आमाल) दिखाया करते थे, देखो क्या तुम उन के पास जज़ा और खैर व भलाई पाते हो?” |इसनाद हसन रवाह अहमद बयहकी की शौबुल ईमान. (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (5 / 428 ح 24036) و البيهقى فى شعب الايمان (6831 ، نسخة محققة : 6412)

٥٣٣٥ - (لم تتم دراسته) وَعَنْ أَبِي»» سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَوْ أَنَّ رَجُلًا عَمِلَ عَمَلًا فِي صَخْرَةٍ لَا بَابَ لَهَا وَلَا كَوَّةَ خَرَجَ عَمَلُهُ إِلَى النَّاسِ كَائِنا مَا كَانَ»

5335. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगर कोई आदमी किसी ऐसी चट्टान में कोई अमल करता है जिस का कोई दरवाज़ा और रोशनदान नहीं, तो उस का यह अमल जैसा भी हो लोगों पर आशकार हो जाता है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (6940 ، نسخة محققة : 6541) [و احمد (3 / 28) و الحاكم 4 / 314 ح 7877) و ابن حبان (الاحسان : 5649 / 5678) و ابن وهب صرح بالسماع عنده] و اصله عند ابن ماجه (4167)

٥٣٣٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عُثْمَان»» بن عَفَّان قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ كَانَتْ لَهُ سَرِيرَةٌ صَالِحَةً أَوْ سَيِّئَةً أَظْهَرَ اللَّهُ مِنْهَا رِدَاءً يُعْرَفُ بِهِ»

5336. उस्मान बिन अफ्फान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स की कोई नेक या बद खसलत छुपी हुई हो तो अल्लाह उस से कोई अलामत ज़ाहिर फरमादेगा जिस से वह पहचाना जाएगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (6942 ، نسخة محققة : 6543) * فيه حفص بن سليمان : متروك

٥٣٣٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عمر»» بن الْخَطَّابِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّمَا أَخَافُ عَلَى هَذِهِ الْأُمَّةِ

كُلَّ مُنَافِقٍ يَتَكَلَّمُ بِالْحِكْمَةِ وَيَعْمَلُ بِالْجَوْرِ» رَوَى الْبَيْهَقِيُّ الْأَحَادِيثَ الثَّلَاثَةَ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ»

5337. उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "मुझे इस उम्मत के हर मुनाफ़िक़ का अंदेशा है क्यूंकि वह बात हिकमत के साथ करता है जबकि अमल के तौर पर ज़ुल्म करता है", इमाम बयहकी ने तीनो अहादीस शौबुल ईमान में रिवायत की है| (हसन)

حسن ، رواه البیھقی فی شعب الایمان (1777 ، نسخۃ محققۃ : 1641) [و احمد (1 / 22 ح 143 و سندہ حسن)]

٥٣٣٨ - (ضَعِيف) وَعَن»» المهاجرِ بنِ حبيبٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: إِنِّي لَسْتُ كُلَّ كلامِ الْحَكِيم أتقبَّلُ وَلَكِنِّي أَتَقَبَّلُ هَمَّهُ وَهَوَاهُ فَإِنْ كَانَ هَمُّهُ وَهَوَاهُ فِي طَاعَتِي جَعَلْتُ صَمْتَهُ حَمْدًا لِي وَوَقَارًا وإِنْ لمْ يتكلَّمْ " رَوَاهُ الدَّارمِيّ

5338. मुहाजिर बिन हबीबी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अल्लाह तआला का इरशाद है: में दाना के सारे कलाम को कबूल नहीं करता, लेकिन में उसकी नियत और उस के इरादे को कबूल करता हूँ, अगर उसकी नियत और उस का इरादा मेरी इताअत में है तो मैं उसकी ख़ामोशी को अपने लिए हम्द वक़ार (गरिमा) करार दे देता हूँ, अगरचे उस ने कलाम न किया तो"| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ الدارمی (1 / 79 ح 258) * فیہ صدقۃ بن عبداللہ بن مھاجر بن حبیب : مجھول ، و المھاجر لیس صحابیًا و لعلہ المھاصر بن حبیب کما فی النسخۃ المحققۃ فالسند مع ضعفہ مرسل

بَاب الْبكاء وَالْخَوْف • रोने और डरने का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٥٣٣٩ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ أَبُو الْقَاسِمِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَوْ تَعْلَمُونَ مَا أَعْلَمُ لَبَكَيْتُمْ كَثِيرًا وَلَضَحِكْتُمْ قَلِيلا» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

5339. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अबुल कासिम ﷺ ने फ़रमाया: "उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! अगर तुम (नाफर्मानो के अज़ाब के मुत्तल्लिक) जान लो जो में जानता हूँ तो तुम ज़्यादा रोओ और कम हंसो"| (बुखारी)

رواہ البخاری (6485)

٥٣٤٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أَمِّ الْعَلَاءِ الْأَنْصَارِيَّةِ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَاللَّهِ لَا أَدْرِي وَاللَّهِ لَا أَدْرِي وَأَنَا رَسُولُ اللَّهِ مَا يُفْعَلُ بِي وبكم» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

5340. उम्म अलाअ अंसारी रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अल्लाह की क़सम! मैं नहीं जानता, अल्लाह की क़सम! मैं नहीं जानता जबकि मैं अल्लाह का रसूल भी हूँ कि मेरे साथ और तुम्हारे साथ क्या सुलूक किया जाएगा"| (बुखारी)

رواه البخارى (1243)

٥٣٤١ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «عُرِضَتْ عَلَيَّ النَّارُ فَرَأَيْتُ فِيهَا امْرَأَةً مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ تُعَذَّبُ فِي هِرَّةٍ لَهَا رَبَطَتْهَا فَلَمْ تُطْعِمْهَا وَلَمْ تَدَعْهَا تَأْكُلُ مِنْ خَشَاشِ الْأَرْضِ حَتَّى مَاتَتْ جُوعًا وَرَأَيْتُ عَمْرَو بْنَ عَامِرٍ الْخُزَاعِيَّ يَجُرُّ قُصْبَهُ فِي النَّارِ وَكَانَ أَوَّلَ مَنْ سَيَّبَ السَّوَائِبَ» . رَوَاهُ مُسلم

5341. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मेरे सामने जहन्नम की आग पेश की गई तो मैंने उस में बनी इसराइल की एक औरत को उसकी एक बिल्ली की वजह से अज़ाब में मुब्तिला देखा, उस ने इसे बांध रखा था, उस ने इसे न खुद खिलाया और न इसे छोड़ा के वह खशरात अल अर्ज़ खा सके इसी हाल वह भूखी मर गई और मैंने अम्र बिन आमिर अल ख़ज़ाई को देखा के वह जहन्नम में अपने अंतड़ियाँ घंसिट रहा था और वह पहला शख़्स है जिस ने बुतों के नाम पर जानवर छोड़ने की रसम इजाद की"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (9 / 904)، (2100)

٥٣٤٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن زينبَ بنتِ جحشٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دخل يَوْمًا فَزِعًا يَقُولُ: «لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَيلٌ للعربِ مِنْ شَرٍّ قَدِ اقْتَرَبَ فُتِحَ الْيَوْمَ مِنْ رَدْمِ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مِثْلُ هَذِهِ» وَحَلَّقَ بِأُصْبَعَيْهِ: الْإِبْهَامَ وَالَّتِي تَلِيهَا. قَالَتْ [ص:١٤٦ زَيْنَبُ: فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَفَنُهْلَكُ وَفِينَا الصَّالِحُونَ؟ قَالَ: «نَعَمْ إِذا كثُرَ الخَبَثُ» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5342. ज़ैनब बिन्ते जहश रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक रोज़ रसूलुल्लाह ﷺ घबराहट के आलम में मेरे पास तशरीफ़ लाए आप ﷺ फरमा रहे थे: "अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, अरबो के लिए इस शर के सबब तबाही है जो के करीब पहुँच चुकी है, आज याजूज माजूज का बांध इस क़दर खोल दिया गया", और आप ﷺ ने अपने दो उंगलियों अंगूठे और अन्गुंश्ते शहादत से हल्का बनाया, जैनब रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! क्या हम हलाक कर दिए जाएँगे जब के स्वालेह लोग हम में मौजूद है? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ जब फिस्क व फजुर ज़्यादा हो जाएगा"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3346) و مسلم (2 / 1880)، (7237)

٥٣٤٣ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي عَامِرٍ أَوْ أَبِي مَالِكٍ الْأَشْعَرِيِّ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " لَيَكُونَنَّ مِنْ أُمَّتِي أَقْوَامٌ يَسْتَحِلُّونَ الْخَزَّ وَالْحَرِيرَ وَالْخَمْرَ وَالْمَعَازِفَ وَلَيَنْزِلَنَّ أَقْوَامٌ إِلَى جَنْبِ عَلَمٍ يَرُوحُ عَلَيْهِمْ بِسَارِحَةٍ لَهُمْ يَأْتِيهِمْ رَجُلٌ لِحَاجَةٍ فَيَقُولُونَ: ارْجِعْ إِلَيْنَا غَدًا فَيُبَيِّتُهُمُ اللَّهُ وَيَضَعُ الْعَلَمَ وَيَمْسَخُ آخَرِينَ قِرَدَةً وَخَنَازِيرَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ «. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ. وَفِى بَعْضِ نُسَخِ» الْمَصَابِيحِ ": «الْحَرَّ» بِالْحَاءِ وَالرَّاءِ الْمُهْمَلَتَيْنِ وَهُوَ تَصْحِيفٌ وَإِنَّمَا هُوَ بِالْخَاءِ وَالزَّايِ الْمُعْجَمَتَيْنِ نَصَّ عَلَيْهِ الْحُمَيْدِيُّ وَابْنُ الْأَثِيرِ فِي هَذَا الْحَدِيثِ. وَفِى كِتَابِ «الْحُمَيْدِيِّ» عَنِ الْبُخَارِيِّ وَكَذَا فِي «شَرحه» للخطابي: «تروح سارحة لَهُم يَأْتِيهم لحَاجَة»

5343. अबू आमिर या अबू मालिक अशअरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "मेरी उम्मत में कुछ ऐसे लोग होंगे जो खज़ (हल्की किस्म का रेशम) और आम रेशम, शराब और अलाते मौसिकी को हलाल समझेंगे और कुछ लोग पहाड़ के दामन की तरफ उतरेंगे उन के साथ उन के मवेशी आएँगे, एक आदमी किसी ज़रूरत के तहत उन के पास आएगा तो वह कहेंगे, कल आना, अल्लाह उन्हें रातो रात अज़ाब में मुब्तिला कर देगा और पहाड़ इन पर गिरा देगा जबकि बाकी लोगों की सूरते मसख कर के रोज़ ए कियामत तक बंदर और खिंजिर बनादेगा"| बुखारी, और मसाबिह के बाज़ नुस्खों में "خز'' के बजाए "حر'' है और यह तहसिफ (सुधार) है, जबकि सहीह "خز'' है| अल हुमैदी और इब्ने असीर ने इस हदीस में इसी को राजेह (ज़्यादा सही) करार दिया है और किताब अल हुमैदी में इमाम बुखारी की सनद से और इसी तरह बुखारी की शरह अल खत्ताबी में है (تَرُوْحُ عَلَيْهِمْ سَارِحَةٌ لَهُمْ يَأْتِيْهِمْ لِحَاجَةٍ) | (बुखारी और अल सुन्नी की मसाबिह.)

رواه البخارى (5590) و ذكره البغوى فى مصابيح السنة (3 / 453 ح 4113) و اخطا من ضعفه

٥٣٤٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا أَنْزَلَ اللَّهُ بِقَوْمٍ عَذَابًا أَصَابَ الْعَذَابُ مَنْ كَانَ فِيهِمْ ثُمَّ بُعِثُوا عَلَى أَعْمَالِهِمْ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5344. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जब अल्लाह किसी कौम पर अज़ाब नाज़िल करता है तो तमाम लोग इस अज़ाब की लपेट में आ जाते हैं, फिर वह अपने अपने आमाल के मुताबिक रोज़ ए कियामत उठाए जाएँगे"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى 7108) و مسلم (84 / 2879)، (7234)

٥٣٤٥ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يُبْعَثُ كُلُّ عَبْدٍ عَلَى مَا ماتَ عَلَيْهِ» . رَوَاهُ مُسلم

5345. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "हर बंदा अपने आखिरी अमल पर जिस पर वह फौत हुआ उठाया जाएगा"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (83 / 2878)، (7232)

रोने और डरने का बयान • بَاب الْبكاء وَالْخَوْف

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٥٣٤٦ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا رَأَيْتُ مِثْلَ النَّارِ نَامَ هَارِبُهَا وَلَا مِثْلَ الْجَنَّةِ نَامَ طالبها» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5346. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैंने जहन्नम की मिस्ल कोई चीज़ नहीं देखी के जिस से भागने वाला ख्वाब गफ़लत में हो, और ना ही जन्नत की नेअमत व सुरूर के मिसल कोई चीज़ देखी है जिस का चाहने वाला ख्वाब गफ़लत में हो”| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (1633 وقال : حسن صحيح)

٥٣٤٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنِّي أَرَى مَا لَا تَرَوْنَ وَأَسْمَعُ مَا لَا تَسْمَعُونَ أَطَّتِ السَّمَاءُ وَحُقَّ لَهَا أَنْ تَئِطَّ وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ مَا فِيهَا مَوْضِعُ أَرْبَعَةِ أَصَابِعَ إِلَّا وملَكٌ وَاضع جبهتَه ساجدٌ لِلَّهِ وَاللَّهِ لَوْ تَعْلَمُونَ مَا أَعْلَمُ لَضَحِكْتُمْ قَلِيلًا وَلَبَكَيْتُمْ كَثِيرًا وَمَا تَلَذَّذْتُمْ بِالنِّسَاءِ عَلَى الْفُرُشَاتِ وَلَخَرَجْتُمْ إِلَى الصُّعُدَاتِ تَجْأَرُونَ إِلَى اللَّهِ» . قَالَ أَبُو ذَرٍّ: يَا لَيْتَنِي كُنْتُ شَجَرَةً تعضد. رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

5347. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो में देख रहा हूँ वह तुम नहीं देखते और जो में सुनता हूँ वह तुम नहीं सुनते, आसमान ने आवाज़ निकाली और इसे चर चराने की आवाज़ निकालनी भी चाहिए उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! वहां हर चार अन्गुंश्ते पर फ़रिश्ता अपनी पेशानी रखे हुए अल्लाह के हुज़ूर सर बा सजूद है, अल्लाह की क़सम! अगर तुम जान लो जो में जानता हूँ तो तुम कम हंसो और ज़्यादा रोओ, तुम बिस्तरों पर औरतो (बिविओं) से लुत्फ़ अन्दोज़ होना छोड़ दो और तुम सहरा (रेगिस्तान) की तरफ निकल जाओ और अल्लाह के हुज़ूर (दुआओं के ज़रिए) इल्तेजा करो”, अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु ने कहा काश में एक दरख्त होता जो काट दिया जाता| (हसन)

حسن ، رواه احمد (5 / 173 ح 21848) و الترمذی (2321 وقال : حسن غريب) و ابن ماجه (4190)

٥٣٤٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ خَافَ أَدْلَجَ وَمَنْ أَدْلَجَ بَلَغَ الْمَنْزِلَ. أَلَا إِنَّ سِلْعَةَ اللَّهِ غَالِيَةٌ أَلَا إِنَّ سِلْعَةَ اللَّهِ الْجَنَّةُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5348. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स (रात के आखिरी हिस्से में सफ़र करने से) डरता हो वह रात के इब्तिदाई हिस्से में सफ़र का आगाज़ करता है और जो शख़्स रात

के इब्तिदाई हिस्से में सफ़र करता है तो वह मंजिल पर पहुँच जाता है, सुन लो! अल्लाह का सामान कीमती है, सुन लो! अल्लाह का सामान जन्नत है”| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواہ الترمذی (2450 وقال : حسن غریب) * یزید بن سنان : ضعیف ضعفہ الجمھور و ضعفہ راجح

٥٣٤٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ»» عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " يَقُولُ اللَّهُ جَلَّ ذِكْرُهُ: أَخْرِجُوا مِنَ النَّارِ مَنْ ذَكَرَنِي يَوْمًا أَوْ خَافَنِي فِي مَقَامٍ «رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ والْبَيْهَقِيُّ فِي» كِتَابِ الْبَعْث والنشور "

5349. अनस रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह, इस का ज़िक्र अज़ीमो शान हो फरमाएगा: हर इस शख़्स को जहन्नम की आग से निकाल दो जिस ने (इखलास के साथ) किसी एक रोज़ भी मुझे याद किया हो या वह किसी जगह मुझ से डरा हो”| (हसन)

حسن ، رواہ الترمذی (2594 وقال : حسن غریب) و البیھقی فی کتاب البعث و النشور (لم اجدہ و رواہ فی شعب الایمان (740) [و الحاکم (1 / 70)]

٥٣٥٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ»» قَالَتْ: سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ هَذِهِ الْآيَةِ: (وَالَّذِينَ يُؤْتونَ مَا آتوا وقُلوبُهم وَجِلَةٌ)»» أَهُمُ الَّذِينَ يَشْرَبُونَ الْخَمْرَ وَيَسْرِقُونَ؟ قَالَ: «لَا يَا بِنْتَ الصِّدِّيقِ وَلَكِنَّهُمُ الَّذِينَ يَصُومُونَ وَيُصَلُّونَ وَيَتَصَدَّقُونَ وَهُمْ [ص:١٤٧ يَخَافُونَ أَنْ لَا يُقْبَلَ مِنْهُمْ أُولَئِكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْن مَاجَه

5350. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से इस आयत: “वो लोग देते है, जो कुछ देते है, और उस पर उन का दिल खौफ ज़दाह है”, के मुतल्लिक दरियाफ्त किया, क्या उन से मुराद वह लोग है जो शराब पीते और चोरी करते हैं? आप ﷺ ने फ़रमाया: “सिद्दीक की बेटी नहीं! बल्कि उन से मुराद वह लोग है जो रोज़े रखते है, नमाज़ पढ़ते है और सदका करते हैं, और वह डरते हैं की कहे ऐसे न हो के वह उन से कबूल न हो, यही लोग नेकियो में जल्दी करते हैं”| (हसन)

حسن ، رواہ الترمذی (2675) و ابن ماجہ (4198)

٥٣٥١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أُبَيٍّ»» بْنِ كَعْبٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا ذَهَبَ ثُلُثَا اللَّيْلِ قَامَ فَقَالَ: «يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا اللَّهَ اذْكُرُوا اللَّهَ جَاءَتِ الرَّاجِفَةُ تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ جَاءَ الْمَوْتُ بِمَا فِيهِ جَاءَ الْمَوْتُ بِمَا فِيهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5351. उबई बिन काब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ का मामूल था की जब दो तिहाई रात गुज़र जाती तो आप ﷺ खड़े हो जाते और फरमाते: “लोगो! अल्लाह का ज़िक्र करो अल्लाह का ज़िक्र करो, ज़लज़ला

आने वाला है, उस के मुतस्सिल बाद दूसरा ज़लज़ला आने वाला है, और मौत अपने सख्तियो के साथ आ गई और मौत अपने सख्तियो के साथ आ गई”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2457 وقال : حسن) * سفيان الثوری مدلس ولم اجد تصريح سماعه فی هذا الحديث

٥٣٥٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» سَعِيدٍ قَالَ: خَرَجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِصَلَاةٍ فَرَأَى النَّاسَ كَأَنَّهُمْ يَكْتَشِرُونَ قَالَ: " أَمَا إِنَّكُمْ لَوْ أَكْثَرْتُمْ ذِكْرَ هَادِمِ اللَّذَّاتِ لَشَغَلَكُمْ عَمَّا أَرَى الْمَوْتُ فَأَكْثِرُوا ذكر هَادِم اللَّذَّات الْمَوْت فَإِنَّهُ لَا يأتِ على الْقَبْر يومٌ إِلَّا تَكَلَّمَ فَيَقُولُ: أَنَا بَيْتُ الْغُرْبَةِ وَأَنَا بَيْتُ الْوَحْدَةِ وَأَنَا بَيْتُ التُّرَابِ وَأَنَا بَيْتُ الدُّودِ وَإِذَا دُفِنَ الْعَبْدُ الْمُؤْمِنُ قَالَ لَهُ الْقَبْرُ: مَرْحَبًا وَأَهْلًا أَمَا إِنْ كُنْتَ لَأَحَبُّ مَنْ يَمْشِي عَلَى ظَهْرِي إِلَيَّ فَإِذْ وُلِّيتُكَ الْيَوْمَ وَصِرْتَ إِلَيَّ فَسَتَرَى صَنِيعِي بِكَ ". قَالَ: " فَيَتَّسِعُ لَهُ مَدَّ بَصَرِهِ وَيُفْتَحُ لَهُ بَابٌ إِلَى الْجَنَّةِ وَإِذَا دُفِنَ الْعَبْدُ الْفَاجِرُ أَوِ الْكَافِرُ قَالَ لَهُ الْقَبْرُ: لَا مَرْحَبًا وَلَا أَهْلًا أَمَا إِنْ كُنْتَ لَأَبْغَضَ مَنْ يَمْشِي عَلَى ظَهْرِي إِلَيَّ فَإِذْ وُلِّيتُكَ الْيَوْمَ وَصِرْتَ إِلَيَّ فَسَتَرَى صَنِيعِي بِكَ " قَالَ: «فَيَلْتَئِمُ عَلَيْهِ حَتَّى يَخْتَلِفَ أَضْلَاعُهُ» . قَالَ: وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِأَصَابِعِهِ. فَأَدْخَلَ بَعْضَهَا فِي جَوْفِ بَعْضٍ. قَالَ: «وَيُقَيَّضُ لَهُ سَبْعُونَ تِنِّينًا لَوْ أَنَّ وَاحِدًا مِنْهَا نَفَخَ فِي الْأَرْضِ مَا أَنْبَتَتْ شَيْئًا مَا بَقِيَتِ الدُّنْيَا فَيَنْهَسْنَهُ وَيَخْدِشْنَهُ حَتَّى يُفْضِي بِهِ إِلَى الْحِسَابِ» قَالَ: وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّمَا الْقَبْرُ رَوْضَةٌ مِنْ رِيَاضِ الْجَنَّةِ أَوْ حُفْرَةٌ مِنْ حُفَرِ النَّارِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

5352. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ नमाज़ के लिए तशरीफ़ लाए तो आप ने लोगों को देखा गोया वह हंस रहे हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “सुन लो! अगर तुम लज्ज़तो को कतअ कर देने वाली (मौत) का कसरत से ज़िक्र करते तो वह तुम्हें इस चीज़ (हंसने) से, जो मैंने देखी, तुम्हें बाज़ रखती, तुम लज्ज़तो को कतअ करने वाली चीज़ यानी मौत का कसरत से ज़िक्र करो, क्योंकि कब्र हर रोज़ कहती है: में गैर मानुस का घर हूँ, मैं तन्हाई का घर हूँ, मैं मिट्टी का घर हूँ, और मैं कीड़ो मकोड़े का घर हूँ, और जब बंदा मोमिन दफन किया जाता है तो कब्र इसे खुशामदीद कहती है, सुन लो! मेरी सतह पर चलने वाले लोगों से तू मुझे सबसे ज़्यादा पसंद था, आज तू मेरे सुपुर्द कर दिया गया है, और तू मेरे पास आ गया है, तू अपने साथ मेरा सुलूक देखेगा”, फ़रमाया: “वो उसकी हद्दे नज़र तक उस के लिए फराख कर दी जाती है और उस के लिए जन्नत की तरफ एक दरवाज़ा खोल दिया जाता है, और जब फ़ाजिर बंदा या काफ़िर शख़्स दफन किया जाता है तो कब्र इसे कहती है: तेरे लिए किसी किस्म का खैर मुकद्दम नहीं, सुन ले! मेरी सतह पर चलने वाले तमाम लोगों से तू मुझे ज़्यादा नापसंद था, तू आज मेरे सुपुर्द किया गया है, और तू मेरे पास आ गया है, तू अनकरीब अपने साथ मेरा सुलूक देख लेगा”, फ़रमाया: “वो उस पर तंग हो जाती है, हत्ता कि उसकी पसलिया एक दूसरे में घुस जाती है”, रावी बयान करते हैं, और रसूलुल्लाह ﷺ ने यह कैफियत कर के दिखाई के आप ने एक हाथ की उंगलिया दूसरे हाथ की उंगलियों में दाखिल की, और फ़रमाया: “उस पर सत्तर अजगर मुसल्लत कर दिए जाएँगे, और अगर उनमें से एक ज़मीन पर फूंक मार दे तो वह (ज़मीन) रहती दुनिया तक कोई चीज़ न उगाए, वह इसे दसते और नोचते रहेंगे हत्ता कि इसे हिसाब तक पहुंचा दीया जाएगा”| रावी बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कब्र तो बाग़ो में से एक बाग़ है या जहन्नम के घड़ो में से एक घड़ा है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2460) * عبيد الله بن الوليد الوصافی : ضعيف و عطية العوفی ضعيف مدلس و لبعض الحديث شواهد

٥٣٥٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي»» جُحَيْفَة قَالَ: قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ قَدْ شِبْتَ. قَالَ: «شَيَّبَتْنِي سُورَةُ هُودٍ وَأَخَوَاتُهَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

5353. अबू जुहैफा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप बूढ़े हो गए है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “सुरह हूद और इस जैसी सूरतो ने मुझे बुढा कर दिया”| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ الترمذی (فی الشمائل : 42) و الطبرانی فی الکبیر (22 / 123 ح 317) * ابو اسحاق عنعن و انظر الحدیث الآتی (5354)

٥٣٥٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ»» عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ أَبُو بَكْرٍ: يَا رَسُولَ اللَّهِ قَدْ شِبْتَ. قَالَ: شَيَّبَتْنِي (هود)»» و (المرسلات)»» و (عمَّ يتساءلون)»» و (إِذا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ)»» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ»» وَذُكِرَ حَدِيثُ أَبِي هريرة:»» لَا يلج النَّار «فِي» كتاب الْجِهَاد "

5354. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! आप तो बूढ़े हो गए है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “सुरह हूद वाकिया, मुरसलात, नबा (عم يتساءلون) और सुरह शम्स ने मुझे बुढा कर दिया है” तिरमिज़ी, और अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से मरवी हदीस: “जहन्नम में दाखिल नहीं होगा”, باب الْجِهَاد (बाब अल जिहाद) में ज़िक्र की गई है| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ الترمذی (3297) * ابو اسحاق عنعن و للحدیث شواھد ضعیفۃ و روی الطبرانی فی الکبیر (17 / 286287 ح 790) بسند حسن عن عقبۃ بن عامر رضی اللہ عنہ ان رجلاً قال : یا رسول اللہ ! شبت ؟ قال : ((شیتنی ھود و اخواتھا)) وھو یغنی عنہ0 حدیث ابی ھریرۃ : لا یلج النار ، تقدم (3828)

بَاب الْبكاء وَالْخَوْف • रोने और डरने का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٥٣٥٥ - (صَحِيح) عَن»» أنسٍ قَالَ: إِنَّكُمْ لَتَعْمَلُونَ أَعْمَالًا هِيَ أَدَقُّ فِي أَعْيُنِكُمْ مِنَ الشَّعْرِ كُنَّا نَعُدُّهَا عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ من الموبقات. يَعْنِي المهلكات. رَوَاهُ البُخَارِيّ

5355. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है उन्होंने ने फ़रमाया: तुम ऐसे आमाल करते हो जो तुम्हारी नज़रों में बाल से भी ज़्यादा बारीक़ हैं (यानी निहायत मामूली है) जबकि रसूलुल्लाह ﷺ के अहद में हम उन्हें खतरनाक शुमार किया करते थे| (बुखारी)

رواہ البخاری (6492)

٥٣٥٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ»» أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «يَا عَائِشَةَ إِيَّاكِ وَمُحَقَّرَاتِ الذُّنُوبِ فَإِنَّ لَهَا مِنَ اللَّهِ طَالِبًا» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ والْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ»

5356. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आइशा! छोटे गुनाहों से भी बचा करो क्योंकि उन गुनाहों के लिए भी अल्लाह की तरफ से (अज़ाब का) मुतालबा करने वाला है”| (सहीह)

صحيح ، رواه ابن ماجه (4242) و الدارمی (2 / 303 ح 2729) و البیهقی فی شعب الایمان (7261)

٥٣٥٧ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَبِي بُرْدَةَ بْنِ أَبِي مُوسَى قَالَ: قَالَ لِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ: هَلْ تَدْرِي مَا قَالَ أَبِي لِأَبِيكَ؟ قَالَ: قُلْتُ: لَا. قَالَ: فَإِنَّ أَبِي قَالَ لِأَبِيكَ يَا أَبَا مُوسَى هَلْ يَسُرُّكَ أَنَّ إِسْلَامَنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهِجْرَتَنَا مَعَهُ وَجِهَادَنَا مَعَهُ وَعَمَلَنَا كُلَّهُ مَعَهُ بَرَدَ لَنَا؟ وَأَنَّ كُلَّ عَمَلٍ عَمِلْنَاهُ بَعْدَهُ نَجَوْنَا مِنْهُ كَفَافًا رَأْسًا بِرَأْسٍ؟ فَقَالَ أَبُوكَ لِأَبِي: لَا وَاللَّهِ قَدْ جَاهَدْنَا بَعْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَصَلَّيْنَا وَصُمْنَا وَعَمِلْنَا خَيْرًا كَثِيرًا. وَأَسْلَمَ عَلَى أَيْدِينَا بَشَرٌ كَثِيرٌ وَإِنَّا لَنَرْجُو ذَلِكَ. قَالَ أَبِي: وَلَكِنِّي أَنَا وَالَّذِي نَفْسُ عُمَرَ بِيَدِهِ لَوَدِدْتُ أَنَّ ذَلِكَ [ص:١٤٧ بَرَدَ لَنَا وَأَنَّ كُلَّ شَيْءٍ عَمِلْنَاهُ بَعْدَهُ نَجَوْنَا مِنْهُ كَفَافًا رَأْسًا بِرَأْسٍ. فَقُلْتُ: إِنَّ أَبَاكَ وَاللَّهِ كَانَ خيرا من أبي. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

5357. अबू बुरदह बिन अबू मूसा बयान करते हैं, अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा ने मुझे फ़रमाया: क्या तुम जानते हो के मेरे वालिद ने आप के वालिद से क्या फरमाया था? उन्होंने कहा: मुझे इल्म नहीं, उन्होंने ने फ़रमाया: मेरे वालिद ने आप के वालिद से कहा: अबू मूसा, क्या यह बात तुम्हें खुश करती हैं के रसूलुल्लाह ﷺ के साथ में हमारा इस्लाम आप के साथ में हमारी हिजरत और आप के साथ में हमारा जिहाद और आप के साथ हमने जो भी अमल किए वह हमारे लिए साबित व बरक़रार रहे, और हमने आप ﷺ के बाद जो अमल किए है, हम उनमें बराबर बराबर (गुनाह व सवाब) रह जाए, उस पर आप के वालिद ने मेरे वालिद से कहा: नहीं, अल्लाह की क़सम! हमने रसूलुल्लाह ﷺ के बाद जिहाद किया, नमाज़े पढ़ी, रोज़े रखे, बहोत से नेक काम किए और बहोत से लोगों ने हमारे हाथो पर इस्लाम कबूल किया, और हम उन कामो के सवाब की उम्मीद रखते है, मेरे वालिद ने कहा: लेकिन में उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में उमर की जान है! यह पसंद करता हूँ कि वह आमाल (जो हमने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ किए) हमारे लिए साबित रहे, और वह तमाम आमाल जो हमने आप ﷺ के बाद किए उनमें हम बराबर बराबर निजात पा जाए में (अबू बुरेदा) ने कहा बेशक आप के वालिद (उमर (र)), अल्लाह की क़सम! मेरे वालिद से बेहतर थे| (बुखारी)

رواه البخاری (3915)

٥٣٥٨ - و (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " أَمَرَنِي رَبِّي بِتِسْعٍ: خَشْيَةِ اللَّهِ فِي السِّرِّ وَالْعَلَانِيَةِ وَكَلِمَةِ الْعَدْلِ فِي الْغَضَبِ وَالرِّضَى وَالْقَصْدِ فِي الْفَقْرِ وَالْغِنَى وَأَنْ أَصِلَ مَنْ قَطَعَنِي وَأُعْطِي مَنْ حَرَمَنِي وَأَعْفُو عَمَّنْ ظَلَمَنِي وَأَنْ يَكُونَ صَمْتِي فِكْرًا وَنُطْقِي ذِكْرًا وَنَظَرِي عِبْرَةً وَآمُرُ بِالْعُرْفِ «وَقِيلَ» بِالْمَعْرُوفِ " رَوَاهُ رزين

5358. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरे रब ने मुझे नौ (9) चीजों का हुक्म फ़रमाया: पोशीद हो या एलानिया हर हालत में अल्लाह का डर रखना, गज़ब व रज़ा में हक़ बात करना, फकर व माल दारी में मियाने रिवाय (संयम) इख़्तियार करना, जो शख़्स मुझ से कतअ ताल्लुक करे में उस के साथ ताल्लुक काइम करू, जो शख़्स मुझे महरूम रखे में उसे अता करू, जिस शख़्स ने मुझ पर ज़ुल्म किया मैं उसे मुआफ़ करू, मेरा ख़ामोश रहना गौर व फिकर का पेशे खैमा हो, मेरा बोलना ज़िक्र हो और मेरा देखना इबरत हो और यह कि में नेकी का हुक्म दू”| (मझे नहीं मिली रवाह रजिन.)

لم اجده ، رواه رزین (لم اجده) وله شاھد عند ابن ابی الدنیا فی اصلاح المال (328) عن داودؑ من قوله و سنده ضعیف جدًا

٥٣٥٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ»» اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا مِنْ عَبْدٍ مُؤْمِنٍ يَخْرُجُ مِنْ عَيْنَيْهِ دُمُوعٌ وَإِنْ كَانَ مِثْلَ رَأْسِ الذُّبَابِ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ثُمَّ يُصِيبُ شَيْئًا مِنْ حَرِّ وَجْهِهِ إِلَّا حَرَّمَهُ اللَّهُ عَلَى النَّارِ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه

5359. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस मोमिन बंदे की आंखो से अल्लाह के डर के पेशे नज़र आंसू निकल आए, ख्वाह वह मख्खी के सर के बराबर हो फिर वह उस के चेहरे पर आ जाए तो अल्लाह इस शख़्स को जहन्नम की आग पर हराम करार दे देता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابن ماجه (4197) * حماد بن ابی حمید : ضعیف ، اسمه محمد (تقدم : 5303) و هذا الحدیث من اجله ضعفه البوصیری

لोगों के तब्दील होने का बयान • بَاب تغير النَّاس

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٥٣٦٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّمَا النَّاسُ كَالْإِبِلِ الْمِائَةِ لَا تَكَادُ تَجِدُ فِيهَا رَاحِلَةً» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5360. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “लोग (अपने हालात व सिफात के इख्तिलाफ के लिहाज़ से) उन सौ ऊटों की तरह है जिन में तुम एक भी सवारी के काबिल न पाओ”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6498) و مسلم (232 / 2547)، (6499)

٥٣٦١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَتَتَّبِعُنَّ سُنَنَ مَنْ قبلكُمْ شبْرًا بشبرٍ وذراعاً بذراعٍ حَتَّى لَوْ دَخَلُوا جُحْرَ ضَبٍّ تَبِعْتُمُوهُمْ» . قِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى؟ قَالَ: «فَمَنْ» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5361. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम अपने से पहले लोगों के तरीको की पेरवी व मुवाफिकत करोगे जिस तरह बालिश्त बालिश्त के बराबर और हाथ हाथ के बराबर होता है, हत्ता कि अगर वह सांडे के बिल में घुसे होंगे तो तुम भी उनकी मुवाफिकत करोगे”, अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल! (पहले लोगों से मुराद) यहूद और नसारा आप ﷺ ने फ़रमाया: “तो फिर और कौन है?” (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (3456) و مسلم (6 / 2669)، (6781)

٥٣٦٢ - (صَحِيح) وَعَن مرداس الْأَسْلَمِيّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَذْهَبُ الصَّالِحُونَ الْأَوَّلُ فَالْأَوَّلُ وَتَبْقَى حُفَالَةٌ كَحُفَالَةِ الشَّعِيرِ أَوِ التَّمْرِ لَا يُبَالِيهِمُ اللَّهُ بالةً» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

5362. मिरदास असलमी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “नेक लोग एक एक कर के चले जाएँगे, और बेकार लोग बाकी रह जाएँगे जैसे जो का भूसा या खजूर का कचरा बाकी रह जाता है जिन की अल्लाह के यहाँ कोई कद्र व कीमत नहीं होगी”| (बुखारी)

رواه البخاری (4156)

بَاب تغير النَّاس • लोगों के तब्दील होने का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٥٣٦٣ - (لم تتمّ دراسته) عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا مَشَتْ أَمَّتِي الْمُطَيْطَاء وَخَدَمَتْهُمْ أَبْنَاءُ الْمُلُوكِ أَبْنَاءُ فَارِسَ وَالرُّومِ سَلَّطَ اللَّهُ شِرَارَهَا عَلَى خِيَارِهَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيث غَرِيب

5363. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब मेरी उम्मत तकब्बुराना चाल चलेगी और बादशाहो के बेटे यानी फारिस व रोम के शहज़ादे उन के खादिम बन जाएंगे तो अल्लाह इस (उम्मत) के बुरे लोगों को उन के अच्छे लोगों पर मुसल्लत फरमा देंगा”| तिरमिज़ी और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (2261) * موسى بن عبيدة ضعيف و روى ابن حبان فی صححه (الاحسان : 6681 / 6716) ان النبی صلی الله عليه و آله وسلم قال : ((اذا مشت امتی المطيطاء وخد متهم فارس و الروم سلّط بعضهم على بعض)) و سنده حسن وهو يغنی عنه

٥٣٦٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ حُذَيْفَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَقْتُلُوا إِمَامَكُمْ وَتَجْتَلِدُوا بأسيافكم ويرَث دنياكم شرارُكم» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5364. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “कियामत काइम नहीं होगी जब तक तुम अपने खलीफा को क़त्ल नहीं करोगे, बाहम क़त्ल व गारत नहीं करोगे और तुम्हारे बुरे लोग तुम्हारी दुनिया के वारिस नहीं बन जाएँगे”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2170 وقال : حسن)

٥٣٦٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَكُونَ أَسْعَدَ النَّاسِ بِالدُّنْيَا لُكَعُ بْنُ لُكَعَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَالْبَيْهَقِيّ فِي «دَلَائِل النُّبُوَّة»

5365. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कियामत काइम नहीं होगी हत्ता कि बेवक़ूफ़ो की औलाद दुनिया में सबसे ज़्यादा खुशनसीब न हो जाए”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2209 وقال : حسن) و البیھقی فی دلائل النبوۃ (6 / 392)

٥٣٦٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن مُحَمَّد بن كَعْب الْقرظِيّ قَالَ: حَدَّثَنِي مَنْ سَمِعَ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالب قَالَ: إِنَّا لَجُلُوسٌ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْمَسْجِدِ فَاطَّلَعَ عَلَيْنَا مُصْعَبُ بْنُ عُمَيْرٍ مَا عَلَيْهِ إِلَّا بُرْدَةٌ لَهُ مَرْقُوعَةٌ بِفَرْوٍ فَلَمَّا رَآهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَكَى لِلَّذِي كَانَ فِيهِ مِنَ النِّعْمَةِ وَالَّذِي هُوَ فِيهِ الْيَوْمَ ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كَيْفَ بِكُمْ إِذَا غَدَا أَحَدُكُمْ فِي حُلَّةٍ وَرَاحَ فِي حُلَّةٍ؟ وَوُضِعَتْ بَيْنَ يَدَيْهِ صَحْفَةٌ وَرُفِعَتْ أُخْرَى وَسَتَرْتُمْ بُيُوتَكُمْ كَمَا تُسْتَرُ الْكَعْبَة؟» . فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ نَحْنُ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مِنَّا الْيَوْمَ نَتَفَرَّغُ لِلْعِبَادَةِ وَنُكْفَى الْمُؤْنَةَ. قَالَ: «لَا أَنْتُمُ الْيَوْمَ خَيْرٌ مِنْكُمْ يَوْمَئِذٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5366. मुहम्मद बिन काब कुरज़िय्यी बयान करते हैं, मुझे इस शख़्स ने हदीस बयान की जिस ने अली बिन अबी तालिब रदियल्लाहु अन्हु से सुना: उन्होंने ने फ़रमाया: हम मस्जिद मैं रसूलुल्लाह ﷺ के साथ बैठें हुए थे की अचानक मुसअब बिन उमैर रदियल्लाहु अन्हु हमारे पास आए इन पर सिर्फ एक ही चादर थी जिस पर चमड़े के पेवंद लगे हुए थे, जब रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें देखा तो आप उनकी पिछले नेअमतो वाली हालत और आज की हालत का फर्क देख कर रोने लगे, फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम्हारी हालत क्या होगी जब तुम में से कोई शख़्स दिन के पहले पहर एक जोड़ा पहनेगा और दिन के दूसरे पहर दूसरा जोड़ा पहनेगा उन के दस्तरखान पर एक तशरी रखी जाएगी और दूसरी उठाई जाएगी, और तुम अपने घरो को (पर्दों और सजावट की चीजों से) इस तरह धांपोगे जिस तरह काबा को (गिलाफो के साथ) धांपा जाता है”, सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! इस वक़्त हम आज की निस्बत बेहतर होंगे, हम इबादत के लिए फारिग़ होंगे और हम काम काज से

फारिग़ कर दिए जाएँगे (मुलाज़िम काम करेंगे) आप ﷺ ने फ़रमाया: “नहीं? इस वक़्त की निस्बत आज तुम बेहतर हो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2476 وقال : حسن غريب) * فيه ’’ من سمع ‘‘ وهو مجهول

٥٣٦٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ الصَّابِرُ فِيهِمْ عَلَى دِينِهِ كَالْقَابِضِ عَلَى الْجَمْرِ» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ إِسْنَادًا

5367. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “लोगो पर एक ऐसा वक़्त भी आएगा के इस वक़्त अपने दीन पर काइम रहने वाला अंगारा पकड़ने वाले की तरह होगा”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया इस हदीस की सनद ग़रीब है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (2260) * عمر بن شاكر ضعيف و حديث الترمذی (3058) يغنى عنه

٥٣٦٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا كَانَ أُمَرَاؤُكُمْ خِيَارَكُمْ وَأَغْنِيَاؤُكُمْ سُمَحَاءَكُمْ وَأُمُورُكُمْ شُورَى بَيْنَكُمْ فَظَهْرُ الْأَرْضِ خَيْرٌ لَكُمْ مِنْ بَطْنِهَا. وَإِذَا كَانَ أمراؤكم شِرَارَكُمْ وأغنياؤكم بخلاؤكم وَأُمُورُكُمْ إِلَى نِسَائِكُمْ فَبَطْنُ الْأَرْضِ خَيْرٌ لَكُمْ من ظهرهَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَقَالَ: هَذَا حديثٌ غَرِيب

5368. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम्हारे हुक्मरान वह होंगे जो तुम में सबसे बेहतर होंगे, तुम्हारे माल दार लोग सखी और तुम्हारे मुआमलात बाहमी मशवरे से तेअ होंगे तो फिर तुम्हारे लिए ज़मीन की पुश्त उस के पेट से बेहतर होगी (यानी जिंदगी मौत से बेहतर होगी) और जब तुम्हारे हुक्मरान बुरे लोग होंगे, तुम्हारे माल दार लोग बखील और तुम्हारे मुआमलात औरतो के सुपुर्द होंगे तो फिर तुम्हारे लिए ज़मीन का पेट उसकी पुश्त से बेहतर होगा”| (मौत जिंदगी से बेहतर होगी) तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2266) * صالح بن بشير المرى ضعيف و فيه علة أخرى

٥٣٦٩ - (صَحِيح) وَعَنْ»» ثَوْبَانَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يُوشِكُ الْأُمَمُ أَنْ تَدَاعَى عَلَيْكُمْ كَمَا تَدَاعَى الْأَكَلَةُ إِلَى قَصْعَتِهَا» . فَقَالَ قَائِلٌ: وَمِنْ قِلَّةٍ نَحْنُ يَوْمَئِذٍ؟ قَالَ: [ص:١٤٧] «بَلْ أَنْتُم يَوْمئِذٍ كثير وَلَكِن غُثَاءٌ كَغُثَاءِ السَّيْلِ وَلَيَنْزِعَنَّ اللَّهُ مِنْ صُدُورِ عَدُوِّكُمُ الْمَهَابَةَ مِنْكُمْ وَلَيَقْذِفَنَّ فِي قُلُوبِكُمُ الْوَهْنَ» . قَالَ قَائِلٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَمَا الْوَهْنُ؟ قَالَ: «حُبُّ الدُّنْيَا وَكَرَاهِيَةُ الْمَوْتِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ»

5369. सौबान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “करीब है के (गुमराह) कौमे तुम्हारे

खिलाफ (लड़ने के लिए) दूसरी कोमो को बूलाएँ जिस तरह खाने वाले खाने के बर्तन की तरफ एक दूसरे को बुलाते है", किसी ने अर्ज़ किया: इस रोज़ हमारी तादाद कम होने की वजह से ऐसे होगा? आप ﷺ ने फ़रमाया: "नहीं, बल्कि इस रोज़ तुम ज़्यादा होगे, लेकिन तुम सैलाब की झाग की तरह होगे, अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों के दिलों से तुम्हारी हैबत (डर) निकाल देगा और तुम्हार दिल में वहन डाल देगा", किसी ने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! वहन क्या है? आप ﷺ ने फ़रमाया: "दुनिया से मुहब्बत और मौत से नफ़रत"| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (4297) [و عنه] و البيهقى فى دلائل النبوة (6 / 534)

لوگوں के तब्दील होने का बयान • بَاب تغير النَّاس

तीसरी फस्ल • الْفَصْلُ الثَّالِث

٥٣٧٠ - (لم تتمّ دراسته) عَن ابْن»» عَبَّاس قَالَ: «مَا ظَهَرَ الْغُلُولُ فِي قَوْمٍ إِلَّا أَلْقَى اللَّهُ فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ وَلَا فَشَا الزِّنَا فِي قَوْمٍ إِلَّا كَثُرَ فِيهِمُ الْمَوْتُ وَلَا نَقَصَ قَوْمُ الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ إِلَّا قَطَعَ عَنْهُمُ الرِّزْقَ وَلَا حَكَمَ قَوْمٌ بِغَيْرِ حَقٍّ إِلَّا فَشَا فِيهِمُ الدَّمُ وَلَا خَتَرَ قَوْمٌ بالعهد إِلا سُلِّطَ عَلَيْهِم عدوهم» . رَوَاهُ مَالك

5370. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जिस कौम में खयानत, आम हो जाए तो अल्लाह उन के दिलों में रुअब डाल देता है, जिस कौम में ज़िना फ़ैल जाए तो उनमें अम्वात (मौत) बढ़ जाती है, जो कौम नापतोल में कमी करती हैं तो उन से रीज़्क रोक लिया जाता है, जो कौम नाहक फैसले करने लगे तो उनमें क़त्ल आम हो जाता है और जो कौम दगाबाज़ी करती हैं तो इन पर दुश्मन मुसल्लत कर दिया जाता है"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه مالک (2 / 460 ح 1013) * السند فیه بلاغ ، ای هو غیر متصل و حدیث ابن ماجه (4019 حسن بتحقیقی) :'' یا معشر المهاجرین خمس اذا ابتلیتم بهن '' الخ یغنی عنه

بَاب الْإِنْذَار والتحذير • डराने और ख़बरदार करने का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٥٣٧١ - (صَحِيح) عَن عِيَاض بن حمَار الْمُجَاشِعِي أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ ذَاتَ يَوْمٍ فِي خُطْبَتِهِ: " أَلَا إِنَّ رَبِّي أَمَرَنِي أَنْ أُعَلِّمَكُمْ مَا جَهِلْتُمْ مِمَّا عَلَّمَنِي يَوْمِي هَذَا: كُلُّ مَالٍ نَحَلْتُهُ عَبْدًا حلالٌ وإني خلقت عبَادي حنفَاء كلهم وَإِنَّهُ أَتَتْهُمُ الشَّيَاطِينُ فَاجْتَالَتْهُمْ عَنْ دِينِهِمْ وَحَرَّمَتْ عَلَيْهِمْ مَا أَحْلَلْتُ لَهُمْ وَأَمَرَتْهُمْ أَنْ يُشْرِكُوا بِي مَا لَمْ أُنْزِلْ بِهِ سُلْطَانًا وَإِنَّ اللَّهَ نَظَرَ إِلَى أَهْلِ الْأَرْضِ فَمَقَتَهُمْ عَرَبَهُمْ وَعَجَمَهُمْ إِلَّا بَقَايَا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَقَالَ: إِنَّمَا بَعَثْتُكَ لِأَبْتَلِيَكَ وَأَبْتَلِيَ بِكَ وَأَنْزَلْتُ عَلَيْكَ كِتَابًا لَا يَغْسِلُهُ الْمَاءُ تَقْرَؤُهُ نَائِمًا وَيَقْظَانَ وَإِنَّ الله أَمرنِي أَن أحرقَ قُرَيْشًا فَقلت: يَا رَبِّ إِذًا يَثْلَغُوا رَأْسِي فَيَدَعُوهُ خُبْزَةً قَالَ: اسْتَخْرِجْهُمْ كَمَا أَخْرَجُوكَ وَاغْزُهُمْ نُغْزِكَ وَأَنْفِقْ فَسَنُنْفِقُ عَلَيْكَ وَابْعَثْ جَيْشًا نَبْعَثْ خَمْسَةً مِثْلَهُ وَقَاتِلْ بِمن أطاعك من عصاك ". رَوَاهُ مُسلم

5371. इयाज़ बिन हिमार मुजाशीईय रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक रोज़ रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने खुत्बा में इरशाद फ़रमाया: “सुन लो! मेरे रब ने मुझे हुक्म दिया है की मैं तुम्हें उन से जो उस ने मुझे आज तालीम दि है, वह चीज़े सिखाऊ जो तुम नहीं जानते, वह तमाम माल जो मैंने किसी बंदे को अता किया है वह हलाल है, मैंने अपने तमाम बंदो को हंफा (बातिल से दूर रहने वाले और हक़ कबूल करने के लिए तैयार रहने वाले) पैदा किया है, बेशक शैतान उन के पास आते है और वह उन्हें उन के दीन से दूर कर देते है, और मैंने इन के लिए जो हलाल किया था वह उन चीजों को इन पर हराम कर देते है, और वह उन्हें हुक्म देते हैं के वह मेरे साथ शरीक करे जिस की मैंने कोई दलील नहीं उतारी, बेशक अल्लाह ने अहले ज़मीन की तरफ देखा तो उस ने अहले किताब के कुछ लोगों के सिवा उन के अरब व अजम को मब्गुज़ ठहरा दिया, और फ़रमाया: मैंने आप को सिर्फ इसलिए मबउस किया है ताकि मैं आप को आजमाऊं और आप के ज़रिए (आप की कौम को) आजमाऊं, मैंने आप पर किताब उतारी जिसे पानी नहीं धो सकता (ना काबिले उलट है), आप इसे सोते जागते पढेंगे, बेशक अल्लाह ने मुझे कुरैश को हलाक करने का हुक्म फ़रमाया तो मैंने अर्ज़ किया: मेरे परवरदिगार! वह मेरा सर कुचल देंगे और इसे रोटी बना देंगे, फ़रमाया आप उन्हें निकाल दें जैसे उन्होंने आप को निकाल दिया था आप उन से जिहाद करे, हम आप को तैयार करेंगे, आप खर्च करे, आप पर खर्च किया जाएगा, आप लश्कर भेजे हम भी उसकी मिस्ल (फरिश्तो के) पांच लश्कर भेजेंगे, और आप ﷺ अपने इताअत गुज़ारो के साथ नाफर्मानो के खिलाफ किताल करे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (62 / 2865)، (7207)

٥٣٧٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ (وَأَنْذِرْ عشيرتك الْأَقْرَبين)»» صَعِدَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الصَّفَا فَجَعَلَ يُنَادِي: «يَا بَنِي فِهْرٍ يَا بَنِي عَدِيٍّ» لِبُطُونِ قُرَيْشٍ حَتَّى اجْتَمَعُوا فَقَالَ: «أَرَأَيْتَكُمْ لَوْ أَخْبَرْتُكُمْ أَنَّ خَيْلًا بِالْوَادِي تُرِيدُ أَنْ تُغِيرَ عَلَيْكُمْ أَكُنْتُمْ مُصَدِّقِيَّ؟ [ص:١٤٧» قَالُوا: نَعَمْ مَا جَرَّبْنَا عَلَيْكَ إِلَّا صِدْقًا. قَالَ: «فَإِنِّي نَذِيرٌ لَكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٌ

شَدِيدٌ» . فَقَالَ أَبُو لَهَبٍ: تَبًّا لَكَ سَائِرَ الْيَوْمَ أَلِهَذَا جَمَعْتَنَا؟ فَنَزَلَتْ: (تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ)»» مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَفِي رِوَايَةٍ نَادَى: «يَا بَنِي عَبْدِ مَنَافٍ إِنَّمَا مَثَلِي وَمَثَلُكُمْ كَمَثَلِ رَجُلٍ رَأَى الْعَدُوَّ فَانْطَلَقَ يَرْبَأُ أَهْلَهُ فَخَشِيَ أَنْ يسبقوه فَجعل يَهْتِف يَا صَبَاحَاه»

5372. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जब यह आयत: “अपने करीबी रिश्तेदारों को डराए”, नाज़िल हुई तो नबी ﷺ सफा पहाड़ी पर चढ़ कर आवाज़ देने लगे: बनू फहर! बनू अदि! (जो की कुरैश के कबिले है) हत्ता कि वह इकठ्ठे हो गए, तो फ़रमाया: “मुझे बताओ अगर में तुम्हें खबर दू के वादी में एक लश्कर है जो तुम पर हमला करना चाहता है तो क्या तुम मेरी तस्दीक करोगे ?” उन्होंने कहा: जी, हमने आप को सच्चा ही पाया है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं अज़ाबे शदीद से पहले तुम्हें आगाह करने वाला हूँ” अबू लहब ने कहा: बाकी अय्याम में तेरे लिए हलाकत हो, क्या तुम ने इसलिए हमें जमा किया था, तब सूरत (تَبَّتْ يَدَآ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ) “अबू लहब के हाथ तूट जाए और वह तबाह व बर्बाद हो जाए”, नाज़िल हुई| एक दूसरी रिवायत में है आप ने आवाज़ दी, “बनू अब्द मनाफ़! मेरी और तुम्हारी मिसाल इस शख़्स की तरह है जिस ने दुश्मन को देखा तो वह अपने अहल व अयाल को बचाने चला तो उसे अंदेशा हुआ की वह (दुश्मन) उस पर सबकत ले जाएंगे तो वह (दुश्मन की इत्तिला देने के लिए) ज़ोर ज़ोर से कहता है या सबा हाह”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (4770) و مسلم (355 / 208 و 353 / 207)، (508 و 506)

٥٣٧٣ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ (وَأَنْذِرْ عشيرتك الْأَقْرَبين)»» دَعَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قُرَيْشًا فَاجْتَمَعُوا فَعَمَّ وَخَصَّ فَقَالَ: «يَا بَنِي كَعْبِ بْنِ لُؤَيٍّ أَنْقِذُوا أَنْفُسَكُمْ مِنَ النَّارِ يَا بَنِي مُرَّةَ بْنِ كَعْبٍ أَنْقِذُوا أَنْفُسَكُمْ مِنَ النَّارِ. يَا بَنِي عَبْدِ شَمْسٍ أَنْقِذُوا أَنْفُسَكُمْ من النَّار يَا بني عبد منَاف أَنْقِذُوا أَنفسكُم من النَّار. يا بَنِي هَاشِمٍ أَنْقِذُوا أَنْفُسَكُمْ مِنَ النَّارِ. يَا بني عبد الْمطلب أَنْقِذُوا أَنفسكُم من النَّار. يَا فَاطِمَةُ أَنْقِذِي نَفْسَكِ مِنَ النَّارِ فَإِنِّي لَا أَمْلِكُ لَكُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا غَيْرَ أَنَّ لَكُمْ رَحِمًا سَأَبُلُّهَا بِبَلَالِهَا» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ»» وَفِى الْمُتَّفَقِ عَلَيْهِ قَالَ: «يَا مَعْشَرَ قُرَيْشٍ اشْتَرُوا أَنْفُسَكُمْ لَا أُغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَيَا صَفِيَّةُ عَمَّةَ رَسُولِ اللَّهِ لَا أُغْنِي عَنْكِ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا. وَيَا فَاطِمَةُ بِنْتَ مُحَمَّدٍ سَلِينِي مَا شِئْتِ مِنْ مَالِي لَا أُغْنِي عَنْكِ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا»

5373. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब यह आयत: “अपने करीबी रिश्तेदारों को डराओ”, नाज़िल हुई तो नबी ﷺ ने कुरैश को आवाज़ दी, वह सब जमा हो गए तो आप ﷺ नेक व खास सभी को मुखातिब करते हुए फ़रमाया: ए बनी काब बिन लुइ! अपने आप को जहन्नम की आग से आज़ाद करा लो, ए बनू मरह बिन काब! अपने आप को आग से बचाओ, ए बनू अब्दुल शम्स! अपने आप को आग से बचाव, बनू अब्दुल मुत्तलिब अपने आप को आग से बचाव, फ़ातिमा! अपने आप को आग से बचाव, मैं अल्लाह के यहाँ तुम्हारे लिए किसी चिज़ का इख़्तियार नहीं रखता, अलबत्ता जो हक़ क़राबत है में उसे इहसान के साथ निभाऊंगा”, और सहीह बुखारी सहीह मुस्लिम की रिवायत में है: आप ﷺ ने फ़रमाया: “कुरैश की जमाअत अपने जानो को (ईमान के साथ आग से) बचाव, मैं अल्लाह के यहाँ तुम्हारे कुछ काम नहीं आऊंगा, बनू अब्द मनाफ़ में अल्लाह के यहाँ तुम्हारे कुछ काम नहीं आऊंगा, अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब में अल्लाह के यहाँ तुम्हारे कुछ काम नहीं आऊंगा, रसूल अल्लाह की फूफी सफ्फिया! मैं अल्लाह के यहाँ तुम्हारे कुछ काम नहीं आऊंगा, फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद

मेरे माल में से जो चाहो ले लो में अल्लाह के यहाँ तुम्हारे कुछ काम नहीं आऊंगा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (348 / 204)، (501) 0 و حديث ’’ يا معشر قريش ‘‘ الخ متفق عليه (البخارى : 2753 و مسلم :351 / 206)، (504)

بَاب الْإِنْذَار والتحذير • डराने और ख़बरदार करने का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٥٣٧٤ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " أُمَّتِي هَذِهِ أُمَّةٌ [ص:١٤٧] مَرْحُومَةٌ لَيْسَ عَلَيْهَا عَذَابٌ فِي الْآخِرَةِ عَذَابُهَا فِي الدُّنْيَا: الْفِتَنُ وَالزَّلَازِلُ وَالْقَتْلُ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

5374. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरी यह उम्मत उम्मत मरहूमा (जिस पर रहम किया गया) है, उस पर आखिरत में (शदीद) अज़ाब नहीं, दुनिया में उस का अज़ाब फ़ितनो ज़लज़लो और क़त्ल की सूरत में होगा”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4278)

٥٣٧٥ ، ٥٣٧٦ - [(لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي عُبَيْدَةَ وَمُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ هَذَا الْأَمْرَ بَدَأَ نُبُوَّةً وَرَحْمَةً ثُمَّ يَكُونُ خِلَافَةً وَرَحْمَةً ثُمَّ مُلْكًا عَضُوضًا ثُمَّ كَانَ جَبْرِيَّةً وَعُتُوًّا وَفَسَادًا فِي الْأَرْضِ يَسْتَحِلُّونَ الْحَرِيرَ وَالْفُرُوجَ وَالْخُمُورَ يُرْزَقُونَ عَلَى ذَلِكَ وَيُنْصَرُونَ حَتَّى يَلْقَوُا اللَّهَ» رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ»

5375. अबू उबैदाह और मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हुमा रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इस दिन का आगाज़ नबूवत व रहमत से हुआ फिर खिलाफत व रहमत होगी फिर ज़ालिम बादशाह होंगे, फिर ज़मीन में जबर, ज़्यादती और फसाद होगा, वह रेशम, शर्मगाहो (जीना) और शराब को हलाल समझेंगे, उन्हें इसी हालत पर रीज़्क दीया जाएगा और उनकी मदद की जाती रहेगी हत्ता कि वह अल्लाह से जा मिलेंगे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (5616) ، نسخة محققة : 5228) [و ابو يعلى (873)] * ليث بن ابى سليم : ضعيف ، و للحديث شواهد

٥٣٧٥ ، ٥٣٧٦ - [(لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي عُبَيْدَةَ وَمُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ هَذَا الْأَمْرَ بَدَأَ نُبُوَّةً وَرَحْمَةً ثُمَّ يَكُونُ خِلَافَةً وَرَحْمَةً ثُمَّ مُلْكًا عَضُوضًا ثُمَّ كَانَ جَبْرِيَّةً وَعُتُوًّا وَفَسَادًا فِي الْأَرْضِ يَسْتَحِلُّونَ الْحَرِيرَ وَالْفُرُوجَ وَالْخُمُورَ يُرْزَقُونَ عَلَى ذَلِكَ وَيُنْصَرُونَ حَتَّى يَلْقَوُا اللَّهَ» رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ»

5376. अबू उबैदाह और मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हुमा रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इस दीन का आगाज़ नबूवत व रहमत से हुआ फिर खिलाफत व रहमत रहमत होगी फिर ज़ालिम बादशाह होंगे, फिर ज़मीन में जबर, ज़्यादती और फसाद होगा, वह रेशम, शर्मगाहो (जीना) और शराब को हलाल समझेंगे, उन्हें इसी हालत पर रीज़्क दीया जाएगा और उनकी मदद की जाती रहेगी हत्ता कि वह अल्लाह से जा मिलेंगे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (5616) ، نسخة محققة : 5228) [و ابو يعلى (873)] * ليث بن ابى سليم : ضعيف ، و للحديث شواهد

٥٣٧٧ - (حسن) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " إِنَّ أَوَّلَ مَا يُكْفَأُ - قَالَ زَيْدُ بْنُ يَحْيَى الرَّاوِيُّ: يَعْنِي الْإِسْلَامَ - كَمَا يُكْفَأُ الْإِنَاءُ " يَعْنِي الْخَمْرَ. قِيلَ: فَكَيْفَ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَقَدْ بَيَّنَ اللَّهُ فِيهَا مابين؟ قَالَ: «يُسَمُّونَهَا بِغَيْرِ اسْمِهَا فَيَسْتَحِلُّونَهَا» . رَوَاهُ الدَّارِمِيُّ

5377. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “बेशक सबसे पहले उल्टा दीया जाएगा, ज़ैद बिन याह्या रावी ने बयान किया यानी इस्लाम, जैसे बर्तन उल्टा दिया जाता है, यानी शराब, अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल! अल्लाह ने उस के मुताल्लिक तो वज़ाहत फरमा दि है, आप ﷺ ने फ़रमाया: वह उस का नाम बदल लेंगे और फिर इसे हलाल जानेंगे”| (हसन)

حسن ، رواه الدارمى (2 / 114 ح 2106 ، نسخة محققة : 2145) * و سنده حسن و رواه ابى يعلى فى مسنده (8 / 177 ح 4731) من حديث فرات بن سلمان عن القاسم بن محمد به

بَاب الْإِنْذَار والتحذير • डराने और ख़बरदार करने का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٥٣٧٨ - (حسن) عَن النُّعْمَان بن بشير عَنْ حُذَيْفَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَكُونُ النُّبُوَّةُ فِيكُمْ مَا شَاءَ اللَّهُ أَنْ تَكُونَ ثُمَّ يَرْفَعُهَا اللَّهُ تَعَالَى ثُمَّ تَكُونُ خِلَافَةً عَلَى مِنْهَاجِ النُّبُوَّةِ مَا شَاءَ اللَّهُ أَنْ تَكُونَ ثُمَّ يَرْفَعُهَا اللَّهُ تَعَالَى ثُمَّ تَكُونُ مُلْكًا عَاضًّا فَتَكُونُ مَا شَاءَ اللَّهُ أَنْ تَكُونَ ثُمَّ يَرْفَعُهَا اللَّهُ تَعَالَى ثُمَّ تَكُونُ مُلْكًا جَبْرِيَّةً فَيَكُونُ مَا شَاءَ اللَّهُ أَنْ يَكُونَ [ص:١٤٧] ثُمَّ يَرْفَعُهَا اللَّهُ تَعَالَى ثُمَّ تَكُونُ خِلَافَةً عَلَى مِنْهَاجِ نُبُوَّةٍ» ثُمَّ سَكَتَ قَالَ حَبِيبٌ: فَلَمَّا قَامَ عُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ كَتَبْتُ إِلَيْهِ بِهَذَا الْحَدِيثِ أُذَكِّرُهُ إِيَّاهُ وَقُلْتُ: أَرْجُو أَنْ تَكُونَ أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ بَعْدَ الْمُلْكِ الْعَاضِّ وَالْجَبْرِيَّةِ فَسُرَّ بِهِ وَأَعْجَبَهُ يَعْنِي عُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ. رَوَاهُ أَحْمد وَالْبَيْهَقِيّ فِي «دَلَائِل النُّبُوَّة»

5378. नौमान बिन बशीर, हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तक अल्लाह चाहेगा तुम में नबूवत (के असरात) बाकी रखेगा, फिर अल्लाह तआला इसे उठा

लेगा, फिर जब तक अल्लाह चाहेगा खिलाफत, नबूवत के अंदाज़ पर होगी, फिर अल्लाह तआला इसे भी उठा लेगा, फिर जिस क़दर अल्लाह चाहेगा काटने वाले बादशाह होंगे, फिर अल्लाह तआला इसे भी उठा लेगा, फिर जबरिया बादशाहत होगी और यह भी जब तक अल्लाह चाहेगा रहेगी, फिर अल्लाह तआला इसे भी उठा लेगा, फिर खिलाफत नबूवत की तर्ज़ पर होगी", फिर आप ﷺ ख़ामोश हो गए, हबीब बयान करते हैं, जब उमर बिन अब्द अज़ीज़ रहिमहुल्लाह ने खिलाफत संभाली तो मैंने उनकी याद दिहाई के लिए उन्हें यह हदीस लिखी और कहा में उम्मीद करता हूँ कि ज़ालिम बादशाह और जबर यह बादशाहत के बाद आप अमीरुल मोमिनीन हैं, वह उस से खुश हुए और उन्हें अच्छा लगा| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه احمد (4 / 273 ح 18596 ، و البيهقى فى دلائل النبوة 6 / 491)

फ़ितनो का बयान • كتاب الْفِتَن

पहली फस्ल • الْفَصْلُ الأول

٥٣٧٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن حُذَيْفَة قَالَ: قَامَ فِينَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَقَامًا مَا تَرَكَ شَيْئًا يَكُونُ فِي مقَامه إِلَى قِيَامِ السَّاعَةِ إِلَّا حَدَّثَ بِهِ حَفِظَهُ مَنْ حَفِظَهُ وَنَسِيَهُ مَنْ نَسِيَهُ قَدْ عَلِمَهُ أَصْحَابِي هَؤُلَاءِ وَإِنَّهُ لَيَكُونُ مِنْهُ الشَّيْءُ قَدْ نَسِيتُهُ فَأَرَاهُ فَأَذْكُرُهُ كَمَا يَذْكُرُ الرَّجُلُ وَجْهَ الرَّجُلِ إِذَا غَابَ عَنْهُ ثُمَّ إِذَا رَآهُ عرفه. مُتَّفق عَلَيْهِ

5379. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ हमें ख़िताब फरमाने के लिए एक जगह खड़े हुए तो आप ने इस वक़्त से लेकर कयाम कियामत तक होने वाले तमाम वाकिअत बयान फरमाए, याद रखने वालो ने इसे याद रखा, और भूलने वाले ने इसे भुला दिया, और मेरे यह साथी उस से खूब आगाह है, और उन (ज़िक्र की गई चीजों) में से जब वह चीज़ रवानुमा होती है जिसे में भूल चूका था तो उसे देख कर मेरी याद ताज़ा हो जाती है, जिस तरह आदमी किसी गायब हो जाने वाले आदमी के चेहरे को याद करता है, फिर जब वह इसे देखता है तो वह इसे पहचान लेता है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (6604) ومسلم (23 / 2891)، (7263)

٥٣٨٠ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " تُعْرَضُ الْفِتَنُ عَلَى الْقُلُوبِ كَالْحَصِيرِ عُودًا عُودًا فَأَيُّ قَلْبٍ أُشْرِبَهَا نَكَتَتْ فِيهِ نُكْتَةً سَوْدَاءَ وَأَيُّ قَلْبٍ أَنْكَرَهَا نُكِتَتْ فِيهِ نُكْتَةٌ بَيْضَاءُ حَتَّى يَصِيرَ عَلَى قَلْبَيْنِ: أَبْيَضُ بِمثل الصَّفَا فَلَا تَضُرُّهُ فِتْنَةٌ مَا دَامَتِ السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ وَالْآخَرُ أَسْوَدُ مِرْبَادًا كَالْكُوزِ مُجَخِّيًا لَا يَعْرِفُ مَعْرُوفًا وَلَا يُنْكِرُ مُنْكَرًا إِلَّا مَا أُشْرِب من هَوَاهُ " رَوَاهُ مُسلم

5380. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “दिलों पर फितने इस तरह मुसलसल पेश किए जाएँगे जिस तरह चटाई के तनके मुसलसल होते हैं, जिस में वह पेवश्त कर दिया गया, उस पर एक सियाह नाकित लगा दिया जाता है, और जिस दिल ने इसे कबूल करने से इनकार किया, उस पर एक सफ़ेद नाकित लगा दिया जाता है हत्ता के दिल दो किस्म के हो जाएँगे, उनमें से एक दिल सफ़ेद पत्थर की तरह चमक दार हो जाएगा जिसे कयामे कियामत तक कोई फितने नुकसान नहीं पहुंचा सकता, जबकि दूसर दिल सियाह राख की तरह होगा जैसे उल्टा बर्तन हो, ना तो वह नेकी को पहचानता है और न बुराई को, वह सिर्फ वही जानता है जो उसकी ख्वाहिशात से उस में पेवश्त कर दिया जाए”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (231 / 144)، (369)

٥٣٨١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: حَدَّثَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَدِيثَيْنِ رَأَيْتُ أَحَدَهُمَا وَأَنَا أَنْتَظِرُ الْآخَرَ: حَدَّثَنَا: «إِنَّ الْأَمَانَةَ نَزَلَتْ فِي جَذْرِ قُلُوبِ الرِّجَالِ ثُمَّ عَلِمُوا مِنَ الْقُرْآنِ ثُمَّ عَلِمُوا مِنَ السُّنَّةِ» . وَحَدَّثَنَا عَنْ رَفْعِهَا قَالَ: " يَنَامُ الرَّجُلُ النَّوْمَةَ فَتُقْبَضُ الْأَمَانَةُ مِنْ قَلْبِهِ فَيَظَلُّ أَثَرُهَا مِثْلُ أَثَرِ الْوَكْتِ ثُمَّ يَنَامُ النَّوْمَةَ فتقبض فَيَبْقَى أَثَرُهَا مِثْلَ [ص:١٤٨ أَثَرِ الْمَجْلِ كَجَمْرٍ دَحْرَجْتَهُ عَلَى رِجْلِكَ فَنَفِطَ فَتَرَاهُ مُنْتَبِرًا وَلَيْسَ فِيهِ شَيْءٌ وَيُصْبِحُ النَّاسُ يَتَبَايَعُونَ وَلَا يَكَادُ أَحَدٌ يُؤَدِّي الْأَمَانَةَ فَيُقَالُ: إِنَّ فِي بَنِي فُلَانٍ رَجُلًا أَمِينًا وَيُقَالُ لِلرَّجُلِ: مَا أَعْقَلَهُ وَمَا أَظْرَفَهُ وَمَا أَجْلَدُهُ وَمَا فِي قَلْبِهِ مِثْقَالُ حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ مِنْ إِيمَانٍ ". مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5381. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें दो हदीसे बयान की, मैंने उनमें से एक तो देख ली जबकि दूसरी का इंतज़ार है, आप ﷺ ने हमें हदीस बयान की के अमानत (इमानदारी) आदमियों के दिलों की जड़ (फितरत) में उतरी, फिर उन्होंने कुरान से सिखा, फिर सुन्नत से", फिर आप ﷺ ने इस (ईमान) के उठ जाने के मुतल्लिक हमें हदीस बयान की, फ़रमाया: "आदमी गाफ़िल होगा तो ईमान उस के दिल से उठा लिया जाएगा, उस का निशान नुक्ते की तरह रह जाएगा, फिर वह दोबारा गाफ़िल होगा तो इस (ईमान) को उठा लिया जाएगा तो फफोले की तरह उस पर निशान रह जाएगा, जैसे तूने अपने पाँव पर अंगारा लुड़काया हो वह फफोला बन जाए और तो उसे फुला हुआ देखे हालाँकि उस में कोई चीज़ नहीं, और लोग सुबह करेंगे, खरीद फरोख्त करेंगे और कोई एक भी अमानत अदा नहीं करेगा, कहा जाएगा के फलां कबिले में एक अमानत दार शख़्स है, और किसी और आदमी के मुतल्लिक कहा जाएगा के वह किस कदर अकलमंद है, उस का कितना ज़र्फ़ है और वह किस कदर बर्दाश्त वाला है, हालाँकि उस का दिल में राइ के दाने के बराबर भी ईमान नहीं होगा"। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (6497) و مسلم (230 / 143)، (367)

٥٣٨٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّاسُ يَسْأَلُونَ رَسُول الله صلى الله عَلَيْهِ وَسلم عَن الْخَيْرِ وَكُنْتُ أَسْأَلُهُ عَنِ الشَّرِّ مَخَافَةَ أَنْ يُدْرِكَنِي قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّا كُنَّا فِي جَاهِلِيَّةٍ وَشَرٍّ فَجَاءَنَا اللَّهُ بِهَذَا الْخَيْرِ فَهَلْ بَعْدَ هَذَا الْخَيْرِ مِنْ شَرٍّ؟ قَالَ: «نَعَمْ» قُلْتُ: وَهَلْ بَعْدَ ذَلِكَ الشَّرِّ مِنْ خَيْرٍ؟ قَالَ: «نَعَمْ وَفِيهِ دَخَنٌ» . قُلْتُ: وَمَا دَخَنُهُ؟ قَالَ: «قَوْمٌ يَسْتَنُّونَ بِغَيْرِ سُنَّتِي وَيَهْدُونَ بِغَيْرِ هَدْيِي تَعْرِفُ مِنْهُمْ وَتُنْكِرُ» . قُلْتُ: فَهَلْ بَعْدَ ذَلِكَ الْخَيْرِ مِنْ شَرٍّ؟ قَالَ: «نَعَمْ دُعَاةٌ عَلَى أَبْوَابِ جَهَنَّمَ مَنْ أَجَابَهُمْ إِلَيْهَا قَذَفُوهُ فِيهَا» . قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ صِفْهُمْ لَنَا. قَالَ: «هُمْ مِنْ جِلْدَتِنَا وَيَتَكَلَّمُونَ بِأَلْسِنَتِنَا» . قُلْتُ: فَمَا تَأْمُرُنِي إِنْ أَدْرَكَنِي ذَلِكَ؟ قَالَ: «تَلْزَمُ جَمَاعَةَ الْمُسْلِمِينَ وَإِمَامَهُمْ» . قُلْتُ: فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُمْ جَمَاعَةٌ وَلَا إِمَامٌ؟ قَالَ: «فَاعْتَزِلْ تِلْكَ الْفِرَقَ كُلَّهَا وَلَوْ أَنْ تَعَضَّ بِأَصْلِ شَجَرَةٍ حَتَّى يُدْرِكَكَ الْمَوْتُ وَأَنْتَ عَلَى ذَلِكَ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ: قَالَ: «يَكُونُ بَعْدِي أَئِمَّةٌ لَا يَهْتَدُونَ بِهُدَايَ وَلَا يَسْتَنُّونَ بِسُنَتِي وَسَيَقُومُ فِيهِمْ رِجَالٌ قُلُوبُهُمْ قُلُوبُ الشَّيَاطِينِ فِي جُثْمَانِ إِنْسٍ» . قَالَ حُذَيْفَةُ: قُلْتُ: كَيْفَ أَصْنَعُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنْ أَدْرَكْتُ ذَلِكَ؟ قَالَ: تَسْمَعُ وَتُطِيعُ الْأَمِيرَ وَإِنْ ضَرَبَ ظهرك وَأخذ مَالك فاسمع وأطع "

5382. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, लोग रसूलुल्लाह ﷺ से खैर के मुतल्लिक दरियाफ्त किया करते थे जबकि मैं आप से शर के मुत्तल्लिक, इस अंदेशे के पेशे नज़र पूछा करता था के वह कहे मुझे अपने गिरफ्त में ले ले, वह बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! हम जाहिलियत और शर में मुब्तिला

थे, अल्लाह ने हमें इस खैर से नवाज़ दिया, तो क्या इस खैर के बाद कोई शर भी आएगा? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ", मैंने अर्ज़ किया: इस शर के बाद कोई खैर भी आएगी? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ, लेकिन उस में कमज़ोरी होगी", मैंने अर्ज़ किया: उसकी कमज़ोरी क्या होगी? आप ﷺ ने फ़रमाया: "कुछ लोग मेरी सुन्नत और मेरे तरीक के खिलाफ चलेंगे, उनकी बाज़ बातो को तुम अच्छा सम्झोंगे और बाज़ को बुरा", मैंने अर्ज़ किया: क्या इस खैर के बाद शर होगा? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ, जहन्नम के दरवाज़े पर दावत देने वाले होंगे, जिस ने उनकी दावत को कबूल कर लिया तो वह उस को उस में फेंक देंगे", मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! उनका तार्रुफ़ करा दें, आप ﷺ ने फ़रमाया: "वो हमारे ही कबिले से होंगे और वह हमारी जुबान में कलाम करेंगे", मैंने अर्ज़ किया: अगर इस (ज़माने) ने मुझे पा लिया तो आप मुझे किया हुक्म फरमाते हैं? आप ﷺ ने फ़रमाया: "मुसलमानों की जमाअत और उन के अमीर के साथ लग जाना", मैंने अर्ज़ किया: अगर उनकी जमाअत न हो और न उनका इमाम (तो फिर किया करूँ ?) आप ﷺ ने फ़रमाया: "उन तमाम फिरको से अलग हो जाना ख्वाह तुम्हें दरख्त की जड़े चबानी पड़े हत्ता कि तुम्हें इसी हालत में मौत आ जाए"| और सहीह मुस्लिम की रिवायत में है, फ़रमाया: "मेरे बाद हुक्मरान होंगे जो न तो मेरी हिदायत व तरीके से रहनुमाई लेंगे और न मेरी सुन्नत के मुताबिक अमल करेंगे और उनमें कुछ लोग ऐसे होंगे, जिन के ढाँचे इंसानी और दिल शैतान होंगे", हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! अगर में यह सूरते हाल देखूं तो मैं क्या करूं? आप ﷺ ने फ़रमाया: "अमिर की बात सुनना और उसकी इताअत करना, अगरचे तुझे मारा जाए और तुम्हारा माल ले लिया जाए, तुम सुनो और इताअत करो"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (3606) و مسلم (52 ، 51 / 1847)، (4784 و 4785)

٥٣٨٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم: «بَادرُوا بِالْأَعْمَالِ فِتناً كَقِطَعِ اللَّيْلِ الْمُظْلِمِ يُصْبِحُ الرَّجُلُ مُؤْمِنًا وَيُمْسِي كَافِرًا وَيُمْسِي مُؤْمِنًا وَيُصْبِحُ كَافِرًا يَبِيعُ دِينَهُ بِعرْض من الدُّنْيَا» . رَوَاهُ مُسلم

5383. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "ऐसे फ़ितनो के आने से पहले, नेक आमाल करने में जल्दी कर लो, जो तारिकी रात के टुकड़ो की तरह होंगे, आदमी सुबह के वक़्त मोमिन होगा तो शाम के वक़्त काफ़िर, जबकि शाम के वक़्त मोमिन होगा तो सुबह के वक़्त काफ़िर, वह दुनिया के माल व मताअ के अवज़ अपना दीन बेच देगा"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (186 / 118)، (313)

٥٣٨٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «سَتَكُونُ فِتَنٌ الْقَاعِدُ فِيهَا خَيْرٌ مِنَ الْقَائِمِ وَالْقَائِمُ فِيهَا خَيْرٌ من الْمَاشِي والماشي فِيهِ خَيْرٌ مِنَ السَّاعِي مَنْ تَشَرَّفَ لَهَا تَسْتَشْرِفْهُ فَمن وجد ملْجأ أَو معَاذًا فليَعُذْ بِهِ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ: قَالَ: «تَكُونُ فِتْنَةٌ النَّائِمُ فِيهَا خَيْرٌ مِنَ الْيَقْظَانِ واليقظانُ خَيْرٌ مِنَ الْقَائِمِ وَالْقَائِمُ فِيهَا خَيْرٌ مِنَ السَّاعِي فَمن وجد ملْجأ أومعاذا فليستعذ بِهِ»

5384. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अनकरीब ऐसे फितने पैदा होंगे के उनमें बैठनेवाला खड़े होने वाले से बेहतर होगा, खड़ा होने वाला चलने वाले से बेहतर होगा और चलने वाला दोड़ने वाले से बेहतर होगा, जिस ने उनकी तरफ झांक कर देखा तो वह इसे भी अपने लपेट में ले लेंगे, जो शख़्स कोई पनाहगाह या बचाव की जगह पाए तो वह वहां पनाह हासिल कर ले”| और मुस्लिम की रिवायत में है, फ़रमाया: “फितने पैदा होंगे, उनमें सोने वाला जागने वाले से बेहतर होगा जबकि उनमें जागने वाला खड़े होने वाले से बेहतर होगा और खड़ा होने वाला उनमें दोड़ने वाले से बेहतर होगा, जो शख़्स कोई पनाहगाह या बचाव की जगह पाए तो वह वहां पनाह हासिल कर ले”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3601) و مسلم (1210 / 2886)، (7247)

٥٣٨٥ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي بَكْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّهَا سَتَكُونُ فِتَنٌ أَلَا ثُمَّ تَكُونُ فِتنٌ أَلا ثمَّ تكونُ فتنةٌ القاعدُ خَيْرٌ مِنَ الْمَاشِي فِيهَا وَالْمَاشِي فِيهَا خَيْرٌ مِنَ السَّاعِي إِلَيْهَا أَلَا فَإِذَا وَقَعَتْ فَمَنْ كَانَ لَهُ إبل فَلْيَلْحَقْ بِإِبِلِهِ وَمَنْ كَانَ لَهُ غَنَمٌ فَلْيَلْحَقْ بغنمه وَمن كَانَت لَهُ أرضٌ فَلْيَلْحَقْ بِأَرْضِهِ» فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَأَيْتَ مَنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ إِبِلٌ وَلَا غَنَمٌ وَلَا أَرْضٌ؟ قَالَ: «يَعْمِدُ إِلَى سَيْفِهِ فَيَدُقُّ عَلَى حَدِّهِ بِحَجَرٍ ثُمَّ لِيَنْجُ إِنِ اسْتَطَاعَ النَّجَاءَ اللَّهُمَّ هَلْ بَلَّغْتُ؟» ثَلَاثًا فَقَالَ: رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَأَيْتَ إِنْ أُكْرِهْتُ حَتَّى ينْطَلق بِي إِلَى أحدالصفين فَضَرَبَنِي رَجُلٌ بِسَيْفِهِ أَوْ يَجِيءُ سَهْمٌ فَيَقْتُلُنِي؟ قَالَ: «يَبُوءُ بِإِثْمِهِ وَإِثْمِكَ وَيَكُونُ مِنْ أَصْحَابِ النَّار» رَوَاهُ مُسلم

5385. अबू बकरह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अनकरीब फितने बरपा होंगे सुन लो! फिर बड़े फितने होंगे सुन लो! फिर ऐसे अज़ीम फितने होंगे के उनमें बैठनेवाला, चलने वाले से बेहतर होगा, उनमें चलने वाला दोड़ने वाले से बेहतर होगा, सुन लो! जब यह वाकेअ हो जाए तो जिसके पास ऊंट हो तो वह अपने ऊटों के साथ मशगुल हो जाए, जिस की बकरिया हो वह अपने बकरियों के साथ मशगुल हो जाए, और जिस की ज़मीन हो तो वह अपने ज़मीन के साथ मशगुल हो जाए”, एक आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! बताइए के जिस शख़्स के पास ऊंट हो न बकरिया और ना ही ज़मीन (तो वह किया करे ?) फ़रमाया: “वो अपने तलवार का क़सद करे और इसे पत्थर पर मार कर धार ख़त्म कर दे, फिर अगर इस्तिताअत हो (वहां से) भाग निकले (के फितने इसे अपने लपेट में ले लें) ताकि वह बच सके, ऐ अल्लाह! क्या मैंने (पैगामे इलाही) पहुंचा दिया ?” आप ﷺ ने तीन बार फ़रमाया, तो एक आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मुझे बताइए अगर मुझे मजबूर कर दिया जाए हत्ता कि मुझे दो सफों (जमाअतों, गिरोहों) में से किसी एक के साथ ले जाया जाए तो कोई अपने तलवार से मुझे मार दे या कोई तीर आए और वह मुझे क़त्ल कर दे (तो कातिल व मकतुल के बारे में किया हुक्म है?) आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो (कातिल) अपने और तुम्हारे गुनाह का (बोझ) लेकर वापस आएगा और वह जहन्नमी होगा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (13 / 2887)، (7250)

٥٣٨٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يُوشِكُ أَنْ يَكُونَ خيرَ مالِ المسلمِ غنمٌ يتبع بهَا شغف الْجِبَالِ وَمَوَاقِعَ الْقَطْرِ يَفِرُّ بِدِينِهِ مِنَ الْفِتَنِ» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

5386. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “करीब है के मुसलमान का बेहतरीन माल बकरिया हो, वह फ़ितनो से अपने दीन की हिफाज़त के लिए उन बकरियों को लेकर पहाड़ो की चोटियों और बारिश बरसने की जगहों पर भाग जाए”| (बुखारी)

رواه البخاری (19)

٥٣٨٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ قَالَ: أَشْرَفَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى أُطُمٍ مِنْ آطَامِ الْمَدِينَةِ فَقَالَ: " هَلْ تَرَوْنَ مَا أَرَى؟ قَالُوا: لَا. قَالَ: «فَإِنِّي لأرى الْفِتَن خلال بُيُوتكُمْ كوقع الْمَطَر» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5387. उसामा बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ मदीना के किसी बुलंद मकान पर चढ़े तो फ़रमाया: “क्या तुम देख रहे हो जो में देख रहा हूँ ?” उन्होंने अर्ज़ किया, नहीं, फ़रमाया: “बेशक में फितने देख रहा हूँ, जो तुम्हारे घरो में बारिश के कतरों की तरह दाखिल हो रहे हैं”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1878) و مسلم (9 / 2885)، (7245)

٥٣٨٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هَلَكَةُ أُمَّتِي عَلَى يَدَي غِلْمةٍ مِنْ قُرَيشٍ» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

5388. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरी उम्मत की हलाकत व तबाही कुरैश के चंद नोजवान लड़को के हाथो होगी”| (बुखारी)

رواه البخاری (3605)

٥٣٨٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَتَقَارَبُ الزَّمَانُ وَيُقْبَضُ الْعِلَمُ وَتَظْهَرُ الْفِتَنُ وَيُلْقَى الشُّحُّ وَيَكْثُرُ الْهَرْجُ» قَالُوا: وَمَا الْهَرْجُ؟ قَالَ: «الْقَتْلُ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5389. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ज़माने (कियामत के) करीब होता जाएगा, इल्म ख़तम कर दिया जाएगा, फितने ज़ाहिर होंगे, (दिलों में) बुखल डाल दीया जाएगा और हरज ज़्यादा हो जाएगा”, उन्होंने अर्ज़ किया, हरज क्या है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “क़त्ल”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (85) و مسلم (11 / 2672)، (6788 ، 6792)

٥٣٩٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَا تَذْهَبُ الدُّنْيَا حَتَّى يَأْتِي يَوْمٌ لَا يَدْرِي الْقَاتِلُ فِيمَ قَتَلَ؟ وَلَا الْمَقْتُولُ فِيمَ قُتِلَ؟ فَقِيلَ: كَيْفَ يَكُونُ ذَلِكَ؟ قَالَ: «الْهَرْجُ الْقَاتِلُ وَالْمَقْتُولُ فِي النَّارِ» . رَوَاهُ مُسلم

5390. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! दुनिया ख़तम नहीं होगी हत्ता कि लोगों पर एक ऐसा दिन भी आएगा के कातिल को मालुम नहीं होगा के उस ने किस वजह से क़त्ल किया और मकतुल को मालुम नहीं होगा के इसे किसी वजह से क़त्ल किया गया ?" अर्ज़ किया गया, यह किस वजह से होगा, फ़रमाया: "फितने की वजह से कातिल और मकतुल (दोनों) जहन्नमी है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (56 / 2908)، (7304)

٥٣٩١ - (صَحِيح) وَعَنْ»» مَعْقِلِ بْنِ يَسَارٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ «الْعِبَادَةُ فِي الْهَرْجِ كَهِجْرَةٍ إِلَيَّ» . رَوَاهُ مُسلم

5391. मुअकिल बिन यस्सार रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "फितने के (ज़माने) में इबादत करना मेरी तरफ हिजरत करने की तरह है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (130 / 2948)، (7400)

٥٣٩٢ - (صَحِيح) وَعَنِ»» الزُّبَيْرِ بْنِ عَدِيٍّ قَالَ: أَتَيْنَا أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ فَشَكَوْنَا إِلَيْهِ مَا نَلْقَى مِنَ الْحَجَّاجِ. فَقَالَ: «اصْبِرُوا فَإِنَّهُ لَا يَأْتِي عَلَيْكُمْ زمَان إِلَّا الَّذِي بعده أشرمنه حَتَّى تَلْقَوْا رَبَّكُمْ» . سَمِعْتُهُ مِنْ نَبِيِّكُمْ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

5392. जुबैर बिन अदि बयान करते हैं, हम अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु के पास आए तो हमने हज्जाज की तरफ से हम पर होने वाले जुल्म के मुतल्लिक उन से शिकायत की तो उन्होंने ने फ़रमाया: सब्र करो, क्योंकि तुम पर जो वक़्त भी आ रहा है, उस के बाद आने वाला वक़्त उन से भी ज़्यादा बुरा होगा हत्ता कि तुम अपने रब से जा मिलो", मैंने यह बात तुम्हारे नबी ﷺ से सुनी है| (बुखारी)

رواه البخاری (7068)

फ़ितनो का बयान • كتاب الْفِتَن

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٥٣٩٣ - (ضَعِيف) عَنْ»» حُذَيْفَةَ قَالَ: وَاللَّهِ مَا أَدْرِي أَنَسِيَ أَصْحَابِي أَمْ تَنَاسَوْا؟ وَاللَّهِ مَا تَرَكَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ قَائِدِ فِتْنَةٍ إِلَى أَنْ تَنْقَضِيَ الدُّنْيَا يَبْلُغُ مَنْ مَعَهُ ثَلَاثَمِائَةٍ فَصَاعِدًا إِلَّا قَدْ سَمَّاهُ لَنَا بِاسْمِهِ وَاسْمِ أَبِيهِ واسمِ قبيلتِه. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5393. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अल्लाह की क़सम! मैं नहीं जानता के मेरे साथी भूल गए या उन्होंने भुलक्कड़पन का इज़हार किया, अल्लाह की क़सम! रसूलुल्लाह ﷺ ने इन्तहाई दुनिया तक होने वाले फितनो के सरदार जिन की तादाद तीन सौ से इज़ाफ़ी (ज़्यादा) तक पहुंचेगी, के मुतल्लिक बताया, आप ﷺ ने उस का नाम उस के वालिद का नाम और उस के कबिले के नाम के मुतल्लिक हमें बताया। (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4243)

٥٣٩٤ - (صَحِيح) وَعَنْ»» ثَوْبَانَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّمَا أَخَافُ عَلَى أُمَّتِي الْأَئِمَّةَ الْمُضِلِّينَ وَإِذَا وُضِعَ السَّيْفُ فِي أُمَّتِي لَمْ يُرْفَعْ عَنْهُمْ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد والترمذيُّ

5394. सौबान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुझे अपनी उम्मत के मुतल्लिक गुमराह हुक्मरानों का अंदेशा है, जब मेरी उम्मत में तलवार रख दी जाएगी तो वह रोज़ ए कियामत तक उन से नहीं उठाई जाएगी”। (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (4252) و الترمذی (2229 وقال : صحيح)

٥٣٩٥ - (حسن) وَعَن»» سفينة قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «الْخِلَافَةُ ثَلَاثُونَ سَنَةً ثُمَّ تَكُونُ مُلْكًا» . ثُمَّ يَقُولُ سَفِينَةُ: أَمْسِكْ: خِلَافَةَ أَبِي بَكْرٍ سَنَتَيْنِ وَخِلَافَةَ عُمَرَ عَشْرَةً وَعُثْمَانَ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ وَعَلِيٍّ سِتَّةً. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ

5395. सफीना रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ को फरमाते हुए सुना: “खिलाफत तीस साल तक होगी, फिर बादशाहत होगी”, फिर सफीना बयान करते हैं: अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु की खिलाफत दो साल शुमार कर, उमर रदियल्लाहु अन्हु की दस साल, उस्मान रदियल्लाहु अन्हु की बारह साल और अली रदियल्लाहु अन्हु की खिलाफत छे साल शुमार कर। (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (5 / 220221 ح 22264) و الترمذی (2226 وقال : حسن) و ابوداؤد (4646)

٥٣٩٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ حُذَيْفَةَ»» قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَيَكُونُ بَعْدَ هَذَا الْخَيْرِ شَرٌّ كَمَا كَانَ قَبْلَهُ شَرٌّ؟ قَالَ: «نَعَمْ» قُلْتُ: فَمَا الْعِصْمَةُ؟ قَالَ: «السَّيْفُ» قُلْتُ: وَهَلْ بَعْدَ السَّيْفِ بَقِيَّةٌ؟ قَالَ: «نعمْ تكونُ إِمارةٌ على أَقْذَاءٍ وَهُدْنَةٌ عَلَى دَخَنٍ» . قُلْتُ: ثُمَّ مَاذَا؟ قَالَ: «ثُمَّ يَنْشَأُ دُعَاةُ الضَّلَالِ فَإِنْ كَانَ لِلَّهِ فِي الْأَرْضِ خَلِيفَةٌ جَلَدَ ظَهْرَكَ وَأَخَذَ مَالَكَ فَأَطِعْهُ وَإِلَّا فَمُتْ وَأَنْتَ عَاضٌّ عَلَى جَذْلِ شَجَرَةٍ» . [ص:١٤٨ قُلْتُ: ثُمَّ مَاذَا؟ قَالَ: «ثُمَّ يَخْرُجُ الدَّجَّالُ بَعْدَ ذَلِكَ مَعَهُ نَهْرٌ وَنَارٌ فَمَنْ وَقَعَ فِي نَارِهِ وَجَبَ أَجْرُهُ وَحُطَّ وِزْرُهُ وَمَنْ وَقَعَ فِي نَهْرِهِ وَجَبَ وِزْرُهُ وحط أَجْرُهُ» . قَالَ: قُلْتُ: ثُمَّ مَاذَا؟ قَالَ: «ثُمَّ يُنْتَجُ الْمُهْرُ فَلَا يُرْكَبُ حَتَّى تَقُومَ السَّاعَةُ» وَفِي رِوَايَة: «هُدْنَةٌ عَلَى دَخَنٍ وَجَمَاعَةٌ عَلَى أَقْذَاءٍ» . قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ الْهُدْنَةُ عَلَى الدَّخَنِ مَا هِيَ؟ قَالَ: «لَا ترجع قُلُوب أَقوام كَمَا كَانَتْ عَلَيْهِ» . قُلْتُ: بَعْدَ هَذَا الْخَيْرِ شَرٌّ؟ قَالَ: «فِتْنَةٌ عَمْيَاءُ صَمَّاءُ عَلَيْهَا دُعَاةٌ عَلَى أَبْوَابِ النَّارِ فَإِنْ مُتَّ يَا حُذَيْفَةُ وَأَنْتَ عَاضٌّ عَلَى جَذْلٍ خَيْرٌ لَكَ مِنْ أَنْ تتبع أحدا مِنْهُم» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5396. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! क्या जिस खैर यानी इस्लाम के बाद शर होगा जिस तरह उस से पहले शर (यानी कुफ्र) था? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ!'' मैंने अर्ज़ किया: बचाव का कोई रास्ता है? आप ﷺ ने फ़रमाया: "तलवार", मैंने अर्ज़ किया: क्या तलवार के बाद (अहले इस्लाम में से) कोई बाकी होगा? आप ﷺ ने फ़रमाया: "अमारत के नतीजे में फसाद होगा, सुलह निफ़ाक़ पर होगी और इत्तेहाद मफाद्परस्ती पर होगा", मैंने अर्ज़ किया: फिर क्या होगा? फ़रमाया: "बड़ी गुमराही ज़ाहिर होगी, अगर अल्लाह के लिए ज़मीन पर कोई खलीफा हो वह (जुल्म के ज़रिए) तेरी पुश्त पर मारे और तेरा माल ले ले तो तू उसकी इताअत कर, बसूरत दीगर (अगर खलीफा न हो) तो इस तरह फौत हो के तू दरख्त की जड़ पकड़े हुए हो", मैंने अर्ज़ किया: फिर क्या होगा फ़रमाया: "फिर उस के बाद दज्जाल का जुहूर होगा उस के साथ नहर और आग होगी, जो शख़्स उसकी आग में दाखिल हो गया तो उस का अज़र वाजिब हो गया और उस के गुनाह मिटा दिए गए, और जो शख़्स उसकी नहर में दाखिल हो गया तो उस का गुनाह वाजिब हो गया और उस का अज़र ख़तम कर दिया गया", हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: फिर क्या होगा? आप ﷺ ने फ़रमाया: "फिर घोड़े का बच्चा पैदा होगा और वह अभी सवारी के काबिल नहीं होगा के कियामत काइम हो जाएगी"| एक रिवायत में है, फ़रमाया: "कुदरत पर सुलह और मफाद पर एतमाद होगा", मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! कुदरत पर सुलह से क्या मुराद है, आप ﷺ ने फ़रमाया: "लोगो का दिल (मुहब्बत की) इस हालत पर नहीं आएँगे जिस पर वह पहले थे", मैंने अर्ज़ किया: इस खैर के बाद शर होगा? आप ﷺ ने फ़रमाया: "अंधा बहरा फितने इस (फितने) पर ज़ाहिर होंगे (गोया) वह जहन्नम के दरवाज़े पर (खड़े) है हुज़ैफ़ा अगर तुम दरख्त की जड़ को पकड़े हुए फौत हुए तो वह तेरे लिए उस से बेहतर है की तू उनमें से किसी (फितने) की इत्तेबा करे"| (सहीह)

صحیح ، رواہ ابوداؤد (4244 ، صحیح ، 4247 ، حسن)

٥٣٩٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي»» ذَر قَالَ: كُنْتُ رَدِيفًا خَلْفَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمًا علىحمار فَلَمَّا جَاوَزْنَا بُيُوتَ الْمَدِينَةِ قَالَ: «كَيْفَ بِكَ يَا أَبَا ذَرٍّ إِذَا كَانَ بِالْمَدِينَةِ جُوعٌ تَقُومُ عَنْ فِرَاشِكَ وَلَا تَبْلُغُ مَسْجِدَكَ حَتَّى يُجْهِدَكَ

الْجُوعُ؟» قَالَ: قُلْتُ: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: «تَعَفَّفْ يَا أَبَا ذَرٍّ» . قَالَ: «كَيْفَ بِكَ يَا أَبَا ذَرٍّ إِذَا كَانَ بِالْمَدِينَةِ مَوْتٌ يَبْلُغُ الْبَيْتَ الْعَبْدُ حَتَّى إِنَّهُ يُبَاعُ الْقَبْرُ بِالْعَبْدِ؟» . قَالَ: قُلْتُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: «تَصْبِرُ يَا أَبَا ذَرٍّ» . قَالَ: «كَيْفَ بِكَ يَا أَبَا ذَرٍّ إِذَا كَانَ بِالْمَدِينَةِ قَتْلٌ تَغْمُرُ الدِّمَاءُ أَحْجَارَ الزَّيْتِ؟» قَالَ: قُلْتُ: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: «تَأْتِي مَنْ أَنْتَ مِنْهُ» . قَالَ: قُلْتُ: وَأَلْبَسُ السِّلَاحَ؟ قَالَ: «شَارَكْتَ الْقَوْمَ إِذًا» . قُلْتُ: فَكَيْفَ أَصْنَعُ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: «إِنْ خَشِيتَ أَنْ يَبْهَرَكَ شُعَاعُ السَّيْفِ فَأَلْقِ نَاحِيَةَ ثَوْبِكَ عَلَى وَجْهِكَ لِيَبُوءَ بِإِثمك وإِثمه» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5397. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं एक रोज़ रसूलुल्लाह ﷺ के पीछे गधे पर सवार था, जब हम मदीना के घरो से आगे निकल गए तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “अबू ज़र! उस वक़्त तुम्हारी क्या कैफियत होगी जब मदीना में भूख होगी, तुम अपने बिस्तर से उठोगे और अपने नमाज़ की जगह तक नहीं पहुँच सकोगे हत्ता कि भूख तुम्हें मशक्कत में मुब्तिला कर देगी”, वह कहते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अबू ज़र! सवाल करने से बचना”, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अबू ज़र! तुम्हारी क्या कैफियत होगी जब मदीना में मौत आम होगी हत्ता कि कब्र की जगह गुलाम की कीमत को पहुँच जाएगी ?” वह बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अबू ज़र! तुम सब्र करना”, फ़रमाया: “अबू ज़र! तुम्हारी क्या कैफियत होगी जब मदीना में क़त्ल आम होगा खून अह्जारजियत (मदीना में एक महल या जगह का नाम है) तक फ़ैल जाएगा ?” मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम उन के पास चले जाना जिन के साथ तेरा (दिनी या खुनी) ताल्लुक है”, वह बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: में मुसला हो जाऊंगा, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तब तो आप उन के साथ शरीक हो जाओगे”, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मैं क्या करूं? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर तुम्हें अंदेशा हो के तलवार की तेज़ी तुम पर ग़ालिब आ जाएगी तो फिर तुम अपने कपड़े का किनारा अपने चेहरे पर डाल लेना ताकि वह (कातिल) तेरे और अपने गुनाह के साथ लौटे”| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (4261)

٥٣٩٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ» » اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «كَيْفَ بِكَ إِذَا أُبْقِيتَ فِي حُثَالَةٍ مِنَ النَّاسِ مَرَجَتْ عُهُودُهُمْ وَأَمَانَاتُهُمْ؟ وَاخْتَلَفُوا فَكَانُوا هَكَذَا؟» وَشَبَّكَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ. قَالَ: فَبِمَ تَأْمُرُنِي؟ قَالَ: «عَلَيْكَ بِمَا تَعْرِفُ وَدَعْ مَا تُنْكِرُ وَعَلَيْكَ بِخَاصَّةِ نَفْسِكَ وَإِيَّاكَ وَعَوَامَّهِمْ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «الْزَمْ بَيْتَكَ وَأَمْلِكْ عَلَيْكَ لِسَانَكَ وَخُذْ مَا تَعْرِفُ وَدَعْ مَا تُنْكِرُ وَعَلَيْكَ بِأَمْرِ خَاصَّةِ نَفْسِكَ ودع أَمر الْعَامَّة» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَصَححهُ

5398. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हारी इस वक़्त क्या हालत होगी जब तुम निकम्मे लोगों में बाकी रह जाओगे, उन के वादे और उनकी अमानातें ख़राब हो जाएगी और वह इख़्तिलाफ का शिकार हो जाएँगे, वह इस तरह हो जाएँगे”, आप ﷺ ने अपने एक हाथ की उंगलिया दूसरे हाथ की उंगलियों मैं डाली, उन्होंने अर्ज़ किया, आप मुझे किस चीज़ का हुक्म फरमाते हैं? आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम जिस चीज़ को जानते हो इसे लाज़िम पकड़ो और जिसे नहीं जानते इसे छोड़ दो, और तुम अपना ख़याल रखो और आम लोगों (के अमल) को छोड़ दो”, एक दूसरी रिवायत में है: “अपने

घर में रहो, अपनी जुबान पर काबू रखो, जो चीज़ पहचानते हो इसे पकड़ो, जिसे नहीं पहचानते इसे छोड़ दो तुम अपने फकर करो और आम लोगों के मुआमले को तर्क कर दो"| तिरमिज़ी, और उन्होंने इस रिवायत को सहीह करार दिया है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (لم اجده) و ابوداؤد (43424343)

٥٣٩٩ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَبِي مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَالَ: «إِنَّ بَيْنَ يَدَيِ السَّاعَةِ فِتَنًا كَقِطَعِ اللَّيْلِ الْمُظْلِمِ يُصْبِحُ الرَّجُلُ مُؤْمِنًا وَيُمْسِي كَافِرًا وَيُمْسِي مُؤْمِنًا وَيُصْبِحُ كَافِرًا الْقَاعِد خير من الْقَائِم والماشي خَيْرٌ مِنَ السَّاعِي فَكَسِّرُوا فِيهَا قِسِيَّكُمْ وَقَطِّعُوا فِيهَا أَوْتَارَكُمْ وَاضْرِبُوا سُيُوفَكُمْ بِالْحِجَارَةِ فَإِنْ دُخِلَ عَلَى أَحَدٍ مِنْكُمْ فَلْيَكُنْ كَخَيْرِ ابْنَيْ آدَمَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد. وَفِي رِوَايَة لَهُ (ضَعِيف)»» : «ذَكَرَ إِلَى قَوْلِهِ» خَيْرٌ مِنَ السَّاعِي " ثُمَّ قَالُوا: فَمَا تَأْمُرُنَا؟ قَالَ: كُونُوا أَحْلَاسَ بُيُوتِكُمْ ". وَفِي رِوَايَةِ التِّرْمِذِيِّ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ فِي الْفِتْنَةِ: «كَسِّرُوا فِيهَا قِسِيَّكُمْ وَقَطِّعُوا فِيهَا أَوْتَارَكُمْ وَالْزَمُوا فِيهَا أَجْوَافَ بُيُوتِكُمْ وَكُونُوا كَابْنِ آدَمَ» . وَقَالَ: هَذَا حديثٌ صحيحٌ غريبٌ

5399. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं की आप ﷺ ने फ़रमाया: "कियामत से पहले शब् तारिक के टुकड़ो की तरह (लगातार) फितने होंगे, उनमें आदमी सुबह के वक़्त मोमिन होगा तो शाम के वक़्त काफ़िर और शाम के वक़्त मोमिन होगा तो सुबह के वक़्त काफ़िर, उनमें बैठनेवाला खड़े होने वाले से बेहतर होगा, और उनमें चलने वाला दोड़ने वाले से बेहतर होगा, तुम उनमें अपने कमाने तोड़ डालो और (अपनी कमाने के) तानत काट डालो और अपने तलवारों को पत्थर पर दे मारो, और अगर वह (फितने) तुम में से किसी पर दाखिल हो गया तो उसे चाहिए के वह आदम अलैहिस्सलाम के दो बेटो में से बेहतर बेटे (हाबिल) की तरह हो जाए"| और अबू दावुद की इन्ही से मरवी हदीस में: "बेहतर है डराने वाले से" तक मरवी है, फिर उन्होंने अर्ज़ किया, आप हमें क्या हुक्म फरमाते हैं? आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुम अपने घरो में जम जाना"| और तिरमिज़ी की रिवायत में है की रसूलुल्लाह ﷺ ने फितने के दौर के मुतल्लिक फ़रमाया: "उन में अपने कमानों को तोड़ देना उनमें अपने तानत काट डालना और उन फ़ितनो के वक़्त अपने घर की चार दिवारी को लाज़िम पकड़ना और इब्ने आदम (हाबिल) की तरह हो जाना"| इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस सहीह ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4259 ، 4262) و الترمذی (2204)

٥٤٠٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أم»» مَالك البهزية قَالَتْ: ذَكَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِتْنَةً [ص:١٤٨] فَقَرَّبَهَا. قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَنْ خَيْرُ النَّاسِ فِيهَا؟ قَالَ: «رَجُلٌ فِي مَاشِيَتِهِ يُؤَدِّي حَقَّهَا وَيَعْبُدُ رَبَّهُ وَرَجُلٌ أَخَذَ برأسٍ فرأسه يخيف الْعَدو ويخوفونه» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5400. उम्म मालिक बह्ज़िय्या रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फितने का ज़िक्र किया तो आप ने इसे करीब करार दिया, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! इस (फितने) में बेहतरीन शख़्स कौन होगा? आप ﷺ ने फ़रमाया: "वो आदमी जो अपने मवेशियों में है वह उनका भी हक़ (यानी ज़कात) अदा

करता है और अपने रब की इबादत भी करता है, और वह आदमी जो अपने घोड़े का सर पकड़ता है और वह अपने दुश्मन (काफिरों) को डराता है और वह इसे डराते है”। (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (2177 وقال : غريب) * الرجل مجهول او هو ليث بن ابى سليم ضعيف مشهور و روى الحاكم (4 / 446 ح 8380) عن ابن عباس قال قال رسول الله صلى الله عليه و آله و سلم : ((خير الناس فى الفتن رجل آخذ بعنان فرسه)) او قال : ((برسن فرسه خلف اعداء الله يخيفهم و يخيفونه او رجل معتزل فى باديته يؤدى حق الله تعالىٰ الذى عليه۔)) و سنده حسن

٥٤٠١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ»» اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «سَتَكُونُ فِتْنَةٌ تَسْتَنْظِفُ الْعَرَبَ قَتْلَاهَا فِي النَّارِ اللِّسَانُ فِيهَا أَشَدُّ مِنْ وَقْعِ السَّيْفِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْن مَاجَه

5401. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अनकरीब एक बड़ा फितने होगा जो के तमाम अरबो पर घेरे होगा, उस के मक्तुलिन जहन्नमी है, इस बारे में ज़ुबान दराज़ी करना तलवारज़नी करने से भी ज़्यादा संगीन है”। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (2178 وقال : غريب) و ابن ماجه (3967) [و ابوداؤد (4256)] * زياد : مجهول الاحال و ليث بن ابى سليم : ضعيف

٥٤٠٢ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «سَتَكُونُ فِتْنَةٌ صَمَّاءُ بكماء عمياءُ مَنْ أَشْرَفَ لَهَا اسْتَشْرَفَتْ لَهُ وَإِشْرَافُ اللِّسَانِ فِيهَا كوقوع السَّيْف» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5402. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अनकरीब बहरा, गूंगा और अंधा फितना होगा, जो शख़्स उस के करीब जाएगा, तो वह इसे अपने लपेट में ले लेगा, इस बारे में ज़ुबान दराज़ी करना तलवारज़नी करने की तरह है”। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4264) * عبد الرحمن بن البيلمانى : ضعيف

٥٤٠٣ - (صَحِيح) وَعَنْ»» عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ: كُنَّا قُعُودًا عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرَ الْفِتَنَ فَأَكْثَرَ فِي ذِكْرِهَا حَتَّى ذَكَرَ فِتْنَةَ الْأَحْلَاسِ فَقَالَ قَائِلٌ: وَمَا فِتْنَةُ الْأَحْلَاسِ. قَالَ: " هِيَ هَرَبٌ وَحَرَبٌ ثُمَّ فِتْنَةُ السَّرَّاءِ دَخَنُهَا مِنْ تَحْتِ قَدَمَيْ رَجُلٍ مِنْ أَهْلِ بَيْتِي يَزْعُمُ أَنَّهُ مِنِّي وَلَيْسَ مِنِّي إِنَّمَا أَوْلِيَائِي الْمُتَّقُونَ ثُمَّ يَصْطَلِحُ النَّاسُ عَلَى رَجُلٍ كورك على ضلع ثمَّ فتْنَة الدهماء لَا تَدَعُ أَحَدًا مِنْ هَذِهِ الْأُمَّةِ إِلَّا لَطَمَتْهُ لَطْمَةً فَإِذَا قِيلَ: انْقَضَتْ تَمَادَتْ يُصْبِحُ الرَّجُلُ فِيهَا مُؤْمِنًا وَيُمْسِي كَافِرًا حَتَّى يَصِيرَ النَّاسُ إِلَى فُسْطَاطَيْنِ: فُسْطَاطِ إِيمَانٍ لَا نِفَاقَ فِيهِ وَفُسْطَاطِ نِفَاقٍ لَا إِيمَانَ فِيهِ. فَإِذَا كَانَ ذَلِكَ فَانْتَظِرُوا الدَّجَّالَ مِنْ يَوْمِهِ أَوْ من غده ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5403. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, हम नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर थे की आप ने फ़ितनो का ज़िक्र किया और आप ने उन के मुतल्लिक बहोत बयान फ़रमाया हत्ता कि आप ﷺ ने फितने अहलास का ज़िक्र फ़रमाया, किसी ने अर्ज़ किया, फितने अहलास क्या चीज़े है? आप ﷺ ने

फ़रमाया: “वो भागना और लौटना है? फिर फितने खुशहाली है उस का उभरना मेरे अहले बैत के एक आदमी के पाँव के नीचे से होगा, वह गुमान करेगा के वह मुझ से है, हालाँकि वह मुझ में से नहीं, मेरे दोस्त तो मुत्तकी लोग ही है, फिर लोग एक ऐसे शख़्स (की इमामत व हुक्मरानी) पर राज़ी हो जाएँगे जैसे सुरिन एक पसली पर हो (यानी ना अहल शख़्स को हुक्मरान बना लेंगे) फिर फितने दहमिया इस उम्मत के हर फर्द पर असर अंदाज़ होगा, जब कहा जाएगा के वह ख़तम हो गया है तो वह दराज़ हो जाएगा, इस (फितने) में आदमी सुबह के वक़्त मोमिन होगा तो शाम को काफ़िर हत्ता कि लोग दो गिरोहों में बट जाएँगे, ईमान का गिरोह जिस में कोई निफ़ाक़ नहीं, और निफ़ाक़ का गिरोह जिस में ईमान नहीं, जब यह सूरत हो तो फिर दज्जाल का इंतज़ार करो आज ज़ाहिर हो या कल”। (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (4242)

٥٤٠٤ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «وَيْلٌ لِلْعَرَبِ مِنْ شَرٍّ قَدِ اقْتَرَبَ أَفْلَحَ مَنْ كَفَّ يَدَهُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5404. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “ अरबो के लिए, शर से जो के करीब आ चूका है, हलाकत है, जिस ने अपना हाथ रोक लिया वह कामियाब हो गया”। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4249) * الاعمش مدلس و عنعن و للحديث شواهد معنوية عند الحاكم (4 / 439) وغيره ، غير قوله :'' افلح من كف يده ''

٥٤٠٥ - (صَحِيح) وَعَن»» الْمِقْدَاد بن الْأَسود قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ السَّعِيدَ لَمَنْ جُنِّبَ الْفِتَنَ إِنَّ السَّعِيدَ لَمَنْ جُنِّبَ الْفِتَنَ إِنَّ السَّعِيدَ لَمَنْ جُنِّبَ الْفِتَنَ وَلَمَنِ ابْتُلِيَ فَصَبَرَ فَوَاهًا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5405. मिकदाद बिन असवद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “सआदत मंद शख़्स वह है जो फ़ितनो से बचा लिया गया, सआदत मंद शख़्स वह है जो फ़ितनो से बचा लिया गया, बेशक सआदत मंद शख़्स वह है जो फ़ितनो से बचा लिया गया, और जो शख़्स उन से आज़माया गया और उस ने सब्र किया तो उस के लिए खुशखबरी है”। (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (4263)

٥٤٠٦ - (صَحِيح) وَعَنْ»» ثَوْبَانَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا وُضِعَ السَّيْفُ فِي أُمَّتِي لَمْ يُرْفَعْ عَنْهَا إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَلَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَلْحَقَ قَبَائِلُ مِنْ أُمَّتِي بِالْمُشْرِكِينَ وَحَتَّى تَعْبُدَ قَبَائِلُ مِنْ أُمَّتِي الْأَوْثَانَ وَإِنَّهُ سَيَكُونُ فِي أُمَّتِي كَذَّابُونَ ثَلَاثُونَ كُلُّهُمْ يَزْعُمُ أَنَّهُ نَبِيُّ اللَّهِ وَأَنَا خَاتَمُ النَّبِيين لَا نَبِيَّ بِعْدِي وَلَا تَزَالُ طَائِفَةٌ مِنْ أُمَّتِي عَلَى الْحَقِّ ظَاهِرِينَ لَا يَضُرُّهُمْ مَنْ خَالَفَهُمْ حَتَّى يَأْتِيَ أَمْرُ اللَّهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

5406. सौबान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब मेरी उम्मत में (एक दूसरे से लड़ाई के लिए) तलवार मुसल्लत कर दी जाएगी तो वह रोज़ ए कियामत तक उस से नहीं उठाई जाएगी, और कियामत काइम नहीं होगी हत्ता कि मेरी उम्मत के कबाइल मुशरिकीन से जा मिलेंगे और हत्ता कि मेरी उम्मत के कबाइल बुतों की पूजा करेंगे, और मेरी उम्मत में तीस कज्ज़ाब होंगे और वह सब दावा करेंगे के वह अल्लाह का नबी है, जबकि मैं खातमन नबीय्यीन हूँ, मेरे बाद कोई नबी नहीं, और मेरी उम्मत का एक गिरोह हमेशा हक़ पर होगा, वह ग़ालिब रहेंगे उनका मुखालिफ उनका कोई नुकसान नहीं कर सकेगा हत्ता कि अल्लाह का हुक्म आ जाए”| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (4252)

٥٤٠٧ - (صَحِيح) وَعَنْ»» عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «تَدُورُ رَحَى الْإِسْلَامِ لِخَمْسٍ وَثَلَاثِينَ أَوْ سِتٍّ وَثَلَاثِينَ أَوْ سَبْعٍ وَثَلَاثِينَ فَإِنْ يَهْلِكُوا فَسَبِيلُ مَنْ هَلَكَ وَإِنْ يَقُمْ لَهُمْ دِينُهُمْ يَقُمْ لَهُمْ سَبْعِينَ عَامًا» . قُلْتُ: أَمِمَّا بَقِيَ أَوْ مِمَّا مَضَى؟ قَالَ: «مِمَّا مضى» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5407. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इस्लाम की चक्की पेतिस या छत्तीस या सेतिस बरस तक (निज़ाम के तहत) चलती रहेगी, अगर उन्होंने (इख़्तिलाफ किया और दीन को हकीर (तुच्छ) समझ कर) हलाकत को इख़्तियार किया तो फिर उनकी राह वही है जो हलाक हुए (जैसे पिछले उम्मते), और अगर इन के लिए उनका दीन काइम रहा तो वह इन के लिए सत्तर साल तक रहेगा”, मैंने अर्ज़ किया: क्या (वोह सत्तर बरस) उस से है जो बाकी रह गया या उस से है जो गुज़र चूका? आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस से जो गुज़र चूका”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4254)

كتاب الْفِتَن • फ़ितनो का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٥٤٠٨ - (صَحِيح) عَن»» أبي واقدٍ اللَّيْثِيّ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا خَرَجَ إِلَى غَزْوَةِ حُنَيْنٍ [ص:١٤٨ مَرَّ بِشَجَرَةٍ لِلْمُشْرِكِينَ كَانُوا يُعَلِّقُونَ عَلَيْهَا أَسْلِحَتَهُمْ يُقَالُ لَهَا: ذَاتُ أَنْوَاطٍ. فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ اجْعَلْ لَنَا ذَاتَ أَنْوَاطٍ كَمَا لَهُمْ ذَاتُ أَنْوَاطٍ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «سُبْحَانَ اللَّهِ هَذَا كَمَا قَالَ قَوْمُ مُوسَى (اجْعَل لنا إِلَهًا كَمَا لَهُم آلهةٌ)»» وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَتَرْكَبُنَّ سُنَنَ مَنْ كَانَ قبلكُمْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5408. अबू वाकिद लय्शी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ जब गज़वा ए हुनैन के लिए रवाना हुए तो आप ﷺ मुशरिकीन के एक दरख्त के पास से गुज़रे, जिस पर वह अपना अस्लिहा लटकाया करते थे, इसे ज़ात नौट कहा जाता था, सहाबा ने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! हमारे लिए भी ज़ात नौट मुकर्रर फरमादे जिस तरह इन के लिए ज़ात नौट है, रसूलुल्लाह ﷺ ने (ताज्जुब से) फ़रमाया: "(سُبْحَانَ اللهِ) पाक है अल्लाह यह (बात) तो ऐसे ही है जैसे मूसा अलैहिस्सलाम की कौम ने कहा था: "हमारे लिए भी एक माबूद मुकर्रर कर दे जिस तरह उन के माबूद हैं", उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! तुम भी अपने से पहले लोगों के तरीको पर चलोगे"| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذی (2180 وقال : حسن صحيح)

٥٤٠٩ - (صَحِيح) وَعَن»» ابْن الْمسيب قَالَ: وَقَعَتِ الْفِتْنَةُ الْأُولَى - يَعْنِي مَقْتَلَ عُثْمَانَ - فَلَمْ يَبْقَ مِنْ أَصْحَابِ بَدْرٍ أَحَدٌ ثُمَّ وَقَعَتِ الْفِتْنَةُ الثَّانِيَةُ - يَعْنِي الْحَرَّةَ - فَلَمْ يَبْقَ مِنْ أَصْحَابِ الْحُدَيْبِيَةِ أَحَدٌ ثُمَّ وَقَعَتِ الْفِتْنَةُ الثَّالِثَةُ فَلَمْ تَرْتَفِعْ وَبِالنَّاسِ طَبَاخٌ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

5409. इब्ने मुसय्यब से रिवायत है उन्होंने ने फ़रमाया: "पहला फितना, यानी उस्मान रदियल्लाहु अन्हु की शहादत का वाकिया रवानुमा हुआ तो गज़वा ए बद्र में शरीक होने वाला कोई सहाबी बाकी नहीं था, फिर दूसरा फितना यानी वाकिया हर्रा (यज़ीद के दौर में मदीना पर हमला हुआ) तो सुलह हुदैबिया में शरीक कोई सहाबी बाकी नहीं था, फिर तीसरा फितने रवानुमा हुआ तो वह ख़तम न हुआ जबकि लोगों में अक़ल न रही| (बुखारी)

رواه البخاری (4024)

जंगो का बयान — بَاب الْمَلَاحِم

पहली फस्ल — الْفَصْلُ الأول

١٠ ٥٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم قا ل: " لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَقْتَتِلَ فِئَتَانِ عَظِيمَتَانِ تَكُونُ بَيْنَهُمَا مَقْتَلَةٌ عَظِيمَةٌ دَعْوَاهُمَا وَاحِدَةٌ وَحَتَّى يبْعَث دجالون كذابون قريب مِنْ ثَلَاثِينَ كُلُّهُمْ يَزْعُمُ أَنَّهُ رَسُولُ اللَّهِ وَحَتَّى يُقْبَضَ الْعِلْمُ وَتَكْثُرَ الزَّلَازِلُ وَيَتَقَارَبَ الزَّمَانُ وَيظْهر الْفِتَنُ وَيَكْثُرَ الْهَرْجُ وَهُوَ الْقَتْلُ وَحَتَّى يَكْثُرَ فِيكُمُ الْمَالُ فَيَفِيضَ حَتَّى يُهِمَّ رَبَّ الْمَالِ مَنْ يَقْبَلُ صَدَقَتَهُ وَحَتَّى يَعْرِضَهُ فَيَقُولُ الَّذِي يعرضه عَلَيْهِ: لَا أَرَبَ لِي بِهِ وَحَتَّى يَتَطَاوَلَ النَّاسُ فِي الْبُنْيَانِ وَحَتَّى يَمُرَّ الرَّجُلُ بِقَبْرِ الرَّجُلِ فَيَقُولُ: يَا لَيْتَنِي مَكَانَهُ وَحَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ مَغْرِبِهَا فَإِذَا طَلَعَتْ وَرَآهَا النَّاسُ آمَنُوا أَجْمَعُونَ فَذَلِكَ حِينَ (لَا يَنْفَعُ نَفْسًا إِيمَانُهَا لَمْ تَكُنْ آمَنَتْ مِنْ قَبْلُ أَوْ

كَسَبَتْ فِي إِيمَانِهَا خَيْرًا)»» وَلَتَقُومَنَّ السَّاعَةُ وَقَدْ نَشَرَ الرَّجُلَانِ ثَوْبَهُمَا بَيْنَهُمَا فَلَا يَتَبَايَعَانِهِ وَلَا يَطْوِيَانِهِ وَلَتَقُومَنَّ السَّاعَةُ وَقَدِ انْصَرَفَ الرَّجُلُ بِلَبَنِ لِقْحَتِهِ فَلَا يَطْعَمُهُ وَلَتَقُومَنَّ السَّاعَةُ وَهُوَ يُلِيطُ حَوْضَهُ فَلَا يَسْقِي فِيهِ وَلَتَقُومَنَّ السَّاعَةُ وَقَدْ رَفَعَ أُكْلَتَهُ إِلَى فِيهِ فَلَا يطْعمهَا ". مُتَّفق عَلَيْهِ

5410. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कियामत काइम नहीं होगी हत्ता कि दो अज़ीम जमाअते किताल करेगी, उन के बिच में बड़ी क़त्ल व गारत होगी, और इन दोनों का दावा एक ही होगा, और तकरीबन तीस दज्जाल कज्ज़ाब भेजे जाएँगे, वह सब यही दावा करेंगे के वह अल्लाह के रसूल हैं, और इल्म उठा लिया जाएगा और ज़लज़ले कसरत से आएँगे, ज़माने (कियामत का वक़्त) करीब आ जाएगा, फितने ज़ाहिर होंगे, क़त्ल ज़्यादा होंगे, और तुम में माल की कसरत हो जाएगी और रेल पेल हो जाएगी, माल वाला ख़याल करेगा के उस का सदका कौन कबूल करेगा? और यहाँ तक के वह इसे किसी को देने की कोशिश करेगा तो वह शख्स, जिसे वह पेश कश करेगा, कहेगा मुझे उसकी ज़रूरत नहीं, और लोग बड़ी बड़ी इमारतों के मुतल्लिक बाहम फख्र करेंगे, एक आदमी दूसरे आदमी की कब्र के पास से गुज़रेगा तो कहेगा: काश के उसकी जगह में होता और सूरज मग़रिब से निकलेगा, जब वह (इस तरफ से) तुलुअ होगा और लोगों से देख लेंगे तो वह सब ईमान ले आएँगे लेकिन इस वक़्त किसी शख़्स का ईमान उस के लिए फ़ायदा मंद नहीं होगा जो उस से पहले ईमान दार न हो या उस ने अपने ईमान की हालत में अच्छे काम न किए हो, और कियामत इस तरह अचानक काइम होगी के दो आदमियों ने अपने दरमियान अपना कपड़ा फैला रखा होगा लेकिन वह न तो खरीद व फरोख्त कर सकेंगे और न इसे लपेट सकेंगे, और एक आदमी अपने ऊंटनी का दूध निकाल चूका होगा लेकिन वह इसे खा (पि) न सका होगा और कियामत काइम होगी के (एक शख़्स अपने हौज़ की लिपाई कर रहा होगा लेकिन वह उस से पि नहीं सकेगा, और कियामत काइम होगी के (एक आदमी) ने अपना लुकमा मुंह की तरफ उठा लिया होगा लेकिन वह इसे खा नहीं सकेगा”। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (7121) و مسلم (248 / 157)، (396 و 2340 و 7256 و 7302)

٥٤١١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تُقَاتِلُوا قَوْمًا [ص:١٤٩ نِعَالُهُمُ الشَّعْرُ وَحَتَّى تُقَاتِلُوا التُّرْكَ صِغَارَ الْأَعْيُنِ حُمْرَ الْوُجُوهِ ذُلْفَ الْأُنُوفِ كأَنَّ وجوهَهُم المجَانُّ المُطْرَقة» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5411. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कियामत काइम नहीं होगी हत्ता कि तुम एक ऐसी कौम के साथ किताल करोगे जिन के जूते बाल वाले (यानी चमड़े) के होंगे, और यहाँ तक की तुम तुर्कों से जंग करो जिन की आँखे छोटी होगी चेहरे सुर्ख होंगे नाक चपटी होगी और उन के चेहरे ऐसे होंगे जैसे तबत ढाल होती है”। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2928) و مسلم (62، 66 / 2912)، (7310 و 7311 و 7312 و 7313 و 7314)

٥٤١٢ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تُقَاتِلُوا خُوزًا وَكِرْمَانَ مِنَ الْأَعَاجِمِ حُمْرَ الْوُجُوهِ فُطْسَ الْأُنُوفِ صِغَارَ الْأَعْيُنِ وُجُوهُهُمُ الْمَجَانُّ الْمُطْرَقَةُ نِعَالُهُمُ الشّعْر» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

5412. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कियामत काइम नहीं होगी हत्ता कि तुम अज़मीओ में से खोज़ और करमन वालो से किताल करो, वह सुर्ख चेहरो वाले, चपटी नाक वाले और छोटी आंखो वाले होंगे, उन के चेहरे तबत ढाल जैसे होंगे और उन के जूते बाल वाले यानी (चमड़े के) होंगे”| (बुखारी)

رواه البخارى (3590)

٥٤١٣ - (لم تتمّ دراسته) وَفِي راوية لَهُ وَعَن عَمْرو بن تغلب: «عراض الْوُجُوه»

5413. और सहीह बुखारी ही में अम्र बिन ताग्लिब से मरवी रिवायत में है: “ चोड़े चेहरो वाले”| (बुखारी)

رواه البخارى (2927)

٥٤١٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يُقَاتِلَ الْمُسْلِمُونَ الْيَهُودَ فَيَقْتُلُهُمُ الْمُسْلِمُونَ حَتَّى يختبئ الْيَهُودِيُّ مِنْ وَرَاءِ الْحَجَرِ وَالشَّجَرِ فَيَقُولُ الْحَجَرُ وَالشَّجَرُ: يَا مُسْلِمُ يَا عَبْدَ اللَّهِ هَذَا يَهُودِيٌّ خَلْفِي فَتَعَالَ فَاقْتُلْهُ إِلَّا الْغَرْقَدَ فَإِنَّهُ من شجر الْيَهُود ". رَوَاهُ مُسلم

5414. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कियामत काइम नहीं होगी हत्ता कि मुसलमान यहूदियो से किताल करेंगे, मुसलमान उन्हें क़त्ल करेंगे इस वक़्त यहूदी पत्थर और दरख्त के पीछे छिपेगा तो वह पत्थर और दरख्त पुकार कर कहेगा: ए मुसलमान! अल्लाह के बन्दे! यह यहूदी मेरे पीछे है, आओ और इसे क़त्ल करो, अलबत्ता गरकद का दरख्त नहीं कहेगा, क्योंकि वह यहूदियों के दरख्तों में से है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (82 / 2922)، (7339)

٥٤١٥ - (مُتَّفقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَخْرُجَ رَجُلٌ مِنْ قَحْطَانَ يَسُوقُ النَّاسَ بعصاه» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5415. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कियामत काइम नहीं होगी हत्ता कि कहटान से एक आदमी निकलेगा वह लोगों को अपनी लाठी के साथ हांकेगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3517) ومسلم (60 / 2910)، (7308)

٥٤١٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَا تَذْهَبُ الْأَيَّامُ وَاللَّيَالِي حَتَّى يَمْلِكَ رَجُلٌ يُقَالُ لَهُ: الْجَهْجَاهُ ". وَفِي رِوَايَةٍ: " حَتَّى يَمْلِكَ رَجُلٌ مِنَ الْمَوَالِي يُقَالُ لَهُ: الجَهجاه ". رَوَاهُ مُسلم

5416. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दिन रात ख़तम नहीं होंगे (कियामत काइम नहीं होगी) हत्ता कि जह्जाह नामी शख़्स मालिक बन जाएगा”, एक दूसरी रिवायत में है: “हत्ता की आज़ाद करदा गुलामो में से जह्जाह नामी एक शख़्स मालिक बन जाएगा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (61 / 2911)، (7309)

٥٤١٧ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَتَفْتَحَنَّ عِصَابَةٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ كَنْزَ آلِ كِسْرَى الَّذِي فِي الْأَبْيَض» . رَوَاهُ مُسلم

5417. जाबिर बिन समुराह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “मुसलमानों की एक जमाअत आले कीसरा के खज़ाने पर कब्ज़ा कर लेगी जो के सफ़ेद महल में है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (78 / 2919)، (7331)

٥٤١٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هَلَكَ كِسْرَى فَلَا يَكُونُ كِسْرَى بَعْدَهُ وَقَيْصَرُ لِيَهْلِكَنَّ ثُمَّ لَا يَكُونُ قَيْصَرُ بَعْدَهُ وَلَتُقْسَمَنَّ كُنُوزُهُمَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ» وَسَمَّى «الْحَرْبُ خُدْعَةٌ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5418. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कीसरा हलाक हो जाएगा और उस के बाद कोई कीसरा नहीं होगा, कैसर हलाक हो जाएगा और उस के बाद कोई कैसर नहीं होगा, और इन दोनों के खज़ाने अल्लाह की राह में तकसीम किए जाएँगे”, और आप ﷺ ने लड़ाई का नाम धोका और फरेब रखा| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (30273028) و مسلم (76 / 2918)، (7327)

٥٤١٩ - (صَحِيح) وَعَنْ»» نَافِعِ بْنِ عُتْبَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَغْزُونَ جَزِيرَةَ الْعَرَبِ فَيَفْتَحُهَا اللَّهُ ثُمَّ فَارِسَ فَيَفْتَحُهَا اللَّهُ ثُمَّ تَغْزُونَ الرُّومَ فَيَفْتَحُهَا اللَّهُ ثُمَّ تَغْزُونَ الدَّجَّال فيفتحه الله» . رَوَاهُ مُسلم

5419. नाफेअ बिन उत्बा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तुम जज़ीरा अरब में जिहाद करोगे तो अल्लाह फतह अता करेगा, फिर फारस में जिहाद करोगे अल्लाह फतह अता करेगा, फिर तुम रोम पर हमला करोगे तो अल्लाह फतह अता फरमाएगा, फिर तुम दज्जाल से किताल करोगे तो अल्लाह फतह अता फरमाएगा"। (मुस्लिम)

رواه مسلم (38 / 2900)، (7284)

٥٤٢٠ - (صَحِيح) وَعَن»» عَوْف بن مَالك قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ وَهُوَ فِي قُبَّةٍ مِنْ أَدَمٍ فَقَالَ: " اعْدُدْ سِتًّا بَيْنَ يَدَيِ السَّاعَةِ: مَوْتِي ثُمَّ فَتْحُ بَيْتِ الْمَقْدِسِ ثُمَّ مُوتَانٌ يَأْخُذُ فِيكُمْ كَقُعَاصِ الْغَنَمِ ثُمَّ اسْتِفَاضَةُ الْمَالِ حَتَّى يُعْطَى الرَّجُلُ مِائَةَ دِينَارٍ فَيَظَلُّ سَاخِطًا ثُمَّ فِتْنَةٌ لَا يَبْقَى بَيْتٌ مِنَ الْعَرَبِ إِلَّا دَخَلَتْهُ ثُمَّ هُدْنَةٌ تَكُونُ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ بَنِي الْأَصْفَرِ فَيَغْدِرُونَ فَيَأْتُونَكُمْ تَحْتَ ثَمَانِينَ غَايَةً تَحْتَ كُلِّ غَايَةٍ اثْنَا عَشَرَ أَلْفًا ". رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

5420. ऑफ बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं गज़वा ए तबुक में नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ जबकि आप चमड़े के एक खैमे (तंबू) में थे आप ﷺ ने फ़रमाया: "कियामत से पहले छे अलामाते शुमार करो: मेरी वफात, फिर बैतूल मकदस की फतह, फिर एक वबा जो तुम में इस तरह फ़ैल जाएगी जिस तरह बकरियों में ताऊन की बीमारी फ़ैल जाती है, फिर माल की रेल पेल हत्ता कि आदमी को सौ दीनार दिए जाएँगे मगर वह फिर भी नाराज़ होगा, फिर एक ऐसा फितने बरपा (ज़ाहिर) होगा जो अरबो के तमाम घरो में दाखिल हो जाएगा, फिर तुम्हारे और रुमियो के दरमियान सुलह होगी, लेकिन वह दगाबाज़ी करें,गे वह इसी परचम तले तुम पर हमला करेंगे और हर झंडा तले बारह हज़ार लोग होंगे"। (बुखारी)

رواه البخارى (3176)

٥٤٢١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَنْزِلَ الرُّومُ بِالْأَعْمَاقِ أَوْ بِدَابِقَ فَيَخْرُجُ إِلَيْهِمْ جَيْشٌ مِنَ الْمَدِينَةِ مِنْ خِيَارِ أَهْلِ الْأَرْضِ يَوْمَئِذٍ فَإِذَا تَصَافُّوا قَالَتِ الرُّومُ: خَلُّوا بَيْنَنَا وَبَيْنَ الَّذِينَ سَبَوْا مِنَّا نُقَاتِلْهُمْ فَيَقُولُ الْمُسْلِمُونَ: لَا وَاللَّهِ لَا نُخَلِّي بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ إِخْوَانِنَا فَيُقَاتِلُونَهُمْ فَيَنْهَزِمُ ثُلُثٌ لَا يَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ أَبَدًا وَيُقْتَلُ ثُلُثُهُمْ أَفْضَلُ الشُّهَدَاءِ عِنْدَ اللَّهِ وَيَفْتَتِحُ الثُّلُثُ لَا يُفْتَنُونَ أَبَدًا فَيَفْتَتِحُونَ قسطنطينية فَبينا هُمْ يَقْتَسِمُونَ الْغَنَائِمَ قَدْ عَلَّقُوا سُيُوفَهُمْ بِالزَّيْتُونِ [ص:١٤٩ إِذْ صَاحَ فِيهِمُ الشَّيْطَانُ: إِنَّ الْمَسِيحَ قَدْ خَلَفَكُمْ فِي أَهْلِيكُمْ فَيَخْرُجُونَ وَذَلِكَ بَاطِلٌ فَإِذَا جاؤوا الشامَ خرجَ فَبينا هُمْ يُعِدُّونَ لِلْقِتَالِ يُسَوُّونَ الصُّفُوفَ إِذْ أُقِيمَتِ الصَّلَاة فَينزل عِيسَى بن مَرْيَمَ فَأَمَّهُمْ فَإِذَا رَآهُ عَدُوُّ اللَّهِ ذَابَ كَمَا يَذُوبُ الْمِلْحُ فِي الْمَاءِ فَلَوْ تَرَكَهُ لَانْذَابَ حَتَّى يَهْلِكَ وَلَكِنْ يَقْتُلُهُ اللَّهُ بِيَدِهِ فيريهم دَمه فِي حربته ". رَوَاهُ مُسلم

5421. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "कियामत काइम नहीं होगी हत्ता कि रूमी फ़ौजी अअमाक (मदीना के करीब जगह) या दाबिक के मक़ाम पर पड़ाव डालेगी, तो मदीना से इस वक़्त रुए ज़मीन के बेहतरीन लोगों पर मुश्तमिल एक लश्कर उनकी तरफ रवाना होगा, जब वह

सफ बंदी कर लेंगे तो रूमी कहेंगे, तुम हमारे और उन लोगों के दरमियान, जिन्होंने हमारे लोगों को कैदी बनाया था, रास्ता छोड़ दो, हम इनसे किताल करना चाहते है, मुसलमान कहेंगे, नहीं, अल्लाह की क़सम! हम तुम्हारे और अपने भाइयो के दरमियान राह खाली नहीं छोड़ेंगे, वह इनसे किताल करेंगे, वह तिहाई शिकस्त खा जाएँगे, अल्लाह उनकी कभी तौबा कबूल नहीं फरमाएगा, उनमें से तिहाई क़त्ल कर दिए जाएँगे वह अल्लाह के यहाँ आअला दरजे के शुहदा है, और तिहाई फताहियाब होंगे वह कभी आज़माए नहीं जाएँगे वह कुस्तुनतुनिया फतह करेंगे, वह माले गनीमत तकसीम कर रहे होंगे, और उन्होंने अपने तलवारे जैतून के दरख्त के साथ लटका दी होगी इसी दौरान शैतान उनमें ज़ोर दार आवाज़ से कहेगा के मसीह (दज्जाल) तुम्हारे अहल व अयाल में आ चूका है, वह निकलेंगे और यह बात बातिल होगी, जब वह शाम पहुंचेंगे तो वह निकल चूका होगा, इस असना में के वह किताल के लिए तय्यारी कर रहे होंगे, सफे दुरुस्त कर रहे होंगे के इतने में नमाज़ के लिए इकामत कही जाएगी तो इसा बिन मरियम अलैहिस्सलाम नुज़ूल फरमाइएगे, और वह उनकी इमामत कराएंगे, जब अल्लाह का दुश्मन (दज्जाल) उन्हें देखेगा तो वह इस तरह पिघल जाएगा जिस तरह नमक पानी में घुल जाता है, और अगर वह इसे छोड़ भी दें तो वह खुद ही गल सड़ कर हलाक हो जाएगा, लेकिन अल्लाह उन (इसा (अस)) के हाथो इसे क़त्ल कराएगा, वह अपने नेज़े पर उस का लगा हुआ खून दिखाएंगे"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (34 / 2897)، (7278)

٥٤٢٢ - (صَحِيح) وَعَنْ»» عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: إِنَّ الساعةَ لَا تقومُ حَتَّى لَا يُقْسَمَ ميراثٌ وَلَا يُفْرَحَ بِغَنِيمَةٍ. ثُمَّ قَالَ: عَدُوٌّ يَجْمَعُونَ لِأَهْلِ الشَّامِ وَيَجْمَعُ لَهُمْ أَهْلُ الْإِسْلَامِ (يَعْنِي الرّوم)»» فيتشرَّطُ الْمُسْلِمُونَ شُرْطَةً لِلْمَوْتِ لَا تَرْجِعُ إِلَّا غَالِبَةً فَيَقْتَتِلُونَ حَتَّى يَحْجِزَ بَيْنَهُمُ اللَّيْلُ فَيَفِيءُ هَؤُلَاءِ وَهَؤُلَاء كل غير غَالب وتفنى الشرطة ثمَّ يَتَشَرَّطُ الْمُسْلِمُونَ شُرْطَةً لِلْمَوْتِ لَا تَرْجِعُ إِلَّا غالبة فيقتتلون حت يَحْجِزَ بَيْنَهُمُ اللَّيْلُ فَيَفِيءُ هَؤُلَاءِ وَهَؤُلَاءِ كُلٌّ غير غَالب وتفنى الشرطة ثمَّ يشْتَرط الْمُسْلِمُونَ شُرْطَةً لِلْمَوْتِ لَا تَرْجِعُ إِلَّا غَالِبَةً فيقتتلون حَتَّى يُمْسُوا فَيَفِيءُ هَؤُلَاءِ وَهَؤُلَاءِ كُلٌّ غَيْرُ غَالِبٍ وَتَفْنَى الشُّرْطَةُ فَإِذَا كَانَ يَوْمُ الرَّابِعِ نَهَد إِليهم بقيةُ أهلِ الإِسلام فيجعلُ الله الدَبَرَةَ عَلَيْهِم فيقتتلون مَقْتَلَةً لَمْ يُرَ مِثْلُهَا حَتَّى إِنَّ الطَّائِرَ ليمر يجنابتهم فَلَا يُخَلِّفُهُمْ حَتَّى يَخِرَّ مَيِّتًا فَيَتَعَادَّ بَنُو الْأَبِ كَانُوا مِائَةً فَلَا يَجِدُونَهُ بَقِيَ مِنْهُمْ إِلَّا الرَّجُلُ الْوَاحِدُ فَبِأَيِّ غَنِيمَةٍ يُفْرَحُ أَوْ أيّ مِيرَاث يقسم؟ فَبينا هُمْ كَذَلِكَ إِذْ سَمِعُوا بِبَأْسٍ هُوَ أَكْبَرُ مِنْ ذَلِكَ فَجَاءَهُمُ الصَّرِيخُ: أَنَّ الدَّجَّالَ قَدْ خَلَفَهُمْ فِي ذَرَارِيِّهِمْ فَيَرْفُضُونَ مَا فِي أَيْدِيهِمْ وَيُقْبِلُونَ فَيَبْعَثُونَ عَشْرَ فَوَارِسَ طَلِيعَةً ". قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنِّي لَأَعْرِفُ أَسْمَاءَهُمْ وَأَسْمَاءَ آبَائِهِمْ وَأَلْوَانَ خُيُولِهِمْ هُمْ خَيْرُ فَوَارِسَ أَوْ مِنْ خَيْرِ فَوَارِسَ عَلَى ظَهْرِ الْأَرْض يَوْمئِذٍ» . رَوَاهُ مُسلم

5422. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि कियामत इस वक़्त तक काइम नहीं होगी जब तक मीरास तकसीम नहीं होगी, और माले गनीमत (की तकसीम) पर ख़ुशी महसूस नहीं होगी, फिर उन्होंने ने फ़रमाया: दुश्मन अहले शाम के लिए जमा होंगे जबकि अहले इस्लाम उन (रुमियों) के लिए जमा हो जाएँगे, मुसलमान एक दस्ते को मौत के लिए तैयार करेंगे और वह गलबा हासिल कर एक ही वापस आएँगे, वह किताल करेंगे हत्ता कि उन के दरमियान रात हाइल हो जाएगी, और दोनों तरफ की फ़ौजी गलबा हासिल किए बगैर वापस जाएगी और मुन्तखब दस्ते शहीद कर दिए जाएँगे फिर मुसलमान

एक दस्ते को मौत के लिए तैयार करेंगे और वह गलबा हासिल किए बगैर वापस नहीं आएँगे वह किताल करते रहेंगे हत्ता कि उन के मबिन रात आड़े जाएगी तो दोनों तरफ की फ़ौजी गलबा हासिल किए बगैर वापस आ जाएगी, और मुन्तखब दस्ते शहीद कर दिया जाएंगे, फिर वह मुसलमान (तीसरी मर्तबा) एक दस्ता मौत के लिए तैयार करेंगे वह गलबा हासिल कर के वापस आएँगे, वह किताल करते रहेंगे, हत्ता कि शाम हो जाएगी, और दोनों तरफ की फ़ौजी गलबा हासिल किए बगैर वापस जाएगी और मुन्तखब दस्ता शहीद कर दिया जाएगा, जब चोथा रोज़ होगा तो अहले इस्लाम के बाकी लोग इन के लिए उठ खड़े होंगे, तो अल्लाह उन (कुफ्फार) पर हार मुसल्लत कर देगा, वह खूब लड़ेंगे इस जैसी लड़ाई कभी न देखी गई होगी हत्ता कि अगर परिंदा उनकी तरफ से गुज़रना चाहेगा तो वह मुर्दा हालत में गिर पड़ेगा, एक बाप के बेटे लड़ाई से पहले गिने गए तो वह सौ थे, लेकिन लड़ाई के बाद वह उनमें से सिर्फ एक आदमी पाएंगे, तो किसी गनीमत पर ख़ुशी होगी, और कौन सी मीरास तकसीम की जाएगी? वह इसी असना में होंगे के वह अचानक एक लड़ाई के मुतल्लिक सुनेंगे जो के उस से भी बड़ी होगी, उन तक आवाज़ पहुंचेगी, दज्जाल उनकी औलाद में ज़ाहिर हो चूका है, उन के हाथो में जो कुछ होगा वह इसे फेंक देंगे, और इधर मुतवज्जे होंगे, वह खबर हासिल करने के लिए दस घुड़सवारों को भेजेंगे, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैं उन के और उन के आबाअ के नाम और उन के घोड़ो के रंग पहचानता हूँ और वह रुए ज़मीन पर बेहतरीन घुड़सवार होंगे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (37 / 2899)، (7281)

٥٤٢٣ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «هَلْ سَمِعْتُمْ بِمَدِينَةٍ جَانِبٌ مِنْهَا فِي الْبَرِّ وَجَانِبٌ مِنْهَا فِي الْبَحْرِ؟» قَالُوا: نَعَمْ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: " لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَغْزُوَهَا سَبْعُونَ أَلْفًا مِنْ بني إسحاق فَإِذا جاؤوها نَزَلُوا فَلَمْ يُقَاتِلُوا بِسِلَاحٍ وَلَمْ يَرْمُوا بِسَهْمٍ قَالَ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ فَيَسْقُطُ أحدُ جانبيها. - قالَ ثورُ بنُ يزِيد الرَّاوِي: لَا أَعْلَمُهُ إِلَّا قَالَ -: " الَّذِي فِي الْبَحْرِ يَقُولُونَ الثَّانِيَةَ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ فَيَسْقُطُ جَانِبُهَا الْآخَرُ ثُمَّ يَقُولُونَ الثَّالِثَةَ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ فَيُفَرَّجُ لَهُم فيدخلونها فيغنمون فَبينا هُمْ يَقْتَسِمُونَ الْمَغَانِمَ إِذْ جَاءَهُمُ الصَّرِيخُ فَقَالَ: إِنَّ الدَّجَّالَ قَدْ خَرَجَ فَيَتْرُكُونَ كُلَّ شَيْءٍ ويرجعون ". رَوَاهُ مُسلم

5423. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम ने एक ऐसे शहर के मुतल्लिक सुना है जिस की एक जानिब खुश्की है और एक तरफ समुन्दर है?” उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! जी हाँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: “कियामत काइम नहीं होगी हत्ता कि बनू इसहाक के सत्तर हज़ार लोग वहां जिहाद करेंगे, जब वह वहां पहुँच कर पड़ाव डालेंगे तो वह न तो अस्लिहा से लड़ेंगे और न तीर अन्दाज़ी करेंगे “ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ (अल्लाह के सिवा कोई माबूद बरहक नहीं अल्लाह सबसे बड़ा है) ” पढेंगे तो उसकी एक जानिब गिर पड़ेंगे”, सौरन बिन यज़ीद रावी बयान करते हैं, मैं नहीं जानता मगर हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु ने इस जानिब के मुतल्लिक फ़रमाया जो समुन्दर की तरफ है ’ फिर वह दूसरी मर्तबा : ’ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ (अल्लाह के सिवा कोई माबूद बरहक नहीं अल्लाह सबसे बड़ा है) ” पढेंगे तो उसकी दूसरी जानिब भी गिर पड़ेंगे, फिर वह तीसरी मर्तबा لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ (अल्लाह के सिवा कोई

माबूद बरहक नहीं अल्लाह सबसे बड़ा है) ” पढेंगे तो वह (शहर) इन के लिए खोल दिया जाएगा तो वह उस में दाखिल होंगे और माले गनीमत हासिल करेंगे, वह माले गनीमत तकसीम कर रहे होंगे के एक ज़ोर दार आवाज़ उन्हें सुनाई देगी के दज्जाल का जुहूर हो चूका ह, चुनांचे वह हर चीज़ छोड़ कर वापस आजाएँगे”। (मुस्लिम)

رواه مسلم (78 / 2920)، (7333)

بَاب الْمَلَاحِم • जंगो का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٥٤٢٤ - (حسن) عَنْ»» مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «عُمْرَانُ بَيْتِ الْمَقْدِسِ خَرَابُ يَثْرِبَ وَخَرَابُ يَثْرِبَ خُرُوجُ الْمَلْحَمَةِ وَخُرُوجُ الْمَلْحَمَةِ فَتْحُ قُسْطَنْطِينِيَّةَ وَفَتْحُ قُسْطَنْطِينِيَّةَ خُرُوجُ الدَّجَّال» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5424. मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "बैतूल मकदस की आबादी, यसरिब की बर्बादी के वक़्त होगी, और यसरिब की खराबी बड़ी जंग के वक़्त होगी, और बड़ी जंग फतह कुस्तुनतुनिया के वक़्त होगी, और कुस्तुनतुनिया की फतह दज्जाल के निकलने के वक़्त होगी"। (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (4294)

٥٤٢٥ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْهُ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «الملحمة الْعُظْمَى وَفتح القسطنطينة وَخُرُوجُ الدَّجَّالِ فِي سَبْعَةِ أَشْهُرٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد

5425. मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "बड़ी जंग कुस्तुनतुनिया की फतह और खुरुज दज्जाल सात माह में होगा"। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2238 وقال : حسن) و ابوداؤد (4295) [و ابن ماجه (4092)] * ابوبکر بن ابی مریم : ضعیف وکان قد سرق بیته فاختلط و شیخه مجهول و یزید بن قطیب مجھول الحال

٥٤٢٦ - (ضَعِيف) وَعَن»» عبد الله بن بُسر أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «بَيْنَ الْمَلْحَمَةِ وَفَتْحِ الْمَدِينَةِ سِتُّ سِنِينَ وَيَخْرُجُ الدَّجَّالُ فِي السَّابِعَةِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَقَالَ: هَذَا أصح

5426. अब्दुल्लाह बिन बूसर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जंगे अज़ीम और शहर की फतह के बिच में छे साल का वक्फा होगा जबकि दज्जाल का जुहूर सातवीं साल होगा"। अबू दावुद और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ज़्यादा सहीह है। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4296) [و ابن ماجه (4093)] * ابن ابی بلال لم یوثقه غیر ابن حبان

٥٤٢٧ - (صَحِيح) وَعَنِ»» ابْنِ عُمَرَ قَالَ: يُوشِكُ الْمُسْلِمُونَ أَنْ يُحَاصَرُوا إِلَى الْمَدِينَةِ [ص:١٤٩ حَتَّى يَكُونَ أَبْعَدَ مَسَالِحِهِمْ

سَلَاحٌ وَسَلَاحٌ: قَرِيبٌ مِنْ خَيْبَرَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5427. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, करीब है के मुसलमानों को मदीना तक महसूर कर दिया जाए हत्ता कि उनकी सबसे दूर वाली सरहद सलाह होगी और सलाह खैबर के करीब है| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (4250) [و الحاكم (4 / 511 ح 8560) و صححه على شرط مسلم و وافقه الذهبى و سنده حسن]

٥٤٢٨ - (صَحِيح) وَعَن»» ذِي مِخبَرٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " سَتُصَالِحُونَ الرُّومَ صُلْحًا آمِنًا فَتَغْزُونَ أَنْتُمْ وَهُمْ عَدُوًّا مِنْ وَرَائِكُمْ فَتُنْصَرُونَ وَتَغْنَمُونَ وَتَسْلَمُونَ ثُمَّ تَرْجِعُونَ حَتَّى تَنْزِلُوا بِمَرْجٍ ذِي تُلُولٍ فَيَرْفَعُ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ النَّصْرَانِيَّةِ الصَّلِيبَ»» فَيَقُولُ: غَلَبَ الصَّلِيبُ»» فَيَغْضَبُ رَجُلٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ فَيَدُقُّهُ فَعِنْدَ ذَلِكَ تَغْدِرُ الرُّومُ وَتَجْمَعُ لِلْمَلْحَمَةِ " وَزَادَ بَعْضُهُمْ: «فَيَثُورُ الْمُسْلِمُونَ إِلَى أَسْلِحَتِهِمْ فَيَقْتَتِلُونَ فيكرم الله تِلْكَ الْعِصَابَة بِالشَّهَادَةِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5428. ज़िमिख्बर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "अनकरीब तुम (मुसलमानों!) रुमियो से मुआयदा अमन करोगे, तुम और वह अपने पीछे एक दुश्मन से जंग करोगे, तुम्हारी मदद की जाएगी और तुम माले गनीमत हासिल करोगे और तुम सलामत रहोगे, फिर तुम वापस आओगे हत्ता कि तुम सर सब्ज़ टिलों वाली ज़मीन पर उतरोगे तो इसाइयों (रुमियों) में से एक शख़्स सलीब बुलंद करेगा और कहेगा सलीब ग़ालिब गई उस पर एक मुसलमान शख़्स गुस्से में आकर इस (सलीब) को तोड़ डालेगा इस वक़्त रूमी अहद तोड़ देंगे और वह जंग के लिए जमा होंगे", और बाज़ रावियो ने यह इज़ाफा नकल किया है: "तब मुसलमान अपने अस्लिहा की तरफ दोड़ेंगे और वह किताल करेंगे, अल्लाह इस जमाअत को शहादत के एजाज़ से नवाज़ेगा"| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (42924239)

٥٤٢٩ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «اتْرُكُوا الْحَبَشَةَ مَا تَرَكُوكُمْ فَإِنَّهُ لَا يَسْتَخْرِجُ كَنْزَ الْكَعْبَةِ إِلَّا ذُو السُّوَيْقَتَيْنِ مِنَ الْحَبَشَةِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5429. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "जब तक हब्शी तुम से हमला न करे तुम भी उन से हमला न करो क्योंकि काबा का खज़ाना बारीक़ पिंडलियों वाला हब्शी ही निकालेगा"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4309)

٥٤٣٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ رَجُلٌ»» مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «دَعُوا الْحَبَشَةَ مَا وَدَعُوكُمْ وَاتْرُكُوا التُّرْكَ مَا تَرَكُوكُمْ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيّ

5430. नबी ﷺ के एक सहाबी से रिवायत है, उन्होंने कहा:"तुम हब्शियों को छोड़े रखो जब तक वह तुम्हे छोड़े रखे और (इसी तरह) जब तक तुर्क तुम्हे छोड़े रखे तुम भी इन को छोड़े रखो। (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (4302) و النسائی (6 / 44 ح 3178 مطولاً)

٥٤٣١ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» بُرَيْدَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حَدِيثٍ: «يُقَاتِلُكُمْ قَوْمٌ صِغَارُ الْأَعْيُنِ» يَعْنِي التّرْك. قَالَ: «تسوقونهم ثَلَاث مَرَّات حَتَّى تلحقوهم بِجَزِيرَة الْعَرَب فَأَما السِّيَاقَةِ الْأُولَى فَيَنْجُو مَنْ هَرَبَ مِنْهُمْ وَأَمَّا الثَّانِيَة فينجو بعض وَيهْلك بعض وَأما الثَّالِثَةِ فَيُصْطَلَمُونَ» أَوْ كَمَا قَالَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5431. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से इस हदीस में रिवायत करते हैं, जिस में है: "छोटी आंखो वाले यानी तुर्क तुम से किताल करेंगे", फ़रमाया: "तुम तीन मर्तबा उन्हें धकेलोंगे हत्ता कि तुम उन्हें जज़ीरा अरब तक पहुंचा दोगे, पहली मर्तबा धकेलने के मौके, भाग जाने वाले बच जाएँगे, दूसरी मर्तबा बाज़ बच जाएँगे और बाज़ हलाक हो जाएँगे, जबकि तीसरी मर्तबा वह हलाक कर दिए जाएँगे, या जैसे आप ﷺ ने फ़रमाया। (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4305) * بشیر بن المهاجر و ثقه الجمهور

٥٤٣٢ - (إِسْنَاده جيد) وَعَن أبي بكرَة أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " يَنْزِلُ أُنَاسٌ مِنْ أُمَّتِي [ص:١٤٩] بِغَائِطٍ يُسَمُّونَهُ الْبَصْرَةَ عِنْدَ نَهْرٍ يُقَالُ لَهُ: دِجْلَةُ يَكُونُ عَلَيْهِ جِسْرٌ يَكْثُرُ أَهْلُهَا وَيَكُونُ مِنْ أَمْصَارِ الْمُسْلِمِينَ وَإِذَا كَانَ فِي آخِرِ الزَّمَانِ جَاءَ بَنُو قَنْطُورَاءَ عِرَاضُ الْوُجُوهِ صِغَارُ الْأَعْيُنِ حَتَّى يَنْزِلُوا عَلَى شَطِّ النَّهْرِ فَيَتَفَرَّقُ أَهْلُهَا ثَلَاثَ فِرَقٍ فِرْقَةٌ يَأْخُذُونَ فِي أَذْنَابِ الْبَقَرِ وَالْبَرِّيَّةِ وَهَلَكُوا وَفِرْقَةٌ يَأْخُذُونَ لِأَنْفُسِهِمْ وَهَلَكُوا وَفِرْقَةٌ يَجْعَلُونَ ذَرَارِيَّهُمْ خَلْفَ ظُهُورِهِمْ وَيُقَاتِلُونَهُمْ وَهُمُ الشُّهَدَاءُ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5432. अबू बकरह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मेरी उम्मत के कुछ लोग नहर के पास हम वार निचली ज़मीन पर पड़ाव डालेंगे जिसे वह बसरह के नाम से बोला करेंगे, और इस नहर को दजलह के नाम से याद किया जाएगा, उस पर एक पुल होगा, इस के रहने वाले बहोत होंगे, और वह मुसलमानों के शहरो में से होगा, और जब आखिरी दौर होगा तो बनू क्न्तुरा आएँगे, जो चोड़े चेहरो और छोटी आंखो वाले होंगे हत्ता कि वह नहर के किनारे पड़ाव डालेंगे और वह (बसरह वाले) तीन गिरोहों में तकसीम हो जाएँगे, एक गिरोह गाय की दुमे पकड़ लेगा और वह जंगलों में (खेती बाड़ी करेंगे), और वह

हलाक हो जाएँगे, एक गिरोह अपने जानो के लिए अमान हासिल कर लेंगे और वह भी हलाक हो जाएँगे और एक गिरोह अपने औलाद को अपने पुश्त के पीछे कर लेंगे और वह इनसे किताल करेंगे और यही शुहदा हैं”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4306)

٥٤٣٣ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَنَسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " يَا أَنَسُ إِنَّ النَّاسَ يمصِّرون أمصاراً فَإِن مِصْرًا مِنْهَا يُقَالُ لَهُ: الْبَصْرَةُ فَإِنْ أَنْتَ مَرَرْتَ بِهَا أَوْ دَخَلْتَهَا فَإِيَّاكَ وَسِبَاخَهَا وَكَلَأَهَا ونخيلها وَسُوقَهَا وَبَابَ أُمَرَائِهَا وَعَلَيْكَ بِضَوَاحِيهَا فَإِنَّهُ يَكُونُ بهَا خَسْفٌ وقذفٌ ورجْفٌ وقومٌ يبيتُونَ ويصبحون قردة وَخَنَازِير " رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

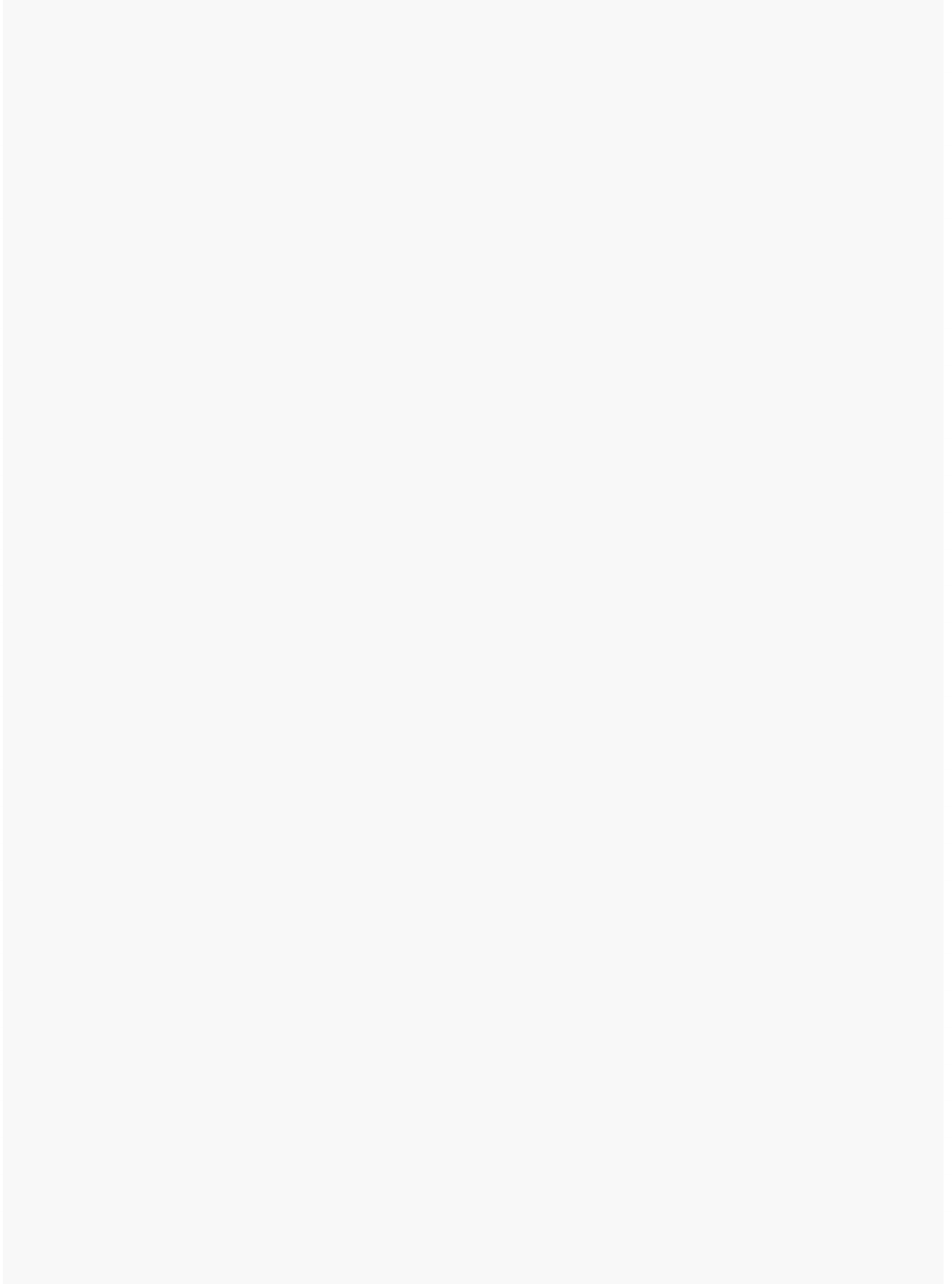
5433. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अनस! लोग शहर आबाद करेंगे और उनमें से एक शहर है जिसे बसरह कहा जाएगा, अगर तुम वहां से गुजरो या तुम वहां जाओ तो उसकी शोर वाली ज़मीन, घास वाली ज़मीन, उस के नखलिस्तान, उस के बाज़ारों और उस के हुक्मरानों के दरवाज़ो से बचते रहना (ज़िक्र की गई जगहों पर न जाना) , और तुम उस के अतराफ़ में रहना क्योंकि उस में ज़मीन का धसना होगा, आंधियां और ज़लज़ले आएँगे, वहां लोग रात को सोएंगे तो सुबह के वक़्त वह बंदर और खिंजिर बन जाएँगे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4307) * الراوی شک فی اتصاله فالسند معلل

٥٤٣٤ - (ضَعِيف) وَعَن»» صَالح بن دِرْهَم يَقُولُ: انْطَلَقْنَا حَاجِّينَ فَإِذَا رَجُلٌ فَقَالَ لَنَا: إِلَى جَنْبِكُمْ قَرْيَةٌ يُقَالُ لَهَا: الْأُبُلَّةُ؟ قُلْنَا: نَعَمْ. قَالَ: مَنْ يَضْمَنُ لِي مِنْكُمْ أَنْ يُصَلِّيَ لِي فِي مَسْجِدِ الْعَشَّارِ رَكْعَتَيْنِ أَوْ أَرْبَعًا وَيَقُولُ هَذِهِ لِأَبِي هُرَيْرَةَ؟ سَمِعْتُ خَلِيلِي أَبَا الْقَاسِمِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ يَبْعَثُ مِنْ مَسْجِدِ الْعَشَّارِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ شُهَدَاءَ لَا يَقُومُ مَعَ شُهَدَاءِ بَدْرٍ غَيْرُهُمْ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ. وَقَالَ: هَذَا الْمَسْجِدُ مِمَّا يَلِي النَّهْرَ»» وَسَنَذْكُرُ حَدِيثَ أَبِي الدَّرْدَاءِ: «إِنَّ فُسْطَاطَ الْمُسْلِمِينَ» فِي بَابِ: «ذِكْرِ الْيَمَنِ وَالشَّامِ» . إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى

5434. स्वालेह बिन दिरहम बयान करते हैं, हम हज के लिए रवाना हुए तो एक आदमी ने हमें कहा: तुम्हारे पास एक बस्ती है जिसे अबला कहा जाता है? हमने कहा: हाँ, उस ने कहा तुम में से कौन मुझे ज़मानत देता है के वह मेरी खातिर मस्जिद अशार में दो या चार रकते पढ़ेगा, और वह कहेगा के यह (रकअते) अबू हुरैरा के लिए है, मैंने अपने दोस्त अबुल कासिम ﷺ को फरमाते हुए सुना: “बेशक अल्लाह अज्ज़वजल रोज़ ए कियामत मस्जिद अशार से शुहदा उठाएगा, उन के अलावा शुहदाए बद्र के साथ कोई और खड़ा नहीं होगा”| अबू दावुद और उन्होंने ने फ़रमाया: यह मस्जिद नहर के किनारे वाकेअ है और हम अबू दरदा (र) से मरवी हदीस: “के मुसलमानों के खैमे ......” ذِكْرِ الْيَمَنِ وَالشَّامِ وَذِكْرِ أُوَيْسٍ الْقَرَنِيِّ (यमन और शाम और उवैसी करनी का ज़िक्र) मैं इनशाअल्लाह तआला ज़िक्र करेंगे. (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4308) * فيه ابراهيم بن صالح ضعفه الدارقطنى و الجمهور0 حديث ابى الدرداء تقدم (6272)



जंगो का बयान • بَاب الْمَلَاحِم

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٥٤٣٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن شَقِيق عَن حُذَيْفَة قَالَ: كُنَّا عِنْدَ عُمَرَ فَقَالَ: أَيُّكُمْ يَحْفَظُ حَدِيثِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْفِتْنَةِ؟ فَقُلْتُ: أَنَا أَحْفَظُ كَمَا قَالَ: قَالَ: هَاتِ إِنَّكَ لِجَرِيءٌ وَكَيْفَ؟ قَالَ: قُلْتُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ «فِتْنَةُ الرَّجُلِ فِي أَهْلِهِ وَمَالِهِ وَنَفْسِهِ وَوَلَدِهِ وَجَارِهِ يُكَفِّرُهَا الصِّيَامُ وَالصَّلَاةُ وَالصَّدَقَةُ وَالْأَمْرُ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّهْيُ عَنِ الْمُنْكَرِ» فَقَالَ عُمَرُ: لَيْسَ هَذَا أُرِيدُ إِنَّمَا أُرِيدُ الَّتِي تَمُوجُ كَمَوْجِ الْبَحْر. قَالَ: مَا لَكَ وَلَهَا يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ؟ إِنَّ بَيْنَكَ وَبَيْنَهَا بَابًا مُغْلَقًا. قَالَ: فَيُكْسَرُ الْبَابُ أويفتح؟ قَالَ: قُلْتُ: لَا بَلْ يُكْسَرُ. قَالَ: ذَاكَ أَحْرَى أَنْ لَا يُغْلَقَ أَبَدًا. قَالَ: فَقُلْنَا لحذيفة: هَل كَانَ عمر يعلم مَنِ البابُ؟ قَالَ: نَعَمْ كَمَا يَعْلَمُ أَنَّ دُونَ غَدٍ لَيْلَةٌ إِنِّي حَدَّثْتُهُ حَدِيثًا لَيْسَ بِالْأَغَالِيطِ قَالَ: فَهِبْنَا أَنْ نَسْأَلَ حُذَيْفَةَ مَنِ الْبَابُ؟ فَقُلْنَا لِمَسْرُوقٍ: سَلْهُ. فَسَأَلَهُ فَقَالَ: عُمَرُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5435. शकिक, हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, उन्होंने ने फ़रमाया: हम उमर रदियल्लाहु अन्हु के पास थे तो उन्होंने ने फ़रमाया: "तुम मैं रसूलुल्लाह ﷺ से फितने के मुतल्लिक मरवी हदीस कौन याद रखता है? मैंने कहा: में याद रखता हूँ, जिस तरह आप ﷺ ने फ़रमाया था, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: सुनाओ! तुम तो बड़े दिलेर हो, और आप ﷺ ने कैसे फ़रमाया था? मैंने कहा मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "आदमी के लिए उस के अहल व अयाल, उस का माल, उसकी जान, उसकी औलाद और उस का पड़ोसी फितना व आज़माइश है, जबकि रोज़ा, नमाज़, सदका और नेकी का हुक्म करना, बुराई से रोकना उस का कफ्फारा है", (इस पर) उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: मेरी यह मुराद नहीं थी, मेरी मुराद तो वह (फितने) है जो समुन्दर की मोजो की तरह आएगा, वह बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अमीरुल मोमिनीन! आप को उन से क्या सरोकार? क्योंकि उस के और आप के दरमियान बंद दरवाज़ा है, उन्होंने कहा: वह दरवाज़ा खोल दिया जाएगा या तोड़ दीया जाएगा? वह बयान करते हैं, मैंने कहा: नहीं, बल्कि वह तोड़ दीया जाएगा, उन्होंने ने फ़रमाया: फिर यह उस के ज़्यादा लायक है के वह कभी बंद न किया जाएगा, रावी बयान करते हैं, हमने हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु से पूछा क्या ऊमर रदियल्लाहु अन्हु इस दरवाज़े के मुतल्लिक जानते थे? उन्होंने कहा: हाँ, जैसे रात के बाद दिन आने का इल्म होता है, बेशक मैंने इसे हदीस बयान की जिस में कोई गलती व भ्रम नहीं, रावी बयान करते हैं, हमने खौफ की वजह से हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु से इस दरवाज़े के मुतल्लिक दरियाफ्त नहीं किया, हमने मसरुक से कहा के आप हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु से पूछे, उन्होंने उन से पूछा तो उन्होंने ने फ़रमाया: वह उमर है। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (7096) و مسلم (26 / 144)، (7268)

٥٤٣٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أنسٍ»» قَالَ: فَتْحُ القسطنطينة مَعَ قِيَامِ السَّاعَةِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ. وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

5436. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है उन्होंने ने फ़रमाया: कुस्तुनतुनिया की फतह कियामत के साथ (यानी क़रीब) होगी"। तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है। (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (2239) * وقال : محمود (بن غيلان) فيه :'' هذا حديث غريب ، و القسطنطينية هى مدينة الروم تفتح عند خروج الدجال ، و القسطنطينية قد فتحت فى زمان بعض اصحاب النبى صلى الله عليه و آله وسلم ''

بَاب أَشْرَاط السَّاعَة • अलामत ए क़यामत का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٥٤٣٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَنَسٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ مِنْ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ أَنْ يُرْفَعَ الْعِلْمُ وَيَكْثُرَ الْجَهْلُ وَيَكْثُرَ الزِّنا ويكثُرَ شُربُ الخمرِ ويقِلَّ الرِّجالُ وتكثُرَ النِّسَاءُ حَتَّى يَكُونَ لِخَمْسِينَ امْرَأَةً الْقَيِّمُ الْوَاحِدُ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «يَقِلُّ الْعِلْمُ وَيَظْهَرُ الْجَهْلُ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5437. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "अलामत ए कियामत में से है की इल्म उठ जाएगा, जहालत ज़्यादा हो जाएगी, ज़िना कसरत से होगा, शराब नौशी ज़्यादा हो जाएगी, मर्द कम हो जाएँगे और औरते ज़्यादा हो जाएगी हत्ता कि पचास औरतो के लिए एक मुन्तजिम (देखने वाला) होगा"। एक दूसरी रिवायत में है: "इल्म कम हो जाएगा और जहालत ग़ालिब जाएगी", (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (80) و مسلم (9 / 2671 و الرواية الثانية : 8 / 2671)، (6785 و 6786)

٥٤٣٨ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ بَيْنَ يَدَيِ السَّاعَةِ كَذَّابِينَ فَاحْذَرُوهُمْ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

5438. जाबिर बिन समुराह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ को फरमाते हुए सुना: "कियामत से पहले (नबी ﷺ की तरफ झूठी बाते मंसूब करने वाले) कज्ज़ाब होंगे तुम उन से मुहतात (सावधान) रहना"। (मुस्लिम)

رواه مسلم (10 / 1822)، (4711)

٥٤٣٩ - (صَحِيح) وَعَن أبي هريرةَ قَالَ: بَيْنَمَا كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُحَدِّثُ إِذْ جَاءَ أَعْرَابِيٌّ فَقَالَ: مَتَى السَّاعَةُ؟ قَالَ: «إِذَا ضُيِّعَتِ الْأَمَانَةُ فَانْتَظِرِ السَّاعَةَ» . قَالَ: كَيْفَ إِضَاعَتُهَا؟ قَالَ: «إِذَا وُسِّدَ الْأَمْرُ إِلَى غَيْرِ أَهْلِهِ فَانْتَظِرِ السَّاعَةَ» .

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

5439. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, इस असना में के नबी ﷺ गुफ्तगू फरमा रहे थे की अचानक एक आराबी आया तो उस ने अर्ज़ किया: कियामत कब आएगी? आप ﷺ ने फ़रमाया: "जब अमानत ज़ाए हो जाए तो फिर कियामत का इंतज़ार कर", उस ने अर्ज़ किया: उस का ज़ाए करना कैसे है? आप ﷺ ने फ़रमाया: "जब मुआमलात नाआह्ल (नालायक) लोगों के सुपुर्द कर दिए जाए तो फिर कियामत का इंतज़ार कर"| (बुखारी)

رواه البخارى (59)

٥٤٤٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَكْثُرَ الْمَالُ وَيَفِيضَ حَتَّى يُخْرِجَ الرَّجُلُ زَكَاةَ مَالِهِ فَلَا يَجِدُ أَحَدًا يَقْبَلُهَا مِنْهُ وَحَتَّى تَعُودَ أَرْضُ الْعَرَبِ مُرُوجًا وَأَنْهَارًا» رَوَاهُ مُسْلِمٌ. وَفِي رِوَايَة: قَالَ: «تبلغ المساكن إهَاب أَو يهاب»

5440. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "कियामत काइम नहीं होगी हत्ता कि माल ज़्यादा हो जाएगा और उसकी खूब रेल पेल होगी के आदमी अपने ज़कात का माल लेकर निकलेगा लेकिन इसे वुसुल करने वाला कोई नहीं मिलेगा और हत्ता कि सर ज़मीन अरब सरसब्ज़ व शादाब और बहती नहरों वाली वादी बन जाएगी"| मुस्लिम ही की एक दूसरी रिवायत में फ़रमाया: "मदीना की आबादी अहाब या यहाब तक पहोंच जाएगी", (मुस्लिम)

رواه مسلم (60 / 157 و الرواية الثانية 43 / 2903)، (2339 و 7290)

٥٤٤١ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَكُونُ فِي آخِرِ الزَّمَانِ خَلِيفَةٌ يُقَسِّمُ الْمَالَ وَلَا يَعُدُّهُ» . وَفِي رِوَايَةٍ: قَالَ: «يَكُونُ فِي آخِرِ أُمَّتِي خَلِيفَةٌ يَحْثِي الْمَالَ حَثْيًا وَلَا يَعُدُّهُ عَدًّا» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

5441. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "आखरी ज़माने में एक खलीफा होगा वह माल तकसीम करेगा और इसे गिनेगा नहीं ?" एक दूसरी रिवायत में है फ़रमाया: "मेरी उम्मत के आख़िर पर एक खलीफा होगा जो चुल्लू भर भर कर माल देगा और वह इसे गिन गिन कर नहीं देगा"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (69 / 2914 و الرواية الثانية 61 / 2913)، (7318 و 7317)

٥٤٤٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يُوشِكُ الْفُرَاتُ أَنْ يَحْسِرَ عَنْ كَنْزٍ مِنْ

ذَهَبٍ فَمَنْ حَضَرَ فَلَا يَأْخُذْ مِنْهُ شَيْئًا» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5442. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “करीब है के फरात अपने सोने के खज़ाने ज़ाहिर कर दे, इस वक़्त जो मौजूद हो वह उस से कुछ न ले”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (7119) و مسلم (30 / 2894)، (7274)

٥٤٤٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَحْسِرَ الْفُرَاتُ عَنْ جَبَلٍ مِنْ ذَهَبٍ يَقْتَتِلُ النَّاسُ عَلَيْهِ فَيُقْتَلُ مَنْ كُلِّ مِائَةٍ تِسْعَةٌ وَتِسْعُونَ وَيَقُولُ كُلُّ رَجُلٍ مِنْهُمْ: لَعَلِّي أَكُونُ أَنَا الَّذِي أنجُو ". رَوَاهُ مُسلم

5443. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कियामत काइम नहीं होगी हत्ता कि फरात से सोने का पहाड़ ज़ाहिर कर दिया जाएगा, लोग उस पर झगड़ेंगे तो हर सौ में से निन्यानवेक़त्ल कर दिए जाएँगे और उनमें से हर शख़्स कहेगा में उम्मीद करता हूँ कि वह निजात पाने वाला मैं हूँ”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (29 / 2894)، (7272)

٥٤٤٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " تَقِيءُ الْأَرْضُ أَفْلَاذَ كَبِدِهَا أَمْثَالَ الْأُسْطُوَانَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ فَيَجِيءُ الْقَاتِلُ فَيَقُولُ: فِي هَذَا قَتَلْتُ وَيَجِيءُ الْقَاطِعُ فَيَقُولُ: فِي هَذَا قَطَعْتُ رَحِمِي. وَيَجِيءُ السَّارِقُ فَيَقُولُ: فِي هَذَا قُطِعت يَدي ثمَّ يَد عونه فَلَا يَأْخُذُونَ من شَيْئا ". رَوَاهُ مُسلم

5444. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ज़मीन सोने चाँदी के सुतून की तरह अपने खज़ाने उगल देगी तो कातिल आएगा और (अफ़सोस के साथ) कहेगा, मैंने इस वजह से क़त्ल किया था, कतअ रहमी करने वाला आएगा तो वह कहेगा मैंने इस की खातिर अपने रिश्तेदारों से नाते तोड़े, चोर आएगा और कहेगा इस वजह से मेरा हाथ काट दिया गया, फिर वह इसे छोड़ जाएँगे और वह उस में से कुछ भी नहीं लेंगे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (62 / 1013)، (2341)

٥٤٤٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَا تَذْهَبُ الدُّنْيَا حَتَّى يَمُرَّ الرَّجُلُ عَلَى الْقَبْرِ فَيَتَمَرَّغُ عَلَيْهِ ويقولُ: يَا لَيْتَنِي مَكَانَ صَاحِبِ هَذَا الْقَبْرِ وَلَيْسَ بِهِ الدِّينُ إِلَّا الْبَلَاء ". رَوَاهُ مُسلم

5445. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! कियामत काइम नहीं होगी हत्ता कि आदमी कब्र के पास से गुजरेगा तो वह उस परलौट

पोट होगा (लौटेगा), और कहेगा काश के इस कब्र वाले की जगह में होता और वह यह बात दिन की वजह से नहीं बल्कि फ़ितनो और आजमाइशो की वजह से कहेगा"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (54 / 157)، (7302)

٥٤٤٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَخْرُجَ نَارٌ مِنْ أَرْضِ الْحِجَازِ تُضِيءُ أعناقَ الإبلِ ببُصْرى» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5446. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "कियामत काइम नहीं होगी हत्ता कि सर ज़मीन हज्जाज़ से आग निकलेगी और वह बसरा (शाम का एक शहर) में ऊटों की गर्दनो को रोशन कर देगी"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (7118) و مسلم (42 / 2902)، (7289)

٥٤٤٧ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَنَسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَوَّلُ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ نَارٌ تَحْشُرُ النَّاسَ مِنَ الْمَشْرِقِ إِلَى الْمَغْرِبِ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

5447. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अलामत ए कियामत में से पहली निशानिया आग है जो लोगों को मशरिक से मग़रिब की तरफ जमा कर देगी"| (बुखारी)

رواه البخارى (3329)

अलामत ए क़यामत का बयान • بَاب أَشْرَاط السَّاعَة

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٥٤٤٨ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَنسٍ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يتقاربَ الزَّمانُ فتكونُ السَّنةُ كالشهرِ والشَّهرُ كالجمعةِ وتكونُ الجمعةُ كاليومِ وَيَكُونُ الْيَوْمُ كَالسَّاعَةِ وَتَكُونُ السَّاعَةُ كَالضَّرْمَةِ بِالنَّارِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5448. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "कियामत काइम नहीं होगी हत्ता कि ज़माना करीब आ जाएगा तो साल महीने की तरह, महीने जुमे (सात दिन) की तरह जुमा (यानी हफ्ता) दिन की तरह, दिन घंटे की तरह और घंटे आग के लपटों की तरह होगा"| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (2332 وقال : غريب)

٥٤٤٩ - (ضَعِيف) وَعَن»» عبدِ الله بنِ حوالةَ قَالَ: بعثَنا رَسُول الله صلى اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِنَغْنَمَ عَلَى أَقْدَامِنَا فَرَجَعْنَا فَلَمْ نَغْنَمْ شَيْئًا وَعَرَفَ الْجَهْدَ فِي وجوهِنا فقامَ فِينَا فَقَالَ: «اللَّهُمَّ لَا تَكِلْهُمْ إِلَيَّ فَأَضْعُفَ عَنْهُمْ وَلَا تَكِلْهُمْ إِلَى أَنْفُسِهِمْ فَيَعْجِزُوا عَنْهَا وَلَا تَكِلْهُمْ إِلَى النَّاسِ فَيَسْتَأْثِرُوا عَلَيْهِمْ» ثُمَّ وَضَعَ يَدَهُ عَلَى رَأْسِي ثُمَّ قَالَ: «يَا ابْنَ حَوَالَةَ إِذَا رَأَيْتَ الْخِلَافَةَ قَدْ نَزَلَتِ الْأَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ فَقَدْ دَنَتِ الزَّلَازِلُ وَالْبَلَابِلُ وَالْأُمُورُ الْعِظَامُ وَالسَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ أَقْرَبُ مِنَ النَّاسِ مِنْ يَدِي هَذِه إِلَى رَأسك» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5449. अब्दुल्लाह बिन हवालत रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें माले गनीमत हासिल करने के लिए पैदल भेजा, हम माले गनीमत हासिल किए बगैर वापस आए और आप ने हमारे चेहरो पर मशक्कत के आसार देखे तो आप ﷺ हमें ख़िताब फरमाने के लिए खड़े हुए और दुआ फरमाई: “अल्लाह उन्हें मेरे सुपुर्द न कर में उन से ज़्यादा जईफ होऊंगा, उन्हें उनकी जानो के सुपुर्द न कर वह उन से आजिज़ आजाएँगे और उन्हें लोगों के हवाले न कर वह अपने आप को इन पर तरजीह देंगे”, और आप ﷺ ने अपना दस्ते मुबारक मेरे सर पर रखा और फ़रमाया: “इब्ने हवालत! जब तुम देखो के खिलाफत अर्जे मुक़द्दस (मुल्के शाम) मुन्तकिल हो गई है तो फिर (समझ लेना) ज़लज़ले, गम और अलामत ए कियामत करीब आ चुकी है, और इस वक़्त कियामत लोगों के इस क़दर करीब होगी जिस क़दर मेरा हाथ तेरे सर के करीब है”| अबू दावुद, और उसकी सनद हसन है| और हाकिम ने इसे अपने सहीह में रिवायत किया है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2535) [و صححه الحاکم (4 / 425) و وافقه الذهبی]

٥٤٥٠ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا اتُّخِذَ الْفَيْءُ دِوَلًا وَالْأَمَانَةُ مَغْنَمًا وَالزَّكَاةُ مَغْرَمًا وَتُعُلِّمَ لِغَيْرِ الدِّينِ وَأَطَاعَ الرَّجُلُ امْرَأَتَهُ وَعَقَّ أُمَّهُ وَأَدْنَى صَدِيقَهُ وَأَقْصَى أَبَاهُ وَظَهَرَتِ الْأَصْوَاتُ فِي الْمَسَاجِدِ وَسَادَ الْقَبِيلَةَ فَاسِقُهُمْ وَكَانَ زَعِيمُ الْقَوْمِ أَرْذَلَهُمْ وَأُكْرِمَ الرَّجُلُ مَخَافَةَ شَرِّهِ [ص: ١٥٠ وَظَهَرَتِ الْقَيْنَاتُ وَالْمَعَازِفُ وشُرِبتِ الخمورُ وَلَعَنَ آخِرُ هَذِهِ الْأُمَّةِ أَوَّلَهَا فارْتَقِبُوا عِنْدَ ذَلِكَ رِيحًا حَمْرَاءَ وَزَلْزَلَةً وَخَسْفًا وَمَسْخًا وَقَذْفًا وَآيَاتٍ تَتَابَعُ كَنِظَامٍ قُطِعَ سِلْكُهُ فَتَتَابَعَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5450. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब माल ए फै, माल ए गनीमत को दौलत, अमानत को माले गनीमत और ज़कात को तावुन समझा जाए, इल्मे दीन मकासिद के अलावा दुनियवी मकासिद के लिए हासिल किया जाए, आदमी अपने अहलिया का इताअत गुज़ार बन जाए और अपने वालिद की नाफ़रमानी करे, वह अपने दोस्त को मुकर्रब बनाए और अपने वालिद को दूर रखे, मसाजिद में आवाज़े बुलंद होने लगे, कबिले का सबसे ज़्यादा अहमक शख़्स कबिले का सरदार बन जाए, कौम का ज़िम्मेदार व मुन्तजिम (देखने वाला) उनका सबसे ज़्यादा रज़िल शख़्स हो, आदमी की उस के शर के खौफ की वजह से इज्ज़त की जाए, गाने वालियों और आलात ए मौसिकी आम हो जाए, शराब नौशी की जाए, और इस उम्मत के बाद वाले लोग अपने पहले लोगों (यानी सलफ) पर लान व तान करे तो इस वक़्त

तुम सुर्ख आँधियों, ज़लज़लो, ज़मीन में धंसने, चेहरो के मसख हो जाने, आसमान से पत्थर बरसने और दीगर निशानियो के इस तरह मुसलसल आने का इंतज़ार करो, जिस तरह हार की डोरी टूट जाए तो फिर मोती लगातार गिरते है"। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (2211 وقال : غريب) * فيه رميج : مجهول كما فى التقريب و الكاشف (1 / 243) وغيرهما

٥٤٥١ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ»» عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا فَعَلَتْ أُمَّتِي خَمْسَ عَشْرَةَ خَصْلَةً حَلَّ بِهَا الْبَلَاءُ» وَعَدَّ هَذِهِ الْخِصَالَ وَلَمْ يَذْكُرْ «تُعُلِّمَ لِغَيْرِ الدِّينِ» قَالَ: «وَبَرَّ صَدِيقَهُ وَجَفَا أَبَاهُ» وَقَالَ: «وَشُرِبَ الْخَمْرُ وَلُبِسَ الْحَرِيرُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

5451. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जब मेरी उम्मत पन्द्रह (बड़े) काम करेगी तो उस पर बला नाज़िल होगी, आप ने वह काम शुमार किए लेकिन अली रदियल्लाहु अन्हु ने यह ज़िक्र नहीं किया के "इल्मे दीन मकासिद के अलावा हासिल किया जाएगा", फ़रमाया: "अपने दोस्त से हुस्ने सुलूक करेगा और वालिद से जफा करेगा", और फ़रमाया: "शराब नौशी की जाए और रेशम पहना जाए"। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (2210) * فيه فرج بن فضالة : ضعيف

٥٤٥٢ - (حسن) وَعَنْ»» عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَذْهَبُ الدُّنْيَا حَتَّى يَمْلِكَ الْعَرَبَ رَجُلٌ مِنْ أهلِ بَيْتِي يُواطِىءُ اسمُه اسْمِي» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ. وَفِي رِوَايَةٍ لَهُ: «لَوْ لَمْ يَبْقَ مِنَ الدُّنْيَا إِلَّا يَوْمٌ لَطَوَّلَ اللَّهُ ذَلِكَ الْيَوْمَ حَتَّى يَبْعَثَ اللَّهُ فِيهِ رَجُلًا مِنِّي - أَوْ مِنْ أَهْلِ بَيْتِي - يُوَاطِئُ اسْمُهُ اسْمِيَ وَاسْمُ أَبِيهِ اسْمَ أَبِي يَمْلَأُ الْأَرْضَ قِسْطًا وَعَدْلًا كَمَا مُلِئَتْ ظُلْمًا وجورا»

5452. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "दुनिया ख़तम नहीं होगी हत्ता कि मेरे अहले बैत से मेरा हम नाम शख़्स अरबो का बादशाह बन जाएगा"। और अबू दावुद की रिवायत में है फ़रमाया: "अगर दुनिया का सिर्फ एक ही दिन बाकी रह गया तो अल्लाह इस दिन को लम्बा करेगा हत्ता कि अल्लाह उस में मेरे अहले बैत से एक आदमी भेजेगा जिस का नाम मेरे नाम जैसे और उस के वालिद का नाम मेरे वालिद के नाम जैसे होगा, वह ज़मीन को अदल व इंसाफ से भर देगा जिस तरह वह ज़ुल्म व सितम से भरी हुई थी"। (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (2230) و ابوداؤد (4282)

٥٤٥٣ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أُمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «الْمَهْدِيُّ مِنْ عِتْرَتِي مِنْ أَوْلَادِ فَاطِمَةَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5453. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “महदी मेरी अतरत फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा की औलाद से होगा”। (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4284)

٥٤٥٤ - (حسن) وَعَنْ»» أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْمَهْدِيُّ مِنِّي أجلى الْجَبْهَة وأقنى الْأَنْفِ يَمْلَأُ الْأَرْضَ قِسْطًا وَعَدْلًا كَمَا مُلِئَتْ ظُلْمًا وَجَوْرًا يَمْلِكُ سَبْعَ سِنِينَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5454. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “महदी मेरी औलाद से होंगे, जो के कुशादा पेशानी और बुलंद नाक वाले होंगे, वह ज़मीन को अदल व इंसाफ से भर देगा जिस तरह वह जुल्म व तुम से भरी हुई थी, वह सात साल हुकूमत करेगा”। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4285) * قتادة مدلس ، عنعن و للحديث شواهد ضعيفة

٥٤٥٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ»» عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي قِصَّةِ الْمَهْدِيِّ قَالَ: " فَيَجِيءُ إِلَيْهِ الرَّجُلُ [ص:١٥٠ فَيَقُولُ: يَا مَهْدِيُّ أَعْطِنِي أَعْطِنِي. قَالَ: فَيَحْثِي لَهُ فِي ثَوْبِهِ مَا اسْتَطَاعَ أَنْ يَحْمِلَهُ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5455. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु महदी के किस्से के बारे में नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “आदमी उस के पास आएगा तो वह कहेगा, महदी! मुझे अता करो, मुझे अता करो, फ़रमाया: वह उस के कपड़े को भर देंगे और वह शख़्स इसे उठाने से कासिर (असमर्थ) रहेगा”। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2232 وقال : حسن) [و ابن ماجه (4083)] * فيه زيد العمى : ضعيف

٥٤٥٦ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» أُمِّ سَلَمَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «يَكُونُ اخْتِلَافٌ عِنْدَ مَوْتِ خَلِيفَةٍ فَيَخْرُجُ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ هَارِبًا إِلى مكةَ فيأتيه الناسُ من أهل مَكَّة فيخرجوه وَهُوَ كَارِه فيبايعونه بَين الرُّكْن وَالْمقَام يبْعَث إِلَيْهِ بَعْثٌ مِنَ الشَّامِ فَيُخْسَفُ بِهِمْ بِالْبَيْدَاءِ بَيْنَ مَكَّةَ وَالْمَدِينَةِ فَإِذَا رَأَى النَّاسُ ذَلِكَ أَتَاهُ أَبْدَالُ الشَّامِ وَعَصَائِبُ أَهْلِ الْعِرَاقِ فَيُبَايِعُونَهُ ثُمَّ يَنْشَأُ رَجُلٌ مِنْ قُرَيْشٍ أَخْوَالُهُ كَلْبٌ فَيَبْعَثُ إِلَيْهِمْ بَعْثًا فَيَظْهَرُونَ عَلَيْهِمْ وَذَلِكَ بَعَثُ كلب وَيعْمل النَّاسِ بِسُنَّةِ نَبِيِّهِمْ وَيُلْقِي الْإِسْلَامُ بِجِرَانِهِ فِي الْأَرْضِ فَيَلْبَثُ سَبْعَ سِنِينَ ثُمَّ يُتَوَفَّى وَيُصَلِّي عَلَيْهِ الْمُسلمُونَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5456. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा नबी ﷺ से रिवायत करती हैं आप ﷺ ने फ़रमाया: “बादशाह की मौत के वक़्त इख्तिलाफ हो जाएगा, अहले मदीना से एक आदमी निकल कर मक्का की तरफ भाग खड़ा होगा, अहले मक्का से कुछ लोग उस के पास आएँगे तो वह इसे (इस के घर से) बाहर लाएँगे, वह नापसंद करता

होगा, लेकिन वह रुक्न (हजरे असवद) और मकामे इब्राहीम के दरमियान उसकी बैत करेंगे, शाम की तरफ से (इस से लड़ने के लिए) उसकी तरफ एक लश्कर रवाना किया जाएगा, लेकिन इस लश्कर को मक्का और मदीना के दरमियान मक़ाम बैदा पर धंसा दीया जाएगा, जब लोग यह सूरत ए हाल देखेंगे तो शाम के अब्दाल (इबादत गुज़ार) और ईराक के बेहतरीन शख़्स उस के पास आएँगे तो वह उसकी बैत कर लेंगे, फिर कुरैश से एक आदमी ज़ाहिर होगा जिसके ननिहाल कल्ब कबिले से होंगे वह (कलबी) उन (बैत करने वालो) की तरफ एक लश्कर भेजेंगे तो वह (बैत करने वाले) इन पर ग़ालिब आजाएँगे, और यह कल्ब का लश्कर होगा, और वह (महदी) उनमें नबी ﷺ की सुन्नत के मुताबिक अमल करेंगे, इस्लाम ज़मीन पर साबित व काइम हो जाएगा, वह सात साल रहेंगे फिर वफात पा जाएँगे और मुसलमान उनकी नमाज़े जनाज़ा पढेंगे”। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4286) * قتادة مدلس و عنعن

٥٤٥٧ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: ذَكَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «بَلَاءً يُصِيبُ هَذِهِ الْأُمَّةَ حَتَّى لَا يَجِدَ الرَّجُلُ مَلْجَأً يَلْجَأُ إِلَيْهِ مِنَ الظُّلْمِ فَيَبْعَثُ اللَّهُ رَجُلًا مِنْ عِتْرَتِي وَأَهْلِ بَيْتِي فَيَمْلَأُ بِهِ الْأَرْضَ قِسْطًا وَعَدْلًا كَمَا مُلِئَتْ ظُلْمًا وَجَوْرًا يَرْضَى عَنْهُ سَاكِنُ السَّمَاءِ وَسَاكِنُ الْأَرْضِ لَا تَدَعُ السَّمَاءُ مِنْ قَطْرِهَا شَيْئًا إِلَّا صَبَّتْهُ مِدْرَارًا وَلَا تَدَعُ الْأَرْضُ مِنْ نَبَاتِهَا شَيْئًا إِلَّا أَخْرَجَتْهُ حَتَّى يَتَمَنَّى الْأَحْيَاءُ الْأَمْوَاتَ يَعِيشُ فِي ذَلِكَ سبعَ سِنِين أَو ثمانَ سِنِين أَو تسع سِنِين» . رَوَاهُ

5457. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने एक बला का ज़िक्र किया जो इस उम्मत को पहुंचेगी, हत्ता कि कोई भी आदमी ज़ुल्म से कोई जाए पनाह नहीं पाएगा, अल्लाह मेरी औलाद और मेरे अहले बैत से एक आदमी मबउस फरमाएगा, और उस के ज़रिए ज़मीन को अदल व इंसाफ से फिर देगा, जिस तरह यह ज़ुल्म व सितम से भरी हुई थी, आसमान के रहने वाले और ज़मीन बासी उस से राज़ी हो जाएँगे, आसमान मुसलाधार बारिश बरसाएगा और ज़मीन अपने तमाम नबातात उगा देगी, हत्ता कि जिंदा लोग फौत शुदा लोग की जिंदगियों की ख्वाहिश करेंगे (के काश वह भी जिंदा होते) वह (महदी) इस हालत (अदल व इन्साफ) में सात आठ या नौ(9) साल जिंदा रहेंगे”। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الحاكم (4 / 465 و صححه فقال الذهبى : سنده مظلم) * عمر بن عبيد الله العدوى : لم اجد من وثقه غير الحاكم و فى السند علة أخرى

٥٤٥٨ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ»» عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يَخْرُجُ رَجُلٌ مِنْ وَرَاءِ النَّهْرِ يُقَالُ لَهُ: الْحَارِثُ حَرَّاثٌ عَلَى مُقَدِّمَتِهِ رَجُلٌ يُقَالُ لَهُ: مَنْصُورٌ يُوَطِّنُ أَوْ يُمَكِّنُ لِآلِ مُحَمَّدٍ كَمَا مَكَّنَتْ قُرَيْشٌ لِرَسُولِ اللَّهِ وَجَبَ عَلَى كُلِّ مُؤْمِنٍ نَصْرُهُ - أَوْ قَالَ: إِجَابَتُهُ - ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

5458. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “वराअ नाहर से हारिस नामी शख़्स का ज़ुहूर होगा, वह खेती करने वाला होगा, उस के अव्वल दस्ते पर मंसूर नामी शख़्स होगा, वह

आले मुहम्मद ﷺ को जगह और इख़्तिया व इक्दार देगा, जिस तरह कुरैश ने रसूलुल्लाह ﷺ को इक्तेदा व इख़्तियार दिया, उसकी मदद करने या उसकी बात मानना हर मोमिन पर वाजिब है”। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (2 / 4290) * فيه ابو الحسن الكوفى و هلال بن عمرو : مجهولان

٥٤٥٩ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تُكَلِّمَ السِّبَاعُ الْإِنْسَ وَحَتَّى تُكَلِّمَ الرَّجُلَ عَذَبَةُ سَوْطِهِ وَشِرَاكُ نَعْلِهِ وَيُخْبِرَهُ فَخِذُهُ بِمَا أَحْدَثَ أَهْلُهُ بَعْدَهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5459. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! कियामत काइम नहीं होगी हत्ता कि दरिन्दे इंसानों से कलाम करेंगे, और हत्ता कि बंदे से उस के कोड़े का सर और उस के जूते का तस्मिया कलाम करेगा और उसकी रान उस को इस काम के मुतल्लिक बताएगी जो उस के बाद उस के अहल ने किया होगा”। (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذى (2281 وقال : حسن صحيح غريب)

अलामत ए क़यामत का बयान • بَاب أَشْرَاط السَّاعَة

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٥٤٦٠ - (ضَعِيف) عَنْ»» أَبِي قَتَادَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الْآيَاتُ بَعْدَ الْمِائَتَيْنِ ". رَوَاهُ ابْن مَاجَه

5460. अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अलामत (ए कियामत) दो सौ साल के बाद होगी”। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (4057) * عون : ضعيف وقال الذهبى :’’ احسبه موضوعًا و عون ضعفوه ‘‘

٥٤٦١ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» ثَوْبَانَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا رَأَيْتُمُ الرَّايَاتِ السُّودَ قَدْ جَاءَتْ مِنْ قِبَلِ خُرَاسَانَ فَأْتُوهَا فَإِنَّ فِيهَا خَلِيفَةَ اللَّهِ الْمَهْدِيَّ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي «دَلَائِل النبوَّة»

5461. सौबान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम खुरासान की तरफ से सियाह झंडे आते देखो तो उनका इस्तकबाल करो, क्योंकि उनमें अल्लाह का खलीफा महदी होगा”। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (5 / 277 ح 22746) و البيهقى فى دلائل النبوة (6 / 516) * فيه على بن زيد بن جدعان ضعيف ، و علة أخرى وقال ثوبان رضى الله عنه :'' اذا رايتم الرايات السود خرجت من قبل خراسان فآتوها فان فيها خليفة الله المهدى '' رواه الحاكم (4 / 502 ح 8531) و صححه على شرط الشيخين و سنده حسن لذاته و رواه البيهقى فى دلائل النبوة (6 / 516)

٥٤٦٢ - (ضَعِيف) وَعَن»» أَبِي إِسحاق قَالَ: قَالَ عَلِيٌّ وَنَظَرَ إِلَى ابْنِهِ الْحَسَنِ قَالَ: إِنَّ ابْنِي هَذَا سَيِّدٌ كَمَا سَمَّاهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَسَيَخْرُجُ مِنْ صُلْبِهِ رَجُلٌ يُسَمَّى بِاسْمِ نَبِيِّكُمْ يُشْبِهُهُ فِي الْخَلْقِ - ثُمَّ ذَكَرَ قِصَّةً - يَمْلَأُ الْأَرْضَ عَدْلًا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَلَمْ يَذْكُرِ الْقِصَّةَ

5462. अबू इसहाक बयान करते हैं, अली रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया और उन्होंने अपने बेटे हसन रदियल्लाहु अन्हु की तरफ देखा तो फ़रमाया: बेशक मेरा यह बेटा सय्यिद है, जिस तरह रसूलुल्लाह ﷺ ने उस का नाम रखा, और अनकरीब उसकी सलब से एक आदमी निकलेगा उस का नाम तुम्हारे नबी के नाम पर होगा, वह अख़लाक व सीरत में उन के मुशाबह (अनुरूप) होगा, और वह नक्शे और कद व कामत में उन के मुशाबह (अनुरूप) नहीं होगा, फिर किस्सा ज़िक्र किया के वह ज़मीन को अदल से फिर देगा"| अबू दावुद, और उन्होंने किस्सा ज़िक्र नहीं किया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1 / 4290) * ابوداود لم يدرک هارون بن المغيرة فالسند منقطع و ابو اسحاق مدلس و عنعن ولم يسمعه من على رضى الله عنه

٥٤٦٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرِ»» بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: فُقِدَ الْجَرَادُ فِي سَنَةٍ مِنْ سِنِي عُمَرَ الَّتِي تُوُفِّيَ فِيهَا فَاهْتَمَّ بِذَلِكَ هَمًّا شَدِيدًا فَبَعَثَ إِلَى الْيمن رَاكِبًا وراكبا إِلَى الْعرق وَرَاكِبًا إِلَى الشَّامِ يَسْأَلُ عَنِ الْجَرَادِ هَلْ أُرِيَ مِنْهُ شَيْئًا فَأَتَاهُ الرَّاكِبُ الَّذِي مِنْ قبل الْيمن بقبضة فنثرهابين يَدَيْهِ»» فَلَمَّا رَآهَا عُمَرُ كَبَّرَ»» وَقَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: إِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ خَلَقَ أَلْفَ أُمَّةٍ سِتُّمِائَةٍ مِنْهَا فِي الْبَحْرِ وَأَرْبَعُمِائَةٍ فِي الْبَرِّ فَإِنَّ أَوَّلَ هَلَاكِ هَذِهِ الْأُمَّةِ الْجَرَادُ فَإِذَا هَلَكَ الْجَرَادُ تَتَابَعَتِ الْأُمَمُ كَنِظَامِ السِّلْكِ «. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي» شُعَبِ الْإِيمَانِ "

5463. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, उमर रदियल्लाहु अन्हु के दौरे खिलाफत के इस साल जिस साल उमर रदियल्लाहु अन्हु ने वफात पाई, टिड्डी मअदम (गायब) हो गई तो उस से वह बहोत ग़मगीन हो गए, उन्होंने एक सवार यमन की तरफ, एक इराक की तरफ और एक सवार शाम की तरफ भेजा ताकि वह टिड्डी के मुतल्लिक दरियाफ्त करे के आया वह कहीं नज़र आई है, यमन की तरफ से सवार मुठ्ठी में तिद्दिया लेकर आया और उन्हें आप उमर रदियल्लाहु अन्हु के सामने फैला दीया, जब उन्होंने उन्हें देखा तो (ख़ुशी से) नारा ए तकबीर बुलंद किया, और फ़रमाया मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "बेशक अल्लाह अज्ज़वजल ने हज़ार किस्म के हैवान पैदा फरमाए, उनमें से छेस्सो समुन्दर में है, और चार सौ खुश्की में और उनमें से सबसे पहले तिद्दिया हलाक होगी, जब तिद्दिया हलाक हो जाएगी तो उस के बाद हार की डोरी टूटने के बाद मोतियों के गिरने की तरह बाकी उम्मते (इक्साम) हलाक होगी"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (1013210133 ، نسخة محققة : 96599660) * فيه عيسى بن شبيب وهو محمد بن عيسى الهلالى العبدى : ضعيف جدًا ضعفه الجمهور و الراوى عنه شيخ وهو عبيد بن واقد القيسى : ضعيف

بَابُ الْعَلَامَاتِ بَيْنَ يَدَيِ السَّاعَةِ وَذِكْرِ الدَّجَّالِ • कबले कियामत के अलामत और दज्जाल का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٥٤٦٤ - (صَحِيح) عَن حذيفةَ بن أسيد الْغِفَارِيّ قَالَ: اطَّلَعَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَيْنَا وَنَحْنُ نَتَذَاكَرُ. فَقَالَ: «مَا تَذْكُرُونَ؟» . قَالُوا: نَذْكُرُ السَّاعَةَ. قَالَ: " إِنَّهَا لَنْ تَقُومَ حَتَّى تَرَوْا قَبْلَهَا عَشْرَ آيَاتٍ فَذَكَرَ الدُّخَانَ وَالدَّجَّالَ وَالدَّابَّةَ وَطُلُوعَ الشَّمْسِ مِنْ مَغْرِبِهَا وَنُزُولَ عِيسَى بْنِ مَرْيَمَ وَيَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ وَثَلَاثَةَ خُسُوفٍ: خَسْفٌ بِالْمَشْرِقِ وَخَسْفٌ بِالْمَغْرِبِ وَخَسْفٌ بِجَزِيرَةِ الْعَرَبِ وَآخِرُ ذَلِكَ نَارٌ تَخْرُجُ مِنَ الْيَمَنِ تَطْرُدُ النَّاسَ إِلَى مَحْشَرِهِمْ ". وَفِي رِوَايَةٍ: «نَارٌ تَخْرُجُ مِنْ قَعْرِ عَدَنَ تَسُوقُ النَّاسَ إِلَى الْمَحْشَرِ» . وَفِي رِوَايَةٍ فِي الْعَاشِرَةِ «وَرِيحٌ تُلْقِي النَّاسَ فِي الْبَحْرِ» . رَوَاهُ مُسلم

5464. हुज़ैफ़ा बिन असिदी गफ्फारी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ हमारे पास तशरीफ़ लाए तो हम आपस में बात चित कर रहे थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुम क्या बाते कर रहे हो?" उन्होंने अर्ज़ किया: हम कियामत का तज़किरह कर रहे हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "वो काइम नहीं होगी हत्ता कि तुम उस से पहले दस निशानिया देख लो, आप ﷺ ने धुंए, दज्जाल, जानवर के निकलने, सूरज के मग़रिब से तुलुअ होने, इसा बिन मरियम अलैहिस्सलाम के तशरीफ़ लाने, याजूज माजूज के निकलने, तीन बार ज़मीन के धंसने, एक बार मशरिक में एक बार मग़रिब में और एक बार जज़ीरा अरब में धंसने का ज़िक्र फ़रमाया और उन (दस) में से आखिरी निशानी का ज़िक्र फ़रमाया के आग यमन की तरफ से निकलेगी वह लोगों को उन के हशर के मैदान की तरफ हांक कर ले जाएगी"| और एक रिवायत में है: "अदन के आखिरी किनारे से आग ज़ाहिर होगी, वह लोगों को हशर के मैदान की तरफ हांकेगी"| और दूसरी रिवायत में दसवी निशानी के मुतल्लिक है " वह हवा होगी जो लोगों को समुन्दर में फेंक देगी"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (39 / 2901 ، 40 / 2901)، (7285 و 7286)

٥٤٦٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «بَادِرُوا بِالْأَعْمَالِ سِتًّا. الدُّخَانَ وَالدَّجَّالَ وَدَابَّةَ الْأَرْضِ وَطُلُوعَ الشَّمْسِ مِنْ مَغْرِبِهَا وَأَمْرَ الْعَامَّةِ وَخُوَيْصَّةَ أَحَدِكُمْ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

5465. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "नेक आमाल करने में जल्दी करो (अलामाते कियामत के जुहूर से पहले जो के) छे है धुवा, दज्जाल, ज़मीन का जानवर और सूरज का मग़रिब से तुलुअ होना निज़ वह आम फितने (मौत) जो आम लोगों को हलाक कर देगा और खास फितने जो तुम्हारे खास को फ़ना (नष्ट) कर देगा"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (129 / 2947)، (7397)

٥٤٦٦ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ أَوَّلَ الْآيَاتِ خُرُوجًا طُلُوعُ الشَّمْسِ مِنْ مَغْرِبِهَا وَخُرُوجُ الدَّابَّةِ عَلَى النَّاسِ ضُحًى وَأَيُّهُمَا مَا كَانَتْ قَبْلَ صَاحِبَتِهَا فَالْأُخْرَى على أَثَرِهَا قَرِيبا» رَوَاهُ مُسلم

5466. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “अलामत ए कियामत में से पहली (सीमाई (आसमानी)) अलामत सूरज का मग़रिब से तुलुअ होना है, और चाश्त के वक़्त दाब (हेवान(जानवर)) का लोगों के सामने निकलना है, इन दोनों में से जो भी अपने साथ वाले से पहले निकल आया तो दूसरा उस के पीछे करीब है”। (मुस्लिम)

رواه مسلم (118 / 2941)، (7383)

٥٤٦٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «ثَلَاثٌ إِذَا خَرَجْنَ (لَا يَنْفَعُ نَفْسًا إِيمَانُهَا لَمْ تَكُنْ آمَنَتْ مِنْ قَبْلُ أَوْ كَسَبَتْ فِي إِيمَانِهَا خَيْرًا)»» طُلُوعُ الشَّمْسِ مِنْ مَغْرِبِهَا وَالدَّجَّالُ وَدَابَّةُ الْأَرْضِ» . رَوَاهُ مُسلم

5467. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तीन निशानिया, जब उनका जुहूर हो जाएगा तो, “ इस वक़्त किसी शख़्स का ईमान लाना उस के लिए नफ़ामंद नहीं होगा बशर्तेकी वह उस से पहले ईमान न लाया हो या उस ने हालते ईमान में नेक काम न किए हो”, सूरज का मग़रिब से तुलुअ होना, दज्जाल और ज़मीन में से जानवर का निकलना”। (मुस्लिम)

رواه مسلم (249 / 158)، (398)

٥٤٦٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ غربت الشَّمْس: «أَيْن تذْهب؟» . قُلْتُ: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: " فَإِنَّهَا تَذْهَبُ حَتَّى تَسْجُدَ تَحْتَ الْعَرْشِ فَتَسْتَأْذِنُ فَيُؤْذَنُ لَهَا وَيُوشِكُ أَنْ تَسْجُدَ وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا وَتَسْتَأْذِنُ فَلَا يُؤْذَنُ لَهَا وَيُقَالُ لَهَا: ارْجِعِي مِنْ حَيْثُ جِئْتِ فَتَطْلُعُ مِنْ مَغْرِبِهَا فَذَلِكَ قَوْلُهُ تَعَالَى " (والشمسُ تجْرِي لمستقرّ لَهَا)»» قَالَ: «مستقرها تَحت الْعَرْش» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5468. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “क्या तुम जानते हो के सूरज गुरूब होने के बाद कहाँ जाता है?” मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो जाता है हत्ता कि अर्श के नीचे सजदाह रेज़ हो कर (मशरिक से तुलुअ होने की) इजाज़त तलब करता है, इसे इजाज़त दे दि जाती है, और करीब है के वह सजदाह करे और वह उस से कबूल न किया जाए, वह इजाज़त तलब करे और इसे इजाज़त न दि जाए, और इसे कहा जाए, जहाँ से आए हो वहीँ चले जाओ, वह मग़रिब से तुलुअ होगा, और यह अल्लाह तआला का फरमान है“, सूरज अपने करार गाह की तरफ चल रहा है”, फ़रमाया: “उस की करार गाह अर्श के नीचे है”। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3199) و مسلم (251 ، 250 / 159)، (401 و 402 و 399)

٥٤٦٩ - (صَحِيح) وَعَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَا بَيْنَ خَلْقِ آدَمَ إِلَى قِيَامِ السَّاعَةِ أَمْرٌ أكبر من الدَّجَّال» . رَوَاهُ مُسلم

5469. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “आदम अलैहिस्सलाम की तखलीक और कयामे कियामत के दरमियान दज्जाल से बढ़कर कोई फितना नहीं”। (मुस्लिम)

رواه مسلم (127 ، 126 / 2946)، (7395 و 7396)

٥٤٧٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن عَبْدُ اللَّهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْفَى عَلَيْكُمْ إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى لَيْسَ بِأَعْوَرَ وَإِنَّ الْمَسِيحَ الدَّجَّالَ أَعْوَرُ عَيْنِ الْيُمْنَى كَأَنَّ عَيْنَهُ عنبة طافية» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5470. अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक अल्लाह तुम पर छुपा नहीं, बिला शुबा अल्लाह तआला काना नहीं, जबकि मसीह दज्जाल की दाएँ आँख कानी होगी, गोया उसकी आँख ऐसी होगी के अंगूर का उठा हुआ दाना हो”। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (7407) و مسلم (100 / 169)، (7361)

٥٤٧١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَا مِنْ نَبِيٍّ إِلَّا أَنْذَرَ أُمَّتَهُ الْأَعْوَرَ الْكَذَّابَ أَلَا إِنَّهُ أَعْوَرُ وَإِنَّ رَبَّكُمْ لَيْسَ بِأَعْوَرَ مَكْتُوبٌ بَيْنَ عَيْنَيْهِ: ك ف ر ". مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5471. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हर नबी ने अपनी उम्मत को काने कज़्ज़ाब (दज्जाल) से डराया और आगाह फ़रमाया: सुन लो! वह काना है, जबकि तुम्हारा रब काना नहीं, और उसकी दोनों आंखों के दरमियान. ك - ف - ر (काफिर) लिखा हुआ होगा”। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (7131) و مسلم (101 / 2933)، (7363)

٥٤٧٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِلَّا أحدثكُم حَدِيثا عَن الدَّجَّال ماحدث بِهِ نبيٌّ قومَه؟ : إِنَّه أعوَرُ وإِنَّه يَجِيءُ مَعَهُ بِمِثْلِ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ فَالَّتِي [ص:١٥٠ يَقُولُ: إِنَّهَا الْجَنَّةُ هِيَ النَّارُ وَإِنِّي أُنْذِرُكُمْ كَمَا أنذر بِهِ نوح قومه ". مُتَّفق عَلَيْهِ

5472. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सुनो में दज्जाल के मुतल्लिक तुम्हें एक बात बताता हूँ जो किसी नबी ने अपनी कौम को बयान नहीं की के वह (दज्जाल) काना होगा, वह आएगा तो उस के साथ जन्नत के मिसल होगी और आग के मिसल होगी, वह जिसके मुतल्लिक

यह कहेगा कि यह जन्नत है तो वह आग होगी और मैं तुम्हें इस (के फितने) से इसी तरह डराता हूँ, जिस तरह नुह अलैहिस्सलाम ने उस के मुतल्लिक अपनी कौम को डराया था"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3338) و مسلم (109 / 2936)، (7372)

٥٤٧٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ حُذَيْفَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ الدَّجَّالَ يَخْرُجُ وَإِنَّ مَعَهُ مَاءً وَنَارًا فَأَمَّا الَّذِي يَرَاهُ النَّاسُ مَاءً فَنَارٌ تَحْرِقُ وَأَمَّا الَّذِي يَرَاهُ النَّاسُ نَارًا فَمَاءٌ بَارِدٌ عَذْبٌ فَمَنْ أَدْرَكَ ذَلِكَ مِنْكُمْ فَلْيَقَعْ فِي الَّذِي يَرَاهُ نَارًا فَإِنَّهُ مَاءٌ عَذْبٌ طَيِّبٌ» . مُتَّفق عَلَيْهِ. وَزَاد مُسلم: «إِن الدجالَ ممسوحُ العينِ عَلَيْهَا ظفرةٌ غليظةٌ مَكْتُوب بَين عَيْنَيْهِ كَافِر يَقْرَؤُهُ كل مُؤمن كاتبٌ وَغير كَاتب»

5473. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "बेशक दज्जाल का जुहूर होगा और उस के साथ पानी और आग होगी, जिसे लोग पानी समझेंगे वह आग होगी, वह जलाए गी, और जिसे लोग आग समझेंगे वह ठंडा शिरीन पानी होगा, तुम में से जो ऐसी सूरत देखे तो वह इस चीज़ में वाकेअ हो जिसे वह आग समझता हो, क्योंकि वह तो शिरीन खुशगवार पानी है"| और इमाम मुस्लिम ने यह अल्फाज़ नकल किए है: "बेशक दज्जाल की एक आँख नहीं होगी, उसकी (आँख) पर मोटा नाख़ून होगा और उसकी दोनों आंखो के दरमियान काफ़िर लिखा होगा, और इसे हर मोमिन पढ़ो लेगा ख्वाह लिखना पढ़ना जानता हो या न जानता हो"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (7131) و مسلم (102105 / 2934)، (7367 و 7368)

٥٤٧٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الدَّجَّالُ أَعْوَرُ الْعَيْنِ الْيُسْرَى جُفَالُ الشَّعَرِ مَعَهُ جَنَّتُهُ وَنَارُهُ فَنَارُهُ جَنَّةٌ وَجَنَّتُهُ نارٌ» . رَوَاهُ مُسلم

5474. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "दज्जाल बाएँ आँख से काना होगा, उस के जिस्म पर बाल घने होंगे, उस के साथ उसकी जन्नत और उसकी आग होगी, उसकी आग जन्नत होगी और उसकी जन्नत हकीक़त में आग होगी"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (104 / 2934)، (7366)

٥٤٧٥ - (صَحِيح) وَعَن»» النوَّاس بن سمْعَان قَالَ: ذَكَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الدَّجَّالَ فَقَالَ: «إِنْ يَخْرُجْ وَأَنَا فِيكُمْ فَأَنَا حَجِيجُهُ دُونَكُمْ وَإِنْ يَخْرُجْ وَلَسْتُ فِيكُمْ فَامْرُؤٌ حَجِيجُ نَفْسِهِ وَاللَّهُ خَلِيفَتِي عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ إِنَّهُ شَابٌّ قَطَطٌ عَيْنُهُ طَافِيَةٌ كَأَنِّي أُشَبِّهُهُ بِعَبْدِ الْعُزَّى بْنِ قَطَنٍ فَمَنْ أَدْرَكَهُ مِنْكُمْ فَلْيَقْرَأْ عَلَيْهِ فَوَاتِحَ سُورَةِ الْكَهْفِ» . وَفِي رِوَايَةٍ «فَلْيَقْرَأْ عَلَيْهِ بِفَوَاتِحِ سُورَةِ الْكَهْفِ فَإِنَّهَا جواركم من فتنته إِنَّه خَارج خلة بِي الشَّامِ وَالْعِرَاقِ فَعَاثَ يَمِينًا وَعَاثَ شِمَالًا يَا عِبَادَ اللَّهِ فَاثْبُتُوا»

. قُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَمَا لَبْثُهُ فِي الْأَرْضِ؟ قَالَ: «أَرْبَعُونَ يَوْمًا يَوْمٌ كَسَنَةٍ وَيَوْمٌ كَشَهْرٍ وَيَوْمٌ كَجُمُعَةٍ وَسَائِرُ أَيَّامِهِ كَأَيَّامِكُمْ» . قُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ فَذَلِكَ الْيَوْمُ الَّذِي كَسَنَةٍ أَتَكْفِينَا فِيهِ صَلَاةُ يَوْمٍ. قَالَ: «لَا اقْدُرُوا لَهُ قَدَرَه» . قُلْنَا: يَا رسول اللَّهِ وَمَا إِسْرَاعُهُ فِي الْأَرْضِ؟ قَالَ: " كَالْغَيْثِ اسْتَدْبَرَتْهُ الرِّيحُ فَيَأْتِي عَلَى الْقَوْمِ فَيَدْعُوهُمْ فَيُؤْمِنُونَ بِهِ فَيَأْمُرُ السَّمَاءَ فَتُمْطِرُ وَالْأَرْضَ فَتُنْبِتُ فَتَرُوحُ عَلَيْهِمْ سَارِحَتُهُمْ أَطْوَلَ مَا كَانَتْ ذُرًى وَأَسْبَغَهُ [ص: ١٥٠ ضُرُوعًا وَأَمَدَّهُ خَوَاصِرَ ثُمَّ يَأْتِي الْقَوْمَ فَيَدْعُوهُمْ فَيَرُدُّونَ عَلَيْهِ قَوْله فَيَنْصَرِف عَنْهُم فيصبحون ممحلين لَيْسَ بِأَيْدِيهِمْ شَيْءٌ مِنْ أَمْوَالِهِمْ وَيَمُرُّ بِالْخَرِبَةِ فَيَقُولُ لَهَا: أَخْرِجِي كُنُوزَكِ فَتَتْبَعُهُ كُنُوزُهَا كَيَعَاسِيبِ النَّحْلِ ثُمَّ يَدْعُو رَجُلًا مُمْتَلِئًا شَبَابًا فَيَضْرِبُهُ بِالسَّيْفِ فَيَقْطَعُهُ جَزْلَتَيْنِ رَمْيَةَ الْغَرَضِ ثُمَّ يَدْعُوهُ فَيُقْبِلُ وَيَتَهَلَّلُ وَجْهُهُ يَضْحَكُ فَبَيْنَمَا هُوَ كَذَلِكَ إِذْ بَعَثَ اللَّهُ الْمَسِيحَ بْنَ مَرْيَمَ فَيَنْزِلُ عِنْد المنارة الْبَيْضَاء شرقيّ دمشق بَين مهروذتين وَاضِعًا كَفَّيْهِ عَلَى أَجْنِحَةِ مَلَكَيْنِ إِذَا طَأْطَأَ رَأسه قطر وَإِذا رَفعه تحدرمنه مثل جُمان كَاللُّؤْلُؤِ فَلَا يحل لكافرٍ يَجِدَ مِنْ رِيحِ نَفَسِهِ إِلَّا مَاتَ وَنَفَسُهُ يَنْتَهِي حَيْثُ يَنْتَهِي طَرْفُهُ فَيَطْلُبُهُ حَتَّى يُدْرِكَهُ بِبَاب لُدٍّ فيقتُلُه ثمَّ يَأْتِي عِيسَى إِلى قَوْمٌ قَدْ عَصَمَهُمُ اللَّهُ مِنْهُ فَيَمْسَحُ عَنْ وُجُوهِهِمْ وَيُحَدِّثُهُمْ بِدَرَجَاتِهِمْ فِي الْجَنَّةِ فَبَيْنَمَا هُوَ كَذَلِكَ إِذْ أَوْحَى اللَّهُ إِلَى عِيسَى: أَنِّي قَدْ أَخْرَجْتُ عِبَادًا لِي لَا يَدَانِ لِأَحَدٍ بِقِتَالِهِمْ فَحَرِّزْ عِبَادِيَ إِلَى الطُّورِ وَيَبْعَثُ اللَّهُ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ (وَهُمْ مِنْ كُلِّ حَدَبٍ يَنْسِلُونَ)»» فَيَمُرُّ أَوَائِلُهُمْ عَلَى بُحَيْرَةِ طَبَرِيَّةَ فَيَشْرَبُونَ مَا فِيهَا ويمر آخِرهم وَيَقُول: لَقَدْ كَانَ بِهَذِهِ مَرَّةً مَاءٌ ثُمَّ يَسِيرُونَ حَتَّى يَنْتَهُوا إِلَى جَبَلِ الْخَمَرِ وَهُوَ جَبَلُ بَيْتِ الْمَقْدِسِ فَيَقُولُونَ لَقَدْ قَتَلْنَا مَنْ فِي الْأَرْضِ هَلُمَّ فَلْنَقْتُلْ مَنْ فِي السَّمَاءِ فَيَرْمُونَ بِنُشَّابِهِمْ إِلَى [ص: ١٥٠ السَّمَاءِ فَيَرُدُّ اللَّهُ عَلَيْهِمْ نُشَّابَهُمْ مَخْضُوبَةً دَمًا وَيُحْصَرُ نَبِيُّ اللَّهِ وَأَصْحَابُهُ حَتَّى يَكُونَ رَأْسُ الثَّوْرِ لِأَحَدِهِمْ خَيْرًا مِنْ مِائَةِ دِينَارٍ لِأَحَدِكُمُ الْيَوْمَ فَيَرْغَبُ نَبِيُّ اللَّهِ عِيسَى وَأَصْحَابُهُ فَيُرْسِلُ اللَّهُ عَلَيْهِمُ النَّغَفَ فِي رِقَابِهِمْ فَيُصْبِحُونَ فَرْسَى كَمَوْتِ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ ثُمَّ يَهْبِطُ نَبِيُّ اللَّهِ عِيسَى وَأَصْحَابُهُ إِلَى الْأَرْضِ فَلَا يَجِدُونَ فِي الْأَرْضِ مَوْضِعَ شِبْرٍ إِلَّا مَلَأَهُ زَهَمُهُمْ وَنَتْنُهُمْ فَيَرْغَبُ نَبِيُّ اللَّهِ عِيسَى وَأَصْحَابُهُ إِلَى اللَّهِ فَيُرْسِلُ اللَّهُ طَيْرًا كَأَعْنَاقِ الْبُخْتِ فَتَحْمِلُهُمْ فَتَطْرَحُهُمْ حَيْثُ شَاءَ اللَّهُ «. وَفِي رِوَايَةٍ» تَطْرَحُهُمْ بِالنَّهْبَلِ وَيَسْتَوْقِدُ الْمُسْلِمُونَ مِنْ قِسِيِّهِمْ وَنُشَّابِهِمْ وَجِعَابِهِمْ سَبْعَ سِنِينَ ثُمَّ يُرْسِلُ اللَّهُ مَطَرًا لَا يَكُنُّ مِنْهُ بَيْتُ مَدَرٍ وَلَا وَبَرٍ فَيَغْسِلُ الْأَرْضَ حَتَّى يَتْرُكَهَا كَالزَّلَفَةِ ثُمَّ يُقَالُ لِلْأَرْضِ: أَنْبِتِي ثَمَرَتَكِ وَرُدِّي بَرَكَتَكِ فَيَوْمَئِذٍ تَأْكُلُ الْعِصَابَةُ مِنَ الرُّمَّانَةِ وَيَسْتَظِلُّونَ بِقِحْفِهَا وَيُبَارَكُ فِي الرِّسْلِ حَتَّى إِنَّ اللِّقْحَةَ مِنَ الْإِبِلِ لَتَكْفِي الْفِئَامَ مِنَ النَّاسِ وَاللِّقْحَةَ مِنَ الْبَقَرِ لَتَكْفِي الْقَبِيلَةَ مِنَ النَّاسِ وَاللِّقْحَةَ مِنَ الْغَنَمِ لَتَكْفِي الْفَخْذَ مِنَ النَّاسِ فَبَيْنَا هُمْ كَذَلِكَ إِذْ بَعَثَ اللَّهُ رِيحًا طَيِّبَةً فَتَأْخُذُهُمْ تَحْتَ آبَاطِهِمْ فَتَقْبِضُ رُوحَ كُلِّ مؤمنٍ وكلِّ مسلمٍ وَيَبْقَى شِرَارُ النَّاسِ يَتَهَارَجُونَ فِيهَا تَهَارُجَ الْحُمُرِ فَعَلَيْهِمْ تَقُومُ السَّاعَةُ " رَوَاهُ مُسْلِمٌ إِلَّا الرِّوَايَةَ الثَّانِيَةَ وَهِيَ قَوْلُهُ: " تَطْرَحُهُمْ بِالنَّهْبَلِ إِلَى قَوْلِهِ: سبع سِنِين ". رَوَاهَا التِّرْمِذِيّ

5475. नव्वास बिन समआन रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने दज्जाल का ज़िक्र किया तो फ़रमाया: “अगर वह मेरी मौजूदगी में निकल आया तो फिर मैं तुम्हारी तरफ से उन से झगड़ा करूँगा और अगर वह इस वक़्त निकले जब की मैं तुम में न होऊं तो फिर हर शख़्स अपने खातिर उन से झगड़ा करेगा, और अल्लाह हर एक मुसलमान पर मुहाफ़िज़ व मददगार है, बेशक वह (दज्जाल) जवान होगा, उस के बाल घुंघरियाले होंगे, उसकी आँख उठी हुई होगी गोया में उसे अब्दुल अज़ीज़ बिन क़तनी से तशबी देता हूँ, तुम में से जो शख़्स इसे पा ले तो वह उस पर सुरह काहफ़ की इब्तिदाई आयात पढ़े, क्योंकि वह तुम्हारे लिए उस के फितने से अमान है, वह शाम और इराक के दरमियान एक राह पर निकलने वाला है, वह दाएँ बाएँ फसाद मचाएगा अल्लाह के बन्दों! साबित रहना”, हमने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! वह ज़मीन में कितनी मुद्दत ठहरेगा? आप ﷺ ने फ़रमाया: “चालीस दिन, एक दिन साल की तरह, एक (दूसरा) दिन महीने की तरह, और एक (तीसरा) दिन जुमा (सात दिन) की तरह होगा, जबकि उस के बाकी अय्याम तुम्हारे अय्याम की तरह होंगे”, हमने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! क्या यह दिन जो साल की तरह होगा तो क्या उस में एक दीन की नमाज़ पढ़ना हमारे लिए काफी होगा? आप ﷺ ने फ़रमाया: “नहीं? बल्कि तुम

उस के लिए उस का अंदाज़ा कर लेना", हमने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! उसकी ज़मीन पर रफ़्तार क्या होगी? आप ﷺ ने फ़रमाया: "बारिश की तरह जिसके पीछे हवा आती है, वह लोगों के पास आएगा उन्हें दावत देगा तो वह उस पर ईमान ले आएँगे, वह आसमान को हुक्म देगा तो वह बारिश बरसाएगा और ज़मीन को हुक्म देगा तो वह अनाज उगाएगी, उन के चरने वाले जानवर शाम को वापस आएँगे तो उनकी कोहाने पहले से ज़्यादा लम्बी उन के थन दूध से भरे होंगे और उनकी कोखे बाहर निकली होगी, फिर वह कुछ लोगों के पास आएगा, वह उन्हें दावत देगा, वह उसकी बात कबूल नहीं करेंगे, वह उन के पास से चला जाएगा तो वह कहत साली का शिकार हो जाएँगे, उन के हाथ अमवाल से खाली हो जाएँगे और वह एक वीराने से गुजरेगा तो उसे कहेगा, अपने खज़ाने निकालो, तो इस (वीराने) के खज़ाने इस (दज्जाल) के पीछे इस तरह चलेंगे जिस तरह शहद की मखियाँ अपने सरदारों के पीछे चलती है, फिर वह भरपूर जवान आदमी को बुलाएगा और तलवार मार कर उस के दो टुकड़े कर देगा, जिस तरह निशाने पर निशाने बाज़ी की जाती है, फिर वह उस को बुलाएगा तो वह उसकी तरफ मुतवज्जे होगा और चमकते चेहरे के साथ मुस्कुराता हुआ अपनी इसी पहली हालत पर हो जाएगा, अचानक अल्लाह मसीह बिन मरयम को मबउस फरमाएगा तो वह ज़ाफ़रान रंग के जोड़े में दमिश्क के मशरिक में मीनारे बय्यदा पर नुज़ूल फरमाइएगे, वह दो फरिश्तो के परो पर हाथ रखे होंगे, जब वह अपना सर झुकाएंगे तो उन से कतरे गिरेंगे, और जब वह इसे उठाएगा तो उन से मौत के दाने टपकेंगे, और जो काफ़िर उन के सांस की हवा पाएगा तो वह हलाक हो जाएगा और उनका सांस हद्दे निगाह तक पहुंचेगा, वह इसा अलैहिस्सलाम इसे तलाश करेंगे हत्ता कि वह इसे बाबुल लद पर पाएंगे और इसे क़त्ल कर देंगे, फिर इसा अलैहिस्सलाम के पास वह लोग आएँगे जिन्हें अल्लाह ने उन से बचा लिया होगा, चुनांचे वह उन के चेहरे साफ़ करेंगे और वह उन के जन्नत में दरजात के मुतल्लिक उन्हें बताएंगे, वह इसी असना में होंगे जब अल्लाह तआला इसा अलैहिस्सलाम की तरफ वही भेजेगा के मैंने अपने ऐसे बंदे ज़ाहिर किए है, इनसे किताल की किसी में ताकत नहीं, आप मेरे बंदो को तुर की तरफ ले जाए, चुनांचे अल्लाह याजूज माजूज को भेजेगा, वह हर बुलंद जगह से दोड़े आएँगे उन के पहले लोग तब्रिस्तान पर गुजरेंगे तो तो उस का सारा पानी पि जाएँगे, जब उनका आखिरी आदमी वहां से गुजरेगा तो वह कहेगा, यहाँ किसी वक़्त पानी होता था! फिर वह चलते जाएँगे हत्ता कि वह जबल खमर यानी जबल बैतूल मकदस तक पहुंचेंगे तो वह कहेंगे, हम ज़मीन वालो को तो क़त्ल कर चुके आओ अब हम आसमान वालो को क़त्ल करे, वह आसमान की तरफ तीर चालाएंगे तो अल्लाह उन के तिरो को खून आलूद हालत में इन पर लौटा देगा, अल्लाह के नबी और उस के साथी रोक लिए जाएँगे हत्ता के इस रोज़ बेल का सर उन के वहां सौ दीनार से बेहतर होगा, अल्लाह के नबी इसा अलैहिस्सलाम और उन के साथी (अल्लाह की तरफ) रगबत करेंगे, तो अल्लाह उनकी गर्दनो में कीड़ा पैदा कर देगा तो वह एक जान की मौत की तरह सब हलाक हो जाएँगे, फिर अल्लाह के नबी इसा अलैहिस्सलाम और उन के साथी (पहाड़ से) नीचे उतरेंगे, वह ज़मीन पर बालिश्त बराबर जगह नहीं पाएँगे मगर वह उनकी चरबी और बदबू से भरपूर होगी, फिर अल्लाह के नबी ﷺ और उन के साथी अल्लाह के हुज़ूर दुआ करेंगे तो वह बख्ति ऊंट की कोहानो की तरह परिंदे इन पर भेजेगा तो वह उन्हें उठाकर जहाँ अल्लाह चाहेगा फेंक आएँगे"। एक दूसरी रिवायत में है: "वो उन्हें नह्बल के मक़ाम पर फेंक आएँगे, मुसलमान उनकी कमानों, उन के तिरो और उन के तर्किशो को सात साल जलाते रहेंगे फिर अल्लाह तआला बारिश बरसाएंगे के वह हर घर पर

बरसेगी (ख्वाह वह पत्थर से बनाया गया हो या कोई खैमा हो), वह (बारिश) ज़मीन को धो डालेगी हत्ता कि इसे शीशे की तरह कर देगी, फिर ज़मीन से कहा जाएगा, अपने समरात उगाओ और अपनी बरकात लौटा दो, इस दिन पूरी जमाअत फ़क़त एक अनार से सैर हो जाएगी और उस के छिलके से साया हासिल करेंगे, और दूध में बरकत डाल दी जाएगी हत्ता के ऊंटनी का दूध लोगों की एक जमाअत के लिए काफी होगा, गाय का दूध लोगों के कबिले के लिए काफी होगा, बकरी का दूध छोटे कबिले के लिए काफी होगा, वह इसी हालत में होंगे के अल्लाह पाकिज़ा हवा भेजेगा वह उनकी बगलों के नीचे लगे गी और वह हर मोमिन और हर मुसलमान की रूह कब्ज़ कर लेगी और शरीर लोग बाकी रह जाएँगे, वह इस वक़्त गधो की तरह एलानिया ज़िना करेंगे, और ऐसे लोगों पर कियामत काइम होगी"| मुस्लिम, अलबत्ता दूसरी रिवायत, वह इन का यह कहना: "वो इनको नहबिल में फेंक देगी", से लेकर " सात साल तक"| इसे इमाम तिरमिज़ी ने रिवायत किया है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (111 ، 110 / 2937)، (7373 و 7374) و الترمذی (2240 وقال : غريب حسن صحيح)

٥٤٧٦ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يَخْرُجُ [ص:١٥١ الدَّجَّالُ فَيَتَوَجَّهُ قِبَلَهُ رَجُلٌ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ فَيَلْقَاهُ الْمَسَالِحُ مَسَالِحُ الدَّجَّالِ. فَيَقُولُونَ لَهُ: أَيْنَ تَعْمِدُ؟ فَيَقُولُ: أَعْمِدُ إِلَى هَذَا الَّذِي خَرَجَ. قَالَ: فَيَقُولُونَ لَهُ: أَو مَا تبَارك وَتَعَالَى ؤمن بِرَبِّنَا؟ فَيَقُولُ: مَا بِرَبِّنَا خَفَاءٌ. فَيَقُولُونَ: اقْتُلُوهُ. فَيَقُولُ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ: أَلَيْسَ قَدْ نَهَاكُمْ رَبُّكُمْ أَنْ تَقْتُلُوا أَحَدًا دُونَهُ ". قَالَ: " فَيَنْطَلِقُونَ بِهِ إِلَى الدَّجَّالِ فَإِذَا رَآهُ الْمُؤْمِنُ قَالَ: يَا أَيُّهَا النَّاسُ هَذَا الدَّجَّالُ الَّذِي ذَكَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ". قَالَ: " فَيَأْمُرُ الدَّجَّال بِهِ فَيُشَبَّحُ. فَيَقُولُ: خُذُوهُ وَشُجُّوهُ فَيُوسَعُ ظَهْرُهُ وَبَطْنُهُ ضَرْبًا ". قَالَ: " فَيَقُول: أَوَ مَا تُؤْمِنُ بِي؟ " قَالَ: " فَيَقُولُ: أَنْتَ الْمَسِيحُ الْكَذَّابُ ". قَالَ: «فيؤمر بِهِ فَيُؤْشَرُ بالمنشارِ مِنْ مَفْرِقِهِ حَتَى يُفَرَّقَ بَيْنَ رِجْلَيْهِ» . قَالَ: " ثُمَّ يَمْشِي الدَّجَّالُ بَيْنَ الْقِطْعَتَيْنِ ثُمَّ يَقُولُ لَهُ: أتؤمنُ بِي؟ فَيَقُول: مَا ازْدَدْتُ إِلَّا بَصِيرَةً ". قَالَ: " ثُمَّ يَقُولُ: يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّهُ لَا يَفْعَلُ بَعْدِي بِأَحَدٍ مِنَ النَّاسِ ". قَالَ: «فَيَأْخُذُهُ الدَّجَّالُ لِيَذْبَحَهُ فَيُجْعَلُ مَا بَيْنَ رَقَبَتِهِ إِلَى تَرْقُوَتِهِ نُحَاسًا فَلَا يَسْتَطِيع إِليه سَبِيلا» قَالَ: «فَيَأْخذهُ بِيَدَيْهِ وَرِجْلَيْهِ فَيَقْذِفُ بِهِ فَيَحْسِبُ النَّاسُ أَنَّمَا قَذَفَهُ إِلَى النَّارِ وَإِنَّمَا أُلْقِيَ فِي الْجَنَّةُ» فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هَذَا أَعْظَمُ النَّاسِ شَهَادَةً عِنْدَ رَبِّ الْعَالَمِينَ» . رَوَاهُ مُسلم

5476. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "दज्जाल निकलेगा तो मोमिनो में से एक आदमी उसकी तरफ रुख करेगा तो दज्जाल के मुहाफ़िज़ व चोकीदार इसे मिलेंगे तो वह इसे कहेंगे, कहाँ का इरादा है? वह कहेगा मैं उसकी तरफ जा रहा हूँ जिस का जुहूर हुआ है, वह इसे कहेंगे क्या तुम हमारे रब पर ईमान नहीं रखते? वह कहेगा हमारे रब के बुरहान व दलाइल छुपी नहीं, वह कहेंगे इसे क़त्ल कर दो, फिर वह एक दूसरे से कहेंगे: क्या तुम्हारे रब ने तुम्हें मना नहीं किया के तुमने उसकी गैर मौजूदगी में किसी को क़त्ल नहीं करना? लिहाज़ा वह इसे दज्जाल के पास ले चलेंगे, चुनांचे जब वह मोमिन शख़्स इसे देखेगा तो वह कहेगा: लोगो! यह वही दज्जाल है जिस का रसूलुल्लाह ﷺ ने ज़िक्र किया था", आप ﷺ ने फ़रमाया: "दज्जाल उस के मुतल्लिक हुक्म देगा तो उस का सर फोड़ दीया जाएगा, वह कहेगा इसे पकड़ो और उस का सर फोड़ दो (एक दूसरी रिवायत में है इसे चित्ता लेटा दो), और उसकी पुश्त और पेट पर बहोत ज़्यादा मारा जाएगा", फ़रमाया: "वो कहेगा क्या तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते ?"

फ़रमाया: “वो शख़्स कहेगा तू मसीहे कज्ज़ाब है”, फ़रमाया: “इस शख़्स के मुतल्लिक हुक्म दीया जाएगा तो उस के सर पर आरी चला दी जाएगी हत्ता के उस के दो टुकड़े कर दिए जाएँगे”, फ़रमाया: “फिर दज्जाल इन दो टुकड़ो के बिच में चलेगा, फिर इसे कहेगा, खड़े हो जाओ तो वह सहीह सलामत खड़ा हो जाएगा, वह फिर उस से पूछेगा क्या तुम मुझ पर ईमान लाते हो? वह जवाब देगा: तुम्हारे मुतल्लिक मेरी बसीरत में इज़ाफा ही हुआ है”, फ़रमाया: “फिर वह (आदमी) कहेगा: लोगों! वह मेरे बाद किसी शख़्स के साथ ऐसे नहीं करेगा”, फ़रमाया: “दज्जाल इसे जिबह करने के लिए पकड़ेगा तो उसकी गर्दन और पसली के दरमियान तांबा बना दीया जाएगा, लिहाज़ा वह इसे क़त्ल नहीं कर सकेगा”, फ़रमाया: “वो इसे दोनों हाथो और उसकी दोनों टांगो से पकड़ कर इसे फेंक देगा, लोग समझेंगे के उस ने इसे आग की तरफ फेका है, हालाँकि इसे तो जन्नत में डाल दिया गया है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रब्बुल आलमीन के नज़दीक यह शख़्स शहादत के सबसे अज़ीम मर्तबे पर फाईज़ होगा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (113 / 2938)، (7377)

٥٤٧٧ - (صَحِيح) وَعَن»» أمّ شريكٍ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَيَفِرَّنَّ النَّاسُ مِنَ الدَّجَّالِ حَتَّى يَلْحَقُوا بِالْجِبَالِ» قَالَتْ أُمُّ شَرِيكٍ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ فَأَيْنَ الْعَرَبُ يَوْمَئِذٍ؟ قَالَ: «هُمْ قَلِيلٌ» . رَوَاهُ مُسلم

5477. उम्म शरीक रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “लोग दज्जाल से भाग कर पहाड़ो पर जा पहुंचेंगे”, उम्म शरीक रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! इस वक़्त अरब कहाँ होंगे आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो इस वक़्त मुख़्तसर होंगे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (125 / 2945)، (7393)

٥٤٧٨ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَنَسٍ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «يَتْبَعُ الدَّجَّالَ مِنْ يَهُودِ أصفَهانَ سبعونَ ألفا عَلَيْهِم طيالسة» . رَوَاهُ مُسلم

5478. अनस रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अस्फहान के सत्तर हज़ार यहूदी दज्जाल की इताअत करेंगे इन पर सियाह चादरे होगी”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (124 / 2944)، (7392)

٥٤٧٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يَأْتِي الدَّجَّالُ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْهِ أَنْ يَدْخُلَ نِقَابَ الْمَدِينَةِ فَيَنْزِلُ بَعْضَ السِّبَاخِ الَّتِي تَلِي الْمَدِينَةَ فَيَخْرُجُ إِلَيْهِ رَجُلٌ وَهُوَ خَيْرُ النَّاسِ أَوْ مِنْ خِيَارِ النَّاسِ فَيَقُولُ: أَشْهَدُ أَنَّكَ الدَّجَّالُ الَّذِي حَدَّثَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَدِيثَهُ فَيَقُولُ الدَّجَّالُ: أَرَأَيْتُمْ إِنْ قَتَلْتُ هَذَا ثُمَّ أَحْيَيْتُهُ هَلْ

تَشُكُّونَ فِي الْأَمْرِ؟ فَيَقُولُونَ: لَا فَيَقْتُلُهُ ثُمَّ يُحْيِيهِ فَيَقُولُ: وَاللَّهِ مَا كُنْتُ فِيكَ أَشَدَّ بَصِيرَةً مِنِّي الْيَوْمَ فَيُرِيدُ الدَّجَّالُ أَنْ يَقْتُلَهُ فَلَا يُسَلَّطُ عَلَيْهِ ". مُتَّفق عَلَيْهِ

5479. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "दज्जाल आएगा और उस के लिए मदीना की घाटियों में दाखिल होना हराम है, चुनांचे वह मदीना के करीब शोर वाली ज़मीन पर पड़ाव डालेगा, फिर एक आदमी उस के पास जाएगा जो के (इस वक़्त) सबसे बेहतरीन शख़्स होगा, वह कहेगा: मैं गवाही देता हूँ कि तो वही दज्जाल है जिसके मुतल्लिक रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें बयान फ़रमाया था, दज्जाल कहेगा: मुझे बताओ अगर में उस को क़त्ल कर दूँ, फिर इसे जिंदा कर दूँ तो क्या तुम मेरे मुआमले में शक करोगे? वह कहेंगे, नहीं, वह उस को क़त्ल करेगा, फिर इसे जिंदा कर देगा तो वह कहेगा: अल्लाह की क़सम! तेरे मुतल्लिक मुझे आज पहले से ज़्यादा बसीरत हासिल हो गई है, फिर दज्जाल इसे क़त्ल करना चाहेगा लेकिन वह इस (के क़त्ल करने) पर कादिर नहीं हो सकेगा"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1882) و مسلم (112 / 2938)، (7375)

٥٤٨٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «يَأْتِي الْمَسِيحُ مِنْ قِبَلِ الْمَشْرِقِ هِمَّتُهُ الْمَدِينَةُ حَتَّى يَنْزِلَ دُبُرَ أُحُدٍ ثُمَّ تَصْرِفُ الْمَلَائِكَةُ وَجْهَهُ قِبَلَ الشامِ وهنالك يهلِكُ» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5480. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "दज्जाल मदीना के इरादे से मशरिक की तरफ से आएगा हत्ता के वह ओहद पहाड़ के पीछे कयाम करेगा, फिर फ़रिश्ते उस का चेहरा शाम की तरफ फिरा देंगे और वह वहीँ हलाक होगा"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (لم اجده) و مسلم (486 / 1380)، (3351)

٥٤٨١ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَبِي بَكْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يَدْخُلُ الْمَدِينَةَ رُعْبُ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ لَهَا يَوْمَئِذٍ سَبْعَةُ أَبْوَابٍ عَلَى كُلِّ بَابٍ مَلَكَانِ» رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

5481. अबू बकरह रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "मदीना (इस के लोगों के दिलों) में दज्जाल का रॉब दाखिल नहीं होगा, इस दिन इस (मदीने) के सात दरवाज़े होंगे और हर दरवाज़े पर दो फ़रिश्ते मुकर्रर होंगे"| (बुखारी .)

رواه البخارى (1879)

٥٤٨٢ - (صَحِيح) وَعَن»» فَاطِمَة بنت قيس قَالَتْ: سَمِعْتُ مُنَادِي رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمَّا قَضَى صَلَاتَهُ

جَلَسَ عَلَى الْمِنْبَرِ وَهُوَ يَضْحَكُ فَقَالَ: «لِيَلْزَمْ كُلُّ إِنْسَانٍ مُصَلَّاهُ» . ثُمَّ قَالَ: «هَلْ تَدْرُونَ لِمَ جَمَعْتُكُمْ؟» . قَالُوا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: " إِنِّي وَاللَّهِ مَا جَمَعْتُكُمْ لِرَغْبَةٍ وَلَا لِرَهْبَةٍ وَلَكِنْ جَمَعْتُكُمْ لِأَنَّ تَمِيمًا الدَّارِيَّ كَانَ رَجُلًا نَصْرَانِيًّا فَجَاءَ فَبَايَعَ وَأَسْلَمَ وَحَدَّثَنِي حَدِيثًا وَافَقَ الَّذِي كُنْتُ أُحَدِّثُكُمْ بِهِ عَنِ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ حَدَّثَنِي أَنَّهُ رَكِبَ فِي سَفِينَةٍ [ص:١٥١ بَحْرِيَّةٍ مَعَ ثَلَاثِينَ رَجُلًا مِنْ لَخْمٍ وَجُذَامَ فَلَعِبَ بِهِمُ الْمَوْجُ شَهْرًا فِي الْبَحْر فأرفؤوا إِلَى جَزِيرَةٍ حِينَ تَغْرُبُ الشَّمْسُ فَجَلَسُوا فِي أقرب سفينة فَدَخَلُوا الْجَزِيرَةَ فَلَقِيَتْهُمْ دَابَّةٌ أَهْلَبُ كَثِيرُ الشَّعَرِ لَا يَدْرُونَ مَا قُبُلُهُ مِنْ دُبُرِهِ مِنْ كَثْرَةِ الشَّعَرِ قَالُوا: وَيْلَكِ مَا أَنْتِ؟ قَالَتْ: أَنَا الْجَسَّاسَةُ قَالُوا: وَمَا الْجَسَّاسَةُ؟ قَالَتْ: أَيُّهَا الْقَوْمُ انْطَلِقُوا إِلَى هَذَا الرَّجُلِ فِي الدَّيْرِ فَإِنَّهُ إِلَى خَبَرِكُمْ بِالْأَشْوَاقِ قَالَ: لَمَّا سَمَّتْ لَنَا رَجُلًا فَرِقْنَا مِنْهَا أَنْ تَكُونَ شَيْطَانَةً قَالَ: فَانْطَلَقْنَا سِرَاعًا حَتَّى دَخَلْنَا الدَّيْرَ فَإِذَا فِيهِ أعظمُ إنسان مَا رَأَيْنَاهُ قطُّ خَلْقاً وأشَدُّهُ وَثَاقاً مجموعةٌ يَده إِلَى عُنُقِهِ مَا بَيْنَ رُكْبَتَيْهِ إِلَى كَعْبَيْهِ بِالْحَدِيدِ. قُلْنَا: وَيْلَكَ مَا أَنْتَ؟ قَالَ: قَدْ قَدَرْتُمْ عَلَى خَبَرِي فَأَخْبِرُونِي مَا أَنْتُمْ؟ قَالُوا: نَحن أُنَاس من العربِ ركبنَا فِي سفينةٍ بحريّة فلعِبَ بِنَا الْبَحْر شهرا فَدَخَلْنَا الجزيرة فَلَقِيَتْنَا دَابَّةٌ أَهْلَبُ فَقَالَتْ: أَنَا الْجَسَّاسَةُ اعْمِدُوا إِلَى هَذَا فِي الدَّيْرِ فَأَقْبَلْنَا إِلَيْكَ سِرَاعًا وَفَزِعْنَا مِنْهَا وَلَمْ نَأْمَنْ أَنْ تَكُونَ شَيْطَانَةً فَقَالَ: أَخْبِرُونِي عَنْ نَخْلِ بَيْسَانَ قُلْنَا: عَنْ أَيِّ شَأْنِهَا تَسْتَخْبِرُ؟ قَالَ: أَسْأَلُكُمْ عَنْ نَخْلِهَا هَلْ تُثْمِرُ؟ قُلْنَا: نَعَمْ. قَالَ: أَمَا إِنَّهَا تُوشِكُ أَنْ لَا تُثْمِرَ. قَالَ: أَخْبِرُونِي عَنْ بُحَيْرَةِ الطَّبَرِيَّةِ قُلْنَا: عَنْ أَيِّ شَأْنِهَا تَسْتَخْبِرُ؟ قَالَ: هَلْ فِيهَا مَاءٌ؟ قُلْنَا هِيَ كَثِيرَةُ الْمَاءِ. قَالَ: أَمَا إِنَّ مَاءَهَا يُوشِكُ أَنْ يَذْهَبَ. [ص:١٥١ قَالَ: أَخْبِرُونِي عَنْ عَيْنِ زُغَرَ. قَالُوا: وَعَنْ أَيِّ شَأْنِهَا تَسْتَخْبِرُ؟ قَالَ: هَلْ فِي الْعَيْنِ مَاءٌ؟ وَهَلْ يَزْرَعُ أَهْلُهَا بِمَاءِ الْعَيْنِ؟ قُلْنَا لَهُ: نعم هِيَ كَثِيرَة المَاء وَأَهله يَزْرَعُونَ مِنْ مَائِهَا. قَالَ: أَخْبِرُونِي عَنْ نَبِيِّ الْأُمِّيِّينَ مَا فَعَلَ؟ قُلْنَا: قَدْ خَرَجَ مِنْ مَكَّةَ وَنَزَلَ يَثْرِبَ. قَالَ: أَقَاتَلَهُ الْعَرَبُ؟ قُلْنَا: نَعَمْ. قَالَ: كَيْفَ صَنَعَ بِهِمْ؟ فَأَخْبَرْنَاهُ أَنَّهُ قَدْ ظَهَرَ عَلَى مَنْ يَلِيهِ مِنَ الْعَرَبِ وأطاعوهُ. قَالَ لَهُم: قد كانَ ذلكَ؟ قُلْنَا: نعم. قَالَ: أَمَا إِنَّ ذَلِكَ خَيْرٌ لَهُمْ أَنْ يُطِيعُوهُ وَإِنِّي مُخْبِرُكُمْ عَنِّي: إِنِّي أَنَا الْمَسِيحُ الدَّجَّالُ وَإِنِّي يُوشِكُ أَنْ يُؤْذَنَ لِي فِي الْخُرُوجِ فَأَخْرُجَ فَأَسِيرَ فِي الْأَرْضِ فَلَا أَدَعُ قَرْيَةً إِلَّا هَبَطْتُهَا فِي أَرْبَعِينَ لَيْلَةً غَيْرَ مَكَّةَ وَطَيْبَةَ هُمَا مُحَرَّمَتَانِ عَلَيَّ كِلْتَاهُمَا كُلَّمَا أَرَدْتُ أَنْ أَدْخُلَ وَاحِدَةً أَوْ وَاحِدًا مِنْهُمَا استقبلَنِي ملَكٌ بيدِهِ السيفُ صَلْتًا يَصُدُّنِي عَنْهَا وَإِنَّ عَلَى كُلِّ نَقْبٍ مِنْهَا مَلَائِكَةً يَحْرُسُونَهَا. " قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - وَطَعَنَ بِمِخْصَرَتِهِ فِي الْمِنْبَرِ -: «هَذِه طَيْبَةُ هَذِهِ طَيْبَةُ هَذِهِ طَيْبَةُ» يَعْنِي الْمَدِينَةَ «أَلَا هَلْ كُنْتُ حَدَّثْتُكُمْ؟» فَقَالَ النَّاسُ: نَعَمْ فَإِنَّهُ أَعْجَبَنِي حَدِيثُ تَمِيمٍ أَنَّهُ وَافَقَ الَّذِي كُنْتُ أُحَدِّثُكُمْ عَنْهُ وَعَنِ الْمَدِينَةِ وَمَكَّةَ. أَلَا إِنه فِي بَحر الشَّأمِ أَو بحرِ اليمنِ لَا بل من قبل الْمشرق ماهو من قبل الْمشرق ماهو من قبل الْمشرق ماهو " وَأَوْمَأَ بِيَدِهِ إِلَى الْمشرق. رَوَاهُ مُسلم

5482. फ़ातिमा बिन्ते कैस रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ के मुनादी (एलान) को यह एलान करते हुए सुना नमाज़ जमा करने वाली है, मैं मस्जिद की तरफ गई और रसूलुल्लाह ﷺ के साथ नमाज़ पढ़ी, जब आप नमाज़ पढ़ चुके तो मिम्बर पर बैठ गए और आप ﷺ हंस रहे थे, फ़रमाया: “तमाम लोग अपने अपनी जगहों पर बैठें रहे”, फिर फ़रमाया: “क्या तुम्हें मालुम है के मैंने तुम्हें किस लिए जमा किया है?” उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह की क़सम! मैंने तुम्हें किसी रगबत (माले गनीमत वगैरा देने) के लिए जमा नहीं किया है न किसी ख़ौफ की वजह से, बल्कि मैंने तुम्हें इसलिए जमा किया है की तमीम दारी नसरानी शख़्स था, वह आया उस ने बैत की और मुसलमान हो गया उस ने मुझे वह बात बयान की और वह इसी बात के मुवाफिक थी जो में तुम्हें मसीह दज्जाल के मुतल्लिक बयान करता हूँ, उस ने मुझे बताया के वह लख्म व जूज़ाम कबिले के तीस लोगों के साथ कश्ती में सवार हुआ, मोज़े एक माह तक उन्हें समुन्दर में लिए फिरी (बाहर किनारे पर पहुँचने का मौके न मिला) वह गुरूब ए आफ़ताब के वक़्त एक जज़ीरे के करीब पहुँच गए, वह छोटी कश्ती में बैठ कर जज़ीरा में दाखिल हुए तो कसीर बालो वाला एक हैवान उन्हें मिला, बालो की कसरत की वजह से वह नहीं जानते थे की उस का अगला हिस्सा कौन सा है और पिछला हिस्सा कौन सा है, उन्होंने कहा: तेरी

तबाही हो, तू क्या चीज़े है? उस ने अर्ज़ किया, मैं (दज्जाल का) जासूस हूँ, हमने कहा जासूस से क्या मुराद है? उस ने कहा, तुम गिरजा में इस आदमी की तरफ चलो, क्योंकि वह तुम्हें मिलने का मुश्ताक (उत्सुक) है उन्होंने (तमीम दारी) ने फ़रमाया: जब उस ने इस आदमी के मुतल्लिक हमें बताया तो हम इस (हेवान) से डर गए के यह कहीं शैतान न हो, हम जल्दी जल्दी चले हत्ता के हम गिरजे में दाखिल हो गए, तो वहां एक बड़े कद वाला इंसान था, हमने तखलीक व मज़बूती के लिहाज़ से इस जैसा इंसान पहले कभी नहीं देखा था, वह ज़ंजीरो में जकड़ा हुआ था, उस के हाथ उसकी गर्दन के साथ बंधे हुए थे, और उस के घुटनों और टखनो के बिच में लोहे की जंज़ीरे थी, हमने कहा तेरी तबाही हो, तू कौन है? उस ने कहा तुम मेरी खबर (मालूम करने) पर तू कुदरत पा चुके हो, मुझे बताओ कि तुम कौन हो? उन्होंने कहा, हम अरब लोग है, हम एक कश्ती में सवार हुए तो समुन्दर की मोज़े एक माह तक हमें इधर उधर फिराती रही, हम जज़ीरे में दाखिल हुए तो कसीर बालो वाला एक जानवर हमें मिला तो उस ने कहा: में जासूस हूँ, तुम गिरजे में मौजूद इस शख़्स के पास जाओ, लिहाज़ा हम जल्दी जल्दी तेरे पास पहुँच गए है, लेकिन इस जासूस से हम खौफ ज़दाह हुए के कहीं वह शैतान न हो, उस ने कहा: तुम मुझे बिसान के नखलिस्तान के बारे में बताओ, क्या यह फल देता है? हमने कहा: हाँ, उसने कहा सुनो! करीब है के वह फल नहीं देगा, उस ने कहा: बहरह व तब्रिया के मुताल्लिक मुझे बताओ, क्या उस में पानी है? हमने कहा: उस में बहोत ज़्यादा पानी है, उस ने कहा: करीब है के उस का पानी ख़तम हो जाएगा, उस ने कहा मुझे चश्मे जगर के मुतल्लिक बताओ, क्या चश्मे में पानी है, और किया वहां रहने वाले चश्मे के पानी से ज़राअत करते हैं? हमने कहा: हाँ, उस में पानी भी बहोत है और वहां के रहने वाले इस पानी से ज़राअत भी करते हैं, उस ने कहा मुझे अनपढ़ों (अरबों) के नबी के मुतल्लिक बताओ उस ने क्या किया? हमने इसे बताया के वह मक्का छोड़ कर मदीना तशरीफ़ ले आए है? उस ने कहा क्या अरबों ने उस से लड़ाई की है? हमने कहा: हाँ, उसने कहा उनके साथ क्या किया? हमने इसे बताया के वह अपने करीब के अरबो पर ग़ालिब आ चुके हैं और उन्होंने (अरबों) ने आप ﷺ की इताअत इख़्तियार कर ली है, उस ने कहा: सुनो! अगर वह उनकी इताअत करे तो उन के हक़ में यही बेहतर है और मैं अब तुम्हें अपने मुतल्लिक बताता हूँ की मैं मसीह दज्जाल हूँ, बेशक करीब है के मुझे निकलने की इजाज़त दि जाए तो मैं निकल आऊंगा, मैं ज़मीन पर चलूँगा और मैं चालीस रोज़ में ज़मीन पर मक्का और तैबा (मदीना) के अलावा हर बस्ती में उतरूंगा, वह दोनों मुझ पर हराम है, मैं जब भी इन दोनों में से किसी एक में दाखिल होने का इरादा करूँगा तो एक फ़रिश्ता हाथ में तलवार सोंटे हुए मेरे सामने आ जाएगा, और वह उस में दाखिल होने से मुझे रोकेगा और उस के हर रास्ते और दरवाज़े पर फ़रिश्ते है जो उसकी हिफाज़त करते हैं", रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया और आप ने मिम्बर पर छड़ी मारी यह (यानी मदीना) तैबा है, यह तैबा है, यह तैबा है, सुनो! क्या मैंने तुम्हें हदीस सुना दि थी ?" लोगों ने अर्ज़ किया, जी हाँ! (फ़रमाया) "सुनो! वह शाम के समुन्दर में है या वह यमन के समुन्दर में है नहीं बल्कि वह मशरिक की तरफ से निकलेगा ", और आप ﷺ ने जो इरशाद फ़रमाया था वह मशरिक की तरफ था| (मुस्लिम)

رواه مسلم (119 / 2942)، (7386)

٥٤٨٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " رَأَيْتُنِي اللَّيْلَةَ عِنْدَ الْكَعْبَةِ فَرَأَيْتُ رَجُلًا آدَمَ كَأَحْسَنِ مَا أَنْتَ رَاءٍ مِنْ أُدْمِ الرِّجَالِ لَهُ لِمَّةٌ كَأَحْسَنِ مَا أَنْتَ رَاءٍ مِنَ اللِّمَمِ قد رجَّلَها فَهِيَ تقطر مَاء متكأ عَلَى عَوَاتِقِ رَجُلَيْنِ يَطُوفُ [ص:١٥١ بِالْبَيْتِ فَسَأَلْتُ: مَنْ هَذَا؟ فَقَالُوا: هَذَا الْمَسِيح بن مَرْيَمَ " قَالَ: " ثُمَّ إِذَا أَنَا بِرَجُلٍ جَعْدٍ قَطَطٍ أَعْوَرِ الْعَيْنِ الْيُمْنَى كَأَنَّ عَيْنَهُ عِنَبَةٌ طَافِيَةٌ كَأَشْبَهِ مَنْ رَأَيْتُ مِنَ النَّاسِ بِابْنِ قَطَنٍ وَاضِعًا يَدَيْهِ عَلَى مَنْكِبَيْ رَجُلَيْنِ يَطُوفُ بِالْبَيْتِ فَسَأَلْتُ مَنْ هَذَا؟ فَقَالُوا: هَذَا الْمَسِيحُ الدَّجَّالُ ". مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَفِي رِوَايَةٍ: قَالَ فِي الدَّجَّالِ: «رَجُلٌ أَحْمَرُ جَسِيمٌ جَعْدُ الرَّأْسِ أَعْوَرُ عَيْنِ الْيُمْنَى أَقْرَبُ النَّاسِ بِهِ شَبَهًا ابْنُ قَطَنٍ»»» وَذَكَرَ حَدِيثَ أَبِي هُرَيْرَةَ: «لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ مَغْرِبِهَا» فِي «بَابِ الْمَلَاحِمِ»»» وَسَنَذْكُرُ حَدِيثَ ابْنِ عُمَرَ: قَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي النَّاس فِي «بَاب قصَّة ابْن الصياد» إِن شَاءَ الله تَعَالَى

5483. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आज की रात मैंने अपने आप को (ख्वाब में) काबा के पास देखा, मैंने वहां गंदुमी रंग के एक आदमी को देखा के मैंने गंदुमी रंग में उस से ज़्यादा खुबसूरत शख़्स कोई नहीं देखा, उस के सर के बाल कानों की लो तक थे, मैंने कानों की लो तक उस से ज़्यादा खुबसूरत बाल नहीं देखे, इस शख़्स ने उनमें कंघी भी की हुई थी, और सर से पानी के कतरे गिर रहे थे, वह दो आदमियों के कंधो का सहारा लिए बैतुल्लाह का तवाफ़ कर रहा था, मैंने पूछा यह कौन है? उन्होंने बताया: यह मसीह बिन मरियम अलैहिस्सलाम हैं”, आप ﷺ ने फ़रमाया: “फिर मैंने बहोत ही घुंघरियाले बालो वाले शख़्स को देखा, उसकी दाएँ आँख कानी थी, गोया उसकी आँख उभरे हुए अंगूर की तरह है, और वह इब्ने क़तनी के साथ रहने वाले लोगों के जिन्हें मैंने देखा था ज़्यादा मुशाबह (अनुरूप) है, वह भी दो आदमियों के कंधो पर हाथ रख कर बैतुल्लाह का तवाफ़ कर रहा था, मैंने दरियाफ्त किया: यह कौन है? उन्होंने कहा: यह मसीह दज्जाल है”। एक दूसरी रिवायत में है, आप ﷺ ने दज्जाल के मुतल्लिक फ़रमाया: “वो सुर्ख रंग का आदमी है, उस के बाल घुंघरियाले हैं, दाएँ आँख से काना है, और वह सबसे ज़्यादा इब्ने क़तनी से मुशाबिहत रखता है”। और अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से मरवी हदीस: “कियामत काइम नहीं होगी हत्ता के सूरज मग़रिब से तुलुअ हो जाए”, بَابِ الْمَلَاحِمِ (जंगो का बयान) में बयान हो चुकी है और हम अनकरीब इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से मरवी हदीस: “रसूलुल्लाह ﷺ लोगों को ख़िताब करने के लिए खड़े हुए”, इंशाअल्लाह तआला بَاب قصَّة ابْن الصياد (इब्ने सय्याद के किस्से का बयान) में ज़िक्र करेंगे। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (3440 و الروایة الثانیة : 2441) و مسلم (274 ، 273 / 169، (425) و الروایة الثانیة : 277 / 171)، (426) 0
حدیث ابن عمر : قام رسول الله صلی الله علیه و آله وسلم فی الناس یاتی (5494)

बَابُ الْعَلَامَاتِ بَيْنَ يَدَيِ السَّاعَةِ وَذِكْرِ الدَّجَّالِ	**कबले कियामत के अलामत और दज्जाल का बयान**
الْفَصْل الثَّانِي	**दूसरी फस्ल**

٥٤٨٤ - (صَحِيح) عَنْ»» فَاطِمَةَ بِنْتِ قَيْسٍ فِي حَدِيثِ تَمِيمٍ الدَّارِيِّ: قَالَتْ: قَالَ: فَإِذَا أَنَا بِامْرَأَةٍ تَجُرُّ شَعَرَهَا قَالَ: مَا أَنْتِ؟ قَالَتْ: أَنَا الْجَسَّاسَةُ اذْهَبْ إِلَى ذَلِكَ الْقَصْرِ فَأَتَيْتُهُ فَإِذَا رَجُلٌ يَجُرُّ شَعَرَهُ مُسَلْسَلٌ فِي الْأَغْلَالِ يَنْزُو فِيمَا بَيْنُ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ. فَقُلْتُ: مَنْ أَنْتَ؟ قَالَ: أَنا الدَّجَّال ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5484. फ़ातिमा बिन्ते कैस रदियल्लाहु अन्हुमा ने तमीम दारी रदियल्लाहु अन्हु से मरवी हदीस के मुतल्लिक बयान किया के उन्होंने (तमीम दारी (र)) ने फ़रमाया: “मैं अचानक एक ऐसी औरत के पास से गुज़रा जो अपने बाल खींच रही थी, उन्होंने पूछा: तू कौन है? उस ने कहा: में जासूस हूँ, इस महल की तरफ जाओ, मैं वहां गया तो वहां एक आदमी अपने बाल खींच रहा है, वह ज़ंजीरो में जकड़ा हुआ है उस के साथ तोक भी हैं, और वह ज़मीन व आसमान के दरमियान कूद रहा है, मैंने कहा तू कौन है? उस ने कहा: में दज्जाल हो”| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (4325)

٥٤٨٥ - (صَحِيح) وَعَنْ»» عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنِّي حَدَّثْتُكُمْ عَنِ الدَّجَّالِ حَتَّى خَشِيتُ أَنْ لَا تَعْقِلُوا. إِنَّ الْمَسِيحَ الدَّجَّالَ قَصِيرٌ أَفْحَجُ جَعْدٌ [ص:١٥١ أَعْوَرُ مَطْمُوسُ الْعَيْنِ لَيْسَتْ بِنَاتِئَةٍ وَلَا حَجْرَاءَ فَإِنْ أُلْبِسَ عَلَيْكُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّ رَبَّكُمْ لَيْسَ بِأَعْوَرَ» رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5485. उबादा बिन सामित रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैंने तुम्हें दज्जाल के मुतल्लिक हदीस बयान की हत्ता के मुझे अंदेशा हुआ की तुम नहीं समझ सके हो, बेशक मसीह दज्जाल छोटे कद का है, उस के दोनों पाँव में उस के मामूल से ज़्यादा कुशादगी होगी, बाल घुंघरियाले, काना होगा, आँख गायब होगी, उसकी (दूसरी) आँख बुलंद होगी न धंसी होगी, अगर फिर भी तुम्हें मुग़ालता हो जाए तो जान लो के तुम्हारा रब काना नहीं”| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (4320)

٥٤٨٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أَي»» عُبَيْدَةَ بْنِ الْجَرَّاحِ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّهُ لَمْ يَكُنْ نَبِيٌّ بَعْدَ نُوحٍ إِلَّا قَدْ أَنْذَرَ الدجالَ قومَه وإِني أُنذركموه» فرصفه لَنَا قَالَ: «لَعَلَّهُ سَيُدْرِكُهُ بَعْضُ مَنْ رَآنِي أَوْ سَمِعَ كَلَامِي» . قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ فَكَيْفَ قُلُوبُنَا يَوْمَئِذٍ؟ قَالَ: «مِثْلُهَا» يَعْنِي الْيَوْمَ «أوخير» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

5486. अबू उबैदाह बिन जराह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “नुह अलैहिस्सलाम के बाद हर नबी ﷺ ने अपने कौम को दज्जाल से डराया है, और मैं तुम्हें उस से डराता हूँ”, और आप ﷺ ने हमें उस का तारुफ़ कराया, फ़रमाया: “अनकरीब कोई जिस ने मुझे देखा है या मेरा कलाम सुना है, इसे पा लेगा”, उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! इस वक़्त हमार दिल कैसे होंगे? आप ﷺ ने फ़रमाया: “जैसे आज है या (इस से) बेहतर”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (2234 وقال : غریب) و ابوداؤد (4756)

٥٤٨٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَمْرِو»»   بْنِ حُرَيْثٍ عَنْ أَبِي بَكْرٍ الصّديق قَالَ: حَدَّثَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " الدَّجَّالُ يَخْرُجُ مِنْ أَرْضٍ بِالْمَشْرِقِ يُقَالُ لَهَا: خُرَاسَانُ يَتْبَعُهُ أَقْوَامٌ كَأَنَّ وُجُوهَهُمُ المجانّ المطرقة ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5487. अमर बिन हुरैस ने अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें हदीस बयान करते हुए फ़रमाया: "दज्जाल मशरिकी यसरी ज़मीन से निकलेगा जिसे खुरासान कहा जाता है, जो लोग उसकी इत्तेबा करेंगे उन के चेहरे तबत ढाल जैसे होंगे"। (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (2237 وقال : حسن غریب)

٥٤٨٨ - (صَحِيح) وَعَنْ»»   عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ سَمِعَ بالدجال فلينأ مِنْهُ فو الله إِنَّ الرَّجُلَ لَيَأْتِيهِ وَهُوَ يَحْسِبُ أَنَّهُ مُؤْمِنٌ فَيَتَّبِعُهُ مِمَّا يَبْعَثُ بِهِ مِنَ الشُّبُهَاتِ» رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5488. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स दज्जाल के मुतल्लिक सुने तो वह उस से दूर रहे, अल्लाह की क़सम! आदमी उस के पास आएगा जो खुद को मोमिन समझता होगा लेकिन जिन शुबहात के साथ दज्जाल भेजा जाएगा वह उनकी वजह से उसकी इत्तेबा करेगा"। (सहीह)

اسنادہ صحیح ، رواہ ابوداؤد (4319)

٥٤٨٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أَسمَاء»»   بنت يزِيد بن السَّكن قَالَتْ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَمْكُثُ الدَّجَّالُ فِي الْأَرْضِ أَرْبَعِينَ سَنَةً السَّنَةُ كَالشَّهْرِ وَالشَّهْرُ كَالْجُمُعَةِ وَالْجُمُعَةُ كَالْيَوْمِ وَالْيَوْمُ كَاضْطِرَامِ السَّعَفَةِ فِي النَّارِ» . رَوَاهُ فِي «شَرْحِ السُّنَّةِ»

5489. अस्मा बिन्ते यज़ीद बिन सकनी रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नबी ﷺ ने फ़रमाया: "दज्जाल ज़मीन पर चालीस साल रहेगा, साल महीने की तरह, महीने जुमे (हफ्ते यानी सात दिन) की तरह जुमा (यानी हफ्ता) दिन की तरह और दिन आग में तनके के जल जाने की तरह होगा"। (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ البغوی فی شرح السنة (15 / 62 ح 4264) [و احمد (6 / 454 ح 28123 ، 6 / 459 ح 28152)]

٥٤٩٠ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ [ص:١٥١ وَسَلَّمَ: «يَتْبَعُ الدَّجَّالَ مِنْ أُمَّتِي سَبْعُونَ أَلْفًا عَلَيْهِمُ السِّيجَانُ» . رَوَاهُ فِي " شرح السّنة

5490. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरी उम्मत के सत्तर हज़ार लोग दज्जाल की इत्तेबा करेंगे, उन के सरो पर सब्ज़ सियाह रंग के कपड़े होंगे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه البغوى فى شرح السنة (15 / 62 ح 4265) * فيه ابو هارون العبدى متروک متهم و حديث مسلم (2944)، (7392) يخالفه

٥٤٩١ - (ضَعِيف) وَعَن»» أسماءَ بنتِ يزيدَ قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي بَيْتِي فَذَكَرَ الدَّجَّالَ فَقَالَ: " إِنَّ بَيْنَ يَدَيْهِ ثَلَاث سِنِين سنة تمسلك السَّمَاءُ فِيهَا ثُلُثَ قَطْرِهَا وَالْأَرْضُ ثُلُثَ نَبَاتِهَا. وَالثَّانِيَةُ تُمْسِكُ السَّمَاءُ ثُلُثَيْ قَطْرِهَا وَالْأَرْضُ ثُلُثَيْ نَبَاتِهَا. وَالثَّالِثَةُ تُمْسِكُ السَّمَاءُ قَطْرَهَا كُلَّهُ وَالْأَرْضُ نَبَاتَهَا كُلَّهُ. فَلَا يَبْقَى ذَاتُ ظِلْفٍ وَلَا ذَاتُ ضِرْسٍ مِنَ الْبَهَائِمِ إِلَّا هَلَكَ وَإِنَّ مِنْ أَشَدِّ فِتْنَتِهِ أَنَّهُ يَأْتِي الْأَعْرَابِيَّ فَيَقُولُ: أَرَأَيْتَ إِنْ أَحْيَيْتُ لَكَ إِبِلَكَ أَلَسْتَ تَعْلَمُ أَنِّي رَبُّكَ؟ فَيَقُولُ بَلَى فَيُمَثِّلُ لَهُ الشَّيْطَانَ نَحْوَ إِبِلِهِ كَأَحْسَنِ مَا يَكُونُ ضُرُوعًا وَأَعْظَمِهِ أَسْنِمَةً ". قَالَ: " وَيَأْتِي الرَّجُلَ قَدْ مَاتَ أَخُوهُ وَمَاتَ أَبُوهُ فَيَقُولُ: أَرَأَيْتَ إِنْ أَحْيَيْتُ لَكَ أَبَاكَ وَأَخَاكَ أَلَسْتَ تَعْلَمُ أَنِّي رَبُّكَ؟ فَيَقُولُ: بَلَى فَيُمَثِّلُ لَهُ الشَّيَاطِينَ نَحْوَ أَبِيهِ وَنَحْوَ أَخِيهِ ". قَالَتْ: ثُمَّ خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِحَاجَتِهِ ثُمَّ رَجَعَ وَالْقَوْمُ فِي اهْتِمَامٍ وَغَمٍّ مِمَّا حَدَّثَهُمْ. قَالَتْ: فَأَخَذَ بِلَحْمَتَيِ الْبَابِ فَقَالَ: «مَهْيَمْ أَسْمَاءُ؟» قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ لَقَدْ خَلَعْتَ أَفْئِدَتَنَا بِذِكْرِ الدَّجَّالِ. قَالَ: «إِنْ يَخْرُجْ وَأَنَا حَيٌّ فَأَنَا حَجِيجُهُ وَإِلَّا فإِنَّ رَبِّي خليفتي علںكل مُؤْمِنٍ» فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَاللَّهِ إِنَّا لَنَعْجِنُ عَجِينَنَا فَمَا نَخْبِزُهُ حَتَّى نَجُوعَ فَكَيْفَ بِالْمُؤْمِنِينَ يَوْمَئِذٍ؟ قَالَ: «يُجْزِئُهُمْ مَا يُجْزِئُ أَهْلَ السماءِ من التسبيحِ والتقديسِ» . رَوَاهُ أَحْمد

5491. अस्मा बिन्ते यज़ीद रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ मेरे घर में थे, आप ने दज्जाल का ज़िक्र किया तो फ़रमाया: “उस से पहले तीन किस्म के कहत होंगे, एक कहत यह होगा के उस में आसमान तिहाई बारिश रोक लेगा, ज़मीन अपने तिहाई नबातात रोक लेगी, दूसरे में यह होगा के आसमान अपने दो तिहाई बारिश रोक लेगा, ज़मीन अपने दो तिहाई नबातात रोक लेगी, और तीसरे में आसमान अपने सारी बारिश रोक लेगा और ज़मीन अपने तमाम नबातात रोक लेगी ,चोपायो में से कोई खुर वाला बाकी बचेगा न कोई नुकीले दांत वाला, सब हलाक हो जाएँगे, उस का सबसे शदीद फितने यह होगा के वह आराबी के पास आएगा तो कहेगा, मुझे बताओ अगर में तुम्हारे ऊंट को जिंदा कर दू तो क्या तुझे यकीन नहीं आएगा की मैं तुम्हारा रब हूँ? वह कहेगा, क्यों नहीं! शैतान उस के लिए उस के ऊंट की सूरत इख़्तियार कर लेगा, तो उस के थन बेहतरीन हो जाएँगे और उसकी कोहान बहोत बड़ी हो जाएगी”, फ़रमाया: “वो दज्जाल (दुसरे) आदमी के पास आएगा जिस का भाई और वालिद वफात पा चुके होंगे, तो वह (इसे) कहेगा, मुझे बताओ अगर में तुम्हारे लिए तुम्हारे वालिद और तुम्हारे भाई को जिंदा कर दूँ तो क्या तुझे यकीन नहीं होगा की मैं तुम्हारा रब हूँ? वह कहेगा, क्यों नहीं! शैतान उस के लिए उस के वालिद और उस के भाई की सूरत इख़्तियार कर लेगा”, अस्मा रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ अपने किसी ज़रूरत की खातिर तशरीफ़ ले गए, फिर वापस आए, और लोग आप के बयान करदा फरमान में फकर व गम की कैफियत में थे, बयान करती हैं, आप ﷺ ने दरवाज़े की देहलीज़ पकड़ कर फ़रमाया: “अस्मा क्या हाल है?” मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! आप ने दज्जाल के ज़िक्र से हमार दिल निकाल कर रख दिए, आप

ﷺ ने फ़रमाया: "अगर वह मेरी जिंदगी में निकल आया तो मैं उस का मुक़ाबला करूँगा, वरना मेरा रब हर मोमिन पर मेरा खलीफा है", मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! हम अपना आटा गूंधती है और रोटी पका कर अभी फारिग़ भी नहीं होती के फिर भूख लग जाती है, तो इस रोज़ मोमिनो की क्या हालत होगी? फ़रमाया: "तस्बीह व तक्दिस जो आसमान वालो के लिए काफी होती है वही इन के लिए काफी होगी"। (हसन)

حسن ، رواه احمد (6 / 453454 ح 28120) [و الطبرانی (24 / 158 ح 405 و سنده حسن161)] * انظر النهاية فی الفتن و الملاحم (ح 263 بتحقیقی) لمزید التحقیق* قلت : قتادة لم ینفرد به ، بل تابعه ثابت و حجاج بن الاسود و عبد العزیز بن صهیب به ، فالحدیث حسن

بَابُ الْعَلَامَاتِ بَيْنَ يَدَيِ السَّاعَةِ وَذِكْرِ الدَّجَّالِ — कबले कियामत के अलामत और दज्जाल का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث — तीसरी फस्ल

٥٤٩٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ قَالَ: مَا سَأَلَ أَحَدٌ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَن الدجالِ أكثرَ مِمَّا سَأَلْتُهُ وَإِنَّهُ قَالَ لِي: «مَا يَضُرُّكَ؟» قُلْتُ: إِنَّهُمْ يَقُولُونَ: إِنَّ مَعَهُ جَبَلَ خُبْزٍ وَنَهَرَ مَاءٍ. قَالَ: هُوَ أَهْوَنُ عَلَى اللَّهِ من ذَلِك ". مُتَّفق عَلَيْهِ

5492. मुगिरा बिन शैबा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, दज्जाल के मुतल्लिक रसूलुल्लाह ﷺ से मुझ से ज़्यादा किसी ने दरियाफ्त नहीं किया, क्योंकि आप ﷺ ने मुझे फ़रमाया: "वो तुम्हें नुकसान नहीं पहुंचाएगा", मैंने अर्ज़ किया: वह (लोग या यहूद नसारा) कहते हैं की उस के साथ रोटियों का पहाड़ और पानी की नहर होगी? आप ﷺ ने फ़रमाया: "वो (दज्जाल) अल्लाह के नज़दीक उन अशियाअ की वजह से मज़ीद ज़लील होगा"। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (7122) و مسلم (115 / 2939)، (7378)

٥٤٩٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «يَخْرُجُ الدَّجَّالُ عَلَى حِمَارٍ أَقْمَرَ مَا بَيْنَ أُذُنَيْهِ سَبْعُونَ بَاعًا» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي «كِتَابِ الْبَعْثِ وَالنُّشُورِ»

5493. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "दज्जाल एक निहायत सफ़ेद गधे पर सवार हो कर निकलेगा, उस के दोनों कानों के बिच में सत्तर बाग़ (एक बाग़ दो हाथो की लम्बाई के बराबर होता है) फासला होगा"। (मुझे नहीं मिली)

لم اجده ، رواه البيهقی فی البعث و النشور (لم اجده) * و روی البخاری فی التاریخ الکبیر (1 / 199) عن اسماعیل عن اخیه عن سلیمان عن محمد بن عقبة بن ابی عتاب المدینی عن ابیه عن ابی هریرة عن النبی صلی الله علیه و آله وسلم به و سنده ضعیف ، محمد بن عقبة و ابوه لم یوثقهما غری ابن حبان فیما اعلم ، و روی ابن ابی شیبة (15 / 161162 ح 37525) عن وکیع عن فطر عن ابی الطفیل عن رجل من اصحاب النبی صلی الله علیه و آله وسلم قال :'' یخرج الدجال علی حمار رجس ، رجس علی رجس '' و سنده حسن

بَاب قصَّة ابْن الصياد • इब्ने सय्याद के किस्से का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٥٤٩٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّ عُمَرَ بن الْخطاب انْطَلَقَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي رَهْطٍ مِنْ أَصْحَابِهِ قِبَلَ ابْنِ الصياد حَتَّى وجدوهُ يلعبُ مَعَ الصّبيانِ فِي أُطُمِ بَنِي مَغَالَةَ وَقَدْ قَارَبَ ابْنُ صَيَّادٍ يَوْمَئِذٍ الْحُلُمَ فَلَمْ يَشْعُرْ حَتَّى ضَرَبَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ظَهْرَهُ بِيَدِهِ ثمَّ قَالَ: «أتشهدُ أَنِّي رسولُ الله؟» فَقَالَ: أَشْهَدُ أَنَّكَ رَسُولُ الْأُمِّيِّينَ. ثُمَّ قَالَ ابْنُ صَيَّادٍ: أَتَشْهَدُ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ؟ فَرَصَّهُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ قَالَ: «آمَنت بِاللَّه وبرسلِه» ثمَّ قَالَ لِابْنِ صيَّاد: «مَاذَا تَرَى؟» قَالَ: يَأْتِينِي صَادِقٌ وَكَاذِبٌ. قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «خُلِّطَ عَلَيْكَ الْأَمْرُ» . قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنِّي خَبَّأْتُ لَكَ خَبِيئًا» وَخَبَّأَ لَه: (يومَ تَأتي السَّماءُ بدُخانٍ مُبينٍ)»» فَقَالَ: هُوَ الدُّخُ. فَقَالَ: «اخْسَأْ فَلَنْ تَعْدُوَ قَدْرَكَ» . قَالَ عُمَرُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَتَأْذَنُ لي فِي أَنْ أَضْرِبَ عُنُقَهُ؟ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنْ يَكُنْ هُوَ لَا تُسَلَّطْ عَلَيْهِ وَإِنْ لَمْ يَكُنْ هُوَ فَلَا خير لَك فِي قَتْلِهِ» . قَالَ ابْنُ عُمَرَ: انْطَلَقَ بَعْدَ ذَلِكَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأُبَي بْنُ كَعْبٍ الْأَنْصَارِيُّ يَؤُمَّانِ النَّخْلَ الَّتِي فِيهَا ابْنُ صَيَّادٍ فَطَفِقَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَّقِي بِجُذُوعِ النَّخْلِ وَهُوَ يَخْتِلُ أَنْ يسمعَ مِنِ ابْنِ صَيَّادٍ شَيْئًا قَبْلَ أَنْ يَرَاهُ وَابْنُ [ص:١٥١ صَيَّادٍ مُضْطَجِعٌ عَلَى فِرَاشِهِ فِي قَطِيفَةٍ لَهُ فِيهَا زَمْزَمَةٌ فَرَأَتْ أُمُّ ابْنِ صَيَّادٍ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يَتَّقِي بِجُذُوعِ النَّخْلِ. فَقَالَتْ: أَيْ صَافُ - وَهُوَ اسْمُهُ - هَذَا مُحَمَّدٌ. فَتَنَاهَى ابْنُ صَيَّادٍ. قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَوْ تَرَكَتْهُ بَيَّنَ» . قَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ: قَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي النَّاسَ فَأَثْنَى عَلَى اللَّهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ ثُمَّ ذَكَرَ الدَّجَّالَ فَقَالَ: «إِنِّي أُنْذِرُكُمُوهُ وَمَا مِنْ نَبِيٍّ إِلَّا وَقَدْ أَنْذَرَ قَوْمَهُ لَقَدْ أَنْذَرَ نُوحٌ قَوْمَهُ وَلَكِنِّي سَأَقُولُ لَكُمْ فِيهِ قَوْلًا لَمْ يَقُلْهُ نَبِيٌّ لِقَوْمِهِ تَعْلَمُونَ أَنَّهُ أَعْوَرُ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِأَعْوَرَ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5494. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ की साथ में सहाबा की एक जमाअत के साथ इब्ने सीयाद की तरफ रवाना हुए और उन्होंने इसे बनू मगाला के किले में बच्चो के साथ खेलते हुए पाया इब्ने सीयाद उन दिनों बुलुगत के करीब था, इसे (आप ﷺ की आमद का) पता इस वक़्त चला जब रसूलुल्लाह ﷺ ने उसकी पुश्त पर हाथ मारा, फिर फ़रमाया: “क्या तुम गवाही देते हो की मैं अल्लाह का रसूल हूँ? इस ने रसूलुल्लाह ﷺ की तरफ (गुस्से से) देखा और कहा: मैं गवाही देता हूँ कि आप अनपढ़ों (अरबों) के रसूल हैं, फिर इब्ने सीयाद ने कहा: क्या आप गवाही देते हैं की मैं अल्लाह का रसूल हूँ? नबी ﷺ ने इसे ज़ोर से दबाया और फ़रमाया: “मैं अल्लाह और उस के रसूलो पर ईमान लाया”, फिर आप ﷺ ने इब्ने सीयाद से फ़रमाया: “तुम क्या देखते हो?” उस ने कहा: मेरे पास सच्चा और झूठा दोनों आते है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तेरे लिए मुआमला मुश्तबाह कर दिया गया है”, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैंने तुम्हारे लिए अपने दिल में एक चीज़ छुपाइ है (बताओ वह क्या है?) आप ने यह बात छुपाए थी: “जिस दिन आसमान ज़ाहिर धुंए के साथ आएगा”, उस ने कहा: वह दख (धुआं) है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “दूर हो जा तू अपनी हैसियत से तजावुज़ नहीं कर सकता”, उमर

रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या आप उस के मुतल्लिक मुझे इजाज़त देते हैं की में उसे क़त्ल कर दूँ? रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगर तो यह वही (दज्जाल) है तो फिर उस पर गलबा हासिल नहीं किया जा सकता, और अगर यह वह नहीं तो फिर उस के क़त्ल करने में तेरे लिए कोई भलाई नहीं”| इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, उस के बाद रसूलुल्लाह ﷺ उबई बिन काब अंसारी रदियल्लाहु अन्हु को साथ लेकर खजूर के इस बाग की तरफ रवाना हुए जिस में इब्ने सीयाद था, रसूलुल्लाह ﷺ खजूर के तनों में छिपने लगे आप चाहते थे की उस से पहले के इब्ने सीयाद आप को देख ले, आप उस से कुछ सुन लें, इब्ने सीयाद मखमली चादर में अपने बिस्तर पर लेटा हुआ था, और कुछ गुनगुना रहा था, इतने में इब्ने सीयाद की माँ ने नबी ﷺ को देख लिया, जबकि आप खजूर के तनो में छुप रहे थे, उस ने कहा: साफ़ यह इब्ने सीयाद का नाम है (देखो !) मुहम्मद ﷺ आ गए, चुनांचे इब्ने सीयाद मुतनब्बे (आगाह) हो गया, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगर वह उस को (इस हालत पर) छोड़ देती हो तो वह (अपने दिल की बात) ज़ाहिर कर देता”, अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ लोगों को ख़िताब करने के लिए खड़े हुए और आप ﷺ ने अल्लाह की हम्द व सना बयान की जो उसकी शान के लायक है, फिर दज्जाल का ज़िक्र किया तो फ़रमाया: “मैं तुम्हें उस से डराता हूँ, और हर नबी ﷺ ने उस से अपने कौम को डराया है, नुह अलैहिस्सलाम ने भी अपने कौम को डराया लेकिन में उस के मुतल्लिक तुम्हें ऐसी बात बताऊंगा जो किसी नबी ने अपने कौम को नहीं बताई, तुम खूब जान लो के वह काना है जबकि अल्लाह तआला काना नहीं है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (13541355) و مسلم (95 / 2930)، (7354)

٥٤٩٥ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: لَقِيَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ - يَعْنِي ابْنَ صَيَّادٍ - فِي بَعْضِ طُرُقِ الْمَدِينَةِ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَتَشْهَدُ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ؟» فَقَالَ هُوَ: أَتَشْهَدُ أَنِّي رَسُولَ اللَّهِ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «آمَنْتُ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ مَاذَا تَرَى؟» قَالَ: أَرَى عَرْشًا عَلَى الْمَاءُ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَرَى عَرْشَ إِبْلِيسَ عَلَى الْبَحْرِ وَمَا تَرَى؟» قَالَ: أَرَى صَادِقَيْنِ وَكَاذِبًا أَوْ كَاذِبَيْنِ وَصَادِقًا. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لُبِسَ عَلَيْهِ فَدَعُوهُ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

5495. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ अबू बक्र और उमर रदियल्लाहु अन्हुमा मदीना के किसी रास्ते में इस (इब्ने सय्याद) से मिले तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे फ़रमाया: “क्या तुम गवाही देते हो की मैं अल्लाह का रसूल हूँ ?” जवाब में उस ने कहा के क्या आप गवाही देते हो की मैं अल्लाह का रसूल हूँ? रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैं अल्लाह पर उस के फरिश्तो पर, उसकी किताबो पर और उस के रसूलो पर ईमान लाया”, तू क्या देखता है?” उस ने कहा में तख़्त को पानी पर देखता हूँ, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: तू शैतान का तख़्त समुन्दर पर देखता है” आप ﷺ ने फ़रमाया: तू (इस के अलावा और) क्या देखता है?” उस ने कहा दो सच्चे और एक झूठा देखता हूँ या दो झूठे और एक सच्चा देखता हूँ, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “उस पर मुआमला मुश्तबाह कर दिया गया है तुम उसे छोड़ दो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (87 / 2925)، (7346)

٥٤٩٦ - (صَحِيح) وَعَنْهُ أَنَّ ابْنَ صَيَّادٍ سَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ تُرْبَةِ الْجَنَّةِ. فَقَالَ: «در مَكَّة يبضاء ومسك خَالص» . رَوَاهُ مُسلم

5496. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के इब्ने सीयाद ने नबी ﷺ से जन्नत की मिट्टी के बारे में दरियाफ्त किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "नरम व मुलायम सफ़ेद खालिस कस्तूरी है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (93 / 2928)، (7352)

٥٤٩٧ - (صَحِيح) وَعَنْ نَافِعٍ قَالَ: لَقِيَ ابْنُ عُمَرَ ابْنَ صَيَّادٍ فِي بَعْضِ طُرُقِ الْمَدِينَةِ فَقَالَ لَهُ قَوْلًا أَغْضَبَهُ فَانْتَفَخَ حَتَّى مَلَأَ السِّكَّةَ. فَدَخَلَ ابْنُ عُمَرَ عَلَى حَفْصَةَ وَقَدْ بَلَغَهَا فَقَالَتْ لَهُ: رَحِمَكَ اللَّهُ مَا أَرَدْتَ مِنِ ابْنِ صياد؟ أما علمت أَن رَسُول اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّمَا يَخْرُجُ مِنْ غضبةٍ يغضبها» . رَوَاهُ مُسلم

5497. नाफेअ बयान करते हैं, इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा मदीना के किसी रास्ते में इब्ने सीयाद से मिले तो उन्होंने उस से कोई बात कही जिस ने इसे नाराज़ कर दिया और गुस्से की वजह से उसकी सांस फुल गई हत्ता के रास्ता भर गया (इस के बाद) इब्ने उमर (र अ), हफ्सा रदियल्लाहु अन्हा के पास गए तो उन्हें इस वाकिए की इत्तिला हो चुकी थी, तो उन्होंने उन्हें फ़रमाया: अल्लाह तुम पर रहम फरमाए, तुमने इब्ने सीयाद से किसी चिज़ का क़सद किया? क्या तुम्हें इल्म नहीं के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "वो (दज्जाल) एक गुस्से की वजह से निकलेगा जो इसे गुस्से दिलाया जाएगा"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (98 / 2932)، (7359)

٥٤٩٨ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: صَحِبْتُ ابْنَ صياد إِلَى مَكَّة فَقَالَ: مَا لَقِيتُ مِنَ النَّاسِ؟ يَزْعُمُونَ أَنِّي الدَّجَّالُ أَلَسْتَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّهُ لَا يُولَدُ لَهُ» . وَقَدْ وُلِدَ لِي أَلَيْسَ قَدْ قَالَ: «هُوَ كَافِرٌ» . وَأَنا مُسلم أَو لَيْسَ قَدْ قَالَ: «لَا يَدْخُلُ الْمَدِينَةَ وَلَا مَكَّةَ» ؟ وَقَدْ أَقْبَلْتُ مِنَ الْمَدِينَةِ وَأَنَا أُرِيدُ مَكَّةَ. ثُمَّ قَالَ لِي فِي آخِرِ قَوْلِهِ: أَمَا وَاللَّهِ إِنِّي لَأَعْلَمُ مَوْلِدَهُ وَمَكَانَهُ وَأَيْنَ هُوَ وَأَعْرِفُ أَبَاهُ وَأُمَّهُ قَالَ: فَلَبَسَنِي قَالَ: قُلْتُ لَهُ: تَبًّا لَكَ سَائِرَ الْيَوْمِ. قَالَ: وَقِيلَ لَهُ: أَيَسُرُّكَ أَنَّكَ ذَاكَ الرَّجُلُ؟ قَالَ: فَقَالَ: لَوْ عُرِضَ عَلَيَّ مَا كَرِهْتُ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

5498. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं मक्का की तरफ जाते हुए इब्ने सीयाद के साथ था, उस ने मुझे कहा: मुझे लोगों (के कलाम) से किस कदर तकलीफ पहुंची है? वह समझते है के मैं दज्जाल हूँ, क्या तुम ने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए नहीं सुना के उसकी औलाद नहीं होगी", जबकि मेरी औलाद है? क्या आप ﷺ ने यह नहीं फरमाया के " वह काफ़िर है?", जबकि मैं मुसलमान हूँ, क्या आप ﷺ ने यह नहीं फरमाया: "वो मदीना में दाखिल होगा न मक्का में", जबकि मैं मदीना से आ रहा हूँ और मक्के जा रहा हूँ, फिर उस ने मुझ से अपने आखिरी बात यह की: सुन लो! अल्लाह की क़सम! मैं इस (दज्जाल) की जाए

पैदाइश और वक़्त पैदाइश को जानता हूँ और वह कहाँ है? यह भी जानता हूँ, मैं उस के वालिदैन को जानता हूँ, अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु ने बयान किया, इस (इब्ने सय्याद) ने मुझे गलती में डाल दिया, वह बयान करते हैं, मैंने इसे कहा: तेरे लिए बाकी अय्याम में तबाही हो, अबू सईद बयान करते हैं, इसे कहा गया: क्या तू यह पसंद करता है के वह (दज्जाल) तुम ही हो? अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, उस ने कहा: अगर वह चीज़े (दज्जाल की खसलत व जिबिल्लत वगैरा) मुझ पर पेश की जाए तो मैं नापसंद नहीं करूँगा| (मुस्लिम)

رواه مسلم (9189 / 2927)، (7349)

٥٤٩٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَقِيتُهُ وَقَدْ نَفَرَتْ عَيْنُهُ فَقُلْتُ: مَتَى فَعَلَتْ عَيْنُكَ مَا أَرَى؟ قَالَ: لَا أَدْرِي. قُلْتُ: لَا تَدْرِي وَهِيَ فِي رَأْسِكَ؟ قَالَ: إِنْ شَاءَ اللَّهُ خَلَقَهَا فِي عَصَاكَ. قَالَ: فَنَخَرَ كأشد نخير حمَار سَمِعت. رَوَاهُ مُسلم

5499. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैं इस (इब्ने सय्याद) से मिला और उसकी आँख सूजी हुई थी, मैंने कहा: में जो देख रहा हूँ तेरी आँख को कब से ऐसे है? उस ने कहा: मैं नहीं जानता, मैंने कहा: तू नहीं जानता हालाँकि वह तेरे सर में है, उस ने कहा: अगर अल्लाह चाहे तो वह इसे तेरे असा में पैदा कर दे, इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: वह गधे से भी ज़्यादा खौफनाक आवाज़ में चीखने लगा मैंने (इस की) आवाज़ सुनी| (मुस्लिम)

رواه مسلم (99 / 2932)، (7360)

٥٥٠٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ قَالَ: رَأَيْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ يَحْلِفُ بِاللَّهِ أَنَّ ابْنَ الصَّيَّادِ الدَّجَّالُ. قُلْتُ: تَحْلِفُ بِاللَّهِ؟ قَالَ: إِنِّي سَمِعْتُ عُمَرَ يَحْلِفُ عَلَى ذَلِكَ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمْ يُنْكِرْهُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5500. मुहम्मद बिन मुन्कदिर बयान करते हैं, मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु को अल्लाह की क़सम! उठाते हुए सुना के इब्ने सीयाद दज्जाल है, मैंने कहा आप अल्लाह की क़सम उठाते है, उन्होंने कहा: मैंने उमर रदियल्लाहु अन्हु को इस बात पर नबी ﷺ के पास क़सम उठाते हुए सुना, लेकिन नबी ﷺ ने उस पर नागवारी नहीं फरमाई| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (7355) و مسلم (94 / 2929)، (7353)

बَاب قصَّة ابْن الصياد • इब्ने सय्याद के किस्से का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٥٥٠١ - (صَحِيح) عَنْ نَافِعٍ قَالَ: كَانَ ابْنُ عُمَرَ يَقُولُ: وَاللَّهِ مَا أَشُكُّ أَنَّ الْمَسِيحَ الدَّجَّالَ ابْنُ صيَّادٍ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي «كِتَابِ الْبَعْثِ والنشور»

5501. नाफेअ बयान करते हैं, इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान किया करते थे, अल्लाह की क़सम! मुझे कोई शक नहीं के मसीह दज्जाल इब्ने सय्याद ही है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (4330) و البيهقى فى البعث و النشور (لم اجده)

٥٥٠٢ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَدْ فَقَدْنَا ابْنَ صَيَّادٍ يَوْمَ الْحَرَّةِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5502. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हमने हर्रा के दिन इब्ने सीयाद को न पाया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4332) * الاعمش مدلس و عنعن

٥٥٠٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» بَكْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «يمْكث أَبُو الدَّجَّالِ ثَلَاثِينَ عَامًا لَا يُولَدُ لَهُمَا وَلَدٌ ثُمَّ يُولَدُ لَهُمَا غُلَامٌ أَعْوَرُ أَضْرَسُ وَأَقَلُّهُ مَنْفَعَةً تَنَامُ عَيْنَاهُ وَلَا يَنَامُ قَلْبُهُ» . ثُمَّ نَعَتَ لَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَبَوَيْهِ فَقَالَ: «أَبُوهُ طُوَالٌ ضَرْبُ اللَّحْمِ كَأَنَّ أَنْفَهُ مِنْقَارٌ وَأُمُّهُ امْرَأَةٌ فِرْضَاخِيَّةٌ طَوِيلَةُ الْيَدَيْنِ» . فَقَالَ أَبُو بَكْرَةَ: فَسَمِعْنَا بِمَوْلُودٍ فِي الْيَهُود. فَذَهَبْتُ أَنَا وَالزُّبَيْرُ بْنُ الْعَوَّامِ حَتَّى دَخَلْنَا عَلَى أَبَوَيْهِ فَإِذَا نَعْتُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيهِمَا فَقُلْنَا هَلْ لَكُمَا وَلَدٌ؟ فَقَالَا: مَكَثْنَا ثَلَاثِينَ عَامًا لَا يُولَدُ لَنَا وَلَدٌ ثُمَّ وُلِدَ لَنَا غُلَامٌ أَعْوَرُ أَضْرَسُ وَأَقَلُّهُ مَنْفَعَةً تَنَامُ عَيْنَاهُ وَلَا يَنَامُ قَلْبُهُ قَالَ فَخَرَجْنَا مِنْ عِنْدِهِمَا فَإِذَا هُوَ مجندل فِي الشَّمْسِ فِي قَطِيفَةٍ وَلَهُ هَمْهَمَةٌ فَكَشَفَ عَن رَأسه فَقَالَ: مَا قلتما: وَهَلْ سَمِعْتَ مَا قُلْنَا؟ قَالَ: نَعَمْ تَنَامُ عَيْنَايَ وَلَا ينَام قلبِي»» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5503. अबू बकरह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दज्जाल के वालिदेन तीस साल तक (बे औलाद) रहेंगे और उन के वहां कोई बच्चा पैदा नहीं होगा, फिर उन के वहां लड़का पैदा होगा जो काना, बड़े दांतों वाला और बहोत ही कम मुनाफा पहुँचाने वाला होगा, उसकी आँखे सोएगी लेकिन उस का दिल नहीं सोएगा”, फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने उस के वालिदेन के मुतल्लिक हमें तारुफ़ कराया, फ़रमाया: “उस का वालिद लंबे कद का पतला होगा और उसकी नाक लम्बी होगी, उसकी वालिद मोटी लम्बे हाथो वाली होगी”, अबू बकरह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हमने मदीना में यहूदियों के यहाँ एक बच्चे की विलादत की खबर सुनी तो मैं और जुबैर बिन अव्वाम रदियल्लाहु अन्हु गए हत्ता के हम उस के वालिदेन

के पास पहुँच गए, देखा के रसूलुल्लाह ﷺ ने जो सिफात बयान की थी वह उनमें मौजूद थी, हमने उन से कहा क्या की तुम्हारा कोई बच्चा है? उन्होंने कहा, हम तीस साल तक (बे औलाद) रहे, और हमारे वहां कोई बच्चा पैदा न हुआ, फिर हमारे वहां एक बच्चा पैदा हुआ जो काना, लम्बी दांतों वाला और इन्तिहाई कम नफ़ामंद है, उसकी आँखे सोती है लेकिन उस का दिल नहीं सोता, रावी बयान करते हैं: हम इन दोनों के पास से निकले तो वह एक चादर में लपटा हुआ धुप में ज़मीन पर लेटा हुआ था और उसकी आवाज़ पस्त थी, उस ने अपने सर से कपड़ा उठाया तो यह कहा: तुम दोनों ने यह क्या कहा था? हमने कहा: हम ने जो कहा था क्या तूने इसे सुन लिया था? उस ने कहा, हाँ मेरी आँखे सोती है जबकि मेरा दिल नहीं सोता। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (2248 وقال : حسن غريب) * فيه على بن زيد بن جدعان : ضعيف

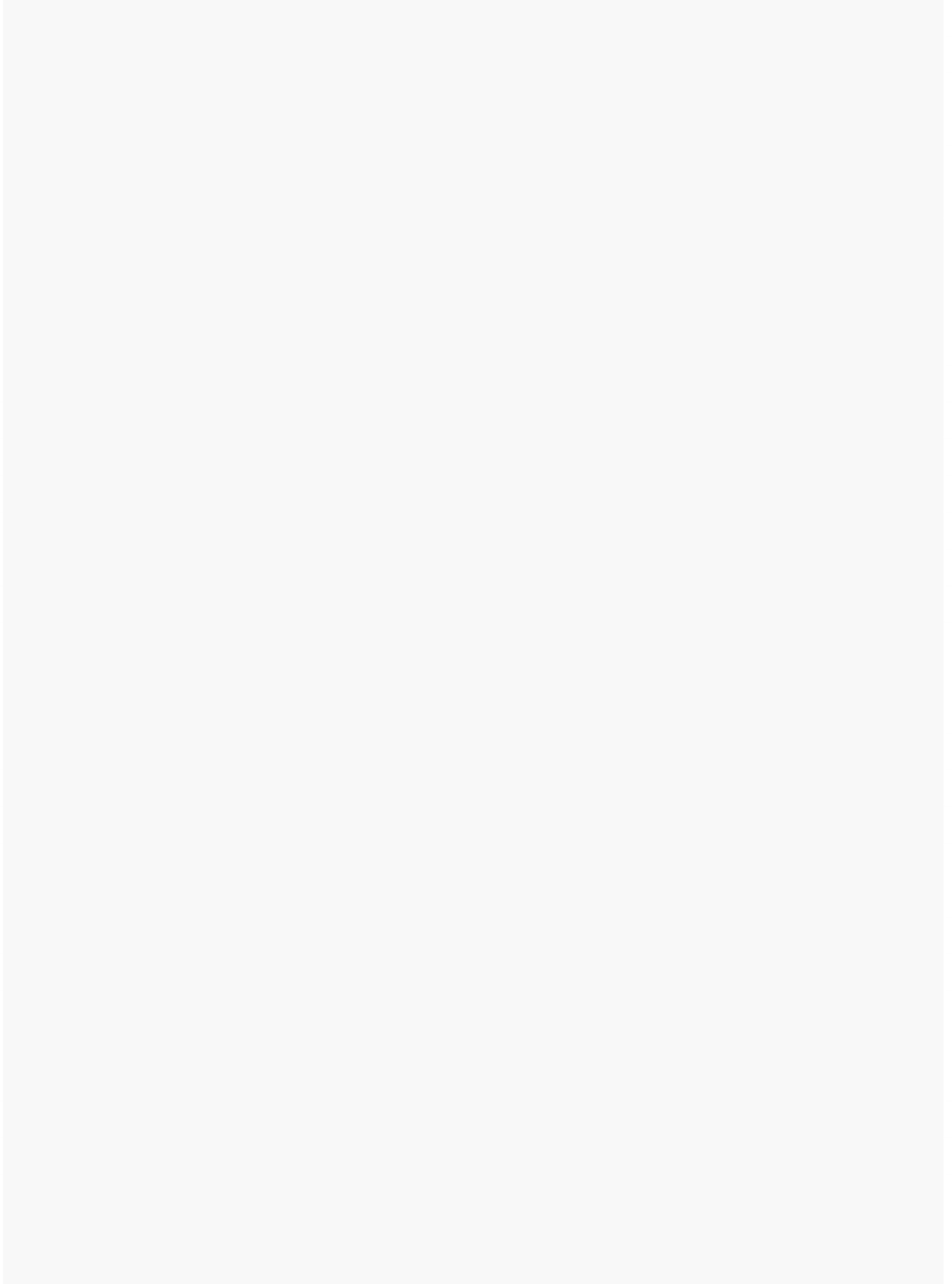
٥٥٠٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٍ»» أَنَّ امْرَأَةً مِنَ الْيَهُودِ بِالْمَدِينَةِ وَلَدَتْ غُلَامًا مَمْسُوحَةٌ عَيْنُهُ طَالِعَةٌ نَابُهُ فَأَشْفَقَ رَسُول الله صلى الله عَلَيْهِ وَسلم إِن يَكُونَ الدَّجَّالَ فَوَجَدَهُ تَحْتَ قَطِيفَةٍ يُهَمْهِمُ. فَآذَنَتْهُ أُمُّهُ فَقَالَتْ: يَا عَبْدَ اللَّهِ هَذَا أَبُو الْقَاسِمِ فَخَرَجَ مِنَ الْقَطِيفَةِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا لَهَا قَاتَلَهَا اللَّهُ؟ لَوْ تَرَكَتْهُ لَبَيَّنَ " فَذَكَرَ مِثْلَ مَعْنَى حَدِيثِ ابْنِ عُمَرَ فَقَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ ائْذَنْ لِي يَا رَسُولَ اللَّهِ فَأَقْتُلَهُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِن يكن هُوَ فَلَيْسَتْ صَاحِبَهُ إِنَّمَا صَاحِبُهُ عِيسَى بْنُ مَرْيَمَ وَإِلَّا يكن هُوَ فَلَيْسَ لَك أتقتل رَجُلًا مِنْ أَهْلِ الْعَهْدِ» . فَلَمْ يَزَلْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُشْفِقًا أَنَّهُ هُوَ الدَّجَّال. رَوَاهُ فِي شرح السّنة»»

5504. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक यहूदी औरत ने मदीना में एक बच्चे को जन्म दीया जिस की आँख नहीं थी, उसकी कचलिया नज़र आ रही थी, रसूलुल्लाह ﷺ को अंदेशा हुआ की वह दज्जाल न हो, आप ﷺ ने इसे एक चादर के नीचे कुछ गैर वाज़ेह बाते करते हुए पाया, उसकी वालिद ने इसे इत्तिला कर दी, कहा: अब्दुल्लाह यह तो अबुल कासिम ﷺ हैं वह चादर से निकला तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इसे क्या हुआ? अल्लाह इसे हलाक करे, अगर वह इस (इब्ने सय्याद) को उस के हाल पर छोड़ देती तो वह (अपने दिल की बात) बयान कर देता”, फिर इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से मरवी हदीस के मानी की मिस्ल हदीस बयान की उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मुझे इजाज़त मरहमत फरमाइए के में उसे क़त्ल कर दूँ, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगर तो यह वही दज्जाल है तो फिर तुम उसे क़त्ल करने वाले नहीं हो, इसे क़त्ल करने वाला तो इसा बिन मरियम अलैहिस्सलाम हैं, और अगर वह (दज्जाल) न हुआ तो फिर किसी जिम्मी शख़्स को क़त्ल करने का तुम्हें कोई हक़ हासिल नहीं ?” रसूलुल्लाह ﷺ मुसलसल खौफ ज़दाह रहे के वह दज्जाल है। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البغوى فى شرح السنة (5 / 78 ح 4274) [و احمد (3 / 368 ح 15018)] * فيه ابو الزبير مدلس و عنعن

وَهَذَا الْبَابُ خَالٍ عَنِ الْفَصْلِ الثَّالِثِ

यह बाब तीसरी फस्ल से खाली है



بَاب نزُول عِيسَى عَلَيْهِ السَّلَام • इसा अलयहिस्सलाम का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٥٥٠٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ ليوشكَنَّ»» أَن ينزلَ فِيكُم ابنُ مَرْيَم حكَماً عَدْلًا فَيَكْسِرُ الصَّلِيبَ وَيَقْتُلُ الْخِنْزِيرَ وَيَضَعُ الْجِزْيَةَ وَيَفِيضُ الْمَالُ حَتَّى لَا يَقْبَلَهُ أَحَدٌ حَتَّى تكون السَّجْدَةَ الْوَاحِدَةَ خيرامن الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا» . ثُمَّ يَقُولُ أَبُو هُرَيْرَةَ: فاقرؤا إِن شئْتم»» [وإِنْ من أهل الْكتاب إِلاّ ليُؤْمِنن بِهِ قبل مَوته] الْآيَة. مُتَّفق عَلَيْهِ

5505. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! अलबत्ता करीब है के इब्ने मरयम (इसा (अस)) तुम्हारे दरमियान एक आदिल हाकिम के तौर पर नाज़िल होंगे, वह सलीब तोड़ देंगे, खिंजिर को मार डालेंगे, जिज़िया मौकूफ कर देंगे और माल की इतनी रेल पेल होगी के इसे लेने वाला कोई नहीं मिलेगा, हत्ता के एक सजदाह दुनिया और जो कुछ इस में है इस से बेहतर होगा”, फिर अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु फरमाते अगर तुम चाहो तो यह आयत पढ़ो: وإِنْ من أهل الْكتاب إِلاّ ليُؤْمِنن بِهِ قبل مَوته (“अहले किताब का हर फर्द उन (इसा (अस)) की मौत से पहले इन पर ज़रूर ईमान ले आएगा”) | (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (2222) و مسلم (242 / 155)، (389 و 390)

٥٥٠٦ - (صَحِيح) وَعنهُ قا ل: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَاللَّهِ لَيَنْزِلَنَّ ابْنُ مَرْيَمَ حَكَمًا عَادِلًا فَلَيَكْسِرَنَّ الصَّلِيبَ وَلَيَقْتُلَنَّ الْخِنْزِيرَ وَلَيَضَعَنَّ الْجِزْيَةَ وَلَيَتْرُكَنَّ الْقِلَاصَ فَلَا يسْعَى عَلَيْهَا ولتذهبن الشحناء وَالتَّحَاسُدُ وَلَيَدْعُوَنَّ إِلَى الْمَالِ فَلَا يَقْبَلُهُ أَحَدٌ» . رَوَاهُ مُسلِمٌ. وَفِي رِوَايَةٍ لَهُمَا قَالَ: «كَيْفَ أَنْتُمْ إِذَا نَزَلَ ابْنُ مَرْيَمَ فِيكُمْ وَإِمَامُكُمْ مِنْكُم»

5506. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह की क़सम! इब्ने मरयम (इसा (अस)) हाकिमे आदिल की हैसियत से नाज़िल होंगे, वह सलीब तोड़ देंगे, खिंजिर को क़त्ल कर डालेंगे, जिज़िया मौकूफ कर देंगे, जवान ऊंटनिया छोड़ दि जाएगी उन से कोई काम नहीं लीया जाएगा, अदावत व रंजिश और बाहमी बुग्ज़ व हसद जाता रहेगा, वह माल की तरफ बुलाएँगे लेकिन इसे कोई लेने वाला नहीं होगा”| और सहीहैन की रिवायत में है फ़रमाया: “तुम्हारी इस वक़्त क्या हालत होगी जब इब्ने मरियम (अस) तुम्हारे दरमियान नुज़ूल फरमाइएगे और तुम्हारा इमाम तुम ही में से होगा”, (मुस्लिम)

رواہ مسلم (243 / 155)، (391) و الروایة الثانیة ، رواھا البخاری (3449) و مسلم (244 / 155)، (392)

٥٥٠٧ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَزَالُ طَائِفَةٌ مِنْ أُمَّتِي يُقَاتِلُونَ عَلَى الْحَقِّ

ظَاهِرِينَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ» . قا ل: " فَينزل عِيسَى بن مَرْيَمَ فَيَقُولُ أَمِيرُهُمْ: تَعَالَ صَلِّ لَنَا فَيَقُولُ: لَا إِنَّ بَعْضَكُمْ عَلَى بَعْضٍ أُمَرَاءُ تَكْرِمَةَ الله هَذِه الْأمة ". رَوَاهُ مُسْلِمٌ»» وَهَذَا الْبَابُ خَالٍ عَنِ الْفَصْلِ الثَّانِي

5507. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरी उम्मत का एक गिरोह हमेशा हक़ पर किताल करता रहेगा वह (कुर्बे) कया में कियामत तक ग़ालिब आते रहेंगे”, फ़रमाया: “इब्ने मरियम अलैहिस्सलाम नाज़िल होंगे तो उनका अमीर कहेगा: तशरीफ़ लाईए और हमें नमाज़ पढ़ाइए, वह फरमाइएगे: नहीं? अल्लाह ने इस उम्मत को जो इज्ज़त बख्शी है जिस वजह से तुम खुद ही एक दूसरे के इमाम हो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (247 / 156)، (395)

وهذا الباب خال عن الفصل الثاني
यह बाब दूसरी फस्ल से खाली है|

بَاب نزُول عِيسَى عَلَيْهِ السَّلَام • इसा अलयहिस्सलाम का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٥٥٠٨ - عَن عبد الله بن عَمْرو قا ل: قا ل رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَنْزِلُ عِيسَى بن مَرْيَمَ إِلَى الْأَرْضِ فَيَتَزَوَّجُ وَيُولَدُ لَهُ وَيَمْكُثُ خَمْسًا وَأَرْبَعِينَ سَنَةً ثُمَّ يَمُوتُ فَيُدْفَنُ مَعِي فِي قَبْرِي فأقوم أَنا وَعِيسَى بن مَرْيَمَ فِي قَبْرٍ وَاحِدٍ بَيْنَ أَبَى بَكْرٍ وَعُمَرَ» . رَوَاهُ ابْنُ الْجَوْزِيِّ فِي كِتَابِ الْوَفَاءِ

5508. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इसा बिन मरियम अलैहिस्सलाम ज़मीन पर नाज़िल होंगे, शादी करेंगे और उनकी औलाद होगी, वह पैतालीस साल रहेंगे फिर फौत हो जाएँगे, उन्हें मेरी कब्र के साथ ही मेरे करीब दफन कर दिया जाएगा, मैं और इसा बिन मरयम अबू बक्र व उमर के दरमियान से एक ही कब्र से खड़े होंगे” इब्ने जौज़ी ने इसे किताब वफ़ा में ज़िक्र किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن الجوزى فى كتاب الوفاء (2 / 714) [و العلل المتناهية (2 / 433 ح 1529)] * فيه عبد الرحمن بن زياد بن انعم الافريقى ضعيف و فى السند اليه نظر

बَابُ قُرْبِ السَّاعَةِ وَأَنَّ مَنْ مَاتَ فَقَدْ قَامَت قِيَامَته • कियामत के करीब होने और फौत शुदा पर कियामत कायम होने का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٥٥٠٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن شعبة عَن قَتَادَة عَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «بُعِثْتُ أَنَا وَالسَّاعَةُ كَهَاتَيْنِ» . قَالَ شُعْبَةُ: وَسَمِعْتُ قَتَادَةَ يَقُولُ فِي قَصَصِهِ كفصل إِحْدَاهُمَا عَلَى الْأُخْرَى فَلَا أَدْرِي أَذَكَرَهُ عَنْ أنس أَو قَالَه قَتَادَة؟ مُتَّفق عَلَيْهِ

5509. शुअबा क़तादाह से वह अनस रदियल्लाहु अन्हु से बयान करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैं और कियामत इन दोनों (उंगलियों) की तरह भेजे गए है”, शुअबा ने बयान किया, मैंने क़तादाह से सुना वह यह वाकिया बयान करते हुए कहा करते थे, जिस तरह इन दोनों (उंगलियों) में से एक को दूसरी पर फ़ज़ीलत हासिल है, मैं नहीं जानता के आया उन्होंने इसे अनस रदियल्लाहु अन्हु से नकल किया है या क़तादाह रहिमहुल्लाह का अपना बयान है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاري (6504) و مسلم (133 / 2951)، (7404)

٥٥١٠ - (صَحِيح) وَعَن جَابر قا ل: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ قَبْلَ أَنْ يَمُوتَ بِشَهْرٍ: «تَسْأَلُونِي عَنِ السَّاعَةِ؟ وَإِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ وَأُقْسِمُ بِاللَّهِ مَا عَلَى الْأَرْضِ مِنْ نَفْسٍ مَنْفُوسَةٍ يَأْتِي عَلَيْهَا مِائَةُ سَنَةٍ وَهِيَ حَيَّةٌ يَوْمَئِذٍ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

5510. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ को उनकी वफात से एक माह पहले फरमाते हुए सुना: “तुम मुझ से कियामत के बारे में सवाल करते हो हालाँकि इस का इल्म] तो अल्लाह ही के पास है, मैं अल्लाह की क़सम! उठाता हूँ कि रुए ज़मीन पर जो जानदार आज मौजूद है वह सौ साल गुज़रने के बाद जिंदा नहीं होगी”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (218 / 2538)، (6481)

٥٥١١ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يَأْتِي مِائَةُ سَنَةٍ وَعَلَى الْأَرْضِ نَفْسٌ مَنْفُوسَةٌ الْيَوْمَ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

5511. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “रुए ज़मीन पर जो नफ्स

आज मौजूद है, सौ साल गुज़रने के बाद वह जिंदा नहीं होगा”| (मुस्लिम)

رواہ مسلم (219 / 2539)، (6485)

٥٥١٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ رِجَالٌ مِنَ الْأَعْرَابِ يَأْتُونَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَيَسْأَلُونَهُ عَنِ السَّاعَةِ فَكَانَ يَنْظُرُ إِلَى أصغرهم فَيَقُول: «إِنْ يَعِشْ هَذَا لَا يُدْرِكْهُ الْهَرَمُ حَتَّى تَقُومَ عَلَيْكُمْ سَاعَتُكُمْ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5512. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, कुछ आराबी लोग नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए और उन्होंने आप से कियामत के मुतल्लिक सवाल किया तो आप ﷺ ने उनमें से सबसे छोटे की तरफ देखते हुए फ़रमाया: “अगर यह जिंदा रहा तो उस के बूढ़े होने से पहले तुम्हारी कियामत तुम पर काइम हो जाएगी”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (6511) و مسلم (136 / 2952)، (7409)

بَابُ قُرْبِ السَّاعَةِ وَأَنَّ مَنْ مَاتَ فَقَدْ قَامَت قِيَامَته

कियामत के करीब होने और फौत शुदा पर कियामत कायम होने का बयान

الْفَصْل الثَّانِي

दूसरी फस्ल

٥٥١٣ - (لم تتمّ دراسته) عَن الْمُسْتَوْرِد بن شَدَّاد عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «بُعِثْتُ فِي نَفَسِ السَّاعَةِ فَسَبَقْتُهَا كَمَا سَبَقَتْ هذِه هذِه» وأشارَ بأصبعيهِ السبَّابةِ وَالْوُسْطَى. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5513. मुस्तवरीद बिन शद्दाद रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुझे कियामत के जुहूर के साथ भेजा गया है, मैं उस पर इसी तरह सबकत ले गया हूँ जिस तरह यह उस पर सबकत ले गई है”, और आप ﷺ ने अपने दो उंगलियों, अन्गुंश्ते शहादत और दरमियानी ऊँगली के साथ इरशाद किया| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ الترمذی (2213 وقال : غریب) * مجالد ضعیف و عبیدۃ بن الاسود مدلس و عنعن و روی احمد (5 / 348) بلفظ :’’ بعث انا و الساعۃ جمیعًا ، ان کادت لتسبقنی ‘‘ و سندہ حسن

٥٥١٤ - (صَحِيح) وَعَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنِّي لَأَرْجُو أَنْ لَا تَعْجِزَ أُمَّتِي عِنْدَ رَبِّهَا أَنْ يُؤَخِّرَهُمْ نِصْفَ يَوْمٍ» . قِيلَ لِسَعْدٍ: وَكَمْ نِصْفُ يَوْمٍ؟ قَالَ: خَمْسُمِائَةِ سَنَةٍ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

5514. साद बिन अबी वकास रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं उम्मीद करता हूँ कि मेरी उम्मत अपने रब के यहाँ आजिज़ नहीं आएगी के वह उन्हें आधा दिन मोअख़्ख़र कर दे”, साद रदियल्लाहु अन्हु से दरियाफ्त किया गया आधे दीन की क्या मिकदार है, उन्होंने ने फ़रमाया: पांच सौ साल| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه ابوداؤد (4360) * السند منقطع ، شریح بن عبید لم یدرک سعدًا رضی الله عنه(انظر التھذیب الکمال 3 / 380 تحقیق بشار عواد) وله شاھد ضعیف منقطع عند احمد (1 / 170 ح 1464) و حدیث ابی داود (4349 و سنده صحیح) یغنی عنه

بَابُ قُرْبِ السَّاعَةِ وَأَنَّ مَنْ مَاتَ فَقَدْ قَامَت قِيَامَته • कियामत के करीब होने और फौत शुदा पर कियामत कायम होने का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٥٥١٥ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَثَلُ هَذِهِ الدُّنْيَا مَثَلُ ثَوْبٍ شُقَّ مِنْ أَوَّلِهِ إِلَى آخِرِهِ فَبَقِيَ مُتَعَلِّقًا بِخَيْطٍ فِي آخِرِهِ فَيُوشِكُ ذَلِكَ الْخَيْطُ أَنْ يَنْقَطِعَ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ»

5515. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इस दुनिया की मिसाल इस कपड़े की तरह है जिसे उस के अव्वल से आख़िर तक फाड़ दिया गया हो और वह अपने आख़िर में एक धागे के साथ जुड़ा हो, करीब है के वह धागा भी टूट जाए”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه البیھقی فی شعب الایمان (10240 ، نسخة محققة : 9759) * فیه یحیی بن سعید العطار وھو ضعیف و شیخه ابو سعید خلف بن حبیب : لم اعرفه و للحدیث شاھد ضعیف جدًا عند ابی نعیم فی الحلیة (8 / 131) تنبیه : طبع فی شعب الایمان (نسخة دار الکتب العلمیة) :’’ یحیی بن سعید القطان ‘‘ وھو خطاء و الصواب ’’ یحیی بن سعید العطار ‘‘ کما فی النسخة المحققة و انظر قصر الامل لابن ابی الدنیا (2 / 13 / 1) و السلسلة الضعیفة (1970)



بَابُ لَا تَقُومُ السَّاعَةُ إِلَّا عَلَى شِرَارِ النَّاس • कियामत बुरे लोगो पर ही कायम होगी

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٥٥١٦ - (صَحِيح) عَنْ أَنَسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى لَا يُقَالَ فِي الْأَرْضِ: اللَّهُ اللَّهُ ". وَفِي رِوَايَةٍ: " لَا تَقُومُ السَّاعَةُ عَلَى أَحَدٍ يَقُولُ: اللَّهُ الله ". رَوَاهُ مُسلم

5516. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तक ज़मीन पर अल्लाह अल्लाह कहा जाएगा कियामत काइम नहीं होगी”, एक दूसरी रिवायत में है: “किसी एक पर कियामत काइम नहीं होगी जब तक वह अल्लाह अल्लाह कहता हो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (234 / 148)، (375)

٥٥١٧ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَقُومُ السَّاعَةُ إِلَّا عَلَى شِرَارِ الْخَلْقِ» . رَوَاهُ مُسلم

5517. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कियामत बदतरीन लोगों पर काइम होगी”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (131 / 2949)، (7402)

٥٥١٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَضْطَرِبَ أَلَيَاتُ نِسَاءِ دَوْسٍ حَوْلَ ذِي الْخَلَصَةِ» . وَذُو الْخَلَصَةِ: طَاغِيَةُ دَوْسٍ الَّتِي كَانُوا يَعْبُدُونَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5518. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कियामत काइम नहीं होगी हत्ता के कबिले दौसी की औरतो के सुरिन ज़ुलखलस्त के गिर्द (तवाफ़ करते हुए) छलके (यानी हरकत करेंगे) और ज़ुलखलस्त दौसी कबिले का बुत था जिस की वह दौरे जाहिलियत में पूजा किया करते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (7116) و مسلم (51 / 2906)، (7298)

٥٥١٩ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَا يَذْهَبُ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ حَتَّى يُعْبَدَ

اللَّاتُ وَالْعُزَّى» . فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنْ كُنْتُ لَأَظُنُّ حِينَ أَنْزَلَ اللَّهُ: (هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى [ص:١٥٢ الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ)»» أَنَّ ذَلِكَ تَامًّا. قَالَ: «إِنَّهُ سَيَكُونُ مِنْ ذَلِكَ مَا شَاءَ اللَّهُ ثُمَّ يَبْعَثُ اللَّهُ رِيحًا طَيِّبَةً فَتُوُفِّيَ كُلُّ مَنْ كَانَ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالُ حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ مِنْ إِيمَانٍ فَيَبْقَى مَنْ لَا خَيْرَ فِيهِ فَيَرْجِعُونَ إِلَى دِينِ آبَائِهِم» . رَوَاهُ مُسلم

5519. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “रात और दिन ख़तम नहीं होंगे हत्ता के लात और उज्ज़ा की पूजा की जाएगी”, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! जब अल्लाह ने यह आयत नाज़िल फरमाई: “वो ज़ात जिस ने अपने रसूल को हिदायत और दिने हक़ दे कर मबउस फ़रमाया ताकि वह इसे तमाम अदियान पर ग़ालिब कर दे ख्वाह मुशरिक इसे नागवार जाने”, तो मैं ख़याल करती थी के यह हुक्म (तमाम जमानों को) शामिल होगा! आप ﷺ ने फ़रमाया: “इस (दीन के मुकम्मल करने) में जो अल्लाह चाहेगा वही हो जाएगा, फिर अल्लाह एक खुशगवार हवा चलाएगा इस वक़्त जिस शख़्स के दिल में राइ के दाने के बराबर ईमान होगा वह वफात पा जाएगा, और सिर्फ वही बाकी रह जाएँगे जिन में कोई खैर नहीं होगी, वह अपने आबाअ के दिन की तरफलौट जाएँगे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (52 / 2907)، (7299)

٥٥٢٠ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَخْرُجُ الدَّجَّالُ فَيَمْكُثُ أَرْبَعِينَ» لَا أَدْرِي أَرْبَعِينَ يَوْمًا أَوْ شَهْرًا أَوْ عَامًا «فَيَبْعَثُ اللَّهُ عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ كَأَنَّهُ عُرْوَةُ بْنُ مَسْعُودٍ فَيَطْلُبُهُ فَيُهْلِكُهُ ثُمَّ يَمْكُثُ فِي النَّاسِ سَبْعَ سِنِينَ لَيْسَ بَيْنَ اثْنَيْنِ عَدَاوَةٌ ثُمَّ يُرْسِلُ اللَّهُ رِيحًا بَارِدَةً مِنْ قِبَلِ الشَّامِ فَلَا يَبْقَى عَلَى وَجْهِ الْأَرْضِ أَحَدٌ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ مِنْ خَيْرٍ أَوْ إِيمَانٍ إِلَّا قَبَضَتْهُ حَتَّى لَوْ أَنَّ أَحَدَكُمْ دَخَلَ فِي كَبِدِ جَبَلٍ لَدَخَلَتْهُ عَلَيْهِ حَتَّى تَقْبِضَهُ» قَالَ: " فَيَبْقَى شِرَارُ النَّاسِ فِي خِفَّةِ الطَّيْرِ وَأَحْلَامِ السِّبَاعِ لَا يَعْرِفُونَ مَعْرُوفًا وَلَا يُنْكِرُونَ مُنْكَرًا فَيَتَمَثَّلُ لَهُمُ الشَّيْطَانُ فَيَقُولُ أَلَا تَسْتَجِيبُونَ؟ فَيَقُولُونَ: فَمَا تَأْمُرُنَا؟ فَيَأْمُرُهُمْ بِعِبَادَةِ الْأَوْثَانِ وَهُمْ فِي ذَلِكَ دَارٌّ رِزْقُهُمْ حَسَنٌ عَيْشُهُمْ ثُمَّ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ فَلَا يَسْمَعُهُ أَحَدٌ إِلَّا أَصْغَى لِيتًا وَرَفَعَ لِيتًا " قَالَ: " وَأَوَّلُ مَنْ يَسْمَعُهُ رَجُلٌ يَلُوطُ حَوْضَ إِبِلِهِ فَيَصْعَقُ وَيَصْعَقُ النَّاسُ ثُمَّ يُرْسِلُ اللَّهُ مَطَرًا كَأَنَّهُ الطَّلُّ فَيَنْبُتُ مِنْهُ أَجْسَادُ النَّاسِ ثُمَّ يُنْفَخُ فِيهِ أُخْرَى فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ ثُمَّ يُقَالُ: يَا أَيُّهَا النَاسُ هَلُمَّ إِلى ربِّكم [ص:١٥٢ وقفوهُم إِنَّهم مسؤولونَ. فَيُقَالُ: أَخْرِجُوا بَعْثَ النَّارِ. فَيُقَالُ: مِنْ كَمْ؟ كَمْ؟ فَيُقَالُ: مِنْ كُلِّ أَلْفٍ تِسْعَمِائَةٍ وَتِسْعَةً وَتِسْعِينَ " قَالَ: «فَذَلِكَ يَوْمَ يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا وَذَلِكَ يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ»» وَذُكِرَ حَدِيثُ مُعَاوِيَةَ: «لَا تَنْقَطِعُ الْهِجْرَةُ» فِي «بَاب التَّوْبَة»

5520. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दज्जाल निकलेगा तो वह चालीस कयाम करेगा”, (अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं) मैं नहीं जानता के चालीस दिन या चालीस माह या चालीस साल “ फिर अल्लाह इसा बिन मरियम अलैहिस्सलाम को भेजेगा, गोया वह उरवा बिन मसउद है, वह इस (दज्जाल) को तलाश करेंगे और इसे क़त्ल करेंगे, फिर वह लोगों के दरमियान सात साल रहेंगे, किसी दो के दरमियान कोई अदावत नहीं होगी, फिर अल्लाह शाम की तरफ से ठंडी हवा भेजेगा तो वह रुए ज़मीन पर मौजूद उन तमाम लोगों की रूह कब्ज़ कर लेगी जिन के दिल में राइ के दाने के बराबर ईमान या खैर होगी, हत्ता के अगर तुम में से कोई पहाड़ के अन्दर घुस जाएगा तो वह वहां पहुँच कर इसे दबोच लेगी”,

फ़रमाया: “बदतरीन लोग बाकी रह जाएँगे जो परिंदों की तरह सबक और तेज़, जबकि दरिंदो की तरह सख्त (वहशी) होंगे, वह न तो किसी नेकी को नेकी समझेंगे न बुराई को बुराई, शैतान रुप बदल कर इनको कहेगा: क्या तुम हया नहीं करते? वह कहेंगे तुम हमें क्या हुक्म देते हो? चुनांचे वह उन्हें बुतों की पूजा करने की तलकीन करेगा, और वह इसी हालत में होंगे, उनका रीज़्क बहोत ज़्यादा होगा, उनकी जिंदगी खुशगवार होगी, फिर सुर फूंक दीया जाएगा, जो शख़्स इसे सुनेगा वह अपने गर्दन को एक जानिब झुकाएगा और एक जानिब उठाएगा”, फ़रमाया: “सबसे पहले इसे वह शख़्स सुनेगा जो अपने ऊटों के हौज़ की लिपाई कर रहा होगा वह बेहोश हो जाएगा और तमाम लोग बेहोश हो जाएँगे, फिर अल्लाह शबनम की तरह बारिश बरसाएगा जिस से लोगों के जिस्म उग (जी) पड़ेंगे, फिर दूसरी मर्तबा सुर फूंका जाएगा तो वह अचानक खड़े हो कर देखने लगेंगे, फिर कहा जाएगा लोगो! अपने रब की तरफ आओ, (फरिश्तो से कहा जाएगा) उन्हें खड़ा करो क्योंकि उन से हिसाब लिया जाएगा, फिर (फरिश्तो से कहा जाएगा) आग वालो (जहन्नमियों) को निकाल लाओ, (अलग कर दो) कहा जाएगा: कितने में से कितने? कहा जाएगा हज़ार में से नौ सौ निनान्वे”, फ़रमाया: “ये वह दिन है जो बच्चो को बुढा कर देगा, और यह वह दिन है जिस दिन पिंडली से कपड़ा हटा दीया जाएगा”| और मुआविया (र) से मरवी हदीस: “हिजरत मुन्कतेअ नहीं होगी” بَاب الاسْتِغْفَار وَالتَّوْبَة (बाब इस्तिग्फार और तौबा का बयान) में ज़िक्र की गई है. (मुस्लिम)

رواه مسلم (116 / 2940)، (7381) 0 حديث معاوية : لا تنقطع الهجرة ، تقدم (2346)

وهذا الباب خال عن: الفصل الثَّانِي والثالث

यह बाब दूसरी और तीसरी फस्ल से खाली है

بَاب النفخ فِي الصُّور • सुर फूंकने का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٥٥٢١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا بَيْنَ النَّفْخَتَيْنِ أَرْبَعُونَ» قَالُوا: يَا أَبَا هُرَيْرَةَ أَرْبَعُونَ يَوْمًا؟ قَالَ: أَبَيْتُ. قَالُوا: أَرْبَعُونَ شَهْرًا؟ قَالَ: أَبَيْتُ. قَالُوا: أَرْبَعُونَ سَنَةً؟ قَالَ: أَبَيْتُ. «ثُمَّ يَنْزِلُ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَيَنْبُتُونَ كَمَا يَنْبُتُ الْبَقْلُ» قَالَ: «وَلَيْسَ مِنَ الْإِنْسَانِ شَيْءٌ لَا يَبْلَى إِلَّا عَظْمًا وَاحِدًا وَهُوَ عَجْبُ الذَّنَبِ وَمِنْهُ يُرَكَّبُ الْخَلْقُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ قَالَ: «كُلُّ ابْنِ آدَمَ يَأْكُلُهُ التُّرَابُ إِلَّا عَجْبَ الذَّنَبِ مِنْهُ خُلِقَ وَفِيهِ يركب»

5521. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दो मर्तबा सुर फूंके जाने का दरमियानी वक्फा चालीस होगा”, उन्होंने कहा: अबू हुरैरा! चालीस दिन? उन्होंने कहा: मुझे मालुम नहीं, उन्होंने पूछा: चालीस माह? उन्होंने ने फ़रमाया: मैं नहीं जानता, उन्होंने कहा: चालीस साल? उन्होंने कहा: मैं नहीं जानता”, फिर अल्लाह आसमान से पानी नाज़िल फरमाएगा तो वह इस तरह जी उठेंगे जिस तरह सब्जियाँ उग आती है”, फ़रमाया: “इंसान की एक हड्डी के सिवा बाकी सारा जिस्म गल सड़ जाएगा वह रीढ़ की हड्डी का आखिरी सिरा है, और रोज़ ए कियामत तमाम मखलूक इसी से दोबारा बनाई जाएगी”| और सहीह मुस्लिम की रिवायत में है, फ़रमाया: “इंसान को मिट्टी खा जाएगी, अलबत्ता रीढ़ की हड्डी का आखिरी सिरा बाकी रह जाएगा, इसी से वह पैदा किया गया और इसी से दोबारा बनाया जाएगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (4814) و مسلم (141 / 2955، (7414) و الرواية الثانية 142 / 2955)، (7415)

٥٥٢٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يَقْبِضُ اللَّهُ الْأَرْضَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيَطْوِي السَّمَاءَ بِيَمِينِهِ ثُمَّ يَقُولُ: أَنَا الْمَلِكُ أَيْنَ مُلُوكُ الْأَرْضِ؟ ". مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5522. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रोज़ ए कियामत अल्लाह ज़मीन को मुठ्ठी में ले लेगा और आसमानों को अपने दाएँ हाथ में लपेट लेगा फिर फरमाएगा मैं बादशाह हूँ ज़मीन के बादशाह कहाँ है?”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (4812) و مسلم (23 / 2787)، (7050)

٥٥٢٣ - (صَحِيح) وَعَن عبد الله بن عَمْرو قَالَ: قا ل رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يَطْوِي اللَّهُ السَّمَاوَاتِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ثُمَّ يَأْخُذُهُنَّ بِيَدِهِ الْيُمْنَى ثُمَّ يَقُولُ: أَنَا الْمَلِكُ أَيْنَ الْجَبَّارُونَ؟ أَيْنَ الْمُتَكَبِّرُونَ؟ ثُمَّ يَطْوِي الْأَرَضِينَ بِشِمَالِهِ - وَفِي رِوَايَة:

يَأْخُذُهُنَّ [ص:١٥٣ بِيَدِهِ الْأُخْرَى - ثُمَّ يَقُولُ: أَنَا الْمَلِكُ أينَ الجبَّارونَ أينَ المتكبِّرونَ؟ ". رَوَاهُ مُسلم

5523. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रोज़ ए कियामत अल्लाह आसमानों को लपेट लेगा, फिर उन्हें अपने दाएँ हाथ में पकड़ लेगा, फिर फरमाएगा में बादशाह हूँ, जाबिर व मुतकब्बर कहाँ है? फिर वह ज़मीनों को अपने बाएँ हाथ में लपेट लेगा, एक दूसरी रिवायत में है: “इनको अपने दूसरे हाथ में ले लेगा, फिर फरमाएगा में बादशाह हूँ जाबिर व मुतकब्बर कहाँ है?”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (24 / 2788)، (7051)

٥٥٢٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: جَاءَ حَبْرٌ مِنَ الْيَهُودِ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ إِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ السَّمَاوَاتِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَى أُصْبُعٍ وَالْأَرَضِينَ عَلَى أُصْبُعٍ وَالْجِبَالَ وَالشَّجَرَ عَلَى أُصْبُعٍ وَالْمَاءَ وَالثَّرَى عَلَى أُصْبُعٍ وَسَائِرَ الْخَلْقِ علىأصبع ثُمَّ يَهُزُّهُنَّ فَيَقُولُ: أَنَا الْمَلِكُ أَنَا اللَّهُ. فَضَحِكَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَعَجُّبًا مِمَّا قَالَ الْحَبْرُ تَصْدِيقًا لَهُ. ثُمَّ قَرَأَ: (وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالسَّماوَاتُ مَطْوِيَّاتٌ بِيَمِينِهِ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يشركُونَ)»» مُتَّفق عَلَيْهِ

5524. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक यहूदी आलिम नबी ﷺ के पास आया तो उस ने कहा मुहम्मद! रोज़ ए कियामत अल्लाह आसमानों को एक ऊँगली पर रोक लेगा, ज़मीनों को एक ऊँगली पर, पहाड़ो और दरख्तों को एक ऊँगली पर, पानी व मिट्टी को एक ऊँगली पर, और बाकी सारी मखलूक को एक ऊँगली पर रोक लेगा, फिर उन्हें बुलाएगा और फरमाएगा, मैं बादशाह हूँ, मैं अल्लाह हूँ, रसूलुल्लाह ﷺ इस बात पर ताज्जुब करते हुए और उसकी तस्दीक करते हुए हंस दिए, फिर आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाई: “उन्होंने अल्लाह की क़दर न की जिस तरह उसकी क़दर करने का हक़ था, और रोज़ ए कियामत तमाम ज़मीन उसकी मुट्ठी में होगी और आसमान उस के दाएँ हाथ में लपटे हुए होंगे, पाक है वह ज़ात और बुलंद है उस से जो वह शिर्क करते हैं”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (4811) و مسلم (19 / 2786)، (7046)

٥٥٢٥ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ قَوْلِهِ: (يَوْمَ تُبَدَّلُ الأرضُ غيرَ الأَرْض والسَّماواتُ)»» فَأَيْنَ يَكُونُ النَّاسُ يَوْمَئِذٍ؟ قَالَ: «عَلَى الصِّرَاطِ» . رَوَاهُ مُسلم

5525. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से अल्लाह तआला के इस फरमान: “इस रोज़ ज़मीन को दूसरी ज़मीन से बदल दीया जाएगा”, के मुतल्लिक दरियाफ्त किया के इस रोज़ लोग कहाँ होंगे? फ़रमाया: “पुल पर”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (29 / 2791)، (7056)

٥٥٢٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ مُكَوَّرَانِ يَوْمَ الْقِيَامَة» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

5526. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "रोज़ ए कियामत सूरज और चाँद को लपेट दीया जाएगा"| (बुखारी)

رواه البخارى (3200)

بَاب النفخ فِي الصُّور • सुर फूंकने का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٥٥٢٧ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كَيْفَ أَنْعَمُ وَصَاحِبُ الصُّور قَدِ الْتَقَمَهُ وَأَصْغَى سَمْعَهُ وَحَنَى جَبْهَتَهُ يَنْتَظِرُ مَتَى يُؤْمَرُ بِالنَّفْخِ» . فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَمَا تَأْمُرُنَا؟ قَالَ: " قُولُوا: حَسْبُنَا اللَّهُ ونعمَ الْوَكِيل ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5527. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मैं कैसे खुश रह सकता हो जबकि सुर (फूंकने) वाले ने इस (सुर) को अपने मुंह के साथ लगा रखा है, अपने कान और अपने पेशानी को झुका रखा है और वह इंतज़ार कर रहा है के इसे फूंक मारने का कब हुक्म मिलता है", सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप हमें क्या हुक्म फरमाते हैं? आप ﷺ ने फ़रमाया: "कहो, हमारे लिए अल्लाह काफी है और वह बेहतरीन कारसाज़ है"| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (2431 وقال : حسن ، 3243) * عطية العوفى ضعيف

٥٥٢٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الصُّورُ قَرْنٌ يُنْفَخُ فِيهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالدَّارِمِيُّ

5528. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "सुर एक सिंग है जिस में फूंक मारी जाएगी"| (सहीह)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (2430 وقال : حسن صحيح) و ابوداؤد (4742) و الدارمى (2 / 325 ح 2801)

بَاب النفخ فِي الصُّور • सुर फूंकने का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٥٥٢٩ - (صَحِيح) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ فِي قَوْلِهِ تَعَالَى (فإذا نُقر فِي النَّاقور)»» : الصّور قَالَ: و (الرجفة)»» : النَّفْخَةُ الْأُولَى وَ (الرَّادِفَةُ)»» : الثَّانِيَةُ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ فِي تَرْجَمَة بَاب

5529. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने अल्लाह तआला के फरमान (فَإِذَا نُقِرَ فِيْ النَّاقُوْرِ) की तफसीर में फ़रमाया (الرَّاجِفَةُ) से पहली बार सुर फूंका जाना जबकि (الرَّادِفَةُ) से दूसरी बार सुर फूंका जाना मुराद है| इमाम बुखारी रहिमहुल्लाह ने इसे تَرْجَمَة بَاب (तरजुमतुल बाब) में रिवायत किया है| (बुखारी)

رواه البخاری (کتاب الرقاق باب 43 قبل ح 6517 تعلیقًا) * اسنده ابن جریر فی تفسیره (29 / 95) و سنده ضعیف ، علی بن ابی طلحة عن ابن عباس : منقطع کما تقدم 5117)

٥٥٣٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» سَعِيدٍ قَالَ: ذَكَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَاحِبُ الصُّورِ وَقَالَ: «عَن يَمِينه جِبْرِيل عَن يسَاره مِيكَائِيل»

5530. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने सुर वाले (इस्राफील (अस)) का ज़िक्र किया और फ़रमाया: “उस के दाएँ जिब्राइल अलैहिस्सलाम और उस के बाएँ मिकाइल अलैहिस्सलाम होंगे”| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواہ رزین (لم اجده) [و ابوداؤد (3999)] * عطية العوفی ضعیف

٥٥٣١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي»» رزين الْعقيليّ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ كَيْفَ يُعِيدُ الله الْخلق؟ مَا آيَةُ ذَلِكَ فِي خَلْقِهِ؟ قَالَ: «أَمَا مَرَرْتَ بِوَادِي قَوْمِكَ جَدْبًا ثُمَّ مَرَرْتَ بِهِ يَهْتَزُّ خَضِرًا؟» قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: " فَتِلْكَ آيَةُ اللَّهِ فِي خلقه (كَذَلِك يحيي اللَّهُ الْمَوْتَى)»» رَوَاهُمَا رزين

5531. अबू रजिन उकय्ली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! अल्लाह मखलूक को दोबारा कैसे पैदा फरमाएगा, और उसकी मखलूक में कौन सी निशानियां (मौजूद) है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम कभी अपने कौम की खुश्क व सख्त वादी से गुज़रे हो? फिर तुम वहां से गुज़रते हो तो वह सरसब्ज़ व शादाब लहलहा रही होती है?” मैंने अर्ज़ किया: जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो अल्लाह की उसकी मखलूक में निशानी है, अल्लाह इसी तरह मुर्दों को जिंदा करेगा”, दोनों अहादीस रजिन ने नकल की है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه رزین (لم اجده) [و احمد (4 / 11 ، 12 ح 16294 ، 16297)

بَاب الْحَشْر • हश्र का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٥٥٣٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يُحْشَرُ النَّاسُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَى أَرْضٍ بَيْضَاءَ عَفْرَاءَ كَقُرْصَةِ النَّقِيِّ لَيْسَ فِيهَا عَلَمٌ لأحدٍ» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5532. सहल बिन साद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "लोगो को रोज़ ए कियामत सफ़ेद लाल पड़ती हुई ज़मीन पर जमा किया जाएगा, वह (ज़मीन) मेदे की रोटी की तरह होगी उस में किसी के लिए कोई निशान नहीं होगा"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6521) و مسلم (28 / 2790)، (7055)

٥٥٣٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَكُونُ الْأَرْضُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ خُبْزَةً وَاحِدَةً يَتَكَفَّؤُهَا الْجَبَّارُ بِيَدِهِ كَمَا يَتَكَفَّأُ أَحَدُكُمْ خُبْزَتَهُ فِي السّفر نُزُلاً لِأَهْلِ الْجَنَّةِ» . فَأَتَى رَجُلٌ مِنَ الْيَهُود. فَقَالَ: بَارَكَ الرَّحْمَنُ عَلَيْكَ يَا أَبَا الْقَاسِمِ أَلَا أخبرُك بِنُزُلِ أهل الجنةِ يومَ القيامةِ؟ قَالَ: «بَلَى» . قَالَ: تَكُونُ الْأَرْضُ خُبْزَةً وَاحِدَةً كَمَا قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَنَظَرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَيْنَا ثُمَّ ضَحِكَ حَتَّى بَدَتْ نَوَاجِذُهُ ثُمَّ قَالَ: أَلَا أُخْبِرُكَ بِأَدَامِهِمْ؟ بَالَامٌ وَالنُّونُ. قَالُوا: وَمَا هَذَا؟ قَالَ: ثَوْرٌ وَنُونٌ يَأْكُلُ مِنْ زَائِدَةِ كَبِدِهِمَا سَبْعُونَ ألفا. مُتَّفق عَلَيْهِ

5533. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "रोज़ ए कियामत ज़मीन एक रोटी की तरह होगी जिसे अल जब्बार (अल्लाह तआला) अहले जन्नत की मेज़बानी के लिए अपने हाथ से इस तरह उलटे पलटेगा जिस तरह तुम में से कोई दौरान ए सफ़र अपनी रोटी उलट पलट करता है", इतने में एक यहूदी आया और उस ने कहा: अबुल कासिम! रहमान आप पर बरकत नाज़िल फरमाए, क्या मैं आप को रोज़ ए कियामत अहले जन्नत की मेज़बानी के मुतल्लिक बताऊँ? आप ﷺ ने फ़रमाया: "ज़रूर बताओ", उस ने कहा: ज़मीन एक रोटी की तरह होगी जिस तरह नबी ﷺ ने फ़रमाया: फिर नबी ﷺ ने हमारी तरफ देखा और हंसने लगे हत्ता के आप की दाढ़े नज़र आने लगी, फिर इस (यहूदी) ने कहा: क्या मैं आप को उन के सालन के मुतल्लिक न बताऊँ? (इस ने खुद ही बताया) बालम और नून, सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने कहा: यह क्या चीज़े है? उस ने कहा बेल और मछली, इन दोनों की कलेजी के साथ गोश्त का टुकड़ा जो के अलैदा लटक रहा होता है, उस के साथ सत्तर हज़ार लोग खाएंगे"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6520) و مسلم (30 / 2792)، (7057)

٥٥٣٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يُحْشَرُ النَّاسُ عَلَى ثَلَاثِ طَرَائِقَ: رَاغِبِينَ

رَاهِبِينَ وَاثْنَانِ عَلَى بَعِيرٍ وَثَلَاثَةٌ عَلَى بَعِيرٍ وَأَرْبَعَةٌ عَلَى بَعِيرٍ [ص:١٥٣ وَعَشَرَةٌ عَلَى بَعِيرٍ وَتَحْشُرُ بَقِيَّتَهُمُ النَّارُ. تَقِيلُ مَعَهُمْ حَيْثُ قَالُوا وَتَبِيتُ مَعَهُمْ حَيْثُ باتو وَتُصْبِحُ مَعَهُمْ حَيْثُ أَصْبَحُوا وَتُمْسِي مَعَهُمْ حَيْثُ يمسوا ". مُتَّفق عَلَيْهِ

5534. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “लोग तीन फिरको में जमा किए जाएँगे, रगबत करने और डरने वाले, एक ऊंट पर दो (सवार) होंगे, एक ऊंट पर तीन होंगे ,एक ऊंट पर चार होंगे, और एक ऊंट पर दस होंगे, जबकि बाकी लोगों को आग जमा करेगी, जब वह दोपहर का सोना करेंगे तो वह उन के साथ दोपहर का सोना करेगी, जब वह रात गुजारेंगे तो वह भी उन के साथ रात गुज़ारेगी, जहाँ वह सुबह करेंगे वह सुबह करेगी और जहाँ वह शाम करेंगे वह (शाम के वक़्त) उन के साथ शाम करेगी”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6522) و مسلم (59 / 2861)، (7202)

٥٥٣٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّكُمْ مَحْشُورُونَ حُفَاةً عُرَاةً غُرْلًا» ثُمَّ قَرَأَ: (كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيدُهُ وَعْدًا عَلَيْنَا إِنَّا كُنَّا فاعلين)»» وَأَوَّلُ مَنْ يُكْسَى يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِبْرَاهِيمُ وَإِنَّ نَاسًا مِنْ أَصْحَابِي يُؤْخَذُ بِهِمْ ذَاتَ الشِّمَالِ فَأَقُولُ: أُصَيْحَابِي أُصَيْحَابِي فَيَقُولُ: إِنَّهُمْ لَنْ يَزَالُوا مرتدين على أَعْقَابهم مذْ فَارَقْتهمْ. فَأَقُول كَمَا قَالَ الْعَبْدُ الصَّالِحُ: (وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَا دمت فيهم)»» إِلَى قَوْله (الْعَزِيز الْحَكِيم)»» مُتَّفق عَلَيْهِ

5535. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम नंगे पाँव नंगे बदन और बेखतना उठाए जाओगे”, फिर आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाई: “जैसे के हमने पैदा किया था पहली मर्तबा हम ऐसे ही लोताएंगे, यह हमारी तरफ से एक वादा है जिसे हम पूरा कर के रहेंगे”, और रोज़ ए कियामत सबसे पहले इब्राहीम अलैहिस्सलाम को लिबास पहनाया जाएगा और मेरे असहाब से बाज़ को जहन्नम में ले जाने के लिए पकड़ा जाएगा तो मैं कहूँगा: यह मेरे असहाब है, यह मेरे असहाब है, तो वह कहेगा आप के बाद यह लोग अपने एड़ियो के बल फिर गए थे तो मैं भी वही कहूँगा जो नेक बंदे इसा अलैहिस्सलाम ने कहा था: “وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَا دمت فيهم ....الْعَزِيز الْحَكِيم (जब तक मैं इनमें था तो मैं इन पर निगरान था ..... अज़ीज़ अल हकिम) ”, तक| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (3349) و مسلم (58 / 2860)، (7201)

٥٥٣٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «يُحْشَرُ النَّاسُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حُفَاةً عُرَاةً غُرْلًا» . قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ الرِّجَالُ وَالنِّسَاءُ جَمِيعًا يَنْظُرُ بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ؟ فَقَالَ: «يَا عَائِشَةُ الْأَمْرُ أَشَدُّ مِنْ أَنْ يَنْظُرَ بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5536. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “लोग रोज़ ए कियामत नंगे पाँव, नंगे बदन और बिना खतना उठाए जाएँगे”, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मर्द और औरतें

इकट्ठे होंगे, वह एक दूसरे को देखेंगे? आप ﷺ ने फ़रमाया: “आइशा वह (कियामत का) मुआमला उस से बहोत संगीन होगा के वह एक दूसरे को देखे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6527) و مسلم (56 / 2859)، (7198)

٥٥٣٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ أَنَّ رَجُلًا قَالَ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ كَيْفَ يُحْشَرُ الْكَافِرُ عَلَى وَجْهِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ؟ قَالَ: «أَلَيْسَ الَّذِي أَمْشَاهُ عَلَى الرِّجْلَيْنِ فِي الدُّنْيَا قَادِرًا عَلَى أَنْ يُمْشِيَهُ عَلَى وَجْهِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ؟» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5537. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के नबी! काफ़िर को रोज़ ए कियामत उस के चेहरे के बल कैसे चलाया जाएगा? आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या वह ज़ात जिस ने इसे दुनिया में पाँव पर चलाया उस पर कादिर नहीं के वह रोज़ ए कियामत इसे उस के चेहरे के बल चलाए ?”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (4760) ومسلم (2806)، (7087)

٥٥٣٨ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " يَلْقَى إِبْرَاهِيمُ أَبَاهُ آزَرَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَعَلَى وَجْهِ آزَرَ قَتَرَةٌ وَغَبَرَةٌ فَيَقُولُ لَهُ إِبْرَاهِيمُ: أَلَمْ أَقُلْ لَكَ: لَا تَعْصِنِي؟ فَيَقُولُ لَهُ أَبُوهُ: فَالْيَوْمَ لَا أَعْصِيكَ. فَيَقُول إِبراهيم: يَا رب إِنَّك وَعَدتنِي أَلا تخزني يَوْمَ يُبْعَثُونَ فَأَيُّ خِزْيٍ أَخْزَى مِنْ أَبِي الْأَبْعَدِ فَيَقُولُ اللَّهُ تَعَالَى: إِنِّي حَرَّمْتُ الْجَنَّةَ عَلَى الْكَافِرِينَ ثُمَّ يُقَالُ لِإِبْرَاهِيمَ: مَا تَحْتَ رِجْلَيْكَ؟ فَيَنْظُرُ فَإِذَا هُوَ بِذِيخٍ مُتَلَطِّخٍ فَيُؤْخَذُ بقوائمه فَيُلْقى فِي النَّار ". رَوَاهُ البُخَارِيّ

5538. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इब्राहीम अलैहिस्सलाम रोज़ ए कियामत अपने वालिद आज़र से मिलेंगे तो आज़र के चेहरे पर सियाही और गुबार होगा, इब्राहीम अलैहिस्सलाम इसे फरमाइएगे: क्या मैंने तुम्हें नहीं कहा था के मेरी मुखालिफत न करो, उनका वालिद उन से कहेगा: आज में तुम्हारी मुखालिफ़त व नाफ़रमानी नहीं करता, इब्राहीम अलैहिस्सलाम अर्ज़ करेंगे: रब जी! तूने मुझ से वादा किया था के तू रोज़ ए कियामत मुझे रुसवा नहीं करेगा, उन से ज़्यादा रुसवाई क्या है की मेरा वालिद (तेरी रहमत से) सबसे ज़्यादा दूर है, उस पर अल्लाह तआला फरमाएगा: मैंने जन्नत काफिरों पर हराम कर दी है, फिर इब्राहीम अलैहिस्सलाम से कहा जाएगा: तुम्हारे क़दमों तले क्या है वह देखेंगे तो वहां (आज़र के बजाए) एक घने बालो वाला बिज्जू (लकड़बग्धा) होगा, जो अपने गलाज़त के साथ लतपत होगा उस को उस के पाँव से पकड़ कर जहन्नम में डाल दीया जाएगा”| (बुखारी)

رواه البخاری (3350)

٥٥٣٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَعْرَقُ النَّاسُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حَتَّى يَذْهَبَ عَرَقُهُمْ فِي

الْأَرْضِ سَبْعِينَ ذِرَاعًا وَيُلْجِمُهُمْ حَتَّى يَبْلُغَ آذَانَهُمْ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5539. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रोज़ ए कियामत लोग पसीने में शराबोर होंगे हत्ता के उनका पसीना ज़मीन पर सत्तर हाथ तक फ़ैल जाएगा, और वह उन के मुंह तक होता हुआ उन के कानों तक पहुँच जाएगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6532) و مسلم (61 / 2863)، (7205)

٥٥٤٠ - (صَحِيح) وَعَنِ الْمِقْدَادِ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «تُدْنَى الشَّمْسُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنَ الْخَلْقِ حَتَّى تَكُونَ مِنْهُمْ كَمِقْدَارِ مِيلٍ فَيَكُونُ النَّاسُ عَلَى قَدْرِ أَعْمَالِهِمْ فِي الْعَرَقِ فَمِنْهُمْ مَنْ يَكُونُ إِلَى كَعْبَيْهِ وَمِنْهُمْ مَنْ يَكُونُ إِلَى رُكْبَتَيْهِ وَمِنْهُمْ مَنْ يَكُونُ إِلَى حَقْوَيْهِ وَمِنْهُمْ مَنْ يُلْجِمُهُمُ الْعَرَقُ إِلْجَامًا» وَأَشَارَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِيَدِهِ إِلَى فِيهِ. رَوَاهُ مُسلم

5540. मिकदाद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “रोज़ ए कियामत सूरज मखलूक के करीब हो जाएगा हत्ता के वह मिल की मुसाफ़त के बराबर उन के करीब होगा, और लोग अपने आमाल के मुताबिक पसीने में (दुबे) होंगे, उनमें से किसी के टखनो तक होगा, किसी के घुटनों तक होगा, किसी के आज़ार बांधने की जगह तक और बाज़ के मुंह तक होगा”, और रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने हाथ से अपने मुंह की तरफ इरशाद किया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (62 / 2864)، (7206)

٥٥٤١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " يَقُولُ اللَّهُ تَعَالَى: يَا آدَمُ فَيَقُولُ: لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ وَالْخَيْرُ كُلُّهُ فِي يَدَيْكَ. قَالَ: أَخْرِجْ بَعْثَ النَّارِ. قَالَ: وَمَا بَعْثُ النَّارِ؟ قَالَ: مِنْ كُلِّ أَلْفٍ تِسْعَمِائَةٍ وَتِسْعَةً وَتِسْعِينَ فَعِنْدَهُ يَشِيبُ الصَّغِيرُ (وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكَارَى وَمَا هُمْ بِسُكَارَى وَلَكِنَّ عَذَابَ [ص:١٥٣ اللَّهِ شديدٌ)»» قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَأَيُّنَا ذَلِكَ الْوَاحِدُ؟ قَالَ: «أَبْشِرُوا فَإِنَّ مِنْكُمْ رَجُلًا وَمِنْ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ أَلْفٌ» ثُمَّ قَالَ: «وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ أَرْجُو أَنْ تَكُونُوا رُبُعَ أَهْلِ الْجَنَّةِ» فَكَبَّرْنَا. فَقَالَ: «أَرْجُو أَنْ تَكُونُوا ثُلُثَ أَهْلِ الْجَنَّةِ» فَكَبَّرْنَا فَقَالَ: «أَرْجُو أَنْ تَكُونُوا نِصْفَ أَهْلِ الْجَنَّةِ» فَكَبَّرْنَا قَالَ: «مَا أَنْتُمْ فِي النَّاسِ إِلَّا كَالشَّعْرَةِ السَّوْدَاءِ فِي جِلْدِ ثَوْرٍ أَبْيَضَ أَوْ كشعرة بَيْضَاءَ فِي جِلْدِ ثَوْرٍ أَسْوَدَ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5541. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह तआला फरमाएगा: ए आदम वह अर्ज़ करेंगे: हाज़िर हूँ, तैयार हूँ, और सारी खैर तेरे हाथो में है, वह फरमाएगा: जहन्नम जाने वालो को निकाल दो, वह अर्ज़ करेंगे जहन्नम जाने वाले कितने है? वह फरमाएगा: हर हज़ार में से नौ सौ निनान्वे, इस वक़्त बच्चे बूढ़े हो जाएँगे, हर हमल वाली अपना हमल गिरा देगी, और तुम लोगों को मदहोशी के आलम में देखोगे, हालाँकि वह मदहोश नहीं होंगे, बल्कि अल्लाह का अज़ाब शदीद होगा”, सहाबा रदियल्लाहु

अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हम में से वह एक कौन होगा? आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हें बशारत हो, क्योंकि वह एक आदमी तुम में से होगा, जबकि याजूज माजूज हज़ार होंगे”, फिर फ़रमाया: “उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! मुझे उम्मीद है के एक चोथाई जन्नती तुम होगे”, हमने (खुश हो कर) नारा ए तकबीर बुलंद किया, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम जन्नत में एक तिहाई होगे”, हमने फिर नारा ए तकबीर बुलंद किया, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं उम्मीद करता हूँ कि आधे जन्नती तुम होगे”, हमने (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहा, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम तमाम लोगों में इतने होगे जितने सफ़ेद बेल की जिल्द पर एक सियाह बाल या किसी सियाह बेल की जल्द पर एक सफ़ेद बाल होता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3348) و مسلم (379 / 222)، (532)

٥٥٤٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «يَكْشِفُ رَبُّنَا عَنْ سَاقِهِ فَيَسْجُدُ لَهُ كُلُّ مُؤْمِنٍ وَمُؤْمِنَةٍ وَيَبْقَى مَنْ كَانَ يَسْجُدُ فِي الدُّنْيَا رِيَاءً وَسُمْعَةً فَيَذْهَبُ لِيَسْجُدَ فَيَعُودُ ظَهْرُهُ طَبَقًا وَاحِدًا» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5542. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “हमारा रब (रोज़ ए कियामत) अपने पिंडली ज़ाहिर करेगा तो हर मोमिन मर्द और मोमिन औरत उस के लिए सजदाह रेज़ हो जाएँगे, सिर्फ वही बाकी रह जाएगा जो दुनिया में रिया और शोहरत की खातिर सजदाह किया करता था, वह सजदाह करना चाहेगा लेकिन उसकी कमर तख्ता बन जाएगी (और वह सजदाह के लिए झुक नहीं सकेगी)“| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (4919) و مسلم (لم اجده ، و انظر ح 5579 من هذا الكتاب)

٥٥٤٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَيَأْتِي الرَّجُلُ الْعَظِيمُ السَّمِينُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لَا يَزِنُ عندَ الله جَناحَ بعوضة» . وَقَالَ: " اقرؤوا (فَلَا نُقيمُ لَهُم يومَ القيامةِ وَزْناً)»» مُتَّفق عَلَيْهِ

5543. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रोज़ ए कियामत एक मोटा ताज़ा शख़्स आएगा, अल्लाह के यहाँ वह मच्छर के पर के बराबर भी नहीं होगा”, और फ़रमाया: “ये आयत पढ़ो: فَلَا نُقيمُ لَهُم يومَ القيامةِ وَزْناً (रोज़ ए कियामत हम उनका कोई वज़न नहीं करेंगे) ”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (4729) و مسلم (18 / 2785)، (7045)

بَاب الْحَشْر • हश्र का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٥٥٤٤ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي»» هُرَيْرَةَ قَالَ: قَرَأَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَذِهِ الْآيَةَ: (يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أخبارَها)»» قَالَ:»» أَتَدْرُونَ مَا أَخْبَارُهَا؟ " قَالُوا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: " فَإِنَّ أَخْبَارَهَا أَنْ تَشْهَدَ عَلَى كلِّ عَبْدٍ وَأَمَةٍ بِمَا عَمِلَ عَلَى ظَهْرِهَا أَنْ تَقول: عمِلَ عَليَّ كَذَا وَكَذَا يومَ كَذَا وَكَذَا ". قَالَ: «فَهَذِهِ أَخْبَارُهَا» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ غَرِيبٌ

5544. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाई: “जिस रोज़ वह ज़मीन अपने खबरे बता देगी”, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम जानते हो उसकी खबरे क्या है?” उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस की खबरे यह है के वह हर मर्द और हर औरत के मुतल्लिक उस के तमाम आमाल के मुतल्लिक गवाही देगी जो उस ने उसकी पुश्त पर किए होंगे, वह कहेगी उस ने फलां फलां दिन मुझ पर फलां फलां काम किया था”, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये उसकी खबरे है”| अहमद तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه احمد (2 / 374 ح 8854) و الترمذی (2429) * یحیی بن ابی سلیمان ضعیف ضعفه الجمهور (انظر نیل المقصود : 893)

٥٥٤٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا مِنْ أَحَدٍ يَمُوتُ إِلَّا نَدِمَ» . قَالُوا: وَمَا نَدَامَتُهُ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: «إِنْ كَانَ مُحْسِنًا نَدِمَ أَنْ لَا يَكُونَ ازْدَادَ وَإِنْ كَانَ مُسِيئًا نَدِمَ أَنْ لَا يكون نزع» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5545. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स भी फौत होता है तो वह हसरत व अफ़सोस करता है”, उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! उसकी हसरत अफ़सोस क्या है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर वह नेकोकार था तो वह अफ़सोस करता है की उस ने ज़्यादा नेकियाँ क्यों नहीं की, और अगर वह गुनाहगार था तो वह अफ़सोस करता है की उस ने गुनाह क्यों न छोड़े”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف جذا ، رواه الترمذی (2403) * یحیی بن عبید الله : متروک (تقدم : 5323)

٥٥٤٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يُحْشَرُ النَّاسُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ثَلَاثَةَ أَصْنَافٍ: صِنْفًا مُشَاةً وَصِنْفًا رُكْبَانًا وَصِنْفًا عَلَى وُجُوهِهِمْ " قِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَكَيْفَ يَمْشُونَ عَلَى وُجُوهِهِمْ؟ قَالَ: «إِنَّ الَّذِي أَمْشَاهُمْ عَلَى أَقْدَامِهِمْ قَادِرٌ عَلَى أَنْ يُمْشِيَهُمْ عَلَى وُجُوهِهِمْ أَمَا إِنَّهُمْ يَتَّقُونَ بِوُجُوهِهِمْ كُلَّ حَدَبٍ وَشَوْكٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5546. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रोज़ ए कियामत लोगों को तीन इक्साम में जमा किया जाएगा, एक किस्म पैदल चलने वालो की होगी, एक सवारों की और एक गिरोह अपने चेहरो के बल चल रहा होगा”, अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल! वह अपने चेहरो के बल कैसे चलेंगे? आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिस ज़ात ने उन्हें उन के कदमो पर चलाया वह उस पर कादिर है के वह उन्हें चेहरो के बल चला दे, सुनो! वह (कुफ्फार) हर ऊँची जगह और कांटे (हर तकलीफदेह चीज़) से अपने चेहरो के ज़रिए अपना बचाव करेंगे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (3142 وقال : حسن) * على بن زيد بن جدعان : ضعيف ، و شيخه مجهول و لاصل الحديث شواهد عند البخارى (6522) و مسلم (2861)، (7202) وغيرهما

٥٥٤٧ - (حسن) وَعَنِ»» ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَنْ سَرَّهُ أَنْ يَنْظُرَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ كَأَنَّهُ رَأْيُ عَيْنٍ فليَقرأْ: (إِذا الشَّمسُ كُوِّرَتْ)»» و (إِذا السَّماءُ انفطرَتْ)»» و (إِذا السَّماءُ انشقَّتْ)»» رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ

5547. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स रोज़ ए कियामत का आंखो देखा मंजर देखना पसंद करता हो तो वह सूरतुल तक्वीर, अनफतार और सूरतुल अंशकाक की तिलावत करे”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (2 / 27 ح 4806) و الترمذى (3333)

बَاب الْحَشْر • हश्र का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٥٥٤٨ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي»» ذَرٍّ قَالَ: إِنَّ الصَّادِقَ الْمَصْدُوقَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَدَّثَنِي: " أَنَّ النَّاسَ يُحْشَرُونَ ثَلَاثَةَ أَفْوَاجٍ: فَوْجًا رَاكِبِينَ طَاعِمِينَ كَاسِينَ وفوجا تسحبنهم الْمَلَائِكَةُ عَلَى وُجُوهِهِمْ وَتَحْشُرُهُمُ النَّارُ وَفَوْجًا يَمْشُونَ وَيَسْعَوْنَ وَيُلْقِي اللَّهُ الْآفَةَ عَلَى الظَّهْرِ فَلَا يَبْقَى حَتَّى إِنَّ الرَّجُلَ لَتَكُونُ لَهُ الْحَدِيقَةُ يُعْطِيهَا بِذَاتِ الْقَتَبِ لَا يَقْدِرُ عَلَيْهَا ". رَوَاهُ النَّسَائِيّ

5548. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अल सादिक अल मस्दुक ﷺ ने मुझे हदीस बयान की के, “ लोगों को तीन गिरोहों में जमा किया जाएगा, एक गिरोह के लोग सवारियों पर होंगे, खाते पीते और खुश हाल होंगे, एक गिरोह ऐसा होगा के फ़रिश्ते उन्हें उन के चेहरो के बल घंसिट रहे होंगे, और वह उन्हें (जहन्नम की) आग में

जमा करेंगे, और एक गिरोह होगा के वह चल रहे होंगे और दोड़ रहे होंगे, और अल्लाह सवारियों पर कोई आफत भेजेगा तो कोई सवारी बाकी नहीं रहेगी, हत्ता के आदमी का बाग़ होगा वह इसे सवारी के बदले में देगा लेकिन वह उस पर कादिर नहीं होगा”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه النسائى (4 / 116117 ح 2088) [و صححه الحاكم (2 / 367 ، 4 / 564) و تعقبه الذهبى مرة]

بَاب الْحساب وَالْقصاص وَالْمِيزَان • हिसाब किसास और मीज़ान का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٥٥٤٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَيْسَ أَحَدٌ يُحَاسَبُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِلَّا هَلَكَ» . قلتُ: أوَ ليسَ يقولُ اللَّهُ: (فسوْفَ يُحاسبُ حسابا يَسِيرا)»» فَقَالَ: «إِنَّمَا ذَلِكَ الْعَرْضُ وَلَكِنْ مَنْ نُوقِشَ فِي الْحساب يهلكُ» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5549. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “रोज़ ए कियामत जिस किसी से हिसाब लिया गया वह मारा गया”, मैंने अर्ज़ किया: क्या अल्लाह ने यह नहीं फरमाया: “(जिस किसी को नाम ए आमाल उस के दाएँ हाथ में दीया जाएगा) उस से आसान हिसाब लिया जाएगा”, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये तो सिर्फ पेश करना होगा लेकिन जिस की हिसाब में जांच पड़ताल की गई वह हलाक होगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (103) و مسلم (79 / 2876)، (7225)

٥٥٥٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن عديِّ بن حاتمٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «مَا مِنْكُم أَحَدٍ إِلَّا سَيُكَلِّمُهُ رَبُّهُ لَيْسَ بَيْنَهُ وَبَيْنَهُ تُرْجُمَانٌ وَلَا حِجَابٌ يَحْجُبُهُ فَيَنْظُرُ أَيْمَنَ مِنْهُ فَلَا يَرَى إِلَّا مَا قَدَّمَ مِنْ عَمَلِهِ وَيَنْظُرُ أَشْأَمَ مِنْهُ فَلَا يَرَى إِلَّا مَا قَدَّمَ وَيَنْظُرُ بَيْنَ يَدَيْهِ فَلَا يَرَى إِلَّا النَّارَ تِلْقَاءَ وَجْهِهِ فَاتَّقُوا النَّارَ وَلَوْ بِشِقِّ تَمْرَة» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5550. अदि बिन हातिम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम में से हर एक के साथ उस का रब कलाम फरमाएगा, उस के और इस (बन्दे) के दरमियान कोई तरजुमान होगा न कोई हिजाब होगा जो इसे छिपा सके, अपने दाएँ देखेगा तो वह अपने अमाल ही देखेगा जो उस ने आगे भेजे थे, वह अपने बाएँ देखेगा तो वह आगे भेजे हुए अपने अमाल ही देखेगा, वह अपने आगे चेहरे के सामने देखेगा तो उसे (जहन्नम) की आग ही नज़र आएगी, तुम (जहन्नम की) आग से बचो ख्वाह खजूर के एक टुकड़े ही के ज़रिए हो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6539) و مسلم (67 / 1016)، (2348)

٥٥٥١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: " إِن الله يدني الْمُؤمن فَيَضَع على كَنَفَهُ وَيَسْتُرُهُ فَيَقُولُ: أَتَعْرِفُ ذَنْبَ كَذَا؟ أَتَعْرِفُ ذَنْب كَذَا؟ فَيَقُول: نعم يَا رب حَتَّى قَرَّرَهُ ذنُوبه وَرَأى نَفْسِهِ أَنَّهُ قَدْ هَلَكَ. قَالَ: سَتَرْتُهَا عَلَيْكَ فِي الدُّنْيَا وَأَنَا أَغْفِرُهَا لَكَ الْيَوْمَ فَيُعْطَى كِتَابَ حَسَنَاتِهِ وَأَمَّا الْكُفَّارُ وَالْمُنَافِقُونَ فَيُنَادَى بِهِمْ على رؤوسِ الْخَلَائِقِ: (هَؤُلَاءِ الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَى رَبِّهِمْ أَلَا لعنةُ اللَّهِ على الظالمينَ)»» مُتَّفق عَلَيْهِ

5551. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक अल्लाह मोमिन को करीब कर लेगा उस पर अपना परदा डाल देगा और इसे छिपा कर फरमाएगा: क्या तुम फलां गुनाह पहचानते हो? क्या तुम को फलां गुनाह याद है? वह अर्ज़ करेगा, रब जी! जी हाँ, हत्ता के जब वह इसे उस के गुनाहों का एतराफ़ व इकरार करा लेगा तो वह शख़्स अपने दिल में सोचेगा के वह तो मारा गया, अल्लाह तआला फरमाएगा: मैंने दुनिया में तेरे गुनाहों पर परदा डाले रखा और आज में तेरे गुनाह मुआफ़ करता हूँ, इसे उसकी नेकियो की किताब (आमाल नामा) दे दिया जाएगा, अलबत्ता कुफ्फार और मुनाफिकिन तो उन्हें सारी मखलूक के सामने बुलाया जाएगा और कहा जाएगा: “ये वह लोग है जिन्होंने अपने रब पर झूठ बांधा था सुन लो! ज़ालिमो पर अल्लाह की लानत हो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (2441) و مسلم (52 / 2768)، (7015)

٥٥٥٢ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ:»» إِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ دَفَعَ اللَّهُ إِلَى كُلِّ مُسْلِمٍ يَهُودِيًّا أَوْ نَصْرَانِيًّا فَيَقُولُ: هَذَا فِكَاكُكَ مِنَ النَّارِ " رَوَاهُ مُسلم

5552. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब कियामत का दिन होगा तो अल्लाह हर मुसलमान को एक यहूदी या एक इसाई देगा और फरमाएगा उस के बदले में (जहन्नम की) आग से तेरी आज़ादी है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (49 / 2767)، (7011)

٥٥٥٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يُجَاءُ بِنُوحٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيُقَالُ لَهُ: هَلْ بَلَّغْتَ؟ فَيَقُولُ: نَعَمْ يَا رَبِّ فَتُسْأَلُ أُمَّتُهُ: هَلْ بَلَّغَكُمْ؟ فَيَقُولُونَ: مَا جَاءَنَا مِنْ نَذِيرٍ. فَيُقَالُ: مَنْ شُهُودُكَ؟ فَيَقُولُ: مُحَمَّدٌ وَأُمَّتُهُ ". فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «فيجاء بكم فتشهدون على أنَّه قد بلَّغ» ثُمَّ قَرَأَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ (وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدا)»» رَوَاهُ البُخَارِيّ

5553. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रोज़ ए कियामत नुह अलैहिस्सलाम को लाया जाएगा तो उन से कहा जाएगा: क्या आप ने (अल्लाह तआला के अहकामात व तालीमात) पहुंचा दिए थे? वह कहेंगे: जी हाँ, मेरे परवरदिगार उनकी उम्मत से पूछा जाएगा: क्या उन्होंने तुम्हें अल्लाह तआला के अहकामात पहुंचा दिए थे? वह कहेंगे: हमारे पास तो कोई डराने (आगाह करने) वाला आया

ही नहीं, उन से कहा जाएगा: आप का गवाह कौन है? वह कहेंगे मुहम्मद ﷺ और उनकी उम्मत", रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "फिर तुम्हें लाया जाएगा, तो तुम गवाही दोगे के उन्होंने पहुंचा दिया था", फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाई: وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدا "हमने इसी तरह तुम्हें उम्मत बिच में बनाया ताकि तुम लोगों पर गवाह हो और रसूल अल्लाह तुम पर गवाह हो"| (बुखारी)

رواه البخاری (3339)

٥٥٥٤ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كُنَّا عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَضَحِكَ فَقَالَ:»» هَلْ تَدْرُونَ مِمَّا أَضْحَكُ؟ ". قَالَ: قُلْنَا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: " مِنْ مُخَاطَبَةِ الْعَبْدِ رَبَّهُ يَقُولُ: يَا رَبِّ أَلَمْ تُجِرْنِي مِنَ الظُّلْمِ؟ " قَالَ: " يَقُولُ: بَلَى ". قَالَ: " فَيَقُولُ: فَإِنِّي لَا أُجِيزُ عَلَى نَفْسِي إِلَّا شَاهِدًا مِنِّي ". قَالَ: فَيَقُولُ: كَفَى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ شَهِيدًا وَبِالْكِرَامِ الْكَاتِبِينَ شُهُودًا ". قَالَ: " فَيُخْتَمُ عَلَى فِيهِ فَيُقَالُ لِأَرْكَانِهِ: انْطِقِي ". قَالَ: «فَتَنْطِقُ بِأَعْمَالِهِ ثُمَّ يُخَلَّى بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْكَلَامِ» . قَالَ: " فَيَقُولُ: بُعْدًا لَكُنَّ وَسُحْقًا فعنكنَّ كنتُ أُناضلُ ". رَوَاهُ مُسلم

5554. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ के पास थे तो आप हंस दिए, आप ﷺ ने फ़रमाया: "क्या तुम जानते हो की मैं किसी वजह से हंस रहा हूँ ?" अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हमने कहा अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं, फ़रमाया बंदे के अपने रब से मुखातिब होने से वह अर्ज़ करेगा: रब जी! क्या आप मुझे ज़ुल्म से नहीं बचाएंगे ?" फ़रमाया: "वो (रब तआला) फरमाएगा: क्यों नहीं? ज़रूर", फ़रमाया: "वो अर्ज़ करेगा में अपने खिलाफ सिर्फ अपने नफ्स ही की गवाही कबूल करूँगा, फ़रमाया: "अल्लाह तआला फरमाएगा: "आज तेरा नफ्स ही तेरे खिलाफ गवाही देने के लिए काफी है, और लिखने वाले मुअज्ज़ज़ फ़रिश्ते भी गवाही के लिए काफी है", फ़रमाया: "उस के मुंह पर मुहर लगा दि जाएगी, और उस के आज़ा इसे कहा जाएगा, कलाम करो", फ़रमाया: "वो उस के आमाल के मुतल्लिक बोलेंगे, फिर इस (बन्दे) के और उसकी ज़ुबान के दरमियान से पाबन्दी उठा ली जाएगी", फ़रमाया: "वो (अपनी ज़ुबान से बोल कर) कहेगा तुम्हारे लिए दूरी हो और हलाकत हो में तो तुम्हारे ही तरफ से झगड़ा था"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (17 / 2969)، (7439)

٥٥٥٥ - (صَحِيح) وَعَن أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ هَلْ نَرَى رَبنَا يَوْم الْقِيَامَة؟ قَالَ: «فَهَل تُضَارُّونَ فِي رُؤْيَةِ الشَّمْسِ فِي الظَّهِيرَةِ لَيْسَتْ فِي سَحَابَةٍ؟» قَالُوا: لَا قَالَ: «فَهَلْ تُضَارُّونَ فِي رؤيةِالقمر لَيْلَةَ الْبَدْرِ لَيْسَ فِي سَحَابَةٍ؟» قَالُوا: لَا قَالَ: [ص:١٥٤ «فَوَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَا تُضَارُّونَ فِي رُؤْيَةِ رَبِّكُمْ إِلَّا كَمَا تُضَارُّونَ فِي رُؤْيَةِ أَحَدِهِمَا» . قَالَ: " فَيَلْقَى الْعَبْدَ فَيَقُولُ: أَيْ فُلْ: أَلَمْ أُكْرِمْكَ وَأُسَوِّدْكَ وَأُزَوِّجْكَ وَأُسَخِّرْ لَكَ الْخَيْلَ وَالْإِبِلَ وَأَذَرْكَ تَرْأَسُ وَتَرْبَعُ؟ فَيَقُولُ بَلَى قَالَ: " أَفَظَنَنْتَ أَنَّكَ مُلَاقِيَّ؟ فَيَقُولُ لَا فَيَقُولُ: فَإِنِّي قَدْ أَنْسَاكَ كَمَا نَسِيتَنِي ثُمَّ يَلْقَى الثَّانِيَ فَذَكَرَ مِثْلَهُ ثُمَّ يَلْقَى الثَّالِثَ فَيَقُولُ لَهُ مثل ذَلِك فَيَقُول يارب آمَنْتُ بِكَ وَبِكِتَابِكَ وَبِرُسُلِكَ وَصَلَّيْتُ وَصُمْتُ وَتَصَدَّقْتُ ويثني بِخَير مااستطاع فَيَقُول: هَهُنَا إِذا. ثمَّ يُقَال الْآن تبْعَث

شَاهِدًا عَلَيْكَ وَيَتَفَكَّرُ فِي نَفْسِهِ: مَنْ ذَا الَّذِي يَشْهَدُ عَلَيَّ؟ فَيُخْتَمُ عَلَى فِيهِ وَيُقَالُ لِفَخِذِهِ: انْطِقِي فَتَنْطِقُ فَخِذُهُ وَلَحْمُهُ وَعِظَامُهُ بِعَمَلِهِ وَذَلِكَ لِيُعْذِرَ مِنْ نَفْسِهِ وَذَلِكَ الْمُنَافِقُ وَذَلِكَ يسخطُ اللَّهُ عَلَيْهِ "»» رَوَاهُ مُسلم»» وذُكر حَدِيث أبي: «يَدْخُلُ مِنْ أُمَّتِي الْجَنَّةَ» فِي «بَابِ التَّوَكُّلِ» بِرِوَايَة ابْن عَبَّاس

5555. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या हम रोज़ ए कियामत अपने रब को देखेंगे? आप ﷺ ने फ़रमाया: "क्या तुम दो पहर के वक़्त जबकि मतला अबरा आलूद भी न हो, सूरज देखने में कोई तकलीफ महसूस करते हो?" उन्होंने अर्ज़ किया, नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "क्या तुम, चौदहवीं रात जबकि मतला अबरा आलूद भी न हो चाँद देखने में कोई तकलीफ महसूस करते हो?" उन्होंने अर्ज़ किया, नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! तुम अपने रब के दीदार में बस इतनी तकलीफ महसूस करोगे, जिस तरह तुम इन दोनों (सूरज और चाँद) में से किसी एक को देखने में तकलीफ महसूस करते हो", आप ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला बंदे से मुलाकात करेगा तो वह फरमाएगा, ए फलां! क्या मैंने तुम्हें इज्ज़त नहीं बख्शी थी? क्या मैंने तुम्हें सरदार नहीं बनाया था? क्या मैंने तुझे बीवी नहीं दी थी? क्या मैंने घोड़े और ऊंट तेरे लिए ताबे नहीं किए थे? क्या मैंने तुझे (तेरी कौम पर) सरदार नहीं बनाया था? और तू उन से चोथा हिस्सा वसूल करता था, वह कहेगा: क्यों नहीं! फ़रमाया: "रब तआला फरमाएगा: क्या तू जानता था के तू मुझ से मुलाकात करने वाला है? वह कहेगा: नहीं, फिर रब तआला फरमाएगा मैंने (आज) तुझे भुला दिया जिस तरह तुमने मुझे (दुनिया में) भुला रखा था, फिर रब तआला दूसरे से मुलाकात करेगा, और इसी (पहले) की मिस्ल ज़िक्र किया, फिर वह तीसरे से मुलाकात करेगा तो वह उन से भी इसी की मिस्ल कहेगा, वह अर्ज़ करेगा: रब जी! मैं आप पर, आप की किताब पर और आप के रसूलो पर ईमान लाया, मैंने नमाज़ पढ़ी, रोज़ा रखा, सदका किया और वह जिस क़दर हो सका अपनी तारीफ़ करेगा, रब तआला फरमाएगा: यहीं ठहरो, फिर कहा जाएगा: हम अभी तुझ पर गवाह पेश करते हैं, वह अपने दिल में गौर व फिकर करेगा, वह कौन है जो मेरे खिलाफ गवाही देगा, उस के मुंह पर मुहर लगा दि जाएगी, और उसकी रान से कहा जाएगा, बोलो चुनांचे उसकी रान, उस का गोश्त और उसकी हड्डिया उस के अमल के मुताबिक कलाम करेगी, और यह इसलिए होगा ताकि अल्लाह तआला उस के नफ्स की तरफ से उस का उज्र ज़ाइल कर दे, और यह मुनाफ़िक़ शख़्स होगा और यह वह होगा जिस पर अल्लाह नाराज़ होगा"| और अबू हुरैरा (र) से मरवी हदीस (يَدْخُلُ مِنْ أُمَّتِي الْجَنَّةَ) (मेरी उम्मत के लोग जन्नत में दाखिल) इब्ने अब्बास (र अ) से मरवी रिवायत بَاب التَّوَكُّل وَالصَّبْر (तवक्कुल और सबर का बयान) में ज़िक्र की गई है. (मुस्लिम)

رواه مسلم (16 / 2968)، (7438) 0 حديث ’’ يدخل من امتى الجنة ‘‘ تقدم (5295)

हिसाब किसास और मीज़ान का बयान

بَاب الْحساب وَالْقصاص وَالْمِيزَان

दूसरी फस्ल

الْفَصْل الثَّانِي

٥٥٥٦ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي أُمَامَةَ قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «وَعَدَنِي رَبِّي أَنْ يُدْخِلَ الْجَنَّةَ مِنْ أُمَّتِي سَبْعِينَ أَلْفًا لَا حِسَابَ عَلَيْهِمْ وَلَا عَذَابَ مَعَ كُلِّ أَلْفٍ [ص:١٥٤ سَبْعُونَ أَلْفًا وَثَلَاثُ حَثَيَاتٍ مِنْ حَثَيَاتِ رَبِّي» . رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

5556. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “मेरे रब ने मेरे साथ वादा किया है के वह मेरी उम्मत से सत्तर हज़ार लोगों को हिसाब व अज़ाब के बगैर जन्नत में ले जाएगा, और हर हज़ार के साथ सत्तर हज़ार होंगे और मज़ीद यह कि मेरे रब की तरफ से तीन चुल्लू होंगे”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (5 / 268 ح 22659) و الترمذی (2437 وقال : حسن غريب) و ابن ماجه (4286)

٥٥٥٧ - (ضَعِيف) وَعَن الحسنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يُعْرَضُ النَّاسُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ثَلَاثَ عَرَضَاتٍ: فَأَمَّا عَرْضَتَانِ فَجِدَالٌ وَمَعَاذِيرُ وَأَمَّا الْعَرْضَةُ الثَّالِثَةُ فَعِنْدَ ذَلِكَ تَطِيرُ الصُّحُفُ فِي الْأَيْدِي فَآخِذٌ بِيَمِينِهِ وَآخِذٌ بِشِمَالِهِ ". رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ لَا يَصِحُّ هَذَا الْحَدِيثُ مِنْ قِبَلِ أَنَّ الْحَسَنَ لَمْ يَسْمَعْ مِنْ أَبِي هُرَيْرَة

5557. हसन बसरी रहिमहुल्लाह अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रोज़ ए कियामत लोग तीन बार (अल्लाह के हुज़ूर) पेश किए जाएँगे, पहली दो मर्तबा की पेशी में झगड़ा और माज़रत होगी और तीसरी पेशी के वक़्त हाथो की तरफ आमाल ना में उड़ेंगे, चुनांचे कोई उन्हें अपने दाएँ हाथ में पकड़ने वाला होगा और कोई बाएँ में”| और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस इस वजह से सहीह नहीं के हसन बसरी रहिमहुल्लाह ने अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से नहीं सुना| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (لم اجده من هديث ابی هريرة عنده ، انما رواه من حديث ابی موسی ، انظر الحديث الآتی : 5558) و الترمذی (2425) * الحسن البصری مدلس عنعن ولم يسمع من ابی هريرة رضی الله عنه فی القول الراجح

٥٥٥٨ - (ضَعِيف) وَقَدْ»» رَوَاهُ بَعْضُهُمْ عَنِ الْحَسَنِ عَنْ أَبِي مُوسَى

5558. और बाज़ रावियो ने इसे हसन बसरी रहिमहुल्लाह के वास्ते से अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، [رواه ابن ماجه (4277) و احمد (4 / 414 ح 19953)] * الحسن البصری مدلس و عنعن ، انظر الحديث السابق (5557)

٥٥٥٩ - (صَحِيح) وَعَنْ»» عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ اللَّهَ سيخلِّصُ رجلا من أُمّتي على رُؤُوس الْخَلَائِقِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيَنْشُرُ عَلَيْهِ تِسْعَةً وَتِسْعِينَ سِجِلًّا كُلُّ سِجِلٍّ مِثْلَ مَدِّ الْبَصَرِ ثُمَّ يَقُولُ: أَتُنْكِرُ مِنْ هَذَا شَيْئًا؟ أَظَلَمَكَ كَتَبَتِي الحافظون؟ فَيَقُول: لَا يارب فَيَقُول: أَفَلَك عذر؟ قَالَ لَا يارب فَيَقُولُ بَلَى. إِنَّ لَكَ عِنْدَنَا حَسَنَةً وَإِنَّهُ لَا ظُلْمَ عَلَيْكَ الْيَوْمَ فَتُخْرَجُ بِطَاقَةٌ فِيهَا أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ فَيَقُولُ احْضُرْ وَزْنَكَ. فَيَقُولُ: يَا رَبِّ مَا هَذِهِ الْبِطَاقَةُ مَعَ هَذِهِ السِّجِلَّاتِ؟ فَيَقُولُ: إِنَّكَ لَا تُظْلَمُ قَالَ: فَتُوضَعُ السِّجِلَّاتُ فِي كِفَّةٍ وَالْبِطَاقَةُ فِي كِفَّةٍ فَطَاشَتِ السِّجِلَّاتُ وَثَقُلَتِ الْبِطَاقَةُ فَلَا يَثْقُلُ مَعَ اسْمِ الله شَيْء ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجه

5559. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रोज़ ए कियामत अल्लाह मेरी उम्मत के एक आदमी को सारी मखलूक के सामने लाएगा और उस के निन्यानवेरजिस्टर खोलेगा और हर रजिस्टर की लम्बाई हद्दे नज़र तक होगी, फिर अल्लाह तआला फरमाएगा: क्या तुम उनमें से किसी चिज़ का इनकार करते हो (के तुमने न की हो)? या मेरे लिखने वालो ने, हिफाज़त करने वालो ने तुम पर कोई ज़ुल्म किया हो? तो वह अर्ज़ करेगा, रब जी! नहीं? अल्लाह फरमाएगा: क्या तेरे पास कोई उज़्र है? वह अर्ज़ करेगा, रब जी! नहीं? अल्लाह फरमाएगा: हाँ, हमारे पास तेरी एक नेकी है, क्योंकि आज तुम पर कोई ज़ुल्म नहीं होगा, एक परचा निकाला जाएगा, उस पर दर्ज होगा: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ (मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं और यह कि मुहम्मद ﷺ उस के बंदे और उस के रसूल हैं) अल्लाह फरमाएगा: वज़न पर हाज़िर हो, वह अर्ज़ करेगा: रब जी! उन रजिस्टरों के मुकाबले में इस पर्चे की क्या हैसियत है? चुनांचे अल्लाह वह फरमाएगा: आज तुम पर कोई ज़ुल्म नहीं किया जाएगा, फ़रमाया: एक पलड़े में वह दफातर रखे जाएँगे और दूसरे पलड़े में वह परचा रखा जाएगा तो वह दफातर हल्के पड़ जाएँगे और वह कार भारी हो जाएगा अल्लाह के नाम के मुकाबले में कोई चीज़ भारी नहीं हो सकती”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذی (2639 وقال : حسن غريب) و ابن ماجه (4300)

٥٥٦٠ - (ضَعِيف) وَعَن»» عائشةَ أَنَّهَا ذَكَرَتِ النَّارَ فَبَكَتْ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا يُبْكِيكِ؟» . قَالَتْ: ذَكَرْتُ النَّارَ فَبَكَيْتُ فَهَلْ تَذْكُرُونَ أَهْلِيكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " أَمَّا فِي ثَلَاثَةِ مَوَاطِنَ فَلَا يَذْكُرُ أَحَدٌ أَحَدًا: عِنْدَ الْمِيزَانِ حَتَّى يَعْلَمَ: أَيَخِفُّ مِيزَانُهُ أَمْ يَثْقُلُ؟ وَعِنْدَ الْكِتَابِ حِينَ يُقَالُ (هاؤم اقرؤوا كِتَابيه)»» حَتَّى يَعْلَمَ: أَيْنَ يَقَعُ كِتَابُهُ أَفِي يَمِينِهِ أم فِي شِمَاله؟ أم مِنْ وَرَاءِ ظَهْرِهِ؟ وَعِنْدَ الصِّرَاطِ: إِذَا وُضِعَ بينَ ظَهْرِي جَهَنَّم ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5560. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के उन्होंने जहन्नम की आग को याद किया तो वह रो पड़ी, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम्हें कौन सी चीज़ रुला रही है?” उन्होंने अर्ज़ किया, मैंने जहन्नम की आग को याद किया तो में रो पड़ी, तो क्या रोज़े कियामत आप अपने अहले खाना को याद रखेंगे? रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सुन लो! तीन मकामात हैं, जहाँ कोई किसी को याद नहीं करेगा, मीज़ान के मौके पर हत्ता के वह जान ले के आया उसकी मीज़ान हल्कि पड़ती है या वह भारी होती है, नाम ए आमाल के वक़्त जब कहा जाएगा: “आओ अपना नाम ए आमाल पढ़ो”, हत्ता के वह जान ले के उस का नामाए आमाल कहाँ दिया जाता है, उस के दाएँ

हाथ में दिया उसकी पुश्त के पीछे से उस के बाएँ हाथ में मिलता है, और पुल सिरात के मौके पर जब इसे जहन्नम पर रखा जाएगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (4755) * الحسن البصری مدلس و عنعن

بَاب الْحساب وَالْقصاص وَالْمِيزَان • हिसाब किसास और मीज़ान का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٥٥٦١ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَائِشَةَ«» قَالَتْ: جَاءَ رَجُلٌ فَقَعَدَ بَيْنَ يَدَيْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ لِي مَمْلُوكِينَ يَكْذِبُونَنِي وَيَخُونُونَنِي وَيَعْصُونَنِي وَأَشْتِمُهُمْ وَأَضْرِبُهُمْ فَكَيْفَ أَنَا مِنْهُمْ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ يُحْسَبُ مَا خَانُوكَ وَعَصَوْكَ وَكَذَّبُوكَ وَعِقَابُكَ إِيَّاهُمْ فَإِنْ كَانَ عِقَابُكَ إِيَّاهُمْ بِقَدْرِ ذُنُوبِهِمْ كَانَ كَفَافًا لَا لَكَ وَلَا عَلَيْكَ وَإِنْ كَانَ عِقَابُكَ إِيَّاهُمْ دُونَ ذَنْبِهِمْ كَانَ فَضْلًا لَكَ وَإِنْ كَانَ عِقَابُكَ إِيَّاهُمْ فَوْقَ ذُنُوبِهِمُ اقْتُصَّ لَهُمْ مِنْكَ الْفَضْلُ فَتَنَحَّى الرَّجُلُ وَجَعَلَ يَهْتِفُ وَيَبْكِي فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " أَمَا تَقْرَأُ قَوْلَ اللَّهِ تَعَالَى: (وَنَضَعُ الْمَوَازِينَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيَامَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَإِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا وَكَفَى بِنَا حَاسِبِينَ) [ص:١٥٤«» فَقَالَ الرَّجُلُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا أَجِدُ لِي وَلِهَؤُلَاءِ شَيْئًا خَيْرًا مِنْ مُفَارَقَتِهِمْ أُشْهِدُكَ أَنهم كلّهم أحرارٌ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5561. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, एक आदमी आया और वह रसूलुल्लाह ﷺ के सामने बैठ गया तो उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मेरे कुछ गुलाम है, वह मेरे साथ झूठ बोलते है, खयानत करते हैं और मेरी नाफ़रमानी करते हैं, जबकि मैं उन्हें बुरा-भला कहता हूँ और उन्हें मारता हूँ, उनकी वजह से (अल्लाह तआला के यहाँ) मेरा मुआमला कैसा होगा? रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब रोज़ ए कियामत होगा तो उन्होंने तुझ से जो खयानत की होगी, तेरी नाफ़रमानी की होगी और तुझ से झूठ बोला होगा उनका और तूने जो उन्हें सज़ा दी होगी उस का हिसाब किया जाएगा, अगर तेरी सज़ा उनकी गलतियों के मुताबिक हुई तो फिर मुआमला बराबर रहेगा, तेरे लिए कोई सवाब व अकाब नहीं होगा और अगर तेरी सज़ा उनकी खताओं से कम रही तो फिर तुझे इज़ाफ़ी (ज़्यादा) हक़ हासिल होगा और अगर तेरी सज़ा उन के गुनाहों से ज़्यादा हुई तो फिर उसकी ज़्यादती का तुझ से उन्हें बदला दिलाया जाएगा”, (ये सुन कर) वह आदमी (मजलिस से) दूर हो कर चीखने और रोने लगा तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे फ़रमाया: “क्या तुम अल्लाह का फरमान नहीं पढ़ते: “हम रोज़ ए कियामत इंसाफ का तराज़ू काइम करेगा तो किसी जान पर कोई ज़ुल्म नहीं किया जाएगा, अगर (अमल व ज़ुल्म) राइ के दाने के बराबर भी हो, तो हम इसे ले आएँगे और काफी है हम हिसाब करने वाले”, चुनांचे इस आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैं अपने लिए और इन के लिए उनकी अलायेदगी से बेहतर कोई चीज़ नहीं पाता, मैं आप को गवाह बनाता हूँ कि वह सारे आज़ाद है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (3165 وقال : غریب) * الزهری مدلس و عنعن

٥٥٦٢ - (صَحِيح) وَعَنْهَا»» قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ فِي بَعْضِ صَلَاتِهِ:»» اللَّهُمَّ حَاسِبْنِي حِسَابًا يَسِيرًا " قُلْتُ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ مَا الْحِسَابُ الْيَسِيرُ؟ قَالَ: «أَنْ يَنْظُرَ فِي كِتَابه فيتجاوز عَنْهُ إِنَّهُ مَنْ نُوقِشَ الْحِسَابَ يَوْمَئِذٍ يَا عَائِشَةُ هلك» . رَوَاهُ أَحْمد

5562. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को उनकी किसी नमाज़ में यह दुआ (اللَّهُمَّ حَاسِبْنِي حِسَابًا يَسِيرًا) “अल्लाह मेरा आसान हिसाब लेना”, करते हुए सूना तो मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के नबी! आसान हिसान से क्या मुराद है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “(इस से मुराद यह है की) (अल्लाह तआला) उस के नाम ए आमाल पर नज़र डालकर उस से दरगुज़र फरमाएगा, क्योंकि आइशा इस रोज़ जिसके हिसाब की जांच पड़ताल की गई तो वह मारा गया| (सहीह,हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (6 / 48 ح 24719) [و صححه الحاكم (1 / 57) و وافقه الذهبى] و اصله متفق عليه (البخارى : 103 ، مسلم : 2876)، (7225)

٥٥٦٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ أَنَّهُ أَتَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: أَخْبِرْنِي مَنْ يَقْوَى عَلَى الْقِيَامِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ الَّذِي قَالَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ: (يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لربِّ الْعَالمين)»» ؟ فَقَالَ: «يُخَفَّفُ عَلَى الْمُؤْمِنِ حَتَّى يَكُونَ عَلَيْهِ كَالصَّلَاةِ الْمَكْتُوبَة»

5563. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि वह रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में आए तो उन्होंने अर्ज़ किया: मुझे बताइए के अल्लाह अज्ज़वजल ने जो यह फ़रमाया है: “इस दूँ लोग रब्बुल आलमीन के हुज़ूर खड़े हुए”, तो रोज़े कियामत खड़े होने की कौन ताकत रखेगा? आप ﷺ ने फरमाया: “(कियामत का दिन) मोमिन पर हल्का कर दिया जाएगा हत्ता कि वह इस पर फ़र्ज़ नमाज़ की तरह होगा|”| (हसन)

حسن ، رواه البيهقى فى البعث و النشور (لم اجده ، شعب الايمان 1 / 324قبل ح 362 تعليقًا) و ابن حبان (الاحسان : 729 / 7334 و سنده حسن) * شيخ دراج : (مبهم وهو) ابو الهيشم وله شاهد حسن فى شعب الايمان (362 ، نسخة محققة : 356) ولم يذكر الآية ، فيه نعيم بن حماد حسن الحديث

٥٥٦٤ - (ضَعِيف) وَعَنْهُ»» قَالَ: سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ (يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ خَمْسِينَ ألف سنةٍ)»» مَا طُولُ هَذَا الْيَوْمِ؟ فَقَالَ: «وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ إِنَّهُ لَيُخَفَّفُ عَلَى الْمُؤْمِنِ حَتَّى يَكُونَ أَهْوَنَ عَلَيْهِ مِنَ الصَّلَاةِ الْمَكْتُوبَةِ يُصَلِّيهَا فِي الدُّنْيَا» . رَوَاهُمَا الْبَيْهَقِيُّ فِي كِتَابِ «الْبَعْثِ وَالنُّشُورِ»

5564. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ से इस दिन के मुतल्लिक दरियाफ्त किया गया जिस की मिकदार पचास हज़ार साल होगी के इस दिन की तवालत किस कदर होगी (क्या लोग इतना लम्बा कयाम कर सकेंगे ?) आप ﷺ ने फ़रमाया: इस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! इस (दिन) को मोमिन पर इस कदर आसान कर दिया जाएगा की वह इ पर फ़र्ज़ नमाज़ से भी हल्का हो जाएगा जो इस ने दुनिया में पढ़ी थी| दोनों अहादीस को इमाम बय्हकी ने الْبَعْثِ وَالنُّشُورِ “किताबुल बअस वल नशुर” में

नकल किया है| (हसन)

حسن ، رواه البيهقى فى البعث و النشور (لم اجده) [و احمد (3 / 75 ح 11740)] * انظر الحديث السابق (5564) و للحديث شاهد حسن

٥٥٦٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أَسمَاء»» بنت يزِيد عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " يُحْشَرُ النَّاسُ فِي صَعِيدٍ وَاحِدٍ يَوْمَ الْقِيَامَة فينادي مناد فَيَقُول: أَيْنَ الَّذِينَ كَانَتْ تَتَجَافَى جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ؟ فَيَقُومُونَ وَهُمْ قَلِيلٌ فَيَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ بِغَيْرِ حِسَابٍ ثمَّ يُؤمر لسَائِرِ النَّاسِ إِلَى الْحِسَابِ «. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي» شُعَبِ الْإِيمَان "

5565. अस्मा बिन्ते यज़ीद (रअ), रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करती हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: रोज़े कियामत तमाम लोगों को एक जगह पर जमा किया जाएगा तो एलान करने वाला एलान करगा: वह तहज्जुद गुज़ार कहाँ है? वह खड़े होंगे और वह कलिल होंगे, और वह बगैर हिसाब जन्नत में जाएंगे, फिर बाक़ी लोग के हिसाब के मूतअल्ल्क हुक्म फ़रमाया जाएगा| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (3244 ، نسخة محققة : 2974) [و هناد بن السرى فى الزهد (176) و المروزى كما فى مختصر قيام الليل (ص 18)]

بَاب الْحَوْض والشفاعة • हौज़ और शफाअत का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٥٥٦٦ - (صَحِيح) عَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " بَيْنَا أَنَا أَسِيرُ فِي الجنَّةِ إِذا أَنا بنهر حافتاه الدُّرِّ الْمُجَوَّفِ قُلْتُ: مَا هَذَا يَا جِبْرِيلُ؟ قَالَ: الْكَوْثَرُ الَّذِي أَعْطَاكَ رَبُّكَ فَإِذَا طِينُهُ مِسْكٌ أذفر ". رَوَاهُ البُخَارِيّ

5566. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: (मेराज की रात) में जन्नत में चल रहा था के अचानक में एक नाहर पर पहुंचा, इस के दोनों किनारों पर खोलदार मोतियों के गुंबज थे, मैंने कहा: जिब्रील! यह क्या है? उन्होंने कहा: यह कौसर है, जो आप के रब ने आप लो अता फरमाई है, मैंने देखा के इस की मिट्टी आला ख़ुशबुओं वाली कस्तूरी थी| (बुखारी)

رواه البخارى (6581)

٥٥٦٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «حَوْضِي مَسِيرَةُ شَهْرٍ وَزَوَايَاهُ سَوَاءٌ مَاؤُهُ أَبْيَضُ مِنَ اللَّبَنِ وَرِيحُهُ أَطْيَبُ مِنَ الْمِسْكِ وَكِيزَانُهُ كَنُجُومِ السَّمَاءِ مَنْ يَشْرَبُ مِنْهَا فَلَا يظمأ أبدا» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5567. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: मेरा हौज़ एक माह की मुसाफत के बराबर है, इस के अतराफ बराबर है, इस का पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद है, इस की खुश्बू कस्तूरी से ज़्यादा अच्छी है और इस के प्याले आसमान के सितारों की तरह है, जिस शख़्स ने इसे पि लिया वह फिर कभी (मैदाने हशर में) प्यासा न होगा| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6579) و مسلم (27 / 2292)، (5971)

٥٥٦٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ حَوْضِي أَبْعَدُ مِنْ أَيْلَةَ مِنْ عَدَنٍ لَهُوَ أَشَدُّ بَيَاضًا مِنَ الثَّلْجِ وَأَحْلَى مِنَ الْعَسَلِ بِاللَّبَنِ وَلَآنِيَتُهُ أَكْثَرُ مِنْ عَدَدِ النُّجُومِ وَإِنِّي لَأَصُدُّ النَّاسَ عَنْهُ كَمَا يَصُدُّ الرَّجُلُ إِبِلَ النَّاسِ عَنْ حَوْضِهِ» . قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَتَعْرِفُنَا يَوْمَئِذٍ؟ قَالَ: «نَعَمْ لَكُمْ سِيمَاءُ لَيْسَتْ لِأَحَدٍ مِنَ الْأُمَم [ص:١٥٤ تردون عليّ غرّاً من أثر الْوضُوء» . رَوَاهُ مُسلم

5568. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: मेरा हौज़ एला और अदन के दरमियानी मुसाफत वाला है, वह बर्फ से ज़्यादा सफ़ेद, और वह शहद मिले दूध से ज़्यादा शिरीन व लज़ीज़ है, इस के बर्तन सितारों की तादाद से ज़्यादा हैं, और मैं (दुसरे) लोगों को इस से इस तरह दूर हटाऊंगा जिस तरह आदमी लोगों के अन्टू को अपने हौज़ से दूर हटाता है, उन्होंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! क्या आप इस रोज़ हमें पहचान लेंगे? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ, तुम्हारे लिए एक ख़ास निशान होगा जो किसी और उम्मत के लिए नहीं होगा, तुम मेरे पास इस हालत में अओंगे के वुजू के निशाँ की वजह से तुम्हारी पेशानी और हाथ पाऊं चमकते होंगे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (36 / 247)، (581)

٥٥٦٩ - (صَحِيح) وَفِي رِوَايَةٍ لَهُ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: «تَرَى فِيهِ أَبَارِيقَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ كَعَدَدِ نُجُومِ السَّمَاءِ»

5569. और सहीह मुस्लिम की अनस रदियल्लाहु अन्हु मरवी रिवायत में है, फ़रमाया: ईस (हौज़) में सोने और चांदी के प्याले आसमान के सितारों की तरह होंगे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (43 / 2303)، (6000)

٥٥٧٠ - (صَحِيح) وَفِي أُخْرَى لَهُ عَنْ ثَوْبَانَ قَالَ: سُئِلَ عَنْ شَرَابِهِ. فَقَالَ: " أَشَدُّ بَيَاضًا مِنَ اللَّبَنِ وَأَحْلَى مِنَ الْعَسَلِ يَغُتُّ فِيهِ مِيزَابَانِ يَمُدَّانِهِ مِنَ الْجَنَّةِ: أَحَدُهُمَا مِنْ ذَهَبٍ وَالْآخَرُ مِنْ ورق "

5570. और सहीह मुस्लिम ही की एक हदीस, जो के सौबान रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है, इस में है: आप से इस

के मश्रुब के मुत्तलिक दरियाफ्त किया गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: वह दूध से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज्यदा मीठा है, इस में जन्नत से दो परनाले गिरते हैं, इन में से एक सोने का है जबकि दूसरा चांदी का| (मुस्लिम)

رواه مسلم (37 / 2301)، (5990)

٥٥٧١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنِّي فَرَطُكُمْ عَلَى الْحَوْضِ مَنْ مَرَّ عَلَيَّ شَرِبَ وَمَنْ شَرِبَ لَمْ يَظْمَأْ أَبَدًا لَيَرِدَنَّ عَلَيَّ أَقْوَامٌ أَعْرِفُهُمْ وَيَعْرِفُونَنِي ثُمَّ يُحَالُ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ فَأَقُولُ: إِنَّهُمْ مِنِّي. فَيُقَالُ: إِنَّكَ لَا تَدْرِي مَا أَحْدَثُوا بَعْدَكَ؟ فَأَقُولُ: سُحْقًا سحقاً لمن غير بعدِي ". مُتَّفق عَلَيْهِ

5571. सहल बिन साद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: में हौज़ पर तुम से पहले ही मौजूद होऊंगा जो शक्स मेरे पास से गुजरेगा, वह (इस से) पिएगा और जिस ने पि लिया इसे कभी प्यास नहीं लगेगी, कुछ लोग मेरे पास आएँगे, मैं उन्हें पहचानता होऊंगा और वह मुझे पहचानते होंगे, फिर मेरे और इन के दरमियान रुकावट कड़ी कर दी जाएगी, मैं कहूँगा: यह तो मुझसे है, (मेरे उम्मती है), मुझे कहा जाएगा: आप नहीं जानते के उन्होंने आप के बाद दीन में क्या क्या नए काम इजाद कर लिए थे, मैं कहूँगा: इस शख़्स के लिए (मुझ से) दुरी हो जिस ने मेरे बाद दीन में तबदीली कर ली| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (65836584) و مسلم (26 / 2290)، (5968)

٥٥٧٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم قَالَ: " يُحْبَسُ الْمُؤْمِنُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حَتَّى يُهَمُّوا بِذَلِكَ فَيَقُولُونَ: لَوِ اسْتَشْفَعْنَا إِلَى رَبِّنَا فَيُرِيحَنَا مِنْ مَكَانِنَا فَيَأْتُونَ آدَمَ فَيَقُولُونَ: أَنْتَ آدَمُ أَبُو النَّاسِ خَلَقَكَ اللَّهُ بِيَدِهِ وَأَسْكَنَكَ جَنَّتَهُ وَأَسْجَدَ لَكَ مَلَائِكَتَهُ وَعَلَّمَكَ أَسْمَاءَ كُلِّ شَيْءٍ اشْفَعْ لَنَا عِنْدَ رَبِّكَ حَتَّى يُرِيحَنَا مِنْ مَكَانِنَا هَذَا. فَيَقُولُ: لَسْتُ هُنَاكُمْ. وَيَذْكُرُ خَطِيئَتَهُ الَّتِي أَصَابَ: أَكْلَهُ مِنَ الشَّجَرَةِ وَقَدْ نُهِيَ عَنْهَا - وَلَكِنِ ائْتُوا نُوحًا أَوَّلَ نَبِيٍّ بَعَثَهُ اللَّهُ إِلَى أَهْلِ الْأَرْضِ فَيَأْتُونَ نُوحًا فَيَقُولُ: لَسْتُ هُنَاكُمْ - وَيَذْكُرُ خَطِيئَتَهُ الَّتِي أَصَابَ: سُؤَالَهُ رَبَّهُ بِغَيْرِ عِلْمٍ - وَلَكِنِ ائْتُوا إِبْرَاهِيمَ خَلِيلَ الرَّحْمَنِ. قَالَ: فَيَأْتُونَ إِبْرَاهِيمَ فَيَقُولُ: إِنِّي لَسْتُ هُنَاكُمْ - وَيَذْكُرُ ثَلَاثَ [ص:١٥٤ كِذْبَاتٍ كَذَبَهُنَّ - وَلَكِنِ ائْتُوا مُوسَى عَبْدًا آتَاهُ اللَّهُ التَّوْرَاةَ وَكَلَّمَهُ وَقَرَّبَهُ نَجِيًّا. قَالَ: فَيَأْتُونَ مُوسَى فَيَقُولُ: إِنِّي لَسْتُ هُنَاكُمْ - وَيَذْكُرُ خَطِيئَتَهُ الَّتِي أَصَابَ قَتْلَهُ النَّفْسَ - وَلَكِنِ ائْتُوا عِيسَى عَبْدَ اللَّهِ وَرَسُولَهُ وَرُوحَ اللَّهِ وَكَلِمَتَهُ " قَالَ: " فَيَأْتُونَ عِيسَى فَيَقُولُ: لَسْتُ هُنَاكُمْ وَلَكِنِ ائْتُوا مُحَمَّدًا عبدا غفر اللَّهُ لَهُ ماتقدم مِنْ ذَنْبِهِ وَمَا تَأَخَّرَ ". قَالَ: " فَيَأْتُونِي فَأَسْتَأْذِنُ عَلَى رَبِّي فِي دَارِهِ فَيُؤْذَنُ لِي عَلَيْهِ فَإِذَا رَأَيْتُهُ وَقَعْتُ سَاجِدًا فَيَدَعُنِي مَا شَاءَ اللَّهُ أَنْ يَدَعَنِي فَيَقُولُ: ارْفَعْ مُحَمَّدُ وَقُلْ تُسْمَعْ وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ وَسَلْ تُعْطَهْ ". قَالَ: " فَأَرْفَعُ رَأْسِي فأثني على رَبِّي بثناء تحميد يُعَلِّمُنِيهِ ثُمَّ أَشْفَعُ فَيَحُدُّ لِي حَدًّا فَأَخْرُجُ فَأُخْرِجُهُمْ مِنَ النَّارِ وَأُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ ثُمَّ أَعُودُ الثَّانِيَةَ فَأَسْتَأْذِنُ عَلَى رَبِّي فِي دَارِهِ. فَيُؤْذَنُ لِي عَلَيْهِ فَإِذَا رَأَيْتُهُ وَقَعْتُ سَاجِدًا. فَيَدَعُنِي مَا شَاءَ اللَّهُ أَنْ يَدَعَنِي ثُمَّ يَقُولُ: ارْفَعْ مُحَمَّدُ وَقُلْ تُسْمَعْ وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ وَسَلْ تُعْطَهْ. قَالَ: " فَأَرْفَعُ رَأْسِي فَأُثْنِي عَلَى رَبِّي بِثَنَاءٍ وَتَحْمِيدٍ يُعَلِّمُنِيهِ ثُمَّ أَشْفَعُ فَيَحُدُّ لِي حَدًّا فَأَخْرُجُ فَأُخْرِجُهُمْ مِنَ النَّارِ وَأُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ ثُمَّ أَعُودُ الثَّالِثَةَ فَأَسْتَأْذِنُ عَلَى رَبِّي فِي دَاره فيؤذي لِي عَلَيْهِ فَإِذَا رَأَيْتُهُ وَقَعْتُ سَاجِدًا فَيَدَعُنِي

مَا شَاءَ اللَّهُ أَنْ يَدَعَنِي ثُمَّ يَقُولُ: ارْفَعْ مُحَمَّدُ وَقُلْ تُسْمَعْ وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ وَسَلْ تُعْطَهْ ". قَالَ: «فَأَرْفَعُ رَأْسِي فَأُثْنِي عَلَى رَبِّي بثناءوتحميد يُعَلِّمُنِيهِ ثُمَّ أَشْفَعُ فَيَحُدُّ لِي حَدًّا فَأَخْرُجُ فَأُخْرِجُهُمْ مِنَ النَّارِ وَأُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ حَتَّى مَا يَبْقَى فِي النَّارِ إِلَّا مَنْ قَدْ حَبَسَهُ الْقُرْآنُ» أَيْ وَجَبَ عَلَيْهِ الْخُلُودُ ثُمَّ تَلَا هَذِه الْآيَة (عَسى أَن يَبْعَثك الله مقَاما مَحْمُودًا)»» قَالَ: «وَهَذَا الْمقَام المحمود الَّذِي وعده نَبِيكُم» مُتَّفق عَلَيْهِ

5572. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: मोमिनो को रोज़े कयामत रोक रखा जाएगा हत्ता के इस वजह से वह गमगीन हो जाएंगे,वो कहेंगे: काश के हम अपने रब के हुज़ूर कोई सिफारशी तलाश करे तक वह हमें हमारी इस जगह से निजात दे दे, वह आदम अलैहिस्सलाम के पास आएँगे, और कहेंगे: आप आदम, तमाम इंसानों के बाप है, अल्लाहताला ने आप को अपने हाथ से तखलीक फ़रमाया, आप को जन्नत में बसाया, अपने फरिश्तो से आप को सजदा करवाया और आप को तमाम जिजो के नाम सिखाए, अपने रब की हुज़ूर हमारी सिफारिश करे हत्ता के वह हमें हमारी इस जगह से निजात दे दे, वह कहेंगे: में वहां तुम्हारी सिफारिश नहीं कर सकता, वह अपनी उस खता को यद् करेंगे जिस का इर्तिकाब इस दरख्त के खाने से हुआ था हालाँकि इन्हें इस से मना किया गया था, बलके नुह अलैहिस्सलाम के पास जाओ, वह पहले नबी है,म जिन्हें अल्लाह तआला ने अहले जमीन की तरफ मबउस फ़रमाया था, वह नुह अलैहिस्सलाम की खिदमत में हाज़िर होंगे तो वह भी यही कहेंगे, मैं वहां तुम्हारी सिफारिश नहीं कर सकता, और वह अपनी उस खता को याद करेंगे जो इन से ला इल्मी में अपने रब से सवाल करने से सरजद हुई थी, बलके तुम रहमान के खलील इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास जाओ, फ़रमाया: वह इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास जाएंगे, तो वह भी यही कहेंगे: में वहां तुम्हारी शिफारिश नहीं कर सकता, और वह अपने तिन झूठ को याद करेंगे जो इन्होंने बोले थे, बलके तुम मूसा अलैहिस्सलाम के पास जाएंगे जो अल्लाह के ऐसे बंदे है जिन्हें अल्लाह तअला ने तौरात अता की, इन से कलम फ़रमाया और सरगोशी के लिए इन्हें करीब किया, फ़रमाया: वह मूसा अलैहिस्सलाम के पास जाएंगे तो वह भी कहेंगे के में वहाँ तुम्हारी सिफारिश नहीं कर सकता, और वह अपनी गलती का तज़किरा करेंगे के इन्होंने इस (किब्ती) आदमी को कत्ल किया था, बल्कि तुम अल्लाह के बंदे इसा अलैहिस्सलाम के पास जाओ जो के इस के रसूल हैं, अल्लाह की रूह और इस का कलमा है, फ़रमाया: वह इसा अलैहिस्सलाम के पास जाएँगे तो वह भी यही कहेंगे, म वहाँ तुम्हारी सिफारिश नहीं कर सकता, बलके तुम अल्लाह के बंदे मुहम्मद ﷺ के पास जाओ, अल्लाह ने जिन के अगले पिछले तमाम गुनाह मुआफ कर दिए है, फ़रमाया: चुनांचे वह मेरे पास आएँगे में अपने रब से इस के हुज़ूर आने की इजाज़त तलब करूँगा तो मुझे इजाज़त दी जाएगी, जब में अल्लाह तआला को देखूंगा तो सजदा रेज़ हो जाऊंगा, फिर जितनी देर अल्लाह चाहेगा वह मुझे इसे हालत में रहने देगा, फिर फरमाएगा: मुहम्मद! उठो, बात करो, तुम्हारी बात सुनी जाएगी, सिफारिश करो, तुम्हारी सिफारिश काबुल की जाएगी, आप सवाल करे, आप को अता किया जाएगा, फ़रमाया: चुनांचे में अपना सर उठाऊंगा तो में अपने रब की वह हमद व सना बयान करूँगा, जो वह मुझे सिखाएगा, फिर मैं सिफारिश करूँगा तो मेरे लिए तादाद मुकर्रर करदी जाएगी, मैं (दरबारे इलाही से) बाहर आऊंगा और मैं इन्हें जहन्नम की आग से निकाल कर जन्नत में दाखिल करूँगा, फिर मैं दूसरी मरतबा जाऊँगा, और अपने रब के हुज़ूर पेश होने की इजाज़त तलब करूँगा, मुझे इस के पास जाने की इजाज़त मिल जाएगी, जब में इसे देखूंगा तो सजदह रज हो जाऊँगा, जिस क़दर अल्लाह चाहेगा वह मुझे इसी हालत में रहने देगा फिर फरमाएगा: मुहम्मद सर उठाओ, बात करो, तुम्हें सुना जाएगा, सिफारिश

करो, तुम्हारी सिफारिश कबूल की जाएगी, सवाल करो, आपको अता किया जाएगा, फरमाया मैं अपना सर उठाऊंगा, मैं अपने रब की हम्द व सना बयान करूंगा, जो वह मुझे सिखाएगा, फिर मैं सिफारिश करूंगा तो मेरे लिए हद मुकर्रर की जाएगी, मैं (बारगाह ए रब्बुल इज्जत से) बाहर आऊंगा तो मैं इन्हें जहन्नम से निकाल कर जन्नत में दाखिल करूँगा, फिर मैं तीसरी मर्तबा जाऊंगा, अपने रब के पास जाने की इजाजत तलब करूंगा, मुझे इसके पास जाने की इजाजत मिल जाएगी, जब मैं इसे देख लूंगा तो मैं सजदा में गिर जाऊंगा, अल्लाह जब तक चाहेगा मुझे इस हालत में छोड़ देगा, फिर फरमाएगा: मोहम्मद सर उठाइए, बात करें, तुम्हें सुना जाएगा, सिफारिश करें, तुम्हारी सिफारिश कबूल की जाएगी, और सवाल करें, आपको अदा किया जाएगा, फरमाया: मैं अपना सर उठाऊंगा और अपने रब की हम्द व सना बयान करूंगा, जो वह मुझे सिखाएगा, फिर मैं सिफारिश करूंगा तो मेरे लिए हद मुकर्रर की जाएगी, मैं (बारगाह ए रब्बुल इज्जत से) बाहर आऊंगा, उन्हें में आग से निकाल कर जन्नत में दाखिल करूंगा, हत्ता कि जहन्नम में सिर्फ वही रह जाएंगे जिसे कुरान ने रोक रखा हो, यानी जिस पर दईमी (हमेशा) जहन्नम होना वाजिब हो चुका हो, फिर आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाइ: करीब है के आपका रब आपको मकामे महमूद पर मबउस फरमाए, फरमाया: और यह वह मकामे महमूद है जिसका इसने तुम्हारे नबी से वादा फरमाया है| (मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (6565) و مسلم (322 / 193)، (475)

٥٥٧٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ مَاجَ النَّاسُ بَعْضُهُمْ فِي بَعْضٍ فَيَأْتُونَ آدم فَيَقُولُونَ: اشفع لنا إِلَى رَبِّكَ فَيَقُولُ: لَسْتُ لَهَا وَلَكِنْ عَلَيْكُمْ بِإِبْرَاهِيمَ فَإِنَّهُ خَلِيلُ الرَّحْمَنِ فَيَأْتُونَ إِبْرَاهِيمَ فَيَقُولُ لَسْتُ لَهَا وَلَكِنْ عَلَيْكُمْ بِمُوسَى فَإِنَّهُ كَلِيمُ الله فَيَأْتُونَ مُوسَى فَيَقُولُ لَسْتُ لَهَا وَلَكِنْ عَلَيْكُمْ بِعِيسَى فَإِنَّهُ رُوحُ اللَّهِ وَكَلِمَتُهُ فَيَأْتُونَ عِيسَى فَيَقُولُ لَسْتُ لَهَا وَلَكِنْ عَلَيْكُمْ بِمُحَمَّدٍ فَيَأْتُونِّي فَأَقُولُ أَنَا لَهَا فَأَسْتَأْذِنُ عَلَى رَبِّي فَيُؤْذَنُ لِي وَيُلْهِمُنِي مَحَامِدَ أَحْمَدُهُ بِهَا لَا تَحْضُرُنِي الْآنَ فَأَحْمَدُهُ بِتِلْكَ الْمَحَامِدِ وَأَخِرُّ لَهُ سَاجِدًا فَيُقَالُ يَا مُحَمَّدُ ارْفَعْ رَأْسَكَ وَقُلْ تُسْمَعْ وَسَلْ تُعْطَهْ وَاشْفَعْ تشفع فَأَقُول يارب أُمَّتِي أُمَّتِي فَيُقَالُ انْطَلِقْ فَأَخْرِجْ مَنْ كَانَ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالَ شَعِيرَةٍ مِنْ إِيمَانٍ فَأَنْطَلِقُ فأفعل ثمَّ أَعُود فأحمده بِتِلْكَ المحامدوأخر لَهُ سَاجِدًا فَيُقَالُ يَا مُحَمَّدُ ارْفَعْ رَأْسَكَ وَقُلْ تُسْمَعْ وَسَلْ تُعْطَهْ وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ فَأَقُولُ يارب أُمَّتِي أُمَّتِي فَيُقَالُ انْطَلِقْ فَأَخْرِجْ مَنْ كَانَ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ أَوْ خَرْدَلَةٍ مِنْ إِيمَانٍ فَأَنْطَلِقُ فَأَفْعَلُ ثُمَّ أَعُودُ فَأَحْمَدُهُ بِتِلْكَ المحامدوأخر لَهُ سَاجِدًا فَيُقَالُ يَا مُحَمَّدُ ارْفَعْ رَأْسَكَ وَقُلْ تُسْمَعْ وَسَلْ تُعْطَهْ وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ فَأَقُولُ يارب أُمَّتِي أُمَّتِي فَيُقَالُ انْطَلِقْ فَأَخْرِجْ مَنْ كَانَ فِي قَلْبِهِ أَدْنَى أَدْنَى أَدْنَى مِثْقَالِ حَبَّةٍ من خَرْدَلَةٍ مِنْ إِيمَانٍ فَأَخْرِجْهُ مِنَ النَّارِ فَأَنْطَلِقُ فأفعل ثمَّ أَعُود الرَّابِعَة فأحمده بِتِلْكَ المحامدوأخر لَهُ سَاجِدًا فَيُقَالُ يَا مُحَمَّدُ ارْفَعْ رَأْسَكَ وَقُلْ تُسْمَعْ وَسَلْ تُعْطَهْ وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ فَأَقُولُ يارب ائْذَنْ لِي فِيمَنْ قَالَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ قَالَ لَيْسَ ذَلِكَ لَكَ وَلَكِنْ وَعِزَّتِي وَجَلَالِي وَكِبْرِيَائِي وَعَظَمَتِي لَأُخْرِجَنَّ مِنْهَا مَنْ قَالَ لَا إِلَه إِلَّا الله ". مُتَّفق عَلَيْهِ

5573. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जब कियामत का दिन होगा तो लोग बेचेनी का शिकार होंगे वह मिल कर आदम अलैहिस्सलाम के पास आएँगे और कहेंगे: अपने रब से सिफारिश करो, वह कहेंगे: में उस का अहल नहीं हूँ, लेकिन तुम इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास जाओ, क्योंकि वह अल्लाह के खलील है, वह इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास जाएँगे वह भी कहेंगे: में उस का अहल नहीं हूँ, लेकिन तुम मूसा अलैहिस्सलाम के पास जाओ, क्योंकि वह कलीमुल्लाह है, वह मूसा अलैहिस्सलाम के पास आएँगे, वह भी यही

कहेंगे: में उस का अहल नहीं हूँ, लेकिन तुम इसा अलैहिस्सलाम के पास जाओ, क्योंकि वह अल्लाह की रूह और उस का कलिमा है, वह इसा अलैहिस्सलाम के पास आएँगे वह कहेंगे: में उस के अहल नहीं हूँ, लेकिन तुम मुहम्मद ﷺ के पास जाओ, चुनांचे वह मेरे पास आएँगे तो मैं कहूँगा: में उस के लिए तैयार हूँ, मैं अपने रब से इजाज़त तलब करूंगा तो मुझे इजाज़त दे दि जाएगी, वह मुझे हम्द के अल्फाज़ इल्हाम फ़रमाएंगे तो मैं इन (कलिमात व अलफ़ाज़) के ज़रिए उसकी हम्द बयान करूँगा, उन कलिमात का इस वक़्त मुझे इल्म नहीं, मैं इन हम्दिया अल्फाज़ के साथ उसकी हम्द बयान करूँगा और उस के सामने सजदाह रेज़ हो जाऊंगा, मुझे कहा जाएगा, सवाल करे आप को अता किया जाएगा और सिफारिश करे आप की सिफारिश कबूल की जाएगी, मैं कहूँगा: रब जी! मेरी उम्मत, मेरी उम्मत, चुनांचे कहा जाएगा जाओ और जिस का दिल में जौ के दाने के बराबर ईमान है उसे (दोजख से) निकाल लो, मैं जाऊंगा और ऐसे ही करूँगा, फिर मैं दोबारा (रब के हुज़ूर) जाऊंगा और इन्ही हम्दिया कलिमात के ज़रिए उसकी हम्द बयान करूँगा, फिर उस के हुज़ूर सजदाह रेज़ हो जाऊंगा तो कहा जाएगा, मुहम्मद! अपना सर उठाओ, बात करो, सुनी जाएगी, सवाल करो, इसे पूरा किया जाएगा, और सिफारिश कबूल की जाएगी, मैं कहूँगा: रब जी! मेरी उम्मत, मेरी उम्मत, कहा जाएगा जाओ, जिस का दिल में जिरह या राइ के दाने के बराबर भी ईमान है उसे (जहन्नम से) निकाल लो, मैं जाऊंगा और ऐसे ही करूँगा, फिर मैं (तीसरी मर्तबा) लौटूगां और उन हम्दिया कलिमात के ज़रिए उसकी हम्द बयान करूँगा, फिर उस के हुज़ूर सजदाह रेज़ हो जाऊंगा, तो कहा जाएगा: मुहम्मद अपना सर उठाए, बात करे, सुनी जाएगी, सवाल करे, इसे पूरा किया जाएगा, और सिफारिश करे इसे कबूल किया जाएगा, मैं कहूँगा: रब जी! मेरी उम्मत, मेरी उम्मत, कहा जाएगा: जाओ, और जिस का दिल में राइ के दाने से भी अदना तरीन ईमान है, उसे भी जहन्नम की आग से निकाल लो, मैं जाऊंगा और ऐसे ही करूँगा, फिर मैं चोथी मर्तबा लौटूगां और उन हम्दिया कलिमात के ज़रिए उसकी हम्द बयान करूँगा, फिर उस के हुज़ूर सजदाह रेज़ हो जाऊंगा तो कहा जाएगा: मुहम्मद अपना सर उठाए, बात करे सुनी जाएगी, मांगे अता किया जाएगा, और सिफारिश करे तुम्हारी सिफारिश कबूल की जाएगी, मैं कहूँगा: रब जी! मुझे इस शख़्स के बारे में इजाज़त दे दे के जिस ने “ لا اله الا الله ‘‘ कहा हो और मैं उसे जहन्नम से निकाल लाऊं, फ़रमाया उस का आप को हक़ हासिल नहीं, लेकिन मेरी इज्ज़त, मेरे जलाल, मेरी किब्रियाई और मेरी अज़मत की क़सम जिस शख़्स ने “لا اله الا الله ‘‘ कहा होगा में उसे इस जहन्नम से ज़रूर निकालूँगा| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (7510) و مسلم (326 / 193)، (475)

٥٥٧٤ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " أَسْعَدُ النَّاسِ بِشَفَاعَتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَنْ قَالَ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ خَالِصا من قلبه أونفسه "»» رَوَاهُ البُخَارِيّ

5574. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ रोज़ ए कियामत मेरी शफाअत के लिहाज़ से सबसे ज़्यादा सआदत मंद शख़्स वह होगा जिस ने खुलूस दिलसे (لَا إِلَهَ إِلَّا الله) ’’अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं‘‘ पढ़ा होगा”| (बुखारी)

رواه البخاری (99)

٥٥٧٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ أَتَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِلَحْمٍ فَرُفِعَ إِلَيْهِ الذِّرَاعُ وَكَانَتْ تُعْجِبُهُ فَنَهَسَ مِنْهَا نَهْسَةً ثُمَّ قَالَ: «أَنَا سَيِّدُ النَّاسِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَوْمَ يَقُومَ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالمين وتدنو الشَّمْس فَيبلغ مِنَ الْغَمِّ وَالْكَرْبِ مَا لَا يُطِيقُونَ فَيَقُولُ النَّاس أَلا تنْظرُون من يشفع لكم إِلَى ربكُم؟ فَيَأْتُونَ آدَمَ» . وَذَكَرَ حَدِيثَ الشَّفَاعَةِ وَقَالَ: «فَأَنْطَلِقُ فَآتِي تَحْتَ الْعَرْشِ فَأَقَعُ سَاجِدًا لِرَبِّي ثُمَّ يَفْتَحُ اللَّهُ عَلَيَّ مِنْ مَحَامِدِهِ وَحُسْنِ الثَّنَاءِ عَلَيْهِ شَيْئًا لَمْ يَفْتَحْهُ عَلَى أَحَدٍ قَبْلِي ثُمَّ قَالَ يَا مُحَمَّدُ»» ارْفَعْ رَأْسَكَ وَسَلْ تُعْطَهْ وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ فَأَرْفَعُ رَأْسِي فَأَقُولُ أُمَّتِي يارب أمتِي يارب فَيُقَالُ يَا مُحَمَّدُ أَدْخِلْ مِنْ أُمَّتِكَ مَنْ لَا حِسَابَ عَلَيْهِمْ مِنَ الْبَابِ الْأَيْمَنِ مِنْ أَبْوَابِ الْجَنَّةِ وَهُمْ شُرَكَاءُ النَّاسِ فِيمَا سِوَى ذَلِكَ مِنَ الْأَبْوَابِ» . ثُمَّ قَالَ: «وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ إِنَّ مَا بَيْنَ الْمِصْرَاعَيْنِ مِنْ مَصَارِيعِ الْجَنَّةِ كَمَا بَيْنَ مَكَّةَ وَهَجَرَ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5575. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ के पास गोश्त लाया गया तो उस से एक दस्ती आप की खिदमत में पेश की गई, जबकि दस्ती आप को पसंद थी आप ﷺ ने अपने दांतों से एक बार इसे नोचा, फिर फ़रमाया: "रोज़ ए कियामत मैं तमाम लोगों का सरदार होऊंगा, इस दिन तमाम लोग रब्बुल आलमीन के हुज़ूर खड़े होंगे, सूरज करीब हो जाएगा, और लोग गम व तकलीफ की इन्तहा को पहुँच जाएँगे, तमाम लोग कहेंगे, क्या तुम्हें ऐसा कोई शख़्स नज़र नहीं आता है जो तुम्हारे रब के यहाँ तुम्हारी सिफारिश करे, चुनांचे वह आदम अलैहिस्सलाम के पास आएँगे, और फिर आगे हदीस शफाअत बयान की, और फ़रमाया: "मैं जाऊंगा और अर्श के नीचे पहुँचूँगा तो अपने रब के हुज़ूर सजदाह रेज़ हो जाऊंगा, फिर अल्लाह अपने हम्द व सना के ऐसे कलिमात मुझे सिखाएगा जो उस ने मुझ से पहले किसी को नहीं सिखाए होंगे, फिर वह फरमाएगा: मुहम्मद अपना सर उठाए, सवाल करे, आप का सवाल पूरा किया जाएगा, और सिफारिश करे तुम्हारी सिफारिश कबूल की जाएगी, मैं अपना सर उठाऊंगा और कहूँगा: रब जी! मेरी उम्मत, रब जी! मेरी उम्मत, रब जी! मेरी उम्मत, कहा जाएगा: मुहम्मद! आप अपनी उम्मत के उन लोगों को जिन पर कोई हिसाब नहीं, अब्वाबे जन्नत में से दाएँ दरवाज़े से दाखिल कीजिए, हालाँकि उन्हें उस के अलावा दीगर दरवाज़ो से लोगों के साथ गुज़रने का भी हक़ हासिल है", फिर फ़रमाया: "उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! जन्नत के दरवाज़े की देहलीज़ के दरमियान इतना फासला है जितना मक्का और हजर के दरमियान है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (4712) و مسلم (327 / 194)، (480)

٥٥٧٦ - (صَحِيح) وَعَنْ»» حُذَيْفَةَ فِي حَدِيثِ الشَّفَاعَةِ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «وَتُرْسَلُ الْأَمَانَةُ وَالرَّحِمُ فَتَقُومَانِ جَنَبَتَيِ الصِّرَاطِ يَمِينًا وَشِمَالًا»»» رَوَاهُ مُسلم

5576. शफ़ाअत से मुतल्लिक हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु से मरवी हदीस जो वह रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, फ़रमाया: "अमानत और सिलह रहमी को छोड़ा जाएगा तो वह पुल सिरात के दोनों किनारों पर खड़ी हो जाएगी"| (मुस्लिम)

رواہ مسلم (329 / 195)، (482)

٥٥٧٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ»» عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ»» تَلَا قَوْلَ اللَّهِ تَعَالَى فِي إِبْرَاهِيمَ: [رَبِّ إِنَّهُنَّ أَضْلَلْنَ كَثِيرًا مِنَ النَّاسِ فَمَنْ تَبِعَنِي فَإِنَّهُ مني] وَقَالَ عِيسَى: [إِن تُعَذبهُمْ فَإِنَّهُم عِبَادك] فَرَفَعَ يَدَيْهِ فَقَالَ «اللَّهُمَّ أُمَّتِي أُمَّتِي» . وَبَكَى فَقَالَ اللَّهُ تَعَالَى: «يَا جِبْرِيلُ اذْهَبْ إِلَى مُحَمَّدٍ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ فَسَلْهُ مَا يُبْكِيهِ؟» . فَأَتَاهُ جِبْرِيلُ فَسَأَلَهُ فَأَخْبَرَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَا قَالَ فَقَالَ اللَّهُ لِجِبْرِيلَ اذْهَبْ إِلَى مُحَمَّدٍ فَقُلْ: إِنَّا سَنُرْضِيكَ فِي أمَّتك وَلَا نسوؤك ". رَوَاهُ مُسلم

5577. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने सुरह इब्राहीम में मौजूद अल्लाह तआला का यह फरमान: “रब जी! उन्होंने बहोत से लोगों को गुमराह किया, जिस ने मेरी इत्तेबा की तो वह मुझ से है”, और इसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: “अगर तू उन्हें अज़ाब दे तो वह तेरे बंदे हैं”, आप ﷺ ने हाथ उठाए और दुआ की: “अल्लाह! मेरी उम्मत, मेरी उम्मत!‘‘ और आप रोने लगे, अल्लाह तआला ने फ़रमाया: “जिब्राइल! मुहम्मद ﷺ के पास जाओ और तेरा रब ज़्यादा जानता है, उन से पूछो के उन्हें कौन सी चीज़ रुला रही है?” जिब्राइल अलैहिस्सलाम आप ﷺ के पास तशरीफ़ लाए तो आप से दरियाफ्त किया, रसूलुल्लाह ﷺ ने जो कहा था वही उन्हें बता दीया, अल्लाह तआला ने जिब्राइल अलैहिस्सलाम से फ़रमाया: “मुहम्मद ﷺ के पास जाओ और कहो: हम आप की उम्मत के मुतल्लिक आप को राज़ी कर देंगे और आप को ग़मगीन नहीं करेंगे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (346 / 202)، (499)

٥٥٧٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ أَنَّ أَنَاسًا قَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ هَلْ نَرَى رَبَّنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ؟ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «نَعَمْ هَلْ تُضَارُّونَ فِي رُؤْيَةِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ صَحْوًا لَيْسَ فِيهَا سَحَابٌ؟» قَالُوا: لَا يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: " مَا تَضَارُّونَ فِي رُؤْيَةِ اللَّهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِلَّا كَمَا تُضَارُّونَ فِي رُؤْيَةِ أَحَدِهِمَا إِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ أَذَّنَ مُؤَذِّنٌ لِيَتَّبِعْ كُلُّ أُمَّةٍ مَا كَانَتْ تَعْبُدُ فَلَا يَبْقَى أَحَدٌ كَانَ يعبد غيرالله مِنَ الْأَصْنَامِ وَالْأَنْصَابِ إِلَّا يَتَسَاقَطُونَ فِي النَّارِ حَتَّى إِذَا لَمْ يَبْقَ إِلَّا مَنْ كَانَ يَعْبُدُ اللَّهَ مِنْ بَرٍّ وَفَاجِرٍ أَتَاهُمْ رَبُّ الْعَالَمِينَ قَالَ: فَمَاذَا تَنْظُرُونَ؟ يَتْبَعُ كُلُّ أُمَّةٍ مَا كَانَت تعبد. قَالُوا: يارببنا فَارَقْنَا النَّاسَ فِي الدُّنْيَا أَفْقَرَ مَا كُنَّا إِلَيْهِم وَلم نصاحبهم "

5578. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के कुछ लोगों ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या रोज़े कियामत हम अपने रब को देंखेंगे? रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: हाँ, क्या दोपहर के वक़्त, जब मतला अबरा आलूद न हो तो सूरज देखने में तुम कोई तकलीफ महसूस करते हो? और किया तो चौदवी की रात जब मतला अबरा आलूद न हो तो तुम चाँद देखने में कोई तकलीफ महसूस करते हो?” उन्होंने अर्ज़ किया, नहीं, अल्लाह के रसूल! आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसी तरह तुम रोज़ ए कियामत अल्लाह को देखने में तकलीफ महसूस नहीं करोगे, मगर जिस क़दर तुम इन दोनों में से किसी एक को देखने में तकलीफ महसूस करते हो, जब कियामत का दिन होगा तो एक एलान करने वाला एलान करेगा: हर उम्मत अपने माबूद के पीछे चली जाए, अल्लाह के अलावा बुतों की पूजा करने वाले सारे के सारे आग में गिर जाएँगे, हत्ता कि जब सिर्फ अल्लाह की इबादत करने वाले नेक और फ़ाजिर किस्म के लोग रह जाएगी तो रब्बुल आलमीन उन के पास आएगा, और पूछेगा, तुम किस का इंतज़ार कर रहे हो? हर उम्मत अपने माबूद के पीछे जा चुकी है, वह अर्ज़ करेंगे रब जी! हमने दुनिया में उन से

अलायेदगी इख़्तियार किए रखी जबकि हम उन के ज़रूरत मंद थे और हम उन के साथ न रहे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (806) و مسلم (229 / 182)، (451)

٥٥٧٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَفِي رِوَايَةِ أَبِي هُرَيْرَةَ " فَيَقُولُونَ: هَذَا مَكَانُنَا حَتَّى يَأْتِيَنَا رَبُّنَا فَإِذَا جَاءَ رَبُّنَا عَرَفْنَاهُ "»» وَفِي رِوَايَةِ أَبِي سَعِيدٍ: " فَيَقُولُ هَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُ آيَةٌ تَعْرِفُونَهُ؟ فَيَقُولُونَ: نَعَمْ فَيُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ فَلَا يَبْقَى مَنْ كَانَ يَسْجُدُ لِلَّهِ مِنْ تِلْقَاءِ نَفْسِهِ إِلَّا أَذِنَ اللَّهُ لَهُ بِالسُّجُودِ وَلَا يَبْقَى مَنْ كَانَ يَسْجُدُ اتِّقَاءً وَرِيَاءً إِلَّا جَعَلَ اللَّهُ ظَهْرَهُ طَبَقَةً وَاحِدَةً كُلَّمَا أَرَادَ أَنْ يَسْجُدَ خَرَّ عَلَى قَفَاهُ ثُمَّ يُضْرَبُ الْجِسْرُ عَلَى جَهَنَّمَ وَتَحِلُّ الشَّفَاعَةُ وَيَقُولُونَ اللَّهُمَّ سَلِّمْ سَلِّمْ فَيَمُرُّ الْمُؤْمِنُونَ كَطَرَفِ الْعَيْنِ وَكَالْبَرْقِ وَكَالرِّيحِ وَكَالطَّيْرِ وَكَأَجَاوِيدِ الْخَيْلِ وَالرِّكَابِ فَنَاجٍ مُسَلَّمٌ وَمَخْدُوشٌ مُرْسَلٌ وَمَكْدُوسٌ فِي نَارِ جَهَنَّمَ حَتَّى إِذَا خَلَصَ الْمُؤْمِنُونَ مِنَ النَّارِ فَوَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ مَا مِنْ أحد مِنْكُم بأشدَّ مُناشدةً فِي الْحق - قد تبين لَكُمْ - مِنَ الْمُؤْمِنِينَ لِلَّهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِينَ فِي النَّارِ يَقُولُونَ رَبَّنَا كَانُوا يَصُومُونَ مَعَنَا وَيُصَلُّونَ وَيَحُجُّونَ فَيُقَالُ لَهُمْ: أَخْرِجُوا مَنْ عَرَفْتُمْ [ص:١٥٥ فَتُحَرَّمُ صُوَرَهُمْ عَلَى النَّارِ فَيُخْرِجُونَ خَلْقًا كَثِيرًا ثُمَّ يَقُولُونَ: رَبَّنَا مَا بَقِيَ فِيهَا أَحَدٌ مِمَّنْ أَمَرْتَنَا بِهِ. فَيَقُولُ: ارْجِعُوا فَمَنْ وجدْتُم فِي قلبه مِثْقَال دنيار مِنْ خَيْرٍ فَأَخرجوهُ فَيُخْرِجُونَ خَلْقًا كَثِيرًا ثُمَّ يَقُولُ: ارْجِعُوا فَمَنْ وَجَدْتُمْ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالَ نِصْفِ دِينَارٍ مِنْ خَيْرٍ فَأَخْرِجُوهُ فَيُخْرِجُونَ خَلْقًا كَثِيرًا ثُمَّ يَقُولُ: ارْجِعُوا فَمَنْ وَجَدْتُمْ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ مِنْ خَيْرٍ فَأَخْرِجُوهُ فَيُخْرِجُونَ خَلْقًا كَثِيرًا ثُمَّ يَقُولُونَ: رَبَّنَا لَمْ نَذَرْ فِيهَا خَيِّرًا فَيَقُولُ اللَّهُ شُفِّعَتِ الْمَلَائِكَةُ وَشُفِّعَ النَّبِيُّونَ وَشُفِّعَ الْمُؤْمِنُونَ وَلَمْ يَبْقَ إِلَّا أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ فَيَقْبِضُ قَبْضَةً مِنَ النَّارِ فَيُخْرِجُ مِنْهَا قَوْمًا لَمْ يَعْمَلُوا خَيْرًا قَطُّ قَدْ عَادُوا حُمَمًا فَيُلْقِيهِمْ فِي نَهْرٍ فِي أَفْوَاهِ الْجَنَّةِ يُقَالُ لَهُ: نَهْرُ الْحَيَاةِ فَيَخْرُجُونَ كَمَا تَخْرُجُ الْحِبَّةُ فِي حَمِيلِ السَّيْلِ فَيَخْرُجُونَ كَاللُّؤْلُؤِ فِي رِقَابِهِمُ الْخَوَاتِمُ فَيَقُولُ أَهْلُ الْجَنَّةِ: هَؤُلَاءِ عُتَقَاءُ الرَّحْمَن أدخلهم الْجنَّة بِغَيْر عمل وَلَا خَيْرٍ قَدَّمُوهُ فَيُقَالُ لَهُمْ لَكُمْ مَا رَأَيْتُمْ وَمثله مَعَه ". مُتَّفق عَلَيْهِ

5579. और अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु की रिवायत में है: “वो कहेंगे जब तक हमारा रब हमारे पास नहीं आता तब तक हमारी हमें जगह है, जब हमारा रब आ जाएगा हम इसे पहचान लेंगे”, और अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु की रिवायत में है: “वो फरमाएगा क्या तुम्हारे और उस के दरमियान कोई निशानी है जिसे तुम पहचानते हो? वह अर्ज़ करेंगे: जी हाँ, वह अपने पिंडली ज़ाहिर करेगा तो हर वह शख़्स जो इखलास के साथ सजदाह करता था इसे अल्लाह सजदे की इजाज़त दे देगा और जो किसी खौफ, रियाकारी की खातिर सजदाह किया करता था अल्लाह उसकी कमर को तख्ता बनादेगा, जब वह सजदाह करने का इरादा करेगा तो वह अपने गुद्दी के बल गिर जाएगा, उस के बाद जहन्नम पर पुल रखा जाएगा और सिफारिश करने की इजाज़त मिल जाएगी तमाम (अंबिया (अस)) कहेंगे: ऐ अल्लाह! सलामती फरमाना, सलामती फरमाना, मोमिन (अपने अपने आमाल के मुताबिक) कुछ आँख झपकने की तरह, कुछ हवा की रफ़्तार की तरह, कुछ परिंदे की उड़ान की तरह, कुछ तेज़ रफ़्तार घोड़ो की तरह, और कुछ मुख्तलिफ सवारियों की रफ़्तार की तरह गुज़रेंगे, कोई तो सहीह सलामत निजात पा जाएँगे और किसी को जहन्नम की आग में धकेल दीया जाएगा, हत्ता के मोमिन जहन्नम की आग से निजात पा जाएँगे, तो उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! हक़ लेने की खातिर तुम से ज़्यादा शदीद मुतालबा करने वाला कोई नहीं होगा, जब उन्हें रोज़ ए कियामत अपने भाइयो के हक़ का पता चलेगा, जो के जहन्नम की आग में होंगे, वह कहेंगे हमारे रब! वह हमारे साथ रोज़े रखा करते थे, हमारे साथ नमाज़े पढ़ा करते थे और वह हज किया करते थे, उन्हें कहा जाएगा: जिन को तुम पहचानते हो उन्हें निकाल लो, उनकी सूरतो को जहन्नम की आग पर हराम करार दिया जाएगा, वह बहोत सी मखलूक को निकालेंगे, फिर वह कहेंगे, हमारे रब जिन के मुताल्लिक

तूने हमें हुक्म दिया था उनमें से कोई एक भी बाकी नहीं रहा, वह फरमाएगा: दोबारा जाओ और तुम जिस का दिल में दीनार के बराबर भी खैर पाओ, उस को निकाल लाओ, वह बहोत सारी मखलूक को निकाल लाएँगे, वह फिर फरमाएगा:लौट जाओ और तुम जिस का दिल में आधे दीनार के बराबर भी खैर पाओ तो उस को निकाल लाओ, वह बहोत सारी मखलूक को निकाल लाएँगे, वह फिर फरमाएगालौट जाओ और तुम जिस का दिल में ज़र्रा बराबर खैर पाओ, इसे निकाल लाओ, वह बहोत सारी मखलूक को निकाल लाएँगे, फिर वह अर्ज़ करेंगे हमारे रब! हमने इस (जहन्नम) में किसी अहले खैर को नहीं छोड़ा, (सब को निकाल लिया है) तब अल्लाह फरमाएगा: फरिश्तो ने सिफारिश की, अंबिया अलैहिस्सलाम ने सिफारिश की, और मोमिनो ने सिफारिश की, सिर्फ अर्रहिमुर राहिमिन ही बाकी रह गया है, वह जहन्नुमियो की एक मुठ्ठी भरेगा और वह उस से ऐसे लोगों को निकालेगा जिन्होंने कभी नेकी का कोई काम नहीं किया होगा और वह कोयला बन चुके होंगे, वह उन्हें जन्नत के दरवाज़ो पर बहने वाली नहर में डालेगा, इसे नहरे हयात कहा जाएगा, वह इस तरह निकलेंगे जिस तरह दाना सैलाब मिट्टी में उग आता है, वह मोतियों की तरह निकलेंगे उनकी गर्दनो में (अलामत के तौर पर) हार होंगे, अहले जन्नत कहेंगे: यह रहमान (अल्लाह तआला) के आज़ाद करदा हैं, उस ने उन्हें बिला किसी अमल के और किसी नेकी के जिस को उन्होंने आगे भेजा हो, जन्नत में दाखिल फ़रमाया है, इन के लिए कहा जाएगा: तुम्हारे लिए (जन्नत में) वह कुछ है जो तुमने (हद्द नज़र तक) देख लिया और उस के साथ इतना और"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (7439) و مسلم (302 / 183)، (454)

٥٥٨٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا دَخَلَ أَهْلُ الْجَنَّةِ الْجَنَّةَ وَأَهْلُ النَّارِ النَّارَ يَقُولُ اللَّهُ تَعَالَى: مَنْ كَانَ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالُ حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ مِنْ إِيمَانٍ فَأَخْرِجُوهُ فَيَخْرُجُونَ قَدِ امْتَحَشُوا وَعَادُوا حُمَمًا فَيُلْقَوْنَ فِي نَهْرِ الْحَيَاةِ فَيَنْبُتُونَ كَمَا تَنْبُتُ الْحِبَّةُ فِي حَمِيلِ السَّيْلِ أَلَمْ تَرَوْا أَنَّهَا تَخْرُجُ صَفْرَاءَ مُلْتَوِيَةً ". مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5580. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जब जन्नती जन्नत में और जहन्नमी जहन्नम में चले जाएगी तो अल्लाह तआला फरमाएगा: जिस का दिल में राइ के दाने के बराबर ईमान है उसे निकाल लो, उन्हें निकाल लिया जाएगा, वह जल कर कोयला बन चुके होंगे उन्हें नहरे हयात में डाल दीया जाएगा और वह उस से इस तरह नमूदार होंगे जिस तरह सैलाब मिट्टी में दाना उग आता है, क्या तुम ने देखा नहीं के वह (दाना शुरू में) ज़र्द रंग का लपटा हुआ पौदा निकल आता है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6560) و مسلم (204 / 184)، (457)

٥٥٨١ - (متفق عَلَيْهِ) وَعَن أبي هُرَيْرَة أَنَّ النَّاسَ قَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ هَلْ نَرَى رَبَّنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ؟ فَذَكَرَ مَعْنَى حَدِيثِ أَبِي سَعِيدٍ غَيْرَ كَشْفِ السَّاقِ وَقَالَ: " يُضْرَبُ الصِّرَاطُ بَيْنَ [ص:١٥٥ ظَهْرَانَيْ جَهَنَّمَ فَأَكُونُ أَوَّلَ مَنْ يَجُوزُ مِنَ الرُّسُلِ بِأُمَّتِهِ وَلَا يَتَكَلَّمُ يَوْمَئِذٍ الرُّسُلُ وَكَلَامُ الرُّسُلِ يَوْمَئِذٍ: اللَّهُمَّ سَلِّمْ سَلِّمْ. وَفِي جهنمَ كلاليب مثلُ شوك السعدان وَلَا يَعْلَمُ قَدْرَ عِظَمِهَا إِلَّا اللَّهُ

تَخْطَفُ النَّاسَ بِأَعْمَالِهِمْ فَمِنْهُمْ مَنْ يُوبَقُ بِعَمَلِهِ وَمِنْهُمْ مَنْ يُخَرْدَلُ ثُمَّ يَنْجُو حَتَّى إِذَا فَرَغَ اللَّهُ مِنَ الْقَضَاءِ بَيْنَ عِبَادِهِ وَأَرَادَ أَنْ يُخْرِجَ مِنَ النَّارِ مَنْ أَرَادَ أَنْ يُخْرِجَهُ مِمَّنْ كَانَ يَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ أَمر الْمَلَائِكَة أَن يخرجُوا من يَعْبُدُ اللَّهَ فَيُخْرِجُونَهُمْ وَيَعْرِفُونَهُمْ بِآثَارِ السُّجُودِ وَحَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَى النَّارِ أَنْ تَأْكُلَ أَثَرَ السُّجُودِ فَكُلُّ ابْنِ آدَمَ تَأْكُلُهُ النَّارُ إِلَّا أَثَرَ السُّجُودِ فَيَخْرُجُونَ مِنَ النَّارِ قَدِ امْتَحَشُوا فَيُصَبُّ عَلَيْهِمْ مَاءُ الْحَيَاةِ فَيَنْبُتُونَ كَمَا تَنْبُتُ الْحِبَّةُ فِي حَمِيلِ السَّيْلِ وَيَبْقَى رَجُلٌ بَيْنَ الجنَّةِ والنارِ وَهُوَ آخرُ أهلِ النارِ دُخولاً الْجَنَّةَ مُقْبِلٌ بِوَجْهِهِ قِبَلَ النَّارِ فَيَقُولُ: يَا رب اصرف وَجْهي عَن النَّار فَإِنَّهُ قد قَشَبَنِي رِيحُهَا وَأَحْرَقَنِي ذَكَاؤُهَا. فَيَقُولُ: هَلْ عَسَيْتَ إِنْ أَفْعَلْ ذَلِكَ أَنْ تَسْأَلَ غَيْرَ ذَلِكَ؟ فَيَقُول: وَلَا وعزَّتكَ فيُعطي اللَّهَ مَا شاءَ اللَّهُ مِنْ عَهْدٍ وَمِيثَاقٍ فَيَصْرِفُ اللَّهُ وَجْهَهُ عَنِ النارِ فإِذا أقبلَ بِهِ على الجنةِ وَرَأى بَهْجَتَهَا سَكَتَ مَا شَاءَ اللَّهُ أَنْ يَسْكُتَ ثُمَّ قَالَ: يَا رَبِّ قَدِّمْنِي عِنْدَ بَابِ الجنةِ فَيَقُول الله تبَارك وَتَعَالَى: الَيسْ أَعْطَيْتَ الْعُهُودَ وَالْمِيثَاقَ أَنْ لَا تَسْأَلَ غَيْرَ الَّذِي كُنْتَ سَأَلْتَ. فَيَقُولُ: يَا رَبِّ لَا أَكُونُ أَشْقَى خَلْقِكَ. فَيَقُولُ: فَمَا عَسَيْتَ إِنْ أُعْطِيتُ ذَلِكَ أَنْ تَسْأَلَ غَيْرَهُ. فَيَقُولُ: لَا وَعِزَّتِكَ لَا أَسْأَلُكَ غَيْرَ ذَلِكَ فَيُعْطِي رَبَّهُ مَا شَاءَ مِنْ عَهْدٍ وَمِيثَاقٍ فَيُقَدِّمُهُ إِلَى بَابِ الْجَنَّةِ فَإِذَا بَلَغَ بَابَهَا فَرَأَى زَهْرَتَهَا وَمَا فِيهَا مِنَ النَّضْرَةِ وَالسُّرُورِ [ص:١٥٥ فَسَكَتَ مَا شَاءَ اللَّهُ أَنْ يَسْكُتَ فَيَقُولُ: يَا رَبِّ أَدْخِلْنِي الْجَنَّةَ فَيَقُولُ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى: وَيْلَكَ يَا ابْنَ آدَمَ مَا أَغْدَرَكَ أَلَيْسَ قَدْ أَعْطَيْتَ الْعُهُودَ وَالْمِيثَاقَ أَنْ لَا تَسْأَلَ غَيْرَ الَّذِي أُعْطِيتَ. فَيَقُولُ: يَا رَبِّ لَا تَجْعَلْنِي أَشْقَى خَلْقِكَ فَلَا يَزَالُ يَدْعُو حَتَّى يَضْحَكَ اللَّهُ مِنْهُ فَإِذَا ضَحِكَ أَذِنَ لَهُ فِي دُخُولِ الْجَنَّةِ. فَيَقُولُ: تَمَنَّ فَيَتَمَنَّى حَتَّى إِذَا انْقَطَعَتْ أُمْنِيَّتُهُ قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: تَمَنَّ مِنْ كَذَا وَكَذَا أَقْبَلَ يُذَكِّرُهُ رَبُّهُ حَتَّى إِذَا انْتَهَتْ بِهِ الْأَمَانِيُّ قَالَ اللَّهُ: لَكَ ذَلِكَ ومثلُه معَه "»» وَفِي رِوَايَةِ أَبِي سَعِيدٍ: " قَالَ اللَّهُ: لَكَ ذلكَ وعشرةُ أمثالِه ". مُتَّفق عَلَيْهِ

5581. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के लोगों ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या हम रोज़ ए कियामत अपने रब को देंखेंगे? उन्होंने अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु से मरवी हदीस का मफ्हुम बयान किया, अलबत्ता पिंडली खोलने का ज़िक्र नहीं किया, और फ़रमाया: “जहन्नम के दोनों किनारों पर पुल काइम किया जाएगा, तमाम रसूलो से पहले में अपनी उम्मत के साथ इस (पुल) को उबुर (पार) करूँगा, इस दिन सिर्फ रसूल ही कलाम करेंगे और इस दिन रसूलो का कलाम यही होगा: ऐ अल्लाह! सलामती अता फरमाना, ऐ अल्लाह! सलामती अता फरमाना, और जहन्नम में सअदान के काँटों की तरह आंकड़े होंगे और उन (आँकड़ो) के टूल व अर्ज़ को सिर्फ अल्लाह ही जानता है, वह लोगों को उन के आमाल के मुताबिक उचक लेंगे, चुनांचे उनमें से ऐसे भी होंगे जो हलाक हो जाएँगे, और उनमें से कुछ ऐसे भी होंगे जो काट डाले जाएँगे फिर (गिरने से) बच जाएँगे, हत्ता कि जब अल्लाह अपने बंदो के दरमियान फैसले से फारिग़ हो जाएगा और वह जहन्नम से निकालने का इरादा फरमाएगा तो वह जिन्हें उस से निकालने का इरादा फरमाएगा वह ऐसे होंगे जो यह गवाही देते होंगे के अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, वह फरिश्तो को हुक्म फरमाएगा के अल्लाह की इबादत करने वालो को निकाले, वह उन्हें निकालेंगे, और वह उन्हें सजदो के निशानात से पहचान लेंगे, और अल्लाह तआला ने आग पर हराम कर दिया है के वह सजदो के निशानात (की जगह) को खाए, आग इंसान के सजदो के निशानात के सिवा बाकी तमाम आज़ाअ को खा जाएगी, और वह आग से निकाल लिए जाएँगे हालाँकि वह जल चुके होंगे, फिर इन पर आबे हयात बहाया जाएगा और वह ऐसे नमूदार होंगे जिस तरह सैलाबी मिट्टी से दाना उग आता है, जन्नत और जहन्नम के बिच में एक आदमी बाकी रह जाएगा और जन्नत में दाखिल होने वाला वह आखिरी जहन्नमी होगा, उस का चेहरा जहन्नम की आग की तरफ होगा, वह अर्ज़ करेगा रब जी! मेरा चेहरा जहन्नम से दूसरी तरफ कर दे, (क्यूंकि) उसकी बदबू ने मुझे अज़ीयत में मुब्तिला कर रखा है और उस के शोलो ने मुझे जला दिया है, रब तआला फरमाएगा: क्या ऐसा तो नहीं के अगर मैंने यह कर दिया तो तो उस के अलावा कोई दूसरी चिज़ का

सवाल कर दे, वह अर्ज़ करेगा: तेरी इज्ज़त की क़सम नहीं, (कोई और सवाल नहीं करूँगा), वह जो अल्लाह चाहेगा, अल्लाह को अहद व मिशाक देगा तो अल्लाह उस के चेहरे को आग से दूसरी तरफ फेरा देगा, और जब वह जन्नत की तरफ मुंह कर लेगा और वह उसकी रोनक देखेगा तो जिस क़दर अल्लाह चाहेगा के वह ख़ामोश रहे तो वह इस क़दर ख़ामोश रहेगा, फिर वह अर्ज़ करेगा: रब जी! मुझे जन्नत के दरवाज़े के करीब कर दे, अल्लाह तबारक व तआला फरमाएगा: क्या तूने मुझ से अहद व मिशाक नहीं किया था के तो इस सवाल के बाद किसी और चीज़ के मुतल्लिक सवाल नहीं करेगा वह अर्ज़ करेगा? रब जी! मैं तेरी मखलूक का सबसे ज़्यादा बदनसीब शख़्स न हो जाऊं, चुनांचे वह फरमाएगा: क्या हो सकता है के अगर में तुम्हें यह अता कर दू तू उस के अलावा किसी दूसरी चिज़ का मुतालबा कर दे? वह अर्ज़ करेगा: तेरी इज्ज़त की क़सम (ऐसे) नहीं? में उस के अलावा किसी और चिज़ का तुझ से मुतालबा नहीं करूँगा, वह अपने रब को, जो अल्लाह तआला चाहेगा अहद व मिशाक देगा, तो वह इसे जन्नत के दरवाज़े के करीब कर देगा, और जब वह उस के दरवाज़े पर पहुँच जाएगा तो वह उसकी तरोताज़गी और उस में जो रोनक व ख़ुशी देखेगा तो जिस क़दर अल्लाह चाहेगा के वह ख़ामोश रहे तो वह ख़ामोश रहेगा, फिर अर्ज़ करेगा: रब जी! मुझे जन्नत में दाखिल फरमा दें, अल्लाह तबारक व तआला फरमाएगा इब्ने आदम! तुझ पर अफ़सोस है, तू कितना बड़ा वादा खिलाफ है! क्या तूने अहद व मिशाक नहीं दिया था के तो इस चीज़ के अलावा, जो मैंने तुम्हें अता कर दी, कोई दूसरी चिज़ का मुतालबा नहीं करेगा? वह अर्ज़ करेगा: रब जी! मुझे अपने मखलूक में सबसे ज़्यादा बदनसीब न बना, वह मुसलसल दुआ करता रहेगा हत्ता के अल्लाह उसकी वजह से हंस देगा, जब वह हंस देगा तो वह इसे दाखिले जन्नत की इजाज़त फरमादेगा, और फरमाएगा तमन्ना कर, वह तमन्ना करेगा हत्ता कि जब उसकी तमन्नाएं ख़तम हो जाएगी तो अल्लाह तआला फरमाएगा, तू फलां फलां चीज़ की तमन्ना कर, उस का रब इसे याद दिलाएगा, हत्ता कि जब यह सब तमन्नाएं ख़तम हो जाएगी तो अल्लाह फरमाएगा, यह (जो तूने तमन्ना की) तेरे लिए है और उतनी ही मज़ीद उस के साथ (तुझे अता की जाती हैं)", और अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु की रिवायत में है: "अल्लाह फरमाएगा यह (जो तूने तमन्ना की) तेरे लिए है और उसकी मिस्ल दस गुना मज़ीद (अता की जाती हैं)"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (806) و مسلم (299 / 182)، (451)

٥٥٨٢ - (صَحِيح) وَعَنِ»» ابْنِ مَسْعُودٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " آخِرُ مَنْ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ رَجُلٌ يَمْشِي مَرَّةً وَيَكْبُو مَرَّةً وَتَسْفَعُهُ النارُ مرّة فإذا جاوُوها الْتَفَتَ إِلَيْهَا فَقَالَ: تَبَارَكَ الَّذِي نَجَّانِي مِنْكِ لَقَدْ أَعْطَانِي اللَّهُ شَيْئًا مَا أَعْطَاهُ أَحَدًا مِنَ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ فَتُرْفَعُ لَهُ شَجَرَةٌ فَيَقُولُ: أَيْ رَبِّ أَدْنِنِي مِنْ هَذِهِ الشَّجَرَةِ فَلْأَسْتَظِلَّ بِظِلِّهَا وَأَشْرَبَ مِنْ مَائِهَا فَيَقُولُ اللَّهُ: يَا ابْنَ آدَمَ لَعَلِّي إِنْ أَعْطَيْتُكَهَا سَأَلْتَنِي غَيْرَهَا؟ فَيَقُولُ: لَا يَا رَبِّ وَيُعَاهِدُهُ أَنْ لَا يَسْأَلَهُ غَيْرَهَا وَرَبُّهُ يَعْذُرُهُ لِأَنَّهُ يَرَى مَا لَا صَبْرَ لَهُ عَلَيْهِ فَيُدْنِيهِ مِنْهَا فَيَسْتَظِلُّ بِظِلِّهَا وَيَشْرَبُ مِنْ مَائِهَا ثُمَّ تُرْفَعُ لَهُ شَجَرَةٌ هِيَ أَحْسَنُ مِنَ الْأُولَى فَيَقُولُ: أَيْ رَبِّ أَدْنِنِي مِنْ هَذِهِ الشَّجَرَةِ لِأَشْرَبَ مِنْ مَائِهَا وَأَسْتَظِلَّ بِظِلِّهَا لَا أَسْأَلُكَ غَيْرَهَا. فَيَقُولُ: يَا ابْنَ آدَمَ أَلَمْ تُعَاهِدْنِي أَنْ لَا تَسْأَلَنِي غَيْرَهَا؟ فَيَقُولُ: لَعَلِّي إِنْ أَدْنَيْتُكَ مِنْهَا تَسْأَلُنِي غَيْرَهَا؟ فَيُعَاهِدُهُ أَنْ لَا يَسْأَلَهُ غَيْرَهَا وَرَبُّهُ يَعْذُرُهُ لِأَنَّهُ يَرَى مَا لَا صَبْرَ لَهُ عَلَيْهِ فَيُدْنِيهِ مِنْهَا فَيَسْتَظِلُّ بِظِلِّهَا وَيَشْرَبُ مِنْ مَائِهَا ثُمَّ تُرْفَعُ لَهُ شَجَرَةٌ عِنْدَ بَابِ الْجَنَّةِ هِيَ أَحْسَنُ مِنَ الْأُولَيَيْنِ فَيَقُولُ: أَيْ رَبِّ أَدْنِنِي مِنْ هَذِهِ فَلِأَسْتَظِلَّ بِظِلِّهَا وَأَشْرَبَ مِنْ مَائِهَا لَا أَسْأَلُكَ غَيْرَهَا. فَيَقُولُ: يَا ابْنَ آدَمَ أَلَمْ تُعَاهِدْنِي [ص:١٥٥ أَنْ لَا تَسْأَلَنِي غَيْرَهَا؟ قَالَ: بَلَى يَا رَبِّ هَذِهِ لَا أَسْأَلُكَ غَيْرَهَا وَرَبُّهُ يَعْذُرُهُ لِأَنَّهُ يَرَى مَا لَا صَبْرَ لَهُ عَلَيْهِ فَيُدْنِيهِ مِنْهَا فَإِذَا أَدْنَاهُ مِنْهَا سَمِعَ أَصْوَاتَ أَهْلِ

الْجَنَّةِ فيقولُ: أَي رَبِّ أَدْخِلْنِيهَا فَيَقُولُ: يَا ابْنَ آدَمَ مَا يصريني مِنْك؟ أيرضيك أَن أَعْطِيك الدُّنْيَا وَمِثْلَهَا مَعَهَا. قَالَ: أَيْ رَبِّ أَتَسْتَهْزِئُ مِنِّي وَأَنْتَ رَبُّ الْعَالَمِينَ؟ فَضَحِكَ ابْنُ مَسْعُودٍ فَقَالَ: أَلا تسألونيّ ممَّ أَضْحك؟ فَقَالُوا: مِم تضحك؟ فَقَالَ: هَكَذَا ضَحِكَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَقَالُوا: مِمَّ تَضْحَكُ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: " من ضحك رَبُّ الْعَالَمِينَ؟ فَيَقُولُ: إِنِّي لَا أَسْتَهْزِئُ مِنْكَ وَلَكِنِّي على مَا أَشَاء قدير ". رَوَاهُ مُسلم

5582. इब्ने मसूद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने फरमाया सबसे आख़िर में जन्नत में दाखिल होने वाला आदमी वह होगा जो एक बार चलेगा और एक बार मुंह के बल गिरेगा और एक बार आग इसे झुलसे गी, जब वह इस (आग) से गुजर जाएगा तो वह इसकी तरफ मुड़ कर देखकर कहेगा, बा बरकत है वह जात जिसने मुझे तुझ से बचा लिया और अल्लाह ने मुझे वह चीज अता फरमादी जो इसने अगलो और पिछड़ों में से किसी को अता नहीं फरमाइ, इसे एक दरख्त दिखाया जाएगा तो वह अर्ज करेगा: रब जी मुझे इस दरख़्त के करीब कर दें ताकि मैं इस के साए से साया हासिल कर सकूं, और इसके (पास चश्मे के पानी से) पानी पी सकूं, अल्लाह फरमाएगा: इब्ने आदम शायद के में वह तुझे अता करूं तो फिर तुम इसके अलावा किसी और चीज का मुतालबा करोगे? व अर्ज़ करेगा: रब जी! नहीं, वह इससे मुआयदा करेगा कि वह इससे इसके अलावा और किसी और चीज का मुतालबा नहीं करेगा, और इसका रब (सवाल करने पर) इसे माज़ूर समझेगा, क्योंकि वह ऐसी चीज का मुशाहिदा करेगा जिन्हें देखकर वह सब नहीं कर सकेगा, वह इसको (दरख़्त) के करीब कर देगा तो वह इसके साए से साया हासिल करेगा और वह इसके (चश्मे) से पानी पिएगा, फिर इसे एक और दरख्त दिखाया जाएगा जो पहले से भी कहीं ज्यादा खूबसूरत होगा, वह अर्ज़ करेगा: रब जी! मुझे इस तरह के करीब कर दें ताकि मैं इस के (चश्मे के) पानी से पानी पी सकूं और इसके सारे से साया हासिल कर सकू, और मैं इसके अलावा तुझसे और कोई चीज नहीं मांगूंगा, वह फरमाएगा: इब्ने आदम! क्या तूने मुझसे वादा नहीं किया था, कि तु इसके अलावा मुझसे कोई और चीज नहीं मांगेगा, और वह फरमाएगा: हो सकता है कि मैं तुझे इस के करीब कर दूं, तो फिर तुम मुझसे इसके अलावा कोई और चीज मांग ले, वह इससे इसके अलावा कोई चीज ना मांगने का वादा करेगा, जबकि इस कर रब इसे (दोबारा सवाल करने पर) माज़ूर समझेगा, क्योंकि वह ऐसी नेमत का मुशाहिदा करेगा जिन्हें देखकर इसका पैमाना ए सब्र लबरेज़ (भर) हो जाएगा, वह इसको इसके करीब कर देगा तो वह इसके सारे से साया हासिल करेगा और इसके (चश्मे के) पानी से पानी पिएगा, फिर जन्नत के दरवाजे पर एक और दरख़्त दिखाया जाएगा जो साबीका दोनों दरख़्तों से कहीं ज्यादा खूबसूरत होगा, वह अर्ज़ करेगा: रब जी! मुझे इस (दरख़्त) के करीब कर दें ताकि मैं इसके सारे से हासिल करूँ और इसके के (चश्मे के) पानी से पानी पियूँ, फिर मैं इसके अलावा तुझसे कोई सवाल नहीं करूंगा, वह फरमाएगा: इब्ने आदम! क्या तूने मुझसे मुआहीदा नहीं किया था के तू इसके अलावा मुझसे कोई और चीज नहीं मांगेगा, वह अर्ज़ करेगा: रब जी! बिल्कुल ठीक है, बस यह पूरा फरमा दें, मैं इसके अलावा कोई और सवाल नहीं करूंगा, इस का रब इसे माज़ूर समझेगा, फिर वह इसे ऐसी नेमतो का मुशाहिदा करेगा जिन्हें देखकर वह सब्र नहीं करें सकेगा, वह इसके करीब कर देगा, जब वह इसके करीब कर देगा तो वह अहले जन्नत की आवाज़े सुनेगा तो अर्ज करेगा, रब जी! मुझे इस में दाखिल फरमा दें, वह फरमाएगा: ए इब्ने आदम! कौन सी चीज (चाहने के बाद) तु मुझसे सवाल करना तर्क करेगा? क्या तू राजी हो जाएगा कि मैं दुनिया के बराबर और इसके मिसल मजीद तुझे अता कर दूँ? वह अर्ज़ करेगा: रब जी! क्या आप मुझसे मजाक करते हो जबकि आप रब्बुल आलमीन हो? इब्ने मसूद हंस दिए, और फरमाइया: क्या तुम

मुझसे सवाल नहीं करोगे कि मैं किस वजह से हंस रहा हूं? उन्होंने पूछा कि आप क्यों हंस रहे हैं? उन्होंने फरमाया इस तरह रसूलुल्लाह ﷺ भी हंस रहे थे, इस पर सहाबा रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने अर्ज़ किया था, अल्लाह के रसूल! आप किस वजह से हंस रहे हैं? आप ﷺ ने फ़रमाया: “रब्बुल आलमीन के हंसने की वजह से जब उस ने कहा था, क्या तू मुझ से मज़ाक करता है जबकि तो रब्बुल आलमीन है? वह फरमाएगा में तुझ से मज़ाक नहीं करता बल्कि में जो चाहूँ उस के करने पर कादिर हूँ| (मुस्लिम)

رواه مسلم (310 / 187)، (463)

٥٥٨٣ - (صَحِيح) وَفِي»» رِوَايَة لَهُ عَن أبي سعيدٍ نَحْوَهُ إِلَّا أَنَّهُ لَمْ يَذْكُرْ " فَيَقُولُ: يَا ابْنَ آدَمَ مَا يَصْرِينِي مِنْكَ؟ " إِلَى آخِرِ الْحَدِيثِ وَزَادَ فِيهِ: " وَيُذَكِّرُهُ اللَّهُ: سَلْ كَذَا وَكَذَا حَتَّى إِذَا انْقَطَعَتْ بِهِ الْأَمَانِيُّ قَالَ اللَّهُ: هُوَ لَكَ وَعَشَرَةُ أَمْثَالِهِ قَالَ: ثُمَّ يَدْخُلُ بَيْتَهُ فَتَدْخُلُ عَلَيْهِ زَوْجَتَاهُ مِنَ الْحُورِ الْعِينِ فَيَقُولَانِ: الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَحْيَاكَ لَنَا وَأَحْيَانَا لَكَ. قَالَ: فَيَقُولُ: مَا أَعْطَى أَحَدٌ مثلَ مَا أَعْطَيْت "

5583. और सहीह मुस्लिम ही की अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु से मरवी हदीस इसी तरह है, अलबत्ता उन्होंने यह ज़िक्र नहीं किया: “वो फरमाएगा इब्ने आदम! कौन सी चीज़ तुझे मुझ से (सवाल करने से) बाज़ रखेगी ?” आख़िर हदीस तक, और उस में यह इज़ाफा नकल किया है: “अल्लाह इसे याद कराएगा फलां चीज़ मांगो, फलां चीज़ मांगो, हत्ता कि जब उसकी ख्वाहिशात ख़तम हो जाएगी तो अल्लाह तआला फरमाएगा: वह (जो तूने माँगा) तेरे लिए है और उस से दस गुना मज़ीद तेरे लिए है”, फ़रमाया: “फिर वह अपने घर में दाखिल होगा तो हूरों में से उसकी दो बीवियां उस के पास आएगी, तो वह कहे गी: हर किस्म की हम्द शुक्र अल्लाह के लिए है जिस ने तुझे हमारी खातिर और हमें तेरी खातिर पैदा फ़रमाया”, आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो (बंदा) कहेगा जो मुझे अता किया गया है वैसा किसी और को अता नहीं किया गया”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (311 / 188)، (464)

٥٥٨٤ - (صَحِيح) وَعَن»» أنس أَن النَّبِي الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " لَيُصِيبَنَّ أَقْوَامًا سَفْعٌ مِنَ النَّارِ بِذُنُوبٍ أَصَابُوهَا عُقُوبَةً ثُمَّ يُدْخِلُهُمُ اللَّهُ الْجَنَّةَ بِفَضْلِهِ وَرَحْمَتِهِ فَيُقَالُ لَهُمْ: الجهنميون ". رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

5584. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “कुछ लोग उन गुनाहों की वजह से जो उन्होंने किए होंगे बतौर सज़ा आग उन्हें झुलसा देगी, फिर अल्लाह अपने फज़ल व रहमत से उन्हें जन्नत में दाखिल फरमाएगा, उन्हें जहन्नमी कहा जाएगा”| (बुखारी)

رواه البخاری (6559)

٥٥٨٥ - (صَحِيح) وَعَنْ»» عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَخْرُجُ أَقْوَامٌ مِنَ النَّارِ بِشَفَاعَةِ مُحَمَّدٍ فَيَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَيُسَمَّوْنَ الْجَهَنَّمِيِّينَ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ»» وَفِي رِوَايَةٍ: «يَخْرُجُ قَوْمٌ مِنْ أُمَّتِي مِنَ النَّارِ بِشَفَاعَتِي يُسَمَّوْنَ الْجَهَنَّمِيِّينَ»

5585. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुहम्मद ﷺ की शफाअत के ज़रिए कुछ लोगों को जहन्नम की आग से निकाल कर जन्नत में दाखिल कर दिया जाएगा, उनका नाम जहन्नमी रखा जाएगा”| एक दूसरी रिवायत में है: “मेरी उम्मत के कुछ लोग मेरी शफाअत के ज़रिए जहन्नम की आग से निकाले जाएँगे, उनका नाम जहन्नमी रखा जाएगा”| (रवाह बुखार तिरमिज़ी.)

رواه البخاری (6566) و الترمذی (2600)

٥٥٨٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنِّي لَأَعْلَمُ آخِرَ أَهْلِ النَّارِ خُرُوجًا مِنْهَا وَآخِرَ أَهْلِ الْجَنَّةِ دُخُولًا رَجُلٌ يَخْرُجُ مِنَ النَّارِ حَبْوًا. فَيَقُولُ اللَّهُ: اذْهَبْ فَادْخُلِ الْجَنَّةَ فَإِنَّ لَكَ مِثْلَ الدُّنْيَا وَعَشَرَةَ أَمْثَالِهَا. فَيَقُولُ: أَتَسْخَرُ مِنِّي - أَوْ تَضْحَكُ مِنِّي - وَأَنْتَ الْمَلِكُ؟ " وَلَقَدْ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ضَحِكَ حَتَّى بَدَتْ نَوَاجِذُهُ وَكَانَ يُقَالُ: ذَلِكَ أَدْنَى أَهْلِ الْجَنَّةِ مَنْزِلَةً. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5586. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि जहन्नुमियो में से सबसे आख़िर पर इस (जहन्नम) से कौन निकलेगा और सबसे आख़िर पर जन्नत में कौन दाखिल होगा, एक आदमी सुरिन के बल घसीट कर जहन्नम से निकलेगा तो अल्लाह फरमाएगा: जा जन्नत में दाखिल हो जा, वह वहां आएगा तो उसे ऐसे ख़याल आएगा के वह तो भर चुकी है, वह अर्ज़ करेगा, रब जी! मैंने तो उसे भरा हुआ पाया है, अल्लाह फरमाएगा, जा, जन्नत में दाखिल हो जा तेरे लिए दुनिया और उसकी मिस्ल दस गुना है, वह अर्ज़ करेगा क्या तू मुझ से मज़ाक करता है, हालाँकि तू तो बादशाह है”, (रावी बयान करते हैं), मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को देखा के आप हंस दिए हत्ता के आप की दाढ़े नज़र आने लगी, कहा जाता है के वह जन्नत का सबसे कम दरजे वाला शख़्स होगा| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6571) و مسلم (308 / 186)، (461)

٥٥٨٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ»» أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنِّي لَأَعْلَمُ آخِرَ أَهْلِ الْجَنَّةِ دُخُولًا الْجَنَّةَ وَآخِرَ أَهْلِ النَّارِ خُرُوجًا مِنْهَا رَجُلٌ يُؤْتَى بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيُقَالُ: اعْرِضُوا عَلَيْهِ صِغَارَ ذُنُوبِهِ وَارْفَعُوا عَنْهُ كِبَارَهَا فتعرض عَلَيْهِ صغَار ذنُوبه وفيقال: عملت يَوْم كَذَا وَكَذَا وَكَذَا وَكَذَا وَعَمِلْتَ يَوْمَ كَذَا وَكَذَا كَذَا وَكَذَا؟ فَيَقُولُ: نَعَمْ. لَا يَسْتَطِيعُ أَنْ يُنْكِرَ وَهُوَ مُشْفِقٌ مِنْ كِبَارِ ذُنُوبِهِ أَنْ تُعْرَضَ عَلَيْهِ. فَيُقَالُ لَهُ فَإِنَّ لَكَ مَكَانَ كُلِّ سَيِّئَةٍ حَسَنَةً. فَيَقُولُ: رَبِّ قَدْ عَمِلْتُ أَشْيَاءَ لَا أَرَاهَا هَهُنَا " وَقَدْ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ضَحِكَ حَتَّى بَدَتْ نَوَاجِذُهُ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

5587. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैं अच्छी तरह जानता हूँ जो सबसे आख़िर में जन्नत में दाखिल होगा और जो सबसे आख़िर में जहन्नम से निकलेगा, एक आदमी को रोज़ ए कियामत पेश किया जाएगी तो कहा जाएगा, उस पर उस के सगिरह गुनाह पेश करो और उस के कबिराह गुनाह छिपा रखो, उस के सगिरह गुनाह उस पर पेश किए जाएगी तो कहा जाएगा: फलां दिन तूने ये, ये, ये, और यह किया और फलां दिन, तूने ये, ये, ये, और यह किया वह अर्ज़ करेगा: जी हाँ, वह इनकार नहीं कर सकेगा, और वह अपने कबिराह गुनाहों से डर रहा होगा के वह उस पर पेश किए जाएँगे, इतने में उसे कहा जाएगा हर बुराई के बदले तुझे नेकी अता की जाती है, तो वह अर्ज़ करेगा रब जी! मैंने तो कुछ ऐसे (कबीरा) गुनाह किए थे जिन्हें में यहाँ देख नहीं रहा”, और मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को देखा के आप हंस दिए हत्ता के आप की दाढ़े नज़र आने लगी| (मुस्लिम)

رواه مسلم (314 / 190)، (467)

٥٥٨٨ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَنَسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " يَخْرُجُ مِنَ [ص:١٥٥ النَّارِ أَرْبَعَةٌ فَيُعْرَضُونَ عَلَى اللَّهِ ثُمَّ يُؤْمَرُ بِهِمْ إِلَى النَّارِ فَيَلْتَفِتُ أَحَدُهُمْ فَيَقُولُ: أَيْ رَبِّ؟ لَقَدْ كنتُ أَرْجُو إِذا أَخْرَجْتَنِي مِنْهَا أَنْ لَا تُعِيدَنِي فِيهَا " قَالَ: «فينجيه الله مِنْهَا» . رَوَاهُ مُسلم

5588. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “(सब से आख़िर पर) जहन्नम से चार आदमियों को निकाल कर अल्लाह के हुज़ूर पेश किया जाएगा, वह फिर उन्हें जहन्नम में ले जाने का हुक्म फरमाएगा, उनमें से एक फिर मुड़ मुड़ कर द देखेगा और अर्ज़ करेगा: रब जी! मैं तो उम्मीद करता था की जब तूने मुझे वहां से निकाल लिया तो फिर तू मुझे उस में नहीं लौटाएगा”, फ़रमाया: “अल्लाह उस को इस जहन्नम से निजात दे देगा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (321 / 192)، (474)

٥٥٨٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ»» أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَخْلُصُ الْمُؤْمِنُونَ مِنَ النَّارِ فَيُحْبَسُونَ عَلَى قَنْطَرَةٍ بَيْنَ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ فَيُقْتَصُّ لِبَعْضِهِمْ مِنْ بَعْضٍ مَظَالِمُ كَانَتْ بَيْنَهُمْ فِي الدُّنْيَا حَتَّى إِذَا هُذِّبُوا وَنُقُّوا أُذِنَ لَهُمْ فِي دُخُولِ الْجَنَّةِ فَوَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لَأَحَدُهُمْ أَهْدَى بِمَنْزِلِهِ فِي الْجَنَّةِ مِنْهُ بِمَنْزِلِهِ كَانَ لَهُ فِي الدُّنْيَا» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

5589. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मोमिन जहन्नम से खलासी हासिल कर लेंगे तो उन्हें जन्नत और जहन्नम के दरमियान एक पुल पर रोक लिया जाएगा और उन के दुनिया के बाहमी मुज़ालिम (हक़ तल्फियों) का एक दूसरे से बदला दिलाया जाएगा हत्ता के जब वह साफ़ सुथरे कर दिए जाएगी तो उन्हें जन्नत में दाखिल होने की इजाज़त दी जाएगी, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद ﷺ

की जान है! उनमें से हर एक जन्नत में अपने घर को दुनिया में अपने घर के, मुकाबले में ज़्यादा बेहतर तरीके से जानता होगा”| (बुखारी)

رواه البخاری (2440)

٥٥٩٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَدْخُلُ أَحَدٌ الْجَنَّةَ إِلَّا أَرِيَ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ لَوْ أَسَاءَ لِيَزْدَادَ شُكْرًا وَلَا يَدْخُلُ النَّارَ أَحَدٌ إِلَّا أُرِيَ مَقْعَدَهُ مِنَ الْجَنَّةِ لَوْ أَحْسَنَ ليَكُون عَلَيْهِ حسرة» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

5590. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जन्नत में दाखिल होने से पहले हर शख़्स को उस का जहन्नम का ठिकाना भी दिखाया जाएगा के अगर उस ने नाफ़रमानी की होती (तो उस का ठिकाना वह होता) ताकि वह मज़ीद शुक्र करे, और (इसी तरह) जहन्नम में दाखिल होने वाले हर शख़्स का उस को जन्नत का ठिकाना भी दिखाया जाएगा, अगर उस ने अच्छे अमल किए होते (तो उस का ठिकाना यह होता) ताकि वह उस के लिए हसरत व अफ़सोस का बाईस हो”| (बुखारी)

رواه البخاری (6569)

٥٥٩١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا صَارَ أَهْلُ الْجَنَّةِ إِلَى الْجَنَّةِ وَأَهْلُ النَّارِ إِلَى النَّارِ جِيءَ بِالْمَوْتِ حَتَّى يُجْعَلَ بَيْنَ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ ثُمَّ يُذْبَحَ ثُمَّ يُنَادِي مُنَادٍ: يَا أَهْلَ الْجَنَّةِ لَا مَوْتَ وَيَا أَهْلَ النَّارِ لَا مَوْتَ. فَيَزْدَادُ أَهْلُ الْجَنَّةِ فَرَحًا إِلَى فَرَحِهِمْ وَيَزْدَادُ أَهْلُ النَّارِ حُزْنًا إِلَى حزنهمْ ". مُتَّفق عَلَيْهِ

5591. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब जन्नती जन्नत में और जहन्नमी जहन्नम में चले जाएगी तो मौत को लाया जाएगा और इसे जन्नत व जहन्नम के दरमियान खड़ा कर दिया जाएगा, फिर इसे जिबह कर दिया जाएगा, फिर एक एलान करने वाला एलान करेगा जन्नत वालो! (अब) मौत नाम की कोई चीज़ नहीं, जहन्नम वालो! (अब) मौत कोई नहीं, जन्नतियो की फरहत में जबकि जहन्नुमियो के हज़न व मलाल में इज़ाफा होगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6548) و مسلم (2850)، (7184)

हौज़ और शफाअत का बयान • بَاب الْحَوْض والشفاعة

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٥٥٩٢ - (لم تتمّ دراسته) عَن ثَوْبَان»» عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «حَوْضِي مِنْ عَدَنٍ إِلَى عُمَّانَ الْبَلْقَاءِ مَاؤُهُ أَشَدُّ بَيَاضًا مِنَ اللَّبَنِ وَأَحْلَى مِنَ الْعَسَلِ وَأَكْوَابُهُ عَدَدُ نُجُومِ [ص:١٥٥ السَّمَاءِ مَنْ شَرِبَ مِنْهُ شَرْبَةً لَمْ يَظْمَأْ بَعْدَهَا أَبَدًا أَوَّلُ النَّاسِ وُروداً فقراءُ المهاجرينَ الشُّعثُ رؤوساً الدُّنْسُ ثِيَابًا الَّذِينَ لَا يَنْكِحُونَ الْمُتَنَعِّمَاتِ وَلَا يُفْتَحُ لَهُمُ السُّدَدُ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ. وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

5592. सौबान रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मेरे हौज़ का तुल व अर्ज़ अदन और बलकाअ के अमान की दरमियानी मुसाफ़त जितना होगा, उस का पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठा होगा, उस के प्याले आसमान के सितारों की तादाद के बराबर होंगे, जिस ने उस से एक बार पि लिया तो उस के बाद वह प्यासा नहीं होगा, वहां सबसे पहले फुकरा मुहाजरिन का आमद (आगमन) होगा, उन के सर के बाल बिखरे होंगे, कपड़े मेले होंगे, यह वह लोग होंगे जिन्होंने नाज़ व नेअमत वाली औरतो से निकाह किया होगा न इन के लिए दरवाज़े खोले जाते थे”| अहमद तिरमिज़ी, इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه احمد (5 / 275 ح 22725) و الترمذی (2444) و ابن ماجه (4303) * السند منقطع ، العباس بن سالم لم یسمعه من ابی سلام ، انظر سنن ابن ماجه (4303) و احادیث مسلم (2301)، (5990) و ابن حبان (الموارد : 2601) وغیرهما تغنی عنه

٥٥٩٣ - (صَحِيح) وَعَنْ»» زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَنَزَلْنَا منزلا فَقَالَ: «مَا أَنْتُمْ جُزْءٌ مِنْ مِائَةِ أَلْفِ جُزْءٍ مِمَّنْ يَرِدُ عَلَى الْحَوْضِ» . قِيلَ: كَمْ كُنْتُمْ يَوْمَئِذٍ؟ قَالَ: سَبْعَمِائَةٍ أَوْ ثَمَانِمِائَةٍ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5593. ज़ैद बिन अरक़म रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ थे, हमने एक जगह पड़ाव डाला तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो लोग हौज़ पर मेरे पास आएँगे तुम उनका लाखवा हिस्सा हो”, (ज़ैद बिन अरक़म रदियल्लाहु अन्हु से) पूछा गया: इस रोज़ तुम कितने थे? उन्होंने ने फ़रमाया: सात सौ या आठ सौ| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابوداؤد (4746)

٥٥٩٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن سَمُرَةَ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ لِكُلِّ نَبِيٍّ حَوْضًا وَإِنَّهُمْ لَيَتَبَاهَوْنَ أَيُّهُمْ أَكْثَرُ وَارِدَةً وَإِنِّي لَأَرْجُو أَنْ أَكُونَ أَكْثَرَهُمْ وَارِدَةً» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيب

5594. समुरह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हर नबी के लिए एक हौज़ है और वह इस बात पर बाहम फख्र करेंगे के उनमें से किस के पास ज़्यादा पीने वाले आते है, मैं उम्मीद करता हूँ कि इन सब में से मेरे पास आने वालो की तादाद ज़्यादा होगी”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواہ الترمذی (2443) * سعید بن بشیر : ضعیف و قتادۃ مدلس و عنعن

٥٥٩٥ - (إِسْنَاده جيد) وَعَن أنس قا ل سَأَلْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَشْفَعَ لِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَقَالَ: «أَنَا فَاعِلٌ» . قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَأَيْنَ أَطْلُبُكَ؟ قَالَ اطْلُبْنِي أَوَّلَ مَا تَطْلُبُنِي عَلَى الصِّرَاطِ ". قُلْتُ فَإِنْ لَمْ أَلْقَكَ عَلَى الصِّرَاطِ؟ قَالَ: «فَاطْلُبْنِي عِنْدَ الْمِيزَانِ» قُلْتُ فَإِنْ لَمْ أَلْقَكَ عِنْدَ الْمِيزَانِ؟ قَالَ: «فَاطْلُبْنِي عِنْدَ الْحَوْضِ فَإِنِّي لَا أُخطىءُ هَذِه الثلاثَ المواطن» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وقا لهَذَا حَدِيث غَرِيب

5595. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ से दरख्वास्त की, रोज़ ए कियामत वह मेरी सिफारिश फरमाइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं करूँगा“, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! (सिफारिश के लिए) में आप को कहाँ तलाश करू? आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम सबसे पहले मुझे पुल सिरात पर तलाश करना”, मैंने अर्ज़ किया: अगर में पुल सिरात पर आप से मुलाकात न करू (तो फिर)? आप ﷺ ने फ़रमाया: “फिर मुझे मीज़ान के पास तलाश करना”, मैंने अर्ज़ किया: अगर में मीज़ान के पास आप को पाऊ? आप ﷺ ने फ़रमाया: “हौज़ के पास तलाश करना, क्योंकि मैं इन तीन जगहों के अलावा कहे नहीं होऊंगा”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ الترمذی (2433)

٥٥٩٦ - (ضَعِيف) وَعَنِ»» ابْنِ مَسْعُودٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قا ل: قيل لَهُ مَا الْمقَام الْمَحْمُود؟ قا ل: " ذَلِكَ يَوْمَ يَنْزِلُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَى كُرْسِيِّهِ فَيَئِطُّ كَمَا يئطُّ الرحلُ الْجَدِيد من [ص:١٥٥ تضايقه بِهِ وَهُوَ كَسَعَةِ مَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَيُجَاءُ بِكُمْ حُفَاةً عُرَاةً غُرْلًا فَيَكُونُ أَوَّلُ مَنْ يُكْسَى إِبراهيم يَقُول الله تَعَالَى: أُكسوا خليلي بِرَيْطَتَيْنِ بَيْضَاوَيْنِ مِنْ رِيَاطِ الْجَنَّةِ ثُمَّ أُكْسَى عَلَى أَثَرِهِ ثُمَّ أَقُومُ عَنْ يَمِينِ اللَّهِ مقَاما يغبطني الْأَولونَ وَالْآخرُونَ ". رَوَاهُ الدَّارمِيّ

5596. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ से पूछा गया के मक़ाम ए महमूद किया है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये वह दिन है जब अल्लाह तआला अपने कुरसी पर नुज़ूल फरमाएगा तो वह (कुरसी) अपनी तंगी की वजह से इस तरह चर चर की आवाज़ निकाले गी जिस तरह नई जैन चर चर की आवाज़ निकालती है, हालाँकि वह कुरसी ज़मीन व आसमान के दरमियान मुसाफ़त की तरह वसीअ है, तुम नंगे पाँव, नंगे बदन और खत्नो के बगैर लाए जाओगे, सबसे पहले इब्राहीम अलैहिस्सलाम को लिबास पहनाया जाएगा, अल्लाह तआला फरमाएगा मेरे खलील को लिबास पहनाओ, आप को जन्नत की चादरों में से दो सफ़ेद चादरे दी

जाएगी, फिर उन के बाद मुझे लिबास पहनाया जाएगा फिर, मैं अल्लाह के दाएँ तरफ एक जगह खड़ा हो जाऊंगा, तमाम अगले पिछले मुझ पर रश्क करेंगे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمی (2 / 325 ح 2803 ، نسخة محققة : 2842) * فيه عثمان بن عمير : ضعيف

٥٥٩٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن الْمُغيرَة»» بن شُعْبَة قا ل: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شِعَارُ الْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَى الصِّرَاطِ: رَبِّ سَلِّمْ سَلِّمْ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيب

5597. मुगिरा बिन शैबा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रोज़ ए कियामत मोमिनो का पुल सिरात पर यह शिआर (निशान पहचान) होगा: “रब जी! सलामती अता फरमा, सलामती अता फरमा”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2432) * عبد الرحمن بن اسحاق الكوفی : ضعيف ضعفه الجمهور و فيه علة أخرى و حديث البخاری (7437) و مسلم (195)، (482) يغنی عنه

٥٥٩٨ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَنَسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قا ل: «شَفَاعَتِي لِأَهْلِ الْكَبَائِرِ مِنْ أُمَّتِي» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد

5598. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “मेरी शफाअत, मेरी उम्मत के उन लोगों के लिए है जो कबिराह गुनाह करते हैं”| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (2435 وقال : حسن صحيح غريب) و ابوداؤد (4739)

٥٥٩٩ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ»» ابْن مَاجَه عَن جَابر

5599. और इब्ने माजा ने जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (सहीह)

صحيح ، رواه ابن ماجه (4310)

٥٦٠٠ - (صَحِيح) وَعَنْ»» عَوْفِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَتَانِي آتٍ مِنْ عِنْدِ رَبِّي فَخَيَّرَنِي بَيْنَ أَنْ يُدْخِلَ نِصْفَ أُمَّتِي الْجَنَّةَ وَبَيْنَ الشَّفَاعَةِ فَاخْتَرْتُ الشَّفَاعَةَ وَهِيَ لِمَنْ مَاتَ لَا يُشْرِكُ بِاللَّهِ شَيْئًا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

5600. ऑफ बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरे रब की तरफ से आने वाला एक मेरे पास आया तो उस ने मुझे इख़्तियार दीया के आप अपने आधी उम्मत जन्नत में दाखिल कर ले, या शफाअत का हक़ ले लें, मैंने शफाअत को इख़्तियार कर लिया, और वह इस शख़्स के लिए है जो इस हालत में फौत हुआ की वह अल्लाह के साथ किसी और को शरीक न ठहराता हो”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (2441) و ابن ماجه (4317)

٥٦٠١ - (صَحِيح) وَعَن»» عبدِ الله بن أبي الجَدعاءِ قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «يَدْخُلُ الْجَنَّةَ بِشَفَاعَةِ رَجُلٍ مِنْ أُمَّتِي أَكْثَرُ مِنْ بَنِي تَمِيمٍ» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ والدارمي وَابْن مَاجَه

5601. अब्दुल्लाह बिन अबी जदआअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “मेरी उम्मत के एक आदमी (उस्मान (र)) की सिफारिश पर कबिले बनू तमीम से ज़्यादा लोग जन्नत में जाएँगे”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه الترمذی (2438 وقال : حسن صحیح غریب) و الدارمی (2 / 328 ح 2811 ، و ابن ماجه (4316)

٥٦٠٢ - (ضَعِيف) وَعَن»» أَبِي سَعِيدٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ مِنْ أَمَّتِي مَنْ يَشْفَعُ لِلْقَبِيلَةِ وَمِنْهُمْ مَنْ يَشْفَعُ لِلْعُصْبَةِ وَمِنْهُمْ مَنْ يَشْفَعُ لِلرَّجُلِ حَتَّى يَدْخُلُوا [ص:١٥٥ الْجَنَّةَ» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

5602. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरी उम्मत में से बाज़ एक जमाअत की सिफारिश करेंगे, उनमें से बाज़ कबिले की, उनमें से बाज़ एक खानदान की और उनमें से कोई किसी आदमी की सिफारिश करेगा हत्ता के (इस तरह सिफारिश करते करते) वह जन्नत में दाखिल हो जाएँगे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (2440 وقال : حسن) * عطیة العوفی ضعیف

٥٦٠٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ وعَدَني أَن يدْخل الجنةَ من أُمتي أربعمائةِ أَلْفٍ بِلَا حِسَابٍ» . فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ زِدْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ وَهَكَذَا فَحَثَا بِكَفَّيْهِ وَجَمَعَهُمَا فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: زِدْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ. قَالَ: وَهَكَذَا فَقَالَ عُمَرُ دَعْنَا يَا أبكر. فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: وَمَا عَلَيْكَ أَنْ يُدْخِلَنَا اللَّهُ كُلَّنَا الْجَنَّةَ؟ فَقَالَ عُمَرُ: إِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ إِنْ شَاءَ أَنْ يُدْخِلَ خَلْقَهُ الْجَنَّةَ بِكَفٍّ وَاحِدٍ فَعَلَ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «صَدَقَ عُمَرُ» رَوَاهُ فِي شرح السّنة

5603. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह अज़्ज़वजल ने मुझ से वादा किया है के वह मेरी उम्मत से चार लाख लोगों को बगैर हिसाब जन्नत में दाखिल फरमाएगा”, अबू बक्र

रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! इज़ाफा फरमाइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “और इस तरह, आप ने अपने दोनों हाथो से चुल्लू बनाया, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने फिर अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हमारी इस तादाद मैं भी इज़ाफा फरमाइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “और इस तरह, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: अबू बकर! हमें छोड़ दो, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: अगर अल्लाह हम सब को जन्नत में दाखिल फरमा दें तो तुम्हारा क्या नुकसान है? उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: अगर अल्लाह अज्ज़वजल चाहे के वह अपने मखलूक को एक चुल्लू के ज़रिए जन्नत में दाखिल फरमादे तो वह कर सकता है, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “उमर ने ठीक कहा है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه البغوی فی شرح السنة (15 / 163 ح 4335) [و احمد (3 / 165 ح 12725)] * قتادة مدلس و عنعن و للحدیث طرق ضعیفة عند البزار (کشف الاستار : 3547 ، 3545) و ابی یعلی (3783) وغیرهما

٥٦٠٤ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْهُ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يُصَفُّ أَهْلَ النَّارِ فَيَمُرُّ بِهِمُ الرَّجُلُ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ فَيَقُولُ الرَّجُلُ مِنْهُمْ: يَا فُلَانُ أَمَا تَعْرِفُنِي؟ أَنَا الَّذِي سَقَيْتُكَ شَرْبَةً. وَقَالَ بَعْضُهُمْ: أَنَا الَّذِي وَهَبْتُ لَكَ وَضُوءًا فَيَشْفَعُ لَهُ فَيُدْخِلُهُ الْجَنَّةَ ". رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه

5604. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जहन्नुमियो की सफ बनाई जाएगी तो जन्नत वालो में से आदमी उन के पास से गुज़रेगा तो उनमें से एक आदमी कहेगा: ए फलां! क्या तुम मुझे पहचानते नहीं? में वही हूँ जिस ने एक मर्तबा तुझे पानी पिलाया था, और उनमें से कोई कहेगा में वही हो जिस ने वुज़ू के लिए पानी दिया था, वह उस के लिए सिफारिश करेगा तो वह इसे जन्नत में अपने साथ दाखिल कराएगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابن ماجه (3685) * یزید الرقاشی : ضعیف ، و الاعمش مدلس و عنعن

٥٦٠٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " إِنَّ رَجُلَيْنِ مِمَّنْ دَخَلَ النَّارَ اشْتَدَّ صِيَاحُهُمَا فَقَالَ الرَّبُّ تَعَالَى: أَخْرِجُوهُمَا. فَقَالَ لَهُمَا: لِأَيِّ شَيْءٍ اشْتَدَّ صِيَاحُكُمَا؟ قَالَا: فَعَلْنَا ذَلِكَ لِتَرْحَمَنَا. قَالَ: فَإِنَّ رَحْمَتِي لَكُمَا أَنْ تَنْطَلِقَا فَتُلْقِيَا أَنْفُسَكُمَا حَيْثُ كُنْتُمَا مِنَ النَّارِ فَيُلْقِي أَحَدُهُمَا نَفْسَهُ فَيَجْعَلُهَا اللَّهُ بَرْدًا وَسَلَامًا وَيَقُومُ الْآخَرُ فَلَا يُلْقِي نَفْسَهُ فَيَقُولُ لَهُ الرَّبُّ تَعَالَى: مَا مَنَعَكَ أَنْ تُلْقِيَ نَفْسَكَ كَمَا أَلْقَى صَاحِبُكَ؟ فَيَقُولُ: رَبِّ إِنِّي لَأَرْجُو أَنْ لَا تُعِيدَنِي فِيهَا بَعْدَ مَا أَخْرَجْتَنِي مِنْهَا. فَيَقُولُ لَهُ الرَّبُّ تَعَالَى: لَكَ رَجَاؤُكَ. فَيُدْخَلَانِ جَمِيعًا الْجَنَّةَ بِرَحْمَةِ اللَّهِ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5605. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जहन्नम में जाने वालो में से दो आदमी बहोत ज़ोर से आह बकार कर रहे होंगे, रब तआला फरमाएगा: इन दोनों को निकालो वह उन्हें फरमाएगा: तुम किस वजह से ज़ोर ज़ोर से चीख रहे हो? वह अर्ज़ करेंगे, हमने यह इसलिए किया है ताकि आप हम पर रहम फरमाए, अल्लाह तआला फरमाएगा: तुम्हारे लिए मेरी रहमत यही है के तुम चले जाओ और तुम जहन्नम में जहाँ थे अपने आप को वही डाल दो, उनमें से एक अपने आप को (जहन्नम में) डाल लेगा, अल्लाह उस

को उस पर ठंडी और सलामती वाली बनादेगा, जबकि दूसरा खड़ा रहेगा और वह अपने आप को (जहन्नम में) नहीं डालेगा, रब तआला उस से पूछेगा: किस चीज़ ने तुझे अपने आप को जहन्नम में डालने से मना किया जैसा के तेरे साथी ने (अपने आप को) डाल लिया? वह अर्ज़ करेगा: रब जी! मैं उम्मीद करता हूँ कि तू मुझे वहां नहीं भेजेगा जहाँ से तूने मुझे निकाल लिया था, रब तआला इसे फरमाएगा तुम्हारे लिए तुम्हारी उम्मीद के मुताबिक अता कर दिया गया, वह दोनों अल्लाह की रहमत से इकठ्ठा ही जन्नत में दाखिल किए जाएँगे"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (2599 وقال : ضعيف الخ) * رشدين و الافريقى ضعيفان

٥٦٠٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ»» مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَرِدُ النَّاسُ النَّارَ ثمَّ يصدون مِنْهَا بِأَعْمَالِهِمْ فَأَوَّلُهُمْ كَلَمْحِ الْبَرْقِ ثُمَّ كَالرِّيحِ ثُمَّ كَحُضْرِ الْفَرَسِ ثُمَّ كَالرَّاكِبِ فِي رَحْلِهِ ثُمَّ كَشَدِّ الرَّجُلِ ثُمَّ كَمَشْيِهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ

5606. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तमाम लोग आग (पुल सिरात) पर पेश होंगे फिर वह अपने आमाल के मुताबिक वहां से पार होंगे, उनमें से सबसे पहले बिजली चमकने की तरह गुज़र जाएँगे, फिर हवा की तरह, फिर तेज़ रफ़्तार घोड़े की तरह, फिर सवारी पर सवार की तरह, फिर दोड़ने वाले आदमी की तरह, और फिर पैदल चलने वाले की तरह (इस पुल से गुज़रेंगे जो के जहन्नम पर नसब होगा)"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3159 وقال : حسن) و الدارمی (2 / 329 ح 2813)

بَاب الْحَوْض والشفاعة • हौज़ और शफाअत का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٥٦٠٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ أَمَامَكُمْ حَوْضِي مَا بَيْنَ جَنْبَيْهِ كَمَا بَيْنَ جَرْبَاءَ وَأَذْرُحَ» . قَالَ بَعْضُ الرُّوَاةِ: هُمَا قَرْيَتَانِ بِالشَّامِ بَيْنَهُمَا مَسِيرَةُ ثَلَاثِ لَيَالٍ. وَفِي رِوَايَةٍ: «فِيهِ أَبَارِيقُ كَنُجُومِ السَّمَاءِ مَنْ وَرَدَهُ فَشَرِبَ مِنْهُ لَمْ يَظْمَأْ بَعْدَهَا أَبَدًا» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5607. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तुम्हारे आगे मेरा हौज़ है, उस के दोनों किनारों के दरमियान इतना फासला है जितना जरबाअ और अजरः के दरमियान है"| बाज़ रावियो ने कहा है, यह दोनों (जरबाअ और अजरः) शाम के दो गॉव हैं, इन दोनों के दरमियान तीन रातो की मुसाफ़त

है| एक रिवायत में है उस के प्याले आसमान के सितारों की तरह हैं, जो कोई वहां आएगा और उस से पानी पि लेगा तो फिर उस के बाद वह कभी प्यास महसूस नहीं करेगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6577) و مسلم (34 / 2299)، (5986 و 5988)

٥٦٠٨ - ٥٦٠٩ (صَحِيح) وَعَن حذيفةَ وَأَبِي هُرَيْرَةَ قَالَا: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يَجْمَعُ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى النَّاسَ فَيَقُومُ الْمُؤْمِنُونَ حَتَّى تُزْلَفَ لَهُمُ الْجَنَّةُ فَيَأْتُونَ آدَمَ فَيَقُولُونَ: يَا أَبَانَا اسْتَفْتِحْ لَنَا الْجَنَّةَ. فَيَقُولُ: وَهَلْ أَخْرَجَكُمْ مِنَ الْجَنَّةِ إِلَّا خَطِيئَةُ أَبِيكُمْ لَسْتُ بِصَاحِبِ ذَلِكَ اذْهَبُوا إِلَى ابْنِي إِبْرَاهِيمَ خَلِيلِ اللَّهِ " قَالَ: " فَيَقُولُ إِبْرَاهِيمُ: لَسْتُ بِصَاحِبِ ذَلِكَ إِنَّمَا كُنْتُ خَلِيلًا مِنْ وَرَاءَ وَرَاءَ اعْمَدُوا إِلَى مُوسَى الَّذِي كَلَّمَهُ اللَّهُ تَكْلِيمًا فَيَأْتُونَ مُوسَى عَلَيْهِ السَّلَام فَيَقُولُ: لَسْتُ بِصَاحِبِ ذَلِكَ اذْهَبُوا إِلَى عِيسَى [ص:١٥٦ كَلِمَةِ اللَّهِ وَرُوحِهِ فَيَقُولُ عِيسَى: لَسْتُ بِصَاحِبِ ذَلِكَ فَيَأْتُونَ مُحَمَّدًا صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَيَقُومُ فَيُؤْذَنُ لَهُ وَتُرْسَلُ الْأَمَانَةُ وَالرَّحِمُ فَيَقُومَانِ جَنَبَتَيِ الصِّرَاطِ يَمِينًا وَشِمَالًا فَيَمُرُّ أَوَّلُكُم كَالْبَرْقِ ". قَالَ: قُلْتُ: بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي أَيُّ شَيْءٍ كَمَرِّ الْبَرْقِ؟ قَالَ: " أَلَمْ تَرَوْا إِلَى الْبَرْقِ كَيْفَ يَمُرُّ وَيَرْجِعُ فِي طَرْفَةِ عَيْنٍ. ثُمَّ كَمَرِّ الرِّيحِ ثُمَّ كَمَرِّ الطَّيْرِ وَشَدِّ الرِّجَالِ تَجْرِي بِهِمْ أَعْمَالُهُمْ وَنَبِيُّكُمْ قَائِمٌ عَلَى الصِّرَاطِ يَقُولُ: يَا رَبِّ سَلِّمْ سَلِّمْ. حَتَّى تَعْجِزَ أَعْمَالُ الْعِبَادِ حَتَّى يَجِيءَ الرَّجُلُ فَلَا يَسْتَطِيعُ السَّيْرَ إِلَّا زَحْفًا ". وَقَالَ: «وَفِي حَافَتَيِ الصِّرَاطِ كَلَالِيبُ مُعَلَّقَةٌ مَأْمُورَةٌ تَأْخُذُ مَنْ أُمِرَتْ بِهِ فَمَخْدُوشٌ نَاجٍ وَمُكَرْدَسٌ فِي النَّارِ» . وَالَّذِي نَفْسُ أَبِي هُرَيْرَةَ بِيَدِهِ إِنَّ قَعْرَ جَهَنَّمَ لَسَبْعِينَ خَرِيفًا. رَوَاهُ مُسلم

5608. हुज़ैफ़ा और अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह तबारक व तआला तमाम लोगों को जमा फरमाएग, तो मोमिन खड़े होंगे हत्ता के इन के लिए जन्नत करीब कर दी जाएगी, वह आदम अलैहिस्सलाम के पास आएँगे और अर्ज़ करेंगे: हमारे अब्बा जान! हमारे लिए जन्नत खोलने की दरख्वास्त करे, वह कहेंगे तुम्हारे वालिद की गलती ही ने तो तुम्हें जन्नत से निकलवाया था, मैं उस के अहल नहीं हूँ, तुम मेरे बेटे अल्लाह के खलील इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास जाओ, फ़रमाया: “इब्राहीम अलैहिस्सलाम फरमाइएगे मैं भी उस के अहल नहीं हूँ, मैं तो बहोत पहले (दुनिया में) खलील था, तुम मूसा अलैहिस्सलाम के पास जाओ, जिस से अल्लाह तआला ने कलाम फ़रमाया है, वह मूसा अलैहिस्सलाम के पास आएँगे तो वह भी कहेंगे, मैं उस के अहल नहीं हूँ, तुम इसा अलैहिस्सलाम के पास जाओ जो अल्लाह का कलिमा और उसकी रूह है, इसा अलैहिस्सलाम भी कहेंगे: में उस के अहल नहीं हूँ, वह मुहम्मद ﷺ के पास आएँगे, वह खड़े होंगे, उन्हें इजाज़त दी जाएगी, अमानत और सिलह रहमी को भेजा जाएगा, वह पुल सिरात के दोनों तरफ खड़ी हो जाएगी, तुम में से पहला बिजली की तरह गुज़र जाएगा” रावी बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: मेरे वालिदेन आप पर कुरबान हो, बिजली की तरह गुज़रने की क्या सूरत होगी? आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम ने बिजली नहीं देखि, वह आँख झपकने में गुज़रती है और वापस आ जाती है, फिर हवा के चलने की तरह, फिर परिंदे की तरह और तेज़ चलने वाले आदमियों की तरह, उन के आमाल उन्हें लेकर चलेंगे, और तुम्हारे नबी ﷺ पुल सिरात पर खड़े होंगे, वह कह रहे होंगे: रब जी! सलामती अता फरमा, सलामती अता फरमा, हत्ता के बंदो के आमाल आजिज़ आजाएँगे, यहाँ तक के एक ऐसा आदमी आएगा जो चलने की ताकत नहीं रखता होगा, बल्कि वह सुरिन के बल घसीट रहा होगा”, और फ़रमाया: “पुल सिरात के दोनों किनारों पर आंकड़े मुअल्लक होंगे, वह इस बात पर मामूर होंगे के जिसके मुतल्लिक इसे हुक्म दिया जाएगा वह इसे पकड़ लेंगे, कुछ लोग मजरुह होंगे, निजात पाने

वाले होंगे और कुछ जहन्नम में धकेल दिए जाएँगे”, और उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु की जान है! जहन्नम की गहराई सत्तर साल की मुसाफ़त है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (329 / 195)، (482)

٥٦٠٨ - ٥٦٠٩ (صَحِيح) وَعَن حذيفةَ وَأَبِي هُرَيْرَةَ قَالَا: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يَجْمَعُ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى النَّاسَ فَيَقُومُ الْمُؤْمِنُونَ حَتَّى تُزْلَفَ لَهُمُ الْجَنَّةُ فَيَأْتُونَ آدَمَ فَيَقُولُونَ: يَا أَبَانَا اسْتَفْتِحْ لَنَا الْجَنَّةَ. فَيَقُولُ: وَهَلْ أَخْرَجَكُمْ مِنَ الْجَنَّةِ إِلَّا خَطِيئَةُ أَبِيكُمْ لَسْتُ بِصَاحِبِ ذَلِكَ اذْهَبُوا إِلَى ابْنِي إِبْرَاهِيمَ خَلِيلِ اللَّهِ " قَالَ: " فَيَقُولُ إِبْرَاهِيمُ: لَسْتُ بِصَاحِبِ ذَلِكَ إِنَّمَا كُنْتُ خَلِيلًا مِنْ وَرَاءَ وَرَاءَ اعْمَدُوا إِلَى مُوسَى الَّذِي كَلَّمَهُ اللَّهُ تَكْلِيمًا فَيَأْتُونَ مُوسَى عَلَيْهِ السَّلَام فَيَقُولُ: لَسْتُ بِصَاحِبِ ذَلِكَ اذْهَبُوا إِلَى عِيسَى [ص:١٥٦ كَلِمَةِ اللَّهِ وَرُوحِهِ فَيَقُولُ عِيسَى: لَسْتُ بِصَاحِبِ ذَلِكَ فَيَأْتُونَ مُحَمَّدًا صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَيَقُومُ فَيُؤْذَنُ لَهُ وَتُرْسَلُ الْأَمَانَةُ وَالرَّحِمُ فَيَقُومَانِ جَنَبَتَيِ الصِّرَاطِ يَمِينًا وَشِمَالًا فَيَمُرُّ أَوَّلُكُمْ كَالْبَرْقِ ". قَالَ: قُلْتُ: بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي أَيُّ شَيْءٍ كَمَرِّ الْبَرْقِ؟ قَالَ: " أَلَمْ تَرَوْا إِلَى الْبَرْقِ كَيْفَ يَمُرُّ وَيَرْجِعُ فِي طَرْفَةِ عَيْنٍ. ثُمَّ كَمَرِّ الرِّيحِ ثُمَّ كَمَرِّ الطَّيْرِ وَشَدِّ الرِّجَالِ تَجْرِي بِهِمْ أَعْمَالُهُمْ وَنَبِيُّكُمْ قَائِمٌ عَلَى الصِّرَاطِ يَقُولُ: يَا رَبِّ سَلِّمْ سَلِّمْ. حَتَّى تَعْجِزَ أَعْمَالُ الْعِبَادِ حَتَّى يَجِيءَ الرَّجُلُ فَلَا يَسْتَطِيعُ السَّيْرَ إِلَّا زَحْفًا ". وَقَالَ: «وَفِي حَافَتَيِ الصِّرَاطِ كَلَالِيبُ مُعَلَّقَةٌ مَأْمُورَةٌ تَأْخُذُ مَنْ أُمِرَتْ بِهِ فَمَخْدُوشٌ نَاجٍ وَمُكَرْدَسٌ فِي النَّارِ» . وَالَّذِي نَفْسُ أَبِي هُرَيْرَةَ بِيَدِهِ إِنَّ قَعْرَ جَهَنَّمَ لَسَبْعِينَ خَرِيفًا. رَوَاهُ مُسلم

5609. हुज़ैफ़ा और अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह तबारक व तआला तमाम लोगों को जमा फरमाएग, तो मोमिन खड़े होंगे हत्ता के इन के लिए जन्नत करीब कर दी जाएगी, वह आदम अलैहिस्सलाम के पास आएँगे और अर्ज़ करेंगे: हमारे अब्बा जान! हमारे लिए जन्नत खोलने की दरख्वास्त करे, वह कहेंगे तुम्हारे वालिद की गलती ही ने तो तुम्हें जन्नत से निकलवाया था, मैं उस के अहल नहीं हूँ, तुम मेरे बेटे अल्लाह के खलील इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास जाओ, फ़रमाया: “इब्राहीम अलैहिस्सलाम फरमाइएगे मैं भी उस के अहल नहीं हूँ, मैं तो बहोत पहले (दुनिया में) खलील था, तुम मूसा अलैहिस्सलाम के पास जाओ, जिस से अल्लाह तआला ने कलाम फ़रमाया है, वह मूसा अलैहिस्सलाम के पास आएँगे तो वह भी कहेंगे, मैं उस के अहल नहीं हूँ, तुम इसा अलैहिस्सलाम के पास जाओ जो अल्लाह का कलिमा और उसकी रूह है, इसा अलैहिस्सलाम भी कहेंगे: में उस के अहल नहीं हूँ, वह मुहम्मद ﷺ के पास आएँगे, वह खड़े होंगे, उन्हें इजाज़त दी जाएगी, अमानत और सिलह रहमी को भेजा जाएगा, वह पुल सिरात के दोनों तरफ खड़ी हो जाएगी, तुम में से पहला बिजली की तरह गुज़र जाएगा” रावी बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: मेरे वालिदेन आप पर कुरबान हो, बिजली की तरह गुज़रने की क्या सूरत होगी? आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम ने बिजली नहीं देखि, वह आँख झपकने में गुज़रती है और वापस आ जाती है, फिर हवा के चलने की तरह, फिर परिंदे की तरह और तेज़ चलने वाले आदमियों की तरह, उन के आमाल उन्हें लेकर चलेंगे, और तुम्हारे नबी ﷺ पुल सिरात पर खड़े होंगे, वह कह रहे होंगे: रब जी! सलामती अता फरमा, सलामती अता फरमा, हत्ता के बंदो के आमाल आजिज़ आजाएँगे, यहाँ तक के एक ऐसा आदमी आएगा जो चलने की ताकत नहीं रखता होगा, बल्कि वह सुरिन के बल घसीट रहा होगा”, और फ़रमाया: “पुल सिरात के दोनों किनारों पर आंकड़े मुअल्लक होंगे, वह इस बात पर मामूर होंगे के जिसके मुतल्लिक इसे हुक्म दिया जाएगा वह इसे पकड़ लेंगे, कुछ लोग मजरुह होंगे, निजात पाने

वाले होंगे और कुछ जहन्नम में धकेल दिए जाएँगे”, और उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु की जान है! जहन्नम की गहराई सत्तर साल की मुसाफ़त है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (329 / 195)، (482)

٥٦١٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يَخْرُجُ مِنَ النَّار بالشفاعة كَأَنَّهُمْ الثعارير؟ قَالَ: «إِنَّه الضغابيس» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5610. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कुछ लोग जहन्नम से शफाअत के ज़रिए निकलेंगे गोया वह सआरीर है”, हमने अर्ज़ किया: सआरीर क्या है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो लकड़िया है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6558) و مسلم (318 / 191)، (471)

٥٦١١ - مَوْضُوع وَعَن عُثْمَان بن عَفَّان قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يُشَفَّعُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ثَلَاثَةٌ: الْأَنْبِيَاءُ ثُمَّ الْعلمَاء ثمَّ الشُّهَدَاء ". رَوَاهُ ابْن مَاجَه

5611. उस्मान बिन अफ्फान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रोज़ ए कियामत तीन किस्म के लोग सिफारिश करेंगे, अंबिया (अस), फिर उलेमा और फिर शुहदा”| (मौज़ू)

اسناده موضوع ، رواه ابن ماجه (4313) * عنبسة بن عبد الرحمن کان '' یضع الحدیث '' کما قال ابو حاتم و ابن معین رحمهما الله و علاق : مجهول و السند ضعفه العراقی و البوصیری

جन्नत और अहले जन्नत के हाल का बयान • بَاب صفةالجنة وَأَهْلهَا

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٥٦١٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: أَعْدَدْتُ لِعِبَادِيَ الصَّالِحِينَ مَا لَا عَيْنٌ رَأَتْ وَلَا أُذُنٌ سَمِعَتْ وَلَا خَطَرَ عَلَى قَلْبِ بشر. واقرؤوا إِنْ شِئْتُمْ: (فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَا أُخْفِيَ لَهُمْ مِنْ قُرَّة عين)»» مُتَّفق عَلَيْهِ

5612. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह तआला ने फ़रमाया: मैंने अपने स्वालेह बंदो के लिए (जन्नत में) ऐसी चीज़े तैयार कर रखी है जो न तो किसी आँख ने देखी है, और न

किसी कान ने सुनी है, और ना ही किसी इंसान का दिल में उनका ख़याल गुज़रा है”, अगर तुम चाहो तो यह आयत पढ़ो: فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَا أُخْفِيَ لَهُمْ مِنْ قُرَّة عين “कोई नफ्स नहीं जानता के उनकी आंखो की ठंडक के लिए क्या चीज़े छिपा कर रखी गई है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3244) و مسلم (2 / 2824)، (7132)

٥٦١٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ:»» مَوْضِعُ سَوْطٍ فِي الْجَنَّةِ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا ". مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5613. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जन्नत में एक कूड़े जितनी जगह, दुनिया और उस में जो कुछ है, सबसे बेहतर है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2796 ، 6568) و مسلم (لم اجده)

٥٦١٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «غَدْوَةٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ رَوْحَةٌ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا وَلَوْ أَنَّ امْرَأَةً مِنْ نِسَاءِ أَهْلِ الْجَنَّةِ اطَّلَعت إِلى الأَرْض لَأَضَاءَتْ مابينهما وَلَمَلَأَتْ مَا بَيْنَهُمَا رِيحًا وَلَنَصِيفُهَا عَلَى رَأْسِهَا خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

5614. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह की राह में सुबह को या शाम को चलना दुनिया और उस में जो कुछ है, सबसे बेहतर है, अगर अहले जन्नत की औरतो में से एक औरत ज़मीन पर झांक ले तो इन दोनों (जमीन व आसमान) के दरमियान हर चीज़ रोशन हो जाए, इन दोनों के दरमियान जो कुछ है वह खुशबूदार हो जाए और इस (औरत) के सर का एक दुपट्टा दुनिया और उस में जो कुछ है इसे बेहतर है”| (बुखारी)

رواه البخاری (2796)

٥٦١٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إن فِي الْجَنَّةِ شَجَرَةً يَسِيرُ الرَّاكِبُ فِي ظِلِّهَا مِائَةَ عَامٍ لَا يَقْطَعُهَا وَلَقَابَ قَوْسِ أَحَدِكُمْ فِي الْجَنَّةِ خَيْرٌ مِمَّا طَلَعَتْ عَلَيْهِ الشَّمْسُ أَو تغرب» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5615. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जन्नत में ऐसा दरख्त है जिसके साए में घुड़सवार सौ साल चलता रहे तो वह इसे तेअ नहीं कर सकेगा, और जन्नत में कमान के बराबर जगह इस चीज़ से बेहतर है जिस पर सूरज तुलुअ होता है या गुरूब होता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3252) ومسلم (6 / 2826)، (7136)

٥٦١٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ لِلْمُؤْمِنِ فِي الْجَنَّةِ لَخَيْمَةً مِنْ لُؤْلُؤَةٍ وَاحِدَةٍ مُجَوَّفَةٍ عَرْضُهَا وَفِي رِوَايَةٍ: طُولُهَا سِتُّونَ مِيلًا فِي كُلِّ زَاوِيَةٍ مِنْهَا أَهْلٌ مَا يَرَوْنَ الْآخَرِينَ يَطُوفُ عَلَيْهِم المؤمنُ وجنَّتانِ من فضةٍ آنيتهما مَا فِيهِمَا وَجَنَّتَانِ مِنْ ذَهَبٍ آنِيَتُهُمَا وَمَا فِيهِمَا وَمَا بينَ أَنْ يَنْظُرُوا إِلَى رَبِّهِمْ إِلَّا رِدَاءُ الْكِبْرِيَاءِ على وجههِ فِي جنَّة عدْنٍ ". مُتَّفق عَلَيْهِ

5616. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मोमिन के लिए जन्नत में एक खोलदार मोती का खैमा होगा, जिस का अर्ज़”, और एक रिवायत में है “ उस का तुल साठ मील होगा, उस के हर कोने में उस के अहले खाना होंगे, वह दुसरो को नहीं दीखेंगे, मोमिन इन सब के पास जाएगा, और (इस के लिए) दो बाग़ है, उन के बर्तन और जो कुछ इन दोनों में है वह सब चाँदी का है, और दो बाग़ है, इन दोनों के बर्तन और उन के दरमियान जो कुछ है के सब सोने का है, अहले जन्नत और उन के रब के बिच में सिर्फ किब्रियाई की चादर है जो के सदाबहार जन्नत में उस के चेहरे पर है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3243) و مسلم (23 / 2838)، (7158)

٥٦١٧ - (صَحِيح) وَعَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «فِي الْجَنَّةِ مائةُ درجةٍ مَا بينَ كلِّ دَرَجَتَيْنِ كَمَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَالْفِرْدَوْسُ أَعْلَاهَا دَرَجَةً مِنْهَا تُفَجَّرُ أَنْهَارُ الْجَنَّةِ الْأَرْبَعَةُ وَمِنْ فَوْقِهَا يَكُونُ الْعَرْشُ فَإِذَا سَأَلْتُمُ اللَّهَ فَاسْأَلُوهُ الْفِرْدَوْسَ» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَلَمْ أَجِدْهُ فِي الصَّحِيحَيْنِ وَلَا فِي كِتَابِ الْحُمَيْدِيِّ

5617. उबादा बिन सामित रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जन्नत में सौ दरजे है, और हर दो दरजो के दरमियान इस क़दर फासला है जिस क़दर आसमान और ज़मीन के दरमियान है, और फिरदौस सबसे आअला दरजे की जन्नत है, जन्नत की चारो नहरे वहीँ से से जारी होती है और इसी के ऊपर अर्श है, जब तुम अल्लाह से सवाल करो तो उस से फिरदौस का सवाल करो (जो की जन्नत का आअला मक़ाम है)”| तिरमिज़ी, मैंने इसे ने तो सहीहैन में पाया है और न किताब अल हुमैदी में| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه الترمذی (2531)

٥٦١٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ فِي الْجَنَّةِ لَسُوقًا يَأْتُونَهَا كُلَّ جُمُعَةٍ فَتَهُبُّ رِيحُ الشَّمَالِ فَتَحْثُو فِي وُجوهِهِم وثيابِهِم فيزدادونَ حُسنا وجمالاً فيرجعونَ إِلى أَهْلِيهِمْ وَقَدِ ازْدَادُوا حُسْنًا وَجَمَالًا فَيَقُولُ لَهُمْ أَهْلُوهُمْ وَاللَّهِ لَقَدِ ازْدَدْتُمْ بَعْدَنَا حُسْنًا وَجَمَالًا فَيَقُولُونَ وَأَنْتُم واللَّهِ لقدِ ازددتم حسنا وجمالا»

5618. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जन्नत में एक (जुमआ) बाज़ार है, जहाँ वह हर जुमे आएँगे, शिमाल की तरफ से हवा चलेगी तो वह उन के चेहरो और उन के कपड़ो में (खुश्बू) डालेगी (जिस से) उन के हुस्न व जमाल में इज़ाफा हो जाएगा और जब वह अपने अहले खाना के पास जाएगी तो

उनका हुस्न व जमाल बढ़ चूका होगा, चुनांचे उन के अहले खाना उन्हें कहेंगे: अल्लाह की क़सम! तुम हमारे बाद हुस्न व जमाल में बढ़ चुके हो वह कहेंगे, अल्लाह की क़सम! तुम भी हमारे बाद हुस्न व जमाल में बढ़ चुके हो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (13 / 2833)، (7146)

٥٦١٩ - (صَحِيح) وَعَن أبي هُرَيْرَة قا ل: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ أَوَّلَ زُمْرَةٍ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ عَلَى صُورَةِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ كَأَشَدِّ كَوْكَبٍ دُرِّيٍّ فِي السَّمَاءِ إِضَاءَةً قُلُوبُهُمْ عَلَى قَلْبِ رَجُلٍ وَاحِدٍ لَا اخْتِلَافَ بَيْنَهُمْ وَلَا تَبَاغُضَ لِكُلِّ [ص:١٥٦ امْرِئٍ مِنْهُمْ زَوْجَتَانِ مِنَ الْحُورِ الْعِينِ يُرَى مُخُّ سُوقِهِنَّ مِنْ وَرَاءِ الْعَظْمِ وَاللَّحْمِ مِنَ الْحُسْنِ يُسَبِّحُونَ اللَّهَ بُكْرَةً وَعَشِيًّا لَا يَسْقَمُونُ وَلَا يَبُولُونَ وَلَا يَتَغَوَّطُونَ وَلَا يَتْفُلُونَ وَلَا يَتَمَخَّطُونَ آنِيَتُهُمُ الذَّهَبُ وَالْفِضَّةُ وَأَمْشَاطُهُمُ الذَّهَبُ وَوَقُودُ مَجَامِرِهِمُ الْأَلُوَّةُ وَرَشْحُهُمُ الْمِسْكُ عَلَى خُلُقِ رَجُلٍ وَاحِدٍ عَلَى صُورَةِ أَبِيهِمْ آدَمَ ستونَ ذِرَاعا فِي السَّمَاء. رَوَاهُ مُسلم

5619. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “पहला गिरोह जो जन्नत में दाखिल होगा उनकी सूरते चौदहवीं रात के चाँद की तरह रोशन होगी, फिर उन के बाद दाखिल होने वालो की सूरते आसमान के सबसे ज़्यादा रोशन सितारे की तरह होगी, (मुहब्बत व इत्तेफाक के लिहाज़ से) उन का दिल फर्द ए वाहिद के दिल की तरह होंगे, ना उनमें बाहमी इख्तिलाफ होगा न कोई बाहमी बुग्ज़ होगा, उनमें से हर शख़्स के लिए बड़ी आंखो वाली हूरो में से दो बीवियां होगी, वह इस क़दर हसीन होगी के उनकी पिंडलियों का गुदा हड्डियों और गोश्त में नज़र आता होगा, वह सुबह व शाम अल्लाह की तस्बीह बयान करते होंगे, ना वह बीमार होंगे न पेशाब करेंगे, ना उन्हें पाखाने की हाजत होगी न उन्हें थूक आएगा, और ना ही नाक से अलाइश निकलेगी, उन के बर्तन सोने और चाँदी के होंगे, उनकी कंघिया सोने की होगी उनके चुलो का इंधन खुशबू दार उद होगा, उनका पसीना कस्तूरी की तरह होगा वोह, तखलीक के लिहाज़ से बराबर होंगे जैसे फर्द ए वाहिद हो और वह अपने वालिद आदम अलैहिस्सलाम के कद व कामत पर साठ साठ हाथ ऊँचे होंगे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (32453246 ، 3254) و مسلم (16 ، 15 / 2834)، (7147 و 7149)

٥٦٢٠ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ أَهْلَ الْجَنَّةِ يَأْكُلُونَ فِيهَا وَيَشْرَبُونَ ولايتفلون ولايبولون وَلَا يَتَغَوَّطُونَ وَلَا يَتَمَخَّطُونَ» . قَالُوا: فَمَا بَالُ الطَّعَامِ؟ قَالَ: «جُشَاءٌ وَرَشْحٌ كَرَشْحِ الْمِسْكِ يُلْهَمُونَ التَّسْبِيحَ وَالتَّحْمِيدَ كَمَا تُلْهَمُونَ النَّفَسَ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

5620. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जन्नती जन्नत में खाए पिएंगे लेकिन ना वह थूकेंगे न उन्हें बोल बराज़ की हाजत होगी और ना ही उनकी नाक से अलाइश निकलेगी”, सहाबा रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, तो फिर खाना किधर जाएगा? फ़रमाया: “डकार और पसीना और पसीना

कस्तूरी की तरह होगा, वह इस तरह (आसानी और तसलसुल के साथ) तस्बीह व तहमिद करेंगे जिस तरह तुम सांस लेते हो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (18 / 2835)، (7152)

٥٦٢١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ يَنْعَمُ وَلَا يَبْأَسُ»» وَلَا تَبْلَى ثِيَابُهُ وَلَا يفْنى شبابُه» . رَوَاهُ مُسلم

5621. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स जन्नत में दाखिल होगा वह खुशहाल रहेगा, बदहाल नहीं होगा न तो उस का लिबास पुराना होगा और न उसकी जवानी ख़तम होगी”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (21 / 2836)، (7156)

٥٦٢٢ - (صَحِيح)

5622. अबू सईद और अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “(जन्नत में) एक एलान करने वाला एलान करेगा: “अब तुम सेहत मंद ही रहोगे, कभी बीमार नहीं होगे, तुम हमेशा जिंदा रहोगे, कभी मरोगे नहीं, हमेशा जवान रहोगे कभी बूढ़े नहीं होगे, और तुम हमेशा खुशहाल रहोगे कभी बदहाल नहीं होगे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (22 / 2837)، (7157)

٥٦٢٣ - وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ وَأَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " يُنَادِي مُنَادٍ: إِنَّ لَكُمْ أَنْ تَصِحُّوا فَلَا تَسْقَمُوا أَبَدًا وَإِنَّ لَكُمْ أَنْ تَحْيَوْا فَلَا تَمُوتُوا أَبَدًا وَإِنَّ لَكُمْ أَنْ تَشِبُّوا فَلَا تَهْرَمُوا أَبَدًا وَإِنَّ لَكُمْ أَنْ تَنْعَمُوا فَلَا تَبْأَسُوا أبدا " رَوَاهُ مُسلم

5623. अबू सईद और अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “(जन्नत में) एक एलान करने वाला एलान करेगा: “अब तुम सेहत मंद ही रहोगे, कभी बीमार नहीं होगे, तुम हमेशा जिंदा रहोगे, कभी मरोगे नहीं, हमेशा जवान रहोगे कभी बूढ़े नहीं होगे, और तुम हमेशा खुशहाल रहोगे कभी बदहाल नहीं होगे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (22 / 2837)، (7157)

٥٦٢٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيُّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ أَهْلَ الْجَنَّةِ يَتَرَاءَوْنَ أَهْلَ الْغُرَفِ مِنْ فَوْقِهِمْ كَمَا تَتَرَاءَوْنَ الْكَوْكَبَ الدُّرِّيَّ الْغَابِرَ فِي الْأُفُقِ مِنَ الْمَشْرِقِ أَو الْمَغْرِبِ لِتَفَاضُلِ مَا بَيْنَهُمْ» قَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ [ص:١٥٦ تِلْكَ مَنَازِلُ الْأَنْبِيَاءِ لَا يَبْلُغُهَا غَيْرُهُمْ قَالَ: «بَلَى وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ رِجَالٌ آمَنُوا باللَّهِ وصدَّقوا الْمُرْسلين» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5624. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जन्नत वाले अपने ऊपर बाला खानों के मकानों को इस तरह देंखेंगे जिस तरह तुम मशरिक या मग़रिब के अफक में चमकते हुए डूबते सितारे को देखते हो, और यह तुम्हारे बाहम मर्तबे में फर्क की वजह से होगा”, उन्होंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! यह अंबिया अलैहिस्सलाम की मनाज़िले होगी जहाँ उन के अलावा कोई और नहीं पहुँच सकेगा? आप ﷺ ने फ़रमाया: “नहीं, बल्कि उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! वह लोग जो अल्लाह पर ईमान लाए और उन्होंने रसूलो की तस्दीक की”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3256) و مسلم (11 / 2831)، (7144)

٥٦٢٥ - (صَحِيح) وَعَن»» أبي هُرَيْرَة قا ل: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَدْخُلُ الْجَنَّةَ أَقْوَامٌ أَفْئِدَتُهُمْ مِثْلُ أَفْئِدَةِ الطَّيْرِ» . رَوَاهُ مُسلم

5625. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जन्नत में कुछ ऐसे लोग दाखिल होंगे जिन का दिल (हसद व बुग्ज़ वगैरा से पाक होने के लिहाज़ से) परिंदों के दिलों की तरह होंगे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (27 / 2840)، (7162)

٥٦٢٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أبي سعيد قا ل: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى يَقُولُ لِأَهْلِ الْجَنَّةِ يَا أهلَ الجنةِ فيقولونَ لَبَّيْكَ رَبَّنَا وَسَعْدَيْكَ وَالْخَيْرُ كُلُّهُ فِي يَدَيْكَ فَيَقُولُ: هَلْ رَضِيتُمْ؟ فَيَقُولُونَ: وَمَا لَنَا لَا نَرْضَى يَا رَبِّ وَقَدْ أَعْطَيْتَنَا مَا لَمْ تُعْطِ أَحَدًا مِنْ خَلْقِكَ؟ فَيَقُولُ أَلَا أُعْطِيكُمْ أَفْضَلَ مِنْ ذَلِكَ؟ فَيَقُولُونَ: يَا رَبِّ وَأَيُّ شَيْءٍ أَفْضَلُ مِنْ ذَلِكَ؟ فَيَقُولُ: أُحِلُّ عَلَيْكُمْ رِضْوَانِي فَلَا أَسْخَطُ عَلَيْكُمْ بَعْدَهُ أَبَدًا ". مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5626. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह तआला अहले जन्नत से फरमाएगा जन्नत वालो! वह अर्ज़ करेंगे: हमारे रब! हम हाज़िर है, तेरी सआदत हासिल करने के लिए, और हर किस्म की खैर व भलाई तेरे हाथो में है, वह फरमाएगा क्या तुम खुश हो? वह अर्ज़ करेंगे: रब जी! हमारे राज़ी न होने की क्या वजह हो सकती है जबकि आप ने हमें वह कुछ अता फरमा दिया है जो आप ने अपनी मखलूक में से किसी को अता नहीं फरमाया, वह फरमाएगा क्या मैं तुम्हें उस से भी बेहतर चीज़ न दू? वह अर्ज़ करेंगे: रब जी! उस से बेहतर चीज़ कौन सी है? वह फरमाएगा में तुम्हें अपने दाइमी रज़ामंदी अता करता हूँ और

मैं उस के बाद तुम पर कभी नाराज़ नहीं होऊंगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6549) و مسلم (9 / 2829)، (7140)

٥٦٢٧ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " إِنَّ أَدْنَى مَقْعَدِ أَحَدِكُمْ مِنَ الْجَنَّةِ أَنْ يَقُولَ لَهُ: تَمَنَّ فَيَتَمَنَّى وَيَتَمَنَّى فَيَقُولُ لَهُ: هَلْ تَمَنَّيْتَ؟ فَيَقُولُ نَعَمْ فَيَقُولُ لَهُ: فَإِنَّ لَكَ مَا تَمَنَّيْتَ ومثلَه معَه ". رَوَاهُ مُسلم

5627. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जन्नत में तुम में सबसे कम मिल्कियत वाला शख़्स वह होगा जिसे अल्लाह तआला फरमाएगा: तमन्ना कर! वह तमन्ना करेगा और तमन्ना करेगा तो वह उस से पूछेगा: क्या तूने तमन्ना कर ली? वह कहेगा, जी हाँ तो उसे कहा जाएगा: तुम्हारे लिए वह है जो तूने तमन्ना की और जो तूने तमन्ना की इतना उसके साथ और भी”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (301 / 182)، (453)

٥٦٢٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «سَيْحَانُ وَجَيْحَانُ وَالْفُرَاتُ وَالنِّيلُ كُلٌّ من أنهارِ الْجنَّة» . رَوَاهُ مُسلم

5628. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: सयहान व हयहान व फरात और नील यह सब जन्नत की नहरे है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (26 / 2839)، (7161)

٥٦٢٩ - (صَحِيح) وَعَنْ»» عُتْبَةَ بْنِ غَزْوَانَ قَالَ: ذُكِرَ لَنَا أَنَّ الْحَجَرَ يُلْقَى مِنْ شَفَةِ جَهَنَّمَ فَيَهْوِي فِيهَا سَبْعِينَ خَرِيفًا لَا يُدْرِكُ لَهَا قَعْرًا وَاللَّهِ لَتُمْلَأَنَّ وَلَقَدْ ذُكِرَ لَنَا أَنَّ مَا بَيْنَ مِصْرَاعَيْنِ مِنْ مَصَارِيعِ الْجَنَّةِ مَسِيرَةُ أَرْبَعِينَ سَنَةً وَلَيَأْتِيَنَّ عَلَيْهَا يَوْمٌ وَهُوَ كَظِيظٌ مِنَ الزحام ". رَوَاهُ مُسلم

5629. उत्बा बिन गज्वान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हमें बताया गया के अगर जहन्नम के किनारे से पत्थर गिराया जाए तो वह सत्तर साल मैं भी उसकी तेह तक नहीं पहुंचेगा, अल्लाह की क़सम! इसे भरा जाएगा, हमें यह भी बताया गया के जन्नत की चौखट का दरमियानी फासला चालीस साल का है, और उस पर एक दिन ऐसा भी आएगा के वह हुजूम की वजह से भरी होगी”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (14 / 2967)، (7435)

بَاب صفةالجنة وَأَهْلهَا • जन्नत और अहले जन्नत के हाल का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٥٦٣٠ - (صَحِيح لشواهده) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مِمَّ خُلِقَ الْخَلْقُ؟ قَالَ: «مِنَ الْمَاءِ» . قُلْنَا: الْجَنَّةُ مَا بِنَاؤُهَا؟ قَالَ: «لَبِنَةٌ مِنْ ذَهَبٍ وَلَبِنَةٌ مِنْ فِضَّةٍ وَمِلَاطُهَا الْمِسْكُ الْأَذْفَرُ وَحَصْبَاؤُهَا اللُّؤْلُؤُ وَالْيَاقُوتُ وَتُرْبَتُهَا الزَّعْفَرَانُ مَنْ يَدْخُلُهَا يَنْعَمُ وَلَا يَبْأَسُ وَيَخْلُدُ وَلَا يَمُوتُ وَلَا يَبْلَى ثِيَابُهُمْ وَلَا يَفْنَى شَبَابُهُمْ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيّ والدارمي

5630. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मखलूक को किसी चीज़ से पैदा किया गया? फ़रमाया: “पानी से”, हमने अर्ज़ किया: जन्नत की तामीर कैसे हुई फ़रमाया: “एक ईंट सोने की और एक चाँदी की, उस का गारा तेज़ खुशबू वाली कस्तूरी का है, उस के कंकर हीरे ज़वारत और याकुत है, उसकी मिट्टी ज़ाफ़रान है, जो उस में दाखिल होगा वह खुशहाल रहेगा, बदहाल नहीं होगा, वहां हमेशा रहेगा, फौत नहीं होगा, उस के कपड़े पोशीदा होंगे न उसकी जवानी ख़तम होगी”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه احمد (2 / 305 ح 8030) و الترمذی (2526 و ضعفه) و الدارمی (2 / 333 ح 2824) * زیاد الطائی لم یثبت سماعه من ابی هریرة رضی الله عنه و لبعض الحدیث شاهد عند الترمذی (3598) و سنده حسن

٥٦٣١ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْهُ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا فِي الْجَنَّةِ شَجَرَةٌ إِلَّا وساقُها من ذهب» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5631. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जन्नत के दरख्तों के तने सोने के होंगे”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2525 وقال : غریب حسن)

٥٦٣٢ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ فِي الْجَنَّةِ مِائَةَ دَرَجَةٍ مَا بَيْنَ كُلِّ دَرَجَتَيْنِ مِائَةُ عَامٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

5632. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जन्नत में सौ दरजे है, हर दो दरजो के दरमियान सौ साल की मुसाफ़त है”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस हसन ग़रीब है| (सहीह)

صحیح ، رواه الترمذی (2529)

٥٦٣٣ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ فِي الْجَنَّةِ مِائَةَ دَرَجَةٍ لَوْ أَنَّ الْعَالَمِينَ اجْتَمَعُوا فِي إِحْدَاهُنَّ لَوَسِعَتْهُمْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

5633. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जन्नत में सौ दरजे है, अगर तमाम जहांन वाले उनमें से किसी एक में जमा हो जाए तो वह इन के लिए काफी हो"| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2532) * ابن لهيعة مدلس و عنعن و حدث به قبل اختلاطه و باقی السند حسن لذاته

٥٦٣٤ - (ضَعِيف) وَعَنْهُ»» عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي قَوْلِهِ تَعَالَى (وفُرُشٍ مرفوعةٍ)»» قَالَ: «ارْتِفَاعُهَا لَكَمَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ مَسِيرَةَ خَمْسِمِائَةِ سَنَةً» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

5634. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से अल्लाह तआला के फरमान (وَ فُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ) " और बुलंद बिस्तर" के बारे में रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "उन के फर्श और छत की बुलंदी इस तरह होगी जिस तरह ज़मीन व आसमान के दरमियान फासला है और वह फासला पांच सौ साल की मुसाफ़त है"| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (2540) [و ابن حبان (الاحسان : 7362 / 7405) بسند حسن عن عمرو بن الحارث عن دراج ،،، به]

٥٦٣٥ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْهُ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ أَوَّلَ زُمْرَةٍ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ضَوْءُ وُجُوهِهِمْ عَلَى مِثْلِ ضَوْءِ القمرِ ليلةَ البدْرِ وَالزُّمْرَةُ الثَّانِيَةُ عَلَى مِثْلِ أَحْسَنِ كَوْكَبٍ دُرِّيٍّ فِي السَّمَاءِ لِكُلِّ رَجُلٍ مِنْهُمْ زَوْجَتَانِ عَلَى كُلِّ زَوْجَةٍ سَبْعُونَ حُلَّةً يُرَى مُخُّ سَاقِهَا من وَرَائِهَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5635. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "पहला गिरोह जो रोज़ ए कियामत जन्नत में जाएगा उन के चेहरे इस तरह रोशन होंगे जिस तरह चौदहवीं रात का चाँद रोशन होता है, दूसरा गिरोह आसमान में सबसे ज़्यादा चमक दार सितारे की तरह रोशन होगा, उनमें से हर आदमी के लिए दो बीवियां होगी, हर बीवी पर सत्तर जोड़े होंगे, उसकी पिंडली का गुदा उन के ऊपर से नज़र आएगा"| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (2535 وقال : حسن صحيح)

٥٦٣٦ - (صَحِيح لشواهده) وَعَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «يُعْطَى الْمُؤْمِنُ فِي الْجَنَّةِ قُوَّةَ كَذَا وَكَذَا مِنَ الْجِمَاعِ» . قِيلَ: يَا رَسُولَ الله أَو يُطيق ذَلِكَ؟ قَالَ: «يُعْطَى قُوَّةَ مِائَةٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

5636. अनस रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मोमिन को जन्नत में जिमाअ की बहोत ज़्यादा ताकत दी जाएगी”| अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल! क्या यह उसकी ताकत रखेगा? आप ﷺ ने फ़रमाया: इसे सौ (आदमियों) की ताकत दी जाएगी”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (2536 وقال : صحیح غریب) * قتادة عنعن و للحدیث شواھد ضعیفة عند البزار (کشف الاستار 4 / 198 ح 3526) و البیھقی (البعث و النشور : 403) وغیرھما

٥٦٣٧ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَوْ أَنَّ مَا يُقِلُّ ظُفُرٌ مِمَّا فِي الْجَنَّةِ بَدَا لَتَزَخْرَفَتْ لَهُ مَا بَيْنَ خَوَافِقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَوْ أَنَّ رَجُلًا مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ اطَّلَعَ فَبَدَا أَسَاوِرُهُ لَطَمَسَ ضَوْؤُهُ ضَوْءَ الشَّمْسِ كَمَا تَطْمِسُ الشَّمْسُ ضَوْءَ النُّجُومِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

5637. साद बिन अबी वकास रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं की आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर जन्नत की नेअमतो में से नाख़ून बराबर कोई नेअमत (दुनिया में) ज़ाहिर हो जाए तो उसकी वजह से ज़मीन व आसमान के किनारे चमकदार हो जाए और अगर जन्नत वालो में से एक आदमी (ज़मीन पर) झांक दे और उस के कंगन ज़ाहिर हो जाए तो उसकी रोशनी सूरज की रोशनी को इस तरह मिटा देगी जिस तरह सूरज सितारों की रोशनी मिटा देता है”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

حسن ، رواہ الترمذی (2538)

٥٦٣٨ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَهْلُ الْجَنَّةِ جُرْدٌ مُرْدٌ كَحْلَى لَا يَفْنَى شَبَابُهُمْ وَلَا تَبْلَى ثِيَابهمْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ والدارمي

5638. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जन्नत वालो के जिस्म पर बाल न होंगे और न उनकी दाढ़ी होगी और उनकी आँखे सुरमे वाली होगी, न तो उनकी जवानी ख़तम होगी और न उन के कपड़े पोशीदा होंगे”| (हसन)

حسن ، رواہ الترمذی (2539 وقال : غغریب) و الدارمی (2 / 335 ح 2829)

٥٦٣٩ - (حسن بِمَا قبله) وَعَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «يَدْخُلُ أَهْلُ الْجَنَّةِ الْجَنَّةَ جُرْدًا مُرْدًا مُكَحَّلِينَ أَبْنَاءَ ثَلَاثِينَ - أَوْ ثلاثٍ وَثَلَاثِينَ - سنة» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5639. मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जन्नत वाले जन्नत में इस हाल में दाखिल होंगे के ना तो उन के जिस्म पर बाल होंगे और न उनकी दाढ़ी होगी, उनकी आँखे सुरमे वाली

होगी और उनकी उमर तीस या तेंतीस साल होगी"| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (2545 وقال : حسن غريب) * قتادة مدلس و عنعن فاسند ضعيف و للحديث شواهد ضعيفة عند احمد (2 / 295 ، 343 ، 415) وغيره ، و انظر الحديث السابق [و النهاية بتحقيقى (1019)]

٥٦٤٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أسمَاء»» بنت أبي بكر قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَذُكِرَ لَهُ سِدْرَةُ الْمُنْتَهَى قَالَ: «يَسِيرُ الرَّاكِبُ فِي ظِلِّ الْفَنَنِ مِنْهَا مِائَةَ سَنَةٍ أَوْ يَسْتَظِلُّ بِظِلِّهَا مِائَةُ رَاكِبٍ - شَكَّ الرَّاوِي - فِيهَا فَرَاشُ الذَّهَبِ كَأَنَّ ثَمَرَهَا الْقِلَالُ» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

5640. अस्मा बिन्ते अबी बक्र रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना आप से सिदरातुल मुन्तहा का ज़िक्र किया गया तो फ़रमाया: "सवार उसकी शाखों के साए में सौ साल चलता रहेगा, या फ़रमाया: "उस के साए से सौ सवार साया हासिल कर सकेंगे", उस में रावी को शक हुआ है" उस पर पतंगे सोने के होंगे, और उस का फल बड़े मटको की तरह होगा"| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2541) * محمد بن اسحاق بن يسار مدلس و صرح بالسماع عند هناد بن السرى فی الزهد (1 / 98 ح 115)

٥٦٤١ - (حسن) وَعَنْ»» أَنَسٍ قَالَ سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ماالكوثر؟ قَالَ: «ذَاكَ نَهْرٌ أَعْطَانِيهِ اللَّهُ يَعْنِي فِي الْجَنَّةِ أَشَدُّ بَيَاضًا مِنَ اللَّبَنِ وَأَحْلَى مِنَ الْعَسَلِ فِيهِ طَيْرٌ أَعْنَاقُهَا كَأَعْنَاقِ الْجُزُرِ» قَالَ عُمَرُ: إِنَّ هَذِهِ لَنَاعِمَةٌ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ «أَكَلَتُهَا أَنْعَمُ مِنْهَا» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5641. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ से दरियाफ्त किया गया कौसर क्या चीज़े है? आप ﷺ ने फ़रमाया: "वो एक नहर है जो अल्लाह ने मुझे अता की है, यानी वह मुझे जन्नत में अता करेगा, (इस का पानी) दूध से ज़्यादा सफ़ेद, शहद से ज़्यादा मीठा है, उस में एक परिंदा है जिस की गर्दन ऊंट की गर्दन की तरह है", उमर रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया: यह तो फिर बहोत अच्छी नेअमत है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "उस को खाने वाले उस से भी ज़्यादा अच्छे है"| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذی (2542 وقال : حسن)

٥٦٤٢ - (ضَعِيف) وَعَن»» بُريدةَ أَنَّ رَجُلًا قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ هَلْ فِي الْجَنَّةِ مِنْ خَيْلٍ؟ قَالَ: «إِنِ اللَّهُ أَدْخَلَكَ الْجَنَّةَ فَلَا تَشَاءُ أَنْ تُحْمَلَ فِيهَا عَلَى فَرَسٍ مِنْ يَاقُوتَةٍ حَمْرَاءَ يَطِيرُ بِكَ فِي الْجَنَّةِ حَيْثُ شِئْتَ إِلَّا فَعَلْتَ» وَسَأَلَهُ رجل فَقَالَ: يارسول الله هَل فِي الجنةِ من إبلٍ؟ قَالَ: فَلَمْ يَقُلْ لَهُ مَا قَالَ لِصَاحِبِهِ. فَقَالَ: «إِنْ يُدْخِلْكَ اللَّهُ الْجَنَّةَ يَكُنْ لَكَ فِيهَا مَا اشْتَهَتْ نَفْسُكَ وَلَذَّتْ عَيْنُكَ» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5642. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या जन्नत में घोड़े

होंगे? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर अल्लाह ने तुझे जन्नत में दाखिल कर दिया और तूने अगर वहां सुर्ख याकुत के घोड़े पर सवार होने की ख्वाहिश की तो वह जन्नत में जहाँ तू चाहेगा तुझे उड़ा कर ले जाएगा”, एक दूसरे आदमी ने आप से दरियाफ्त करते हुए अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! क्या जन्नत में ऊंट भी होंगे? रावी बयान करते हैं, आप ﷺ ने इसे वह जवाब नहीं दिया, जो आप ने उस के साथी को जवाब दिया था (बल्के) आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर अल्लाह ने तुझे जन्नत में दाखिल फरमा दिया तो तेरे लिए वहां वह कुछ होगा जिस को तेरा दिल चाहेगा और (जिस से) तेरी आँखे लाज़्ज़त व सरवर हासिल करेगी”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (2543) * المسعودى صدوق اختلط ولم يثبت تحديثه به قبل اختلاطه و للحديث شواهد ضعيفة و الحديث الآتى يغنى عنه

٥٦٤٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» أَيُّوبَ قَالَ أَتَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَعْرَابِيٌّ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي أُحِبُّ الْخَيْلَ أَفِي الْجَنَّةِ خَيْلٌ؟ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنْ أُدْخِلْتَ الْجَنَّةَ أُتِيتَ [ص:١٥٦ بِفَرَسٍ مِنْ يَاقُوتَةٍ لَهُ جَنَاحَانِ فَحُمِلْتَ عَلَيْهِ ثُمَّ طَارَ بِكَ حَيْثُ شِئْتَ» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ. وَقَالَ هَذَا حَدِيثٌ لَيْسَ بِالْقَوِيِّ وَأَبُو سَوْرَةَ الرَّاوِي يُضَعَّفُ فِي الْحَدِيثِ وَسَمِعْتُ مُحَمَّدَ بْنَ إِسْمَاعِيلَ يَقُولُ: أَبُو سَوْرَةَ هَذَا مُنكر الحَدِيث يروي مَنَاكِير

5643. अबू अय्यूब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आराबी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मैं (दुनिया में) घोड़े पसंद करता हूँ, क्या जन्नत में घोड़े होंगे? रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगर तुझे जन्नत में दाखिल कर दिया गया तो तुझे याकुत का एक घोड़ा दीया जाएगा, जिसके दो पर होंगे, तुझे उस पर सवार किया जाएगा, फिर तू जहाँ चाहेगा वह तुझे उड़ा ले जाएगा”| इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: इस हदीस की सनद क़वी नहीं, अबू सुरह रावी हदीस के मुआमले में जईफ करार दिया गया है, मैंने इमाम बुखारी से सुना, वह फरमा रहे थे यह मुनकर उल हदीस है और वह मुनकर रिवायत बयान करता है| (हसन)

حسن ، رواه الترمذى (2544) * و للحديث شاهد عند البيهقى فى البعث و النشور (439) و سنده حسن لذاته

٥٦٤٤ - (صَحِيح) وَعَنْ»» بُرَيْدَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَهْلُ الْجَنَّةِ عِشْرُونَ وَمِائَةُ صَفٍّ ثَمَانُونَ مِنْهَا مِنْ هَذِهِ الْأُمَّةِ وَأَرْبَعُونَ مِنْ سَائِرِ الْأُمَمِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي كتاب الْبَعْث والنشور

5644. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जन्नत वालो की एक सौ बीस सफे होगी, उनमें से अस्सी इस उम्मत की होगी और चालीस बाकी तमाम उम्मतो की होगी”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذى (2546 وقال : حسن) و الدارمى (2 / 337 ح 2838) و البيهقى فى البعث و النشور (لم اجده) [و صححه ابن حبان (الموارد : 2639) و الحاكم على شرط مسلم (2 / 8182) و وافقه الذهبى]

٥٦٤٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن سَالم»» عَنْ أَبِيهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «بَابُ أُمَّتِي الَّذِينَ يَدْخُلُونَ مِنْهُ الْجَنَّةَ عَرْضُهُ مَسِيرَةُ الرَّاكِبِ الْمُجَوِّدِ ثَلَاثًا ثُمَّ إِنَّهُمْ لَيُضْغَطُونَ عَلَيْهِ حَتَّى تَكَادُ مَنَاكِبُهُمْ تَزُولُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ هَذَا حَدِيثٌ ضَعِيفٌ وَسَأَلْتُ مُحَمَّدَ بْنَ إِسْمَاعِيلَ عَنْ هَذَا الْحَدِيثِ فَلَمْ يَعْرِفْهُ وَقَالَ: خَالِد بن أبي بكر يروي الْمَنَاكِير

5645. सालिम रहिमहुल्लाह अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरी उम्मत के लोग जिस दरवाज़े से जन्नत में दाखिल होंगे, उस का अर्ज़, बेहतरीन सवार की तीन (रोज़ या साल) की मुसाफ़त के बराबर है, फिर भी वहां से दाखिल होते वक़्त वह इतने तंग होंगे के करीब है के उन के कंधे अलग हो जाए”| इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: यह हदीस जईफ है, और मैंने मुहम्मद बिन इस्माइल (इमाम बुखारी (रह)) से इस हदीस के मुतल्लिक दरियाफ्त किया तो उन्होंने इसे न पहचाना और फ़रमाया यख्लद बिन अबी बक्र मुनकर रिवायत बयान करता है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواہ الترمذی (2548) * خالد بن ابی بکر : فیه لین وعد الذھبی ھذا الحدیث من مناکیرہ

٥٦٤٦ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ»» عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِن فِي الْجَنَّةِ لَسُوقًا مَا فِيهَا شِرًى وَلَا بَيْعٌ إِلَّا الصُّوَرَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ فَإِذَا اشْتَهَى الرَّجُلُ صُورَةً دَخَلَ فِيهَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

5646. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जन्नत में एक बाज़ार है, वहां कोई खरीद व फरोख्त नहीं होगी, अलबत्ता वहां मर्दों और औरतो की तस्वीरे होगी, जब आदमी किसी सूरत तस्वीर को पसंद करेगा तो वह उस में दाखिल हो जाएगा”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواہ الترمذی (2550) * فیه عبد الرحمن بن اسحاق الکوفی ضعیف (تقدم : 5597)

٥٦٤٧ - (ضَعِيف) وَعَن»» سعيد بن الْمسيب أَنه لقِيَ أَبَا هريرةَ فَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: أَسْأَلُ اللَّهَ أَنْ يَجْمَعَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ فِي سُوقِ الْجَنَّةِ. فَقَالَ سَعِيدٌ: أَفِيهَا سُوقٌ؟ قَالَ: نَعَمْ أَخْبَرَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ أَهْلَ الْجَنَّةِ إِذَا دَخَلُوهَا نَزَلُوا فِيهَا بِفَضْلِ أَعْمَالِهِمْ ثُمَّ يُؤْذَنُ لَهُمْ [ص:١٥٧ فِي مِقْدَارِ يَوْمِ الْجُمُعَةِ مِنْ أَيَّامِ الدُّنْيَا فَيَزُورُونَ رَبَّهُمْ وَيَبْرُزُ لَهُمْ عَرْشُهُ وَيَتَبَدَّى لَهُم فِي روضةٍ من رياضِ الجنَّة فَيُوضَع لَهُم مَنَابِر من نور ومنابرمن لُؤْلُؤٍ وَمَنَابِرُ مِنْ يَاقُوتٍ وَمَنَابِرُ مِنْ زَبَرْجَدٍ وَمَنَابِرُ مِنْ ذَهَبٍ وَمَنَابِرُ مِنْ فِضَّةٍ وَيَجْلِسُ أَدْنَاهُم - وَمَا فيهم دنيٌّ - عَلَى كُثْبَانِ الْمِسْكِ وَالْكَافُورِ مَا يَرَوْنَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَرَاسِيِّ بِأَفْضَلَ مِنْهُمْ مَجْلِسًا» . قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَهَلْ نَرَى رَبَّنَا؟ قَالَ: «نَعَمْ هَلْ تَتَمَارَوْنَ فِي رُؤْيَةِ الشَّمْسِ وَالْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ؟» قُلْنَا: لَا. قَالَ: " كَذَلِكَ لَا تَتَمَارَوْنَ فِي رُؤْيَةِ رَبِّكُمْ وَلَا يَبْقَى فِي ذَلِكَ الْمَجْلِسِ رَجُلٌ إِلَّا حَاضَرَهُ اللَّهُ مُحَاضَرَةً حَتَّى يَقُولَ لِلرَّجُلِ مِنْهُمْ: يَا فلَان ابْن فلَان أَتَذكر يَوْم قلت كَذَا وَكَذَا؟ فيذكِّره بِبَعْض غدارته فِي الدُّنْيَا. فَيَقُولُ: يَا رَبِّ أَفَلَمْ تَغْفِرْ لِي؟ فَيَقُولُ: بَلَى فَبِسِعَةِ مَغْفِرَتِي بَلَغْتَ مَنْزِلَتَكَ هَذِهِ. فَبَيْنَا هُمْ عَلَى ذَلِكَ غَشِيَتْهُمْ سَحَابَةٌ مِنْ فَوْقِهِمْ فَأَمْطَرَتْ عَلَيْهِمْ طِيبًا لَمْ يَجِدُوا مِثْلَ رِيحِهِ شَيْئًا قَطُّ وَيَقُولُ رَبُّنَا: قُومُوا إِلَى مَا أَعْدَدْتُ لَكُمْ مِنَ الْكَرَامَةِ فَخُذُوا مَا اشْتَهَيْتُمْ فَنَأْتِي سُوقًا قَدْ حَفَّتْ بِهِ الْمَلَائِكَةُ فِيهَا مَا لَمْ تَنْظُرِ الْعُيُونُ إِلَى مِثْلِهِ وَلَمْ تَسْمَعِ الْآذَانُ وَلَمْ يَخْطُرْ عَلَى الْقُلُوبِ فَيُحْمَلُ لَنَا مَا اشْتَهَيْنَا لَيْسَ يُبَاعُ فِيهَا وَلَا يُشْتَرَى وَفِي ذَلِكَ السُّوقِ يَلْقَى أَهْلُ الْجَنَّةِ بَعْضُهُمْ بَعْضًا ". قَالَ: " فَيُقْبِلُ الرَّجُلُ ذُو الْمَنْزِلَةِ الْمُرْتَفِعَةِ فَيَلْقَى مَنْ هُوَ دُونَهُ - وَمَا فيهم دنيٌّ - فيروعُه مَا يرى عَلَيْهِ من اللباسِ فِيمَا يَنْقَضِي آخِرُ حَدِيثِهِ حَتَّى يَتَخَيَّلَ عَلَيْهِ

مَا هُوَ أحسن مِنْهُ وَذَلِكَ أَنَّهُ لَا يَنْبَغِي لِأَحَدٍ أَنْ يَحْزَنَ فِيهَا ثُمَّ نَنْصَرِفُ إِلَى مَنَازِلِنَا فَيَتَلَقَّانَا أَزْوَاجُنَا فَيَقُلْنَ: مَرْحَبًا وَأَهْلًا لَقَدْ جِئْتَ وَإِنَّ بِكَ مِنَ الْجَمَالِ أَفْضَلَ مِمَّا فَارَقْتَنَا عَلَيْهِ فَيَقُولُ: إِنَّا جَالَسْنَا الْيَوْمَ رَبَّنَا الْجَبَّارَ وَيَحِقُّنَا أَنْ نَنْقَلِبَ بِمِثْلِ مَا انْقَلَبْنَا ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيث غَرِيب

5647. सईद बिन मुसय्यिब रहिमहुल्लाह से रिवायत है के वह अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से मिले तो अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: में अल्लाह से दरख्वास्त करता हूँ कि वह (बाज़ारे मदीना की तरह) मुझ को और आप को जन्नत के बाज़ार में इकट्ठा फरमाए, सईद रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: क्या वहां बाज़ार होगा? उन्होंने ने फ़रमाया: हां/ रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “जब जन्नत वाले इस (जन्नत) में दाखिल हो जाएँगे तो वह अपने आमाल के हिसाब से वहां कयाम करेंगे, फिर दुनिया के अय्याम से जुमा के दिन की मिकदार के मुताबिक उन्हें इजाज़त दी जाएगी तो वह अपने रब की ज़ियारत करेंगे और वह इन के लिए अपना अर्श ज़ाहिर फरमाएगा, वह (उन का रब) उन की खातिर जन्नत के बाग़ो में से एक बागीचे में तजल्ली फरमाएगा, इन के लिए नूर के मोतियों के, याकुत के, पन्ना लगे हुए सोने के और चाँदी के मिम्बर लगाए जाएँगे, उनमें से अदना दरजे का शख़्स और उनमें से कोई भी अदना दरजेका इन्हें होगा, कस्तूरी और काफ़ूर के टीलो पर होगा, और वह यह महसूस नहीं करेंगे के कुर्सियों वाले निशात व बरख्वास्त में उन से अफ़ज़ल है”, अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! क्या हम अपने रब को देंखेंगे? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ, क्या तुम सूरज देखने में और चौदहवीं रात का चाँद देखने में शक करते हो?” हमने अर्ज़ किया: नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसी तरह तुम अपने रब को देखने में शक नहीं करोगे, और इस मजलिस में मौजूद हर शख़्स से अल्लाह (किसी तरजुमान के बगैर) मुखातिब होगा, हत्ता के वह उनमें से एक आदमी से कहेगा: ए फलां बिन फलां! क्या तुझे फलां दिन याद है तूने यह और यह कहा था, वह दुनिया में उसकी बाज़ नाफरमानिया और अहद शक्नीयां इसे याद कराएगा तो वह अर्ज़ करेगा: रब जी! क्या तूने मुझे बख्श नहीं दिया था? वह फरमाएगा, क्यों नहीं, हाँ, मेरी मगफिरत की वुसअत की बदोलत ही तो अपने इस मक़ाम को पहुंचा है, वह इसी असना में होंगे तो बादल का एक टुकड़ा ऊपर से उन्हें ढांप लेगा, वह इन पर खुशगवार बारिश बरसाएगा, और उन्होंने इस जैसी खुशबू किसी चीज़ में नहीं पाई होगी, हमारा रब फरमाएगा: मैंने तुम्हारे एजाज़ व इकराम की खातिर जो तैयार कर रखा है, तुम उस का क़सद करो और (वहां से) जो तुम चाहो, वह ले लो, हम एक बाज़ार में जाएँगे, इसे फरिश्तो ने घेर रखा होगा, उस में ऐसी ऐसी चीज़े होगी जिसे आंखो ने देखा होगा न कानों ने सुना होगा और ना ही दिलों में उस का ख़याल आया होगा, हम जो चाहेंगे वह हमारे लिए लाया जाएगा, वहां खरीद व फरोख्त फ़रोख्त नहीं होगी, और इस बाज़ार में, जन्नत वाले एक दूसरे को मिलेंगे”, फ़रमाया: “बुलंद मंजिलो वाला आदमी तवज्जो करेगा तो वह अपने से कम तर से, हालाँकि उनमें से कोई भी कम तर नहीं, मुलाकात करेगा तो वह उस के लिबास को देखेगा तो वह इसे ताज्जुब में डाल देगा, उसकी बात ख़तम नहीं होगी हत्ता के इसे ख़याल आएगा के उस पर जो (लिबास) है के इस (लिबास) से बेहतर है, और यह इसलिए है के किसी के लिए मुनासिब नहीं के वह इस (जन्नत) में ग़मगीन हो, फिर हम अपने घरो को वापस आएँगे तो हमारी अज़वाज हम से मुलाकात करेगी तो वह कहेगी खुशामदीद, जब तुम हमारे पास से गए थे, तो अब जबकि तुम हमारे पास आए हो, उन से ज़्यादा खुबसूरत हो, हम कहेंगे आज हमने अपने रब जब्बार की हम नशीनी इख़्तियार की तो हम पर लाज़िम था के हम इसी हालत में वापस आते जिस हालत में हम वापस आए है”| तिरमिज़ी, इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया:

यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2549) و ابن ماجه (4336) * هشام بن عمار صدوق اختلط ، ولم يثبت بانه حدث بهذا الحديث قبل اختلاطه

٥٦٤٨ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَدْنَى أَهْلِ الْجَنَّةِ الَّذِي لَهُ ثَمَانُونَ أَلْفَ خَادِمٍ وَاثْنَتَانِ وَسَبْعُونَ زَوْجَةً وَتُنْصَبُ لَهُ قُبَّةٌ مِنْ لُؤْلُؤٍ وَزَبَرْجَدٍ وَيَاقُوتٍ كَمَا بَيْنَ الْجَابِيَةِ إِلَى صَنْعَاءَ»»» وَبِهَذَا الْإِسْنَاد قَالَ (ضَعِيف)»» : «وَمَنْ مَاتَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ مِنْ صَغِيرٍ أَوْ كَبِيرٍ يُرَدُّونَ بَنِي ثَلَاثِينَ فِي الْجَنَّةِ لَا يَزِيدُونَ عَلَيْهَا أَبَدًا وَكَذَلِكَ أَهْلُ النَّارِ»»» وَبِهَذَا الْإِسْنَاد قَالَ (ضَعِيف)»» : «إِنَّ عليهمُ التيجانَ أَدْنَى لُؤْلُؤَةٍ مِنْهَا لَتُضِيءُ مَا بَيْنَ الْمَشْرِقِ والمغربِ»»» وَبِهَذَا الإِسناد قَالَ (صَحِيح لغيره)»» : «الْمُؤْمِنُ إِذَا اشْتَهَى الْوَلَدَ فِي الْجَنَّةِ كَانَ حَمْلُهُ وَوَضْعُهُ وَسِنُّهُ فِي سَاعَةٍ كَمَا يُشْتَهَى» وَقَالَ إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ فِي هَذَا الْحَدِيثِ: إِذَا اشْتَهَى الْمُؤْمِنُ فِي الْجَنَّةِ الْوَلَدَ كَانَ فِي سَاعَة وَلَكِن لَا يَشْتَهِي (قَول اسحاق لَيْسَ من الحَدِيث)»» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيث غَرِيب. روى ابْن مَاجَه الرَّابِعَة والدارمي الْأَخِيرَة

5648. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जन्नत वालो में से अदना दरजे वाला वह होगा जिसके अस्सी हज़ार खादिम और बहत्तर बीवियां होगी, और उस के जाबियत से जनआअ की दरमियानी मुसाफ़त जितना जवाहरात, पन्ना लगे हुए और याकुत से एक खैमा नसब किया जाएगा”, और इसी सनद के साथ है, फ़रमाया: “जन्नत वालो में से (दुनिया में) जो कोई छोटा या कोई बड़ा फौत हो जाता है वह सब जन्नत में तीस बरस के होंगे, उनकी उमर उस से कभी ज़्यादा नहीं होगी, और जहन्नम वाले भी इस तरह (तीस साल के) होंगे”, और इसी सनद के साथ फ़रमाया: “उन (जन्नत वालो के सरो) पर ताज होंगे, उनका अदना सा मोती मशरिक व मगरिब के दरमियान को रोशन कर देगा”, और इसी सनद से मरवी है, फ़रमाया: “मोमिन जब जन्नत में बच्चे की ख्वाहिश करेगा तो उस का हमल होना, उसकी विलादत होना और उसकी उमर (पूरी) होना एक घड़ी में हो जाएगा जिस तरह वह चाहेगा”| और इसहाक बिन इब्राहीम रहिमहुल्लाह ने इस हदीस (के बयान) में फ़रमाया: जब मोमिन जन्नत में बच्चे की ख्वाहिश करेगा तो वह एक घड़ी में हो जाएगा लेकिन वह उसकी ख्वाहिश ही नहीं करेगा”| इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: “ये हदीस ग़रीब है| इमाम इब्ने माजा ने चोथा फक्रह रिवायत किया जबकि इमाम दारमी ने आखरी| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (1 / 2562) * قلت : و رواه عبدالله بن وهب : اخبرنی عمرو بن الحارث به (ابن حبان ، الاحسان : 7358 / 7401) و سنده حسن۔حسن ، رواه الترمذی (2 / 2562)و ابن ابی داود کما فی النهایة فی الفتن و الملاحم (2 / 132 ح 1203 و سنده حسن) * قلت : رواه ابن وهب : اخبرنا عمرو بن الحارث به۔۔ حسن ، رواه الترمذی (3 / 2563) و ابن حبان (الاحسان : 7354 / 7397 و سنده حسن) * قلت : رواه ابن وهب : أخبرنی عمرو بن الحارث به0 حدیث ’’ المومن اذا اشتهی ‘‘ الخ سنده حسن ، رواه الترمذی (2563 وقال : حسن غریب) و ابن ماجه (4328) والدارمی (2 / 337 ح 2837)

٥٦٤٩ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» عَلِيٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ:»» إِنَّ فِي الْجَنَّةِ لَمُجْتَمَعًا لِلْحُورِ الْعِينِ يَرْفَعْنَ بِأَصْوَاتٍ لَمْ تَسْمَعِ الْخَلَائِقُ مِثْلَهَا يَقُلْنَ: نَحْنُ الْخَالِدَاتُ فَلَا نَبِيدُ وَنَحْنُ النَّاعِمَاتُ فَلَا نَبْأَسُ وَنَحْنُ الرَّاضِيَاتُ فَلَا نَسْخَطُ طُوبَى لِمَنْ كَانَ لنا وَكُنَّا لَهُ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5649. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जन्नत में हुरेइन के लिए एक इज्तेमा गाह है वहां वह आवाज़े बुलंद करेगी जो मखलूक ने नहीं सुनी होगी, वह कहेगी: हम दाइमी है, हम हलाक नहीं होंगी, हम तो एश करने वालियाँ है, हम मुहताज होंगी, और हम खुश रहने वालियाँ है हम नाराज़ नहीं होंगी, इस शख़्स के लिए खुशखबरी हो जो हमारे लिए है और हम उस के लिए है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (2564 ، 2550) * عبد الرحمن بن اسحاق الکوفی ضعیف

٥٦٥٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن حكيمٍ»» بن مُعَاوِيَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ فِي الْجَنَّةِ بَحْرُ الْمَاءِ وَبَحْرُ الْعَسَلِ وَبَحْرُ اللَّبَنِ وَبَحْرُ الْخَمْرِ ثُمَّ تشقَّقُ الأنهارُ بعدُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5650. हकीम बिन मुआविया रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जन्नत में पानी का दरिया है, शहद का दरिया है, दूध का दरिया है, और शराब का दरिया है, फिर (जन्नत वालों के जन्नत में दाखिल होने के) बाद नहरे निकलेगी”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (2571 وقال : حسن صحیح)

٥٦٥١ - (لم تتمّ دراسته) رَوَاهُ الدَّارِمِيّ»» عَن مُعَاوِيَة

5651. और इमाम दारमी ने इसे मुआविया रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (हसन)

حسن ، رواه الدارمی (2 / 337 ح 2839)

बَاب صفةالجنة وَأَهْلهَا • जन्नत और अहले जन्नत के हाल का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٥٦٥٢ - (ضَعِيف) عَنْ»» أَبِي سَعِيدٍ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " إِنَّ الرَّجُلَ فِي الْجَنَّةِ لَيَتَّكِئُ فِي الْجَنَّةِ سَبْعِينَ مَسْنَدًا قَبْلَ أَنْ يَتَحَوَّلَ ثُمَّ تَأْتِيهِ امْرَأَةٌ فَتَضْرِبُ عَلَى مَنْكِبِهِ فَيَنْظُرُ وَجْهَهُ فِي خَدِّهَا أَصْفَى مِنَ الْمِرْآةِ وَإِنَّ أَدْنَى لُؤْلُؤَةٍ عَلَيْهَا تُضِيءُ مَا بينَ المشرقِ والمغربِ فتسلِّمُ عَلَيْهِ فيردُّ السلامَ وَيَسْأَلُهَا: مَنْ أَنْتِ؟ فَتَقُولُ: أَنَا مِنَ الْمَزِيدِ وَإِنَّهُ لَيَكُونُ عَلَيْهَا سَبْعُونَ ثَوْبًا فَيَنْفُذُهَا بَصَرُهُ حَتَّى يَرَى مُخَّ سَاقِهَا مِنْ وَرَاءِ ذَلِكَ وإِنَّ عَلَيْهَا من التيجان أن أدنلؤلؤة مِنْهَا لَتُضِيءُ مَا بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ ". رَوَاهُ أَحْمد

5652. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “आदमी जन्नत में

(अपनी ख़ास) जन्नत में करवट बदलने से पहले सत्तर तकियों पर टेक लगाएगा, फिर एक औरत उस के पास आएगी, और उस के कंधे को थपथापाएगी, वह उस के रुखसार में अपना चेहरा देखेगा, वह (रुखसार) आईने से ज़्यादा साफ़ होगा, और इस (औरत) पर अदना मोती मशरिक व मगरिब के दरमियानी फासले को रोशन कर दे, वह उस को सलाम करेगी तो वह इसे सलाम का जवाब देगा, और वह उस से पूछेगा: तू कौन है? वह कहेगी: में "मज़ीद" के ज़ीमन से हो, उस पर सत्तर लिबास होंगे, उसकी नज़रआन (सतर लिबासो) से गुज़र जाएगी हत्ता के उन के पीछे उसकी पिंडली का गुदा देख लेगा, और उस पर एक ताज होगा और उस के जवाहरात में से अदना हिरा मशरिक व मगरिब को रोशन कर दे"| (हसन)

حسن ، رواه احمد (3 / 75 ح 11738) و ابن حبان فی صحیحه (الاحسان : 7354 / 7397 و سنده حسن)

٥٦٥٣ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَتَحَدَّثُ - وَعِنْدَهُ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْبَادِيَةِ -: " إِنَّ رَجُلًا مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ اسْتَأْذَنَ رَبَّهُ فِي الزَّرْعِ. فَقَالَ لَهُ: أَلَسْتَ [ص:١٥٧ فِيمَا شِئْتَ؟ قَالَ: بَلَى وَلَكِنْ أُحِبُّ أَنْ أَزْرَعَ فَبَذَرَ فَبَادَرَ الطَّرْفَ نَبَاتُهُ وَاسْتِوَاؤُهُ وَاسْتِحْصَادُهُ فَكَانَ أَمْثَالَ الْجِبَالِ. فَيَقُولُ اللَّهُ تَعَالَى: دُونَكَ يَا ابْن آدم فَإِنَّهُ يُشْبِعُكَ شَيْءٌ ". فَقَالَ الْأَعْرَابِيُّ: وَاللَّهِ لَا تَجِدُهُ إِلَّا قُرَشِيًّا أَوْ أَنْصَارِيًّا فَإِنَّهُمْ أَصْحَابُ زَرْعٍ وَأَمَّا نَحْنُ فَلَسْنَا بِأَصْحَابِ زَرْعٍ فَضَحِكَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

5653. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ बात कर रहे थे, इस वक़्त आप के पास एक आराबी था के जन्नत वालो में से एक आदमी ने अपने रब से काश्तकारि के मुतल्लिक इजाज़त तलब की तो उस ने उस से फ़रमाया: क्या तुझे मन पसंद चीज़े मयस्सर नहीं? उस ने अर्ज़ किया, क्यों नहीं मयस्सर हैं, लेकिन मैं चाहता हूँ की मैं काश्तकारि करू, उस ने बीज गिराया तो पल भर में वह उग आया, बराबर हो गया और कट भी गया, और वह (गल्ले के ढेर) पहाड़ो की तरह थे, अल्लाह तआला फरमाएगा: इब्ने आदम! इसे ले लो, क्योंकि कोई चीज़ तेरा पेट नहीं भर सकती", इस आराबी ने अर्ज़ किया, अल्लाह की क़सम! वह कुरैश या अंसारी होगा क्योंकि वह काश्तकार हैं, और रहे हम, तो हम काश्तकार नहीं, रसूलुल्लाह ﷺ हंस दिए| (बुखारी)

رواه البخاری (2348)

٥٦٥٤ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» جَابِرٍ قَالَ: سَأَلَ رَجُلٌ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَيَنَامُ أَهْلُ الْجَنَّةِ؟ قَالَ: «النَّوْمُ أَخُو الْمَوْتِ وَلَا يَمُوتُ أَهْلُ الجنةِ» . رواهُ البيهقيُّ فِي «شعب الْإِيمَان»

5654. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी ने रसूलुल्लाह ﷺ से मसअला दरियाफ्त किया, क्या जन्नत वाले सोएंगे? आप ﷺ ने फ़रमाया: "नींद मौत की बहन है और जन्नत वाले मरेंगे नहीं|" (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه البیهقی فی شعب الایمان (4745 ، نسخة محققة : 4416) * سفیان الثوری مدلس و عنعن و لحدیثه شواهد ضعیفة و مرسلة فی الصحیحة للالبانی (1087) و معناه صحیح

दीदार ए इलाही का बयान • بَاب رؤيةالله تَعَالَى

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٥٦٥٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن جَرِيرِ بْنِ عَبْدُ اللَّهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّكُمْ سَتَرَوْنَ رَبَّكُمْ عِيَانًا» . وَفِي رِوَايَةٍ: قَالَ: كُنَّا جُلُوسًا عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَنَظَرَ إِلَى الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ فَقَالَ: «إِنَّكُمْ سَتَرَوْنَ رَبَّكُمْ كَمَا تَرَوْنَ هَذَا الْقَمَرَ لَا تُضَامُونَ فِي رُؤْيَتِهِ فَإِنِ اسْتَطَعْتُمْ أَنْ لَا تُغْلَبُوا عَلَى صَلَاةٍ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا فَافْعَلُوا» ثُمَّ قَرَأَ (وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا)»» مُتَّفق عَلَيْهِ

5655. जरीर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम अपने रब को साफ़ ज़ाहिर तौर पर देखोगे”, एक दूसरी रिवायत में है: रावी बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में बैठें हुए थे की आप ﷺ ने चौदहवीं रात के चाँद की तरफ देखा तो फ़रमाया: “अनकरीब तुम अपने रब को इसी तरह देखोगे जिस तरह तुम इस चाँद को देख रहे हो, और उस को देखने में तुम कोई तंगी महसूस नहीं करोगे, अगर तुम उसकी इस्तिताअत रखो की तुम तुलुअ ए आफ़ताब और गुरूब ए आफ़ताब से पहले की नमाज़ो की अदाइगी में मग्लुब न हो जाओ तो फिर उनकी अदाइगी ज़रूर करो”, फिर आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाई: (وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا) “तुलुअ ए आफ़ताब और उस के गुरूब होने से पहले अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह बयान करो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (554) و مسلم (211 / 632)، (1432)

٥٦٥٦ - (صَحِيح) وَعَن صُهَيْب عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " إِذَا دَخَلَ أَهْلُ الْجَنَّةِ الْجَنَّةَ يَقُولُ اللَّهُ تَعَالَى: تُرِيدُونَ شَيْئًا أَزِيدُكُمْ؟ فَيَقُولُونَ: أَلَمْ تُبَيِّضْ وُجُوهَنَا؟ أَلَمْ تُدْخِلْنَا الْجَنَّةَ وَتُنَجِّنَا مِنَ النَّارِ؟ " قَالَ: «فَيُرْفَعُ الْحِجَابُ فَيَنْظُرُونَ إِلَى وَجْهِ اللَّهِ فَمَا أُعْطُوا شَيْئًا أَحَبَّ إِلَيْهِمْ مِنَ النَّظَرِ إِلَى رَبِّهِمْ» ثُمَّ تَلَا (لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَى وَزِيَادَة)»» رَوَاهُ مُسلم

5656. सहियब रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब जन्नत वाले जन्नत में दाखिल हो जाएगी तो अल्लाह तआला फरमाएगा: तुम्हें किसी चीज़ की ज़रूरत है तो में तुम्हें मज़ीद अता फरमाउ? वह अर्ज़ करेंगे: क्या तूने हमारे चेहरे सफ़ेद नहीं बना दिए? क्या तूने हमें जन्नत में दाखिल नहीं फरमा दिया और तूने हमें जहन्नम की आग से नहीं बचा लिया ?” फ़रमाया: “हिजाब उठा लिया जाएगा तो वह अल्लाह के चेहरे का दीदार करेंगे, उन्हें जो कुछ अता किया गया उनमें से अपने रब का दीदार इन्हें सब ज़्यादा महबूब होगा”, फिर आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाई: “उन लोगों के लिए जिन्होंने अच्छे आमाल किए, अच्छा सवाब (जन्नत) है और ज़्यादा (अल्लाह तआला का दीदार) है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (297 ، 298 / 181)، (449)

بَاب رؤيةالله تَعَالَى • दीदार ए इलाही का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٥٦٥٧ - (ضَعِيف) عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ أَدْنَى أَهْلِ الْجَنَّةِ مَنْزِلَةً لَمَنْ يَنْظُرُ إِلَى جِنَانِهِ وَأَزْوَاجِهِ وَنَعِيمِهِ وَخَدَمِهِ وَسُرُرِهِ مَسِيرَةَ أَلْفِ سَنَةٍ وَأَكْرَمُهُمْ عَلَى اللَّهِ مَنْ يَنْظُرُ إِلَى وَجْهِهِ غُدْوَةً وَعَشِيَّةً» ثُمَّ قَرَأَ (وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَاضِرَةٌ إِلَى ربّها ناظرة)»» رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ

5657. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जन्नत वालो में से सबसे अदना मक़ाम वाला वह शख़्स होगा जो अपने बाग़ात, अपने अज़वाज, अपने नेअमतो, अपने खादिमो और अपने तख्तो को हज़ार साल की मुसाफ़त तक देखेगा (इस की नेअमतें हज़ार साल की मुसाफ़त पर घेरे होगी) और उनमें से अल्लाह के यहाँ सबसे ज़्यादा मुअज्ज़ज़ वह होगा जो सुबह व शाम उस के चेहरे का दीदार करेगा", फिर आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाई: "इस रोज़ बाज़ चेहरे तरोताजा होंगे, अपने रब को देखने वाले होंगे"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه احمد (2 / 64 ح 5317) و الترمذی (2553) * فیه ثویر : ضعیف

٥٦٥٨ - (ضَعِيف وَبَعْضهمْ يُحسنهُ)»» وَعَن أبي رزين الْعقيلِيّ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَكُلُّنَا يَرَى رَبَّهُ مُخْلِيًا بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ؟ قَالَ: «بَلَى» . قَالَ: وَمَا آيَةُ ذَلِكَ فِي خَلْقِهِ؟ قَالَ: «يَا أَبَا رَزِينٍ أَلَيْسَ كُلُّكُمْ يَرَى الْقَمَرَ لَيْلَةَ البدرِ مُخْلِيًا بِهِ؟» قَالَ: بَلَى. قَالَ: «فَإِنَّمَا هُوَ خَلْقٌ مِنْ خَلْقِ اللَّهِ وَاللَّهُ أَجَلُّ وَأَعْظَمُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5658. अबू रजीन उकय्ली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! कयामत के रोज़ हम सब अल्लाह को अकेले अकेले देंखेंगे? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ, क्यों नहीं", मैंने अर्ज़ किया: उसकी निशानिया क्या है? आप ﷺ ने फ़रमाया: "अबू रजिन! क्या तुम सब चौदहवीं रात के चाँद को अकेले अकेले नहीं देखते हो?" उन्होंने अर्ज़ किया, जी हाँ! (देखते है), आप ﷺ ने फ़रमाया: "वो (चाँद) तो अल्लाह की मखलूक में से एक मखलूक है, जबकि अल्लाह तआला जल व अज़ीम है"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4731)

बَاب رؤيةالله تَعَالَى • दीदार ए इलाही का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٥٦٥٩ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: هَلْ رَأَيْتَ رَبَّكَ؟ قَالَ: «نُورٌ أَنَّى أَرَاهُ» . رَوَاهُ مُسلم

5659. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से मसअला दरियाफ्त किया: क्या आप ने अपने रब को देखा है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “(वो) नूर है, मैं उसे कैसे देख सकता हूँ”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (291 / 178)، (443)

٥٦٦٠ - (صَحِيح) وَعَن ابْن عَبَّاس: (مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَى. . . . وَلَقَدْ رَآهُ نزلة أُخْرَى)»» قَالَ: رَآهُ بِفُؤَادِهِ مَرَّتَيْنِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ»» وَفِي رِوَايَة لِلتِّرْمِذِي قَالَ: رَأَى مُحَمَّدٌ رَبَّهُ. قَالَ عِكْرِمَةُ قُلْتُ: أَلَيْسَ اللَّهُ يَقُولُ:»» (لَا [ص:١٥٧ تُدْرِكُهُ الْأَبْصَارُ وَهُوَ يدْرك الْأَبْصَار)»» ؟ قَالَ: وَيحك إِذَا تَجَلَّى بِنُورِهِ الَّذِي هُوَ نُورُهُ وَقَدْ رأى ربه مرَّتَيْنِ

5660. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने अल्लाह तआला के इस फरमान: “इस (रसूल) ने जो कुछ देखा (आप के) दिल ने उस में धोका नहीं खाया, और आप ने उस को एक और बार भी देखा”, के बारे में फ़रमाया आप ﷺ ने उस को अपने दिल से दो मर्तबा देखा| और तिरमिज़ी की रिवायत में है, फ़रमाया मुहम्मद ﷺ ने अपने रब को देखा है, इकरमा रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: क्या अल्लाह फरमाता नहीं ?” आँखे उस का अदराक नहीं कर सकती जबकि वह आंखो का अदराक कर सकता है”, फ़रमाया: तुझ पर अफ़सोस है! यह तब है जब वह अपने इस नूर के साथ तजल्ली फरमाए जो के उस का नूर है, और आप ﷺ ने अपने रब को दो मर्तबा देखा है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (285 / 176)، (437) و الترمذی (3279 وقال : حسن غریب) و حدیث الترمذی حدیث حسن و رواہ ابن خزیمۃ فی التوحید (ص 198 ح 273) و ابن ابی عاصم فی السنۃ (437 / 446) بسند حسن بہ

٥٦٦١ - (صَحِيح) وَعَن الشّعبِيّ قَالَ: لَقِيَ ابْنُ عَبَّاسٍ كَعْبًا بِعَرَفَةَ فَسَأَلَهُ عَنْ شَيْءٍ فَكَبَّرَ حَتَّى جَاوَبَتْهُ الْجِبَالُ. فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: إِنَّا بَنُو هَاشِمٍ. فَقَالَ كَعْبٌ: إِنَّ اللَّهَ قَسَّمَ رُؤْيَتَهُ وَكَلَامَهُ بَيْنَ مُحَمَّدٍ وَمُوسَى فَكَلَّمَ مُوسَى مَرَّتَيْنِ وَرَآهُ مُحَمَّدٌ مَرَّتَيْنِ. قَالَ مسروقٌ: فَدخلت على عَائِشَة فَقلت: هَل رَأَى مُحَمَّدٌ رَبَّهُ؟ فَقَالَتْ: لَقَدْ تَكَلَّمْتَ بِشَيْءٍ قَفَّ لَهُ شَعَرِي قُلْتُ: رُوَيْدًا ثُمَّ قَرَأْتُ (لقد رأى من آيَات ربه الْكُبْرَى)»» فَقَالَتْ: أَيْنَ تَذْهَبُ بِكَ؟ إِنَّمَا هُوَ جِبْرِيلُ. مَنْ أَخْبَرَكَ أَنَّ مُحَمَّدًا رَأَى رَبَّهُ أَوْ كَتَمَ شَيْئًا مِمَّا أُمِرَ بِهِ أَوْ يَعْلَمُ الْخَمْسَ الَّتِي قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: (إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ)»» فَقَدْ أَعْظَمَ الْفِرْيَةَ وَلَكِنَّهُ رَأَى جِبْرِيلَ لَمْ يَرَهُ فِي صُورَتِهِ إِلَّا مَرَّتَيْنِ: مَرَّةً عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهَى وَمَرَّةً فِي أَجْيَادٍ لَهُ سِتُّمِائَةِ جَنَاحٍ قَدْ سَدَّ الْأُفُقَ " رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ»» وَرَوَى الشَّيْخَانِ مَعَ زِيَادَةٍ وَاخْتِلَافٍ وَفِي رِوَايَتِهِمَا: قَالَ: قُلْتُ لِعَائِشَةَ: فَأَيْنَ قَوْلُهُ (ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّى فَكَانَ

قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَى)»» ؟ قَالَتْ: ذَاكَ جِبْرِيلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ كَانَ يَأْتِيهِ فِي صُورَةِ الرَّجُلِ وَإِنَّهُ أَتَاهُ هَذِهِ الْمَرَّةَ فِي صُورَتِهِ الَّتِي هِيَ صُورَتُهُ فَسَدَّ الْأُفُقَ

5661. शअबी रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा काब रदियल्लाहु अन्हु को अरफात के मैदान में मिले तो इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने उन से किसी चीज़ के मुतल्लिक मसअला दरियाफ्त किया तो उन्होंने (ज़ोर से) (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहा हत्ता के पहाड़ो ने उन्हें जवाब दिया, इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: हम बनू हाशिम है, काब रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: अल्लाह ने अपने रुइयत और अपने कलाम को मुहम्मद ﷺ और मूसा अलैहिस्सलाम के दरमियान तकसीम फ़रमाया है, मूसा अलैहिस्सलाम ने दो मर्तबा कलाम किया है जबकि मुहम्मद ﷺ ने इसे दो मर्तबा देखा है, मसरुक रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैं आइशा रदियल्लाहु अन्हा के पास गया तो मैंने पूछा क्या मुहम्मद ﷺ ने अपने रब को देखा है? उन्होंने ने फ़रमाया: तुमने ऐसी चीज़ के मुतल्लिक बात की है के मेरे रोंगटे खड़े हो गए है, मैंने अर्ज़ किया: ज़रा सुकून फरमाइए, फिर मैंने यह आयत तिलावत की: “इस (रसूल ﷺ) ने अपने रब की बाज़ बड़ी निशानिया देखी”, उन्होंने ने फ़रमाया: यह (आयत) तुम्हें किधर ले जा रही है? उन से मुराद तो जिब्राइल अलैहिस्सलाम है, जो शख़्स तुम्हें यह बताए के मुहम्मद ﷺ ने अपने रब को देखा है? या जिसके मुतल्लिक आप ﷺ को (बयान करने का) हुक्म दिया गया था तो आप ने उस में से कोई चीज़ छिपा ली? या आप वह पांच चीज़े जानते थे जिन के मुतल्लिक अल्लाह तआला ने फ़रमाया: “बेशक कियामत का इल्म अल्लाह ही के पास है, और वही बारिश बरसाता है”, और यह (के मुहम्मद ﷺ ने अपने रब को देखा है) तो यह बहोत बड़ा झूठ है, लेकिन आप ﷺ ने जिब्राइल अलैहिस्सलाम को देखा है और आप ने उन्हें उनकी असल सूरत में सिर्फ दो मर्तबा ही देखा है, एक मर्तबा सिदरातुल मुन्तहा के पास और एक मर्तबा अज्याद (मक्के के निचले इलाके) के पास, उस के छेस्सो पर है, और उस ने अफक को भर दिया था| इमाम बुखारी रहिमहुल्लाह और इमाम मुस्लिम रहिमहुल्लाह ने कुछ इज़ाफे और कुछ इख्तिलाफ के साथ रिवायत किया है, उनकी रिवायत में है मसरुक रहिमहुल्लाह ने कहा: मैंने आइशा रदियल्लाहु अन्हा से अर्ज़ किया: अल्लाह तआला के इस फरमान: “फिर वह करीब हुआ और आगे बढ़ा तो कमान किया या उन से भी कम फर्क रह गया”, का किया माना है? उन्होंने ने फ़रमाया: वह (जिब्राइल (अस)) आदमी की सूरत में आप ﷺ के पास आया करते थे, और इस मर्तबा वह अपने इस सूरत में आए थे जो के उनकी असल सूरत है, तो अफक भर गया| (ज़ईफ़,मुस्लिम)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (3278) * فيه مجالد بن سعيد : ضعيف و اصل الحديث عند البخارى [4855] و مسلم [177]، بغير هذا اللفظ) و الرواية الثانية صحيحة متفق عليها (رواها البخارى : 3235 و مسلم : 290 / 177)، (439)

٥٦٦٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن ابْن مَسْعُود فِي قَوْلِهِ: (فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَى)»» وَفِي قَوْلِهِ: (مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَى)»» وَفِي قَوْلِهِ: (رَأَى مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَى)»» قَالَ فِيهَا كُلِّهَا: رَأَى جِبْرِيلَ عَلَيْهِ السَّلَامُ لَهُ سِتُّمِائَةِ جَنَاحٍ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ»» وَفِي رِوَايَةِ التِّرْمِذِيِّ قَالَ: (مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَى)»» قَالَ: رَأَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ [ص:١٥٧ جِبْرِيلَ فِي حُلَّةٍ مِنْ رَفْرَفٍ قَدْ مَلَأَ مَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ»» وَلَهُ وَلِلْبُخَارِيِّ فِي قَوْلِهِ: (لَقَدْ رَأَى مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَى)»» قَالَ: رَأَى رَفْرَفًا أَخْضَرَ سَدَّ أُفُقَ السَّمَاءِ

5662. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु ने अल्लाह तआला के फरमान : 'तो कमान या उस से भी कम फर्क रह गया", और " आप ﷺ ने जो कुछ देखा, दिल ने उस में धोका नहीं खाया", और "और आप ﷺ ने अपने रब की बड़ी बड़ी निशानिया देखी", के बारे में फ़रमाया: उन तमाम सूरतो में आप ﷺ ने जिब्राइल अलैहिस्सलाम को देखा है, उन के छेस्सो पर थे| और तिरमिज़ी की रिवायत में है: "आप ने जो देखा, दिल ने उसमें धोका नहीं खाया", के बारे में फ़रमाया: रसूलुल्लाह ﷺ ने जिब्राइल (अस) को सब्ज़ जोड़े में देखा, उस ने ज़मीन व आसमान के दरमियानी खला को पुर कर रखा था, और तिरमिज़ी और सहीह बुखारी की, अल्लाह तआला के फरमान: "आप ने अपने रब की बड़ी बड़ी निशानिया देखते", रिवायत में है, फ़रमाया: आप ﷺ ने सब्ज़ लिबास वाले को देखा उस ने अफक भर दिया था| तिरमिज़ी, काल हसन सहीह. (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (4856 و الرواية الاخيرة : 4858) و مسلم (282 ، 281 / 174)، (432) و الترمذى (3283 وقال : حسن صحيح)

٥٦٦٣ - (لم تتمّ دراسته) وسُئل مَالك بن أَنسٍ عَن قَوْله تَعَالَى (إِلى ربِّها ناظرة)»» فَقِيلَ: قَوْمٌ يَقُولُونَ: إِلَى ثَوَابِهِ. فَقَالَ مَالِكٌ: كَذَبُوا فَأَيْنَ هُمْ عَنْ قَوْلُهُ تَعَالَى: (كَلَّا إِنَّهُمْ عَنْ رَبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لمحجوبونَ)»» ؟ قَالَ مَالِكٌ النَّاسُ يَنْظُرُونَ إِلَى اللَّهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِأَعْيُنِهِمْ وَقَالَ: لَوْ لَمْ يَرَ الْمُؤْمِنُونَ رَبَّهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لَمْ يُعَيِّرِ اللَّهُ الْكُفَّارَ بِالْحِجَابِ فَقَالَ (كَلَّا إِنَّهُمْ عَنْ رَبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لمحجوبون)»» رَوَاهُ فِي «شرح السّنة»

5663. और मालिक बिन अनस रहिमहुल्लाह से अल्लाह तआला के इस फरमान: "वो अपने रब को देखने वाले होंगे", के बारे में पूछा गया, निज़ उन्हें बताया गया के कुछ लोग उस से यह मुराद लेते हैं के वह रब तआला के सवाब को देखने वाले होंगे, इमाम मालिक रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: उन्होंने झूठ कहा है, (अगर ऐसे है) तो फिर वह अल्लाह तआला के इस फरमान: "हरगिज़ नहीं, बेशक वह इस रोज़ अपने रब के दीदार से रोक दिए जाएँगे", के बारे में क्या कहते हैं? इमाम मालिक रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: लोग रोज़ ए कियामत अपनी आंखो से अल्लाह का दीदार करेंगे और फ़रमाया: अगर मोमिन कियामत के दिन अपने रब का दीदार नहीं करेंगे तो फिर अल्लाह काफिरों को दीदार से महरूमी की आर न दिलाता, फ़रमाया: "हरगिज़ नहीं, बेशक वह (काफिर लोग) इस रोज़ अपने रब के दीदार से रोक दिए जाएँगे"| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه البغوى فى شرح السنة (15 / 329330 قبل ح 4393 بدون سند)

٥٦٦٤ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» جَابِرٌ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " بَيْنَا أَهْلُ الْجَنَّةِ فِي نَعِيمِهِمْ إِذْ سَطَعَ نورٌ فَرفعُوا رؤوسَهم فَإِذَا الرَّبُّ قَدْ أَشْرَفَ عَلَيْهِمْ مِنْ فَوْقِهِمْ فَقَالَ: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا أَهْلَ الْجَنَّةِ قَالَ: وَذَلِكَ قَوْلُهُ تَعَالَى (سَلَامٌ قَوْلًا مِنْ رَبٍّ رحيمٍ)»» قَالَ: فَيَنْظُرُ إِلَيْهِمْ وَيَنْظُرُونَ إِلَيْهِ فَلَا يَلْتَفِتُونَ إِلَى شَيْءٍ مِنَ النَّعِيمِ مَا دَامُوا يَنْظُرُونَ إِلَيْهِ حَتَّى يَحْتَجِبَ عَنْهُمْ وَيَبْقَى نُورُهُ وَبَرَكَتُهُ عَلَيْهِم فِي دِيَارهمْ ". رَوَاهُ ابْن مَاجَه

5664. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "इस असना में के जन्नत वाले अपनी नेअमतो में मशगुल होंगे के अचानक इन के लिए एक नूर चमकेगा, वह अपने सर उठाएगा तो अचानक

उन के ऊपर से रब तआला ने इन पर तजल्ली फरमाई होगी, वह फरमाएगा: जन्नत वालो السَّلَامُ عَلَيْكَ (सलामती हो तुम पर)!‘‘ फ़रमाया: “ये अल्लाह तआला का वह फरमान है: “मेहरबान रब की तरफ से सलाम कहा जाएगा”, फ़रमाया: “वो उनकी तरफ देखेगा और वह उसकी तरफ देंखेंगे, जब तक वह उसकी तरफ देखते रहेंगे वह किसी और नेअमत की तरफ तवज्जो नहीं करेंगे हत्ता के वह उन से हिजाब कर लेगा और उस का नूर बाकी रह जाएगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابن ماجه (184) * الفضل الرقاشی : منكر الحديث و رمی بالقدر

بَاب صفةالنار وَأَهْلهَا • जहन्नम और जहन्नम वालो का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٥٦٦٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «نَارُكُمْ جُزْءٌ مِنْ سَبْعِينَ جُزْءًا مِنْ نَارِ جَهَنَّمَ» قِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنْ كَانَتْ لَكَافِيَةً قَالَ: «فُضِّلَتْ عَلَيْهِنَّ بِتِسْعَةٍ وَسِتِّينَ جُزْءًا كُلُّهُنَّ مِثْلُ حَرِّهَا» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَاللَّفْظُ لِلْبُخَارِيِّ. وَفِي رِوَايَةِ مُسْلِمٍ: «نَارُكُمُ الَّتِي يُوقِدُ ابْنُ آدَمَ» . وَفِيهَا: «عَلَيْهَا» و «كلهَا» بدل «عَلَيْهِنَّ» و «كُلهنَّ»

5665. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम्हारी (ये दुनिया की) आग जहन्नम की आग का सत्तरवां हिस्सा है”, अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल! अगर (ये दुनिया की आग ही) होती तो वही काफी थी, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इस (जहन्नम की आग) को उन (आग की इक्साम) पर उनहत्तर दरजे फ़ज़ीलत बढ़त दी गई है, वह सब इस (दुनिया की आग) की हरारत व तपिश की तरह है”| और अल्फाज़ हदीस सहीह बुखारी के हैं| और सहीह मुस्लिम की रिवायत में है: “तुम्हारी वह आग जो इंसान जलाता है”, और सहीह मुस्लिम की रिवायत में (عليهن) और (كلهن) के बजाए (عليها) और (كلها) के अल्फाज़ हैं| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3265) و مسلم (30 / 2843)، (7165)

٥٦٦٦ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يُؤْتَى بِجَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لَهَا سَبْعُونَ أَلْفَ زِمَامٍ مَعَ كُلِّ زِمَامٍ سبعونَ ألفَ مَلَكٍ يجرُّونها» . رَوَاهُ مُسلم

5666. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जहन्नम को लाया जाएगा, इस रोज़ उसकी सत्तर हज़ार लगा में होगी और हर लगाम के साथ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते होंगे जो इसे खींच रहे होंगे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (29 / 2842)، (7164)

٥٦٦٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ أَهْوَنَ أَهْلِ النَّارِ عَذَابًا مَنْ لَهُ نَعْلَانِ وَشِرَاكَانِ مِنْ نَارٍ يَغْلِي مِنْهُمَا دِمَاغُهُ كَمَا يَغْلِي الْمِرْجَلُ مَا يُرَى أَنَّ أَحَدًا أَشَدُّ مِنْهُ عَذَابًا وَإِنَّهُ لَأَهْوَنُهُمْ عَذَابًا» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5667. नौमान बिन बशीर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जहन्नम वालो में से जिस शख़्स को सबसे हल्का अज़ाब होगा, वह शख़्स वह होगा जिसके जूते और तस्मे आग के होंगे, जिन की वजह से उस का दिमाग इस तरह खोलता होगा जिस तरह हंडिया खोलती है”, वह यह ख़याल करेगा के किसी शख़्स को उस से ज़्यादा अज़ाब नहीं हो रहा हालाँकि वह सबसे हल्के अज़ाब में मुब्तिला होगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (65616562) و مسلم (364 / 213)، (516)

٥٦٦٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ أَهْوَنَ أَهْلِ النَّارِ عَذَابًا أَبُو طَالِبٍ وَهُوَ مُنْتَعِلٌ بِنَعْلَيْنِ يغلي مِنْهُمَا دماغه» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

5668. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जहन्नम वालो में से सबसे हल्का अज़ाब अबू तालिब को होगा, उस ने आग के दो जूते पहने होंगे, उन से उस का दिमाग खोलेगा”| (बुखारी)

رواه البخاری (لم اجده) [و مسلم (362 / 212)، (515)]

٥٦٦٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يُؤْتَى بِأَنْعَمِ أَهْلِ الدُّنْيَا مِنْ أَهْلِ النَّارِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيُصْبَغُ فِي النارِ صَبْغَةً ثمَّ يُقَال: يَا ابْنَ آدَمَ هَلْ رَأَيْتَ خَيْرًا قَطُّ؟ هَلْ مَرَّ بِكَ نَعِيمٌ قَطُّ؟ فَيَقُولُ: لَا وَاللَّهِ يَا رَبِّ وَيُؤْتَى بِأَشَدِّ النَّاسِ بُؤْسًا فِي الدُّنْيَا مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ فَيُصْبَغُ صَبْغَةً فِي الْجَنَّةِ فَيُقَالُ لَهُ: يَا ابْنَ آدَمَ هَلْ رَأَيْتَ بُؤْسًا قَطُّ؟ وَهَلْ مَرَّ بِكَ شِدَّةٌ قَطُّ. فَيَقُولُ: لَا وَاللَّهِ يَا رَبِّ مَا مَرَّ بِي بُؤْسٌ قَطُّ وَلَا رَأَيْتُ شدَّة قطّ ". رَوَاهُ مُسلم

5669. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रोज़ ए कियामत जहन्नम वालो में से इस शख़्स को लाया जाएगा जिसे दुनिया में सबसे ज़्यादा नेअमतें मयस्सर थी, इसे आग में एक गोटा दीया जाएगा, फिर कहा जाएगा: ए इंसान! क्या तुम ने कभी कोई खैर व नेअमत देखी थी? क्या किसी नेअमत का तेरे पास से कभी गुज़र हुआ था? वह अर्ज़ करेगा: रब जी! अल्लाह की क़सम! नहीं, (फिर) अहल जन्नत में से ऐसे शख़्स को लाया जाएगा जिस ने दुनिया में सबसे ज़्यादा बदहाली देखी हो, इसे जन्नत में एक बार घुमा कर उस से पूछा जाएगा: ए इंसान! क्या तूने कभी कोई बदहाली देखी थी? या कभी कोई शिद्दत व तंगी तेरे पास से गुज़रे थी? वह अर्ज़ करेगा रब जी! अल्लाह की क़सम! नहीं, न तो कभी बदहाली मेरे पास से गुज़री और न मैंने कभी कोई शिद्दत व तंगी देखी”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (55 / 2807)، (7088)

٥٦٧٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " يَقُولُ اللَّهُ لِأَهْوَنِ أَهْلِ النَّارِ عَذَابًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ: لَوْ أَنَّ لَكَ مَا فِي الْأَرْضِ مِنْ شَيْءٍ أَكَنْتَ تَفْتَدِي بِهِ؟ فَيَقُولُ: نَعَمْ. فَيَقُولُ: أَرَدْتُ مِنْكَ أَهْوَنَ مِنْ هَذَا وَأَنْتَ فِي صُلْبِ آدَمَ أَنْ لَا تُشْرِكَ بِي شَيْئًا فَأَبَيْتَ إِلَّا أَنْ تُشْرِكَ بِي ". مُتَّفق عَلَيْهِ

5670. अनस रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “रोज़ ए कियामत अल्लाह जहन्नम वालो में से सबसे हल्के अज़ाब में गीरफ़्तार शख़्स से फरमाएगा: अगर ज़मीन की तमाम चीज़े तेरी मिलकियत हो तो क्या तू उन्हें इस (अज़ाब के) बदले में बतौर फिदिया दे देगा? वह अर्ज़ करेगा: जी हाँ, वह फरमाएगा: मैंने तुझ से, जबकि तू आदम अलैहिस्सलाम की पुश्त मैं था, उस से भी मामूली चिज़ का मुतालबा किया था के तू मेरे साथ शरीक न ठहराएगा, लेकिन तूने इनकार किया और मेरे साथ शिर्क किया”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6557) و مسلم (51 / 2805)، (7083)

٥٦٧١ - (صَحِيح) وَعَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مِنْهُمْ مَنْ تَأْخُذُهُ النَّارُ إِلَى كَعْبَيْهِ وَمِنْهُمْ مَنْ تَأْخُذُهُ النَّارُ إِلَى رُكْبَتَيْهِ وَمِنْهُم مَنْ تَأْخُذُهُ النَّارُ إِلَى حُجْزَتِهِ وَمِنْهُمْ مَنْ تَأْخُذُهُ النَّار إِلَى ترقوته» . رَوَاهُ مُسلم

5671. समुरह बिन जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “कुछ ऐसे लोग होंगे जिन्हें आग उन के टखनो तक पकड़ेगी, उनमें से किसी के घुटनों तक पहुंची होगी, उनमें से किसी के आज़ार बंद तक पहुंची होगी और उनमें से किसी की गर्दन को दबोचे हुए होगी”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (33 / 2845)، (7169)

٥٦٧٢ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا بَيْنَ مَنْكِبَيِ الْكَافِرِ فِي النَّارِ مَسِيرَةَ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ لِلرَّاكِبِ الْمُسْرِعِ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «ضِرْسُ الْكَافِرِ مِثْلُ أُحُدٍ وَغِلَظُ جِلْدِهِ مَسِيرَةُ ثَلَاثٍ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ»» وَذِكْرُ حَدِيث أبي هُرَيْرَة: «إِذا اشْتَكَتِ النَّارُ إِلَى رَبِّهَا» . فِي بَابِ «تَعْجِيلِ الصَّلَوَات»

5672. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जहन्नम में काफ़िर के दो कंधो का दरमियानी फासला तेज़ रफ़्तार सवार की तीन रोज़ की मुसाफ़त जितना होगा”, एक दूसरी रिवायत में है: “काफ़िर की दाढ़ उहद (पहाड़) की मिस्ल होगी, और उसकी जिल्द की मोटाई तीन रात की मुसाफ़त जितनी होगी”| और अबू हुरैरा (र) से मरवी हदीस: “आग ने अपने रब से शिकायत की .....-‘‘ बाब تَعْجِيلِ الصَّلَوَات (अव्वल वक्त में नमाज़ पढ़ने के तरीके का बयान) में ज़िक्र की गई है. (मुस्लिम)

رواہ مسلم (44 / 2851 ، 45 / 2852)، (7185 و 7186) 0 حدیث ’’ اشتکت النار الی ربھا ‘‘ تقدم (591)

بَاب صفةالنار وَأَهْلهَا • जहन्नम और जहन्नम वालो का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٥٦٧٣ - (ضَعِيف) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أوقِدَ عَلَى النَّارِ أَلْف سَنَةٍ حَتَّى احْمَرَّتْ ثُمَّ أوقِدَ عَلَيْهَا أَلْف سَنَةٍ حَتَّى ابْيَضَّتْ ثُمَّ أُوقِدَ عَلَيْهَا أَلْف سَنَةٍ حَتَّى اسْوَدَّتْ فَهِيَ سَوْدَاءُ مُظْلِمَةٌ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5673. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जहन्नम की आग हज़ार बरस जलाई गई तो वह सुर्ख हो गई, फिर इसे हज़ार बरस जलाया गया तो वह सफ़ेद हो गई, फिर इसे हज़ार बरस जलाया गया तो वह सियाह हो गई, वह सियाह तरीन है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (2591) و ابن ماجه (4320) * شريک القاضى مدلس و عنعن وقال ابو هريرة رضى الله عنه :'' اترونها حمراء كناركم هذه ؟ لهى اسود من القار و القار الزفت '' (الموطا للامام مالک (2 / 994) و سنده صحيح و حكمه الرفع : وهو يغنى عنه

٥٦٧٤ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْهُ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «ضِرْسُ الْكَافِرِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِثْلُ أُحُدٍ وَفَخِذُهُ مِثْلُ الْبَيْضَاءِ وَمَقْعَدُهُ مِنَ النَّارِ مسيرَة ثَلَاث مثل الربذَة» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5674. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रोज़ ए कियामत काफ़िर की दाढ़ ओहद पहाड़ जैसी होगी, उसकी रान बय्यदा (पहाड़/मकाम) की तरह होगी, और जहन्नम में उस के बैठनेकी जगह तीन रात की मुसाफ़त जैसे (मदीना से) रबज़ा है, के बराबर होगी”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (2578 وقال : حسن غريب)

٥٦٧٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ غِلَظَ جِلْدِ الْكَافِرِ اثْنَانِ وَأَرْبَعُونَ ذِرَاعًا وَإِنَّ ضِرْسَهُ مِثْلُ أُحُدٍ وَإِنَّ مَجْلِسَهُ مِنْ جَهَنَّمَ مَا بَيْنَ مَكَّةَ وَالْمَدِينَةِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5675. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “काफ़िर की जील्द की मोटाई बयालीस हाथ होगी, उसकी दाढ़ ओहद पहाड़ की मिस्ल होगी और जहन्नम में उस के बैठनेकी जगह इतनी होगी जिस तरह मक्का और मदीना के दरमियान फासला है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (2577 وقال : حسن غريب صحيح) * الاعمش مدلس و عنعن و للحديث شواهد عند احمد (3 / 328 ، 334) وغيره دون قوله :'' مكة و المدينة '' و هذه اللفظه منكرة و الحديث السابق (5674) يغنى عنه

٥٦٧٦ - (ضَعِيف) وَعَن»» ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الْكَافِرَ لَيُسْحَبُ لسانُه الفرسَخ والفرسخين يتوطَّؤُه النَّاس» . رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ وَقَالَ: هَذَا حَيْثُ غَرِيب

5676. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “काफ़िर अपने ज़ुबान को फ़रसख (तीन मिल) और दो फ़रसख घसिटेगा और लोग उस को पाँव तले रोंदेगे”| अहमद तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

حسن ، رواه احمد (2 / 92 ح 5671) و الترمذی (2580)

٥٦٧٧ - (ضَعِيف) وَعَن»» أبي سعيد الْخُدْرِيّ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الصَّعُودُ جَبَلٌ مِنْ نَارٍ يُتَصَعَّدُ فِيهِ سَبْعِينَ خَرِيفًا وَيُهْوَى بِهِ كَذَلِكَ فِيهِ أَبَدًا» . [ص:١٥٨»» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5677. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल स्वउद जहन्नम में एक पहाड़ है जिस पर (काफिर) को सत्तर साल तक मुसलसल चढ़ाया जाएगा और इसी तरह (सतर साल तक) इसे मुसलसल गिराया जाएगा”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (2576 وقال : غریب) و الحاکم (4 / 496 ح 8764 و سنده حسن)

٥٦٧٨ - (ضَعِيف) وَعَنْهُ»» عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ فِي قَوْله: (كَالْمهْلِ)»» أَيْ كَعَكَرِ الزَّيْتِ فَإِذَا قُرِّبَ إِلَى وَجْهِهِ سَقَطت فَرْوَة وَجهه فِيهِ»» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5678. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने (क्ल्मुहली) की तफसीर में फ़रमाया: “वो तलछट की तरह होगा, जब उस को उस के चेहरे के करीब किया जाएगा तो उस के चेहरे की जील्द उस में गिर जाएगी”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (2581 ، 2584) و الحاکم (2 / 501 ح 3850) و ابن حبان (الاحسان : 7430 / 7473 و سنده حسن)

٥٦٧٩ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ الْحَمِيمَ لَيُصَبُّ عَلَى رؤوسهم فَينفذ الْحَمِيم حَتَّى يخلص إِلَى جَوْفه فسلت مَا فِي جَوْفِهِ حَتَّى يَمْرُقَ مِنْ قَدَمَيْهِ وَهُوَ الصَّهْرُ ثُمَّ يُعَادُ كَمَا كَانَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5679. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “खोलता हुआ पानी उन (जहन्नम वालो) के सरो पर डाला जाएगा तो वह खोलता हुआ पानी दाखिल हो जाएगा हत्ता के वह उस के पेट के अंदर तक पहुँच जाएगा और उस के पेट के अन्दर जो कुछ है उसे काट डालेगा हत्ता के वह उस के कदमो से

निकल जाएगा, और यह वह सहर (गला देना) है फिर इसे उसकी पहली ही हालत पर लौटा दीया जाएगा”| (हसन)

حسن ، رواہ الترمذی (2582 وقال : حسن غریب صحیح) * روایة شعبة عن الاعمش محمولة علی السماع ، انظر ’’ مسالة التسمية ‘‘ لمحمد بن طاھر المقدسی (ص 47) و للحدیث علة غیر قادحة عند ابن ابی شیبة (13 / 161 ح 15991) و احمد (1 / 338 ح 3138) وغیرھما

٥٦٨٠ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» أَبِي أَمَامَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي قَوْلِهِ: (يُسْقَى مِنْ مَاءٍ صديد يتجرَّعُه)»» قَالَ: " يُقَرَّبُ إِلَى فِيهِ فَيَكْرَهُهُ فَإِذَا أُدْنِي مِنْهُ شَوَى وَجْهَهُ وَوَقَعَتْ فَرْوَةُ رَأْسِهِ فَإِذَا شَرِبَهُ قَطَّعَ أَمْعَاءَهُ حَتَّى يَخْرُجَ مِنْ دُبُرِهِ. يَقُولُ اللَّهُ تَعَالَى: (وَسُقُوا مَاءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ أمعاءهم)»» وَيَقُولُ: (وَإِنْ يَسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوه بئس الشَّرَاب)»» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5680. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने अल्लाह तआला के फरमान: “इसे पिप पिलाई जाएगी तो वह इसे घूंट घूंट पिएगा”, फ़रमाया: “वो उस के मुंह के करीब किया जाएगा तो वह इसे नापसंद करेगा, जब इसे उस के करीब किया जाएगा तो उस का चेहरा जल जाएगा, उस के सर की जल्द गिर पड़ेगी, जब वह इसे पिएंगे तो उसकी अंतड़ियाँ कट जाएगी हत्ता के वह उसकी दबर (पीठ) के रास्ते बाहर निकल आएगा, अल्लाह तआला फरमाता है, “उन्हें खोलता हुआ पानी पिलाया जाएगा तो वह उनकी अंतड़ियाँ काट डालेगा”, और वह फरमाता है “ और अगर वह फ़रियाद करेगा तो उनकी फ़रियादरसी ऐसे पानी से की जाएगी जो तलछट की तरह होगा चेहरो को भुन डालेगा, बुरा पीना है”| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ الترمذی (2583)

٥٦٨١ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ:»» لِسُرَادِقِ النَّارِ أَرْبَعَةُ جُدُرٍ كِثَف كل جِدَار مسيرَة أَرْبَعِينَ سنة ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5681. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जहन्नम की आग का चार दीवारों से अहाता किया गया है, और हर दिवार की मोटाई चालीस साल की मुसाफ़त है”| (हसन)

حسن ، رواہ الترمذی (1 / 2584) و الحاکم (4 / 601 ح 8775 و سندہ حسن)

٥٦٨٢ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْهُ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَوْ أَنَّ دَلْوًا مِنْ غَسَّاقٍ يَهَرَاقُ فِي الدُّنْيَا لَأَنْتَنَ أَهْلُ الدُّنْيَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5682. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगर (जहन्नमियों के ज़ख्मो

की) पिप का एक डोल दुनिया में बहा दिया जाए तो दुनिया वाले बदबूदार बन जाते"| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (2 / 2584) و الحاکم (4 / 602 ح 8779 و سنده حسن)

٥٦٨٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَرَأَ هَذِهِ الْآيَةَ: (اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُم مُسلمُونَ)»» قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَو أَن قَطْرَة من الزقوم قطرات فِي دَارِ الدُّنْيَا لَأَفْسَدَتْ عَلَى أَهْلِ الْأَرْضِ مَعَايِشَهُمْ فَكَيْفَ بِمَنْ يَكُونُ طَعَامَهُ؟» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ

5683. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाई: "अल्लाह से ऐसे डरो जैसे उस से डरने का हक़ है और तुम्हारी मौत इस हाल में आए की तुम मुसलमान हो", रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अगर अज्ज़कुम (तहर) का एक कतरा दुनिया में गिरा दिया जाए तो वह ज़मीन वालो पर उन के असबाबे ज़िन्दगी ख़राब कर दे, तो इस शख़्स की क्या हालत होगी जिस का खाना ही वही होगा"| तिरमिज़ी, और फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है| (सहीह)

صحیح ، رواہ الترمذی (2585) [و ابن ماجه (4325) و صححه ابن حبان (الموارد : 2611 ، الاحسان : 7427) و الحاکم علی شرط الشیخین (2 / 294 ، 451) و وافقه الذهبی]

٥٦٨٤ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» أَبِي سَعِيدٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: (وهم فِيهَا كَالِحُونَ)»» قَالَ: «تَشْوِيهِ النَّارُ فَتَقَلَّصُ شَفَتُهُ الْعُلْيَا حَتَّى تَبْلُغَ وَسْطَ رَأْسِهِ وَتَسْتَرْخِي شَفَتُهُ السُّفْلَى حَتَّى تضرب سُرَّتَهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5684. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "और वह इस (जहन्नम) में इस तरह होंगे के उन के होठ सुकड़ कर ऊपर चढ़ गए होंगे और दांत खुल गए होंगे", फ़रमाया: "आग उन्हें जला देगी तो उन के ऊपर वाले होठ सुकड़ जाएँगे हत्ता के वह उन के सर के बिच में पहुँच जाएँगे और उन के निचले होठ लटक जाएँगे हत्ता के वह उनकी नाफ तक पहुँच जाएँगे"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2587 وقال : حسن صحیح غریب)

٥٦٨٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ»» عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «يَا أَيُّهَا النَّاسُ ابْكُوا فَإِنْ لَمْ تَسْتَطِيعُوا فَتَبَاكَوْا فَإِنَّ أَهْلَ النَّارِ يَبْكُونَ فِي النَّارِ حَتَّى تَسِيلَ دُمُوعُهُمْ فِي وُجُوهِهِمْ كَأَنَّهَا جَدَاوِلُ حَتَّى تَنْقَطِعَ الدُّمُوعُ فَتَسِيلَ الدِّمَاءُ فَتَقَرَّحَ الْعُيُونُ فَلَوْ أَنَّ سُفُنًا أُزْجِيَتْ فِيهَا لجَرَتْ» . رَوَاهُ فِي «شرح السّنة»

5685. अनस रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "लोगो! (अपने गुनाहों पर डरते हुए) रोया करो, अगर तुम (रोने की) इस्तिताअत न रखो तो फिर अपने आप को रोने पर अमादा करो, क्योंकि जहन्नम वाले जहन्नम में रोएंगे हत्ता के उन के आंसू उन के चेहरो पर इस तरह रवाह होंगे जैसे वह बहती

नालियाँ है और फिर रोते रोते उन के आंसू ख़तम हो जाएँगे तो फिर खून बहना शुरू हो जाएगा, आँखे ज़ख़्मी हो जाएगी (और इस क़दर आंसू और खून बहेगा के) अगर उस में कश्तिया छोड़ दि जाए तो वह चलना शुरू कर दे"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه البغوی فی شرح السنة (15 / 253 ح 4418) * فیه یزید الرقاشی : ضعیف و عمران بن زید التغلبی : لین و للحدیث لون آخر عند ابن ماجه (4324) و سنده ضعیف

٥٦٨٦ - (ضعيفٌ) وَعَنْ»» أَبِي الدَّرْدَاءِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يُلْقَى عَلَى أَهْلِ النَّارِ الْجُوعُ فَيَعْدِلُ مَا هُمْ فِيهِ مِنَ الْعَذَابِ فَيَسْتَغِيثُونَ فَيُغَاثُونَ بِطَعَامٍ مِنْ ضَرِيعٍ لَا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِي مِنْ جُوعٍ فَيَسْتَغِيثُونَ بِالطَّعَامِ فَيُغَاثُونَ [ص:١٥٨ بِطَعَامٍ ذِي غُصَّةٍ فَيَذْكُرُونَ أَنَّهُمْ كَانُوا يُجِيزُونَ الْغُصَصَ فِي الدُّنْيَا بِالشَّرَابِ فَيَسْتَغِيثُونَ بِالشَّرَابِ فَيُرْفَعُ إِلَيْهِمُ الْحَمِيمُ بِكَلَالِيبِ الْحَدِيدِ فَإِذَا دَنَتْ مِنْ وُجُوهِهِمْ شَوَتْ وُجُوهَهُمْ فَإِذَا دَخَلَتْ بُطُونَهُمْ قطعتْ مَا فِي بطونِهم فيقولونَ: ادْعوا خَزَنَةَ جهنمَ فيقولونَ: أَلَمْ تَكُ تَأْتِيكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ؟ قَالُوا: بَلَى. قَالُوا: فَادْعُوا وَمَا دُعَاءُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ " قَالَ: " فيقولونَ: ادْعوا مَالِكًا فيقولونَ: يَا مالكُ ليَقْضِ علَينا ربُّكَ " قَالَ: «فيُجيبُهم إِنَّكم ماكِثونَ» . قَالَ الْأَعْمَشُ: نُبِّئْتُ أَنَّ بَيْنَ دُعَائِهِمْ وَإِجَابَةِ مَالِكٍ إِيَّاهُمْ أَلْفَ عَامٍ. قَالَ: " فَيَقُولُونَ: ادْعُوا رَبَّكُمْ فَلَا أَحَدَ خَيْرٌ مِنْ رَبِّكُمْ فَيَقُولُونَ: رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَالِّينَ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ " قَالَ: " فيُجيبُهم: اخْسَؤوا فِيهَا وَلَا تُكلمونِ " قَالَ: «فَعِنْدَ ذَلِكَ يَئِسُوا مِنْ كُلِّ خَيْرٍ وَعِنْدَ ذَلِكَ يَأْخُذُونَ فِي الزَّفِيرِ وَالْحَسْرَةِ وَالْوَيْلِ» . قَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ: وَالنَّاسُ لَا يرفعونَ هَذَا الحديثَ. رَوَاهُ الترمذيُّ

5686. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जहन्नम वालो पर भूख डाल दी जाएगी, और वह (भूख की तकलीफ) इस अज़ाब (की तकलीफ) के बराबर होगी जिस में वह मुब्तिला होंगे, वह फ़रियाद करेगा तो उनकी फ़रियादरसी कांटेदार खाने के ज़रिए की जाएगी, ना वह मोटा करेगा न भूख मिटाएगा, वह खाने की फ़रियाद करेगा तो उनकी इस तरह के खाने से फ़रियाद रसी की जाएगी जो हलक में अटक जाने वाला होगा, वह याद करेंगे के वह दुनिया में हलक में, अटक जाने वाली चीजों को गुज़ार ने के लिए पानी पिया करते थे, वह पानी के लिए फ़रियाद करेगा तो लोहे के आँकड़ो के ज़रिए गरम खोलता हुआ पानी उन के करीब किया जाएगा, जब वह उन के चेहरो के करीब होगा तो वह उन के चेहरो को जला देगा, और उन के पेट में दाखिल होगा तो वह पेट में मौजूद हर चीज़ को काट डालेगा, वह कहेंगे जहन्नम के दरबानों को बुलाओ, तो वह जवाब देंगे क्या तुम्हारे रसूल मोअजिज़ात लेकर तुम्हारे पास नहीं आए थे? वह कहेंगे: क्यों नहीं, आए थे, वह कहेंगे: (फिर) पुकारते रहो, और काफिरों की पुकार खसारे में है", आप ﷺ ने फ़रमाया: "वो (काफिर) कहेंगे, मालिक को बुलाओ, वह कहेंगे मालिक! तेरा रब हमें मौत ही देदे", फ़रमाया: "वो उन्हें जवाब देगा बेशक तुम हमेशा हम्मेश अज़ाब में ठहरने वाले हो", आमश रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: मुझे बताया गया के उनकी दुआ और मालिक के उन्हें जवाब देने में हज़ार साल का वक्फा होगा फ़रमाया: "वो कहेंगे, अपने रब से दुआ करो, तुम्हारे रब से बेहतर कोई नहीं, वह अर्ज़ करेंगे: हमारे परवरदिगार! हमारी शफावत हम पर ग़ालिब आ गई और हम गुमराह लोग थे, हमारे परवरदिगार! हमें यहाँ से निकाल दे, अगर हमने दोबारा वही काम किए (जिन पर तू नाराज़ होता है) तो हम ज़ालिम होंगे", फ़रमाया: "वो उन्हें जवाब देगा: ज़लील हो कर इसी में रहो, और मुझ

से कलाम न करो", फ़रमाया: "इस वक़्त वह हर किस्म की खैर व भलाई से मायूस हो जाएँगे, और इस वक़्त वह चीख व पुकार, हसरत और तबाही में मुब्तिला हो जाएँगे"| और अब्दुल्लाह बिन अब्दुल रहमान रहिमहुल्लाह रावी बयान करते हैं, लोग इस हदीस को मरफ़ुअ बयान नहीं करते| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2586) * الاعمش مدلس و عنعن و قال احمد :'' الاعمش لم يسمع من شمر بن عطية '' (المراسيل لابن ابی حاتم ص 82)

٥٦٨٧ - (صَحِيح) وَعَنِ»» النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «أَنْذَرْتُكُمُ النَّارَ أَنْذَرْتُكُمُ النَّارَ» فَمَا زَالَ يَقُولُهَا حَتَّى لَوْ كَانَ فِي مَقَامِي هَذَا سَمِعَهُ أَهْلُ السُّوقِ وَحَتَّى سَقَطَتْ خَمِيصَةٌ كَانَتْ عَلَيْهِ عِنْدَ رِجلَيْهِ. رَوَاهُ الدَّارِمِيّ

5687. नौमान बिन बशीर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "मैंने तुम्हें जहन्नम की आग से आगाह कर दिया, मैंने तुम्हें जहन्नम की आग से आगाह और ख़बरदार कर दिया", आप ﷺ बार बार यह फरमाते रहे, हत्ता के अगर आप मेरी इस जगह होते तो बाज़ार वाले इसे सुन लेते और हत्ता के आप (के कंधे) पर जो चादर थी वह आप के कदमो पर गिर पड़ी| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الدارمی (2 / 330 ح 2815 ، نسخة محققة : 2854) [و صححه الحاكم (1 / 287) و وافقه الذهبی]

٥٦٨٨ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَوْ أَنَّ رَصَاصَةً مِثْلَ هَذِهِ - وَأَشَارَ إِلَى مِثْلِ الْجُمْجُمَةِ - أُرْسِلَتْ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ وَهِيَ مَسِيرَةُ خَمْسِمِائَةِ سَنَةٍ لَبَلَغَتِ الْأَرْضَ قَبْلَ اللَّيْلِ وَلَوْ أَنَّهَا أُرْسِلَتْ [ص:١٥٨ مِنْ رَأْسِ السِّلْسِلَةِ لَسَارَتْ أَرْبَعِينَ خَرِيفًا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ قَبْلَ أَنْ تبلع أَصْلهَا أَو قعرها» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5688. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अगर इतना सीसा", आप ﷺ ने प्याले की तरफ इरशाद करते हुए फ़रमाया: "आसमान से ज़मीन की तरफ छोड़ा जाए और वह पांच सौ मिल की मुसाफ़त है, तो वह शाम से पहले ज़मीन पर पहुँच जाए, और अगर इसे ज़ंजीर के सिरे से छोड़ा जाए तो उसे उसकी असल (पहले कड़ी) तक या उसकी गहराई तक पहुँचने के लिए मुतवातिर चालीस साल लगेंगे"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2588 وقال : حسن صحيح)

٥٦٨٩ - (ضَعِيف) وَعَن»» أَبِي بُردةَ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " إِنَّ فِي جَهَنَّمَ لَوَادِيًا يُقَالُ لَهُ: هَبْهَبُ يسكنُه كلُّ جبَّارٍ " رَوَاهُ الدَّارِمِيّ

5689. अबू बुरुद रदियल्लाहु अन्हु अपने वालिद से रिवायत करते हैं की नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जहन्नम में एक वादी है जिसे هَبْهَبْ (हबहब) कहा जाता है, उस में हर किस्म के सरकश और बागी रहेंगे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمی (2 / 331 ح 2819 ، نسخة محققة : 2858) * فيه ازهر بن سنان : ضعيف

جहन्नम और जहन्नम वालो का बयान • بَاب صفةالنار وَأَهْلهَا

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٥٦٩٠ - (لم تتمّ دراسته) عَنِ ابْنِ»» عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «يَعْظُمُ أَهْلُ النَّارِ فِي النَّارِ حَتَّى إِنَّ بَيْنَ شَحْمَةِ أُذُنِ أَحَدِهِمْ إِلَى عَاتِقِهِ مَسِيرَةَ سبعمائةِ عامٍ وإِنَّ غِلَظَ جلدِه سَبْعُونَ ذراعان وَإِن ضرسه مثل أحد»

5690. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जहन्नम वालो के जिस्म जहन्नम में बड़े हो जाएँगे हत्ता के उनकी कान की लो से कंधे तक सातसो साल की मुसाफ़त होगी, उसकी जील्द की मोटाई सत्तर हाथ होगी और उसकी दाढ़ ओहद पहाड़ जैसी होगी”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (2 / 26 ح 4800) * فيه ابو يحيى : لين الحديث و انظر النهاية بتحقيقى (1076) لمزيد التحقيق

٥٦٩١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ»» اللَّهِ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ جَزْءٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ فِي النَّارِ حَيَّاتٍ كَأَمْثَالِ الْبُخْتِ تَلْسَعُ إِحْدَاهُنَّ اللَّسْعَةَ فَيَجِدُ حَمْوَتَهَا أَرْبَعِينَ خَرِيفًا وَإِنَّ فِي النَّارِ عَقَارِبَ كَأَمْثَالِ الْبِغَالِ الْمُؤْكَفَةِ تَلْسَعُ إِحْدَاهُنَّ اللَّسْعَةَ فَيَجِدُ حَمْوَتَهَا أَرْبَعِينَ خَرِيفًا» . رَوَاهُمَا أَحْمد

5691. अब्दुल्लाह बिन हारिस बिन जज़अ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जहन्नम में बख्ति ऊटों की तरह अजदहे है, उनमें से एक डसेगा तो वह चालीस साल तक उस के हर का असर महसूस करता रहेगा, उस में पालन बंधे हुए खच्चरों की तरह के बिच्छु होंगे, उनमें से कोई डसेगा तो वह शख़्स चालीस साल तक उसकी हर का असर महसूस करता रहेगा”| दोनों अहादीस को इमाम अहमद ने रिवायत किया है| (हसन)

حسن ، رواه احمد (4 / 191 ح 17864) [و صححه ابن حبان (7471 نسخة محققة) و الحاكم (4 / 593) و وافقه الذهبی و سنده حسن]

٥٦٩٢ - (صَحِيح) وَعَن»» الحسنِ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ [ص:١٥٨ قَالَ: «الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ثَوْرَانِ مُكَوَّرَانِ فِي النَّارِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . فَقَالَ الْحَسَنُ: وَمَا ذَنْبُهُمَا؟ فَقَالَ: أُحَدِّثُكَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ

وَسَلَّمَ فَسَكَتَ الْحَسَنُ. رَوَاهُ البيهقيُّ فِي «كتاب الْبَعْث والنشور»

5692. हसन बसरी रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु ने हमें रसूलुल्लाह ﷺ से हदीस बयान की, आप ﷺ ने फ़रमाया: “रोज़ ए कियामत सूरज और चाँद को लपेट कर जहन्नम में फेंक दीया जाएगा”, उस पर हसन रहिमहुल्लाह ने अर्ज़ किया: उनका क्या गुनाह है? उन्होंने ने फ़रमाया: में तुम है रसूलुल्लाह ﷺ से हदीस बयान कर रहा हूँ, तब हसन बसरी रहिमहुल्लाह ख़ामोश हो गए| (सहीह)

صحيح ، رواه البيهقى فى البعث و النشور (ذكره السيوطى فى اللآلى المصنوعة 1 / 82) وله شاهد عند الطحاوى فى مشكل الآثار (1 / 6667 و سنده صحيح]

٥٦٩٣ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَدْخُلُ النَّارَ إِلَّا شَقِيٌّ» . قِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَمَنِ الشَّقِيُّ؟ قَالَ: «مَنْ لَمْ يَعْمَلْ لِلَّهِ بِطَاعَةٍ وَلم يترك لَهُ مَعْصِيَة» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ

5693. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु ब्यान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: सिर्फ बदनसीब शख़्स ही जहन्नम में जाएगा, अर्ज़ किया फाया: अल्लाह के रसूल! बदनसीब शख़्स कौन है? आप ﷺ ने फ़रमाया: जिस ने अल्लाह की खातिर कोई नेक काम न किया और न इस की खातिर कोई गुनाह छोड़ा| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (4298) * ابن لهيعة مدلس و عنعن

بَاب خلق الْجنَّة وَالنَّار • जन्नत और दोज़ख की तखलीक का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٥٦٩٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " تَحَاجَّتِ الْجَنَّةُ وَالنَّارُ فَقَالَتِ النَّارُ: أُوثِرْتُ بِالْمُتَكَبِّرِينَ وَالْمُتَجَبِّرِينَ وَقَالَتِ الْجَنَّةُ: فَمَا لِي لَا يَدْخُلُنِي إِلَّا ضُعَفَاءُ النَّاسِ وَسَقَطُهُمْ وَغِرَّتُهُمْ. قَالَ اللَّهُ تَعَالَى لِلْجَنَّةِ: إِنَّمَا أَنْتِ رَحْمَتِي أَرْحَمُ بِكِ مَنْ أَشَاءُ مِنْ عِبَادِي وَقَالَ لِلنَّارِ: إِنَّمَا أَنْتِ عَذَابِي أُعَذِّبُ بِكِ مَنْ أَشَاءُ مِنْ عِبَادِي وَلِكُلٍّ وَاحِدَةٍ مِنْكُمَا مِلْؤُهَا فَأَمَّا النَّارُ فَلَا تَمْتَلِئُ حَتَّى يَضَعَ اللَّهُ رِجْلَهُ. تَقُولُ: قَطْ قَطْ قَطْ فَهُنَالِكَ تَمْتَلِئُ وَيُزْوَى بَعْضُهَا إِلَى بَعْضٍ فَلَا يَظْلِمُ اللَّهُ مِنْ خَلْقِهِ أَحَدًا وَأَمَّا الْجَنَّةُ فَإِنَّ اللَّهَ ينشئ لَهَا خلقا ". مُتَّفق عَلَيْهِ

5694. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जन्नत और जहन्नम ने बहस व मुबाहसा किया तो जहन्नम ने कहा: मुझे तकब्बुर करने वालो और सरकशो के लिए खास कर दिया गया है, जन्नत ने कहा मेरी तो हालत यह है कि मुझ में (ज़्यादा तर) सिर्फ जईफ और कम रुतबे वाले और दुनिया से बेज़ार लोग होंगे, अल्लाह ने जन्नत से फ़रमाया: तू मेरी रहमत है, मैं तेरे ज़रिए अपने बंदो में से जिस पर चाहूँगा रहम फर्माऊंगा, और जहन्नम से फ़रमाया: तू मेरा अज़ाब है, मैं तेरे ज़रिए अपने बंदो में से जिसे चाहूँगा अज़ाब दूंगा,

और तुम दोनों भर जाओगी, रही जहन्नम तो वह नहीं भरेगी हत्ता के अल्लाह उस में अपना कदम रखेगा तो वह कहेगी: बस, बस, बस, तब वह भरेगी और उस का बाज़ हिस्सा बाज़ के साथ मिल जाएगा और अल्लाह अपने मखलूक में से किसी पर ज़ुल्म नहीं करेगा, रही जन्नत तो अल्लाह उस के लिए एक मखलूक पैदा फरमाएगा"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (4850) و مسلم (36 / 2846)، (7173 و 7175)

٥٦٩٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " لَا تَزَالُ جَهَنَّمَ يُلْقَى فِيهَا وَتَقُولُ: هَلْ مِنْ مَزِيدٍ؟ حَتَّى يَضَعَ رَبُّ العزَّةِ فِيهَا قدَمَه فينزَوي بَعْضُهَا إِلَى بَعْضٍ فَتَقُولُ: قَطْ قَطْ بِعِزَّتِكَ وَكَرَمِكَ وَلَا يَزَالُ فِي الْجَنَّةِ فَضْلٌ حَتَّى يُنْشِئَ اللَّهُ لَهَا خَلْقًا فَيُسْكِنُهُمْ فَضْلَ الْجَنَّةِ ". مُتَّفق عَلَيْهِ»» وذكرَ حَدِيث أنسٍ: «حُفَّتِ الجنَّةُ بالمكارِه» فِي «كتاب الرقَاق»

5695. अनस रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "जहन्नम में लोगों को डाला जाएगा तो वह कहती रहेगी: कुछ और भी है? हत्ता के रब्बुल इज्ज़त उस में अपना कदम रखेगा तो उस का बाज़ हिस्सा बाज़ के साथ मिल जाएगा और वह कहेगी: तेरी इज्ज़त व करम की क़सम बस, बस और जन्नत में मज़ीद गुंजाईश होगी हत्ता के अल्लाह उस के लिए एक मखलूक पैदा फरमाएगा और उन्हें जन्नत के इज़ाफ़ी (ज़्यादा) हिस्से में बसाएगा"| और अनस (र) से मरवी हदीस (نحُفَّتِ الجنَّةُ بالمكارِه) (كتاب الرقَاق) (किताबुल रिकाक) में ज़िक्र की गई है. (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (7384) و مسلم (38 / 2848)، (7179) 0 حديث ’’ حفت الجنة بالمكاره ‘‘ تقدم (5160)

بَاب خلق الْجنَّة وَالنَّار • जन्नत और दोज़ख की तखलीक का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٥٦٩٦ - (حسن) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " لَمَّا خَلَقَ اللَّهُ الْجَنَّةَ قَالَ لِجِبْرِيلَ: اذْهَبْ فَانْظُرْ إِلَيْهَا فَذَهَبَ فَنَظَرَ إِلَيْهَا وَإِلَى مَا أَعَدَّ اللَّهُ لِأَهْلِهَا فِيهَا ثُمَّ جَاءَ فَقَالَ: أَيْ رَبِّ وَعِزَّتِكَ لَا يَسْمَعُ بِهَا أَحَدٌ إِلَّا دَخَلَهَا ثُمَّ حَفَّهَا بالمكارِه ثُمَّ قَالَ: يَا جِبْرِيلُ اذْهَبْ فَانْظُرْ إِلَيْهَا فَذَهَبَ فَنَظَرَ إِلَيْهَا ثُمَّ جَاءَ فَقَالَ: أَيْ رَبِّ وَعِزَّتِكَ لَقَدْ خَشِيتُ أَنْ لَا يَدْخُلَهَا أَحَدٌ ". قَالَ: " فَلَمَّا خَلَقَ اللَّهُ النَّارَ قَالَ: يَا جبريلُ اذهبْ فانظرْ إِليها فذهبَ فنظرَ إِليها فَقَالَ: أَيْ رَبِّ وَعِزَّتِكَ لَا يَسْمَعُ بِهَا أَحَدٌ فَيَدْخُلُهَا فَحَفَّهَا بِالشَّهَوَاتِ ثُمَّ قَالَ: يَا جبريلُ اذهبْ فانظرْ إِليها فذهبَ فَنَظَرَ إِلَيْهَا فَقَالَ: أَيْ رَبِّ وَعِزَّتِكَ لَقَدْ خَشِيتُ أَنْ لَا يَبْقَى أَحَدٌ إِلَّا دَخَلَهَا ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ

5696. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "जब अल्लाह ने जन्नत

को पैदा फ़रमाया तो जिब्राइल अलैहिस्सलाम से फ़रमाया: जाओ इसे देखो वह गए और उन्होंने उस को और उस के रहने वालो के लिए अल्लाह ने जो कुछ तैयार कर रखा था उस को देखा, फिर वापस आए तो अर्ज़ किया: रब जी! तेरी इज्ज़त की क़सम उस के मुतल्लिक जो भी सुनेगा वह उस में दाखिल होगा, फिर अल्लाह तआला ने उस के गिर्द नागवार चीजों की बाड़ लगा दी, फिर फ़रमाया जिब्राइल जाओ और इसे देखो", फ़रमाया: "वो गए और इसे देखा, फिर आए और अर्ज़ किया, रब जी! तेरी इज्ज़त की क़सम मुझे अंदेशा है के उस में कोई एक भी दाखिल नहीं होगा", फ़रमाया: "जब अल्लाह ने जहन्नम को पैदा फ़रमाया तो फ़रमाया: जिब्राइल! जाओ और इसे देखो", फ़रमाया: "वो गए और इसे देखा फिर आए और अर्ज़ किया: रब जी! तेरी इज्ज़त की क़सम उस के मुतल्लिक जो सुनेगा वह उस में दाखिल नहीं होगा", अल्लाह तआला ने उस के गिर्द शह्वात की बाड़ लगा दी, फिर फ़रमाया: "जिब्राइल! जाओ, और इसे देखो", फ़रमाया: "वो गए और इसे देखा तो (आकर) अर्ज़ किया, रब जी! तेरी इज्ज़त की क़सम मुझे अंदेशा है के उस में दाखिल होने से कोई भी नहीं बचेगा"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2560 وقال : حسن صحیح) و ابوداؤد (4744) و النسائی (7 / 3 ح 3794)

بَاب خلق الْجنَّة وَالنَّار • जन्नत और दोज़ख की तखलीक का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٥٦٩٧ - (صَحِيح) عَنْ أَنَسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صلى بِنَا يَوْمًا الصَّلَاةَ ثُمَّ رَقِيَ الْمِنْبَرَ فَأَشَارَ بِيَدِهِ قِبَلَ قِبْلَةِ الْمَسْجِدِ فَقَالَ: «قَدْ أُرِيتُ الْآنَ مُذْ صَلَّيْتُ لَكُمُ الصَّلَاةَ الْجَنَّةَ وَالنَّارَ مُمَثَّلَتَيْنِ فِي قِبَلِ هَذَا الْجِدَارِ فَلَمْ أَرَ كَالْيَوْمِ فِي الْخَيْرِ وَالشَّر» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

5697. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने एक रोज़ हमें नमाज़ पढ़ाई, फिर आप ﷺ मिम्बर पर चढ़े और अपने हाथ से मस्जिद के किबले की तरफ इरशाद किया, फिर फ़रमाया: "अब जब के में तुम्हें नमाज़ पढ़ा रहा था तो मुझे इस दिवार की तरफ जन्नत और जहन्नम के मनाज़िर दिखाई दिए, मैंने आज के दिन की तरह न तो कोई भली चीज़ देखी और न ऐसी कोई बुरी चीज़ देखी"| (बुखारी)

رواه البخاری (749)

بَاب بدءالخلق وَذِكْرِ الْأَنْبِيَاءِ عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ • तखलीक की इब्तिदा और अंबिया अलैहिमुस्सलाम का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٥٦٩٨ - (صَحِيح) عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ قَالَ: إِنِّي كُنْتُ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذْ جَاءَ قومٌ منْ بَنِي تميمٍ فَقَالَ: «اقْبَلُوا الْبُشْرَى يَا بَنِي تَمِيمٍ» قَالُوا: بَشَّرْتَنَا فَأَعْطِنَا فَدَخَلَ نَاسٌ مِنْ أَهْلِ الْيَمَنِ فَقَالَ: «اقْبَلُوا الْبُشْرَى يَا أَهْلَ الْيَمَنِ إِذْ لَمْ يَقْبَلْهَا بَنُو تَمِيمٍ» . قَالُوا: قَبِلْنَا جِئْنَاكَ لِنَتَفَقَّهَ فِي الدِّينِ وَلِنَسْأَلَكَ عَنْ أَوَّلِ هَذَا الْأَمْرِ مَا كَانَ؟ قَالَ: «كَانَ اللَّهُ وَلَمْ يَكُنْ شَيْءٌ قَبْلَهُ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ ثُمَّ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَكَتَبَ فِي الذِّكْرِ كلَّ شيءٍ» ثُمَّ أَتَانِي رَجُلٌ فَقَالَ: يَا عِمْرَانُ أَدْرِكْ ناقتَكَ فقدْ ذهبتْ فانطلقتُ أطلبُها وايمُ اللَّهِ لَوَدِدْتُ أَنَّهَا قَدْ ذَهَبَتْ وَلَمْ أَقُمْ. رَوَاهُ البُخَارِيّ

5698. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर था के बनू तमीम (क़बीले) के कुछ लोग आप के पास आए तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “बनू तमीम! तुम खुशखबरी कबूल करो”, उन्होंने अर्ज़ किया, आप ने हमें खुशखबरी तो सुना दी, आप हमें अता भी फरमाइए, इतने में अहले यमन से कुछ लोग आए तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “यमन वालो तुम खुशखबरी कबूल करो, जबकि बनू तमीम ने इसे कबूल नहीं किया”, उन्होंने अर्ज़ किया, हमने कबूल किया, और हम आप की खिदमत में इसलिए हाज़िर हुए हैं ताकि हम दीन में समझ बुझ हासिल करे और सबसे पहले क्या चीज़ थी? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह था, और उस से पहले कोई चीज़ नहीं थी, और उस का अर्श पानी पर था, फिर उस ने आसमान और ज़मीन पैदा फरमाई, और ज़िक्र (लोहे महफ़ूज़) में हर चीज़ लिखी”, रावी बयान करते हैं, फिर एक आदमी मेरे पास आया तो उस ने कहा: इमरान अपनी ऊंटनी की खबर लो, वह जा चुकी है, मैं उसे तलाश करने चला गया, अल्लाह की क़सम! मैंने ख्वाहिश की के वह चली जाती और मैं (वहां से) न उठता| (बुखारी)

رواه البخارى (7418)

٥٦٩٩ - (صَحِيح) وَعَن عمر قَالَ: قَامَ فِينَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَقَامًا فَأَخْبَرَنَا عَنْ بَدْءِ الْخَلْقِ حَتَّى دَخَلَ أَهْلُ الْجَنَّةِ مَنَازِلَهُمْ وَأَهْلُ النَّارِ مَنَازِلَهُمْ حَفِظَ ذَلِكَ مَنْ حَفِظَهُ وَنَسِيَهُ مَنْ نسيَه ". رَوَاهُ البُخَارِيّ

5699. उमर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक जगह रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें तवील खुत्बा इरशाद फ़रमाया, आप ने हमें मखलूक की इब्तिदा से बताना शुरू किया (और बताते गए) हत्ता के जन्नत वाले अपने मनाज़िल में और जहन्नम वाले अपने जगहों में दाखिल हो गए और जिस ने इसे याद रखना था उस ने इसे याद रखा और जिसे भूलना था वह भूल गया| (बुखारी)

رواه البخارى (3192)

٥٧٠٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى كَتَبَ كِتَابًا قَبْلَ أَنْ يَخْلُقَ الْخَلْقَ: إِنَّ رَحْمَتِي سَبَقَتْ غَضَبِي فَهُوَ مَكْتُوب عِنْده فَوق الْعَرْش ". مُتَّفق عَلَيْهِ

5700. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “अल्लाह तआला ने मखलूक की तखलीक से पहले एक मक्तूब (लोहे महफ़ूज़) तहरीर किया के मेरी रहमत, मेरे गज़ब पर ग़ालिब है और वह अर्श के ऊपर उस के पास लिखा हुआ है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (7554) و مسلم (14 / 2751)، (6969)

٥٧٠١ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «خُلِقَتِ الْمَلَائِكَةُ مِنْ نُورٍ وَخُلِقَ الْجَانُّ مِنْ مَارِجٍ مِنْ نَارٍ وَخُلِقَ آدَمُ مِمَّا وصف لكم» . رَوَاهُ مُسلم

5701. आइशा रदियल्लाहु अन्हा रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करती हैं आप ﷺ ने फ़रमाया: “फ़रिश्ते नूर से पैदा किए गए, जिन्न धुंए और आग की लो से पैदा किए गए जबकि आदम अलैहिस्सलाम इस चीज़ से पैदा किए गए जो तुम्हें बयान कर दी गई है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (60 / 2996)، (7495)

٥٧٠٢ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَمَّا صَوَّرَ اللَّهُ آدَمَ فِي الْجَنَّةِ تَرَكَهُ مَا شَاءَ أَنْ يَتْرُكَهُ فَجَعَلَ إِبْلِيسُ يُطِيفُ بِهِ يَنْظُرُ مَا هُوَ فَلَمَّا رَآهُ أَجْوَفَ عَرَفَ أَنَّهُ خُلِقَ خَلْقًا لَا يتمالَكُ» . رَوَاهُ مُسلم

5702. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब अल्लाह ने आदम अलैहिस्सलाम का खाका बनाया तो अल्लाह ने जिस क़दर चाहा के वह उन्हें जन्नत में छोड़ दे तो उस ने इसे इस क़दर जन्नत में छोड़ दिया, इब्लीस उन के गिर्द चक्कर लगाने लगा ताकि वह देखे के वह क्या चीज़ है, जब उस ने उन्हें (अंदर से) खाली देखा तो उस ने पहचान लिया के यह ऐसी मखलूक की तखलीक की गई है, जो (अपने नफ्स की ख्वाहिशात पर काबू नहीं रख सकेगी”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (111 / 2611)، (6649)

٥٧٠٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اخْتَتَنَ إِبْرَاهِيمُ النَّبِيُّ وَهُوَ ابْنُ ثَمَانِينَ سَنَةً بِالْقَدُومِ» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5703. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने

अस्सी साल की उमर में तैसे (बसूल) के साथ खतना किया”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3356) و مسلم (151 / 2370)، (6141)

٥٧٠٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَمْ يَكْذِبْ إِبْرَاهِيمُ إِلَّا فِي ثَلَاثَ كَذَبَاتٍ: ثِنْتَيْنِ مِنْهُنَّ فِي ذَاتِ اللَّهِ قولُه (إِنِي سَقيمٌ)»» وقولُه (بلْ فعلَه كبيرُهم هَذَا)»» وَقَالَ: بَيْنَا هُوَ ذَاتَ يَوْمٍ وَسَارَةُ إِذْ أَتَى عَلَى جَبَّارٍ مِنَ الْجَبَابِرَةِ فَقِيلَ لَهُ: إِن هَهُنَا رَجُلًا مَعَهُ امْرَأَةٌ مِنْ أَحْسَنِ النَّاسِ فَأَرْسَلَ إِلَيْهِ فَسَأَلَهُ عَنْهَا: مَنْ هَذِهِ؟ قَالَ: أُخْتِي فَأَتَى سَارَةَ فَقَالَ لَهَا: إِنَّ هَذَا الْجَبَّارَ إِنْ يَعْلَمْ أَنَّكِ امْرَأَتِي يَغْلِبْنِي عَلَيْكِ فَإِنْ سألكِ فأخبِرِيهِ أنَّكِ أُختي فإنكِ أُخْتِي فِي الْإِسْلَامِ لَيْسَ عَلَى وَجْهِ الْأَرْضِ مُؤْمِنٌ غَيْرِي وَغَيْرُكِ فَأَرْسَلَ إِلَيْهَا فَأُتِيَ بِهَا قَامَ إِبْرَاهِيمُ يُصَلِّي فَلَمَّا دَخَلَتْ عَلَيْهِ ذَهَبَ يَتَنَاوَلُهَا بِيَدِهِ. فَأُخِذَ - وَيُرْوَى فَغُطَّ - حَتَّى رَكَضَ [ص:١٥٩ بِرِجْلِهِ فَقَالَ: ادْعِي اللَّهَ لِي وَلَا أَضُرُّكِ فَدَعَتِ اللَّهَ فَأُطْلِقَ ثُمَّ تَنَاوَلَهَا الثَّانِيَةَ فَأُخِذَ مِثْلَهَا أَوْ أَشَدُّ فَقَالَ: ادْعِي اللَّهَ لِي وَلَا أَضُرُّكِ فَدَعَتِ اللَّهَ فَأُطْلِقَ فَدَعَا بَعْضَ حجَبتِه فَقَالَ: إِنَّكَ لم تأتِني بِإِنْسَانٍ إِنَّمَا أَتَيْتَنِي بِشَيْطَانٍ فَأَخْدَمَهَا هَاجَرَ فَأَتَتْهُ وَهُوَ قائمٌ يُصلي فأوْمأَ بيدِه مَهْيَمْ؟ قَالَتْ: رَدَّ اللَّهُ كَيْدَ الْكَافِرِ فِي نَحْرِهِ وَأَخْدَمَ هَاجَرَ " قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: تِلْكَ أُمُّكُمْ يَا بَنِي مَاءِ السَّمَاءِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5704. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने सिर्फ तीन झूठ बोले उस में से दो अल्लाह की खातिर थे, उन्होंने कहा: “मैं बीमार हूँ” और यह कहना: “बल्के यह उन के बड़े ने किया है”, और आप ﷺ ने फ़रमाया: “एक रोज़ वह इब्राहीम अलैहिस्सलाम और (उन की बीवी) साराह एक ज़ालिम बादशाह की सल्तनत से गुज़र रहे थे तो इस (बादशाह) को बताया गया के यहाँ एक आदमी है और उस के साथ एक इन्तिहाई खुबसूरत औरत है, इस (बादशाह) ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को बूला भेजा और उन से साराह के मुतल्लिक पूछा के यह कौन है? उन्होंने कहा: मेरी बहन है, फिर इब्राहीम अलैहिस्सलाम साराह के पास आए और उन्हें बताया की ज़ालिम बादशाह है अगर इसे पता चल जाए के तू मेरी अहलिया है तो वह तेरे बारे में मुझ पर ग़ालिब आ जाएगा, अगर वह तुझ से पूछे तो यही कहना के तू मेरी बहन है, क्योंकी तू मेरी इस्लामी बहन है, रुए ज़मीन पर मेरे और तेरे सिवा कोई और मोमिन नहीं, इस (बादशाह) ने साराह रदियल्लाहु अन्हु को बूला भेजा उन्हें लाया गया तो इब्राहीम अलैहिस्सलाम नमाज़ पढ़ने लगे जब वह उन के पास गई और उस ने दस्त दराज़े की कोशिश की तो इसे पकड़ लिया गया”, और इस तरह भी मरवी है के, “उस का गला घोंट दिया गया हत्ता के उस ने ज़मीन पर अपना पाँव मारा और कहा अल्लाह से मेरे लिए दुआ करो में तुम्हें नुकसान नहीं पहुंचाऊंगा, उन्होंने अल्लाह से दुआ की तो इसे छोड़ दिया गया, उस ने दूसरी मर्तबा दस्त दराज़े की कोशिश की, तो इसे इसी तरह या इसे भी सख्ती के साथ पकड़ लिया गया, उस ने कहा अल्लाह से मेरे लिए दुआ करो, मैं तुम्हें नुकसान नहीं पहुंचाऊंगा, उन्होंने अल्लाह से दुआ की तो इसे छोड़ दिया गया, उस ने अपने किसी दरबाने को बुलाया और कहा तूने मेरे पास किसी इंसान को नहीं बल्कि किसी शैतान को भेजा है, उस ने साराह की खिदमत के लिए उन्हें हाजर अता की, वह इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास आए तो वह खड़े नमाज़ अदा कर रहे थे, उन्होंने अपने हाथ के इशारे से पूछा क्या हुआ? उन्होंने बताया: अल्लाह ने काफ़िर की तदबीर को इसी पर

उलट दिया है, और उस ने खिदमत के लिए हाजर दी है”| अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: “अहल अरब (बारिश पर गुज़ार करने वालो) यह हाजर तुम्हारी वालिदा है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2213 ، 3358) و مسلم (154 / 2371)، (6145)

٥٧٠٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " نَحْنُ أَحَقُّ بِالشَّكِّ مِنْ إِبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ: (رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ تحيي الْمَوْتَى)»» وَيَرْحَمُ اللَّهُ لُوطًا لَقَدْ كَانَ يَأْوِي إِلَى رُكْنٍ شَدِيدٍ وَلَوْ لَبِثْتُ فِي السِّجْنِ طُولَ مَا لَبِثَ يُوسُفُ لَأَجَبْتُ الدَّاعِيَ ". مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5705. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हम इब्राहीम अलैहिस्सलाम के मुकाबले में शक करने का ज़्यादा हक़ रखते है, जब उन्होंने कहा: “रब जी! मुझे दिखा के तू मर्दों को किस तरह जिंदा करेगा”, अल्लाह लुट अलैहिस्सलाम पर रहम फरमाए वह ज़बरदस्त सहारे (यानी अल्लाह तआला) की पनाह लेते थे, और अगर में इतनी मुद्दत तक, जितनी मुद्दत तक युसूफ अलैहिस्सलाम क़ैद खाने में रहे, क़ैद खाने में रहता तो मैं बुलाने वाले की बात ज़रूर मान लेता”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3372) و مسلم (152 / 151)، (382)

٥٧٠٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ مُوسَى كَانَ رَجُلًا حَيِيًّا سِتِّيرًا لَا يُرَى مِنْ جِلْدِهِ شَيْءٌ اسْتِحْيَاءً فَآذَاهُ مَنْ آذَاهُ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ فَقَالُوا: مَا تَسَتَّرَ هَذَا التَّسَتُّرَ إِلَّا مِنْ عَيْبٍ بِجِلْدِهِ: إِمَّا بَرَصٌ أَوْ أُدْرَةٌ وَإِنَّ اللَّهَ أَرَادَ أَنْ يُبَرِّئَهُ فَخَلَا يَوْمًا وَحده ليغتسل فَوَضَعَ ثَوْبَهُ عَلَى حَجَرٍ فَفَرَّ الْحَجَرُ بِثَوْبِهِ فَجمع مُوسَى فِي إِثْرِهِ يَقُولُ: ثَوْبِي يَا حَجَرُ ثَوْبِي يَا حَجَرُ حَتَّى انْتَهَى إِلَى مَلَأٍ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ فَرَأَوْهُ عُرْيَانًا أَحْسَنَ مَا خَلَقَ اللَّهُ وَقَالُوا: وَاللَّهِ مَا بِمُوسَى مِنْ بَأْسٍ وَأَخْذَ ثَوْبَهُ وَطَفِقَ بِالْحَجَرِ ضَرْبًا [ص:١٥٩ فَوَاللَّهِ إِنَّ بِالْحَجَرِ لَنَدَبًا مِنْ أَثَرِ ضَرْبِهِ ثَلَاثًا أَو أَرْبعا أَو خمْسا ". مُتَّفق عَلَيْهِ

5706. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मूसा अलैहिस्सलाम बड़े ही शर्म व हया वाले इंसान थे, उन के हया की वजह से उनकी जिल्द से कुछ भी नहीं देखा जा सकता था, बनी इसराइल के जिन लोगों ने आप अलैहिस्सलाम को अज़ीयत पहुंचाई थी वह पहुंचा कर रहे, उन्होंने कहा: यह अपने किसी जिल्दी बीमारी की वजह से इस क़दर अपना बदन छिपा कर रखते है, यह या तो बरस के मरीज़ है या उन के खसिये (फोटे) फुल गए है, अल्लाह ने इरादा फ़रमाया के वह इनको ऐब (कमी) से बे एब साबित करे, एक रोज़ वह अकेले ग़ुस्ल करने के लिए आए तो अपने कपड़े उतार कर एक पत्थर पर रख दिए, और वह पत्थर उन के कपड़े लेकर भाग गया, मूसा अलैहिस्सलाम भी तेज़ी के साथ उस के पीछे भागने लगे और कहने लगे: पथ्थर! मेरे कपड़े (वापिस कर दो में और कुछ नहीं चाहता) वह (इस तरह कहते हुए) बनी इसराइल की एक जमाअत तक पहुँच गए, उन्होंने इनको उरिया हालत में देख लिया के अल्लाह ने जो तखलीक फरमाई है अहसन है, और उन्होंने कहा: अल्लाह की क़सम! मूसा अलैहिस्सलाम में कोई नुक्स नहीं, और उन्होंने अपने कपड़े लिए और पत्थर को मारने लगे, अल्लाह की क़सम! उनकी मार के तीन, चार या पांच निशान पत्थर पर पड़ गए”|

(मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3404) و مسلم (156 / 2371)، (6147)

٥٧٠٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " بَيْنَا أَيُّوبُ يَغْتَسِلُ عُرْيَانًا فَخَرَّ عَلَيْهِ جَرَادٌ مِنْ ذَهَبٍ فَجَعَلَ أَيُّوبُ يَحْثِي فِي ثَوْبِهِ فَنَادَاهُ رَبُّهُ: يَا أَيُّوبُ أَلَمْ أَكُنْ أَغْنَيْتُكَ عَمَّا تَرَى؟ قَالَ: بَلَى وَعِزَّتِكَ وَلَكِن لَا غنى بِي عَن بركتك ". رَوَاهُ البُخَارِيّ

5707. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अय्यूब अलैहिस्सलाम उरिया हालत में ग़ुस्ल कर रहे थे की इन पर सोने की तिद्दिया गिरी तो अय्यूब अलैहिस्सलाम उन्हें कपड़े में जमा करने लगे तो उन के रब ने उन्हें आवाज़ दी, अय्यूब! क्या मैंने तुझे माल अता कर के उन (टिड्डियों) से बेनियाज़ नहीं कर दिया? उन्होंने अर्ज़ किया, तेरी इज्ज़त की क़सम! क्यों नहीं, लेकिन में तेरी बरकत से कैसे बेनियाज़ रह सकता हो”| (बुखारी)

رواه البخارى (279)

٥٧٠٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ»» قَالَ: اسْتَبَّ رَجُلٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ وَرَجُلٌ مِنَ الْيَهُودِ. فَقَالَ الْمُسْلِمُ: وَالَّذِي اصْطَفَى مُحَمَّدًا عَلَى الْعَالَمِينَ. فَقَالَ الْيَهُودِيُّ: وَالَّذِي اصْطَفَى مُوسَى عَلَى الْعَالَمِينَ. فَرَفَعَ الْمُسْلِمُ يَدَهُ عِنْدَ ذَلِكَ فَلَطَمَ وَجْهَ الْيَهُودِيِّ فَذَهَبَ الْيَهُودِيُّ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرَهُ بِمَا كَانَ من أمره وأمرِ الْمُسلم فَدَعَا النَّبِي صلى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمُسْلِمَ فَسَأَلَهُ عَنْ ذَلِكَ فَأَخْبَرَهُ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تُخَيِّرُونِي عَلَى مُوسَى فَإِنَّ النَّاسَ يُصْعَقُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَأُصْعَقُ مَعَهُمْ فَأَكُونُ أَوَّلَ مَنْ يُفِيقُ فَإِذَا مُوسَى بَاطِشٌ بِجَانِبِ الْعَرْشِ فَلَا أَدْرَى كَانَ فِيمَنْ صُعِقَ فَأَفَاقَ قَبْلِي أَوْ كَانَ فِيمَنِ اسْتَثْنَى اللَّهُ.» . وَفِي رِوَايَةٍ: " فَلَا أَدْرِي أَحُوسِبَ بِصَعْقَةِ يَوْمِ الطُّورِ أَوْ بُعِثَ قَبْلِي؟ وَلَا أَقُولُ: أَنَّ أَحَدًا أَفْضَلَ مِنْ يُونُسَ بنِ مَتَّى "

5708. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, दो आदमियों ने आपस में बुरा भुला कहा, उनमें से एक मुसलमान था और एक यहूदी था, मुसलमान ने कहा उस ज़ात की क़सम! जिस ने मुहम्मद ﷺ को तमाम जहांन वालो पर फ़ज़ीलत दी! यहूदी ने कहा उस ज़ात की क़सम! जिस ने मूसा अलैहिस्सलाम को तमाम जहांन वालो पर फ़ज़ीलत दी, मुसलमान ने इस वक़्त अपना हाथ उठाया और यहूदी के चेहरे पर थप्पड़ रसीद कर दिया, यहूदी, नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ और अपना और मुसलमान का मुआमला आप को बताया तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: “मुझे मूसा अलैहिस्सलाम पर फोकियत न दो, क्योंकि रोज़ ए कियामत लोग बेहोश हो जाएँगे तो मैं भी उन के साथ बेहोश हो जाऊंगा, और मुझे सबसे पहले होश आएगा तो मैं देखूंगा के मूसा अलैहिस्सलाम अर्श के एक कोने को थामे हुए होंगे, मैं नहीं जानता के वह बेहोश होने वालो में से थे और मुझ से पहले होश में गए या वह उनमें से थे जिन्हें अल्लाह ने इस (बेहोशी) से मुशतश्ना करार दे दिया”| एक दूसरी रिवायत में है: “मैं नहीं जानता के वह तुर के रोज़ जो बेहोश हुए थे वही इन के लिए काफी था, या वह मुझ से पहले उठाए गए,

और मैं नहीं कहता के कोई युनुस बिन मत्ता से अफज़ल है”| (बुखारी)

رواه البخارى (2411) [و مسلم (160 / 2373)، (6151) الرواية الثانية : البخارى (3415)]

٥٧٠٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَفِي رِوَايَةِ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: «لَا تُخَيِّرُوا بَيْنَ الْأَنْبِيَاءِ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَفِي رِوَايَةِ أَبِي هُرَيْرَة: «لَا تفضلوا بَين أَنْبيَاء الله»

5709. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु की रिवायत में है फ़रमाया: “अंबिया को एक दूसरे पर बढ़त न दो”, और अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु की रिवायत में है: “अंबिया को एक दूसरे पर फ़ज़ीलत न दो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخارى (6916) و مسلم (163 / 2374)، (6156) و رواية سيدنا ابی هريرة رضی الله عنه ، رواها البخارى (3414) و مسلم (159 / 2372)، (6156)

٥٧١٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَا يَنْبَغِي لِعَبْدٍ أَنْ يَقُولَ: إِنِّي خَيْرٌ مِنْ يُونُسَ بْنِ مَتَّى ". مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ»» وَفِي رِوَايَةِ الْبُخَارِيِّ قَالَ: " من قَالَ: أَنَا خَيْرٌ مِنْ يُونُسَ بْنِ مَتَّى فقد كذب "

5710. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “किसी बंदे के लिए मुनासिब नहीं के वह कहे की मैं युनुस बिन मत्ता से बेहतर हूँ”| और सहीह बुखारी की रिवायत में है, फ़रमाया: “जिस ने कहा की मैं युनुस बिन मत्ता से बेहतर हूँ तो उस ने झूठ कहा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخارى (3416) و مسلم (116 / 2376)، (6159) و الرواية الثانية ، رواها البخارى (4604)

٥٧١١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبَيِّ بْنِ كَعْبٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الْغُلَامَ الَّذِي قَتَلَهُ الْخَضِرُ طُبِعَ كَافِرًا وَلَوْ عَاشَ لَأَرْهَقَ أَبَوَيْهِ طُغْيَانًا وَكُفْرًا» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5711. उबई बिन काब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “वो गुलाम जिसे खिज़र अलैहिस्सलाम ने क़त्ल किया था वह काफ़िर पैदा हुआ था, अगर वह जिंदा रहता तो वह अपने वालिदेन को सरकशी और कुफ्र पर मजबूर करता”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخارى (لم اجده) و مسلم (29 / 2661)، (6766)

٥٧١٢ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّمَا سُمِّيَ الْخَضِرُ لِأَنَّهُ جَلَسَ عَلَى فَرْوَةٍ بَيْضَاءَ فَإِذَا هِيَ تَهْتَزُّ من خَلْفِه خضراء» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

5712. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “खिज़र अलैहिस्सलाम का नाम खिज़र इसलिए रखा गया के वह एक खुश्क ज़मीन पर बैठें थे, तो वह ज़मीन उन के बाद सर सब्ज़ हो कर लहलहाने लगी”| (बुखारी)

رواه البخاری (3402)

٥٧١٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " جَاءَ مَلَكُ الْمَوْتِ إِلَى مُوسَى ابْنِ عِمْرَانَ فَقَالَ لَهُ: أَجِبْ رَبَّكَ ". قَالَ: «فَلَطَمَ مُوسَى عَيْنَ مَلَكَ الْمَوْتِ ففقأها» قَالَ: " فَرَجَعَ الْمَلَكُ إِلَى اللَّهِ فَقَالَ: إِنَّكَ أَرْسَلْتَنِي إِلَى عَبْدٍ لَكَ لَا يُرِيدُ الْمَوْتَ وَقَدْ فَقَأَ عَيْنِي " قَالَ: " فَرَدَّ اللَّهُ إِلَيْهِ عَيْنَهُ وَقَالَ: ارْجِعْ إِلَى عَبْدِي فَقُلْ: الْحَيَاةَ تُرِيدُ؟ فَإِنْ كُنْتَ تُرِيدُ الْحَيَاةَ فَضَعْ يَدَكَ عَلَى مَتْنِ ثَوْرٍ فَمَا تَوَارَتْ يَدُكَ مِنْ شَعْرِهِ فَإِنَّكَ تَعِيشُ بِهَا سَنَةً قَالَ: ثُمَّ مَهْ؟ قَالَ: ثُمَّ تَمُوتُ. قَالَ: فَالْآنَ مِنْ قَرِيبٍ رَبِّ أَدْنِنِي مِنَ الْأَرْضِ الْمُقَدَّسَةِ رَمْيَةً بِحَجَرٍ ". قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَاللَّهِ لَوْ أَنِّي عِنْدَهُ لَأَرَيْتُكُمْ قَبْرَهُ إِلَى جَنْبِ الطَّرِيقِ عِنْدَ الْكَثِيبِ الْأَحْمَرِ» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5713. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मौत का फ़रिश्ता मूसा बिन इमरान अलैहिस्सलाम के पास आया तो उस ने उन्हें कहा: अपने रब का हुक्म कबूल करो (में आप की रूह कब्ज़ करने आया हूँ)”, फ़रमाया: “मूसा अलैहिस्सलाम ने मौत के फ़रिश्ते की आँख पर थप्पड़ मारा और इसे फोड़ दिया”, फ़रमाया: “वो फ़रिश्ता अल्लाह के पास वापस चला गया और अर्ज़ किया, तूने मुझे अपने एक ऐसे बंदे की तरफ भेजा जो मरना नहीं चाहता और उस ने मेरी आँख भी फोड़ दी है, फ़रमाया: अल्लाह ने उसकी आँख इसे लौटा दी, और फ़रमाया: मेरे बंदे के पास दोबारा जाओ और इसे कहो: तुम जिंदगी चाहते हो, अगर तुम जिंदगी चाहते हो तो अपना हाथ बेल की कमर पर रखो और जितने बाल तुम्हारे हाथ के नीचे आजाएँगे तुम इतने साल जिंदा रहोगे, फ़रमाया: “फिर क्या होगा? फ़रमाया: फिर तुम मर जाओगे ,फ़रमाया फिर अब इसी हालत में रूह कब्ज़ कर लो, और अर्ज़ किया, रब जी! मुझे अर्जे मुक़द्दस (बैतूल मुक़द्दस) के इतना करीब कर दे के अगर कोई पत्थर फ़ेकने वाला फेंके तो वह वहां (बैतूल मुक़द्दस) तक पहुँच सके”, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह की क़सम! अगर में इस (बैतूल मुक़द्दस) के पास होता तो मैं सुर्ख टीले के पास, रास्ते के एक जानिब तुम्हें उनकी कब्र दीखाता “| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1339) و مسلم (158 ، 157 / 2372)، (6148)

٥٧١٤ - (صَحِيح) وَعَنْ»» جَابِرٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «عُرِضَ عَلَيَّ الْأَنْبِيَاءُ فَإِذَا مُوسَى ضَرْبٌ مِنَ الرِّجَالِ كَأَنَّهُ مِنْ رِجَالِ شَنوءَةَ ورأيتُ عِيسَى بن مَرْيَم فإذا أقربُ مَن رأيتُ بِهِ شَبَهًا عُرْوَةُ بْنُ مَسْعُودٍ وَرَأَيْتُ إِبْرَاهِيمَ فَإِذَا أَقْرَبُ مَنْ رَأَيْتُ بِهِ شَبَهًا صَاحِبُكُمْ - يَعْنِي نَفْسَهُ - وَرَأَيْتُ جِبْرِيلَ فَإِذَا أَقْرَبُ مَنْ رَأَيْتُ بِهِ شَبَهًا دِحْيَةُ بْنُ خَلِيفَةَ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

5714. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुझे अंबिया अलैहिस्सलाम दिखाए गए, मूसा अलैहिस्सलाम दुबले पतले हैं, गोया वह शनुअत कबिले के मर्दों जैसे हैं, मैंने इसा बिन मरियम अलैहिस्सलाम को देखा, और मैंने जिन्हें देखा उनमें से वह उरवा बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु से ज़्यादा मुशाबिहत रखते थे, मैंने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को देखा वह सबसे ज़्यादा तुम्हारे साथी यानी मुहम्मद से मुशाबिहत रखते हैं, और मैंने जिब्राइल अलैहिस्सलाम को देखा तो वह उन लोगों में से जिन्हें मैंने देखा है दिह्या बिन खलीफा से सबसे ज़्यादा मुशाबिहत रखते हैं”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (271 / 167)، (423)

٥٧١٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «رَأَيْتُ لَيْلَةَ أَسْرِيَ بِي مُوسَى رَجُلًا آدَمَ طُوَالًا جَعْدًا كَأَنَّهُ شنُوءَة وَرَأَيْت رَجُلًا مَرْبُوعَ الْخَلْقِ إِلَى الْحُمْرَةِ وَالْبَيَاضِ سَبْطَ الرَّأْسِ وَرَأَيْتُ مَالِكًا خَازِنَ النَّارِ وَالدَّجَّالَ فِي آيَاتٍ أَرَاهُنَّ اللَّهُ إِيَّاهُ فَلَا تَكُنْ فِي مرية من لِقَائِه» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5715. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मेअराज की रात मैंने मूसा अलैहिस्सलाम को देखा, आप का रंग गंदुमी, दराज़ कद और बाल घुंघरियाले थे, गोया वह शनुअत कबिले के लोगों में से हो, और मैंने इसा अलैहिस्सलाम को देखा, उनका कद दरमियाना, रंग सुरखी माईल सफ़ेद था और बाल घुंघरियाले नहीं बल्कि सीधे थे, मैंने जहन्नम के दरोगा मालिक और दज्जाल को भी देखा, यह उन निशानियो में से थी जो अल्लाह ने मुझे दिखाइए थी, आप उन (मुसा (अस)) से मुलाकात करने में किसी किस्म के शक में मुब्तिला न हो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (3239) و مسلم (267 / 165)، (419)

٥٧١٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَيْلَةً أَسْرِيَ بِي لَقِيتُ مُوسَى - فَنَعَتَهُ - : فَإِذَا رَجُلٌ مُضْطَرِبٌ رَجِلُ الشَّعْرِ كَأَنَّهُ مِنْ رِجَالِ شَنُوءَةَ وَلَقِيتُ عِيسَى رَبْعَةً أَحْمَرَ كَأَنَّمَا خَرَجَ مِنْ دِيمَاسٍ - يَعْنِي الْحَمَّامَ - وَرَأَيْتُ إِبْرَاهِيمَ وَأَنَا أَشْبَهُ وَلَدِهِ بِهِ " قَالَ: " فَأُتِيتُ بِإِنَاءَيْنِ: أَحَدُهُمَا لَبَنٌ وَالْآخَرُ فِيهِ خَمْرٌ. فَقِيلَ لِي: خُذْ أَيَّهُمَا شِئْتَ. فَأَخَذْتُ اللَّبَنَ فَشَرِبْتُهُ فَقِيلَ لِي: هُدِيتَ الْفِطْرَةَ أَمَا إِنَّكَ لَوْ أَخَذْتَ الْخَمْرَ غَوَتْ أمتك ". مُتَّفق عَلَيْهِ

5716. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेअराज की रात मेरी मूसा अलैहिस्सलाम से मुलाकात हुई”, आप ने उनका तफसील बयान की के, “वो एक दुबले पतले सीधे बालो वाले आदमी है, गोया वह शनुअत कबिले के आदमी है, मैंने इसा अलैहिस्सलाम से मुलाकात की, उनका कद दरमियाना और रंग सुर्ख था, गोया वह ग़ुस्ल खाने से निकले है, मैंने इब्राहीम अलैहिस्सलाम से मुलाकात की, उनकी औलाद में से में उन के ज़्यादा मुशाबह (अनुरूप) हूँ”, फ़रमाया: “मेरे पास दो बर्तन लाए गए, उनमें से एक में दूध और दूसरे में शराब थी, मुझे कहा गया दोनों में से जो चाहो पसंद कर लो, मैंने दूध लिया और इसे पि

लिया, मुझे कहा गया आप को फितरत की रहनुमाई की गई, अगर आप शराब लेते तो आप की उम्मत गुमराह हो जाती”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3394) و مسلم (272 / 168)، (424)

٥٧١٧ - (صَحِيح) وَعَن»» ابنِ عبَّاسٍ قَالَ: سِرْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَ مَكَّةَ وَالْمَدِينَةِ فَمَرَرْنَا بِوَادٍ فَقَالَ: «أَيُّ وَادٍ هَذَا؟» . فَقَالُوا: وَادِي الْأَزْرَقِ. قَالَ: «كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى مُوسَى» فَذَكَرَ مِنْ لَوْنِهِ وَشَعْرِهِ شَيْئًا وَاضِعًا أُصْبُعَيْهِ فِي أُذُنَيْهِ لَهُ جُؤَارٌ إِلَى اللَّهِ بِالتَّلْبِيَةِ مَارًّا بِهَذَا الْوَادِي ". قَالَ: ثُمَّ سِرْنَا حَتَّى أَتَيْنَا عَلَى ثَنِيَّةٍ. فَقَالَ: «أَيُّ ثَنِيَّةٍ هَذِهِ؟» قَالُوا: هَرْشَى - أَوْ لِفْتُ -. فَقَالَ: «كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى يُونُسَ عَلَى نَاقَةٍ حَمْرَاءَ عَلَيْهِ جُبَّةُ صُوفٍ خِطَامُ نَاقَتِهِ خُلْبَةٌ مَارًّا بِهَذَا الْوَادِي مُلَبِّيًا» رَوَاهُ مُسلم

5717. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, हमने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ मक्के और मदीना के दरमियान सफ़र किया, हम एक वादी से गुज़रे तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये कौन सी वादी है?” उन्होंने अर्ज़ किया, वादी ए अज़रक है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “गोया में मूसा अलैहिस्सलाम को देख रहा हूँ”, आप ने उन के रंग और उन के बालो के मुतल्लिक कुछ बताया, और बताया की“, वह अपने दोनों उंगलिया अपने कानों में रखे हुए थे, वह तल्बिया के ज़रिए अल्लाह से तजरीअ करते हुए इस वादी से गुज़र रहे हैं”, रावी बयान करते हैं, फिर हमने सफ़र किया और हम घाटी पर पहुंचे तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये कौन सी घाटी है?” उन्होंने अर्ज़ किया, हरशी या लफत फ़रमाया: “गोया में युनुस अलैहिस्सलाम को सुर्ख ऊंटनी पर सवार देख रहा हूँ, उन्होंने ऊनी जुब्बा पहना हुआ है और उनकी ऊंटनी की महार खजूर की शाखों से बनी हुई है, और वह भी तल्बिया कहते हुए इस वादी से गुज़र रहे हैं”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (268 / 166)، (420)

٥٧١٨ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «خُفِّفَ عَلَى دَاوُدَ [ص:١٥٩ الْقُرْآنُ فَكَانَ يَأْمُرُ بِدَوَابِّهِ فَتُسَرَّحَ فَيَقْرَأُ الْقُرْآنَ قَبْلَ أَنْ تُسَرَّحَ دَوَابُّهُ وَلَا يَأْكُلُ إِلَّا مِنْ عملِ يدَيهِ» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

5718. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “दाउद (अ) पर ज़बूर की किराअत आसान कर दी गई थी, वह अपने सवारियों पर जैन कसने का हुक्म फरमाते और वह सवारियों पर जैन कसे जाने से पहले ही इस (जबूर) की किराअत मुकम्मल कर लेते थे, और वह सिर्फ अपने हाथो की कमाई खाते थे”| (बुखारी)

رواه البخاری (3417)

٥٧١٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " كَانَتِ امْرَأَتَانِ مَعَهُمَا ابْنَاهُمَا جَاءَ الذِّئْبُ فَذَهَبَ بِابْنِ إِحْدَاهُمَا فَقَالَتْ صَاحِبَتُهَا: إِنَّمَا ذَهَبَ بابنك. وَقَالَت الْأُخْرَى: إِنَّمَا ذهب بابنك فتحاكما إِلَى دَاوُدَ فَقَضَى بِهِ لِلْكُبْرَى فَخَرَجَتَا عَلَى سُلَيْمَانَ بْنِ دَاوُدَ فَأَخْبَرَتَاهُ فَقَالَ: ائْتُونِي بِالسِّكِّينِ أَشُقُّهُ بَيْنَكُمَا. فَقَالَتِ الصُّغْرَى: لَا تَفْعَلُ يَرْحَمُكَ اللَّهُ هُوَ ابْنُهَا فَقَضَى بِهِ لِلصُّغْرَى " مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5719. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “दो औरते थी उन के साथ उन के बेटे भी थे, भेड़िया आया और वह उनमें से एक के बेटे को ले गया, एक ने अपने साथ वाली से कहा: वह तो तेरे बेटे को लेकर गया है, और दूसरी ने कहा (नहीं) वह तेरे बेटे को लेकर गया है, चुनांचे वह दोनों दाउद (अ) के पास मुकदमा ले गई तो उन्होंने बड़ी के हक़ में फैसला कर दिया, फिर वह दोनों सुलेमान बिन दाउद (अ) के पास से गुज़री और उन्होंने पूरा वाकिया बयान किया तो उन्होंने ने फ़रमाया: मुझे छुरी दो में उसे टुकड़े कर के तुम दोनों के दरमियान तकसीम कर देता हूँ, छोटी ने कहा: अल्लाह आप पर रहम फरमाए, ऐसे न करे वह इसी का बेटा है, उन्होंने उस के मुतल्लिक छोटी के हक़ में फैसला कर दिया”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (3427) و مسلم (20 / 1720)، (4495)

٥٧٢٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " قَالَ سُلَيْمَانُ: لَأَطُوفَنَّ اللَّيْلَةَ عَلَى تِسْعِينَ امْرَأَةٍ - وَفِي رِوَايَةٍ: بِمِائَةِ امْرَأَةٍ - كُلُّهُنَّ تَأْتِي بِفَارِسٍ يُجَاهِدُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ. فَقَالَ لَهُ الْمَلَكُ: قُلْ إِنْ شَاءَ اللَّهُ. فَلَمْ يَقُلْ وَنَسِيَ فَطَافَ عَلَيْهِنَّ فَلَمْ تحملْ منهنَّ إِلا امرأةٌ واحدةٌ جاءتْ بشقِّ رَجُلٍ وَأَيْمُ الَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لَوْ قَالَ: إِنْ شَاءَ اللَّهُ لَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ الله فُرْسَانًا أجمعونَ ". مُتَّفق عَلَيْهِ

5720. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सुलेमान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: आज रात में अपने नववे बेगमात (बीवियों) और एक दूसरी रिवायत में है सौ बेगमात (बीवियों) के पास जाऊंगा, वह सब अल्लाह की राह में जिहाद करने वाले घुड़सवार बच्चो को जन्म देगी, फ़रिश्ते ने उन्हें कहा: इंशाअल्लाह (अगर अल्लाह ने चाहा) कहो, उन्होंने न कहा और (ये कहना) भूल गए, वह उन के पास गए (इन के साथ जिमाअ किया) और उनमें से सिर्फ एक हामिला हुई, और उस ने भी नाकिस बच्चे को जन्म दिया, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद ﷺ की जान है! अगर वह इंशाअल्लाह कह देते तो वह सारे अल्लाह की राह में जिहाद करने वाले घुड़सवार होते”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (2819) و مسلم (25 / 1654)، (4286)

٥٧٢١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ»» أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «كَانَ زَكَرِيَّاء نجارا» . رَوَاهُ مُسلم

5721. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ज़करिया अलैहिस्सलाम बूढ़े थे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (169 / 2379)، (6162)

٥٧٢٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَنَا أَوْلَى النَّاسِ بِعِيسَى بن مَرْيَمَ فِي الْأُولَى وَالْآخِرَةِ الْأَنْبِيَاءُ أُخْوَةٌ مِنْ عَلَّاتٍ وَأُمَّهَاتُهُمْ شَتَّى وَدِينُهُمْ وَاحِدٌ وَلَيْسَ بَيْنَنَا نَبِي» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5722. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैं इसा बिन मरियम अलैहिस्सलाम से दुनिया व आखिरत में और लोगों की निस्बत ज़्यादा कराबतदार हूँ, अंबिया अलैहिस्सलाम एलाती (एक बाप की औलाद) भाई है, उनकी माएँ अलग अलग है, जबकि उनका दीन एक है, और हमारे (मेरे और इसा (अस)) के दरमियान कोई नबी नहीं”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (34423443) و مسلم (145 / 2365)، (6130)

٥٧٢٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كُلُّ بَنِي آدَمَ يَطْعَنُ الشَّيْطَانُ فِي جَنْبَيْهِ بِإِصْبَعَيْهِ حِينَ يُوَلَدُ غَيْرَ عِيسَى بْنِ مَرْيَمَ ذَهَبَ يَطْعَنُ فَطَعَنَ فِي الْحِجَابِ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5723. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इसा बिन मरियम अलैहिस्सलाम के अलावा, शैतान हर नौ मौलूद को उसकी पैदाइश के वक़्त अपने दो उंगलियों से उस के पहलु में डंक लगाता है, वह उन्हें भी डंक लगाने गया था लेकिन उस ने हिजाब में डंक लगा दिए”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (3286) و مسلم (147 / 2366)، (6133)

٥٧٢٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «كَمُلَ مِنَ الرِّجَالِ كَثِيرٌ وَلَمْ يَكْمُلْ مِنَ النساءِ إِلا مريمُ بنتُ عِمْرَانَ وَآسِيَةُ امْرَأَةُ فِرْعَوْنَ وَفَضْلُ عَائِشَةَ عَلَى النِّسَاءِ كَفَضْلِ الثَّرِيدِ عَلَى سَائِرِ الطَّعَامِ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ»» وَذَكَرَ حَدِيثَ أَنَسٍ: «يَا خَيْرَ الْبَرِيَّةِ» . وَحَدِيثَ أَبِي هُرَيْرَةَ: «أَيُّ النَّاسِ أَكْرَمُ» وَحَدِيثُ ابْن عمر: " الْكَرِيم بن الْكَرِيم: «. فِي» بَابِ الْمُفَاخَرَةِ وَالْعَصَبِيَّةِ "

5724. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मर्दों में से तू बहोत से कामिल (सर्वोत्तम) हुए लेकिन औरतो में से मरयम बिन्ते इमरान और आसिया जौजा ए फिरोन कमाल को पहुंची, और आइशा रदियल्लाहु अन्हा को तमाम औरतो पर ऐसे ही बढ़त हासिल है जैसे सरिद को तमाम खानो पर फ़ज़ीलत हासिल है”| और अनस (र) से मरवी हदीस ((يَا خَيْرَ الْبَرِيَّةِ)) अबू हुरैरा (र) से मरवी हदीस ((أَيُّ

(النَّاسِ أَكْرَمُ)) और इब्ने उमर (र अ) से मरवी हदीस ((بَابِ الْمُفَاخَرَةِ وَالْعَصَبِيَّةِ) (الْكَرِيم بن الْكَرِيم (बाब मुफाखिरत और अस्बियत का बयान) में ज़िक्र की गई है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (3411)و مسلم (70 / 2431)، (6272) 0 حدیث ’’ خیر البریة ‘‘ تقدم (4896) و ’’ ای الناس ، اکرم ‘‘ تقدم (4893) و ’’ الکریم بن اکریم ‘‘ تقدم (4894)

بَاب بدءِالخلق وَذِكْرِ الْأَنْبِيَاءِ عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ • तखलीक की इब्तिदा और अंबिया अलैहिमुस्सलाम का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٥٧٢٥ - (ضَعِيف وَالْبَعْض»» يُحسنهُ)»» عَن أبي رزين قَالَ: قلت: يَا رَسُول الله أَيْن رَبُّنَا قَبْلَ أَنْ يَخْلُقَ خَلْقَهُ؟ قَالَ: «كَانَ فِي عَمَاءٍ مَا تَحْتَهُ هَوَاءٌ وَمَا فَوْقَهُ هَوَاءٌ وَخَلَقَ عَرْشَهُ عَلَى الْمَاءِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: قَالَ يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ: الْعَمَاءُ: أَيْ لَيْسَ مَعَه شَيْء

5725. अबू रजीन रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! जब रब तआला ने अपने मखलूक को पैदा फ़रमाया तो उस से पहले वह कहाँ था? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अबरा में उस के नीचे हवा थी, और उस के ऊपर हवा थी, और उस ने अपना अर्श पानी पर तखलीक फ़रमाया”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यज़ीद बिन हारून ने कहा अमाअ से मुराद है उस के साथ कोई चीज़ नहीं थी| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ الترمذی (3109) * وکیع بن عدس : حسن الحدیث وثقه الجمھور

٥٧٢٦ - (ضَعِيف) وَعَن»» العبَّاس بن عبد الْمطلب زعم أَنَّهُ كَانَ جَالِسًا فِي الْبَطْحَاءِ فِي عِصَابَةٍ وَرَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَالِسٌ فِيهِمْ فَمَرَّتْ سَحَابَةٌ فَنَظَرُوا إِلَيْهَا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا تُسَمُّونَ هَذِهِ؟» . قَالُوا: السَّحَابَ. قَالَ: «وَالْمُزْنَ؟» قَالُوا: وَالْمُزْنَ. قَالَ: «وَالْعَنَانَ؟» قَالُوا: وَالْعَنَانَ. قَالَ: «هَلْ تَدْرُونَ مَا بعد مابين السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ؟ [ص:١٥٩» قَالُوا: لَا نَدْرِي. قَالَ: «إِنَّ بُعْدَ مَا بَيْنَهُمَا إِمَّا وَاحِدَةٌ وَإِمَّا اثْنَتَانِ أَوْ ثَلَاثٌ وَسَبْعُونَ سَنَةً وَالسَّمَاءُ الَّتِي فَوْقَهَا كَذَلِكَ» حَتَّى عَدَّ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ. ثُمَّ «فَوْقَ السَّمَاء السَّابِعَة بَحر بَين أَعْلَاهُ وأسفله مَا بَيْنَ سَمَاءٍ إِلَى سَمَاءٍ ثُمَّ فَوْقَ ذَلِكَ ثَمَانِيَة أَو عَال بَيْنَ أَظْلَافِهِنَّ وَوُرُكِهِنَّ مِثْلُ مَا بَيْنَ سَمَاءٍ إِلَى سَمَاءٍ ثُمَّ عَلَى ظُهُورِهِنَّ الْعَرْشُ بَيْنَ أَسْفَلِهِ وَأَعْلَاهُ مَا بَيْنَ سَمَاءٍ إِلَى سَمَاءٍ ثُمَّ اللَّهُ فَوْقَ ذَلِكَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد

5726. अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है उन्होंने नकल किया के वह बतहा में एक जमाअत के साथ बैठें हुए थे, और रसूलुल्लाह ﷺ उनमें तशरीफ़ फरमा थे, इतने में बादल का एक टुकड़ा गुज़रा तो उन्होंने उसकी तरफ देखा, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम उसे क्या नाम देते हो?” उन्होंने अर्ज़ किया,: “अल साहब‘‘, फ़रमाया: “अल मज़न‘‘, उन्होंने अर्ज़ किया,: “अल मज़न” आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल अनान”

उन्होंने अर्ज़ किया,: “अल अनान” आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम जानते हो के आसमान और ज़मीन के दरमियान कितनी मुसाफ़त है?” उन्होंने अर्ज़ किया, हम नहीं जानते, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इन दोनों के दरमियान या तो इकहत्तर या बहत्तर या तिहत्तर साल की मुसाफ़त है, और आसमान जो उस के ऊपर है किस तरह है”, हत्ता के आप ﷺ ने सातों आसमान गिने”, फिर सातवें आसमान के ऊपर एक समुन्दर है, ऊपर वाले और निचले हिस्से के दरमियान उतनी ही मुसाफ़त है, जैसे आसमान से दूसरे आसमान तक, फिर उस के ऊपर आठ फ़रिश्ते हैं जो पहाड़ी बकरियों की शकल के हैं उन के खुड़ो और सुरिन के दरमियान इतना फासला है जितना आसमान से आसमान तक है, फिर उनकी पुश्तो पर अर्श है, उस के निचले और ऊपर वाले हिस्से के दरमियान इतना फासला है जितना आसमान से दूसरे आसमान के दरमियान फासला है, फिर उस के ऊपर अल्लाह है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3320 وقال : حسن غريب) و ابوداؤد (4723) [و ابن ماجه (193)] * سماک اختلط ولم يحدث به قبل اختلاطه و عبدالله بن عميرة لايعرف له سماع من الاحنف كما قال البخاری رحمه الله

٥٧٢٧ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ قَالَ: أَتَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَعْرَابِيٌّ فَقَالَ: جَهِدَتِ الْأَنْفُسُ وَجَاعَ الْعِيَالُ وَنُهِكَتِ الْأَمْوَالُ وَهَلَكَتِ الْأَنْعَام فَاسْتَسْقِ اللَّهَ لَنَا فَإِنَّا نَسْتَشْفِعُ بِكَ عَلَى الله نستشفع بِاللَّهِ عَلَيْكَ. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «سُبْحَانَ اللَّهِ سُبْحَانَ اللَّهِ» . فَمَا زَالَ يسبّح حَتَّى عُرف ذَلِك فِي وُجُوه أَصْحَابه ثُمَّ قَالَ: «وَيْحَكَ إِنَّهُ لَا يُسْتَشْفَعُ بِاللَّهِ عَلَى أَحَدٍ شَأْنُ اللَّهِ أَعْظَمُ مِنْ ذَلِكَ وَيْحَكَ أَتَدْرِي مَا اللَّهُ؟ إِنَّ عَرْشَهُ عَلَى سَمَاوَاتِهِ لَهَكَذَا» وَقَالَ بِأَصَابِعِهِ مَثْلَ الْقُبَّةِ عَلَيْهِ «وإنه ليئط أطيط الرحل بالراكب» رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5727. जुबेर बिन मुतअम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आराबी रसूलुल्लाह ﷺ के पास आया तो उस ने अर्ज़ किया, जाने मशक्क़त में पड़ गई, बाल बच्चे भूख का शिकार हो गए, अमवाल ख़तम हो गए और जानवर हलाक हो गए, आप अल्लाह से हमारे लिए बारिश की दुआ फरमाइए, हम आप के ज़रिए अल्लाह से सिफारिश करते हैं और अल्लाह के ज़रिए आप से सिफारिश करते हैं, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “(سُبْحَانَ اللهِ) सुबहानल्लाह, (سُبْحَانَ اللهِ) सुबहानल्लाह!‘‘ आप मुसलसल तस्बीह बयान करते रहे हत्ता के यह चीज़ आप के सहाबा के चेहरो से मालुम होने लगी, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुझ पर अफ़सोस है, किसी पर अल्लाह को सिफारिशी नहीं बनाया जाता, अल्लाह की शान उस से अज़ीम तर है, तुझ पर अफ़सोस है, क्या तुम जानते हो अल्लाह (की अज़मत व किब्रियाई) क्या है? बेशक उस का अर्श उस के आसमानों पर इस तरह है”, और आप ﷺ ने अपने उंगलियों से इरशाद फ़रमाया जैसे उस पर कुब्बा (गुंबज) हो”, वह इस वजह से इस तरह आवाज़ निकालता है जिस तरह सवार की वजह से पालान आवाज़ निकालता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4726) * محمد بن اسحاق مدلس و عنعن و جبير بن محمد : مستور ، لم يوثقه غير ابن حبان

٥٧٢٨ - (صَحِيح) وَعَنْ»» جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أُذِنَ لِي أَنْ أُحَدِّثَ عَنْ مَلَكٍ مِنْ مَلَائِكَةِ اللَّهِ مِنْ حَمَلَةِ الْعَرْشِ أَنَّ مَا بَيْنَ شحمة أُذُنَيْهِ إِلَى عَاتِقَيْهِ مَسِيرَةُ سَبْعِمِائَةِ عَامٍ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5728. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुझे इजाज़त दी गई की मैं अल्लाह के फरिश्तो में से एक फ़रिश्ते का ज़िक्र करू जो हामिलिने अर्श में से है, उस के कानों की लो और उस के कंधो के दरमियान सातसो साल की मुसाफ़त है”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (4727)

٥٧٢٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن زُرَارَة»» بن أوفى أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِجِبْرِيلَ: " هَلْ رَأَيْتَ رَبَّكَ؟ فَانْتَفَضَ جِبْرِيلُ وَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ إِنَّ بَيْنِي وَبَيْنَهُ سَبْعِينَ حِجَابًا مِنْ نُورٍ لَوْ دَنَوْتُ مِنْ بَعْضِهَا لاحترقت «. هَكَذَا فِي» المصابيح "

5729. ज़ुरारत बिन अव्फी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने जिब्राइल अलैहिस्सलाम से पूछा: “क्या तुम ने अपने रब को देखा है?”, (इस सवाल से) जिब्राइल अलैहिस्सलाम लरज़ गए और फ़रमाया: मुहम्मद! मेरे और उस के दरमियान नूर के सत्तर पर्दे हैं, अगर में इन में से किसी के करीब चला जाऊ तो मैं जल जाऊ”| अल मसाबिह में इस तरह है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، و ذكره البغوى فى مصابيح السنة (4 / 30) [و ابو الشيخ فى العظمة (2 / 677678) و الدارمى (فى الرد على المريسى ص 172)] * السند صحيح الى زرارة رحمه الله و لكنه : مرسل

٥٧٣٠ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَاهُ أَبُو»» نُعَيْمٍ فِي «الْحِلْيَةِ» عَنْ أَنَسٍ إِلَّا أَنه لم يذكر: «فانتفض جِبْرِيل»

5730. अबू नुअयम ने इसे हिलियत में अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है, अलबत्ता उन्होंने ज़िक्र नहीं किया: “जिब्राइल अलैहिस्सलाम लरज़ गए”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابو نعيم فى حلية الاولياء (5 / 55) * فيه ابو مسلم قائد الاعمش : ضعيف و الاعمش مدلس و عنعن ان صح السند اليه

٥٧٣١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ»» عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ خَلَقَ إِسْرَافِيلَ مُنْذُ يَوْمَ خَلْقَهُ صَافًّا قَدَمَيْهِ لَا يَرْفَعُ بَصَرَهُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ الرَّبِّ تَبَارَكَ وَتَعَالَى سَبْعُونَ نورا مَا مِنْهَا من نورٍ يدنو مِنْهُ إِلاّ احْتَرَقَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَصَححهُ

5731. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह ने इस्राफील अलैहिस्सलाम को पैदा फ़रमाया, उस ने जिस रोज़ से इसे पैदा फ़रमाया वह इस वक़्त से अपने कदमो पर खड़ा है और वह अपने नज़र तक नहीं उठाता, उस के और उस के रब तबारक व तआला के दरमियान सत्तर नूर है, जो

इस नूर के करीब जाता है तो वह जल जाता है"| तिरमिज़ी, और उन्होंने इसे सहीह करार दिया है| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه الترمذی (لم اجده) [و رواه الطبرانی فی الکبیر (11 / 379380 ح 12061) و البیھقی فی شعب الایمان (157 ، نسخۃ محققۃ : 155) و فی السند محمد بن عبد الرحمن بن ابی لیلی ضعیف مشھور ضعفه جمھور المحدثین و فی السند علة أخرى]

٥٧٣٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٌ»» أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " لَمَّا خَلَقَ اللَّهُ آدَمَ وَذُرِّيَّتَهُ قَالَتِ: الْمَلَائِكَةُ: يَا رَبِّ خَلَقْتَهُمْ يَأْكُلُونَ وَيَشْرَبُونَ وَيَنْكِحُونَ وَيَرْكَبُونَ فَاجْعَلْ لَهُمُ الدُّنْيَا وَلَنَا الْآخِرَةَ. قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: لَا أَجْعَلُ مَنْ خَلَقْتُهُ بيديَّ ونفخت فِيهِ مِنْ رُوحِي كَمَنْ قُلْتُ لَهُ: كُنْ فَكَانَ «. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي» شُعَبِ الْإِيمَانِ "

5732. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जब अल्लाह तआला ने आदम अलैहिस्सलाम और उसकी औलाद को पैदा फ़रमाया तो फरिश्तो ने अर्ज़ किया, रब जी! तूने उन्हें पैदा फ़रमाया है, वह खाते पीते, शादियाँ करते और सवारी करते हैं, और तो इन के लिए दुनिया मुकर्रर कर दे और हमारे लिए आखिरत मुकर्रर फरमादे, अल्लाह तआला ने फ़रमाया: में इस (मखलूक) को, जिसे मैंने अपने हाथो से तखलीक किया और उस में अपनीने रूह फूंकी, इसे में इस मखलूक के बराबर नहीं करूँगा जिसे मैंने कहा बन जा और वह बिन गई"| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ البیھقی فی شعب الایمان (149 ، نسخۃ محققۃ : 147) * ھشام بن عمار اختلط و الانصاری لم اعرفه وجاء تصریحه فی روایة جنید بن حکیم و لا یدری من ھو ؟ و عبد ربه بن صالح القرشی وثقه ابن حبان وحده فھو مجھول الحال

بَاب بدء الخلق وَذِكْرِ الْأَنْبِيَاءِ عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ • तखलीक की इब्तिदा और अंबिया अलैहिमुस्सलाम का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٥٧٣٣ - (ضَعِيف) عَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْمُؤْمِنُ أَكْرَمُ عَلَى اللَّهِ مِنْ بَعْضِ مَلَائِكَتِهِ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ

5733. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मोमिन अल्लाह के यहाँ बाज़ फरिश्तो से भी ज़्यादा मुअज्ज़ज़ है"| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف جدا ، رواہ ابن ماجه (3947) * فیه ابو المھزم : متروک

٥٧٣٤ - (صَحِيح) وَعَنْهُ»» قَالَ: أَخَذَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِيَدَيَّ فَقَالَ: «خلق الله الْبَرِّيَّة يَوْمَ السَّبْتِ وَخَلَقَ

فِيهَا الْجِبَالَ يَوْمَ الْأَحَدِ وَخلق الشّجر يَوْم الِاثْنَيْنِ وَخلق الْمَكْرُوه يَوْمَ الثُّلَاثَاءِ وَخَلَقَ النُّورَ يَوْمَ الْأَرْبِعَاءِ وَبَثَّ فِيهَا الدَّوَابَّ يَوْمَ الْخَمِيسِ وَخَلَقَ آدَمَ بَعْدَ الْعَصْرِ مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ فِي آخِرِ الْخَلْقِ وَآخِرِ سَاعَةٍ مِنَ النَّهَارِ فِيمَا بَيْنَ الْعَصْرِ إِلى اللَّيْل» . [ص:١٥٩ رَوَاهُ مُسلم

5734. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मेरा हाथ पकड़ कर फ़रमाया: “अल्लाह ने मिट्टी (ज़मीन) को हफ्ते के दिन पैदा फ़रमाया, इतवार के रोज़ उस में पहाड़ पैदा फरमाए, पीर के दिन दरख्त पैदा फरमाए, मकरूह चीज़े मंगल के दिन पैदा फरमाए, बुध के रोज़ नूर पैदा फ़रमाया, जुमेरात के रोज़ उस में चोपाये फेलाए और आदम अलैहिस्सलाम को जुमा के दिन असर के बाद मखलूक में सबसे आख़िर पर पैदा फ़रमाया, और दीन की आखिरी घड़ी असर और शाम के दरमियान है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (27 / 2789)، (7054)

٥٧٣٥ - (ضَعِيف) وَعَنْهُ»» قَالَ: بَيْنَمَا نَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَالِسٌ وَأَصْحَابُهُ إِذْ أَتَى عَلَيْهِمْ سَحَابٌ فَقَالَ نَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هَلْ تَدْرُونَ مَا هَذَا؟» . قَالُوا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: «هَذِهِ الْعَنَانُ هَذِهِ رَوَايَا الْأَرْضِ يَسُوقُهَا اللَّهُ إِلَى قَوْمٍ لَا يَشْكُرُونَهُ وَلَا يَدعُونَهُ» . ثمَّ قَالَ: «هَل تَدْرُونَ من فَوْقَكُمْ؟» قَالُوا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: «فَإِنَّهَا الرَّقِيعُ سَقْفٌ مَحْفُوظٌ وَمَوْجٌ مَكْفُوفٌ» . ثُمَّ قَالَ: «هَلْ تَدْرُونَ مَا بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهَا؟» قَالُوا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: «بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهَا خَمْسُمِائَةِ عَامٍ» ثُمَّ قَالَ: «هَلْ تَدْرُونَ مَا فَوْقَ ذَلِكَ؟» . قَالُوا: اللَّهُ ورسولُه أعلمُ. قَالَ: «سماءانِ بُعْدُ مَا بَيْنَهُمَا خَمْسُمِائَةِ سَنَةٍ» . ثُمَّ قَالَ كَذَلِكَ حَتَّى عَدَّ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ «مَا بَيْنَ كُلِّ سَمَاءَيْنِ مَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ» . ثُمَّ قَالَ: «هَلْ تَدْرُونَ مَا فَوْقَ ذَلِكَ؟» قَالُوا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: «إِنَّ فَوْقَ ذَلِكَ الْعَرْشُ وَبَيْنَهُ وَبَيْنَ السَّمَاءِ بُعْدُ مَا بَيْنَ السَّماءين» . ثُمَّ قَالَ: «هَلْ تَدْرُونَ مَا تَحْتَ ذَلِكَ؟» . قَالُوا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: «إِنَّ تَحْتَهَا أَرْضًا أُخْرَى بَيْنَهُمَا مَسِيرَةُ خَمْسِمِائَةِ سَنَةٍ» . حَتَّى [ص:١٥٩ عدَّ سَبْعَ أَرضين بَين كلِّ أَرضين مسيرَة خَمْسمِائَة سنة " قَالَ: «وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لَوْ أَنَّكُمْ دَلَّيْتُمْ بِحَبْلٍ إِلَى الْأَرْضِ السُّفْلَى لَهَبَطَ عَلَى اللَّهِ» ثُمَّ قَرَأَ (هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ وَهُوَ بِكُلِّ شيءٍ عليم)»» رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ. وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: قِرَاءَةُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْآيَةَ تَدُلُّ على أَنه أَرَادَ الهبط عَلَى عِلْمِ اللَّهِ وَقُدْرَتِهِ وَسُلْطَانِهِ وَعِلْمُ اللَّهِ وَقُدْرَتُهُ وَسُلْطَانُهُ فِي كُلِّ مَكَانٍ وَهُوَ عَلَى الْعَرْش كَمَا وصف نَفسه فِي كِتَابه

5735. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, इस असना में के नबी ﷺ और आप के सहाबा बैठें हुए थे की एक बादल आया तो अल्लाह के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम जानते हो के यह क्या है?” उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये अनान है? यह ज़मीन को सेराब करने वाला है, अल्लाह उस को इस कौम की तरफ हांक कर ले जाता है जो न तो उस का शुक्र अदा करते हैं और न उस से दुआ करते हैं”, फिर फ़रमाया: “क्या तुम जानते हो तुम्हारे ऊपर किया है?” उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ रकीअ (आसमान का नाम) एक महफ़ूज़ छत और थमी हुई मौज है”, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम जानते हो के तुम्हारे और उस के दरमियान कितना फासला है?” उन्होंने अर्ज़ किया: अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं, फ़रमाया: “तुम्हारे और उस के दरमियान पांच सौ साल की मुसाफ़त है”, फिर फ़रमाया: “क्या तुम जानते हो के उस के ऊपर क्या है?” उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं, फ़रमाया: “आसमान और इन दोनों के दरमियान पांच सौ साल की मुसाफ़त है”,

रावी बयान करता है की फिर आप ﷺ ने इसी तरह फ़रमाया हत्ता के आप ने सात आसमान गिने .” और हर दो आसमान के दरमियान उतनी ही मुसाफ़त है जितनी आसमान और ज़मीन के दरमियान है”, फिर फ़रमाया: “क्या तुम जानते हो उस के ऊपर क्या है?” उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस के ऊपर अर्श है? उस के और आसमान के दरमियान उतनी ही मुसाफ़त है जितनी दो आसमानों के दरमियान है”, फिर फ़रमाया: “क्या तुम जानते हो के तुम्हारे नीचे क्या है?” उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं, फ़रमाया: “वो ज़मीन है”, फिर फ़रमाया: “क्या तुम जानते हो उस के नीचे क्या है?” उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं, फ़रमाया: “उस के नीचे एक दूसरी ज़मीन है, इन दोनों के दरमियान पांच सौ साल की मुसाफ़त है” हत्ता के आप ﷺ ने सात ज़मीने शुमार की.” और हर दो ज़मीनों के दरमियान पांच सौ साल की मुसाफ़त है”, फिर फ़रमाया: “उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद ﷺ की जान है! अगर तुम नीचली ज़मीन की तरफ रस्सी लटकाओ तो वह अल्लाह के इल्म में है”, फिर आप ﷺ ने यह आयत तिलावत की: “वही अव्वल, वही आखिर, वही ज़ाहिर, वही बातिन है और वह हर चीज़ का इल्म रखता है”, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह ﷺ की कीराअते आयत उस पर दलालत करती हैं के आप ﷺ ने इरादा फ़रमाया के वह अल्लाह के इल्म, उसकी कुदरत और उसकी बादशाहत में गिरती है, और अल्लाह का इल्म व कुदरत और उसकी बादशाहत हर जगह पर है जबकि वह अर्श पर (मुस्तवी) है, जैसे के उस ने अपने मुतल्लिक अपने किताब में बयान फ़रमाया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (1 / 206207 ح 1770)و الترمذى (3298 وقال : غريب) * الحسن البصرى مدلس و عنعن و لبعض الحديث شواهد

٥٧٣٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ»» أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «كَانَ طُولُ آدَمَ سِتِّينَ ذِرَاعًا فِي سبع أَذْرع عرضا»

5736. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आदम अलैहिस्सलाम का तुल साठ हाथ और अर्ज़ सात हाथ था”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (2 / 535 ح 10926) * فيه على بن زيد بن جدعان : ضعيف مشهور

٥٧٣٧ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَيُّ الْأَنْبِيَاءِ كَانَ أَوَّلَ؟ قَالَ: «آدَمُ» . قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَنَبِيٌّ كَانَ؟ قَالَ: «نَعَمْ نَبِيٌّ مُكَلَّمٌ» . قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ كم الْمُرْسَلُونَ؟ قَالَ: «ثَلَاثِمِائَة وبضع عشر جماً غفيراً»»» وَفِي رِوَايَة عَنْ أَبِي أُمَامَةَ قَالَ أَبُو ذَرٍّ: قَلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ كَمْ وَفَاءُ عِدَّةِ الْأَنْبِيَاءِ؟ قَالَ: «مِائَةُ أَلْفٍ وَأَرْبَعَةٌ وَعِشْرُونَ أَلْفًا الرُّسُلُ مِنْ ذَلِكَ ثَلَاثُمِائَةٍ وَخَمْسَةَ عَشَرَ جَمًّا غَفِيرًا»

5737. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! सबसे पहले नबी कौन थे? आप ﷺ ने फ़रमाया: “आदम (अस)”| मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! क्या वह नबी थे? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ, ऐसे नबी थे जिन पर सहिफा नाज़िल किया गया था”, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! रसूल कितने थे?

आप ﷺ ने फ़रमाया: “तीन सौ और दस से कुछ ऊपर का कुछ ज़्यादा था”, और अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु की रिवायत में है, अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! अंबिया अलैहिस्सलाम की कुल तादाद कितनी है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “एक लाख चोबीस हज़ार, उनमें से रसूलो की तादाद तीन सौ पन्द्रह एक कुछ ज़्यादा हैं”। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (5 / 178 ح 21879) * فيه عبيد بن خشخاش لين و ابو عمر الدمشقى : ضعيف0 رواية ابى امامة : سنده ضعيف جدًا ، رواها احمد (5 / 265 ، 266 ح 22644) فيه على بن يزيد الالهانى ضعيف جدًا و معان بن رفاعة ضعيف

٥٧٣٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ»» ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَيْسَ الْخَبَرُ كَالْمُعَايَنَةِ إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى أَخْبَرَ مُوسَى بِمَا صَنَعَ قَوْمُهُ فِي الْعِجْلِ فَلَمْ يُلْقِ الْأَلْوَاحَ فَلَمَّا عَايَنَ مَا صَنَعُوا أَلْقَى الْأَلْوَاحَ فَانْكَسَرَتْ. رَوَى الْأَحَادِيث الثَّلَاثَة أَحْمد

5738. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “खबर, मुशाह्दे की तरह नहीं होती, क्योंकि अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम को उनकी कौम के बछड़े को माबूद बनाने के मुतल्लिक बताया तो उन्होंने अल्वाह (तख्तियां) नहीं फेंकी, जब उन्होंने अपने आंखो से देख लिया जो उन्होंने किया था, तो उन्होंने तख्तिया फेंक दी और वह टूट गई”, तीनो (बल्के चारों) अहादीस को इमाम अहमद रहिमहुल्लाह ने नकल किया है। (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (1 / 271 ح 2447 و 1 / 215 ح 1842) [و صححه ابن حبان (الموارد : 20872088) و الحاكم (2 / 321 ح 3250 ، 2 / 380 ح 3435) على شرط الشيخين و وافقه الذهبى و سنده صحيح] * هشيم بن بشير عنعن و لكن تابعه ابو عوانة و به صح الحديث

بَابُ فَضَائِلِ سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ • सय्यदुल मुरसलीन ﷺ के फ़ज़ाइल व मनाकिब का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٥٧٣٩ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «بُعِثْتُ مِنْ خَيْرِ قُرُونِ بَنِي آدَمَ قَرْنًا فَقَرْنًا حَتَّى كُنْتُ من القرنِ الَّذِي كنتُ مِنْهُ» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

5739. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मैं औलादे आदम के बेहतरीन तबकात से होता हुआ इस तबके में पहुंचा हो जिस में मैं पैदा हुआ हूँ"| (बुखारी)

رواه البخارى (3557)

٥٧٤٠ - (صَحِيح) وَعَنْ وَاثِلَةَ بْنِ الْأَسْقَعِ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَى كِنَانَةَ مِنْ وَلَدِ إِسْمَاعِيلَ وَاصْطَفَى قُرَيْشًا مِنْ كِنَانَةَ وَاصْطَفَى مِنْ قُرَيْشٍ بَنَى هَاشِمٍ وَاصْطَفَانِي مِنْ بَنِي هَاشِمٍ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ»» وَفِي رِوَايَةٍ لِلتِّرْمِذِيِّ: «إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَى مِنْ ولد إِبْرَاهِيم إِسْمَاعِيل وَاصْطفى من ولد إِسْمَاعِيل بني كنَانَة»

5740. वासिला बिन अस्कअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "अल्लाह ने औलादे इस्माइल अलैहिस्सलाम में से किनानाह को मुन्तखब फ़रमाया, किनानाह में से कुरैश को, कुरैश में से बनू हाशिम को और बनू हाशिम में से मुझे मुन्तखब फ़रमाया"| और तिरमिज़ी की रिवायत में है: "अल्लाह तआला ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम की औलाद में से इस्माइल अलैहिस्सलाम को मुन्तखब फ़रमाया और इस्माइल अलैहिस्सलाम की औलाद में से बनू किनानाह को"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (1 / 2276)، (5938) و الترمذى (3606)

٥٧٤١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَنَا سَيِّدُ وَلَدِ آدَمَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَأَوَّلُ مَنْ يَنْشَقُّ عَنْهُ الْقَبْرُ وَأَوَّلُ شَافِعٍ وَأَوَّلُ مُشَفَّعٍ ". رَوَاهُ مُسْلِمٌ

5741. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "रोज़ ए कियामत आदम अलैहिस्सलाम की औलाद का सरदार में होगा, सबसे पहले मुझे कब्र से उठाया जाएगा, सबसे पहले में सिफारिश करूँगा और सबसे पहले मेरी सिफारिश कबूल की जाएगी"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (3 / 2278)، (5940)

٥٧٤٢ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَنَا أَكْثَرُ الْأَنْبِيَاءِ تَبَعًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَأَنَا أَوَّلُ مَنْ يَقْرَعُ بَابَ الجنةِ» . رَوَاهُ مُسلم

5742. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "रोज़ ए कियामत तमाम अंबिया अलैहिस्सलाम से मेरे मुत्तबीइन ज़्यादा होंगे और बाब जन्नत पर सबसे पहले में दस्तक दूंगा"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (331 / 196)، (484)

٥٧٤٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " آتِي بَابَ الْجَنَّةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَأَسْتَفْتِحُ فَيَقُولُ الْخَازِنُ: مَنْ أَنْتَ؟ فَأَقُولُ: مُحَمَّدٌ. فيقولُ: بكَ أمرت أَن لاأفتح لأحد قبلك ". رَوَاهُ مُسلم

5743. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "कियामत के दिन में जन्नत के दरवाज़े पर आऊंगा और उस के खोलने का मुतालबा करूँगा तो मुहाफ़िज़ पूछेगा: आप कौन है? में कहूँगा: मुहम्मद ﷺ वह अर्ज़ करेगा: आप ही के मुतल्लिक मुझे हुक्म दिया गया था के आप से पहले किसी के लिए (इसे) न खोलो"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (333 / 197)، (486)

٥٧٤٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَنَا أَوَّلُ شَفِيعٍ فِي الْجَنَّةِ لَمْ يُصَدَّقْ نَبِيٌّ مِنَ الْأَنْبِيَاءِ مَا صُدِّقْتُ وَإِنَّ مِنَ الْأَنْبِيَاءِ نَبِيًّا مَا صَدَّقَهُ مِنْ أُمَّته إِلَّا رجل وَاحِد» . رَوَاهُ مُسلم

5744. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मैं जन्नत में (दाखिले के लिए) सबसे पहले सिफारिश करूँगा, तमाम अंबिया अलैहिस्सलाम में से मेरी तस्दीक करने वाले ज़्यादा होंगे, बिला शुबा अंबिया अलैहिस्सलाम में से कोई ऐसा नबी भी होगा जिस की, उसकी उम्मत में से सिर्फ एक आदमी ने तस्दीक की होगी"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (332 / 196)، (485)

٥٧٤٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَثَلِي وَمَثَلُ الْأَنْبِيَاءِ كَمَثَلِ قَصْرٍ أَحْسِنَ بُنْيَانُهُ تُرِكَ مِنْهُ مَوضِع لبنة فَطَافَ النظَّارُ يتعجَّبونَ من حُسنِ بنيانِه إِلَّا مَوْضِعَ تِلْكَ اللَّبِنَةِ فَكُنْتُ أَنَا سَدَدْتُ مَوْضِعَ اللَّبِنَةِ خُتِمَ بِيَ الْبُنْيَانُ وَخُتِمَ بِي الرُّسُلُ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «فَأَنَا اللَّبِنَةُ وَأَنَا خَاتَمُ النَّبِيِّينَ» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5745. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मेरे और दूसरे अंबिया अलैहिस्सलाम की मिसाल इस तरह है जैसे एक महल हो जिसे बेहतरीन अंदाज़ में तामीर किया गया हो, लेकिन

एक ईंट की जगह छोड़ दी गई हो, देखने वाले उस के गिर्द चक्कर लगाते है और इस ईंट की जगह के अलावा उस के हुस्ने तामीर पर ताज्जुब में पड़ जाते हैं, वह मैं था जिस ने इस ईंट की जगह को पूरा किया, मेरे साथ ही तामीर मुकम्मल कर दी गई और मेरे साथ ही रिसालत भी मुकम्मल कर दी गई", एक दूसरी रिवायत में है: "मैं ही वह ईंट हूँ और मैं ही खातमन नबीय्यीन हो"। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3534 و الرواية الثانية : 3535) و مسلم (21 ، 20 / 2286، (5960) و الرواية الثانية 22 / 2286)، (5961)

٥٧٤٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا مِنَ الْأَنْبِيَاءِ مِنْ نَبِيٍّ إِلَّا قَدْ أَعْطِيَ مِنَ الْآيَاتِ مَا مِثْلُهُ آمَنَ عَلَيْهِ الْبَشَرُ وَإِنَّمَا كَانَ الَّذِي أُوتِيتُ وَحْيًا أَوْحَى اللَّهُ إِلَيَّ وَأَرْجُو أَنْ أَكُونَ أَكْثَرَهُمْ تَابِعًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5746. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तमाम अंबिया अलैहिस्सलाम को मोअजिज़ात अता किए गए जिन के मुताबिक इंसान इन पर ईमान लाए, और जो मुझे अता किया गया वह वही (यानी कुरान) है, अल्लाह ने मेरी तरफ वही भेजी, मैं उम्मीद करता हूँ कि रोज़ ए कियामत उन (अंबिया (अस)) से मेरे मुत्तबीइन ज़्यादा होंगे"। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (4981) و مسلم (239 / 152)، (385)

٥٧٤٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " أَعْطِيتُ خَمْسًا لَمْ يُعْطَهُنَّ أَحَدٌ قَبْلِي: نُصِرْتُ بِالرُّعْبِ مَسِيرَةَ شَهْرٍ وَجُعِلَتْ لِيَ الْأَرْضُ مَسْجِدًا وَطَهُورًا فَأَيُّمَا رَجُلٍ مِنْ أُمَّتِي أدركتْه الصَّلاةُ فليُصلِّ وأُحلَّتْ لي المغانمُ وَلَمْ تَحِلَّ لِأَحَدٍ قَبْلِي وَأَعْطِيتُ الشَّفَاعَةَ وَكَانَ النَّبِيُّ يُبْعَثُ إِلَى قَوْمِهِ خَاصَّةً وَبُعِثْتُ إِلَى النَّاسِ عامَّةً ". مُتَّفق عَلَيْهِ

5747. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मुझे पांच चीज़े अता की गई है, जो मुझ से पहले किसी को अता नहीं की गई, एक महीने की मुसाफ़त से रोब के ज़रिए मेरी मदद की गई है, तमाम ज़मीन मेरे लिए सजदाह गाह और पाक बना दी गई है, मेरे उम्मती को जहाँ भी नमाज़ का वक़्त हो जाए तो वह वहीँ नमाज़ पढ़ ले, मेरे लिए माले गनीमत हलाल कर दिया गया है जबकि मुझ से पहले वह किसी के लिए हलाल नहीं था, मुझे शफाअत अता की गई है और हर नबी अपनी अपनी कौम के लिए मबउस किया जाता था जबकि मुझे उमूमी तौर पर तमाम इंसानों के लिए मबउस किया गया है"। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (335) و مسلم (3 / 521)، (1163)

٥٧٤٨ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " فُضِّلْتُ عَلَى الْأَنْبِيَاءِ بِسِتٍّ: أَعْطِيتُ جَوَامِعَ الْكَلِمِ وَنُصِرْتُ بِالرُّعْبِ وَأُحِلَّتْ لِيَ الْغَنَائِمُ وَجُعِلَتْ لِيَ الْأَرْضُ مَسْجِدًا وَطَهُورًا وَأُرْسِلْتُ إِلَى الْخَلْقِ كَافَّةً وَخُتِمَ بِيَ النَّبِيُّونَ ". رَوَاهُ مُسلم

5748. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुझे दूसरे अंबिया अलैहिस्सलाम पर छे चीजों से फ़ज़ीलत अता की गई हैं, मुझे जामेअ कलाम (बात मुख़्तसर, मफ्हुम ज़्यादा) अता किए गए है, रॉब के ज़रिए मेरी मदद की गई है, माले गनीमत मेरे लिए हलाल किया गया है, मेरे लिए तमाम ज़मीन सजदाह गाह और पाक करार दी गई है, मुझे तमाम मखलूक की तरफ भेजा गया है और मुझ पर नबूवत का सिलसिला ख़तम कर दिया गया है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (5 / 523)، (1167)

٥٧٤٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «بُعِثْتُ بِجَوَامِعِ الْكَلِمِ وَنُصِرْتُ بِالرُّعْبِ وبَينا أَنا نائمٌ رأيتُني أُوتيتُ بِمَفَاتِيحِ خَزَائِنِ الْأَرْضِ فَوُضِعَتْ فِي يَدِي» مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

5749. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुझे जामेअ कलाम के साथ मबउस किया गया है, रॉब के ज़रिए मेरी मदद की गई है, और इस दौरान के में सोया हुआ था मैंने ख्वाब में देखा के मुझे ज़मीन के खज़ानो की चाबियां अता की गई हैं, और उन्हें मेरे हाथ में रख दिया गया है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (122) و مسلم (6 / 523)، (1171)

٥٧٥٠ - (صَحِيح) وَعَنْ»» ثَوْبَانَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ اللَّهَ زَوَى لِيَ الْأَرْضَ فَرَأَيْتُ مَشَارِقَهَا وَمَغَارِبَهَا وَإِنَّ أُمَّتِي سَيَبْلُغُ مُلْكُهَا مَا زُوِيَ لِي مِنْهَا وَأُعْطِيتُ الْكَنْزَيْنِ: الْأَحْمَرَ وَالْأَبْيَضَ وَإِنِّي سَأَلْتُ رَبِّي لِأُمَّتِي أَنْ لَا يُهْلِكَهَا بِسَنَةٍ عَامَّةٍ وَأَنْ لَا يُسَلِّطَ عَلَيْهِمْ عَدُوًّا مِنْ سِوَى أَنْفُسِهِمْ فَيَسْتَبِيحَ بَيْضَتَهُمْ وإِنَّ ربِّي قَالَ: يَا محمَّدُ إِذَا قَضَيْتُ قَضَاءً فَإِنَّهُ لَا يُرَدُّ وَإِنِّي أَعْطَيْتُكَ لِأُمَّتِكَ أَنْ لَا أُهْلِكَهُمْ بِسَنَةٍ عَامَّةٍ وأنْ لَا أُسلطَ عَلَيْهِم عدُوّاً سِوَى أَنْفُسِهِمْ فَيَسْتَبِيحَ بَيْضَتَهُمْ وَلَوِ اجْتَمَعَ عَلَيْهِمْ مَنْ بِأَقْطَارِهَا حَتَّى يَكُونَ بَعْضُهُمْ يُهْلِكُ بَعْضًا وَيَسْبِي بَعضهم بَعْضًا ". رَوَاهُ مُسلم

5750. सौबान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह ने मेरे लिए ज़मीन को समेट दिया तो मैंने उस के म्शारिक व मगारिब को देख लिया, और जिस क़दर ज़मीन मेरे लिए समेट दी गई वहां तक मेरी उम्मत की हुकूमत पहुंचेगी, मुझे दो खज़ाने अता किए गए, सुर्ख और सफ़ेद, मैंने अपने रब से दरख्वास्त की के वह आम कहत साली के ज़रिए इसे हलाक न करे, उन के बाहमी दुश्मनों के सिवा किसी और दुश्मन को इन पर मुसल्लत न करे के वह उनका मरकज़ (सदर मकाम) तबाह कर दे और बिला शुबा मेरे रब ने फ़रमाया: ए मुहम्मद! जब कोई फैसला कर लेता हूँ तो वह टल नहीं सकता मैंने आप को आप की उम्मत के बारे में यह अहद दे दिया के में उसे कहत साली में मुब्तिला कर के तबाह नहीं करूँगा, यह भी अहद दे दिया के इन पर उन के बाहमी दुश्मन के अलावा कोई ऐसा दुश्मन उस पर मुसल्लत नहीं करूँगा जो उन के मरकज़ को तबाह कर दे, अगरचे उन के तमाम दुश्मन मुत्तहिद हो कर इन पर हमला कर दे अलबत्ता वह आपस में एक दूसरे को हलाक करेंगे और कैदी बनाएंगे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (19 / 2889)، (7258)

٥٧٥١ - (صَحِيح) وَعَنْ»» سَعْدٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرَّ بِمَسْجِدِ بَنِي مُعَاوِيَةَ دَخَلَ فَرَكَعَ فِيهِ رَكْعَتَيْنِ وَصَلَّيْنَا مَعَهُ وَدَعَا رَبَّهُ طَوِيلًا ثُمَّ انْصَرَفَ فَقَالَ: «سَأَلْتُ رَبِّي ثَلَاثًا فَأَعْطَانِي ثِنْتَيْنِ وَمَنَعَنِي وَاحِدَةً سَأَلْتُ رَبِّي أَنْ لَا يُهْلِكَ أُمَّتِي بِالسَّنَةِ فَأَعْطَانِيهَا وَسَأَلْتُهُ أَنْ لَا يُهْلِكَ أُمَّتِي بِالْغَرَقِ فَأَعْطَانِيهَا وَسَأَلْتُهُ أَنْ لَا يَجْعَلَ بأسهم بَينهم فَمَنَعَنِيهَا» . رَوَاهُ مُسلم

5751. साअद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ बनू मुआविया की मस्जिद के पास से गुज़रे तो आप उस में तशरीफ़ ले गए, आप ने वहां दो रकते पढ़ाइ और हमने भी आप के साथ (दो रकअते) पढ़ी, आप ﷺ ने अपने रब से तवील दुआ की, और जब उस से फारिग़ हुए तो फ़रमाया: “मैंने अपने रब से तीन चीज़े मांगी थी, उस ने मुझे दो अता फरमादी और एक से मुझे रोक दिया, मैंने अपने रब से सवाल किया था के वह मेरी उम्मत को कहत के साथ हलाक न करे, उस ने यह चीज़ मुझे अता फरमा दी, मैंने उस से यह सवाल किया के वह मेरी उम्मत को गर्क के ज़रिए हलाक न करे तो उस ने यह भी मुझे अता कर दी, और मैंने उस से सवाल किया के वह उनमें बाहम लड़ाई पैदा न करे तो उस से मुझे रोक दिया गया”। (मुस्लिम)

رواه مسلم (20 / 2890)، (7260)

٥٧٥٢ - (صَحِيح) وَعَنْ»» عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ قَالَ: لَقِيتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قُلْتُ: أَخْبِرْنِي عَنْ صِفَةُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي التَّوْرَاةِ قَالَ: أَجَلْ وَاللَّهِ إِنَّهُ لموصوف بِبَعْض صفته فِي القرآن: (يَا أَيُّها النبيُّ إِنَّا أرسلناكَ شَاهدا ومُبشِّراً وَنَذِيرا)»» وحِرْزا [ص: ١٦٠ للأُمِّيِّينَ أَنْت بعدِي وَرَسُولِي سَمَّيْتُكَ الْمُتَوَكِّلَ لَيْسَ بِفَظٍّ وَلَا غَلِيظٍ وَلَا سَخَّابٍ فِي الْأَسْوَاقِ وَلَا يَدْفَعُ بِالسَّيِّئَةِ السَّيِّئَةَ وَلَكِنْ يَعْفُو وَيَغْفِرُ وَلَنْ يَقْبِضَهُ اللَّهُ حَتَّى يُقِيمَ بِهِ الْمِلَّةَ الْعَوْجَاءَ بِأَنْ يَقُولُوا: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَيَفْتَحُ بِهَا أَعْيُنًا عُمْيًا وَآذَانًا صُمًّا وَقُلُوبًا غُلْفًا. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

5752. अता इब्ने यस्सार रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रदियल्लाहु अन्हु से मुलाकात की, मैंने कहा: मुझे रसूलुल्लाह ﷺ की इस सिफत के मुतल्लिक बताइए जो तौरात में मजकूर है, उन्होंने ने फ़रमाया: ठीक है, अल्लाह की क़सम! आप की जो सिफात कुरआन ए करीम में है, उनमें से बाज़ तौरात में मजकूर है, जैसे के: “ए नबी! हमने आप को खुशखबरी सुनाने वाला, डराने वाला और अनपढ़ो (अरबों) की हिफाज़त करने वाला बना कर भेजा है, आप मेरे बंदे और मेरे रसूल है, मैंने आप का नाम मतुकल रखा है, आप न तो बदअख़लाक़ है और न सख्त दिल है, आप बाज़ारों में शोरोगुल करने वाले हैं न बुराई का जवाब बुराई से देते है, बल्कि आप दरगुज़र करते हैं, मुआफ़ करते हैं, और अल्लाह उनकी रूह कब्ज़ नहीं करेगा हत्ता के वह उन के ज़रिए टेढ़ी मिल्लत को सीधा करा ले, और वह “لا الله الا الله” का इकरार कर ले और वह इस (कलमे) के ज़रिए अंधी आंखो को कुव्वते बिनाई, बहरे कानों को कुव्वत सुनना और गिलाफ में बंद दिलों को खोल देगा”। (बुखारी)

رواه البخاری (2125)

٥٧٥٣ - (صَحِيح) وَكَذَا»» الدَّارِمِيُّ عَنْ عَطَاءٍ عَنِ ابْنِ سَلَامٍ نَحْوَهُ»» وَذَكَرَ حَدِيثَ أَبِي هُرَيْرَةَ: «نَحْنُ الْآخِرُونَ» فِي «بَاب الْجُمُعَة»

5753. और इसी तरह दारमी ने अता अन इब्ने सलाम की सनद से इसी मिसल रिवायत किया है, और अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से मरवी हदीस ((نَحْنُ الْآخِرُونَ.....)) "نبَاب الْجُمُعَة (जुमे का बयान)" में ज़िक्र की गई है। (सहीह)

صحيح ، رواه الدارمى (1 / 5 ح 6) 0 حديث '' نحن الآخرون '' تقدم (1354)

بَابُ فَضَائِلِ سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ • सय्यदुल मुरसलीन ﷺ के फ़ज़ाइल व मनाकिब का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٥٧٥٤ - (صَحِيح) عَن»» خبَّابِ بنِ الأرتِّ قَالَ: صَلَّى بِنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَاةً فَأَطَالَهَا. قَالُوا: يَا رَسُولَ الله صلَّيتَ صَلَاةً لَمْ تَكُنْ تُصَلِّيهَا قَالَ: «أَجَلْ إِنَّهَا صَلَاةُ رَغْبَةٍ وَرَهْبَةٍ وَإِنِّي سَأَلْتُ اللَّهَ فِيهَا ثَلَاثًا فَأَعْطَانِي اثْنَتَيْنِ وَمَنَعَنِي وَاحِدَةً سَأَلْتُهُ أَنْ لَا يُهْلِكَ أُمَّتِي بِسَنَةٍ فَأَعْطَانِيهَا وَسَأَلْتُهُ أَنْ لَا يُسَلِّطَ عَلَيْهِمْ عَدُوًّا مِنْ غَيْرِهِمْ فَأَعْطَانِيهَا وَسَأَلْتُهُ أَنْ لَا يُذِيقَ بَعْضَهُمْ بَأْسَ بَعْضٍ فمنعَنيها» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ

5754. खबाब बिन अरत्त रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें नमाज़ पढ़ाई तो उसे तवील किया, सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप ने हमें नमाज़ पढ़ाई, जबकि आप ने ऐसी नमाज़ (पहले कभी) नहीं पढ़ाई थी, आप ﷺ ने फ़रमाया: "ठीक है, यह उम्मीद और खौफ वाली नमाज़ है, मेंने उस में अल्लाह तआला से तीन चीजों की दरख्वास्त की: उस ने मुझे दो अता फरमादे और एक से रोक दिया, मेंने उस से दरख्वास्त की के वह कहत के ज़रिए मेरी उम्मत को हलाक नहीं करेगा उस ने इसे सर्फे क़बूलियत बख्शा, मेंने उस से दरख्वास्त की के वह उन के अलावा किसी और दुश्मन को इन पर मुसल्लत नहीं करेगा, उस ने यह भी पूरी फरमा दिया, और मेंने उस से यह भी दरख्वास्त की के उनकी आपस में लड़ाई (खानाजंगी) न हो तो उस ने उस से मुझे रोक दिया"। (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (2175 وقال : حسن صحيح) و النسائى (3 / 216217 ح 1639)

٥٧٥٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» مَالِكٍ الْأَشْعَرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ أَجَارَكُمْ مِنْ ثَلَاثِ خِلَالٍ: أَنْ لَا يَدْعُوَ عَلَيْكُمْ نَبِيُّكُمْ فَتَهْلَكُوا جَمِيعًا وَأَنْ لَا يُظْهِرَ أَهْلَ الْبَاطِلِ على أهلِ الحقِّ وَأَن لَا تجتمِعوا على ضَلَالَة ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5755. अबू मालिक अशअरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अल्लाह अज्ज़वजल

ने तुम्हें तीन चीजों से महफ़ूज़ रखा है, तुम्हारा नबी तुम्हारे लिए यह बद्दुआ नहीं करेगा की तुम सब हलाक हो जाओ, अहले बातिल अहले हक़ पर ग़ालिब नहीं होंगे और तुम गुमराही पर इकठ्ठे नहीं होगे"। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4253) * فيه شريح عن ابى مالک رضی الله عنه ، وقال ابو حاتم الرازی :'' شريح بن عبيد عن ابى مالک الاشعری : مرسل '' (المراسيل ص 90 ت 327 ب)

٥٧٥٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَوْفِ»» بْنِ مَالِكٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَنْ يَجْمَعَ [ص:١٦٠ اللَّهُ عَلَى هَذِهِ الْأُمَّةِ سَيْفَيْنِ: سَيْفًا مِنْهَا وسَيفاً منْ عدُوِّها " رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5756. ऑफ बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अल्लाह इस उम्मत पर दो तलवारे जमा नहीं करेगा, एक उनकी अपनी तलवार और एक उस के दुश्मन की तलवार (यानी ऐसा नहीं होगा के मुसलमानों में खाना जंगी भी हो और दुश्मन भी इन पर हमलावर हो)"। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4301) * يحيى بن جابر : لم بلق عوف بن مالک رضی الله عنه فالسند منقطع

٥٧٥٧ - (صَحِيح) وَعَن»» الْعَبَّاس أَنَّهُ جَاءَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَأَنَّهُ سَمِعَ شَيْئًا فَقَامَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ: «مَنْ أَنَا؟» فَقَالُوا: أَنْتَ رَسُولُ اللَّهِ. فَقَالَ: «أَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ إِنَّ اللَّهَ خَلَقَ الْخَلْقَ فَجَعَلَنِي فِي خَيْرِهِمْ ثمَّ جعلهم فرقتَيْن فجعلني فِي خير فِرْقَةً ثُمَّ جَعَلَهُمْ قَبَائِلَ فَجَعَلَنِي فِي خَيْرِهِمْ قَبيلَة ثمَّ جعله بُيُوتًا فَجَعَلَنِي فِي خَيْرِهِمْ بَيْتًا فَأَنَا خَيْرُهُمْ نفسا وَخَيرهمْ بَيْتا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5757. अब्बास रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के वह (गुस्से की हालत में) नबी ﷺ की खिदमत में आए, गोया उन्होंने कुछ (नसब में तान) सुना था, नबी ﷺ मिम्बर पर खड़े हुए तो फ़रमाया: "मैं कौन हूँ ?" सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने अर्ज़ किया, आप अल्लाह के रसूल हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "मैं मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब हूँ, अल्लाह तआला ने मुझे उनमें से बेहतर गिरोह में पैदा फ़रमाया, फिर उस ने उन के कबिले बनाए तो मुझे उन सबसे बेहतर कबिले में पैदा फ़रमाया, फिर इनको घराने घराने बनाए तो मुझे उनमें से बेहतरीन घराने में पैदा फ़रमाया, मैं उन से नफ्स व हसब के लिहाज़ से भी बेहतर हूँ और उन के घराने के लिहाज़ से भी बेहतर हो"। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (36073608 وقال : حسن) * فيه يزيد بن ابى زياد : ضعيف مشهور

٥٧٥٨ - (صَحِيح) وَعَن»» أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَتَى وَجَبَتْ لَكَ النُّبُوَّةُ؟ قَالَ: «وَآدَمُ بَيْنَ الرُّوحِ وَالْجَسَدِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5758. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने अर्ज़ किया,

अल्लाह के रसूल! आप नबूवत के मंसब से कब नवाज़े गए आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब आदम अलैहिस्सलाम रूह और जिस्म के बिच में थे”| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (3609 وقال : حسن صحيح غريب) [و الفريابی فی کتاب القدر (14)] * يعنی انه صلی الله عليه و آله وسلم کان نبيًا فی التقدير قبل خلق آدم عليه السلام فالحديث متعلق بالتقدير ، لا بخلق رسول الله صلی الله عليه و آله وسلم فافهمه فانه مهم و الحديث الآتی يؤيد هذا التفسير

٥٧٥٩ - (صَحِيح) وَعَن»» العِرْباض بن ساريةَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَالَ: " إِنِّي عِنْدَ اللَّهِ مَكْتُوبٌ: خَاتَمُ النَّبِيِّينَ وَإِنَّ آدَمَ لِمُنْجَدِلٌ فِي طِينَتِهِ وَسَأُخْبِرُكُمْ بِأَوَّلِ أَمْرِي دَعْوَةُ إِبْرَاهِيمَ وَبِشَارَةُ عِيسَى وَرُؤْيَا أُمِّي الَّتِي رَأَتْ حِينَ وَضَعَتْنِي وَقَدْ خَرَجَ لَهَا نُورٌ أَضَاءَ لَهَا مِنْهُ قُصُورُ الشَّامِ «. وَرَاه فِي» شرح السّنة "

5759. इरबाज़ बिन सारीया रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं की आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं तो इस वक़्त से अल्लाह तआला के यहाँ खातमन नबीय्यीन लिखा हुआ हूँ जब आदम अलैहिस्सलाम अभी (ढाँचे की हालत में) मिट्टी की सूरत में पड़े हुए थे, और मैं अभी अपने मुआमले (यानी नबूवत) के बारे में तुम्हें बताता हूँ, मैं इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ, इसा अलैहिस्सलाम की बशारत और अपने वालिदा का वह ख्वाब हूँ जो उन्होंने मेरी पैदाइश के करीब देखा था के इन के लिए एक नूर ज़ाहिर हुआ जिस से शाम के महल्लात इन के सामने रोशन हो गए”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه البغوی فی شرح السنة (13 / 207 ح 3626) [و احمد (4 / 127 ح 17280 ، 4 / 128 ح 17281) و صححه ابن حبان (الموارد : 2093) و الحاکم (2 / 600) فتعقبه الذهبی ، قال :’’ ابوبکر (ابن ابی مريم) ضعيف ‘‘ قلت ؒلم ينفرد به ، بل تابعه الثقة معاوية بن صالح عن سعيد بن سويد عن ابن هلال السلمی عن العرباض بن سارية رضی الله عنه به و سنده حسن

٥٧٦٠ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ»» أَحْمَدُ عَنْ أَبِي أَمَامَةَ مِنْ قَوْلِهِ: «سأخبركم» إِلَى آخِره

5760. और इमाम अहमद ने इसे अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु से (سأخبركم) से लेकर आख़िर हदीस तक रिवायत किया है| (हसन)

حسن ، رواه احمد (5 / 262 ح 21616) و سنده ضعيف من اجل الفرج بن فضالة و الحديث السابق شاهد له وهو به حسن

٥٧٦١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَنَا سَيِّدُ وَلَدِ آدَمَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا فَخْرَ وَبِيَدِي لِوَاءُ الْحَمْدِ وَلَا فَخْرَ. وَمَا مِنْ نَبِيٍّ يَوْمَئِذٍ آدَمُ فَمَنْ سِوَاهُ إِلَّا تَحْتَ لِوَائِي وَأَنَا أَوَّلُ مَنْ تَنْشَقُّ عَنْهُ الْأَرْضُ وَلَا فَخْرَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5761. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैं रोज़ ए कियामत आदम

अलैहिस्सलाम की औलाद का सरदार होऊंगा और मैं यह अज़राहे फख्र नहीं कहता, हम्द का झंडा मेरे हाथ में होगा, और मैं यह बात अज़राहे फख्र नहीं कहता, इस रोज़ आदम अलैहिस्सलाम समेत तमाम अंबिया अलैहिस्सलाम मेरे झंडा तले होंगे, सबसे पहले मुझे कब्र से उठाया जाएगा, और मैं यह बात अज़राहे फख्र नहीं कहता"। (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (3148 وقال : حسن) * على بن زيد بن جدعان ضعيف و لاكثر الفاظ الحديث شواهد صحيحة وهى تغنى عن هذا الحديث

٥٧٦٢ - (ضَعِيف) وَعَن»» ابْن عَبَّاس قَالَ: جَلَسَ نَاسٌ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَخَرَجَ حَتَّى إِذَا دَنَا مِنْهُمْ سَمِعَهُمْ يَتَذَاكَرُونَ قَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّ اللَّهَ اتَّخَذَ إِبْرَاهِيمَ خَلِيلًا [ص:١٦٠ وَقَالَ آخَرُ: مُوسَى كَلَّمَهُ اللَّهُ تَكْلِيمًا وَقَالَ آخَرُ: فَعِيسَى كَلِمَةُ الله وروحه. وَقَالَ آخَرُ: آدَمُ اصْطَفَاهُ اللَّهُ فَخَرَجَ عَلَيْهِمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَالَ: «قَدْ سَمِعْتُ كَلَامَكُمْ وَعَجَبَكُمْ أَنَّ إِبْرَاهِيمَ خَلِيل الله وَهُوَ كَذَلِكَ وَآدَمُ اصْطَفَاهُ اللَّهُ وَهُوَ كَذَلِكَ أَلَا وَأَنَا حَبِيبُ اللَّهِ وَلَا فَخْرَ وَأَنَا حَامِلُ لِوَاءِ الْحَمْدِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ تَحْتَهُ آدَمُ فَمَنْ دُونَهُ وَلَا فَخْرَ وَأَنَا أَوَّلُ شَافِعٍ وَأَوَّلُ مُشَفَّعٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا فَخْرَ وَأَنَا أَوَّلُ مَنْ يُحَرِّكُ حَلَقَ الْجَنَّةِ فَيَفْتَحُ اللَّهُ لِي فَيُدْخِلُنِيهَا وَمَعِي فُقَرَاءُ الْمُؤْمِنِينَ وَلَا فَخْرَ وَأَنَا أَكْرَمُ الْأَوَّلِينَ وَالْآخَرِينَ عَلَى اللَّهِ وَلَا فخر» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ والدارمي

5762. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के कुछ सहाबा रदियल्लाहु अन्हु बैठें हुए थे, आप बाहर से तशरीफ़ लाए और उन के करीब हो गए तो आप ने उन्हें बाते करते हुए सुना, किसी ने कहा: अल्लाह तआला ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को खलील बनाया, दूसरे ने कहा: अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम से कलाम फ़रमाया, किसी और ने कहा: इसा अलैहिस्सलाम तो, वह अल्लाह का कलिमा और उसकी रूह है, किसी ने कहा आदम अलैहिस्सलाम को के अल्लाह ने उन्हें मुन्तखब फ़रमाया: इस दौरान रसूलुल्लाह ﷺ उन के पास पहुँच गए और फ़रमाया: "मैंने तुम्हारी बाते सुन ली है, और तुम्हारा ताज्जुब करना के इब्राहीम अलैहिस्सलाम अल्लाह के खलील है, और वह इसी तरह है, मूसा अलैहिस्सलाम कलीमुल्लाह है, वह भी इसी तरह है, इसा अलैहिस्सलाम उसकी रूह और उस का कलिमा है, वह भी इसी तरह बजा है, आदम अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने मुन्तखब फ़रमाया है, यह भी हकीक़त है, जबकि मैं अल्लाह तआला का हबीबी हूँ, और मैं यह बात अज़राहे फख्र नहीं कहता, रोज़ ए कियामत हम्द का झंडा मेरे हाथ में होगा, आदम अलैहिस्सलाम और बाकी सब अंबिया अलैहिस्सलाम इसी के नीचे होंगे और मैं यह बात अज़राहे फख्र नहीं कहता, रोज़ ए कियामत में सबसे पहले सिफारिश करूँगा और सबसे पहले मेरी सिफारिश कबूल होगी, और यह में अज़राहे फख्र नहीं कहता, सबसे पहले मैं ही जन्नत के कुण्डी हिलाऊंगा तो अल्लाह तआला मेरे लिए खोल देगा और मुझे उस में दाखिल फरमाएगा, मेरे साथ ग़रीब ईमानदार होंगे, और मैं उस पर फख्र नहीं करता, अल्लाह तआला के यहाँ तमाम अव्वल व आखरिन से सबसे ज़्यादा मुअज्ज़ज़ में हूँ और मैं उस पर फख्र नहीं करता"। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (3616 وقال : غريب) و الدارمى (1 / 26 ح 48) * فيه زمعة بن صالح : ضعيف ، و حديثه عند مسلم مقرون

٥٧٦٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عَمْرو»» بن قَيْسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " نَحْنُ الْآخِرُونَ وَنَحْنُ السَّابِقُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَإِنِّي قَائِلٌ قَوْلًا غَيْرَ فَخْرٍ: إِبْرَاهِيمُ خَلِيلُ الله ومُوسَى صفي الله وَأَنا حبيب اللَّهِ وَمَعِي لِوَاءُ الْحَمْدِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَإِنَّ اللَّهَ وَعَدَنِي فِي أُمَّتِي وَأَجَارَهُمْ مِنْ ثَلَاثٍ: لَا يَعُمُّهُمْ بِسَنَةٍ وَلَا يَسْتَأْصِلُهُمْ عَدُوٌّ وَلَا يجمعهُمْ على ضَلَالَة ". رَوَاهُ الدَّارمِيّ

5763. अमर बिन कैस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हम (दुनिया में) आख़िर में आने वाले हैं, और रोज़ ए कियामत (जन्नत में दाखिल होने वालो में) हम सबसे आगे होंगे, मैं किसी फख्र के बगैर यह बात कहता हूँ कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के खलील है, मूसा अलैहिस्सलाम सफिअल्लाह है और मैं हबीबुल्लाह हूँ, रोज़ ए कियामत हम्द का झंडा मेरे साथ होगा, अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत के मुतल्लिक मुझ से वादा फरमा रखा है, और उस ने उन्हें तीन चीजों से महफ़ूज़ रखा है, वह उन्हें आम कहत में मुब्तिला नहीं करेगा, दुश्मन उस को मुकम्मल तौर पर ख़तम नहीं कर सकेगा और वह इन सब को गुमराही पर जमा नहीं करेगा”। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمى (1 / 29 ح 55) * السند منقطع ، و عمرو بن قيس : لم اعرفه و لعله ابو ثور الشامى

٥٧٦٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٍ»» أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَنَا قَائِدُ الْمُرْسَلِينَ وَلَا فَخْرَ وَأَنَا خَاتَمُ النَّبِيِّينَ وَلَا فَخْرَ وَأَنَا أَوَّلُ شافعٍ وَمُشَفَّعٍ وَلَا فَخر» . رَوَاهُ الدَّارمِيّ

5764. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “मैं तमाम रसूलो का सरदार हूँ, यह बात में अज़राहे फख्र नहीं कहता, मैं खातमन नबीय्यीन हूँ, फख्र से नहीं कहता, मैं सबसे पहले सिफारिश करूँगा और सबसे पहले मेरी सिफारिश कबूल की जाएगी और मैं यह बात अज़राहे फख्र नहीं कहता”। (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الدارمى (1 / 27 ح 50) * فيه صالح بن عطاء بن خباب مجهول الحال وثقه ابن حبان وحده و للحديث شواهد صحيحة دون قوله :’’ انا قائد المرسلين ‘‘ و الله اعلم

٥٧٦٥ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ»» أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَنَا أَوَّلُ النَّاسِ خُرُوجًا إِذَا بُعِثُوا وَأَنَا قَائِدُهُمْ إِذَا وَفَدُوا وَأَنَا خَطِيبُهُمْ إِذَا أَنْصَتُوا وَأَنَا مُسْتَشْفِعُهُمْ إِذَا حُبِسُوا وَأَنَا مُبَشِّرُهُمْ إِذَا أَيِسُوا الْكَرَامَةُ وَالْمَفَاتِيحُ يَوْمَئِذٍ بِيَدِي وَلِوَاءُ الْحَمْدِ يَوْمَئِذٍ بِيَدِي وَأَنَا أَكْرَمُ وَلَدِ آدَمَ عَلَى رَبِّي يَطُوفُ عَلَيَّ أَلْفُ خادمٍ كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مُكْنُونٌ أَوْ لُؤْلُؤٌ مَنْثُورٌ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيب

5765. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब लोगों को (कब्रो से) उठाया जाएगा तो मैं सबसे पहले निकलूंगा, जब वह अल्लाह तआला के हुज़ूर पेश होंगे तो मैं उनका सरदार होऊंगा, जब वह ख़ामोश होंगे तो मैं इन की तरफ से बात करूँगा, जब उन्हें रोक लिया जाएगा (हिसाब शुरू नहीं होगा) तो मैं इन की सिफारिश करूँगा ,जब वह ना उम्मीद हो जाएँगे तो मैं उन्हें (मगफिरत व रहमत की) खुशखबरी सुनाऊंगा, किरामत और चाबियां इस रोज़ मेरे हाथ में होगी, इस रोज़ हम्द का झंडा मेरे हाथ में होगा, मेरे रब

के यहाँ तमाम इंसानों से मेरी सबसे ज़्यादा इज्ज़त होगी, हज़ार खादिम मेरे इर्दगिर्द चक्कर लगा रहे होंगे, गोया वह पोशीदा (बंद किए हुए अंडे) है, गया बिखरे हुए मोती है”| तिरमिज़ी, दारमी और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (3610) و الدارمى (1 / 2627 ح 49) * فيه ليث بن ابى سليم : ضعيف

٥٧٦٦ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «فَأُكْسَى حُلَّةً مِنْ حُلَلِ الْجَنَّةِ ثُمَّ أَقُومُ عَنْ يَمِينِ الْعَرْشِ لَيْسَ أَحَدٌ مِنَ الْخَلَائِقِ يقومُ ذلكَ المقامَ غَيْرِي» . رَوَاهُ الترمذيُّ. وَفِي رِوَايَة «جَامع الْأُصُول» عَنهُ: «أَنَا أَوَّلُ مَنْ تَنْشَقُّ عَنْهُ الْأَرْضُ فَأُكْسَى»

5766. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुझे एक जन्नती जोड़ा पहनाया जाएगा, फिर मैं अर्श के दाएँ तरफ खड़ा होऊंगा, और मेरे अलावा मखलूक में से कोई और इस मक़ाम पर खड़ा नहीं होगा”| तिरमिज़ी, और जामेअ अल अस्वल में अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से मरवी हदीस में है: “सबसे पहले मुझे कब्र से उठाया जाएगा और मुझे जोड़ा पहनाया जाएगा”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (3611 وقال : حسن غريب صحيح) * ابو خالد الدالانى مدلس و عنعن و احاديث مسلم (196 ، 2278)، (5940) وغيره تغنى عنه

٥٧٦٧ - (صَحِيح) وَعَنْهُ»» عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «سلوا الله الْوَسِيلَةَ» قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَمَا الْوَسِيلَةُ؟ قَالَ: «أَعْلَى دَرَجَةٍ فِي الْجَنَّةِ لَا يَنَالُهَا إِلَّا رجلٌ واحدٌ وَأَرْجُو أَنْ أَكُونَ أَنَا هُوَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

5767. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह तआला से मेरे लिए वसिला तलब करो”, उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! वसीला क्या है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “जन्नत में एक आअला दर्जा है, वह सिर्फ एक ही आदमी को नसीब होगा और मैं उम्मीद करता हूँ कि वह मैं ही होऊंगा”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذى (3612 وقال : غريب ، اسناده ليس بالقوى) و للحديث شواهد قوية وهوبها حسن

٥٧٦٨ - (حسن) وَعَنْ»» أَبَيِّ بْنِ كَعْبٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ كُنْتُ إِمَامَ النَّبِيِّينَ وَخَطِيبَهُمْ وَصَاحِبَ شَفَاعَتِهِمْ غيرَ فَخر» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5768. उबई बिन काब रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब रोज़ ए कियामत होगा तो में अंबिया अलैहिस्सलाम का इमाम होऊंगा, उनका खतिब और (मकामे महमूद पर) उनका साहबे

शफाअत होऊंगा, और मैं यह बात फख्र से नहीं कहता”। (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (3613 وقال : حسن صحيح غريب) و ابن ماجه (4314) * عبدالله بن محمد بن عقيل ضعيف و احاديث البخارى (3340 ، 3361 ، 4712) و مسلم (194)، (480) وغيرهما تغنى عنه

٥٧٦٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ»» اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: " إِن لِكُلِّ نَبِيٍّ وُلَاةً مِنَ النَّبِيِّينَ وَإِنَّ وَلِيِّيَ أَبِي وَخَلِيلُ رَبِّي ثُمَّ قَرَأَ: [إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ لَلَّذِينَ اتَّبَعُوهُ وَهَذَا النَّبِيُّ وَالَّذِينَ آمنُوا وَالله ولي الْمُؤمنِينَ] . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5769. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हर नबी के लिए अंबिया अलैहिस्सलाम में से एक (नबी) रफीक है, और मेरे लिए रफीक, मेरे बाप और मेरे रब के खलील (इब्राहीम (अस)) है”, फिर आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाई: “बेशक इब्राहीम अलैहिस्सलाम के तमाम लोगों में से ज़्यादा हक़दार और करीबी वह लोग है, जिन्होंने उनकी इत्तेबा की और यह नबी ﷺ और वह लोग है जो ईमान लाए और अल्लाह तआला मोमिनो का दोस्त व हिमायती है”। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (2995) * سفيان الثورى مدلس مشهور و عنعن فى جميع الطرق فيما اعلم

٥٧٧٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٌ»» أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قا ل: «إِنَّ اللَّهَ بَعَثَنِي»» لِتَمَامِ مَكَارِمِ الْأَخْلَاقِ وَكَمَالِ محَاسِنِ الْأَفْعَال» . رَوَاهُ فِي شرح السّنة

5770. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह तआला ने मकारमे अख़लाक़ के मुकम्मल करने और मुहासने अफआल को माल तक पहुँचाने के लिए मुझे मबउस फ़रमाया है”। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البغوى فى شرح السنة (13 / 202 ح 3622) * يوسف بن محمد بن المنكدر : ضعيف وله شاهد عند احمد (2 / 381) :’’ انما بعثت لاتمم صالح الاخلاق ‘‘ و صححه الحاكم (2 / 613) و وافقه الذهبى و سنده ضعيف (تقدم فى تخريج : 50965097)

٥٧٧١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ كَعْبٍ»» يَحْكِي عَنِ التَّوْرَاةِ قَالَ: نَجِدُ مَكْتُوبًا محمدٌ رسولُ الله [ص:١٦٠ عَبدِي الْمُخْتَار لَا فظٌّ وَلَا غَلِيظٍ وَلَا سَخَّابٍ فِي الْأَسْوَاقِ وَلَا يَجْزِي بِالسَّيِّئَةِ السَّيِّئَةَ وَلَكِنْ يَعْفُو وَيَغْفِرُ مَوْلِدُهُ بِمَكَّةَ وَهِجْرَتُهُ بِطِيبَةَ وَمُلْكُهُ بِالشَّامِ وَأُمَّتُهُ الْحَمَّادُونَ يَحْمَدُونَ اللَّهَ فِي السَّرَّاءِ وَالضَّرَّاءِ يَحْمَدُونَ اللَّهَ فِي كُلِّ مَنْزِلَةٍ وَيُكَبِّرُونَهُ عَلَى كُلِّ شَرَفٍ رُعَاةٌ لِلشَّمْسِ يُصَلُّونَ الصَّلَاةَ إِذَا جَاءَ وَقْتُهَا يتأزَّرون على أَنْصَافهمْ ويتوضؤون عَلَى أَطْرَافِهِمْ مُنَادِيهِمْ يُنَادِي فِي جَوِّ السَّمَاءِ صَفُّهُمْ فِي الْقِتَالِ وَصَفُّهُمْ فِي الصَّلَاةِ سَوَاءٌ لَهُمْ بِاللَّيْلِ دَوِيٌّ كَدَوِيِّ النَّحْلِ «. هَذَا لَفْظُ» الْمَصَابِيحِ " وَرَوَى الدَّارِمِيُّ مَعَ تَغْيِير يسير

5771. काब रदियल्लाहु अन्हु तौरात से नकल करते हैं की हम तौरात में यह लिखा हुआ पाते है: मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं, मेरे मुन्तखब बंदे है, वह न तो बदअख़लाक़ है और न सख्त दिल न बाज़ारों में शोरोगुल करने वाले हैं और न बुराई का बदला बुराई से देते है, बल्कि वह दरगुज़र करते और मुआफ़ कर देते है, उनकी जाए पैदाइश मक्का है, उनकी हिजरत तैबा (मदीना) की तरफ होगी, उनकी हुकूमत मुल्क ए शाम में होगी, उनकी उम्मत बहोत ज़्यादा हम्द करने वाली होगी, वह खुशहाली व तंगदस्ती (हर हाल) में हर जगह अल्लाह तआला की हम्द बयान करेंगे, हर बुलंद जगह पर अल्लाह तआला की तकबीर बयान करेंगे, वह (नमाज़ो के अवकात के लिए) सूरज का ख़याल रखते होंगे, जब नमाज़ का वक़्त हो जाएगा तो वह नमाज़ पढेंगे, उनका आज़ार आधी पिंडलियों तक होगा, वह आज़ाए वुज़ू तक वुज़ू करेंगे, उनका मुअज़्ज़िन बुलंद जगह पर (खड़ा हो कर) आज़ान देगा, उनकी नमाज़ के दौरान सफे और उनकी मैदान ए जिहाद में सफे बराबर होगी, और रात के वक़्त उन (तहज्जुद के वक़्त तस्बीह व तहलील) की आवाज़ इस तरह होगी जिस तरह शहद की मख्खी की आवाज़ होती है"| यह अल्फाज़ मसाबिह के है, और इमाम दारमी ने ठोड़ी सी तबदीली के साथ इसे रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمی (1 / 45 ح 5) * الاعمش مدلس و عنعن

٥٧٧٢ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَلَامٍ قَالَ: مَكْتُوبٌ فِي التَّوْرَاةِ صِفَةُ مُحَمَّدٍ وَعِيسَى بن مَرْيَم يُدْفَنُ مَعَهُ قَالَ أَبُو مَوْدُودٍ: وَقَدْ بَقِي فِي الْبَيْت مَوضِع قَبره رَوَاهُ الترمذيُّ

5772. अब्दुल्लाह बिन सलाम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, तौरात में मुहम्मद ﷺ की सिफत लिखी हुई है और ईसा अलैहिस्सलाम मुहम्मद ﷺ के साथ दफन किए जाएँगे", अबू मौदूद रावी ने बयान किया (आइशा रदियल्लाहु अन्हा के) घर में एक कब्र की जगह बाकी है| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (3617 وقال : حسن غريب)

बَابُ فَضَائِلِ سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ • सय्यदुल मुरसलीन ﷺ के फ़ज़ाइल व मनाकिब का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٥٧٧٣ - (لم تتمّ دراسته) عَن ابْن»» عبَّاس قَالَ: إِنَّ الله تَعَالَى فضل مُحَمَّدًا صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى الْأَنْبِيَاءِ وَعَلَى أَهْلِ السَّمَاءِ فَقَالُوا يَا أَبَا عَبَّاسٍ بِمَ فَضَّله الله عَلَى أَهْلِ السَّمَاءِ؟ قَالَ: إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى قَالَ لِأَهْلِ السَّمَاءِ [وَمَنْ يَقُلْ مِنْهُمْ إِنِّي إِلَهٌ مِنْ دُونِهِ فَذَلِكَ نَجْزِيهِ جَهَنَّمَ كَذَلِكَ نجزي الظَّالِمين] وَقَالَ اللَّهُ تَعَالَى لِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: [إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِينًا لِيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تأخَّر] قَالُوا: وَمَا فَضْلُهُ عَلَى الْأَنْبِيَاءِ؟ قَالَ: قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: [وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَسُولٍ [ص:١٦٠ إِلَّا

بِلِسَانِ قَوْمِهِ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ فَيُضِلُّ اللَّهُ مَنْ يَشَاء] الْآيَةَ وَقَالَ اللَّهُ تَعَالَى لِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: [وَمَا أَرْسَلْنَاك إِلَّا كَافَّة للنَّاس] فَأَرْسلهُ إِلَى الْجِنّ وَالْإِنْس

5773. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, अल्लाह तआला ने मुहम्मद ﷺ को तमाम अंबिया अलैहिस्सलाम और आसमान वालो पर फ़ज़ीलत दी है, उन्होंने कहा: अबू अब्बास! अल्लाह तआला ने आप को आसमान वालो पर किस चीज़ से फ़ज़ीलत दी है, उन्होंने ने फ़रमाया: अल्लाह तआला ने आसमान वालो से फ़रमाया: “उन में से जिस ने कहा की मैं अल्लाह तआला के सिवा माबूद हूँ तो हम इसे जहन्नम की सज़ा देंगे, हम इसी तरह ज़ालिमो को सज़ा देते है”, और अल्लाह तआला ने मुहम्मद ﷺ से फ़रमाया: “हमने आप को फ़तहे मुबीन दी ताकि अल्लाह आप के तमाम गुनाह मुआफ़ फरमादे”, उन्होंने कहा: आप ﷺ की दूसरे अंबिया अलैहिस्सलाम पर कौन सी फ़ज़ीलत है? उन्होंने कहा: अल्लाह तआला ने फ़रमाया: “हमने हर रसूल को उसकी कौम की ज़ुबान के साथ मबउस फ़रमाया ताकि वह उन्हें वज़ाहत कर सके, अल्लाह तआला जिसे चाहता है गुमराह कर देता है”, जबकि अल्लाह तआला ने मुहम्मद ﷺ से फ़रमाया: “हमने आप को तमाम इंसानों की तरफ मबउस फ़रमाया”, सो अल्लाह तआला ने आप ﷺ को तमाम जिन्नो और तमाम इंसानों की तरफ मबउस फ़रमाया। (हसन)

اسناده حسن ، رواه الدارمى (1 / 2526 ح 47) و الحاكم (2 / 350)

٥٧٧٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي»» ذرّ الْغِفَارِيّ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ كَيْفَ عَلِمْتَ أَنَّكَ نَبِيٌّ حَتَّى اسْتَيْقَنْتَ؟ فَقَالَ: " يَا أَبَا ذَر أَتَانِي ملكان وَأَنا ب بعض بطحاء مَكَّة فَوَقع أَحدهمَا على الْأَرْضِ وَكَانَ الْآخَرُ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ فَقَالَ أَحَدُهُمَا لِصَاحِبِهِ: أَهْوَ هُوَ؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: فَزِنْهُ بِرَجُلٍ فَوُزِنْتُ بِهِ فَوَزَنْتُهُ ثُمَّ قَالَ: زِنْهُ بِعَشَرَةٍ فَوُزِنْتُ بِهِمْ فَرَجَحْتُهُمْ ثُمَّ قَالَ: زنه بِمِائَة فَوُزِنْتُ بِهِمْ فَرَجَحْتُهُمْ كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَيْهِمْ يَنْتَثِرُونَ عَلَيَّ مِنْ خِفَّةِ الْمِيزَانِ. قَالَ: فَقَالَ أَحَدُهُمَا لصَاحبه: لَو وزنته بأمته لرجحها ". رَوَاهُمَا الدَّارِمِيّ

5774. अबू ज़र गफ्फारी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! आप ने कैसे जाना के आप नबी है, हत्ता के आप ने यकीन कर लिया? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अबू ज़र! मेरे पास दो फ़रिश्ते आए जबकि मैं मक्का की वादी बतहा मैं था, उनमें से एक ज़मीन पर उतर आया और दूसरा आसमान और ज़मीन के दरमियान था, उनमें से एक ने अपने साथी से कहा: क्या यह वही है? उस ने कहा: हाँ, उस ने कहा: उनका एक आदमी के साथ वज़न करो, मेरा उस के साथ वज़न किया गया तो मैं उस पर भारी था, फिर उस ने कहा: उनका दस लोगों के साथ वज़न करो, मेरा उन के साथ वज़न किया गया तो मैं इन पर भारी रहा, फिर उस ने कहा: उनका सौ लोगों के साथ वज़न करो, मेरा उन के साथ वज़न किया गया तो मैं इन पर भी भारी रहा फिर उस ने कहा उनका एक हज़ार के साथ वज़न करो मेरा उन के साथ वज़न किया गया तो मैं इन पर भी भारी रहा, गोया तराज़ू के हल्के होने की वजह से में उन्हें देख रहा हूँ, के वह मुझ पर गिर पड़ेंगे”। फ़रमाया: “इन दोनों में से एक ने अपने साथी से कहा: अगर तुमने उनका उनकी पूरी उम्मत के साथ भी वज़न कर लिया तो यह इस (उम्मत) पर ग़ालिब आजाएँगे”, दोनों अहादीस को इमाम दारमी ने रिवायत किया है। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمى (1 / 9 ح 14) * فيه عروة بن الزبير عن ابى ذر رضى الله عنه وما اراه يسمع منه وقال ابن اسحاق امام المغازى رحمه

الله :’’ حدثنی ثور بن یزید عن خالد بن معدان عن اصحاب رسول الله صلی الله علیه و آله وسلم انهم قالوا : یا رسول الله ! اخبرنا عن نفسک ؟ فقال : دعوة ابی ابراهیم و بشری عیسی و رأت امی حین حملت بی انه خرج منها نور أضاءت له قصور بصری من ارض الشام و استرضعت فی بنی سعد بن بکر ، فبینا انا مع اخ فی بهم لنا ، اتانی رجلان علیهما ثیاب بیاض ، معهما طست من ذهب مملوء ثلجًا فاضجعانی فشقابطنی ثم استخرجا قلبی فشقاه فاخر جا منه علقة سوداء فالقیاها ثم غسلا قلبی و بطنی بذاک الثلج حتی اذا انقیاه ، رداه کما کان ثم قال احدهما لصاحبه : زنه بعشرة من امته فوزننی بعشرة فوزنتهم ثم قال : زنه بالف من امته فوزننی بالف فوزنتهم فقال : دعه عنک فلو وزنته بامته لوزنهم ‘‘ (السیره لابن اسحاق ص 103) و سنده حسن لذاته وهو یغنی عنه

٥٧٧٥ - (ضَعِيف) وَعَنِ»» ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كُتِبَ عَلَيَّ النَّحْرُ وَلَمْ يُكْتَبْ عَلَيْكُمْ وَأُمِرْتُ بِصَلَاةِ الضُّحَى وَلَمْ تؤمَروا بهَا» . رَوَاهُ الدَّارَقُطْنِيّ

5775. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कुर्बानी करना मुझ पर फ़र्ज़ किया गया है, जबकि तुम पर फ़र्ज़ नहीं किया गया, और नमाज़ चाश्त का मुझे हुक्म दिया गया है जबकि तुम्हें इस का हुक्म नहीं दिया गया”। (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف جدا ، رواه الدارقطنی (4 / 282 ح 4706) [و احمد (1 / 317) و البیهقی (8 / 264)] * فیه جابر بن یزید الجعفی ضعیف جدًا ، رافضی

بَابِ أَسْمَاءِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَصِفَاته • रसूलुल्लाह ﷺ के नाम और शीफात का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٥٧٧٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعَمٍ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " إِنَّ لِي أَسْمَاءً: أَنَا مُحَمَّدٌ وَأَنَا أَحْمَدُ وَأَنَا الْمَاحِي الَّذِي يَمْحُو اللَّهُ بِي الْكُفْرَ وَأَنَا الْحَاشِرُ الَّذِي يُحْشَرُ النَّاسُ عَلَى قَدَمِي وَأَنَا الْعَاقِبُ ". وَالْعَاقِب: الَّذِي لَيْسَ بعده شَيْء. مُتَّفق عَلَيْهِ

5776. जुबेर बिन मुतअम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ को फरमाते हुए सुना: “मेरे बहोत से नाम है: में मुहम्मद हूँ में अहमद हूँ, मैं माहि हूँ, अल्लाह मेरे ज़रिए कुफ्र को मिटा देगा, मैं हाशिर हूँ, के तमाम लोग मेरे बाद उठाए जाएँगे और मैं आकिब हूँ”, और आकिब इसे कहते हैं जिसके बाद कोई नबी न हो। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3532) و مسلم (124 / 2354)، (6105)

٥٧٧٧ - (صَحِيح) وَعَن أبي مُوسَى الْأَشْعَرِيّ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُسَمِّي لَنَا نَفْسَهُ أَسْمَاءً فَقَالَ: «أَنَا مُحَمَّدٌ

وَأَحْمَدُ وَالْمُقَفِّي وَالْحَاشِرُ وَنَبِيُّ التَّوْبَةِ وَنَبِيُّ الرَّحْمَة» . رَوَاهُ مُسلم

5777. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ अपने ज़ात मुबारक के नाम हमें बताया करते थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं मुहम्मद हूँ, मैं अहमद हूँ, मैं आख़िर पर आने वाला हूँ, (मेरे बाद कोई नबी नहीं), मैं हाशिर हूँ, मैं नबी तौबा हूँ (अल्लाह के हुज़ूर बहोत ज़्यादा रुजू करने वाला) और नबी रहमत हूँ”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (126 / 2355)، (6108)

٥٧٧٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَلَا تَعْجَبُونَ كَيْفَ يَصْرِفُ اللَّهُ عَنِّي شَتْمَ قُرَيْشٍ وَلَعْنَهُمْ؟ يَشْتُمُونَ مُذَمَّمًا وَيَلْعَنُونَ مُذَمَّمًا وَأَنَا مُحَمَّدٌ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

5778. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “क्या तुम ताज्जुब नहीं करते के अल्लाह कुरैश के शब व सितम और उन के लान-तान करने को किस तरह मुझ से दूर करता है? वह मुजम्मम (नाअउजुबिल्लाह जिस की मुजम्मत की गई हो) कह कर शब् व सितम और लान-तान करते हैं जबकि मैं मुहम्मद ﷺ हूँ”| (बुखारी)

رواه البخاری (3533)

٥٧٧٩ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ شَمِطَ مُقَدَّمُ رَأْسِهِ وَلِحْيَتِهِ وَكَانَ إِذَا ادَّهَنَ لَمْ يَتَبَيَّنْ وَإِذَا شَعِثَ رَأْسُهُ تَبَيَّنَ وَكَانَ كَثِيرَ شَعْرِ اللِّحْيَةِ فَقَالَ رَجُلٌ: وَجْهُهُ مِثْلُ السَّيْفِ؟ قَالَ: لَا بَلْ كَانَ مِثْلَ الشَّمْسِ وَالْقَمَرِ وَكَانَ مُسْتَدِيرًا وَرَأَيْتُ الْخَاتَمَ عِنْدَ كَتِفِهِ مِثْلَ بَيْضَةِ الْحَمَامَة يشبه جسده ". رَوَاهُ مُسلم

5779. जाबिर बिन समुराह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के सर मुबारक और दाढ़ी के अगले हिस्से के कुछ बाल सफ़ेद हो चुके थे, जब आप तेल लगाते थे तो वह नज़र नहीं आते थे, और जब आप के सर के बालो में कंघी नहीं की होती थी तो वह नज़र आ जाते थे, आप की दाढ़ी के बाल घने थे, किसी आदमी ने कहा: आप का चेहरा मुबारक (चमक के लिहाज़ से) तलवार की तरह था, जाबिर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: नहीं, बल्कि सूरज और चाँद की तरह चमकता था, रूखे अनवार (चेहरा) गोल था, मैंने आप के कंधे के पास महोरे नबूवत देखी जो के कबूतर के अंडे की तरह थी और वह आप के जिस्म अतहर (के रंग) के मुशाबह (अनुरूप) थी| (मुस्लिम)

رواه مسلم (109 / 2344)، (6084)

٥٧٨٠ - (صَحِيح) وَعَن عبدِ الله بن سرجسٍ قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَكَلْتُ مَعَهُ خُبْزًا وَلَحْمًا - أَوْ قَالَ: ثَرِيدًا -

ثُمَّ دُرْتُ خَلْفَهُ فَنَظَرْتُ إِلَى خَاتَمِ النُّبُوَّةِ بَيْنَ كَتِفَيْهِ عِنْدَ نَاغِضِ كَتِفِهِ الْيُسْرَى جُمْعًا عَلَيْهِ خيلال كأمثال الثآليل. رَوَاهُ مُسلم

5780. अब्दुल्लाह बिन सरजिस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ को देखा और आप के साथ गोश्त रोटी खाई, या कहा: सरिद खाई, फिर मैं घूम कर आप के पिछली जानिब गया और मैंने आप के दोनों कंधों के दरमियान बाएं कंधे की नरम हड्डी के पास मोहरे नबूवत देखी, वह बंद मुट्ठी की तरह थी, उस पर दो तिल थे जैसे मस्ते हो"। (मुस्लिम)

رواه مسلم (112 / 2346)، (6088)

٥٧٨١ - (صَحِيح) وَعَنْ أَمِّ خَالِدِ بِنْتِ خَالِدِ بْنِ سَعِيدٍ قَالَتْ: أَتِيَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِثِيَابٍ فِيهَا خَمِيصَةٌ سَوْدَاءُ صَغِيرَةٌ فَقَالَ: «ائْتُونِي بِأُمِّ خَالِدٍ» فَأُتِيَ بِهَا تُحْمَلُ فَأَخَذَ الْخَمِيصَةَ بِيَدِهِ فَأَلْبَسَهَا. قَالَ: «أَبْلِي وَأَخْلِقِي ثُمَّ أَبْلِي وَأَخْلِقِي» وَكَانَ فِيهَا عَلَمٌ أَخْضَرُ أَوْ أَصْفَرُ. فَقَالَ: «يَا أُمَّ خَالِدٍ هَذَا سِنَاهْ» وَهِيَ بالحبشيَّةِ حسنَة. قَالَت: فذهبتُ أَلعبُ بخاتمِ النبوَّةِ فز برني أَبِيٍّ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «دعها» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

5781. उम्म खालिद बिन्ते खालिद बिन सईद रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करती हैं, नबी ﷺ के पास कुछ कपड़े लाए गए उनमें एक छोटी सी काली चादर थी, आप ﷺ ने फ़रमाया: "उम्म खालिद को मेरे पास लाओ, इसे उठाकर लाया गया, आप ने अपने दस्ते मुबारक से वह चादर पकड़ी और इसे पहना दी, और फ़रमाया: "तुम उसे पोशीदा करो और तुम उसे पुराना करो (देर तक जीती रहो), तुम उसे पोशीदा करो और इसे पुराना करो", इस (चादर) में सब्ज़ या ज़र्द रंग के निशानात थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: "उम्म खालिद! यह "सनाह'' है" और यह (सनाह) हब्शी जुबान का लफ्ज़ है यानी खुबसूरत, वह बयान करती हैं, मैं महोरे नबूवत के साथ खेलने लगी तो मेरे वालिद ने मुझे डांटा तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "इसे छोड़ दो"। (बुखारी)

رواه البخارى (3071)

٥٧٨٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيْسَ بِالطَّوِيلِ الْبَائِنِ وَلَا بِالْقَصِيرِ وَلَيْسَ بِالْأَبْيَضِ الْأَمْهَقِ وَلَا بِالْآدَمِ وَلَيْسَ بِالْجَعْدِ الْقَطَطِ وَلَا بِالسَّبْطِ بَعَثَهُ اللَّهُ عَلَى رَأْسِ أَرْبَعِينَ سَنَةً فَأَقَامَ بِمَكَّةَ عَشْرَ سِنِينَ وبالمدينة عشر سِنِين وتوفَّاه الله على رَأس سِتِّينَ سَنَةً وَلَيْسَ فِي رَأْسِهِ وَلِحْيَتِهِ عِشْرُونَ شَعْرَةً بَيْضَاءَ»» وَفِي رِوَايَةٍ يَصِفُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: كَانَ رَبْعَةً مِنَ الْقَوْمِ لَيْسَ بِالطَّوِيلِ وَلَا بِالْقَصِيرِ أَزْهَرَ اللَّوْنِ. وَقَالَ: كَانَ شَعْرُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى أَنْصَافِ أُذُنَيْهِ»» وَفِي رِوَايَةٍ: بَيْنَ أُذُنَيْهِ وَعَاتِقِهِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ»» وَفِي رِوَايَةٍ لِلْبُخَارِيِّ قَالَ: كَانَ ضَخْمَ الرَّأْسِ وَالْقَدَمَيْنِ لَمْ أَرَ بَعْدَهُ وَلَا قَبْلَهُ مِثْلَهُ وَكَانَ سَبْطَ الكفَّين. وَفِي أُخْرَى لَهُ قَالَ: كَانَ شئن الْقَدَمَيْنِ وَالْكَفَّيْنِ

5782. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ज़्यादा लम्बी कद के थे न छोटे कद के न बिलकुल सफ़ेद थे और न गंदुमी रंग के, आप के बाल न बहोत ज़्यादा घुंघरियाले थे न सीधे, अल्लाह तआला ने आप को चालीस साल की उमर में मबउस फ़रमाया, आप ने मक्का में दस साल कयाम फ़रमाया और मदीना मैं भी दस साल कयाम फ़रमाया, और अल्लाह तआला ने आप को साठ साल की उमर में वफ़ात दी और (इस वक़्त) आप

के सर और दाढ़ी में बीस बाल भी सफ़ेद नहीं थे, एक दूसरी रिवायत में अनस रदियल्लाहु अन्हु ने नबी ﷺ के तफसील (वर्णन) बयान करते हुए, फ़रमाया: आप का कद दरमियाना था न लम्बा था, और न छोटा खिलता और चमकता हुआ रंग था, और रसूलुल्लाह ﷺ के बाल कानों के बिच तक थे, एक दूसरी रिवायत में है आप ﷺ के बाल दोनों कानों और कंधो के दरमियान थे| और सहीह बुखारी की रिवायत में है: आप ﷺ का सर और पाँव दखिम (मोटे) थे, मैंने आप के बाद या पहले आप जैसे कोई दूसरा शख़्स नहीं देखा, आप ﷺ की हथेलियों कुशादा थी| सहीह बुखारी की दूसरी रिवायत में है, आप ﷺ के पाँव और हाथ मोटे थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (35485900) و مسلم (113 / 2347)، (6089) الرواية الثانية 1 ، رواها البخارى (3547) و الثانية ب ، رواها مسلم (96 / 2338)، (6067) و الثالثة ، رواها البخارى (5905) و مسلم (94 / 2338)، (6069) و الرابعة ، رواها البخارى (5910)

٥٧٨٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنِ الْبَرَّاءِ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرْبُوعًا بَعِيدَ مَا بَيْنَ [ص:١٦١ الْمَنْكِبَيْنِ لَهُ شَعْرٌ بَلَغَ شَحْمَةَ أُذُنَيْهِ رَأَيْتُهُ فِي حُلَّةٍ حَمْرَاءَ لَمْ أَرَ شَيْئًا قَطُّ أَحْسَنَ مِنْهُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ»» وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ قَالَ: مَا رَأَيْتُ مِنْ ذِي لِمَّةٍ أَحْسَنَ فِي حُلَّةٍ حَمْرَاءَ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَعْرُهُ يَضْرِبُ مَنْكِبَيْهِ بَعِيدٌ مَا بَيْنَ الْمَنْكِبَيْنِ لَيْسَ بِالطَّوِيلِ وَلَا بِالْقَصِيرِ

5783. बराअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ दरमियाने कद के थे, आप की छाती कुशादा थी, आप के सर के बाल कानों की लो तक थे, मैंने आप को सुर्ख जोड़े में देखा, मैंने आप से ज़्यादा हसीन किसी को नहीं देखा| और मुस्लिम की रिवायत में है, मैंने कानों की लो तक बालो वाले और सुर्ख जोड़े में मलबूस (कपड़े पहने हुए) किसी शख़्स को रसूलुल्लाह ﷺ से ज़्यादा हसीन नहीं देखा, आप के बाल आप के कंधो पर पड़ते थे, आप की छाती कुशादा थी और आप न ज़्यादा लम्बे थे और न छोटे थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3551) و مسلم (92 ، 91 / 2337 و الرواية الثانية له)، (6064 و 6065)

٥٧٨٤ - (صَحِيح) وَعَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ضَلِيعَ الْفَمِ أَشْكَلَ الْعَيْنَيْنِ مَنْهُوشَ الْعَقِبَيْنِ قِيلَ لَسِمَاكٍ: مَا ضَلِيعُ الْفَمِ؟ قَالَ: عَظِيمُ الْفَمِ. قِيلَ: مَا أَشْكَلُ الْعَيْنَيْنِ؟ قَالَ: طَوِيلُ شَقِّ الْعَيْنِ. قِيلَ: مَا مَنْهُوشُ الْعَقِبَيْنِ؟ قَالَ: قليلُ لحم الْعقب. رَوَاهُ مُسلم

5784. सीमाक बिन हरबी जाबिर बिन समुराह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ दहन बड़ा , आँखों में लाल डोरी और एड़िया गोश्त वाली थी, सीमाक उसे पूछा गया ضَلِيعَ الْفَمِ से क्या मुराद है? उन्होंने कहा: कुशादा चेहरे वाले, पूछा गया: أَشْكَلَ الْعَيْنَيْنِ से क्या मुराद है? फ़रमाया आप ﷺ की आँखे बड़ी और तवील थी फिर पूछा: गया مَنْهُوشَ الْعَقِبَيْنِ से क्या मुराद है? उन्होंने कहा: आप ﷺ की एड़िया गोश्त वाली थी| (मुस्लिम)

رواه مسلم (97 / 2339)، (6070)

٥٧٨٥ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَبِي الطُّفَيْلِ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ أَبْيَضَ مَلِيحًا مقصدا ". رَوَاهُ مُسلم

5785. अबू तुफैल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को देखा है, आप की रंगत सुरखी माइल सफ़ेद थी और आप का कद दरमियाना था| (मुस्लिम)

رواه مسلم (99 / 2340)، (6072)

٥٧٨٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ ثَابِتٍ قَالَ: سُئِلَ أَنَسٌ عَنْ خِضَابِ رَسُول الله صلى الله عَلَيْهِ وَسلم فَقَالَ: إِنَّهُ لَمْ يَبْلُغْ مَا يُخْضَبُ لَوْ شِئْتُ أَنْ أَعُدَّ شَمَطَاتِهِ فِي لِحْيَتِهِ - وَفِي رِوَايَةٍ: لَوْ شِئْتُ أَنْ أَعُدَّ شَمَطَاتٍ كُنَّ فِي رَأسه - فعلت. مُتَّفق عَلَيْهِ

5786. साबित रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि अनस रदियल्लाहु अन्हु से रसूलुल्लाह ﷺ के रंग के मुतल्लिक दरियाफ्त किया गया तो उन्होंने ने फ़रमाया: आप के बाल इस क़दर सफ़ेद नहीं थे की उन्हें रंग दिया जाता, अगर में आप की दाढ़ी के सफ़ेद बाल गिनना चाहता, तो गिन सकता था, एक दूसरी रिवायत में है: अगर में आप ﷺ के सर के सफ़ेद बाल गिनना चाहता तो गिन सकता था| और सहीह मुस्लिम की रिवायत में है आप ﷺ के अनफक (निचले होठ और ठोड़ी के दरमियान) में आप की कन पतियों में और आप के सर में चंद सफ़ेद बाल थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (5895) و مسلم (104 ، 103 / 2341)، (6076 و 6077)

٥٧٨٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَزْهَرَ اللَّوْنِ كَانَ عَرَقُهُ اللُّؤْلُؤُ إِذَا مَشَى تَكَفَّأَ وَمَا مَسَسْتُ دِيبَاجَةً وَلَا حَرِيرًا أَلْيَنَ مِنْ كَفِّ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَا شمَمتُ مسكاً وَلَا عَنْبَرَةً أَطْيَبَ مِنْ رَائِحَةِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5787. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ की रंगत में चमक दमक थी आप के पसीने के कतरे मोतियों की तरह थे, जब आप चलते तो आगे की तरफ झुक कर चलते थे, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ की हथेली से ज़्यादा नरम, देयबान और रेशम को भी नहीं पाया, और नबी ﷺ के बदने अतहर से ज़्यादा खुशबूदार कस्तूरी या अंबर की खुशबू नहीं सूंघी| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (3561) و مسلم (82 / 2330)، (6054)

٥٧٨٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ أُمِّ سُلَيْمٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَأْتِيهَا فَيَقِيلُ عِنْدَهَا [ص:١٦١ فَتَبْسُطُ نِطْعًا فَيَقِيلُ عَلَيْهِ وَكَانَ كَثِيرَ الْعَرَقِ فَكَانَتْ تَجْمَعُ عَرَقَهُ فَتَجْعَلُهُ فِي الطِّيبِ. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا أُمَّ سُلَيْمٍ مَا هَذَا؟» قَالَتْ: عَرَقُكَ نَجْعَلُهُ فِي طِيبِنَا وَهُوَ مِنْ أَطْيَبِ الطِّيبِ»» وَفِي رِوَايَةٍ قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ نَرْجُو بَرَكَتَهُ

لِصِبْيَانِنَا قَالَ: «أصبت» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5788. उम्म सुलैम रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के नबी ﷺ उन के वहां तशरीफ़ लाया करते और वहीँ किल्वला (दोपहर का सोना) फ़रमाया करते थे, वह चमड़े की चटाई बिछा देती और आप उस पर किल्वला (दोपहर का सोना) फरमाते आप को पसीना बहोत आता था, वह आप का पसीना जमा कर लेती और फिर इसे खुशबू में शामिल कर लेती, नबी ﷺ ने फ़रमाया: "उम्म सुलैम यह क्या है?" उन्होंने अर्ज़ किया, आप का पसीना है, हम इसे अपने खुशबू के साथ मिला लेते है, आप का पसीना एक बेहतरीन खुशबू है, एक दूसरी रिवायत में है, उन्होंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! हम उस के ज़रिए अपने बच्चो के लिए बरकत हासिल करते हैं| आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुमने ठीक किया"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6281) و مسلم (8583 / 2331)، (6055 و 6056)

٥٧٨٩ - (صَحِيح) وَعَنْ»» جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: صَلَّيْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَاةَ الْأُولَى ثُمَّ خَرَجَ إِلَى أَهْلِهِ وَخَرَجْتُ مَعَهُ فَاسْتَقْبَلَهُ وِلْدَانٌ فَجَعَلَ يَمْسَحُ خَدَّيْ أَحَدِهِمْ وَاحِدًا وَاحِدًا وَأَمَّا أَنَا فَمَسَحَ خَدِّي فَوَجَدْتُ لِيَدِهِ بردا وريحاً كَأَنَّمَا أَخْرَجَهَا مِنْ جُؤْنَةِ عَطَّارٍ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ»» وَذَكَرَ حَدِيثَ جَابِرٍ: «سَمُّوا بِاسْمِي» فِي «بَابِ الْأَسَامِي»»» وَحَدِيثُ السَّائِبِ بْنِ يَزِيدَ: نَظَرْتُ إِلَى خاتمِ النبوَّةِ فِي «بَاب أَحْكَام الْمِيَاه»

5789. जाबिर बिन समुराह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ नमाज़ उला (फ़जर या जुहूर) पढ़ी, फिर आप अपने अहले खाना की तरफ तशरीफ़ ले गए, मैं भी आप के साथ ही (मस्जिद से) निकल आया, रास्ते में कुछ बच्चे आप से मिले तो आप ने बारी बार उन के रुखसारो पर हमदर्दी से हाथ फेरा, जबकि आप ने मेरे दोनों रुखसारो पर हमदर्दी से हाथ फेरा, मैंने आप ﷺ के दस्ते मुबारक की ठंडक और खुशबू ऐसे महसूस की गोया आप ने इसे अत्तार के डब्बे से निकाला है| जाबिर (र) से मरवी हदीस ((" (سَمُّوا بِاسْمِي.....) بَابِ الْأَسَامِي (नामों का ब्यान) ''में और साइब बिन यज़ीद (र) से मरवी हदीस ((نَظَرْتُ" ((نَظَرْتُ إِلَى خاتمِ النبوَّةِ ..... إِلَى خاتمِ النبوَّةِ (पानी के अहकाम का बयान) ''में बयान की गई है. (मुस्लिम)

رواه مسلم (80 / 2329)، (6052) 0 حدیث '' سموا باسمی '' تقدم (4750) و حدیث '' نظرت الی خاتم النبوۃ '' تقدم (476)

रसूलुल्लाह ﷺ के नाम और शीफात का बयान	بَابِ أَسْمَاءِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَصِفَاته •
दूसरी फस्ल	الْفَصْلُ الثَّانِي •

٥٧٩٠ - (صَحِيح) عَنْ»» عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيْسَ بالطويل وَلَا بالقصير ضخم

الرَّأْس واللحية شئن الْكَفَّيْنِ وَالْقَدَمَيْنِ مُشْرَبًا حُمْرَةً ضَخْمَ الْكَرَادِيسِ طَوِيلَ المَسْرُبَةِ إِذا مَشى تكفَّأَ تكفُّأً كَأَنَّمَا يَنْحَطُّ مِنْ صَبَبٍ لَمْ أَرَ قَبْلَهُ وَلَا بَعْدَهُ مِثْلَهُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ

5790. अली बिन अबी तालिब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ना लम्बे कद के थे न छोटे कद के सर मुबारक द्खिम (मोटा) था दाढ़ी घनी थी, हाथ और पाँव भारी थे, सुरखी व सफ़ेद रंग था, हड्डियों के जोड़ मज़बूत थे, आप के सीने से नाफ तक बालो की लम्बी लकीर थी, जब आप चलते तो आगे को झुके होते, गोया आप बुलंदी से नीचे उतर रहे हैं, और मैंने आप ﷺ की हयाते मुबारक में आप जैसे ना कोई देखा न आप के बाद। तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस हसन सहीह है। (हसन)

حسن ، رواه الترمذى (3637)

٥٧٩١ - (ضَعِيف) وَعَنْهُ»» كَانَ إِذَا وَصَفَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لَمْ يَكُنْ بِالطَّوِيلِ [ص:١٦١ الْمُمَّغِطِ وَلَا بِالْقَصِيرِ الْمُتَرَدِّدِ وَكَانَ رَبْعَةً مِنَ الْقَوْمِ وَلَمْ يَكُنْ بِالْجَعْدِ الْقَطَطِ وَلَا بِالسَّبْطِ كَانَ جَعْدًا رَجِلًا وَلَمْ يَكُنْ بِالْمُطَهَّمِ وَلَا بِالْمُكَلْثَمِ وَكَانَ فِي الْوَجْهِ تَدْوِيرٌ أَبْيَضُ مُشْرَبٌ أَدْعَجُ الْعَيْنَيْنِ أَهْدَبُ الْأَشْفَارِ جَلِيلُ الْمَشَاشِ وَالْكَتَدِ أَجْرَدُ ذُو مَسْرُبَةٍ شئن الْكَفَّيْنِ وَالْقَدَمَيْنِ إِذَا مَشَى يَتَقَلَّعُ كَأَنَّمَا يَمْشِي فِي صَبَبٍ وَإِذَا الْتَفَتَ الْتَفَتَ مَعًا بَيْنَ كَتِفَيْهِ خَاتَمُ النُّبُوَّةِ وَهُوَ خَاتَمُ النَّبِيِّينَ أَجْوَدُ النَّاسِ صَدْرًا وَأَصْدَقُ النَّاسِ لَهْجَةً وَأَلْيَنُهُمْ عَرِيكَةً وَأَكْرَمُهُمْ عَشِيرَةً مَنْ رَآهُ بَدِيهَةً هَابَهُ وَمَنْ خَالَطَهُ مَعْرِفَةً أَحَبَّهُ يَقُولُ نَاعِتُهُ: لَمْ أَرَ قَبْلَهُ وَلَا بَعْدَهُ مِثْلَهُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5791. अली बिन अबी तालिब रदियल्लाहु अन्हु जब नबी ﷺ के तफसील (वर्णन) बयान करते तो फरमाते आप ﷺ ना ज़्यादा लम्बे थे न ज़्यादा छोटे थे, बल्कि आप दरमियाना कद के थे, आप के बाल ना बिलकुल घुंघरियाले थे न बिलकुल सीधे, बल्कि इन दोनों सूरतो के दरमियान थे, आप का चेहरा मुबारक बिलकुल गोल नहीं था बल्कि कदरे गोलाई मैं था, आप का रंग सुरखी माईल सफ़ेद था, आँखे सियाह, दराज़ पलके, जोड़ो की हड्डिया उठी हुई मज़बूत थी, कंधो का दरमियानी हिस्सा भी बड़ा और मज़बूत था, आप के बदन पर बाल नहीं थे, बस सीने और नाफ तक एक लकीर थी, हाथ और पाँव भारी थे, जब आप चलते तो पाँव उठाकर रखते गोया आप बुलंदी से उतर रहे हैं, जब आप किसी की तरफ तवज्जो फरमाते, तो मुकम्मल तवज्जो फरमाते, आप के कंधो के दरमियान महोरे नबूवत थी, और आप खातमन नबीय्यीन है, आप सबसे बढ़कर दिल के सखी थे, सबसे ज़्यादा साफ़ गो थे, सबसे ज़्यादा नरम मिज़ाज थे, कबिले के लिहाज़ से सबसे ज़्यादा मुअज्ज़ज़ थे, जो आप को अचानक देखता तो वोहैबत (डर) ज़दाह हो जाता, जो आप की सोहबत इख़्तियार करता और वाकिफियत (जान-पहचान) हासिल कर लेता, तो वह आप से मुहब्बत करने लगता, और आप के तफसील (वर्णन) बयान करने वाला (आखरी पर) यह कहता: मैंने आप ﷺ जैसे ना आप की हयाते मुबारक में कोई देखा न आप के बाद। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (3638 وقال : ليس اسناده بمتصل) * عمر بن عبدالله : ضعيف ، و ابراهيم لم يدرک عليًا ، انظر تحفة الاشراف (7 / 347)

٥٧٩٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٌ»» أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمْ يَسْلُكْ طَرِيقًا فَيَتْبَعُهُ أَحَدٌ إِلَّا عرفَ أنه قد سلكه من طيب عرقه - أَوْ قَالَ: مِنْ رِيحِ عَرَقِهِ - رَوَاهُ الدَّارِمِيُّ

5792. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ जिस राह से गुज़र जाते तो आप के बाद इस राह से गुज़रने वाला आप की खुशबू से या आप के खुशबूदार पसीने से पहचान लेता के आप ﷺ यहाँ से गुज़रे हैं। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمی (1 / 32 ح 67) * فيه ابو الزبير مدلس و عنعن و اسحاق بن الفضل بن عبد الرحمن الهاشمی و ثقه ابن حبان وحده و المغيرة بن عطية : لم اجد من وثقه

٥٧٩٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» عُبَيْدَةَ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ عَمَّارِ بْنِ يَاسِرٍ قَالَ: قُلْتُ لِلرُّبَيِّعِ بِنْتِ مُعَوِّذِ بْنِ عَفْرَاءَ: صِفِي لَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَتْ: يَا بُنَيَّ لَوْ رأيتَه رأيتَ الشَّمسَ طالعة. رَوَاهُ الدَّارِمِيّ

5793. अबू उबैदाह बिन मुहम्मद बिन अम्मार बिन यासिर बयान करते हैं, मैंने रुब्बीअ बिन्ते मुअव्विज़ बिन इफराअ रदियल्लाहु अन्हु से कहा: आप हमें रसूलुल्लाह ﷺ के तफसील (वर्णन) से आगाह करे, उन्होंने ने फ़रमाया: बेटे अगर तुम उन्हें देखते तो तुम (इन के चेहरे मुबारक को) चमकता हुआ सूरज देखते। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمی (1 / 3031 ح 61) [و الطبرانی فی الکبير (24 / 274 ح 696 ، و الاوسط : 4455)] * فيه عبدالله بن موسى الطلحی التيمی : ضعيف ضعفه الجمهور

٥٧٩٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرِ»» بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي لَيْلَةٍ إِضْحِيَانٍ [ص:١٦١ فَجَعَلْتُ أَنْظُرُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَإِلَى الْقَمَرِ وَعَلَيْهِ حُلَّةٌ حَمْرَاءُ فَإِذَا هُوَ أَحْسَنُ عِنْدِي مِنَ الْقَمَرِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ والدارمي

5794. जाबिर बिन समुराह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने चांदनी रात में नबी ﷺ को देखा तो मैं (बारी बारी) रसूलुल्लाह ﷺ और चाँद की तरफ देखने लगा, आप ने सुर्ख जोड़ा ज़ेबतीन (पहना हुआ) किया हुआ था, और इस वक़्त मेरी नज़र में आप चाँद से भी ज़्यादा खुबसूरत थे। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2811 وقال : حسن غريب) و الدارمی (1 / 30 ح 58) * فيه اشعث بن سوار : ضعيف و ابو اسحاق مدلس و عنعن

٥٧٩٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: مَا رَأَيْتُ شَيْئًا أَحْسَنَ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَأَن الشَّمْس تجْرِي على وَجْهِهِ وَمَا رَأَيْتُ أَحَدًا أَسْرَعَ فِي مَشْيِهِ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَأَنَّمَا الْأَرْضُ تُطْوَى لَهُ إِنَّا لَنُجْهِدُ أَنْفُسَنَا وَإِنَّهُ لغير مكترث. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5795. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से ज़्यादा हसीन चीज़ कोई नहीं देखि, गोया आप के चेहरे मुबारक पर सूरज जलवारेज़ है, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से ज़्यादा तेज़ रफ़्तार किसी को नहीं देखा, गोया आप के लिए ज़मीन लपेटी जा रही है, हम पूरी तरह तेज़ चलने की कोशिश करते, लेकिन आप ﷺ परवा किए बगैर चलते रहते (फिर भी हम आप तक नहीं पहुँच सकते थे)| (सहीह)

صحیح ، رواہ الترمذی (3648 وقال : غریب)

٥٧٩٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرِ»» بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: كَانَ فِي سَاقَيْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حُمُوشَةٌ وَكَانَ لَا يَضْحَكُ إِلَّا تَبَسُّمًا وَكُنْتُ إِذَا نَظَرْتُ إِلَيْهِ قُلْتُ: أَكْحَلُ الْعَيْنَيْنِ وَلَيْسَ بأكحل. رَوَاهُ التِّرمِذِيّ

5796. जाबिर बिन समुराह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ की पिंडलिया पतली थी, आप ﷺ सिर्फ तबस्सुम फ़रमाया करते थे, जब में आप को देखता तो मैं कहता के आप ने आंखो में सुरमा लगाया हुआ है, हालाँकि आप ने सुरमा नहीं लगाया होता था| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ الترمذی (3645 وقال : حسن صحیح غریب) * حجاج بن ارطاۃ ضعیف مدلس و عنعن و للحدیث شواھد غیر قولہ :'' حموشۃ

بَابِ أَسْمَاءِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَصِفَاته • रसूलुल्लाह ﷺ के नाम और शीफात का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٥٧٩٧ - (لم تتمّ دراسته) عَنِ ابْنِ»» عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَفْلَجَ الثَّنِيَّتَيْنِ إِذَا تَكَلَّمَ رُئِيَ كَالنُّورِ يَخْرُجُ مِنْ بَيْنِ ثَنَايَاهُ. رَوَاهُ الدَّارمِيّ

5797. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के सामने के दो दांत कुशादा थे, जब आप गुफ्तगू फरमाते, तो ऐसे मालुम होता के आप के दो दांतों से नूर बरस रहा है| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف جدا ، رواہ الدارمی (1 / 30 ح 59) و الترمذی فی الشمائل (15 بتحقیقی) * فیہ عبد العزیز بن ابی ثابت الزھری : متروک

٥٧٩٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا سُرَّ اسْتَنَارَ وَجْهُهُ حَتَّى كَأَنَّ وَجْهَهُ قِطْعَةُ قَمَرٍ وَكُنَّا نَعْرِفُ ذَلِكَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5798. काब बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ खुश होते थे तो आप का चेहरा चमक जाता और रूखे अनवार (चेहरा) ऐसे लगता जैसे के वह चाँद का टुकड़ा है और हम यह चीज़ पहचान

लेते थे। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3556) و مسلم (53 / 2769)، (7016)

٥٧٩٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ»» أَنَّ غُلَامًا يَهُودِيًّا كَانَ يَخْدُمُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَمَرِضَ فَأَتَاهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعُودُهُ فَوَجَدَ أَبَاهُ عِنْدَ رَأْسِهِ يَقْرَأُ التَّوْرَاةَ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا يَهُودِيُّ [ص:١٦١ أَنْشُدُكَ بِاللَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ التَّوْرَاةَ عَلَى مُوسَى هَلْ تَجِدُ فِي التَّوْرَاةِ نَعْتِي وَصِفَتِي وَمَخْرَجِي؟» . قَالَ: لَا. قَالَ الْفَتَى: بَلَى وَاللَّهِ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّا نَجِدُ لَكَ فِي التَّوْرَاة نعتك وَصِفَتَكَ وَمَخْرَجَكَ وَإِنِّي أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّكَ رَسُولَ اللَّهِ. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِأَصْحَابِهِ: «أَقِيمُوا هَذَا مِنْ عِنْدِ رَأْسِهِ وَلُوا أَخَاكُمْ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي «دَلَائِل النُّبُوَّة»

5799. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक यहूदी लड़का नबी ﷺ की खिदमत किया करता था, वह बीमार हो गया तो नबी ﷺ उसकी इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) के लिए तशरीफ़ ले गए, आप ने उस के वालिद को उस के सर के पास तौरात पढ़ते देख कर फ़रमाया: “ए यहूदी! मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देता हूँ जिस ने मूसा अलैहिस्सलाम पर तौरात नाज़िल फरमाई, (बताओ) क्या तुम तौरात में मेरी ज़ात व सिफात के मुतल्लिक कुछ लिखा हुआ पाते हो?” उस ने कहा: नहीं? लेकिन वह लड़का कहने लगा, अल्लाह की क़सम! अल्लाह के रसूल! हम आप ﷺ की ज़ात व सिफात और आप की तशरीफ़ आवरी के मुतल्लिक तौरात में लिखा हुआ पाते है, और मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, और आप अल्लाह के रसूल हैं, नबी ﷺ ने अपने सहाबा से फ़रमाया: “उस को इस (लड़के) के सिरहाने से उठा दो और तुम अपने इस्लामी) भाई की (तझहजिर व तकज़ीन के मुत्तल्लिक) सरपरस्ती करो”। (हसन)

حسن ، رواه البيهقى فى دلائل النبوة (6 / 272 و سنده حسن) * فيه مؤمل بن اسماعيل حسن الحديث و ثقه الجمهور وله شواهد عند البيهقى فى الدلائل (6 / 272273) وغيره فالحديث حسن

٥٨٠٠ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَالَ: «إِنَّمَا أَنَا رَحْمَةٌ مُهْدَاةٌ» . رَوَاهُ الدَّارِمِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ»

5800. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं की आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं भेजी हुई रहमत हूँ”। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمى (1 / 9 ح 15 و سقط منه ذكر ابى هريرة رضى الله عنه) و رواه البيهقى فى شعب الايمان (1446 بدون سند و فى دلائل النبوة 1 / 158) [و البزار (3 / 114 ح 2369)] * الاعمش مدلس و عنعن فى حديث ابى صالح و فى حديث ابى هريرة ولا شك بانه صلى الله عليه و آله وسلم رحمة مهداة و رحمة للعالمين و لكن هذا السند لم يصح

بَابٌ فِي أَخْلَاقِهِ وَشَمَائِلِهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم • नबी ए करीम के अखलाक और आदत का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٥٨٠١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَنَسٍ قَالَ: خَدَمْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَشْرَ سِنِينَ فَمَا قَالَ لِي: أُفٍّ وَلَا: لِمَ صَنَعْتَ؟ وَلَا: أَلَّا صَنَعْتَ؟ مُتَّفق عَلَيْهِ

5801. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने दस साल नबी ﷺ की खिदमत की लेकिन आप ने मुझे कभी उफ़ तक न कहा, और ना ही यह कहा के तू ने यह काम क्यों किया और वह काम क्यों नहीं किया। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6038) و مسلم (51 / 2309)، (6011)

٥٨٠٢ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ أَحْسَنِ النَّاسِ خُلُقًا فَأَرْسَلَنِي يَوْمًا لِحَاجَةٍ فَقُلْتُ: وَاللَّهِ لَا أَذْهَبُ وَفِي نَفْسِي أَنْ أَذْهَبَ لِمَا أَمَرَنِي بِهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَخَرَجْتُ حَتَّى أَمُرَّ عَلَى صِبْيَانٍ وَهُمْ يَلْعَبُونَ فِي السُّوقِ فَإِذَا بِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ قَبَضَ بِقَفَايَ مِنْ وَرَائِي قَالَ: فَنَظَرْتُ إِلَيْهِ وَهُوَ يَضْحَكُ فَقَالَ: «يَا أُنَيْسُ ذَهَبْتَ حَيْثُ أَمَرْتُكَ؟» . قُلْتُ: نَعَمْ أَنَا أَذْهَبُ يَا رَسُول الله. رَوَاهُ مُسلم

5802. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ तमाम लोगों से बेहतरीन अख़लाक़ के हामिल थे, आप ने एक रोज़ मुझे किसी काम के लिए भेजा तो मैंने कहा, अल्लाह की क़सम! मैं नहीं जाऊँगा, जबकि मेरा दिल में था के रसूलुल्लाह ﷺ ने जिस काम का मुझे हुक्म फ़रमाया है है उस के लिए ज़रूर जाऊंगा, मैं निकला, और चंद ऐसे बच्चो के पास से गुज़रा जो बाज़ार में खेल रहे थे, (में वहां खड़ा हो गया) इतने में रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ ले आए तो रसूलुल्लाह ﷺ ने मेरे पीछे से मेरी गुद्दी पकड़ ली, वह बयान करते हैं, मैंने आप की तरफ देखा तो आप हंस रहे थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उनैस! जहाँ जाने के मुतल्लिक मैंने तुम्हें कहा था, क्या वहां गए हो?” मैंने अर्ज़ किया: जी हाँ! अल्लाह के रसूल! मैं जा रहा हूँ। (मुस्लिम)

رواه مسلم (54 / 2310)، (6015)

٥٨٠٣ - وَعَنْهُ قَالَ: كُنْتُ أَمْشِي مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلَيْهِ بُرْدٌ نَجْرَانِيٌّ غَلِيظُ الْحَاشِيَةِ فَأَدْرَكَهُ أَعْرَابِيٌّ فجبذه جَبْذَةً شَدِيدَةً وَرَجَعَ نَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي نَحْرِ الْأَعْرَابِيِّ حَتَّى نَظَرْتُ إِلَى صَفْحَةِ عَاتِقِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ أثرت بِهِ حَاشِيَةُ الْبُرْدِ مِنْ شِدَّةِ جَبْذَتِهِ ثُمَّ قَالَ: يَا مُحَمَّدُ مُرْ لِي مِنْ مَالِ اللَّهِ الَّذِي عنْدك فَالْتَفَتَ إِلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ ضَحِكَ ثُمَّ أَمَرَ لَهُ بِعَطَاءٍ. مُتَّفق عَلَيْهِ

5803. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं रसूलुल्लाह ﷺ के साथ चल रहा था आप पर मोटे किनारे (चोड़ी पट्टी) वाली नजरानी चादर थी, इतने में एक आराबी आप के पास आया और उस ने आप की चादर के साथ आप को इतने ज़ोर से खिचां के नबी ﷺ इस आराबी के सीने के करीब पहुँच गए, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ के कंधे पर देखा तो ज़ोर से खींचने की वजह से चादर के किनारे के निशानात कंधे मुबारक पर पड़ चुके थे, फिर उस ने कहा: मुहम्मद! अल्लाह का माल जो आप के पास है उस में से मेरे लिए भी हुक्म फरमाए रसूलुल्लाह ﷺ ने उसकी तरफ देखा, और हंस दिए, फिर इसे कुछ देने का हुक्म फ़रमाया”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3149) و مسلم (128 / 1057)، (2429)

٥٨٠٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَحْسَنَ النَّاسِ وَأَجْوَدَ النَّاسِ وَأَشْجَعَ النَّاسِ وَلَقَدْ فَزِعَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ ذَاتَ لَيْلَةٍ فَانْطَلَقَ النَّاسُ قِبَلَ الصَّوْتِ [ص:١٦١ فَاسْتَقْبَلَهُمُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ سَبَقَ النَّاس إِلَى الصَّوْت هُوَ يَقُولُ: «لَمْ تُرَاعُوا لَمْ تُرَاعُوا» وَهُوَ عَلَى فَرَسٍ لِأَبِي طَلْحَةَ عُرْيٍ مَا عَلَيْهِ سَرْجٌ وَفِي عُنُقِهِ سَيْفٌ. فَقَالَ: «لَقَدْ وَجَدْتُهُ بَحْرًا» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5804. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ सबसे ज़्यादा हसीन सबसे ज़्यादा सखी और सबसे ज़्यादा बहादुर थे, एक रात मदीना वाले घबरा गए तो लोग उसकी आवाज़ की तरफ चल पड़े, नबी ﷺ सबसे पहले उसकी आवाज़ की तरफ गए थे और वापसी पर आप लोगों से मिले तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “घबराओ नहीं, घबराओ नहीं”, आप इस वक़्त अबू तल्हा रदियल्लाहु अन्हु के घोड़े की नंगी पीठ पर सवार थे, उस पर जैन नहीं थी और आप के गले में तलवार थी, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैंने इस घोड़े को निहायत तेज़ रफ़्तार पाया है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6033) و مسلم (48 / 2307)، (6006)

٥٨٠٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: مَا سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَيْئًا قَطُّ فَقَالَ: لَا. مُتَّفق عَلَيْهِ

5805. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कभी ऐसे नहीं हुआ के रसूलुल्लाह ﷺ से किसी चिज़ का सवाल किया गया और आप ने नफी में जवाब दिया हो| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6034) و مسلم (56 / 2311)، (6018)

٥٨٠٦ - (صَحِيح) وَعَن أنس إِنَّ رَجُلًا سَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم غَنَمًا بَيْنَ جَبَلَيْنِ فَأَعْطَاهُ إِيَّاهُ فَأَتَى قَوْمَهُ فَقَالَ: أَي قوم أَسْلِمُوا فو الله إِنَّ مُحَمَّدًا لَيُعْطِي عَطَاءً مَا يَخَافُ الْفَقْرَ. رَوَاهُ مُسلم

5806. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक आदमी ने नबी ﷺ से इतनी बकरिया मांगे जिस से दो पहाड़ो

का दरमियानी फासला भर जाए, आप ने उतनी ही इसे दे दी तो वह अपने कौम के पास गया और उन्हें कहा: मेरी कौम इस्लाम कबूल कर लो, अल्लाह की क़सम! मुहम्मद ﷺ इस क़दर अता फरमाते हैं के वह फकीरी का अंदेशा नहीं रखते (या फकीरी का अंदेशा नहीं रहता)| (मुस्लिम)

رواه مسلم (58 / 2312)، (6021)

٥٨٠٧ - (صَحِيح) وَعَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ بَيْنَمَا هُوَ يَسِيرُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَقْفَلَهُ مِنْ حُنَيْنٍ فَعَلِقَتِ الْأَعْرَابُ يَسْأَلُونَهُ حَتَّى اضْطَرُّوهُ إِلَى سَمُرَةٍ فَخَطَفَتْ رِدَاءَهُ فَوَقَفَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «أَعْطُونِي رِدَائِي لَوْ كَانَ لِي عَدَدَ هَذِهِ الْعِضَاهِ نَعَمٌ لَقَسَمْتُهُ بَيْنَكُمْ ثُمَّ لَا تَجِدُونِي بَخِيلًا وَلَا كذوباً وَلَا جَبَانًا» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

5807. जुबेर बिन मुतअम रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है इस असना में के गज़वा ए हुनैन से वापसी पर वह रसूलुल्लाह ﷺ के साथ चल रहे थे, (रास्ते में) आराबी चिमट कर आप से सवाल करने लगे, हत्ता के उन्होंने आप को बबूल के दरख्त की तरफ धकेल दिया, वह (कांटे) आप की चादर से उलझ गई तो नबी ﷺ ने खड़े हो कर फ़रमाया: "मेरी चादर मुझे दे दो, अगर मेरे पास उन (कांटे दार) दरख्तों जितने ऊंट होते तो मैं वह भी तुम्हारे दरमियान तकसीम कर देता, लिहाज़ा तुम मुझे ना बखील पाओगे न झूठा और न बुज़दिल"| (बुखारी)

رواه البخارى (2821)

٥٨٠٨ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا صَلَّى الْغَدَاةَ جَاءَ خَدَمُ الْمَدِينَةِ بِآنِيَتِهِمْ فِيهَا الْمَاءُ فَمَا يَأْتُونَ بإناءٍ إِلَّا غمسَ يدَه فِيهَا فرُبما جاؤوهُ بِالْغَدَاةِ الْبَارِدَةِ فَيَغْمِسُ يَدَهُ فِيهَا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

5808. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ जब सुबह की नमाज़ पढ़ लेते तो मदीना के खादिम अपने बर्तन ले आते, उनमें पानी होता था, वह जो भी बर्तन लाते आप उस में अपना दस्ते मुबारक डुबो देते थे, बसा-अवक़ात तो वह मौसमे सरमा में सुबह के वक़्त आप के पास आ जाते थे, तो आप ﷺ उस में अपना हाथ डुबो दिया करते थे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (74 / 2324)، (6042)

٥٨٠٩ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: كَانَتْ أَمَةٌ مِنْ إِمَاءِ أَهْلِ الْمَدِينَةِ تَأْخُذُ بِيَدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَتَنْطَلِقُ بِهِ حَيْثُ شَاءَتْ. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

5809. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मदीना वालो की लोंदियो में कोई भी लौंडी वह रसूलुल्लाह ﷺ का हाथ पकड़ती और वह जहाँ चाहती आप को ले जाती थी| (बुखारी)

رواه البخارى (6072)

٥٨١٠ - (صَحِيح) وَعَنْهُ»» أَنَّ امْرَأَةً كَانَتْ فِي عَقْلِهَا شَيْءٌ فَقَالَت: يَا رَسُول الله إِنِّي لِي إِلَيْكَ حَاجَةً فَقَالَ: «يَا أُمَّ فُلَانٍ انْظُرِي أَيَّ السِّكَكِ شِئْتِ حَتَّى أَقْضِيَ لَكِ حَاجَتَكِ» فَخَلَا مَعَهَا فِي بَعْضِ الطُّرُقِ حَتَّى فرغت من حَاجَتهَا. رَوَاهُ مُسلم

5810. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक औरत थी जिस की अक़्ल कुछ कम थी, उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मुझे आप से कुछ काम है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उम्म फलां! देखो! जिस गली में तुम चाहो मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ ताकि मैं तुम्हारा काम पूरा कर सकूं, आप एक रास्ते में उसके साथ गए हत्ता के उसका काम हो गया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (76 / 2326)، (6044)

٥٨١١ - (صَحِيح) وَعَنْهُ»» قَالَ: لَمْ يَكُنْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاحِشًا وَلَا لَعَّانًا وَلَا سَبَّابًا كَانَ يَقُولُ عِنْدَ الْمَعْتَبَةِ: «مَا لَهُ ترب جَبينُه؟» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

5811. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ना बद गो थे न लानत करने वाले थे, और ना ही गाली देते थे, नाराज़ी के आलम में आप ﷺ बस यही फरमाते: “इसे क्या हुआ? उसकी पेशानी खाक आलूद हो”| (बुखारी)

رواه البخارى (6031)

٥٨١٢ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ادْعُ عَلَى الْمُشْرِكِينَ. قَالَ: «إِنِّي لَمْ أُبْعَثْ لَعَّانًا وَإِنَّمَا بُعِثْتُ رَحْمَةً» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

5812. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ से अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल! मुशरिको के लिए बद्दुआ फरमाइए आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुझे लानत करने के लिए नहीं भेजा गया, मुझे तो बाईसे रहमत बना कर भेजा गया है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (87 / 2599)، (6613)

٥٨١٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَشَدَّ حَيَاءً مِنَ الْعَذْرَاءِ فِي خِدْرِهَا فَإِذَا رَأَى شَيْئًا يَكْرَهُهُ عَرَفْنَاهُ فِي وَجْهِهِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5813. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ परदा नशीं कुंवारी लड़कियों से भी ज़्यादा शर्मीले थे, जब आप कोई ऐसी चीज़ देखते जो आप को नागवार गुज़रती तो हम इसे आप के चेहरे मुबारक से पहचान लेते थे। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6102) و مسلم (67 / 2320)، (6032)

٥٨١٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ»» عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: مَا رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُسْتَجْمِعًا قَطُّ ضَاحِكًا حَتَّى أَرَى مِنْهُ لَهَوَاتِهِ وَإِنَّمَا كَانَ يتبسم. رَوَاهُ البُخَارِيّ

5814. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने नबी ﷺ को इस तरह खिलखिला कर हँसते हुए कभी नहीं देखा के आप के हलक का आखिरी हिस्सा देख सकू, क्योंकि आप ﷺ सिर्फ तबस्सुम फ़रमाया करते थे। (बुखारी)

رواه البخاری (6092)

٥٨١٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهَا قَالَتْ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمْ يَكُنْ يَسْرُدُ الْحَدِيثَ كَسَرْدِكُمْ كَانَ يُحَدِّثُ حَدِيثًا لَوْ عَدَّهُ الْعَادُّ لَأَحْصَاهُ. مُتَّفق عَلَيْهِ

5815. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, कि रसूलुल्लाह ﷺ तुम्हारी तरह निहायत तेज़ गुफ्तगू नहीं फरमाते थे, बल्कि आप इस तरह गुफ्तगू फरमाते थे की अगर कोई (अलफ़ाज़) शुमार करने वाला शुमार करना चाहता तो शुमार कर सकता था। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (35673568) و مسلم (160 / 2493)، (6399)

٥٨١٦ - (صَحِيح) وَعَنِ»» الْأَسْوَدِ قَالَ: سَأَلْتُ عَائِشَةَ: مَا كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَصْنَعُ فِي بَيْتِهِ؟ قَالَتْ: كَانَ يَكُونُ فِي مَهْنَةِ أَهْلِهِ - تَعْنِي خدمَة أَهله - فَإِذا حضرت الصَّلَاة خرج إِلَى الصَّلَاة. رَوَاهُ البُخَارِيّ

5816. असवद रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने आइशा रदियल्लाहु अन्हा से दरियाफ्त किया, नबी ﷺ अपने घर में क्या क्या करते थे? उन्होंने ने फ़रमाया: आप अपने अहले खाना की खिदमत में मसरूफ रहते थे, जब नमाज़ का वक़्त हो जाता तो आप नमाज़ के लिए तशरीफ़ ले जाते थे। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (676)

٥٨١٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: مَا خُيِّرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَ أَمْرَيْنِ قَطُّ إِلَّا أَخَذَ أَيْسَرَهُمَا مَا لَمْ يَكُنْ إِثْمًا فَإِنْ كَانَ إِثْمًا كَانَ أَبْعَدَ النَّاسِ مِنْهُ وَمَا انْتَقَمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِنَفْسِهِ فِي شَيْءٍ قَطُّ إِلَّا أَنْ يُنتهك حرمةُ الله فينتقم لله بهَا. مُتَّفق عَلَيْهِ

5817. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब भी रसूलुल्लाह ﷺ को दो कामो में से एक का इख़्तियार दिया जाता तो आप इन दोनों में से आसान तर को इख़्तियार फरमाते थे, बशर्तेकी वह गुनाह का काम न होता, अगर उस में गुनाह होता तो आप सबसे ज़्यादा उस से दूर रहते, रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने ज़ात के मुतल्लिक किसी मुआमले में इन्तेकाम नहीं लिया, अगर अल्लाह की हुदूद पामाल की जाती तो आप उस में अल्लाह की रज़ा की खातिर इन्तेकाम लिया करते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3560) و مسلم (77 / 2327)، (6045)

٥٨١٨ - (صَحِيح) وَعَنْهَا»» قَالَتْ: مَا ضَرَبَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لنَفسِهِ شَيْئًا قَطُّ بِيَدِهِ وَلَا امْرَأَةً وَلَا خَادِمًا إِلَّا أَنْ يُجَاهِدَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَمَا نِيلَ مِنْهُ شَيْءٌ قَطُّ فَيَنْتَقِمُ مِنْ صَاحِبِهِ إِلَّا أَنْ يُنْتَهَكَ شَيْءٌ مِنْ مَحَارِمِ اللَّهِ فينتقم لله. رَوَاهُ مُسلم

5818. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने अल्लाह की राह में जिहाद करने के अलावा अपने हाथ से किसी चीज़ को मारा न किसी खादिम को और ना ही किसी औरत को, और अगर आप को किसी की तरफ से कोई तकलीफ पहुँचती तो आप इस तकलीफ पहुँचाने वाले से इन्तेकाम नहीं लेते थे आप सिर्फ इस सूरत में इन्तेकाम लेते थे जब अल्लाह की हुदूद पामाल होती हो और वह इन्तेकाम भी महज़ अल्लाह की रज़ा की खातिर ही लेते थे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (79 / 2328)، (6050)

بَابٌ فِي أَخْلَاقِهِ وَشَمَائِلِهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم	**नबी ए करीम के अखलाक और आदत का बयान**
الْفَصْلُ الثَّانِي	**दूसरी फस्ल**

٥٨١٩ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَنَسٍ»» قَالَ: خَدَمْتُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنَا ابْنُ ثَمَانِ سِنِينَ خَدَمْتُهُ عَشْرَ سِنِينَ فَمَا لَامَنِي عَلَى شَيْءٍ قَطُّ أَتَى فِيهِ عَلَى يَدَيَّ فَإِنْ لَامَنِي لَائِمٌ مِنْ أَهْلِهِ قَالَ: «دَعُوهُ فَإِنَّهُ لَوْ قُضِيَ شَيْءٌ كَانَ» . هَذَا لَفَظُ «الْمَصَابِيحِ» وَرَوَى الْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ» . مَعَ تَغْيِيرٍ يَسِيرٍ

5819. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं आठ बरस की उमर मैं रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत के लिए हाज़िर हुआ और दस साल आप की खिदमत की, आप ने इस अरसे में मेरे हाथो होने वाले किसी नुकसान पर मुझे मलामत नहीं की, अगर आप के अहले खाना में से कोई मुझे मलामत करते तो आप ﷺ फरमाते: "इसे छोड़ दो, क्योंकि जो तकदीर में लिख दिया गया है वह हो कर रहता है", यह अलफ़ाज़े हदीस मसाबिह के है, और इमाम बयहकी ने कुछ तबदीली के साथ शौबुल ईमान में रिवायत किया है| (सहीह)

صحیح ، ذکره البغوی فی المصابیح السنة (4 / 5758 ح 4538) و رواه البیهقی فی شعب الایمان (8070 و کتاب القدر : 212 و سنده صحیح) وله شواهد عند احمد (3 / 231 و ابن سعد (7 / 17) و البخاری (2768 ، 6038 ، 6911) و مسلم (2309) و الخطیب فی تاریخ بغداد (3 / 303) و ابن حبان (الموارد : 1816) وغیرهم* و رواه الخرائطی فی مکارم الاخلاق (71)

٥٨٢٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ»» عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: لَمْ يَكُنْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاحِشًا وَلَا مُتَفَحِّشًا وَلَا سَخَّابًا فِي الْأَسْوَاقِ وَلَا يَجْزِي بِالسَّيِّئَةِ السَّيِّئَةَ وَلَكِنْ يَعْفُو وَيَصْفَحُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5820. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ तबअन ना फहश गो थे न तकल्लुफन फहश गो थे, ना आप बाज़ारों में शोरोगुल करते थे न बुराई का बदला बुराई से देते थे, बल्कि आप ﷺ दरगुज़र फरमाते थे, और मुआफ़ फरमा देते थे| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه الترمذی (2016 وقال : حسن صحیح)

٥٨٢١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ»» يُحَدِّثَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ كانَ يعودُ المريضَ وَيتبع الْجِنَازَة ويجيب دَعْوَة الْمَمْلُوك ويركب الْحمار لَقَدْ رَأَيْتُهُ يَوْمَ خَيْبَرَ عَلَى حِمَارٍ خِطَامُهُ لِيفٌ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ»

5821. अनस रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से हदीस बयान करते हैं, कि आप बिमारो की इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) करते थे, जनाज़ो में शरीक होते थे, गुलामो की दावत कबूल करते थे, और गधे पर सवारी करते थे, खैबर के दिन मैंने आप को गधे पर देखा जिस की लगाम खजूर के पत्तो की थी| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابن ماجه (4178 ، 2296) و البیهقی فی شعب الایمان (81908191) [و الترمذی (1017 وقال : غریب ، لا نعرفه الا من حدیث مسلم عن انس و مسلم الاعور یضعف ،،، الخ)] * مسلم بن کیسان الاعور : ضعیف

٥٨٢٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ»» قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَخْصِفُ نَعْلَهُ وَيَخِيطُ ثَوْبَهُ وَيَعْمَلُ فِي بَيْتِهِ كَمَا يَعْمَلُ أَحَدُكُمْ فِي بَيْتِهِ وَقَالَتْ: كَانَ بَشَرًا مِنَ الْبَشَرِ يَفْلِي ثَوْبَهُ وَيَحْلُبُ شَاتَهُ وَيَخْدُمُ نَفْسَهُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

5822. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ अपना जूता मरम्मत करते थे, अपना कपड़ा खुद सी लेते थे और अपने घर में तुम्हारी तरफ ही काम करते थे, और उन्होंने ने फ़रमाया: आप भी एक इंसान

थे, आप अपने कपड़े में जुएँ देख लिया करते थे, अपने बकरी का दूध खुद धोते थे, और अपने ज़ाती काम खुद किया करते थे| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی [فی الشمائل (341) و البخاری فی الادب المفرد (541 و سندہ حسن)] * الشطر الاول الی ’’ فی بیتہ ‘‘ رواہ احمد (6 / 106 ، 121 ، 167 ، 260 ایضًا) و فیہ علۃ عند احمد (6 / 241) و للحدیث شواھد عند احمد (6 / 256) وغیرہ

٥٨٢٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ خارِجَةَ»»   بْنِ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ قَالَ: دَخَلَ نَفَرٌ عَلَى زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ فَقَالُوا لَهُ: حَدِّثْنَا أَحَادِيثَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: كُنْتُ جَارَهُ فَكَانَ إِذَا نزل الْوَحْيُ بَعَثَ إِلَيَّ فَكَتَبْتُهُ لَهُ فَكَانَ إِذَا ذَكَرْنَا الدُّنْيَا ذَكَرَهَا مَعَنَا وَإِذَا ذَكَرْنَا الْآخِرَةَ ذَكَرَهَا مَعَنَا وَإِذَا ذَكَرْنَا الطَّعَامَ ذَكَرَهُ مَعَنَا فَكُلُّ هَذَا أُحَدِّثُكُمْ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5823. ख़ारिजा बिन ज़ैद बिन साबित बयान करते हैं, कुछ लोग ज़ैद बिन साबित रदियल्लाहु अन्हु के पास आए तो उन्होंने उन से कहा, आप हमें रसूलुल्लाह ﷺ की अहादीस सुनाओ, उन्होंने कहा: में आप का पड़ोसी था, जब आप ﷺ पर वही नाज़िल होती तो आप मुझे बुलाते और मैं वही को लिख देता था, जब हम दुनिया का ज़िक्र करते थे तो आप हमारे साथ इस का ज़िक्र फरमाते थे, जब हम आखिरत का ज़िक्र करते तो आप हमारे साथ इस का ज़िक्र फरमाते थे, और जब हम खाने का ज़िक्र करते तो आप हमारे साथ खाने का ज़िक्र फरमाते थे, मैं यह सारी बाते तुम है रसूलुल्लाह ﷺ से बयान कर रहा हूँ| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ الترمذی (فی الشمائل : 342) و البغوی فی شرح السنۃ (13 / 245 ح 3679)] * فیہ سلیمان بن خارجۃ : مجھول الحال

٥٨٢٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ»»   أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا صَافَحَ الرَّجُلَ لَمْ يَنْزِعْ يَدَهُ مِنْ يَدِهِ حَتَّى يَكُونَ هُوَ الَّذِي يَنْزِعُ يَدَهُ وَلَا يَصْرِفُ وَجْهَهُ عَنْ وَجْهِهِ حَتَّى يَكُونَ هُوَ الَّذِي يَصْرِفُ وَجْهَهُ عَن وَجهه وَلم يُرَ مقدِّماً رُكْبَتَيْهِ بَين يَدي جليس لَهُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5824. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ जब आदमी से मुसाफा फरमाते थे तो आप उस के हाथ से अपना हाथ नहीं छुड़ाते थे, हत्ता के वह आदमी खुद अपना हाथ छुड़ा लेता था, आप अपना चेहरा मुबारक (तवज्जो) इस शख़्स से नहीं हटाते थे हत्ता के वह शख़्स खुद अपना चेहरा आप के चेहरा मुबारक से हटा लेता (किसी और तरफ मुतवज्जे कर लेता) और आप को मजलिस में अपने हम नशीन से आगे घुटने निकाल कर बैठें हुए नहीं देखा गया| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ الترمذی (2490 وقال : غریب) [و ابن ماجہ (3716)] * زید العمی ضعیف و تلمیذہ لین ولہ شاھد ضعیف عند ابی داود (4794) وغیرہ

٥٨٢٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ»»   أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ لَا يَدَّخِرُ شَيْئًا لِغَدٍ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5825. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ अपने ज़ात के लिए किसी चिज़ का ज़खीरा नहीं

किया करते थे| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2362 وقال : غریب)

٥٨٢٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرِ»» بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ طَوِيلَ الصَّمْتِ. رَوَاهُ فِي «شرح السّنة»

5826. जाबिर बिन समुराह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ज़्यादातर ख़ामोश रहा करते थे, (बिला ज़रूरत बात नहीं फरमाते थे)| (हसन)

حسن ، رواہ البغوی فی شرح السنة (13 / 256 ح 3695 ، و فی الانوار فی شمائل النبی المختار بتحقیقی : 331) [و احمد (5 / 86 ، 105) و الترمذی (2850) و مسلم (2322 مختصرًا)]

٥٨٢٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٍ»» قَالَ: كَانَ فِي كَلَامِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَرْتِيلٌ وَتَرْسِيلٌ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5827. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के कलाम में तरतील और ठहराव था| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (4838) * الشیخ ، الراوی عن جابر رضی الله عنه : مجهول

٥٨٢٨ - (إِسْنَاده جيد) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: مَا كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسْرُدُ سَرْدَكُمْ هَذَا وَلَكِنَّهُ كَانَ يَتَكَلَّمُ بِكَلَامٍ بَيْنَهُ فَصْلٌ يَحْفَظُهُ من جَلَسَ إِلَيْهِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5828. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ तुम्हारी तरह निहायत तेज़ गुफ्तगू नहीं फरमाते थे, बल्कि आप का कलाम अलग अलग होता था, आप के पास बैठनेवाला इसे याद कर लेता था| (सहीह)

صحیح ، رواه الترمذی (3639 وقال : حسن صحیح)

٥٨٢٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ»» اللَّهِ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ جَزْءٍ قَالَ: مَا رَأَيْتُ أَحَدًا أَكْثَرَ تَبَسُّمًا مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5829. अब्दुल्लाह बिन हारिस बिन जज़अ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से ज़्यादा किसी को मुस्कुराते हुए नहीं देखा| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه الترمذی (3641) * عبدالله بن لهیعة حدث به قبل اختلاطه و لکنه مدلس و عنعن فالسند ضعیف و حدیث الترمذی (3642) یغنی عنه

٥٨٣٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ»» اللَّهِ بْنِ سَلَامٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا جَلَسَ يَتَحَدَّثُ يُكْثِرُ أَنْ يَرْفَعَ طَرْفَهُ إِلَى السَّمَاءِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5830. अब्दुल्लाह बिन सलाम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ जब गुफ्तगू फरमाने के लिए बैठते तो आप (नुज़ूले वही के इंतज़ार में) आसमान की तरफ बहोत देखते थे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (4837) * محمد بن اسحاق مدلس و عنعن ، الا فی روایة سفیان بن وکیع (ضعیف) عن یونس بن بکیر به فالسند معلل

بَابٌ فِي أَخْلَاقِهِ وَشَمَائِلِهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم • नबी ए करीम के अखलाक और आदत का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٥٨٣١ - (صَحِيح) عَنْ»» عَمْرِو بْنِ سَعِيدٍ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: مَا رَأَيْتُ أَحَدًا كَانَ أَرْحَمَ بِالْعِيَالِ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِبْرَاهِيمُ ابْنُهُ مُسْتَرْضَعًا فِي عَوَالِي الْمَدِينَةِ فَكَانَ يَنْطَلِقُ وَنَحْنُ مَعَهُ فَيَدْخُلُ الْبَيْتَ وَإِنَّهُ لَيُدَّخَنُ وَكَانَ ظِئْرُهُ قَيْنًا فَيَأْخُذُهُ فَيُقَبِّلُهُ ثُمَّ يَرْجِعُ. قَالَ عَمْرٌو: فَلَمَّا تُوُفِّيَ إِبْرَاهِيمُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ إِبْرَاهِيمَ ابْنِي وَإِنَّهُ مَاتَ فِي الثَّدْيِ وَإِنَّ لَهُ لَظِئْرَيْنِ تُكْمِلَانِ رَضَاعَهُ فِي الْجَنَّةِ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

5831. अमर बिन सईद अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से ज़्यादा किसी को अपने बच्चो के साथ मेहरबान नहीं देखा, आप के बेटे इब्राहीम मदीने के देहात में ज़ेरे रिज़ाअत थे, आप (वहाँ) तशरीफ़ ले जाया करते थे, हम भी आप के साथ होते थे, आप इस घर में दाखिल हो जाते, उस में धुवा होता था, क्योंकि इब्राहीम की दाई का शोहर लुहार था, आप ﷺ इसे पकड़ते उस का बोसा लेते और फिर वापस आ जाते थे, अम्र बयान करते हैं, जब इब्राहीम फौत हुए तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मेरा बेटा इब्राहीम चूँकि शिरख्वारगी के आलम में फौत हुआ है जिस लिए जन्नत में उस के लिए दो दाई है जो मुद्दते रिज़ाअत मुकम्मल करेगी"| (मुस्लिम)

رواہ مسلم (63 / 2316)، (6026)

٥٨٣٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عَليّ»» أَنَّ يهوديّاً يُقَالُ لَهُ: فُلَانٌ حَبْرٌ كَانَ لَهُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي دَنَانِيرُ فَتَقَاضَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ لَهُ: «يَا يَهُودِيُّ مَا عِنْدِي مَا أُعْطِيكَ» . قَالَ: فَإِنِّي لَا أُفَارِقُكَ يَا مُحَمَّدُ حَتَّى تُعْطِيَنِي. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذًا أَجْلِسُ مَعَكَ» فَجَلَسَ مَعَهُ فَصَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الظُّهْرَ وَالْعَصْرَ

وَالْمَغْرِبَ وَالْعِشَاءَ الْآخِرَةَ وَالْغَدَاةَ وَكَانَ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَهَدَّدُونَهُ وَيَتَوَعَّدُونَهُ فَفَطِنَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا الَّذِي يَصْنَعُونَ بِهِ. فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ يَهُودِيٌّ يَحْبِسُكَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنَعَنِي رَبِّي أَنْ أَظْلِمَ مُعَاهِدًا وَغَيْرَهُ» فَلَمَّا تَرَجَّلَ النَّهَارُ قَالَ الْيَهُودِيُّ: أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّكَ رَسُولُ اللَّهِ وَشَطْرُ مَالِي فِي سبيلِ الله أَمَا وَاللَّهِ مَا فَعَلْتُ بِكَ الَّذِي فَعَلْتُ بِكَ إِلَّا لِأَنْظُرَ إِلَى نَعْتِكَ فِي التَّوْرَاةِ: مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ مَوْلِدُهُ بِمَكَّةَ وَمُهَاجَرُهُ بِطَيْبَةَ وَمُلْكُهُ بِالشَّامِ لَيْسَ بِفَظٍّ وَلَا غَلِيظٍ [ص:١٦٢ وَلَا سَخَّابٍ فِي الْأَسْوَاقِ وَلَا مُتَزَيٍّ بِالْفُحْشِ وَلَا قَوْلِ الْخَنَا أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّكَ رَسُولُ اللَّهِ وَهَذَا مَالِي فَاحْكُمْ فِيهِ بِمَا أَرَاكَ اللَّهُ وَكَانَ الْيَهُودِيُّ كَثِيرَ المالِ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي «دَلَائِل النُّبُوَّة»

5832. अली रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के फलां नाम से एक यहूदी आलीम था, उस का रसूलुल्लाह ﷺ पर कुछ दीनार क़र्ज़ था, उस ने नबी ﷺ से तकाज़ा किया तो आप ﷺ ने इसे फ़रमाया: “यहूदी! तुम्हें देने के लिए मेरे पास कुछ नहीं ?” उस ने कहा मुहम्मद! मैं तो ले एक ही यहाँ से हिलूंगा, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अच्छा फिर मैं तुम्हारे साथ बैठ जाता हूँ”, आप उस के साथ बैठ गए, रसूलुल्लाह ﷺ ने ज़ुहर, असर, मग़रिब, ईशा और फ़जर की नमाज़ उस के साथ अदा की, रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबा इसे डराते धमकाते रहे, रसूलुल्लाह ﷺ को सहाबा किराम के इस अमल की इत्तिला हो गई तो उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! एक यहूदी ने आप को रोक रखा है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरे रब ने किसी जिम्मी वगैरा पर ज़ुल्म करने से मुझे मना फ़रमाया है”, जब सूरज बुलंद हुआ (दिन चढ़ा) तो इस यहूदी ने कहा: मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि आप अल्लाह के रसूल हैं, मेरा आधा माल अल्लाह की राह में वक्फ़ है, सुन लो! अल्लाह की क़सम! मैंने आप के साथ जो ज़ोर व इख़्तियार किया वह महज़ इसलिए किया ताकी मैं तौरात में आप का मजकुरह तार्रुफ़ देख सकू, मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह उनकी जाए पैदाइश मक्का, दारे हिजरत तैबा (मदीना मुनव्वरा) उनकी सल्तनत शाम तक, ना वह ब्द्ज़ुबान है न सख्त दिल और ना ही बाज़ारों में शोरोगुल करने वाले हैं, ना वह फहश पोश है न फहश गो, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं और यह कि आप अल्लाह के रसूल हैं, और यह माल है आप अल्लाह के अहकामात की रोशनी में उस में जिस तरह चाहे तसरीफ फरमाइए और यहूदी बहोत ज़्यादा माल दार था| (मौज़ू)

اسناده موضوع ، رواه البيهقى فى دلائل النبوة (6 / 280) * فيه محمد بن محمد بن الاشعث : كذاب ، وضع نسخة اهل البيت (انظر لسان الميزان 5 / 409 وغيره) و هذا من وضعه لانه تفرد به

٥٨٣٣ - (صَحِيح) وَعَنْ»» عَبْدُ اللَّهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُكْثِرُ الذِّكْرَ وَيُقِلُّ اللَّغْوَ وَيُطِيلُ الصَّلَاةَ وَيُقْصِرُ الْخُطْبَةَ وَلَا يَأْنَفُ أَنْ يَمْشِيَ مَعَ الْأَرْمَلَةِ والمسكين فَيَقْضِي الْحَاجة. رَوَاهُ النَّسَائِيّ والدارمي

5833. अब्दुल्लाह बिन अबी अव्फी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ज़िक्र कसरत से किया करते थे, बेमकसद बात बहोत ही कम किया करते थे, नमाज़ (ख़ास तौर पर जुमा की नमाज़) लम्बी पढ़ा करते थे, खुत्बा मुख़्तसर दिया करते थे, आप बेवाओं और मसाकिन के साथ चलने में कोई आर महसूस नहीं करते थे और आप उन के काम करते और उनकी ज़रूरते पूरी करते थे| (हसन)

اسناده حسن ، رواه النسائى (3 / 108109 ح 1415) و الدارمى (1 / 35 ح 75)

٥٨٣٤ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» عَلِيٍّ أَنَّ أَبَا جَهْلٍ قَالَ لِلنَّبِيِّ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم: إِنَّا لَا نُكَذِّبكَ ولكنْ نكذِّبُ بِمَا جئتَ بِهِ فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى فِيهِمْ: [فَإِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُونَكَ ولكنَّ الظالمينَ بآياتِ اللَّهِ يَجْحَدونَ] رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5834. अली रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के अबू जहल ने नबी ﷺ से कहा: हम आप की तकज़ीब नहीं करते, बल्कि हम तो इस चीज़ की तकज़ीब करते हैं, जो आप लेकर आए है, तब अल्लाह तआला ने उन के मुतल्लिक यह आयत नाज़िल फरमाई: “ये लोग आप की तकज़ीब नहीं करते, बल्कि ज़ालिम लोग अल्लाह की आयात का इनकार करते हैं”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3064) * ابو اسحاق مدلس و عنعن

٥٨٣٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ»» قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يَا عَائِشَةُ لَوْ شِئْتُ لَسَارَتْ مَعِي جِبَالُ الذَّهَبِ جَاءَنِي مَلَكٌ وَإِنَّ حُجْزَتَهُ لَتُسَاوِي الْكَعْبَةَ فَقَالَ: إِنَّ رَبَّكَ يَقْرَأُ عَلَيْكَ السَّلَامَ وَيَقُولُ: إِنْ شِئْتَ نَبِيًّا عَبْدًا وَإِنْ شِئْتَ نَبِيًّا مَلِكًا فَنَظَرْتُ إِلَى جِبْرِيلَ عَلَيْهِ السَّلَامُ فَأَشَارَ إِلَيَّ أَنْ ضَعْ نَفْسَكَ "

5835. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आइशा अगर में चहुँ वह तो सोने के पहाड़ मेरे साथ चले, एक फ़रिश्ता मेरे पास आया, उसकी कमर (की चोड़ाइ) काबा (के तुल) के बराबर थी उस ने (आकर) कहा: तुम्हारा रब तुम्हें सलाम कहता है, और वह कहता है, अगर आप चाहे तो आप को आबिद नबी बना देते हैं और अगर आप पसंद फरमाई तो आप को बादशाह पैगम्बर बना देते है, मैंने जिब्राइल अलैहिस्सलाम की तरफ देखा तो उन्होंने मेरी तरफ इरशाद किया के अपने आप को पस्त व आजिज़ रखो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البغوی فی شرح السنة (13 / 247248 ح 3683) * فيه ابو معشر نجيح : ضعيف ، و لحديثه شواهد ضعيفة

٥٨٣٦ - (لم تتمّ دراسته) وَفِي رِوَايَة»» ابْن عبَّاسٍ: فَالْتَفَتَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى جِبْرِيلَ كَالْمُسْتَشِيرِ لَهُ فَأَشَارَ جِبْرِيلُ بِيَدِهِ أَنْ تَوَاضَعْ. فَقُلْتُ: «نَبِيًّا عَبْدًا»»» قَالَتْ: فَكَانَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعْدُ ذَلِكَ لَا يَأْكُلُ متكأ يَقُولُ: «آكُلُ كَمَا يَأْكُلُ الْعَبْدُ وَأَجْلِسُ كَمَا يَجْلِسُ العبدُ» رَوَاهُ فِي «شرح السّنة»

5836. और इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा की रिवायत में है रसूलुल्लाह ﷺ ने जिब्राइल अलैहिस्सलाम की तरफ देखा जैसे आप उन से मशवरा कर रहे हैं, जिब्राइल अलैहिस्सलाम ने अपने हाथ से इरशाद किया के आप आजिज़ी इख़्तियार करे, मैंने कहा में इबादत गुज़ार नबी बनना पसंद करता हूँ, आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, उस के बाद रसूलुल्लाह ﷺ टेक लगा कर नहीं खाया करते थे, और फ़रमाया करते थे: “मैं ऐसे खाऊंगा जैसे (आम) बंदा खाता है और मैं ऐसे बैठूँगा जैसे बंदा बेठता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواہ البغوی فی شرح السنة (13 / 248249 ح 3684) [و ابو الشیخ فی اخلاق النبی صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم (ص 198)] * بقیة لم یصرح بالسماع و الزھری مدلس و عنعن و محمد بن علی بن عبداللہ بن عباس : لم یسمع من جدہ



بَاب المبعث وبدء الْوَحْي • नबी ए करीम की बेसत और नुज़ूल ए वही का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٥٨٣٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: بَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِأَرْبَعِينَ سَنَةً فَمَكَثَ بِمَكَّةَ ثلاث عَشْرَةَ سَنَةً يُوحَى إِلَيْهِ ثُمَّ أُمِرَ بِالْهِجْرَةِ فهاجرَ عشر سِنِينَ وَمَاتَ وَهُوَ ابْنُ ثَلَاثٍ وَسِتِّينَ سَنَةً. مُتَّفق عَلَيْهِ

5837. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ को चालीस साल की उम्र में मबउस किया गया, आप (नबूवत के) तेरह साल मक्के में रहे और आप पर वही आती रही. फिर आप को हिजरत का हुक्म दिया गया तो आप ने हिजरत के दस साल (मदीने में) कयाम फ़रमाया और आप ने त्रेसथ (63) बरस की उमर में वफात पाई| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (3903 ، 3851) و مسلم (118 ، 117 / 2351)، (6096 و 6097)

٥٨٣٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: أَقَامَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَكَّةَ خَمْسَ عَشْرَةَ سَنَةً يَسْمَعُ الصَّوْتَ وَيَرَى الضَّوْءَ سَبْعَ سِنِينَ وَلَا يَرَى شَيْئًا وَثَمَانِ سِنِينَ يُوحَى إِلَيْهِ وَأَقَامَ بِالْمَدِينَةِ عَشْرًا وَتُوُفِّيَ وَهُوَ ابْنُ خَمْسٍ وَسِتِّينَ. مُتَّفق عَلَيْهِ

5838. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ मक्का में पन्द्रह बरस रहे, आप सात साल तक आवाज़ सुनते और रोशनी देखते रहे और (इस के अलावा) आप कोई चीज़ नहीं देखते थे, और आठ साल आप की तरफ वही आती रही, आप ने मदीना में दस साल कयाम फ़रमाया: और पेंसठ (65) बरस की उमर में वफात पाई| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (لم اجدہ) و مسلم (123 ، 122 / 2353)، (6102 و 6104)

٥٨٣٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: تَوَفَّاهُ اللَّهُ على رَأس سِتِّينَ سنة. مُتَّفق عَلَيْهِ

5839. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अल्लाह तआला ने आप ﷺ को साठ साल मुकम्मल होने पर वफात पाई| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5900) و مسلم (113 / 2347)، (6089)

٥٨٤٠ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: قُبِضَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ ابْنُ ثَلَاثٍ وَسِتِّينَ وَأَبُو بَكْرٍ وَهُوَ ابْنُ ثَلَاثٍ وَسِتِّينَ وَعُمَرُ وَهُوَ ابْنُ ثَلَاثٍ وَسِتِّينَ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ»» قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيل البُخَارِيّ: ثَلَاث وَسِتِّينَ أَكثر

5840. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ की जब रूह कब्ज़ की गई तो इस वक़्त आप की उमर त्रेसथ (63) बरस थी, अबू बक्र और उमर रदियल्लाहु अन्हु की भी रूह जब कब्ज़ की गई तो इस वक़्त उनकी उमरे भी त्रेसथ (63) बरस की थी| मुहम्मद बिन इस्माइल इमाम बुखारी (रह) ने फ़रमाया: त्रेसथ (63) बरस की उमर के मुतल्लिक रिवायत ज़्यादा हैं| (मुस्लिम)

رواه مسلم (114 / 2348)، (6091) وقال البخارى :’’ وهو ابن ثلاث و ستين و هذا اصح ‘‘ (التاريخ الكبير 3 / 255)

٥٨٤١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: أَوَّلُ مَا بُدِئَ بِهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنَ الْوَحْيِ الرُّؤْيَا الصَّادِقَةُ فِي النَّوْمِ فَكَانَ لَا يَرَى رُؤْيَا إِلَّا جَاءَتْ مِثْلَ فَلَقِ الصُّبْحِ ثُمَّ حُبِّبَ إليهِ الخَلاءُ وكانَ يَخْلُو بغارِ حِراءٍ فيتحنَّثُ فِيهِ - وَهُوَ التَّعَبُّدُ اللَّيَالِي ذَوَاتِ الْعَدَدِ - قَبْلَ أَنْ يَنْزِعَ إِلَى أَهْلِهِ وَيَتَزَوَّدَ لِذَلِكَ ثُمَّ يَرْجِعَ إِلَى خَدِيجَةَ فَيَتَزَوَّدَ لِمِثْلِهَا حَتَّى جَاءَهُ الْحَقُّ وَهُوَ فِي غَارِ حِرَاءٍ فَجَاءَهُ الْمَلَكُ فَقَالَ: اقْرَأْ. فَقَالَ: «مَا أَنَا بِقَارِئٍ» . قَالَ: " فَأَخَذَنِي فَغَطَّنِي حَتَّى بَلَغَ مِنِّي الْجَهْدُ ثُمَّ أَرْسَلَنِي فَقَالَ: اقْرَأْ. فَقُلْتُ: مَا أَنَا [ص:١٦٢ بِقَارِئٍ فَأَخَذَنِي فَغَطَّنِي الثَّانِيَةَ حَتَّى بَلَغَ مِنِّي الْجَهْدَ ثُمَّ أَرْسَلَنِي فَقَالَ: اقْرَأْ. فَقُلْتُ: مَا أَنَا بِقَارِئٍ. فَأَخَذَنِي فَغَطَّنِي الثَّالِثَةَ حَتَّى بَلَغَ مِنِّي الْجهد ثمَّ أَرْسلنِي فَقَالَ: [اقرَأْ باسمِ ربِّكَ الَّذِي خَلَقَ. خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ. اقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ. الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ. عَلَّمَ الْإِنْسَانَ مَا لم يعلم] ". فَرجع بِهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْجُفُ فُؤَادُهُ فَدَخَلَ عَلَى خَدِيجَةَ فَقَالَ: «زَمِّلُونِي زَمِّلُونِي» فَزَمَّلُوهُ حَتَّى ذَهَبَ عَنْهُ الرَّوْعُ فَقَالَ لخديجةَ وأخبرَها الخبرَ: «لَقَدْ خَشِيتُ عَلَى نَفْسِي» فَقَالَتْ خَدِيجَةُ: كَلَّا وَاللَّهِ لَا يُخْزِيكَ اللَّهُ أَبَدًا إِنَّكَ لَتَصِلُ الرَّحِمَ وَتَصْدُقُ الْحَدِيثَ وَتَحْمِلُ الْكَلَّ وَتَكْسِبُ الْمَعْدُومَ وتقْرِي الضيفَ وَتُعِينُ عَلَى نَوَائِبِ الْحَقِّ ثُمَّ انْطَلَقَتْ بِهِ خَدِيجَةُ إِلَى وَرَقَةَ بْنِ نَوْفَلٍ ابْنِ عَمِّ خَدِيجَةَ. فَقَالَتْ لَهُ: يَا ابْنَ عَمِّ اسْمَعْ مِنِ ابْنِ أَخِيكَ. فَقَالَ لَهُ وَرَقَةُ: يَا ابْنَ أَخِي مَاذَا تَرَى؟ فَأَخْبَرَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَبَرَ مَا رَأَى. فَقَالَ وَرَقَةُ: هَذَا هُوَ النَّامُوسُ الَّذِي أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَى مُوسَى يَا لَيْتَنِي فِيهَا جَذَعًا يَا لَيْتَنِي أَكُونُ حَيًّا إِذْ يُخْرِجُكَ قَوْمُكَ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَوَ مُخْرِجِيَّ هُمْ؟» قَالَ: نَعَمْ لَمْ يَأْتِ رَجُلٌ قَطُّ بِمِثْلِ مَا جِئْتَ بِهِ إِلَّا عُودِيَ وَإِنْ يُدْرِكْنِي يَوْمُكَ أَنْصُرْكَ نَصْرًا مُؤَزَّرًا. ثُمَّ لَمْ يَنْشَبْ وَرَقَةُ أَنْ تُوُفِّيَ وَفَتَرَ الوحيُ. مُتَّفق عَلَيْهِ

5841. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ पर वही का आगाज़ सच्चे व पाकिज़ा ख्वाबो से शुरू हुआ, आप जो भी ख्वाब देखते वह सुबह की रोशनी की तरह (सच्चा) साबित हो जाता, फिर आप तन्हाई पसंद हो गए, आप गारे (गुफा) हिरा में खलवत फ़रमाया करते थे, आप अपने अहले खाना के पास आने से पहले कई कई राते वहां इबादत में मशगुल रहते थे, उन अय्याम के लिए जादे राह (रसद) साथ ले जाया करते थे, फिर

आप ﷺ ख़दीजा रदियल्लाहु अन्हु के पास तशरीफ़ लाते और उतनी ही मुद्दत के लिए फिर रसद (माल सामान) साथ ले जाते थे, हत्ता के आप गारे (गुफा) हीरा ही में थे की आप पर हक़ (वही) आ गई, फ़रिश्ता (जिब्राइल (अस)) आप के पास आया तो उस ने कहा: पढ़े, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं कारी नहीं (पढ़ना नहीं जनता) हूँ”, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस ने मुझे पकड़ा और इतनी शिद्दत से दबाया जिस से मुझे काफी तकलीफ हुई, फिर उस ने मुझे छोड़ दिया, और कहा: पढ़े, मैंने कहा में पढ़ना नहीं जानता, उस ने मुझे पकड़ कर दूसरी मर्तबा खूब दबाया, मुझे इस बार भी काफी तकलीफ हुई फिर उस ने मुझे छोड़ दिया, और कहा पढ़े, मैंने कहा में पढ़ना नहीं जानता, उस ने मुझे तीसरी मर्तबा दबाया, इस बार भी मुझे काफी तकलीफ हुई, फिर उस ने मुझे छोड़ दिया और कहा: पढ़े, अपने रब के नाम के साथ जिस ने पैदा फ़रमाया, उस ने इंसान को जमे हुए खून से पैदा फ़रमाया, पढ़े, आप का रब बहोत ही कर करने वाला है, जिस ने कलम के ज़रिए सिखाया, इंसान को वह कुछ सिखाया जो वह नहीं जानता था”, चुनांचे रसूलुल्लाह ﷺ उस के बाद वापस हुए और आप ﷺ का दिल (खौफ की वजह से) धड़क रहा था, आप ख़दीजा रदियल्लाहु अन्हु के पास तशरीफ़ लाए, और फ़रमाया: “मुझे कम्बल उढ़ा दो, मुझे कम्बल उढ़ा दो, उन्होंने आप को कम्बल उढ़ा दिया हत्ता के आप का खौफ जाता रहा तो आप ने ख़दीजा रदियल्लाहु अन्हु से सारा वाकिए बयान किया और कहा: “मुझे अपनी जान का अंदेशा है”, ख़दीजा रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, हरगिज़ नहीं, अल्लाह की क़सम! अल्लाह आप को कभी रुसवा नहीं करेगा, आप सिलह रहमी करते हैं, रास्तगो है, दर्द मंदों का बोझ उठाते है, तही दस्तूर के लिए कमाते है, मेहमानों की मेज़बानी करते हैं, और मुसीबत ज़दाह लोगों की इआनत करते हैं, फिर ख़दीजा रदियल्लाहु अन्हु आप को अपने चचाज़ाद भाई वर्का बिन नौफल के पास ले गई, उन्होंने उन से कहा: मेरे चचा के बेटे! अपने भतीजे की बात सुने, वरका ने आप से कहा: भतीजे! आप क्या देखते हो? रसूलुल्लाह ﷺ ने जो देखा था वह कुछ इसे बता दिया, वरका ने कहा: यह तो वही नामुस है, जिसे अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ वही दे कर भेजा था, काश! मैं इस वक़्त तुवाना होता, काश में इस वक़्त जिंदा होता जब आप की कौम आप को निकाल देगी, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “क्या यह मुझे निकाल देंगे ?” उस ने कहा: हाँ, जब किसी को मंसबे नबूवत पर फाईज़ किया गया तो उन से ज़रूर दुश्मनी की गई और अगर मैंने तुम्हारा ज़माने पा लिया तो मैं तुम्हारी ज़बरदस्त मदद करूँगा, फिर वर्का जल्दी ही वफात पा गए और कुछ अरसा के लिए वही रुक गई। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3) و مسلم (253 / 160)، (403)

٥٨٤٢ - (صَحِيح) وَزَادَ الْبُخَارِيُّ: حَتَّى حَزِنَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فِيمَا بَلَغَنَا - حُزْنًا غَدَا مِنْهُ مرَارًا كي يتردَّى منْ رؤوسِ شَوَاهِقِ الْجَبَلِ فَكُلَّمَا أَوْفَى بِذِرْوَةِ جَبَلٍ لِكَيْ يُلْقِيَ [ص:١٦٢ نَفْسَهُ مِنْهُ تَبَدَّى لَهُ جِبْرِيلُ فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ إِنَّكَ رَسُولُ اللَّهِ حَقًّا. فَيَسْكُنُ لذلكَ جأشُه وتقرُّ نفسُه

5842. और इमाम बुखारी रहिमहुल्लाह ने यह इज़ाफा नकल किया है, हत्ता के नबी ﷺ ग़मगीन हो गए, हमें जो रिवायत पहुंची हैं, उन के मुताबिक यह है कि आप ﷺ शदीद ग़मगीन हो गए, कई दफा उन का दिल में यह

ख़याल आया के वह पहाड़ की चोटी से अपने आप को नीचे गिरा लें, वह जब भी पहाड़ की चोटी पर पहुँच कर अपने आप को गिराने लगता तो जिब्राइल अलैहिस्सलाम आप के सामने जाते और कहते: मुहम्मद आप अल्लाह के सच्चे रसूल हैं उस से आप का क़ल्बी बेचेनी ख़तम हो जाता और आप ﷺ सुकून महसूस करते। (बुखारी)

رواه البخاری (6982)

٥٨٤٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ جَابِرٍ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُحَدِّثُ عَنْ فَتْرَةِ الْوَحْيِ قَالَ: " فَبَيْنَا أَنَا أَمْشِي سَمِعْتُ صَوْتًا مِنَ السَّمَاءِ فَرَفَعْتُ بَصَرِي فَإِذَا الْمَلَكُ الَّذِي جَاءَنِي بِحِرَاءٍ قَاعِدٌ عَلَى كُرْسِيٍّ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ فَجُئِثْتُ مِنْهُ رُعْبًا حَتَّى هَوَيْتُ إِلَى الأرضِ فجئتُ أَهلِي فقلتُ: زَمِّلُونِي زَمِّلُونِي فَأَنْزل اللَّهُ تَعَالَى: [يَا أَيُّها الْمُدَّثِّرُ. قُمْ فَأَنْذِرْ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ. وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ. وَالرجز فاهجر] ثمَّ حمي الْوَحْي وتتابع ". مُتَّفق عَلَيْهِ

5843. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को वही के रुक जाने के ज़माने के मुतल्लिक हदीस बयान करते हुए सुना, फ़रमाया: “इस असना में की मैं चला जा रहा था तो मैंने आसमान में एक आवाज़ सुनी, मैंने अपनी नज़र उठाई तो मैंने देखा के वही फ़रिश्ता जो हिरा में मेरे पास आया था, आसमान और ज़मीन के दरमियान एक कुरसी पर बैठा हुआ है, मैं उस के रॉब से खौफ ज़दाह हुआ और ज़मीन पर गिर पड़ा, उस के बाद में अपने अहले खाना के पास आ गया, और मैंने कहा: मुझे कम्बल उढ़ा दो मुझे कम्बल उढ़ा दो चुनांचे उन्होंने मुझे कम्बल उढ़ा दीया, फिर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फरमाई: “कम्बल ओढ़ कर लेटते वाले उठ जाए और लोगों को (अज़ाब इलाही से) डराए, अपने रब की बड़ाई बयान करे, अपने कपड़ो को साफ़ सुथरा रखे और गंदग इसे दूर रहे”, फिर वही तेज़ी के साथ पे दर पे आने लगी”। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (4) و مسلم (255 / 161)، (406)

٥٨٤٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ أَنَّ الْحَارِثَ بْنَ هِشَامٍ سَأَلَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ كَيْفَ يَأْتِيكَ الْوَحْيُ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَحْيَانًا يَأْتِينِي مِثْلَ صَلْصَلَةِ الْجَرَسِ وَهُوَ أَشَدُّهُ عَلَيَّ فَيَفْصِمُ عَنِّي وَقَدْ وَعَيْتُ عَنْهُ مَا قَالَ وَأَحْيَانًا يَتَمَثَّلُ لِي الْمَلَكُ رَجُلًا فَيُكَلِّمُنِي فَأَعِي مَا يَقُولُ» . قَالَتْ عَائِشَةُ: وَلَقَدْ رَأَيْتُهُ يَنْزِلُ عَلَيْهِ الْوَحْيُ فِي الْيَوْمِ الشَّدِيدِ الْبَرْدِ فَيَفْصِمُ عَنْهُ وَإِنَّ جَبِينَهُ لَيَتَفَصَّدُ عَرَقًا. مُتَّفق عَلَيْهِ

5844. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के हारिस बिन हिश्शाम रदियल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाह ﷺ से दरियाफ्त करते हुए अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप पर वही कैसे आती है? रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कभी वह मेरे पास घंटी कि सी आवाज़ की सूरत में आती है, और वह मुझ पर निहायत सख्त होती है, और उस से पसीना जारी हो जाता है, और जो वह कहता है, मैं उसे याद कर लेता हूँ, और कभी फ़रिश्ता आदमी की शकल में मेरे पास आता है और मुझ से कलाम करता है, वह जो कहता है में उसे याद कर लेता हूँ”, आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने आप ﷺ को देखा के शदीद शर्दी के दिन आप पर वही नाज़िल होती तो आप से पसीने फुट पड़ते और आप की पेशानी पसीने से शराबोर हो जाती। (मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (2) و مسلم (87 ، 86 / 2333)، (6058 و 6059)

٥٨٤٥ - (صَحِيح) وَعَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذا نزل عَلَيْهِ الْوَحْيُ كُرِبَ لِذَلِكَ وَتَرَبَّدَ وَجْهُهُ. وَفِي رِوَايَة: نكَّسَ رأسَه ونكَّسَ أصحابُه رؤوسَهم فَلَمَّا أُتْلِيَ عَنْهُ رَفَعَ رَأْسَهُ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

5845. उबादा बिन सामित रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब नबी ﷺ पर वही नाज़िल होती तो इस वजह से आप कर्ब महसूस करते और आप के चेहरा मुबारक का रंग तब्दील हो जाता था| एक दूसरी रिवायत में है: आप ﷺ का सर झुक जाता और आप के सहाबा अपने सर झुका लेते थे, और जब वही ख़तम हो जाती तो आप अपना सर उठा लेते थे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (88 / 2334 ، 89 / 2335)، (6060 و 6061)

٥٨٤٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ [وَأَنْذِرْ عشيرتك الْأَقْرَبين] خَرَجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى صَعِدَ الصَّفَا فَجَعَلَ يُنَادِي: «يَا بَنِي فِهْرٍ يَا بني عدي» [ص:١٦٢ لبطون قُرَيْش حَتَّى اجْتَمعُوا فَجَعَلَ الرَّجُلُ إِذَا لَمْ يَسْتَطِعْ أَنْ يَخْرُجَ أَرْسَلَ رَسُولًا لِيَنْظُرَ مَا هُوَ فَجَاءَ أَبُو لَهَبٍ وَقُرَيْشٌ فَقَالَ: " أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَخْبَرْتُكُمْ أَنَّ خيلاً تخرجُ منْ سَفْحِ هَذَا الْجَبَلِ - وَفِي رِوَايَةٍ: أَنَّ خَيْلًا تَخْرُجُ بِالْوَادِي تُرِيدُ أَنْ تُغِيرَ عَلَيْكُمْ - أَكُنْتُمْ مُصَدِّقِيَّ؟ " قَالُوا: نَعَمْ مَا جَرَّبْنَا عَلَيْكَ إِلَّا صِدْقًا. قَالَ: «فَإِنِّي نَذِيرٌ لَكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٌ شديدٍ» . قَالَ أَبُو لهبٍ: تبّاً لكَ أَلِهَذَا جَمَعْتَنَا؟ فَنَزَلَتْ: [تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ] مُتَّفق عَلَيْهِ

5846. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जब यह आयत: “अपने करीबी रिश्तेदारों को डराए ”, नाज़िल हुई तो नबी ﷺ बाहर तशरीफ़ लाए और सफा पर चढ़ कर आवाज़ देने लगे: “बनू फहर! बनू अदि!‘‘ आप ने कुरैश के क़बीलो को आवाज़ दी, हत्ता के वह सब जमा हो गए, अगर कोई आदमी खुद नहीं आ सकता था तो उस ने अपना नुमाइंदा भेज दिया था ताकि वह देखे के क्या मुआमला है, चुनांचे अबू लहब और कुरैश भी आ गए आप, ﷺ ने फ़रमाया: “मुझे बताओ, अगर में तुम्हें बताऊँ के इस पहाड़ के पीछे से एक लश्कर आने वाला है”, एक दूसरी रिवायत में है: “इस वादी के पीछे एक लश्कर है जो तुम पर हमला करने वाला है, क्या तुम मुझे सच्चा सम्झोंगे ?” उन्होंने कहा: हाँ, क्योंकि हमने आप को सच्चा ही पाया है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं सख्त अज़ाब से, जो तुम्हारे सामने आ रहा है, तुम्हें डराता हूँ”, अबू लहब बोल उठा (नाअउज़ुबिल्लाह) तुम हलाक हो जाओ, तुमने इसलिए हमें जमा किया था? अल्लाह तआला ने यह सूरत नाज़िल फरमाई: “अबू लहब के दोनों हाथ टूट गए और वह बर्बाद हो गया”| (मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (4971) و الرواية الاولى (4770) و مسلم (355 / 208)، (508)

٥٨٤٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: بَيْنَمَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي عِنْدَ الْكَعْبَةِ وَجُمِعَ قُرَيْشٌ فِي مَجَالِسِهِمْ إِذْ قَالَ قَائِلٌ: أَيُّكُمْ يَقُومُ إِلَى جَزُورِ آلِ فُلَانٍ فَيَعْمِدُ إِلَى فَرْثِهَا وَدَمِهَا وَسَلَاهَا ثُمَّ يُمْهِلُهُ حَتَّى إِذَا سَجَدَ وَضَعَهُ بَيْنَ كَتِفَيْهِ وَثَبَتَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَاجِدًا فَضَحِكُوا حَتَّى مَالَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ مِنَ الضَّحِكِ فَانْطَلَقَ مُنْطَلِقٌ إِلَى فَاطِمَةَ فَأَقْبَلَتْ تَسْعَى وَثَبَتَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَاجِدًا حَتَّى أَلْقَتْهُ عَنْهُ وَأَقْبَلَتْ عَلَيْهِمْ تَسُبُّهُمْ فَلَمَّا قَضَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الصَّلَاةَ قَالَ: «اللَّهُمَّ عَلَيْكَ بِقُرَيْشٍ» ثَلَاثًا - وَكَانَ إِذَا دَعَا دَعَا ثَلَاثًا وَإِذَا سَأَلَ سَأَلَ ثَلَاثًا -: «اللَّهُمَّ عَلَيْكَ بِعَمْرِو بْنِ هِشَام وَشَيْبَةَ بْنِ رَبِيعَةَ وَالْوَلِيدِ بْنِ عُتْبَةَ وَأُمَيَّةَ بْنِ خَلَفٍ وَعُقْبَةَ بْنِ أَبِي مُعَيْطٍ وَعُمَارَةَ بن الْوَلِيد» . قَالَ عبد الله: فو الله لَقَدْ رَأَيْتُهُمْ صَرْعَى يَوْمَ بَدْرٍ ثُمَّ سُحِبُوا إِلَى الْقَلِيبِ قَلِيبِ بَدْرٍ ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَأُتْبِعَ أَصْحَابُ القليب لعنة» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5847. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, इस असना में के रसूलुल्लाह ﷺ काबा के पास नमाज़ पढ़ रहे थे जबकि कुरैश अपने मजालिस में बैठें हुए थे की किसी ने कहा: तुम में से कौन फलां कबिले के जिबह किए हुए ऊटों के पास जाए और वह वहां से उस का गोबर, खून और पुश्त उठा लाए, फिर वह इंतज़ार करे और जब वह सजदे में जाए तो वह उन चीजों को उनकी गर्दन पर रख दे? चुनांचे उनमें से सबसे ज़्यादा बदबख्त शख़्स उठा (और वह सब चीज़े ले आया), जब आप ﷺ सजदे में गए तो उस ने वह चीज़े आप की गर्दन पर रख दी, नबी ﷺ सजदे ही की हालत में रहे, वह (मुशरिकिन) देख कर हंस रहे थे, और हंसी की वजह से एक दूसरे परलौट पोट हो रहे थे, चुनांचे एक शख़्स फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हुमा के पास गया (और उन्हें बताया) तो वह दोड़ती हुई तशरीफ़ लाई, नबी ﷺ सजदे ही की हालत में थे फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा ने इस (गलाज़त) को आप से उतार फेका, और उन्हें बुरा-भला कहा, जब रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ से फारिग़ हुए तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “ए अल्लाह! तू कुरैश को पकड़ ले, ऐ अल्लाह! तू कुरैश को पकड़ ले, ऐ अल्लाह! तू कुरैश को पकड़ ले”, तीन बार फ़रमाया और आप का मामूल था की जब आप दुआ करते तो तीन बार दुआ करते थे, और जब (अल्लाह से) कोई चीज़ तलब फरमाते, तो तीन बार तलब फरमाते थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह अम्र बिन हिश्शाम, उत्बा बिन रबिआ, शैबा बिन रबिआ, वलीद बिन उत्बा, उमय्य बिन खल्फ, उक्बा बिन अबी मुअयत और उमारह बिन वलीद को पकड़ ले”, अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अल्लाह की क़सम! बद्र के दिन मैंने इन सब को मकतुल पाया, फिर उन्हें घंसिट कर बद्र के कुंवो में फेंक दिया गया, फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कलिब वालों पर लानत बरसा दी गई”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (520) و مسلم (107 / 1794)، (4649)

٥٨٤٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن عَائِشَة أَنَّهَا قَالَت: هَلْ أَتَى عَلَيْكَ يَوْمٌ كَانَ [ص:١٦٢ أَشَدَّ مِنْ يَوْمِ أُحُدٍ؟ فَقَالَ: " لَقَدْ لَقِيتُ مِنْ قَوْمِكِ فَكَانَ أَشَدَّ مَا لَقِيتُ مِنْهُمْ يَوْمَ الْعَقَبَةِ إِذْ عرضتُ نَفسِي على ابْن عبد يَا لِيل بْنِ كُلَالٍ فَلَمْ يُجِبْنِي إِلَى مَا أَرَدْتُ فَانْطَلَقْتُ - وَأَنا مهموم - على وَجْهي فَلم أفق إِلَّا فِي قرن الثَّعَالِبِ فَرَفَعْتُ رَأْسِي فَإِذَا أَنَا بِسَحَابَةٍ قَدْ أَظَلَّتْنِي فَنَظَرْتُ فَإِذَا فِيهَا جِبْرِيلُ فَنَادَانِي فَقَالَ: إِنَّ اللَّهَ قَدْ سَمِعَ قَوْلَ قَوْمِكَ وَمَا رَدُّوا عَلَيْكَ وَقَدْ بَعَثَ إِلَيْكَ مَلَكَ الْجِبَالِ لِتَأْمُرَهُ بِمَا شِئْتَ فِيهِمْ ". قَالَ: " فَنَادَانِي مَلَكُ الْجِبَالِ فَسَلَّمَ عَلَيَّ ثُمَّ قَالَ: يَا مُحَمَّدُ إِنَّ اللَّهَ قَدْ سَمِعَ قَوْلَ قَوْمِكَ وَأَنَا مَلَكُ الْجِبَالِ وَقَدْ بَعَثَنِي رَبُّكَ إِلَيْكَ لِتَأْمُرَنِي بِأَمْرِك إِن شِئْت أطبق عَلَيْهِم الأخشبين " فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «بَلْ أَرْجُو أَنْ يُخْرِجَ اللَّهُ مِنْ أَصْلَابِهِمْ مَنْ يَعْبُدُ اللَّهَ وَحْدَهُ وَلَا

يُشْرِكُ بِهِ شَيْئا» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5848. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या आप पर उहद के दिन से भी ज़्यादा सख्त कोई दिन गुज़रा है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुझे तुम्हारी कौम की तरफ से बहोत से मसाइब (तकलीफ) सामने का करना पड़ा है, लेकिन उक्बा के दिन मुझे उनकी तरफ से बहोत तकलीफ पहुंची है, जब मैंने इब्ने अब्दिया लील बिन कूलाल पर दावत पेश की और उस ने मेरी दावत कबूल न की, मैं हैरान व परेशान वापस चल पड़ा, मुझे मालुम न था की मैं किसी सिम्त चल रहा हूँ, करन सआलब पर पहुँच कर मुझे कुछ पता चला, मैंने सर उठाया तो देखा के बादल के टुकड़े ने मुझ पर साया किया हुआ है, उस में जिब्राइल अलैहिस्सलाम हैं, उन्होंने मुझे आवाज़ दी और कहा के अल्लाह ने आप की कौम की बात और उनका जवाब सुन लिया है, और उस ने पहाड़ो का फ़रिश्ता आप की तरफ भेजा है ताके आप उन के मुतल्लिक जो चाहे हुक्म फरमाइए”, फ़रमाया: “पहाड़ो के फ़रिश्ते ने मुझे आवाज़ दी, उस ने मुझे सलाम कह कर अर्ज़ किया, मुहम्मद! अल्लाह ने आप की कौम की बात सुन ली है, और मैं पहाड़ो का फ़रिश्ता हूँ, आप के रब ने मुझे आप की तरफ भेजा है, ताकि आप जो चाहे मुझे हुक्म फरमाइए, अगर आप चाहे तो मैं दोनों तरफ के पहा ला कर इन पर मिला दू”, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “नहीं, बल्कि मुझे उम्मीद है के अल्लाह उन के सलब से ऐसे लोग पैदा फरमाएगा जो एक अल्लाह की इबादत करेंगे और वह उस के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराएंगे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (3231) و مسلم (111 / 1795)، (4653)

٥٨٤٩ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَنَسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كُسِرَتْ رَبَاعِيَتُهُ يَوْمَ أُحُدٍ وَشُجَّ رَأْسِهِ فَجَعَلَ يَسْلُتُ الدَّمَ عَنْهُ وَيَقُولُ: «كَيْفَ يُفْلِحُ قَوْمٌ شَجُّوا رَأْسَ نَبِيِّهِمْ وَكَسَرُوا رَبَاعِيَتَهُ» . رَوَاهُ مُسلم

5849. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के गज़वा ए उहद मैं रसूलुल्लाह ﷺ के सामने के चार दांत टूट गए और आप का सर मुबारक ज़ख़्मी कर दिया गया, आप ﷺ खून साफ़ कर रहे थे और फरमा रहे थे: “वो कौम कैसे फलाह पाए गी जिस ने अपने नबी का सर ज़ख़्मी कर दिया और उस के सामने के चार दांत शहीद कर दिए”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (104 / 1791)، (4645)

٥٨٥٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اشْتَدَّ غَضَبُ اللَّهِ عَلَى قَوْمٍ فَعَلُوا بِنَبِيِّهِ» يُشِيرُ إِلَى رَبَاعِيَتِهِ «اشْتَدَّ غَضَبُ اللَّهِ عَلَى رَجُلٍ يَقْتُلُهُ رَسُولُ اللَّهِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5850. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह इस कौम पर सख्त नाराज़ है जिस ने अपने नबी के साथ ऐसा सुलूक किया” और उस से आप का इरशाद अपने सामने के चार

दांतों की तरफ था " और ऐसे शख़्स पर भी अल्लाह का गज़ब शदीद होता है जिसे अल्लाह का रसूल अल्लाह की राह में क़त्ल कर दे"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاري (4073) و مسلم (106 / 1793)، (4648)

وهذا الباب خال عن: الفصل الثاني

यह बाब दूसरी फस्ल से खाली है|

بَاب المبعث وبدء الْوَحْي •	नबी ए करीम की बेसत और नुज़ूल ए वही का बयान
الْفَصْل الثَّالِث •	तीसरी फस्ल

٥٨٥١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ قَالَ: سَأَلْتُ أَبَا سَلَمَةَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَوَّلِ مَا نزل من الْقُرْآن؟ قَالَ: [يَا أَيهَا المدثر] قلت: يَقُولُونَ: [اقْرَأ باسم رَبك] قَالَ أَبُو سَلَمَةَ: سَأَلْتُ جَابِرًا عَنْ ذَلِكَ. وَقُلْتُ لَهُ مِثْلَ الَّذِي قُلْتَ لِي. فَقَالَ لِي جَابِرٌ: لَا أُحَدِّثُكَ إِلَّا بِمَا حَدَّثَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " جَاوَرْتُ بِحِرَاءٍ شَهْرًا فَلَمَّا قَضَيْتُ جِوَارِي هَبَطْتُ فَنُودِيتُ فَنَظَرْتُ عَنْ يَمِينِي فَلَمْ أَرَ شَيْئًا وَنَظَرْتُ عَنْ شِمَالِي فَلَمْ أَرَ شَيْئًا وَنَظَرْتُ عَنْ خَلْفِي فَلَمْ أَرَ شَيْئًا فَرَفَعْتُ رَأْسِي فَرَأَيْتُ شَيْئًا فَأَتَيْتُ خَدِيجَةَ فَقُلْتُ: دَثِّرُونِي فَدَثَّرُونِي وصبُّوا عليَّ مَاء بَارِدًا فنزلت: [يَا أَيهَا الْمُدَّثِّرُ. قُمْ فَأَنْذِرْ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ. وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ. وَالرجز فاهجر] وَذَلِكَ قَبْلَ أَنْ تُفْرَضَ الصَّلَاةُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5851. याह्या बिन अबी कसीर बयान करते हैं, मैंने अबू सलमा बिन अब्दुल रहमान से पूछा कुरान का कौन सा हिस्सा सबसे पहले नाज़िल हुआ, उन्होंने कहा: (يَا اَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ) मैंने कहा वह (बाज़ उलमा) कहते हैं (اقْرَأ باسم رَبِّك) अबू सलमा ने फ़रमाया: मैंने जाबिर से उस के मुतल्लिक दरियाफ्त किया था, और मैंने भी उन से इसी तरह कहा था जिस तरह तुमने मुझे कहा है, तो जाबिर रदियल्लाहु अन्हु ने मुझे बताया की मैं तुम्हें वही कुछ बयान कर रहा हूँ जो कुछ रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें बताया था, आप ﷺ ने फ़रमाया: "मैंने हिरा में एक माह खलवत इख़्तियार की, जब मैंने अपनी खलवत पूरी कर ली, तो मैं नीचे उतर आया, मुझे आवाज़ दी गई मैंने अपने दाएँ देखा तो मुझे कोई चीज़ नज़र न आई, मैंने अपने बाएँ देखा तो मुझे कुछ नज़र न आया, मैंने अपनी पीछे देखा तो मैंने कोई चीज़ न देखी, मैंने ऊपर देखा तो मैंने कोई चीज़ न देखी, फिर मैं ख़दीजा रदियल्लाहु अन्हुमा के पास गया, तो मैंने कहा मुझे चादर उढ़ा दो, उन्होंने मुझे चादर उढ़ा दी और उन्होंने मुझ पर ठंडा पानी डाला, और फिर मुझ पर यह आयात नाज़िल हुई (जिस का तर्जुमा इस तरह है) " ए चादर ओढ़ने वाले खड़े हो जाए, और डराए, और अपने रब की बड़ाई बयान करे, और अपने कपड़ो को पाक साफ़ रखे और शिर्क से किनारा कशी इख़्तियार करे", और यह नमाज़ फ़र्ज़ होने से पहले का

वाकिया है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (4922) و مسلم (255 / 161)، (406)

بَاب عَلَامَات النُّبُوَّة • नबूवत की अलामतो का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٥٨٥٢ - (صَحِيح) عَنْ أَنَسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَتَاهُ جِبْرِيلُ وَهُوَ يَلْعَبُ مَعَ الْغِلْمَانِ فَأَخَذَهُ فَصَرَعَهُ فَشَقَّ عَنْ قَلْبِهِ فَاسْتَخْرَجَ مِنْهُ عَلَقَةً. فَقَالَ: هَذَا حَظُّ الشَّيْطَانِ مِنْكَ ثُمَّ غَسَلَهُ فِي طَسْتٍ مِنْ ذَهَبٍ بِمَاءِ زَمْزَمَ ثُمَّ لَأَمَهُ وَأَعَادَهُ فِي مَكَانِهِ وَجَاءَ الْغِلْمَانُ يَسْعَوْنَ إِلَى أُمِّهِ يَعْنِي ظِئْرَهُ. فَقَالُوا: إِنْ مُحَمَّدًا قَدْ قُتِلَ فَاسْتَقْبَلُوهُ وَهُوَ مُنْتَقَعُ اللَّوْنِ قَالَ أَنَسٌ: فَكُنْتُ أَرَى أَثَرَ الْمِخْيَطِ فِي صَدْرِهِ. رَوَاهُ مُسلم

5852. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ के पास जिब्राइल अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए, आप इस वक़्त बच्चो के साथ खेल रहे थे, उन्होंने आप को पकड़ कर लिटाया, आप का सीना चाक कर का दिल से ख़ून का एक लोथड़ा निकाल कर फ़रमाया: यह आप के (जिस्म में) शैतान का हिस्सा था, फिर इस दिल को सोने की एक तश्ती में (रख कर) आबे ज़म ज़म से धोया और फिर इसे जोड़ कर उसकी जगह पर दोबारा रख दीया यह (माजरा देख कर) बच्चे दोड़ कर आप की वालिद यानी आप की दाई के पास आए और उन्होंने कहा: मुहम्मद ﷺ को क़त्ल कर दिया गया है, वह फ़ौरन आप के पास पहुंचे तो देखा के आप का रंग तब्दील हो चूका था, अनस रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया मैंने सिलाई का निशान आप ﷺ के सीने मुबारक पर देखा था| (मुस्लिम)

رواه مسلم (261 / 162)، (413)

٥٨٥٣ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنِّي لَأَعْرِفُ حَجَرًا بِمَكَّةَ كَانَ يُسَلِّمُ عَلَيَّ قَبْلَ أَنْ أُبعث إِنِي لأعرفه الْآن» . رَوَاهُ مُسلم

5853. जाबिर बिन समुराह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैं मक्का में इस पत्थर को पहचानता हूँ जो के मेरी बैसत से कबल मुझे सलाम किया करता था और मैं उसे अब भी पहचानता हूँ”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (2 / 2277)، (5939)

٥٨٥٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أنسٍ قَالَ: إِنَّ أَهْلَ مَكَّةَ سَأَلُوا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يُرِيَهُمْ آيَةً فَأَرَاهُمُ الْقَمَرَ شِقَّتَيْنِ حَتَّى رَأَوْا حِرَاءً بَيْنَهُمَا. مُتَّفق عَلَيْهِ

5854. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मक्का वालो ने रसूलुल्लाह ﷺ से मुतालबा किया के वह उन्हें कोई मोजिज़ा दिखाइए तो आप ﷺ ने उन्हें चाँद के दो टुकड़े होते हुए दिखाया हत्ता के उन्होंने हिरा को इन दो टुकड़ो के दरमियान देखा| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3868) و مسلم (46 / 2802)، (7076)

٥٨٥٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: انْشَقَّ الْقَمَرُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِرْقَتَيْنِ: فِرْقَةً فَوْقَ الْجَبَلِ وَفِرْقَةً دُونَهُ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اشْهَدُوا» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5855. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के दौर में चाँद के दो टुकड़े हुए थे एक टुकड़ा पहाड़ के ऊपर और एक टुकड़ा उस के नीचे (गिरा) था, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “(मेरी नबूवत की) गवाही दो”, दूसरा मानी): “(मोजिज़ा) देख लो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (4864) و مسلم (4543 / 2800)، (7071 و 7073)

٥٨٥٦ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ أَبُو جَهْلٍ: هَلْ يُعَفِّرُ مُحَمَّدٌ وَجْهَهُ بَيْنَ أَظْهُرِكُمْ؟ فَقِيلَ: نَعَمْ. فَقَالَ: وَاللَّاتِ وَالْعُزَّى لَئِنْ رَأَيْتُهُ يَفْعَلُ ذَلِكَ لَأَطَأَنَّ عَلَى رَقَبَتِهِ [ص:١٦٣ فَأَتَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يُصَلِّي - زَعَمَ لِيَطَأَ عَلَى رَقَبَتِهِ - فَمَا فَجِئَهُمْ مِنْهُ إِلَّا وَهُوَ يَنْكُصُ عَلَى عَقِبَيْهِ وَيَتَّقِي بِيَدَيْهِ فَقِيلَ لَهُ مَالك؟ فَقَالَ: إِنَّ بَيْنِي وَبَيْنَهُ لَخَنْدَقًا مِنْ نَارٍ وَهَوْلًا وَأَجْنِحَةً. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَوْ دَنَا مِنِّي لَاخْتَطَفَتْهُ الْمَلَائِكَةُ عُضْواً عُضْواً» . رَوَاهُ مُسلم

5856. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अबू जहल ने कहा क्या मुहम्मद ﷺ तुम्हारे सामने अपना चेहरा खाक आलूद (यानी सजदा) करते हैं उन्होंने कहा: हाँ, उस ने कहा लात व उज्ज़ा की क़सम! अगर मैंने इसे ऐसे करते हुए देखा तो मैं उसकी गर्दन पर अपना पाँव रखूँगा, रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ लाए और नमाज़ शुरू कर दी ,अबू जहल ने इस दौरान आप की गर्दन पर पाँव रखने का इरादा किया, वह आप ﷺ पर हमला करने के लिए आगे बढ़ा लेकिन वह फ़ौरन उल्टे पाँव दोड़ा और खुद को अपने दोनों हाथो से बचाने लगा, उस से पूछा गया, तुझे क्या हुआ? उस ने कहा मेरे और इस मुहम्मद ﷺ के दरमियान आग की खंदक, हैबत (डर) और (फरिश्तो के) पर है रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगर वह मेरे करीब आ जाता तो फ़रिश्ते इसे उचक लेते और उस का जोड़ जोड़ तोड़ देते”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (38 / 2797)، (7065)

٥٨٥٧ - (صَحِيح) وَعَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ قَالَ: بَيْنَا أَنَا عِنْد النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَتَاهُ رَجُلٌ فَشَكَا إِلَيْهِ الْفَاقَةَ ثُمَّ أَتَاهُ الْآخَرُ فَشَكَا إِلَيْهِ قَطْعَ السَّبِيلِ. فَقَالَ: " يَا عدي هَل رَأَيْتَ الْحِيرَةَ؟ فَإِنْ طَالَتْ بِكَ حَيَاةٌ فَلَتَرَيَنَّ الظَّعِينَةَ تَرْتَحِلُ مِنَ الْحِيرَةِ حَتَّى تَطُوفَ بِالْكَعْبَةِ لَا تَخَافُ أَحَدًا إِلَّا اللَّهَ وَلَئِنْ طَالَتْ بك حَيَاةٌ لَتُفْتَحَنَّ كُنُوزُ كِسْرَى وَلَئِنْ طَالَتْ بِكَ حَيَاةٌ

لَتَرَيَنَّ الرَّجُلَ يَخْرُجُ مِلْءَ كَفِّهِ مِنْ ذَهَبٍ أَوْ فِضَّةٍ يَطْلُبُ مَنْ يَقْبَلُهُ فَلَا يجد أحدا يقبله مِنْهُ وَلَيَلْقَيَنَّ اللَّهَ أَحَدُكُمْ يَوْمَ يَلْقَاهُ وَلَيْسَ بَيْنَهُ وَبَيْنَهُ تَرْجُمَانٌ يُتَرْجِمُ لَهُ فَلَيَقُولَنَّ: أَلَمْ أَبْعَثْ إِلَيك رَسُولا فليبلغك؟ فَيَقُولُ: بَلَى. فَيَقُولُ: أَلَمْ أُعْطِكَ مَالًا وَأُفْضِلْ عَلَيْكَ؟ فَيَقُولُ: بَلَى فَيَنْظُرُ عَنْ يَمِينِهِ فَلَا يَرَى إِلَّا جَهَنَّمَ وَيَنْظُرُ عَنْ يَسَارِهِ فَلَا يَرَى إِلَّا جَهَنَّمَ اتَّقُوا النَّارَ وَلَوْ بِشِقِّ تَمْرَةٍ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَبِكَلِمَةٍ طَيِّبَةٍ " قَالَ عَدِيٌّ: فَرَأَيْتُ الظَّعِينَةَ تَرْتَحِلُ مِنَ الْحِيرَةِ حَتَّى تَطُوفَ بِالْكَعْبَةِ لَا تَخَافُ إِلَّا اللَّهَ وَكُنْتُ فِيمَنِ افْتَتَحَ كُنُوزَ كِسْرَى بْنِ هُرْمُزَ وَلَئِنْ طَالَتْ بِكُمْ حَيَاةٌ لَتَرَوُنَّ مَا قَالَ النَّبِيُّ أَبُو الْقَاسِمِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَخْرُجُ ملْء كفيه» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

5857. अदि बिन हातिम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर था के एक आदमी आप के पास आया तो उस ने फाके की शिकायत की, फिर दूसरा शख़्स आया और उस ने रहज़नी की शिकायत की आप ﷺ ने फ़रमाया: “अदि! क्या तूने हीरह देखा है, अगर तेरी उमर दराज़ हुई तो तुम देखोगे औरत हीरह (कुफे के पास एक बस्ती) से होद्ज में सवार हो कर आएगी और वह काबा का तवाफ़ करेगी, इसे इस दौरान अल्लाह के सिवा किसी का डर खौफ नहीं होगा, अगर तुम्हारी जिंदगी दराज़ हुई तो तुम पर कीसरा के खज़ाने खोल दिए जाएँगे, और अगर तुम कुछ और दिनों तक जिंदा रहे तो तुम देखोगे के आदमी हाथ में सोन या चाँदी लेकर ऐसे आदमी की तलाश में निकलेगा जो इसे कबूल कर ले, लेकिन इसे ऐसा कोई आदमी नहीं मिलेगा जो इसे कबूल कर ले, और तुम में से हर एक कियामत के दिन अल्लाह से मुलाकात करेगा के इस वक़्त अल्लाह तआला और बंदे के दरमियान कोई तरजुमान नहीं होगा, जो के उसकी तरजुमानी कर सके, वह फरमाएगा: क्या मैंने तेरी तरफ रसूल नहीं थी भेजे थे की वह तेरी तरफ मेरा पैग़ाम पहुंचाए? वह शख़्स कहेगा: क्यों नहीं! ज़रूर आए थे, अल्लाह तआला फरमाएगा क्या मैंने तुझे माल नहीं दिया था और मैंने तुझे फ़ज़ीलत अता नहीं की थी? वह अर्ज़ करेगा: क्यों नहीं! ज़रूर अता की थी, वह अपने दाएँ देखेगा तो उसे जहन्नम नज़र आएगी, फिर वह अपने बाएँ देखेगा तो उसे जहन्नम नज़र आएगी, जहन्नम से बच जाओ, ख्वाह खजूर का एक टुकड़ा ही हो, चुनांचे जो शख़्स यह भी न पाए तो वह अच्छी बात के ज़रिए (आग से बच जाए)”, अदि रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने होद्ज में सवार औरत को देखा के वह हीरह से आई और उस ने काबा का तवाफ़ किया, और इसे अल्लाह के सिवा किसी और का डर खौफ नहीं था, और जिन के लिए कीसरा बिन हुर्मज़ के खज़ाने खोले गए, मैं भी उनमें मौजूद था, और अगर तुम्हारी उमर दराज़ हुई तो तुम वह कुछ ज़रूर देखोगे, जिस की अबुल कासिम ﷺ ने पेशीनगोई फरमाई थी के “ एक शख़्स अपने हाथ में सोना और चाँदी लेकर निकलेगा ”। (बुखारी)

رواه البخاری (3595)

٥٨٥٨ - (صَحِيح) وَعَن خبَّاب بن الأرتِّ قَالَ: شَكَوْنَا إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ مُتَوَسِّدٌ بُرْدَةً فِي ظِلِّ الْكَعْبَةِ وَقد لَقينَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ شِدَّةً فَقُلْنَا: أَلَا تَدْعُو اللَّهَ فَقَعَدَ وَهُوَ مُحْمَرٌّ وَجْهُهُ وَقَالَ: «كَانَ الرَّجُلُ فِيمَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ يُحْفَرُ لَهُ فِي الْأَرْضِ فَيُجْعَلُ فِيهِ [ص:١٦٣ فَيُجَاءُ بِمِنْشَارٍ فَيُوضَعُ فَوْقَ رَأْسِهِ فَيُشَقُّ بِاثْنَيْنِ فَمَا يَصُدُّهُ ذَلِكَ عَنْ دِينِهِ وَاللَّهِ لَيَتِمَّنَّ هَذَا الْأَمْرُ حَتَّى يَسِيرَ الرَّاكِبُ مِنْ صَنْعَاءَ إِلَى حَضْرَمَوْتَ لَا يَخَافُ إِلَّا الله أَو الذِّئْب على غنمه ولكنَّكم تَسْتَعْجِلُون» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

5858. खबाब बिन अरत्त रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हमने नबी ﷺ से (कुफ्फार के ज़ुल्म की) शिकायत की, आप इस वक़्त काबा के साए में धारी दार चादर का सिरहाना बनाए तशरीफ़ फरमा थे, हमें मुशरिकीन से बहोत तकलीफ पहुँच चुकी थी, हमने अर्ज़ किया: क्या आप अल्लाह से दुआ नहीं फरमाते? आप उठ कर बैठ गए और आप का चेहरा मुबारक सुर्ख हो गया, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम से पहले ऐसे लोग भी थे की उनमें से किसी के लिए ज़मीन में घड़ा खोद दिया जाता और फिर आरा लाया जाता और उस के सर पर रख दिया जाता, और उस के दो टुकड़े कर दिए जाते, यह चीज़ भी इसे उस के दीन से नहीं रोकती थी, लोहे के कंघी उन के गोश्त, हड्डियों और पुठो में धंसा दिए जाते और यह चीज़ भी उन्हें उन के दीन से नहीं रोकती थी, अल्लाह की क़सम! यह दीन मुकम्मल होगा हत्ता के सवार सीनाअ से ह्ज्र मव्त तक सफ़र करेगा और इसे सिर्फ अल्लाह ही का खौफ होगा और इसे अपने बकरियों के मुतल्लिक भेड़िये का खौफ भी नहीं होगा, लेकिन तुम लोग जल्दी करते हो”| (बुखारी)

رواه البخاری (6943)

٥٨٥٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدْخُلُ عَلَى أُمِّ حَرَامٍ بِنْتِ مِلْحَانَ وَكَانَتْ تَحْتَ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ فَدَخَلَ عَلَيْهَا يَوْمًا فَأَطْعَمَتْهُ ثُمَّ جَلَسَتْ تَفْلِي رَأسه فَنَامَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ اسْتَيْقَظَ وَهُوَ يَضْحَكُ قَالَتْ: فَقُلْتُ: مَا يُضْحِكُكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: «نَاسٌ مِنْ أُمَّتِي عُرِضُوا عَلَيَّ غُزَاةً فِي سَبِيلِ اللَّهِ يَرْكَبُونَ ثَبَجَ هَذَا الْبَحْرِ مُلُوكًا عَلَى الْأَسِرَّةِ أَوْ مِثْلَ الْمُلُوكِ عَلَى الْأَسِرَّةِ» . فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ادْعُ اللَّهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ فَدَعَا لَهَا ثُمَّ وَضَعَ رَأْسَهُ فَنَامَ ثُمَّ اسْتَيْقَظَ وَهُوَ يَضْحَكُ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا يُضْحِكُكَ؟ قَالَ: «نَاسٌ مِنْ أُمَّتِي عُرِضُوا عَلَيَّ غُزَاةً فِي سَبِيلِ اللَّهِ» . كَمَا قَالَ فِي الأولى. فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ادْعُ اللَّهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ. قَالَ: «أَنْتِ مِنَ الْأَوَّلِينَ» . فَرَكِبَتْ أُمُّ حَرَامٍ الْبَحْرَ فِي زَمَنِ مُعَاوِيَةَ فَصُرِعَتْ عَنْ دَابَّتِهَا حِينَ خَرَجَتْ مِنَ الْبَحْرِ فَهَلَكَتْ. مُتَّفق عَلَيْهِ

5859. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ उबादा बिन सामित रदियल्लाहु अन्हु की अहलिया उम्म हराम बिन्ते मिल्हान रदियल्लाहु अन्हा के यहाँ तशरीफ़ ले जाया करते थे, एक रोज़ आप उन के वहां तशरीफ़ ले गए तो उन्होंने आप को खाना खिलाया, फिर बैठ कर आप के सर मुबारक से जुएँ देखने लगी, रसूलुल्लाह ﷺ सो गए फिर (जब) उठे तो आप हंस रहे थे? वह बयान करती हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! आप क्यों हंस रहे हैं? आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ मेरी उम्मत से कुछ लोग अल्लाह की राह में जिहाद करते हुए मुझे दिखाए गए, वह इस समुन्दर में सवार इस तरह जा रहे हैं जिस तरह बादशाह तख़्त पर होते हैं या वह बादशाहो की तरह तख्तो पर बिराजमान थे”, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! अल्लाह से दुआ करे के वह मुझे भी उन्हीं में से कर दे, आप ﷺ ने इन के लिए दुआ फरमाई, फिर आप अपना सर रख कर सो गए, फिर बेदार हुए तो आप हंस रहे थे, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! आप क्यों हंस रहे हैं? आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ मेरी उम्मत के कुछ लोग अल्लाह की राह में जिहाद करते हुए मुझे दिखाए गए”, जैसे के आप ﷺ ने पहली बार फ़रमाया था, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! अल्लाह से दुआ फरमाइए के वह मुझे उनमें से कर दे, आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ आप अव्वलीन में से है”, उम्म हराम रदियल्लाहु अन्हु ने मुआविया रदियल्लाहु अन्हु के दौर में समुंद्री सफ़र किया जब वह समुन्दर से बाहर निकली तो वह अपने सवारी से गिर कर वफात पा गई| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (6282) و مسلم (160 / 1912)، (4934)

٥٨٦٠ - (صَحِيح) وَعَن ابْن عبَّاس قَالَ: إِنَّ ضِمَادًا قَدِمَ مَكَّةَ وَكَانَ مِنْ أَزْدِ شَنُوءَةَ وَكَانَ يَرْقِي مِنْ هَذَا الرِّيحِ فَسَمِعَ سُفَهَاءَ أَهْلِ مَكَّةَ يَقُولُونَ: إِنَّ مُحَمَّدًا مَجْنُونٌ. فَقَالَ: لَوْ أَنِّي رَأَيْتُ هَذَا الرَّجُلَ لَعَلَّ اللَّهَ يَشْفِيهِ عَلَى يَدَيَّ. قَالَ: فَلَقِيَهُ. فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ إِنِّي أَرْقِي مِنْ هَذَا الرِّيحِ فَهَلْ لَكَ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ [ص:١٦٣ فَلَا مُضِلَّ لَهُ وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ أَمَّا بَعْدُ» فَقَالَ: أَعِدْ عَلَيَّ كَلِمَاتِكَ هَؤُلَاءِ فَأَعَادَهُنَّ عَلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ فَقَالَ: لَقَدْ سَمِعْتُ قَوْلَ الْكَهَنَةِ وَقَوْلَ السَّحَرَةِ وَقَوْلَ الشُّعَرَاءِ فَمَا سَمِعْتُ مِثْلَ كَلِمَاتِكَ هَؤُلَاءِ. وَلَقَدْ بَلَغْنَ قَامُوسَ الْبَحْرِ هَاتِ يَدَكَ أُبَايِعْكَ عَلَى الْإِسْلَامِ قَالَ: فَبَايَعَهُ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ»» وَفِي بَعْضِ نُسَخِ «الْمَصَابِيحِ» : بَلَغْنَا نَاعُوسَ الْبَحْرِ»» وَذَكَرَ حَدِيثَا أَبِي هُرَيْرَةَ وَجَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ «يهْلك كسْرَى» وَالْآخر «ليفتحنَّ عِصَابَةٌ» فِي بَابِ «الْمَلَاحِمِ»»» وَهَذَا الْبَابُ خَالٍ عَن: الْفَصْل الثَّانِي

5860. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, दिमाद मक्का आया और वह कबिले अज़्दी शनूअ से था और वह आसेब वगैरह का मंत्र जानता था उस ने मक्के के नादानों से सुना के मुहम्मद ﷺ मजनून है, उस ने कहा अगर में इस आदमी को देखूं (और उस का इलाज करूं) तो शायद अल्लाह मेरे हाथो इसे शिफा अता फरमा दें, रावी बयान करते हैं, वह आप ﷺ से मिला और उस ने कहा मुहम्मद! मैं आसेब वगैरह का मंत्र जानता हूँ, क्या आप को इलाज की रगबत है? रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ((إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ نَحْمَدُهُ......عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ أَمَّا بَعْدُ)) “ बेशक हर किस्म की तारीफ़ अल्लाह के लिए है, हम उसकी हम्द बयान करते हैं, और इसी से मदद चाहते है जिस को अल्लाह हिदायत अता फरमादे इसे कोई गुमराह नहीं कर सकता जिस को वह गुमराह कर देर से कोई हिदायत नहीं दे सकता मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं वह यकता है, उस का कोई शरीक नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ उस के बंदे और उस के रसूल हूँ”, अम्मा बाद उस ने अर्ज़ किया, यही कलिमात मुझे दोबारा सुनाइए, चुनांचे रसूलुल्लाह ﷺ ने तीन मर्तबा यह कलिमात इसे सुनाए, तो उस ने अर्ज़ किया, मैंने काहिनो साहरो और शायरों का कलाम सुना है, लेकिन मैंने आप के कलिमात जैसे कोई कलाम नहीं सुना यह तो इन्तिहाई फसी व बलिग़ कलिमात है अपना दस्ते मुबारक लाए में इस्लाम पर आप ﷺ की बैत करता हूँ, आप ﷺ ने उन से बैत ली| मसाबिह के बाज़ नुस्खों में ((ناعوس البحر)) के अल्फाज़ है और अबू हुरैरा (र) और जाबिर बिन समुराह (र) से मरवी हदीस ((يهْلك كسْرَى)) और दूसरी ((ليفتحنَّ عِصَابَةٌ)) بَابِ الْمَلَاحِمِ (जंगो का बयान) में ज़िक्र की गई है. (मुस्लिम)

رواه مسلم (46 / 868)، (2008) 0 حديث ابی هريرة تقدم (5418) و حديث جابر بن سمرة تقدم (5417)

وهذا الباب خال عن: الفصل الثاني

यह बाब दूसरी फस्ल से खाली है|

नबूवत की अलामतो का बयान	بَاب عَلَامَات النُّبُوَّة •
तीसरी फस्ल	الْفَصْل الثَّالِث •

٥٨٦١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو سُفْيَانَ بْنُ حَرْبٍ مِنْ فِيهِ إِلَى فِيَّ قَالَ: انْطَلَقْتُ فِي الْمُدَّةِ الَّتِي كَانَتْ بَيْنِي وَبَيْنَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: فَبينا أَنا بِالشَّام إِذْ جِيءَ بِكِتَاب النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى هِرَقْلَ. قَالَ: وَكَانَ دِحْيَةُ الْكَلْبِيُّ جَاءَ بِهِ فَدَفَعَهُ إِلَى عَظِيمِ بُصْرَى فَدَفَعَهُ عَظِيمُ بُصْرَى إِلَى هِرَقْلَ فَقَالَ هِرَقْلُ: هَلْ هُنَا أَحَدٌ مِنْ قَوْمِ هَذَا الرَّجُلِ الَّذِي يَزْعُمُ [ص:١٦٣ أَنَّهُ نَبِيٌّ؟ قَالُوا: نَعَمْ فَدُعِيتُ فِي نَفَرٍ مِنْ قُرَيْشٍ فَدَخَلْنَا عَلَى هِرَقْلَ فَأَجْلَسَنَا بَيْنَ يَدَيْهِ فَقَالَ: أَيُّكُمْ أَقْرَبُ نَسَبًا مِنْ هَذَا الرَّجُلِ الَّذِي يَزْعُمُ أَنَّهُ نَبِيٌّ؟ قَالَ أَبُو سُفْيَانَ: فَقُلْتُ: أَنَا فَأَجْلَسُونِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَأَجْلَسُوا أَصْحَابِي خَلْفِي ثُمَّ دَعَا بِتَرْجُمَانِهِ فَقَالَ: قُلْ لَهُمْ: إِنِّي سَائِلٌ هَذَا عَنْ هَذَا الرَّجُلِ الَّذِي يَزْعُمُ أَنَّهُ نَبِيٌّ فَإِنْ كَذَبَنِي فَكَذِّبُوهُ. قَالَ أَبُو سُفْيَانَ: وَايْمُ اللَّهِ لَوْلَا مَخَافَةُ أَنْ يُؤْثَرَ عَلَيَّ الْكَذِبُ لَكَذَبْتُهُ ثُمَّ قَالَ لِتَرْجُمَانِهِ: سَلْهُ كَيْفَ حَسَبُهُ فِيكُمْ؟ قَالَ: قُلْتُ: هُوَ فِينَا ذُو حَسَبٍ. قَالَ: فَهَلْ كَانَ مِنْ آبَائِهِ مِنْ مَلِكٍ؟ قُلْتُ: لَا. قَالَ: فَهَلْ كُنْتُمْ تَتَّهِمُونَهُ بِالْكَذِبِ قَبْلَ أَنْ يَقُولَ مَا قَالَ؟ قُلْتُ: لَا. قَالَ: وَمَنْ يَتْبَعُهُ؟ أَشْرَافُ النَّاسِ أَمْ ضُعَفَاؤُهُمْ؟ قَالَ: قُلْتُ: بَلْ ضُعَفَاؤُهُمْ. قَالَ: أَيَزِيدُونَ أَمْ يَنْقُصُونَ؟ قُلْتُ: لَا بَلْ يَزِيدُونَ. قَالَ: هَلْ يَرْتَدُّ أَحَدٌ مِنْهُمْ عَنْ دِينِهِ بَعْدَ أَنْ يَدْخُلَ فِيهِ سَخْطَةً لَهُ؟ قَالَ: قلت: لَا. قلت: لَا. قلت: فَهَلْ قَاتَلْتُمُوهُ؟ قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: فَكَيْفَ كَانَ قِتَالُكُمْ إِيَّاهُ؟ قَالَ: قُلْتُ: يَكُونُ الْحَرْبُ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُ سِجَالًا يُصِيبُ مِنَّا وَنُصِيبُ مِنْهُ. قَالَ: فَهَلْ يَغْدِرُ؟ قُلْتُ: لَا وَنَحْنُ مِنْهُ فِي هَذِهِ الْمُدَّةِ لَا نَدْرِي مَا هُوَ صَانِعٌ فِيهَا؟ قَالَ: وَاللَّهِ مَا أَمْكَنَنِي مِنْ كَلِمَةٍ أُدْخِلُ فِيهَا شَيْئًا غَيْرَ هَذِهِ. قَالَ: فَهَلْ قَالَ هَذَا الْقَوْلَ أَحَدٌ قَبْلَهُ؟ قُلْتُ: لَا. ثُمَّ قَالَ لِتَرْجُمَانِهِ: قُلْ لَهُ: إِنِّي سَأَلْتُكَ عَنْ حَسَبِهِ فِيكُمْ فَزَعَمْتَ أَنَّهُ فِيكُمْ ذُو حَسَبٍ وَكَذَلِكَ الرُّسُلُ تُبْعَثُ فِي أَحْسَابِ قَوْمِهَا. وَسَأَلْتُكَ هَلْ كَانَ فِي آبَائِهِ مَلِكٌ؟ فَزَعَمْتَ أَنْ لَا فَقُلْتُ: لَوْ كَانَ مِنْ آبَائِهِ مَلِكٌ. قُلْتُ: رَجُلٌ يَطْلُبُ مُلْكَ آبَائِهِ. وَسَأَلْتُكَ عَنْ أَتْبَاعه أضعافاؤهم أَمْ أَشْرَافُهُمْ؟ فَقُلْتَ: بَلْ ضُعَفَاؤُهُمْ وَهُمْ أَتْبَاعُ الرُّسُلِ. وَسَأَلْتُكَ: هَلْ كُنْتُمْ تَتَّهِمُونَهُ بِالْكَذِبِ قَبْلَ أَنْ يَقُولَ مَا قَالَ؟ فَزَعَمْتَ أَنْ لَا فَعَرَفْتُ أَنَّهُ لَمْ يَكُنْ لِيَدَعَ الْكَذِبَ عَلَى النَّاسِ ثُمَّ يَذْهَبُ فَيَكْذِبُ عَلَى اللَّهِ. وَسَأَلْتُكَ: هَلْ يَرْتَدُّ أَحَدٌ مِنْهُمْ عَنْ دِينِهِ بَعْدَ أَنْ يَدْخُلَ فِيهِ سَخْطَةً لَهُ؟ فَزَعَمْتَ أَنْ لَا وَكَذَلِكَ الْإِيمَانُ إِذَا خَالَطَ بَشَاشَتُهُ الْقُلُوبَ. [ص:١٦٣ وَسَأَلْتُكَ هَلْ يَزِيدُونَ أَمْ يَنْقُصُونَ؟ فَزَعَمْتَ أَنَّهُمْ يَزِيدُونَ وَكَذَلِكَ الْإِيمَانُ حَتَّى يَتِمَّ وَسَأَلْتُكَ هَلْ قَاتَلْتُمُوهُ؟ فَزَعَمْتَ أَنَّكُمْ قَاتَلْتُمُوهُ فَتَكُونُ الْحَرْبُ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُ سِجَالًا يَنَالُ مِنْكُمْ وَتَنَالُونَ مِنْهُ وَكَذَلِكَ الرُّسُلُ تُبْتَلَى ثُمَّ تَكُونُ لَهَا الْعَاقِبَةُ. وَسَأَلْتُكَ هَلْ يَغْدِرُ فَزَعَمْتَ أَنَّهُ لَا يَغْدِرُ وَكَذَلِكَ الرُّسُلُ لَا تَغْدِرُ وَسَأَلْتُكَ هَلْ قَالَ هَذَا الْقَوْلَ أَحَدٌ قَبْلَهُ؟ فَزَعَمْتَ أَنْ لَا فَقُلْتُ: لَوْ كَانَ قَالَ هَذَا الْقَوْلَ أَحَدٌ قَبْلَهُ قُلْتُ: رَجُلٌ ائْتَمَّ بِقَوْلٍ قِيلَ قَبْلَهُ. قَالَ: ثُمَّ قَالَ: بِمَا يَأْمُرُكُمْ؟ قُلْنَا: يَأْمُرُنَا بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ وَالصِّلَةِ وَالْعَفَافِ. قَالَ: إِنْ يَكُ مَا تَقُولُ حَقًّا فَإِنَّهُ نَبِيٌّ وَقَدْ كُنْتُ أَعْلَمَ أَنَّهُ خَارِجٌ وَلَمْ أَكُنْ أَظُنُّهُ مِنْكُمْ وَلَوْ أَنِّي أَعْلَمُ أَنِّي أَخْلَصُ إِلَيْهِ لَأَحْبَبْتُ لِقَاءَهُ وَلَوْ كُنْتُ عِنْدَهُ لَغَسَلْتُ عَنْ قَدَمَيْهِ وَلَيَبْلُغَنَّ مُلْكُهُ مَا تَحْتَ قَدَمَيَّ. ثُمَّ دَعَا بِكِتَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَرَأَهُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ»» وَقَدْ سَبَقَ تَمَامُ الْحَدِيثِ فِي «بَاب الْكتاب إِلى الكفَّار»

5861. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, अबू सुफियान बिन हरबी रदियल्लाहु अन्हु ने बिला वास्ते हदीस बयान की, उन्होंने ने फ़रमाया: मैंने इस मुद्दत के दौरान जो के मेरे और आप (ﷺ) के दरमियान (सुलह हुदैबिया का) मुआयदा हुआ था, सफ़र किया, वह बयान करते हैं, मैं इस वक़्त शाम ही मैं था जब नबी ﷺ का ख़त हिरेकल को मौसुल हुआ और उन्होंने ने फ़रमाया: दिह्यत कलबी यह ख़त लेकर आए थे, उन्होंने इसे अमीर बसरी को दीया और उस ने इसे हिरेकल के हवाले किया, हिरेकल ने कहा: क्या इस शख़्स की कौम का कोई फर्द यहाँ मौजूद है, जो खुद को अल्लाह का रसूल ख़याल करता है, उन्होंने कहा: जी हाँ, मुझे बुलाया गया, मेरे साथ कुछ कुरैश भी थे, हम हिरेकल के पास पहुंचे तो हमें उस के सामने बीठा दिया गया, उस ने पूछा: यह शख़्स जो अपने आप को नबी समझता है, आप में उस का सबसे ज़्यादा करीबी रिश्तेदार कौन है, अबू सुफियान कहते हैं, मैंने कहा: में, उन्होंने मुझे उस के सामने बिठाया और मेरे साथियो को मेरे पीछे बैठा दिया, फिर उस ने अपने तरजुमान को बुलाया, और कहा: उन से कह दो की में इस (अबू सुफियान) से इस शख़्स के मुतल्लिक जो चंद वाला करूँगा, जिस ने नबूवत का दावा किया है, अगर

यह मुझ से झूठ बोले तो तुम उसे झुठला देना, अबू सुफियान बयान करते हैं, अल्लाह की क़सम! अगर झूठ बोलने की हद्रामी का अंदेशा न होता तो मैं आप ﷺ के मुतल्लिक ज़रूर झूठ बोलता, फिर उस ने अपने तरजुमान से कहा: उन से पूछो उस का हसब व नसब कैसा है? वह कहते हैं, मैंने कहा: वह हम में निहायत उम्दा हसब व नसब वाले हैं, उस ने कहा क्या इन के आबा व अजदाद में से कोई बादशाह गुज़रा है? मैंने कहा: नहीं, उस ने कहा: क्या उस ने तुम से इस बात से पहले जो अब वह कहता है, कोई ऐसी बात कही जिस पर तुमने इसे झूठा कहा हो? मैंने कहा, नहीं, उस ने कहा: उस के पैरोकार कौन है, बड़े लोग या कमज़ोर लोग? वह कहते हैं, मैंने कहा: बल्कि कमज़ोर लोग, उस ने कहा: क्या यह ज़्यादा हो रहे हैं या कम? वह कहते हैं, मैंने कहा: नहीं, बल्कि वह ज़्यादा हो रहे हैं, उस ने कहा: क्या इस दीन में दाखिल होने के बाद कोई शख़्स इसे बुरा ख़याल कर के उन से पलट गया है, वह कहते हैं, मैंने कहा: नहीं, उस ने पूछा: क्या तुम ने उन से जंग की है? मैंने कहा: हाँ, उसने कहा: तुम्हारी उन से जंग कैसी रही? वह कहते हैं, मैंने कहा: जंग हम दोनों के दरमियान बराबर है, कभी इसे हमारी तरफ से ज़क पहुँचती है और कभी हमें उसकी तरफ से ज़क पहुँचती है? उस ने कहा क्या यह बद अहदी भी करता है? मैंने कहा: नहीं? अलबत्ता, हम इस वक़्त उस के साथ सुलह की मुद्दत गुज़ार रहे हैं, मालुम नहीं के उस में क्या करेगा, उन्होंने कहा: अल्लाह की क़सम! इस जुमले के अलावा मुझे और कहे कोई बात दाखिल करने का मौके न मिला, उस ने पूछा: क्या यह बात उन से पहले भी किसी ने की थी? मैंने कहा: नहीं, फिर उस ने अपने तरजुमान से कहा: इसे कहो मैंने तुझ से उस के हसब व नसब के मुतल्लिक पूछा, तो तुमने कहा: वह तुम में सबसे ज़्यादा उम्दा हसब व नसब वाला है, और रसूल ऐसे ही होते हैं, उन्हें उनकी कौम के ऊँचे हसब व नसब में मबउस किया जाता है, मैंने तुझ से सवाल किया, क्या उस के आबाओ अजदाद में कोई बादशाह था? तूने कहा, नहीं? अगर उस के आबाओ अजदाद में से कोई बादशाह होता तो मैं ख़याल करता के वह अपने आबाअ की बादशाहत का तलबगार है, मैंने तुझ से उस के मुत्तबइन के मुतल्लिक पूछा, क्या यह जईफ लोग है या बड़े लोग है, तूने कहा बल्कि वह कमज़ोर लोग है, और रसूलो के पैरोकार ऐसे ही होते हैं, मैंने तुझ से पूछा, क्या उस ने जो बात कही उस के कहने से पहले तुम उसे झूठ से मूतहम करते थे, तूने कहा, नहीं, मैंने पहचान लिया के अगर वह लोगों पर झूठ नहीं बोलता तो फिर वह अल्लाह पर कैसे झूठ बोल सकता है? मैंने तुझ से सवाल किया क्या उस के दीन में दाखिल होने के बाद कोई शख़्स इसे बुरा ख़याल करते हुए मुरतद भी हुआ है, तूने कहा नहीं, और ईमान की यही हालत होती है की जब उसकी बश्शाश (फरहत व लाज्ज़त) दिलों मे रासिख हो जाती है तो फिर वह निकलता नहीं, मैंने तुझ से दरियाफ्त किया: क्या यह ज़्यादा हो रहे हैं या कम, तूने कहा वह ज़्यादा हो रहे हैं, और ईमान इसी तरह होता है हत्ता के वह मुकम्मल हो जाता है, मैंने तुझ से पूछा: क्या तुम ने उन से जंग की है, तूने बताया की तुमने उन से जंग की है और जंग तुम्हारे दरमियान बराबर रही, रसूलो का मुआमला इसी तरह होता है के इन पर दौर इब्तिला आता है और अंजाम बखैर इन्ही का होता है, मैंने तुझ से पूछा क्या यह बदअहदी करता है? तूने कहा नहीं, और रसूलो की यही शान है, वह बदअहदी नहीं करते, मैंने तुझ से सवाल किया: क्या ऐसी बात उन से पहले भी किसी ने की है? तूने कहा नहीं, अगर उन से पहले ऐसी बात किसी ने की होती तो, मैं ख़याल करता के यह आदमी वैसे ही बात कर रहा है जो उन से पहले की गई है, रावी बयान करते हैं, फिर उस ने पूछा वह तुम्हें किसी चीज़ का हुक्म देता है? हमने कहा वह हमें नमाज़ पढ़ने, ज़कात देने, सिलह रहमी करने और पाक दामनी का हुक्म देता है, उस ने कहा तुमने जो कुछ कहा है अगर तो वह सहीह है, तो फिर वह नबी है, मुझे यह तो पता था के उनका जुहूर होने वाला है, लेकिन मेरा यह ख़याल नहीं था के वह तुम में से होंगे, अगर मुझे यकीन होता की मैं उन तक पहुँच सकूंगा तो मैं उन से मुलाकात का सोभाग्य हासिल करना पसंद करता और अगर में उन के पास होता तो मैं उन के पाँव धोता और उनकी

बादशाहत मेरे इन दोनों कदमो की जगह तक पहुँच जाएगी, फिर इस ने रसूलुल्लाह ﷺ का ख़त मुबारक मंगा कर पढ़ा। # और यह मुकम्मल हदीस (بَابِ الْكتاب إلى الْكفَّار) कुफ्फ़ार के नाम ख़त लिखने और इन्हें इस्लाम की तरफ दावत देने का बयान में गुज़र चुकी है? (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (7) و مسلم (74 / 1773)، (4607) * و انظر ح 39263927 لتمام الحديث

بَابٌ فِي الْمِعْرَاجِ • मेअराज का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٥٨٦٢ - عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ مَالك بن صعصعة أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَدثهمْ لَيْلَةِ أَسْرِيَ بِهِ: «بَيْنَمَا أَنَا فِي الْحَطِيمِ - وَرُبَّمَا قَالَ فِي الْحِجْرِ - مُضْطَجِعًا إِذْ أَتَانِي آتٍ فَشَقَّ مَا بَيْنَ هَذِهِ إِلَى هَذِهِ» يَعْنِي مِنْ ثُغْرَةِ نَحْرِهِ إِلَى شِعْرَتِهِ «فَاسْتَخْرَجَ قَلْبِي ثُمَّ أُتِيتُ بِطَسْتٍ مِنْ ذَهَبٍ مَمْلُوءٍ إِيمَانًا فَغُسِلَ قَلْبِي ثُمَّ حُشِيَ ثُمَّ أُعِيدَ» - وَفِي رِوَايَةٍ: " ثُمَّ غُسِلَ الْبَطْنُ بِمَاءِ زَمْزَمَ ثمَّ ملئ إيماناً وَحِكْمَة - ثُمَّ أُتِيتُ بِدَابَّةٍ دُونَ الْبَغْلِ وَفَوْقَ الْحِمَارِ أَبْيَضَ يُقَالُ لَهُ: الْبُرَاقُ يَضَعُ خَطْوَهُ عِنْدَ أَقْصَى طَرْفِهِ فَحُمِلْتُ عَلَيْهِ فَانْطَلَقَ بِي جِبْرِيلُ حَتَّى أَتَى السَّمَاءَ الدُّنْيَا فَاسْتَفْتَحَ قِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: جِبْرِيلُ. قِيلَ: وَمَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ. قِيلَ وَقَدْ أُرْسِلَ إِلَيْهِ. قَالَ: نَعَمْ. قيل: مرْحَبًا بِهِ فنعم الْمَجِيء جَاءَ ففُتح فَلَمَّا خَلَصْتُ فَإِذَا فِيهَا آدَمُ فَقَالَ: هَذَا أَبُوكَ آدَمُ فَسَلَّمْ عَلَيْهِ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَرَدَّ السَّلَام ثمَّ قَالَ: مرْحَبًا بالابن الصَّالح وَالنَّبِيّ الصَّالح ثمَّ صعد بِي حَتَّى السَّمَاءَ الثانيةَ فَاسْتَفْتَحَ قِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: جِبْرِيلُ. قِيلَ: وَمَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ. قِيلَ: وَقَدْ أُرْسِلَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. قِيلَ: مَرْحَبًا بِهِ فَنِعْمَ الْمَجِيءُ جَاءَ فَفُتِحَ. فَلَمَّا خَلَصْتُ إِذَا يَحْيَى وَعِيسَى وَهُمَا ابْنَا خَالَةٍ. قَالَ: هَذَا يَحْيَى وَهَذَا عِيسَى فَسَلِّمْ عَلَيْهِمَا فَسَلَّمْتُ فَرَدَّا ثُمَّ قَالَا: مَرْحَبًا بِالْأَخِ الصَّالِحِ [ص:١٦٣ وَالنَّبِيِّ الصَّالِحِ. ثُمَّ صَعِدَ بِي إِلَى السَّمَاءِ الثَّالِثَةِ فَاسْتَفْتَحَ قِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: جِبْرِيلُ. قِيلَ: وَمَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ. قِيلَ: وَقَدْ أُرْسِلَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. قِيلَ: مَرْحَبًا بِهِ فَنِعْمَ الْمَجِيءُ جَاءَ ففُتح فَلَمَّا خَلَصْتُ إِذَا يُوسُفُ قَالَ: هَذَا يُوسُفُ فَسَلِّمْ عَلَيْهِ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَرَدَّ. ثُمَّ قَالَ: مَرْحَبًا بِالْأَخِ الصَّالِحِ وَالنَّبِيِّ الصَّالِحِ ثُمَّ صَعِدَ بِي حَتَّى أَتَى السَّمَاءَ الرَّابِعَة فَاسْتَفْتَحَ قِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: جِبْرِيلُ. قِيلَ: وَمَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ. قِيلَ: وَقَدْ أُرْسِلَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. قِيلَ: مَرْحَبًا بِهِ فَنِعْمَ الْمَجِيءُ جَاءَ فَفُتِحَ فَلَمَّا خَلَصْتُ فَإِذَا إِدْرِيسُ فَقَالَ: هَذَا إِدْرِيسُ فَسَلِّمْ عَلَيْهِ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَرَدَّ ثُمَّ قَالَ: مَرْحَبًا بِالْأَخِ الصَّالِحِ وَالنَّبِيِّ الصَّالِحِ ثُمَّ صَعِدَ بِي حَتَّى أَتَى السَّمَاءَ الْخَامِسَةَ فَاسْتَفْتَحَ قِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: جِبْرِيلُ. قِيلَ: وَمَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ. قِيلَ: وَقَدْ أُرْسِلَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. قِيلَ: مَرْحَبًا بِهِ فَنِعْمَ الْمَجِيءُ جَاءَ ففتح فَلَمَّا خَلَصْتُ فَإِذَا هَارُونُ قَالَ: هَذَا هَارُونُ فَسَلِّمْ عَلَيْهِ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَرَدَّ ثُمَّ قَالَ: مَرْحَبًا بِالْأَخِ الصَّالِحِ وَالنَّبِيِّ الصَّالِحِ ثُمَّ صَعِدَ بِي إِلَى السَّمَاءِ السَّادِسَةَ فَاسْتَفْتَحَ قِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: جِبْرِيلُ. قِيلَ: وَمَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ. قِيلَ: وَهل أُرسِلَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: مَرْحَبًا بِهِ فَنِعْمَ الْمَجِيءُ جَاءَ فَلَمَّا خَلَصْتُ فَإِذَا مُوسَى قَالَ: هَذَا مُوسَى فَسَلِّمْ عَلَيْهِ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَرَدَّ ثُمَّ قَالَ: مَرْحَبًا بِالْأَخِ الصَّالِحِ وَالنَّبِيِّ الصَّالح فَلَمَّا جَاوَزت بَكَى قيل: مَا يبكيك؟ قَالَ: أَبْكِي لِأَنَّ غُلَامًا بُعِثَ بَعْدِي يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مِنْ أُمَّتِهِ أَكْثَرَ مِمَّنْ يَدْخُلُهَا مِنْ أُمَّتِي ثُمَّ صَعِدَ بِي إِلَى السَّمَاءِ السَّابِعَةِ فَاسْتَفْتَحَ جِبْرِيلُ قِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: جِبْرِيلُ. قِيلَ: وَمَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ. قِيلَ: وَقَدْ بُعِثَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. قِيلَ: مَرْحَبًا بِهِ فَنِعْمَ الْمَجِيءُ جَاءَ فَلَمَّا خَلَصْتُ فَإِذَا إِبْرَاهِيمُ قَالَ: هَذَا أَبُوكَ إِبْرَاهِيمُ فَسَلِّمْ عَلَيْهِ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ فرد السَّلَام ثمَّ قَالَ: مرْحَبًا بالابن الصَّالح وَالنَّبِيِّ الصَّالح ثُمَّ [ص:١٦٣ رُفِعْتُ إِلَى سِدْرَةِ الْمُنْتَهَى فَإِذَا نَبِقُهَا مِثْلُ قِلَالِ هَجَرَ وَإِذَا وَرَقُهَا مِثْلُ آذَانِ الْفِيلَةِ قَالَ: هَذَا سِدْرَةُ الْمُنْتَهَى فَإِذَا أَرْبَعَةُ أَنْهَارٍ: نَهْرَانِ بَاطِنَانِ وَنَهْرَانِ ظَاهِرَانِ. قُلْتُ: مَا هَذَانِ يَا جِبْرِيلُ؟ قَالَ: أَمَّا الْبَاطِنَانِ فَنَهْرَانِ فِي الْجَنَّةِ وَأَمَّا الظَّاهِرَانِ فَالنِّيلُ وَالْفُرَاتُ ثُمَّ رُفِعَ لِي الْبَيْتُ الْمَعْمُورُ ثُمَّ أُتِيتُ بِإِنَاءٍ مِنْ خَمْرٍ وَإِنَاءٍ مِنْ لَبَنٍ وَإِنَاءٍ مِنْ عَسَلٍ فَأَخَذْتُ اللَّبَنَ فَقَالَ: هِيَ الْفِطْرَةُ أَنْتَ عَلَيْهَا وَأُمَّتُكَ

ثُمَّ فُرِضَتْ عَلَيَّ الصَّلَاةُ خَمْسِينَ صَلَاةً كُلَّ يَوْمٍ فَرَجَعْتُ فَمَرَرْتُ عَلَى مُوسَى فَقَالَ: بِمَا أُمِرْتَ؟ قُلْتُ: أُمِرْتُ بِخَمْسِينَ صَلَاةً كُلَّ يَوْمٍ. قَالَ: إِنَّ أمتك لَا تستطع خَمْسِينَ صَلَاةً كُلَّ يَوْمٍ وَإِنِّي وَاللَّهِ قَدْ جَرَّبْتُ النَّاسَ قَبْلَكَ وَعَالَجْتُ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَشَدَّ الْمُعَالَجَةِ فَارْجِعْ إِلَى رَبِّكَ فَسَلْهُ التَّخْفِيفَ لِأُمَّتِكَ فَرَجَعْتُ فَوَضَعَ عَنِّي عَشْرًا فَرَجَعْتُ إِلَى مُوسَى فَقَالَ مِثْلَهُ فَرَجَعْتُ فَوَضَعَ عَنِّي عَشْرًا فَرَجَعْتُ إِلى مُوسَى فَقَالَ مثله فَرَجَعت فَوضع عني عَشْرًا فَرَجَعْتُ إِلَى مُوسَى فَقَالَ مِثْلَهُ فَرَجَعْتُ فَوَضَعَ عَنى عَشْرًا فَأُمِرْتُ بِعَشْرِ صَلَوَاتٍ كُلَّ يَوْمٍ فَرَجَعْتُ إِلَى مُوسَى فَقَالَ مِثْلَهُ فَرَجَعْتُ فَأُمِرْتُ بِخَمْسِ صَلَوَاتٍ كُلَّ يَوْمٍ فَرَجَعْتُ إِلَى مُوسَى فَقَالَ: بِمَا أُمِرْتَ؟ قُلْتُ: أُمِرْتُ بِخَمْسِ صَلَوَاتٍ كُلَّ يَوْمٍ. قَالَ: إِنَّ أُمَّتَكَ لَا تَسْتَطِيعُ خَمْسَ صَلَوَاتٍ كُلَّ يَوْمٍ وَإِنِّي قَدْ جَرَّبْتُ النَّاسَ قَبْلَكَ وَعَالَجْتُ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَشَدَّ الْمُعَالَجَةِ فَارْجِعْ إِلَى رَبِّكَ فَسَلْهُ التَّخْفِيفَ لِأُمَّتِكَ قَالَ: سَأَلْتُ رَبِّي حَتَّى اسْتَحْيَيْتُ وَلَكِنِّي أَرْضَى وَأُسَلِّمُ. قَالَ: فَلَمَّا جَاوَزْتُ نَادَى مُنَادٍ: أَمْضَيْتُ فريضتي وخففت عَن عبَادي ". مُتَّفق عَلَيْهِ

5862. क़तादाह रहिमहुल्लाह अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु से और उन्होंने मालिक बिन सअसअत रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया के नबी ﷺक़तादाह रहिमहुल्लाह अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु से और उन्होंने मालिक बिन सअसअत रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया के नबी ﷺ ने शब मेअराज के मुतल्लिक उन्हें बताया की '' में हतिम में लेटा हुआ था, और बाज़ रिवायत में है में हुजरे में लेटा हुआ था, के अचानक एक आने वाला मेरे पास आया तो उस ने मेरा सीना चाक किया, मेरे दिल को निकाला, फिर मेरे पास ईमान से भरा हुआ सोने का एक तश्त लाया गया, मेरे दिल को धोया गया, फिर इसे भर दिया गया, फिर इसे वापस उसकी जगह पर रख दिया गया'', एक दूसरी रिवायत में है :'' फिर (मेरे) पेट को आबे ज़म ज़म से धोया गया फिर इसे ईमान व हिकमत से भर दिया गया, फिर खच्चर से छोटी और गधे से बड़ी सफ़ेद रंग की बुराक नामी एक सवारी मेरे पास लाइ गई, वह अपने इन्तहाई नज़र तक अपना कदम रखती थी, मुझे उस पर सवार किया गया, जिब्राइल अलैहिस्सलाम मुझे साथ ले चले, हत्ता के वह आसमान ए दुनिया पर पहुंचे तो उन्होंने दरवाज़ा खोलने के लिए कहा, उन से पूछा गया ,आप कौन है? उन्होंने ने फ़रमाया: जिब्राइल, पूछा गया और आप के साथ कौन है? उन्होंने ने फ़रमाया: मुहम्मद (ﷺ) , पूछा गया किया उन्हें लाया गया है? उन्होंने ने फ़रमाया: हाँ, कहा गया खुशामदीद और तशरीफ़ लाने वाले कितने ही अच्छे है, दरवाज़ा खोल दिया गया, जब में वहां पहुंचा तो मैंने वहां आदम अलैहिस्सलाम को देखा, जिब्राइल अलैहिस्सलाम ने बताया: यह आप के वालिद आदम अलैहिस्सलाम है, उन्हें सलाम करे, मैंने उन्हें सलाम किया और उन्होंने सलाम का जवाब दिया, फिर उन्होंने ने फ़रमाया: स्वालेह बेटे! और स्वालेह नबी खुशामदीद, फिर जिब्राइल अलैहिस्सलाम मुझे ऊपर ले गए हत्ता के वह दूसरे आसमान पर पहुँच गए, उन्होंने दरवाज़ा खोलने के लिए कहा, पूछा गया कौन है? उन्होंने ने फ़रमाया: जिब्राइल (अस), पूछा गया आप के साथ कौन है? उन्होंने कहा मुहम्मद, पूछा गया: क्या इनकी तरफ किसी को भेजा गया था? फ़रमाया हाँ कहा गया: खुशामदीद आने वाले कितने ही अच्छे है दरवाज़ा खोल दिया गया, जब में वहां पहुंचा, तो याह्या और इसा अलैहिस्सलाम से मुलाकात हो गई, और वह दोनों खाला जाद थे, फ़रमाया यह याह्या अलैहिस्सलाम है, और यह इसा अलैहिस्सलाम है, इन दोनों को सलाम करे, मैंने सलाम किया तो इन दोनों ने सलाम का जवाब दिया, फिर फ़रमाया स्वालेह भाई! खुशामदीद, नबी ए स्वालेह! खुशामदीद, फिर मुझे तीसरे आसमान की तरफ ले जाया गया, उन्होंने दरवाज़ा खोलने के लिए कहा, पूछा गया: कौन है? फ़रमाया: जिब्राइल, कहा गया: आप के साथ कौन है? फ़रमाया: मुहम्मद ((स) पूछा गया, क्या इनकी तरफ किसी को भेजा गया था? फ़रमाया: हाँ, कहा गया: खुशामदीद आने वाले क्या ही अच्छे है, दरवाज़ा खोल दिया गया, जब में इधर पहुंचा तो वहां युसूफ से मुलाकात हुई, उन्होंने बताया यह युसूफ अलैहिस्सलाम है उन्हें सलाम करे, मैंने उन्हें सलाम किया तो उन्होंने सलाम का जवाब दिया, फिर फ़रमाया स्वालेह भाई और स्वालेह नबी खुशामदीद,

फिर मुझे ऊपर ले जाया गया, हत्ता कि चोथे आसमान पर पहुंचे, फिर दरवाज़ा खोलने के लिए दरख्वास्त की, पूछा कौन है? कहा जिब्राइल, पूछा गया आप के साथ कौन है? फ़रमाया मुहम्मद ﷺ ,पूछा गया, क्या इनकी तरफ भेजा गया था? फ़रमाया: हाँ, कहा गया: खुशामदीद आने वाले कितने ही अच्छे है, जब में वहां पहुंचा तो इदरिस अलैहिस्सलाम से मुलाकात हुई तो उन्होंने कहा यह इदरिस अलैहिस्सलाम है उन्हें सलाम करे, मैंने सलाम किया तो उन्होंने सलाम का जवाब दिया, फिर फ़रमाया: स्वालेह नबी खुशामदीद, फिर मुझे ऊपर ले जाया गया, हत्ता कि वह पाँचवीं आसमान पर पहुंचे और उन्होंने दरवाज़ा खोलने की दरख्वास्त की तो उन से पूछा गया आप कौन है? कहा जिब्राइल, पूछा गया: आप के साथ कौन है? फ़रमाया मुहम्मद ﷺ, पूछा गया: क्या इनकी तरफ पैग़ाम भेजा गया था? उन्होंने ने फ़रमाया: हां, फिर कहा गया: खुशामदीद! आने वाले कितने ही अच्छे है, जब में वहां पहुंचा तो वहां हारून अलैहिस्सलाम से मुलाकात हुई, फ़रमाया: यह हारून अलैहिस्सलाम है, उन्हें सलाम करे, पस मैंने उन्हें सलाम किया तो उन्होंने सलाम का जवाब दिया, फिर फ़रमाया: स्वालेह भाई और नबी स्वालेह खुशामदीद! फिर वह मुझे और ऊपर ले गए हत्ता कि हम छठे आसमान पर पहुंचे तो उन्होंने दरवाज़ा खोलने के लिए कहा उन्होंने पूछा कौन है फ़रमाया जिब्राइल पूछा गया आप के साथ कौन है? फ़रमाया मुहम्मद ﷺ, पूछा गया: क्या इनकी तरफ पैग़ाम भेजा गया था? फ़रमाया: हाँ, कहा गया: खुशामदीद आने वाले कितने ही अच्छे है, दरवाज़ा खोल दिया गया, जब में वहां पहुंचा तो वहां मूसा अलैहिस्सलाम तशरीफ़ फरमा थे, जिब्राइल अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: यह मूसा है उन्हें सलाम करे, मैंने उन्हें सलाम किया तो उन्होंने सलाम का जवाब दिया, फिर फ़रमाया: स्वालेह भाई और स्वालेह नबी खुशामदीद, जब में उन से आगे बढ़ने लगा तो वह रोने लगे, उन से पूछा गया: आप क्यों रो रहे हैं? उन्होंने ने फ़रमाया: में इसलिए रोता हूँ कि एक नोजवान मेरे बाद मबउस किया गया और उसकी उम्मत के जन्नत में जाने वाले लोग मेरी उम्मत के जन्नत में जाने वाले लोगों से ज्यादा होंगे, फिर मुझे सातवे आसमान पर ले जाया गया, जिब्राइल अलैहिस्सलाम ने दरवाज़ा खोलने की दरख्वास्त की तो पूछा गया आप कौन है? फ़रमाया जिब्राइल, पूछा गया: आप के साथ कौन है? फ़रमाया मुहम्मद ﷺ, पूछा गया: क्या इनकी तरफ पैग़ाम भेजा गया था? फ़रमाया: हाँ, कहा गया: खुशामदीद कितने ही अच्छे है आने वाले, जब में वहां पहुंचा तो वहां इब्राहीम अलैहिस्सलाम तशरीफ़ फरमा थे, जिब्राइल ने फ़रमाया यह तुम्हारे बाप इब्राहीम अलैहिस्सलाम है, उन्हें सलाम करे, चुनांचे मैंने उन्हें सलाम किया तो उन्होंने सलाम का जवाब दिया, फिर फ़रमाया: स्वालेह बेटे और स्वालेह नबी खुशामदीद, फिर मुझे सिदरतुल मुन्तहा तक ले जाया गया, उस के मेवे (बेर) हुज्र के मटको की तरह थे, उस के पत्ते हाथ के कानों की तरह थे, उन्होंने बताया यह सिदरातुल मुन्तहा है, वहां चार नहरे थी दो बातिनी थी, और दो ज़ाहिरी थी, मैंने कहा: जिब्राइल यह दो चीज़े क्या है? उन्होंने ने फ़रमाया: दो बातिनी नहरे, यह दो नहरे जन्नत में बहती है और दो ज़ाहिरी नहरे और यह नील और फरात है, फिर मुझे बैतूल मामूर की तरफ ले जाया गया, फिर मेरे पास शराब, दूध और शहद का बर्तन लाया गया, मैंने दूध वाला बर्तन उठा लिया, उन्होंने ने फ़रमाया: यह वह फितरत है जिस पर आप और आप की उम्मत है, फिर मुझ पर दिन में पचास नमाज़े फ़र्ज़ की गई, मैं वापस आया और मूसा अलैहिस्सलाम के पास से गुज़रा तो उन्होंने पूछा आप ﷺ को क्या हुक्म मिला है, मैंने कहा मुझे हर रोज़ पचास नमाज़े पढ़ने का हुक्म दिया गया है, उन्होंने ने फ़रमाया: आप ﷺ की उम्मत हर रोज़ पचास नमाज़े पढ़ने की ताकत नहीं रखेगा, अल्लाह की क़सम! मैं आप ﷺ से पहले लोगों का तजरुबा कर चूका हूँ, और बनी इसराइल का मुझे सख्त तजरुबा हो चूका है, आप अपने रब के पास दोबारा जाए और अपनी उम्मत के लिए तखफिफ की दरख्वास्त करे, मैं दोबारा गया तो मुझ से दस कम कर दी गई, फिर मैं मूसा अलैहिस्सलाम के पास आया, उन्होंने फिर वही बात की, मैं फिर हाज़िर ए खिदमत हुआ अल्लाह तआला

ने फिर दस नमाज़ो की तखफिफ फरमा दी, मैं मूसा अलैहिस्सलाम के पास वापस आया तो उन्होंने फिर वही बात कही, मैं फिर हाज़िर ए खिदमत हुआ, अल्लाह तआला ने दस नमाज़े कम कर दी, मैं मूसा अलैहिस्सलाम के पास वापस आया तो उन्होंने फिर वही बात दोहराई, मैं फिर अल्लाह के पास गया तो मुझ से दस कम कर दी गई और मुझे हर रोज़ दस नमाज़े पढ़ने का हुक्म दिया गया, मैं मूसा अलैहिस्सलाम के पास आया तो उन्होंने फिर वैसे ही फ़रमाया, मैं फिर (रब के हुज़ूर) गया तो मुझे हर रोज़ पांच नमाज़े पढ़ने का हुक्म दिया गया, मैं मूसा अलैहिस्सलाम के पास आया तो उन्होंने पूछा आप को क्या हुक्म दिया गया है, मैंने कहा मुझे हर रोज़ पांच नमाज़े पढ़ने का हुक्म दिया गया है, उन्होंने ने फ़रमाया: आप ﷺ की उम्मत हर रोज़ पांच नमाज़े पढ़ने की ताकत नहीं रखेगी, क्योंकि मैं आप से पहले लोगों का तजरुबा कर चूका हूँ, और बनी इसराइल का मुझे सख्त तजरुबा हो चूका है? आप अपने रब के पास फिर जाए और अपनी उम्मत के लिए तखफिफ की दरख्वास्त करे, आप ﷺ ने फ़रमाया: मैंने अपने रब से (तख्फिफे नमाज़ के लिए इतनी मर्तबा) सवाल किया है, लिहाज़ा अब मुझे हया आती है, अब में राज़ी हूँ और तस्लीम करता हूँ, फ़रमाया जब मैं वहा से चला तो आवाज़ देने वाले ने आवाज़ दी, मैंने (पांच नमाज़ो का) अपना फ़रीज़ा जारी कर दिया और अपने बंदो पर तखफिफ फरमा दिया|” (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (3207) و مسلم (265 / 164)، (416 و 417)

٥٨٦٣ - (صَحِيح) وَعَن ثابتٍ البُنانيِّ عَنْ أَنَسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أتيتُ بالبُراق وَهُوَ دابَّة أَبْيَضُ طَوِيلٌ فَوْقَ الْحِمَارِ وَدُونَ الْبَغْلِ يَقَعُ حَافِرُهُ عِنْدَ مُنْتَهَى طَرْفِهِ [ص:١٦٣ فَرَكِبْتُهُ حَتَّى أَتَيْتُ بَيْتَ الْمَقْدِسِ فَرَبَطْتُهُ بِالْحَلْقَةِ الَّتِي تَرْبُطُ بِهَا الْأَنْبِيَاءُ» . قَالَ: " ثُمَّ دَخَلْتُ الْمَسْجِدَ فَصَلَّيْتُ فِيهِ رَكْعَتَيْنِ ثمَّ خرجتُ فَجَاءَنِي جِبْرِيلُ بِإِنَاءٍ مِنْ خَمْرٍ وَإِنَاءٍ مِنْ لبن فاخترتُ اللَّبن فَقَالَ جِبْرِيل: اخْتَرْتَ الْفِطْرَةَ ثُمَّ عَرَجَ بِنَا إِلَى السَّمَاءِ ". وَسَاقَ مِثْلَ مَعْنَاهُ قَالَ: «فَإِذَا أَنَا بِآدَمَ فرحَّبَ بِي وَدَعَا لِي بِخَيْرٍ» . وَقَالَ فِي السَّمَاءِ الثَّالِثَةِ: «فَإِذا أَنا بِيُوسُف إِذا أُعْطِيَ شَطْرَ الْحُسْنِ فَرَحَّبَ بِي وَدَعَا لِي بِخَيْرٍ» . وَلَمْ يَذْكُرْ بُكَاءَ مُوسَى وَقَالَ فِي السَّمَاءِ السَّابِعَةِ: " فَإِذَا أَنَا بِإِبْرَاهِيمَ مُسْنِدًا ظَهْرَهُ إِلَى الْبَيْتِ الْمَعْمُورِ وَإِذَا هُوَ يَدْخُلُهُ كُلَّ يَوْمٍ سَبْعُونَ أَلْفَ مَلَكٍ لَا يَعُودُونَ إِلَيْهِ ثمَّ ذهب بِي إِلَى سِدْرَةِ الْمُنْتَهى فَإِذا وَرقهَا كآذان الفيلة وَإِذا ثمارها كالْقِلَالِ فَلَمَّا غَشِيَهَا مِنْ أَمْرِ اللَّهِ مَا غَشَّى تَغَيَّرَتْ فَمَا أَحَدٌ مِنْ خَلْقِ اللَّهِ يَسْتَطِيعُ أَنْ يَنْعَتَهَا مِنْ حُسْنِهَا وَأَوْحَى إِلَيَّ مَا أوحى فَفرض عَليّ خمسين صَلَاة كُلِّ يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ فَنَزَلْتُ إِلَى مُوسَى فَقَالَ: مَا فَرَضَ رَبُّكَ عَلَى أُمَّتِكَ؟ قُلْتُ: خَمْسِينَ صَلَاة كُلِّ يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ. قَالَ: ارْجِعْ إِلَى رَبِّكَ فَسَلْهُ التَّخْفِيفَ فَإِنَّ أُمَّتَكَ لَا تُطِيقُ ذَلِكَ فَإِنِّي بَلَوْتُ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَخَبَرْتُهُمْ. قَالَ: " فَرَجَعْتُ إِلَى رَبِّي فَقُلْتُ: يَا رَبِّ خَفِّفْ عَلَى أُمَّتِي فَحَطَّ عَنِّي خَمْسًا فَرَجَعْتُ إِلَى مُوسَى فَقُلْتُ: حَطَّ عَنِّي خَمْسًا. قَالَ: إِنَّ أُمَّتَكَ لَا تُطِيقُ ذَلِكَ فَارْجِعْ إِلَى رَبِّكَ فَسَلْهُ التَّخْفِيفَ ". قَالَ: " فَلَمْ أَزَلْ أَرْجِعُ بَيْنَ رَبِّي وَبَيْنَ مُوسَى حَتَّى قَالَ: يَا مُحَمَّدُ إِنَّهُنَّ خَمْسُ صَلَوَاتٍ كُلَّ يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ لِكُلِّ صَلَاةٍ عَشْرٌ فَذَلِكَ خَمْسُونَ صَلَاةً مَنْ هَمَّ بِحَسَنَةٍ فَلَمْ يَعْمَلْهَا كُتِبَتْ لَهُ حَسَنَةً فَإِنْ عَمِلَهَا كُتِبَتْ لَهُ عَشْرًا وَمَنْ هَمَّ بِسَيِّئَةٍ فَلَمْ يَعْمَلْهَا لَمْ تُكْتَبْ لَهُ شَيْئًا فَإِنَّ عَمِلَهَا كُتِبَتْ لَهُ سَيِّئَةً وَاحِدَةً ". قَالَ: " فَنَزَلْتُ حَتَّى انتهيتُ إِلى مُوسَى فَأَخْبَرته فَقَالَ: ارجعْ إِلى رَبِّكَ فَسَلْهُ التَّخْفِيفَ " فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " فَقُلْتُ: قَدْ رَجَعْتُ إِلَى رَبِّي حَتَّى استحييت مِنْهُ ". رَوَاهُ مُسلم

5863. साबित बुनानी रहिमहुल्लाह अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं की रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरे पास बुराक लाइ गई, वह सफ़ेद लम्बा चोपाया था, जो गधे से बड़ा और खच्चर से छोटा था, वह अपना कदम वहां रखता था जहाँ तक उसकी नज़र जाती थी, मैं उस पर सवार हुआ और बैतूल मकदस पहुंचा, वहां मैंने इसे इस हलके (कुंडे) के साथ बांध दीया, जिसके साथ अंबिया अलैहिस्सलाम अपने सवारी बांधा करते थे”, फ़रमाया: “फिर में

मस्जिद में दाखिल हुआ तो वहां दो रकते पढ़ाइ, फिर वहां से निकला तो जिब्राइल अलैहिस्सलाम मेरे पास एक बर्तन शराब और एक बर्तन दूध का लाए तो मैंने दूध का बर्तन मुन्तखब किया, उस पर जिब्राइल अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: आप ने फितरत का इंतेखाब फ़रमाया है, फिर हमें आसमान की तरफ ले जाया गया", उस के बाद रावी ने हदीस पिछले के हम मानी रिवायत बयान की फ़रमाया: "मैं आदम अलैहिस्सलाम से मिला तो उन्होंने मुझे खुशामदीद कहा, और मेरे लिए खैर व बरकत की दुआ फरमाई", और फ़रमाया: "तीसरे आसमान पर युसूफ अलैहिस्सलाम से मुलाकात हुई, उनकी शान यह है कि उन्हें आधा हुस्न अता किया गया है, उन्होंने भी मुझे खुशामदीद कहा और दुआएं खैर फरमाई", इस रिवायत में रावी ने मूसा अलैहिस्सलाम के रोने का ज़िक्र नहीं किया और फ़रमाया: "सातवी आसमान पर इब्राहीम अलैहिस्सलाम से मुलाकात हुई आप बैतूल मामूर से टेक लगाए हुए थे, वहां हर रोज़ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते दाखिल होते हैं और फिर दोबारा उनकी बारी नहीं आती, फिर मुझे सिदरातुल मुन्तहा ले जाया गया, उस के पत्ते हाथी के कानों की तरह थे, जबकि उस का फल मटको की तरह था, जब उस को अल्लाह के हुक्म से जिस चीज़ ने ढांपना था ढांप लिया तो उसकी हालत बदल गई, अल्लाह की मखलूक में से उस के हुस्न की कोई तारीफ़ बयान नहीं कर सकता, चुनांचे उस ने मेरी तरफ जो वही करनी थी वह कर दी और दिन-रात में मुझ पर पचास नमाज़े फ़र्ज़ कर दी गई, मैं (ये हुक्म ले कर) मूसा अलैहिस्सलाम के पास आया तो उन्होंने ने फ़रमाया: आप के रब ने आप की उम्मत पर क्या फ़र्ज़ किया है, मैंने कहा हर रोज़ पचास नमाज़े, उन्होंने ने फ़रमाया: अपने रब के पास दोबारा जाए और उस से तखफिफ की दरख्वास्त करे, क्योंकि आप की उम्मत उसकी ताकत नहीं रखेगा, क्योंकि मैं बनी इसराइल को आज़मा चूका हूँ और उनका तजरुबा कर चूका हूँ", फ़रमाया: "मैं अपने रब के पास गया, तो अर्ज़ किया, रब जी! मेरी उम्मत पर तखफिफ फरमाइए, मुझ से पांच नमाज़े कम कर दी गई, मैं मूसा अलैहिस्सलाम के पास वापस आया तो उन्हें बताया की मुझ से पांच नमाज़े कम कर दी गई है, उन्होंने ने फ़रमाया: आप की उम्मत उसकी ताकत नहीं रखती आप अपने रब के पास जाए और उस से तखफिफ की दरख्वास्त करे", आप ﷺ ने फ़रमाया: "मैं अपने रब और मूसा अलैहिस्सलाम के दरमियान आता जाता रहा, हत्ता कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: मुहम्मद हर रोज़ यह पांच नमाज़े है और हर नमाज़ के लिए दस गुना अज़र है, इस तरह यह पचास नमाज़े हुई, जो शख़्स किसी नेकी का इरादा करे और वह इसे न कर सको तो उस के लिए एक नेकी लिख दी जाती है, और अगर वह इस नेकी को कर ले तो उस के लिए दस नेकियाँ लिख दी जाती है, और जो शख़्स किसी बुराई का इरादा करता है, लेकिन वह इस बुराई का इर्तिकाब नहीं करता तो उस के लिए कुछ भी नहीं रखा जाता और अगर वह उस का इर्तिकाब कर लेता है तो उस के लिए एक ही बुराई लिखी जाती है", आप ﷺ ने फ़रमाया: "मैं नीचे आया हत्ता कि मूसा अलैहिस्सलाम के पास आकर उन्हें बताया तो उन्होंने फिर भी हमें फ़रमाया अपने रब के पास जाए और उस से तखफिफ की दरख्वास्त करे", रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मैंने कहा में इतनी बार अपने रब के पास गया हूँ लिहाज़ा अब मुझे इस तखफिफ की दरख्वास्त करते हुए हया आती है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (259 / 162)، (411)

٥٨٦٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن ابْن شهَاب عَن أنسٍ قَالَ: كَانَ أَبُو ذَرٍّ يُحَدِّثُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " فُرِجَ عني سقفُ بَيْتِي وَأَنا بِمَكَّة فنزل جِبْرِيل فَفَرَجَ صَدْرِي ثُمَّ غَسَلَهُ بِمَاءِ زَمْزَمَ ثُمَّ جَاءَ بِطَسْتٍ مِنْ ذَهَبٍ مُمْتَلِئٍ حِكْمَةً وَإِيمَانًا فَأَفْرَغَهُ فِي صَدْرِي ثُمَّ أَطْبَقَهُ ثُمَّ أَخَذَ بيَدي فعرج بِي إِلَى السَّمَاءِ الدُّنْيَا. قَالَ جِبْرِيلُ لِخَازِنِ السَّمَاءِ: افْتَحْ. قَالَ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ جِبْرِيلُ. قَالَ:

هَل مَعَك أحد؟ قَالَ: نعم معي مُحَمَّدٌ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم. فَقَالَ: أَرْسِلَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ فَلَمَّا فَتَحَ عَلَوْنَا السَّمَاءَ الدُّنْيَا إِذَا رَجُلٌ قَاعِدٌ عَلَى يَمِينِهِ أَسْوِدَةٌ وَعَلَى يَسَارِهِ أَسْوِدَةٌ إِذَا نَظَرَ قِبَلَ يَمِينِهِ ضَحِكَ وَإِذَا نَظَرَ قِبَلَ شَمَالِهِ بَكَى فَقَالَ مَرْحَبًا بِالنَّبِيِّ الصَّالِحِ وَالِابْنِ الصَّالِحِ. قُلْتُ لِجِبْرِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: هَذَا آدَمُ وَهَذِهِ الْأَسْوِدَةُ عَنْ يَمِينِهِ وَعَنْ شِمَالِهِ نَسَمُ بَنِيهِ فَأَهْلُ الْيَمين مِنْهُم أهل الْجنَّة والأسودة عَن شِمَاله أهلُ النَّار فَإِذا نظر عَن يَمِينِهِ ضَحِكَ وَإِذَا نَظَرَ قِبَلَ شَمَالِهِ بَكَى حَتَّى عَرَجَ بِي إِلَى السَّمَاءِ الثَّانِيَةِ فَقَالَ لِخَازِنِهَا: افْتَحْ فَقَالَ لَهُ خَازِنُهَا مِثْلَ مَا قَالَ الْأَوَّلُ " قَالَ أَنَسٌ: فَذَكَرَ أَنَّهُ وَجَدَ فِي السَّمَاوَاتِ آدَمَ وَإِدْرِيسَ وَمُوسَى وَعِيسَى وَإِبْرَاهِيمَ وَلَمْ يُثْبِتْ كَيْفَ مَنَازِلُهُمْ غَيْرَ أَنَّهُ ذَكَرَ أَنَّهُ وَجَدَ آدَمَ فِي السَّمَاءِ الدُّنْيَا وَإِبْرَاهِيمَ فِي السَّمَاءِ السَّادِسَةِ. قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: فَأَخْبَرَنِي ابْنُ حَزْمٍ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ وَأَبَا حَبَّةَ الْأَنْصَارِيَّ كَانَا يَقُولَانِ. قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «ثمَّ عرج بِي حَتَّى وصلت لِمُسْتَوًى أَسْمَعُ فِيهِ صَرِيفَ الْأَقْلَامِ» وَقَالَ ابْنُ حَزْمٍ وَأَنَسٌ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " فَفَرَضَ اللَّهُ عَلَى أُمَّتِي خَمْسِينَ صَلَاةً فَرَجَعْتُ بِذَلِكَ حَتَّى مَرَرْتُ عَلَى مُوسَى. فَقَالَ: مَا فَرْضُ اللَّهِ لَكَ عَلَى أُمَّتِكَ؟ قُلْتُ: فَرَضَ خَمْسِينَ صَلَاةً. قَالَ: فَارْجِعْ [ص:١٦٤] إِلَى رَبِّكَ فَإِن أُمَّتَكَ لَا تطِيق فراجعت فَوَضَعَ شَطْرَهَا فَرَجَعْتُ إِلَى مُوسَى فَقُلْتُ: وَضَعَ شَطْرَهَا فَقَالَ: رَاجِعْ رَبَّكَ فَإِنَّ أُمَّتَكَ لَا تُطِيقُ ذَلِكَ فَرَجَعْتُ فَرَاجَعْتُ فَوَضَعَ شَطْرَهَا فَرَجَعْتُ إِلَيْهِ فَقَالَ: ارْجِعْ إِلَى رَبِّكَ فَإِنَّ أُمَّتَكَ لَا تُطِيقُ ذَلِكَ فَرَاجَعْتُهُ فَقَالَ: هِيَ خَمْسٌ وَهِيَ خَمْسُونَ لَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ فَرَجَعْتُ إِلَى مُوسَى فَقَالَ: رَاجِعْ رَبَّكَ. فَقُلْتُ: اسْتَحْيَيْتُ مِنْ رَبِّي ثُمَّ انْطُلِقَ بِي حَتَّى انْتُهِيَ إِلَى سِدْرَةِ الْمُنْتَهَى وَغَشِيَهَا أَلْوَانٌ لَا أَدْرِي مَا هِيَ؟ ثُمَّ أُدْخِلْتُ الْجَنَّةَ فَإِذَا فِيهَا جَنَابِذُ اللُّؤْلُؤِ وَإِذَا تُرَابُهَا الْمِسْكُ ". مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5864. इब्ने शिहाब अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु हदीस बयान किया करते थे के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैं मक्का मैं था के मेरे घर की छत खोल दी गई, तो जिब्राइल अलैहिस्सलाम नाज़िल हुए, उन्होंने मेरा सीना चाक किया, फिर इसे आबे ज़म ज़म के साथ धोया, फिर वह हिकमत व ईमान से भरी हुई सोने की तश्त लाए, इसे मेरे सिने में डाल दिया, फिर इसे जोड़ दीया, फिर मेरा हाथ पकड़ा और मुझे आसमान की तरफ ले गए, जब में आसमानी दुनिया पर पहुंचा तो जिब्राइल ने आसमान के मुहाफ़िज़ से कहा, दरवाज़ा खोलो, उस ने पूछा आप कौन है? फ़रमाया: जिब्राइल, उस ने पूछा: आप के साथ कोई है? उन्होंने ने फ़रमाया: हाँ, मेरे साथ मुहम्मद ﷺ है, उस ने पूछा क्या इनकी तरफ बूलाने के लिए भेजा गया था? उन्होंने ने फ़रमाया: हाँ, जब दरवाज़ा खोल दिया गया, तो हम आसमानी दुनिया पर चले गए, वहां एक आदमी बैठा हुआ था, कुछ लोग उस के दाएँ तरफ थे और कुछ उस के बाएँ तरफ, जब वह अपने दाएँ जानिब देखते तो मुस्कुरा देते और जब अपने बाएँ जानिब देखते तो रोना शुरू कर देते ,उन्होंने कहा: खुशामदीद, नबी स्वालेह और बेटे स्वालेह, मैंने जिब्राइल अलैहिस्सलाम से पूछा यह कौन है? उन्होंने ने फ़रमाया: यह आदम अलैहिस्सलाम है और उन के दाएँ और बाएँ जानिब जो गिरोह है, यह उनकी औलाद की रूहें है, उन के दाएँ तरफ वाला गिरोह अहले जन्नत का है, और उन के बाएँ तरफ वाला गिरोह जहन्नुमियो का है, जब वह अपने दाएँ जानिब देखते है तो मुस्कुराते है, और जब अपने बाएँ जानिब देखते है तो रो देते है, फिर मुझे दूसरे आसमान तक ले जाया गया जिब्राइल अलैहिस्सलाम ने उस के मुहाफ़िज़ से कहा दरवाज़ा खोलो, उस के मुहाफ़िज़ ने भी उन्हें वैसे ही कहा जैसे पहले आसमान वाले मुहाफ़िज़ ने कहा था”, अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, आप ﷺ ने ज़िक्र फ़रमाया के उन्होंने आसमानों में आदम, इदरिस, मूसा, इसा और इब्राहीम अलैहिस्सलाम से मुलाकात की और अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु ने यह बयान नहीं किया के उनकी मनाज़िल केसी है, अलबत्ता उन्होंने यह ज़िक्र किया के आप ﷺ ने आदम अलैहिस्सलाम को आसमानी दुनिया पर और इब्राहीम अलैहिस्सलाम को चोथे आसमान पर पाया, इब्ने शैबा ने बयान किया इब्ने हज़म ने मुझे खबर दी के इब्ने अब्बास और अबू हब्बत अंसारी रदियल्लाहु अन्हु दोनों बयान किया करते थे, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “फिर मुझे ऊपर ले जाया गया, हत्ता कि में इस क़दर बुलंद जगह पर पहुँच गया कि मैं कलमों के लिखने की आवाज़ सुनता था”, इब्ने

हज़्म और अनस रदियल्लाहु अन्हु ने बयान किया नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह ने मेरी उम्मत पर पचास नमाज़े फ़र्ज़ की में यह (हुक्म) लेकर वापस हुआ और मेरा गुज़र मूसा अलैहिस्सलाम के पास से हुआ तो उन्होंने ने फ़रमाया: अल्लाह ने आप की उम्मत पर क्या फ़र्ज़ किया है? मैंने कहा पचास नमाज़े, उन्होंने ने फ़रमाया: अपने रब के पास वापस जाए क्योंकि आप की उम्मत ताकत नहीं रखेगा, उन्होंने मुझे वापस लौटा दिया तो अल्लाह तआला ने उन (नमाज़ो) का कुछ हिस्सा कम कर दिया, मैं मूसा अलैहिस्सलाम के पास वापस आया तो मैंने बताया की उस ने उनमें से कुछ कम कर दी है, उन्होंने ने फ़रमाया: अपने रब के पास वापस जाए क्योंकि आप की उम्मत उसकी ताकत नहीं रख सकेगी, मैं वापस गया और अपनीबात दोहराई तो उस ने उनमें से कुछ और कम कर दी, मैं फिर उन के पास वापस आया तो उन्होंने ने फ़रमाया: अपने रब के पास वापस जाए, क्योंकि आप की उम्मत उसकी ताकत नहीं रखेगी, मैंने फिर उन से दरख्वास्त की तो उस ने फ़रमाया वह (अदाइगी में) पांच है और सवाब में वह पचास है, मेरे वहां बात तब्दील नहीं की जाती, मैं मूसा अलैहिस्सलाम के पास आया तो उन्होंने ने फ़रमाया: अपने रब के पास फिर जाए, मैंने कहा मुझे अपने रब के (पास बार बार जाने) से शरम आती है, फिर मुझे सिदरातुल मुन्तहा तक ले जाया गया, कई रंगों ने इसे ढांप रखा था, मैं नहीं जानता वह क्या है? फिर मुझे जन्नत में ले जाया गया वहां मोतियों के गुंबद थे और उसकी मिट्टी कस्तूरी की थी”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (349) و مسلم (263 / 163)، (415)

٥٨٦٥ - (صَحِيح) وَعَن عبدِ الله قَالَ: لَمَّا أَسْرِيَ بِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ انْتُهِيَ بِهِ إِلَى سِدْرَةِ الْمُنْتَهَى وَهِيَ فِي السَّمَاءِ السَّادِسَةِ إِلَيْهَا يَنْتَهِي مَا يُعْرَجُ بِهِ مِنَ الْأَرْضِ فَيُقْبَضُ مِنْهَا وَإِلَيْهَا يَنْتَهِي مَا يُهْبَطُ بِهِ مِنْ فَوْقِهَا فَيُقْبَضُ مِنْهَا قَالَ: [إِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشَى] . قَالَ: فِرَاشٌ مِنْ ذَهَبٍ قَالَ: فَأُعْطِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَلَاثًا: أُعْطِيَ الصَّلَوَاتِ الْخَمْسَ وَأُعْطِيَ خَوَاتِيمَ سُورَةِ الْبَقَرَةِ وَغُفِرَ لمن لَا يشرِكُ باللَّهِ من أمته شَيْئا الْمُقْحِمَات. رَوَاهُ مُسلم

5865. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ को मेअराज कराइ गई तो उन्हें सिदरातुल मुन्तहा तक ले जाया गया, वह छथे आसमान पर है, ज़मीन से ऊपर जाने वाली हर चीज़ की हद यहाँ तक है, इसी मक़ाम से अहकामात लिए जाते हैं और ऊपर से जो हुक्म आता है यहीं आकर रुकता है, और फिर यहाँ से अहकाम लिए जाते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिस चीज़ ने सिदरह को ढांपना था उस ने इसे ढांप रखा था”, इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु ने बयान किया उस से मुराद यह है कि वह सोने के परवाने और पतंगे थे, फ़रमाया रसूलुल्लाह ﷺ को तीन चीज़े अता की गई, आप को पांच नमाज़े अता की गई, सुरह बकरह की आखिरी आयात और आप की उम्मत में से जो शख़्स अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराए जैसे कबिराह गुनाह नहीं करेगा उस को बख्श दीया जाएगा| (मुस्लिम)

رواه مسلم (279 / 173)، (431)

٥٨٦٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَقَدْ رَأَيْتُنِي فِي الْحِجْرِ وَقُرَيْشٌ تَسْأَلُنِي عَنْ مَسْرَايَ فَسَأَلَتْنِي عَنْ أَشْيَاءَ مِنْ بَيْتِ الْمَقْدِسِ لَمْ أُثْبِتْهَا فَكُرِبْتُ كَرْبًا مَا كُرِبْتُ مِثْلَهُ فَرَفَعَهُ اللَّهُ لِي أَنْظُرُ إِلَيْهِ مَا يَسْأَلُونِي عَنْ شَيْءٍ إِلَّا أَنْبَأْتُهُمْ وَقَدْ رَأَيْتُنِي فِي جَمَاعَةٍ مِنَ الْأَنْبِيَاءِ فَإِذَا مُوسَى قَائِمٌ يُصَلِّي. فَإِذَا رَجُلٌ ضَرْبٌ [ص:١٦٤ جعد كَأَنَّهُ أَزْد شَنُوءَةَ وَإِذَا عِيسَى

قَائِمٌ يُصَلِّي أَقْرَبُ النَّاسِ بِهِ شبها عروةُ بن مسعودٍ الثَّقفيُّ فإذا إِبْرَاهِيمُ قَائِمٌ يُصَلِّي أَشْبَهُ النَّاسِ بِهِ صَاحِبُكُمْ - يَعْنِي نَفْسَهُ - فَحَانَتِ الصَّلَاةُ فَأَمَمْتُهُمْ فَلَمَّا فَرَغْتُ مِنَ الصَّلَاةِ قَالَ لِي قَائِلٌ: يَا مُحَمَّدُ هَذَا مَالِكٌ خَازِنُ النَّارِ فَسَلِّمْ عَلَيْهِ فَالْتَفَتُّ إِلَيْهِ فَبَدَأَنِي بِالسَّلَامِ ". رَوَاهُ مُسْلِمٌ»» وَهَذَا الْبَابُ خَالٍ عَنِ: الْفَصْلِ الثَّانِي

5866. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैंने अपने आप को हुज्र (हतिम) में खड़े हुए देखा, जबकि कुरैश मुझ से मेरे सफ़र मेअराज के मुतल्लिक सवाल कर रहे थे, उन्होंने बैतूल मकदस की कुछ चीजों के मुतल्लिक मुझ से सवालात किए लेकिन मुझे वह याद नहीं थे, मैं इस क़दर ग़मगीन हुआ की इस तरह का गम मुझे कभी नहीं हुआ था, चुनांचे अल्लाह ने इसे मेरी नज़रों के सामने बुलंद कर दिया में उसे देख रहा था, इसलिए वह मुझ से जिस भी चीज़ के मुतल्लिक सवाल करते तो मैं उन्हें बता देता था, मैंने अपने आप को अंबिया अलैहिस्सलाम की जमाअत में देखा, मैंने अचानक मूसा अलैहिस्सलाम को हालत ए कयाम में नमाज़ पढ़ते हुए देखा, उनका कद मियाने है और बाल घुंघरियाले है, गोया वह सनुअत कबिले के आदमी है, फिर मैंने इसा अलैहिस्सलाम को खड़े हो कर नमाज़ पढ़ते हुए देखा, उरवा बिन मसउद सक्फी रदियल्लाहु अन्हु की उन से बहोत ज़्यादा मुशाबिहत है, और इब्राहीम अलैहिस्सलाम भी खड़े नमाज़ पढ़ रहे हैं, मैं उन से सबसे ज़्यादा मुशाबिहत रखता हूँ, नमाज़ का वक़्त हुआ तो मैंने उनकी इमामत कराइ, चुनांचे जब में नमाज़ से फारिग़ हुआ तो किसी कहने वाले ने मुझे कहा: मुहम्मद! यह जहन्नम का दारोगा मालिक है, आप इसे सलाम करे, मैंने उसकी तरफ तवज्जो की तो उस ने मुझे सलाम में पहल की”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (278 / 172)، (430)

وهذا الباب خال عن: الفصل الثاني

यह बाब दूसरी फस्ल से खाली है|

بَابٌ فِي الْمِعْرَاجِ • मेअराज का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٥٨٦٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن جَابِرٍ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَمَّا كَذَّبَنِي قُرَيْشٌ قُمْتُ فِي الْحِجْرِ فَجَلَّى اللَّهُ لِيَ بَيْتَ الْمَقْدِسِ فَطَفِقْتُ أُخْبِرُهُمْ عَنْ آيَاتِهِ وَأَنَا أَنْظُرُ إِلَيْهِ» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5867. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "जब कुरैश ने (वाकिया ए मेअराज के मुत्तल्लिक) मुझे झुठलाया तो मैं हतिम में खड़ा हो गया, अल्लाह ने मेरे लिए बैतूल मकदस को रोशन कर दिया, चुनांचे मैंने इसे देख कर उसकी अलामत बयान करनी शुरू कर दी"। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3886) و مسلم (170 / 276)، (428)

بَاب فِي المعجزات • मौजिज़े का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٥٨٦٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ الصّديق رَضِي الله عَنهُ قا ل: نظرتُ إِلى أقدامِ المشركينَ على رؤوسنا وَنَحْنُ فِي الْغَارِ فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ لَوْ أَنَّ أَحَدَهُمْ نَظَرَ إِلَى قَدَمِهِ أَبْصَرَنَا فَقَالَ: «يَا أَبَا بَكْرٍ مَا ظَنُّكَ بِاثْنَيْنِ اللَّهُ ثالثهما»»» مُتَّفق عَلَيْهِ

5868. अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: हम ग़ार में थे, मैंने सर उठाया तो देखा के मुशरिकीन के पाँव नज़र आ रहे थे गोया वह हमारे सरो पर हो, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! अगर उनमें से कोई अपने पाँव की तरफ नज़र कर ले तो वह हमें देख लेगा, आप ﷺ ने फ़रमाया: "अबू बक्र ऐसे दो आदमियों के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है, जिन के साथ तीसरा अल्लाह है"। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3653) ومسلم (1 / 2381)، (6169)

٥٨٦٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ قَالَ لِأَبِي بَكْرٍ: يَا أَبَا بَكْرٍ حَدِّثْنِي كَيْفَ صَنَعْتُمَا حِينَ سَرَيْتَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: أَسْرَيْنَا لَيْلَتَنَا وَمِنَ الْغَدِ حَتَّى قَامَ قَائِمُ الظَّهِيرَةِ وَخَلَا الطَّرِيقُ لَا يَمُرُّ فِيهِ أَحَدٌ فَرُفِعَتْ لَنَا صَخْرَةٌ طَوِيلَةٌ لَهَا ظِلٌّ لَمْ يَأْتِ عَلَيْهَا الشَّمْسُ فَنَزَلْنَا عِنْدَهَا وَسَوَّيْتُ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَكَانًا بِيَدَيَّ يَنَامُ عَلَيْهِ وَبَسَطْتُ عَلَيْهِ فَرْوَةً وَقُلْتُ نَمْ يَا رسولَ الله وَأَنَا أَنْفُضُ مَا حَوْلَكَ فَنَامَ وَخَرَجْتُ أَنْفُضُ مَا حَوْلَهُ فَإِذَا أَنَا بِرَاعٍ مُقْبِلٍ قُلْتُ: أَفِي غنمك لبنٌ؟ قَالَ: نعم قلتُ: أفتحلبُ؟ قَالَ: نَعَمْ. فَأَخَذَ شَاةً فَحَلَبَ فِي قَعْبٍ كُثْبَةً مِنْ لَبَنٍ وَمَعِي إِدَاوَةٌ حَمَلْتُهَا لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْتَوَى

فِيهَا يَشْرَبُ وَيَتَوَضَّأُ فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَرِهْتُ [ص:١٦٤ أَنْ أُوقِظَهُ فَوَافَقْتُهُ حَتَّى اسْتَيْقَظَ فَصَبَبْتُ مِنَ الْمَاءِ عَلَى اللَّبَنِ حَتَّى بَرَدَ أَسْفَلُهُ فَقُلْتُ: اشْرَبْ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَشَرِبَ حَتَّى رضيت ثمَّ قَالَ: «أَلم يَأْن الرحيل؟» قلتُ: بَلى قَالَ: فارتحلنا بعد مَا مَالَتِ الشَّمْسُ وَاتَّبَعَنَا سُرَاقَةُ بْنُ مَالِكٍ فَقُلْتُ: أُتِينَا يَا رَسُولَ اللَّهِ فَقَالَ: «لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا» فَدَعَا عَلَيْهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَارْتَطَمَتْ بِهِ فَرَسُهُ إِلَى بَطْنِهَا فِي جَلَدٍ مِنَ الْأَرْضِ فَقَالَ: إِنِّي أَرَاكُمَا دَعَوْتُمَا عَلَيَّ فَادْعُوَا لِي فَاللَّهُ لَكُمَا أَنْ أَرُدَّ عَنْكُمَا الطَّلَبَ فَدَعَا لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَنَجَا فَجَعَلَ لَا يلقى أحدا إِلا قَالَ كفيتم مَا هَهُنَا فَلَا يَلْقَى أَحَدًا إِلَّا رَدَّهُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5869. बराअ बिन आजीब रदियल्लाहु अन्हुमा अपने वालिद (आज़िब (र)) से रिवायत करते हैं की उन्होंने अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु से कहा अबू बक्र जब आप रात के वक़्त रसूलुल्लाह ﷺ के साथ (हिजरत के लिए) रवाना हुए तो आप का यह सफ़र कैसे गुज़रा? उन्होंने ने फ़रमाया: हम रातभर और अगले रोज़ दो पहर तक चलते रहे, रास्ता खाली था वहां से कोई भी नहीं गुज़र रहा था, हमें एक तवील चट्टान नज़र आई जिस का साया था, अभी वहां धुप नहीं आई थी, हमने वहां कयाम किया, मैंने नबी ﷺ के आराम के लिए अपने हाथो से जगह बराबर की उस पर एक पोस्तीन बिछाई और फिर मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! आप सो जाए, और मैं इर्दगिर्द के हालात का जाइज़ा लेता हूँ, आप सो गए और मैं जाइज़ा लेने के लिए बाहर निकल आया, मैंने एक चरवाहा आते हुए देखा और इसे कहा: क्या तेरी बकरिया दूध देती है? उस ने कहा: हाँ, मैंने कहा क्या तुम (मेरे लिए) दूध निकालोगे? उस ने कहा: हाँ, उस ने एक बकरी पकड़ी और लकड़ी के प्याले में दूध दोहा, और मेरे पास एक बर्तन था जिसे मैंने नबी ﷺ के लिए साथ रखा था, आप उस से सेराब होते और इसी से पानी पीते और वुज़ू किया करते थे, मैं दूध लेकर नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो मैंने आप को जगाना मुनासिब न समझा, मैंने इंतज़ार किया हत्ता कि आप बेदार हुए, मैंने दूध पर पानी डाला हत्ता कि उस का निचला हिस्सा भी ठंडा हो गया, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! नोश फरमाइए, आप ने दूध नोश फ़रमाया तो मुझे फुरसत मयस्सर आई, फिर आप ने फ़रमाया: “क्या कुच करने का वक़्त नहीं हुआ ?” मैंने अर्ज़ किया: क्यों नहीं! हो गया है, फ़रमाया हमने ज़वाल ए आफ़ताब के बाद कुच किया, और सुराका बिन मालिक ने हमारा पीछा किया जो मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! पीछा करने वाला हमें आ लेना चाहता है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “गम न करो, अल्लाह हमारे साथ है” नबी ﷺ ने उस के लिए बद्दुआ फरमाई उस का घोड़ा पेट तक सख्त ज़मीन में धंस गया, उस ने कहा: मैंने तुम्हें देखा के तुमने मेरे लिए बद्दुआ की है, तुम मेरे लिए दुआ करो और मैं तुम्हें अल्लाह की ज़मानत देता हूँ की मैं तुम्हारी तलाश में निकलने वालो को तुम्हारे पीछे नहीं आने दूंगा, चुनांचे नबी ﷺ ने उस के लिए दुआ फरमाई तो वह निजात पा गया, फिर वह जिसे भी मिलता उस से यही कहता इस तरफ तुम्हें जाने की ज़रूरत नहीं, मैं इधर से हो आया हूँ, इस तरह वह हर मिलने वाले को वापस कर देता| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (3615) و مسلم (75 / 2009)، (5238)

٥٨٧٠ - (صَحِيح) وَعَن أنس قا ل سَمِعَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَلَامٍ بِمَقْدَمِ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ فِي أَرْضٍ يَخْتَرِفُ فَأَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ إِنِّي سَائِلُكَ عَنْ ثَلَاثٍ لَا يَعْلَمُهُنَّ إِلَّا نَبِيٌّ: فَمَا أَوَّلُ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ وَمَا أَوَّلُ طَعَامِ أَهْلِ الْجَنَّةِ؟ وَمَا يَنْزِعُ الولدُ إِلَى أَبيهِ أَو إِلَى أمه؟ قا ل: «أَخْبرنِي بهنَّ جِبْرِيلُ آنِفًا أَمَّا أَوَّلُ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ فَنَارٌ تَحْشُرُ النَّاسَ مِنَ الْمَشْرِقِ إِلَى الْمَغْرِبِ وَأَمَّا أَوَّلُ طَعَامٍ يَأْكُلُهُ أَهْلُ الْجَنَّةِ فَزِيَادَةُ كَبِدِ الْحُوتِ وَإِذَا سَبَقَ مَاءُ الرَّجُلِ مَاءَ الْمَرْأَةِ نَزَعَ الْوَلَدَ وَإِذَا سَبَقَ مَاءُ الْمَرْأَةِ نَزَعَتْ» قَالَ: أشهد أَن لاإله إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّكَ رَسُولُ اللَّهِ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ الْيَهُودَ قَوْمٌ بُهْتٌ وَإِنَّهُمْ إِنْ يعلمُوا بِإِسْلَامِي من قبل أَن تَسْأَلهُمْ .

يبهتوني فَجَاءَتِ الْيَهُودُ فَقَالَ: «أَيُّ رَجُلٍ عَبْدُ اللَّهِ فِيكُمْ؟» قَالُوا: خَيْرُنَا وَابْنُ خَيْرِنَا وَسَيِّدُنَا [ص:١٦٤ وَابْنُ سيدِنا فقَالَ: «أرأَيتم إِنْ أَسْلَمَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَلَامٍ؟» قَالُوا أَعَاذَهُ اللَّهُ مِنْ ذَلِكَ. فَخَرَجَ عَبْدُ اللَّهِ فَقَالَ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ فَقَالُوا: شَرُّنَا وَابْنُ شَرِّنَا فَانْتَقَصُوهُ قَالَ: هَذَا الَّذِي كُنْتُ أَخَافُ يَا رسولَ الله رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

5870. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अब्दुल्लाह बिन सलाम रदियल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाह ﷺ की तशरीफ़ आवरी के मुतल्लिक सुना तो वह इस वक़्त फल तोड़ रहे थे, वह फ़ौरन नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए, और अर्ज़ किया, मैं आप से तीन सवाल करता हूँ जिन्हें सिर्फ नबी ही जानता है? (बताएं) अलामत ए कियामत में से सबसे पहली निशानी क्या है? अहले जन्नत का सबसे पहला खाना क्या होगा? बच्चा कब अपने वालिद के मुशाबेह (अनुरूप) होता है? और कब अपनी वालिदा के मुशाबेह (अनुरूप) होता है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिब्राइल ने अभी अभी उन के मुतल्लिक मुझे बताया है, जहाँ तक अलामत ए कियामत का ताल्लुक है तो पहली अलामत एक आग होगी जो लोगों को मशरिक से मग़रिब की तरफ जमा कर देगी, रहा जन्नतियो का पहला खाना तो वह मछली के जिगर का एक किनारा होगा, और जब आदमी का पानी औरत के पानी (मनी) पर ग़ालिब आ जाता है तो बच्चा वालिद के मुशाबह (अनुरूप) होता है और जब औरत का पानी ग़ालिब आ जाता है तो बच्चा औरत के मुशाबह (अनुरूप) हो जाता है”, (ये जवाब सुन कर) उन्होंने कहा: मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, और बेशक आप अल्लाह के रसूल हैं, (फिर फ़रमाया) अल्लाह के रसूल! यहूदी बड़े बोहतान बाज़ है, अगर उन्हें, उन से पहले के आप उन से मेरे मुतल्लिक पूछे, मेरे इस्लाम कबूल करने का पता चल गया तो वह मुझ पर बोहतान लगाएगे, चुनांचे इतने में यहूदी आ गए तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “अब्दुल्लाह का तुम्हारे वहां क्या मकाम है? उन्होंने बताया के वह हम में सबसे बेहतर, हम में सबसे बेहतर के बेटे, हमारे सरदार और हमारे सरदार के बेटे है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुझे बताओ अगर अब्दुल्लाह बिन सलाम इस्लाम कबूल कर ले (तो फिर)? उन्होंने कहा: अल्लाह उन्हें उन से पनाह में रखे, अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु इसी दौरान बाहर तशरीफ़ ले आए और उन्होंने कहा: मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, और यह कि मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं, फिर यह (यहूदी उन के बारे में) कहने लगे: वह हम में सबसे बुरा है और हम में से सबसे बुरे का बेटा है, और वह उनकी तन्किस व तोहीन करने लगे, अब्दुल्लाह बिन सलाम रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! यही वह चीज़ थी जिस का मुझे अंदेशा था| (बुखारी)

رواه البخاری (4480)

٥٨٧١ - (صَحِيح) وَعنهُ قا ل: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَاوَرَ حِينَ بَلَغَنَا إِقْبَالُ أَبِي سُفْيَانَ وَقَامَ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَوْ أَمَرْتَنَا أَنْ نُخِيضَهَا الْبَحْرَ لَأَخَضْنَاهَا وَلَوْ أَمَرْتَنَا أَنْ نَضْرِبَ أَكْبَادَهَا إِلَى بَرْكِ الْغِمَادِ لَفَعَلْنَا. قَالَ: فَنَدَبَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ النَّاسُ فَانْطَلَقُوا حَتَّى نَزَلُوا بَدْرًا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هَذَا مَصْرَعُ فُلَانٍ» وَيَضَعُ يدَه على الأرضِ هَهُنَا وَهَهُنَا قا ل: فَمَا مَاطَ أَحَدُهُمْ عَنْ مَوْضِعِ يَدُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

5871. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं के जब अबू सुफियान की आमद का हमें पता चला तो रसूलुल्लाह ﷺ ने मशवरा किया तो साद बिन अब्बाद रदियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! उस ज़ात की

क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! अगर आप हमें समुन्दर में कूद जाने का हुक्म फ़रमाएंगे तो हम उस में कूद जाएँगे, और अगर आप बर्क गुमाद तक जाने का हुक्म फ़रमाएंगे तो हम वहां तक भी पहुंचेंगे, रावी बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने लोगों को बुलाया, फिर कुच किया हत्ता कि बद्र के मक़ाम पर पड़ाव डाला, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “यहाँ फलां क़त्ल होगा”, और आप अपने दस्ते मुबारक से ज़मीन पर निशान लगा रहे थे, यहाँ और यहाँ रावी बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के निशान की जगह से कोई भी आगे पीछे क़त्ल नहीं हुआ था| (मुस्लिम)

رواه مسلم (83 / 1779)، (4621)

٥٨٧٢ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ وَهُوَ فِي قُبَّةٍ يَوْمَ بَدْرٍ: «اللَّهُمَّ أَنْشُدُكَ عَهْدَكَ وَوَعْدَكَ اللَّهُمَّ إِنْ تَشَأْ لَا تُعْبَدْ بَعْدَ الْيَوْمِ» فَأَخَذَ أَبُو بَكْرٍ بيدِه فَقَالَ حَسْبُكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَلْحَحْتَ عَلَى رَبِّكَ فَخَرَجَ وَهُوَ يَثِبُ فِي الدِّرْعِ وَهُوَ يقولُ: « [سيُهزَمُ الجمعُ ويُوَلُّونَ الدُّبُرَ] » . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

5872. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने गज़वा ए बद्र के मौके पर अपने खैमे में यूँ दुआ फरमाई: “ए अल्लाह! मैं तुझ से तेरे अहल व अमान और तेरे वादे का सवाल करता हूँ, ऐ अल्लाह! क्या तू चाहता है के आज के बाद तेरी इबादत न की जाए ?” इतने में अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने आप का दस्ते मुबारक पकड़ लिया और अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! बस कीजिए! आप ने रब से किस कदर इसरार से दुआ की है, फिर आप बाहर तशरीफ़ लाए इस वक़्त आप खूब तेज़ चल रहे थे और आप ने ज़िराह पहन रखी थी, और आप ﷺ फरमा रहे थे: “अनकरीब यह गिरोह शिकस्त खा जाएगा और पीठ फेर कर भाग जाएँगे”| (बुखारी)

رواه البخارى (4875)

٥٨٧٣ - (صَحِيح) وَعَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ يَوْمَ بَدْرٍ: «هَذَا جِبْرِيلُ آخِذٌ بِرَأْسِ فرسه عَلَيْهِ أَدَاة الْحَرْب» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

5873. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के बद्र के रोज़ नबी ﷺ ने फ़रमाया: “ये जिब्राइल अलैहिस्सलाम आलात ए हरबी सजाए अपने घोड़े की लगाम थामे हुए तशरीफ़ ला रहे थे”| (बुखारी)

رواه البخارى (3995)

٥٨٧٤ - (صَحِيح) وَعنهُ قا ل: بَيْنَمَا رَجُلٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ يَوْمَئِذٍ يَشْتَدُّ فِي إِثْرِ رَجُلٍ مِنَ الْمُشْرِكِينَ أَمَامَهُ إِذْ سَمِعَ ضَرْبَةً بِالسَّوْطِ فَوْقَهُ وَصَوْتُ الْفَارِسِ يَقُولُ: أَقْدِمْ حَيْزُومُ. إِذْ نَظَرَ إِلَى الْمُشْرِكِ أَمَامَهُ خَرَّ مُسْتَلْقِيًا فَنَظَرَ إِلَيْهِ فَإِذَا هُوَ قَدْ خُطِمَ [ص:١٦٤ أَنْفُهُ وَشُقَّ وَجْهُهُ كَضَرْبَةِ السَّوْطِ فَاخْضَرَّ ذَلِكَ أَجْمَعُ فَجَاءَ الْأَنْصَارِيُّ فَحَدَّثَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «صَدَقْتَ ذَلِكَ مِنْ مَدَدِ السَّمَاءِ الثَّالِثَةِ» فَقَتَلُوا يَوْمَئِذٍ سَبْعِينَ وَأَسَرُوا سبعين. رَوَاهُ مُسلم

5874. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, इस रोज़ एक मुसलमान, एक मुशरिक का पीछा कर रहा था, उस के आगे इस (मुसलमान) ने इस (मशरिक) के ऊपर एक कोड़े की आवाज़ सुनी, और घुड़सवार को यह कहते हुए सुना, हैज़ूम (घोड़े का नाम है) आगे बढ़, अचानक इस (मुसलमान) ने मुशरिक को अपने सामने चित्ता गिरा हुआ पाया और उस ने इसे देखा के कोड़ा पड़ने से उसकी नाक और उस का चेहरा फट चूका था और जहाँ कोड़ा पड़ा था वह जगह काली हो गई थी, वह अंसारी आया और उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ से वाकिया बयान किया तो आप ने फ़रमाया: "तुमने सच कहा, यह तीसरे आसमान से मदद आई थी", इस दिन उन्होंने सत्तर (काफिरों) को क़त्ल किया और सत्तर को कैदी बनाया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (58 / 1763)، (4588)

٥٨٧٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ قَالَ: رَأَيْتُ عَنْ يَمِينِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَنْ شِمَالِهِ يَوْمَ أُحُدٍ رَجُلَيْنِ عَلَيْهِمَا ثِيَابٌ بِيضٌ يُقَاتِلَانِ كَأَشَدِّ الْقِتَالِ مَا رأيتُهما قبلُ وَلَا بعد يَعْنِي جِبْرِيل وَمِيكَائِيل. مُتَّفق عَلَيْهِ

5875. साद बिन अबी वकास रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने उहद के रोज़ रसूलुल्लाह ﷺ के दाएँ बाएँ दो आदमी देखे इन पर सफ़ेद कपड़े थे और वह बड़ी शिद्दत के साथ लड़ रहे थे, मैंने इन दोनों को ना उस से पहले देखा था न बाद में यानी वह जिब्राइल और मिकाइल अलैहिस्सलाम थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (4045) و مسلم (46 / 2306)، (6004)

٥٨٧٦ - (صَحِيح) وَعَن الْبَراء قَالَ بَعَثَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَهْطًا إِلَى أَبِي رَافِعٍ فَدَخَلَ عَلَيْهِ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَتِيكٍ بَيْتَهُ لَيْلًا وَهُوَ نَائِمٌ فَقَتَلَهُ فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَتِيكٍ: فَوَضَعْتُ السَّيْف فِي بَطْنه حَتَّى أَخذ فِي ظَهره فَعَرَفْتُ أَنِّي قَتَلْتُهُ فَجَعَلْتُ أَفْتَحُ الْأَبْوَابَ حَتَّى انْتَهَيْتُ إِلَى دَرَجَةٍ فَوَضَعْتُ رِجْلِي فَوَقَعْتُ فِي لَيْلَةٍ مُقْمِرَةٍ فَانْكَسَرَتْ سَاقِي فَعَصَبْتُهَا بِعِمَامَةٍ فَانْطَلَقْتُ إِلَى أَصْحَابِي فَانْتَهَيْتُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَحَدَّثْتُهُ فَقَالَ: «ابْسُطْ رِجْلَكَ» . فَبَسَطْتُ رِجْلِي فَمَسَحَهَا فَكَأَنَّمَا لَمْ أَشْتَكِهَا قَطُّ. رَوَاهُ البُخَارِيّ

5876. बराअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने चंद आदमियों को अबी राफीअ (यहूदी) की तरफ भेजा, अब्दुल्लाह बिन अतीक रदियल्लाहु अन्हु रात के वक़्त उस के घर में दाखिल हो गए और इसे क़त्ल कर दिया, अब्दुल्लाह बिन अतीक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने तलवार उस के पेट में उतार दी हत्ता कि वह उसकी पुश्त तक पहुँच गई, जब मुझे यकीन हो गया के मैंने इसे क़त्ल कर दिया है, तो मैं दरवाज़े खोलने लगा हत्ता कि में आखिरी ज़ीने तक पहुँच गया, मैंने अपना पाँव रखा और मैं गिर गया, चांदनी रात थी मेरी पिंडली टूट गई, मैंने इमामे के साथ उस पर पट्टी बाँधी, और मैं अपने साथियो के पास चला आया फिर मैं नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ और आप से पूरा वाकिया बयान किया, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "अपना पाँव फेलाओ", मैंने अपना पाँव फेलाया तो आप ने उस पर अपना दस्ते मुबारक फेरा तो वह ऐसे हो गया जैसे कभी उस में तकलीफ हुई ही न थी| (बुखारी)

رواه البخارى (3022)

٥٨٧٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن جَابر قا ل إِنَّا يَوْمَ الْخَنْدَقِ نَحْفِرُ فَعَرَضَتْ كُدْيَةٌ شَدِيدَةٌ فجاؤوا النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالُوا: هَذِهِ كُدْيَةٌ عَرَضَتْ فِي الْخَنْدَقِ فَقَالَ: «أَنَا نَازِلٌ» ثُمَّ قَامَ وَبَطْنُهُ مَعْصُوبٌ بِحَجَرٍ وَلَبِثْنَا ثَلَاثَةَ أَيَّام لانذوق ذوقا فَأَخَذَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمِعْوَلَ فَضَرَبَ فَعَادَ كَثِيبًا أَهْيَلَ فَانْكَفَأْتُ إِلَى امْرَأَتِي فَقُلْتُ: هَلْ عِنْدَكِ شَيْءٌ؟ فَإِنِّي رَأَيْتُ بِالنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَمْصًا شَدِيدًا فَأَخْرَجَتْ جراباً فِيهِ صاعٌ من شعير وَلنَا [ص:١٦٤ بَهْمَةٌ دَاجِنٌ فَذَبَحْتُهَا وَطَحَنَتِ الشَّعِيرَ حَتَّى جَعَلْنَا اللَّحْمَ فِي الْبُرْمَةِ ثُمَّ جِئْتُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم فساررتُه فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ ذَبَحْنَا بُهَيْمَةً لَنَا وَطَحَنْتُ صَاعًا مِنْ شَعِيرٍ فَتَعَالَ أَنْتَ وَنَفَرٌ مَعَكَ فَصَاحَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا أهلَ الخَنْدَق إِن جَابِرا صَنَعَ سُوراً فَحَيَّ هَلًا بِكُمْ» فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تُنْزِلُنَّ بُرْمَتَكُمْ وَلَا تَخْبِزُنَّ عَجِينَكُمْ حَتَّى أَجِيءَ» . وَجَاءَ فَأَخْرَجْتُ لَهُ عَجِينًا فَبَصَقَ فِيهِ وَبَارَكَ ثُمَّ عَمَدَ إِلَى بُرمْتنا فبصقَ وَبَارك ثمَّ قَالَ «ادعِي خابزة فلتخبز معي وَاقْدَحِي مِنْ بُرْمَتِكُمْ وَلَا تُنْزِلُوهَا» وَهُمْ أَلْفٌ فَأُقْسَمَ بِاللَّهِ لَأَكَلُوا حَتَّى تَرَكُوهُ وَانْحَرَفُوا وَإِنَّ بُرْمَتَنَا لَتَغِطُّ كَمَا هِيَ وَإِنَّ عَجِينَنَا لَيُخْبَزُ كَمَا هُوَ. مُتَّفق عَلَيْهِ

5877. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम ग़ज़वा ए खंदक के मौके पर खंदक खोद रहे थे तो एक बहोत सख्त चट्टान निकल आई, सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया: खंदक में यह एक चट्टान निकल आई है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “(अच्छा) में उतरता हूँ” फिर आप खड़े हुए, इस वक़्त आप के पेट पर पत्थर बंधा हुआ था, तीन दिन गुज़र चुके थे और हमने कोई चीज़ चक कर भी नहीं देखी थी, नबी ﷺ ने कुदाल पकड़ कर मारी तो वह (चट्टान) ऐसी रेत की तरह हो गई जो आसानी से गिरती है, मैं अपने अहलिया के पास आया तो पूछा: क्या तुम्हारे पास कुछ (खाने को) है? क्योंकि मैंने नबी ﷺ को सख्त भूख के आलम में देखा है, उस ने एक थेली निकाली उस में एक साअ जो थे और हमारे पास बकरी का एक बच्चा था, मैंने इसे जिबह किया, जौ पिसे हत्ता कि हमने गोश्त को हंडिया में रखा, फिर मैं नबी ﷺ के पास आया और सरगोशी के अंदाज़ में अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हमने अपना बकरी का एक बच्चा जिबह किया है और एक साअ जो का आटा गुंधा है, लिहाज़ा आप तशरीफ़ लाए और कुछ साथियो को भी साथ ले चले, लेकिन नबी ﷺ ने ज़ोर से आवाज़ दी: “खंदक वालो! जाबिर ने खाने का इह्तेमाम किया है, आओ जल्दी करो”, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम मेरे आने तक ना अपनी हंडिया चूल्हे से उतारना न रोटी पकाना शुरू करना”, आप ﷺ तशरीफ़ लाए तो मैंने आप के सामने आटा निकाला, आप ने उस में अपना लुआब मिलाया और बरकत की दुआ की, फिर फ़रमाया: “रोटी पकाने वाली को बुलाओ वह तुम्हारे साथ रोटी पकाए और हंडिया से सालन निकालते रहो, लेकिन इसे चूल्हे से नीचे न उतारो”, वह एक हज़ार की तादाद में थे, मैं अल्लाह की क़सम! उठाता हूँ कि इन सब ने खा लिया हत्ता कि वह बच गया, और वह वापस चले गए, जबकि हमारी हंडिया पहले की तरह भरी हुई थी और आटे की रोटियां पहले की तरह पकाई जा रही थी| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (41014102) و مسلم (141 / 2039)، (5315)

٥٨٧٨ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَبِي قَتَادَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِعَمَّارٍ حِينَ يَحْفِرُ الْخَنْدَقَ فَجَعَلَ يَمْسَحُ رَأسه وَيَقُول: «بؤس بن سميَّة تقتلك الفئة الباغية» . رَوَاهُ مُسلم

5878. अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के खंदक खोदते वक़्त रसूलुल्लाह ﷺ ने अम्मार रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया, आप इस वक़्त उन के सर पर हाथ फेरा रहे थे और फरमा रहे थे: “सुमय्या के बेटे! तुझे तकालिफ का

सामने होगा और तुझे बाग़ी गिरोह शहीद करेगा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (71 ، 70 / 2915)، (7320 و 7321)

٥٨٧٩ - (صَحِيح) وَعَن»» سليمانَ بن صُرَد قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ أَجْلَى الْأَحْزَابَ عَنْهُ: «الْآنَ نَغْزُوهُمْ وَلَا يغزونا نَحن نسير إِلَيْهِم» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

5879. सुलेमान बिन सूरद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब गिरोह मूतफर्क हो गए तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अब हम इन पर चढ़ाई करेंगे, वह हम पर चढ़ाई न कर सकेंगे, अब हम उनकी तरफ पेश कदमी करेंगे”| (बुखारी)

رواه البخاری (40194110)

٥٨٨٠ - // (»» مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)»» وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: لَمَّا رَجَعَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ الخَنْدَق وضع السِّلَاحَ واغتسل أَتَاه جِبْرِيل وَهُوَ يَنْفُضُ رَأْسَهُ مِنَ الْغُبَارِ فَقَالَ قَدْ وَضَعْتَ السِّلَاحَ وَاللَّهِ مَا وَضَعْتُهُ اخْرُجْ إِلَيْهِمْ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَيْنَ فَأَشَارَ إِلَى بَنِي قُرَيْظَةَ فَخَرَجَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5880. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ खंदक से वापस आए, हथियार रख दिए और ग़ुस्ल फरमा लिया तो जिब्राइल अलैहिस्सलाम आप के पास तशरीफ़ लाए, वह अपने सर से गुबार झाड़ रहे थे, उन्होंने ने फ़रमाया: “आप ने हथियार उतार दिए है, अल्लाह की क़सम! मैंने अभी तक ज़ेबतीन (पहना हुआ) कर रखे है, उनकी तरफ चले”, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “कहाँ ?” उन्होंने बनू कुरैज़ा की तरफ इरशाद फ़रमाया चुनांचे नबी ﷺ उनकी तरफ रवाना हुए| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (4117) و مسلم (65 / 1769)، (4598)

٥٨٨١ - (صَحِيح) وَفِي»» رِوَايَةٍ لِلْبُخَارِيِّ قَالَ أَنَسٌ: كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى الْغُبَارِ سَاطِعًا فِي زُقَاقِ بَنِيَ غَنْمٍ موكبَ جِبْرِيل عَلَيْهِ السَّلَامُ حِينَ سَارَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى بني قُرَيْظَة

5881. सहीह बुखारी की रिवायत में है, अनस रदियल्लाहु अन्हु ने बयान किया, गोया में बनू गन्मी की गलियों में उठते हुई गुबार देख रहा हूँ जो जिब्राइल अलैहिस्सलाम के साथियो की वजह से उड़ रही थी, यह इस वक़्त हुआ जब रसूलुल्लाह ﷺ बनू कुरैज़ा की तरफ चले थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

رواه البخاری (4118)

٥٨٨٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ عَطِشَ النَّاسُ يَوْمَ الْحُدَيْبِيَةِ وَرَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَ يَدَيْهِ رِكْوَةٌ فَتَوَضَّأَ مِنْهَا ثُمَّ أَقْبَلَ النَّاسُ نَحْوَهُ قَالُوا: لَيْسَ عِنْدَنَا مَاءٌ نَتَوَضَّأُ بِهِ وَنَشْرَبُ إِلَّا مَا فِي رِكْوَتِكَ فَوضَعَ النبيُّ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم يَدَه فِي الرِّكْوَةِ فَجَعَلَ الْمَاءُ يَفُورُ مِنْ بَيْنِ أَصَابِعِهِ كَأَمْثَالِ الْعُيُونِ قَالَ فَشَرِبْنَا وَتَوَضَّأْنَا قِيلَ لِجَابِرٍ كَمْ كُنْتُمْ قَالَ لَوْ كُنَّا مِائَةَ أَلْفٍ لَكَفَانَا كُنَّا خَمْسَ عَشْرَةَ مِائَةً. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5882. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हुदैबिया के मौके पर सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन को प्यास लगी, जबकि रसूलुल्लाह ﷺ के सामने पानी का एक बर्तन था, आप ने उस से वुज़ू किया, फिर लोग आप की तरफ मुतवज्जे हुए, और अर्ज़ किया, हमारे पास पानी नहीं जिससे हम वुज़ू कर सके और पि सके, फ़क़त वही है जो आप की छागिल में है, नबी ﷺ ने अपना दस्ते मुबारक छागिल में रखा, और आप की उंगलियों से चश्मों की तरह पानी बहने लगा, रावी बयान करते हैं, हमने पानी पिया और वुज़ू किया, जाबिर से दरियाफ्त किया गया, इस वक़्त तुम्हारी तादाद कितनी थी? उन्होंने ने फ़रमाया: अगर हम एक लाख भी होते तब भी वह पानी हमें काफी होता, अलबत्ता हम इस वक़्त पन्द्रह सौ थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (4152) و مسلم (73 / 1856)، (4813)

٥٨٨٣ - (صَحِيح) وَعَن»» الْبَراء بن عَازِب قا ل: كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَرْبَعَ عَشْرَةَ مِائَةً يَوْمَ الْحُدَيْبِيَةِ وَالْحُدَيْبِيَةُ بِئْرٌ فَنَزَحْنَاهَا فَلَمْ نَتْرُكْ فِيهَا قَطْرَةً فَبَلَغَ النبيَّ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم فأتاهافجلس عَلَى شَفِيرِهَا ثُمَّ دَعَا بِإِنَاءٍ مِنْ مَاءٍ فَتَوَضَّأَ ثُمَّ مَضْمَضَ وَدَعَا ثُمَّ صَبَّهُ فِيهَا ثُمَّ قَالَ: دَعُوهَا سَاعَةً " فَأَرْوَوْا أَنْفُسَهُمْ وَرِكَابَهُمْ حَتَّى ارتحلوا. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

5883. बराअ बिन आजीब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हुदैबिया के रोज़ हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ चौदाह सौ की तादाद में थे, हुदैबिया एक कुंवा था, हमने उस से सारा पानी निकाल लिया था और उस में एक कतरे तक नहीं छोड़ा था, नबी ﷺ तक यह बात पहुंचे तो आप वहां तशरीफ़ लाए और उस के किनारे पर बैठ गए, फिर आप ने पानी का एक बर्तन मंगवाया, वुज़ू फ़रमाया, फिर कुल्ली की, दुआ की, फिर उस को इस (कुंवो) में उन्देल दीया, फिर फ़रमाया: “कुछ देर इसे रहने दो”, चुनांचे (इस के बाद) उन्होंने खुद पिया, अपने जानवरों को पिलाया और कुच करने तकिया (पीने, पिलाने का) सिलसिला जारी रहा| (बुखारी)

رواه البخاری (4150)

٥٨٨٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن عَوْف عَن أبي رَجَاء عَن عمر بن حُصَيْن قا ل: كُنَّا فِي سَفَرٍ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم فَاشْتَكَى إِلَيْهِ النَّاسُ مِنَ الْعَطَشِ فَنَزَلَ فَدَعَا فُلَانًا كَانَ يُسَمِّيهِ أَبُو رَجَاءٍ وَنَسِيَهُ عَوْفٌ وَدَعَا عَلِيًّا فَقَالَ: «اذْهَبَا فَابْتَغِيَا الْمَاءَ» . فَانْطَلَقَا فتلقيا امْرَأَة بَين مزادتين أَو سطحتين من مَاء فجاءا بهاإلى النَّبِي صلى الله عَلَيْهِ وَسلم فاستنزلوهاعن بَعِيرِهَا وَدَعَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِإِنَاءٍ فَفَرَّغَ فِيهِ مِنْ أَفْوَاهِ الْمَزَادَتَيْنِ وَنُودِيَ فِي النَّاسِ: اسْقُوا [ص:١٦٤ فَاسْتَقَوْا قَالَ: فَشَرِبْنَا عِطَاشًا أَرْبَعِينَ رَجُلًا حَتَّى رَوِينَا فَمَلَأْنَا كُلَّ قِرْبَةٍ مَعَنَا وَإِدَاوَةٍ وَايْمُ اللَّهِ لَقَدْ أَقْلَعَ عَنْهَا وإنَّهُ ليُخيّل إِلينا أنّها أشدُّ ملئةً مِنْهَا حِين ابْتَدَأَ. مُتَّفق عَلَيْهِ

5884. ऑफ रहिमहुल्लाह अबू रिजाअ से और वह इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: हम एक सफ़र में नबी ﷺ के साथ थे, लोगों ने आप से प्यास की शिकायत की, आप सवारी से नीचे उतरे, और आप ने फलां शख़्स को आवाज़ दी, अबू रिजाअ ने इस शख़्स का नाम लिया था लेकिन ऑफ उस का नाम भूल गए, और आप ने अली रदियल्लाहु अन्हु को भी बुलाया और फ़रमाया: “दोनों जाओ और पानी तलाश करो, वह दोनों गए और पानी की तलाश शुरू की, वह चलते गए हत्ता कि वह एक औरत से मिले जो पानी के दो मश्किज़े अपने ऊंट पर लटकाए हुए और खुद उन के दरमियान बैठ जा रही थी, वह दोनों इसे नबी ﷺ की खिदमत में ले आए, उन्होंने उस को उस के ऊंट से नीचे उतार लिया और नबी ﷺ ने एक बर्तन मंगवाया और दोनों मश्किजो के मुंह इस बर्तन में खोल दिए, और तमाम लोगों में एलान करा दिया गया के खुद भी पियो और जानवरों को भी पिलाओ, रावी बयान करते हैं, हम चालीस प्यासे आदमियों ने खूब सैर हो कर पानी पिया और हमने अपने तमाम मश्किज़े और बर्तन भी भर लिए, अल्लाह की क़सम! जब उन से पानी लेना बंद कर दिया तो हमें ऐसे महसूस हो रहा था के अब उनमें पानी पहले से भी ज़्यादा हैं| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (344) و مسلم (312 / 682)، (1563)

٥٨٨٥ - (صَحِيح) وَعَنْ»» جَابِرٍ قَالَ: سِرْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى نَزَلْنَا وَادِيًا أَفْيَحَ فَذَهَبَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقْضِي حَاجَتَهُ فَلَمْ يَرَ شَيْئًا يَسْتَتِرُ بِهِ وَإِذَا شَجَرَتَيْنِ بِشَاطِئِ الْوَادِي فَانْطَلَقَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى إِحْدَاهُمَا فَأَخَذَ بِغُصْنٍ مِنْ أَغْصَانِهَا فَقَالَ انْقَادِي عَلَيَّ بِإِذْنِ اللَّهِ فَانْقَادَتْ مَعَهُ كَالْبَعِيرِ الْمَخْشُوشِ الَّذِي يُصَانِعُ قَائِدَهُ حَتَّى أَتَى الشَّجَرَةَ الْأُخْرَى فَأَخَذَ بِغُصْنٍ مِنْ أَغْصَانِهَا فَقَالَ انْقَادِي عَلَيَّ بِإِذْنِ اللَّهِ فَانْقَادَتْ مَعَهُ كَذَلِكَ حَتَّى إِذَا كَانَ بِالْمَنْصَفِ مِمَّا بَيْنَهُمَا قَالَ الْتَئِمَا عَلَيَّ بِإِذْنِ اللَّهِ فَالْتَأَمَتَا فَجَلَسْتُ أُحَدِّثُ نَفْسِي فَحَانَتْ مِنِّي لفتة فَإِذَا أَنَا بِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُقْبِلًا وَإِذَا الشَّجَرَتَيْنِ قَدِ افْتَرَقَتَا فَقَامَتْ كُلُّ وَاحِدَةٍ مِنْهُمَا عَلَى سَاقٍ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

5885. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम एक सफ़र मैं रसूलुल्लाह ﷺ के हमराह थे हत्ता कि हमने एक वसीअ वादी में पड़ाव किया तो रसूलुल्लाह ﷺ कजाए हाजत के लिए तशरीफ़ ले गए, आप ने ओट के लिए कोई चीज़ न देखी अलबत्ता वादी के किनारे पर दो दरख्त देखे, रसूलुल्लाह ﷺ उनमें से एक की तरफ चल दिए, और उसकी एक शाख पकड़ कर फ़रमाया: “अल्लाह के हुक्म से मुझ पर परदा कर”, चुनांचे उस ने नकिल दिए हुए ऊंट की तरह झुक कर आप के ऊपर परदा किया, जिस तरह वह अपने सरदार की इताअत करता है, फिर आप ﷺ दूसरे दरख्त के पास गए और उसकी एक शाख को पकड़ कर फ़रमाया: “अल्लाह के हुक्म से मुझ पर परदा कर”, वह भी इसी तरह आप पर झुक गया, हत्ता कि जब वह दोनों आधे फासले पर पहुँच गई तो फ़रमाया: “अल्लाह के हुक्म से मुझ पर साया कर दो”, चुनांचे वह दोनों करीब हो गए (हत्ता के आप कजाए हाजत से फारिग़ हो गए) में बैठा अपने दिल में सोच रहा था के इतने में अचानक रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ ले आए, और मैंने दोनों दरख्तों को देखा के वह अलग अलग हो गए और हर एक अपने तने पर खड़ा हो गया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (74 / 3012)، (7518)

٥٨٨٦ - (صَحِيح) عَن»» يَزِيدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ قَالَ: رَأَيْتُ أَثَرَ ضَرْبَةٍ فِي سَاقِ سَلَمَةَ بْنِ الْأَكْوَعِ فَقُلْتُ يَا أَبَا مُسلم مَا هَذِه الضَّربةُ؟ فَقَالَ: هَذِه ضَرْبَةٌ أَصَابَتْنِي يَوْمَ خَيْبَرَ فَقَالَ النَّاسُ أُصِيبَ سَلَمَةُ فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَنَفَثَ فِيهِ ثَلَاثَ نَفَثَاتٍ فَمَا اشْتَكَيْتُهَا حَتَّى السَّاعَة. رَوَاهُ البُخَارِيّ

5886. यज़ीद बिन अबी उबैद रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने सलमा बिन अकवा रदियल्लाहु अन्हु की पिंडली पर चोट का निशान देखा तो मैंने कहा: अबू मुस्लिम! यह चोट कैसी है? उन्होंने ने फ़रमाया: यह चोट मुझे गज़वा ए खैबर के मौके पर लगी थी, लोगों ने तो कह दिया था: सलमा रदियल्लाहु अन्हु शहीद हो गए, मैं नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो आप ने वहां तीन बार दम किया और फिर आज तक मुझे उसकी कोई शिकायत नहीं हुई| (बुखारी)

رواه البخاری (4206)

٥٨٨٧ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَنَسٍ قَالَ نَعَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ زَيْدًا وَجَعْفَرًا وَابْنَ رَوَاحَةَ لِلنَّاسِ [ص:١٦٤ قَبْلَ أَن يَأْتِيهِ خَبَرُهُمْ فَقَالَ أَخَذَ الرَّايَةَ زِيدٌ فَأُصِيبَ ثُمَّ أَخَذَ جَعْفَرٌ فَأُصِيبَ ثُمَّ أَخَذَ ابْنُ رَوَاحَةَ فَأُصِيبَ وَعَيْنَاهُ تَذْرِفَانِ حَتَّى أَخَذَ الرَّايَةَ سَيْفٌ من سيوف الله حَتَّى فتح الله عَلَيْهِم. رَوَاهُ البُخَارِيّ

5887. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने ज़ैद जाफर और इब्ने रवाहा रदियल्लाहु अन्हु की खबर शहादत आने से पहले ही उनकी शहादत के मुतल्लिक लोगों को बता दिया था, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ज़ैद ने झंडा थाम लिया और वह शहीद कर दिए गए, फिर जाफर ने थाम लिया वह भी शहीद कर दिए गए फिर इब्ने रवाहा ने थाम लिया तो वह भी शहीद कर दिए गए”, इस वक़्त आप की आंखो से आंसू रवाह थे.” हत्ता कि अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार यानी खालिद बिन वलीद ने झंडा थाम लिया और अल्लाह ने उन्हें फतह दी है”| (बुखारी)

رواه البخاری (4262)

٥٨٨٨ - (صَحِيح) وَعَن»» عَبَّاسٍ قَالَ: شَهِدْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ حُنَيْنٍ فَلَمَّا الْتَقَى الْمُسْلِمُونَ وَالْكُفَّارُ وَلَّى الْمُسْلِمُونَ مُدْبِرِينَ فَطَفِقَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْكُضُ بَغْلَتَهُ قِبَلَ الْكُفَّارِ وَأَنَا آخِذٌ بِلِجَامِ بَغْلَةَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَكُفُّهَا إِرَادَةَ أَن لَا تسرع وَأَبُو سُفْيَان آخِذٌ بِرِكَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَيْ عَبَّاسُ نَادِ أَصْحَابَ السَّمُرَةِ فَقَالَ عَبَّاسٌ وَكَانَ رَجُلًا صَيِّتًا فَقُلْتُ بِأَعْلَى صَوْتِي أَيْنَ أَصْحَابُ السَّمُرَةِ فَقَالَ وَاللَّهِ لَكَأَنَّ عَطْفَتَهُمْ حِينَ سَمِعُوا صَوْتِي عَطْفَةُ الْبَقَرِ عَلَى أَوْلَادِهَا فَقَالُوا يَا لَبَّيْكَ يَا لَبَّيْكَ قَالَ فَاقْتَتَلُوا وَالْكُفَّارَ وَالدَّعْوَةُ فِي الْأَنْصَارِ يَقُولُونَ يَا مَعْشَرَ الْأَنْصَارِ يَا مَعْشَرَ الْأَنْصَارِ قَالَ ثُمَّ قُصِرَتِ الدَّعْوَةُ عَلَى بَنِي الْحَارِثِ بْنِ الْخَزْرَجِ فَنَظَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ عَلَى بَغْلَتِهِ كَالْمُتَطَاوِلِ عَلَيْهَا إِلَى قِتَالِهِمْ فَقَالَ حِينَ حَمِيَ الْوَطِيسُ ثُمَّ أَخَذَ حَصَيَاتٍ فَرَمَى بِهِنَّ وُجُوهَ الْكُفَّارِ ثُمَّ قَالَ انْهَزَمُوا وَرَبِّ مُحَمَّدٍ فَوَاللَّهِ مَا هُوَ إِلَّا أَنْ رَمَاهُمْ بِحَصَيَاتِهِ فَمَا زِلْتُ أَرَى حَدَّهُمْ كَلِيلًا وَأَمْرَهُمْ مُدبرا. رَوَاهُ مُسلم

5888. अब्बास रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, गज़वा ए हुनैन के मौके पर मैं रसूलुल्लाह ﷺ के साथ था, जब मुसलमानों और काफिरों का आमना सामना हुआ तो कुछ मुसलमान भाग खड़े हुए जबकि रसूलुल्लाह ﷺ अपने

खच्चर को कुफ्फार की तरफ भगा रहे थे और मैं रसूलुल्लाह ﷺ के खच्चर की लगाम थामे हुए था, मैं इस (खच्चर) को रोक रहा था के वह तेज़ न दोड़े जबकि अबू सुफियान बिन हारिस रसूलुल्लाह ﷺ की रकाब थामे हुए थे, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अब्बास! दरख्त (के नीचे बैते रिज़वान करने) वालो को आवा: दरख्त (के नीचे बैत करने) वाले कहाँ है? वह बयान करते हैं, अल्लाह की क़सम! जब उन्होंने मेरी आवाज़ सुनी तो वह इस तरह वापस आए जिस तरह गाय अपने औलाद के पास आती है, उन्होंने अर्ज़ किया, हम हाज़िर है! हम हाज़िर है! रावी बयान करते हैं, उन्होंने कुफ्फार से किताल किया जिस रोज़ अंसार का नारा या अंसार था, रावी बयान करते हैं, फिर यह नारा बनू हारिस बिन खजरज़ तक महदूद हो कर रह गया, रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने खच्चर पर से मैदाने जंग की तरफ देखा तो फ़रमाया: “अब मैदाने जंग गरम हो गया है”, फिर आप ने कंकरिया पकड़े और उन्हें काफिरों के चेहरो पर फेका, फिर फ़रमाया: “मुहम्मद के रब की क़सम! वह शिकस्त खोर देह है”, अल्लाह की क़सम! उनकी तरफ कंकरिया फेंकना ही उनकी शिकस्त का बाईस था, मैं इन की हदत, उनकी लड़ाई और उनकी तलवारों को कमज़ोर ही देखता रहा, और उन के मुआमले को ज़लील ही देखता रहा| (मुस्लिम)

رواه مسلم (76 / 1775)، (4612)

٥٨٨٩ - (صَحِيح) وَعَن»» أبي إِسْحَق قَالَ قَالَ رَجُلٌ لِلْبَرَاءِ يَا أَبَا عُمَارَةَ فَرَرْتُمْ يَوْمَ حُنَيْنٍ قَالَ لَا وَاللَّهِ مَا وَلِيُّ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَكِنْ خَرَجَ شُبَّانُ أَصْحَابِهِ لَيْسَ عَلَيْهِمْ كَثِيرُ سِلَاحٍ فَلَقَوْا قَوْمًا رُمَاةً لَا يَكَادُ يَسْقُطُ لَهُمْ سَهْمٌ فَرَشَقُوهُمْ رَشْقًا مَا يَكَادُونَ يُخْطِئُونَ فَأَقْبَلُوا هُنَاكَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَرَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى بَغْلَتِهِ [ص:١٦٥ الْبَيْضَاءِ وَأَبُو سُفْيَانَ بْنُ الْحَارِثِ يَقُودُهُ فَنَزَلَ وَاسْتَنْصَرَ وَقَالَ أَنَا النَّبِيُّ لَا كَذِبَ أَنَا ابْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبْ ثُمَّ صفهم. رَوَاهُ مُسلم. وللبخاري مَعْنَاهُ

5889. अबू इसहाक बयान करते हैं, किसी आदमी ने बराअ रदियल्लाहु अन्हु से कहा अबू उमारह! गज़वा ए हुनैन के मौके पर तुम लोग भाग गए थे? उन्होंने कहा: नहीं? अल्लाह की क़सम! रसूलुल्लाह ﷺ नहीं फिरे थे, लेकिन आप के सहाबा में से कुछ नोजवान, जिन के पास ज़्यादा अस्लिहा नहीं था, उनका सामना ऐसे माहिर तीर अन्दाज़ो से हुआ, जिन का कोई तीर खता नहीं जाता था, उन्होंने इन पर तीर बरसाए, वह रसूलुल्लाह ﷺ की तरफ आए, इस वक़्त रसूलुल्लाह ﷺ अपने सफ़ेद खच्चर पर सवार थे, और अबू सुफियान बिन हारिस आप के आगे थे, आप खच्चर से नीचे उतरे और अल्लाह से मदद तलब की, और आप ﷺ इस वक़्त फरमा रहे थे: “मैं नबी हूँ यह झूठ नहीं, मैं अब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूँ” फिर आप ने उनकी सफ बंदी फरमाई| (मुस्लिम)

رواه مسلم (78 / 1776)، (4615) و البخارى (2930)

٥٨٩٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَفِي رِوَايَةٍ لَهُمَا قَالَ الْبَرَاءُ كُنَّا وَاللَّهِ إِذَا احْمَرَّ الْبَأْسُ نَتَّقِي بِهِ وَإِنَّ الشُّجَاعَ مِنَّا لَلَّذِي يُحَاذِيهِ يَعْنِي النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم

5890. और सहीह बुखारी में इसी के हम मानी है, और सहीहैन की रिवायत में है, बराअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अल्लाह की क़सम! जब लड़ाई शिद्दत इख़्तियार कर जाती तो हम आप के ज़रिए बचाव करते थे और हम में से सबसे ज़्यादा शिजाअ वह था जो (मैदाने जंग में) नबी ﷺ के बराबर रहता| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (لم اجده) و مسلم (79 / 1776)، (4616)

٥٨٩١ - (صَحِيح) وَعَنْ»» سَلَمَةَ بْنِ الْأَكْوَعِ قَالَ غَزَوْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حُنَيْنًا فَوَلَّى صَحَابَةُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمَّا غَشُوا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَزَلَ عَنِ الْبَغْلَةِ ثُمَّ قَبَضَ قَبْضَةً مِنْ تُرَابٍ مِنَ الْأَرْضِ ثُمَّ اسْتَقْبَلَ بِهِ وُجُوهَهُمْ فَقَالَ شَاهَتِ الْوُجُوهُ فَمَا خَلَقَ اللَّهُ مِنْهُمْ إِنْسَانًا إِلَّا مَلَأَ عَيْنَيْهِ تُرَابًا بِتِلْكَ الْقَبْضَةِ فَوَلَّوْا مُدْبِرِينَ فَهَزَمَهُمْ الله عز وَجل وَقَسْمِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غنائمهم بَين الْمُسلمين رَوَاهُ مُسلم

5891. सलमा बिन अकवा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम गज़वा ए हुनैन मैं रसूलुल्लाह ﷺ के हमराह थे रसूलुल्लाह ﷺ के चंद सहाबा रदियल्लाहु अन्हु पीठ फेर गए, जब वह (काफिर) रसूलुल्लाह ﷺ पर हमलावर हुए तो आप खच्चर से नीचे उतरे और ज़मीन से मिट्टी की मुठ्ठी भरी, फिर इसे उन के चेहरो की तरफ फेंकते हुए फ़रमाया: “(इन के) चेहरे झुलसा जाए”, इस मुठ्ठी से उन तमाम इंसानों (काफिरों) की आँखे मिट्टी से भर गई और वह पीठ फेर कर भाग गए, अल्लाह ने उन्हें शिकस्त से दो चार कर दिया और रसूलुल्लाह ﷺ ने उन से हासिल होने वाला माले गनीमत मुसलमानों में तकसीम फ़रमाया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (81 / 1777)، (4619)

٥٨٩٢ - (صَحِيح) وَعَن»» أبي هريرةَ قَالَ شَهِدْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حُنَيْنًا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِرَجُلٍ مِمَّنْ مَعَهُ يَدَّعِي الْإِسْلَامَ هَذَا مِنْ أَهْلِ النَّارِ فَلَمَّا حَضَرَ الْقِتَالُ قَاتَلَ الرَّجُلُ مِنْ أَشَدِّ الْقِتَالِ وَكَثُرَتْ بِهِ الْجِرَاحُ فَجَاءَ رَجُلٌ فَقَالَ يَا رَسُولَ الله أَرأيتَ الَّذِي تحدثت أَنَّهُ مِنْ أَهْلِ النَّارِ قَدْ قَاتَلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ مِنْ أَشَدِّ الْقِتَالِ فَكَثُرَتْ بِهِ الْجِرَاحُ فَقَالَ أَمَّا إِنَّهُ مِنْ أَهْلِ النَّارِ فَكَادَ بَعْضُ النَّاسِ يَرْتَابُ فَبَيْنَمَا هُوَ عَلَى ذَلِكَ إِذْ وَجَدَ الرَّجُلُ أَلَمَ الْجِرَاحِ فَأَهْوَى بِيَدِهِ إِلَى كِنَانَتِهِ فَانْتَزَعَ سَهْمًا فَانْتَحَرَ بِهَا فَاشْتَدَّ رِجَالٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ صَدَّقَ اللَّهُ حَدِيثَكَ قَدِ انْتَحَرَ فُلَانٌ وَقَتَلَ نَفْسِهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّهُ أَكْبَرُ [ص:١٦٥ أَشْهَدُ أَنِّي عَبْدُ اللَّهِ وَرَسُولُهُ يَا بِلَالُ قُمْ فَأَذِّنْ لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ إِلَّا مُؤْمِنٌ وَإِنَّ اللَّهَ لَيُؤَيِّدُ هَذَا الدينَ بِالرجلِ الْفَاجِر. رَوَاهُ البُخَارِيّ

5892. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, गज़वा ए हुनैन में हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ शरीक थे, रसूलुल्लाह ﷺ ने एक ऐसे शख़्स के बारे में, जो आप के साथ था और मुसलमान होने का दावा करता था, फ़रमाया: “ये जहन्नुमियो में से है”, जब लड़ाई शुरू हुई तो वह शख़्स बहोत जिरात (जुर्रत) के साथ लड़ा और बहोत ज़्यादा ज़ख़्मी हो गया, एक आदमी आया और उस ने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मुझे बताइए के आप ने जिस शख़्स के बारे में फ़रमाया था के वह जहन्नुमियो में से है इस ने तो अल्लाह की राह में बहोत जिरात (जुर्रत) के साथ लड़ाई लड़ी है और उस ने बहोत ज़्यादा जख्म खाए है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “सुन लो! वह

जहन्नुमियो में से है", करीब था के बाज़ लोग शक व शुबा का शिकार हो जाते, वह आदमी अभी इसी कश्मकश मैं था के इस आदमी ने ज़ख्मो की तकलीफ महसूस की और अपने तरकशी की तरफ हाथ बढ़ाकर एक तीर निकाला और इसे अपने सीने में पेवश्त कर लिया, मुसलमान यह मंजर देख कर दौड़ते हुए रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में आए और अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! अल्लाह ने आप की बात सच कर दिखाई, फलां शख़्स ने अपने सीने में तीर पेवश्त कर के खुदकुशी कर ली है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर मैं गवाही देता हूँ की मैं अल्लाह का बंदा और उस का रसूल हूँ, बिलाल! खड़े हो कर एलान कर दो की जन्नत में सिर्फ मोमिन ही जाएँगे बेशक अल्लाह अपने दीन की मदद फ़ाजिर शख़्स से भी ले लेता है"| (बुखारी)

رواه البخاری (3062) [و مسلم (178 / 111)، (305)]

٥٨٩٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ سُحِرَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى إِنَّهُ لَيُخَيَّلُ إِلَيْهِ أَنَّهُ فَعَلَ الشَّيْءَ وَمَا فَعَلَهُ حَتَّى إِذا كَانَ ذَات يَوْم وَهُوَ عِنْدِي دَعَا اللَّهَ وَدَعَاهُ ثُمَّ قَالَ أَشَعَرْتِ يَا عَائِشَةُ أَنَّ اللَّهَ قَدْ أَفْتَانِي فِيمَا استفتيته جَاءَنِي رجلَانِ فَجَلَسَ أَحَدُهُمَا عِنْدَ رَأْسِي وَالْآخَرُ عِنْدَ رِجْلِي ثُمَّ قَالَ أَحَدُهُمَا لِصَاحِبِهِ مَا وَجَعُ الرَّجُلِ قَالَ مَطْبُوبٌ قَالَ وَمَنْ طَبَّهُ قَالَ لَبِيدُ بْنُ الْأَعْصَمِ الْيَهُودِيُّ قَالَ فِي مَاذَا قَالَ فِي مُشْطٍ وَمُشَاطَةٍ وَجُفِّ طَلْعَةِ ذَكَرٍ قَالَ فَأَيْنَ هُوَ قَالَ فِي بِئْرِ ذَرْوَانَ فَذَهَبَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي أُنَاسٍ مِنْ أَصْحَابِهِ إِلَى الْبِئْرِ فَقَالَ هَذِهِ [ص:١٦٥ الْبِئْرُ الَّتِي أُرِيتها وَكَأن ماءَها نُقاعةُ الْحِنَّاء ولكأن نخلها رُءُوس الشَّيَاطِين فاستخرجه مُتَّفق عَلَيْهِ

5893. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ पर जादू कर दिया गया हत्ता कि आप को ख़याल गुज़रता के आप ने कोई काम कर लिया है हालांकि आप ने इसे नहीं किया होता था, हत्ता कि एक रोज़ आप मेरे वहां तशरीफ़ फरमा थे, आप अल्लाह से बार बार दुआ कर रहे थे, फिर फ़रमाया: "आइशा! क्या तुम्हें मालुम है के मैंने जिस चीज़ के बारे में अल्लाह से सवाल किया था उस ने वह चीज़ मुझे दे दिया है: दो आदमी मेरे पास आए, उनमें से एक मेरे सिरहाने बैठ गया और दूसरा मेरे पाँव के पास, फिर उनमें से एक ने अपने साथी से कहा: उन्हें क्या तकलीफ है? उस ने कहा: इन पर जादू किया गया है, उस ने पूछा: इन पर किस ने जादू किया है? उस ने कहा लबीद बिन अअसम यहूदी ने, उस ने कहा किसी चीज़ में? उस ने कहा: कंघी और बालों में और नर खजूर के खोशे में है, उस ने पूछा: वह कहाँ है? उस ने कहा: ज़रान के कुंवो में", चुनांचे नबी ﷺ अपने चंद सहाबा रदियल्लाहु अन्हु के साथ इस कुंवे पर तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया: "ये वह कुंवा है जो मुझे दिखाया गया है, और उस का पानी महंदी के अर्क जैसे है और उस के खजूर के दरख्त शैतान के सरो जैसे है", पस आप ﷺ ने इसे निकलवा दीया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3268) و مسلم (43 / 2189)، (5703)

٥٨٩٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ بَيْنَمَا نَحْنُ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يَقْسِمُ قَسْمًا أَتَاهُ ذُو الْخُوَيْصِرَة وَهُوَ رجلٌ من بني تَمِيم فَقَالَ يَا رسولَ الله اعْدِلْ فَقَالَ وَيلك وَمن يَعْدِلُ إِذَا لَمْ أَعْدِلْ قَدْ خِبْتَ وَخَسِرْتَ إِن لم أكن أعدل فَقَالَ عمر لَهُ ائْذَنْ لي أَضْرب عُنُقه فَقَالَ دَعْهُ فَإِنَّ لَهُ أَصْحَابًا يَحْقِرُ أَحَدُكُمْ صَلَاتَهُ مَعَ صَلَاتِهِمْ وَصِيَامَهُ مَعَ صِيَامِهِمْ يَقْرَءُونَ الْقُرْآنَ لَا يُجَاوِزُ تَرَاقِيَهُمْ يَمْرُقُونَ مِنَ الدِّينِ كَمَا يَمْرُقُ السَّهْمُ مِنَ الرَّمِيَّةِ يُنْظَرُ إِلَى

نَصْلِهِ إِلَى رُصَافِهِ إِلَى نَضِيِّهِ وَهُوَ قِدْحُهُ إِلَى قُذَذِهِ فَلَا يُوجَدُ فِيهِ شَيْءٌ قَدْ سَبَقَ الْفَرْثَ وَالدَّمَ آيَتُهُمْ رَجُلٌ أَسْوَدُ إِحْدَى عَضُدَيْهِ مِثْلُ [ص:١٦٥ ثَدْيِ الْمَرْأَةِ أَوْ مِثْلُ الْبَضْعَةِ تَدَرْدَرُ وَيخرجُونَ على حِين فِرْقَةٍ مِنَ النَّاسِ قَالَ أَبُو سَعِيدٍ أَشْهَدُ أَنِّي سَمِعْتُ هَذَا الْحَدِيثَ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَشْهَدُ أَنَّ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ قَاتَلَهُمْ وَأَنَا مَعَهُ فَأَمَرَ بذلك الرجل فالْتُمِسَ فَأُتِيَ بِهِ حَتَّى نَظَرْتُ إِلَيْهِ عَلَى نَعْتِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الَّذِي نَعَتَهُ»» وَفِي رِوَايَةٍ: أَقْبَلَ رَجُلٌ غَائِرُ الْعَيْنَيْنِ نَاتِئُ الجبين كَثُّ اللِّحْيَةِ مُشْرِفُ الْوَجْنَتَيْنِ مَحْلُوقُ الرَّأْسِ فَقَالَ يَا مُحَمَّد اتَّقِ الله فَقَالَ: «فَمن يُطِيع اللَّهَ إِذَا عَصَيْتُهُ فَيَأْمَنُنِي اللَّهُ عَلَى أَهْلِ الْأَرْضِ وَلَا تَأْمَنُونِي» فَسَأَلَ رَجُلٌ قَتْلَهُ فَمَنَعَهُ فَلَمَّا وَلَّى قَالَ: «إِنَّ مِنْ ضِئْضِئِ هَذَا قَوْمًا يَقْرَءُونَ الْقُرْآنَ لَا يُجَاوِزُ حَنَاجِرَهُمْ يَمْرُقُونَ من الإسلام مروق السهْم من الرَّمية يقتلُون أَهْلَ الْإِسْلَامِ وَيَدَعُونَ أَهْلَ الْأَوْثَانِ لَئِنْ أَدْرَكْتُهُمْ لأقتلنهم قتل عَاد» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5894. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर थे और रसूलुल्लाह ﷺ माले गनीमत तकसीम फरमा रहे थे, इतने में बनू तमीम कबिले से ज़ुल्खसिरा नामी शख़्स आया और उस ने कहा: अल्लाह के रसूल! इंसाफ करे, आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुझ पर अफ़सोस! अगर में अदल नहीं करूँगा तो फिर और कौन अदल करेगा, अगर में अदल न करू तो मैं भी खाइब व खासिर हो जाऊं", उमर रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, मुझे इजाज़त फरमाइए की मैं उसकी गर्दन मार दूँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: "इसे छोड़ दो की उस के कुछ साथी होंगे तुम में से कोई अपने नमाज़ को उनकी नमाज़ के मुकाबले में, अपने रोज़े उन के रोज़ो के मुकाबले में मामूली समझेगा, वह कुरान पढेंगे लेकिन वह उन के हलक से नीचे नहीं उतरेगा, वह दीन से इस तरह निकल जाएँगे जिस तरह तीर शिकार से पार हो जाता है, इस (तीर) के नोक उस केपुश्त पर जो के नोक पर लपेटा जाता है और तीर के इस हिस्से को जो के पर और नोक के दरमियान होता है जो देखा जाए तो उस पर कोई निशान नज़र नहीं आएगा, हालाँकि वह (तीर) गोबर और खून में से गुज़रा है, उनकी निशानिया यह है कि एक सियाह फाम शख़्स है उस का एक बाज़ू औरत के पिस्तान की तरह (उठा हुआ) होगा या हिलते हुए गोश्त के टुकड़े की तरह होगा, और वह लोगों के बेहतरीन गिरोह के खिलाफ बग़ावत करेंगे", अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: मैं गवाही देता हूँ कि मैंने यह हदीस रसूलुल्लाह ﷺ से सुनी है, और मैं गवाही देता हूँ कि अली बिन अबी तालिब रदियल्लाहु अन्हु ने उन से लड़ाई लड़ी है और मैं अली रदियल्लाहु अन्हु के साथ था, इस शख़्स के मुतल्लिक हुक्म दिया गया तो उसे तलाश किया गया और इसे लाया गया हत्ता कि मैंने इसे देखा तो उस का पूरा हुलिया बिलकुल इसी तरह था, जिस तरह नबी ﷺ ने उस का हुलिया बयान किया था| एक दूसरी रिवायत में है, एक आदमी आया उसकी आँखे धंसी हुई थी, पेशानी उभरी हुई थी, दाढ़ी घनी थी, गाले फूली हुई थी, सर मुंडा हुआ था, उस ने कहा मुहम्मद अल्लाह से डर जाए, आप ﷺ ने फ़रमाया: "अगर में अल्लाह की नाफ़रमानी करूँगा तो फिर और कौन उन से डरेगा, अल्लाह ने ज़मीन वालो पर मुझे अमिन बना कर भेजा है ,जबकि तुम मुझे अमिन नहीं समझते हो", एक आदमी ने इसे क़त्ल करने की दरख्वास्त की तो आप ﷺ ने इसे रोक दिया, जब वह वापस गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "इस शख़्स नसब से कुछ ऐसे लोग पैदा होंगे जो कुरान पढेंगे लेकिन वह उन के हलक से नीचे नहीं उतरेगा, वह इस्लाम से इस तरह ख़ारिज हो जाएँगे जिस तरह तीर शिकार से पार हो जाता है, वह अहले इस्लाम को क़त्ल करेंगे और बुत परस्तो को छोड़ देंगे अगर मैंने उन्हें पा लिया तो मैं उन्हें कौम ए आद की तरह क़त्ल करूँगा"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3344) و مسلم (143 / 1064)، (2451)

٥٨٩٥ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ كُنْتُ أَدْعُو أُمِّي إِلَى الْإِسْلَامِ وَهِيَ مُشْرِكَةٌ فَدَعَوْتُهَا يَوْمًا فَأَسْمَعَتْنِي فِي رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا أكره فَأَتَيْتُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنَا أَبْكِي قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ: ادْعُ اللَّهَ أَنْ يَهْدِيَ أُمَّ أَبِي هُرَيْرَةَ فَقَالَ: «اللَّهُمَّ اهْدِ أُمَّ أَبِي هُرَيْرَةَ» . فَخَرَجْتُ مُسْتَبْشِرًا بِدَعْوَةِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمَّا صِرْتُ إِلَى الْبَابِ فَإِذَا هُوَ مُجَافٍ فَسَمِعَتْ أُمِّي خَشْفَ قَدَمَيَّ فَقَالَتْ مَكَانَكَ يَا أَبَا هُرَيْرَة وَسمعت خضخضة المَاء قَالَ فَاغْتَسَلَتْ فَلَبِسَتْ دِرْعَهَا وَعَجِلَتْ عَنْ خِمَارِهَا فَفَتَحَتِ الْبَابَ ثُمَّ قَالَتْ يَا أَبَا [ص:١٦٥ هُرَيْرَةَ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ فَرَجَعْتُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنَا أَبْكِي مِنَ الْفَرح فَحَمدَ الله وَأثْنى عَلَيْهِ وَقَالَ خيرا. رَوَاهُ مُسلم

5895. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं अपने मुशरिक वालिदा को इस्लाम की दावत पेश करता था, एक रोज़ मैंने इसे दावत पेश की तो इस ने रसूलुल्लाह ﷺ की शान में कुछ ऐसे अल्फाज़ कहे जो मुझे नागवार गुज़रे, मैं रोता हुआ रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! अल्लाह से दुआ फरमाइए के वह अबू हुरैरा की वालिदा को हिदायत नसीब फरमादे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ए अल्लाह! अबू हुरैरा की वालिदा को हिदायत अता फरमा”, मैं नबी ﷺ की दुआ पर खुश होता हुआ वहां से चला जब में दरवाज़े पर पहुंचा तो वह बंद था, मेरी वालिद ने मेरे कदमो की आहट सुन कर फ़रमाया: अबू हुरैरा अपनी जगह पर ठहर जाओ, मैंने पानी गिरने की आवाज़ सुन ली थी, उन्होंने ग़ुस्ल किया, अपनी कमीज़ पहनी, और जल्दबाज़ी में चादर भी न ली और दरवाज़ा खोल कर फ़रमाया: अबू हुरैरा में गवाही देती हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं और मैं गवाही देती हूँ कि मुहम्मद ﷺ उस के बंदे और उस के रसूल हैं, मैं ख़ुशी के आंसू बहाता हुआ रसूलुल्लाह ﷺ के पास वापस आया, आप ﷺ ने अल्लाह का शुक्र अदा किया और दुआएं खैर फरमाई| (मुस्लिम)

رواه مسلم (158 / 2491)، (6396)

٥٨٩٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعنهُ إِنَّكُمْ تَقُولُونَ أَكْثَرَ أَبُو هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاللَّهُ الْمَوْعِدُ وَإِنَّ إِخْوَتِي مِنَ الْمُهَاجِرِينَ كَانَ يَشْغَلُهُمُ الصَّفْقُ بِالْأَسْوَاقِ وَإِنَّ إِخْوَتِي مِنَ الْأَنْصَارِ كَانَ يَشْغَلُهُمْ عَمَلُ أَمْوَالِهِمْ وَكُنْتُ امْرَأً مِسْكِينًا أَلْزَمُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى مَلْءِ بَطْنِي وَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمًا: «لَنْ يَبْسُطَ أَحَدٌ مِنْكُمْ ثَوْبَهُ حَتَّى أَقْضِيَ مَقَالَتِي هَذِهِ ثُمَّ يَجْمَعَهُ إِلَى صَدْرِهِ فَيَنْسَى مِنْ مَقَالَتِي شَيْئًا أَبَدًا» فَبَسَطْتُ نَمِرَةً لَيْسَ عَلَيَّ ثَوْبٌ غَيْرَهَا حَتَّى قَضَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَقَالَتَهُ ثُمَّ جَمَعْتُهَا إِلَى صَدْرِي فَوَالَّذِي بَعَثَهُ بِالْحَقِّ مَا نَسِيتُ مِنْ مقَالَته تِلْكَ إِلَى يومي هَذَا. مُتَّفق عَلَيْهِ

5896. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, तुम लोग कहते हो के अबू हुरैरा, नबी ﷺ से बहोत ज़्यादा अहादीस बयान करता है, अल्लाह की क़सम! एक दिन अल्लाह के पास जाना है, मेरे मुहाजर भाई बाज़ारों में खरीद व फरोख्त फरोख्त में मशगुल रहा करते थे और मेरे अंसार भाई अपने अमवाल (खेतो और बाग़ात) में मशगुल रहा करते थे, मैं एक मिस्किन आदमी था, मैं अपना पेट भरने के बाद फिर रसूलुल्लाह ﷺ के साथ रहता, एक रोज़ नबी ﷺ ने फ़रमाया: “तुम में से जो शख़्स मेरी इस गुफ्तगू के पूरा होने तक कपड़ा बिछाए रखेगा, फिर इसे अपने सीने के साथ लगा लेगा तो वह मेरे फरामिन में से कुछ भी नहीं भूलेगा”, मैंने धारी दार चादर बिछा दिया उस के अलावा मेरे पास कोई और

कपड़ा नहीं होता था, नबी ﷺ ने जब अपने गुफ्तगू मुकम्मल फरमाई तो मैंने चादर को अपने सीने के साथ लगा लिया, उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को हक़ के साथ मबउस फ़रमाया! मैं इस रोज़ से आज तक आप ﷺ के फरामिन से कुछ नहीं भुला| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2350) و مسلم (160 ، 159 / 2492)، (6397 و 6399)

٥٨٩٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَلَا تُرِيحُنِي مِنْ ذِي الْخَلَصَةِ؟» فَقُلْتُ: بَلَى وَكُنْتُ لَا أَثْبُتُ عَلَى الْخَيْلِ فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَضَرَبَ يَدَهُ عَلَى صَدْرِي حَتَّى رَأَيْتُ أَثَرَ يَدِهِ فِي صَدْرِي وَقَالَ: «اللَّهُمَّ ثَبِّتْهُ وَاجْعَلْهُ هَادِيًا مَهْدِيًّا» . قَالَ فَمَا وَقَعْتُ عَنْ فَرَسِي بَعْدُ فَانْطَلَقَ فِي مِائَةٍ وَخَمْسِينَ فَارِسًا مِنْ أحمس فحرقها بالنَّار وَكسرهَا. مُتَّفق عَلَيْهِ

5897. जरीर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “क्या तुम मुझे ज़ुलखलस्त (बत) से आराम नहीं पहुंचाते ?” मैंने अर्ज़ किया: क्यों नहीं, ज़रू,र लेकिन में घोड़े की सवारी अच्छी तरह नहीं कर पाता था, मैंने नबी ﷺ से इस का ज़िक्र किया तो आप ने अपना हाथ मेरे सिने पर मारा हत्ता कि मैंने आप के हाथ के असरात अपने सीने में महसूस किए, और आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह उस को (घोड़े की पुश्त पर) तबात अता फरमा, इसे हिदायत की राहे खाने वाला और हिदायत याफ्ता बना”, वह बयान करते हैं, उस के बाद में अपने घोड़े से नहीं गिरा, वह अहमस कबिले के डेढ़ सौ घोड़ा सवारों के साथ रवाना हुए और इसे आग के साथ जला दिया और इसे तोड़ दिया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (4357) و مسلم (137 ، 136 / 2476)، (6365 و 6366)

٥٨٩٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: إِنَّ رَجُلًا كَانَ يَكْتُبُ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَارْتَدَّ عَنِ الْإِسْلَامِ وَلَحِقَ بِالْمُشْرِكِينَ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الْأَرْضَ لَا تَقْبَلُهُ» . فَأَخْبَرَنِي أَبُو طَلْحَةَ أَنَّهُ أَتَى الْأَرْضَ الَّتِي مَاتَ فِيهَا فَوَجَدَهُ مَنْبُوذًا فَقَالَ: مَا شَأْنُ هَذَا؟ فَقَالُوا: دَفَنَّاهُ مِرَارًا فَلَمْ تَقْبَلْهُ الأَرْض. مُتَّفق عَلَيْهِ

5898. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि एक आदमी नबी ﷺ के लिए (वही) लिखा करता था, वह इस्लाम से मुरतद हो कर मुशरिकीन से जा मिला तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: “ज़मीन इसे कबूल नहीं करेगी”, अबू तल्हा रदियल्लाहु अन्हु ने मुझे बताया के वह शख़्स जिस जगह फौत हुआ था वह वहां गई तो उन्होंने इसे सतह ज़मीन पर पड़ा हुआ देखा तो पूछा उस का क्या मुआमला है? उन्होंने बताया की हमने इसे कई मर्तबा दफन किया मगर ज़मीन (कब्र) इसे कबूल नहीं करती| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3617) و مسلم (14 / 2781)، (7040)

٥٨٩٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أبي أَيُّوب قا ل: خَرَجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَدْ وَجَبَتِ الشَّمْسُ فَسَمِعَ صَوْتًا فَقَالَ: «يَهُودُ تُعَذَّبَ فِي قبورها» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5899. अबू अय्यूब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ बाहर तशरीफ़ लाए इस वक़्त सूरज गुरूब हो चूका था, आप ने एक आवाज़ सुनी तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “यहूदियों को उनकी क़बरो में अज़ाब दीया जा रहा है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1375) و مسلم (69 / 2869)، (7215)

٥٩٠٠ - (صَحِيح) وَعَن»» جَابر قا ل: قَدِمَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ سَفَرٍ فَلَمَّا كَانَ قُرْبَ الْمَدِينَةِ هَاجَتْ رِيحٌ تَكَادُ أَنْ تَدْفِنَ الرَّاكِبَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «بُعِثَتْ هَذِهِ الرِّيحُ لِمَوْتِ مُنَافِقٍ» . فَقَدِمَ الْمَدِينَةَ فَإِذَا عَظِيمٌ مِنَ الْمُنَافِقين قد مَاتَ. رَوَاهُ مُسلم

5900. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ एक सफ़र से वापस तशरीफ़ लाए, जब आप मदीना के करीब पहुंचे तो ऐसी तेज़ हवा चली, करीब था के वह सवार को छिपा देती, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ये हवा किसी मुनाफ़िक़ की मौत के वक़्त चलाई गई है”, आप मदीना पहुंचे तो मुनाफिको का एक बड़ा आदमी फौत हो चूका था| (मुस्लिम)

رواه مسلم (15 / 2782)، (7041)

٥٩٠١ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى قَدِمْنَا عُسْفَانَ فَأَقَامَ بِهَا لَيَالِيَ فَقَالَ النَّاس: مَا نَحن هَهُنَا فِي شَيْءٍ وَإِنَّ عِيَالَنَا لَخُلُوفٌ مَا نَأْمَنُ عَلَيْهِمْ فَبَلَغَ ذَلِكَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ مَا فِي الْمَدِينَةِ شِعْبٌ وَلَا نَقْبٌ [ص:١٦٥ إِلَّا عَلَيْهِ مَلَكَانِ يَحْرُسَانِهَا حَتَّى تَقْدَمُوا إِلَيْهَا» ثُمَّ قَالَ: «ارْتَحِلُوا» فَارْتَحَلْنَا وَأَقْبَلْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ فَوَالَّذِي يُحْلَفُ بِهِ مَا وَضَعْنَا رِحَالَنَا حِينَ دَخَلْنَا الْمَدِينَةَ حَتَّى أَغَارَ عَلَيْنَا بَنُو عَبْدِ اللَّهِ بْنِ غَطَفَانَ وَمَا يُهَيِّجُهُمْ قَبْلَ ذَلِكَ شَيْءٌ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

5901. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम नबी ﷺ के साथ रवाना हुए हत्ता कि हम उस्फान पहुंचे तो आप ने चंद रोज़ वहां कयाम फ़रमाया, तो बाज़ (मुनाफ़िक) लोगों ने कहा: यहाँ तो हम बिला मकसद ठहरे है, हमारे अहल व अयाल पीछे है, हमें उनका खतरा है, नबी ﷺ तक यह बात पहुंची तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! मदीना की हर घाटी और हर डेरे पर दो फ़रिश्ते पहरा दे रहे हैं, हत्ता कि तुम वहां वापस चले जाओ”, फिर फ़रमाया: “कुच करो”, हमने कुच किया और मदीना की तरफ वापस पलटे, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! जब हम मदीना में दाखिल हुए तो हमने अभी अपना सामान नहीं उतारा था

के बनू अब्दुल्लाह बिन ग्तफ़ान ने हम पर हमला कर दिया, उस से पहले कोई चीज़ उन्हें अमादा नहीं करती थी| (मुस्लिम)

رواه مسلم (475 / 1374)، (3336)

٥٩٠٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أنسٍ قَالَ أَصَابَت النَّاس سنَةٌ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَبَيْنَا النَّبِيُّ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم يخْطب فِي يَوْم جُمُعَة قَامَ أَعْرَابِيٌّ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ هَلَكَ الْمَالُ وَجَاعَ الْعِيَالُ فَادْعُ اللَّهَ لَنَا فَرَفَعَ يَدَيْهِ وَمَا نَرَى فِي السَّمَاءِ قَزَعَةً فَوَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ مَا وَضَعَهَا حَتَّى ثَارَ السَّحَابُ أَمْثَالَ الْجِبَالِ ثُمَّ لَمْ يَنْزِلْ عَنْ مِنْبَرِهِ حَتَّى رَأَيْت الْمَطَر يتحادر على لحيته صلى الله عَلَيْهِ وَسلم فمطرنا يَوْمنَا ذَلِك وَمن الْغَد وَبعد الْغَد وَالَّذِي يَلِيهِ حَتَّى الْجُمُعَةِ الْأُخْرَى وَقَامَ ذَلِكَ الْأَعْرَابِيُّ أَوْ قَالَ غَيْرُهُ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ تَهَدَّمَ الْبِنَاءُ وَغَرِقَ الْمَالُ فَادْعُ اللَّهَ لَنَا فَرَفَعَ يَدَيْهِ فَقَالَ اللَّهُمَّ حَوَالَيْنَا وَلَا عَلَيْنَا فَمَا يُشِيرُ بِيَدِهِ إِلَى نَاحِيَةٍ مِنَ السَّحَابِ إِلَّا انْفَرَجَتْ وَصَارَتِ الْمَدِينَةُ مِثْلَ الْجَوْبَةِ وَسَالَ الْوَادِي قَنَاةُ شَهْرًا وَلَمْ يَجِئْ أَحَدٌ مِنْ نَاحِيَةٍ إِلَّا حَدَّثَ بِالْجَوْدِ»» وَفِي رِوَايَةٍ قَالَ: «اللَّهُمَّ حَوَالَيْنَا وَلَا عَلَيْنَا اللَّهُمَّ عَلَى الْآكَامِ وَالظِّرَابِ وَبُطُونِ الْأَوْدِيَةِ وَمَنَابِتِ الشَّجَرِ» . قَالَ: فَأَقْلَعَتْ وَخَرَجْنَا نَمْشِي فِي الشّمسِ»» مُتَّفق عَلَيْهِ

5902. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के अहद में लोग कहत साली का शिकार हो गए, इस दौरान के नबी ﷺ खुत्बा ए जुमा इरशाद फरमा रहे थे, एक आराबी खड़ा हुआ और उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! माल मवेशी हलाक हो गए, बाल बच्चे भूख का शिकार हो गए, अल्लाह से हमारे लिए दुआ फरमाइए: आप ने हाथ बुलंद फरमाए, इस वक़्त हम आसमान पर बादल का टुकड़ा तक नहीं देख रहे थे, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! आप ने अभी उन्हें नीचे नहीं किया था के पहाड़ो की तरह बादल छा गए, फिर आप अपने मिम्बर से नीचे नहीं उतरे थे की मैंने बारिश के कतरे आप की दाढ़ी मुबारक पर गिरते हुए देखे, इस रोज़ अगले रोज़ यहाँ तक के दूसरे जुमे तक बारिश होती रही, फिर दूसरे जुमा को वही आराबी या कोई और शख़्स खड़ा हुआ और उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मकान गिर गए, माल डूब गया, आप अल्लाह से हमारे लिए दुआ फरमाइए, आप ﷺ ने हाथ उठाए और दुआ फरमाई: “अल्लाह हमारे आस पास बारिश बरसा, हम पर न बरसा”, आप बादलो के जिस कोने की तरफ इरशाद फरमाते, तो इधर से बादल छट जाता और मदीना हौज़ की तरह बन चूका था, जबकि वादी किनात का नाला महीने भर बहता रहा, और मदीना के आस पा इसे जो भी आता वह खूब सेराबी की बात करता| एक दूसरी रिवायत में है आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह हमारे आस पास बारिश बरसा, हम पर न बरसा, ऐ अल्लाह! टीलो पर पहाड़ो पर जो वादियों में और दरख्तों के उगने की जगहों पर बारिश बरसा”, रावी बयान करते हैं, बारिश थम गई और हम निकले तो हम धुप में चल रहे थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (933) و مسلم (8 ، 9 / 897)، (2078)

٥٩٠٣ - (صَحِيح) وَعَنْ»» جَابِرٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا خَطَبَ اسْتَنَدَ إِلَى جِذْعِ نَخْلَةٍ مِنْ سَوَارِي الْمَسْجِدِ فَلَمَّا صُنِعَ لَهُ الْمِنْبَرُ فَاسْتَوَى عَلَيْهِ صَاحَتِ النَّخْلَةُ الَّتِي كَانَ يَخْطُبُ عِنْدَهَا حَتَّى كَادَت تَنْشَقَّ فَنَزَلَ النَّبِيُّ

صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى أَخَذَهَا فَضَمَّهَا إِلَيْهِ فَجَعَلَتْ تَئِنُّ [ص:١٦٥ أَنِينَ الصَّبِيِّ الَّذِي يُسَكَّتُ حَتَّى اسْتَقَرَّتْ قَالَ بَكَتْ عَلَى مَا كَانَتْ تَسْمَعُ مِنَ الذِّكْرِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

5903. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब नबी ﷺ खुत्बा इरशाद फरमाते, तो आप मस्जिद के सुतून में से खजूर के तने के साथ टेक लगाया करते थे, जब आप के लिए मिम्बर बना दिया गया तो आप उस पर खड़े हो गए, चुनांचे आप जिस खजूर के तने के पास खुत्बा इरशाद फ़रमाया करते थे वह चीखने चलाने लगा: हत्ता कि करीब था के वह फट जाता, नबी ﷺ (मिम्बर से) नीचे उतरे, इसे पकड़ा और इसे अपने साथ मिलाया तो वह इस बच्चे की तरह रोने लगा जिसे ख़ामोश कराया जाता है, हत्ता कि वह ख़ामोश हो गया, आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो जो ज़िक्र सुना करता था अब वह उस से महरूम हो गया है इस लिए वह रोया था”| (बुखारी)

رواه البخاری (2095)

٥٩٠٤ - (صَحِيح) وَعَن»» سَلمَة بن الْأَكْوَع أَنَّ رَجُلًا أَكَلَ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِشِمَالِهِ فَقَالَ: «كُلْ بِيَمِينِكَ» قَالَ: لاأستطيع. قَالَ «لَا اسْتَطَعْتَ» . مَا مَنَعَهُ إِلَّا الْكِبْرُ قا ل: فَمَا رَفعهَا إِلَى فِيهِ. رَوَاهُ مُسلم

5904. सलमा बिन अकवा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक आदमी ने रसूलुल्लाह ﷺ के पास बाएँ हाथ से खाया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “अपने दाएँ हाथ से खाओ”, उस ने कहा में ताकत नहीं रखता, आप ﷺ ने फ़रमाया: ’, तो इस्तिताअत न रखे”, इस शख़्स को तकब्बुर ही ने रोका था, रावी बयान करते हैं, वह फिर इस दाएँ हाथ को अपने मुंह तक नहीं उठा सकता था| (मुस्लिम)

رواه مسلم (107 / 2021)، (5268)

٥٩٠٥ -(صَحِيح) وَعَن أنسٍ أَنَّ أَهْلَ الْمَدِينَةِ فَزِعُوا مَرَّةً فَرَكِبَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَرَسًا لِأَبِي طَلْحَةَ بَطِيئًا وَكَانَ يَقْطِفُ فَلَمَّا رَجَعَ قَالَ: «وَجَدْنَا فَرَسَكُمْ هَذَا بَحْرًا» . فَكَانَ بَعْدَ ذَلِكَ لَا يُجَارَى»» وَفِي رِوَايَةٍ: فَمَا سُبِقَ بَعْدَ ذَلِكَ الْيَوْم. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

5905. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक मर्तबा मदीना वाले घबराहट का शिकार हो गए, नबी ﷺ अबू तल्हा के घोड़े पर जिस पर जैन नहीं थी, सवार हो गए वह सुस्त रफ़्तार था, जब आप ﷺ वापस तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया: “हमने तुम्हारे इस घोड़े को दरिया (यानी तेज़ रफ़्तार) पाया”, फिर उस के बाद यह घोड़ा किसी दूसरे घोड़े को करीब फटकने नहीं देता था एक दूसरी रिवायत में है इस रोज़ के बाद कोई घोड़ा उस के आगे नहीं बढ़ सका| (बुखारी)

متفق علیه ، رواه البخاری (2867 و الرواية الثانية : 2969) و مسلم (48 / 2307)، (6006)

٥٩٠٦ - (صَحِيح) وَعَن»» جابرٍ قَالَ: تُوُفِّيَ أَبِي وَعَلَيْهِ دَيْنٌ فَعَرَضْتُ عَلَى غُرَمَائه أَن يأخذو االتمر بِمَا عَلَيْهِ فَأَبَوْا فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ: قَدْ عَلِمْتَ أَنَّ وَالِدِي استُشهدَ يَوْم أحد وَترك عَلَيْهِ دَيْنًا كَثِيرًا وَإِنِّي أُحِبُّ أَنْ يَرَاكَ الْغُرَمَاءُ فَقَالَ لِيَ: " اذْهَبْ فَبَيْدِرْ كُلَّ تَمْرٍ عَلَى نَاحِيَةٍ فَفَعَلْتُ ثُمَّ دَعَوْتُهُ فَلَمَّا نَظَرُوا إِلَيْهِ كَأَنَّهُمْ أُغْرُوا بِي تِلْكَ السَّاعَةَ فَلَمَّا رَأَى مَا يَصْنَعُونَ طَافَ حَوْلَ أَعْظَمِهَا بَيْدَرًا ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ثُمَّ جَلَسَ عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: «ادْعُ لِي أَصْحَابَكَ» . فَمَا زَالَ يَكِيلُ لَهُمْ حَتَّى أَدَّى اللَّهُ عَنْ وَالِدِي أَمَانَتَهُ وَأَنَا أَرْضَى أَن يُؤَدِّيَ الله أَمَانَة وَالِدِي وَلَا أرجع إِلَى أَخَوَاتِي بِتَمْرَةٍ فَسَلَّمَ اللَّهُ الْبَيَادِرَ كُلَّهَا وَحَتَّى إِنِي أنظر إِلى البيدر الَّذِي كَانَ عَلَيْهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَأَنَّهَا لم تنقص تَمْرَة وَاحِدَة. رَوَاهُ البُخَارِيّ

5906. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि जिस वक़्त मेरे वालिद फौत हुए तो वह मकरूज़ थे, मैंने उन के क़र्ज़ ख्वाहों को पेश कश की के वह उस के क़र्ज़ के बराबर खजूरे ले लें, लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया, मैं नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया, आप जानते हैं की मेरे वालिद गज़वा ए उहद में शहीद कर दिए गए थे, और उन्होंने बहोत सा क़र्ज़ छोड़ा है, और मैं चाहता हूँ कि वह क़र्ज़ ख्वाह आप को (मेरे यहाँ) देख लें, आप ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “जाओ हर किस्म की खजूर अलग अलग जमा करो”, मैंने ऐसे ही किया, फिर आप को दावत दी, जब क़र्ज़ ख्वाहों ने आप की तरफ देखा तो मुझ पर सख्त नाराज़ हुए, जब आप ने उनका तर्ज़े अमल देखा तो आप ने सबसे बड़े ढेर के गिर्द तीन चक्कर लगाए, फिर उस पर बैठ गए, फिर फ़रमाया: “अपने क़र्ज़ ख्वाहों को बुलाओ”, आप ﷺ उन्हें नाप कर अदा फरमाते रहे हत्ता कि अल्लाह ने मेरे वालिद का सारा क़र्ज़ अदा कर दिया और मैं खुश था के अल्लाह ने मेरे वालिद का क़र्ज़ अदा फरमा दिया और (मेरा ख़याल था के) में अपने बहनों के लिए एक खजूर भी लेकर न जा सकूंगा, लेकिन अल्लाह ने सारे ढेर बचा दिए हत्ता कि में इस ढेर की तरफ, जिस पर नबी ﷺ बैठें हुए थे देख रहा हूँ कि वह इसी तरह है के जिस तरह उस से एक खजूर भी कम नहीं हुई| (बुखारी)

رواه البخاری (2781)

٥٩٠٧ - (صَحِيح) وَعَنْهُ»» قَالَ: إِنَّ أُمَّ مَالِكٍ كَانَتْ تُهْدِي لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي عُكَّةٍ لَهَا سَمْنًا فَيَأْتِيهَا بَنُوهَا فَيَسْأَلُونَ الْأُدُمَ وَلَيْسَ عِنْدَهُمْ شَيْءٌ فَتَعْمِدُ إِلَى الَّذِي كَانَتْ تُهْدِي فِيهِ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَتَجِدُ فِيهِ سَمْنًا فَمَا زَالَ يُقِيمُ لَهَا أُدُمَ بَيْتِهَا حَتَّى عَصَرَتْهُ فَأَتَتِ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «عَصَرْتِيهَا» قَالَتْ نَعَمْ قَالَ: «لَوْ تَرَكْتِيهَا مَا زَالَ قَائِمًا» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

5907. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि उम्म मालिक रदियल्लाहु अन्हा अपने एक मश्किज़े में नबी ﷺ की खिदमत में घी का हदिया पेश किया करती थी, उन के बेटे उन के पास आते और सालन मांगते और उन के पास कुछ न होता तो वह इस मश्किज़े का क़सद करती जिस में वह नबी ﷺ को हदिया भेजा करती थी, वह उस में घी पाती, और उन के घर में हमेशा ही सालन रहा हत्ता कि उस ने इस (मश्किज़े) को निचोड़ लिया, वह नबी ﷺ के पास आई तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम ने इसे निचोड़ लिया है?” उम्म मालिक रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर तुम उसे छोड़ देती तो वह वैसे ही रहता”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (8 / 2280)، (5945)

٥٩٠٨ - (صَحِيح) وَعَن»» أنسٍ قَالَ: قَالَ أَبُو طَلْحَةَ لِأُمِّ سُلَيْمٍ لَقَدْ سَمِعْتُ صَوْتَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ضَعِيفًا أَعْرِفُ فِيهِ الْجُوعَ فَهَلْ عِنْدَكِ من شَيْء؟ فَأَخْرَجَتْ أَقْرَاصًا مِنْ شَعِيرٍ ثُمَّ أَخْرَجَتْ خِمَارًا لَهَا فَلَفَّتِ الْخُبْزَ بِبَعْضِهِ ثُمَّ دَسَّتْهُ تَحْتَ يَدِي وَلَاثَتْنِي بِبَعْضِهِ ثُمَّ أَرْسَلَتْنِي إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ فَذَهَبْتُ بِهِ فَوَجَدْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْمَسْجِدِ وَمَعَهُ النَّاسُ فَقُمْتُ عَلَيْهِمْ فَقَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَرْسَلَكَ أَبُو طَلْحَةَ؟» قُلْتُ نَعَمْ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم لِمَنْ مَعَهُ قُومُوا فَانْطَلَقَ وَانْطَلَقْتُ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ حَتَّى جِئْت أَبَا طَلْحَة فَقَالَ أَبُو طَلْحَةَ يَا أُمَّ سُلَيْمٍ قَدْ جَاءَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالنَّاسِ وَلَيْسَ عِنْدَنَا مَا نُطْعِمُهُمْ فَقَالَتْ اللَّهُ وَرَسُوله أعلم قَالَ فَانْطَلَقَ أَبُو طَلْحَةَ حَتَّى لَقِيَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فَأَقْبَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَبُو طَلْحَةَ مَعَهُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَلُمِّي يَا أُمَّ سُلَيْمٍ مَا عِنْدَكِ فَأَتَتْ بذلك الْخبز فَأمر بِهِ ففت وعصرت أم سليم عكة لَهَا فأدمته ثمَّ قَالَ فِيهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا شَاءَ اللَّهُ أَنْ يَقُولَ ثُمَّ قَالَ ائْذَنْ لِعَشَرَةٍ فَأَذِنَ لَهُمْ فَأَكَلُوا [ص:١٦٥ حَتَّى شَبِعُوا ثُمَّ خَرَجُوا ثُمَّ قَالَ ائْذَنْ لِعَشَرَةٍ فَأَذِنَ لَهُمْ فَأَكَلُوا حَتَّى شَبِعُوا ثُمَّ خَرَجُوا ثُمَّ قَالَ ائْذَنْ لِعَشَرَةٍ فَأَذِنَ لَهُمْ فَأَكَلُوا حَتَّى شَبِعُوا ثمَّ خَرجُوا ثمَّ أذن لِعَشَرَةٍ فَأَكَلَ الْقَوْمُ كُلُّهُمْ وَشَبِعُوا وَالْقَوْمُ سَبْعُونَ أَوْ ثَمَانُونَ رَجُلًا. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ»» وَفِي رِوَايَةٍ لمُسلم أَنه قَالَ: «أذن لِعَشَرَةٍ» فَدَخَلُوا فَقَالَ: «كُلُوا وَسَمُّوا اللَّهَ» . فَأَكَلُوا حَتَّى فَعَلَ ذَلِكَ بِثَمَانِينَ رَجُلًا ثُمَّ أَكَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَهْلُ الْبَيْتِ وَتَرَكَ سُؤْرًا»» وَفِي رِوَايَةٍ لِلْبُخَارِيِّ قَالَ: «أَدْخِلْ عَلَيَّ عَشَرَةً» . حَتَّى عَدَّ أَرْبَعِينَ ثُمَّ أَكَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَجَعَلْتُ أَنْظُرُ هَلْ نَقَصَ مِنْهَا شَيْءٌ؟»» وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ: ثُمَّ أَخَذَ مَا بَقِيَ فَجَمَعَهُ ثُمَّ دَعَا فِيهِ با لبركة فَعَاد كَمَا كَانَ فَقَالَ: «دونكم هَذَا»

5908. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अबू तल्हा रदियल्लाहु अन्हु ने उम्मे सुलैम रदियल्लाहु अन्हा से कहा: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ की आवाज़ कमज़ोर सी सुनी है, जिस से मैंने भूख का अंदाज़ा लगाया है, क्या तुम्हारे पास कोई चीज़ है? उन्होंने कहा: जी हाँ, उन्होंने जो की चंद रोटियां निकाली, फिर अपनी ओढ़नी निकाली और रोटियों को लपेट कर चादर के एक कोने में बांध कर मेरे हाथ में थमा दिया, फिर मुझे रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में भेज दिया, मैं वह लेकर चला गया, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को मस्जिद में पाया और आप के साथ कुछ लोग भी थे, मैंने उन्हें सलाम किया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “तुझे अबू तल्हा ने भेजा है?” मैंने अर्ज़ किया: जी हाँ! आप ने फ़रमाया: “खाना दे कर ?” मैंने अर्ज़ किया: जी हाँ! रसूलुल्लाह ﷺ ने हाज़िरिन से फ़रमाया: “खड़े हो जाओ”, आप चले और मैं उन के आगे आगे चल रहा था, हत्ता कि मैंने अबू तल्हा रदियल्लाहु अन्हु के पास पहुँच कर उन्हें बताया तो अबू तल्हा रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: उम्म सुलैम! रसूलुल्लाह ﷺ चंद साथियो के साथ तशरीफ़ लाइ है, जबकि हमारे पास तो ऐसी कोई चीज़ नहीं जो उन्हें खिलाने के लिए पेश कर सके, उन्होंने ने फ़रमाया: अल्लाह और उस के रसूल ज़्यादा जानते हैं, अबू तल्हा रदियल्लाहु अन्हु गए हत्ता के रसूलुल्लाह ﷺ से मुलाकात की, फिर रसूलुल्लाह ﷺ अबू तल्हा रदियल्लाहु अन्हु के साथ तशरीफ़ लाए तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “उम्म सुलय्म! तुम्हारे पास जो कुछ है के ले आओ”, वह वही रोटियां ले आइ, रसूलुल्लाह ﷺ के फरमान पर उन रोटियों को चुरा किया गया और उम्मे सुलैम रदियल्लाहु अन्हा ने इन पर घी का मश्किज़ा निचोड़ा और इसे सालन बनाया, फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने इस खाने के बारे में वह दुआ फरमाई जो अल्लाह तआला ने चाहो फिर फ़रमाया: “दस आदमियों को बुलाओ, उन्हें बुलाया गया उन्होंने सैर हो कर खाना खाया, फिर वह चले गए, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “दस को बुलाओ, इस तरह सब लोगों ने सैर हो कर खाना खाया, वह सत्तर या अस्सी लोग थे| और सहीह मुस्लिम की रिवायत में है की आप ﷺ ने फ़रमाया: “दस लोगों को बुलाओ”, वह आए तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह का नाम लेकर खाओ”, उन्होंने खाया हत्ता कि आप ﷺ ने अस्सी लोगों से ऐसे ही फ़रमाया, फिर नबी ﷺ और घरवालो ने खाया और खाना बच भी गया| और सहीह बुखारी की रिवायत में है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मेरे पास दस आदमी भेजो, हत्ता कि आप ने चालीस लोग

गिने, फिर नबी ﷺ ने खाना खाया, मैं देखने लगा के क्या उस में कोई कमी आती है? और सहीह मुस्लिम की रिवायत में है, फिर जो खाना बच गया, आप ﷺ ने इसे इकट्ठा किया, फिर उस के लिए बरकत की दुआ फरमाई तो वह जितना था इतना ही हो गया, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे ले लो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3578) و مسلم (142 / 2040) الرواية الثانية ، رواها مسلم (143 / 2040) و الرواية الثالثة ، رواها البخارى (5450) و الرواية الرابعة ، رواها مسلم (143 / 2040)، (5316)

٥٩٠٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعنهُ قا ل: أَتِيَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِإِنَاءٍ وَهُوَ بِالزَّوْرَاءِ فَوَضَعَ يَدَهُ فِي الْإِنَاءِ فَجَعَلَ الْمَاءُ يَنْبُعُ مِنْ بَيْنِ أَصَابِعِهِ فَتَوَضَّأَ الْقَوْمُ قَالَ قَتَادَةُ: قُلْتُ لِأَنَسٍ: كَمْ كُنْتُمْ؟ قَالَ: ثلاثمائةٍ أَو زهاءَ ثلاثمائةٍ. مُتَّفق عَلَيْهِ

5909. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ जवरा के मक़ाम पर थे की एक बर्तन आप की खिदमत में पेश किया गया, आप ने अपना दस्ते मुबारक बर्तन में रखा तो आप की उंगलियों से पानी फूटने लगा, सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने उस से वुज़ू किया, क़तादाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अनस रदियल्लाहु अन्हु से पूछा: तुम कितने थे? उन्होंने फ़रमाया तीन सौ या तकरीबन तीन सौ| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3572) و مسلم (7 ، 6 / 2279)، (5943 و 5944)

٥٩١٠ - (صَحِيح) وَعَنْ»» عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: كُنَّا نَعُدُّ الْآيَاتِ بَرَكَةً وَأَنْتُمْ تَعُدُّونَهَا تَخْوِيفًا كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سَفَرٍ فَقَلَّ الْمَاءُ فَقَالَ: «اطْلُبُوا فَضْلَةً مِنْ مَاءٍ» فَجَاءُوا بِإِنَاءٍ فِيهِ مَاءٌ قَلِيلٌ فَأَدْخَلَ يَدَهُ فِي الْإِنَاءِ ثُمَّ قَالَ: «حَيَّ على الطَّهورِ الْمُبَارك وَالْبركَة من الله» فَلَقَد رَأَيْتُ الْمَاءَ يَنْبُعُ مِنْ بَيْنِ أَصَابِعِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَقَد كُنَّا نَسْمَعُ تَسْبِيحَ الطَّعَامِ وَهُوَ يُؤْكَلُ. رَوَاهُ البُخَارِيّ

5910. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम तो तो आयात व मोअजिज़ात को बाईस ए बरकत शुमार किया करते थे जबकि तुम उन्हें बाईस ए तखविफ समझते हो, हम एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ के साथ शरीक ए सफ़र थे की पानी कम पड़ गया, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो पानी बच गया है उसे लेकर आओ”, वह एक बर्तन लाए जिस में थोड़ा पानी था, आप ﷺ ने अपना दस्ते मुबारक बर्तन में दाखिल फ़रमाया फिर फ़रमाया: “मुबारक पानी हासिल करो और बरकत अल्लाह की तरफ से हुई है” और मैंने रसूलुल्लाह ﷺ की उंगलियों से पानी फूटते हुए देखा, और खाना खाने के दौरान हम खाने की तस्बीह सुना करते थे| (बुखारी)

رواه البخارى (3579)

٥٩١١ - (صَحِيح) وَعَن»» أبي قتادة قَالَ خَطَبَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ إِنَّكُمْ [ص:١٦٦ تَسِيرُونَ عَشِيَّتَكُمْ

وَلَيْلَتَكُمْ وَتَأْتُونَ الْمَاءَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ غَدًا فَانْطَلَقَ النَّاسُ لَا يَلْوِي أَحَدٌ عَلَى أَحَدٍ قَالَ أَبُو قَتَادَةَ فَبَيْنَمَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسِيرُ حَتَّى ابْهَارَّ اللَّيْلُ فَمَالَ عَنِ الطَّرِيقِ فَوَضَعَ رَأْسَهُ ثُمَّ قَالَ احْفَظُوا عَلَيْنَا صَلَاتَنَا فَكَانَ أَوَّلَ مَنِ اسْتَيْقَظَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالشَّمْسُ فِي ظَهْرِهِ ثُمَّ قَالَ ارْكَبُوا فَرَكِبْنَا فَسِرْنَا حَتَّى إِذَا ارْتَفَعَتِ الشَّمْسُ نَزَلَ ثُمَّ دَعَا بِمِيضَأَةٍ كَانَتْ معي فِيهَا شيءٌ من مَاء قَالَ فَتَوَضَّأَ مِنْهَا وُضُوءًا دُونَ وُضُوءٍ قَالَ وَبَقِيَ فِيهَا شَيْءٌ مِنْ مَاءٍ ثُمَّ قَالَ احْفَظْ عَلَيْنَا مِيضَأَتَكَ فَسَيَكُونُ لَهَا نَبَأٌ ثُمَّ أَذَّنَ بِلَالٌ بِالصَّلَاةِ فَصَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ صَلَّى الْغَدَاةَ وَرَكِبَ وَرَكِبْنَا مَعَهُ فَانْتَهَيْنَا إِلَى النَّاسِ حِينَ امْتَدَّ النَّهَارُ وَحَمِيَ كُلُّ شَيْءٍ وَهُمْ يَقُولُونَ يَا رَسُولَ اللَّهِ هَلَكْنَا وَعَطِشْنَا فَقَالَ لَا هُلْكَ عَلَيْكُمْ وَدَعَا بِالْمِيضَأَةِ فَجَعَلَ يَصُبُّ وَأَبُو قَتَادَةَ يَسْقِيهِمْ فَلَمْ يَعْدُ أَنْ رَأَى النَّاسُ مَاءً فِي الْمِيضَأَةِ تَكَابُّوا عَلَيْهَا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَحْسِنُوا الْمَلَأَ كُلُّكُمْ سَيُرْوَى قَالَ فَفَعَلُوا فَجَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَصُبُّ وَأَسْقِيهِمْ حَتَّى مَا بَقِيَ غَيْرِي وَغَيْرُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ صَبَّ فَقَالَ لِيَ اشْرَبْ فَقُلْتُ لَا أَشْرَبُ حَتَّى تَشْرَبَ يَا رَسُولَ الله قَالَ إِن ساقي الْقَوْم آخِرهم شربا قَالَ فَشَرِبْتُ وَشَرِبَ قَالَ فَأَتَى النَّاسُ الْمَاءَ جَامِّينَ رِوَاءً. رَوَاهُ مُسْلِمٌ هَكَذَا فِي صَحِيحِهِ وَكَذَا فِي كتاب الْحميدِي وجامع الْأُصُولِ وَزَادَ فِي الْمَصَابِيحِ بَعْدَ قَوْلِهِ آخِرُهُمْ لَفْظَة شربا

5911. अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें खुत्बा इरशाद फ़रमाया तो उस में फ़रमाया: “तुम रातभर सफ़र करने के बाद इंशाअल्लाह कल पानी तक पहुँच जाओगे”, सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन चलते गए कोई किसी तरफ तवज्जो नहीं कर रहा था, अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह ﷺ सफ़र कर रहे थे हत्ता कि आधी रात हो गई तो आप रास्ते से हट कर एक जगह सर मुबारक रख कर सोने लगे और फ़रमाया: “हमारी नमाज़ का ख़याल रखना”, सबसे पहले रसूलुल्लाह (स) ही बेदार हुए इस वक़्त सूरज तुलुअ हो चूका था, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “सवारियों पर सवार हो जाओ”, हम सवार हो गए और सफ़र शुरू कर दिया हत्ता कि जब सूरज बुलंद हो गया तो आप ने पड़ाव डाला, फिर आप ने पानी का बर्तन मंगवाया जो के मेरे पास था, उस में कुछ पानी था, आप ने एहतियात के साथ उस से वुज़ू फ़रमाया, रावी बयान करते हैं, उस में थोड़ा पानी बच गया, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “हमारे लिए इस पानी की हिफाज़त करो, अनकरीब इस बर्तन को बड़ी अज़मत हासिल होगी”, फिर बिलाल रदियल्लाहु अन्हु ने नमाज़ के लिए आज़ान दी तो रसूलुल्लाह ﷺ ने दो रकते पढ़ाइ, फिर नमाज़ ए फजर अदा की, आप सवार हुए तो हम भी आप के साथ ही सवार हो गए, और हम लोगों के पास पहुंचे तो दिन अच्छी तरह चढ़ चूका था और हर चीज़ गरम हो चुकी थी, लोग कह रहे थे: अल्लाह के रसूल! हम (लू की वजह से) हलाक हो गए और प्यासे हो गए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम हलाक नहीं होगे”, आप ने पानी का बर्तन मंगवाया, आप उन्देल रहे थे और अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु उन्हें पिला रहे थे, लोगों ने पानी का बर्तन देखा तो वह उस पर झुक गए रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अपने अख़लाक़ संवारो, तुम सब सेराब हो जाओगे”, रावी बयान करते हैं, उन्होंने तामिल की तो रसूलुल्लाह ﷺ उन्देल रहे थे और मैं उन्हें पिला रहा था, हत्ता कि में और रसूलुल्लाह (स) ही बाकी रह गए, फिर आप ने पानी उंडेला और मुझे फ़रमाया: “पियो”, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मैं आप से पहले नहीं पियूँगा, आप ﷺ ने फ़रमाया: “लोगो को पिलाने वाला सबसे आख़िर पर पीता है”, रावी बयान करते हैं, मैंने पिया और फिर आप ने पिया, रावी बयान करते हैं, लोग सेराब हो कर राहत के साथ पानी पर आए| # इसी तरह सहीह मुस्लिम में है और किताब अल हुमैदी और जामेअ अल अस्वल में इसी तरह है, और मसाबिह में लफ्ज़ ((آخِرُهُمْ)) के बाद लफ्ज़ ((شربا)) का इज़ाफा है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (311 / 681)، (1562)

٥٩١٢ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: لَمَّا كَانَ يَوْمُ غزوةِ تَبُوك أصابَ النَّاس [ص:١٦٦ مجاعةٌ فَقَالَ عُمَرُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ادْعُهُمْ بِفَضْلِ أَزْوَادِهِمْ ثُمَّ ادْعُ اللَّهَ لَهُمْ عَلَيْهَا بِالْبَرَكَةِ فَقَالَ: نعم قَالَ فَدَعَا بِنِطَعٍ فَبُسِطَ ثُمَّ دَعَا بِفَضْلِ أَزْوَادِهِمْ فَجَعَلَ الرَّجُلُ يَجِيءُ بِكَفِّ ذُرَةٍ وَيَجِيءُ الْآخَرُ بِكَفِّ تَمْرٍ وَيَجِيءُ الْآخَرُ بِكِسْرَةٍ حَتَّى اجْتَمَعَ عَلَى النِّطَعِ شَيْءٌ يَسِيرٌ فَدَعَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالْبَرَكَةِ ثُمَّ قَالَ خُذُوا فِي أوعيتكم فَأَخَذُوا فِي أَوْعِيَتِهِمْ حَتَّى مَا تَرَكُوا فِي الْعَسْكَر وعَاء إِلا ملؤوه قَالَ فَأَكَلُوا حَتَّى شَبِعُوا وَفَضَلَتْ فَضْلَةٌ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنِّي رَسُولُ اللَّهِ لَا يَلْقَى اللَّهَ بِهِمَا عَبْدٌ غَيْرُ شاكٍّ فيحجبَ عَن الْجنَّة» . رَوَاهُ مُسلم

5912. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, गज़वा ए तबुक के मौके पर सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन सख्त भूख का शिकार हो गए तो उमर रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! उन से इज़ाफ़ी (ज़्यादा) जादे राह (रसद) तलब फरमाइए, फिर अल्लाह से इन के लिए उस में बरकत की दुआ फरमाइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ, ठीक है” आप ने चमड़े का दस्तरखान मंगवाया, इसे बिछा दिया गया, फिर आप ने उन से बचा हुआ जादे राह (रसद) तलब फ़रमाया, कोई आदमी मुठ्ठी फिर कई लाया, कोई मुठ्ठी फिर खजूर लाया, और कोई रोटी का टुकड़ा लाया, हत्ता कि दस्तरखान पर ठोड़ी सी चीज़ जमा हो गई तो रसूलुल्लाह ﷺ ने बरकत के लिए दुआ फरमाई फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “अपने बर्तन भर लो”| उन्होंने अपने बर्तन भर लिए हत्ता कि उन्होंने लश्कर के तमाम बर्तन भर लिए, रावी बयान करते हैं, उन्होंने खूब सैर हो कर खाया हत्ता कि खाना बच भी गया, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं और यह कि में अल्लाह का रसूल हूँ, जो शख़्स यकीन के साथ शहादतीन का इकरार करता है तो वह जन्नत से नहीं रोका जाएगा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (45 / 27)، (139)

٥٩١٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أَنَسٍ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَرُوسًا بِزَيْنَبَ فَعَمَدَتْ أُمِّي أُمُّ سُلَيْمٍ إِلَى تَمْرٍ وَسَمْنٍ وَأَقِطٍ فَصَنَعَتْ حَيْسًا فَجَعَلَتْهُ فِي تَوْرٍ فَقَالَتْ يَا أَنَسُ اذْهَبْ بِهَذَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْ بَعَثَتْ بِهَذَا إِلَيْكَ أُمِّي وَهِيَ تُقْرِئُكَ السَّلَامَ وَتَقُولُ إِنَّ هَذَا لَكَ مِنَّا قَلِيلٌ يَا رَسُولَ الله قَالَ فَذَهَبْتُ فَقُلْتُ فَقَالَ ضَعْهُ ثُمَّ قَالَ اذْهَبْ فَادْعُ لِي فُلَانًا وَفُلَانًا وَفُلَانًا رِجَالًا سَمَّاهُمْ وَادْعُ مَنْ لَقِيتَ فَدَعَوْتُ مَنْ سَمَّى وَمَنْ لَقِيتُ فَرَجَعْتُ فَإِذَا الْبَيْتُ غَاصٌّ بِأَهْلِهِ قِيلَ لأنس عدد كم كَانُوا؟ قَالَ زهاء ثَلَاث مائَة. فَرَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَضَعَ يَدَهُ عَلَى تِلْكَ الْحَيْسَةِ وَتَكَلَّمَ بِمَا شَاءَ اللَّهُ ثُمَّ جعَلَ يَدْعُو عَشَرَةً عَشَرَةً يَأْكُلُونَ مِنْهُ وَيَقُول لَهُم: «اذْكروا اسْم الله وليأكل كُلُّ رَجُلٍ مِمَّا يَلِيهِ» قَالَ: فَأَكَلُوا حَتَّى شَبِعُوا. فَخَرَجَتْ طَائِفَةٌ وَدَخَلَتْ طَائِفَةٌ حَتَّى أَكَلُوا كُلُّهُمْ قَالَ لِي يَا أَنَسُ ارْفَعْ. فَرَفَعْتُ فَمَا أَدْرِي حِينَ وَضَعْتُ كَانَ أَكْثَرَ أَمْ حِين رفعت. مُتَّفق عَلَيْهِ

5913. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ की जैनब रदियल्लाहु अन्हा से शादी हुई तो मेरी वालिदा उम्मे सुलैम रदियल्लाहु अन्हा ने खजूर, घी और पनीर लेकर हईस बनाया और इसे हंडिया जैसे बर्तन में रखा, और फ़रमाया: अनस! इसे रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में ले जाओ, और उन्हें कहो: इसे मेरी वालिदा ने आप की खिदमत में पेश किया है और वह आप को सलाम अर्ज़ करती है, और उन्होंने यह भी अर्ज़ किया है के अल्लाह के रसूल! यह हमारी तरफ से आप की खिदमत में मुख़्तसर (यानी हकीर) सा हदिया है, मैं गया, और अर्ज़ किया, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे रख दो”, फिर फ़रमाया: “जाओ! फलां, फलां और फलां शख़्स को बूला लाओ”, और आप ने उन के नाम भी बताए “ और जो भी तुझे मिले इसे बुला लाओ”, आप ने जिन के नाम बताए थे, मैं उन्हें और जो लोग रास्ते

में मुझे मिले तो मैं उन्हें बुला लाया, मैं वापस आया तो घर भर चुका था, अनस रदियल्लाहु अन्हु से दरियाफ्त किया गया: तुम कितने लोग थे? उन्होंने ने फ़रमाया: तकरीबन तीन सो, मैंने नबी ﷺ को देखा के आप ने इस हिस्से (हलवे) में अपना दस्ते मुबारक रखा और जो अल्लाह ने चाहा वह दुआ फरमाई, फिर आप दस दस आदमियों को बुलाते रहे और वह उस से खाते रहे, आप ﷺ उन्हें फरमाते: “अल्लाह का नाम लो और हर शख़्स अपने सामने से खाए”, रावी बयान करते हैं, इन सब ने खूब सैर हो कर खा लिया, एक गिरोह निकलते तो दूसरा गिरोह दाखिल हो जाता, हत्ता कि इन सब ने खा लिया, आप ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “अनस (इसे) उठा लो”, मैंने उठा लिया, मैं नहीं जानता की जब मैंने (हयस) रखा था तब ज़्यादा था या जब मैंने उठाया था तब ज़्यादा था| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5163) و مسلم (94 / 1428)، (3507)

٥٩١٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: غَزَوْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنا على نَاضِحٍ [ص:١٦٦ لنا قَدْ أَعْيَا فَلَا يَكَادُ يَسِيرُ فَتَلَاحَقَ بِيَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ لي مَا لبعيرك قلت: قدعيي فَتَخَلَّفَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فزجره ودعا لَهُ فَمَا زَالَ بَيْنَ يَدَيِ الْإِبِلِ قُدَّامَهَا يسير فَقَالَ لي كَيفَ ترى بعيرك قَالَ قُلْتُ بِخَيْرٍ قَدْ أَصَابَتْهُ بَرَكَتُكَ قَالَ أَفَتَبِيعُنِيهِ بِوُقِيَّةٍ. فَبِعْتُهُ عَلَى أَنَّ لِي فَقَارَ ظَهْرِهِ حَتَّى الْمَدِينَةِ فَلَمَّا قَدِمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَدِينَةَ غَدَوْتُ عَلَيْهِ بِالْبَعِيرِ فَأَعْطَانِي ثمنَهُ وردَّهُ عَليّ. مُتَّفق عَلَيْهِ

5914. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं एक गज़वा मैं रसूलुल्लाह ﷺ के साथ शरीक था, मैं पानी लाने वाले एक ऊंट पर सवार था, वह थक चूका था और वह चलने के काबिल नहीं रहा था, नबी ﷺ मेरे पास तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया: “तेरे ऊंट को क्या हुआ है?” मैंने अर्ज़ किया: वह थक चूका है, रसूलुल्लाह ﷺ पीछे गए और इसे डांटा और उस के लिए दुआ फरमाई, फिर वह दूसरे ऊटों के आगे आगे चलता रहा, आप ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “तुम्हारे ऊंट का क्या हाल है?” मैंने अर्ज़ किया: बेहतर है? आप की बरकत का उस पर असर हो गया है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तूम उसे चालीस दिरहम के अवेज़ बेचोगे ?” मैंने इस शर्त पर इसे बेच दीया के मदीना तक में इसी पर सफ़र करूँगा, जब रसूलुल्लाह ﷺ मदीना पहुंचे तो अगले रोज़ में ऊंट लेकर हाज़िर ए खिदमत हुआ तो आप ﷺ ने मुझे उसकी कीमत अता फरमा दी, वह ऊंट भी मुझे वापस दे दिया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2967) و مسلم (110 / 715)، (4100)

٥٩١٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أبي حميد السَّاعِدِيّ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غَزْوَةَ تَبُوكَ فَأَتَيْنَا وَادِيَ الْقُرَى عَلَى حَدِيقَةٍ لِامْرَأَةٍ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اخْرُصُوهَا» فَخَرَصْنَاهَا وَخَرَصَهَا رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَشَرَةَ أَوْسُقٍ وَقَالَ: «أَحْصِيهَا حَتَّى نَرْجِعَ إِلَيْكِ إِنْ شَاءَ اللَّهُ» وَانْطَلَقْنَا حَتَّى قَدِمْنَا تَبُوكَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «سَتَهُبُّ عَلَيْكُمُ اللَّيْلَةَ رِيحٌ شَدِيدَةٌ فَلَا يَقُمْ فِيهَا أَحَدٌ مِنْكُم فَمَنْ كَانَ لَهُ بَعِيرٌ فَلْيَشُدَّ عِقَالَهُ» فَهَبَّتْ رِيحٌ شَدِيدَةٌ فَقَامَ رَجُلٌ فَحَمَلَتْهُ الرِّيحُ حَتَّى أَلْقَتْهُ بِجَبَلَيْ طَيِّئٍ ثُمَّ أَقْبَلْنَا حَتَّى قَدِمْنَا وَادِيَ الْقُرَى فَسَأَلَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَرْأَةُ عَنْ حَدِيقَتِهَا كَمْ بَلَغَ ثَمَرهَا فَقَالَت عشرَة أوسق. مُتَّفق عَلَيْهِ

5915. अबू हुमैद साअदि रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम गज़वा ए तबुक मैं रसूलुल्लाह ﷺ के साथ रवाना हुए हम वादी कुरा में एक औरत के बाग़ के पास पहुंचे तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इस (के फूलों) का अंदाज़ा लगाओ”, हमने अंदाज़ा लगाया और रसूलुल्लाह ﷺ ने उस का दस वुसक का अंदाज़ा लगाया, और आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस को याद रखना हत्ता कि अगर अल्लाह ने चाहा तो हम तुम्हारे पास वापस आएँगे”, और हम चलते गए हत्ता कि हम तबुक पहुँच गई तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आज रात बड़े ज़ोर की आंधी चलेगी, उस में कोई शख़्स खड़ा न हो और जिस शख़्स के पास ऊंट हो तो वह इसे बांध ले”, ज़ोर की आंधी चली, एक आदमी खड़ा हुआ तो आंधी ने इसे उठाकर जबल तय्यीअ पर जा फेका, फिर हम वापस आए हत्ता कि हम वादी कुरा पहुंचे तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इस औरत से उस के बाग़ के फल के मुतल्लिक पूछा के “ उस के फल कितने हुए थे ?” उस ने अर्ज़ किया, दस वुसक| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1481) و مسلم (11 / 1392)، (3371)

٥٩١٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ»» أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّكُمْ سَتَفْتَحُونَ مِصْرَ وَهِيَ أَرْضٌ يُسَمَّى فِيهَا الْقِيرَاطُ فَإِذَا فَتَحْتُمُوهَا فَأَحْسِنُوا إِلَى أَهْلِهَا فَإِنَّ لَهَا ذِمَّةً وَرَحِمًا أَوْ قَالَ: ذِمَّةً وَصِهْرًا فَإِذَا رَأَيْتُمْ رَجُلَيْنِ يَخْتَصِمَانِ فِي مَوْضِعِ لَبِنَةٍ فَاخْرُجْ مِنْهَا ". قَالَ: فَرَأَيْتُ عَبْدَ الرَّحْمَن بن شُرَحْبِيل بن حَسَنَة وأخاه يَخْتَصِمَانِ فِي مَوْضِعِ لَبِنَةٍ فَخَرَجْتُ مِنْهَا. رَوَاهُ مُسلم

5916. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम अनकरीब मस्वर फतह करोगे, और वह ऐसी सरज़मीन है जिस की कर्निसी किरात है, जब तुम उसे फतह कर लो तो वहां के बासिंदों से हुस्ने सुलूक करना, क्योंकि उन्हें हुरमत और क़राबत का हक़ हासिल है, ‘या फ़रमाया: “उन्हें हुरमत और रिश्तेदारी का हक़ हासिल है और जब तुम दो आदमियों को ईंट बराबर जगह पर झगड़ा करते हुए देखो तो वहां से कुच कर जाना”, और मैंने अब्दुल रहमान बिन शुर्हबिल बिन हसन और उस के भाई रबिआ को एक ईंट बराबर पर झगड़ा करते हुए देखा तो मैं वहा इसे निकल आया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (227 ، 226 / 2543)، (6493 و 6494)

٥٩١٧ - (صَحِيح) وَعَنْ»» حُذَيْفَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " فِي أَصْحَابِي وَفِي رِوَايَة قا ل: فِي أُمَّتِي اثْنَا عَشَرَ مُنَافِقًا لَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يَجِدُونَ رِيحَهَا حَتَّى يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سم الْخياط ثَمَانِيَة مِنْهُم تَكْ (فيهم الدُّبَيْلَةُ: سِرَاجٌ مِنْ نَارٍ يَظْهَرُ فِي أَكْتَافِهِمْ حَتَّى تَنْجُمَ فِي صُدُورِهِمْ ". رَوَاهُ مُسْلِمٌ»» وَسَنَذْكُرُ حَدِيثَ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ: «لَأُعْطِيَنَّ هَذِهِ الرَّايَةَ غَدًا» فِي «بَابِ مَنَاقِبِ عَلِيٍّ» رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ»» وَحَدِيثَ جَابِرٍ «مَنْ يَصْعَدُ الثَّنِيَّةَ» فِي «بَابِ جَامِعِ الْمَنَاقِبِ» إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى

5917. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मेरे सहाबा में”, एक रिवायत में है आप ﷺ ने फ़रमाया: “मेरी उम्मत में बारह मुनाफ़िक़ होंगे वह जन्नत में दाखिल होंगे न उसकी खुशबू पाएंगे, हत्ता

कि ऊंट सुई के नाके में से गुज़र जाए, उनमें से आठ को तो वह फोड़ा ही काफी है, इस के अलावा आग का एक शअला जो उन के कंधो के दरमियान ज़ाहिर होगा हत्ता कि उसकी हरारत का असर उन के सीनों (यानी दिलों) पर महसूस होगा"| और हम सहल बिन साद (र) से मरवी हदीस ((لأ عطين هذا الرأية غدا)) बाब मनाकिब अली (र) और जाबिर (र) से मरवी हदीस (مَنْ يَصْعَدُ الثَّنِيَّةَ) बाब मनाकिब का बयान मैं इनशाअल्लाह तआला ज़िक्र करेंगे. (मुस्लिम)

رواه مسلم (10 ، 9 / 2779)، (7035 و 7036) 0 حديث سهل بن سعد سياتى (6080) و حديث جابر ياتى (6220)

بَاب فِي المعجزات • मौजिज़े का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٥٩١٨ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: خَرَجَ أَبُو طَالِبٍ إِلَى الشَّام وَخرج مَعَه النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي أَشْيَاخٍ مِنْ قُرَيْشٍ فَلَمَّا أَشْرَفُوا عَلَى الرَّاهِبِ هَبَطُوا فَحَلُّوا رِحَالَهُمْ فَخَرَجَ إِلَيْهِمُ الرَّاهِبُ وَكَانُوا قَبْلَ ذَلِكَ يَمُرُّونَ بِهِ فَلَا يَخْرُجُ إِلَيْهِمْ قَالَ فَهُمْ يَحُلُّونَ رِحَالَهُمْ فَجَعَلَ يَتَخَلَّلُهُمُ الرَّاهِبُ حَتَّى جَاءَ فَأَخَذَ بِيَدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ هَذَا سَيِّدُ الْعَالَمِينَ هَذَا رسولُ ربِّ الْعَالِمِينَ يَبْعَثُهُ اللَّهُ رَحْمَةً لِلْعَالِمِينَ فَقَالَ لَهُ أَشْيَاخٌ مِنْ قُرَيْشٍ مَا عِلْمُكَ فَقَالَ إِنَّكُمْ حِينَ أَشْرَفْتُمْ مِنَ الْعَقَبَةِ لَمْ يَبْقَ شَجَرٌ وَلَا حَجَرٌ إِلَّا خَرَّ سَاجِدًا وَلَا يَسْجُدَانِ إِلَّا لِنَبِيٍّ وَإِنِّي أَعْرِفُهُ بِخَاتَمِ النُّبُوَّةِ أَسْفَلَ مِنْ غُضْرُوفِ كَتِفِهِ مِثْلَ التُّفَّاحَةِ ثُمَّ رَجَعَ فَصَنَعَ لَهُمْ طَعَامًا فَلَمَّا أَتَاهُمْ بِهِ وَكَانَ هُوَ فِي رِعْيَةِ الْإِبِلِ فَقَالَ أَرْسِلُوا إِلَيْهِ فَأَقْبَلَ وَعَلَيْهِ غَمَامَةٌ تُظِلُّهُ فَلَمَّا دَنَا مِنَ الْقَوْمِ وجدهم قد سَبَقُوهُ إِلَى فَيْءِ الشَّجَرَةِ فَلَمَّا جَلَسَ مَالَ [ص:١٦٦ فَيْءُ الشَّجَرَةِ عَلَيْهِ فَقَالَ انْظُرُوا إِلَى فَيْءِ الشَّجَرَةِ مَالَ عَلَيْهِ فَقَالَ أنْشدكُمْ بِاللَّه أَيُّكُمْ وَلِيُّهُ قَالُوا أَبُو طَالِبٍ فَلَمْ يَزَلْ يُنَاشِدُهُ حَتَّى رَدَّهُ أَبُو طَالِبٍ وَبَعَثَ مَعَهُ أَبُو بَكْرٍ بِلَالًا وَزَوَّدَهُ الرَّاهِبُ مِنَ الْكَعْكِ وَالزَّيْت. (علق الشَّيْخ أَن ذكر بِلَال فِي الحَدِيث خطأ إِذْ لم يكن خلق بعد)

5918. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अबू तालिब नबी ﷺ के साथ कुरैश के अकाबिरिन की साथ में शाम के लिए रवाना हुए, जब वह राहीब के पास पहुंचे तो उन्होंने उस के वहां पड़ाव डालकर अपने सवारियों के कजावे खोल दिए, इतने में राहिब उन के पास आया, वह उस से पहले भी यहाँ से गुज़रा करते थे, लेकिन वह उन के पास नहीं आता था, रावी बयान करते हैं, वह अपने सवारियों के कजावे उतार रहे थे, तो रायिब उन के दरमियान किसी को तलाश करता फिर रहा था, हत्ता कि वह रसूलुल्लाह ﷺ तक पहुँच गया, उस ने आप का दस्ते मुबारक पकड़ कर कहा यह सय्यिदुल आलमीन है, यह रब्बुल आलमीन के रसूल हैं, अल्लाह उन्हें रहमतुल आलमीन बना कर मबउस फरमाएगा, उस पर अकाबिराने कुरैश ने पूछा तुम्हारे इल्म की बुनियाद क्या है? उस ने कहा जब तुम घाटी पर चढ़े तो हर सजर व हजर आप के सामने झुक गया, और वह सिर्फ किसी नबी की खातिर ही झुकते है, और मैं महोरे नबूवत से भी उन्हें पहचानता हूँ, जो उन के शाने की हड्डी के नीचे सेब की तरह है, फिर वह वापस गया और इन के लिए खाने का इह्तेमाम किया, जब वह खाना लेकर उन के पास आया तो इस वक़्त आप ﷺ ऊटों की चराहगाह में थे, उस ने कहा: उन्हें बिला भेजो, जब आप तशरीफ़ लाए तो बादल का टुकड़ा आप पर साया किया था, जब आप अकेले कौम

के पास आए तो वह लोग आप से पहले ही दरख्त के साये में जा चुके थे, जब आप बैठ गए तो दरख्त का साया झुक गया, उस ने कहा: दरख्त के साए को देखो के वह इन पर झुक गया है, उस ने कहा: में तुम्हें अल्लाह की क़सम दे कर पूछता हूँ, के तुम में से उनका सरपरस्त कौन है? उन्होंने बताया अबू तालिब, वह मुसलसल इनको क़सम देता रहा (के आप उन्हें वापस ले जाए) हत्ता कि अबू तालिब ने उन्हें वापस भेज दिया, और अबू बक्र ने बिलाल को आप के साथ रवाना किया और राहीब ने रोटी और जैतून बतौर रसद (माल सामान) आप ﷺ को अता किया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3620 وقال : غريب) * يونس بن ابی اسحاق مدلس و عنعن

٥٩١٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَلِيٍّ»» بْنَ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَكَّةَ فَخَرَجْنَا فِي بَعْضِ نَوَاحِيهَا فَمَا اسْتَقْبَلَهُ جَبَلٌ وَلَا شَجَرٌ إِلَّا وَهُوَ يَقُولُ: السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ والدارمي

5919. अली बिन अबी तालिब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं नबी ﷺ के साथ मक्का में मौजूद था, हम उसकी एक जानिब निकले तो सामने आने वाला हर शजर व हजर कह रहा था: अल्लाह के रसूल! السَّلَامُ عَلَيْكَ (सलामती हो तुम पर)| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3626 وقال : حسن غريب) و الدارمی (1 / 12 ح 21) * وليد بن ابی ثور : ضعيف و عباد : مجهول

٥٩٢٠ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَنَسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أُتِيَ بِالْبُرَاقِ لَيْلَةَ أُسْرِيَ بِهِ مُلْجَمًا مُسْرجاً فاستصعب عَلَيْهِ فَقَالَ لَهُ جِبْرِيل: أَبِمُحَمَّدٍ تَفْعَلُ هَذَا؟ قَالَ: فَمَا رَكِبَكَ أَحَدٌ أَكْرَمُ عَلَى اللَّهِ مِنْهُ قَالَ: فَارْفَضَّ عَرَقًا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

5920. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के मेअराज की रात नबी ﷺ के पास बुराक लाइ गई जिसे लगाम डाली गई थी और उस पर जैन सजाई गई थी, उस ने आप के बैठनेमें रुकावट पैदा की तो जिब्राइल अलैहिस्सलाम ने इसे फ़रमाया: क्या तुम मुहम्मद ﷺ के साथ यह सुलूक करती हो? अल्लाह के यहाँ उन से बढ़कर मुअज्ज़ज़ किसी शख्शियत ने तुझ पर सवारी नहीं की होगी, आप ﷺ ने फ़रमाया: “(ये सुन कर) वह (बुराक) पसीने से शराबोर हो गई| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3131) * قتادة مدلس و عنعن

٥٩٢١ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» بُرَيْدَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَمَّا انْتَهَيْنَا إِلَى بَيْتِ الْمَقْدِسِ قَالَ جِبْرِيل بِأُصْبُعِهِ فَخَرَقَ بِهَا الْحَجَرَ فَشَدَّ بِهِ الْبُرَاقَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5921. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब हम बैतूल मकदस पहुंचे तो

जिब्राइल ने अपने ऊँगली से इरशाद फ़रमाया तो उस के साथ पत्थर में सुराख़ कर दिया और उस के साथ बुराक को बांध दिया”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3132 وقال : غریب)

٥٩٢٢ - (صَحِيح لشواهده) وَعَن يعلى بن مرَّةَ الثَّقفي قَالَ ثَلَاثَةُ أَشْيَاءَ رَأَيْتُهَا مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَا نَحْنُ نَسِيرُ مَعَه إِذ مَرَرْنَا بِبَعِير يُسْنَى عَلَيْهِ فَلَمَّا رَآهُ الْبَعِيرُ جَرْجَرَ فَوَضَعَ جِرَانَهُ فَوَقَف عَلَيْهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ أَيْنَ صَاحِبُ هَذَا الْبَعِيرِ فَجَاءَهُ فَقَالَ بِعْنِيهِ فَقَالَ بَلْ نَهَبُهُ لَكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَإِنَّهُ لِأَهْلِ بَيْتٍ مَا لَهُمْ مَعِيشَةٌ غَيْرُهُ [ص:١٦٦ قَالَ أَمَا إِذْ ذَكَرْتَ هَذَا مِنْ أَمْرِهِ فَإِنَّهُ شَكَا كَثْرَةَ الْعَمَلِ وَقِلَّةَ العلفِ فَأَحْسنُوا إِلَيْهِ قَالَ ثمَّ سرنا فنزلنا مَنْزِلًا فَنَامَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَجَاءَتْ شَجَرَةٌ تَشُقُّ الْأَرْضَ حَتَّى غَشِيَتْهُ ثُمَّ رَجَعَتْ إِلَى مَكَانِهَا فَلَمَّا اسْتَيْقَظَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذُكِرَتْ لَهُ فَقَالَ هِيَ شجرةٌ استأذَنَتْ ربّها عز وَجل أَنْ تُسَلِّمَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَذِنَ لَهَا قَالَ ثُمَّ سِرْنَا فَمَرَرْنَا بِمَاءٍ فَأَتَتْهُ امْرَأَةٌ بِابْنٍ لَهَا بِهِ جِنَّةٌ فَأَخَذَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بمنخره فَقَالَ اخْرُج إِنِّي مُحَمَّد رَسُول الله قَالَ ثمَّ سرنا فَلَمَّا رَجعْنَا من سفرنا مَرَرْنَا بِذَلِكَ الْمَاءِ فَسَأَلَهَا عَنِ الصَّبِيِّ فَقَالَتْ وَالَّذِي بَعثك بِالْحَقِّ مَا رأَينا مِنْهُ رَيباً بعْدك. رَوَاهُ فِي شرح السّنة

5922. यअली बिन मरह सक्फी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से तीन मोअजिज़ात देखे, हम सफ़र कर रहे थे की हम एक ऊंट के पास से गुज़रे उस पर पानी लाया जाता था, जब इस ऊंट ने आप ﷺ को देखा तो वह बिलबिला उठा और अपनी गर्दन (ज़मीन पर) रख दी, नबी ﷺ वहां ठहर गए और फ़रमाया: “इस ऊंट का मालिक कहाँ है?” वह आप की खिदमत में आया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे मुझे फरोख्त कर दो”, उस ने अर्ज़ किया, नहीं, हम अल्लाह के रसूल! आप को वैसे ही हिब्बा कर देते है, लेकिन अर्ज़ यह है कि यह जिस घराने का है इन की मैशत का सहारा सिर्फ इसी पर है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “सुन ले जो तूने उसकी यह सूरत बयान की तो उस ने कसरते अमल और किल्लते खुराक की शिकायत की थी तुम उस के साथ अच्छा सुलूक करो”, फिर हमने सफ़र शुरू किया हत्ता कि हमने एक जगह कयाम किया तो नबी ﷺ सो गए, एक दरख्त ज़मीन फाड़ता हुआ आया हत्ता कि उस ने आप को ढांप लिया, और फिर वापस अपनी जगह पर चला गया, जब रसूलुल्लाह ﷺ बेदार हुए तो मैंने आप से इस का ज़िक्र किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये वह दरख्त है जिस ने अपने रब से इजाज़त तलब की के वह रसूलुल्लाह ﷺ को सलाम करे लिहाज़ा इसे इजाज़त दी गई”, रावी बयान करते हैं, फिर हमने सफ़र शुरू किया तो हम पानी के करीब से गुज़रे वहां एक औरत अपने मजनून बेटे को लेकर आप ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुई, नबी ﷺ ने इसे उसकी नाक से पकड़ कर फ़रमाया: “निकल जा, क्योंकि मैं मुहम्मद अल्लाह का रसूल हूँ”, फिर हमने सफ़र शुरू कर दिया, जब हम वापस आए और इसी पानी के मक़ाम से गुज़रे तो आप ने इस औरत से इस बच्चे के मुतल्लिक दरियाफ्त फ़रमाया तो उस ने अर्ज़ किया, उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को हक़ के साथ मबउस फ़रमाया! हमने आप ﷺ के बाद उसकी तरफ से कोई नागवार चीज़ नहीं देखी| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه البغوی فی شرح السنة (13 / 295296 ح 3718) [و احمد (4 / 173 ح 17708) * فیه عبدالله بن حفص : مجھول و عطاء بن السائب : اختلط ، رواه عنه معمر وله شواهد ضعیفة عند الحاکم (2 / 617618) و احمد (4 / 170) وغیرهما

٥٩٢٣ - (ضَعِيف) وَعَن»» ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: إِنَّ امْرَأَةً جَاءَتْ بابنٍ لَهَا إلى رَسُول اللَّهِ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ يارسول اللَّهِ إِنَّ ابْنِي بِهِ جُنُونٌ وَأَنَّهُ لَيَأْخُذُهُ عِنْدَ غَدَائِنَا وَعَشَائِنَا (فَيَخْبُثُ عَلَيْنَا)»» فَمَسَحَ رَسُولُ اللَّهِ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَدْرَهُ وَدَعَا فَثَعَّ ثَعَّةً وَخَرَجَ مِنْ جَوْفِهِ مِثْلُ الجرو الْأَسود يسْعَى. رَوَاهُ الدَّارِمِيّ

5923. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, एक औरत अपना बेटा लेकर रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुई तो उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मेरे बेटे को जूनून है और इसे सुबह व शाम उस का दोरा पड़ता है, रसूलुल्लाह ﷺ ने उस के सीने पर हाथ फेरा और दुआ फरमाई उस ने एक ज़ोर दार कै की तो उस के पट से काले कुत्ते का पिल्ला दोड़ता हुआ निकल गया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمی (1 / 1112 ح 19) * فيه فرقد السبخی وهو ضعيف

٥٩٢٤ - (صَحِيح) وَعَن»» أنس بن مَالك قَالَ جَاءَ جِبْرِيلُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ جَالس حَزِين وَقد تخضب بِالدَّمِ من فعل أهل مَكَّة من قُرَيْش فَقَالَ جِبْرِيل يَا رَسُول الله هَل تحب أَن أريك آيَةً قَالَ نَعَمْ فَنَظَرَ إِلَى شَجَرَةٍ مِنْ وَرَائِهِ فَقَالَ ادْعُ بِهَا فَدَعَا بِهَا فَجَاءَتْ وَقَامَت بَيْنَ يَدَيْهِ فَقَالَ مُرْهَا فَلْتَرْجِعْ فَأَمَرَهَا فَرَجَعَتْ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حسبي حسبي. رَوَاهُ الدَّارِمِيّ

5924. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जिब्राइल अलैहिस्सलाम नबी ﷺ के पास तशरीफ़ लाए जबकि आप ग़मगीन बैठें हुए थे और आप मक्का वालो के नारवा सुलूक से खून से रंगीन हो चुके थे, उन्होंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! क्या आप पसंद करते हैं की हम आप को एक निशानी दिखाए? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ", जिब्राइल अलैहिस्सलाम ने आप के पीछे से एक दरख्त देखा, और फ़रमाया इसे बूलाएँ, आप ने इसे बुलाया तो वह आया और आप के सामने खड़ा हो गया, फिर आप ने कहा इसे वापस जाने का हुक्म फरमाइए, उन्होंने इसे हुक्म फ़रमाया, तो वह वापस चला गया, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मेरे लिए काफी है, मेरे लिए काफी है"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمی (1 / 1213 ح 23) [و ابن ماجه (4028)] * فيه الاعمش مدلس و عنعن

٥٩٢٥ - (صَحِيح) وَعَن»» ابْنِ عُمَرَ قَالَ كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سَفَرٍ فَأَقْبَلَ أَعْرَابِي فَلَمَّا دنا مِنْهُ قَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولَهُ قَالَ وَمَنْ يَشْهَدُ عَلَى مَا تَقُولُ؟ قَالَ: «هَذِهِ السَّلَمَةُ» فَدَعَاهَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ بِشَاطِئِ الْوَادِي فَأَقْبَلَتْ تَخُدُّ الْأَرْضَ حَتَّى قَامَتْ بَيْنَ يَدَيْهِ فَاسْتَشْهِدْهَا ثَلَاثًا فَشَهِدَتْ ثَلَاثًا أَنَّهُ كَمَا قَالَ ثُمَّ رجعتْ إِلَى منبتِها. رَوَاهُ الدَّارِمِيّ

5925. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, हम एक सफ़र मैं रसूलुल्लाह ﷺ के साथ थे, एक आराबी आया, जब वह करीब आ गया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे फ़रमाया: "क्या तुम गवाही देते हो के अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, वह यकता है, उस का कोई शरीक नहीं और यह कि मुहम्मद ﷺ उस के बंदे और उस के रसूल हैं", उस ने कहा: आप जो फरमा रहे हैं उस पर कौन गवाही देता है? आप ﷺ ने फ़रमाया: "ये खारदार दरख्त", रसूलुल्लाह

ﷺ ने इसे बुलाया और वह वादी के किनारे पर था वह ज़मीन फाड़ता हुआ आया हत्ता कि वह आप के सामने खड़ा हो गया, आप ने उस से तीन मर्तबा गवाही तलब की तो उस ने तीन मर्तबा गवाही दी के आप की शान वही है जैसे के आप ﷺ ने फ़रमाया है, फिर वह अपने उगने की जगह पर चला गया| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الدارمی (1 / 10 ح 16)

٥٩٢٦ - (صَحِيح) وَعَن»» ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ جَاءَ أَعْرَابِيٌّ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: بِمَا أَعْرِفُ أَنَّكَ نَبِيٌّ؟ قَالَ: «إِنْ دَعَوْتَ هَذَا الْعِذْقَ مِنْ هَذِهِ النَّخْلَةِ يَشْهَدُ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ» فَدَعَاهُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَجَعَلَ يَنْزِلُ مِنَ النَّخْلَةِ حَتَّى سَقَطَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ قَالَ: «ارْجِعْ» فَعَادَ فَأَسْلَمَ الْأَعْرَابِيُّ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَصَححهُ

5926. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, एक आराबी रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ और उस ने अर्ज़ किया, मुझे किस तरह पता चले के आप नबी है? आप ﷺ ने फ़रमाया: "अगर में खजूर के इस दरख़्त से इस खोशे को बुलाऊं और वह गवाही दे की मैं अल्लाह का रसूल हूँ (तो फिर ठीक है)", रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे बुलाया तो वह खजूर के दरख्त से उतर कर नबी ﷺ की खिदमत में पेश हो गया, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: "वापिस चले जाओ", वह वापस चला गया, और आराबी ने इस्लाम कबूल कर लिया| तिरमिज़ी, और उन्होंने इसे सहीह करार दिया है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (3628) * شريک مدلس و عنعن وله شواهد ضعيفة

٥٩٢٧ - (صَحِيح) وَعَن»» أبي هريرةَ قَالَ جَاءَ ذِئْبٌ إِلَى رَاعِي غَنَمٍ فَأَخَذَ مِنْهَا شَاةً فَطَلَبَهُ الرَّاعِي حَتَّى انْتَزَعَهَا مِنْهُ قَالَ فَصَعِدَ الذئبُ على تل فأقعى واستذفر فَقَالَ عَمَدت إِلَى رزق رزقنيه الله عز وَجل أخذتُه ثمَّ انتزعته مِنِّي فَقَالَ الرَّجُلُ تَاللَّهِ إِنْ رَأَيْتُ كَالْيَوْمِ ذئبا يَتَكَلَّمُ فَقَالَ الذِّئْبُ أَعْجَبُ مِنْ هَذَا رَجُلٌ فِي النَّخَلَاتِ بَيْنَ الْحَرَّتَيْنِ يُخْبِرُكُمْ بِمَا مَضَى وَبِمَا هُوَ كَائِن بعدكم وَكَانَ الرجل يَهُودِيًا فجَاء الرجل إِلَى النَّبِي صلى الله عَلَيْهِ وَسلم فَأسلم وَخَبره فَصَدَّقَهُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّهَا أَمارَة من أَمَارَاتٌ بَيْنَ يَدَيِ السَّاعَةِ قَدْ أَوْشَكَ الرَّجُلُ أَن يخرج فَلَا يرجع حَتَّى تحدثه نعلاه وَسَوْطه مَا أَحْدَثَ أَهْلُهُ بَعْدَهُ ". رَوَاهُ فِي شَرْحِ السُّنَّةِ

5927. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक भेड़िया बकरियों के रेवड़ के चरवाहे के पास आया और उस ने वहां से एक बकरी उठा ली, चरवाहे ने उस का पीछा किया हत्ता कि उस को उस से छुड़ा लिया, रावी बयान करते हैं, भेड़िया एक टीले पर चढ़ गया, और वहां सुरिन के बल बैठ गया और दूम दोनों पाँव के दरमियान दाखिल कर ली, फिर उस ने कहा: मैंने रोज़ी का क़सद किया जो अल्लाह ने मुझे अता की थी और मैंने इसे हासिल कर लिया था, मगर तूने इसे मुझ से छुड़ा लिया, इस आदमी ने कहा: अल्लाह की क़सम! मैंने आज के दिन की तरह कोई भेड़िया बोलते हुए नहीं देखा, भेड़िये ने कहा उस से भी अजीब बात यह है कि आदमी (मुहम्मद ﷺ) जो दो पहाड़ो के दरमियान वाकेअ नखलिस्तान (मदीना) में रहता है, वह तुम्हें माज़ी और हाल के वाकिअत के मुतल्लिक बताता है, रावी बयान करते हैं, वह शख़्स यहूदी था, वह नबी ﷺ के पास आया तो उस ने इस वाकिए के मुतल्लिक आप को बताया और

इस्लाम कबूल कर लिया, नबी ﷺ ने उसकी तस्दीक फरमाई, फिर नबी ﷺ ने फ़रमाया: “ये कियामत से पहले की निशानिया हैं, करीब है के आदमी (घर से) निकले, फिर वह वापस आए तो उस के जूते और उस का कोड़ा इसे उन हालात के मुतल्लिक बताइए जो उस के बाद उस के अहले खाना के साथ पेश आए हो”| (सहीह)

صحیح ، رواہ البغوی فی شرح السنة (15 / 87 ح 4282) [و احمد (2 / 306 ح 8049 و سندہ حسن)] * ولہ شاھد عند احمد (3 / 8384) و صححہ الحاکم (4 / 467468) و وافقہ الذھبی و اصلہ فی سنن الترمذی (2181 وھو حدیث صحیح)

٥٩٢٨ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَبِي الْعَلَاءِ عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدَبٍ قَالَ كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَتَدَاوَلُ مِنْ قَصْعَةٍ مِنْ غُدْوَةٍ حَتَّى اللَّيْلِ يَقُومُ عَشَرَةٌ وَيَقْعُدُ عَشَرَةٌ قُلْنَا: فَمِمَّا كَانَتْ تُمَدُّ؟ قَالَ: مِنْ أَيْ شَيْءٍ تَعْجَبُ؟ مَا كَانَت تمَدّ إِلا من هَهنا وَأَشَارَ بِيَدِهِ إِلَى السَّمَاءِ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ

5928. अबू अल अलाइ, समुरह बिन जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा, हम नबी ﷺ के साथ एक बर्तन से दिन भर बारी बार तनावुल करते रहे, वह इस तरह के दस खा जाते और दस आ जाते, हमने कहा: कहाँ से बढ़ाया जा रहा था? उन्होंने (समुरह (र)) ने फ़रमाया: तुम किस चीज़ से ताज्जुब करते हो? उस में इज़ाफा तो इस तरफ से हो रहा था, और उन्होंने अपने हाथ से आसमान की तरफ इरशाद फ़रमाया| (सहीह)

اسنادہ صحیح ، رواہ الترمذی (3625 وقال : حسن صحیح) و الدارمی (1 / 30 ح 57)

٥٩٢٩ - (حسن) وَعَنْ»» عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَرَجَ يَوْمَ بَدْرٍ فِي ثَلَاثِمِائَةٍ وَخَمْسَةَ عَشَرَ قَالَ: «اللَّهُمَّ إِنَّهُمْ حُفَاةٌ فَاحْمِلْهُمْ اللَّهُمَّ إِنَّهُمْ عُرَاةٌ فَاكْسُهُمْ اللَّهُمَّ إِنَّهُمْ جِيَاعٌ فَأَشْبِعْهُمْ» فَفَتَحَ اللَّهُ لَهُ فَانْقَلَبُوا وَمَا مِنْهُمْ رَجُلٌ إِلَّا وَقَدْ رَجَعَ بِجَمَلٍ أَوْ جَمَلَيْنِ وَاكْتَسَوْا وَشَبِعُوا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5929. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ बद्र के रोज़ तीन सौ पन्द्रह सहाबा किराम के साथ रवाना हुए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह यह नंगे पाँव हैं, तो उन्हें सवारी अता फरमा, ऐ अल्लाह! यह नंगे बदन हैं, तो उन्हें लिबास अता फरमा, ऐ अल्लाह! यह भूख का शिकार हैं, तो उन्हें शक्म सैर फरमा”, अल्लाह ने आप ﷺ को फतह दी, आप वापस आए तो उनमें से हर आदमी के पास एक या दो ऊंट थे, उनके पास लिबास भी था और वह भरपेट भी थे| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ ابوداؤد (2747)

٥٩٣٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ»» مَسْعُودٍ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قا ل: «إِنَّكُمْ مَنْصُورُونَ وَمُصِيبُونَ وَمَفْتُوحٌ لَكُمْ فَمَنْ أَدْرَكَ ذَلِكَ مِنْكُمْ فَلْيَتَّقِ اللَّهَ وَلْيَأْمُرْ بِالْمَعْرُوفِ وَلْيَنْهَ عَنِ الْمُنكر» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5930. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हारी (दुश्मन के

खिलाफ) मदद की जाएगी, तुम माले गनीमत हासिल करोगे, तुम (बहोत से मुल्क) फतह करोगे तुम में से जो शख़्स यह मज्कुरह चीज़े पा ले तो वह अल्लाह से डरे, नेकी का हुक्म करे और बुराई से मना करे”| (सहीह)

صحیح ، رواہ ابوداؤد (5118 مختصرًا جدًا ولم یذکر ھذا اللفظ و سندہ صحیح) [و ابوداؤد الطیالسی (337) و الترمذی (2257)]

٥٩٣١ - (صَحِيح) وَعَن»» جابر بِأَن يَهُودِيَّةً مِنْ أَهْلِ خَيْبَرَ سَمَّتْ شَاةً مَصْلِيَّةً ثُمَّ أَهْدَتْهَا لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخَذَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الذِّرَاعَ فَأَكَلَ مِنْهَا وَأَكَلَ رَهْطٌ مِنْ أَصْحَابِهِ مَعَهُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ارْفَعُوا أَيْدِيَكُمْ وَأَرْسَلَ إِلَى الْيَهُودِيَّةِ فَدَعَاهَا فَقَالَ سممتِ هَذِهِ الشَّاةَ فَقَالَتْ مَنْ أَخْبَرَكَ قَالَ أَخْبَرَتْنِي هَذِهِ فِي يَدي للذِّراع قَالَت نعم قَالَت قلت إن كَانَ نَبيا فَلَنْ يضرّهُ وَإِنْ لَمْ يَكُنْ نَبِيًّا اسْتَرَحْنَا مِنْهُ فَعَفَا عَنْهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَمْ يُعَاقِبْهَا وَتُوفِّي بعض أَصْحَابُهُ الَّذِينَ أَكَلُوا مِنَ الشَّاةِ وَاحْتَجَمَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى كَاهِلِهِ مِنْ أَجْلِ الَّذِي أَكَلَ مِنَ الشَّاةِ حَجَمَهُ أَبُو [ص:١٦٦ هِنْدٍ بِالْقَرْنِ وَالشَّفْرَةِ وَهُوَ مَوْلًى لِبَنِي بَيَاضَةَ مِنَ الْأَنْصَارِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالدَّارِمِيُّ

5931. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के अहल खैबर की एक यहूदी औरत ने एक भुनी हुई बकरी में ज़हर मिला दिया, फिर इसे रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हदिया के तौर पर भेज दिया, रसूलुल्लाह ﷺ ने दस्ती ली और उस से खाया और आप के चंद सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने भी आप के साथ खाया, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अपने हाथ (खाने से) उठा लो”, आप ने यहूदी औरत को बूला भेजा और फ़रमाया: “क्या तूने इस बकरी में ज़हर मिलाया था ?” उस ने कहा: आप को किस ने बताया है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “मेरे हाथ में यह जो दस्ती है उस ने मुझे बताया है”, उस ने अर्ज़ किया, जी हाँ! मैंने कहा: अगर तो वह सच्चे नबी हुए तो यह इसे नुकसान नहीं पहुंचाएगी, और अगर वह सच्चे नबी न हुए तो हम उस से आराम पा जाएँगे, रसूलुल्लाह ﷺ ने उस को मुआफ़ फरमा दिया और इसे सज़ा न दि, और आप के जिन सहाबा किराम ने बकरी का गोश्त खाया था वह फौत हो गए, जबकि रसूलुल्लाह ﷺ ने बकरी का गोश्त खाने की वजह से अपने कंधो के दरमियान पछने (हिजामा) लगवाए, अबू हिन्द जो के अंसार कबिले बनू बयाज़ा के आज़ाद करदा गुलाम थे, उन्होंने संगी और छुरी के साथ आप ﷺ के पछने (हिजामा) लगाए थे| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ ابوداؤد (4510) و الدارمی (1 / 33 ح 69)* الزھری عن جابر : منقطع ’’ لم یسمع منہ ‘‘ انظر تحفۃ الاشراف (2 / 356)

٥٩٣٢ - (صَحِيح) وَعَن»» سهل ابْنِ الْحَنْظَلِيَّةِ أَنَّهُمْ سَارُوا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ حُنَيْنٍ فَأَطْنَبُوا السَّيْرَ حَتَّى كَانَت عَشِيَّةً فَجَاءَ فَارِسٌ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي طَلِعْتُ عَلَى جَبَلِ كَذَا وَكَذَا فَإِذَا أَنَا بِهَوَازِنَ عَلَى بَكْرَةِ أَبِيهِمْ بِظُعُنِهِمْ وَنَعَمِهِمُ اجْتَمَعُوا إِلَى حُنَيْنٍ فَتَبَسَّمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَالَ تِلْكَ غَنِيمَةُ الْمُسْلِمِينَ غَدا إِن شَاءَ الله ثمَّ قَالَ مَنْ يَحْرُسُنَا اللَّيْلَةَ قَالَ أَنَسُ بْنُ أَبِي مَرْثَدٍ الْغَنَوِيُّ أَنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ ارْكَبْ فَرَكِبَ فَرَسًا لَهُ فَقَالَ: «اسْتَقْبِلْ هَذَا الشِّعْبَ حَتَّى تَكُونَ فِي أَعْلَاهُ» . فَلَمَّا أَصْبَحْنَا خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى مُصَلَّاهُ فَرَكَعَ رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ قَالَ هَلْ حسستم فارسكم قَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا حَسِسْنَا فَثُوِّبَ بِالصَّلَاةِ فَجَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي وَهُوَ يَلْتَفِتُ إِلَى الشِّعْبِ حَتَّى إِذَا قَضَى الصَّلَاةَ قَالَ أَبْشِرُوا فَقَدْ جَاءَ فَارِسُكُمْ فَجَعَلْنَا نَنْظُرُ إِلَى خِلَالِ الشَّجَرِ فِي الشِّعْبِ فَإِذَا هُوَ قَدْ جَاءَ حَتَّى وَقَفَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسلم فَقَالَ إِنِّي انْطَلَقْتُ حَتَّى كُنْتُ فِي أَعْلَى هَذَا الشِّعْبِ حَيْثُ أَمَرَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

فَلَمَّا أَصبَحت اطَّلَعت الشِّعْبَيْنِ كِلَيْهِمَا فَلَمْ أَرَ أَحَدًا فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم هَلْ نَزَلْتَ اللَّيْلَةَ قَالَ لَا إِلَّا مُصَلِّيًا أَوْ قَاضِيَ حَاجَةٍ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «فَلَا عَلَيْكَ أَنْ لَا تَعْمَلَ بعدَها» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5932. सहल बिन हंजलीय्या रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के गज़वा ए हुनैन के मौके पर उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ सफ़र किया, उन्होंने सफ़र जारी रखा हत्ता कि पिछला पहर हो गया, एक घुड़सवार आया और उस ने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मैं फलां फलां पहाड़ के ऊपर चढ़ा हो और मैंने अचानक हवाज़ीन कबिले को देखा है के वह सब के सब अपने मवेशियों और अपने अमवाल के साथ हुनैन की तरफ इकठ्ठे हो रहे हैं, इस पर रसूलुल्लाह ﷺ मुस्कुराए और फ़रमाया: "इंशाअल्लाह तआला कल वह मुसलमानों का माले गनीमत होगा", फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: "आज रात हमारा पहरा कौन देगा ?" अनस बिन अबी मर्सडी गंविय्य रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! में, आप ﷺ ने फ़रमाया: "सवार हो जाओ", वह अपने घोड़े पर सवार हुए, आप ﷺ ने फ़रमाया: "इस घाटी की तरफ जाओ हत्ता कि तुम उसकी चोटी पर पहुँच जाओ", जब सुबह हुई तो रसूलुल्लाह ﷺ अपने जाए नमाज़ पर तशरीफ़ ले गए और दो रक्अत नमाज़ अदा की, फिर फ़रमाया: "क्या तुम ने अपने घुड़सवार को महसूस किया ?" एक आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हमने महसूस नहीं किया नमाज़ के लिए इकामत कही गई तो रसूलुल्लाह ﷺ दौरान ए नमाज़ इस घाटी की तरफ तवज्जो फरमाते रहे हत्ता कि जब आप ﷺ नमाज़ पढ़ चुके तो फ़रमाया: "खुश हो जाओ तुम्हारा घुड़सवार आ गया है", हम भी दरख्तों के दरमियान इस घाटी की तरफ देखने लगे तो वह अचानक आ गया हत्ता के रसूलुल्लाह ﷺ के पास आकर खड़ा हो गया तो उस ने अर्ज़ किया, मैं चलता गया हत्ता कि मैं रसूलुल्लाह ﷺ के फरमान के मुताबिक इस घाटी के बुलंद तरीन हिस्से पर था, जब सुबह हुई तो मैं इन दोनों घाटियों के अतराफ़ से हो आया हूँ, लेकिन मैंने किसी को नहीं देखा, रसूलुल्लाह ﷺ ने उन से पूछा: "क्या रात के वक़्त तुम (अपने घोड़े से) नीचे उतरे थे ?" उन्होंने अर्ज़ किया, नमाज़ पढ़ने या कजाए हाजत के अलावा में नहीं उतरा, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अगर तुम इस (रात) के बाद कोई भी नेक अमल न करो तो तुम पर कोई मुआखिज़ा (इलज़ाम) नहीं|" (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2501)

٥٩٣٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» هُرَيْرَةَ قَالَ أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِتَمَرَاتٍ فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ ادْعُ اللَّهَ فِيهِنَّ بِالْبَرَكَةِ فَضَمَّهُنَّ ثُمَّ دَعَا لِي فِيهِنَّ بِالْبركَةِ فَقَالَ خذهن واجعلهن فِي مِزْوَدِكَ كُلَّمَا أَرَدْتَ أَنْ تَأْخُذَ مِنْهُ شَيْئًا فَأَدْخِلْ فِيهِ يَدَكَ فَخُذْهُ وَلَا تَنْثُرْهُ [ص:١٦٦ نَثْرًا فَقَدْ حَمَلْتُ مِنْ ذَلِكَ التَّمْرِ كَذَا وَكَذَا مِنْ وَسْقٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَكُنَّا نَأْكُلُ مِنْهُ وَنُطْعِمُ وَكَانَ لَا يُفَارِقُ حَقْوِي حَتَّى كَانَ يَوْمُ قَتْلِ عُثْمَانَ فَإِنَّهُ انْقَطَعَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5933. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं कुछ खजूरे लेकर नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! उनमें बरकत के लिए दुआ फरमाइए, आप ﷺ ने उन्हें इकट्ठा किया फिर मेरे लिए उनमें बरकत की दुआ फरमाई, और फ़रमाया: "उन्हें ले लो और उन्हें अपने तोशादान में रख लो, जब भी तुम उनमें से कुछ लेना चाहो तो उस में अपना हाथ डालकर ले लेना और उन्हें मुकम्मल तौर पर बाहर न निकालना", मैंने उनमें से इतने इतने वुसक खजूर अल्लाह की राह में अता किए, हम खुद भी उस में से खाते थे और खिलाते भी थे, और वह

मेरी कमर से अलग नहीं होता था हत्ता कि उस्मान रदियल्लाहु अन्हु की शहादत के रोज़ वह मुन्कतेअ हो कर गिर पड़ा| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3839 وقال : حسن غريب)

بَاب فِي المعجزات • मौजिज़े का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٥٩٣٤ - (ضَعِيف) وَعَن»» ابْن عبَّاس قَالَ تَشَاوَرَتْ قُرَيْشٌ لَيْلَةً بِمَكَّةَ فَقَالَ بَعْضُهُمْ إِذَا أَصْبَحَ فَأَثْبِتُوهُ بِالْوِثَاقِ يُرِيدُونَ النَّبِيَّ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم وَقَالَ بَعْضُهُمْ بَلِ اقْتُلُوهُ وَقَالَ بَعْضُهُمْ بَلْ أَخْرِجُوهُ فَأطلع الله عز وَجل نَبِيَّهُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى ذَلِكَ فَبَاتَ عَلِيّ عَلَى فِرَاشِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تِلْكَ اللَّيْلَةَ وَخَرَجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى لَحِقَ بِالْغَارِ وَبَاتَ الْمُشْرِكُونَ يَحْرُسُونَ عَلِيًّا يَحْسَبُونَهُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمَّا أَصْبحُوا ثَارُوا إِلَيْهِ فَلَمَّا رَأَوْا عَلِيًّا رَدَّ اللَّهُ مَكْرَهُمْ فَقَالُوا أَيْنَ صَاحِبُكَ هَذَا قَالَ لَا أَدْرِي فَاقْتَصُّوا أَثَرَهُ فَلَمَّا بَلَغُوا الْجَبَلَ اخْتَلَطَ عَلَيْهِمْ فَصَعِدُوا فِي الْجَبَلَ فَمَرُّوا بِالْغَارِ فَرَأَوْا عَلَى بَابِهِ نَسْجَ الْعَنْكَبُوتِ فَقَالُوا لَوْ دَخَلَ هَاهُنَا لَمْ يَكُنْ نَسْجُ الْعَنْكَبُوتِ عَلَى بَابِهِ فَمَكَثَ فِيهِ ثَلَاثَ لَيَال. رَوَاهُ أَحْمد

5934. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, कुरैश ने एक रात मक्का में मशवरा किया तो उनमें से किसी ने कहा जब सुबह हो तो उस को क़ैद कर दो, उनकी मुराद नबी ﷺ थे, किसी ने कहा: नहीं, बल्कि इसे क़त्ल कर दो, और किसी ने कहा नहीं बल्कि इसे (मक्के से) निकाल बाहर करो, अल्लाह ने अपने नबी ﷺ को इस (मंसूबें) पर मुत्तिला कर दिया, इस रात अली रदियल्लाहु अन्हु ने नबी ﷺ के बिस्तर पर रात बसर की और नबी ﷺ वहां से चल दिए हत्ता कि आप ग़ार में पहुँच गए, जबकि मुशरिकीन पूरी रात अली रदियल्लाहु अन्हु पर पहरा देते रहे और वह समझते रहे के वह नबी ﷺ है, जब सुबह हुई तो वह इन पर हमलावर हुए, जब उन्होंने देखा के यह तो अली रदियल्लाहु अन्हु है, अल्लाह ने उनका मंसूबा नाकाम बना दिया, उन्होंने पूछा तुम्हारा साथी कहाँ है? उन्होंने ने फ़रमाया: मैं नहीं जानता, उन्होंने आप ﷺ के कदमो के निशानात का खोज लगाया जब वह पहाड़ पर पहुंचे तो इन पर मुआमला मुश्तबाह हो गया, वह पहाड़ पर चढ़ गए और ग़ार के पास से गुज़रे, उन्होंने उस के दरवाज़े पर मकड़ी का जाल देखा और उन्होंने कहा: अगर वह उस में दाखिल हुए होते तो उस के दरवाज़े पर मकड़ी का जाल न होता, आप ﷺ ने वहां तीन रोज़ कयाम फ़रमाया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (1 / 348 ح 3251) * فيه عثمان الجزرى بن عمرو بن ساج : فيه ضعيف

٥٩٣٥ - (صَحِيح) وَعَن»» أَبي هُرَيْرَة أَنه قَالَ لَمَّا فُتِحَتْ خَيْبَرُ أَهْدِيَتْ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَاةٌ فِيهَا سُمٌّ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اجْمَعُوا لي من كَانَ هَا هُنَا من الْيَهُود فَجمعُوا لَهُ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنِّي سَائِلُكُمْ عَنْ شَيْءٍ فَهَلْ أَنْتُمْ صادقي عَنهُ فَقَالُوا نَعَمْ يَا أَبَا الْقَاسِمِ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ أَبُوكُمْ قَالُوا فلَان فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَذبْتُمْ بل أبوكم فلَان فَقَالُوا صدقت وبررت قَالَ: «هَلْ أَنْتُمْ مُصَدِّقِيَّ عَنْ شَيْءٍ إِنْ سَأَلْتُكُمْ [ص:١٦٧ عَنْهُ» قَالُوا نَعَمْ يَا أَبَا الْقَاسِمِ وَإِنْ كَذَبْنَاكَ عَرَفْتَ كَمَا عَرَفْتَهُ فِي أَبِينَا قَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ أَهْلُ النَّارِ قَالُوا نَكُونُ فِيهَا يَسِيرًا ثمَّ تخلفوننا فِيهَا فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اخْسَئُوا فِيهَا وَاللَّهِ لَا نَخْلُفُكُمْ فِيهَا أبدا ثمَّ قَالَ لَهُم فَهَلْ أَنْتُمْ مُصَدِّقِيَّ عَنْ شَيْءٍ إِنْ سَأَلْتُكُمْ عَنهُ قَالُوا نَعَمْ يَا أَبَا الْقَاسِمِ قَالَ: «هَلْ جَعَلْتُمْ فِي هَذِه الشَّاة سما» . قَالُوا نعم فَقَالَ مَا حملكم على ذَلِك فَقَالُوا أردنَا إِن كنت كذابا نستريح مِنْك وَإِن كنت نَبيا لم يَضرك. رَوَاهُ البُخَارِيّ

5935. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब खैबर फतह हुआ तो रसूलुल्लाह ﷺ को एक बकरी का हदिया पेश किया गया जिस में ज़हर था, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “यहाँ जितने यहूदी मौजूद है उन्हें मेरे पास जमा करो”, चुनांचे वह सब रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में पेश कर दिए गए, आप ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: “मैं तुम से एक चीज़ के मुतल्लिक सवाल करने लगा हूँ, क्या तुम उस के मुतल्लिक मुझे सच सच बताओगे ?” उन्होंने कहा: जी हाँ! अबुल कासिम! रसूलुल्लाह ﷺ ने उन से पूछा: “तुम्हारे बाप कौन थे ?” उन्होंने बताया: फलां, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम झूठ बोलते हो बल्कि तुम्हारा बाप तो फलां है”, उन्होंने कहा: आप ने सच फ़रमाया, और अच्छा किया, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर में तुम से किसी चीज़ के मुतल्लिक दरियाफ्त करूँ तो तुम मुझे सच सच बताओगे ?” उन्होंने कहा: जी हाँ! अबुल कासिम अगर हमने आप से झूठ बोला तो आप समझ जाएँगे जिस तरह आप ने हमारे बाप के बारे में (हमारा झूठ) जान लिया था, आप ﷺ ने उन से पूछा: “जहन्नमी कौन है?” उन्होंने कहा: कुछ मुद्दत के लिए हम उस में जाएँगे, फिर हमारी जगह तुम वहां जाओगे, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम ही उस में ज़लील हो कर रहोगे, क्योंकि हम उस में तुम्हारी जगह कभी भी दाखिल नहीं होंगे”, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं तुम से एक चीज़ के बारे में सवाल करता हूँ क्या तुम मुझे सच सच जवाब दोगे ?” उन्होंने कहा: हाँ, अबुल कासिम! आप ﷺ ने पूछा: “क्या तुम ने इस बकरी (के गोश्त) में ज़हर मिलाया है?” उन्होंने कहा: जी हाँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: “किसी चीज़ ने तुम्हें उस पर अमादा किया ?” उन्होंने कहा, हम ने इसलिए किया के अगर आप झूठे हुए तो हमें आप से आराम मिल जाएगा और अगर आप सच्चे हुए तो आप को नुकसान नहीं पहुंचेगा| (बुखारी)

رواه البخارى (3169)

٥٩٣٦ - (صَحِيح) وَعَن»» عَمْرو بن أخطَب الْأَنْصَارِيّ قَالَ صَلَّى بِنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمًا الْفَجْر وَصعد الْمِنْبَرِ فَخَطَبَنَا حَتَّى حَضَرَتِ الظُّهْرُ فَنَزَلَ فَصَلَّى ثمَّ صعِد الْمِنْبَر فَخَطَبَنَا حَتَّى حَضَرَتِ الْعَصْرُ ثُمَّ نَزَلَ فَصَلَّى ثُمَّ صَعِدَ الْمِنْبَرَ حَتَّى غَرَبَتِ الشَّمْسُ فَأَخْبَرَنَا بِمَا هُوَ كَائِنٌ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ فَأَعْلَمُنَا أحفظنا. رَوَاهُ مُسلم

5936. उमर बिन अख्तब अंसारी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें फज्र की नमाज़ पढ़ाई और मिम्बर पर तशरीफ़ ले गए, हमें ख़िताब फ़रमाया हत्ता कि ज़ुहर का वक़्त हो गया, फिर आप मिम्बर से उतरे और नमाज़ पढ़ाई फिर मिम्बर पर तशरीफ़ ले गए और हमें ख़िताब फ़रमाया हत्ता कि नमाज़ ए असर का वक़्त हो गया, फिर आप नीचे तशरीफ़ लाए और नमाज़ पढ़ाई, फिर मिम्बर पर तशरीफ़ ले गए और (खिताब फ़रमाया) हत्ता कि सूरज गुरूब हो गया, आप ने कियामत तक होने वाले वाकिअत के मुतल्लिक हमें बयान फ़रमाया, रावी बयान करते

हैं, हम में से ज़्यादा आलम वह है जो इस खुत्बे को हम में से ज़्यादा याद रखने वाला है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (25 / 2892)، (7267)

٥٩٣٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ مَعْنِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ سَمِعْتُ أَبِي قَالَ: سَأَلْتُ مَسْرُوقًا: مَنْ آذَنَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالْجِنِّ لَيْلَةَ اسْتَمَعُوا الْقُرْآنَ؟ قَالَ حَدَّثَنِي أَبُوكَ يَعْنِي عَبْدَ اللَّهِ ابْن مَسْعُودٍ أَنَّهُ قَالَ: آذَنَتْ بِهِمْ شَجَرَةٌ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5937. मअन बिन अब्दुल रहमान बयान करते हैं, मैंने अपने वालिद से सुना, उन्होंने कहा: मैंने मसरुक से दरियाफ्त किया जिस रात जिन्नो ने कुरान सुना था उसकी खबर नबी ﷺ को किस ने दी थी? उन्होंने बताया: मुझे तुम्हारे वालिद यानी अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु ने बयान किया के उन के मुतल्लिक एक दरख्त ने इत्तिला दी थी| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (3859) و مسلم (153 / 450)، (1011)

٥٩٣٨ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَنَسٍ قَالَ كُنَّا مَعَ عُمَرَ بَيْنَ مَكَّةَ وَالْمَدِينَةِ فَتَرَاءَيْنَا الْهِلَالَ وَكُنْتُ رَجُلًا حَدِيدَ الْبَصَرِ فَرَأَيْتُهُ وَلَيْسَ أَحَدٌ يَزْعُمُ أَنَّهُ رَآهُ غَيْرِي قَالَ فجعلتُ أقولُ لعُمر أما ترَاهُ فَجعل لَا يَرَاهُ قَالَ يَقُولُ عُمَرُ سَأَرَاهُ وَأَنَا مُسْتَلْقٍ عَلَى فِرَاشِي ثُمَّ أَنْشَأَ يُحَدِّثُنَا عَنْ أَهْلِ بدر فَقَالَ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يُرِينَا مَصَارِعَ أَهْلِ بَدْرٍ بِالْأَمْسِ يَقُولُ هَذَا مَصْرَعُ فُلَانٍ غَدًا إِنْ شَاءَ الله قَالَ فَقَالَ عمر فوالذي بَعثه بِالْحَقِّ مَا أخطئوا الْحُدُود الَّتِي حد رَسُول الله صلى الله عَلَيْهِ وَسلم قَالَ فَجُعِلُوا فِي بِئْرٍ بَعْضُهُمْ [ص:١٦٧ عَلَى بَعْضٍ فَانْطَلَقَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى انْتَهَى إِلَيْهِمْ فَقَالَ يَا فُلَانَ بْنَ فُلَانٍ وَيَا فُلَانَ بْنَ فُلَانٍ هَلْ وَجَدْتُمْ مَا وَعَدَكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ حَقًّا فَإِنِّي قَدْ وَجَدْتُ مَا وَعَدَنِي الله حَقًّا قَالَ عُمَرُ يَا رَسُولَ اللَّهِ كَيْفَ تُكَلِّمُ أَجْسَادًا لَا أَرْوَاحَ فِيهَا قَالَ مَا أَنْتُمْ بِأَسْمَعَ لِمَا أَقُولُ مِنْهُمْ غَيْرَ أَنَّهُمْ لَا يَسْتَطِيعُونَ أَن يَردُّوا عليَّ شَيْئا ". رَوَاهُ مُسلم

5938. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम उमर रदियल्लाहु अन्हु के साथ मक्का और मदीना के दरमियान थे, हमने चाँद देखने का इहतेमाम किया, मेरी नज़र तेज़ थी, लिहाज़ा मैंने इसे देख लिया, और मेरे सिवा किसी ने न कहा के उस ने इसे देखा है, मैं उमर रदियल्लाहु अन्हु से कहने लगा क्या आप इसे देख नहीं? है वह इसे नहीं देख पा रहे थे, रावी बयान करते हैं, उमर रदियल्लाहु अन्हु फरमाने लगे में अनकरीब इसे देखलूँगा, मैं अपने बिस्तर पर लेटा हुआ था, फिर उन्होंने अहले बद्र के मुतल्लिक हमें बताना शुरू किया, उन्होंने कहा के रसूलुल्लाह ﷺ बद्र के मौके पर कुफ्फार के क़त्लगाहों के मुतल्लिक एक रोज़ पहले ही बता रहे थे: “कल इंशाअल्लाह यहाँ फलां क़त्ल होगा और कल इंशाअल्लाह यहाँ फलां क़त्ल होगा”, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को हक़ के साथ मबउस फ़रमाया! रसूलुल्लाह ﷺ ने जिस जिस जगह की निशान देह फरमाई थी, उस में ज़रा भी फर्क नहीं आया था (वो वहीँ वहीँ क़त्ल हुए थे) रावी बयान करते हैं, इन सब को एक दूसरे पर कुंवो में डाल दिया गया फिर रसूलुल्लाह ﷺ वहां तशरीफ़ लाए और फ़रमाया: “ए फलां बिन फलां! ए फलां बिन फलां! अल्लाह और उस के रसूल ने तुझ से जो वादा फ़रमाया था क्या तुम ने इसे सच्चा पाया, क्योंकि अल्लाह ने मुझ से जो वादा फ़रमाया था मैंने तो उसे सच्चा पाया है”, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप बे रूह जिस्मों से कैसे कलाम फरमा

रहे हैं? आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं उन से जो कह रहा हूँ वह इसे तुम से ज़्यादा सुन रहे हैं लेकिन वह मुझे किसी चिज़ का जवाब नहीं दे सकते”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (76 / 2873)، (7222)

٥٩٣٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَيْسَةَ»» بِنْتِ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ عَنْ أَبِيهَا إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَخَلَ عَلَى زَيْدٍ يَعُودُهُ مِنْ مَرَضٍ كَانَ بِهِ قَالَ: «لَيْسَ عَلَيْكَ مِنْ مَرَضِكَ بَأْسٌ وَلَكِنْ كَيْفَ لَكَ إِذَا عُمِّرْتَ بَعْدِي فَعَمِيتَ؟» قَالَ: أَحْتَسِبُ وَأَصْبِرُ. قَالَ: «إِذًا تَدْخُلِ الْجَنَّةَ بِغَيْرِ حِسَاب» . قَالَ: فَعَمِيَ بَعْدَ مَا مَاتَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم ثمَّ ردَّ اللَّهُ بَصَره ثمَّ مَاتَ

5939. उनैस बिन्ते ज़ैद बिन अरकम अपने वालिद से रिवायत करती हैं की नबी ﷺ ज़ैद की बीमारी मैं इन की इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) के लिए तशरीफ़ ले गए तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हारी बीमारी खतरनाक नहीं, लेकिन तुम्हारी इस वक़्त क्या हालत होगी जब मेरे बाद तुम्हारी उमर दराज़ होगी और तुम अंधे हो जाओगे ?” उन्होंने अर्ज़ किया, मैं सवाब की उम्मीद रखते हुए सब्र करूँगा, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तब तुम बगैर हिसाब जन्नत में दाखिल हो जाओगे”, रावी बयान करती हैं, नबी ﷺ की वफात के बाद वह नाबीना हो गए, फिर अल्लाह ने उन्हें बसारत दी और फिर उन्होंने वफात पाई| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى دلائل النبوة (6 / 479) * فيه ’’ نباتة عن حمادة عن انيسة بنت زيد بن ارقم ‘‘ وهن مجهولات و من دونهن ينظر فيه

٥٩٤٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَسَامَةَ»» بْنِ زَيْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «من تَقول عَليّ مالم أَقُلْ فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ» . وَذَلِكَ أَنَّهُ بَعَثَ رَجُلًا فَكَذَبَ عَلَيْهِ فَدَعَا عَلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَوَجَدَ مَيِّتًا وَقد انشقَّ بَطْنه وَلم تقبله الأَرْض. رَوَاهُمَا الْبَيْهَقِيّ فِي دَلَائِل النُّبُوَّة

5940. उसामा बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने मेरे जिम्मे ऐसी बात लगाईं जो मैंने न कही हो तो वह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले”, और आप ने यह इसलिए फ़रमाया के आप ने किसी आदमी को (कहीं) भेजा तो उस ने आप पर झूठ बोला तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उस के लिए बद्दुआ फरमाई, इसे मुर्दा पाया गया, उस का पेट चाक हो चूका था और ज़मीन ने इसे कबूल नहीं किया, दोनों अहादीस को इमाम बयहकी ने दलाइलुल नबुवा में रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه البيهقى فى دلائل النبوة (6 / 245) * فيه الوازع بن نافع العقيلى : متروک ، وقوله :’’ من تقول على مالم اقل فليتبوا مقعده من النار ‘‘ صحيح متواتر من طرق أخرى

٥٩٤١ - (صَحِيح) وَعَن»» جابرٍ أَنَّ رسولَ الله جَاءَهُ رَجُلٌ يَسْتَطْعِمُهُ فَأَطْعَمَهُ شَطْرَ وَسَقِ شَعِيرٍ فَمَا زَالَ الرَّجُلُ يَأْكُلُ مِنْهُ وَامْرَأَتُهُ وَضَيْفُهُمَا حَتَّى كَالَهُ فَفَنِيَ فَأَتَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «لَوْ لَمْ تَكِلْهُ لَأَكَلْتُمْ مِنْهُ ولقام لكم» رَوَاهُ مُسلم

5941. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक आदमी रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने आप ﷺ से खाना तलब किया, आप ने इसे एक वुसक जौ दिए, वह आदमी, उसकी बीवी और उनका महमान उस से खाते रहे लेकिन जब इस शख़्स ने वह नाप लिए तो वह ख़तम हो गए, वह नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर तुम उसे न नापते तो तुम उस से खाते रहते और वह तुम्हारे लिए हमेशा रहता”| (मुस्लिम)

رواہ مسلم (9 / 2281)، (5946)

٥٩٤٢ - (صَحِيح) وَعَنْ»» عَاصِمِ بْنِ كُلَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ رَجُلٍ مِنَ الْأَنْصَارِ قَالَ خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي جَنَازَةٍ فَرَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ عَلَى الْقَبْرِ يُوصِي الْحَافِرَ يَقُولُ: «أَوْسِعْ مِنْ قِبَلِ رِجْلَيْهِ أَوْسِعْ مِنْ قِبَلِ رَأْسِهِ» فَلَمَّا رَجَعَ اسْتَقْبَلَهُ [ص:١٦٧ دَاعِيَ امْرَأَتِهِ فَأَجَابَ وَنَحْنُ مَعَه وَجِيء بِالطَّعَامِ فَوَضَعَ يَدَهُ ثُمَّ وَضَعَ الْقَوْمُ فَأَكَلُوا فَنَظَرْنَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يلوك لقْمَة فِي فَمه ثُمَّ قَالَ أَجِدُ لَحْمَ شَاةٍ أُخِذَتْ بِغَيْرِ إِذْنِ أَهْلِهَا فَأَرْسَلَتِ الْمَرْأَةُ تَقُولُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي أَرْسَلْتُ إِلَى النَّقِيعِ وَهُوَ مَوْضِعٌ يُبَاعُ فِيهِ الْغَنَمُ لِيُشْتَرَى لِي شَاةٌ فَلَمْ تُوجَدْ فَأَرْسَلْتُ إِلَى جَارٍ لِي قَدِ اشْتَرَى شَاة أَن أرسل إِلَيّ بهَا بِثَمَنِهَا فَلَمْ يُوجَدْ فَأَرْسَلْتُ إِلَى امْرَأَتِهِ فَأَرْسَلَتْ إِلَيَّ بِهَا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَطْعِمِي هَذَا الطَّعَامَ الْأَسْرَى»»» رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ والْبَيْهَقِيُّ فِي دَلَائِلِ النُّبُوَّةِ

5942. आसिम बिन कुलैब अपने वालिद से और वह अंसार में से एक आदमी से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: हम एक जनाज़े मैं रसूलुल्लाह ﷺ के साथ शरीक हुए तो मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को एक कब्र पर गुर्कन (कब्र खोदने वाले) को हिदायत (सुझाव) देते हुए सुना: “उस के पाँव की जानिब से खुली करो, उस के सर की जानिब से खुली करो”, जब आप वापस आए तो इस (मय्यत) की औरत की तरफ से दावत का पैग़ाम देने वाला आप को मिला तो आप ने दावत कबूल फरमाई और हम भी आप के साथ थे, खाना पेश किया गया तो आप ने अपना हाथ बढ़ाया, फिर लोगों ने (हाथ) बढ़ाया, उन्होंने खाना खाया, हमने रसूलुल्लाह ﷺ को देखा के आप ने अपने मुंह में लुकमे चबाते हुए फ़रमाया: “मैं एक ऐसी बकरी का गोश्त पाता हूँ जो अपने मालिक की इजाज़त के बगैर हासिल की गई है”, इस औरत ने अपने वाज़ाहती पैग़ाम में अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मैंने नकीअ की तरफ, जो के बकरियों की खरीद व फरोख्त फरोख्त का मरकज़ है, आदमी भेजा था ताकि वह मेरे लिए एक बकरी खरीद लाए, लेकिन वहां न मिली तो मैंने अपने पड़ोसी की तरफ भेजा, उस ने एक बकरी खरीदी हुई थी, के वह उसकी कीमत के अवज़ इसे मेरी तरफ भेज दे, लेकिन वह (पड़ोसी) न मिला तो मैंने इस की औरत की तरफ पैग़ाम भेजा तो उस ने इसे मेरी तरफ भेज दिया, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ये खाना कैदियों को खिला दो”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابوداؤد (3332) [و عنه] و البیهقی فی دلائل النبوة (6 / 310) * قوله ’’ داعی امراته ‘‘ خطا من الناسخ اوغیره ، و الصواب :’’ داعی امراة ‘‘ کما فی سنن ابی داود وغیره ولو صح فمعناه ’’ ای امراة الحافر ‘‘ و لا یدل هذا اللفظ الی ما ذهب الیه البریلویة و من و افقهم بان المراد منه ’’ داعی امراة المیت ‘‘ و لم یاتو بای دلیل علی تحریفهم هذا !

٥٩٤٣ - (ضَعِيف وَقد»» يرقى إِلَى الْحسن بِتَعَدُّد طرقه)»» وَعَن حَازِم بْنِ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ حُبَيْشِ بن خَالِد - وَهُوَ

أَخُو أمِّ مَعْبَد - أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ أَخْرِجَ مِنْ مَكَّةَ خَرَجَ مُهَاجِرًا إِلَى الْمَدِينَةِ هُوَ وَأَبُو بَكْرٍ وَمَوْلَى أَبِي بَكْرٍ عَامِرُ بْنُ فُهَيْرَةَ وَدَلِيلُهُمَا عَبْدُ اللَّهِ اللَّيْثِي مَرُّوا عَلَى خَيْمَتَيْ أُمِّ مَعْبَدٍ فَسَأَلُوهَا لَحْمًا وَتَمْرًا لِيَشْتَرُوا مِنْهَا فَلَمْ يُصِيبُوا عِنْدَهَا شَيْئًا من ذَلِك وَكَانَ الْقَوْمُ مُرْمِلِينَ مُسْنِتِينَ فَنَظَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى شَاةٍ فِي كِسْرِ الْخَيْمَةِ فَقَالَ: «مَا هَذِهِ الشَّاةُ يَا أُمَّ معبد؟» قَالَتْ: شَاةٌ خَلَّفَهَا الْجَهْدُ عَنِ الْغَنَمِ. قَالَ: «هَلْ بِهَا مِنْ لَبَنٍ؟» قَالَتْ: هِيَ أَجْهَدُ مِنْ ذَلِكَ. قَالَ: «أَتَأْذَنِينَ لِي أَنْ أَحْلِبَهَا؟» قَالَتْ: بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي إِنْ رَأَيْتَ بِهَا حَلباً فاحلبها. فَدَعَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَمَسَحَ بِيَدِهِ ضَرْعَهَا وَسَمَّى اللَّهَ تَعَالَى وَدَعَا لَهَا فِي شَاتِهَا فتفاجت عَلَيْهِ وردت وَاجْتَرَّتْ فَدَعَا بِإِنَاءٍ يُرْبِضُ [ص:١٦٧ الرَّهْطَ فَحَلَبَ فِيهِ ثَجًّا حَتَّى علاهُ الْبَهَاءُ ثُمَّ سَقَاهَا حَتَّى رَوِيَتْ وَسَقَى أَصْحَابَهُ حَتَّى رَوُوا ثُمَّ شَرِبَ آخِرَهُمْ ثُمَّ حَلَبَ فِيهِ ثَانِيًا بَعْدَ بَدْءٍ حَتَّى مَلَأَ الْإِنَاءَ ثُمَّ غَادَرَهُ عِنْدَهَا وَبَايَعَهَا وَارْتَحَلُوا عَنْهَا. رَوَاهُ فِي «شَرْحِ السُّنَّةِ» وَابْنُ عَبْدِ الْبَرِّ فِي «الِاسْتِيعَابِ» وَابْنُ الْجَوْزِيِّ فِي كِتَابِ «الْوَفَاءِ» وَفِي الحَدِيث قصَّةٌ

5943. हज़ाम बिन हिश्शाम अपने वालिद से, वह अपने दादा हुबैश बिन खालिद, जो के उम्म मअबद के भाई है, उन से रिवायत करते हैं की रसूलुल्लाह ﷺ को जब मक्का से निकाला गया तो आप ﷺ मक्का से मदीना की तरफ मुहाजर की हैसियत से रवाना हुए, आप ﷺ के साथ अबू बक्र और अबू बक्र के आज़ाद करदा गुलाम अम्मार बिन फुहयरत थे और उनकी रहनुमाई करने वाले अब्दुल्लाह अल लय्शी थे, वह उम्म मअबद के दो खैमो के पास से गुज़रे तो उन्होंने उस से गोश्त और खजूर के मुतल्लिक दरियाफ्त किया ताकि वह उस से खरीद लें, लेकिन उन्हें उस के वहां कोई चीज़ न मिली, जबकि उन के पास रसद (माल सामान) नहीं था और वह कहत साली का शिकार हो चुके थे, रसूलुल्लाह ﷺ ने खैमे के एक कोने में एक बकरी देखी तो फ़रमाया: “उम्म मअबद यह बकरी केसी है?” उस ने बताया के यह लागीर पन की वजह से रेवड़ के साथ नहीं जा सकती, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या यह दूध देती है?” उस ने अर्ज़ किया, यह इस लायक नहीं है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम मुझे इजाज़त देती तो की मैं उस का दूध धोलूँ ?” उस ने अर्ज़ किया, मेरे वालिदेन कुरबान हो, अगर आप उस में दूध देखते है तो ज़रूर धो लें, चुनांचे रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे तलब फ़रमाया, उस के थन को अपना दस्ते मुबारक लगाया, अल्लाह तआला का नाम लिया, उम्म मअबद के लिए इस बकरी के बारे में दुआएं खैर फरमाई, उस ने पाँव खोल दिए, दूध छोड़ दिया, और वह जुगाली करने लगी, आप ने एक बर्तन मंगवाया जो एक जमाअत को सैर कर सकता था, उस में दूध धोया और इतना धोया के उस पर झाग आ गया, फिर आप ने उम्म मअबद को पिलाया हत्ता कि वह खूब सेराब हो गई, फिर अपने साथियो को पिलाया हत्ता कि वह सेराब हो गए, फिर आप ने इन सब के आख़िर पर खुद पिया, फिर आप ने इस बर्तन में दूसरी मर्तबा दूध धोया हत्ता कि बर्तन भर गया, इस (दूध) को उम्म मअबद के पास छोड़ दिया, फिर आप ने उस से इस्लाम पर बैत ली फिर सब उस के पास से कुच कर गए| # शरह सुन्ना इब्ने अब्दुल बर्र ने अल इस्तियाब में और इब्नुल जौज़ी ने इसे किताब वफ़ा में रिवायत किया है और हदीस में तवील किस्सा है| (हसन)

حسن ، رواه البغوى فى شرح السنة (13 / 261 ح 3704) و ابن عبدالبر فى الاستيعاب (4 / 495498 مع الاصابة) [و صححه الحاكم (3 / 9 ، 10 و وافقه الذهبى] * و للحديث شواهد

بَاب الكرامات • करामतो का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٥٩٤٤ - (صَحِيح) عَن أنس أَنَّ أَسَيْدَ بْنَ حُضَيْرٍ وَعَبَّادَ بْنَ بِشْرٍ تَحَدَّثَا عِنْدِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حَاجَةٍ لَهُمَا حَتَّى ذَهَبَ مِنَ اللَّيْلِ سَاعَةٌ»» فِي لَيْلَةٍ شَدِيدَةِ الظُّلْمَةِ ثُمَّ خَرَجَا مِنْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ينقلبان وبيد كل مِنْهُمَا عُصَيَّةٌ فَأَضَاءَتْ عصى أَحَدِهِمَا لَهُمَا حَتَّى مَشَيَا فِي ضَوْئِهَا حَتَّى إِذَا افْتَرَقَتْ بِهِمَا الطَّرِيقُ أَضَاءَتْ لِلْآخَرِ عَصَاهُ فَمَشَى كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا فِي ضَوْءِ عَصَاهُ حَتَّى بلغ أَهله»» رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

5944. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उसैद बिन हज़िर और अब्बाद बिन बशीर रदियल्लाहु अन्हु अपने किसी मसअले के बारे में नबी ﷺ से गुफ्तगू करते रहे हत्ता कि शदीद तारिक रात में रात का काफी हिस्सा गुज़र गया, फिर वह रसूलुल्लाह ﷺ के पास से वापसी के लिए रवाना हुए, हर एक के हाथ में छोटी सी लाठी थी, चुनांचे इन दोनों में से एक की लाठी ने रोशनी पैदा कर दी हत्ता कि वह उसकी रोशनी में चलने लगे, लेकिन जब इन दोनों की राहें अलग अलग हुई तो दूसरे के लिए उसकी लाठी ने रोशनी पैदा कर दी, दोनों में हर एक अपने लाठी की रोशनी में चलने लगा हत्ता कि वह अपने घर पहुँच गया| (बुखारी)

رواه البخاری (3805)

٥٩٤٥ - (صَحِيح) وَعَن جَابر قَالَ: لَمَّا حَضَرَ أُحُدٌ دَعَانِي أَبِي مِنَ اللَّيْلِ فَقَالَ مَا أُرَانِي إِلَّا مَقْتُولًا فِي أَوَّلِ مَنْ يُقْتَلُ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَإِنِّي لَا أَتْرُكُ بَعْدِي أَعَزَّ عَلَيَّ مِنْكَ غَيْرَ نَفْسِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَإِنَّ عَلَيَّ دَيْنًا فَاقْضِ وَاسْتَوْصِ بِأَخَوَاتِكَ خَيْرًا فَأَصْبَحْنَا فَكَانَ أَوَّلَ قَتِيلٍ وَدَفَنْتُهُ مَعَ آخَرَ فِي قبر»» رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

5945. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब गज़वा ए उहद का वक़्त आया तो रात के वक़्त मेरे वालिद ने मुझे बुलाया और कहा; में अपने मुतल्लिक समझता हूँ कि नबी ﷺ के सहाबा रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन में से सबसे पहले में शहीद होऊंगा, रसूलुल्लाह ﷺ की ज़ात मुबारक के अलावा में अपने बाद तुझ से ज़्यादा अज़ीज़ शख़्स कोई नहीं छोड़ कर जा रहा, मेरे जिम्मे कुछ क़र्ज़ है उसे अदा करना और अपने बहनों के साथ अच्छा सुलूक करना, सुबह हुई तो वह पहले शहीद थे, मैंने उन्हें एक दूसरे शख़्स के साथ एक कब्र में दफन किया| (बुखारी)

رواه البخاری (1351)

٥٩٤٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن عبد الرَّحْمَن بن أبي بكر إِنَّ أَصْحَابَ الصُّفَّةِ كَانُوا أُنَاسًا فُقَرَاءَ وَإِنَّ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ كَانَ عِنْده طَعَام اثْنَيْنِ فليذهب بثالث وَإِن كَانَ عِنْدَهُ طَعَامُ أَرْبَعَةٍ فَلْيَذْهَبْ بِخَامِسٍ أَوْ سادس» وَأَن أَبَا بكر جَاءَ بِثَلَاثَةٍ فَانْطَلق النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِعَشَرَةٍ وَإِنَّ أَبَا بكر تعَشَّى عِنْد النبيِّ صلى الله عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ لَبِثَ حَتَّى صُلِّيَتِ الْعِشَاءُ ثُمَّ

رَجَعَ فَلَبِثَ حَتَّى تَعَشَّى النَّبِيُّ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم فَجَاءَ بَعْدَ مَا مَضَى مِنَ اللَّيْلِ مَا شَاءَ الله. قَالَت لَهُ امْرَأَته: وَمَا حَبسك عَن أضيافك؟ قَالَ: أوما عَشَّيْتِيهِمْ؟ قَالَتْ: أَبَوْا حَتَّى تَجِيءَ فَغَضِبَ وَقَالَ: لَا أَطْعَمُهُ أَبَدًا فَحَلَفَتِ الْمَرْأَةُ أَنْ لَا تَطْعَمَهُ وَحَلَفَ الْأَضْيَافُ أَنْ لَا يَطْعَمُوهُ. قَالَ أَبُو بَكْرٍ: كَانَ هَذَا مِنَ الشَّيْطَانِ فَدَعَا بِالطَّعَامِ فَأَكَلَ وَأَكَلُوا فَجَعَلُوا لَا يَرْفَعُونَ لُقْمَةً إِلَّا رَبَتْ مِنْ أَسْفَلِهَا أَكْثَرَ مِنْهَا. فَقَالَ لِامْرَأَتِهِ: يَا أُخْتَ بَنِي فِرَاسٍ مَا هَذَا؟ قَالَتْ: وَقُرَّةِ عَيْنِي إِنَّهَا الْآنَ لَأَكْثَرُ مِنْهَا قَبْلَ ذَلِكَ بِثَلَاثِ مِرَارٍ فَأَكَلُوا وَبَعَثَ بِهَا إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذُكِرَ أَنَّهُ أَكَلَ مِنْهَا. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ»» وَذُكِرَ حَدِيثُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ: كُنَّا نَسْمَعُ تَسْبِيحَ الطَّعَام فِي «المعجزات»

5946. अब्दुल रहमान बिन अबी बक्र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि असहाबे सुफ्फा मुहताज लोग थे, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जिस शख़्स के पास दो आदमियों का खाना हो तो वह तीसरे को साथ ले जाए, जिस शख़्स के पास चार लोगों का खाना हो तो वह पांचवे को या चोथे को साथ ले जाए”, और अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु तीन को साथ लेकर आए, नबी ﷺ दस को साथ लेकर गए, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने शाम का खाना नबी ﷺ के यहाँ खाया, फिर वहीँ ठहर गए हत्ता कि नमाज़ ए ईशा पढ़ ली गई, फिर वापस तशरीफ़ ले आए और वहीँ ठहर गए हत्ता कि नबी ﷺ ने खाना खाया, फिर जितना अल्लाह ने चाहा रात का हिस्सा गुज़र गया तो वह वापस अपने घर चले गए, उनकी अहलिया ने उन से कहा: आप को आप के मेहमानों के साथ आने से किस ने रोका था? उन्होंने पूछा क्या तुम ने उन्हें खाना नहीं खिलाया? उन्होंने अर्ज़ किया, उन्होंने इनकार कर दिया, हत्ता कि आप तशरीफ़ ले आए, वह नाराज़ हो गए और कहा: अल्लाह की क़सम! मैं बिलकुल खाना नहीं खाऊंगा औरत ने भी क़सम खा ली के वह इसे नहीं खाएगी और मेहमानों ने भी क़सम उठा ली के वह भी खाना नहीं खाएंगे अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: यह (हलफ उठाना) शैतान की तरफ से था, उन्होंने खाना मंगवाया, खुद खाया और उन के साथ मेहमानों ने भी खाया, वह लुकमे उठाते तो उस के नीचे से और ज़्यादा हो जाता था, उन्होंने अपने अहलिया से फ़रमाया: बनू फरासत की बहन! यह क्या मुआमला है? उन्होंने कहा: मेरी आंखो की ठंडक की क़सम! यह अब पहले से भी तीन गुना ज़्यादा हैं, चुनांचे उन्होंने खाया और इसे नबी ﷺ की खिदमत में भी भेजा, बयान किया गया के आप ﷺ ने उस में से तनावुल फ़रमाया| और अब्दुल्लाह बिन मसउद (र) से मरवी हदीस (بَاب فِي المعجزات)كُنَّا نَسْمَعُ تَسْبِيْحَ الطَّعَامِ (मोजिजो का बयान) में गुज़र चुकी है? (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3581) و مسلم (176 / 2057)، (5365) 0 حديث ابن مسعود تقدم (5910)

باب الكرامات • करामतो का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٥٩٤٧ - (لم تتمّ دراسته) عَن عَائِشَة قَالَتْ: لَمَّا مَاتَ النَّجَاشِيُّ كُنَّا نَتَحَدَّثُ أَنَّهُ لَا يَزَالُ يُرَى عَلَى قَبْرِهِ نُورٌ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

5947. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब नज्जाशी फौत हुए तो हम बाहम गुफ्तगू करते थे की उनकी कब्र पर मुसलसल रोशनी नज़र आ रही है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2523)

٥٩٤٨ - (حسن) وَعَنْهَا قَالَتْ: لَمَّا أَرَادُوا غُسْلَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالُوا: لَا نَدْرِي أَنُجَرِّدُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ ثِيَابه كَمَا تجرد مَوْتَانَا أَمْ نُغَسِّلُهُ وَعَلَيْهِ ثِيَابُهُ؟ فَلَمَّا اخْتَلَفُوا أَلْقَى اللَّهُ [ص:١٦٧ عَلَيْهِمُ النَّوْمَ حَتَّى مَا مِنْهُمْ رجل إِلَّا وذقته فِي صَدْرِهِ ثُمَّ كَلَّمَهُمْ مُكَلِّمٌ مِنْ نَاحِيَةِ الْبَيْتِ لَا يَدْرُونَ مَنْ هُوَ؟ اغْسِلُوا النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلَيْهِ ثِيَابُهُ فَقَامُوا فَغَسَّلُوهُ وَعَلَيْهِ قَمِيصُهُ يَصُبُّونَ الْمَاءَ فَوْقَ الْقَمِيصِ وَيُدَلِّكُونَهُ بِالْقَمِيصِ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي «دَلَائِلِ النُّبُوَّةِ»

5948. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने नबी ﷺ को गुस्ल देने का इरादा किया तो उन्होंने कहा: मालुम नहीं के जिस तरह हम अपने फौत होने वाले दीगर लोगों के (बवक्ते गुसल) कपड़े उतार देते हैं इसी तरह रसूलुल्लाह ﷺ के भी कपड़े उतार दे या हम कपडो समेत ग़ुस्ल दें, जब उन्होंने इख्तिलाफ किया तो अल्लाह ने इन पर नींद तारी कर दी हत्ता कि उनमें से हर शख़्स की ठोड़ी उस के सीने के साथ लगने लगी, फिर घर के एक कोने से किसी ने उन से बात की मगर सहाबा को उस के बारे में कुछ मालुम नहीं के वह कौन था, (इस ने कहा) नबी ﷺ को कपड़ो समेत ग़ुस्ल दो, वह खड़े हुए और आप को इस तरह ग़ुस्ल दिया के आप की कमीज़ आप पर थी, वह कमीज़ के ऊपर पानी गिराते थे और आप की कमीज़ के साथ मलते थे| (हसन)

اسناده حسن ، رواه البيهقى فى دلائل النبوة (7 / 242) [و ابوداؤد (3141) و ابن ماجه (1464) ببعضه و احمد (6 / 267 ح 26837)]

٥٩٤٩ - (صَحِيح) وَعَنْ ابْنِ الْمُنْكَدِرِ أَنَّ سَفِينَةَ مَوْلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَخْطَأَ الْجَيْشَ بِأَرْضِ الرُّومِ أَوْ أُسِرَ فَانْطَلَقَ هَارِبًا يَلْتَمِسُ الْجَيْشَ فَإِذَا هُوَ بِالْأَسَدِ. فَقَالَ: يَا أَبَا الْحَارِثِ أَنَا مَوْلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ مِنْ أَمْرِي كَيْتَ وَكَيْتَ فَأَقْبَلَ الْأَسَدُ لَهُ بَصْبَصَةٌ حَتَّى قَامَ إِلَى جَنْبِهِ كُلَّمَا سَمِعَ صَوْتًا أَهْوَى إِلَيْهِ ثُمَّ أَقْبَلَ يَمْشِي إِلَى جَنْبِهِ حَتَّى بَلَغَ الْجَيْشَ ثُمَّ رَجَعَ الْأَسَدُ. رَوَاهُ فِي «شَرْحِ السُّنَّةِ»

5949. इब्ने मुन्कदिर से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ के आज़ाद करदा गुलाम सफीना रदियल्लाहु अन्हु सर ज़मीने रोम में लश्कर से बिछड़ गए, या उन्हें क़ैद कर लिया गया, वह लश्कर की तलाश में दोड़ने लगी तो अचानक शेर से

सामना हो गया, उन्होंने ने फ़रमाया: अबिल हारिस (शेर की कुनियत) मैं रसूलुल्लाह ﷺ का आज़ाद करदा गुलाम हूँ, मेरे साथ यह यह मसअला बना है, शेर दुम हिलाता हुआ आप के सामने आया हत्ता कि वह आप के पहलु में खड़ा हो गया, जब वह कहीं से (खौफनाक) आवाज़ सुनता तो वह उसकी तरफ मुतवज्जे हो जाता, फिर वह उनकी तरफ जाता हत्ता कि वह लश्कर के साथ जा मिले फिर शेर वापस चला गया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البغوى فى شرح السنة (13 / 313 ح 3732) [و صححه الحاكم (3 / 606) و و افقه الذهبى] * محمد بن المنكدر لم يثبت سماعه من سفينة رضى الله عنه فالسند معلل

٥٩٥٠ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي الْجَوْزَاءِ قَالَ: قُحِطَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ قَحْطًا شَدِيدًا فَشَكَوْا إِلَى عَائِشَةَ فَقَالَتْ: انْظُرُوا قبر النَّبِي صلى الله عَلَيْهِ وَسلم فاجعلوا مِنْهُ كُوًى إِلَى السَّمَاءِ حَتَّى لَا يَكُونَ بَيْنَهُ وَبَيْنَ السَّمَاءِ سَقْفٌ فَفَعَلُوا فَمُطِرُوا مَطَرًا حَتَّى نَبَتَ الْعُشْبُ وَسَمِنَتِ الْإِبِلُ حَتَّى تَفَتَّقَتْ مِنَ الشَّحْمِ فَسُمِّيَ عَامَ الْفَتْقِ. رَوَاهُ الدَّارِمِيُّ

5950. अबुल जव्ज़ाअ बयान करते हैं, मदीना वाले शदीद कहत का शिकार हो गए तो उन्होंने आइशा रदियल्लाहु अन्हा से अर्ज़ किया तो उन्होंने ने फ़रमाया: नबी ﷺ की कब्र की तरफ देखो (जाओ) और उस में से आसमान की तरफ कुछ सुराख़ बना दो, हत्ता कि इन पर कोई परदा न हो, उन्होंने ऐसे ही किया तो इन पर खूब बारिश हुई हत्ता कि घास उग आई, ऊंट इस क़दर मोटे हो गए के वह चरबी से फुल गए और इस साल का नाम आम उल्फतक यानी (खुशहाली का साल) रखा गया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمى (1 / 4344 ح 93) * فيه عمرو بن مالك النكرى ، رواه عن ابى الجوزاء وقال ابن عدى :'' يحدث عن ابى الجوزاء هذا ايضًا عن ابن عباس قدر عشرة احاديث غير محفوظة '' (الكامل 1 / 401 ، نسخة أخرى 2 / 108) و هذا جرح خاص فالسند ضعيف معلل

٥٩٥١ - (ضَعِيف) وَعَن سعيد بْنِ عَبْدِ الْعَزِيزِ قَالَ: لَمَّا كَانَ أَيَّامُ الْحَرَّةِ لَمْ يُؤَذَّنْ فِي مَسْجِدِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَلَاثًا وَلَمْ يُقَمْ وَلَمْ يَبْرَحْ سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ الْمَسْجِدَ وَكَانَ [ص:١٦٧ لَا يَعْرِفُ وَقْتَ الصَّلَاةِ إِلَّا بِهَمْهَمَةٍ يَسْمَعُهَا مِنْ قَبْرِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ الدَّارمِيّ

5951. सईद बिन अब्द अज़ीज़ बयान करते हैं, जब हर्रा का वाकिया हुआ तो नबी ﷺ की मस्जिद में तीन रोज़ तक आज़ान हुई न नमाज़, और ना ही सईद बिन मुसय्यिब मस्जिद से बाहर निकल सके, उन्हें नमाज़ का वक़्त नबी ﷺ की कब्र मुबारक से आने वाली मुबहम सी आवाज़ से मालुम होता था| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف * فيه سعيد بن عبد العزيز : لم يثبت سماعه من سعيد بن المسيب رحمه الله

٥٩٥٢ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي خَلْدَةَ قَالَ: قُلْتُ لِأَبِي الْعَالِيَةِ: سَمِعَ أَنَسٌ مِنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَ: خَدَمَهُ عَشْرَ سِنِينَ وَدَعَا لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَكَانَ لَهُ بُسْتَانٌ يَحْمِلُ فِي كُلِّ سَنَةٍ الْفَاكِهَةَ مَرَّتَيْنِ وَكَانَ فِيهَا رَيْحَانٌ يَجِيءُ مِنْهُ رِيحُ الْمِسْكِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

5952. अबू खल्दत बयान करते हैं, मैंने अबूल आलियाह से कहा, क्या अनस रदियल्लाहु अन्हु ने नबी ﷺ से अहादीस सुनी है? उन्होंने कहा: उन्होंने आप ﷺ की दस साल खिदमत की है और नबी ﷺ ने उन के हक़ में दुआ फरमाई जिस की वजह से उनका बाग़ साल में दो मर्तबा फल दिया करता था, और उस में कस्तूरी जैसी खुशबू आती थी| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (3833) و اخطا من ضعفه

بَاب الكرامات • करामतो का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٥٩٥٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن عُرْوَة بن الزبير أَنَّ سَعِيدُ بْنُ زَيْدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ نُفَيْلٍ خاصمته أروى بنت أويس إِلَى مَرْوَانَ بْنِ الْحَكَمِ وَادَّعَتْ أَنَّهُ أَخَذَ شَيْئًا مِنْ أَرْضِهَا فَقَالَ سَعِيدٌ أَنَا كُنْتُ آخُذُ مِنْ أَرْضِهَا شَيْئًا بَعْدَ الَّذِي سَمِعْتُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ وماذا سَمِعْتُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ مَنْ أَخَذَ شِبْرًا مِنَ الْأَرْضِ ظُلْمًا طُوِّقَهُ إِلَى سَبْعِ أَرَضِينَ فَقَالَ لَهُ مَرْوَانُ لَا أَسْأَلُكَ بَيِّنَةً بَعْدَ هَذَا فَقَالَ اللَّهُمَّ إِن كَانَت كَاذِبَة فعم بَصَرَهَا وَاقْتُلْهَا فِي أَرْضِهَا قَالَ فَمَا مَاتَتْ حَتَّى ذهب بصرها ثمَّ بَينا هِيَ تَمْشِي فِي أَرْضِهَا إِذْ وَقَعَتْ فِي حُفْرَةٍ فَمَاتَتْ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ [ص:١٦٧»» وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زَيْدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ بِمَعْنَاهُ وَأَنَّهُ رَآهَا عَمْيَاءَ تَلْتَمِسُ الْجُدُرَ تَقُولُ: أَصَابَتْنِي دَعْوَةُ سَعِيدٍ وَأَنَّهَا مَرَّتْ على بئرٍ فِي الدَّار الَّتِي خاصمته فَوَقَعت فِيهَا فَكَانَت قبرها

5953. उरवा बिन जुबैर से रिवायत है के सईद बिन ज़ैद बिन अम्र बिन नुफैल से मुतल्लिक उरवा बिन्ते औस ने मरवान बिन हकम की अदालत में मुकदमा पेश किया और दावा किया के उन्होंने मेरी कुछ ज़मीन हासिल कर ली है, सईद रदियल्लाहु अन्हु ने जवाब दिया: क्या मैं रसूलुल्लाह ﷺ से हदीस सुन लेने के बाद भी उनकी ज़मीन के कुछ हिस्सा पर कब्ज़े करूँगा? मरवान ने कहा तुमने रसूलुल्लाह ﷺ से क्या सुना है? उन्होंने कहा: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जिस ने बालिश्त भर ज़मीन नाहक हासिल की तो इसे सातों ज़मीनों का तोक पहनाया जाएगा”, तब मरवान ने कहा: उस के बाद में आप से कोई सबूत नहीं मांगता, सईद ने दुआ फरमाई: ऐ अल्लाह! अगर वह झूठी है तो इसे अंधी बना दे और इसे उसकी ज़मीन में मौत दे, रावी बयान करते हैं, जब वह फौत हुई तो वह अंधी हो चुकी थी और वह अपने ज़मीन में चल रही थी के एक घड़े में गिरी और फौत हो गई| और सहीह मुस्लिम में मुहम्मद बिन ज़ैद बिन अब्दुल्लाह बिन उमर से उस के हम मानी रिवायत है के उन्होंने इसे बिनाई से महरूम दीवारों को टटोलते हुए देखा और वह कहती थी: मुझे सईद की बद्दुआ लग गई और वह घर के इस कुंवो के पास से गुज़री जिसके मुतल्लिक उस ने उन सईद रदियल्लाहु अन्हु से मुकदमा किया था, वह उस में गिरी और वही उसकी कब्र बनी| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3198) و مسلم (139 ، 136 / 1610)، (4132 و 4134)

٥٩٥٤ - (حسن) وَعَن»» ابْن عمر أَنَّ عُمَرَ بَعَثَ جَيْشًا وَأَمَّرَ عَلَيْهِمْ رَجُلًا يُدْعَى سَارِيَةَ فَبَيْنَمَا عُمَرُ يَخْطُبُ فَجَعَلَ يَصِيحُ: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ لَقِيَنَا عَدُوُّنَا فَهَزَمُونَا فَإِذَا بِصَائِحٍ يَصِيحُ: يَا سَارِيَ الْجَبَلَ. فَأَسْنَدْنَا ظُهُورَنَا إِلَى الْجَبَلِ فَهَزَمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى»» رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي دَلَائِل النُّبُوَّة

5954. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के उमर रदियल्लाहु अन्हु ने एक लश्कर रवाना किया और सारीया नामी शख़्स को उस का अमीर मुकर्रर किया, इस असना में के उमर रदियल्लाहु अन्हु खुत्बा इरशाद फरमा रहे थे की आप ज़ोर से कहने लगे: सारीया ! पहाड़ की तरफ, फिर लश्कर की तरफ से एक कासिद आया तो उस ने कहा अमीरुल मोमिनीन! हमारा दुश्मन से मुक़ाबला हुआ तो उस ने हमें शिकस्त से दो चार कर दिया था मगर अचानक किसी ने ज़ोर से आवाज़ दी सारीया ! पहाड़ को न छोड़ो, हमने अपने पुश्ते पहाड़ की जानिब कर ली तो अल्लाह तआला ने उन्हें शिकस्त से दो चार कर दिया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى دلائل النبوة (6 / 380) * فيه محمد بن عجلان مدلس و عنعن وله طرق عند ابن عساكر (تاريخ دمشق 22 / 18 ، 19) وغيره و كلها ضعيفة و مرسلة ، لا يصح منها شئ و اخطا من صححه اوحسنه !

٥٩٥٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» نُبَيْهَةَ بْنِ وَهْبٍ أَنَّ كَعْبًا دَخَلَ عَلَى عَائِشَةَ فَذَكَرُوا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ كَعْبٌ: مَا مِنْ يَوْمٍ يَطْلُعُ إِلَّا نَزَلَ سَبْعُونَ أَلْفًا مِنَ الْمَلَائِكَةِ حَتَّى يَحُفُّوا بِقَبْرِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَضْرِبُونَ بِأَجْنِحَتِهِمْ وَيُصَلُّونَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى إِذَا أَمْسَوْا عَرَجُوا وَهَبَطَ مِثْلُهُمْ فَصَنَعُوا مِثْلَ ذَلِكَ حَتَّى إِذَا انْشَقَّتْ عَنْهُ الْأَرْضُ خَرَجَ فِي سَبْعِينَ أَلْفًا مِنَ الْمَلَائِكَةِ يَزُفُّونَهُ. رَوَاهُ الدَّارِمِيُّ

5955. नुबैहा बिन वहब से रिवायत है के काब, आइशा रदियल्लाहु अन्हा के पास गए, अहल मजलिस ने रसूलुल्लाह ﷺ का तज़किरह किया, तो काब ने फ़रमाया: हर रोज़ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते नाज़िल होते हैं और वह रसूलुल्लाह ﷺ की कब्र मुबारक को घेर लेते है, वह अपने पर फरफराते है और रसूलुल्लाह ﷺ पर दुरुद भेजते है, जब शाम होती है तो वह ऊपर चढ़ जाते हैं और इतने ही फ़रिश्ते और उतर आते है और वह भी इसी तरह करते हैं, हत्ता कि जब (रोज़ ए कियामत) आप ﷺ अपने कब्र मुबारक से निकलेंगे तो आप सत्तर हज़ार फरिश्तो की साथ में होंगे वह आप को लेकर जल्दी भागेंगे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمى (1 / 44 ح 95) * فى سماع نبيهة بن وهب من كعب نظر ولم يدرک عائشة ايضًا فالسند منقطع

بَاب هِجْرَة أَصْحَابه صلى الله عَلَيْهِ وَسلم من مَكَّة ووفاته • सहाबा किराम के मक्का मुकर्रमा से हिजरत और नबी की वफात का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٥٩٥٦ - (صَحِيح) عَن الْبَراء قَالَ: أَوَّلُ مَنْ قَدِمَ عَلَيْنَا مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُصْعَبُ بْنُ عُمَيْرٍ وَابْنُ أُمِّ مَكْتُومٍ فَجَعَلَا يُقْرِآنِنَا الْقُرْآنَ ثُمَّ جَاءَ عَمَّارٌ وَبِلَالٌ وَسَعْدٌ ثُمَّ جَاءَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ فِي عِشْرِينَ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ جَاءَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَمَا رَأَيْتُ أَهْلَ الْمَدِينَةِ فَرِحُوا بِشَيْءٍ فَرَحَهُمْ بِهِ حَتَّى رَأَيْتُ الْوَلَائِدَ وَالصِّبْيَانَ يَقُولُونَ: هَذَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ جَاءَ فَمَا جَاءَ حَتَّى قرأتُ: [سبِّح اسْم ربِّك الْأَعْلَى] فِي سُوَرٍ مِثْلِهَا مِنَ الْمُفَصَّلِ. رَوَاهُ البُخَارِيّ

5956. बराअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन में से सबसे पहले हमारे पास मुसअब बिन उमैर और इब्ने उम्म मक्तूम रदियल्लाहु अन्हुमा तशरीफ़ लाए, उन्होंने हमें कुरान पढ़ाना शुरू किया, फिर अम्मार बिलाल और साद रदियल्लाहु अन्हु आए फिर उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ के बीस सहाबा रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन के साथ तशरीफ़ लाए, फिर नबी ﷺ तशरीफ़ लाए, मैंने मदीना वालो को किसी चीज़ पर इतना खुश नहीं देखा जितना मैंने उन्हें आप ﷺ की आमद पर खुश देखा, हत्ता कि मैंने छोटी छोटी बच्चियों और बच्चो को कहते हुए सुना: रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ ला चुके हैं, जब आप तशरीफ़ लाए तो मैं सुरह अल अअला के साथ मुफ़स्सल सूरतो में से कई सूरते पढ़ चूका था| (बुखारी)

رواه البخاری (4941)

٥٩٥٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيُّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَلَسَ عَلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ: «إِنَّ عَبْدًا خَيَّرَهُ اللَّهُ بَيْنَ أَنْ يُؤْتِيَهُ مِنْ زَهْرَةِ الدُّنْيَا مَا شَاءَ وَبَيْنَ مَا عِنْدَهُ فَاخْتَارَ مَا عِنْدَهُ» . فَبَكَى أَبُو بَكْرٍ قَالَ: فَدَيْنَاكَ بِآبَائِنَا وَأُمَّهَاتنَا فعجبنا لَهُ فَقَالَ النَّاس: نظرُوا إِلَى هَذَا الشَّيْخِ يُخْبِرُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ عَبْدٍ خَيَّرَهُ اللَّهُ بَيْنَ أَنْ يُؤْتِيَهُ مِنْ زَهْرَةِ الدُّنْيَا وَبَيْنَ مَا عِنْدَهُ وَهُوَ يَقُولُ: فَدَيْنَاكَ بِآبَائِنَا وَأُمَّهَاتِنَا فَكَانَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هُوَ الْمُخَيرَ وَكَانَ أَبُو بكر هُوَ أعلمنَا. مُتَّفق عَلَيْهِ

5957. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ मिम्बर पर तशरीफ़ फरमा हुए और फ़रमाया: “अल्लाह ने अपने एक बंदे को इख़्तियार दीया के वह दुनिया की नेअमतो में से जो चाहे अपने लिए पसंद कर ले या फिर वह इस चीज़ को इख़्तियार कर ले जो अल्लाह तआला के पास है”, (ये सुन कर) अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु रोने लगे, और अर्ज़ किया, हमारे वालिदेन आप पर फ़िदा हो! हमें उनकी इस हालत पर ताज्जुब हुआ, लोगों ने कहा: इस बुज़ुर्ग को देखो, रसूलुल्लाह ﷺ एक बंदे के मुतल्लिक बता रहे हैं की अल्लाह ने इसे इख़्तियार दिया है के वह दुनिया की नेअमतें पसंद कर ले या इस चीज़ को पसंद कर ले जो उस के पास है, और वह कह रहा है मारे वालिदेन

आप पर फ़िदा हो, चुनान्चे जिस बंदे को इख़्तियार दिया गया था वह रसूलुल्लाह (स) ही थे, और अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु हम सबसे ज़्यादा इस बात को जानने वाले थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3904) و مسلم (2 / 2382)، (6170)

٥٩٥٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: صَلَّى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى قَتْلَى أحد بعد [ص:١٦٨ ثَمَانِي سِنِينَ كَالْمُوَدِّعِ لِلْأَحْيَاءِ وَالْأَمْوَاتِ ثُمَّ طَلَعَ الْمِنْبَرَ فَقَالَ: «إِنِّي بَيْنَ أَيْدِيكُمْ فَرَطٌ وَأَنَا عَلَيْكُمْ شَهِيدٌ وَإِنَّ مَوْعِدَكُمُ الْحَوْضُ وَإِنِّي لَأَنْظُرُ إِلَيْهِ من مَقَامِي هَذَا وَإِنِّي قَدْ أُعْطِيتُ مَفَاتِيحَ خَزَائِنِ الْأَرْضِ وَإِنِّي لَسْتُ أَخْشَى عَلَيْكُمْ أَنْ تُشْرِكُوا بعدِي وَلَكِنِّي أَخْشَى عَلَيْكُم الدُّنْيَا أَن تنافسوها فِيهَا» . وَزَادَ بَعْضُهُمْ:: «فَتَقْتَتِلُوا فَتَهْلِكُوا كَمَا هَلَكَ من كَانَ قبلكُمْ» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5958. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने आठ साल बाद शुहदाए उहद पर ऐसे नमाज़ ए जनाज़ा अदा की जैसे आप जिंदो और फौत शुदा लोगों से रुखसत हो रहे हो, फिर आप ﷺ मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया: “मैं तुम से आगे आगे हूँ, मैं तुम पर गवाह रहूँगा, मुझ से तुम्हारी मुलाकात हौज़ पर होगी, मैं उसे देख रहा हूँ हालाँकि में अपने इस जगह पर हूँ, और मुझे ज़मीन के खज़ानो की चाबियां अता की गई है, मुझे तुम्हारे मुतल्लिक यह खदशा नहीं के तुम मेरे बाद शिर्क करोगे, लेकिन मुझे तुम्हारे मुतल्लिक दुनिया का खदशा है के तुम उस के मुतल्लिक बाहम सबकत ले जाने की कोशिश करोगे”, और बाज़ रावियो ने यह इज़ाफा नकल किया है: “तुम बाहम लड़ोगे और तुम भी इसी तरह हलाक हो जाओगे जिस तरह तुम से पहले लोग हलाक हुए थे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (4042) و مسلم (30 / 2296 و الزيادة له 31 / 2296)، (5976)

٥٩٥٩ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: إِنَّ مِنْ نِعَمِ اللَّهِ عَلَيَّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تُوُفِّيَ فِي بَيْتِي وَفِي يَوْمِي وَبَيْنَ سَحْرِي وَنَحْرِي وَإِنَّ اللَّهَ جَمَعَ بَيْنَ رِيقِي وَرِيقِهِ عِنْدَ مَوْتِهِ دَخَلَ عَلَيَّ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ وَبِيَدِهِ سِوَاكٌ وَأَنَا مُسْنِدَةٌ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فَرَأَيْتُهُ يَنْظُرُ إِلَيْهِ وَعَرَفْتُ أَنَّهُ يُحِبُّ السِّوَاكَ فَقُلْتُ: آخُذُهُ لَكَ؟ فَأَشَارَ بِرَأْسِهِ أَنْ نَعَمْ فَتَنَاوَلْتُهُ فَاشْتَدَّ عَلَيْهِ وَقُلْتُ: أُلَيِّنُهُ لَكَ؟ فَأَشَارَ بِرَأْسِهِ أَنْ نَعَمْ فَلَيَّنْتُهُ فَأَمَرَّهُ وَبَيْنَ يَدَيْهِ رَكْوَةٌ فِيهَا مَاءٌ فَجَعَلَ يُدْخِلُ يَدَيْهِ فِي الْمَاءِ فَيَمْسَحُ بِهِمَا وَجْهَهُ وَيَقُولُ: «لَا إِلَهَ إِلَّا الله إِنَّ للموتِ سَكَرَاتٍ» . ثمَّ نصب يَده فَجَعَلَ يَقُولُ: «فِي الرَّفِيقِ الْأَعْلَى» . حَتَّى قُبِضَ ومالت يَده. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

5959. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, कि अल्लाह के इनामात में से यह भी मुझ पर इनाम है के रसूलुल्लाह ﷺ ने मेरे घर में और मेरी बारी में वफात पाई इस वक़्त आप मेरे सिने से टेक लगाए हुए थे, और अल्लाह ने आप की वफात के वक़्त मेरे और आप ﷺ के लुआब को एक साथ जमा कर दिया, (वो इस तरह के) अब्दुल रहमान बिन अबी बक्र रदियल्लाहु अन्हुमा मेरे पास आए तो उन के हाथ में मिस्वाक थी, और रसूलुल्लाह ﷺ मुझ से टेक लगाए हुए थे, मैंने देखा के आप इसे देख रहे हैं, मैंने पहचान लिया के आप मिस्वाक पसंद करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: में उसे आप के लिए ले लूँ? आप ने अपने सर से इरशाद फ़रमाया के हाँ, मैंने इसे हासिल किया, लेकिन आप के लिए इसे चबाना

मुश्किल था मैंने अर्ज़ किया: क्या मैं उसे आप की खातिर नरम कर दूँ? आप ने अपने सर मुबारक से इरशाद फ़रमाया के हाँ, मैंने इसे नरम कर दिया और आप के सामने चमड़े का एक बर्तन था जिस में पानी था, आप अपने हाथ पानी में दाखिल फरमाते और उन्हें अपने चेहरे पर फिराते और फरमाते: “अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, मौत की सख्तिया होती है”, फिर आप ﷺ ने अपना दस्ते मुबारक उठाया और फरमाने लगे (ए अल्लाह!) आला साथ नसीब फरमा”, हत्ता कि आप की रूह कब्ज़ हो गई और आप का दस्ते मुबारक झुक गया| (बुखारी)

رواه البخاری (4449)

٥٩٦٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يَقُول: «مامن نَبِيٍّ يَمْرَضُ إِلَّا خُيِّرَ بَيْنَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ» . وَكَانَ فِي شَكْوَاهُ الَّذِي قُبِضَ أَخَذَتْهُ بُحَّةٌ شَدِيدَةٌ فَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ من الصديقين والنبيين وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ. فَعَلِمْتُ أَنَّهُ خُيِّرَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5960. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जो नबी मर्जुल मौत में बीमार होता है तो इसे दुनिया व आखिरत के बिच में इख़्तियार दिया जाता है”, और जिस मर्ज़ में आप की रूह कब्ज़ की गई, इस मर्ज़ में आप पर हिचकी का सख्त हमला हुआ था, मैंने आप ﷺ को फरमाते हुए सुना: “उन लोगों के साथ जिन पर तूने इनाम फ़रमाया, अंबिया (अस), सिद्दिकिन शुहदा और स्वालेहीन (के साथ)”, मैंने जान लिया के आप को इख़्तियार दिया गया है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (4586) و مسلم (86 / 2444)، (6295)

٥٩٦١ - (صَحِيح) وَعَن أنس قَالَ: لما ثقل النَّبِي صلى الله عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَعَلَ يَتَغَشَّاهُ الْكَرْبُ. [ص:١٦٨ فَقَالَتْ فَاطِمَةُ: وَاكَرْبَ آبَاهْ فَقَالَ لَهَا: «لَيْسَ عَلَى أَبِيكِ كَرْبٌ بَعْدَ الْيَوْمِ» . فَلَمَّا مَاتَ قَالَتْ: يَا أَبَتَاهُ أَجَابَ رَبًّا دَعَاهُ يَا أَبَتَاهُ مَنْ جَنَّةُ الْفِرْدَوْسِ مَأْوَاهُ يَا أَبَتَاهُ إِلَى جِبْرِيلَ نَنْعَاهُ. فَلَمَّا دُفِنَ قَالَتْ فَاطِمَةُ: يَا أَنَسُ أَطَابَتْ أَنْفُسُكُمْ أَنْ تَحْثُوا عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ التُّرَابَ؟ رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

5961. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब नबी ﷺ का मर्ज़ शिद्दत इख़्तियार कर गया तो आप पर करब व तकलीफ छाने लगी तो फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया, अब्बा जान को कितनी तकलीफ है, आप ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: “आज के बाद आप के अब्बा जान को कोई तकलीफ नहीं होगी”, जब आप वफात पा गए तो फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा ने कहा अब्बा जान! आप ने अपने रब के बुलावे पर लब्बैक कहा, अब्बा जान! आप जिन का ठिकाना जन्नत अल फिरदौस है, अब्बा जान! हम जिब्राइल अलैहिस्सलाम को आप की मौत की खबर सुनाते है, जब आप को दफन कर दिया गया तो फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया: अनस तुम्हार दिल रसूलुल्लाह ﷺ पर मिट्टी डालने के लिए कैसे अमादा हो गए ? (बुखारी)

رواه البخاری (4462)

بَاب هِجْرَة أَصْحَابه صلى الله عَلَيْهِ وَسلم من مَكَّة ووفاته • सहाबा किराम के मक्का मुकर्रमा से हिजरत और नबी की वफात का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٥٩٦٢ - (صَحِيح) عَنْ أَنَسٍ قَالَ: لَمَّا قَدِمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَدِينَةَ لَعِبَتِ الْحَبَشَةُ بِحِرَابِهِمْ فَرَحًا لِقُدُومِهِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ»» وَفِي رِوَايَةِ الدَّارِمِيِّ (صَحِيح)»» قَالَ: مَا رَأَيْتُ يَوْمًا قَطُّ كَانَ أَحْسَنَ وَلَا أَضْوَأَ مِنْ يَوْمٍ دَخَلَ عَلَيْنَا فِيهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَا رَأَيْت يَوْمًا كَانَ أقبح وأظلم مِنْ يَوْمٍ مَاتَ فِيهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ»» وَفِي رِوَايَةِ التِّرْمِذِيِّ قَالَ: لَمَّا كَانَ الْيَوْمُ الَّذِي دَخَلَ فِيهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَدِينَةَ أَضَاءَ مِنْهَا كُلُّ شَيْءٍ فَلَمَّا كَانَ الْيَوْمُ الَّذِي مَاتَ فِيهِ أَظْلَمَ مِنْهَا كُلُّ شَيْءٍ وَمَا نَفَضْنَا أَيْدِينَا عَنِ التُّرَابِ وَإِنَّا لَفِي دَفْنِهِ حَتَّى أَنْكَرْنَا قُلُوبنَا

5962. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ मदीना तशरीफ़ लाए तो हब्शियों ने आप की आमद की ख़ुशी पर अपने नेज़ो का खेल पेश किया| और दारमी की रिवायत में है, फ़रमाया: मैंने इस रोज़ से, जिस रोज़ रसूलुल्लाह ﷺ मदीना तशरीफ़ लाए, ज़्यादा हसीन और ज़्यादा रोशन कोई दिन नहीं देखा, और मैंने इस दिन से जिस दिन रसूलुल्लाह ﷺ ने वफात पाई, ज़्यादा कबिह और ज़्यादा तारिक कोई और दिन नहीं देखा| और तिरमिज़ी की रिवायत में है, फ़रमाया: जिस रोज़ रसूलुल्लाह ﷺ मदीना में दाखिल हुए थे तो उस से हर चीज़ रोशन हो गई थी, चुनांचे जिस दिन आप ने वफात पाई थी उस से हर चीज़ तारिक हो गई थी, हमने अपने हाथ मिट्टी से साफ़ नहीं किए थे और अभी हम आप की तद्फिन में मसरूफ थे की हमने अपने दिलों को अजनबी पाया| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابوداؤد (4923) و الدارمی (1 / 41 ح 89) و الترمذی (3618 وقال : صحیح غریب) * سند ابی داود صحیح علی شرط الشیخین و سند الدارمی صحیح و سند الترمذی : حسن

٥٩٦٣ - (ضَعِيف وَرُوِيَ صَحِيحا من وَجه آخر)»» وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: لَمَّا قُبِضَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اخْتَلَفُوا فِي دَفْنِهِ. فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: سَمِعْتُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَيْئًا. قَالَ: «مَا قَبَضَ اللَّهُ نَبِيًّا إِلَّا فِي الْمَوْضِعِ الَّذِي يحبُّ أَن يُدْفَنَ فِيهِ» . ادفنوه فِي موضعِ فراشِهِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5963. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ की रूह कब्ज़ की गई तो आप की तद्फिन के मुतल्लिक सहाबा में इख्तिलाफ पैदा हो गया, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से (इस बारे में) कुछ सुना है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह नबी की रूह इसी जगह कब्ज़ फरमाता है वहां वह पसंद फरमाता है के उसकी तद्फिन हो”, तुम आप को आप के बिस्तर की जगह पर दफन करो| (सहीह)

صحیح ، رواه الترمذی (1018 وقال : غریب)

بَاب هِجْرَة أَصْحَابه صلى الله عَلَيْهِ وَسلم من مَكَّة ووفاته • सहाबा किराम के मक्का मुकर्रमा से हिजरत और नबी की वफात का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٥٩٦٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ وَهُوَ صَحِيح: «لَنْ يُقْبَضَ نَبِيٌّ قَطُّ حَتَّى يُرَى مَقْعَدَهُ مِنَ الْجَنَّةِ ثُمَّ يُخَيَّرَ» . قَالَتْ عَائِشَةُ: فَلَمَّا نَزَلَ بِهِ ورأسه على فَخذِي غُشِيَ عَلَيْهِ ثُمَّ أَفَاقَ فَأَشْخَصَ بَصَرُهُ إِلَى السَّقْفِ ثُمَّ قَالَ: «اللَّهُمَّ الرَّفِيقَ الْأَعْلَى» . قُلْتُ: إِذَنْ لَا يَخْتَارُنَا. قَالَتْ: وَعَرَفْتُ أَنَّهُ الْحَدِيثُ الَّذِي كَانَ يُحَدِّثُنَا بِهِ وَهُوَ صَحِيحٌ فِي قَوْلِهِ: «إِنَّهُ لَنْ يُقْبَضَ نَبِيٌّ قَطُّ حَتَّى يُرَى مَقْعَدَهُ مِنَ الْجَنَّةِ ثُمَّ يُخَيَّرَ» قَالَتْ عَائِشَةُ: فَكَانَ آخِرُ كَلِمَةٍ تَكَلَّمَ بِهَا النَّبِيُّ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم: «اللَّهُمَّ الرفيق الْأَعْلَى» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5964. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ हालत सेहत में फ़रमाया करते थे: “किसी नबी की रूह इस वक़्त तक कब्ज़ नहीं की जाती जब तक उन्हें उनका जन्नती ठिकाना नहीं दिखा दिया जाता है, फिर उन्हें इख़्तियार दिया जाता है”, आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब आप पर मौत तारी हुई इस वक़्त आप का सर मुबारक मेरी रान पर था, आप पर बेहोशी तारी हुई, फिर अफाका हुआ तो आप ﷺ ने अपनी नज़र छत की तरफ उठाई, फिर फ़रमाया: “ए अल्लाह! आला साथ नसीब फरमा, मैंने कहा: तब तो आप हमें इख़्तियार नहीं करेंगे, आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने जान लिया के वह हदीस जो आप हमें बयान किया करते थे, जब के आप सेहत मंद थे: “किसी नबी की रूह कब्ज़ नहीं की जाती हत्ता कि वह अपना जन्नती ठिकाना देख लेता है, फिर इसे इख़्तियार दिया जाता है”, आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया: नबी ﷺ ने जो आखिरी बात फरमाई वह यह थी: “ए अल्लाह! आला साथ नसीब फरमा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6509) و مسلم (87 / 2444)، (6297)

٥٩٦٥ - (صَحِيح) وَعَنْهَا»» قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ فِي مَرَضِهِ الَّذِي مَاتَ فِيهِ: «يَا عَائِشَةُ مَا أَزَالُ أَجِدُ أَلَمَ الطَّعَامِ الَّذِي أَكَلْتُ بِخَيْبَرَ وَهَذَا أَوَانُ وَجَدْتُ انْقِطَاعَ أَبهري من ذَلِك السم» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

5965. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ अपने मर्जे वफ़ात में फरमा रहे थे: “आइशा! मैंने जो खाना खैबर के मौके पर खाया था उसकी तकलीफ मुसलसल उठाता रहा हूँ, और यह वह वक़्त आ गया है के ऐसा मालुम होता है के इस ज़हर की वजह से मेरी शै रग कट जाएगी”| (बुखारी)

رواه البخاری (4428)

٥٩٦٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: لَمَّا حُضِرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَفِي الْبَيْتِ رِجَالٌ فِيهِمْ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هَلُمُّوا أَكْتُبْ لَكُمْ كِتَابًا لَنْ تَضِلُّوا بَعْدَهُ» . فَقَالَ عُمَرَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ غَلَبَ عَلَيْهِ الْوَجَعُ وَعِنْدَكُمُ الْقُرْآنُ حَسْبُكُمْ كِتَابُ اللَّهِ فَاخْتَلَفَ أَهْلُ الْبَيْتِ وَاخْتَصَمُوا فَمِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ: قَرِّبُوا يَكْتُبْ لَكُمْ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم. وَمِنْهُم يَقُولُ مَا قَالَ عُمَرُ. فَلَمَّا أَكْثَرُوا اللَّغَطَ وَالِاخْتِلَافَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «قُومُوا عَنِّي» . قَالَ عُبَيْدُ اللَّهِ: فَكَانَ ابنُ عباسٍ يَقُول: إِن الرزيئة كل الرزيئة مَا حَالَ بَيْنَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ [ص:١٦٨ وَبَيَّنَ أَنْ يَكْتُبَ لَهُمْ ذَلِكَ الْكِتَابَ لِاخْتِلَافِهِمْ وَلَغَطِهِمْ»» وَفِي رِوَايَةِ سُلَيْمَانَ بْنِ أَبِي مُسْلِمٍ الْأَحْوَلِ قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: يَوْمُ الْخَمِيسِ وَمَا يَوْمُ الْخَمِيسِ؟ ثُمَّ بَكَى حَتَّى بَلَّ دَمْعُهُ الْحَصَى. قُلْتُ: يَا ابْنَ عَبَّاسٍ وَمَا يَوْمُ الْخَمِيسِ؟ قَالَ: اشْتَدَّ بِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَجَعُهُ فَقَالَ: «ائْتُونِي بِكَتِفٍ أَكْتُبْ لَكُمْ كِتَابًا لَا تَضِلُّوا بَعْدَهُ أَبَدًا» . فَتَنَازَعُوا وَلَا يَنْبَغِي عِنْدَ نَبِيٍّ تَنَازُعٌ. فَقَالُوا: مَا شَأْنُهُ أَهَجَرَ؟ اسْتَفْهِمُوهُ فَذَهَبُوا يَرُدُّونَ عَلَيْهِ. فَقَالَ: «دَعُونِي ذَرُونِي فَالَّذِي أَنَا فِيهِ خَيْرٌ مِمَّا تَدْعُونَنِي إِلَيْهِ» . فَأَمَرَهُمْ بِثَلَاثٍ: فَقَالَ: «أَخْرِجُوا الْمُشْرِكِينَ مِنْ جَزِيرَةِ الْعَرَبِ وَأَجِيزُوا الْوَفْدَ بِنَحْوِ مَا كُنْتُ أُجِيزُهُمْ» . وَسَكَتَ عَنِ الثَّالِثَةِ أَوْ قَالَهَا فَنَسِيتُهَا قَالَ سُفْيَانُ: هَذَا مِنْ قَول سُلَيْمَان. مُتَّفق عَلَيْهِ

5966. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ पर मर्ज़ुल मौत के आसार ज़ाहिर होने लगे, तो इस वक़्त (आप के) घर में कुछ लोग थे उनमें उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु भी थे, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “लाओ में तुम्हें एक तहरीर लिख दू जिसके बाद तुम कभी गुमराह न होंगे”, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: आप पर तकलीफ का गलबा है और तुम्हारे पास कुरान है, तुम्हारे लिए अल्लाह की किताब काफी है, उस पर घर में मौजूद लोगों में इख्तिलाफ पड़ गया, और वह झगड़ पड़े, कोई कह रहा था, लाओ रसूलुल्लाह ﷺ तुम्हें लिख दें, और कोई वही कह रहा था जो उमर रदियल्लाहु अन्हु ने कहा था, चुनांचे जब शोरो गुल और इख्तिलाफ ज़्यादा हो गया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरे पास से उठ जाओ”, उबैदुल्लाह ने बयान किया, इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाया करते थे: सबसे बड़ी मुसीबत यह थी के उनका इख्तिलाफ और शोरो शगब रसूलुल्लाह ﷺ और आप की तहरीर के दरमियान हाइल हो गया| और सुलेमान बिन अबी मुस्लिम अल अहवल की रिवायत में है, इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने जुमेरात के दिन का ज़िक्र किया, और जुमेरात के दिन क्या हुआ? फिर वह रोने लगे, इतना रोए के उन के आसूंओ ने संगरेज़ो को तर कर दिया, मैंने कहा: इब्ने अब्बास जुमेरात के दिन क्या हुआ? उन्होंने ने फ़रमाया: इस रोज़ रसूलुल्लाह ﷺ की तकलीफ शिद्दत इख़्तियार कर गई, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुझे शाने की हड्डी दो में तुम्हें तहरीर लिख दू, उस के बाद तुम कभी गुमराह न होगे”, उन्होंने इख्तिलाफ कर लिया, हालाँकि नबी के यहाँ तनाज़ा मुनासिब नहीं, उन्होंने कहा: उनकी क्या हालत है? क्या आप ﷺ (मर्ज़ की वजह से) ऐसी बात फरमा रहे हैं, उन्हें समझने की कोशिश करो, फिर वह आप ﷺ से बार बार पूछने की कोशिश करते रहे लेकिन आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुझे छोड़ दो, मुझे मेरे हाल पर रहने दो में जिस हालत में हूँ वह उस से, जिसके लिए तुम कह रहे हो बेहतर है”, आप ﷺ ने उन्हें तीन बातो की वसीयत फरमाई: “मुशरिकीन को जज़ीरा अरब से निकाल देना, वफद को इसी तरह अतियात देते रहना जिस तरह में उन्हें अतियात दिया करता था”, और रावी ने तीसरी बात नहीं की या उस के मुतल्लिक उन्होंने कहा: में उसे भूल गया हूँ सुफियान रहिमहुल्लाह ने कहा यह (कहना के उन्होंने तीसरी बात बयान नहीं की) सुलेमान का कौल है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (114) و مسلم (22 / 1637) الرواية الثانية : البخارى (4431) و مسلم (20 / 1637)، (4232 و 4234)

٥٩٦٧ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَنَسٍ قَالَ: قَالَ أَبُو بَكْرٍ لِعُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا بَعْدَ وَفَاةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: انْطَلِقْ بِنَا إِلَى أُمِّ أَيْمَنَ نَزُورُهَا كَمَا كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَزُورُهَا فَلَمَّا انْتَهَيْنَا إِلَيْهَا بَكَتْ. فَقَالَا لَهَا: مَا يُبْكِيكِ؟ أَمَا تَعْلَمِينَ أَنَّ مَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ فَقَالَتْ: إِنِّي لَا أَبْكِي أَنِّي لَا أَعْلَمُ أَنَّ مَا عِنْدَ اللَّهِ تَعَالَى خَيْرٌ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَكِنْ أَبْكِي أَنَّ الْوَحْيَ قَدِ انْقَطَعَ مِنَ السَّمَاءِ فَهَيَّجَتْهُمَا عَلَى الْبُكَاءِ فَجعلَا يَبْكِيَانِ مَعهَا. رَوَاهُ مُسلم

5967. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाह ﷺ की वफात के बाद उमर रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: उम्म अयमन रदियल्लाहु अन्हा के पास चले उनकी ज़ियारत करे जिस तरह रसूलुल्लाह ﷺ उनकी ज़ियारत किया करते थे, जब हम उन के पास पहुंचे तो वह रोने लगी, इन दोनों हज़रात ने उन्हें कहा: आप क्यों रोती है? क्या आप को मालुम नहीं के अल्लाह के यहाँ जो है के रसूलुल्लाह ﷺ के लिए बेहतर है? उन्होंने ने फ़रमाया: में इसलिए नहीं रो रही के मुझे इल्म नहीं के अल्लाह तआला के यहाँ जो है वह रसूलुल्लाह ﷺ के लिए बेहतर है, मैं तो इसलिए रो रही हूँ कि आसमान से वही का आना मुन्कतेअ हो चूका है, उम्म अयमन रदियल्लाहु अन्हा ने इन दोनों हज़रात को भी रोने पर अमादा कर दिया, वह भी उन के साथ रोना शुरू हो गए| (मुस्लिम)

رواه مسلم (103 / 2454)، (6318)

٥٩٦٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي»» سعيد الْخُدْرِيّ قَالَ: خَرَجَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي مَرَضِهِ الَّذِي مَاتَ فِيهِ وَنَحْنُ فِي الْمَسْجِدِ عَاصِبًا رَأْسَهُ بِخِرْقَةٍ حَتَّى أَهْوَى نَحْوَ الْمِنْبَرِ فَاسْتَوَى عَلَيْهِ وَاتَّبَعْنَاهُ قَالَ: «وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ إِنِّي؟ لَأَنْظُرُ إِلَى الْحَوْضِ مِنْ مَقَامِي هَذَا» ثُمَّ قَالَ: «إِنَّ عَبْدًا عُرِضَتْ عَلَيْهِ الدُّنْيَا وَزِينَتُهَا فَاخْتَارَ الْآخِرَةَ» قَالَ: فَلَمْ يَفْطِنْ لَهَا [ص:١٦٨ أَحَدٌ غَيْرُ أَبِي بَكْرٍ فَذَرَفَتْ عَيْنَاهُ فَبَكَى ثُمَّ قَالَ: بَلْ نَفْدِيكَ بِآبَائِنَا وأمَّهاتِنا وأنفسنا وأموالِنا يَا رسولَ الله قَالَ: ثُمَّ هَبَطَ فَمَا قَامَ عَلَيْهِ حَتَّى السَّاعَة. رَوَاهُ الدَّارمِيّ

5968. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ अपने मर्जे वफ़ात में (अपने हुजरे से) बाहर तशरीफ़ लाए, हम इस वक़्त मस्जिद में थे, आप ने अपने सर पर पट्टी बांध रखी थी, आप मिम्बर की तरफ बढ़े और उस पर जलवा अफ़रोज़ हुए, हम भी आप के करीब हुए तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! मैं अपने इस जगह से हौज़ (कौसर) को देख रहा हूँ”, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “एक बंदे पर दुनिया और उसकी जैब व ज़ीनत पेश की गई लेकिन उस ने आखिरत को पसंद किया”, रावी बयान करते हैं, सिर्फ अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ही इस बात को समझ सके, उनकी आंखो से आंसू बहने लगे और आप ज़ारो कतार रोने लगे, फिर अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! नहीं, बल्कि हम आप पर अपने वालिदेन, अपने जानें और अपने अमवाल कुरबान कर देंगे, रावी बयान करते हैं, फिर आप मिम्बर से नीचे तशरीफ़ लाए फिर, वफात तक दोबारा मिम्बर पर जलवा अफ़रोज़ नहीं हुए| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الدارمی (1 / 36 ح 78)

٥٩٦٩ - (حسن) وَعَنِ»» ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ [إِذَا جَاءَ نصر الله وَالْفَتْح] دَعَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاطِمَةَ

قَالَ: «نُعِيَتْ إِلَيَّ نَفْسِي» فَبَكَتْ قَالَ: «لَا تَبْكِي فَإِنَّكِ أَوَّلُ أَهْلِي لَاحِقٌ بِي» فَضَحِكَتْ فَرَآهَا بَعْضُ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْنَ: يَا فَاطِمَةُ رَأَيْنَاكِ بَكَيْتِ ثُمَّ ضَحِكْتِ. قَالَتْ: إِنَّهُ أَخْبَرَنِي أَنَّهُ قَدْ نُعِيَتْ إِلَيْهِ نَفْسُهُ فَبَكَيْتُ فَقَالَ لِي: لَا تبْكي فإنك أَوَّلُ أَهلِي لاحقٌ بِي فضحكتُ. وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا جَاءَ نصرُ الله وَالْفَتْح وَجَاءَ أَهْلُ الْيَمَنِ هُمْ أَرَقُّ أَفْئِدَةً وَالْإِيمَانُ يمانٍ وَالْحِكْمَة يَمَانِية» . رَوَاهُ الدَّارمِيّ

5969. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जब सुरह नस्र नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा को बुलाया और फ़रमाया: “मुझे मेरी वफात की इत्तिला दी गई है”, वह रोने लगी, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मत रोएँ, क्योंकि मेरे अहले खाना में से सबसे पहले आप मुझे मिलेगी”, उस पर वह हंस दी, नबी ﷺ की किसी ज़ौजा ए मोहतरमा ने उन्हें देख लिया तो उन्होंने कहा: फ़ातिमा! हमने आप को रोते हुए देखा फिर आप को हँसते हुए देखा, (क्या मुआमला था ?) उन्होंने ने फ़रमाया: आप ﷺ ने मुझे बताया की मुझे मेरी वफात की इत्तिला दी गई है तो उस पर में रोने लगी, फिर आप ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “आप मत रोएँ क्योंकि मेरे अहले खाना में से सबसे पहले आप मुझे मिलेगी”, तो उस पर में हंस दी, और रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब अल्लाह की नुसरत और फतह आ गई”, और अहले यमन आए, वह नरम दिल है, और ईमान यमनी है और हिकमत यमनी है”| (हसन)

سنده حسن ، رواه الدارمی (1 / 37 ح 80)

٥٩٧٠ - (صَحِيح) وَعَن»» عَائِشَة أَنَّهَا قَالَت: وَا رأساه قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «ذَاكِ لَوْ كَانَ وَأَنَا حَيٌّ فَأَسْتَغْفِرُ لَكِ وَأَدْعُو لَكِ» فَقَالَتْ عَائِشَةُ: وَاثُكْلَيَاهْ وَاللَّهِ إِنِّي لَأَظُنُّكَ تُحِبُّ مَوْتِي فَلَوْ كَانَ ذَلِكَ لَظَلِلْتَ آخِرَ يَوْمِكَ مُعْرِسًا بِبَعْضِ أَزْوَاجِكَ فَقَالَ النَّبِيُّ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم: " بل أَنا وَا رأساه لَقَدْ هَمَمْتُ أَوْ أَرَدْتُ أَنْ أُرْسِلَ إِلَى أَبِي بَكْرٍ وَابْنِهِ وَأَعْهَدُ أَنْ يَقُولَ الْقَائِلُونَ أَوْ يَتَمَنَّى الْمُتَمَنُّونَ ثُمَّ قُلْتُ: يَأْبَى اللَّهُ وَيَدْفَعُ الْمُؤْمِنُونَ أَوْ يَدْفَعُ اللَّهُ وَيَأْبَى الْمُؤْمِنُونَ ". رَوَاهُ البُخَارِيّ

5970. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के उन्होंने कहा: हाए सर फटा जा रहा है (और उन्होंने मौत की तरफ इरशाद किया) तब रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगर ऐसी सूरत हुई (तुम्हारी मौत वाकेअ हो गई) और मैं जिंदा हुआ तो में तुम्हारे लिए मगफिरत तलब करूँगा और तुम्हारे लिए दुआ करूँगा”, आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया: अफ़सोस! अल्लाह की क़सम! मैं आप के मुतल्लिक यह ख़याल करती हूँ कि आप मेरी मौत पसंद फरमाते हैं, अगर ऐसे हो गया तो आप अगले ही रोज़ किसी दूसरी औरत से शादी कर लेंगे, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “नहीं, बल्कि में अपने सर फटने का इज़हार करता हूँ, मैंने इरादा किया था की मैं अबू बक्र और उन के बेटे को बुला भेजू और उन (अबू बक्र (र)) को खलीफा नाम ज़द कर दूँ, ताकि कोई दावा करने वाला उस का दावा न करे या कोई ख्वाहिश रखने वाला उसकी ख्वाहिश न रखे, फिर मैंने कहा: अल्लाह खुद ही (किसी और की खिलाफत का) इनकार फरमादेगा और मोमिन (किसी और को खिलाफत से) दूर कर देंगे, या अल्लाह (किसी और की खिलाफत) हटा देगा और मोमिन इनकार कर देंगे”| (बुखारी)

رواه البخاری (5666)

٥٩٧١ - (حسن) وَعَنْهَا»» : قَالَتْ: رَجَعَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَات يومٍ من جنازةٍ مِنَ الْبَقِيعِ فَوَجَدَنِي وَأَنَا أَجِدُ صُدَاعًا وَأَنَا أَقُولُ: وَارَأْسَاهْ قَالَ: «بَلْ أَنَا يَا عَائِشَةُ وَارَأْسَاهْ» قَالَ: «وَمَا ضَرَّكِ لَوْ مِتِّ قَبْلِي فَغَسَّلْتُكِ وَكَفَّنْتُكِ وَصَلَّيْتُ عَلَيْكِ وَدَفَنْتُكِ؟» قُلْتُ: لَكَأَنِّي بِكَ وَاللَّهِ لَوْ فَعَلْتَ ذَلِكَ لَرَجَعْتَ إِلَى بَيْتِي فَعَرَّسْتَ فِيهِ بِبَعْضِ [ص:١٦٨ نِسَائِكَ فَتَبَسَّمَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ بُدِيءَ فِي وَجَعِهِ الَّذِي مَاتَ فِيهِ. رَوَاهُ الدَّارِمِيُّ

5971. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, एक रोज़ रसूलुल्लाह ﷺ जनाज़े से फारिग़ हो कर बकी से वापस मेरे पास तशरीफ़ लाए और आप ने मुझे इस हाल में पाया के मेरे सर में दर्द था, और मैं कह रही थी: हाए दर्द की वजह से सर फटा जा रहा है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “नहीं, बल्कि आइशा! मैं और मेरा सर दर्द से फटा जा रहा है” फ़रमाया: “अगर तुम मुझ से पहले वफात पा गई तो यह तुम्हारे लिए मुज़िर नहीं क्यूंकि के इस सूरत में में तुम्हें ग़ुस्ल दूंगा, तुझे कफन पहनाऊंगा, तुम्हारी नमाज़ ए जनाज़ा पढूँगा और तुम्हें दफन करूँगा”, मैंने कहा: अल्लाह की क़सम! आप के मुतल्लिक मेरा भी हमें ख़याल है, अगर आप ने इस तरह (गुसल व कफन और दफन वगैरा) किया तो आप मेरे घर वापस आएँगे, वहां अपनी किसी बीवी से सोहबत करेंगे, (ये सुन कर) रसूलुल्लाह ﷺ मुस्कुरा दिए, फिर आप को तकलीफ ज़ाहिर हुई जिस में आप ﷺ ने वफात पाई| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمی (1 / 3738 ح 81) [و ابن ماجه (1465)] * الزهری مدلس و عنعن

٥٩٧٢ - (واه) وَعَنْ»» جَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ رَجُلًا مِنْ قُرَيْشٍ دَخَلَ عَلَى أَبِيهِ عَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ فَقَالَ أَلَا أُحَدِّثُكَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَ: بَلَى حَدِّثْنَا عَنْ أَبِي الْقَاسِمِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لَمَّا مَرِضَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَتَاهُ جِبْرِيلُ فَقَالَ: " يَا مُحَمَّدُ إِنَّ اللَّهَ أَرْسَلَنِي إِلَيْكَ تَكْرِيمًا لَكَ وَتَشْرِيفًا لَكَ خَاصَّةً لَكَ يَسْأَلُكَ عَمَّا هُوَ أَعْلَمُ بِهِ مِنْكَ يَقُولُ: كَيْفَ تجدك؟ قَالَ: أجدُني يَا جِبْرِيل مغموماً وأجدني يَا جِبْرِيل مَكْرُوبًا ". ثُمَّ جَاءَهُ الْيَوْمُ الثَّانِي فَقَالَ لَهُ ذَلِكَ فَرَدَّ عَلَيْهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَمَا رَدَّ أَوَّلَ يَوْمٍ ثُمَّ جَاءَهُ الْيَوْمَ الثَّالِثَ فَقَالَ لَهُ كَمَا قَالَ أَوَّلَ يَوْمٍ وَرَدَّ عَلَيْهِ كَمَا رَدَّ عَلَيْهِ وَجَاءَ مَعَهُ مَلَكٌ يُقَالُ لَهُ: إِسْمَاعِيلُ عَلَى مِائَةِ أَلْفِ مَلَكٍ كُلُّ مَلَكٍ عَلَى مِائَةِ أَلْفِ مَلَكٍ فَاسْتَأْذَنَ عَلَيْهِ فَسَأَلَهُ عَنْهُ. ثُمَّ قَالَ جِبْرِيل: هَذَا مَلَكُ الْمَوْتِ يَسْتَأْذِنُ عَلَيْكَ. مَا اسْتَأْذَنَ عَلَى آدَمِيٍّ قَبْلَكَ وَلَا يَسْتَأْذِنُ عَلَى آدَمِيٍّ بَعْدَكَ. فَقَالَ: ائْذَنْ لَهُ فَأَذِنَ لَهُ فَسَلَّمَ عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ يَا مُحَمَّدُ إِنَّ اللَّهَ أَرْسَلَنِي إِلَيْكَ فَإِنْ أَمَرْتَنِي أَنْ أَقْبِضَ رُوحَكَ قَبَضْتُ وَإِنْ أَمَرْتَنِي أَنْ أَتْرُكَهُ تَرَكْتُهُ فَقَالَ: وَتَفْعَلُ يَا مَلَكَ الْمَوْتِ؟ قَالَ: نَعَمْ بِذَلِكَ أُمرتُ وأُمرتُ أَن أطيعَك. قَالَ: فَنَظَرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى جِبْرِيل عَلَيْهِ السَّلَام فَقَالَ جِبْرِيلُ: يَا مُحَمَّدُ إِنَّ اللَّهَ قَدِ اشْتَاقَ إِلَى لِقَائِكَ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِمَلَكِ الْمَوْتِ: «امْضِ لِمَا أُمِرْتَ بِهِ» فَقَبَضَ رُوحَهُ فَلَمَّا تُوُفِّيَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَجَاءَتِ التَّعْزِيَةُ سَمِعُوا صَوْتًا مِنْ نَاحِيَةِ الْبَيْتِ: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ إِنَّ فِي اللَّهِ عَزَاءً مِنْ كُلِّ مُصِيبَةٍ وَخَلَفًا مِنْ كُلِّ هالكٍ ودَرَكاً من كلِّ فائت فبالله فثقوا وَإِيَّاهُ فَارْجُوا فَإِنَّمَا الْمُصَابُ مَنْ حُرِمَ الثَّوَابَ. فَقَالَ عَلِيٌّ: أَتَدْرُونَ مَنْ هَذَا؟ هُوَ الْخَضِرُ عَلَيْهِ السَّلَامُ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي «دَلَائِلِ النُّبُوَّةِ»

5972. जाफर बिन मुहम्मद अपने वालिद से रिवायत करते हैं की कुरैश में से एक आदमी उन के वालिद अली बिन हुसैन के पास आया और उस ने कहा: क्या मैं तुम है रसूलुल्लाह ﷺ की हदीस न सुनाउ? उन्होंने ने फ़रमाया: हाँ, अबुल कासिम ﷺ की हदीस हमें सुनाओ, इस आदमी ने कहा जब रसूलुल्लाह ﷺ बीमार हुए तो जिब्राइल अलैहिस्सलाम आप के पास आए तो उन्होंने कहा: मुहम्मद अल्लाह ने आप की तकरिम व ताज़ीम की खातिर मुझे आप की तरफ भेजा है, वह आप के लिए खास है, वह आप से इस चीज़ के मुतल्लिक दरियाफ्त करता है, जिसके

मुतल्लिक वह आप से बेहतर जानता है, वह फरमाता है, आप अपने आप को कैसा महसूस करते हैं? आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिब्राइल! मैं अपने आप को मगमूम पाता हूँ, और जिब्राइल में अपने आप को करब में महसूस करता हूँ”, फिर वह दूसरे रोज़ आए तो उन्होंने आप से यही कहा ,रसूलुल्लाह ﷺ ने वही जवाब दिया जो आप ने पहले रोज़ दिया था फिर वह तीसरे रोज़ आप के पास आए तो उन्होंने आप से वही कुछ कहा जो पहले रोज़ कहा था, और आप ने भी उन्हें वही जवाब दिया, और आखिरी बार जिब्राइल अलैहिस्सलाम के साथ इस्माइल नामी फ़रिश्ता आया जो एक लाख फरिश्तो का सरदार है, और उस का हर मातेहत फ़रिश्ता लाख फरिश्तो का सरदार है, उस ने आप ﷺ से इजाज़त तलब की, आप ﷺ ने जिब्राइल अलैहिस्सलाम से इस फरिश्तो के मुतल्लिक दरियाफ्त किया, तो जिब्राइल अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया, यह मौत का फ़रिश्ता है, वह आप के पास आने की इजाज़त तलब कर रहा है, उस ने आप से पहले किसी आदमी से इजाज़त तलब की है न आप के बाद किसी आदमी से इजाज़त तलब करेगा, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे इजाज़त दे दी”, इसे इजाज़त दे दी गई, उस ने सलाम किया, फिर कहा: मुहम्मद! अल्लाह ने मुझे आप की तरफ भेजा है, अगर आप अपनी रूह कब्ज़ करने की मुझे इजाज़त दें तो मैं कब्ज़ कर लूँगा, और अगर आप ने इजाज़त न फरमाई में उसे कब्ज़ नहीं करूँगा, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मौत के फ़रिश्ते! क्या तुम ऐसे करोगे ?” उस ने कहा: हाँ, क्योंकि मुझे यह हुक्म दिया गया है कि मैं आप की चाहत का एहतराम करू, रावी बयान करते हैं, नबी ﷺ ने जिब्राइल अलैहिस्सलाम की तरफ देखा तो जिब्राइल अलैहिस्सलाम ने कहा: मुहम्मद! अल्लाह आप की मुलाकात का मुश्ताक (उत्सुक) है, तब नबी ﷺ ने मलिकुल मौत से फ़रमाया: “तुम्हें जो हुक्म दिया गया है उसकी तामिल करो”, उस ने आप की रूह कब्ज़ की, जब रसूलुल्लाह ﷺ ने वफात पाई और ताज़ियत करने वाले हाज़िर हुए तो उन्होंने घर के कोने से आवाज़ सुनी, अहले बैत! तुम पर सलामती हो, अल्लाह की रहमत और उसकी बरकात हो, बेशक अल्लाह की किताब में हर मुसीबत से अज़ा व तसल्ली है, हर हलाक होने वाली चिज़ का मुआवज़ा , और हर नुकसान का तदराक है, अल्लाह की तौफिक के साथ अल्लाह से डरो, सिर्फ उस से उम्मी से वाबिस्ता करो, खसारे वाला शख़्स वह है जो सवाब से महरूम हो गया अली (ज़ैनुल आबेदीन (रह)) ने कहा: क्या तुम जानते हो के वह शख़्स कौन था, वह खिज़र अलैहिस्सलाम थे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه البيهقى فى دلائل النبوة (7 / 267268) [و الشافعى فى السنن الماثورة (ص 334335 ح 390 رواية الطحاوى عن المزنى) و السهمى فى تاريخ جرجان (ص 363364)] * فيه قاسم بن عبدالله بن عمر بن حفص : متروک رماه احمد بالكذب

बَابُ • गुज़िश्ता बाब के बारे में बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٥٩٧٣ - (صَحِيح) عَن عَائِشَةَ قَالَتْ: مَا تَرَكَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دِينَارًا وَلَا دِرْهَمًا وَلَا شَاةً وَلَا بَعِيرًا وَلَا أَوْصَى بِشَيْءٍ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

5973. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने (तर्के में) ना कोई दीनार छोड़ा न दिरहम, ना कोई बकरी छोड़ी न ऊंट और ना ही किसी चीज़ की वसीयत की| (मुस्लिम)

رواه مسلم (18 / 1635)، (4229)

٥٩٧٤ - (صَحِيح) عَن عَمْرو بن الْحَارِث أخي جوَيْرِية قَالَ: مَا تَرَكَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عِنْدَ مَوْتِهِ دِينَارًا وَلَا دِرْهَمًا وَلَا عَبْدًا وَلَا أَمَةً وَلَا شَيْئًا إِلَّا بَغْلَتَهُ الْبَيْضَاءَ وَسِلَاحَهُ وَأَرْضًا جَعَلَهَا صَدَقَةً. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

5974. जुरियह रदियल्लाहु अन्हु के भाई अम्र बिन हारिस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने वफात के वक़्त ना कोई दीनार छोड़ा न दिरहम, ना कोई गुलाम छोड़ा न लोंदी, ना आप ने अपना सफ़ेद खच्चर अपना अस्लिहा और कुछ ज़मीन छोड़ी थी, और इस (ज़मीन) को भी सदका करार दे दिया था| (बुखारी)

رواه البخاری (2739)

٥٩٧٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يَقْتَسِمُ وَرَثَتِي دِينَارًا مَا تَرَكْتُ بَعْدَ نَفَقَةِ نِسَائِي وَمُؤْنَةِ عَامِلِي فَهُوَ صَدَقَةٌ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5975. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरी विरासत दीनार की सूरत में तकसीम नहीं होगा मैंने अपनी अज़वाज ए मूतहरात के खर्चे और आमलो की ज़ुरुरियात के इखराजात के बाद जो छोड़ा है वह सदका है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2776) و مسلم (55 / 1760)، (4583)

٥٩٧٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا نُورَثُ مَا تَرَكْنَاهُ صَدَقَةٌ» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5976. अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हमारी विरासत नहीं होती, हमारा तर्क सदका है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6726) و مسلم (52 / 1759)، (4580)

٥٩٧٧ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَالَ: «إِنَّ اللَّهَ إِذَا أَرَادَ رَحْمَةَ أُمَّةٍ مِنْ عِبَادِهِ قَبَضَ نَبِيَّهَا قَبْلَهَا فَجَعَلَهُ لَهَا فَرَطًا وَسَلَفًا بَيْنَ يَدَيْهَا وَإِذَا أَرَادَ هَلَكَةَ أُمَّةٍ عَذَّبَهَا وَنَبِيُّهَا حَيٌّ فَأَهْلَكَهَا وَهُوَ يَنْظُرُ فَأَقَرَّ عَيْنَيْهِ بِهَلَكَتِهَا حِينَ كَذَّبُوه وعصَوْا أمره» . رَوَاهُ مُسلم

5977. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं की आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब अल्लाह उम्मत के लोगों पर रहमत का इरादा फरमाता है तो इस (उम्मत) से पहले उस के नबी की रूह कब्ज़ फरमा लेता है, और वह इस (नबी) को इस (उम्मत) के लिए उस के आगे मीरमंजिल और पेशरो बना देता है, और जब वह किसी उम्मत की हलाकत का इरादा फरमाता है तो नबी की जिंदगी में इस (उम्मत) पर अज़ाब नाज़िल फरमा कर उस को हलाक कर देता है और वह (नबी) उनकी हलाकत के मंजर का मुशाहिदा कर के उस से अपने आँखे ठंडी करता है, क्योंकि उन्होंने उसकी तकज़ीब की होती है और उस के हुक्म की नाफ़रमानी की होती है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (24 / 2288)، (5965)

٥٩٧٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لَيَأْتِيَنَّ عَلَى أَحَدِكُمْ يَوْمٌ وَلَا يَرَانِي ثُمَّ لَأَنْ يَرَانِي أَحَبُّ إِلَيْهِ مِنْ أَهْلِهِ ومالهِ مَعَهم» . رَوَاهُ مُسلم

5978. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद ﷺ की जान है! तुम में से किसी पर एक दिन ऐसा भी आएगा के वह मुझे नहीं देखेगा, फिर अगर वह मुझे देख ले तो यह इसे अपने अहल व अयाल और अपने माल के मिलने से भी ज़्यादा पसंदीदा होगा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (142 / 2364)، (6129)

कुरैश के मनाकिब और क़बीलों का बयान • بَابُ مَنَاقِبِ قُرَيْشٍ وَذِكْرِ الْقَبَائِلِ

पहली फस्ल • الْفَصْلُ الأول

٥٩٧٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «النَّاسُ تَبَعٌ لِقُرَيْشٍ فِي هَذَا الشَّأْنِ مسلمهم تبع مسلمهم وكافرهم تبع لكافرهم» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5979. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “इस (दीन या खिलाफत) के मुआमले में लोग कुरैश के ताबेअ हैं, उन (लोगो) के मुसलमान, कुरैश मुसलमानों के ताबेअ हैं, और उन (आम लोगो) के काफ़िर, उन (कुरैश के) काफिरों के ताबेअ हैं”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3495) و مسلم (2 / 1818)، (4702)

٥٩٨٠ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٌ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «النَّاسُ تَبَعٌ لِقُرَيْشٍ فِي الْخَيْرِ وَالشَّر» . رَوَاهُ مُسلم

5980. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “लोग खैर (इस्लाम) और शर (कुफ्र) में कुरैश के ताबेअ हैं”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (3 / 1819)، (4703)

٥٩٨١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يَزَالُ هَذَا الْأَمْرُ فِي قُرَيْشٍ مَا بَقِيَ مِنْهُمُ اثْنَان» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5981. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “ये मुआमला (खिलाफत) कुरैश में रहेगा जब तक उनमें दो आदमी भी बाकी रहे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3501) و مسلم (4 / 1820)، (4704)

٥٩٨٢ - (صَحِيح) وَعَنْ مُعَاوِيَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ هَذَا الْأَمْرَ فِي قُرَيْشٍ لَا يُعَادِيهِمْ أَحَدٌ إِلَّا كَبَّهُ اللَّهُ عَلَى وَجهه مَا أَقَامُوا الدّين» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

5982. मुआविया रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से सुना आप ﷺ फरमा रहे थे: “ये

खिलाफत कुरैश में रहेगी जब तक वह दीन को काइम रखेंगे, और जो शख़्स उनकी मुखालिफत करेगा अल्लाह इसे चेहरे के बल ओंधा कर के ज़लील कर देगा"| (बुखारी)

رواه البخارى (3500)

٥٩٨٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَا يَزَالُ الْإِسْلَامُ عَزِيزًا إِلَى اثْنَيْ عَشَرَ خَلِيفَةً كُلُّهُمْ مِنْ قُرَيْشٍ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «لَا يَزَالُ [ص:١٦٨ أَمْرُ النَّاسِ مَاضِيًا مَا وَلِيَهُمُ اثْنَا عَشَرَ رَجُلًا كُلُّهُمْ مِنْ قُرَيْشٍ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «لَا يَزَالُ الدِّينُ قَائِمًا حَتَّى تَقُومَ السَّاعَة أَو يَكُونُ عَلَيْهِمُ اثْنَا عَشَرَ خَلِيفَةً كُلُّهُمْ مِنْ قُرَيْش» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5983. जाबिर बिन समुराह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "बारह खलीफो तक इस्लाम ग़ालिब रहेगा और वह सब कुरैश से होंगे", एक दूसरी रिवायत में है: "लोगो के मुआमलात सहीह और दुरुस्त चलते रहेंगे जब तक बारह आदमी उन के हुक्मरान रहेंगे, वह सब कुरैश से होंगे", एक और रिवायत में है: "कियामत तक दीन काइम रहेगा और इन पर बारह खालिफे होंगे और वह सब कुरैश से होंगे"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (7222) و مسلم (7 / 1821 و الرواية الثانية : 6 / 1821 و الرواية الثالثة : 10 / 1822)، (4708 و 4706 و 4711)

٥٩٨٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «غِفَارُ غَفَرَ اللَّهُ لَهَا وَأَسْلَمُ سَالَمَهَا اللَّهُ وَعُصَيَّةُ عَصَتِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ» . مُتَّفق عَلَيْهِ

5984. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "कबिले गिफ़ार जो है, अल्लाह ने उन्हें मुआफ़ फरमा दिया, कबिले असलम को अल्लाह ने सलामत रखा और जो कबिले उसय्यत है उस ने अल्लाह और उस के रसूल की नाफ़रमानी की"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3513) و مسلم (187 / 2518)، (6435)

٥٩٨٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «قُرَيْشٌ وَالْأَنْصَارُ وَجُهَيْنَةُ وَمُزَيْنَةُ وَأَسْلَمُ وَغِفَارُ وَأَشْجَعُ مَوَالِيَّ لَيْسَ لَهُمْ مَوْلًى دُونَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5985. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "कुरैश, अंसार, जुहय्न, ‹मज़िना, असलम, गिफ़ार और अशजअ कबिले मेरे हिमायती है और अल्लाह और उस के रसूल के सिवा उनका कोई

हिमायती नहीं ?”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3512) و مسلم (189 / 2520)، (6439)

٥٩٨٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي بَكْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَسْلَمُ وَغِفَارُ وَمُزَيْنَةُ وَجُهَيْنَةُ خَيْرٌ مِنْ بني تَمِيم وَبني عَامِرٍ وَالْحَلِيفَيْنِ بَنِي أَسْدٍ وَغَطَفَانَ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5986. अबू बकरह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “असलम, गिफ़ार, ،मज़िना और जुहय्न कबिले बनू तमीम और बनू आमिर क़बीलो से बेहतर है, और वह दो हलिफो बनू असद और ग्त्फ़ान से भी बेहतर है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3523) و مسلم (190 / 2531)، (6441)

٥٩٨٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أبي هُرَيْرَة قَالَ: " مَا زِلْتُ أُحِبُّ بَنِي تَمِيمٍ مُنْذُ ثلاثٍ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ فِيهِمْ سَمِعْتُهُ يَقُولُ: «هُمْ أَشَدُّ أُمَّتِي عَلَى الدَّجَّالِ» قَالَ: وَجَاءَتْ صَدَقَاتُهُمْ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هَذِهِ صَدَقَاتُ قَوْمِنَا» وَكَانَتْ سَبِيَّةٌ مِنْهُمْ عِنْدَ عَائِشَةَ فَقَالَ: «اعْتِقِيهَا فَإِنَّهَا مِنْ وَلَدِ إِسْمَاعِيلَ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

5987. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने बनू तमीम के मुतल्लिक जब से रसूलुल्लाह ﷺ से तीन खसलते सुनी है तब से में उन्हें महबूब रखता हूँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मेरी उम्मत में से वह दज्जाल पर सबसे ज़्यादा सख्त होंगे”, रावी बयान करते हैं, उन के सदकात आए तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ये हमारी कौम के सदकात है”, और आइशा रदियल्लाहु अन्हा के पास उन के कुछ कैदी थे, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “उन्हें आज़ाद कर दो क्योंकि वह इस्माइल अलैहिस्सलाम की औलाद में से है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (2543) و مسلم (198 / 2525)، (6451)

بَابُ مَنَاقِبِ قُرَيْشٍ وَذِكْرِ الْقَبَائِلِ • कुरैश के मनाकिब और क़बीलों का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٥٩٨٨ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ سَعْدٍ»» عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ يُرِدْ هَوَانَ قُرَيْشٍ أَهَانَهُ الله» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5988. साअद रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स कुरैश की अहानत करना चाहेगा अल्लाह उसकी अहानत ताजल्लिल करेगा”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (3905 وقال : غریب)

٥٩٨٩ - (حسن صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اللَّهُمَّ أَذَقْتَ أَوَّلَ [ص:١٦٨ قُرَيْشٍ نَكَالًا فَأَذِقْ آخِرَهُمْ نَوَالًا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

5989. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह तूने (बद्र व अहज़ाब में) कुरैश के पहले लोगों को अज़ाब में मुब्तिला किया, तो उन के बाद वालो को इनाम अता फरमा”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (3908 وقال : حسن صحیح غریب)

٥٩٩٠ - (ضَعِيف) وَعَن»» أبي عَامر الْأَشْعَرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «نَعْمَ الْحَيُّ الْأَسْدُ وَالْأَشْعَرُونَ لَا يَفِرُّونَ فِي الْقِتَالِ وَلَا يَغُلُّونَ هُمْ مِنِّي وَأَنَا مِنْهُمْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

5990. अबू आमिर अशअरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “असद और अशअर कबिले अच्छे है, ना वह मैदान ए जिहाद से फरार होते हैं न खयानत करते हैं, वह मुझ से है और मैं उन से हो” तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3947) و اخطا من ضعفه

٥٩٩١ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ»» أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " الْأَزْدُ أَزْدُ اللَّهِ فِي الْأَرْضِ يُرِيدُ النَّاسُ أَنْ يَضَعُوهُمْ وَيَأْبَى اللَّهُ إِلَّا أَنْ يَرْفَعَهُمْ وَلَيَأْتِيَنَّ عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ يَقُولُ الرَّجُلُ: يَا لَيْتَ أَبِي كَانَ أَزْدِيًا وَيَا لَيْتَ أُمِّي كَانَتْ أَزْدِيَّةً " رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

5991. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अज़दी कबिले ज़मीन पर अल्लाह का लश्कर है, लोग चाहते है के वह उन्हें निचा दिखाए, लेकिन अल्लाह ने इस बात का इनकार फरमा दिया है, वह उन्हें बड़ा दर्ज़ा ही अता फरमाता है, लोगों पर एक ऐसा वक़्त भी आएगा के आदमी ख्वाहिश करेगा के काश मेरा वालिद अज़दी होता और काश मेरी वालिदा अज़दी होती”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3937)

٥٩٩٢ - (ضَعِيف) وَعَن»» عمرَان بن حُصَيْن قَالَ: مَاتَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يَكْرَهُ ثَلَاثَةَ أَحْيَاءٍ: ثَقِيفٌ وَبَنِي حَنِيفَةَ وَبَنِي أُمَيَّةَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيب

5992. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने वफात पाई तो वह तीन क़बीलो को नापसंद फरमाते थे, सकिफ, बनू हनीफा और बनू उमय्या| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3943) * فیه هشام بن حسان و الحسن البصری مدلسان و عنعنا

٥٩٩٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ»» عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «فِي ثَقِيفٍ كَذَّابٌ وَمُبِيرٌ» قَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عِصْمَةَ يُقَالُ: الْكَذَّابُ هُوَ الْمُخْتَارُ بْنُ أَبِي عُبَيْدٍ وَالْمُبِيرُ هُوَ الْحَجَّاجُ بْنُ يُوسُفَ وَقَالَ هِشَامُ بْنُ حَسَّانَ: أَحْصَوْا مَا قَتَلَ الْحَجَّاجُ صَبْرًا فَبَلَغَ مِائَةَ ألفٍ وَعشْرين ألفا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5993. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सकिफ (क़बीले) में एक शख़्स कज्ज़ाब और एक ज़ालिम होगा”, अब्दुल्लाह बिन इस्मत ने कहा: कज्ज़ाब से मुराद मुख़्तार बिन अबी उबैद है और ज़ालिम से मुराद हज्जाज बिन युसूफ है, हिश्शाम बिन हस्सान ने कहा: हज्जाज ने जिन लोगों को बांध कर क़त्ल किया, इनकी तादाद एक लाख बीस हज़ार तक पहुँचती है| (सहीह)

صحیح ، رواه الترمذی (2220)

٥٩٩٤ - (صَحِيح) وَرَوَى»» مُسْلِمٌ فِي «الصَّحِيحِ» حِينَ قَتَلَ الْحَجَّاجُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ الزُّبَيْرِ قَالَتْ أَسْمَاءَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَدَّثَنَا «أَن فِي ثَقِيف كذابا ومبيرا» فَأَما الْكذَّاب فَرَأَيْنَاهُ وَأَمَّا الْمُبِيرُ فَلَا إِخَالُكَ إِلَّا إِيَّاهُ. وَسَيَجِيءُ تَمام الحَدِيث فِي الْفَصْل الثَّالِث

5994. इमाम मुस्लिम रहिमहुल्लाह ने सहीह मुस्लिम में रिवायत किया है, जब हज्जाज ने अब्दुल्लाह बिन जुबैर रदियल्लाहु अन्हु को क़त्ल किया तो अस्मा रदियल्लाहु अन्हा ने बयान किया के रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें हदीस बयान की के सकिफ कबिले में एक कज्ज़ाब और एक ज़ालिम होगा, रहा कज्ज़ाब तो हमने इसे देख लिया और रहा ज़ालिम तो मेरा ख़याल है के यह वही है| # और मुकम्मल हदीस तीसरी फसल ए में आएगी. (मुस्लिम)

رواه مسلم (229 / 2545 و سیاتی : 6003)

٥٩٩٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن جَابر»» قَالَ: قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَحْرَقَتْنَا نِبَالُ ثَقِيفٍ فَادْعُ اللَّهَ عَلَيْهِمْ. قَالَ: «اللَّهُمَّ اهْدِ ثقيفا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5995. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, सहाबा रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने अर्ज़ किया, अल्लाह के

रसूल! सकिफ कबिले के तिरो ने हमें जला कर रख दिया है, आप इन के लिए अल्लाह से बद्दुआ फरमाइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ए अल्लाह! सकिफ कबिले को हिदायत अता फरमा”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (3942 وقال : صحيح غريب) ابو زبير عنعن و رواه عبد الرحمن بن سابط عن جابر به مختصرًا (مسند احمد : 3 / 343) و عبد الرحمن لم يسمع من جابر رضی الله عنه

٥٩٩٦ - (ضَعِيف) وَعَن»» عَبْدِ الرَّزَّاقِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ مِينَاءَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: كُنَّا عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فجَاء رَجُلٌ أَحْسَبُهُ مِنْ قَيْسٍ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ الْعَنْ حِمْيَرًا فَأَعْرَضَ عَنْهُ ثُمَّ جَاءَهُ من الشقّ الآخر فَأَعْرض عَنهُ ثمَّ جَاءَهُ مِنَ الشِّقِّ الْآخَرِ فَأَعْرَضَ عَنْهُ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «رَحِمَ اللَّهُ حِمْيَرًا أَفْوَاهُهُمْ سَلَامٌ وَأَيْدِيهِمْ طَعَامٌ وَهُمْ أَهْلُ أَمْنٍ وَإِيمَانٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ لَا نَعْرِفُهُ إِلَّا مِنْ حَدِيثِ عَبْدِ الرَّزَّاقِ ويُروى عَن ميناءَ هَذَا أَحَادِيث مَنَاكِير

5996. अब्दुल रज्ज़ाक अपने वालिद से वह मीनाअ से और वह अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा, हम नबी ﷺ के पास थे की आदमी आप के पास आया, मेरा ख़याल है कैस कबिले से था, उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हिमरन कबिले पर लानत फरमाइए, आप ने उस से एअराज़ फ़रमाया, फिर वह दूसरी जानिब से आया तो आप ने उस से एअराज़ फ़रमाया, फिर वह दूसरी जानिब से आया तो आप ﷺ ने उस से एअराज़ फ़रमाया, निज़ फ़रमाया: “अल्लाह हिमरन पर रहम फरमाए, उन के मुंह सलाम करते हैं, उन के हाथ खाना खिलाते है, और वह अमन व अमान वाले हैं”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| और हम इसे सिर्फ अब्दुल रज्ज़ाक के तरीक से पहुंचाते है और इस मीनाअ से मुनकर अहादीस रिवायत की जाती है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه الترمذی (3939) * ميناء : متروک و رمی بالرفض و كذبه ابو حاتم

٥٩٩٧ - (صَحِيح) وَعَنْهُ»» قَالَ: قَالَ لِي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مِمَّنْ أَنْتَ؟ قُلْتُ: مِنْ دَوْسٍ. قَالَ: «مَا كُنْتُ أَرَى أَنَّ فِي دَوْسٍ أحدا فِيهِ خير» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

5997. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “तुम किस कबिले से हो?” मैंने अर्ज़ किया: दौसी से, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं नहीं समझता था के दौसी कबिले के किसी शख़्स में भलाई हो”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3838 وقال : غريب صحيح)

٥٩٩٨ - (ضَعِيف) وَعَن»» سلمَان قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تُبْغِضْنِي فَتُفَارِقَ دِينَكَ»

قَلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ كَيْفَ أَبْغِضُكَ وَبِكَ هَدَانَا اللَّهُ؟ قَالَ: «تُبْغِضُ الْعَرَبَ فَتُبْغِضُنِي» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

5998. सलमान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “मुझे नाराज़ न करना वरना तुम अपने दिन से निकल जाओगे”, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मैं आप को कैसे नाराज़ कर सकता हूँ, आप की वजह से अल्लाह ने हमें हिदायत नसीब फरमाई, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम अरबो से दुश्मनी रखोगे तो तुम मुझ से दुश्मनी रखोगे”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3927) * قابوس : فيه لين

٥٩٩٩ - (مَوْضُوع) وَعَن»» عُثْمَان بن عَفَّان قَالَ: قَالَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ غَشَّ الْعَرَبَ لَمْ يَدْخُلْ فِي شَفَاعَتِي وَلَمْ تَنَلْهُ مَوَدَّتِي» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ لَا نَعْرِفُهُ إِلَّا مِنْ حَدِيثِ حُصَيْنِ بْنِ عُمَرَ وَلَيْسَ هُوَ عِنْدَ أهل الحَدِيث بِذَاكَ الْقوي

5999. उस्मान बिन अफ्फान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस ने अरबो को फरेब दिया तो ना वह मेरी शफाअत में दाखिल होगा न इसे मेरी मुहब्बत नसीब होगी”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है, हम इस हदीस को सिर्फ हुसैन बिन उमर के तरीक से पहचानते हैं और वह मुहद्दीसिन के नज़दीक क़वी नहीं| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه الترمذی (3928) * حصين بن عمر : متروک

٦٠٠٠ - (ضَعِيف) وَعَن»» أم حَرِير مولاة طَلْحَة بن مَالك قَالَتْ: سَمِعْتُ مَوْلَايَ يَقُول: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُول: «مِنِ اقْتِرَابِ السَّاعَةِ هَلَاكُ الْعَرَبِ» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

6000. तल्हा बिन मालिक की आज़ाद करदा लौंडी उम्म अल हरिर बयान करती हैं, मैंने अपने मालिक को बयान करते हुए सुना उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ अरबो की हलाकत कुर्बे कयामत की अलामत है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3929) * فيه ام محمد بن ابی رزين : لم اجد من وثقها

٦٠٠١ - (مَوْقُوف) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْمُلْكُ فِي قُرَيْشٍ وَالْقَضَاءُ فِي الْأَنْصَارِ وَالْأَذَانُ فِي الْحَبَشَةِ وَالْأَمَانَةُ فِي الْأَزْدِ» يَعْنِي الْيَمَنَ. وَفِي رِوَايَةٍ مَوْقُوفًا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَقَالَ: هَذَا أصح

6001. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “खिलाफत कुरैश में है, कज़ाअ

अंसार में, आज़ान हब्शियों में, और अमानत अज़्दी यानी यमन में है”, यह रिवायत मौकूफ है, इमाम तिरमिज़ी ने इसे रिवायत किया, और फ़रमाया उस का मौकूफ होना ज़्यादा सहीह है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (3936)

بَابُ مَنَاقِبِ قُرَيْشٍ وَذِكْرِ الْقَبَائِلِ • कुरैश के मनाकिब और क़बीलों का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٦٠٠٢ - (صَحِيح) عَنْ»» عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مُطِيعٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ يَوْمَ فَتْحِ مَكَّةَ: «لَا يُقْتَلُ قُرَشِيٌّ صَبْرًا بَعْدَ هَذَا الْيَوْمِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَة» . رَوَاهُ مُسلم

6002. अब्दुल्लाह बिन मुतीअ अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: मैंने फतह मक्का के रोज़ रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “इस रोज़ के बाद रोज़ ए कियामत तक किसी कुरैश को बांध कर क़त्ल न किया जाए”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (88 / 1782)، (4627)

٦٠٠٣ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَبِي نَوْفَلٍ مُعَاوِيَةَ بْنِ مُسْلِمٍ قَالَ: رَأَيْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ الزُّبَيْرِ عَلَى عَقَبَةِ الْمَدِينَةِ قَالَ فَجَعَلَتْ قُرَيْشٌ تَمُرُّ عَلَيْهِ وَالنَّاسُ حَتَّى مَرَّ عَلَيْهِ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ فَوقف عَلَيْهِ فَقَالَ: السَّلَامُ عَلَيْكَ أَبَا خُبَيْبٍ السَّلَامُ عَلَيْكَ أَبَا خُبَيْبٍ السَّلَامُ عَلَيْكَ أَبَا خُبَيْبٍ أَمَا وَاللَّهِ لَقَدْ كُنْتُ أَنْهَاكَ عَنْ هَذَا أَمَا وَاللَّهِ لَقَدْ كُنْتُ أَنْهَاكَ عَنْ هَذَا أَمَا وَاللَّهِ لَقَدْ كُنْتُ أَنْهَاكَ عَنْ هَذَا أَمَا وَاللَّهِ إِنْ كُنْتَ مَا عَلِمْتُ صَوَّامًا قَوَّامًا وَصُولًا [ص:١٦٩] لِلرَّحِمِ أَمَا وَاللَّهِ لَأُمَّةٌ أَنْتَ شَرُّهَا لَأُمَّةُ سَوْءٍ - وَفِي رِوَايَةٍ لَأُمَّةُ خَيْرٍ - ثُمَّ نَفَذَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ فَبَلَغَ الْحَجَّاجَ مَوْقِفُ عَبْدِ اللَّهِ وَقَوْلُهُ فَأَرْسَلَ إِلَيْهِ فَأُنْزِلَ عَنْ جِذْعِهِ فَأُلْقِيَ فِي قُبُورِ الْيَهُودِ ثُمَّ أَرْسَلَ إِلَى أُمِّهِ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ فَأَبَتْ أَنْ تَأْتِيَهُ فَأَعَادَ عَلَيْهَا الرَّسُولَ لَتَأْتِيَنِّي أَوْ لَأَبْعَثَنَّ إِلَيْكِ مَنْ يَسْحَبُكِ بِقُرُونِكِ. قَالَ: فَأَبَتْ وَقَالَتْ: وَاللَّهِ لَا آتِيكَ حَتَّى تَبْعَثَ إِلَيَّ من يسحبُني بقروني. قَالَ: فَقَالَ: أَرُونِي سِبْتِيَّ فَأَخَذَ نَعْلَيْهِ ثُمَّ انْطَلَقَ يَتَوَذَّفُ حَتَّى دَخَلَ عَلَيْهَا فَقَالَ: كَيْفَ رَأَيْتِنِي صَنَعْتُ بِعَدُوِّ اللَّهِ؟ قَالَتْ: رَأَيْتُكَ أَفْسَدْتَ عَلَيْهِ دُنْيَاهُ وَأَفْسَدَ عَلَيْكَ آخِرَتَكَ بَلَغَنِي أَنَّكَ تَقُولُ لَهُ: يَا ابْنَ ذَاتِ النِّطَاقَيْنِ أَنَا وَاللَّهِ ذَاتُ النِّطَاقَيْنِ أَمَّا أَحَدُهُمَا فَكُنْتُ أَرْفَعُ بِهِ طَعَامَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَطَعَامَ أَبِي بَكْرٍ مِنَ الدَّوَابِّ وَأَمَّا الْآخَرُ فنطاق المرأةِ الَّتِي لَا تَسْتَغْنِي عَنهُ أما أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَدثنَا: «أَن فِي ثَقِيف كذابا ومبيرا» . فَأَما الْكَذَّابُ فَرَأَيْنَاهُ وَأَمَّا الْمُبِيرُ فَلَا إِخَالُكَ إِلَّا إِيَّاه. قَالَ فَقَامَ عَنْهَا وَلم يُرَاجِعهَا. رَوَاهُ مُسلم

6003. अबू नौफल मुआविया बिन मुस्लिम बयान करते हैं, मैंने अब्दुल्लाह बिन जुबैर रदियल्लाहु अन्हु को मदीना की घाटी पर (सूली पर लटकते हुए) देखा, कुरैश और दूसरे लोग उन के पास से गुज़रते रहे हत्ता कि अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा उन के पास से गुज़रे और वहां ठहर कर फ़रमाया: अबू खुबैब! तुम पर सलाम, अबू खुबैब! तुम पर सलाम, अबू खुबैब! तुम पर सलाम, अल्लाह की क़सम! क्या मैं तुम्हें इस (खिलाफत

के मुआमले) से मना नहीं करता था, अल्लाह की क़सम! क्या मैंने तुम्हें उस से मना नहीं किया था? अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हें बहोत रोज़े रखने वाला, बहोत ज़्यादा कयाम करने वाला और सिलह रहमी करने वाला ही जानता हूँ, सुन लो! अल्लाह की क़सम! जो लोग तुझे बुरा ख़याल करते हैं हकीक़त में वह खुद बुरे है, एक दूसरी रिवायत में है, (जो तुम्हें बुरा समझते है क्या) वह लोग अच्छे है? फिर अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा चले गए, हज्जाज को अब्दुल्लाह का मुअक्किफ और उनकी बात पहुंची तो उस ने उन्हें बुला भेजा, उन (अब्दुल्लाह बिन जुबैर) को सूली से उतार दिया गया और उन्हें यहूदियों के कब्रिस्तान में डाल दिया गया, फिर हज्जाज ने उनकी वालिदा अस्मा बिन्ते अबी बक्र रदियल्लाहु अन्हुमा को बुला भेजा तो उन्होंने आने से इनकार कर दिया, फिर उस ने दोबारा पैग़ाम भेजा के आप आजाए वरना में ऐसे शख़्स को भेजूंगा जो तुम्हें बालो से पकड़ कर घंसिट लाएगा, रावी बयान करते हैं, उन्होंने इनकार किया और कहा अल्लाह की क़सम! मैं तेरे पास नहीं आउंगी हत्ता कि तू इस शख़्स को मेरे पास भेजे जो मेरे बालो से पकड़ कर मुझे घसीटे, रावी बयान करते हैं, हज्जाज ने कहा मेरे जूते मुझे दो, उस ने अपने जूते पहने और तेज़ तेज़ चलता हुआ उन तक पहुँच गया, और कहा: बताओ अल्लाह के दुश्मन के साथ मैंने कैसा सुलूक किया? अस्मा रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: में समझती हूँ कि तूने अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु की दुनिया ख़राब की और उस ने तेरी आखिरत बर्बाद कर दी, मुझे पता चला है की तो (तोहीन के अंदाज़ में) इसे ज़ात अन्ताकिन (दो आज़ार वाली) का बेटा कहता है, अल्लाह की क़सम! मैं ज़ात अन्ताकिन हूँ, उन (इज़ार बन्दों) में से एक के साथ मैं रसूलुल्लाह ﷺ और अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु के खाने को चोपायो से बचाने के लिए, और रहा दूसरा तो उस से कोई भी औरत बेनियाज़ नहीं हो सकती, सुन लो! के रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें हदीस बयान फरमाई के “सकिफ में एक कज्ज़ाब और एक ज़ालिम होगा”, रहा कज्ज़ाब, तो हम इसे देख चुके और रहा ज़ालिम तो मेरा ख़याल है के वह तुम ही हो, रावी बयान करते हैं, वह उन के पास से चला गया और फिर उन के पास दोबारा नहीं आया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (229 / 2545)، (6496)

٦٠٠٤ - (صَحِيح) وَعَن»» نَافِع عَن ابْنَ عُمَرَ أَتَاهُ رَجُلَانِ فِي فِتْنَةِ ابْنِ الزُّبَيْرِ فَقَالَا: إِنَّ النَّاسَ صَنَعُوا مَا تَرَى وَأَنْتَ ابْنُ عُمَرَ وَصَاحِبُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَمَا يَمْنَعُكَ أَنْ تَخْرُجَ؟ فَقَالَ: يَمْنعنِي أَنَّ اللَّهَ حرم دَمَ أَخِي الْمُسْلِمِ. قَالَا: أَلَمْ يَقُلِ اللَّهُ: [وقاتلوهم حَتَّى [ص:١٦٩ لَا تكونَ فتْنَة] فَقَالَ ابْنُ عُمَرَ: قَدْ قَاتَلْنَا حَتَّى لَمْ تَكُنْ فِتْنَةٌ وَكَانَ الدِّينُ لِلَّهِ وَأَنْتُمْ تُرِيدُونَ أَنْ تُقَاتِلُوا حَتَّى تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ لغيرِ اللَّهِ. رَوَاهُ البُخَارِيّ

6004. नाफेअ से रिवायत है के इब्ने जुबैर रदियल्लाहु अन्हु के फितने से पहले, दो आदमी इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा के पास आए और उन्होंने कहा: लोगों ने जो कुछ किया आप इसे देख रहे हैं और आप उमर रदियल्लाहु अन्हु के बेटे और रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबी है, आप को निकलने से कौन सी चीज़ मानेअ है? उन्होंने ने फ़रमाया: मेरे लिए यह चीज़ मानेअ थी के अल्लाह ने मुसलमान को क़त्ल करना मुझ पर हराम करार दिया है, इन दोनों ने कहा: क्या अल्लाह तआला ने यह नहीं फरमाया: “इनसे किताल करो हत्ता कि फितने ख़तम हो जाए”, इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: हमने किताल किया हत्ता कि फितने (शिर्क) ख़तम हो गया और दीन

खालिस अल्लाह के लिए हो गया, और तुम चाहते हो की तुम लड़ो हत्ता कि फितने पैदा हो और दीन गैरुल्लाह के लिए हो जाए| (बुखारी)

رواہ البخاری (4513)

٦٠٠٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أبي هريرةَ قَالَ: جَاءَ الطُّفَيْلُ بْنُ عَمْرٍو الدَّوْسِيُّ إِلَى رَسُول الله صلى الله عَلَيْهِ وسل فَقَالَ: إِنَّ دَوْسًا قَدْ هَلَكَتْ عَصَتْ وَأَبَتْ فَادْعُ اللَّهَ عَلَيْهِمْ فَظَنَّ النَّاسُ أَنَّهُ يَدْعُو عَلَيْهِمْ فَقَالَ: «اللَّهُمَّ اهْدِ دَوْسًا وَأْتِ بِهِمْ» . مُتَّفق عَلَيْهِ

6005. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, तुफैल बिन अम्र दौसी रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए तो उन्होंने अर्ज़ किया: दौसी कबिला हलाक हो गया, उस ने नाफ़रमानी की और इनकार किया, आप इन के लिए बद्दुआ करे, लोगों ने समझा आप उन के लिए बद्दुआ करेंगे, लेकिन आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह दौसी को हिदायत नसीब फरमा और उन्हें (मुसलमान बना कर) ले आ”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (6397) و مسلم (197 / 2524)، (6450)

٦٠٠٦ - (مَوْضُوع) وَعَنِ»» ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " أَحِبُّوا الْعَرَبَ لِثَلَاثٍ: لِأَنِّي عَرَبِيٌّ وَالْقُرْآنُ عَرَبِيٌّ وَكَلَامُ أَهْلِ الْجَنَّةِ عربيٌّ «. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي» شعب الْإِيمَان "

6006. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ अरबो के साथ तीन खस्लतो की वजह से मुहब्बत करो, क्योंकि मैं अरबी हूँ, कुरान अरबी (ज़बान में) है और अहले जन्नत का कलाम अरबी में होगा”| (मौज़ू)

اسنادہ موضوع ، رواہ البیھقی فی شعب الایمان (1610 ، 1433 ، نسخۃ محققۃ : 1364 ، 1496) [و الحاکم (4 / 87) و العقیلی فی الضعفاء الکبیر (3 / 348)] * فیہ العلاء بن عمرو الحنفی : کذاب ، و علل أخری

सहाबा किराम के मनाकिब का बयान • بَاب مَنَاقِب الصَّحَابَة

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٦٠٠٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن أبي سعيدٍ الْخُدْرِيّ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَسُبُّوا أَصْحَابِي فَلَوْ أَنَّ أَحَدَكُمْ أَنْفَقَ مِثْلَ أُحُدٍ ذَهَبًا مَا بَلَغَ مُدَّ أَحَدِهِمْ وَلَا نصيفه» . مُتَّفق عَلَيْهِ

6007. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरे सहाबा को बुरा मत कहो, क्योंकि अगर तुम में से कोई शख़्स ओहद पहाड़ के बराबर सोना खर्च कर डाले तो वह न तो उनमें से किसी एक के मुद (तकरीबन सवा छेस्सो ग्राम) खर्च करने को पहुँच सकता है न उस के आधे मुद को”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (3673) و مسلم (222 / 2541)، (6488)

٦٠٠٨ - (صَحِيح) وَعَن أبي بردة عَن أَبيه قَالَ: رَفَعَ - يَعْنِي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم - رَأسه إِلَى السَّمَاء وَكَانَ كثيرا مَا يَرْفَعُ رَأْسَهُ إِلَى السَّمَاءِ. فَقَالَ: «النُّجُومُ أَمَنَةٌ لِلسَّمَاءِ فَإِذَا ذَهَبَتِ النُّجُومَ أَتَى السَّمَاءَ مَا توعَدُ وَأَنا أَمَنةٌ لِأَصْحَابِي فَإِذَا ذَهَبْتُ أَتَى أَصْحَابِي مَا يُوعَدُونَ وَأَصْحَابِي أَمَنَةٌ لِأُمَّتِي فَإِذَا ذَهَبَ أَصْحَابِي أَتَى أُمتي مَا يُوعَدُون» . رَوَاهُ مُسلم

6008. अबू बुरदह अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: आप यानी नबी ﷺ ने अपना सर मुबारक आसमान की तरफ उठाया और आप अक्सर अपना सर मुबारक आसमान की तरफ उठाया करते थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “सितारे आसमान की हिफाज़त का बाईस है, जब सितारे जाते रहेंग, तो आसमान वादे के मुताबिक तूट फुट जाएगा, और मैं अपने सहाबा की हिफाज़त का बाईस हूँ, जब में चला जाऊँगा तो मेरे सहाबा को उन फ़ितनो सामने का होगा जिस का उन से वादा है, और मेरे सहाबा मेरी उम्मत की हिफाज़त का बाईस है, जब मेरे सहाबा जाते रहेंगे तो मेरी उम्मत में वह चीज़े (बिदआत वगैरा) आ जाएगी जिन का उन से वादा किया जा रहा है”| (मुस्लिम)

رواہ مسلم (207 / 2531)، (6466)

٦٠٠٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ فَيَغْزُو فِئَامٌ مِنَ النَّاسِ فَيَقُولُونَ: هَلْ فِيكُمْ مَنْ صَاحَبَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَيَقُولُونَ: نَعَمْ. فَيُفْتَحُ لَهُمْ ثُمَّ يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ فَيَغْزُو فِئَامٌ مِنَ النَّاسِ فَيُقَالُ: هَلْ فِيكُمْ مَنْ صَاحَبَ أَصْحَابَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ فَيَقُولُونَ: نَعَمْ. فَيُفْتَحُ لَهُمْ ثُمَّ يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ فَيَغْزُو فِئَامٌ مِنَ النَّاسِ فَيُقَالُ: هَلْ فِيكُمْ مَنْ صَاحَبَ مَنْ صَاحَبَ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ فَيَقُولُونَ: نَعَمْ. فَيُفْتَحُ لَهُمْ ". مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ»» وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ قَالَ: " يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ يُبْعَثُ مِنْهُمُ الْبَعْثُ فَيَقُولُونَ: انْظُرُوا هَلْ تَجِدُونَ فِيكُمْ أَحَدًا مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ فَيُوجَدُ الرَّجُلُ

فَيُفْتَحُ لَهُمْ بِهِ ثُمَّ [ص:١٦٩ يُبْعَثُ الْبَعْثُ الثَّانِي فَيَقُولُونَ: هَلْ فِيهِمْ مَنْ رَأَى أَصْحَابَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ فَيُفْتَحُ لَهُمْ بِهِ ثُمَّ يُبْعَثُ الْبَعْثُ الثَّالِثُ فَيُقَالُ: انْظُرُوا هَلْ تَرَوْنَ فِيهِمْ مَنْ رَأَى مَنْ رَأَى أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ ثُمَّ يَكُونُ الْبَعْثُ الرَّابِعُ فَيُقَالُ: انْظُرُوا هَلْ تَرَوْنَ فِيهِمْ أَحَدًا رَأَى مَنْ رَأَى أَحَدًا رَأَى أَصْحَابَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ فَيُوجَدُ الرَّجُلُ فَيُفْتَحُ لَهُم بِهِ "

6009. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “लोगो पर एक ऐसा वक़्त आएगा के लोगों की जमाअते जिहाद करेगी, उन से कहा जाएगा: क्या तुम मैं रसूलुल्लाह ﷺ का कोई सहाबी भी है? वह कहेंगे: हाँ, उन्हें फतह होगी, फिर लोगों पर एक ऐसा वक़्त आएगा के लोगों की जमाअते जिहाद करेगी तो उन से पूछा जाएगा: क्या तुम में कोई ऐसा है जिस ने रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबा की सोहबत इख़्तियार की हो? वह कहेंगे: हाँ, तो उन्हें फतह हासिल होगी, फिर लोगों पर एक ऐसा वक़्त आएगा के लोगों की जमाअते जिहाद करेगी, उन से पूछा जाएगा: क्या तुम में कोई तब ताबेइन है, वह कहेंगे: हाँ, तो उन्हें फतह हासिल होगी”| और सहीह मुस्लिम की रिवायत में है फ़रमाया: “लोगो पर एक ऐसा वक़्त आएगा के उनमें से एक लश्कर भेजा जाएगा तो उन से कहा जाएगा: देखो, क्या तुम अपने साथ रसूलुल्लाह ﷺ का कोई सहाबी पाते हो? एक सहाबी मिल जाएगा तो उन्हें फतह नसीब हो जाएगी, फिर दूसरा लश्कर भेजा जाएगा, तो उन से कहा जाएगा: क्या इन में कोई ऐसा शख़्स है जिस ने रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबा को देखा हो? उन्हें फतह हासिल होगी, फिर तीसरा लश्कर भेजा जाएगा, तो कहा जाएगा: देखो, क्या तुम में कोई ऐसा शख़्स है जिस ने नबी ﷺ के सहाबा को देखा हो? फिर चोथा लश्कर होगा, कहा जाएगा: क्या तुम उनमें किसी ऐसे शख़्स को देखते हो जिस ने नबी ﷺ के सहाबा को देखने वाले शख़्स को देखा हो, ऐसा शख़्स मिल जाएगा तो उन्हें फतह हासिल हो जाएगी”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (3649) و مسلم (208 / 2532 و الروایة الثانیة 209 / 2532)، (6467)

٦٠١٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «خَيْرُ أُمَّتِي قَرْنِي ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ ثُمَّ إِنَّ بَعْدَهُمْ قَوْمًا يَشْهَدُونَ وَلَا يُسْتَشْهَدُونَ وَيَخُونُونَ وَلَا يُؤْتَمَنُونَ وَيَنْذُرُونَ وَلَا يفون وَيَظْهَرُ فِيهِمُ السِّمَنُ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «وَيَحْلِفُونَ وَلَا يستحلفون» . مُتَّفق عَلَيْهِ

6010. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरी उम्मत का सबसे बेहतरीन ज़माना मेरा ज़माना है, फिर उन लोगों का जो उन के बाद आएँगे, फिर वह जो उन के बाद आएँगे, फिर उन के बाद ऐसे लोग आएँगे जो गवाही तलब किए बगैर गवाही देंगे, वह खयानत करेंगे, और इन पर एतमाद नहीं किया जाएगा, वह नज़र मानेंगे लेकिन पूरी नहीं करेंगे, और उनमें मोटापा आम हो जाएगा”, एक दूसरी रिवायत में है: “वो हलफ तलब किए बगैर हलफ उठाएंगे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (3650) و مسلم (214 / 2535 و الروایة الثانیة 215 / 2535)، (6475)

٦٠١١ - (صَحِيح) وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: «ثُمَّ يخلف قوم يحبونَ السمانة»

6011. और सहीह मुस्लिम में अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है, “फिर ऐसे लोग जानशीन बनेंगे जो मोटापे को पसंद करेंगे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (213 / 2534)، (6473)

सहाबा किराम के मनाकिब का बयान • بَاب مَنَاقِبِ الصَّحَابَةِ

दूसरी फस्ल • الْفَصْلُ الثَّانِي

٦٠١٢ - (صَحِيح) عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَكْرِمُوا أَصْحَابِي فَإِنَّهُمْ خِيَارُكُمْ ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ ثُمَّ يَظْهَرُ الْكَذِبُ حَتَّى إِنَّ الرَّجُلَ لَيَحْلِفُ وَلَا يُسْتَحْلَفُ وَيَشْهَدُ وَلَا يُسْتَشْهَدُ أَلَا مَنْ سَرَّهُ بُحْبُوحَةُ الْجَنَّةِ فَلْيَلْزَمِ الْجَمَاعَةَ فَإِنَّ الشَّيْطَانَ ثَالِثُهُمْ وَمَنْ سَرَّتْهُ حَسَنَتُهُ وَسَاءَتْهُ سيئته فَهُوَ مُؤمن»

6012. उमर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरे सहाबा की इज्ज़त करो क्योंकि वह तुम में से सबसे बेहतर है, फिर वह जो उन के बाद आएँगे, फिर वह जो उन के बाद आएँगे, फिर झूठ आम हो जाएगा हत्ता कि आदमी हलफ तलब किए बगैर हलफ उठाएगा, गवाही तलब किए बगैर गवाही देगा, सुन लो! जो शख़्स जन्नत के बिच में मक़ाम हासिल करना पसंद करता है वह जमाअत के साथ लगा रहे, क्योंकि मुनफ़रिद शख़्स के साथ शैतान होता है और वह दो लोगों से (एक की निस्बत) ज़्यादा दूर होता है, और कोई आदमी किसी औरत के साथ खलवत इख़्तियार न करे क्योंकि तीसरा उनका शैतान होता है, और जिस शख़्स को उसकी नेकी खुश कर दे और उसकी बुराई इसे बुरी लगे तो वह मोमिन है”| (सहीह)

صحيح ، رواه [النسائی فی الکبری (5 / 387388 ح 92229224) و عبد بن حمید (23) وله طریق آخر عند الحمیدی (32) و الترمذی (2165) وقال : حسن صحیح غریب)]

٦٠١٣ - (حسن) وَعَنْ جَابِرٌ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا تَمَسُّ النَّارُ مُسْلِمًا رَآنِي أَو رأى [ص:١٦٩ من رَآنِي» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ .

6013. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इस मुसलमान को, जिस ने मुझे देखा या इस शख़्स को देखा जिस ने मुझे देखा जहन्नम की आग नहीं छुएगी”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3858)

٦٠١٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مُغَفَّلٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اللَّهُ اللَّهَ فِي أَصْحَابِي لَا تَتَّخِذُوهُمْ غَرَضًا مِنْ بَعْدِي فَمَنْ أَحَبَّهُمْ فَبِحُبِّي أَحَبَّهُمْ وَمَنْ أَبْغَضَهُمْ فَبِبُغْضِي أَبْغَضَهُمْ وَمَنْ آذَاهُمْ فَقَدْ آذَانِي وَمَنْ آذَانِي فَقَدْ آذَى اللَّهَ وَمَنْ آذَى اللَّهَ فَيُوشِكُ أَنْ يَأْخُذَهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيث غَرِيب

6014. अब्दुल्लाह बिन मुगफ्फल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरे सहाबा रदियल्लाहु अन्हु के (हुकुक के) मुतल्लिक अल्लाह से बार बार डरते रहना, मेरे बाद उन्हें निशाना मत बनाना, जिस शख़्स ने उन से मुहब्बत की तो उस ने मेरी मुहब्बत के बाईस उन से मुहब्बत की, और जिस ने उन से दुश्मनी रखी तो उस ने मेरे साथ दुश्मनी रखने की वजह से उन से दुश्मनी रखी, जिस शख़्स ने इनको अज़ीयत पहुंचाई, उस ने मुझे अज़ीयत पहुंचाई और जिस ने मुझे अज़ीयत पहुंचाई, उस ने अल्लाह को अज़ीयत पहुंचाई, करीब है के वह उस को दुनिया में पकड़ ले”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (3862) * عبد الرحمن بن زياد اختلفوا فى اسمه ولم يوثقه غير ابن حبان وهو مجهول الحال ولم يثبت عن الترمذى بانه قال فى حديثه : حسن : وقال البخارى : فيه نظر (التاريخ الكبير 5 131 ت 389)

٦٠١٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَثَلُ أَصْحَابِي فِي أُمَّتِي كَالْمِلْحِ فِي الطَّعَامِ لَا يَصْلُحُ الطَّعَامُ إِلَّا بِالْمِلْحِ» قَالَ الْحَسَنُ: فَقَدْ ذَهَبَ مِلْحُنَا فَكَيْفَ نصلح؟ رَوَاهُ فِي «شرح السّنة»

6015. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरी उम्मत में मेरे सहाबा की मिसाल इस तरह है जिस तरह खाने में नमक, और खाना नमक के साथ ही बेहतर (लज़ीज़) बनता है”| # हसन बसरी (रह) ने फ़रमाया: हमारा नमक तो जा चुका तो हम किस तरह संवर सकते है? (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البغوى فى شرح السنة (14 / 7273 ح 3863) * فيه اسماعيل بن مسلم المكى وهو ضعيف و فى السند علة أخرى

٦٠١٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ»» اللَّهِ بْنِ بُرَيْدَةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا مِنْ أَحَدٍ مِنْ أَصْحَابِي يَمُوتُ بِأَرْضٍ إِلَّا بُعِثَ قَائِدًا وَنُورًا لَهُمْ يَوْمِ الْقِيَامَةِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ»» وَذُكِرَ حَدِيثَ ابْنِ مَسْعُودٍ «لَا يُبَلِّغُنِي أَحَدٌ» فِي بَاب «حفظ اللِّسَان»

6016. अब्दुल्लाह बिन बुरैदा अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरा कोई सहाबी जिस सर ज़मीन पर फौत होगा तो वह कियामत के दिन उन लोगों का सरदार और नूर बनकर उठाया जाएगा”| इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है, और इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु से (لَا يُبَلِّغُنِي أَحَدٌ) मरवी हदीस बाब حفظ اللِّسَان (हिफाज़ते ज़बान,गीबत,और गाली का बयान) में ज़िक्र की गई है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (3865) * فيه عثمان بن ناجية : مستور0 حديث ابن مسعود تقدم (4852)

सहाबा किराम के मनाकिब का बयान • بَاب مَنَاقِب الصَّحَابَة •

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث •

٦٠١٧ - (لم تتمّ دراسته) عَنِ ابْنِ»» عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: " إِذا رَأَيْتُمْ الَّذِينَ يَسُبُّونَ أَصْحَابِي فَقُولُوا: لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى شركم ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6017. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम ऐसे लोगों को देखो जो मेरे सहाबा को बुरा कहते हो तो तुम कहो तुम्हारे शर पर अल्लाह की लानत हो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (3866) * نصر بن حماد : ضعیف و سیف بن عمر : ضعیف فی الحدیث و ضعیف فی التاریخ علی الراجح

٦٠١٨ - (بَاطِل) وَعَن»» عمر بن الْخطاب قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " سَأَلْتُ رَبِّي عَنِ اخْتِلَافِ أَصْحَابِي مِنْ بَعْدِي فَأَوْحَى إِلَيَّ: يَا مُحَمَّدُ إِنَّ أَصْحَابَكَ عِنْدِي بِمَنْزِلَةِ النُّجُومِ فِي السَّمَاءِ بَعْضُهَا أَقْوَى مِنْ بَعْضٍ وَلِكُلٍّ نُورٌ فَمَنْ أَخَذَ بِشَيْءٍ مِمَّا هُمْ عَلَيْهِ مِنِ اخْتِلَافِهِمْ فَهُوَ عِنْدِي عَلَى هُدًى " قَالَ: وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَصْحَابِي كَالنُّجُومِ فَبِأَيِّهِمُ اقْتَدَيْتُمُ اهْتَدَيْتُمْ» . رَوَاهُ رزين

6018. उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: मैंने अपने रब से, अपने बाद अपने सहाबा के इख्तिलाफ के मुताल्लिक दरियाफ्त किया तो उसने मेरी तरफ वही फरमाई: “मुहम्मद! आप के सहाबा मेरे नज़दीक आसमान के सितारों की तरह है, उनमें से बाज़ बाज़ से ज़्यादा क़वी है, और हर एक की रोशनी है, और जिस शख़्स ने बावजूद उन के इख्तिलाफ के जिन पर वह है, अमल किया तो वह मेरे नज़दीक हिदायत पर है”, रावी बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरे सहाबा सितारों की तरह है तुम उनमें से जिस की भी इक्तेदा करोगे हिदायत पा जाओगे”| (ज़ईफ़)

ضعیف جدا ، رواہ رزین (لم اجدہ) [و الخطیب فی الفقیه و المتفقة (1 / 177) و فیه نعیم بن حماد صدوق حسن الحدیث و لکن عبد الرحیم بن زید العمی کذاب و ابوه ضعیف ، و للحدیث شواهد باطلة و مردودة]

अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु के मनाकिब और फ़ज़ाइल का बयान

بَاب مَنَاقِب أبي بكر

पहली फस्ल

الْفَصْل الأول

٦٠١٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ مِنْ أَمَنِّ النَّاسِ عَلَيَّ فِي صُحْبَتِهِ وَمَالِهِ أَبُو بَكْرٍ - وَعِنْدَ الْبُخَارِيِّ أَبَا بَكْرٍ - وَلَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا خَلِيلًا لَاتَّخَذْتُ أَبَا بَكْرٍ خَلِيلًا وَلَكِنْ أُخُوَّةُ الْإِسْلَامِ وَمَوَدَّتُهُ لَا تُبْقَيَنَّ فِي الْمَسْجِدِ خَوْخَةٌ إِلَّا خَوْخَةَ أَبِي بَكْرٍ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «لَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا خَلِيلًا غَيْرَ رَبِّي لَاتَّخَذْتُ أَبَا بَكْرٍ خَلِيلًا» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

6019. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु नबी (स) से रिवायत करते हैं, आप (स) ने फ़रमाया: “वक़्त और माल सिर्फ करने के लिहाज़ से अबू बक्र का मुझ पर सब से ज़्यादा इहसान है, और सहीह बुखारी में लफ़्ज़ “अबा बक्र” है, और अगर मैं किसी को खलील (जिगरी दोस्त) बनाता हूँ तो लाज़मन अबू बक्र को बनाता, लेकिन अख्वाते इस्लामी की मव्द्त और मुहब्बत काफी हैं, मस्जिद में खुलने वाले तमाम दरवाज़े बंद कर दिए जाए अलबत्ता अबू बक्र का दरवाज़ा रहने दो| (मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (3904 و الرواية الثانية : 3654) و مسلم (2 / 2382)، (6170)

٦٠٢٠ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا خَلِيلًا لَاتَّخَذْتُ أَبَا بَكْرٍ خَلِيلًا وَلَكِنَّهُ أَخِي وَصَاحِبِي وَقَدِ اتَّخَذَ اللَّهُ صَاحِبَكُمْ خَلِيلًا» . رَوَاهُ مُسلم

6020. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर में किसी को खलील (जिगरी दोस्त) बनाता तो मैं अबू बक्र को दोस्त बनाता, लेकिन वह मेरे भाई और मेरे साथी हैं और अल्लाह तुम्हारे साथी को खलील बना चूका है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (3 / 2383)، (6172)

٦٠٢١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي مَرَضِهِ: ادْعِي لِي أَبَا بَكْرٍ أَبَاكِ وَأَخَاكِ حَتَّى أَكْتُبَ كِتَابًا فَإِنِّي أَخَافُ أَنْ يَتَمَنَّى مُتَمَنٍّ وَيَقُولَ قَائِلٌ: أَنَا وَلَا وَيَأْبَى اللَّهُ وَالْمُؤْمِنُونَ إِلَّا أَبَا بَكْرٍ ». رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَفِي كِتَابِ الْحميدِي ": «أَنا أولى» بدل «أَنا وَلَا»

6021. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने मर्ज़ में मुझे फ़रमाया: “अपने वालिद अबू बक्र और अपने भाई को मेरे पास बुलाओ हत्ता कि में तहरीर लिख दू, मुझे अंदेशा है के कोई तमन्ना करने वाला तमन्ना करे और कोई कहने वाला कहे की मैं खिलाफत का मुस्तहिक हूँ, हालाँकि अल्लाह और तमाम

मोमिन सिर्फ अबू बक्र को ही कबूल करेंगे”| # और किताब अल हुमैदी में (أنا ولا) की जगह (أَنَا وَلَا) के अल्फाज़ है. (मुस्लिम)

رواه مسلم (11 / 2387)، (6181)

٦٠٢٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ قَالَ: أَتَتِ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ امْرَأَةٌ فَكَلَّمَتْهُ فِي [ص:١٦٩ شَيْءٍ فَأَمَرَهَا أَنْ تَرْجِعَ إِلَيْهِ قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَأَيْتَ إِنْ جِئْتُ وَلَمْ أَجِدْكَ؟ كَأَنَّهَا تُرِيدُ الْمَوْتَ. قَالَ: «فَإِنْ لَمْ تَجِدِينِي فَأْتِي أَبَا بَكْرٍ» . مُتَّفق عَلَيْهِ

6022. जुबेर बिन मुतअम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक औरत नबी ﷺ की खिदमत में आए तो उस ने किसी मुआमले में आप से बात की तो आप ने इसे दोबारा अपने खिदमत में हाज़िर होने का हुक्म फ़रमाया, उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मुझे बताइए कि अगर में आऊ और आप को न पाऊ, गोया उन से मुराद (आप ﷺ की) वफात थी? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर तुम मुझे न पाओ तो फिर अबू बक्र के पास आना”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3659) و مسلم (10 / 2386)، (6179)

٦٠٢٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعَثَهُ عَلَى جَيْشِ ذَاتِ السَّلَاسِلِ قَالَ: فَأَتَيْتُهُ فَقُلْتُ: أَيُّ النَّاسِ أَحَبُّ إِلَيْكَ؟ قَالَ: «عَائِشَةُ» . قُلْتُ: مِنَ الرِّجَالِ؟ قَالَ: «أَبُوهَا» . قُلْتُ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: «عُمَرُ» . فَعَدَّ رِجَالًا فَسَكَتُّ مَخَافَةَ أَنْ يَجْعَلَنِي فِي آخِرهم. مُتَّفق عَلَيْهِ

6023. अमर बिन आस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने गज़वा ज़ात अल सलासल में एक लश्कर का अमीर बना कर भेजा, वह बयान करते हैं, मैं आप की खिदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया, आप को सबसे ज़्यादा मुहब्बत किस से है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “आइशा से”, मैंने अर्ज़ किया: मर्दों में से? आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस के वालिद (अबू बक्र (र)) से”, मैंने अर्ज़ किया: फिर किस से? आप ﷺ ने फ़रमाया: “उमर से”, आप ने कई आदमी गिने (के उस के बाद फलां, फिर फलां ....) फिर मैं इस अंदेशे के पेशे नज़र के आप मुझे उनमें से सबसे आख़िर में ले जाए ख़ामोश हो गया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (4358) و مسلم (8 / 2384)، (6177)

٦٠٢٤ - (صَحِيح) وَعَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْحَنَفِيَّةِ قَالَ: قُلْتُ لِأَبِي: أَيُّ النَّاسِ خَيْرٌ بَعْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَ: أَبُو بَكْرٍ. قُلْتُ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: عُمَرُ. وَخَشِيتُ أَنْ يَقُولَ: عُثْمَانُ. قُلْتُ: ثُمَّ أَنْتَ قَالَ: «مَا أَنَا إِلَّا رجلٌ من الْمُسلمين» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

6024. मुहम्मद बिन हनफिया बयान करते हैं, मैंने अपने वालिद से कहा: नबी ﷺ के बाद सबसे बेहतर शख़्स कौन है? उन्होंने ने फ़रमाया: अबू बक्र (र), मैंने पूछा फिर कौन: उन्होंने ने फ़रमाया: उमर (र), और इस अंदेशे के पेशे नज़र के आप उस्मान रदियल्लाहु अन्हु कह देंगे, मैंने कहा फिर, आप? उन्होंने ने फ़रमाया: में तो एक आम मुसलमान | (बुखारी)

رواه البخارى (3671)

٦٠٢٥ - (صَحِيح) وَعَن ابْن عمرٍ قَالَ: كُنَّا فِي زَمَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا نَعْدِلُ بِأَبِي بَكْرٍ أَحَدًا ثُمَّ عُمَرَ ثُمَّ عُثْمَانَ ثُمَّ نَتْرُكُ أَصْحَابَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا نُفَاضِلُ بَيْنَهُمْ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ»» وَفِي رِوَايَةٍ لِأَبِي دَاوُدَ قَالَ: كُنَّا نَقُولُ وَرَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَيٌّ: أَفْضَلُ أُمَّةِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعْدَهُ أَبُو بَكْرٍ ثُمَّ عمر ثمَّ عُثْمَان رَضِي الله عَنْهُم

6025. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, हम नबी ﷺ के ज़माने में अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु के बराबर किसी को करार नहीं देते थे, फिर उमर रदियल्लाहु अन्हु और फिर उस्मान रदियल्लाहु अन्हु फिर हम नबी ﷺ के सहाबा (की बाहम फ़ज़ीलत की बहस) को तर्क कर देते थे और हम उनमें से किसी एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत नहीं देते थे| और अबू दावुद की रिवायत है: हम रसूलुल्लाह ﷺ की हयाते मुबारक में कहा करते थे की नबी ﷺ की उम्मत में आप के बाद सबसे अफ़ज़ल अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु है, फिर उमर रदियल्लाहु अन्हु है और फिर उस्मान रदियल्लाहु अन्हु है| (सहीह)

رواه البخارى (3697) و ابوداؤد (4628)

بَاب مَنَاقِب أبي بكر • अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु के मनाकिब और फ़ज़ाइल का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٦٠٢٦ - (ضَعِيف) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا لِأَحَدٍ عِنْدَنَا يَدٌ إِلَّا وَقَدْ كَافَيْنَاهُ مَا خَلَا أَبَا بَكْرٍ فَإِنَّ لَهُ عِنْدَنَا يَدًا يُكَافِيهِ اللَّهُ بهَا يومَ الْقِيَامَة وَمَا نَفَعَنِي مَالٌ قَطُّ مَا نَفَعَنِي مَالُ أَبِي بَكْرٍ وَلَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا خَلِيلًا لَاتَّخَذْتُ أَبَا بَكْرٍ خَلِيلًا أَلَا وَإِنَّ صَاحِبَكُمْ خَلِيلُ اللَّهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6026. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु के अलावा जिस शख़्स ने हम पर कोई इहसान किया था हमने उस का बदला चूका दिया है, लेकिन उन्होंने जो कुछ हमें अता किया है, उसकी जज़ा रोज़ ए कियामत अल्लाह ही उन्हें अता फरमाएगा, और किसी शख़्स के माल ने

मुझे इतना फ़ायदा नहीं पहुँचाया जितना अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु के माल ने मुझे फ़ायदा पहुँचाया है, अगर मैंने किसी शख़्स को खलील (जिगरी दोस्त) बनाना होता तो मैं अबू बक्र को खलील बनाता, सुन लो! तुम्हारा साहिब, अल्लाह का खलील है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (3661 وقال : حسن غريب) و ابن ماجه (94) * داود بن يزيد ضعيف وله طريق آخر عند ابن ماجه (94) و فيه الاعمش مدلس و عنعن

٦٠٢٧ - (إِسْنَاده جيد) وَعَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: أَبُو بَكْرٍ سَيِّدُنَا وَخَيْرُنَا وَأَحَبُّنَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6027. उमर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है उन्होंने कहा: अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु हमारे सरदार हैं, हम सबसे बेहतर हैं और रसूलुल्लाह ﷺ को हम सबसे ज़्यादा प्यारे हैं| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (3656 وقال : صحيح غريب) [و اصله فی البخاری (3668)]

٦٠٢٨ - (ضَعِيف) وَعَن»» ابْنِ عُمَرَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِأَبِي بَكْرٍ: «أَنْتَ صَاحِبِي فِي الْغَارِ وصاحبي على الْحَوْض» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6028. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: “तुम मेरे ग़ार के साथी हो और हौज़ पर मेरे साथी होगे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3670 وقال : حسن صحيح غريب) * كثير النواء : ضعيف و جميع بن عمير : ضعيف رافضى

٦٠٢٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ»» قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَنْبَغِي لِقَوْمٍ فِيهِمْ أَبُو بَكْرٍ أَنْ يَؤُمَّهُمْ غَيْرُهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

6029. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अबू बक्र की मौजूदगी में किसी और शख़्स के लिए मुनासिब नहीं के वह उनकी इमामत कराए”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3673) * فيه عيسى بن ميمون : ضعيف

٦٠٣٠ - (حسن) وَعَن»» عُمَرَ قَالَ: أَمَرَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ نَتَصَدَّقَ وَوَافَقَ ذَلِكَ عِنْدِي مَالًا فَقُلْتُ:

الْيَوْمَ أَسْبِقُ أَبَا بَكْرٍ إِنْ سَبَقْتُهُ يَوْمًا. قَالَ: فَجِئْتُ بِنِصْفِ مَالِي. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا أَبْقَيْتَ لِأَهْلِكَ؟» فَقُلْتُ: مِثْلَهُ. وَأَتَى أَبُو بَكْرٍ بِكُلِّ مَا عِنْدَهُ. فَقَالَ: «يَا أَبَا بَكْرٍ؟ مَا أَبْقَيْتَ لِأَهْلِكَ؟» . فَقَالَ: أَبْقَيْتُ لَهُمُ اللَّهَ وَرَسُولَهُ. [ص:١٧٠ قُلْتُ: لَا أَسْبِقُهُ إِلَى شَيْءٍ أَبَدًا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

6030. उमर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें सदका करने का हुक्म फ़रमाया, इस वक़्त मेरे पास माल भी था, मैंने (दिल में) कहा: अगर हो सका तो मैं आज अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु पर सबकत ले जाऊंगा, वह बयान करते हैं, मैं अपना आधा माल लेकर हाज़िर हुआ तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अपने घरवालो के लिए क्या छोड़ कर आए हो?" मैंने अर्ज़ किया: इतना ही (यानी आधा) अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु अपने पास जो था लेकर हाज़िर हो गए तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "अबू बक्र अपने घरवालो के लिए क्या छोड़ कर आए हो?" उन्होंने अर्ज़ किया, इन के लिए अल्लाह और उस के रसूल (की रज़ा) छोड़ कर आया हूँ, मैंने (उमर रदियल्लाहु अन्हु ने) कहा: में किसी चीज़ में उन से कभी भी सबकत हासिल नहीं कर सकता| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (3675 وقال : حسن صحيح) و ابوداؤد (1678)

٦٠٣١ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» عَائِشَةَ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ دَخَلَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «أَنْت عتيقُ اللَّهِ من النَّار» . فَيَوْمئِذٍ سمي عتيقا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6031. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ के पास आए तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "आप आग से अल्लाह के आज़ाद करदा (अतिकुल्लाह) हैं", इस रोज़ से उनका नाम (लकब) अतीक रख दिया गया| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذى (3679 وقال : غريب) * اسحاق بن يحيى بن طلحة ضعيف و للحديث شاهد عند ابن الاعرابى فى المعجم (409) و سنده صحيح فالحديث صحيح

٦٠٣٢ - (ضَعِيف) وَعَن»» ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَنَا أَوَّلُ مَنْ تَنْشَقُّ عَنْهُ الْأَرْضُ ثُمَّ أَبُو بَكْرٍ ثُمَّ عُمَرُ ثُمَّ آتِي أَهْلَ الْبَقِيعِ فَيُحْشَرُونَ مَعِي ثُمَّ أَنْتَظِرُ أَهْلَ مَكَّةَ حَتَّى أحشرَ بَين الْحَرَمَيْنِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6032. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "सबसे पहले मुझे कब्र से उठाया जाएगा, फिर अबू बक्र को, फिर उमर को, फिर मैं अहले बकी के पास आऊंगा तो वह मेरे साथ जमा किए जाएँगे, फिर मैं अहले मक्का का इंतज़ार करूँगा हत्ता कि में हरमैन के दरमियान जमा किया जाऊंगा"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (3692 وقال : حسن غريب) * فيه عاصم بن عمر العمرى : ضعيف

٦٠٣٣ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَتَانِي جِبْرِيلُ فَأَخَذَ بِيَدِي فَأَرَانِي بَابَ

الْجَنَّةِ الَّذِي يَدْخُلُ مِنْهُ أُمَّتِي» فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَدِدْتُ أَنِّي كُنْتُ مَعَكَ حَتَّى أَنْظُرَ إِلَيْهِ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَمَا إِنَّكَ يَا أَبَا بَكْرٍ أَوَّلُ مَنْ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مِنْ أُمَّتِي» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

6033. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिब्राइल मेरे पास आए तो उन्होंने मुझे हाथ से पकड़ा और मुझे जन्नत का वह दरवाज़ा दिखाया जिस से मेरी उम्मत दाखिल होगी", अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैं चाहता हूँ की मैं भी आप के साथ होता हत्ता कि में उसे देख लेता, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "सुन लो! अबू बक्र मेरी उम्मत में से सबसे पहले जन्नत में दाखिल होने वाले तुम ही तो हो"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4652) * فيه ابو خالد مولى آل جعدة : مجهول

بَاب مَنَاقِب أبي بكر • अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु के मनाकिब और फ़ज़ाइल का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٦٠٣٤ - (لم تتمّ دراسته) عَن عمر»» ذُكِرَ عِنْدَهُ أَبُو بَكْرٍ فَبَكَى وَقَالَ: وَدِدْتُ أَنَّ عَمَلِي كُلَّهُ مِثْلُ عَمَلِهِ يَوْمًا وَاحِدًا مِنْ أَيَّامِهِ وَلَيْلَةً وَاحِدَةً مِنْ لَيَالِيهِ أَمَّا لَيْلَتُهُ فَلَيْلَةٌ سَارَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى الْغَارِ فَلَمَّا انتهينا إِلَيْهِ قَالَ: وَاللَّهِ لَا تَدْخُلُهُ حَتَّى أَدْخُلَ قَبْلَكَ فَإِنْ كَانَ فِيهِ شَيْءٌ أَصَابَنِي دُونَكَ فَدَخَلَ فَكَسَحَهُ وَوَجَدَ فِي جَانِبِهِ ثُقْبًا فَشَقَّ إِزَاره وسدها بِهِ وَبَقِي مِنْهَا اثْنَان فألقمها رِجْلَيْهِ ثُمَّ قَالَ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ادْخُلْ»» فَدَخَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ»» وَوُضِعَ [ص:١٧٠ رَأسه فِي حجره وَنَامَ فَلُدِغَ أَبُو بَكْرٍ فِي رِجْلِهِ مِنَ الْجُحر وَلم يَتَحَرَّك مَخَافَة أَن ينتبه رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَقَطَتْ دُمُوعُهُ عَلَى وَجْهُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «مَا لَكَ يَا أَبَا بَكْرٍ؟» قَالَ: لُدِغْتُ فِدَاكَ أَبِي وَأُمِّي فَتَفِلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَهَبَ مَا يَجِدُهُ ثُمَّ انْتَقَضَ عَلَيْهِ وَكَانَ سَبَبَ مَوْتِهِ وَأَمَّا يَوْمُهُ فَلَمَّا قُبِضَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ارْتَدَّتِ الْعَرَبُ وَقَالُوا: لَا نُؤَدِّي زَكَاةً. فَقَالَ: لَوْ مَنَعُونِي عِقَالًا لَجَاهَدْتُهُمْ عَلَيْهِ. فَقُلْتُ: يَا خَلِيفَةُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَأَلَّفِ النَّاسَ وَارْفُقْ بِهِمْ. فَقَالَ لِي: أَجَبَّارٌ فِي الْجَاهِلِيَّةِ وَخَوَّارٌ فِي الْإِسْلَامِ؟ إِنَّهُ قَدِ انْقَطَعَ الْوَحْيُ وَتَمَّ الدِّينُ أَيَنْقُصُ وَأَنا حَيّ؟ . رَوَاهُ رزين

6034. उमर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन के पास अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु का तज़किरह किया गया तो वह रो पड़े और कहा: मैं चाहता हूँ कि मेरे सारे अमल उन के अय्याम में से एक यौम और उनकी रातो में से एक रात की मिस्ल हो जाए, रही उनकी रात, तो वह रात जब उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ ग़ार की तरफ सफ़र किया था, जब वह दोनों वहां तक पहुंचे तो अबू बक्र ने अर्ज़ किया, अल्लाह की क़सम! आप उस में दाखिल नहीं होंगे हत्ता कि में आप से पहले दाखिल हो जाऊं, ताकि अगर उस में कोई चीज़ हो तो उस का नुकसान मुझे पहुंचे आप उन से महफ़ूज़ रहे, वह उस में दाखिल हुए, इसे साफ़ किया, और उन्होंने उसकी एक जानिब सुराख़ देखे, उन्होंने अपना आज़ार फोड़ा और उन से सुराखों को बंद किया, मगर दो सुराख़ बाकी रह गए और उन्होंने इन पर अपने पाँव रख दिए, फिर रसूलुल्लाह ﷺ से अर्ज़ किया, तशरीफ़ ले आए, रसूलुल्लाह ﷺ अन्दर तशरीफ़

ले आए और अपना सर मुबारक उनकी गोद में रख कर सो गए, सुराख़ से अबू बक्र का पाँव दस लिया गया, लेकिन उन्होंने इस अंदेशे के पेशे नज़र के आप बेदार न हो जाए हरकत न की, उन के आंसू रसूलुल्लाह ﷺ के चेहरा मुबारक पर गिरे तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "अबू बकर! क्या हुआ ?" उन्होंने अर्ज़ किया, मेरे वालिदेन आप पर फ़िदा हो मुझे दस लिया गया है, रसूलुल्लाह ﷺ ने लुआब लगाया और तकलीफ जाती रही, और बाद में इस ज़हर का असर इन पर दोबारा शुरू हो गया और यही उनकी वफात का सबब बना, रहा उनका दीन तो जब रसूलुल्लाह ﷺ ने वफात पाई कुछ अरब मुरतद हो गए और उन्होंने कहा: हम ज़कात नहीं देगे, उन्होंने ने फ़रमाया: अगर उन्होंने एक रस्सी भी देने से इनकार किया तो में उन से जिहाद करूँगा, मैंने कहा रसूल अल्लाह के खलीफा लोगों को मिलाए और नरमी करे, उन्होंने मुझे फ़रमाया: क्या अहलियत में सख्त थे और इस्लाम मे बुज़दिल हो गए हो, वही का सिलसिला मुन्कतेअ हो गया, दीन मुकम्मल हो चूका, तो क्या मेरे जीते हुए दीन कम (नाकिस) हो जाएगा| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه رزين (لم اجده) [و البيهقى فى دلائل النبوة (2 / 477)] * فيه فرات بن السائب عن ميمون بن مهران ، و الفرات هذا ضعيف جدًا متروک

بَاب مَنَاقِب عمر • उमर रदियल्लाहु अन्हु के मनाकिब का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٦٠٣٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَقَدْ كَانَ فِيمَا قَبْلَكُمْ مِنَ الْأُمَمِ مُحَدَّثُونَ فَإِنْ يَكُ فِي أمّتي أحدٌ فإِنَّه عمر» . مُتَّفق عَلَيْهِ

6035. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तुम से पहली उम्मतो में मुहद्दस (जिन्हें इल्हाम होता हो) हुआ करते थे, अगर मेरी उम्मत में कोई शख़्स (मुहद्दस) होता तो वह उमर है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3689) و مسلم (23 / 2398)، (6204)

٦٠٣٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ قَالَ: اسْتَأْذن عمر رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعِنْدَهُ نِسْوَةٌ مِنْ قُرَيْشٍ يُكَلِّمْنَهُ وَيَسْتَكْثِرْنَهُ عَالِيَةً أَصْوَاتُهُنَّ فَلَمَّا اسْتَأْذَنَ عُمَرُ قُمْنَ فَبَادَرْنَ الْحِجَابَ فَدَخَلَ عُمَرُ وَرَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَضْحَكُ فَقَالَ: أَضْحَكَ اللَّهُ سِنَّكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «عَجِبْتُ مِنْ هَؤُلَاءِ اللَّاتِي كُنَّ عِنْدِي فَلَمَّا سَمِعْنَ صَوْتَكَ ابْتَدَرْنَ الْحِجَابَ» قَالَ عُمَرُ: يَا عَدُوَّاتِ أَنْفُسِهِنَّ أَتَهَبْنَنِي وَلَا تَهَبْنَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم؟ قُلْنَ: نَعَمْ أَنْتَ أَفَظُّ وَأَغْلَظُ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِيهٍ يَا ابْنَ الْخَطَّابِ وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ مَا لَقِيَكَ الشَّيْطَانُ سَالِكًا فَجًّا قَطُّ إِلَّا سَلَكَ فَجًّا غَيْرَ فَجِّكَ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَقَالَ الْحُمَيْدِيُّ: زَادَ الْبَرْقَانِيُّ بَعْدَ

قَوْلِهِ: يَا رَسُولَ اللَّهِ: مَا أَضْحَكَكَ

6036. साद बिन अबी वकास रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाह ﷺ के पास आने की इजाज़त तलब की, इस वक़्त आप के पास कुरैश की चंद औरतें(आप की अज़्वाजे मुतहरात) थी, वह आप से बुलंद आवाज़ में गुफ्तगू कर रही थी और आप से नान व नफ्का में इज़ाफे का मुतालबा कर रही थी, जब उमर रदियल्लाहु अन्हु ने इजाज़त तलब की तो वह खड़ी हुई और जल्दी से परदे में चली गई, उमर रदियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ लाए तो रसूलुल्लाह ﷺ हंस रहे थे, उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! अल्लाह आप को सदा खुश रखे, नबी ﷺ ने फ़रमाया: "मुझे इन पर ताज्जुब है के वह मेरे पास थी, जब उन्होंने आप की आवाज़ सुनी तो वह फ़ौरन हिजाब में चली गई", उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: अपनी जान की दुश्मन! तुम मुझ से डरती हो लेकिन रसूलुल्लाह ﷺ से नहीं डरती हो, उन्होंने ने फ़रमाया: हाँ, आप सख्त मिज़ाज और सख्त दिल है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "इब्ने खत्ताब! और कुछ कहो, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! शैतान तुम्हें किसी रास्ते पर चलता मिल जाता है तो वह उस रास्ते को छोड़ कर किसी दूसरे रास्ते पर चल पड़ता है"| # और इमाम हुमैदी (रह) बयान करते हैं, बिरकानी ने "या रसूल अल्लाह" के अल्फाज़ के बाद "ما أضحک'' " आप को किसी चीज़ ने हसाया'' के अल्फाज़ का इज़ाफा किया है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3683) و مسلم (22 / 2396)، (6202)

٦٠٣٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: " دخلتُ الجَنَّةَ فإذا أَنا بالرُميصاء امْرَأَةِ أَبِي طَلْحَةَ وَسَمِعْتُ خَشَفَةً فَقُلْتُ: مَنْ هَذَا؟ فَقَالَ: هَذَا بِلَالٌ وَرَأَيْتُ قَصْرًا بِفِنَائِهِ جاريةٌ فقلت: لمن هَذَا؟ فَقَالُوا: لِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ فَأَرَدْتُ أَنْ أَدْخُلَهُ فَأَنْظُرَ إِليه [ص:١٧٠ فذكرتُ غيرتك " فَقَالَ عمر: بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي يَا رَسُولَ اللَّهِ أَعَلَيْكَ أغار؟ . مُتَّفق عَلَيْهِ

6037. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "(मेअराज की रात) में जन्नत में दाखिल हुआ तो मैंने अबू तल्हा रदियल्लाहु अन्हु की अहलिया रामिसाअ को देखा (नैज़) मैंने कदमो की आवाज़ सुनी तो मैंने पूछा यह कौन है? उन्होंने बताया यह बिलाल है, मैंने एक महल देखा उस के सहन में एक लौंडी देखी मैंने पूछा: "ये (महल) किस के लिए है?" उन्होंने बताया उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु के लिए है, मैंने उस के अन्दर दाखिल होने का इरादा किया ताके में उसे देख सकू, लेकिन मुझे तुम्हारी गैरत याद आ गई", उमर रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मेरे वालिदेन आप पर कुर्बान हो, क्या मैं आप से गैरत करूँगा| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3679) و مسلم (20 / 2394)، (6198)

٦٠٣٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يَقُول: «بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ رَأَيْتُ النَّاسَ يُعْرَضُونَ عَلَيَّ وَعَلَيْهِمْ قُمُصٌ مِنْهَا مَا يَبْلُغُ الثُّدِيَّ وَمِنْهَا مَا دُونَ ذَلِكَ وَعُرِضَ عَلَيَّ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ وَعَلَيْهِ قَمِيصٌ يَجُرُّهُ»

قَالُوا: فَمَا أَوَّلْتَ ذَلِكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: «الدِّينَ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

6038. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैं सो रहा था के मैंने लोगों को देखा के वह मेरे सामने पेश किए गए है, इन पर कुमुसून थी उनमें से किसी की कुमुस सीने तक पहुँचती थी, किसी की उस से छोटी थी, उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु मुझ पर पेश किए गए, इन पर जो कमीज़ थी वह (चलते वक़्त) इसे घसीटते थे”, सहाबा रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप ने उसकी क्या तावील फरमाई है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “इस से दीन मुराद है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاري (3691) و مسلم (15 / 2390)، (6189)

٦٠٣٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يَقُول: «بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ أُتِيتُ بِقَدَحِ لَبَنٍ فَشَرِبْتُ حَتَّى إِنِّي لَأَرَى الرِّيَّ يَخْرُجُ فِي أَظْفَارِي ثُمَّ أَعْطَيْتُ فَضْلِي عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ» قَالُوا: فَمَا أَوَّلْتَهُ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: «الْعِلْمَ» . مُتَّفق عَلَيْهِ

6039. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “मैं सोया हुआ था तो मेरे पास दूध का प्याला लाया गया तो मैंने पि लिया हत्ता कि सेराबी का असर मैंने अपने नाख़ून में ज़ाहिर होता देखा, फिर मैंने अपने से बचा हुआ उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु को अता किया: “सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप ने उसकी क्या तावील फरमाई? आप ﷺ ने फ़रमाया: “इल्म”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاري (3681) و مسلم (16 / 2391)، (6190)

٦٠٤٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ رَأَيْتُنِي عَلَى قَلِيبٍ عَلَيْهَا دَلْوٌ؟ فَنَزَعْتُ مِنْهَا مَا شَاءَ اللَّهُ ثُمَّ أَخَذَهَا ابْنُ أَبِي قُحَافَةَ فَنَزَعَ مِنْهَا ذَنُوبًا أَوْ ذَنُوبَيْنِ وَفِي نَزْعِهِ ضَعْفٌ وَاللَّهُ يَغْفِرُ لَهُ ضَعْفَهُ ثُمَّ اسْتَحَالَتْ غَرْبًا فَأَخَذَهَا ابْنُ الْخَطَّابِ فَلَمْ أَرَ عَبْقَرِيًّا مِنَ النَّاسِ يَنْزِعُ نَزْعَ عُمَرَ حَتَّى ضرب النَّاس بِعَطَن»

6040. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “मैं सो रहा था के मैंने अपने आप को एक कुंवो पर देखा, उस पर एक डोल था, जिस क़दर अल्लाह ने चाहा मैंने उस से पानी निकाला, फिर इब्ने अबी कुहाफ़ा (अबू बक्र (र)) ने इसे हासिल कर लिया, उन्होंने एक या दो डोल निकाले, और उन के निकालने में ज़ोफ़ था, अल्लाह उन के ज़ोफ़ को मुआफ़ फरमाए, फिर वह (डोल) बड़े डोल में बदल गया, और उमर बिन खत्ताब ने इसे पकड़ लिया, मैंने ऐसा ताकतवर आदमी नहीं देखा जो उमर रदियल्लाहु अन्हु की तरह डोल खींचता हो हत्ता कि लोगों ने अपने ऊटों को हौज़ से सेराब किया”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاري (3664) و مسلم (17 / 2392)، (6192)

٦٠٤١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَفِي رِوَايَةِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: «ثُمَّ أَخَذَهَا ابْنُ الْخَطَّابِ مِنْ يَدِ أَبِي بَكْرٍ فَاسْتَحَالَتْ فِي يَدِهِ غَرْبًا فَلَمْ أَرَ عَبْقَرِيًّا يَفْرِي فَرْيَهُ حَتَّى رَوِيَ النَّاسُ وَضَرَبُوا بعَطَنٍ» . مُتَّفق عَلَيْهِ

6041. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हा से मरवी रिवायत में है आप ﷺ ने फ़रमाया: “फिर अबू बक्र के हाथ से इब्ने खत्ताब ने इसे ले लिया तो वह उन के हाथ में बड़ा हो गया, मैंने ऐसा सरदार नहीं देखा जो उन की तरह काम करता हो, हत्ता कि लोग सेराब हो गए और उन्होंने ऊटों को भी हौज़ से सेराब किया”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (7019) و مسلم (19 / 2393)، (6196)

بَاب مَنَاقِب عمر • उमर रदियल्लाहु अन्हु के मनाकिब का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٦٠٤٢ - (حسن) عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ جَعَلَ الْحَقَّ عَلَى لِسَانِ عُمَرَ وَقَلْبِهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

6042. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह ने हक़ को उमर रदियल्लाहु अन्हु की ज़ुबान और उन का दिल पर जारी फरमा दिया है”| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (3682 وقال : حسن صحيح غريب)

٦٠٤٣ - (ضَعِيف) وَفِي رِوَايَةِ أَبِي دَاوُدَ عَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ اللَّهَ وَضَعَ الْحَقَّ عَلَى لِسَان عمر يَقُول بِهِ»

6043. और अबू दावुद की रिवायत में जो के अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है, फ़रमाया: “अल्लाह ने हक़ को उमर की ज़ुबान पर रख दिया है जिसके ज़रिए वह बोलते हैं”| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (2962)

٦٠٤٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَلِيٍّ»» رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: مَا كُنَّا نُبْعِدُ أَنَّ السَّكِينَةَ تَنْطِقُ عَلَى لِسَانِ عمر. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي «دَلَائِل النُّبُوَّة»

6044. अली रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: हम इस बात बईद नहीं समझते के तस्कीन बख्शने वाला कलाम

उमर रदियल्लाहु अन्हु की ज़ुबान पर जारी होता है| (सहीह)

صحیح ، رواه البیهقی فی دلائل النبوة (6 / 369370) [و عبدالله بن احمد (1 / 106 ح 834 و سنده حسن) و عبد الرزاق (11 / 222 ح 20380) و البغوی فی شرح السنة (14 / 86 ح 3877) و للحدیث طرق کثیرة عند احمد بن حنبل فی فضائل الصحابة (310 ، 522 ، 523 ، 601 ، 614 ، 634 ، 707 ، 711) وغیره فالحدیث صحیح]

٦٠٤٥ - (حسن صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «اللَّهُمَّ أَعِزَّ الْإِسْلَامَ بِأَبِي جَهْلِ بْنِ هِشَامٍ أَوْ بِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ» فَأَصْبَحَ عُمَرُ فَغَدَا عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَسْلَمَ ثُمَّ صَلَّى فِي الْمَسْجِدِ ظَاهرا. رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ

6045. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने दुआ फरमाई: ऐ अल्लाह! इस्लाम को अबू जहल बिन हिशाम या उमर बिन खत्ताब के ज़रिए गलबा अता फरमा", सुबह हुई तो उमर पहले पहर नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए और इस्लाम कबूल किया, फिर आप ने मस्जिद में एलानिया नमाज़ अदा फरमाई| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواه احمد فی فضائل الصحابة (1 / 249250 ح 311) [و الترمذی (3683 وقال : غریب) و سنده ضعیف] * سنده ضعیف جدًا ، نضر بن عبد الرحمن الخزاز ابو عمر : متروک ، و روی الترمذی (3681) بسند حسن عن ابن عمر ان رسول الله صلی الله علیه و آله وسلم قال :'' اللھم اعز الاسکام باحب ھذه الرجلین الیک : بابی جھل او بعمر بن خطاب '' وقال :'' ھذا حدیث حسن صحیح '' وھو یغنی عنه

٦٠٤٦ - (بَاطِل) وَعَنْ»» جَابِرٍ قَالَ: قَالَ عُمَرُ لِأَبِي بَكْرٍ: يَا خَيْرَ النَّاسِ بَعْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: أَمَا إِنَّكَ إِنْ قُلْتَ ذَلِكَ فَلَقَدْ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَا طَلَعَتِ الشَّمْسُ عَلَى رَجُلٍ خَيْرٍ مِنْ عُمَرَ» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

6046. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: ए वह इंसान जो रसूलुल्लाह ﷺ के बाद सबसे बेहतर शख्शियत है! अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: सुन लो! अगर आप ने यह बात कही तो मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना है", उमर से बेहतर शख़्स कोई नहीं सूरज तुलुअ हुआ हो"| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (3684) * فیه عبدالله الواسطی : ضعیف و شیخه : مجھول و الحدیث ضعفه الذھبی جدًا بقوله :'' و الحدیث شبه الموضوع ''

٦٠٤٧ - (حَسَنٌ) وَعَنْ»» عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لوكان بَعْدِي نَبِيٌّ [ص:١٧٠ لَكَانَ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ. وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

6047. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने फ़रमाया: "अगर मेरे बाद कोई नबी

होता तो वह उमर बिन खत्ताब होते”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3686)

٦٠٤٨ - (حسن صَحِيح) وَعَن بُرَيْدَة قَالَ: خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي بَعْضِ مَغَازِيهِ فَلَمَّا انْصَرَفَ جَاءَتْ جَارِيَةٌ سَوْدَاءُ. فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي كنتُ نذرت إِن ردك الله سالما أَنْ أَضْرِبَ بَيْنَ يَدَيْكَ بِالدُّفِّ وَأَتَغَنَّى. فَقَالَ لَهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنْ كُنْتِ نَذَرْتِ فَاضْرِبِي وَإِلَّا فَلَا» فَجَعَلَتْ تَضْرِبُ فَدَخَلَ أَبُو بَكْرٍ وَهِيَ تَضْرِبُ ثُمَّ دَخَلَ عَلِيٌّ وَهِيَ تَضْرِبُ ثُمَّ دَخَلَ عُثْمَانُ وَهِيَ تَضْرِبُ ثُمَّ دَخَلَ عُمَرُ فَأَلْقَتِ الدُّفَّ تَحْتَ اسْتِهَا ثُمَّ قَعَدَتْ عَلَيْهَا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الشَّيْطَانَ لَيَخَافُ مِنْكَ يَا عُمَرُ إِنِّي كُنْتُ جَالِسًا وَهِيَ تَضْرِبُ فَدَخَلَ أَبُو بَكْرٍ وَهِيَ تَضْرِبُ ثُمَّ دَخَلَ عَلِيٌّ وَهِيَ تَضْرِبُ ثُمَّ دَخَلَ عُثْمَانُ وَهِيَ تَضْرِبُ فَلَمَّا دَخَلْتَ أَنْتَ يَا عُمَرُ أَلْقَتِ الدُّفَّ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ. وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ غَرِيب

6048. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ किसी गज़वा के लिए तशरीफ़ ले गए, जब आप वापस हुए तो एक सियाह फाम औरत आप के पास आए तो उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैंने नज़र मानी थी के अगर अल्लाह आप को सहीह सलाम वापस ले आया तो मैं आप के सामने दफ बजाउंगी और गज़ल पढ़ूंगी, रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे फ़रमाया: “अगर तूने नज़र मानी थी तो फिर दफ बजा ले और अगर नज़र नहीं मानी तो फिर नहीं ?” वह बजाने लगी तो अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ लाए वह (इन के आने पर) बजाती रही, फिर अली रदियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ लाए और वह बजाती रही, फिर उस्मान रदियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ लाए तो वह बजाती रही, फिर उमर रदियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ लाए तो उस ने दफ अपने सुरिन के नीचे रख ली और उस पर बैठ गई, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “उमर शैतान तुम से डरता है, मैं बैठा हुआ था और वह दफ बजाती रही, अबू बक्र आए तो वह बजाती रही, फिर अली आए तो वह बजाती रही, फिर उस्मान आए तो वह बजाती रही, उमर जब तुम आए तो उस ने दफ फेंक दिया”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3690)

٦٠٤٩ - (حسن) وَعَنْ»» عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَالِسًا فَسَمِعْنَا لَغَطًا وَصَوْتَ صِبْيَانٍ. فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَإِذَا حَبَشِيَّةٌ تَزْفِنُ وَالصِّبْيَانُ حَوْلَهَا فَقَالَ: «يَا عَائِشَةُ تَعَالَيْ فَانْظُرِي» فَجِئْتُ فَوَضَعْتُ لَحْيَيَّ عَلَى مَنْكِبِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَجَعَلْتُ أَنْظُرُ إِلَيْهَا مَا بَيْنَ الْمَنْكِبِ إِلَى رَأْسِهِ. فَقَالَ لِي: «أَمَا شَبِعْتِ؟ أَمَا شَبِعْتِ؟» فَجَعَلْتُ أَقُولُ: لَا لِأَنْظُرَ مَنْزِلَتِي عِنْدَهُ إِذ طلع عمر قَالَت فَارْفض النَّاس عَنْهَا. قَالَتْ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنِّي لأنظر إِلَى شَيَاطِينِ الْإِنْسِ وَالْجِنِّ قَدْ فَرُّوا مِنْ عُمَرَ» قَالَتْ: فَرَجَعْتُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ غَرِيب

6049. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ फरमा थे की हमने शोर और बच्चो की

आवाज़ सुनी, रसूलुल्लाह ﷺ खड़े हुए तो देखा के एक हब्शी खातून रक्स कर रही थी और बच्चे उस के इर्दगिर्द (तमाशा देख रहे) थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: "आइशा आओ और देखो", मैं आई तो मैंने अपने जबड़े (चहरा) रसूलुल्लाह ﷺ के कंधे पर रख दिए और मैं आप के कंधे और सर के दरमियान से इसे देखने लगी, आप ﷺ ने मुझे फ़रमाया: "क्या तुम सैर नहीं हुई? क्या तुम सैर नहीं हुई ?" में कहने लगी नहीं, ताकि मैं आप के यहाँ अपने कद्र व मंज़िलत का अंदाज़ा लगा सकू, अचानक उमर रदियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ ले आए तो सारे लोग इस (जशिये) के पास से तरबितर हो गए, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मैंने शैतान जिन्न व इन्स को देखा के वह उमर की वजह से भाग रहे हैं", आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया: में वापस आ गई| तिरमिज़ी, और फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3691)

بَاب مَنَاقِب عمر • उमर रदियल्लाहु अन्हु के मनाकिब का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٦٠٥٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن أنس وَابْن عمر أَن عمر قَالَ: وَافَقْتُ رَبِّي فِي ثَلَاثٍ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ لَوِ اتَّخَذْنَا مِنْ مَقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى؟ فَنَزَلَتْ [وَاتَّخِذُوا مِنْ مَقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى] . وَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ يَدْخُلُ عَلَى نِسَائِكَ الْبَرُّ وَالْفَاجِرُ فَلَوْ أَمَرْتَهُنَّ يَحْتَجِبْنَ؟ فَنَزَلَتْ آيَةُ الْحِجَابِ وَاجْتَمَعَ نِسَاءُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْغَيْرَةِ فَقُلْتُ [عَسَى رَبُّهُ إِنْ طلَّقكنَّ أَن يُبدلهُ أَزْوَاجًا خيرا منكنَّ] فنزلت كَذَلِك

6050. अनस और इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: मैंने तीन उमूर में अपने रब से मुवाफिकत की, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! अगर हम मकामे इब्राहीम को जाए नमाज़ बना लें? अल्लाह ने यह आयत नाज़िल फरमा दि: "मकामे इब्राहीम को जाए नमाज़ बनाओ", मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! आप की अज़वाज ए मूतहरात के पास नेक व फासिक़ किस्म के लोग आते हैं, अगर आप उन्हें परदा करने का हुक्म फरमादे, तब अल्लाह ने आयते हिजाब नाज़िल फरमाई और (एक मौके पर) नबी ﷺ की अज़वाज ए मूतहरात किस्सा गैरत (शहद पीने वाले वाकिया) पर इकट्ठी हो गई, तो मैंने कहा: "करीब है के उस का रब अगर वह तुम्हें तलाक दे दे, तुम से बेहतर बीवियां उन्हें अता फरमादे", इसी तरह आयत नाज़िल हो गई| (बुखारी)

رواه البخاری (402 ، 4483) [و احمد (1 / 23)]

٦٠٥١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَفِي رِوَايَةٍ لِابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ عُمَرُ: وَافَقْتُ رَبِّي فِي ثَلَاثٍ: فِي مَقَامِ إِبْرَاهِيمَ وَفِي الْحِجَابِ وَفِي أُسَارَى بَدْرٍ. مُتَّفق عَلَيْهِ

6051. और इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा की रिवायत में है, उन्होंने कहा: उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: मैंने तीन उमूर में अपने रब से मुवाफिकत की, मकामे इब्राहीम के मुत्तल्लिक, परदे और बद्र के कैदियों के बारे में| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (لم اجدہ) و مسلم (24 / 2399)، (6206)

٦٠٥٢ - (ضَعِيف) وَعَن»» ابْن مَسْعُود قَالَ: فُضِّلَ النَّاسَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ بِأَرْبَعٍ: بِذِكْرِ الْأَسَارَى يَوْمَ بَدْرٍ أَمَرَ بِقَتْلِهِمْ فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى [لَوْلَا كِتَابٌ مِنَ اللَّهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيمَا أَخَذْتُم عَذَاب عَظِيم] وَبِذِكْرِهِ الْحِجَابَ أَمَرَ نِسَاءَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَحْتَجِبْنَ فَقَالَتْ لَهُ زَيْنَبُ: وَإِنَّكَ عَلَيْنَا يَا ابْنَ الْخَطَّابِ وَالْوَحْيُ يَنْزِلُ فِي بُيُوتِنَا؟ فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى [وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعا فَاسْأَلُوهُنَّ من وَرَاء حجاب] وَبِدَعْوَةِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اللَّهُمَّ أَيِّدِ الْإِسْلَامَ بِعُمَرَ» وَبِرَأْيِهِ فِي أَبِي بَكْرٍ كَانَ أول نَاس بَايعه. رَوَاهُ أَحْمد

6052. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु को चार चीजों की वजह से दीगर लोगों पर फ़ज़ीलत अता की गई, उन्होंने बद्र के कैदियों को क़त्ल करने का मशवरा दिया था, अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फरमाई: “अगर अल्लाह की किताब में यह हुक्म पहले से मौजूद न होता तो तुमने जो (फिदिया) लिया उस पर तुम्हें बड़ा अज़ाब पहुँचता”, और उनका हिजाब के मुतल्लिक फरमाना, उन्होंने नबी ﷺ की अज़वाज ए मूतहरात से फ़रमाया के वह परदा किया करे, तो जैनब रदियल्लाहु अन्हु ने उन्हें फ़रमाया: इब्ने खत्ताब क्या आप हमें हुक्म देते हैं जबकि वही तो हमारे घरो में उतरी है, तब अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फरमाई: “और जब तुम उन से कोई चीज़ तलब करो तो उन से परदे के पीछे से तलब करो”, और उन के मुतल्लिक नबी ﷺ की दुआ: “अल्लाह उमर के ज़रिए इस्लाम को तकवियत (मजबूती) फरमा”, और अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु के (खलीफ़ा होने के) मुतल्लिक सबसे पहली उन्हें की राय थी और उन्होंने ही सबसे पहले उन की बैत की| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ احمد (1 / 456 ح 3662) * فیه ابو نهشل : مجهول و ابو النضر هاشم بن القاسم سمع من المسعودی بعد اختلاطه

٦٠٥٣ - (واه) وَعَنْ»» أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «ذَاكَ الرَّجُلُ أَرْفَعُ أُمَّتِي دَرَجَةً فِي الْجَنَّةِ» . قَالَ أَبُو سَعِيدٍ: وَاللَّهِ مَا كُنَّا نُرَى ذَلِكَ الرَّجُلَ إِلَّا عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ [ص:١٧٠ حَتَّى مَضَى لِسَبِيلِهِ. رَوَاهُ ابْن مَاجَه

6053. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “वो आदमी मेरी उम्मत में से जन्नत में एक दर्जा बुलंद मक़ाम पर फाईज़ होगा”, अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: अल्लाह की क़सम! हमारे ख़याल में वह आदमी उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु ही है हत्ता कि वह वफात पा गए| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ ابن ماجه (4077 ب) * فیه عطیة العوفی ضعیف و مدلس و عبید الله بن الولید الوصافی : ضعیف

٦٠٥٤ - (صَحِيح) وَعَن»» أسلم قَالَ: سَأَلَنِي ابْنُ عُمَرَ بَعْضَ شَأْنِهِ - يَعْنِي عُمَرَ - فَأَخْبَرْتُهُ فَقَالَ: مَا رَأَيْتُ أَحَدًا قَطُّ بَعْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ حِينِ قُبِضَ كَانَ أَجَدَّ وَأَجْوَدَ حَتَّى انْتهى من عمر. رَوَاهُ البُخَارِيّ

6054. असलम (उमर रदियल्लाहु अन्हु के आज़ाद करदा गुलाम) बयान करते हैं, इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा ने मुझ से उमर रदियल्लाहु अन्हु के बाज़ हालात के मुतल्लिक दरियाफ्त किया तो मैंने उन्हें बताया की मैंने रसूलुल्लाह ﷺ की वफात के बाद किसी शख़्स को इतनी ज़्यादा जद्दोजहद और सखावत करने वाला नहीं देखा हत्ता कि यह फ़ज़ाइल उमर रदियल्लाहु अन्हु पर ख़तम हो गए| (बुखारी)

رواه البخارى (3687)

٦٠٥٥ - (صَحِيح) وَعَن»» المِسور بن مَخْرَمَةَ قَالَ: لَمَّا طُعِنَ عُمَرُ جَعَلَ يَأْلَمُ فَقَالَ لَهُ ابْنُ عَبَّاسٍ وَكَأَنَّهُ يُجَزِّعُهُ: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ وَلَا كُلُّ ذَلِكَ لَقَدْ صَحِبْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَحْسَنْتَ صُحْبَتَهُ ثُمَّ فَارَقَكَ وَهُوَ عَنْكَ رَاضٍ ثُمَّ صَحِبْتَ أَبَا بَكْرٍ فَأَحْسَنْتَ صُحْبَتَهُ ثُمَّ فَارَقَكَ وَهُوَ عَنْكَ رَاضٍ ثُمَّ صَحِبْتَ الْمُسْلِمِينَ فَأَحْسَنْتَ صُحْبَتَهُمْ وَلَئِنْ فَارَقْتَهُمْ لَتُفَارِقَنَّهُمْ وَهُمْ عَنْكَ رَاضُونَ. قَالَ: أَمَّا مَا ذَكَرْتَ مِنْ صُحْبَةِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم وَرِضَاهُ فَإِنَّمَا ذَاك مَنٌّ مِنَ اللَّهِ مَنَّ بِهِ عَلَيَّ وَأَمَّا مَا ذَكَرْتَ مِنْ صُحْبَةِ أَبِي بَكْرٍ وَرِضَاهُ فَإِنَّمَا ذَلِك من من الله جلّ ذكره مَنَّ بِهِ عَلَيَّ. وَأَمَّا مَا تَرَى مِنْ جزعي فَهُوَ من أَجلك وَأجل أَصْحَابِكَ وَاللَّهِ لَوْ أَنَّ لِي طِلَاعَ الْأَرْضِ ذَهَبا لافتديت بِهِ من عَذَاب الله عز وَجل قبل أَن أرَاهُ. رَوَاهُ البُخَارِيّ

6055. मिस्वर बिन मखरम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब उमर रदियल्लाहु अन्हु ज़ख़्मी कर दिए गए तो वह तकलीफ महसूस करने लगे, उस पर इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने उन्हें तसल्ली देते हुए अर्ज़ किया: अमीरुल मोमिनीन आप इतनी तकलीफ का क्यों इज़हार कर रहे हैं? आप ने रसूलुल्लाह ﷺ की सोहबत इख़्तियार की, और इसे अच्छे अंदाज़ में निभाया, फिर वह आप से जुदा हुए तो वह आप पर राज़ी थे, फिर आप अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु की सोहबत में रहे, और उन के साथ भी खूब रहे, फिर वह आप से जुदा हुए तो वह भी आप पर राज़ी थे, फिर आप मुसलमानों की सोहबत में रहे, और आप उन के साथ भी खूब अच्छी तरह रहे, और अगर आप उन से जुदा हुए तो आप उन से भी इस हाल में जुदा होंगे के वह आप से राज़ी होंगे, उन्होंने ने फ़रमाया: तुमने जो रसूलुल्लाह ﷺ के साथ और आप के राज़ी होने का ज़िक्र किया है तो वह अल्लाह की तरफ से एक इहसान है जो उस ने मुझ पर किया है, और तुमने जो अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु के साथ और उन के राज़ी होने का ज़िक्र किया है तो वह भी अल्लाह की तरफ से एक इहसान है, जो उस ने मुझ पर किया है, और रही मेरी घबराहट और परेशानी जो तुम देख रहे हो तो वह आप और आप के साथियो के बारे में फ़िक्र मंद होने की वजह से है, अल्लाह की क़सम! अगर मेरे पास ज़मीन भर सोना होता तो मैं अल्लाह के अज़ाब को देखने से पहले उस का फिदिया दे कर उन से निजात हासिल करता| (बुखारी)

رواه البخارى (3692)

بَابِ مَنَاقِبِ أَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا • अबू बक्र और उमर रदियल्लाहु अन्हुमा के मनाकिब का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٦٠٥٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " بَينا رجل يَسُوق بقرة إِذْ أعيي فَرَكِبَهَا فَقَالَتْ: إِنَّا لَمْ نُخْلَقْ لِهَذَا إِنَّمَا خُلِقْنَا لِحِرَاثَةِ الْأَرْضِ. فَقَالَ النَّاسُ: سُبْحَانَ اللَّهِ بَقَرَةٌ تَكَلَّمُ ". فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «فَإِنِّي أومن بِهَذَا أَنَا وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ» . وَمَا هُمَا ثَمَّ وَقَالَ: " بَيْنَمَا رَجُلٌ فِي غَنَمٍ لَهُ إِذْ عدا الذِّئْب فَذهب عَلَى شَاةٍ مِنْهَا فَأَخَذَهَا فَأَدْرَكَهَا صَاحِبُهَا فَاسْتَنْقَذَهَا فَقَالَ لَهُ الذِّئْبُ: فَمَنْ لَهَا يَوْمَ السَّبُعِ يَوْمَ لَا رَاعِيَ لَهَا غَيْرِي؟ فَقَالَ النَّاسُ: سُبْحَانَ الله ذِئْب يتَكَلَّم؟ ". قَالَ: أُومِنُ بِهِ أَنَا وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ " وَمَا هما ثمَّ. مُتَّفق عَلَيْهِ

6056. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इस असना में के एक आदमी गाय हांक रहा था, जब वह थक जाता तो वह उस पर सवार हो जाता, उस ने कहा: हमें इसलिए नहीं पैदा किया गया, हमे, तो खेत जोतने के लिए पैदा किया गया है, लोगों ने कहा: (سُبْحَانَ اللهِ) सुबहानल्लाह गाय कलाम करती है”, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैं उस पर ईमान रखता हूँ, अबू बक्र और उमर रदियल्लाहु अन्हु भी उस पर ईमान रखते है”, और वह दोनों इस वक़्त वहां मौजूद नहीं थे, और फ़रमाया: “एक आदमी बकरिया चरा रहा था के भेड़िये ने एक बकरी पर हमला किया और इसे पकड़ लिया, उस के मालिक ने इसे पा लिया और इसे छुड़ा लिया, भेड़िये ने इसे कहा जिस दिन दरिन्दे ही दरिन्दे रह जाएँगे और इस दिन मेरे सिवा बकरियों को चराने वाला कौन होगा? लोगों ने कहा: (سُبْحَانَ اللهِ) सुबहानल्लाह भेड़िया कलाम करता है”, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं उस पर ईमान रखता हूँ, और अबू बक्र व उमर रदियल्लाहु अन्हु उस पर ईमान रखते है”, और वह दोनों इस वक़्त वहां मौजूद नहीं थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3471) و مسلم (13 / 2388)، (6183)

٦٠٥٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: إِنِّي لَوَاقِفٌ فِي قَوْمٍ فَدَعَوُا اللَّهَ لِعُمَرَ وَقَدْ وُضِعَ عَلَى سَرِيرِهِ إِذَا رَجُلٌ مِنْ خَلَفِي قد وضع مِرْفَقُهُ عَلَى مَنْكِبِي يَقُولُ: يَرْحَمُكَ اللَّهُ إِنِّي لَأَرْجُو أَنْ يَجْعَلَكَ اللَّهُ مَعَ صَاحِبَيْكَ لِأَنِّي كَثِيرًا مَا كُنْتُ أَسْمَعُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «كُنْتُ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَفَعَلْتُ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَانْطَلَقْتُ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَدَخَلْتُ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَخَرَجْتُ وَأَبُو بكر وَعمر» . فَالْتَفَتُّ فَإِذَا هُوَ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ. مُتَّفق عَلَيْهِ

6057. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैं इन लोगों में खड़ा था जो उमर रदियल्लाहु अन्हु के लिए दुआए कर रहे थे, और उनका जनाज़ा उनकी चार पाई पर रखा हुआ था, के अचानक एक आदमी ने मेरे पीछे से अपने कोहनी मेरे कंधो पर रख दी, और वह कह रहे थे: अल्लाह आप रदियल्लाहु अन्हु पर रहम फरमाए, मुझे उम्मीद है के अल्लाह आप को आप के दोनों साथियो के साथ (दफन) कराएगा, क्योंकि मैं अक्सर रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना करता था: “मैं अबू बक्र और उमर थे, मैं अबू बक्र और उमर ने कलाम किया, मैं अबू बक्र

और उमर गए, मैं अबू बक्र और उमर दाखिल हुए, मैं अबू बक्र और उमर बाहर निकले", मैंने जो मुड़ कर देखा तो वह अली बिन अबी तालिब रदियल्लाहु अन्हु थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3677) و مسلم (14 / 2389)، (6187)

بَابِ مَنَاقِبِ أَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا • अबू बक्र और उमर रदियल्लाहु अन्हुमा के मनाकिब का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٦٠٥٨ - (ضَعِيف) عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِن أهل الْجنَّة ليراءون أهلَ عِلِّيِّينَ كَمَا تَرَوْنَ الْكَوْكَبَ الدُّرِّيَّ فِي أُفُقِ السَّمَاءِ وَإِنَّ أَبَا بَكْرٍ وَعُمَرَ مِنْهُمْ وَأَنْعَمَا» . رَوَاهُ فِي «شَرْحِ السُّنَّةِ» وَرَوَى نَحْوَهُ أَبُو دَاوُد وَالتِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

6058. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जन्नत वाले मक़ाम अलिय्यीन वालो को इस तरह देंखेंगे जिस तरह तुम आसमान के अफक में चमक दार सितारे को देखते हो, और अबू बक्र व उमर उन्हीं में से है, और वह क्या खूब हैं"| शरह सुन्ना अबू दावुद, तिरमिज़ी और इब्ने माजा ने इसी तरह रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ البغوی فی شرح السنة (14 / 100 ح 3893) و ابوداؤد (3987) و الترمذی (3658 وقال : حسن) و ابن ماجه (96) * عطیة العوفی ضعیف مدلس و للحدیث شواھد ضعیفة و روی الطبرانی فی الاوسط (7 / 6 ح 6003) بلفظ : ((ان الرجل من اھل علیین یشرف علی اھل الجنة کانه کوکب دری و ان ابا بکر و عمر منھما و انعما۔)) و سندہ حسن

٦٠٥٩ - (صَحِيح لشواهده) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ سَيِّدَا كُهُولِ أَهْلِ الْجَنَّةِ مِنَ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ إِلَّا النَّبِيين وَالْمُرْسلِينَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6059. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अबू बक्र और उमर रदियल्लाहु अन्हु अहले जन्नत के अव्वलीन व आखरिन के उमर रसीद लोगों के सरदार होंगे अलबत्ता अंबिया अलैहिस्सलाम और रसूल उस से मुशतश्ना (अपवाद) होंगे"| (हसन)

حسن ، رواہ الترمذی (3664 وقال : غریب) و للحدیث شواھد وھوبھا حسن

٦٠٦٠ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنهُ

6060. इमाम इब्ने माजा रहिमहुल्लाह ने इसे अली रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (हसन)

حسن ، رواه ابن ماجه (97)

٦٠٦١ - (حسن) وَعَنْ حُذَيْفَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنِّي لَا أَدْرِي مَا بَقَائِي فِيكُمْ؟ فَاقْتَدُوا بِاللَّذَيْنِ مِنْ بَعْدِي: أَبِي بكر وَعمر ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6061. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैं नहीं जानता की मैं तुम में कितनी देर बाकी रहूँगा, मेरे बाद तुम अबू बक्र और उमर दोनों की इक्तेदा करना”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (3663)

٦٠٦٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا دَخَلَ الْمَسْجِدَ لَمْ يَرْفَعْ أَحَدٌ رَأْسَهُ غَيْرُ أَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ كَانَا يَتَبَسَّمَانِ إِلَيْهِ وَيَتَبَسَّمُ إِلَيْهِمَا رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ. وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

6062. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ जब मस्जिद में तशरीफ़ लाते तो अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु और उमर रदियल्लाहु अन्हु के सिवा कोई अपना सर न उठाता वह दोनों आप की तरफ देख कर मुस्कुराते और आप इन दोनों की तरफ देख कर मुस्कुराते थे| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (3668) * فیه الحکم بن عطیة ضعیف ضعفه الجمهور و روی عنه ابوداؤد (الطیالسی) احادیث منکرة (راجع تھذیب التھذیب وغیره)

٦٠٦٣ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَرَجَ ذَاتَ يَوْمٍ وَدَخَلَ الْمَسْجِدَ [ص:١٧١ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ أَحَدُهُمَا عَنْ يَمِينِهِ وَالْآخَرُ عَنْ شِمَالِهِ وَهُوَ آخِذٌ بِأَيْدِيهِمَا. فَقَالَ: «هَكَذَا نُبْعَثُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيب

6063. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के एक रोज़ नबी ﷺ (घर से) बाहर निकले और मस्जिद में दाखिल हुए, और अबू बक्र व उमर रदियल्लाहु अन्हुमा में से एक आप के दाएँ तरफ था और एक आप के बाएँ तरफ था, आप इन दोनों के हाथ पकड़े हुए थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “रोज़ ए कियामत हम इसी तरह उठाए जाएँगे”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (3669) [و ابن ماجه (99)] * فیه سعید بن مسلمة : ضعیف

٦٠٦٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ حَنْطَبٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأَى أَبَا بَكْرٍ وَعُمَرَ فَقَالَ: «هَذَانِ السَّمْعُ وَالْبَصَرُ» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ مُرْسلا

6064. अब्दुल्लाह बिन हंतब से रिवायत है के नबी ﷺ ने अबू बक्र और उमर रदियल्लाहु अन्हुमा को देखा तो फ़रमाया: “ये दोनों समाअ व बसर (की तरह) हैं”, इमाम तिरमिज़ी ने इसे मुरसल रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (3671) * المطلب بن عبدالله بن حنطب مدلس و عنعن و للحديث شواهد ضعيفة عند الحاكم (3 / 369 ح 4432) و الخطيب (8 / 460 ، فيه ابن عقيل ضعيف) وغيرهما

٦٠٦٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا مِنْ نَبِيٍّ إِلَّا وَلَهُ وَزِيرَانِ مِنْ أَهْلِ السَّمَاءِ وَوَزِيرَانِ مِنْ أَهْلِ الْأَرْضِ فَأَمَّا وَزِيرَايَ مِنْ أَهْلِ السَّمَاءِ فَجِبْرِيلُ وَمِيكَائِيلُ وَأَمَّا وَزِيرَايَ مِنْ أَهْلِ الْأَرْضِ فَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

6065. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हर नबी के आसमान वालो से दो वज़ीर है और ज़मीन वालो से दो वज़ीर है, आसमान वालो से मेरे दो वज़ीर जिब्राइल अलैहिस्सलाम और मिकाइल अलैहिस्सलाम है, और ज़मीन वालो में से अबू बक्र और उमर है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3680 وقال : حسن غريب) * فيه تليد : رافضی ضعيف و عطية العوفی شيعی ضعيف مدلس

٦٠٦٦ - (صَحِيح إِن»» سلم من عنعنة الْحسن الْبَصْرِيّ)»» وَعَن أبي بكرَة أَنَّ رَجُلًا قَالَ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: رَأَيْتُ كَأَنَّ مِيزَانًا نَزَلَ مِنَ السَّمَاءِ فَوُزِنْتَ أَنْتَ وَأَبُو بَكْرٍ فَرَجَحْتَ أَنْتَ وَوُزِنَ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ فَرَجَحَ أَبُو بَكْرٍ وَوُزِنَ عُمَرُ وَعُثْمَانُ فَرَجَحَ عُمَرُ ثُمَّ رُفِعَ الْمِيزَانُ " فَاسْتَاءَ لَهَا رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعْنِي فَسَاءَهُ ذَلِكَ. فَقَالَ: «خِلَافَةُ نُبُوَّةٍ ثُمَّ يُؤْتِي اللَّهُ الْمُلْكَ مَنْ يَشَاءُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

6066. अबू बकरह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक आदमी ने रसूलुल्लाह ﷺ से अर्ज़ किया, मैंने (ख्वाब में) देखा के गोया एक तराज़ू आसमान से उतरा है, आप ﷺ का अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु से वज़न किया गया तो आप भारी रहे, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु और उमर रदियल्लाहु अन्हु का वज़न किया गया तो अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु भारी रहे, उमर रदियल्लाहु अन्हु और उस्मान रदियल्लाहु अन्हु का वज़न किया गया तो उमर रदियल्लाहु अन्हु भारी रहे, फिर तराज़ू उठा ली गई इस से रसूलुल्लाह ﷺ ग़मगीन हुए, यानी इस (ख्वाब) ने आप को ग़मगीन कर दिया, आप ﷺ ने फ़रमाया: “नबूवत का खिलाफत की जानिब इरशाद है, फिर अल्लाह जिसे चाहेगा बादशाहत अता फरमाएगा”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (2287 وقال : حسن صحيح) و ابوداؤد (4634) * الحسن البصری مدلس و عنعن

अबू बक्र और उमर रदियल्लाहु अन्हुमा के मनाकिब का बयान • بَابِ مَنَاقِبِ أَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا

तीसरी फस्ल • الْفَصْلُ الثَّالِث

٦٠٦٧ - (ضَعِيف) عَن»» ابْنِ مَسْعُودٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «يَطَّلِعُ عَلَيْكُمْ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ» . فَاطَّلَعَ أَبُو بَكْرٍ ثُمَّ قَالَ: «يَطَّلِعُ عَلَيْكُمْ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ» فَاطَّلَعَ عُمَرُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيث غَرِيب

6067. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: "अहल जन्नत! मैं से एक आदमी तुम्हारे पास ज़ाहिर होगा", अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ लाए, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: "अहल जन्नत! मैं से एक आदमी तुम्हारे पास ज़ाहिर होगा", उमर रदियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ लाए| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (3694) * عبدالله بن عبد القدوس : ضعيف ، ضعفه الجمهور وله متابعة ضعيفة مردودة عند الطبرانى فى الكبير (10 / 206 ح 10344) و الاعمش مدلس و عنعنان صح السند اليه

٦٠٦٨ - (مَوْضُوع) وَعَن»» عَائِشَة قَالَتْ: بَيْنَا رَأْسَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حجري لَيْلَةٍ ضَاحِيَةٍ إِذْ قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ هَلْ يَكُونُ لِأَحَدٍ مِنَ الْحَسَنَاتِ عَدَدُ نُجُومِ السَّمَاءِ؟ قَالَ: «نَعَمْ عُمَرُ» . قُلْتُ: فَأَيْنَ حَسَنَاتُ أَبِي بَكْرٍ؟ قَالَ: «إِنَّمَا جَمِيعُ حَسَنَاتِ عُمَرَ كَحَسَنَةٍ وَاحِدَةٍ مِنْ حَسَنَاتِ أَبِي بَكْرٍ» رَوَاهُ رزين

6068. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, चांदनी रात में रसूलुल्लाह ﷺ का सर मुबारक मेरी गोद मैं था के अचानक मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! क्या किसी शख़्स की आसमान के सितारों के बराबर नेकियाँ होगी? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ, उमर", मैंने अर्ज़ किया: अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु की नेकियाँ कहाँ गई? आप ﷺ ने फ़रमाया: "उमर की सारी नेकियाँ अबू बक्र की नेकियो के मुकाबले में एक नेकी की तरह है"| (मौज़ू)

اسناده موضوع ، رواه رزين (لم اجده) [و رواه الخطيب فى تاريخ بغداد (7 / 135) و فيه بريه بن محمد : كذاب ، حدث عن اسماعيل الصنعانى احاديث باطلة موضوعة ، وقال الخطيب :'' حديث موضوع '']

उस्मान रदियल्लाहु अन्हु के मनाकिब का बयान • بَاب مَنَاقِب عُثْمَان

पहली फस्ल • الْفَصْلُ الأول

٦٠٦٩ - (صَحِيح) عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُضْطَجِعًا فِي بَيْتِهِ كَاشِفًا عَنْ فَخِذَيْهِ - أَوْ سَاقَيْهِ - فَاسْتَأْذَنَ أَبُو بَكْرٍ فَأَذِنَ لَهُ وَهُوَ عَلَى تِلْكَ الْحَالِ فَتَحَدَّثَ ثُمَّ اسْتَأْذَنَ عُمَرُ فَأَذِنَ لَهُ وَهُوَ كَذَلِكَ فَتَحَدَّثَ ثُمَّ اسْتَأْذَنَ عُثْمَانُ فَجَلَسَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَسَوَّى ثِيَابَهُ فَلَمَّا خَرَجَ قَالَتْ عَائِشَةُ: دَخَلَ أَبُو بَكْرٍ فَلَمْ تَهْتَشَّ لَهُ وَلَمْ تُبَالِهِ ثُمَّ دَخَلَ عُمَرُ فَلَمْ تَهْتَشَّ لَهُ وَلَمْ تُبَالِهِ ثُمَّ دَخَلَ عُثْمَان فَجَلَست وسوَّيت ثِيَابك فَقَالَ: «أَلا أستحي من رجل تَسْتَحي مِنْهُ الْمَلَائِكَةُ؟»»» وَفِي رِوَايَةٍ قَالَ: «إِنَّ عُثْمَانَ رَجُلٌ حَيِيٌّ وَإِنِّي خَشِيتُ إِنْ أَذِنْتُ لَهُ عَلَى تِلْكَ الْحَالَةِ أَنْ لَا يَبْلُغَ إِلَيَّ فِي حَاجته» . رَوَاهُ مُسلم

6069. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ अपने घर में लपटे हुए थे और इस वक़्त आप की रानो या पिंडलियों से कपड़ा उठा हुआ था, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने अन्दर आने की इजाज़त तलब की तो उन्हें इजाज़त दे दी गई और आप इसी हालत में रहे, उन्होंने बात चित की, फिर उमर रदियल्लाहु अन्हु ने अन्दर आने की इजाज़त तलब की तो आप ने उन्हें इजाज़त दे दि और आप इसी हालत में रहे, उन्होंने बात चित की, फिर उस्मान रदियल्लाहु अन्हु ने अन्दर आने की इजाज़त तलब की तो रसूलुल्लाह ﷺ उठ कर बैठ गए, अपने कपड़े दुरुस्त किए, जब वह (आप ﷺ के पास से उठ कर) चले गए तो आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु आए तो आप ने उन की खातिर कोई हरकत न की और न उनकी कोई परवाह की, फिर उमर रदियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ लाए तो आप ने उन की खातिर कोई हरकत की न उनकी कोई परवाह, की फिर उस्मान रदियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ लाए तो आप उठ कर बैठ गए और अपने कपड़े दुरुस्त किए, (क्या मुआमला है?) आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या मैं इस शख़्स से हया न करू जिस से फ़रिश्ते हया करते हैं ?” एक दूसरी रिवायत में है आप ने फ़रमाया: “उस्मान हया दार शख़्स है, मुझे अंदेशा हुआ की अगर मैंने उन्हें इसी हालत में अन्दर आने की इजाज़त दे दी तो हो सकता है के (शर्म के मारे) वह अपने किसी काम के बारे में अपने बात मुझे न पहुंचा सके”। (मुस्लिम)

رواه مسلم (26 / 2401) و الرواية الثانية ، رواها مسلم (27 / 2402)، (6209 و 6210)

बَاب مَنَاقِب عُثْمَان • उस्मान रदियल्लाहु अन्हु के मनाकिब का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٦٠٧٠ - (لم تتمّ دراسته) عَن طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ اللَّهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لِكُلِّ نَبِيٍّ رَفِيقٌ وَرَفِيقِي - يَعْنِي فِي الْجنَّة - عُثْمَان» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6070. तल्हा बिन उबैदुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "हर नबी का एक रफीक (ख़ास) होता है और मेरे रफीक यानी जन्नत में उस्मान रदियल्लाहु अन्हु है"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (3698 وقال : غریب ، لیس اسناده بالقوی '' الخ) و انظر الحدیث الآتی (6062) * فیه شیخ من بنی زھرۃ : لم اعرفه ، و شیخه حارث بن عبد الرحمن بن ابی ذباب لم یدرک طلحة رضی الله عنه (انظر تحفة الاشراف 4 / 212)

٦٠٧١ - (لم تتمّ دراسته) وَرَاه ابْنُ مَاجَهْ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ [ص:١٧١»» وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ وَلَيْسَ إِسْنَادُهُ بِالْقَوِيِّ وَهُوَ مُنْقَطع

6071. और इब्ने माजा ने अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है, और तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है, और उसकी सनद क़वी नहीं, और वह मुन्कतेअ है| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواه ابن ماجه (109) و سنده ضعیف جدًا ، فیه عثمان بن خالد : متروک الحدیثو انظر الحدیث السابق (6061)

٦٠٧٢ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ خَبَّابٍ قَالَ: شَهِدْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يَحُثُّ عَلَى جَيْشِ الْعُسْرَةِ فَقَامَ عُثْمَانُ فَقَالَ: يَا رَسُول الله عَلَيَّ مِائَتَا بَعِيرٍ بِأَحْلَاسِهَا وَأَقْتَابِهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ حَضَّ عَلَى الْجَيْشِ فَقَامَ عُثْمَانُ فَقَالَ: عَلَيَّ مِائَتَا بَعِيرٍ بِأَحْلَاسِهَا وَأَقْتَابِهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ حَضَّ فَقَامَ عُثْمَانُ فَقَالَ: عَلَيَّ ثَلَاثُمِائَةِ بَعِيرٍ بِأَحْلَاسِهَا وَأَقْتَابِهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَأَنَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَنْزِلُ عَنِ الْمِنْبَرِ وَهُوَ يَقُولُ: «مَا عَلَى عُثْمَانَ مَا عَمِلَ بَعْدَ هَذِهِ مَا عَلَى عُثْمَانَ مَا عَمِلَ بَعْدَ هَذِهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6072. अब्दुल रहमान बिन खब्बाब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं नबी ﷺ की खिदमत में इस वक़्त हाज़िर हुआ जब आप गज़वा ए तबुक के लिए अमादा कर रहे थे, उस्मान रदियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और उन्होंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! सो ऊंट साज़ो सामान के साथ अल्लाह की राह में मेरे ज़िम्मे है, फिर आप ने लश्कर के लिए अमादा किया तो उस्मान रदियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और अर्ज़ किया, अल्लाह की राह में दो सो ऊंट साज़ो समान के साथ मेरे ज़िम्मे है, फिर आप ने तरगीब दिलाई तो उस्मान रदियल्लाहु अन्हु खड़े हुए तो अर्ज़ किया, अल्लाह की राहे में तीन सो ऊंट मेरे ज़िम्मे है, रावी बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को देखा के आप ﷺ

मिम्बर से उतरते फरमा रहे थे: “उस्मान रदियल्लाहु अन्हु ने उस के बाद जो भी अमल किया उस पर कोई मुआखिज़ा (इलज़ाम लगाना) नहीं, उस्मान रदियल्लाहु अन्हु उस के बाद जो भी अमल करे उस पर कोई मुआखिज़ा (इलज़ाम लगाना) नहीं| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (3700 وقال : غريب) * فرقد ابو طلحة مجهول و حديث الترمذی (3701) يغنی عنه

٦٠٧٣ - (حسن) وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: جَاءَ عُثْمَانُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِأَلْفِ دِينَارٍ فِي كُمِّهِ حِينَ جَهَّزَ جَيْشَ الْعُسْرَةِ فَنَثَرَهَا فِي حِجْرِهِ فَرَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُقَلِّبُهَا فِي حِجْرِهِ وَيَقُولُ: «مَا ضَرَّ عُثْمَانَ مَا عَمِلَ بَعْدَ الْيَوْمِ» مرَّتَيْنِ. رَوَاهُ أَحْمد

6073. अब्दुल रहमान बिन समुरह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब नबी ﷺ ने जैशुल अशरा तैयार फ़रमाया तो उस्मान ने अपनी जेब में एक हज़ार दीना लाकर आप की खिदमत में पेश किए और आप की गोद में ढेर कर दिए, मैंने नबी ﷺ को देखा के आप अपने गोद में उन्हें पलट रहे थे और फरमा रहे थे: “उस्मान ने जो भी अमल किया आज के बाद वह उस के लिए नुकसान देह नहीं”, आप ﷺ ने दो मर्तबा ऐसे फ़रमाया| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (5 / 63 ح 20906) [و الترمذی (3701 وقال : حسن غريب) و صححه الحاكم (3 / 102) و وافقه الذهبی]

٦٠٧٤ - (ضَعِيف) وَعَن أنسٍ قَالَ: لَمَّا أَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِبَيْعَةِ الرِّضْوَانِ كَانَ عُثْمَانُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ رَسُولُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى مَكَّةَ فَبَايَعَ النَّاسُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِن عُثْمَانَ فِي حَاجَةِ اللَّهِ وَحَاجَةِ رَسُولِهِ» فَضَرَبَ بِإِحْدَى يَدَيْهِ عَلَى الْأُخْرَى فَكَانَتْ يَدُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِعُثْمَانَ خَيْرًا من أَيْدِيهِم لأَنْفُسِهِمْ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6074. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ ने बैते रिज़वान के लिए हुक्म फ़रमाया तो उस्मान रदियल्लाहु अन्हु मक्का की तरफ रसूलुल्लाह ﷺ के कासिद बनकर गए थे, सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने बैत की तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बिलाशुबा उस्मान अल्लाह और उस के रसूल के काम पे गए हुए है, आप ﷺ ने अपना एक हाथ दूसरे पर मारा, रसूलुल्लाह ﷺ का हाथ, उस्मान रदियल्लाहु अन्हु की खातिर उन के अपने ज़ात की खातिर हाथो से बेहतर था| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (3702 وقال : حسن صحيح غريب) * الحكم بن عبدالملک ضعيف و حديث ابی داود (2726) يغنی عنه

٦٠٧٥ - (ضَعِيف) وَعَن ثُمامة بن حَزْنٍ الْقشيرِي قَالَ: شَهِدْتُ الدَّارَ حِينَ أَشْرَفَ عَلَيْهِمْ عُثْمَانُ فَقَالَ: أَنْشدكُمْ بِاللَّه وَالْإِسْلَامَ هَلْ تَعْلَمُونَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدِمَ الْمَدِينَةَ وَلَيْسَ بِهَا مَاءٌ يُسْتَعْذَبُ غَيْرُ بِئْرِ رُومَةَ؟ فَقَالَ: «مَنْ يَشْتَرِي بِئْرَ رُومَةَ يَجْعَلُ دَلْوَهُ مَعَ دِلَاءِ الْمُسْلِمِينَ بِخَيْرٍ لَهُ مِنْهَا فِي الْجَنَّةِ؟» فَاشْتَرَيْتُهَا مِنْ صُلْبِ مَالِي وَأَنْتُمُ الْيَوْمَ تَمْنَعُونَنِي أَنْ

أَشْرَبَ مِنْهَا حَتَّى أَشْرَبَ مِنْ مَاءِ الْبَحْرِ؟ قَالُوا: اللَّهُمَّ نعم. فَقَالَ: أَنْشدكُمْ بِاللَّه وَالْإِسْلَامَ هَلْ تَعْلَمُونَ أَنَّ الْمَسْجِدَ ضَاقَ بِأَهْلِهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ يَشْتَرِي بُقْعَةَ آلِ فُلَانٍ فَيَزِيدُهَا فِي الْمَسْجِد بِخَير مِنْهَا فِي الْجَنَّةِ؟» . فَاشْتَرَيْتُهَا مِنْ صُلْبِ مَالِي فَأَنْتُمُ الْيَوْمَ تَمْنَعُونَنِي أَنْ أُصَلِّيَ فِيهَا رَكْعَتَيْنِ؟ فَقَالُوا: اللَّهُمَّ نعم. قَالَ: أَنْشدكُمْ بِاللَّه وَالْإِسْلَامَ هَلْ تَعْلَمُونَ أَنِّي جَهَّزْتُ جَيْشَ الْعُسْرَةِ مِنْ مَالِي؟ قَالُوا: اللَّهُمَّ نَعَمْ. قَالَ: أَنْشُدُكُمْ بِاللَّه وَالْإِسْلَامَ هَلْ تَعْلَمُونَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ عَلَى ثَبِيرِ مَكَّةَ وَمَعَهُ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَأَنَا فَتَحَرَّكَ الْجَبَلُ حَتَّى تَسَاقَطَتْ حِجَارَتُهُ بِالْحَضِيضِ فَرَكَضَهُ بِرِجْلِهِ قَالَ: «اسْكُنْ ثَبِيرُ فَإِنَّمَا عَلَيْكَ نَبِيٌّ وَصِدِّيقٌ وَشَهِيدَانِ» . قَالُوا: اللَّهُمَّ نَعَمْ. قَالَ: اللَّهُ أَكْبَرُ شَهِدُوا وَرَبِّ الْكَعْبَةِ أَنِّي شَهِيدٌ ثَلَاثًا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيّ وَالدَّارَقُطْنِيّ

6075. सुमामा बिन हज़्न कुशयरी रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैं इस वक़्त घर के पास था, जब उस्मान रदियल्लाहु अन्हु ने (अपने घर से) झांक कर फ़रमाया: में तुम्हें अल्लाह और इस्लाम का वास्ते दे कर पूछता हूँ, क्या तुम जानते हो की जब रसूलुल्लाह ﷺ मदीना तशरीफ़ लाए तो रुव्मा कुंवो के अलावा वहां मीठा पानी नहीं था, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स रुव्मा कुंवो को खरीद कर मुसलमानों के लिए वक्फ़ कर देगा तो उस के लिए जन्नत में उस से बेहतर होगा”, मैंने अपने खालिस माल से इसे खरीदा, और आज तुम मुझे उस का पानी पीने से रोक रहे हो हत्ता कि में समुंदरी पानी पि रहा हूँ, उन्होंने कहा: अल्लाह की क़सम! ऐसे ही है, फिर उस्मान रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: में तुम्हें अल्लाह और इस्लाम का वास्ता दे कर पूछता हूँ, क्या तुम जानते हो के मस्जिद अपने नमाज़ियो के लिए तंग थी, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स आले फलां से ज़मीन का हिस्सा खरीद कर उस से मस्जिद की तोशीअ कर देगा तो उस के लिए जन्नत में उस से बेहतर होगा”, मैंने अपने खालिस माल से इसे खरीदा, और आज तुम मुझे उस में दो रक्अत नमाज़ अदा करने से रोक रहे हो, उन्होंने कहा: हाँ, ऐसे ही है, आप ने फ़रमाया: में अल्लाह और इस्लाम का वास्ता दे कर तुम्हें पूछता हूँ, क्या तुम जानते हो के जैशुल ऊसर को मैंने अपने माल से तैयार किया था? उन्होंने कहा: हाँ, उस्मान रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: में अल्लाह और इस्लाम का वास्ता दे कर तुम से पूछता हूँ, क्या तुम जानते हो के रसूलुल्लाह ﷺ मक्का के पहाड़ पर थे, और इस वक़्त अबू बकर, उमर और मैं आप के साथ थे, पहाड़ ने हरकत की हत्ता कि ज़मीन पर कुछ टुकड़े गिर गए तो आप ﷺ ने अपने पाँव से इसे ठोकर मार कर फ़रमाया: “पहाड़ ठहर जा तुझ पर एक नबी है, एक सिद्दीक है और दो शहीद है”, उन्होंने कहा: हाँ, ऐसे ही है, आप ने तीन बार फ़रमाया (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर रब्बे काबा की क़सम उन्होंने गवाही दे दि की मैं शहीद हूँ| (हसन)

حسن دون قوله ’’ ثبير ‘‘ ، رواه الترمذی (3703 وقال : حسن) و النسائی (6 / 235236 ح 3638) و الدارقطنی (4 / 196)

٦٠٧٦ - (صَحِيح) وَعَن مرّة بن كَعْب قَالَ: سَمِعْتُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَذكر الْفِتَن فقر بهَا فَمَرَّ رَجُلٌ مُقَنَّعٌ فِي ثَوْبٍ فَقَالَ: «هَذَا يَوْمئِذٍ على هدى» فَقُمْتُ إِلَيْهِ فَإِذَا هُوَ عُثْمَانُ بْنُ عَفَّانَ. قَالَ: فَأَقْبَلْتُ عَلَيْهِ بِوَجْهِهِ. فَقُلْتُ: هَذَا؟ قَالَ: «نَعَمْ» . رَوَاهُ [ص:١٧١ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيث حسن صَحِيح

6076. मुर्रह बिन काब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से सुना आप ने फ़ितनो का ज़िक्र किया और उन के करीब होने का इरशाद फ़रमाया, इतने में एक आदमी गुज़रा उस ने एक कपड़ा लपेट रखा था, आप ﷺ ने फ़रमाया यह शख़्स इस (फितने के) दिन हिदायत पर होगा”, मैं इन की तरफ गया, देखा के वह

उस्मान बिन अफ्फान रदियल्लाहु अन्हु है, रावी बयान करते हैं, मैंने उनका चेहरा आप की तरफ फेर कर अर्ज़ किया, यह वह (आदमी) है? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ"| तिरमिज़ी, इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (3704) و ابن ماجه (11)

٦٠٧٧ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «يَا عُثْمَانُ إِنَّهُ لَعَلَّ اللَّهَ يُقَمِّصُكَ قَمِيصًا فَإِنْ أَرَادُوكَ عَلَى خَلْعِهِ فَلَا تَخْلَعْهُ لَهُمْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ فِي الحَدِيث قصَّة طَوِيلَة

6077. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: "उस्मान! उम्मीद है के अल्लाह तुम्हें कमीज़ पहनाएगा, अगर वह तुम से इसे उतारना चाहे तो तुम उन की खातिर इसे न उतारना"| तिरमिज़ी, इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: हदीस में तवील किस्सा है| (सहीह)

صحیح ، رواه الترمذی (3705 وقال : حسن غریب) و ابن ماجه (112)

٦٠٧٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ»» عُمَرَ قَالَ: ذَكَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِتْنَةً فَقَالَ: «يُقْتَلُ هَذَا فِيهَا مَظْلُومًا» لِعُثْمَانَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ إِسْنَادًا

6078. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने एक फितने का ज़िक्र किया तो फ़रमाया: "ये यानी उस्मान उस में मज़लूम शहीद कर दिए जाएँगे"| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस हसन है, उसकी सनद ग़रीब है| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه الترمذی (3708) * سنان بن ھارون البرجمی ضعیف ضعفه الجمھور

٦٠٧٩ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَبِي سَهْلَةَ قَالَ: قَالَ لِي عُثْمَانُ يَوْمَ الدَّارِ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ عَهِدَ إِلَيَّ عَهْدًا وَأَنَا صَابِرٌ عَلَيْهِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ

6079. अबू सहलत रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, उस्मान रदियल्लाहु अन्हु ने मुहासरे के दिन मुझे फ़रमाया के रसूल अल्लाह ﷺ ने मुझ से एक अहद लिया था और उस पर में काइम हूँ"| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है| (सहीह)

صحیح ، رواه الترمذی (3711)

بَاب مَنَاقِب عُثْمَان • उस्मान रदियल्लाहु अन्हु के मनाकिब का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٦٠٨٠ - (صَحِيح) عَنْ»» عُثْمَانَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَوْهَبٍ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ مِصْرَ يُرِيدُ حَجَّ الْبَيْتِ فَرَأَى قَوْمًا جُلُوسًا فَقَالَ: مَنْ هَؤُلَاءِ الْقَوْمُ؟ قَالُوا: هَؤُلَاءِ قُرَيْشٌ. قَالَ فَمَنِ الشَّيْخُ فِيهِمْ؟ قَالُوا: عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ. قَالَ: يَا ابْنَ عُمَرَ إِنِّي سَائِلُكَ عَنْ شَيْءٍ فَحَدِّثْنِي: هَلْ تَعْلَمُ أَنَّ عُثْمَانَ فَرَّ يَوْمَ أُحُدٍ؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: هَلْ تَعْلَمُ أَنَّهُ تَغَيَّبَ عَنْ بَدْرٍ وَلَمْ يَشْهَدْهَا؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: هَلْ تَعْلَمُ أَنَّهُ تَغَيَّبَ عَنْ بَيْعَةِ الرِّضْوَانِ فَلَمْ يَشْهَدْهَا؟ قَالَ: نَعَمْ؟ قَالَ: اللَّهُ أَكْبَرُ قَالَ ابْنُ عُمَرَ: تَعَالَ أُبَيِّنْ لَكَ أما فِراره يَوْمَ أُحد فأشهدُ أن اللَّهَ عَفَا عَنْهُ وَأَمَّا تَغَيُّبُهُ عَنْ بَدْرٍ فَإِنَّهُ كَانَتْ تَحْتَهُ رُقَيَّةُ بِنْتُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَكَانَتْ مَرِيضَةً فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ لَكَ أَجْرَ رَجُلٍ مِمَّنْ شَهِدَ بَدْرًا وَسَهْمَهُ» . وَأَمَّا تَغَيُّبُهُ عَنْ بَيْعَةِ [ص:١٧١] الرِّضْوَانِ فَلَوْ كَانَ أَحَدٌ أَعَزَّ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْ عُثْمَانَ لَبَعَثَهُ فَبَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عُثْمَان وَكَانَت بَيْعةُ الرِضْوَان بعدَ مَا ذَهَبَ عُثْمَانُ إِلَى مَكَّةَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِيَدِهِ الْيُمْنَى: «هَذِهِ يَدُ عُثْمَانَ» فَضَرَبَ بِهَا عَلَى يَدِهِ وَقَالَ: «هَذِه لعُثْمَان» . فَقَالَ لَهُ ابْنُ عُمَرَ: اذْهَبْ بِهَا الْآنَ مَعَكَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

6080. उस्मान बिन अब्दुल्लाह बिन वहब रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, अहल मस्वर से एक आदमी हज के इरादे से आया तो उस ने कुछ लोगों को बैठें हुए देख कर कहा: यह कौन लोग है? उन्होंने बताया: यह कुरैश है, उस ने कहा उनमें अल शैख़ (मोतबर आलिम) कौन है? उन्होंने कहा: अब्दुल्लाह बिन उमर (र अ), इस आदमी ने कहा: इब्ने उमर में तुम से किसी चीज़ के मुतल्लिक सवाल करता हूँ, मुझे बताइए: क्या आप जानते हैं की उस्मान रदियल्लाहु अन्हु गज़वा ए उहद में फरार हो गए थे? उन्होंने ने फ़रमाया: हाँ, उस ने कहा: क्या आप जानते हैं के वह गज़वा ए बद्र मैं भी शरीक नहीं हुए थे? उन्होंने ने फ़रमाया: हाँ, उस ने कहा: क्या आप जानते हैं की बैते रिज़वान के मौके पर भी वह मौजूद नहीं थे? उन्होंने ने फ़रमाया: हाँ, उस ने कहा (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर, इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: आओ में तुम्हें वाज़ेह करता हूँ, रहा उनका गज़वा ए उहद से फरार होना तो मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह ने उन्हें मुआफ़ फरमा दिया है, रहा उनका बद्र से गायब होना तो उसकी वजह यह है कि रसूल अल्लाह ﷺ की बेटी रुकय्या रदियल्लाहु अन्हु उनकी अहलिया थी और वह बीमार थी, रसूल अल्लाह ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: “आप के लिए गज़वा ए बद्र में शरीक होने वाले मुजाहिद के बराबर अज्र व सवाब है और उस के बराबर आप के लिए माले गनीमत में से हिस्सा भी है”, रहा उनका बैते रिज़वान के वक़्त मौजूद न होना, तो अगर मक्का में उस्मान रदियल्लाहु अन्हु से ज़्यादा कोई मुअज्ज़ज़ होता तो आप इसे भेजते, लेकिन रसूल अल्लाह ﷺ ने उस्मान रदियल्लाहु अन्हु को भेजा, और बैते रिज़वान उस्मान रदियल्लाहु अन्हु के मक्का चले जाने के बाद हुई थी, रसूल अल्लाह ﷺ ने अपने दाएँ हाथ के मुतल्लिक फ़रमाया: “ये उस्मान का हाथ है”, और इसे अपने हाथ पर मारा और फ़रमाया: “ये उस्मान के लिए है”, फिर इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: उबई (जवाबात) अपने साथ ले जाना (और उन्हें याद रखना) | (बुखारी)

رواه البخاری (3698)

٦٠٨١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي»» سلهة مولى عُثْمَان رَضِي الله عَنْهُمَا قَالَ: جَعَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُسِرُّ إِلَى عُثْمَانَ وَلَوْنُ عُثْمَانَ يَتَغَيَّرُ فَلَمَّا كَانَ يَوْم الدَّار قُلْنَا: أَلا نُقَاتِل؟ قَالَ: لَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَهِدَ إِلَيَّ أَمْرًا فَأَنَا صَابِرٌ نَفسِي عَلَيْهِ

6081. उस्मान रदियल्लाहु अन्हु के आज़ाद करदा गुलाम अबू सहलत बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ उस्मान रदियल्लाहु अन्हु से छुपा तौर पर कोई बात कर रहे थे, और उस्मान रदियल्लाहु अन्हु का रंग मत्गिर हो रहा था, जब मुहासरे का दिन था तो हमने कहा: क्या हम लड़ाई नहीं करेंगे? उन्होंने ने फ़रमाया: नहीं, क्योंकि रसूल अल्लाह ﷺ ने मुझे एक अम्र की वसीयत की है और मैं अपने आप को उस का पाबंद रखूँगा| (सहीह)

صحيح ، رواه البيهقى فى دلائل النبوة (6 / 391 بزيادة :’’ عن عائشة ‘‘) [و ابن ماجه (113) بدون ذكر عائشة رضى الله عنها] و للحديث شواهد

٦٠٨٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي»» حبيبة أَنَّهُ دَخَلَ الدَّارَ وَعُثْمَانُ مَحْصُورٌ فِيهَا وَأَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ يَسْتَأْذِنُ عُثْمَانَ فِي الْكَلَامِ فَأَذِنَ لَهُ فَقَامَ فَحَمِدَ اللَّهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم يَقُولُ: " إِنَّكُمْ سَتَلْقَوْنَ بَعْدِي فِتْنَةً وَاخْتِلَافًا - أَوْ قَالَ: اخْتِلَافًا وَفِتْنَةً - فَقَالَ لَهُ قَائِلٌ مِنَ النَّاسِ: فَمَنْ لَنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ أَوْ مَا تَأْمُرُنَا بِهِ؟ قَالَ: «عَلَيْكُمْ بِالْأَمِيرِ وَأَصْحَابِهِ» وَهُوَ يُشِيرُ إِلَى عُثْمَانَ بِذَلِكَ. رَوَاهُمَا الْبَيْهَقِيّ فِي «دَلَائِل النبوَّة»

6082. अबू हबीबा से रिवायत है के वह घर में दाखिल हुए जबकि उस्मान उस में महसूर थे, और उन्होंने अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु को सुना के वह उस्मान रदियल्लाहु अन्हु से बात करने की इजाज़त तलब कर रहे हैं, उन्हें इजाज़त मिल गई, वह खड़े हुए अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया: मैंने रसूल अल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “मेरे बाद तुम फितने और इख्तिलाफ देखोगे, या फ़रमाया: “इख्तिलाफ और फितने देखोगे”, किसी ने आप से अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हमारे लिए क्या हुक्म है या आप हमें क्या हुक्म फरमाते हैं? आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम अमीर और उस के साथियो को लाज़िम पकड़ो”, और आप इस (अमिर) के मुतल्लिक उस्मान रदियल्लाहु अन्हु की तरफ इरशाद फरमा रहे थे| इमाम बयहकी ने दोनों अहादीस दलाइलुल नबुवा में रिवायत की है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه البيهقى فى دلائل النبوة (6 / 393) [و احمد (2 / 344345 ح 8522)]

इन तीनो के मनाकिब का बयान • بَاب مَنَاقِب هَؤُلَاءِ الثَّلَاثَة •

पहली फस्ल • الْفَصْلُ الأول •

٦٠٨٣ - (صَحِيح) عَنْ أَنَسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَعِدَ أُحُدًا وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَعُثْمَانُ فَرَجَفَ بِهِمْ فَضَرَبَهُ بِرِجْلِهِ فَقَالَ: «اثْبُتْ أُحُدُ فَإِنَّمَا عَلَيْكَ نَبِيٌّ وَصِدِّيقٌ وَشَهِيدَانِ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

6083. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ओहद पहाड़ पर चढ़े, अबू बक्र व उमर और उस्मान रदियल्लाहु अन्हु भी आप के साथ थे, उस ने हरकत की तो आप ने उस पर अपना पाँव मार कर फ़रमाया: “उहद! ठहर जाओ, तुम पर एक नबी है, एक सिद्दीक और दो शहीद हैं”| (बुखारी)

رواه البخاری (3686)

٦٠٨٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ قَالَ: كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حَائِطٍ مِنْ حِيطَانِ الْمَدِينَةِ فَجَاءَ رَجُلٌ فَاسْتَفْتَحَ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «افْتَحْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ» فَفَتَحْتُ لَهُ فَإِذَا أَبُو بَكْرٍ فَبَشَّرْتُهُ بِمَا قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَحَمِدَ اللَّهَ ثُمَّ جَاءَ رَجُلٌ فَاسْتَفْتَحَ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «افْتَحْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ» . فَفَتَحْتُ لَهُ فَإِذا هُوَ عُمَرُ فَأَخْبَرْتُهُ بِمَا قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَحَمِدَ اللَّهَ ثُمَّ اسْتَفْتَحَ رَجُلٌ فَقَالَ لِي: «افْتَحْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ عَلَى بَلْوَى تُصِيبُهُ» فَإِذَا عُثْمَانُ فَأَخْبَرْتُهُ بِمَا قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فَحَمِدَ اللَّهَ ثمَّ قَالَ: الله الْمُسْتَعَان. مُتَّفق عَلَيْهِ

6084. अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं मदीना के एक बाग़ में नबी ﷺ के साथ था, एक आदमी आया और उस ने दरवाज़ा खोलने की दरख्वास्त की तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: “उस के लिए दरवाज़ा खोल दो, और इसे जन्नत की बशारत दो”, चुनांचे मैंने इस शख़्स के लिए दरवाज़ा खोल दिया तो वह अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु थे, मैंने रसूल अल्लाह ﷺ के फरमान के मुताबिक उन्हें जन्नत की बशारत सुनाई तो उन्होंने अल्लाह की हम्द बयान की, फिर एक और आदमी आया और उस ने भी दरवाज़ा खोलने का कहा तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: “उस के लिए भी दरवाज़ा खोल दो और इसे भी जन्नत की बशारत सुनाओ”, चुनांचे मैंने उस के लिए दरवाज़ा खोला तो वह उमर रदियल्लाहु अन्हु थे, मैंने नबी ﷺ के फरमान के मुताबिक उन्हें भी जन्नत की बशारत सुनाई तो उन्होंने अल्लाह की हम्द बयान की, फिर एक और आदमी ने दरवाज़ा खोलने की दरख्वास्त की तो आप ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “उस के लिए दरवाज़ा खोल दो और इसे भी जन्नत की बशारत सुना दो, उन मसाइब (तकलीफ) के बाद जिन से उनका वास्ते पड़ेगा”, तो वह उस्मान रदियल्लाहु अन्हु थे, मैंने नबी ﷺ के फरमान के मुताबिक उन्हें बताया तो उन्होंने अल्लाह की हम्द बयान की फिर फ़रमाया अल्लाह ही से मदद दरकार है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3693) و مسلم (28 / 2403)، (6212)

बَاب مَنَاقِب هَؤُلَاءِ الثَّلَاثَة • इन तीनो के मनाकिब का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٦٠٨٥ - (حسن صَحِيح) عَن ابْن عمر قَالَ: كُنَّا نَقُولُ وَرَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَيٌّ: أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَعُثْمَانُ رَضِي الله عَنْهُم. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6085. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, हम रसूल अल्लाह ﷺ की हयाते मुबारक में अबू बकर, उमर और उस्मान रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन कहा करते थे| (सहीह)

صحیح ، رواہ الترمذی (3707 وقال : حسن صحیح غریب) [و اصلہ فی صحیح البخاری (3698)]

بَاب مَنَاقِب هَؤُلَاءِ الثَّلَاثَة • इन तीनो के मनाकिब का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٦٠٨٦ - (ضَعِيف) عَن جابرن أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أُرِيَ اللَّيْلَةَ رَجُلٌ صَالِحٌ كَأَنَّ أَبَا بَكْرٍ نِيطَ بِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنِيطَ عُمَرُ بِأَبِي بَكْرٍ وَنِيطَ عُثْمَانُ بِعُمَرَ» قَالَ جَابِرٌ: فَلَمَّا قُمْنَا مِنْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قُلْنَا: أَمَّا الرَّجُلُ الصَّالِحُ فَرَسُولُ اللَّهِ وَأَمَّا نَوْطُ بَعْضِهِمْ بِبَعْضٍ فَهُمْ وُلَاةُ الْأَمْرِ الَّذِي بَعَثَ اللَّهُ بِهِ نَبِيَّهُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

6086. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “रात मुझे ख्वाब में एक मर्द स्वालेह दिखाया गया गोया वह अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु है, जो के रसूल अल्लाह ﷺ के साथ मुअल्लक है, उमर, अबू बक्र के साथ मुअल्लक है, और उस्मान उमर के साथ मुअल्लक है”, जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब हम रसूल अल्लाह ﷺ के पास से उठे तो हमने कहा मर्द स्वालेह से मुराद रसूल अल्लाह ﷺ है, और दूसरे जो एक दूसरे के साथ मुअल्लक है, उस से मुराद यह है कि वह इस दिन के वाली है, जिसके साथ अल्लाह ने अपने नबी ﷺ को मबउस फ़रमाया है| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ ابوداؤد (4636) [و صححہ الحاکم (3 / 7172) و وافقہ الذھبی] * الزھری مدلس و عنعن ولہ شاھد ضعیف تقدم (6057)

अली इब्ने अबी तालिब रदियल्लाहु अन्हु के मनाकिब का बयान • بَاب مَنَاقِب عَلِيّ بن أبي طَالب

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٦٠٨٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِعَلِيٍّ: «أَنْتَ مِنِّي بِمَنْزِلَةِ هَارُونَ مِنْ مُوسَى إِلَّا أَنَّهُ لَا نَبِيَّ بَعْدِي» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

6087. साद बिन अबी वकास रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने अली रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: “आप मेरे लिए ऐसे है जैसे मूसा अलैहिस्सलाम के लिए हारून अलैहिस्सलाम थे| अलबत्ता मेरे बाद कोई नबी नहीं”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (3706) و مسلم (30 / 2404)، (6217)

٦٠٨٨ - (صَحِيح) وَعَنْ زِرِّ بْنِ حُبَيْشٍ قَالَ: قَالَ عَلِيٌّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: وَالَّذِي فَلَقَ الْحَبَّةَ وَبَرَأَ النَّسَمَةَ إِنَّهُ لَعَهْدُ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَيَّ: أَنْ لَا يُحِبَّنِي إِلَّا مؤمنٌ وَلَا بيغضني إِلَّا مُنَافِق. رَوَاهُ مُسلم

6088. ज़िर्र बिन हुबैश बयान करते हैं, अली रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: उस ज़ात की क़सम जिस ने दाने को उगाया और हर जानदार को पैदा फ़रमाया नबीए उम्मी ﷺ ने मुझे अहद दे के मोमिन शख़्स ही मुझ से मुहब्बत करेगा और सिर्फ मुनाफ़िक़ शख़्स ही मुझ से दुश्मनी रखेगा| (मुस्लिम)

رواه مسلم (131 / 78)، (240)

٦٠٨٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ يَوْمَ خَيْبَرَ: «لَأُعْطِيَنَّ هَذِهِ الرَّايَةَ غَدًا رَجُلًا يَفْتَحُ اللَّهُ عَلَى يَدَيْهِ يُحِبُّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيُحِبُّهُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ» . فَلَمَّا أَصْبَحَ النَّاسُ غَدَوْا عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كلهم يَرْجُو أَنْ يُعْطَاهَا فَقَالَ: «أَيْنَ عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ؟» فَقَالُوا: هُوَ يَا رَسُولَ اللَّهِ يَشْتَكِي عَيْنَيْهِ. قَالَ: «فَأَرْسِلُوا إِلَيْهِ» . فَأُتِيَ بِهِ فَبَصَقَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي عَيْنَيْهِ فَبَرَأَ حَتَّى كَأَنْ لَمْ يَكُنْ بِهِ وَجَعٌ فَأَعْطَاهُ الرَّايَةَ فَقَالَ عَلِيٌّ: يَا رَسُولَ الله أقاتلهم حَتَّى يَكُونُوا مثلنَا؟ فَقَالَ: «انْفُذْ عَلَى رِسْلِكَ حَتَّى تَنْزِلَ بِسَاحَتِهِمْ ثُمَّ ادْعُهُمْ إِلَى الْإِسْلَامِ وَأَخْبِرْهُمْ بِمَا يَجِبُ عَلَيْهِمْ مِنْ حَقِّ اللَّهِ فِيهِ [ص:١٧٢ فَوَاللَّهِ لَأَنْ يَهْدِيَ اللَّهُ بِكَ رَجُلًا وَاحِدًا خَيْرٌ لَكَ مِنْ أَنْ يَكُونَ لَكَ حُمْرُ النَّعَمِ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ»» وَذكر حَدِيث الْبَرَاء قَالَ لعَلي: «أَنْت مني وَأَنا مِنْك» فِي بَاب «بُلُوغ الصَّغِير»

6089. सहल बिन साद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने गज़वा ए खैबर के मौके पर फ़रमाया: “मैं कल एक ऐसे शख़्स को झंडा अता करूँगा जिसके हाथो अल्लाह फतह अता फरमाएगा, वह शख़्स

अल्लाह और रसूल से मुहब्बत करता है, और अल्लाह और उस का रसूल इसे महबूब रखते हैं”, चुनांचे जब सुबह हुई तो तमाम लोग रसूल अल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए, और वह सब पर उम्मीद थे की वह (परचम) इसे अता किया जाएगा, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अली बिन अबी तालिब कहाँ हैं?” उन्होंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! उनकी आंखो में तकलीफ है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उन्हें बुलाओ”, वह आप के पास लाए गए तो रसूल अल्लाह ﷺ ने उनकी आंखो में अपना लुआब लगाया तो वह ऐसे शिफ़ायाब हुए के गोया उन्हें कोई तकलीफ थी ही नहीं, आप ﷺ ने झंडा उन्हें अता फ़रमाया तो अली रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या मैं उन से लड़ता रहूँ हत्ता कि वह हमारे जैसे (यानी मुसलमान) हो जाए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “यूँही चलते रहो हत्ता कि तुम उन के मैदान में उतरो, फिर उन्हें इस्लाम की दावत पेश करो और उन्हें बताओ के अल्लाह के क्या हुकुक इन पर वाजिब हैं, अल्लाह की क़सम! अगर तुम्हारे ज़रिए अल्लाह किसी एक आदमी को हिदायत अता फरमादे तो वह तुम्हारे लिए सुर्ख ऊटों से बेहतर है”| और बराअ (र) से मरवी हदीस आप ﷺ ने अली (र) से फ़रमाया : “तू मुझ से और में तुम से हूँ” बाब بُلُوغِ الصَّغِير (छोटे लड़के की बुलुगत और कमसिनी में इस की तरबियत का बयान) में ज़िक्र की गई है. (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2942) و مسلم (34 / 2406)، (6223) 0 حديث البراء تقدم (3377)

بَاب مَنَاقِب عَلِيّ بن أبي طَالب • अली इब्ने अबी तालिब रदियल्लाहु अन्हु के मनाकिब का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٦٠٩٠ - (صَحِيح) عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ عَلِيًّا مِنِّي وَأَنَا مِنْهُ وَهُوَ وَلِيُّ كُلِّ مُؤْمِنٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6090. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अली मुझ से हैं और मैं उन से हूँ और वह हर मोमिन के दोस्त हैं”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3712 وقال : غريب)

٦٠٩١ - (صَحِيح) وَعَن زيد بن أَرقم أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم قَالَ: «مَنْ كُنْتُ مَوْلَاهُ فَعَلِيٌّ مَوْلَاهُ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيّ

6091. ज़ैद बिन अरक़म रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: '' में जिस का मौला हूँ अली उस के मौला हैं”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه احمد (4 / 368 ح 19494) و الترمذی (3713 وقال : حسن غريب) * و للحديث طريق كثيرة جدًا فهو من الاحاديث المتواترة

٦٠٩٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن حبشِي بن جُنَادَة قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «عَلِيٌّ مِنِّي وَأَنَا مِنْ عَلِيٍّ وَلَا يُؤَدِّي عني إِلَّا أَنا وَعلي» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ»»   وَرَوَاهُ أَحْمد عَن أبي جُنَادَة

6092. हुब्शीय बिन जनादह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “अली मुझ से है और मैं उन से हूँ, और मेरी तरफ से कोई अदाइगी न करे सिवाय मेरे और अली के”| तिरमिज़ी, और इमाम अहमद ने इसे अबू जुनादा से रिवायत किया है| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (3719 وقال : حسن غريب صحيح) و احمد (4 / 164 ح 17645)

٦٠٩٣ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: آخَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَ أَصْحَابِهِ فَجَاءَ عَلِيٌّ تَدْمَعُ عَيْنَاهُ فَقَالَ: آخَيْتَ بَيْنَ أَصْحَابِكَ وَلم تُؤاخِ بَيْنِي وَبَيْنَ أُحُدٍ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ [ص:١٧٢ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَنْتَ أَخِي فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

6093. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने अपने सहाबा के दरमियान भाई चाराह काइम किया तो अली रदियल्लाहु अन्हु अश्कबार आंखो के साथ आए और अर्ज़ किया: आप ﷺ ने अपने सहाबा रदियल्लाहु अन्हु के दरमियान भाई चाराह काइम किया है, लेकिन आप ने मेरे और किसी और के दरमियान भाई चाराह काइम नहीं फरमाया, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम मेरे दुनिया और आखिरत में भाई हो”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3720) * حكيم بن جبير : ضعيف رمى بالتشيع ، و جميع بن عمير : ضعيف ضعفه الجمهور

٦٠٩٤ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ طَيْرٌ فَقَالَ: «اللَّهُمَّ ائْتِنِي بِأَحَبِّ خَلْقِكَ إِلَيْكَ يَأْكُلُ مَعِي هَذَا الطَّيْرَ» فجَاء عَلِيٌّ فَأَكَلَ مَعَهُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

6094. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ के पास एक भुना हुआ परिंदा था, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह अपने मखलूक में से अपने महबूब तरीन शख़्स को मेरे पास भेज जो मेरे साथ इस परिंदे को खाए”, अली रदियल्लाहु अन्हु उन के पास तशरीफ़ लाए और उन्होंने आप के साथ तनावुल फ़रमाया| तिरमिज़ी, और

उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (3721)

٦٠٩٥ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ إِذَا سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَعْطَانِي وَإِذَا سَكَتُّ ابْتَدَأَنِي. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ «حَسَنٌ غَرِيبٌ»

6095. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं जब रसूल अल्लाह ﷺ से कोई चीज़ तलब करता तो आप मुझे अता फरमाते और जब में ख़ामोश रहता तो आप तलब किए बगैर मुझे अता फरमा देते थे| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब है| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ الترمذی (3722) * عبداللہ بن عمرو بن ھند لم یسمع من علی رضی اللہ عنہ ، وجاء فی المستدرک (3 / 125 ح 463)
قال :’’ سمعت علیًا رضی اللہ عنہ ‘‘ !!

٦٠٩٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَنَا دَارُ الْحِكْمَةِ وَعَلِيٌّ بَابُهَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ وَقَالَ: رَوَى بَعْضُهُمْ هَذَا الْحَدِيثَ عَنْ شَرِيكٍ وَلَمْ يَذْكُرُوا فِيهِ عَنِ الصُّنَابِحِيِّ وَلَا نَعْرِفُ هَذَا الْحَدِيثَ عَنْ أَحَدٍ مِنَ الثِّقَاتِ غَيْرَ شَرِيكٍ

6096. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “मैं दारे हिकमत हूँ और अली उस का दरवाज़ा है”| इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह ने कहा: यह हदीस ग़रीब है, और उन्होंने ने फ़रमाया: बाज़ रावियो ने इस हदीस को शरीक से रिवायत किया है, और उन्होंने उस में अन अल सनाबिह का ज़िक्र नहीं किया, और हम शरीक के अलावा यह हदीस किसी सिका रावी से नहीं जानते| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ الترمذی (3723) * شریک القاضی مدلس و عنعن ولم یثبت تصریح سماعہ فی ھذا الحدیث و للحدیث شواھد ضعیفۃ

٦٠٩٧ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» جَابِرٍ قَالَ: دَعَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلِيًّا يَوْمَ الطَّائِفِ فَانْتَجَاهُ فَقَالَ النَّاسُ: لَقَدْ طَالَ نَجْوَاهُ مَعَ ابْنِ عَمِّهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا انْتَجَيْتُهُ وَلَكِنَّ اللَّهَ انْتَجَاهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6097. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, ताईफ के रोज़ रसूल अल्लाह ﷺ ने अली रदियल्लाहु अन्हु को बुलाया और उन से सरगोशी फरमाई, लोगों ने कहा आप की अपने चचाज़ाद के साथ सरगोशी तवील हो गई, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “मैंने उन से सरगोशी नहीं की बल्कि अल्लाह ने उन से सरगोशी की है”| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ الترمذی (3726 وقال : حسن غریب) * ابو الزبیر مدلس و عنعن

٦٠٩٨ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِعَلِيٍّ: «يَا عَلِيُّ لَا يَحِلُّ لِأَحَدٍ يُجْنِبُ فِي هَذَا الْمَسْجِدِ غَيْرِي وَغَيْرَكَ» قَالَ عَلِيُّ بْنُ الْمُنْذِرِ: فَقُلْتُ لِضِرَارِ بْنِ صُرَدٍ: مَا مَعْنَى هَذَا الْحَدِيثِ؟ قَالَ: لَا يَحِلُّ لِأَحَدٍ يَسْتَطْرِقُهُ جُنُبًا غَيْرِي وَغَيْرَكَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

6098. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने अली रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: "अली! मेरे और तुम्हारे सिवा किसी के लिए दुरुस्त नहीं के वह हालत जनाबत में इस मस्जिद में से गुज़रे", अली बिन मुन्ज़िर बयान करते हैं, मैंने ज़रार बिन सूरद से पूछा इस हदीस का किया माना है? उन्होंने ने फ़रमाया: मेरे और तेरे सिवा किसी के लिए दुरुस्त नहीं के वह हालत जनाबत में मस्जिद से रास्ते का काम ले| तिरमिज़ी, और उन्होंने कहा: यह हदीस हसन ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3727) * فیه عطية العوفی : ضعيف

٦٠٩٩ - (ضَعِيف) وَعَن»» أم عطيَّة قَالَتْ: بَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَيْشًا فِيهِمْ عَلِيٌّ قَالَتْ: فَسَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ رَافِعٌ يَدَيْهِ يَقُولُ: «اللَّهُمَّ لَا تُمِتْنِي حَتَّى تُرِيَنِي علياًّ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6099. उम्म अतिया रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने एक लश्कर रवाना किया उस में अली रदियल्लाहु अन्हु भी थे, उम्म अतिया रदियल्लाहु अन्हा ने कहा मैंने रसूल अल्लाह ﷺ को अपने हाथ उठाकर दुआ करते हुए सुना: "अल्लाह मुझे मौत न देना हत्ता के तू मुझे अली रदियल्लाहु अन्हु को दिखा दे"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3737 وقال : حسن) * ام شراحيل و ابو الجراح المهری : مجهولا الهال ، لم يوثقهما غير الترمذی

بَاب مَنَاقِب عَلِيّ بن أبي طَالب • अली इब्ने अबी तालिब रदियल्लाहु अन्हु के मनाकिब का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٦١٠٠ - (ضَعِيف) عَنْ»» أُمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يُحِبُّ عَلِيًّا مُنَافِقٌ وَلَا يُبْغِضُهُ مُؤْمِنٌ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيب إِسْنَادًا

6100. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "मुनाफ़िक़ शख़्स अली से

मुहब्बत करेगा न मोमिन शख़्स उन से दुश्मनी रखेगा”| अहमद तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस सनद के लिहाज़ से हसन ग़रीब है| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواہ احمد (6 / 282 ح 27040) و الترمذی (2 / 3717 و حسنه و سنده ضعیف) * مساور الحمیری مجهول و حدیث الترمذی (3736) و مسلم (78) یغنی عنه

٦١٠١ - (ضَعِيف) وَعَنْهَا»» قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ سَبَّ عَلِيًّا فَقَدْ سَبَّنِي» . رَوَاهُ أَحْمد

6101. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “जिस शख़्स ने अली को बुरा-भला कहा तो उस ने मुझे बुरा-भला कहा”| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ احمد (6 / 323 ح 27284) [و صححه الحاکم (3 / 121) و وافقه الذهبی] * ابو اسحاق مدلس و عنعن ، و روی ابو یعلی (7013) من حدیث السدی (اسماعیل بن عبد الرحمن) عن ابی عبدالله الجدلی قال :’’ قالت ام سلمة : ایسب رسول الله صلی الله علیه و آله وسلم علی المنابر ؟ قلت : و انی ذلک ؟ قالت : الیس یسب علی و من یحبه ؟ فاشهد ان رسول الله صلی الله علیه و آله وسلم کان یحبه ‘‘ و سنده حسن

٦١٠٢ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ»» عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «فِيكَ [ص:١٧٢ مَثَلٌ مِنْ عِيسَى أَبْغَضَتْهُ الْيَهُودُ حَتَّى بَهَتُوا أُمَّهُ وَأَحَبَّتْهُ النَّصَارَى حَتَّى أَنْزَلُوهُ بِالْمَنْزِلَةِ الَّتِي لَيْسَتْ لَهُ» . ثُمَّ قَالَ: يَهْلِكُ فِيَّ رَجُلَانِ: مُحِبٌّ مُفْرِطٌ يُقَرِّظُنِي بِمَا لَيْسَ فِيَّ وَمُبْغِضٌ يَحْمِلُهُ شَنَآنِي عَلَى أَنْ يَبْهَتَنِي. رَوَاهُ أَحْمَدُ

6102. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “तुम में इसा अलैहिस्सलाम की एक मुशाबिहत है, यहूदी उन से दुश्मनी रखते है हत्ता कि वह उनकी वालिद (मुताहर्रा) पर तोहमत लगाते है, जबकि नसारा उन से मुहब्बत करते हैं हत्ता कि उन्होंने उन्हें ऐसे मक़ाम पर फाईज़ कर दिया जिसके वह हक़दार नहीं”, फिर अली रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: दो किस्म के लोग मेरे (हक़ के) मुतल्लिक हलाक हो जाएँगे, इफरात से काम लेने वाला मुहब्ब (प्यार करने वाला) वह मेरे मुतल्लिक ऐसा इफरात करेगा जो मुझ में नहीं है, और दुश्मनी रखने वाला के मेरी दुश्मनी इसे उस पर अमादा करेगी के वह मुझ पर बोहतान लगाएगा| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ [عبدالله] احمد (1 / 160 ح 1376) * فیه الحکم بن عبد الملک : ضعیف

٦١٠٣ - (ضَعِيف) وَعَنِ»» الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ وَزَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا نَزَلَ بِغَدِيرِ خُمٍّ أَخَذَ بِيَدِ عَلِيٍّ فَقَالَ: «أَلَسْتُمْ تَعْلَمُونَ أَنِّي أَوْلَى بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنْفُسِهِمْ؟» قَالُوا: بَلَى قَالَ: «أَلَسْتُمْ تَعْلَمُونَ أَنِّي أَوْلَى بِكُلِّ مُؤْمِنٍ مِنْ نَفْسِهِ؟» قَالُوا: بَلَى قَالَ: «اللَّهُمَّ مَنْ كُنْتُ مَوْلَاهُ فَعَلِيٌّ مَوْلَاهُ اللَّهُمَّ وَالِ مَنْ وَالَاهُ وَعَادِ مَنْ عَادَاهُ» . فَلَقِيَهُ عُمَرُ بَعْدَ ذَلِكَ فَقَالَ لَهُ: هَنِيئًا يَا ابْنَ أَبِي طَالِبٍ أَصْبَحْتَ وَأَمْسَيْتَ مَوْلَى كلَّ مُؤْمِن ومؤمنة. رَوَاهُ أَحْمد

6103. बराअ बिन आज़िब और ज़ैद बिन अरक़म रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने जब गदिरे खुम पर पड़ाव डाला तो आप ﷺ ने अली रदियल्लाहु अन्हु का हाथ पकड़ कर फ़रमाया: “क्या तुम नहीं जानते के मेरा मोमिनो पर उनकी जानो से भी ज़्यादा हक़ है?” उन्होंने कहा: क्यों नहीं! ज़रूर है, फिर फ़रमाया: “क्या तुम नहीं जानते के मेरा हर मोमिन पर उसकी जान से भी ज़्यादा हक़ है?” उन्होंने अर्ज़ किया: क्यों नहीं! ज़रूर है, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह मैं जिस शख़्स का मौला हूँ अली उस के मौला हैं, ऐ अल्लाह! जो शख़्स उस को दोस्त बनाए तो उसे दोस्त बना और जो शख़्स उन से दुश्मनी रखा तो उन्हें दुश्मन बना”, उस के बाद उमर रदियल्लाहु अन्हु अली से मिले तो उन्होंने अली रदियल्लाहु अन्हु से कहा: इब्ने अबी तालिब आप को मुबारक हो आप सुबह व शाम (हर वक़्त) हर मोमिन और हर मोमिन के दोस्त बन गए| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (4 / 281 ح 18671 من حديث البراء بن عازب رضى الله عنه) * فيه على بن زيد بن جدعان : ضعيف ، و رواه احمد (4 / 368 ، 370 ، 372) من طرق عن زيد بن ارقم رضى الله عنه به دون قول عمر رضى الله عنه و المرفوع صحيح

٦١٠٤ - (صَحِيح) وَعَن»» بُرَيْدَة قَالَ: خطب أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ فَاطِمَةَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّهَا صَغِيرَةٌ» ثُمَّ خَطَبَهَا عليٌّ فزوَّجها مِنْهُ. رَوَاهُ النَّسَائِيّ

6104. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अबू बक्र व उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा से शादी का पैग़ाम भेजा तो रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “वो तो छोटी (कमसिन) है”, फिर अली रदियल्लाहु अन्हु ने उन्हें पैग़ाम भेजा तो आप ने उनकी शादी उन से कर दी| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه النسائى (6 / 62 ح 3223) و السند صحيح على شرط مسلم

٦١٠٥ - (ضَعِيف) وَعَنِ»» ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمَرَ بِسَدِّ الْأَبْوَابِ إِلَّا بَابَ عَلِيٍّ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

6105. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने बाब अली के सिवा तमाम दरवाज़े बंद करने का हुक्म फ़रमाया| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

حسن ، رواه الترمذى (3732)

٦١٠٦ - (ضَعِيف) وَعَن»» عَليّ قَالَ: كَانَتْ لِي مَنْزِلَةٌ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمْ تَكُنْ لِأَحَدٍ مِنَ الْخَلَائِقِ آتِيهِ بِأَعْلَى سَحَرٍ فَأَقُولُ: السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللَّهِ فَإِنْ تَنَحْنَحَ [ص:١٧٢ انْصَرَفْتُ إِلَى أَهْلِي وَإِلَّا دَخَلْتُ عَلَيْهِ. رَوَاهُ النَّسَائِيُّ

6106. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ के यहाँ जो मेरा मक़ाम व मर्तबा था वह मखलूक

में से किसी और का नहीं था, मैं सहरी के अव्वल वक़्त (रात के आखिरी चोथे हिस्से) में आप ﷺ के पास आता तो मैं कहता, अल्लाह के नबी! आप पर सलामती हो, अगर आप खांस देते तो मैं अहले खाना के पास वापस चला जाता, वरना में आप के यहाँ दाखिल हो जाता| (हसन)

اسناده حسن ، رواه النسائی (3 / 12 ح 1214) [و ابن خزیمة (902)]

٦١٠٧ - (ضَعِيف) وَعَنْهُ»» قَالَ: كُنْتُ شَاكِيًا فَمَرَّ بِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنَا أَقُولُ: اللَّهُمَّ إِنْ كَانَ أَجَلِي قَدْ حَضَرَ فَأَرِحْنِي وَإِن كَانَ متأخِّراً فارفَعْني وَإِنْ كَانَ بَلَاءً فَصَبِّرْنِي. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كَيْفَ قُلْتَ؟» فَأَعَادَ عَلَيْهِ مَا قَالَ فَضَرَبَهُ بِرِجْلِهِ وَقَالَ: «اللَّهُمَّ عَافِهِ - أَوِ اشْفِهِ -» شَكَّ الرَّاوِي قَالَ: فَمَا اشْتَكَيْتُ وَجَعِي بَعْدُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ

6107. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं मरीज़ था, रसूल अल्लाह ﷺ मेरे पास से गुज़रे, और इस वक़्त में कह रहा था, ऐ अल्लाह! अगर मेरी मौत का वक़्त आ चूका है तो मुझे (मौत के ज़रिए) राहत अता फरमा, और अगर अभी देर है तो फिर मुझे सेहत अता फरमा, और अगर यह आज़माइश है तो फिर मुझे सब्र अता फरमा, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “तुमने कैसे कहा है?” मैंने आप को दोबारा सुना दिया, आप ने इसे अपना पाँव मारा और फ़रमाया: “अल्लाह उन्हें आफियत अता फरमा”, या फ़रमाया: “इसे शिफा अता फरमा”, रावी को उस में शक हुआ है, वह बयान करते हैं, उस के बाद मुझे तकलीफ नहीं हुई| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस हसन सहीह है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3564)

بَابُ مَنَاقِبِ الْعَشَرَةِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ • अशर ए मुबश्शरा रदी अल्लाहु अन्हुम अजमईन के मनाकिब का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٦١٠٨ - (صَحِيح) عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: مَا أَحَدٌ أَحَقَّ بِهَذَا الْأَمْرِ مِنْ هَؤُلَاءِ النَّفَرِ الَّذِينَ تُوُفِّيَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ عَنْهُمْ رَاضٍ فَسَمَّى عَلِيًّا وَعُثْمَانَ وَالزُّبَيْرَ وَطَلْحَةَ وَسَعْدًا وَعَبْدَ الرَّحْمَنِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

6108. उमर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, उन हज़रात से, जिन पर रसूल अल्लाह ﷺ मरते दम तक खुश रहे, इस अम्रे खिलाफत का कोई शख़्स हक़दार नहीं, उन्होंने नाम गिनाए अली, उस्मान, ज़ुबैर, तल्हा, साद और अब्दुल रहमान रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन | (बुखारी)

رواه البخاری (3700)

٦١٠٩ - (صَحِيح) وَعَن قيس بن حازِمٍ قَالَ: رَأَيْتُ يَدَ طَلْحَةَ شَلَّاءَ وَقَى بِهَا النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ أُحُدٍ. رَوَاهُ البُخَارِيّ

6109. कैस बिन अबी हाज़िम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने तल्हा रदियल्लाहु अन्हु का हाथ देखा जिसके साथ उन्होंने गज़वा ए उहद में नबी ﷺ को (दुश्मन के वार से) बचाया था| (बुखारी)

رواه البخاری (4063)

٦١١٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ يَأْتِينِي بِخَبَرِ الْقَوْمِ يَوْمَ الْأَحْزَابِ؟» قَالَ الزُّبَيْرُ: أَنَا فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ لِكُلِّ نَبِيٍّ حَوَارِيًّا وحَوَارِيَّ الزبيرُ» مُتَّفق عَلَيْهِ

6110. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने गज़वा ए अहज़ाब के रोज़ फ़रमाया: “कौन शख़्स मेरे पास लश्कर की खबर लाएगा ?” जुबैर रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, मैं नबी ﷺ ने फ़रमाया: “हर नबी का एक हवारी (मुखलस मददगार) होता है और मेरे हवारी जुबैर रदियल्लाहु अन्हु है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (2846) و مسلم (48 / 2415)، (6243)

٦١١١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ الزُّبَيْرِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ يَأْتِي بَنِي قُرَيْظَةَ فَيَأْتِينِي بِخَبَرِهِمْ؟» فَانْطَلَقْتُ فَلَمَّا رَجَعْتُ جَمَعَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَبَوَيْهِ فَقَالَ: «فَدَاكَ أَبِي وَأُمِّي» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

6111. जुबैर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “कौन शख़्स बनू कुरैज़ा जाए और उन के मुतल्लिक खबर मेरे पास लाए ?” में गया, और जब में वापस आया तो रसूल अल्लाह ﷺ ने मेरे लिए फ़रमाया: “तुझ पर मेरे वालिदेन फ़िदा हो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (3720) و مسلم (49 / 2416)، (6245)

٦١١٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن عليٍّ قَالَ: مَا سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَمَعَ أَبَوَيْهِ لِأَحَدٍ إِلَّا لِسَعْدِ بْنِ مَالِكٍ فَإِنِّي سَمِعْتُهُ يَقُولُ يَوْمَ أُحُدٍ: «يَا سَعْدُ ارْمِ فَدَاكَ أَبِي وَأُمِّي» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

6112. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ को साद बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु के अलावा किसी और शख़्स के लिए अपने वालिदेन को एक साथ जमा करते (यानी मेरे माँ बाप तुझ पर फ़िदा हो) नहीं सुना क्योंकि गज़वा ए उहद के मौके पर मैंने आप ﷺ को फरमाते हुए सुना: “साद! तीर अन्दाज़ी करो मेरे वालिदेन तुम पर कुरबान हो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (4059) و مسلم (41 / 2411)، (6233)

٦١١٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ قَالَ: إِنِّي لَأَوَّلُ الْعَرَبِ رَمَى بِسَهْمٍ فِي سَبِيلِ الله. مُتَّفق عَلَيْهِ

6113. साद बिन अबी वकास रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अल्लाह की राह में तीर चलाने वाला में पहला अरबी शख़्स हूँ| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3728) و مسلم 16 / 2966)، (7433)

٦١١٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن عَائِشَة قَالَتْ: سَهِرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَقْدِمَهُ الْمَدِينَةَ لَيْلَةً فَقَالَ: «لَيْتَ رَجُلًا صَالِحًا يَحْرُسُنِي» إِذْ سَمِعْنَا صَوْتَ سِلَاحٍ فَقَالَ: «مَنْ هَذَا؟» قَالَ: أَنَا سَعْدٌ قَالَ: «مَا جَاءَ بِكَ؟» قَالَ: وَقَعَ فِي نَفْسِي خَوْفٌ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَجِئْتُ أَحْرُسُهُ فَدَعَا لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ نَامَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

6114. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूल अल्लाह ﷺ (किसी गज़वा से वापिस) मदीना आए तो रातभर जागते रहे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “काश कोई मर्द स्वालेह मेरे लिए पहरा देता, इतने में हमने हथियारों की आवाज़ (झंकार) सुनी, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये कौन है?” उन्होंने अर्ज़ किया, मैं साद हूँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: “आप यहाँ कैसे आए ?” उन्होंने अर्ज़ किया, मेरा दिल में रसूल अल्लाह ﷺ के मुतल्लिक खौफ सा पैदा हुआ तो में आप के लिए पहरा देने आया हूँ, रसूल अल्लाह ﷺ ने इन के लिए दुआ फरमाई फिर सो गए| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (2885) و مسلم (40 / 2410)، (6231)

٦١١٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لِكُلِّ أُمَّةٍ أَمِينٌ وَأَمِينُ هَذِهِ الْأُمَّةِ أَبُو عُبَيْدَةَ بْنُ الْجراح. مُتَّفق عَلَيْهِ

6115. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “हर उम्मत के लिए एक अमिन होता है औरइस उम्मत के अमिन अबू उबैदाह बिन जराह है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (4382) و مسلم (53 / 2419)، (6252)

٦١١٦ - (صَحِيح) وَعَن ابْن أبي مليكَة قَالَ: سَمِعْتُ عَائِشَةَ وَسُئِلَتْ: مَنْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُسْتَخْلِفًا لَوِ اسْتَخْلَفَهُ؟ قَالَت: أَبُو بكر. فَقيل: ثُمَّ مَنْ بَعْدَ أَبِي بَكْرٍ؟ قَالَتْ: عُمَرُ. قِيلَ: مَنْ بَعْدَ عُمَرَ؟ قَالَتْ: أَبُو عُبَيْدَةَ بن الْجراح. رَوَاهُ مُسلم

6116. इब्ने अबी मुलयका रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने आइशा रदियल्लाहु अन्हा से इस वक़्त सुना जब उन से यह सवाल किया गया के अगर रसूल अल्लाह ﷺ किसी को खलीफा नाम ज़द करते तो आप किसे नाम

ज़द फरमाते? उन्होंने ने फ़रमाया: अबू बक्र (र), पूछा गया: फिर अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु के बाद कौन? उन्होंने ने फ़रमाया: उमर (र), पूछा गया: उमर रदियल्लाहु अन्हु के बाद कौन? उन्होंने ने फ़रमाया: अबू उबैदाह बिन जराह (र)| (मुस्लिम)

رواه مسلم (9 / 2385)، (6178)

٦١١٧ - (صَحِيح) وَعَنْ»»   أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ عَلَى حِرَاءٍ هُوَ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَعُثْمَانُ وَعَلِيٌّ وَطَلْحَةُ وَالزُّبَيْرُ فَتَحَرَّكَتِ الصَّخْرَةُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اهْدَأْ فَمَا عَلَيْكَ إِلَّا نَبِيٌّ أَوْ صِدِّيقٌ أَوْ شَهِيدٌ» . وَزَادَ بَعْضُهُمْ: وَسَعْدُ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ وَلَمْ يَذْكُرْ عَلِيًّا. رَوَاهُ مُسلم

6117. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ अबू बकर, उमर, उस्मा,न अली, तल्हा और जुबैर रदियल्लाहु अन्हु हिरा पर थे की पत्थर ने हरकत की तो रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “ठहर जा तुझ पर नबी, सिद्दीक और शहीद हैं”, और बाज़ रावियो ने साद बिन अबी वकास रदियल्लाहु अन्हु का इज़ाफा नकल किया है, और अली रदियल्लाहु अन्हु का ज़िक्र नहीं किया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (50 / 2417)، (6247)

بَابُ مَنَاقِبِ الْعَشَرَةِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ • अशर ए मुबश्शरा रदी अल्लाहु अन्हुम अजमईन के मनाकिब का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٦١١٨ - (صَحِيح) عَن»»   عبد الرَّحْمَن بن عَوْف أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَبُو بَكْرٍ فِي الْجَنَّةِ وَعُمَرُ فِي الْجَنَّةِ وَعُثْمَانُ فِي الْجَنَّةِ وَعَلِيٌّ فِي الْجَنَّةِ وَطَلْحَةُ فِي الْجَنَّةِ وَالزُّبَيْرُ فِي الْجَنَّةِ [ص:١٧٢ وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ فِي الْجَنَّةِ وَسَعْدُ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ فِي الْجَنَّةِ وَسَعِيدُ بْنُ زَيْدٍ فِي الْجَنَّةِ وَأَبُو عُبَيْدَةَ بْنُ الْجَرَّاحِ فِي الْجَنَّةِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6118. अब्दुल रहमान बिन ऑफ रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अबू बक्र जन्नत में, उमर जन्नत में, उस्मान जन्नत में, अली जन्नत में, तल्हा जन्नत में, जुबैर जन्नत में, अब्दुल रहमान बिन ऑफ जन्नत में, सईद बिन अबी वकास जन्नत में, सईद बिन ज़ैद जन्नत में और अबू उबैदाह (आमिर) बिन जराह जन्नत में हैं”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذی (3747)

٦١١٩ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ»» ابْنُ مَاجَهْ عَنْ سَعِيدِ بْنِ زَيْدٍ

6119. इब्ने माजा रहिमहुल्लाह ने इसे सईद बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (सहीह)

صحيح ، رواه ابن ماجه (133)

٦١٢٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ»» أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَرْحَمُ أُمَّتِي بِأُمَّتِي أَبُو بَكْرٍ وَأَشَدُّهُمْ فِي أَمْرِ اللَّهِ عُمَرُ وَأَصْدَقُهُمْ حَيَاءً عُثْمَانُ وَأَفْرَضُهُمْ زَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ وَأَقْرَؤُهُمْ أُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ وَأَعْلَمُهُمْ بِالْحَلَالِ وَالْحَرَامِ مُعَاذُ بْنُ جَبَلٍ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ أَمِينٌ وَأَمِينُ هَذِهِ الْأُمَّةِ أَبُو عُبَيْدَةَ بْنُ الْجَرَّاحِ» رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيح»» وروى مَعْمَرٍ عَنْ قَتَادَةَ مُرْسَلًا وَفِيهِ: «وَأَقْضَاهُمْ عَلِيٌّ»

6120. अनस रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मेरी उम्मत में से मेरी उम्मत पर सबसे ज़्यादा मेहरबान अबू बक्र है, अल्लाह के दीन के मुआमले में सबसे ज़्यादा सख्त उमर है, उनमें से सबसे ज़्यादा बा हया उस्मान है, इल्म मीरास के सबसे बड़े आलम ज़ैद बिन साबित है, सबसे बड़े कारी उबई बिन काब है, हलाल व हराम के मुतल्लिक सबसे ज़्यादा इल्म रखने वाले मुआज़ बिन जबल है, और हर उम्मत का एक अमिन होता है और इस उम्मत के अमिन अबू उबैदाह बिन जराह है”| अहमद तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है| और मअमर से क़तादाह की सनद से मुरसल रिवायत है और इस में है कज़ा में सबसे ज़्यादा आलम अली (र) है”, (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه احمد (3 / 281 ح 14035) و الترمذی (3791) * حديث معمر عن قتادة : رواه عبد الرزاق (11 / 225 ح 20387) و سنده ضعيف لارساله

٦١٢١ - (حسن) وَعَنِ»» الزُّبَيْرِ قَالَ: كَانَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ أُحُدٍ دِرْعَانِ فَنَهَضَ إِلَى الصَّخْرَةِ فَلَمْ يَسْتَطِعْ فَقَعَدَ طَلْحَةُ تَحْتَهُ حَتَّى اسْتَوَى عَلَى الصَّخْرَةِ فَسَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «أَوْجَبَ طَلْحَةُ» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ .

6121. जुबैर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, गज़वा ए उहद के मौके पर नबी ﷺ ने दो ज़िराहे पहना हुई थी, आप एक चट्टान की तरफ मुतवज्जे हुए लेकिन आप उस पर चढ़ न सके तो तल्हा रदियल्लाहु अन्हु आप के नीचे बैठ गए हत्ता कि आप इस चट्टान पर पहुँच गए, मैंने रसूल अल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “तल्हा ने (जन्नत को) वाजिब कर लिया”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (3738 وقال : حسن صحيح غريب)

٦١٢٢ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» جَابِرٍ قَالَ: نَظَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ اللَّهِ قَالَ: «مَنْ أَحَبَّ أَنْ

يَنْظُرَ إِلَى رَجُلٍ يَمْشِي عَلَى وَجْهِ الْأَرْضِ وَقَدْ قَضَى نَحْبَهُ فَلْيَنْظُرْ إِلَى هَذَا» . وَفِي رِوَايَةٍ: «مَنْ سَرَّهُ أَنْ يَنْظُرَ إِلَى شَهِيدٍ يَمْشِي عَلَى وَجْهِ الْأَرْضِ فَلْيَنْظُرْ إِلَى طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ الله» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6122. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने तल्हा बिन उबैदुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु की तरफ देखा तो फ़रमाया: "जो शख़्स यह पसंद करता हूँ कि वह रुए ज़मीन पर चलते हुए ऐसे शख़्स को देखे जो अपना अहद निभा चूका तो वह इस शख़्स को देख ले"| एक दूसरी रिवायत में है: "जो शख़्स रुए ज़मीन पर चलते फिरते शहीद को देखना चाहे तो वह तल्हा बिन उबैदुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु को देख ले"| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه الترمذی (3739 وقال : غريب) [و ابن ماجه (125)] * الصلت بن دينار : متروک و للحديث شواهد ضعيفة ولم اجد له طريقًا صحيحًا ولا حسنًا

٦١٢٣ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ»» عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ أُذُنِي مِنْ فِي رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «طَلْحَةُ وَالزُّبَيْرُ جَارَايَ فِي الْجَنَّةِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

6123. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मेरे कानों ने रसूल अल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "तल्हा और जुबैर जन्नत में मेरे हम हमसाए है"| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3741) * فيه عقبة بن علقمة و عبدالرحمن بن منصور العنزی : ضعيفان

٦١٢٤ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ يَوْمَئِذٍ يَعْنِي يَوْمَ أُحُدٍ: «اللَّهُمَّ اشْدُدْ رَمْيَتَهُ وَأَجِبْ دعوتَه» . رَوَاهُ فِي «شرح السّنة»

6124. साद बिन अबी वकास रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने गज़वा ए उहद के मौके पर फ़रमाया: "अल्लाह इस साअद रदियल्लाहु अन्हु को तीर अन्दाज़ी में क़वी बना और उसकी दुआ कबूल फरमा"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البغوی فی شرح السنة (14 / 124125 ح 3922) [و الحاكم (3 / 499500) و ابن حبان (2215)] * فيه ابراهيم بن يحيی الشجری و ابوه ضعيفان و اسماعيل بن ابی خالد مدلس و عنعن ان صح السند اليه

٦١٢٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ»» أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «اللَّهُمَّ اسْتَجِبْ لِسَعْدٍ إِذَا دَعَاكَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6125. साद बिन अबी वकास रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "ए अल्लाह! साद जब तुझ से दुआ करे तो तू उसकी दुआ कबूल फरमा"| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (3751) * اسماعيل بن ابی خالد مدلس و عنعن و للحديث شواهد

٦١٢٦ - (صَحِيح) وَعَنْ»» عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: مَا جَمَعَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَبَاهُ وَأُمَّهُ إِلَّا لِسَعْدٍ قَالَ لَهُ يَوْمَ أُحُدٍ: «ارْمِ فَدَاكَ أَبِي وَأُمِّي» وَقَالَ لَهُ: «ارْمِ أَيهَا الْغُلَام الحزور» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6126. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने सिर्फ साद रदियल्लाहु अन्हु के लिए अपने वालिदेन को (फ़िदा होने पर) इकट्ठा ज़िक्र किया, आप ﷺ ने गज़वा ए उहद के मौके पर उन्हें फ़रमाया: “मेरे माँ बाप तुझ पर फ़िदा हो तीर अन्दाज़ी करो”, और आप ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: “कवी नोजवान तीर फेंको”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (3753 ، 2829 وقال : حسن صحيح) * فيه سفيان بن عيينة وهو مدلس عنعن وكان يدلس عن الثقات و الضعفاء و المدلسين كما حققته فى تخريج الفتن و الملاحم ، و قوله :'' ارم ايها الغلام الحزور '' سنده ضعيف و باقى الحديث صحيح بالشواهد

٦١٢٧ - (صَحِيح) وَعَن»» جَابر قَالَ: أَقْبَلَ سَعْدٌ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هَذَا خَالِي فَلْيُرِنِي امْرُؤٌ خَالَهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: كَانَ سَعْدٌ مِنْ بَنِي زهرَة وَكَانَتْ أُمُّ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ بَنِي زُهْرَةَ فَلِذَلِكَ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هَذَا خَالِي» . وَفِي «الْمَصَابِيحِ» : «فلْيُكرمَنَّ» بدل «فَلْيُرني»

6127. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, साद रदियल्लाहु अन्हु आए तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: “ये मेरे मामू है, कोई मुझे उन जैसे अपना मामू दिखाए”| इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: साद रदियल्लाहु अन्हु बनू जुहरा कबिले से थे, और नबी ﷺ की वालिदा मोहतरमा भी बनू जुहरा कबिले से थी, इसीलिए नबी ﷺ ने फ़रमाया: “ये मेरे मामू है”, और मसाबिह में (فَلْيُرِنِيْ) के बजाए (فَلْيُكْرِمَنَّ) के अल्फाज़ है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (3752 وقال : حسن) * مجالد ضعيف و للحديث شواهد ضعيفة عند الحاكم (3 / 491) وغيره

بَابُ مَنَاقِبِ الْعَشَرَةِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ • अशर ए मुबश्शरा रदी अल्लाहु अन्हुम अजमईन के मनाकिब का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٦١٢٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن قيس بن حَازِمٍ قَالَ: سَمِعْتُ سَعْدَ بْنَ أَبِي وَقَّاصٍ يَقُولُ: إِنِّي لَأَوَّلُ رَجُلٍ مِنَ الْعَرَبِ رَمَى بِسَهْمٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَرَأَيْتُنَا نَغْزُو مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَا لَنَا طَعَامٌ إِلَّا الْحُبْلَةَ وَوَرَقَ السَّمُرِ وَإِنْ كَانَ أَحَدنَا ليضع كَمَا تضع الشَّاة مَاله خِلْطٌ ثُمَّ أَصْبَحَتْ بَنُو أَسَدٍ تُعَزِّرُنِي عَلَى الْإِسْلَامِ لَقَدْ خِبْتُ إِذًا وَضَلَّ عَمَلِي وَكَانُوا وَشَوْا بِهِ إِلَى عُمَرَ وَقَالُوا: لَا يُحْسِنُ يُصَلِّي. مُتَّفق عَلَيْهِ

6128. कैस बिन अबी हाज़िम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने साद बिन अबी वकास रदियल्लाहु अन्हु को फरमाते हुए सुना: में अरब में सबसे पहला शख़्स हूँ जिस ने अल्लाह की राह में तीर अन्दाज़ी की, और हमारी

यह हालत थी के हम रसूल अल्लाह ﷺ के साथ जिहाद में शरीक होते थे और हमारा खाना केकड़ का फल और केकड़ के पत्ते होते थे, और हम में से हर शख़्स बकरी की तरह इजाबत (मेंग्नियाँ) किया करता था, वह (खुश्क होने की वजह से) एक दूसरी के साथ जुड़ी हुई नहीं होती थी, फिर यह वक़्त आया की बनू असद मेरे इस्लाम के मुतल्लिक मुझ पर नुक्ता चीनी करते हैं, अगर ऐसे हो तो में नामुराद हुआ और मेरे अमल बर्बाद हो गए, और वह (बनू असद) उन (साअद (र)) के मुतल्लिक उमर रदियल्लाहु अन्हु से शिकायत किया करते थे और वह यह कि वह अच्छी तरह नमाज़ नहीं पढ़ते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3728) و مسلم (12 / 2966)، (7433)

٦١٢٩ - (صَحِيح) وَعَنْ»» سَعْدٍ قَالَ: رَأَيْتُنِي وَأَنَا ثَالِثُ الْإِسْلَامِ وَمَا أَسْلَمَ أَحَدٌ إِلَّا فِي الْيَوْمِ الَّذِي أَسْلَمْتُ فِيهِ وَلَقَدْ مَكَثْتُ سَبْعَةَ أَيَّامٍ وَإِنِّي لثالث الْإِسْلَام. رَوَاهُ البُخَارِيّ

6129. साअद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं जानता हूँ कि इस्लाम कबूल करने वाला में तीसरा शख़्स हूँ, जिस दिन मैंने इस्लाम कबूल किया किसी रोज़ दूसरे भी इस्लाम में दाखिल हुए और मैं सात दिन तक इसी हालत में रहा की मैं इस्लाम कबूल करने वाला तीसरा शख़्स हूँ| (बुखारी)

رواه البخاری (3727)

٦١٣٠ - (حسن) وَعَنْ»» عَائِشَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقُولُ لِنِسَائِهِ: «إِنَّ أَمْرَكُنَّ مِمَّا يَهُمُّنِي مِنْ بَعْدِي وَلَنْ يَصْبِرَ عَلَيْكُنَّ إِلَّا الصَّابِرُونَ الصِّدِّيقُونَ» قَالَتْ عَائِشَةُ: يَعْنِي الْمُتَصَدِّقِينَ ثُمَّ قَالَتْ عَائِشَةُ لِأَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ سَقَى اللَّهُ أَبَاكَ مِنْ سَلْسَبِيلِ الْجَنَّةِ وَكَانَ ابنُ عوفٍ قَدْ تَصَدَّقَ عَلَى أُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِينَ بِحَدِيقَةٍ بِيعَتْ بِأَرْبَعِينَ ألفا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6130. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ अपने अज़्वाज ए मूतहरात से फ़रमाया करते थे: “मैं अपने बाद तुम्हारे बारे में बहोत फ़िक्र मंद हूँ, सब्र करने वाले और सिद्दिकिन ही उन मुश्किल मुआमलात में तुम्हारा साथ देंगे”, आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया: यानी सदका करने वाले, फिर आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने अबू सलमा बिन अब्दुल रहमान रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया अल्लाह तुम्हारे वालिद को जन्नत के चश्मे सलसबिल से पिलाए, और इब्ने ऑफ रदियल्लाहु अन्हु ने उम्महातुल मोमिनीन के लिए एक बाग़ वक्फ़ किया था जो चालीस हज़ार में फरोख्त किया गया था| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3749 وقال : حسن صحيح غريب)

٦١٣١ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» أُمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ لِأَزْوَاجِهِ: «إِنَّ الَّذِي يَحْثُو

عَلَيْكُنَّ بَعْدِي هُوَ الصَّادِقُ الْبَارُّ اللَّهُمَّ اسْقِ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ عَوْفٍ مِنْ سلسبيلِ الجنةِ» . رَوَاهُ أَحْمد

6131. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने रसूल अल्लाह ﷺ को अपने अज़्वाज ए मूतहरात से फरमाते हुए सुना: “जो शख़्स मेरे बाद तुम पर खर्च करेगा तो वह शख़्स सच्चा और इहसान करने वाला है, अल्लाह अब्दुल रहमान बिन ऑफ को जन्नत के चश्मे सलसबिल से जाम पिला”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (6 / 299 ح 27094) [و الحاكم (3 / 311)] * محمد بن اسحاق مدلس و عنعن و محمد بن عبد الرحمن بن عبدالله بن الحصين و ثقه ابن حبان وحده

٦١٣٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن حُذَيْفَة قَالَ: جَاءَ أَهْلُ نَجْرَانَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ ابْعَثْ إِلَيْنَا رَجُلًا أَمِينًا. فَقَالَ: «لَأَبْعَثَنَّ إِلَيْكُمْ رَجُلًا أَمِينًا حَقَّ أَمِينٍ» فَاسْتَشْرَفَ لَهَا الناسُ قَالَ: فَبعث أَبَا عبيدةَ بن الْجراح. مُتَّفق عَلَيْهِ

6132. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नजरान वाले रसूल अल्लाह ﷺ के पास आए और उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! किसी अमिन शख़्स को हमारी तरफ मबउस फरमाना, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं तुम्हारी तरफ ऐसे अमिन शख़्स को भेजूंगा जो के हकीकी मानी में अमिन होगा”, सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन इस (अमारत) के ख्वाहिश मंद थे, रावी बयान करते हैं, आप ने अबू उबैदाह बिन जराह को भेजा| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (3745) و مسلم (55 / 2420)، (6254)

٦١٣٣ - (ضَعِيف) وَعَن»» عَليّ قَالَ: قيل لرَسُول اللَّهِ: مَنْ نُؤَمِّرُ بَعْدَكَ؟ قَالَ: «إِنْ تُؤَمِّرُوا أَبَا بَكْرٍ تَجِدُوهُ أَمِينًا زَاهِدًا فِي الدُّنْيَا رَاغِبًا فِي الْآخِرَةِ وَإِنْ تُؤَمِّرُوا عُمَرَ تَجِدُوهُ قَوِيًّا أَمِينًا لَا يَخَافُ فِي اللَّهِ لَوْمَةَ لَائِمٍ وَإِنْ تُؤَمِّرُوا عَلِيًّا - وَلَا أَرَاكُمْ فَاعِلِينَ - تَجِدُوهُ هَادِيًا مَهْدِيًّا يَأْخُذُ بِكُمُ الطَّرِيقَ الْمُسْتَقِيمَ» . رَوَاهُ أَحْمد

6133. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल! हम आप के बाद किसे खलीफा मुकर्रर फरमाए? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर तुम अबू बक्र को अमीर बना लो तो तुम उन्हें अमिन, दुनिया से बे रगबत रखने वाला और आखिरत से रगबत रखने वाला पाओगे और अगर तुम उमर को अमीर मुकर्रर करोगे तो तुम उन्हें क़वी अमिन पाओगे, वह अल्लाह के मुआमले में किसी मलामत करने वाले की मलामत से खौफ ज़दाह नहीं होते, और अगर तुम अली को अमीर बनाओगे हालाँकि में समझता की तुम उन्हें बनाओगे, तो तुम उन्हें हादी और हिदायत याफ्ता पाओगे, वह तुम्हें सिरातुल मुस्तकीम पर चलाएंगे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (1 / 109 ح 859) * فيه ابو اسحاق السبيعى مدلس و عنعن

٦١٣٤ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْهُ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «رَحِمَ اللَّهُ أَبَا بَكْرٍ زَوَّجَنِي ابْنَتَهُ وَحَمَلَنِي إِلَى دَارِ الْهِجْرَةِ وَصَحِبَنِي فِي الْغَارِ وَأَعْتَقَ بِلَالًا مِنْ مَالِهِ. رَحِمَ اللَّهُ عُمَرَ يَقُولُ الْحَقَّ وَإِنْ كَانَ مُرًّا تَرَكَهُ الْحَقُّ وَمَا لَهُ مِنْ صَدِيقٍ. رَحِمَ اللَّهُ عُثْمَانَ تَسْتَحْيِيهِ الْمَلَائِكَةُ رَحِمَ اللَّهُ عَلِيًّا اللَّهُمَّ أَدِرِ الْحَقَّ مَعَهُ حَيْثُ دَارَ» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

6134. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह अबू बक्र पर रहम फरमाए, उन्होंने अपने बेटी से मेरी शादी की, दार हिजरत की तरफ मुझे उठाकर (अपने ऊंट पर सवार कर के) ले गए, ग़ार में मेरे साथ रहे, और अपने माल से बिलाल को आज़ाद कराया, और उमर पर रहम फरमाए वह हक़ फरमाते हैं ख्वाह वह कड़वा हो हक़ गोई ने उन्हें तन्हा छोड़ दिया इसलिए उनका कोई दोस्त नहीं, अल्लाह उस्मान पर रहम फरमाए फ़रिश्ते भी उन से हया करते हैं, अल्लाह अली पर रहम फरमाए ऐ अल्लाह! वह जहाँ भी जाए हक़ उन के साथ ही रहे"| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (3714) * فيه مختار بن نافع : ضعيف

بَابِ مَنَاقِبِ أَهْلِ بَيْتِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ — रसूलुल्लाह ﷺ के घर वालो के मनाकिब का बयान

الْفَصْلُ الأول — पहली फस्ल

٦١٣٥ - (صَحِيح) عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ قَالَ: لَمَّا نزلت هَذِه الْآيَة [نَدْعُ أبناءنا وأبناءكم] دَعَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلِيًّا وَفَاطِمَةَ وَحَسَنًا وَحُسَيْنًا فَقَالَ: «اللَّهُمَّ هَؤُلَاءِ أهل بَيْتِي» رَوَاهُ مُسلم

6135. साद बिन अबी वकास रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब यह आयत (نَدْعُ اَبْنَاءَ نَا وَ اَبْنَاءَ كُمْ) "हम बुलाएं अपने बेटे और तुम बुलाओ अपने बेटों को" नाज़िल हुई तो रसूल अल्लाह ﷺ ने अली, फ़ातिमा, हसन और हुसैन रदियल्लाहु अन्हु को बुलाया और फ़रमाया: "अल्लाह यह मेरे अहले बैत है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (32 / 2404)، (6220)

٦١٣٦ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: خَرَجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غَدَاةً وَعَلَيْهِ مِرْطٌ مُرَحَّلٌ مِنْ شَعْرٍ أَسْوَدَ فَجَاءَ الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ فَأَدْخَلَهُ ثُمَّ جَاءَ الْحُسَيْنُ فَدَخَلَ مَعَهُ ثُمَّ جَاءَتْ فَاطِمَةُ فَأَدْخَلَهَا ثُمَّ جَاءَ عَلِيٌّ فَأَدْخَلَهُ ثُمَّ قَالَ: [إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أهل الْبَيْت وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرا] رَوَاهُ مُسلم

6136. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, सुबह के वक़्त नबी ﷺ निकले इस वक़्त आप पर काले बालो

से बनी हुई नक्श दार चादर थी, इस दौरान हसन बिन अली रदियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ लाए तो आप ने उन्हें अपने साथ इस (चादर) में दाखिल फरमा लिया, फिर हुसैन रदियल्लाहु अन्हु आए तो आप ने उन्हें भी दाखिल फरमा लिया, फिर फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा आई तो आप ने उन्हें भी दाखिल फरमा लिया, फिर अली रदियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ लाए तो आप ने उन्हें भी दाखिल फरमा लिया, फिर आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाई: "अल्लाह सिर्फ यही चाहता है, ए अहले बैत! के वह तुम से गुनाह की गंदगी दूर फरमादे और तुम्हें मुकम्मल तौर पर पाक साफ़ कर दे"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (61 / 2424)، (6261)

٦١٣٧ - (صَحِيح) وَعَن الْبَراء قَالَ: لَمَّا تُوُفِّيَ إِبْرَاهِيمُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ لَهُ مُرْضِعًا فِي الْجَنَّةِ» رَوَاهُ البُخَارِيّ

6137. बराअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूल अल्लाह ﷺ के लख्ते जिगर इब्राहीम फौत हुए तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "इन के लिए जन्नत में एक दूध पिलाने वाली है"| (बुखारी)

رواه البخاری (1382)

٦١٣٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ: قَالَتْ: كُنَّا - أَزْوَاجَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - عِنْدَهُ. فَأَقْبَلَتْ فَاطِمَةُ مَا تَخْفَى مِشْيَتُهَا مِنْ مِشْيَةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمَّا رَآهَا قَالَ: «مَرْحَبًا بِابْنَتِي» ثُمَّ أَجْلَسَهَا ثُمَّ سَارَّهَا فَبَكَتْ بُكَاءً شَدِيدًا فَلَمَّا رَأَى حُزْنَهَا سَارَّهَا الثَّانِيَةَ فَإِذَا هِيَ تَضْحَكُ فَلَمَّا [ص:١٧٣ قَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَأَلْتُهَا عَمَّا سَارَّكِ؟ قَالَتْ: مَا كُنْتُ لِأُفْشِيَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سِرَّهُ فَلَمَّا تُوُفِّيَ قُلْتُ: عَزَمْتُ عَلَيْكِ بِمَا لي عَلَيْك مِنَ الْحَقِّ لِمَا أَخْبَرْتِنِي. قَالَتْ: أَمَّا الْآنَ فَنَعَمْ أَمَّا حِينَ سَارَّ بِي فِي الْأَمْرِ الأوَّل فإنه أَخْبرنِي: «إِنَّ جِبْرِيل كَانَ يُعَارِضهُ بِالْقُرْآنِ كل سنة مرّة وَإِنَّهُ قد عَارَضَنِي بِهِ الْعَامَ مَرَّتَيْنِ وَلَا أَرَى الْأَجَلَ إِلَّا قَدِ اقْتَرَبَ فَاتَّقِي اللَّهَ وَاصْبِرِي فَإِنِّي نعم السّلف أَنا لَك» فَلَمَّا رَأَى جَزَعِي سَارَّنِي الثَّانِيَةَ قَالَ: «يَا فَاطِمَةُ أَلَا تَرْضِينَ أَنْ تَكُونِي سَيِّدَةَ نِسَاءِ أَهْلِ الْجَنَّةِ أَوْ نِسَاءِ الْمُؤْمِنِينَ؟»»» وَفِي رِوَايَةٍ: فَسَارَّنِي فَأَخْبَرَنِي أَنَّهُ يُقْبَضُ فِي وَجَعِهِ فَبَكَيْتُ ثُمَّ سَارَّنِي فَأَخْبَرَنِي أَنِّي أَوَّلُ أَهْلِ بَيْتِهِ أتبعه فضحكت. مُتَّفق عَلَيْهِ

6138. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, हम नबी ﷺ की अज़वाज ए मूतहरात रदियल्लाहु अन्हु आप की खिदमत में हाज़िर थी, फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा आए, वह रसूल अल्लाह ﷺ तक पहुँच गई, जब आप ﷺ ने उन्हें देखा तो फ़रमाया: "प्यारी बेटी! खुशामदीद", फिर आप ने उन्हें बैठा लिया, फिर उन से सरगोशी फरमाई तो वह बहोत ज़्यादा रोने लगी, जब आप ने उनका गम देखा तो आप ने दूसरी मर्तबा उन से सरगोशी फरमाई, वह हंस दी, चुनांचे जब रसूल अल्लाह ﷺ खड़े हुए तो मैंने फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा से पूछा: आप ﷺ ने तुम्हारे साथ किया सरगोशी फरमाई? उन्होंने ने फ़रमाया: में रसूल अल्लाह ﷺ के राज़ को इफ्शा नहीं करुँगी, जब आप ﷺ वफात पा गए तो मैंने कहा मेरा आप पर जो हक़ है जिस हवाले से में आप को क़सम दे कर पूछती हूँ क्या आप मुझे नहीं बताएंगी? उन्होंने ने फ़रमाया: हाँ, अब ठीक है, जहाँ तक इस पहली सरगोशी का ताल्लुक है तो

आप ﷺ ने मुझे बताया की, “ जिब्राइल अलैहिस्सलाम हर साल मुझ से एक मर्तबा कुरान का दौर किया करते थे जबकि इस साल उन्होंने दो मर्तबा दौर किया है, और मैं समझता हूँ कि वक़्त पूरा हो चूका है, तुम अल्लाह से डरती रहना और सब्र करना, और मैं तुम्हारे लिए बेहतरीन कारवां हूँ”, लेकिन जब आप ने मेरी घबराहट देखी तो आप ﷺ ने दूसरी मर्तबा सरगोशी की और फ़रमाया: “फ़ातिमा! क्या तुम उस पर खुश नहीं के तुम अहले जन्नत की औरतों या मोमिन औरतों की सरदार होगी ?” एक दूसरी रिवायत में है आप ﷺ ने मुझ से सरगोशी की तो मुझे बताया की इसी तकलीफ मैं इन की रूह कब्ज़ की जाएगा तो उस पर में रो पड़ी, फिर आप ﷺ ने मुझ से सरगोशी की तो मुझे बताया की आप के अहले बैत में से सबसे पहले में आप के पीछे आउंगी तो उस पर में हंस पड़ी| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (62856286 و الرواية الثانية : 3626) و مسلم (98 / 2450 و الرواية الثانية : 97 / 2450)، (6313)

٦١٣٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن المِسور بْنِ مَخْرَمَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «فَاطِمَةُ بَضْعَةٌ مِنِّي فَمَنْ أَغْضَبَهَا أَغْضَبَنِي» وَفِي رِوَايَةٍ: «يُرِيبُنِي مَا أَرَابَهَا وَيُؤْذِينِي مَا آذاها» . مُتَّفق عَلَيْهِ

6139. मिस्वर बिन मखरम रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “फ़ातिमा मेरे जिगर का टुकड़ा है, जिस ने उस से दुश्मनी रखी उस ने मुझ से दुश्मनी रखी”, एक दूसरी रिवायत में है: “जो चीज़ इसे किल्लत में मुब्तिला कर देती है वही चीज़ मुझे किल्लत में मुब्तिला कर देती है और जो चीज़ इसे तकलीफ पहुंचाती है वही चीज़ मुझे तकलीफ पहुंचाती है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3767 و الرواية الثانية : 5230) و مسلم (93 / 2449)، (6307)

٦١٤٠ - (صَحِيح) وَعَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ قَالَ: قَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمًا فِينَا خَطِيبًا بِمَاءٍ يُدْعَى: خُمًّا بَيْنَ مَكَّةَ وَالْمَدِينَةِ فَحَمِدَ اللَّهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ وَوَعَظَ وَذَكَّرَ ثُمَّ قَالَ: " أمَّا بعدُ أَلا أيُّها النَّاس فَإِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ يُوشِكُ أَنْ يَأْتِيَنِي رَسُولُ رَبِّي فَأُجِيبَ وَأَنَا تَارِكٌ فِيكُمُ الثَّقَلَيْنِ: أَوَّلُهُمَا كِتَابُ اللَّهِ فِيهِ الْهُدَى وَالنُّورُ فَخُذُوا بِكِتَابِ اللَّهِ وَاسْتَمْسِكُوا بِهِ " فَحَثَّ عَلَى كِتَابِ اللَّهِ وَرَغَّبَ فِيهِ ثُمَّ قَالَ: «وَأَهْلُ بَيْتِي أُذَكِّرُكُمُ اللَّهَ فِي أَهْلِ بَيْتِي أُذَكِّرُكُمُ اللَّهَ فِي أَهْلِ بَيْتِي» وَفِي رِوَايَةٍ: «كتاب الله عز وَجل هُوَ حَبْلُ اللَّهِ مَنِ اتَّبَعَهُ كَانَ عَلَى الْهُدَى وَمَنْ تَرَكَهُ كَانَ عَلَى الضَّلَالَةِ» . رَوَاهُ مُسلم

6140. ज़ैद बिन अरक़म रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक रोज़ मक्का और मदीना के दरमियान पानी की जगह पर खुम नामी मक़ाम पर रसूल अल्लाह ﷺ ने हमें खुत्बा इरशाद फ़रमाया, आप ﷺ ने अल्लाह की हम्द व सना बयान की, वाज़ व नसीहत की फिर फ़रमाया: “अम्मा बाद! लोगो! सुनो मैं भी इंसान हूँ, करीब है के मेरे रब का कासिद आए और मैं उसकी बात कबूल कर लू, मैं तुम में दो अज़ीम चीज़े छोड़ कर जा रहा हूँ, इन दोनों में से पहली चीज़ अल्लाह की किताब है, उस में हिदायत और नूर है, तुम अल्लाह की किताब को पकड़ो और उस से तमसिक इख़्तियार करो”, आप ने अल्लाह की किताब (पर अमल करने) पर उभारा और उस के मुतल्लिक तरगीब दिलाई ,फिर फ़रमाया: “(दूसरी चीज़) मेरे अहले बैत, मैं अपने अहले बैत के मुतल्लिक तुम्हें अल्लाह से

डराता हूँ, अपने अहले बैत के मुतल्लिक में तुम्हें अल्लाह से डराता हूँ” एक दूसरी रिवायत में है: “अल्लाह की किताब वह अल्लाह की रस्सी है, जिस ने उसकी इत्तेबा की वह हिदायत पर है और जिस ने इसे छोड़ दिया वह गुमराही पर होगा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (37 / 248)، (6225)

٦١٤١ - (صَحِيح) وَعَن ابْن عمر أَنَّهُ كَانَ إِذَا سَلَّمَ عَلَى ابْنِ جَعْفَرٍ قَالَ: السَّلَام عَلَيْك يَا ابْن [ص:١٧٣ ذِي الجناحين. رَوَاهُ البُخَارِيّ

6141. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के जब वह इब्ने जाफर रदियल्लाहु अन्हु को सलाम किया करते थे तो यूँ कहते थे ज़ुलजनाहीन (जाफर रदियल्लाहु अन्हु का लकब) के बेटे तुम पर सलाम हो| (बुखारी)

رواه البخاری (3709)

٦١٤٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ الْبَرَاءِ قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ عَلَى عَاتِقِهِ يَقُولُ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أُحِبُّهُ فَأَحِبَّهُ» مُتَّفق عَلَيْهِ

6142. बराअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ को देखा इस वक़्त हसन बिन अली रदियल्लाहु अन्हु आप के कंधे पर थे, आप ﷺ फरमा रहे थे: “अल्लाह मैं उस से मुहब्बत करता हूँ तू भी उस से मुहब्बत फरमा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3749) و مسلم (58 / 2422)، (6258)

٦١٤٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: خَرَجْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي طَائِفَةٍ مِنَ النَّهَارِ حَتَّى أَتَى خِبَاءَ فَاطِمَةَ فَقَالَ: «أَثَمَّ لُكَعُ؟ أَثَمَّ لُكَعُ؟» يَعْنِي حَسَنًا فَلَمْ يَلْبَثْ أَنْ جَاءَ يَسْعَى حَتَّى اعْتَنَقَ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا صَاحِبَهُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أُحِبُّهُ فَأَحِبَّهُ وَأَحِبَّ مَنْ يُحِبُّهُ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

6143. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, दिन के किसी हिस्से में में रसूल अल्लाह ﷺ के साथ रवाना हुआ हत्ता कि आप फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा के घर तशरीफ़ ले गए, आप ﷺ ने दरियाफ्त फ़रमाया: “क्या यहाँ छोटा बच्चा है गया यहाँ छोटा बच्चा यानी हसन है?” थोड़ी देर गुज़री थी के वह दौड़ते हुए आए हत्ता कि इन दोनों में से हर एक ने अपने साथी को गले लगाया, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह बेशक में उस से मुहब्बत करता हूँ तू भी उस से मुहब्बत रखने वाले से मुहब्बत फरमा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2122) و مسلم (57 / 2421)، (6257)

٦١٤٤ - (صَحِيح) وَعَن»» أبي بكرَة قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى الْمِنْبَرِ وَالْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ إِلَى جَنْبِهِ وَهُوَ يُقْبِلُ عَلَى النَّاسِ مَرَّةً وَعَلَيْهِ أُخْرَى وَيَقُولُ: «إِنَّ ابْنِي هَذَا سَيِّدٌ وَلَعَلَّ اللَّهَ أَنْ يُصْلِحَ بِهِ بَيْنَ فِئَتَيْنِ عَظِيمَتَيْنِ مِنَ الْمُسْلِمِينَ» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

6144. अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह (स) को मिम्बर पर देखा जबकि हसन बिन अली रदियल्लाहु अन्हुमा आप के पहलू में थे, आप (स) एक मर्तबा लोगों की तरफ तवज्जो फरमाते और दूसरी मर्तबा हसन रदियल्लाहु अन्हु की तरफ तवज्जो फरमाते, और फरमाते: बेशक! मेरा यह बेटा सरदार है, उम्मीद है की अल्लाह इस की वजह से मुसलमान की दो अज़ीम जमाअतों के दरमियान सुलह कराएगा| (बुखारी)

رواه البخارى (2704)

٦١٤٥ - (صَحِيح) وَعَنْ»» عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي نُعْمٍ قَالَ: سمعتُ عبدَ اللَّهِ بن عُمَرَ وَسَأَلَهُ رَجُلٌ عَنِ الْمُحْرِمِ قَالَ شُعْبَةُ أَحْسَبُهُ يَقْتُلُ الذُّبَابَ؟ قَالَ: أَهْلُ الْعِرَاقِ يَسْأَلُونِي عَنِ الذُّبَابِ وَقَدْ قَتَلُوا ابْنَ بِنْتُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هُمَا رَيْحَانَيَّ مِنَ الدُّنْيَا» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

6145. अब्दुल रहमान बिन अबी नुअमी रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से इस वक़्त सुना जब उन से किसी आदमी ने मुहर्र्रम (हालत ए इहराम वाले शख्स) के मुतल्लिक मसअला दरियाफ्त किया, शुअबा बयान करते हैं, मेरा ख़याल है के वह पूछ रहा था (अगर मुहर्रम) मख्खी मार दे (तो उस पर क्या कफ्फारा होगा ?) उन्होंने ने फ़रमाया: अहले इराक मख्खी (मारने) के मुतल्लिक मुझ से मसअला दरियाफ्त करते हैं जबकि उन्होंने रसूल अल्लाह ﷺ के नवासे को क़त्ल कर दिया, और रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया था: “वो दोनों (हसन व हुसैन (र अ)) दुनिया में मेरे दो फुल है”| (बुखारी)

رواه البخارى (3753)

٦١٤٦ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَنَسٍ قَالَ: لَمْ يَكُنْ أَحَدٌ أَشْبَهَ بِالنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنَ الْحَسَنِ بن عليّ وَقَالَ فِي الْحسن أَيْضًا: كَانَ أَشْبَهَهُمْ بِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

6146. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हसन बिन अली रदियल्लाहु अन्हुमा रसूल अल्लाह ﷺ से सबसे ज़्यादा मुशाबिहत रखते थे, और उन्होंने हुसैन रदियल्लाहु अन्हु के बारे में भी फ़रमाया: वह रसूल अल्लाह ﷺ से उन सबसे ज़्यादा मुशाबिहत रखते थे| (बुखारी)

رواه البخارى (3752 ، 3748)

٦١٤٧ - (صَحِيح) وَعَن»» ابْن عَبَّاس قَالَ: ضَمَّنِي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى صَدْرِهِ فَقَالَ: «اللَّهُمَّ عَلِّمْهُ الْحِكْمَةَ»»» وَفِي رِوَايَة: «علمه الْكتاب» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

6147. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ ने मुझे सीने से लगा कर फ़रमाया: “ए अल्लाह! इसे हिकमत की तालीम अता फरमा”, एक दूसरी रिवायत में है: “इसे किताब की तालीम अता फरमा”| (बुखारी)

رواه البخارى (3756)

٦١٤٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَخَلَ الْخَلَاءَ فَوَضَعْتُ لَهُ وَضُوءًا فَلَمَّا خَرَجَ قَالَ: «مَنْ وَضَعَ هَذَا؟» فَأُخْبِرَ فَقَالَ: «اللَّهُمَّ فقهه فِي الدّين» . مُتَّفق عَلَيْهِ

6148. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के उन्होंने कहा के नबी ﷺ बैतूलखला में दाखिल हुए तो मैंने तहारत के लिए पानी रख दिया, चुनांचे जब आप ﷺ बाहर तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया: “ये किस ने रखा था ?” आप को बताया गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “ए अल्लाह! इसे दीन की समझ बुझ अता फरमा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (143) و مسلم (138 / 2477)، (6368)

٦١٤٩ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ كَانَ يَأْخُذُهُ وَالْحَسَنَ فَيَقُولُ: «اللَّهُمَّ أَحِبَّهُمَا فَإِنِّي أُحِبُّهما»»» وَفِي رِوَايَةٍ: قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْخُذُنِي فَيُقْعِدُنِي عَلَى فَخِذِهِ وَيُقْعِدُ الْحَسَنَ بْنَ عَلِيٍّ عَلَى فَخِذِهِ الْأُخْرَى ثُمَّ يَضُمُّهُمَا ثُمَّ يَقُولُ: «اللَّهُمَّ ارْحَمْهُمَا فَإِنِّي أرحمُهما» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

6149. उसामा बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं की आप मुझे और हसन को पकड़ कर फरमाते: “अल्लाह उन से मुहब्बत फरमा क्योंकि मैं इन दोनों से मुहब्बत करता हूँ”| एक दूसरी रिवायत में है: रसूल अल्लाह ﷺ मुझे पकड़ कर अपनी एक रान पर बेठा लेते थे और हसन बिन अली रदियल्लाहु अन्हु को अपने दूसरी रान पर बेठा लेते फिर उन्हें मिला कर फरमाते: “ए अल्लाह! इन दोनों पर रहम फरमा क्योंकि में इन पर शफकत व रहमत फ़रमाता हूँ”| (बुखारी)

رواه البخارى (3735) و الرواية الثانية ، رواها البخارى (6003)

٦١٥٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعَثَ بَعْثًا وَأَمَّرَ عَلَيْهِمْ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ فَطَعَنَ بَعْضُ النَّاسِ فِي إِمَارَتِهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنْ كُنْتُمْ تَطْعَنُونَ فِي إِمَارَتِهِ فَقَدْ كُنْتُمْ تَطْعَنُونَ فِي

إِمَارَةِ أَبِيهِ مِنْ قَبْلُ وَأَيْمُ اللَّهِ إِنْ كَانَ لَخَلِيقًا لِلْإِمَارَةِ وَإِنْ كَانَ لَمِنْ أَحَبِّ النَّاسِ إِلَيَّ وَإِنَّ هَذَا لَمِنْ أَحَبِّ النَّاسِ إِلَيَّ بَعْدَهُ» مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ»» وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ نَحْوُهُ وَفِي آخِره: «أوصيكم بِهِ فَإِنَّهُ من صالحيكم»

6150. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने एक लश्कर भेजा तो उस पर उसामा बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हुमा को अमीर मुकर्रर फ़रमाया, कुछ लोगों ने उनकी अमारत के बारे में एतराज़ किया तो रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “अगर तुम उसकी अमारत पर एतराज़ करते हो तो तुम उस से पहले उस के वालिद की अमारत के बारे में भी एतराज़ कर चुके हो, अल्लाह की क़सम! बिलाशुबा वह अमारत के ज़्यादा लायक था और वह तमाम लोगों से मुझे ज़्यादा महबूब था और उस के बाद यह भी मुझे तमाम लोगों से ज़्यादा महबूब है”| और सहीह मुस्लिम की रिवायत मैं भी इसी तरह है, और उस के आख़िर में है: “मैं उस के मुतल्लिक तुम्हें वसीयत करता हूँ क्योंकि वह तुम्हारे स्वालेहीन में से है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3730) و مسلم (63 / 2426 و الرواية الثانية : 64 / 2426)، (6264 و 6265)

٦١٥١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: إِنَّ زَيْدِ بْنِ حَارِثَةَ مَوْلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا كُنَّا نَدْعُوهُ إِلَّا زَيْدَ بْنَ مُحَمَّدٍ حَتَّى نزل الْقُرْآن [أُدعوهم لِآبَائِهِمْ] مُتَّفق عَلَيْهِ»» وَذكر حَدِيث الْبَراء قَالَ لعليّ: «أَنْتَ مِنِّي» فِي «بَابِ بُلُوغِ الصَّغِيرِ وَحَضَانَتِهِ»

6151. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ के आज़ाद करदा गुलाम ज़ैद बिन हारिस रदियल्लाहु अन्हु को कुरआन ए करीम की इस आयत“, इनको उन के आबाअ के नाम से बुलाओ”, के नाज़िल होने तक हम ज़ैद बिन मुहम्मद ﷺ कह कर बुलाया करते थे| और बराअ (र) से मरवी हदीस के आप ﷺ ने अली (र) से फ़रमाया ((أَنْتَ مِنِّي)) बाब بُلُوغِ الصَّغِيرِ (छोटे लड़के की बुलुगत और कमसिनी में इस की तरबियत का बयान) में ज़िक्र हो चुकी है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (4782) و مسلم (62 / 2425)، (6262) 0 حديث البراء تقدم (3377)

بَابِ مَنَاقِبِ أَهْلِ بَيْتِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ — रसूलुल्लाह ﷺ के घर वालो के मनाकिब का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي — दूसरी फस्ल

٦١٥٢ - (صَحِيح بِالَّذِي بعده) عَنْ جَابِرٍ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حِجَّتِهِ يَوْمَ عَرَفَةَ وَهُوَ عَلَى نَاقَتِهِ الْقَصْوَاءِ يَخْطُبُ فَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: " يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي تَرَكْتُ فِيكُمْ مَا إِنْ أَخَذْتُمْ بِهِ لَنْ تَضِلُّوا: كِتَابَ اللَّهِ وعترتي أهل بيتِي ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6152. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूल अल्लाह ﷺ को हज्जतुल वदा के मौके पर अरफा के रोज़ आप की ऊंटनी कसवाअ पर ख़िताब फरमाते हुए देखा, मैंने आप ﷺ को फरमाते हुए सुना: “लोगो! मैंने तुम में ऐसी चीज़ छोड़ी है जब तक तुम उसे थामे रखोगे गुमराह नहीं होगे, वह अल्लाह की किताब और मेरी अतरत मेरे अहले बैत है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (3786 وقال : غريب حسن) * زيد بن الحسن ضعيف و حديث مسلم (2408) و ابن ماجه (1558) يغنى عنه

٦١٥٣ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنِّي تَارِكٌ فِيكُمْ مَا إِنْ تَمَسَّكْتُمْ بِهِ لَنْ تَضِلُّوا بَعْدِي أَحَدُهُمَا أَعْظَمُ مِنَ الْآخَرِ: كِتَابُ اللَّهِ حَبْلٌ مَمْدُودٌ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ وَعِتْرَتِي أَهْلُ بَيْتِي وَلَنْ يَتَفَرَّقَا حَتَّى يَرِدَا عَلَيَّ الْحَوْضَ فَانْظُرُوا كَيْفَ تَخْلُفُونِي فِيهِمَا ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

6153. ज़ैद बिन अरक़म रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “मैं तुम में ऐसी चीज़ छोड़ कर जा रहा हूँ जब तक तुम उस के साथ तमसिक इख़्तियार रखोगे तो मेरे बाद कभी गुमराह नहीं होगे, उनमें से एक दूसरी से अज़ीम तर है, अल्लाह की किताब जो के एक ऐसी रस्सी है, जो आसमान से ज़मीन की तरफ दराज़ की गई है, और मेरी अतरत अहले बैत, यह दोनों अलग नहीं होंगे हत्ता कि हौज़ (कौसर) पर मेरे पास आएँगे, देखो की तुम इन दोनों के बारे में मेरी केसी जानशीन निभाते हो”| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه الترمذی (3788 وقال : حسن غريب)عطية العوفى ضعيف و الاعمش مدلس و عنعن و حديث مسلم : (2408) و الطحاوى (مشكل الآثار : 5 / 13 ، ح : 1760) يغنى عنه

٦١٥٤ - (ضَعِيف) وَعَنْهُ»» أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِعَلِيٍّ وَفَاطِمَةَ وَالْحَسَنِ وَالْحُسَيْنِ: «أَنَا حَرْبٌ لِمَنْ حَارَبَهُمْ وَسِلْمٌ لِمَنْ سَالَمَهُمْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6154. ज़ैद बिन अरक़म रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने अली फ़ातिमा और हसन और हुसैन रदियल्लाहु अन्हु के बारे में फ़रमाया: “जिस ने उन से लड़ाई की में उन से लड़ने वाला हूँ, और जिस ने उन से मस्वालेह की में उन से मस्वालेह करने वाला हूँ”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3870 وقال : غريب) [و ابن ماجه (145)] * صبيح مولى ام سلمة : لم يوثقه غير ابن حبان

٦١٥٥ - (حسن) وَعَنْ»» جُمَيْعِ بْنِ عُمَيْرٍ قَالَ: دَخَلْتُ مَعَ عَمَّتِي عَلَى عَائِشَةَ فَسَأَلْتُ: أَيُّ النَّاسِ كَانَ أَحَبَّ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَتْ: فَاطِمَةُ. فَقِيلَ: مِنَ الرِّجَالِ؟ قَالَتْ: زَوْجُهَا إِنْ كَانَ مَا عَلِمْتُ صَوَّامًا قَوَّامًا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6155. जुमयइ बिन उमैर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं अपने फूफी के साथ आइशा रदियल्लाहु अन्हा के

पास गया तो मैंने पूछा: रसूल अल्लाह ﷺ को सबसे ज़्यादा किस से मुहब्बत थी? उन्होंने ने फ़रमाया: फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा से, पूछा गया: मर्दों में से उन्होंने ने फ़रमाया: उन के शोहर अली रदियल्लाहु अन्हु से | (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (3874 وقال : حسن غريب) * جميع بن عمير ضعيف ضعفه الجمهور و لحديثه شواهد ضعيفة عند الترمذی (2868) وغيره

٦١٥٦ - (ضَعِيف إِلَّا»» الْجُمْلَة الْأَخِيرَة فصحيحة)»» وَعَنْ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ بْنِ رَبِيعَةَ أَنَّ الْعَبَّاسَ دَخَلَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ [ص:١٧٣ مُغْضَبًا وَأَنَا عِنْدَهُ فَقَالَ: «مَا أَغْضَبَكَ؟» قَالَ: يَا رَسُول الله مَا لَنَا وَلِقُرَيْشٍ إِذَا تَلَاقَوْا بَيْنَهُمْ تَلَاقَوْا بِوُجُوهٍ مُبْشَرَةٍ وَإِذَا لَقُونَا لَقُونَا بِغَيْرِ ذَلِكَ؟ فَغَضِبَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى احْمَرَّ وَجْهُهُ ثُمَّ قَالَ: «وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَا يَدْخُلُ قَلْبَ رَجُلٍ الْإِيمَانُ حَتَّى يحبكم لله وَلِرَسُولِهِ» ثمَّ قَالَ: «يَا أَيُّهَا النَّاسُ مَنْ آذَى عَمِّي فَقَدْ آذَانِي فَإِنَّمَا عَمُّ الرَّجُلِ صِنْوُ أَبِيهِ» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ. وَفِي «المصابيح» عَن الْمطلب

6156. अब्दुल मुत्तलिब बिन रबिआ से रिवायत है के अब्बास रदियल्लाहु अन्हु गुस्से की हालत में रसूल अल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए, मैं इस वक़्त आप के पास ही था, आप ﷺ ने फ़रमाया: “आप को किस ने नाराज़ किया ?” उन्होंने ने फ़रमाया: अल्लाह के रसूल! हमारा (बनू हाशिम) और बाकी कुरैशीयो का क्या मामला है? जब वह आपस में मिलते हैं तो बड़ी कुशादाह पेशानी से मिलते हैं, और जब हम से मिलते हैं, तो इस तरह नहीं मिलते, चुनांचे रसूल अल्लाह ﷺ भी गुस्से में आ गए हत्ता कि आप का चेहरा मुबारक सुर्ख हो गया, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! किसी शख़्स का दिल में ईमान दाखिल नहीं हो सकता हत्ता कि वह अल्लाह और उस के रसूल की खातिर तुम से मुहब्बत न करे, फिर फ़रमाया: “लोगो! जिस ने मेरे चचा को अज़ीयत पहुंचाई उस ने मुझे अज़ीयत पहुंचाई, आदमी का चचा उस के बाप के तरह होता है”| तिरमिज़ी, और मसाबिह में मतलब से मरवी है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3758 وقال : حسن صحيح) * فيه يزيد بن ابی زياد : ضعيف مشهور

٦١٥٧ - (ضَعِيف) وَعَنِ»» ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْعَبَّاسُ مِنِّي وَأَنَا مِنْهُ» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6157. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “अब्बास मुझ से है और मैं उन से हूँ”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3759 وقال : حسن صحيح غريب) * فيه عبد الاعلى الثعلبی : ضعيف

٦١٥٨ - (إِسْنَاده جيد وَزِيَادَة رزين مُنكَرَة)

وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِلْعَبَّاسِ: «إِذَا كَانَ غَدَاةَ الِاثْنَيْنِ فَأْتِنِي أَنْتَ وَوَلَدُكَ حَتَّى أَدْعُوَ لَهُمْ بِدَعْوَةٍ يَنْفَعُكَ اللَّهُ بِهَا وَوَلَدَكَ» فَغَدَا وَغَدَوْنَا مَعَهُ وَأَلْبَسَنَا كِسَاءَهُ ثُمَّ قَالَ: «اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِلْعَبَّاسِ وَوَلَدِهِ مَغْفِرَةً ظَاهِرَةً وَبَاطِنَةً لَا تُغَادِرُ ذَنْبًا اللَّهُمَّ احْفَظْهُ فِي وَلَدِهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَزَادَ رَزِينٌ: «وَاجْعَلِ الْخِلَافَةَ بَاقِيَةً فِي عَقِبِهِ» وَقَالَ التِّرْمِذِيّ: هَذَا حَدِيث غَرِيب

6158. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: “जब पीर का दिन हो तो आप और आप की औलाद मेरे पास आना, मैं तुम्हारे लिए दुआ करूँगा, जिसके ज़रिए अल्लाह तुम्हें और तुम्हारी औलाद को फ़ायदा पहुंचाएगा”, हम उन के साथ आप की खिदमत में हाज़िर हुए, आप ﷺ ने हमें अपने चादर में लेकर दुआ फरमाई: “ए अल्लाह! अब्बास और उन की औलाद की तमाम ज़ाहिरी व बातिनी लग्ज़िश मुआफ़ फरमा, उनका कोई गुनाह बाकी न छोड़, ऐ अल्लाह! उनका साया उनकी औलाद पर काइम फरमा”| और रजिन ने यह इज़ाफा नकल किया है: “और उनकी औलाद में खिलाफत बाकी रख”, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3762) و رزین (لم اجده) * فیه عبدالوهاب بن عطاء مدلس و عنعن و روی عن ابن معین بانه قال :’’ هذا موضوع و عبد الوهاب : لم یقل فیه حدثنا ثور و لعله دلّس فیه وهو ثقة ‘‘ و فیه علة أخری

٦١٥٩ - (ضَعِيف) وَعنهُ»» أَنه رأى جِبْرِيل مَرَّتَيْنِ وَدَعَا لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم مرَّتَيْنِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6159. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के उन्होंने जिब्राइल को दो मर्तबा देखा है, निज़ रसूल अल्लाह ﷺ ने उन के हक़ में दो मर्तबा दुआ फरमाई| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (3822) * فیه لیث بن ابی سلیم : ضعیف و الثوری مدلس و عنعن و السند منقطع

٦١٦٠ - (حسن) وَعَنْهُ»» أَنَّهُ قَالَ: دَعَا لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يُؤْتِيَنِي اللَّهُ الْحِكْمَة [ص:١٧٣ مرَّتَيْنِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6160. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के उन्होंने ने फ़रमाया: रसूल अल्लाह ﷺ ने दो मर्तबा उन के हक़ में दुआ फरमाई के अल्लाह मुझे हिकमत अता फरमाए| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3823 وقال : حسن غریب)

٦١٦١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي»» هُرَيْرَةَ قَالَ: كَانَ جَعْفَرٌ يُحِبُّ الْمَسَاكِينَ وَيَجْلِسُ إِلَيْهِمْ وَيُحَدِّثُهُمْ وَيُحَدِّثُونَهُ وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُكَنِّيهِ بِأَبِي الْمَسَاكِين. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6161. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जाफर रदियल्लाहु अन्हु मसाकिन से मुहब्बत किया करते थे, उनके वहां बैठा करते थे और वह उन से बात चित किया करते थे, और रसूल अल्लाह ﷺ ने उनकी कुनियत “अबिल मसाकिन‘‘ रखी थी| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3766) [و ابن ماجه (4125 مختصرًا)] * فيه ابراهيم المخزومی : متروک

٦١٦٢ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «رَأَيْتُ جَعْفَرًا يَطِيرُ فِي الْجَنَّةِ مَعَ الْمَلَائِكَةِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

6162. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “मैंने जाफर को जन्नत में फरिश्तो के साथ परवाज़ करते हुए देखा है”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (3763)

٦١٦٣ - (حسن صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْحَسَنُ وَالْحُسَيْنُ سَيِّدَا شباب أهل الْجنَّة» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6163. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “हसन व हुसैन अहले जन्नत के जवानों के सरदार है”| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (3768 وقال : صحيح حسن)

٦١٦٤ - (صَحِيح) وَعَن»» ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ الْحَسَنَ وَالْحُسَيْنَ هُمَا رَيْحَانَيَّ مِنَ الدُّنْيَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَدْ سبَق فِي الْفَصْل الأول

6164. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “हसन व हुसैन दोनों दुनिया में मेरे दो फुल हैं”| तिरमिज़ी यह हदीस फसल ए अव्वल मैं भी गुज़र चुकी है| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (3770 وقال : صحيح) [وهو فی صحيح البخاری (3753)] * و انظر الحديث السابق (6136)

٦١٦٥ - (ضَعِيف) وَعَن»» أسامةَ بنِ زيدٍ قَالَ: طَرَقْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَاتَ لَيْلَةٍ فِي بَعْضِ الْحَاجَةِ فَخَرَجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ مُشْتَمِلٌ عَلَى شَيْءٍ وَلَا أَدْرِي مَا هُوَ فَلَمَّا فَرَغْتُ مِنْ حَاجَتِي قُلْتُ: مَا هَذَا الَّذِي أَنْتَ مُشْتَمِلٌ

عَلَيْهِ؟ فَكَشَفَهُ فَإِذَا الْحَسَنُ وَالْحُسَيْنُ عَلَى وَرِكَيْهِ. فَقَالَ: «هَذَانِ ابْنَايَ وَابْنَا ابْنَتِي اللَّهُمَّ إِنِّي أَحِبُّهُمَا فأحبهما وَأحب من يحبهما» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6165. उसामा बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, एक रात किसी ज़रूरत के तहत में नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ, नबी ﷺ बाहर तशरीफ़ लाए तो आप किसी चीज़ को छुपाए हुए थे, मैं नहीं जानता था के वह क्या चीज़े थी, जब में अपने काम से फारिग़ हुआ तो मैंने अर्ज़ किया: आप ने यह क्या चीज़े छिपा रखी है? आप ने कपड़ा उठाया तो आप के दोनों कूल्हों पर हसन व हुसैन रदियल्लाहु अन्हुमा थे आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये दोनों मेरे बेटे है और मेरी बेटी के बेटे है, ऐ अल्लाह! मैं उन्हें महबूब रखता हूँ तू भी उनसे मुहब्बत फरमा, और उन से मुहब्बत रखने वाले से भी मुहब्बत फरमा”| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (3769 وقال : حسن غريب) و سنده حسن و للحديث شواهد

٦١٦٦ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» سَلْمَى قَالَتْ: دَخَلْتُ عَلَى أُمِّ سَلَمَةَ وَهِيَ تبْكي فَقلت: مَا بيكيك؟ قَالَتْ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - تَعْنِي فِي الْمَنَامِ - وَعَلَى رَأْسِهِ وَلِحْيَتِهِ التُّرَابُ فَقُلْتُ: مَا لَكَ [ص:١٧٣ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: «شَهِدْتُ قَتْلَ الْحُسَيْنِ آنِفًا» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

6166. सलमा बयान करती हैं की मैं उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा के पास गई तो वह रो रही थी, मैंने कहा आप क्यों रो रही है? उन्होंने ने फ़रमाया: मैंने ख्वाब में रसूल अल्लाह ﷺ को देखा तो आप के सर मुबारक और दाढ़ी पर मिट्टी थी, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! आप का क्या हाल है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं अभी अभी हुसैन की शहादत के वाकिए में हाज़िर हुआ था”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3771) * سلمی : لاتعرف و حديث احمد (1 / 283) عن ابن عباس قال :’’ رايت رسول الله صلی الله عليه و آله وسلم فی النوم نصف النهار اشعث اغبر و بيده قارورة فيها دم ، قلت : يا رسول الله ما هذا ؟ قال : هذا دم الحسين و اصحابه ، لم ازل اليوم التقطه ‘‘ سنده حسن ، وهو يغنی عن هذا الحديث الضعيف ، و فی صحيح الحديث شغل عن سقيمه

٦١٦٧ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» أَنَسٍ قَالَ: سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَي بَيْتِكَ أَحَبُّ إِلَيْكَ؟ قَالَ: «الْحَسَنُ وَالْحُسَيْنُ» وَكَانَ يَقُولُ لِفَاطِمَةَ: «ادْعِي لِي ابْنَيَّ» فَيَشُمُّهُمَا وَيَضُمُّهُمَا إِلَيْهِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

6167. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (स) से दरियाफ्त किया गया, आप के अहले बैत में से कोण सा शख़्स आप को सब से ज़्यादा महबूब है? आप (स) ने फ़रमाया: हसन व हुसैन, आप (स) ने फातिमा रदियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया करते थे: मेरे बेटो को बुलाव, आप उन्हें चुमते और इन्हें अपने गले से लगाते| तिरमिज़ी और फ़रमाया यह हदीस गरीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3772) * فيه يوسف بن ابراهيم : ضعيف

٦١٦٨ - (صَحِيح) وَعَنْ»» بُرَيْدَةَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَخْطُبُنَا إِذْ جَاءَ الْحَسَنُ وَالْحُسَيْنُ عَلَيْهِمَا قَمِيصَانِ أَحْمَرَانِ يَمْشِيَانِ وَيَعْثُرَانِ فَنَزَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ الْمِنْبَرِ فَحَمَلَهُمَا وَوَضَعَهُمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ثُمَّ قَالَ: «صَدَقَ اللَّهُ [إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ] نَظَرْتُ إِلَى هَذَيْنِ الصَّبِيَّيْنِ يَمْشِيَانِ وَيَعْثُرَانِ فَلَمْ أَصْبِرْ حَتَّى قَطَعْتُ حَدِيثِي وَرَفَعْتُهُمَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

6168. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ हमें ख़िताब फरमा रहे थे की अचानक हसन व हुसैन रदियल्लाहु अन्हु आए, उन्होंने सुर्ख कुमुसून पहन रखी थी, वह चलते और गिर पड़ते थे, रसूल अल्लाह ﷺ मिम्बर से उतरे उन्हें उठाया और उन्हें अपने सामने बिठाया, फिर फ़रमाया: “अल्लाह ने सच फ़रमाया: “तुम्हारे अमवाल व औलाद बाईस फितने है”, मैंने इन दो बच्चो को चलते और गिरते हुए देखा तो मैं सब्र न कर सका हत्ता कि मैंने अपनी बात काट कर उन्हें उठा लिया”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3774 وقال : حسن غریب) و ابوداؤد (1109) و النسائی (3 / 108 ح 1414)

٦١٦٩ - (ضَعِيف) وَعَن»» يعلى بن مرَّة قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «حُسَيْنٌ مِنِّي وَأَنَا مِنْ حُسَيْنٍ أَحَبَّ اللَّهُ مَنْ أَحَبَّ حُسَيْنًا حُسَيْنٌ سِبَطٌ مِنَ الأسباط» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6169. यअली बिन मरह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “हुसैन मुझ से है और मैं हुसैन से हूँ, जो शख़्स हुसैन से मुहब्बत करता है तो अल्लाह उस से मुहब्बत करे और हुसैन मेरी औलाद से है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3775 وقال : حسن)

٦١٧٠ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ»» عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: الْحَسَنُ أَشْبَهَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا بَيْنَ الصَّدْرِ إِلَى الرَّأْسِ وَالْحُسَيْنُ أَشْبَهَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا كَانَ أَسْفَل من ذَلِك. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6170. अली रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, उन्होंने ने फ़रमाया: हसन रदियल्लाहु अन्हु सीने से लेकर सर तक रसूल अल्लाह ﷺ से मुशाबिहत रखते हैं, जबकि हुसैन रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से उस से निचले हिस्से से मुशाबिहत रखते हैं| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (3779 وقال : حسن غریب) * فیه ابو اسحاق السبیعی : مدلس و عنعن

٦١٧١ - (إِسْنَاده جيد) وَعَن حُذَيْفَة قَالَ: قُلْتُ لِأُمِّي: دَعِينِي آتِي النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأُصَلِّي مَعَهُ الْمَغْرِبَ وَأَسْأَلُهُ أَنْ يَسْتَغْفِرَ لِي وَلَكِ فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَصَلَّيْتُ مَعَهُ الْمَغْرِبَ فَصَلَّى حَتَّى صَلَّى الْعِشَاءَ ثُمَّ انْفَتَلَ فَتَبِعْتُهُ

فَسَمِعَ صَوْتِي فَقَالَ: «مَنْ هَذَا؟ حُذَيْفَةُ؟» قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: «مَا حَاجَتُكَ؟ غَفَرَ اللَّهُ لَكَ وَلِأُمِّكَ إِنَّ هَذَا مَلَكٌ لَمْ يَنْزِلِ الْأَرْضَ قَطُّ قَبْلَ هَذِهِ [ص:١٧٣ اللَّيْلَةِ اسْتَأْذَنَ رَبَّهُ أَنْ يُسَلِّمَ عَلَيَّ وَيُبَشِّرَنِي بِأَنَّ فَاطِمَةَ سَيِّدَةُ نِسَاءِ أَهْلِ الْجَنَّةِ وَأَنَّ الْحَسَنَ وَالْحُسَيْنَ سَيِّدَا شَبَابِ أَهْلِ الْجَنَّةِ» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

6171. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अपनी वालिदा से कहा मुझे छोड़ दे की मैं नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर होकर आप के साथ नमाज़ ए मग़रिब अदा करू, और आप से दरख्वास्त करू के आप तुम्हारे लिए और मेरे लिए दुआएं मगफिरत फरमाइए, मैं नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ, आप के साथ नमाज़ ए मग़रिब अदा की, आप (नफ्ल) नमाज़ पढ़ते रहे हत्ता कि आप ने नमाज़ ए ईशा अदा की, फिर आप वापस घर जाने लगे तो मैं भी आप के पीछे पीछे चल दिया, आप ﷺ ने मेरी आवाज़ सुने तो फ़रमाया: “कौन है? क्या हुज़ैफ़ा है?” मैंने अर्ज़ किया: जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह तुम्हारी और तुम्हारी वालिदा की मगफिरत फरमाए, क्या काम है? (फिर फ़रमाया) यह एक फ़रिश्ता है, जो इस रात से पहले कभी ज़मीन पर नहीं उतरा, उस ने अपने रब से इजाज़त तलब की के वह मुझे सलाम करे और मुझे बशारत सुनाए के फ़ातिमा अहले जन्नत की औरतों की सरदार है, और हसन व हुसैन अहले जन्नत के जवानों के सरदार है”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3781)

٦١٧٢ - (ضَعِيف) وَعَنِ»» ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَامِلًا الْحَسَنَ بْنَ عليٍّ على عَاتِقه فَقَالَ رَجُلٌ: نِعْمَ الْمَرْكَبُ رَكِبْتَ يَا غُلَامُ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَنِعْمَ الرَّاكِبُ هُوَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6172. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ हसन बिन अली रदियल्लाहु अन्हुमा को अपने कंधे पर उठाए हुए थे तो किसी आदमी ने कहा: ए लड़के! क्या खूब सवारी है जिस पर तो सवार है! नबी ﷺ ने फ़रमाया: “सवार भी किया खूब है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (3784 وقال : حسن صحیح) * فیه زمعة بن صالح : ضعیف ، و للحدیث شواهد ضعیفة

٦١٧٣ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ فَرَضَ لِأُسَامَةَ فِي ثَلَاثَةِ آلَافٍ وَخَمْسِمِائَةٍ وَفَرَضَ لِعَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ فِي ثَلَاثَةِ آلَافٍ. فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ لِأَبِيهِ: لِمَ فَضَّلْتَ أُسَامَة عَلَيّ؟ فو الله مَا سَبَقَنِي إِلَى مَشْهَدٍ. قَالَ: لِأَنَّ زَيْدًا كَانَ أَحَبَّ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ أَبِيكَ وَكَانَ أُسَامَةُ أَحَبَّ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْكَ فَآثَرْتُ حِبَّ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى حبي. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6173. उमर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने उसामा रदियल्लाहु अन्हु के लिए साढ़े तीन हज़ार वज़ीफ़ा मुकर्रर किया और अपने बेटे अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा के लिए तीन हज़ार वज़ीफ़ा मुकर्रर फ़रमाया तो अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा ने अपने वालिद से अर्ज़ किया, आप ने उसामा रदियल्लाहु

अन्हु को मुझ पर क्यों फोकियत दि है? अल्लाह की क़सम! उन्होंने किसी मारके में मुझ से सबकत हासिल नहीं की, उन्होंने ने फ़रमाया: इसलिए के ज़ैद रदियल्लाहु अन्हु रसूल अल्लाह ﷺ को तुम्हारे वालिद से ज़्यादा महबूब थे, और उसामा रदियल्लाहु अन्हु रसूल अल्लाह ﷺ को तुम से ज़्यादा महबूब थे, लिहाज़ा मैंने रसूल अल्लाह ﷺ के महबूब को अपने महबूब पर तरजीह दिया है| (हसन)

حسن ، رواہ الترمذی (3813 وقال : حسن غریب)

٦١٧٤ - (ضَعِيف) وَعَن»» جبلة بن حارثة قَالَ: قَدِمْتُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ابْعَثْ مَعِي أَخِي زَيْدًا. قَالَ: «هُوَ ذَا فَإِنِ انْطَلَقَ مَعَكَ لَمْ أَمْنَعْهُ» قَالَ زَيْدٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَاللَّهِ لَا أَخْتَارُ عَلَيْكَ أَحَدًا. قَالَ: فَرَأَيْتُ رَأْيَ أَخِي أَفْضَلَ مِنْ رَأْيِي. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6174. जबलत बिन हारिस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूल अल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मेरे भाई ज़ैद को मेरे साथ भेज दें, आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो हाज़िर है, अगर वह तुम्हारे साथ जाना चाहे तो में उसे मना नहीं करूँगा”, ज़ैद रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैं आप पर किसी को तरजीह नहीं देता, उन्होंने कहा: मैंने अपने भाई की राय को अपने राय से अफ़ज़ल पाया| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ الترمذی (3815 وقال : حسن غریب) * اسماعیل بن ابی خالد مدلس و عنعن و للحدیث شواھد

٦١٧٥ - (حسن) وَعَنْ»» أَسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ قَالَ: لَمَّا ثَقُلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَبَطْتُ وَهَبَطَ النَّاسُ الْمَدِينَةَ فَدَخَلْتُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَدْ أُصْمِتَ فَلَمْ يَتَكَلَّمْ فَجَعَلَ رَسُولُ [ص:١٧٤ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَضَعُ عَلَيّ يَدَيْهِ وَيَرْفَعُهُمَا فَأَعْرِفُ أَنَّهُ يَدْعُو لِي. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

6175. उसामा बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, कि जब रसूल अल्लाह ﷺ बीमारी की वजह से जईफ हो गए तो मैंने और सहाबा किराम ने मदीना में रिहाइश इख़्तियार कर ली, चुनांचे में रसूल अल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो इस वक़्त आप ख़ामोश थे और किसी से कोई बात नहीं कर रहे थे, रसूल अल्लाह ﷺ मुझ पर अपने हाथ मुबारक रखते और उन्हें उठा लेते, मैंने जान लिया के आप मेरे लिए दुआ कर रहे हैं| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ الترمذی (3817)

٦١٧٦ - (حسن) وَعَنْ»» عَائِشَةَ قَالَتْ: أَرَادَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يُنَحِّي مُخَاطَ أَسَامَةَ. قَالَتْ عَائِشَةُ: دَعْنِي حَتَّى أَكُونَ أَنَا الَّذِي أَفْعَلُ. قَالَ: «يَا عَائِشَةُ أَحِبِّيهِ فَإِنِّي أُحِبُّهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6176. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने उसामा रदियल्लाहु अन्हु की नाक साफ़ करना चाही तो आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया, मुझे इजाज़त फरमाइए में साफ़ कर देती हूँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: “आइशा उस से मुहब्बत किया करो क्योंकि उस से में मुहब्बत करता हूँ”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3818 وقال : حسن غریب)

٦١٧٧ - (ضَعِيف) وَعَن»» أَسَامَة قَالَ: كُنْتُ جَالِسًا إِذْ جَاءَ عَلِيٌّ وَالْعَبَّاسُ يستأذنان فَقَالَا لِأُسَامَةَ: اسْتَأْذِنْ لَنَا عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ الله عَلِيٌّ وَالْعَبَّاسُ يَسْتَأْذِنَانِ. فَقَالَ: «أَتَدْرِي مَا جَاءَ بهما؟» قلت: لَا. قَالَ: «لكني أَدْرِي فَأذن لَهما» فدخلا فَقَالَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ جِئْنَاكَ نَسْأَلُكَ أَيُّ أَهْلِكَ أَحَبُّ إِلَيْكَ؟ قَالَ: «فَاطِمَةُ بِنْتُ مُحَمَّدٍ» فَقَالَا: مَا جِئْنَاكَ نَسْأَلُكَ عَنْ أَهْلِكَ قَالَ: " أَحَبُّ أَهْلِي إِلَيَّ مَنْ قَدْ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَأَنْعَمْتُ عَلَيْهِ: أُسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ " قَالَا: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: «ثُمَّ عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ» فَقَالَ الْعَبَّاسُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ جَعَلْتَ عَمَّكَ آخِرَهُمْ؟ قَالَ: «إِنَّ عَلِيًّا سَبَقَكَ بِالْهِجْرَةِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ»» وَذَكَرَ أَنَّ عَمَّ الرَّجُلِ صِنْوُ أَبِيهِ فِي «كتاب الزَّكَاة»

6177. उसामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं (बाबे रिसालत पर) बैठा हुआ था के अली और अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा इजाज़त तलब करने के लिए तशरीफ़ लाए तो उन्होंने उसामा रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: रसूल अल्लाह ﷺ से हमें इजाज़त ले दें, मैंने (अंदर जाकर) अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! अली और अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा अन्दर आने की इजाज़त तलब करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ क्या तुम जानते हो के वह क्यों आए है? मैंने अर्ज़ किया: नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ लेकिन में जानता हूँ, इन दोनों को इजाज़त दे दो”, वह दोनों अन्दर आए तो अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हम आप की खिदमत में यह दरियाफ्त करने के लिए हाज़िर हुए हैं की आप को अपने अहले खाना में से किसी से ज़्यादा मुहब्बत है? आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद ﷺ”| उन्होंने अर्ज़ किया: हम आप की खिदमत में आप के अहले खाना के मुतल्लिक पूछने नहीं आए, आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ मेरे अहल (यानी मर्दों) में से वह शख़्स मुझे ज़्यादा महबूब है जिस पर अल्लाह ने इनाम फ़रमाया और मैंने इनाम किया, उसामा बिन ज़ैद (र अ)”, उन्होंने अर्ज़ किया, फिर कौन? आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ फिर अली बिन अबी तालिब (र)”, अब्बास रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप ने अपने चचा को उन से मोअख़्ख़र कर दिया, आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ इसलिए के अली रदियल्लाहु अन्हु ने आप से पहले हिजरत की”| तिरमिज़ी, और यह बात: “आदमी का चचा उस के वालिद की तरह होता है ‘‘ किताब अल ज़कात में गुज़र चुकी है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3819 وقال : حسن) * حدیث ’’ ان عم الرجل صنو ابیه ‘‘ تقدم (6147) ولم اجده فی کتاب الزکاة

بَابِ مَنَاقِبِ أَهْلِ بَيْتِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ • रसूलुल्लाह ﷺ के घर वालो के मनाकिब का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٦١٧٨ - (صَحِيح) عَن»» عقبةَ بن الْحَارِث قَالَ: صَلَّى أَبُو بَكْرٍ الْعَصْرَ ثُمَّ خَرَجَ يَمْشِي وَمَعَهُ عَلِيٌّ فَرَأَى الْحَسَنَ يَلْعَبُ مَعَ الصِّبْيَانِ فَحَمَلَهُ عَلَى عَاتِقِهِ. وَقَالَ: بِأَبِي شَبِيهٌ بِالنَّبِيِّ [ص:١٧٤ لَيْسَ شَبِيهًا بِعَلِيٍّ وَعَلِيٌّ يَضْحَكُ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

6178. उक्बा बिन हारिस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने नमाज़ ए असर पढ़ी फिर बाहर निकले तो अली रदियल्लाहु अन्हु भी उन के साथ चल रहे थे, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने हसन रदियल्लाहु अन्हु को बच्चो के साथ खेलता हुआ देखा तो उन्हें अपने कंधे पर उठा लिया और फ़रमाया: मेरे वालिद कुरबान हो, उसकी नबी ﷺ से मुशाबिहत है, अली रदियल्लाहु अन्हु से मुशाबिहत नहीं, (ये बात सुन कर) अली रदियल्लाहु अन्हु मुस्कुरा दिए | (बुखारी)

رواه البخارى (3750)

٦١٧٩ - (صَحِيح) وَعَن»» أنس قَالَ: أَتَى عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ زِيَادٍ بِرَأْسِ الْحُسَيْنِ فَجُعِلَ فِي طَسْتٍ فَجَعَلَ يَنْكُتُ وَقَالَ فِي حُسْنِهِ شَيْئًا قَالَ أَنَسٌ: فَقُلْتُ: وَاللَّهِ إِنَّهُ كَانَ أَشْبَهَهُمْ بِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَكَانَ مَخْضُوبًا بِالْوَسِمَةِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ»» وَفِي رِوَايَةِ التِّرْمِذِيِّ قَالَ: كُنْتُ عِنْدَ ابْنِ زِيَادٍ فَجِيءَ بِرَأْسِ الْحُسَيْنِ فَجَعَلَ يَضْرِبُ بِقَضِيبٍ فِي أَنْفِهِ وَيَقُولُ: مَا رَأَيْتُ مِثْلَ هَذَا حسنا. فَقلت: أما إِنَّهُ كَانَ أَشْبَهَهُمْ بِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ صَحِيحٌ حَسَنٌ غَرِيب

6179. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हुसैन रदियल्लाहु अन्हु के सर को उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद के पास लाया गया तो उसे एक तश्ती में रख दिया गया, वह (छड़ी के साथ) मारने लगा और उस ने उन के हुस्न के बारे में कुछ कहा, अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने कहा अल्लाह की क़सम! वह सबसे ज़्यादा रसूल अल्लाह ﷺ के मुशाबह (अनुरूप) थे, और इस वक़्त उन के सर मुबारक पर वसमा लगा हुआ था| तिरमिज़ी की रिवायत में है उन्होंने कहा: में इब्ने ज़ियाद के पास था के हुसैन रदियल्लाहु अन्हु का सर लाया गया तो वह आप की नाक पर छड़ी मारने लगा, और कहने लगा मैंने ऐसा हुस्न नहीं देखा, मैंने कहा सुन ले यह रसूल अल्लाह ﷺ के साथ सबसे ज़्यादा मुशाबिहत रखते थे| उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस सहीह हसन ग़रीब है| (सहीह)

رواه البخارى (3748) و الترمذى (3778)

٦١٨٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أمِّ»» الْفضل بنت الْحَارِث أَنَّهَا دَخَلْتُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ: يَا

رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي رَأَيْتُ حُلْمًا مُنْكَرًا اللَّيْلَةَ. قَالَ: «وَمَا هُوَ؟» قَالَتْ: إِنَّهُ شَدِيدٌ قَالَ: «وَمَا هُوَ؟» قَالَتْ: رَأَيْتُ كَأَنَّ قِطْعَةً مِنْ جَسَدِكَ قُطِعَتْ وَوُضِعَتْ فِي حِجْرِي. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «رَأَيْتِ خَيْرًا تَلِدُ فَاطِمَةُ إِنْ شَاءَ اللَّهُ غُلَامًا يَكُونُ فِي حِجْرِكِ» . فَوَلَدَتْ فَاطِمَةُ الْحُسَيْنَ فَكَانَ فِي حِجْرِي كَمَا قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَدَخَلْتُ يَوْمًا عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَوَضَعْتُهُ فِي حِجْرِهِ ثُمَّ كَانَتْ مِنِّي الْتِفَاتَةٌ فَإِذَا عَيْنَا رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَهْرِيقَانِ الدُّمُوعَ قَالَتْ: فَقُلْتُ: يَا نبيَّ الله بِأَبِي أَنْت وَأمي مَالك؟ قَالَ: " أَتَانِي جِبْرِيل عَلَيْهِ السَّلَامُ فَأَخْبَرَنِي أَنَّ أُمَّتِي سَتَقْتُلُ ابْنِي هَذَا فَقُلْتُ: هَذَا؟ قَالَ: نَعَمْ وَأَتَانِي بِتُرْبَةٍ من تربته حَمْرَاء "

6180. उम्म अल फ़ज़्ल बिन्ते हारिस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के वह रसूल अल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैंने रात एक अजीब सा ख्वाब देखा है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो क्या है?” उन्होंने अर्ज़ किया, वह बहोत शदीद है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो क्या है?” उन्होंने अर्ज़ किया, मैंने देखा के गोया गोश्त का एक टुकड़ा है जो आप के जिस्म अतहर से काट कर मेरी गोद में रख दिया गया है, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “तुमने खैर देखी है, इंशाअल्लाह फ़ातिमा बच्चे को जन्म देगी और वह तुम्हारी गोद में होगा”, फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा ने हुसैन रदियल्लाहु अन्हु को जन्म दिया और वह मेरी गोद मैं था जैसे रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया था, एक रोज़ में रसूल अल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुई तो मैंने हुसैन रदियल्लाहु अन्हु को आप की गोद में रख दिया, फिर मैं किसी और तरफ मुतवज्जे हो गई, अचानक देखा तो रसूल अल्लाह ﷺ की आंखो से आंसू रवाह थे, वह बयान करती हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के नबी! मेरे वालिदेन आप पर कुर्बान हो! आप को क्या हुआ? आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिब्राइल अलैहिस्सलाम मेरे पास तशरीफ़ लाए और उन्होंने मुझे बताया की मेरी उम्मत अनकरीब मेरे इस बेटे को शहीद कर देगी, मैंने कहा इस (बच्चे) को उन्होंने कहा: हाँ, और उन्होंने मुझे इस (जगह) की सुर्ख मिट्टी ला कर दी”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى دلائل النبوة (6 / 469) [و صححه الحاكم على شرط الشيخين (3 / 176177 ، 179) فقال الذهبى :'' قلت : بل منقطع ضعيف فان شدادًا لم يدرک ام الفضل و محمد بن مصعب : ضعيف '']

٦١٨١ - (صَحِيح) وَعَن»» ابْن عَبَّاس قَالَ: رَأَيْت النَّبِي صلى الله عَلَيْهِ وسل فِيمَا يَرَى النَّائِمُ ذَاتَ يَوْمٍ بِنِصْفِ النَّهَارِ أَشْعَثَ أَغْبَرَ بِيَدِهِ قَارُورَةٌ فِيهَا دَمٌ فَقُلْتُ: بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي مَا هَذَا؟ قَالَ: «هَذَا دَمُ الْحُسَيْنِ وَأَصْحَابِهِ وَلَمْ أَزَلْ أَلْتَقِطُهُ مُنْذُ الْيَوْم» فأحصي ذَلِك الْوَقْت فأجد قبل ذَلِكَ [ص:١٧٤ الْوَقْتِ. رَوَاهُمَا الْبَيْهَقِيُّ فِي «دَلَائِلِ النُّبُوَّةِ» وَأحمد الْأَخير

6181. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के उन्होंने कहा: मैंने एक रोज़ दोपहर के वक़्त नबी ﷺ को ख्वाब में देखा के आप के बाल परान्दा हैं और जिस्मे अतहर गुबार आलूद है, आप के हाथ में खून की बोटल है, मैंने अर्ज़ किया: मेरे वालिदेन आप पर कुरबान हो, यह क्या है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये हुसैन और उन के साथियो का खून है, मैं आज सुबह से इसे इकट्ठा कर रहा हूँ”, मैंने इस वक़्त को याद रखा और बाद में मुझे मालुम हुआ की इसी वक़्त उन्हें शहीद किया गया था, दोनों अहादीस को बयहकी ने दलाइलुल नबुवा में रिवायत किया है और आखिरी हदीस को इमाम अहमद ने भी रिवायत किया है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه البيهقى فى دلائل النبوة (6 / 471) و احمد (1 / 242 ح 2165)

٦١٨٢ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْهُ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَحِبُّوا اللَّهَ لِمَا يَغْذُوكُمْ مِنْ نِعَمِهِ فَأَحِبُّونِي لِحُبِّ اللَّهِ وَأَحِبُّوا أَهْلَ بَيْتِي لحبِّي» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6182. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह से मुहब्बत करो की उस ने तुम्हें नेअमतो से नवाज़ा है, और अल्लाह की मुहब्बत की खातिर मुझ से मुहब्बत करो और मेरी मुहब्बत की खातिर मेरे अहले बैत से मुहब्बत करो”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3789 وقال : حسن غريب)

٦١٨٣ - (ضَعِيف) وَعَن»» أبي ذرٍ أَنَّهُ قَالَ وَهُوَ آخِذٌ بِبَابِ الْكَعْبَةِ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «أَلَا إِنَّ مِثْلَ أَهْلِ بَيْتِي فِيكُمْ مِثْلُ سَفِينَةِ نُوحٍ مَنْ رَكِبَهَا نَجَا وَمَنْ تَخَلَّفَ عَنْهَا هلك» . رَوَاهُ أَحْمد

6183. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने कहा: इस हाल में के वह काबा के दरवाज़े को पकड़े हुए थे, मैंने नबी ﷺ को फरमाते हुए सुना: “सुन लो! तुम में मेरे अहले बैत की मिसाल कश्ती नुह की तरह है, जो उस में सवार हो गया वह निजात पा गया और जो उस से रह गया वह हलाक हो गया”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد فی فضائل الصحابة (2 / 785 ح 1402 ، زيادات القطيعی ، ليس فيه احمد ولا ابنه) [و الحاكم (3 / 150 ، 2 / 343)] * فيه المفضل بن صالح النخاس الاسدی : ضعيف ، وابوه اسحاق السبيعی مدلس و عنعن و للحديث شواهد ضعيفة

بَابُ مَنَاقِبِ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ • नबी ए करीम ﷺ की अजवाज़ रदी अल्लाहु अन्हुम अजमईंन के मनाकब का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٦١٨٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «خَيْرُ نِسَائِهَا مَرْيَمُ بِنْتُ عِمْرَانَ وَخَيْرُ نِسَائِهَا خَدِيجَةُ بِنْتُ خُوَيْلِدٍ» مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ»» وَفِي رِوَايَةٍ قَالَ أَبُو كُرَيْبٍ: وَأَشَارَ وَكِيعٌ إِلَى السَّمَاء وَالْأَرْض

6184. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूल अल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “(अपने ज़माने में) मरयम बिन्ते इमरान सबसे बेहतर खातून थी और (इस ज़माने में) ख़दीजा बिन्ते खुवयलिद सबसे बेहतर खातून है”| एक दूसरी रिवायत में है: अबू कुरैब बयान करते हैं, वकीअ रहिमहुल्लाह ने आसमान और ज़मीन की तरफ इरशाद फ़रमाया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (3432) و مسلم (69 / 2430)، (6271)

٦١٨٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: أَتَى جِبْرِيلُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «يَا رسولَ اللَّهِ هَذِهِ خَدِيجَةُ قَدْ أَتَتْ مَعَهَا إِنَاءٌ فِيهِ إِدام وَطَعَام فَإِذَا أَتَتْكَ فَاقْرَأْ عَلَيْهَا السَّلَامَ مِنْ رَبِّهَا وَمِنِّي وَبَشِّرْهَا بِبَيْتٍ فِي الْجَنَّةِ مِنْ قَصَبٍ لَا صَخَبَ فِيهِ وَلَا نَصَبَ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

6185. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जिब्राइल अलैहिस्सलाम नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए तो उन्होंने अर्ज़ किया,: “अल्लाह के रसूल! ख़दीजा रदियल्लाहु अन्हा आ रही है, उन के पास एक बर्तन है जिस में सालन है और खाना है, जब वह आप के पास आई तो उन के रब की तरफ से और मेरी तरफ से उन्हें सलाम कहना, और उन्हें जन्नत में खोलदार मोती के घर की बशारत देना जिस में कोई शोरो शगब होगा कोई थकान होगी”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (3820) و مسلم (71 / 2432)، (6273)

٦١٨٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: مَا غِرْتُ عَلَى أَحَدٍ مِنْ نِسَاءِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا غِرْتُ عَلَى خَدِيجَةَ وَمَا رَأَيْتُهَا وَلَكِنْ كَانَ يُكْثِرُ ذِكْرَهَا وَرُبَّمَا ذَبَحَ الشَّاةَ ثُمَّ يُقَطِّعُهَا أَعْضَاءً ثُمَّ يَبْعَثُهَا فِي صدائق خَدِيجَة فَيَقُول: «إِنَّهَا كَانَت وَكَانَت وَكَانَتْ وَكَانَ لِي مِنْهَا وُلْدٌ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

6186. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने नबी ﷺ की किसी ज़ौजा ए मोहतरमा के बारे में इतना रश्क नहीं किया जितना ख़दीजा रदियल्लाहु अन्हु के मुआमले में किया, हालाँकि मैंने उन्हें देखा नहीं, लेकिन आप अक्सर उनका ज़िक्र किया करते थे, बसा-अवक़ात आप बकरी जिबह करते फिर उस के टुकड़े करते फिर उन्हें ख़दीजा की सहेलियों के यहाँ भेजते थे, कभी कभार में आप से यूँ अर्ज़ करती: गोया दुनिया में ख़दीजा के सिवा कोई औरत ही नहीं, आप ﷺ फरमाते: “वो ऐसी थी वह ऐसी थी और उन से मेरी औलाद है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (3818) و مسلم (75 / 2435)، (6278)

٦١٨٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أبي سَلمَة أَنَّ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا عَائِشُ هَذَا جِبْرِيلُ يُقْرِئُكِ السَّلَامَ» . قَالَتْ: وَعَلَيْهِ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللَّهِ. قَالَتْ: وَهُوَ يَرَى [ص:١٧٤ مَا لَا أَرَى مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

6187. अबू सलमा से रिवायत है के आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “आइशा जिब्राइल अलैहिस्सलाम तुम्हें सलाम कहते हैं”, उन्होंने ने फ़रमाया: व अलय्कुम अस्सलाम व रहमतुल्लाह! और उन्होंने ने फ़रमाया: जो चीज़े आप देखते थे वह मुझे नज़र नहीं आती थी| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (3768) و مسلم (90 / 2447)، (6301)

٦١٨٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: " أُرِيتُكِ فِي الْمَنَامِ ثَلَاثَ لَيَالٍ يَجِيءُ بِكِ الْمَلَكُ فِي سَرَقَةٍ مِنْ حَرِيرٍ فَقَالَ لِي: هَذِهِ امْرَأَتُكَ فَكَشَفْتُ عَنْ وَجْهِكِ الثَّوْبَ فَإِذَا أَنْتِ هِيَ. فَقُلْتُ: إِنْ يَكُنْ هَذَا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ يُمْضِهِ ". مُتَّفق عَلَيْهِ

6188. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “तुम मुझे ख्वाब में तीन राते दिखाई गई, फ़रिश्ता रेशम के टुकड़े में तुम्हें उठाए हुए हैं और उस ने मुझे कहा: यह आप की अहलिया है, मैंने तुम्हारे चेहरे से कपड़ा उठाया तो वह आप थी”, मैंने कहा अगर यह ख्वाब अल्लाह की तरफ से है तो वह इसे पूरा फरमादेगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3895) و مسلم (79 / 2438)، (6283)

٦١٨٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهَا قَالَتْ: إِنَّ النَّاسَ كَانُوا يَتَحَرَّوْنَ بِهَدَايَاهُمْ يَوْمَ عَائِشَةَ يَبْتَغُونَ بِذَلِكَ مَرْضَاةَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. وَقَالَتْ: إِنَّ نِسَاءَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كُنَّ حِزْبَيْنِ: فَحِزْبٌ فِيهِ عَائِشَةُ وَحَفْصَةُ وَصَفِيَّةُ وَسَوْدَةُ وَالْحِزْبُ الْآخَرُ أُمُّ سَلَمَةَ وَسَائِرُ نِسَاءِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَلَّمَ حِزْبُ أُمِّ سَلَمَةَ فَقُلْنَ لَهَا: كَلِّمِي رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُكَلِّمُ النَّاسَ فَيَقُولُ: مَنْ أَرَادَ أَنْ يُهْدِيَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلْيُهْدِهِ إِلَيْهِ حَيْثُ كَانَ. فَكَلَّمَتْهُ فَقَالَ لَهَا: «لَا تُؤْذِينِي فِي عَائِشَةَ فَإِنَّ الْوَحْيَ لَمْ يَأْتِنِي وَأَنَا فِي ثَوْبِ امْرَأَةٍ إِلَّا عَائِشَةَ» . قَالَتْ: أَتُوبُ إِلَى الله من ذَاك يَا رَسُولَ اللَّهِ ثُمَّ إِنَّهُنَّ دَعَوْنَ فَاطِمَةَ فَأَرْسَلْنَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَلَّمَتْهُ فَقَالَ: «يَا بُنَيَّةُ أَلَا تُحِبِّينَ مَا أُحِبُّ؟» قَالَتْ: بَلَى. قَالَ: «فَأَحِبِّي هَذِهِ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ»» وَذَكَرَ حَدِيثُ أَنَسٍ «فَضْلَ عَائِشَةَ عَلَى النِّسَاءِ» فِي بَابِ «بَدْءِ الْخَلْقِ» بِرِوَايَةِ أَبِي مُوسَى

6189. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, कि सहाबा किराम अपने तहाईफ पेश करने के लिए आइशा रदियल्लाहु अन्हा की बारी का दिन तलाश किया करते थे और वह उस के ज़रिए रसूल अल्लाह ﷺ की ख़ुशी हासिल करना चाहते थे, और उन्होंने कहा: रसूल अल्लाह ﷺ की अज़वाज ए मूतहरात के दो गिरोह थे, एक गिरोह में आइशा हफ्सा, सफिया और सवदा रदियल्लाहु अन्हुमा थी जबकि दूसरे गिरोह में उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा और रसूल अल्लाह ﷺ की बाकी अज़वाज ए मूतहरात थी, उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा के गिरोह ने मशवरा किया और उन्होंने उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा से कहा के आप रसूल अल्लाह ﷺ से बात करे के आप लोगों से फरमादे की जो शख़्स रसूल अल्लाह ﷺ की खिदमत में हदिया भेजना चाहे तो वह आप की खिदमत मे वहीँ हदिया भेजे जहाँ आप तशरीफ़ फरमा हो, उन्होंने (उम्मे सलमा (रअ)) ने आप से बात की तो आप ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: “मुझे आइशा के बारे में तकलीफ न पहुँचाओ, क्योंकि आइशा के अलावा किसी ज़ौजा ए मोहतरमा के कपड़े में मुझ पर वही नहीं आती”, उन्होंने (उम्मे सलमा (रअ)) ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप को तकलीफ पहुँचाने की वजह से में अल्लाह के हुज़ूर तौबा करती हूँ, फिर उन्होंने फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा को बुलाया और उन्हें रसूल अल्लाह ﷺ की तरफ भेजा उन्होंने आप से बात की तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “बेटी! क्या तुम वह चीज़ पसंद नहीं करती हो जो में पसंद करता हूँ ?” उन्होंने अर्ज़ किया, क्यों नहीं! ज़रूर (पसंद करती हूँ) आप ﷺ ने फ़रमाया: “इस (आइशा (र)) से मुहब्बत करो”| और अनस (र) से मरवी हदीस

فَضْلَ عَائِشَةَ عَلَى النِّسَاءِ (आइशा की दूसरी औरतो पर फज़ीलत) बाब بدء الخلق में अबू मूसा (र) की सनद से ज़िक्र की गई है. (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (2581) و مسلم (83 / 2442)، (6290) 0 حديث انس تقدم (5724)

بَابُ مَنَاقِبِ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ • नबी ए करीम ﷺ की अजवाज़ रदी अल्लाहु अन्हुम अजमईन के मनाकब का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٦١٩٠ - (صَحِيح) عَنْ أَنَسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «حَسْبُكَ مِنْ نِسَاءِ الْعَالَمِينَ مَرْيَمُ بِنْتُ عِمْرَانَ وَخَدِيجَةُ بِنْتُ خُوَيْلِدٍ وَفَاطِمَةُ بِنْتُ محمَّد وآسية امْرَأَة فِرْعَوْن» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6190. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “ जहान की औरतों में से (कमाल के एतबार से) मरयम बिन्ते इमरान, ख़दीजा बिन्ते खुवयलिद, फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद ﷺ और आसिया जौजा फिरोन रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन तुम्हारे लिए काफी हैं”| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذى (3878 وقال : حسن صحيح غريب)

٦١٩١ - (صَحِيح) وَعَن عَائِشَة أَن جِبْرِيل جَاءَ بِصُورَتِهَا فِي خِرْقَةِ حَرِيرٍ خَضْرَاءَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «هَذِهِ زَوْجَتُكَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَة» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

6191. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के जिब्राइल अलैहिस्सलाम सब्ज़ रेशमी कपड़े में मेरी तस्वीर लेकर रसूल अल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया,: “ये दुनिया व आखिरत में आप की ज़ौजा ए मोहतरमा हैं”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (3880 وقال : حسن غريب)

٦١٩٢ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: بَلَغَ صَفِيَّةَ أَنَّ حَفْصَةَ قَالَتْ: بِنْتُ يَهُودِيٍّ فَبَكَتْ فَدَخَلَ عَلَيْهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهِيَ تَبْكِي فَقَالَ: «مَا يُبْكِيكِ؟» فَقَالَتْ: قَالَتْ لِي حَفْصَةُ: إِنِّي ابْنَةُ يَهُودِيٍّ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «إِنَّك ابْنة نَبِيٍّ وَإِنَّ عَمَّكِ لَنَبِيٌّ وَإِنَّكِ لَتَحْتَ نَبِيٍّ فَفِيمَ تَفْخَرُ عَلَيْكِ؟» ثُمَّ قَالَ: «اتَّقِي اللَّهَ يَا حَفْصَة» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ

6192. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, सफिया रदियल्लाहु अन्हा को पता चला के हफ्सा रदियल्लाहु अन्हा ने (इन्हें) कहा है: यहूदी की बेटी, वह रोने लगी, नबी ﷺ उन के पास आए तो वह रो रही थी, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम क्यों रो रही हो?” उन्होंने अर्ज़ किया, हफ्सा रदियल्लाहु अन्हा ने मुझे कहा है की मैं यहूदी की बेटी हूँ, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “तुम एक नबी की बेटी हो, तुम्हारा चचा भी नबी और तुम नबी की अहलिया भी हो, वह किसी बारे में तुम से फख्र करती हैं ?” फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “हफ्स! अल्लाह से डरती रहो”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه الترمذی (3894 وقال : حسن صحیح غریب) و النسائی فی الکبری (8919)

٦١٩٣ - (إِسْنَاده جيد) وَعَنْ أُمِّ سَلَمَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَعَا فَاطِمَةَ عَامَ الْفَتْحِ فَنَاجَاهَا فَبَكَتْ ثُمَّ حَدَّثَهَا فَضَحِكَتْ فَلَمَّا تُوُفِّيَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَأَلْتُهَا عَنْ بُكَائِهَا وَضَحِكِهَا. قَالَتْ: أَخْبَرَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ يَمُوتُ فَبَكَيْتُ ثُمَّ أَخْبَرَنِي أَنِّي سَيِّدَةُ نِسَاءِ أَهْلِ الْجَنَّةِ إِلَّا مَرْيَمَ بِنْتَ عِمْرَانَ فَضَحِكْتُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

6193. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के फतह मक्का के साल रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा को बुलाया और उन से सरगोशी फरमाई तो वह रो पड़ी, फिर उन से कोई बात की तो वह हंस पड़ी, जब रसूल अल्लाह ﷺ ने वफात पाई तो मैंने उन के रोने और उनकी हंसी के मुतल्लिक उन से दरियाफ्त किया तो उन्होंने कहा: रसूल अल्लाह ﷺ ने मुझे बताया था की मैं फौत हो जाऊंगा तो मैं रो पड़ी, फिर आप ﷺ ने मुझे बताया की मरयम बिन्ते इमरान के अलावा अहले जन्नत की औरतों की में सरदार हूँ”, उस पर में हँस दीया| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3873)

بَابُ مَنَاقِبِ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ • नबी ए करीम ﷺ की अजवाज़ रदी अल्लाहु अन्हुम अजमईन के मनाकब का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٦١٩٤ - (صَحِيح) عَن»» أَبِي مُوسَى قَالَ: مَا أَشْكَلَ عَلَيْنَا أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَدِيثٌ قَطُّ فَسَأَلْنَا عَائِشَةَ إِلَّا وَجَدْنَا عِنْدَهَا مِنْهُ عِلْمًا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ. وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ غَرِيب

6194. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है उन्होंने ने फ़रमाया: हम पर यानी रसूल अल्लाह ﷺ के सहाबा पर जब भी कोई हदीस मुश्तबाह हो जाती तो हम आइशा रदियल्लाहु अन्हा से दरियाफ्त करते तो हम उस के

मुतल्लिक उन के वहां इल्म पाते थे| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3883)

٦١٩٥ - (صَحِيح) وَعَنْ»» مُوسَى بْنِ طَلْحَةَ قَالَ: مَا رَأَيْتُ أَحَدًا أَفْصَحَ مِنْ عَائِشَةَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ غَرِيبٌ

6195. मुसई बिन तल्हा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि हमने फ़साहत व बलाग़त में आइशा रदियल्लाहु अन्हा से बढ़कर किसी को नहीं देखा| इसे इमाम तिरमिज़ी ने रिवायत किया है, और इसे हसन सहीह ग़रीब कहा है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (3884) * فیه عبد الملک بن عمیر مدلس و عنعن و المفهوم صحیح

بَاب جَامع المناقب • मनाकिब का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٦١٩٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن عبد الله بن عمر قَالَ: رَأَيْتُ فِي الْمَنَامِ كَأَنَّ فِي يَدِي سراقة مِنْ حَرِيرٍ لَا أَهْوِي بِهَا إِلَى مَكَانٍ فِي الْجَنَّةِ إِلَّا طَارَتْ بِي إِلَيْهِ فَقَصَصْتُهَا عَلَى حَفْصَةَ فَقَصَّتْهَا حَفْصَةُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «إِنَّ أَخَاكِ رَجُلٌ صَالِحٌ - أَوْ إِنَّ عَبْدَ اللَّهِ رَجُلٌ صَالح -» . مُتَّفق عَلَيْهِ

6196. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने ख्वाब में देखा के गोया मेरे हाथ में रेशम का एक टुकड़ा है, मैं जन्नत में जिस जगह जाने का क़सद करता हूँ तो वह मुझे उड़ा कर वहां ले जाता है, मैंने हफ्सा रदियल्लाहु अन्हा से इस का ज़िक्र किया तो हफ्सा रदियल्लाहु अन्हा ने नबी ﷺ से इस का ज़िक्र किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हारा भाई नेक आदमी है, या फ़रमाया: “अब्दुल्लाह नेक आदमी है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (7015) و مسلم (139 / 2478)، (6369)

٦١٩٧ - (صَحِيح) وَعَن حذيفة قَالَ: إِنَّ أَشْبَهَ النَّاسِ دَلًّا وَسَمْتًا وَهَدْيًا بِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَابْنُ أم عبدٍ مِنْ حِينِ يَخْرُجُ مِنْ بَيْتِهِ إِلَى أَنْ يرجع إِلَيْهِ لَا تَدْرِي مَا يصنع أَهله إِذا خلا. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

6197. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, चाल ढाल और सीरत व हिदायत (सुझाव) में रसूल अल्लाह ﷺ से सबसे ज़्यादा मुशाबह (अनुरूप) इब्ने उम्म अब्द (अब्दुल्लाह बिन मसउद (र)) है, और उन के घर से निकलने से लेकर वापस घर जाने तक हमें सूरत रहती है, जब वह अपने अहले खाना के साथ खलवत में होते हैं तो मालुम नहीं के क्या करते हैं| (बुखारी)

رواه البخاری (6097)

٦١٩٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ قَالَ: قَدِمْتُ أَنَا وَأَخِي مِنَ الْيَمَنِ فَمَكَثْنَا حِينًا مَا نَرَى إِلَّا أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ مَسْعُودٍ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ بَيْتِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِمَا نُرَى مِنْ دُخُولِهِ وَدُخُولِ أُمِّهِ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

6198. अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं और मेरा भाई यमन से वापस आए तो कुछ मुद्दत तक हम यही समझते रहे के अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ के अहले बैत के एक फर्द है, वह इसलिए कि उनका और उनकी वालिदा का बकसरत नबी ﷺ के पास आना जाना हम देखा करते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3763) و مسلم (110 / 2460)، (6326)

٦١٩٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " استقرؤوا الْقُرْآنَ مِنْ أَرْبَعَةٍ: مِنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ وَسَالِمٍ مَوْلَى أَبِي حُذَيْفَةَ وَأُبَيِّ بْنِ كَعْب ومعاذ بن جبل ". مُتَّفق عَلَيْهِ

6199. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “चार हज़रात, अब्दुल्लाह बिन मसउद, अबू हुज़ैफ़ा के आज़ाद करदा गुलाम सालिम, उबई बिन काब और मुआज़ बिन जबल से कुरान की तालीम हासिल करो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3706) و مسلم (117 / 2464)، (6335)

٦٢٠٠ - (صَحِيح) وَعَن علقمةَ قَالَ: قَدِمْتُ الشَّامَ فَصَلَّيْتُ رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ قُلْتُ: اللَّهُمَّ [ص:١٧٤ يَسِّرْ لِي جَلِيسًا صَالِحًا فَأَتَيْتُ قَوْمًا فَجَلَسْتُ إِلَيْهِمْ فَإِذَا شَيْخٌ قَدْ جَاءَ حَتَّى جَلَسَ إِلَى جَنْبِي قُلْتُ: مَنْ هَذَا؟ قَالُوا: أَبُو الدَّرْدَاءِ. قُلْتُ: إِنِّي دَعَوْتُ اللَّهَ أَنْ يُيَسِّرَ لِي جَلِيسًا صَالِحًا فَيَسَّرَكَ لِي فَقَالَ: مَنْ أَنْتَ؟ قُلْتُ: مِنْ أَهْلِ الْكُوفَةِ. قَالَ: أَو لَيْسَ عنْدكُمْ ابْن أمِّ عبد صَاحب النَّعْلَيْنِ وَالْوِسَادَةِ وَالْمَطْهَرَةِ وَفِيكُمُ الَّذِي أَجَارَهُ اللَّهُ مِنَ الشَّيْطَانِ عَلَى لِسَانِ نَبِيِّهِ؟ يَعْنِي عَمَّارًا أَوْ لَيْسَ فِيكُمْ صَاحِبُ السِّرِّ الَّذِي لَا يعلمُه غيرُه؟ يَعْنِي حُذَيْفَة. رَوَاهُ البُخَارِيّ

6200. अल्कमा रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैं शाम पहुंचा तो मैंने दो रक्अत नमाज़ पढ़ कर दुआ की: ऐ अल्लाह! मुझे किसी स्वालेह साथी की हम नशीनी नसीब फरमा, मैं लोगों के पास आया और उन के पास बैठ गया, चुनांचे एक बुज़ुर्ग आए और वह मेरे पहलु में बैठ गए, मैंने कहा: यह कौन साहब है? उन्होंने बताया: अबू दरदा है, मैंने कहा: मैंने अल्लाह से दुआ की थी के वह मुझे किसी स्वालेह शख़्स की हम नशीनी नसीब फरमाए, तो उस ने मुझे आप की हम नशीनी दी, उन्होंने मुझसे पूछा: आप कौन है? मैंने कहा कूफी हूँ, उन्होंने कहा: क्या तुम्हारे वहां इब्ने उम्म अब्द (अब्दुल्लाह बिन मसउद (र)) साहब अल नालेन साहब सादा व मुताहर्रा (नबी ﷺ के नालेन उठाने वाले, आप का बिस्तर दुरुस्त करने वाले और आप के वुज़ू के लिए पानी का इह्तेमाम करने वाले) नहीं है? और तुम में वह भी है जिन्हें अल्लाह ने अपने नबी की दुआ के ज़रिए शैतान से पनाह दे दी है यानी अम्मार बिन यासिर, क्या तुम में राज़दान नहीं है? उन राज़ो को इन के सिवा कोई नहीं जानता यानी हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु | (बुखारी)

رواه البخاری (3742)

٦٢٠١ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أُرِيتُ الْجَنَّةَ فَرَأَيْتُ امْرَأَةَ أَبِي طَلْحَةَ وَسَمِعْتُ خَشْخَشَةً أَمَامِي فَإِذَا بِلَالٌ» . رَوَاهُ مُسلم

6201. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “मुझे जन्नत दिखाई गई मैंने अबू तल्हा रदियल्लाहु अन्हु की अहलिया देखी, और अपने आगे बिलाल के जूतो की आवाज़ सुनी”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (106 / 2457)، (6321)

٦٢٠٢ - (صَحِيح) وَعَن سعد قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سِتَّةَ نَفَرٍ فَقَالَ الْمُشْرِكُونَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم: اطرد هَؤُلَاءِ لَا يجترؤون عَلَيْنَا. قَالَ: وَكُنْتُ أَنَا وَابْنُ مَسْعُودٍ وَرَجُلٌ مِنْ هُذَيْلٍ وَبِلَالٌ وَرَجُلَانِ لَسْتُ أُسَمِّيهِمَا فَوَقَعَ فِي نَفْسِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا شَاءَ اللَّهُ أَنْ يَقَعَ فَحَدَّثَ نَفْسَهُ فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: [وَلَا تَطْرُدِ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ] . رَوَاهُ مُسلم

6202. साअद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम छे लोग नबी ﷺ के साथ थे, मुशरिकीन ने नबी ﷺ से कहा के उन लोगों को यहा इसे दूर कर दो और यह हमारी मौजूदगी में आने की जिरात (जुर्रत) न करे, रावी बयान करते हैं, (उन में) इब्ने मसउद, हुज़िल कबिले का एक आदमी, बिलाल और दो आदमी और थे जिन का में नाम नहीं लेता, अल्लाह ने जो चाहा रसूल अल्लाह ﷺ का दिल में ख़याल आया और आप ने अपने दिल में कोई बात सोची तो अल्लाह ने यह आयत नाज़िल फरमाई: “आप उन लोगों को दूर न करे जो सुबह व शाम अपने रब को, उसकी रज़ामंदी के हुसूल के लिए पुकारते रहते है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (46 / 2413)، (6241)

٦٢٠٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي مُوسَى أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَهُ: «يَا أَبَا مُوسَى لَقَدْ أَعْطِيْتَ مِزْمَارًا مِنْ مَزَامِيرِ آل دَاوُد» . مُتَّفق عَلَيْهِ

6203. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: “अबू मूसा! आप को आले दावुद कि सी खुश आवाज़ अता की गई है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (5048) و مسلم (235 / 793)، (1852)

٦٢٠٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أنس قَالَ: جَمَعَ الْقُرْآنَ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم أَرْبَعَةٌ: أَبَيُّ بْنِ كَعْبٍ وَمُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ وَزَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ وَأَبُو زَيْدٍ قِيلَ لِأَنَسٍ: مَنْ أَبُو زَيْدٍ؟ قَالَ: أحد عمومتي. مُتَّفق عَلَيْهِ

6204. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ के अहद में चार लोगों ने कुरान को जमा कर लिया था, उबई बिन काब, मुआज़ बिन जबल, ज़ैद बिन साबित और अबू ज़ैद (र), अनस रदियल्लाहु अन्हु से पूछा गया: अबू ज़ैद कौन है उन्होंने ने फ़रमाया: मेरे एक चचा है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (3810) و مسلم (119 / 2460)، (6340)

٦٢٠٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن خبّاب بن الأرتِّ قَالَ: هَاجَرْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَبْتَغِي [ص:١٧٤ وَجْهَ اللَّهِ تَعَالَى فَوَقَعَ أَجْرُنَا عَلَى اللَّهِ فَمِنَّا مَنْ مَضَى لَمْ يَأْكُلْ مَنْ أَجْرِهِ شَيْئًا مِنْهُمْ: مُصْعَبُ بْنُ عُمَيْرٍ قُتِلَ يَوْمَ أُحُدٍ فَلَمْ يُوجَدْ لَهُ مَا يُكَفَّنُ فِيهِ إِلَّا نَمِرَةٌ فَكُنَّا إِذَا غطينا بهَا رَأْسَهُ خَرَجَتْ رِجْلَاهُ وَإِذَا غَطَّيْنَا رِجْلَيْهِ خَرَجَ رَأْسُهُ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «غطوا بهَا رَأسه وَاجْعَلُوا على رجلَيْهِ الْإِذْخِرِ» . وَمِنَّا مَنْ أَيْنَعَتْ لَهُ ثَمَرَتُهُ فَهُوَ يهدبها. مُتَّفق عَلَيْهِ

6205. खबाब बिन अरत्त रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हमने रसूल अल्लाह ﷺ के साथ हिजरत की, हम अल्लाह की रज़ामंदी चाहते थे, चुनांचे हमारा अज़र अल्लाह के यहाँ साबित हो गया, हम में से कुछ (जल्द) वफात पा गए और उन्होंने अपने (दुन्यवी) अज़र (माले गनीमत वगैरा) से कुछ न पाया, मुसअब बिन उमैर रदियल्लाहु अन्हु भी उन्हीं में से है, वह गज़वा ए उहद में शहीद हो गए थे, उन्हें कफन देने के लिए सिर्फ एक धारी दार चादर मयस्सर आई, जब हम उनका सर ढांपते तो उन के दोनों पाँव नंगे हो जाते और जब हम उन के दोनों पाँव ढांपते तो उनका सर नंगा हो जाता, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “उस से उनका सर ढांप दो और उन के पाँव पर घास डाल दो”, और हम में से वह भी है की इन के लिए फल पक चुके हैं और वह उन्हें चुन रहे हैं (फुतुहात के बाद दिनों फवाईद भी हासिल कर रहे हैं)| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه، رواه البخاری (3898) و مسلم (44 / 940)، (2177)

٦٢٠٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «اهْتَزَّ الْعَرْشُ لِمَوْتِ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ»»» وَفِي رِوَايَةٍ: «اهْتَزَّ عَرْشُ الرَّحْمَنِ لِمَوْتِ سَعْدِ بن معَاذ» . مُتَّفق عَلَيْهِ

6206. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ को फरमाते हुए सुना: “सईद बिन मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु की वफात पर अर्श हिल गया था”| एक दूसरी रिवायत में है: “सईद बिन मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु की मौत पर रहमान का अर्श हिल गया था”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواه البخاری (3803) و مسلم (124 / 2466)، (6346)

٦٢٠٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنِ الْبَرَاءِ قَالَ: أُهْدِيَتْ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم حُلَّةُ حَرِيرٍ فَجَعَلَ أَصْحَابُهُ يَمَسُّونَهَا وَيَتَعَجَّبُونَ مِنْ لِينِهَا فَقَالَ: «أَتَعْجَبُونَ مِنْ لِينِ هَذِهِ؟ لَمَنَادِيلُ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ فِي الجنَّةِ خيرٌ مِنْهَا وألين» . مُتَّفق عَلَيْهِ

6207. बराअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ की खिदमत में रेशमी जोड़ा बतौर हदिया पेश किया गया तो सहाबा इसे छुने लगे और उसकी मुलायमियत पर ताज्जुब करने लगे तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम उसकी मुलायमियत पर ताज्जुब करते हो, सईद बिन मुआज़ के जन्नत में रुमाल उस से ज़्यादा बेहतर है और ज़्यादा मुलायम है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواه البخاری (3802) و مسلم (126 / 2468)، (6348)

٦٢٠٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ أَمِّ سُلَيْمٍ أَنَّهَا قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَنَسٌ خَادِمُكَ ادْعُ اللَّهَ لَهُ قَالَ: «اللهمَّ أَكثر مَاله وَولده وَبَارك فِيمَا أَعْطيته» قَالَ أنس: فو الله إِنَّ مَالِي لَكَثِيرٌ وَإِنَّ وَلَدِي وَوَلَدَ وَلَدِي لَيَتَعَادُّونَ عَلَى نَحْوِ الْمِائَةِ الْيَوْمَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

6208. उम्म सलीम रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! अनस रदियल्लाहु अन्हु आप का खादिम है, उस के लिए अल्लाह से दुआ फरमाइए: आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ अल्लाह उस के माल व औलाद में इज़ाफा फरमा, और तूने जो इसे अता फ़रमाया है उस में बरकत फरमा”, अनस रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: अल्लाह की क़सम! मेरा माल बहोत ज़्यादा हैं और आज मेरे बेटे और मेरे पोते सौ से ज़्यादा हैं| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواه البخاری (6334) و مسلم (143 / 2481)، (6376)

٦٢٠٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ قَالَ: مَا سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ لِأَحَدٍ يَمْشِي عَلَى وَجْهِ الْأَرْضِ «إِنَّهُ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ» إِلَّا لِعَبْدِ اللَّهِ بن سَلام. مُتَّفق عَلَيْهِ

6209. साद बिन अबी वकास रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अब्दुल्लाह बिन सलाम रदियल्लाहु अन्हु के अलावा रुए ज़मीन पर चलने वाले किसी और शख़्स के बारे में नबी ﷺ को फरमाते हुए नहीं सुना के “वो अहले जन्नत में से है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3812) و مسلم (147 / 2483)، (6380)

٦٢١٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ قَيْسِ بْنِ عُبَادٍ قَالَ: كُنْتُ جَالِسًا فِي مَسْجِدِ الْمَدِينَةِ فَدَخَلَ رَجُلٌ عَلَى وَجْهِهِ أَثَرُ الْخُشُوعِ فَقَالُوا: هَذَا رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ تَجَوَّزَ فِيهِمَا ثُمَّ خَرَجَ وَتَبِعْتُهُ فَقُلْتُ: إِنَّكَ حِينَ دَخَلْتَ الْمَسْجِدَ قَالُوا: هَذَا رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ. قَالَ: وَاللَّهِ مَا يَنْبَغِي لِأَحَدٍ أَنْ يَقُولَ مَا لَا يَعْلَمُ فَسَأُحَدِّثُكَ لِمَ ذَاكَ؟ رَأَيْتُ رُؤْيَا [ص:١٧٥ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَصَصْتُهَا عَلَيْهِ وَرَأَيْتُ كَأَنِّي فِي رَوْضَةٍ - ذَكَرَ مِنْ سَعَتِهَا وَخُضْرَتِهَا - وَسَطَهَا عَمُودٌ مِنْ حَدِيدٍ أَسْفَلُهُ فِي الْأَرْضِ وَأَعْلَاهُ فِي السَّمَاءِ فِي أَعْلَاهُ عُرْوَةٌ فَقِيلَ لِيَ: ارْقَهْ. فَقُلْتُ: لَا أَسْتَطِيعُ فَأَتَانِي مِنْصَفٌ فَرَفَعَ ثِيَابِي مِنْ خَلْفِي فرقِيتُ حَتَّى كُنْتُ فِي أَعْلَاهُ فَأَخَذْتُ بِالْعُرْوَةِ فَقِيلَ: اسْتَمْسِكْ فَاسْتَيْقَظْتُ وَإِنَّهَا لَفِي يَدِي فَقَصَصْتُهَا عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «تِلْكَ الرَّوْضَةُ الْإِسْلَامُ وَذَلِكَ الْعَمُودُ عَمُودُ الْإِسْلَامِ وَتِلْكَ العروة الْعُرْوَةُ الْوُثْقَى فَأَنْتَ عَلَى الْإِسْلَامِ حَتَّى تَمُوتَ وَذَاكَ الرَّجُلُ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَلَامٍ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

6210. कैस बिन उब्बाद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं मदीना की मस्जिद में बैठा हुआ था के एक आदमी आया उस के चेहरे पर खुशुअ के आसार थे, हाज़िरिन ने कहा यह आदमी अहले जन्नत में से है, चुनांचे उस ने इख्तिसार के साथ दो रकते पढ़ी, फिर वह चला गया, मैं उस के पीछे पीछे गया, तो मैंने कहा: जिस वक़्त आप मस्जिद में तशरीफ़ लाए थे तो लोगों ने कहा था के यह आदमी अहले जन्नत में से है, इस आदमी ने कहा: अल्लाह की क़सम! किसी शख़्स के लिए मुनासिब नहीं के वह ऐसी बात कहे जिसे वह जानता नहीं, मैं तुम्हें बताता हूँ कि ऐसे क्यों है मैंने रसूल अल्लाह ﷺ के दौर में ख्वाब देखा तो मैंने इसे आप से बयान किया: मैंने देखा के गोया में एक बाग़ में हूँ, उन्होंने उसकी वुसअत और उसकी शादाबी का ज़िक्र किया, उस के बिच में लोहे का सुतून है, उस का निचला हिस्सा ज़मीन में है और उस का ऊपर वाला हिस्सा आसमान में है, उसकी चोटी पर एक हल्का (कड़ा) है, मुझे कहा गया: उस पर चढ़ो मैंने कहा में इस्तिताअत नहीं रखता, मेरे पास एक खादिम आया उस ने पीछे से मेरे कपड़े उठाए तो मैं ऊपर चढ़ गया, हत्ता कि मैंने उसकी चोटी पर पहुँच कर हलके (कड़े) को पकड़ लिया, मुझे कहा गया: मज़बूती के साथ पकड़ लो, मैं उसे पकड़े हुए था की मैं बेदार हो गया, मैंने इसे नबी ﷺ से बयान किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो बाग़ इस्लाम है, और वह सुतून इस्लाम का सुतून है और वह हल्का मज़बूत हल्का है तुम तादम मर्गे इस्लाम पर रहोगे”, और वह आदमी अब्दुल्लाह बिन सलाम रदियल्लाहु अन्हु थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3813) و مسلم (148 / 2484)، (6381)

٦٢١١ - (صَحِيح) عَن»» أَنَسٍ قَالَ: كَانَ ثَابِتُ بْنُ قَيْسِ بْنِ شماس خطيب الْأَنْصَار فَلَمَّا نزلت هَذِه الْآيَة: [يَا أَيُّهَا الَّذِينَ

آمَنُوا لَا تَرْفَعُوا أَصْوَاتَكُمْ فوق صَوت النَّبِي] إِلَى آخِرِ الْآيَةِ جَلَسَ ثَابِتٌ فِي بَيْتِهِ وَاحْتَبَسَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَأَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَعْدَ بْنَ مُعَاذٍ فَقَالَ: «مَا شَأْنُ ثَابِتٍ أَيَشْتَكِي؟» فَأَتَاهُ سَعْدٌ فَذَكَرَ لَهُ قَوْلُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ ثَابِتٌ: أُنْزِلَتْ هَذِهِ الْآيَةُ وَلَقَدْ عَلِمْتُمْ أَنِّي مِنْ أَرْفَعِكُمْ صَوْتًا عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَنَا مِنْ أَهْلِ النَّارِ فَذَكَرَ ذَلِكَ سَعْدٌ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «بَلْ هُوَ من أهل الْجنَّة» . رَوَاهُ مُسلم

6211. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, साबित बिन कैस बिन शम्मास रदियल्लाहु अन्हु अंसार के खतिब थे, चुनांचे जब यह आयत: “इमानवालो अपने आवाज़ों को नबी ﷺ की आवाज़ से बुलंद न करो”, नाज़िल हुई तो साबित रदियल्लाहु अन्हु अपने घर में बैठ गए और नबी ﷺ की खिदमत में आना बंद कर दिया, चुनांचे नबी ﷺ ने सईद बिन मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: “साबित रदियल्लाहु अन्हु का क्या मुआमला है गया वह बीमार है?” साद रदियल्लाहु अन्हु उन के पास आए और रसूल अल्लाह ﷺ ने जो कहा था उस के मुतल्लिक उन्हें बताया तो साबित रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: यह आयत नाज़िल हुई और तुम जानते हो के रसूल अल्लाह ﷺ के सामने मेरी आवाज़ तुम सबसे ज़्यादा बुलंद होती है, लिहाज़ा में इस आयत के मुताबिक जहन्नुमियो में से हूँ, साद रदियल्लाहु अन्हु ने नबी ﷺ से ज़िक्र किया तो रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “नहीं, (ऐसे नहीं) बल्कि वह तो अहले जन्नत में से है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (188 ، 187 / 219)، (314 و 315)

٦٢١٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: كُنَّا جُلُوسًا عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذْ نَزَلَتْ سُورَةُ الْجُمُعَةِ فَلَمَّا نَزَلَتْ [وَآخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يلْحقُوا بهم] قَالُوا: مَنْ هَؤُلَاءِ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: وَفِينَا سَلْمَانُ الْفَارِسِيُّ قَالَ: فَوَضَعَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدَهُ عَلَى سَلْمَانَ ثُمَّ قَالَ: «لَوْ كَانَ الْإِيمَانُ عِنْدَ الثُّرَيَّا لَنَالَهُ رجالٌ من هَؤُلَاءِ» . مُتَّفق عَلَيْهِ

6212. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब सुरह जुमा नाज़िल हुई तो हम रसूल अल्लाह ﷺ के पास बैठें हुए थे, जब यह आयत (وَاخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ) नाज़िल हुई तो हमने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! उन से कौन लोग मुराद है? रावी बयान करते हैं, सलमान फारसी रदियल्लाहु अन्हु हमारे दरमियान मौजूद थे, नबी ﷺ ने सलमान रदियल्लाहु अन्हु पर अपना दस्ते मुबारक रख कर फ़रमाया: “अगर ईमान सुरय्ये पर भी होगा तो तब भी इन लोगों में से कुछ हज़रात उस तक पहुँच जाएँगे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (4897) و مسلم (231 / 2546)، (6498)

٦٢١٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اللَّهُمَّ حَبِّبْ عُبَيْدَكَ هَذَا» يَعْنِي أَبَا هُرَيْرَةَ «وَأُمَّهُ إِلَى عِبَادِكَ الْمُؤْمِنِينَ وَحَبِّبْ إِليهم الْمُؤمنِينَ» . رَوَاهُ مُسلم

6213. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “ए अल्लाह! अपने इस बंदे

यानी अबू हुरैरा और उनकी वालिदा को अपने मोमिन बंदो का महबूब बना दे और मोमिनो को उनका महबूब बना दे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (158 / 2491)، (6396)

٦٢١٤ - (صَحِيح) وَعَن»» عَائِذ بن عَمْرو أَن أَبَا سُفْيَان أَتَى عَلَى سَلْمَانَ وَصُهَيْبٍ وَبِلَالٍ فِي نَفَرٍ فَقَالُوا: مَا أَخَذَتْ سُيُوفُ اللَّهِ مِنْ عُنُقِ عَدُوِّ اللَّهِ مَأْخَذَهَا. فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: أَتَقُولُونَ هَذَا لِشَيْخِ قُرَيْشٍ وَسَيِّدِهِمْ؟ فَأَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرَهُ فَقَالَ: يَا أَبَا بَكْرٍ لَعَلَّكَ أَغْضَبْتَهُمْ لَئِنْ كُنْتَ أَغْضَبْتَهُمْ لَقَدْ أَغْضَبْتَ رَبَّكَ " فَأَتَاهُمْ فَقَالَ: يَا إِخْوَتَاهْ أَغْضَبْتُكُمْ قَالُوا: لَا يَغْفِرُ اللَّهُ لَكَ يَا أَخِي. رَوَاهُ مُسلم

6214. आइज़ बिन अम्र से रिवायत है के अबू सुफियान, सलमान, सहियब और बिलाल रदियल्लाहु अन्हु के पास से गुज़रे इस वक़्त और सहाबा किराम भी मौजूद थे, उन्होंने कहा: अल्लाह की तलवारों ने अल्लाह के दुश्मन की गर्दन से अपना हक़ वुसुल नहीं किया, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: क्या तुम ऐसी बात कुरैश के मोतबर और सरदार शख़्स के बारे में कहते हो, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ के पास आए और उन्हें बताया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “अबू बकर! शायद के तुमने उन्हें नाराज़ कर दिया है, अगर तुमने उन्हें नाराज़ किया तो तुमने अपने रब को नाराज़ कर दिया”, वह उन के पास आए और कहा भाई! क्या मैंने तुम्हें नाराज़ कर दिया है, उन्होंने कहा: नहीं, भाई! अल्लाह आप की मगफिरत फरमाए| (मुस्लिम)

رواه مسلم (170 / 2504)، (6412)

٦٢١٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «آيَةُ الْإِيمَانِ حُبُّ الْأَنْصَارِ وَآيَةُ النِّفَاقِ بُغْضُ الْأَنْصَارِ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

6215. अनस रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं की आप ﷺ ने फ़रमाया: “अंसार से मुहब्बत अलामत ईमान है, और अदावते अंसार अलामत निफ़ाक़ है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (3784) و مسلم (128 / 74)، (235)

٦٢١٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ الْبَرَاءِ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «الْأَنْصَارُ لَا يُحِبُّهُمْ إِلَّا مُؤْمِنٌ وَلَا يَبْغَضُهُمْ إِلَّا مُنَافِقٌ فَمَنْ أَحَبَّهُمْ أَحَبَّهُ اللَّهُ وَمَنْ أَبْغَضَهُمْ أَبْغَضَهُ اللَّهُ» . مُتَّفق عَلَيْهِ

6216. बराअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूल अल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “अंसार से सिर्फ मोमिन शख़्स ही मुहब्बत करता है, जबकि अंसार से सिर्फ मुनाफ़िक़ शख़्स ही अदावत रखता है, चुनांचे जिस ने

उन से मुहब्बत की तो अल्लाह उन से मुहब्बत करेगा और जिस ने उन से अदावत की तो अल्लाह उन से अदावत करेगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (3783) و مسلم (129 / 75)، (237)

٦٢١٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: إِنَّ نَاسًا مِنَ الْأَنْصَارِ قَالُوا حِينَ أَفَاءَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ أَمْوَالِ هَوَازِنَ مَا أَفَاءَ فَطَفِقَ يُعْطِي رِجَالًا مِنْ قُرَيْشٍ الْمِائَةَ مِنَ الْإِبِلِ فَقَالُوا: يَغْفِرُ اللَّهُ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُعْطِي قُرَيْشًا وَيَدَعُنَا وَسُيُوفُنَا تَقْطُرُ مِنْ دِمَائِهِمْ فَحَدَّثَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم بِمَقَالَتِهِمْ فَأَرْسَلَ إِلَى الْأَنْصَارِ فَجَمَعَهُمْ فِي قُبَّةٍ مَنْ أَدَمٍ وَلَمْ يَدْعُ مَعَهُمْ أَحَدًا غَيْرَهُمْ فَلَمَّا اجْتَمَعُوا جَاءَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم فَقَالَ: «مَا كَانَ حَدِيثٌ بَلَغَنِي عَنْكُمْ؟» فَقَالَ فُقَهَاؤُهُمْ: أَمَّا ذَوُو رَأْيِنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ فَلَمْ يَقُولُوا شَيْئًا وَأَمَّا أُنَاسٌ مِنَّا حَدِيثَةٌ أَسْنَانُهُمْ قَالُوا: يَغْفِرُ اللَّهُ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُعْطِي قُرَيْشًا وَيَدَعُ الْأَنْصَارَ وَسُيُوفُنَا تَقْطُرُ مِنْ دِمَائِهِمْ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنِّي أُعْطِي رِجَالًا حَدِيثِي عَهْدٍ بِكُفْرٍ أَتَأَلَّفُهُمْ أَمَا تَرْضَوْنَ أَنْ يَذْهَبَ النَّاسُ بِالْأَمْوَالِ وَتَرْجِعُونَ إِلَى رِحَالِكُمْ بِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ» . قَالُوا بَلَى يَا رَسُولَ اللَّهِ قد رَضِينَا. مُتَّفق عَلَيْهِ

6217. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब अल्लाह ने अपने रसूल ﷺ को हवाज़ीन कबिले के अमवाल में से गनीमत दी और आप कुरैश के (नौ मुस्लिम) लोगों को सौ ऊंट देने लगी तो अंसार के कुछ लोगों ने कहा: अल्लाह रसूल अल्लाह ﷺ की मगफिरत फरमाए, आप कुरैशीयो को तो अता फरमा रहे हैं जबकि हमें छोड़ रहे हैं, और सूरते हाल यह है कि हमारी तलवारों से उनका खून अभी तक टपक रहा है, उनकी यह गुफ्तगू रसूल अल्लाह ﷺ को बताई गई तो आप ने अंसार को बुला भेजा और उन्हें चमड़े के एक खैमे में जमा किया और आप ने उन के अलावा किसी और को वहां न बुलाया, जब वह इकठ्ठे हो गए तो रसूल अल्लाह ﷺ उन के पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया: “तुम्हारे मुतल्लिक मुझे किया खबर पहुंची है?” उन (अंसार) के समझ दार लोगों ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हमारे संजीदा लोगों ने तो कोई बात नहीं की, अलबत्ता हमारे चंद नौ उमर लड़को ने कहा है: अल्लाह, रसूल अल्लाह ﷺ को मुआफ़ फरमाए के वह कुरैशीयो को दे रहे हैं और अंसार को छोड़ रहे हैं, जबकि हमारी तलवारों से उन (कुरैशो) का खून टपक रहा है, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “मैंने नौ मुस्लिमो को उनकी तालिफे क़ल्बी के लिए दिया है, क्या तुम पसंद नहीं करते के लोग तो माल व दौलत लेकर वापस जाए और तुम रसूल अल्लाह ﷺ को साथ लेकर अपने घरो को वापस जाओ”, उन्होंने अर्ज़ किया, क्यों नहीं! अल्लाह के रसूल! हम उस पर राज़ी है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (3147) و مسلم (132 / 1059)، (2436)

٦٢١٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَوْلَا الْهِجْرَةُ لَكُنْتُ امْرَءًا مِنَ الْأَنْصَارِ وَلَوْ سَلَكَ النَّاسُ وَادِيًا وَسَلَكَتِ الْأَنْصَارُ وَادِيًا أَوْ شِعْبًا لَسَلَكْتُ وَادِيَ الْأَنْصَارِ وشعبها وَالْأَنْصَار شِعَارٌ وَالنَّاس دِثَارٌ إِنَّكُمْ سَتَرَوْنَ بَعْدِي أَثَرَةً فَاصْبِرُوا حَتَّى تَلْقَوْنِي عَلَى الْحَوْضِ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

6218. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "अगर हिजरत न होती तो मैं भी अंसार में से एक आदमी होता, अगर सारे लोग एक वादी में चले और अंसार एक वादी या घाटी में चले तो मैं भी अंसार की वादी और घाटी में चलूँगा, अंसार अस्तर है जबकि बाकी लोग ऊपर का कपड़ा है, बेशक तुम लोग मेरे बाद तरजीह देखोगे (के तुम पर दुसरो को तरजीह दी जाएगी) तुम सब्र करना हत्ता कि तुम होज़े कौसर पर मुझ से मुलाकात करो"| (बुखारी)

متفق عليه ، رواه البخاری (4330) و مسلم (139 / 1061)، (2446)

٦٢١٩ - (صَحِيح) وَعَنْهُ»» قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ الْفَتْحِ فَقَالَ: «مَنْ دَخَلَ دَارَ أَبِي سُفْيَانَ فَهُوَ آمِنٌ وَمَنْ أَلْقَى السِّلَاحَ فَهُوَ آمِنٌ» . فَقَالَتِ الْأَنْصَارُ: أَمَّا الرَّجُلُ فَقَدْ أَخَذَتْهُ رَأْفَةٌ بِعَشِيرَتِهِ وَرَغْبَةٌ فِي قَرْيَتِهِ. وَنَزَلَ الْوَحْيُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «قُلْتُمْ أَمَّا الرَّجُلُ فَقَدْ أَخَذَتْهُ رَأْفَةٌ بِعَشِيرَتِهِ وَرَغْبَةٌ فِي قَرْيَتِهِ كَلَّا إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ وَرَسُولُهُ هَاجَرْتُ إِلَى الله وإليكم فالمحيا مَحْيَاكُمْ وَالْمَمَاتُ مَمَاتُكُمْ» قَالُوا: وَاللَّهِ مَا قُلْنَا إِلَّا ضِنًّا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ. قَالَ: «فَإِنَّ اللَّهَ وَرَسُوله يصدقانكم ويعذرانكم» . رَوَاهُ مُسلم

6219. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, फतह मक्का के रोज़ हम रसूल अल्लाह ﷺ के साथ थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: "जो शख़्स अबू सुफियान के घर दाखिल हो जाए तो वह अमन में है, जो हथियार डाल दे वह अमन में है", अंसार ने कहा इस आदमी को अपने रिश्तेदारों से रहमत और अपने शहर की मुहब्बत ने पकड़ लिया, (उन की इस बात के मुत्तल्लिक) रसूल अल्लाह ﷺ पर वही नाज़िल हुई तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुमने कहा है के इस आदमी को अपने कुंबे से हमदर्दी और अपने शहर से मुहब्बत ने पकड़ लिया है, सुन लो! ऐसे नहीं, मैं अल्लाह का बंदा और उस का रसूल हूँ, मैंने अल्लाह और तुम्हारी तरफ हिजरत की, मेरा जीना मरना तुम्हारे साथ है" उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह की क़सम! हमने तो महज़ अल्लाह और उस के रसूल की रफाकत के हुसूल के लिए ऐसे कहा था, आप ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह और उस का रसूल तुम्हारी तस्दीक करते हैं, और तुम्हारा उज़्र कबूल करते हैं"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (86 / 1780)، (4624)

٦٢٢٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأَى صِبْيَانًا وَنِسَاءً مُقْبِلِينَ مِنْ عُرْسٍ فَقَامَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «اللَّهُمَّ أَنْتُمْ مِنْ أَحَبِّ النَّاسِ إِلَيَّ اللَّهُمَّ أَنْتُمْ مِنْ أَحَبِّ النَّاسِ إِلَيَّ» يَعْنِي الْأَنْصَار. مُتَّفق عَلَيْهِ

6220. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने (अंसार के) कुछ बच्चो और औरतों को किसी शादी की तक़रीब से वापस आते हुए देखा तो नबी ﷺ ने खड़े हो कर फ़रमाया: "ए अल्लाह! (तू जानता है) तुम तमाम

लोगों से ज़्यादा मुझे महबूब हो, ऐ अल्लाह! (तू जानता है) तुम यानी अंसार तमाम लोगों से ज़्यादा मुझे महबूब हो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (3785) و مسلم (174 / 2508)، (6417)

٦٢٢١ - (صَحِيح) وَعَنْهُ»» قَالَ: مَرَّ أَبُو بَكْرٍ وَالْعَبَّاسُ بِمَجْلِسٍ من مجَالِس الْأَنْصَار وهم يَبْكُونَ فَقَالَ: مَا يُبْكِيكُمْ؟ قَالُوا: ذَكَرْنَا مَجْلِسَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنَّا فَدَخَلَ أَحَدُهُمَا عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرَهُ بِذَلِكَ فَخَرَجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَدْ عَصَّبَ عَلَى رَأْسِهِ حَاشِيَةَ بُرْدٍ فَصَعِدَ الْمِنْبَرِ وَلم يَصْعَدهُ بعد ذَلِك الْيَوْم. فَحَمدَ الله وَأَثْنَى عَلَيْهِ. ثُمَّ قَالَ: «أُوصِيكُمْ بِالْأَنْصَارِ فَإِنَّهُمْ كَرِشِي وَعَيْبَتِي وَقَدْ قَضَوُا الَّذِي عَلَيْهِمْ وَبَقِيَ الَّذِي لَهُمْ فَاقْبَلُوا مِنْ مُحْسِنِهِمْ وَتَجَاوَزُوا عَنْ مسيئهم» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

6221. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अबू बक्र और अब्बास रदियल्लाहु अन्हु अंसार की एक मजलिस के पास से गुज़रे तो वह इस वक़्त रो रहे थे, उन्होंने पूछा तुम क्यों रो रहे हो? उन्होंने कहा: हम ने नबी ﷺ की मजलिस को याद किया जिस में हम (बैठा करते) थे, इन दोनों में से एक नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने उस के मुतल्लिक आप को बताया, नबी ﷺ अपने सर मुबारक पर कपड़े की पट्टी बांधे हुए बाहर तशरीफ़ लाए और मिम्बर पर जलवा अफ़रोज़ हुए, और इस रोज़ के बाद आप मिम्बर पर तशरीफ न ला सके, आप ﷺ ने अल्लाह तआला की हम्द व सना बयान की फिर फ़रमाया: “मैं अंसार के बारे में तुम्हें वसीयत करता हूँ वह मेरे जिस्म व जान (हाथ व बाज़ू) है, वह अपने ज़िम्मेदारिया निभा चुके, अब उन के हुकुक बाकी है, तुम उन के नेकोकारों की तरफ से (अज़र) कबूल करना और उन के खाताकारों से दरगुज़र करना”| (बुखारी)

رواه البخاری (3799)

٦٢٢٢ - (صَحِيح) وَعَن»» ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: خَرَجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي مَرَضِهِ الَّذِي مَاتَ فِيهِ حَتَّى جَلَسَ عَلَى الْمِنْبَرَ فَحَمِدَ اللَّهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: «أَمَّا بَعْدُ فَإِنَّ النَّاسَ يَكْثُرُونَ وَيَقِلُّ الْأَنْصَارُ حَتَّى يَكُونُوا فِي النَّاسِ بِمَنْزِلَةِ الْمِلْحِ فِي الطَّعَامِ فَمَنْ وَلِيَ مِنْكُمْ شَيْئًا يَضُرُّ فِيهِ قَوْمًا وَيَنْفَعُ فِيهِ آخَرين فليقبل عَن محسنهم وليتجاوز عَن مسيئهم» رَوَاهُ البُخَارِيّ

6222. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ अपने मर्जे वफ़ात में बाहर तशरीफ़ लाए और मिम्बर पर जलवा अफ़रोज़ हुए, आप ने अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया: “अम्मा बाद! जबकि लोग तो बहोत ज़्यादा हो जाएँगे जबकि अंसार कम हो जाएँगे, हत्ता कि वह लोगों में नमक के तनासब (हिसाब) से हो जाएँगे, तुम में से जो शख़्स किसी ऐसी चिज़ का ज़िम्मेदार व सरपरस्त हो जिस में वह किसी को नुकसान और किसी को फ़ायदा पहुंचा सकता हो तो वह उन (अंसार) के नेकोकारों के नेक कामो को कबूल करे और उन के खाताकारों से दरगुज़र करे”| (बुखारी)

رواه البخاری (3628)

٦٢٢٣ - (صَحِيح) وَعَنْ»» زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «الله اغْفِرْ لِلْأَنْصَارِ وَلِأَبْنَاءِ الْأَنْصَارِ وَأَبْنَاءِ أَبْنَاءِ الْأَنْصَارِ» . رَوَاهُ مُسلم

6223. ज़ैद बिन अरक़म रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह अंसार, अंसार की औलाद और अंसार की औलाद की औलाद की मगफिरत फरमा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (172 / 2506)، (6414)

٦٢٢٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي أَسَيْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «خَيْرُ دُورِ الْأَنْصَارِ بَنُو النَّجَّارِ ثُمَّ بَنُو عَبْدِ الْأَشْهَلِ ثُمَّ بَنُو الْحَارِثِ بْنِ الْخَزْرَجِ ثُمَّ بَنُو سَاعِدَةَ وَفِي كُلِّ دُورِ الْأَنْصَارِ خَيْرٌ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

6224. अबू उसैद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “अंसार का सबसे बेहतरीन कबिले बनू नजार का कबिला है, फिर बनू अब्दुल शम्स, बनू हारिस बिन खजरज़, फिर बनू शाइदाह और अंसार के हर कबिले में खैर है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3789) و مسلم (177 / 2511)، (6421)

٦٢٢٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: بَعَثَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَا وَالزُّبَيْرِ والمقداد - وَفِي رِوَايَة: أَبَا مَرْثَدٍ بَدَلَ الْمِقْدَادِ - فَقَالَ: «انْطَلِقُوا حَتَّى تَأْتُوا رَوْضَةَ خَاخٍ فَإِنَّ بِهَا ظَعِينَةً مَعَهَا كِتَابٌ فَخُذُوا مِنْهَا» فَانْطَلَقْنَا تَتَعَادَى بِنَا خَيْلُنَا حَتَّى أَتَيْنَا الرَّوْضَة فَإِذا نَحن بِالظَّعِينَةِ قُلْنَا لَهَا: أَخْرِجِي الْكتاب قَالَت: مَا معي كِتَابٍ. فَقُلْنَا لَتُخْرِجِنَّ الْكِتَابَ أَوْ لَتُلْقِيَنَّ الثِّيَابَ فَأَخْرَجَتْهُ مِنْ عِقَاصِهَا فَأَتَيْنَا بِهِ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَإِذَا فِيهِ: مِنْ حَاطِبِ بْنِ أَبِي بَلْتَعَةَ إِلَى نَاسٍ مِنَ الْمُشْرِكِينَ مِنْ أَهْلِ مَكَّةَ يُخْبِرُهُمْ بِبَعْضِ أَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا حَاطِبُ مَا هَذَا؟» فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ لَا تَعْجَلْ عَلَيَّ إِنِّي كُنْتُ امْرَأً مُلْصَقًا فِي قُرَيْشٍ وَلَمْ أَكُنْ مِنْ أَنْفُسِهِمْ وَكَانَ مَنْ مَعَك من الْمُهَاجِرين من لَهُم قَرَابَات يحْمُونَ بهَا أَمْوَالهم وأهليهم بِمَكَّةَ فَأَحْبَبْتُ إِذْ فَاتَنِي ذَلِكَ مِنَ النَّسَبِ فِيهِمْ يَدًا يَحْمُونَ بِهَا قَرَابَتِي وَمَا فَعَلْتُ [ص:١٧٥ كفرا وَلَا ارْتِدَادًا عَن ديني وَلَا رضى بِالْكُفْرِ بَعْدَ الْإِسْلَامِ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّهُ قَدْ صَدَقَكُمْ» فَقَالَ عُمَرُ: دَعْنِي يَا رَسُولَ اللَّهِ أَضْرِبْ عُنُقَ هَذَا الْمُنَافِقِ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّهُ قَدْ شَهِدَ بَدْرًا وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ اللَّهَ اطَّلَعَ عَلَى أَهْلِ بَدْرٍ فَقَالَ: اعْمَلُوا مَا شِئْتُم فقد وَجَبت لكم الجنةُ «»» وَفِي رِوَايَة فقد غَفَرْتُ لَكُمْ» فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى [يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَاءَ] . مُتَّفق عَلَيْهِ

6225. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने मुझ को जुबैर और मिकदाद रदियल्लाहु अन्हा को एक दूसरी रिवायत में मिकदाद के बजाए अबू मर्सडी रदियल्लाहु अन्हु का नाम है, किसी काम पर रवाना फ़रमाया, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम चलते जाना हत्ता कि तुम रोज़े खाख पर पहुँच जाओ, वहां एक औरत होगी उस के पास एक ख़त होगा, तुम वह उन से ले लेना”, हम रवाना हुए, हम अपने घोड़े दोड़ाते रहे हत्ता कि हम रोज़े खाख पर पहुँच गए, और वहां हमें वह औरत मिल गई, हमने कहा: ख़त निकालो, उस ने कहा मेरे पास कोई ख़त नहीं, हमने कहा: ख़त निकाल दो वरना हम तेरे कपड़े उतार देंगे, चुनांचे उस ने वह ख़त अपने

चोटी से निकाल दिया, हम वह ख़त लेकर नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए तो उस में लिखा हुआ था, हातिब बिन अबी बलता की तरफ से अहले मक्का के चंद मुशरिकीन के नाम, उन्होंने उस में रसूल अल्लाह ﷺ के बाज़ उमूर के मुतल्लिक उन्हें खबर दी थी, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "हातिब यह किया (माजरा) है?" उन्होंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मेरे मुतल्लिक जल्दी न फरमाना, मैं एक ऐसा शख़्स हूँ की मैं कुरैश का साथी हूँ, मैं उन के खानदान में से नहीं हूँ, और आप के साथ जो मुहाजरिन है, उनकी तो (उन से) क़राबत है जिस की वजह से वह मक्का में उन के अमवाल और अहल व अयाल की हिफाज़त कर रहे हैं, मैंने उन से नसबी रिश्ता न होने की वजह से यह पसंद किया की मैं उन से कोई इहसान करूँ, जिस की वजह से वह मेरे क़राबत दारो की हिफाज़त करेंगे, ना मैंने यह कुफ्र की वजह से किया है न अपने दीन से इर्तिदाद (पलटने) की वजह से किया है और ना ही इस्लाम के बाद कुफ्र को पसंद कर के किया है, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "उस ने तुम से सच्ची बात की है" उमर रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मुझे इजाज़त फरमाइए में इस मुनाफ़िक़ की गर्दन उड़ा दू, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "इस शख़्स ने गज़वा ए बद्र में शिरकत की है, और तुम नहीं जानते के अल्लाह ने अहले बद्र के अहवाल पहले से जान लिए थे, इसलिए उस ने फ़रमाया: "जो चाहो सो करो, तुम्हारे लिए जन्नत वाजिब हो चुकी है"| एक दूसरी रिवायत में है: "मैं तुम्हें मुआफ़ कर चूका", तब अल्लाह ने यह आयत नाज़िल फरमाई: "ईमान वालो मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6259 و الرواية الثانية : 4274) و مسلم (161 / 2494)، (6401)

٦٢٢٦ - (صَحِيح) وَعَنْ»» رِفَاعَةَ بْنِ رَافِعٍ قَالَ: جَاءَ جِبْرِيلُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «مَا تَعُدُّونَ أَهْلَ بَدْرٍ فِيكُمْ» . قَالَ: «مِنْ أَفْضَلِ الْمُسْلِمِينَ» أَوْ كَلِمَةً نَحْوَهَا قَالَ: «وَكَذَلِكَ مَنْ شَهِدَ بَدْرًا مِنَ الْمَلَائِكَةِ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

6226. रफाअ बिन राफीअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जिब्राइल अलैहिस्सलाम नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए तो उन्होंने ने फ़रमाया: "तुम अहले बद्र को अपने वहां किस दर्जा में शुमार करते हो?" आप ﷺ ने फ़रमाया: "मुसलमानों में से सबसे अफज़ल", या "आप ने इसी तरह की बात फरमाई", उन्होंने (जिब्राइल (अस)) ने फ़रमाया: "इसी तरह जो फ़रिश्ते बद्र में शरीक हुए उनका भी बुलंद दर्जा है"| (बुखारी)

رواه البخاری (3992)

٦٢٢٧ - (صَحِيح) وَعَنْ»» حَفْصَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنِّي لَأَرْجُو أَنْ لَا يَدْخُلَ النَّارَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ أَحَدٌ شَهِدَ بَدْرًا وَالْحُدَيْبِيَةَ» قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَلَيْسَ قَدْ قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: [وَإِنْ مِنْكُمْ إِلَّا واردها] قَالَ: " فَلَمْ تَسْمَعِيهِ يَقُولُ: [ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتقَوا] "»» وَفِي رِوَايَةٍ: «لَا يَدْخُلُ النَّارَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ مِنْ أَصْحَابِ الشَّجَرَةِ - أَحَدٌ - الَّذِينَ بَايَعُوا تحتهَا» . رَوَاهُ مُسلم

6227. हफ्सा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "मैं उम्मीद करता हूँ कि इंशाअल्लाह गज़वा ए बद्र और सुलह हुदैबिया में शिरकत करने वाला कोई शख़्स जहन्नम में दाखिल नहीं होगा",

मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! अल्लाह तआला ने तो फ़रमाया है, “तुम में से हर शख़्स ने उस पर वारिद (उपर) होना है” आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम ने सुना नहीं, वह फरमाता है, फिर वह तक़्वा इख़्तियार करने वालो को बचा लेगा”, एक दूसरी रिवायत में है: “इंशाअल्लाह असहाब शजरा जिन्होंने इस (दरख्त) के नीचे बैत की थी जहन्नम में दाखिल नहीं होंगे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (163 / 2496)، (6404)

٦٢٢٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: كُنَّا يَوْمَ الْحُدَيْبِيَةِ أَلْفًا وَأَرْبَعَمِائَةٍ. قَالَ لَنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَنْتُمُ الْيَوْمَ خَيْرُ أَهْلِ الْأَرْضِ» . مُتَّفق عَلَيْهِ

6228. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: सुलह हुदैबिया के मौके पर हम चौदाह सौ लोग थे, नबी ﷺ ने हमें फ़रमाया: “आज ज़मीन वालो में से तुम सबसे बेहतर हो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (4154) و مسلم (71 / 1856)، (4811)

٦٢٢٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ يَصْعَدِ الثَّنِيَّةَ ثَنِيَّةَ الْمُرَارِ فَإِنَّهُ يُحَطُّ عَنْهُ مَا حُطَّ عَنْ بَنِي إِسرائيل» . وَكَانَ أَوَّلَ مَنْ صَعِدَهَا خَيْلُنَا خَيْلُ بَنِي الْخَزْرَجِ ثُمَّ تَتَامَّ النَّاسُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كُلُّكُمْ مَغْفُورٌ لَهُ إِلَّا صَاحِبَ الْجَمَلِ الْأَحْمَرِ» . [ص:١٧٥ فَأَتَيْنَاهُ فَقُلْنَا: تَعَالَ يَسْتَغْفِرْ لَكَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لَأَنْ أَجِدَ ضَالَّتِي أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ يَسْتَغْفِرَ لِي صَاحِبُكُمْ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ»» وَذَكَرَ حَدِيثَ أَنَسٍ قَالَ لِأُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ: «إِنَّ اللَّهَ أَمَرَنِي أَنْ أَقْرَأَ عَلَيْكَ» فِي «بَابٍ» بعدَ فَضَائِل الْقُرْآن

6229. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स मिरार घाटी की चोटी पर चढ़ेगा तो उस के गुनाह इस तरह ख़तम कर दिए जाएँगे जिस तरह बनी इसराइल के गुनाह ख़तम कर दिए गए थे”, बनू खजरज़ का दस्ता सबसे पहले उस पर चढ़ा, फिर बाकी लोग मुतवातिर पहुँचते रहे, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “इस सुर्ख ऊंट वाले के सिवा तुम सब की मगफिरत हो गई”, हम इस शख़्स के पास आए तो हमने कहा: आओ रसूल अल्लाह ﷺ तुम्हारे लिए मगफिरत तलब करे, उस ने कहा: अगर में अपना गुमशुदा ऊंट पा लू तो यह मुझे उस से ज़्यादा पसंद है के तुम्हारा साथी मेरे लिए मगफिरत तलब करे| और अनस (र) से मरवी हदीस के आप ﷺ ने उबई बिन काब (र) से फ़रमाया के, “अल्लाह ने मुझे हुक्म दिया है की मैं तुम्हें कुरान सुनाउ”, बाब فَضَائِلِ الْقُرْآنِ (फ़ज़ाइल ए कुरान) के बाद ज़िक्र की गई है. (मुस्लिम)

رواه مسلم (12 / 2880)، (7038) 0 حديث انس لابی بن کعب رضی الله عنهما تقدم (2196)

मनाकिब का बयान • بَاب جَامع المناقب

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٦٢٣٠ - (ضَعِيف) عَن»» ابْنِ مَسْعُودٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " اقْتَدُوا بِاللَّذَيْنِ مِنْ بَعْدِي مِنْ أَصْحَابِي: أَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ وَاهْتَدُوا بِهَدْيِ عمّارٍ وَتَمَسَّكُوا بِعَهْدِ ابْنِ أُمِّ عَبْدٍ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

6230. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "मेरे बाद मेरे दो सहाबा अबू बक्र व उमर की इक्तेदा करना, अम्मार की राह पर चलना, उम्मे अब्द (अब्दुल्लाह बिन मसउद (र)) की वसीयत को लाज़िम पकड़ना"| हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु की रिवायत में है: "इब्ने मसउद जो बात तुम से कहे उसकी तस्दीक करना", उस में इब्ने उम्म अब्द (अब्दुल्लाह बिन मसउद (र)) की वसीयत को लाज़िम पकड़ना", के अल्फाज़ के बजाए मज्कुरह बाला अल्फाज़ है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3663)

٦٢٣١ - (واه) وَعَنْ»» عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَوْ كُنْتُ مُؤَمِّرًا مِنْ غَيْرِ مَشُورَةٍ لَأَمَّرْتُ عَلَيْهِمُ ابْنَ أُمِّ عَبْدٍ» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

6231. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "अगर में किसी मशवरा के बगैर किसी शख़्स को अमीर मुकर्रर करता तो मैं इब्ने उम्म अब्द (अब्दुल्लाह बिन मसउद (र)) को उनका अमीर मुकर्रर करता"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (3808) و ابن ماجه (137) * فیه الحارث الاعور : ضعیف و ابو اسحاق السبیعی مدلس و عنعن

٦٢٣٢ - (صَحِيح) وَعَنْ»» خَيْثَمَةَ بْنِ أَبِي سَبْرَةَ قَالَ: أَتَيْتُ الْمَدِينَةَ فَسَأَلْتُ اللَّهَ أَنْ يُيَسِّرَ لِي جَلِيسًا صَالِحًا فَيَسَّرَ لِي أَبَا هُرَيْرَةَ فَجَلَسْتُ إِلَيْهِ فَقُلْتُ: إِنِّي سَأَلْتُ اللَّهَ أَنْ يُيَسِّرَ لِي جَلِيسًا صَالِحًا فَوُفِّقْتَ لِي فَقَالَ: مِنْ أَيْنَ أَنْتَ؟ قُلْتُ: مِنْ أَهْلِ الْكُوفَةِ جِئْتُ أَلْتَمِسُ الْخَيْرَ وَأَطْلُبُهُ. فَقَالَ: أَلَيْسَ فِيكُمْ سَعْدُ بْنُ مَالِكٍ مُجَابُ الدَّعْوَةِ؟ وَابْنُ مَسْعُودٍ صَاحِبُ طَهُورِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَعْلَيْهِ؟ وَحُذَيْفَةُ صَاحِبُ سِرِّ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ وَعَمَّارٌ [ص:١٧٥] الَّذِي أَجَارَهُ اللَّهُ مِنَ الشَّيْطَانِ عَلَى لِسَانِ نَبِيِّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ وَسَلْمَانُ صَاحِبُ الْكِتَابَيْنِ؟ يَعْنِي الْإِنْجِيلَ وَالْقُرْآنَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6232. खय्समा बिन अबी सबरह बयान करते हैं, मैं मदीना आया तो मैंने अल्लाह से दरख्वास्त की वह किसी स्वालेह शख़्स की हम नशीन इख़्तियार करने की तौफिक बख्शे चुनांचे उस ने मेरे लिए अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु की हम नशीनी मयस्सर फरमा दी, मैं उन के पास बैठ गया, मैंने कहा: मैंने अल्लाह से दुआ की थी के वह

मुझे किसी स्वालेह शख़्स की हम नशीनी मयस्सर फरमाए, मुझे तुम्हारी हम नशीनी नसीब हुई है, उन्होंने ने फ़रमाया: तुम कहाँ से (आए) हो? मैंने कहा कुफा से और मैं खैर की तलब व तलाश में आया हूँ, उन्होंने ने फ़रमाया: क्या तुम में मुस्तजाब अल दअवात सईद बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु नहीं है? और रसूल अल्लाह ﷺ की तहारत के लिए वुज़ू का इंतेज़ाम करने वाले और आप के जूते उठाने वाले इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु नहीं है? रसूल अल्लाह ﷺ के राज़दार हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु और अम्मार रदियल्लाहु अन्हु जिन्हें अल्लाह ने अपने नबी ﷺ की ज़ुबान पर शैतान से पनाह दी है और साहबे किताबिन यानी इंजील व कुरान पर ईमान रखने वाले सलमान नहीं है? (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (3811) * قتادة مدلس و عنعن و للحديث شواهد معنوية

٦٢٣٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «نِعْمَ الرَّجُلُ أَبُو بَكْرٍ نِعْمَ الرَّجُلُ عُمَرُ نِعْمَ الرَّجُلُ أَبُو عُبَيْدَةَ بْنُ الْجَرَّاحِ نِعْمَ الرَّجُلُ أُسَيْدُ بْنُ حُضَيْرٍ نِعْمَ الرَّجُلُ ثَابِتُ بْنُ قَيْسِ بْنِ شَمَّاسٍ نِعْمَ الرَّجُلُ مُعَاذُ بْنُ جَبَلٍ نِعْمَ الرَّجُلُ مُعَاذُ بْنُ عَمْرِو بْنِ الْجَمُوحِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

6233. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “अच्छा शख़्स है अबू बक्र अच्छा शख़्स है, ऊमर अच्छा शख़्स है, अबू उबैदा बिन जराह अच्छा शख़्स है, सय्यिद बिन हज़िर बेहतरीन आदमी है, साबित बिन कैस बिन शम्मास बेहतरीन आदमी है, मुआज़ बिन जबल और अच्छा शख़्स है मुआज़ बिन अम्र बिन जमूह रदी अल्लाह अन्हुम ”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذی (3795)

٦٢٣٤ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ»» أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم: «إِنَّ الْجَنَّةَ تَشْتَاقُ إِلَى ثَلَاثَةٍ عَلِيٍّ وَعَمَّارٍ وسلمان» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6234. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “जन्नत तीन शख्स, अली, अम्मार और सलमान रदियल्लाहु अन्हु की मुश्ताक (उत्सुक) है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3797 وقال : حسن غريب) * فيه الحسن البصری مدلس مشهور و عنعن

٦٢٣٥ - (حَسَنٌ) وَعَنْ»» عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: اسْتَأْذَنَ عَمَّارٌ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «ائْذَنُوا لَهُ مَرْحَبًا بِالطَّيِّبِ الْمُطَيَّبِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6235. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अम्मार रदियल्लाहु अन्हु ने नबी ﷺ से अन्दर आने की इजाज़त

तलब की तो आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ उन्हें इजाज़त दे दो बहोत ही अच्छे शख़्स के लिए खुशामदीद”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (3798 وقال : حسن صحیح)

٦٢٣٦ - (حسن لغيره) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا خُيِّرَ عَمَّارٌ بَيْنَ أمرينِ إِلا اخْتَار أرشدهما» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6236. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “अम्मार को जब भी दो उमूर में से किसी एक को पसंद करने का इख़्तियार दिया गया तो उन्होंने उनमें से मुश्किल काम को पसंद किया”| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواه الترمذی (3799) [و ابن ماجه (148) و الحاکم (3 / 388 ح 5665) و احمد (6 / 113)] * فیه حبیب بن ابی ثابت مدلس و عنعن و للحدیث شاھد عند احمد (1 / 389 ، 445) و الحاکم (3 / 388 ح 5664) من حدیث سالم بن ابی الجعد عن ابن مسعود رضی الله عنه به و سنده منقطع وقال علی بن المدینی :’’ سالم ابن ابی الجعد : لم یلق ابن مسعود ‘‘ فالحدیث ضعیف من جمیع الطریقین

٦٢٣٧ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَنَسٍ قَالَ: لَمَّا حُمِلَتْ جِنَازَةُ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ قَالَ الْمُنَافِقُونَ: مَا أَخَفَّ جِنَازَتَهُ وَذَلِكَ لِحُكْمِهِ فِي بَنِي قُرَيْظَةَ فَبَلَغَ ذَلِكَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «إِنَّ الْمَلَائِكَة [ص:١٧٥ كَانَت تحمله» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6237. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब सईद बिन मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु का जनाज़ा उठाया गया तो मुनाफिको ने कहा: उस का जनाज़ा किस कदर हल्का है, और यह बनू कुरैज़ा के मुतल्लिक उस के फैसले की वजह से है, नबी ﷺ तक बात पहुंची तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “हल्का इसलिए है के फ़रिश्ते इसे उठाए हुए थे”| (सहीह)

صحیح ، رواه الترمذی (3849 وقال : حسن صحیح) و اصله فی صحیح مسلم (2467)

٦٢٣٨ - (حسن) وَعَنْ»» عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَا أَظَلَّتِ الْخَضْرَاءُ وَلَا أَقَلَّتِ الْغَبْرَاءُ أَصْدَقَ مِنْ أَبِي ذَر» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6238. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने रसूल अल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “आसमान तले रुए ज़मीन पर अबू ज़र से ज़्यादा सच्चा आदमी कोई नहीं”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (3801 وقال : حسن غریب)

٦٢٣٩ - (حسن) وَعَنْ»» أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا أَظَلَّتِ الْخَضْرَاءُ وَلَا أَقَلَّتِ الْغَبْرَاءُ مِنْ ذِي لَهْجَةٍ أَصْدَقَ وَلَا أَوْفَى مِنْ أَبِي ذَرٍّ شِبْهِ عِيسَى بن مَرْيَم» يَعْنِي فِي الزّهْد. فَقَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ كَالْحَاسِدِ: يَا رَسُولَ الله أفتعرف ذَلِك لَهُ؟ قَالَ: «نعم فَاعْرِفُوهُ لَهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَقَالَ: حَدِيث حسن غَرِيب

6239. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “आसमान तले रुए ज़मीन पर अबू ज़र से ज्याद रास्त गो और अहद वफा करने वाला और ज़ूहद में इसा बिन मरियम अलैहिस्सलाम से ज़्यादा मुशाबह (अनुरूप) कोई नहीं|” (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3802)

٦٢٤٠ - (صَحِيح) وَعَنْ»» مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ لَمَّا حَضَرَهُ الْمَوْتُ قَالَ: الْتَمِسُوا الْعِلْمَ عِنْدَ أَرْبَعَةٍ: عِنْدَ عُوَيْمِرٍ أَبِي الدَّرْدَاءِ وَعِنْدَ سَلْمَانَ وَعِنْدَ ابْنِ مَسْعُودٍ وَعِنْدَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَلَامٍ الَّذِي كَانَ يَهُودِيًّا فَأسلم فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّهُ عَاشِرُ عَشَرَةٍ فِي الْجَنَّةِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6240. मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है जब उनकी मौत का वक़्त करीब आया तो उन्होंने कहा: चार शख़्स से इल्म हासिल करो उवयमिर अबू दरदा, सलमान, इब्ने मसउद और अब्दुल्लाह बिन सलाम से और अब्दुल्लाह बिन सलाम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन यहूदी थे, फिर इस्लाम कबूल किया, क्योंकि मैंने रसूल अल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “आप दस जन्नतियो में से दसवें हैं”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه الترمذی (3804 وقال : حسن صحیح)

٦٢٤١ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» حُذَيْفَةَ قَالَ: قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ لَوِ اسْتَخْلَفْتَ؟ قَالَ: «إِنِ اسْتَخْلَفْتُ عَلَيْكُمْ فَعَصَيْتُمُوهُ عُذِّبْتُمْ وَلَكِنْ مَا حَدَّثَكُمْ حُذَيْفَةُ فَصَدِّقُوهُ وَمَا أقرأكم عبد الله فاقرؤوه» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6241. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! अगर आप खलीफा मुकर्रर फरमादे? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर मैंने तुम पर खलीफा मुकर्रर कर दिया और तुमने उसकी नाफ़रमानी की तो तुम अज़ाब में मुब्तिला हो जाओगे, लेकिन हुज़ैफ़ा जो तुम्हें बताइए उसकी तस्दीक करो और अब्दुल्लाह जो तुम्हें पढ़ाए इसे पढ़ो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (3812 وقال : حسن) * فیه ابو الیقظان عثمان بن عمیر : ضعیف و شریک القاضی مدلس و عنعن

٦٢٤٢ - (صَحِيح) وَعَنْهُ»» قَالَ: مَا أَحَدٌ مِنَ النَّاسِ تُدْرِكُهُ الْفِتْنَةُ إِلَّا أَنَا أَخَافُهَا عَلَيْهِ إِلَّا مُحَمَّدُ بْنُ مِسْلَمَةَ فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَا تَضُرُّكَ الْفِتْنَةُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

6242. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मुहम्मद बिन मुस्लिम, रदियल्लाहु अन्हु के अलावा हर शख़्स के मुतल्लिक अंदेशा है के इसे फितने नुकसान पहुंचाएगा लेकिन उन के मुतल्लिक कोई अंदेशा नहीं, क्यूंकि मैंने रसूल अल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “फितने तुम्हें नुकसान नहीं पहुंचाएगा”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4663) * هشام بن حسان مدلس و عنعن

٦٢٤٣ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» عَائِشَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأَى فِي بَيْتِ الزُّبَيْرِ مِصْبَاحًا فَقَالَ: «يَا عَائِشَةُ ماأرى أَسْمَاءَ إِلَّا قَدْ نُفِسَتْ وَلَا تُسَمُّوهُ حَتَّى أُسَمِّيَهُ» فَسَمَّاهُ عَبْدَ اللَّهِ وَحَنَّكَهُ بِتَمْرَةٍ بِيَدِهِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6243. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के नबी ﷺ ने जुबैर रदियल्लाहु अन्हु के घर में चिराग जलता हुआ देखा तो फ़रमाया: “आइशा मेरा ख़याल है के अस्मा के यहाँ विलादत हुई है, तुम इस बच्चे का नाम न रखना उस का नाम में खुद रखूँगा”, आप ﷺ ने इस (बच्चे) का नाम अब्दुल्लाह रखा और अपने हाथ से खजूर के साथ इसे घुट्टी दी| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3826 وقال : حسن غريب) * فيه عبدالله بن مؤمل : ضعيف ، و حديث مسلم (2146) هو المحفوظ

٦٢٤٤ - (صَحِيح) وَعَنْ»» عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي عَمِيرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَالَ لِمُعَاوِيَةَ: «اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ هَادِيًا مَهْدِيًّا وَاهْدِ بِهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6244. अब्दुल रहमान बिन अबी उमैर रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं की आप ने मुआविया रदियल्लाहु अन्हु के मुतल्लिक फ़रमाया: “अल्लाह इसे हादी और हिदायत याफ्ता बना और उस के ज़रिए हिदायत नसीब फरमा”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذی (3842 وقال : حسن غريب)

٦٢٤٥ - (حسن لشاهده) وَعَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَسْلَمَ النَّاسُ وآمن عَمْرو بنُ الْعَاصِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وقا ل: هَذَا حَدِيث غَرِيب وَلَيْسَ إِسْنَاده بِالْقَوِيّ

6245. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “लोगो ने इस्लाम कबूल किया और अम्र बिन आस ईमान लाए”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है, उसकी इसनाद क़वी नहीं| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3844) و للحديث شاهد

٦٢٤٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٍ»» قَالَ: لَقِيَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «يَا جَابِرُ مَا لِي أَرَاك منكسراً» قلت يَا رَسُول الله اسْتشْهد أبي قتل يَوْم أحد وَتَرَكَ عِيَالًا وَدَيْنًا قَالَ أَفَلَا أُبَشِّرُكَ بِمَا لَقِي الله بِهِ أَبَاك قَالَ قُلْتُ بَلَى يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ مَا كَلَّمَ اللَّهُ أَحَدًا قَطُّ إِلَّا مِنْ وَرَاءِ حجاب وَأَحْيَا أَبَاك فَكَلمهُ كفاحا فَقَالَ يَا عَبْدِي تَمَنَّ عَلَيَّ أُعْطِكَ قَالَ يَا رَبِّ تُحْيِينِي فَأُقْتَلُ فِيكَ ثَانِيَةً قَالَ الرَّبُّ عز وَجل إِنَّه قد سبق مني أَنهم إِلَيْهَا لَا يرجعُونَ قَالَ وأنزلت هَذِهِ الْآيَةِ [وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا] الْآيَة. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6246. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने मुझ से मुलाकात की तो फ़रमाया: “जाबिर! क्या बात है की मैं तुम्हें मगमूम देख रहा हूँ ?” मैंने अर्ज़ किया: मेरे वालिद शहीद हो गए है और उन्होंने बच्चे और क़र्ज़ छोड़ा है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या मैं तुम्हें इस चीज़ के मुतल्लिक खुशखबरी न सुनाउ जिसके साथ अल्लाह ने तेरे वालिद से मुलाकात फरमाई ?” मैंने अर्ज़ किया: ज़रूर अल्लाह के रसूल! आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह ने जिस से भी कलाम फ़रमाया, पस परदा कलाम फ़रमाया, और तेरे वालिद को जिंदा किया तो उस से हिजाब के बगैर कलाम फ़रमाया, फ़रमाया: मेरे बंदे तमन्ना कर में तुझे अता करूँगा, उन्होंने अर्ज़ किया, रब जी! तू मुझे जिंदा फरमा ताकि मैं तेरी खातिर दोबारा शहीद कर दिया जाऊ रब तबारक व तआला ने फ़रमाया: मेरी तरफ से फैसला हो चूका है के वह वापस नहीं जाएँगे”, तब यह आयत नाज़िल हुई: “अल्लाह की राह में शहीद हो जाने वालो को मुर्दा मत कहो”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3010)

٦٢٤٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعنهُ قا»» ل: اسْتَغْفَرَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خمْسا وَعشْرين مرّة. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6247. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने मेरे लिए पच्चीस मर्तबा मगफिरत तलब की| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (3852 وقال : حسن غریب صحیح) * فیه ابو الزبیر مدلس و عنعن و اخرج مسلم (ح 715 بعد ح 1599) من حدیث ابی الزبیر بغیر ھذا اللفظ وھو الصحیح المحفوظ

٦٢٤٨ - (حسن) وَعَنْ»» أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كَمْ مِنْ أَشْعَثَ أَغْبَرَ ذِي [ص:١٧٥ طِمْرَيْنِ لَا يُؤْبَهُ لَهُ لَوْ أَقْسَمَ عَلَى اللَّهِ لَأَبَرَّهُ مِنْهُمُ الْبَرَاءُ بْنُ مَالِكٍ» رواء التِّرْمِذِيّ وَالْبَيْهَقِيّ فِي دَلَائِل النُّبُوَّة

6248. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “कितने ही लोग है जो परान्दा बाल है, गुबार आलूद है, इन पर दो बोशीदा कपडे है, उनकी कोई वकअत नहीं होती लेकिन अगर वह अल्लाह पर क़सम उठा लें तो वह इसे पूरी फरमा देता है, बराअ बिन मालिक भी उन्हीं में से है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3854 وقال : حسن غریب) و البیھقی فی دلائل النبوۃ (6 / 368) [و صححه الحاکم (3 / 292) و وافقه الذھبی)]

٦٢٤٩ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَلَا إِنَّ عَيْبَتِيَ الَّتِي آوِي إِلَيْهَا أَهْلُ بَيْتِي وَإِنَّ كَرِشِيَ الأنصارُ فاعفوا عَن مسيئهم واقبلوا من مُحْسِنِهِمْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ

6249. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “सुन लो! मेरे अहले बैत मेरे खास है जहाँ में पनाह लेता हूँ और मेरे राज़दान अंसार है, उन के खाताकारों से दरगुज़र करो और उन के नेकोकारों से (अज़र) कबूल करो”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस हसन है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3904) * فيه عطية العوفی : ضعيف مشهور مع التدليس القبيح

٦٢٥٠ - (ضَعِيف) وَعَن»» ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يُبْغِضُ الْأَنْصَارَ أَحَدٌ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ

6250. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह और रोज़ आखिरत पर ईमान रखने वाला कोई शख़्स अंसार से दुश्मनी नहीं रखेगा”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (3906)

٦٢٥١ - (ضَعِيف) وَعَن»» أنس وَأَبِي طَلْحَةَ قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَقْرِئْ قَوْمَكَ السَّلَامَ فَإِنَّهُمْ مَا علمت أَعِفَّةٌ صُبُرٌ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6251. अनस (र), अबू तल्हा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूल अल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “अपनी कौम को सलाम कहो, क्योंकि वह सवाल करने से परहेज़ करते हैं और लड़ाई के वक़्त सब्र करते हैं”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3903 وقال : حسن صحيح) * فيه محمد بن ثابت البنانی : ضعيف ، و تابعه الضعيف : الحسن بن ابی جعفر

٦٢٥٢ - (صَحِيح) وَعَنْ»» جَابِرٍ أَنَّ عَبْدًا لِحَاطِبٍ جَاءَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَشْكُو حَاطِبًا إِلَيْهِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ لَيَدْخُلَنَّ حَاطِبٌ النَّار فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كذبت لَا يدخلهَا فَإِنَّهُ شهد بَدْرًا وَالْحُدَيْبِيَة» . رَوَاهُ مُسلم

6252. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के हातिब रदियल्लाहु अन्हु का गुलाम नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने आप से हातिब की शिकायत करते हुए कहा: अल्लाह के रसूल! हातिब जहन्नम में जाएगा,

रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “तू झूठ कहता है, वह उस में दाखिल नहीं होगा क्योंकि वह बद्र और हुदैबिया में शिरकत कर चूका है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (162 / 2195)، (6403)

٦٢٥٣ - (ضَعِيف) وَعَنْ»»   أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَلَا هَذِهِ الْآيَةَ: [وَإِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُونُوا أمثالكم] قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَنْ هَؤُلَاءِ الَّذِينَ ذَكَرَ اللَّهُ إِنْ تَوَلَّيْنَا اسْتُبْدِلُوا بِنَا ثُمَّ لَا يَكُونُوا أَمْثَالَنَا؟ فَضَرَبَ عَلَى فَخِذِ سَلْمَانَ الْفَارِسِيِّ ثُمَّ قَالَ: «هَذَا وَقَوْمُهُ وَلَوْ كَانَ الدِّينُ عِنْدَ الثُّرَيَّا لَتَنَاوَلَهُ رِجَالٌ مِنَ الْفُرْسِ» . رَوَاهُ [ص:١٧٦ التِّرْمِذِيّ

6253. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाई: “अगर तुम फिर गई तो अल्लाह तुम्हारी जगह दूसरी कौम ले आएगा, फिर वह तुम्हारी तरह नहीं होंगे”, सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! यह कौन लोग हैं जिन का अल्लाह ने ज़िक्र फ़रमाया है के अगर हम फिर गए तो वह हमारी जगह आजाएँगे और वह हमारी तरह नहीं होंगे, आप ﷺ ने सलमान फारसी रदियल्लाहु अन्हु की रान पर हाथ मार कर फ़रमाया: “ये और उनकी कौम अगर दीन सुरय्ये पर भी हुआ तो फारसी लोगों से हासिल कर लेंगे”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (3260) * شيخ من اهل المدينة مجهول

٦٢٥٤ - (ضَعِيف) وَعَنْهُ»»   قَالَ: ذُكِرَتِ الْأَعَاجِمُ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَأَنَا بِهِمْ أَوْ بِبَعْضِهِمْ أَوْثَقُ مِنِّي بِكُمْ أَوْ بِبَعْضِكُمْ رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6254. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ के पास अज़मीओ का ज़िक्र किया गया तो रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “मैं इन पर या उन के बाज़ लोगों पर तुम से या तुम्हारे बाज़ लोगों से ज़्यादा एतमाद करता हूँ”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (3932 وقال : غريب) * صالح بن ابى صالح مهران ضعيف (انظر تقريب التهذيب : 2867) و سفيان بن وكيع خعيف ايضًا

मनाकिब का बयान • بَاب جَامع المناقب

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٦٢٥٥ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَلِيٍّ»» رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ لِكُلِّ نَبِيٍّ سَبْعَةَ نُجَبَاءَ رُقَبَاءَ وَأُعْطِيتُ أَنَا أَرْبَعَةَ عشرَة قُلْنَا: مَنْ هُمْ؟ قَالَ: " أَنَا وَابْنَايَ وَجَعْفَرٌ وَحَمْزَةُ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَمُصْعَبُ بْنُ عُمَيْرٍ وَبِلَالٌ وَسَلْمَانُ وَعَمَّارٌ وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْعُودٍ وَأَبُو ذَر والمقداد. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6255. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "हर नबी के सात बरगुज़ेदा निगेहबान होते हैं जबकि मुझे चौदाह अता किए गए है, हमने अर्ज़ किया: वह कौन है? आप ﷺ ने फ़रमाया: "मैं और मेरे दो बेटे हसन व हुसैन (र अ), जाफर, हम्ज़ा, अबू बकर, उमर, मुसअब बिन उमैर, बिलाल, सलमान, अम्मा,र अब्दुल्लाह बिन मसउद, अबू ज़र और मिकदाद (रअअ)"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3785) [و صححه الحاکم (3 / 199) فتعقبه الذھبی بقوله :'' بل کثیر واہ ''] * فیه کثیر النواء : ضعیف

٦٢٥٦ - (صَحِيح) وَعَنْ»» خَالِدِ بْنِ الْوَلِيدِ قَالَ: كَانَ بَيْنِي وَبَيْنَ عَمَّارِ بْنِ يَاسِرٍ كَلَامٌ فَأَغْلَظْتُ لَهُ فِي الْقَوْلِ فَانْطَلَقَ عَمَّارٌ يَشْكُونِي إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَجَاءَ خَالِدٌ وَهُوَ يشكوه إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: فَجَعَلَ يُغْلِظُ لَهُ وَلَا يَزِيدُهُ إِلَّا غِلْظَةً وَالنَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَاكِتٌ لَا يَتَكَلَّمُ فَبَكَى عَمَّارٌ وَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَلَا تَرَاهُ؟ فَرَفَعَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأْسَهُ وَقَالَ: «مَنْ عَادَى عَمَّارًا عَادَاهُ اللَّهُ وَمَنْ أَبْغَضَ عَمَّارًا أَبْغَضَهُ اللَّهُ» . قَالَ خَالِدٌ: فَخَرَجْتُ فَمَا كَانَ شَيْءٌ أَحَبَّ إِلَيَّ من رضى عمار فَلَقِيته بِمَا رَضِي فَرضِي

6256. खालिद बिन वलीद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मेरे और अम्मार बिन यासिर रदियल्लाहु अन्हुमा के दरमियान किसी मुआमला में मुकालिमा (बहसबाज़ी) हो गया तो मैंने उन से सख्त लहजे में बात की तो अम्मार रदियल्लाहु अन्हु रसूल अल्लाह ﷺ से मेरी शिकायत लगाने चले गए, खालिद रदियल्लाहु अन्हु आए तो अम्मार रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से खालिद रदियल्लाहु अन्हु की शिकायत कर रहे थे, रावी बयान करते हैं, खालिद रदियल्लाहु अन्हु उन से सख्त लहजे में बात करने लगे और इस सख्ती में इज़ाफा होता चला गया जबकि नबी ﷺ ख़ामोश है कोई बात नहीं कर रहे, (इस पर) अम्मार रदियल्लाहु अन्हु रो पड़े और अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप उन्हें देख नहीं रहे? नबी ﷺ ने अपना सर मुबारक उठाकर फ़रमाया: "जिस ने अम्मार से अदावत रखी अल्लाह उन से अदावत रखेगा और जो शख़्स अम्मार से बुग्ज़ रखेगा तो अल्लाह उन से बुग्ज़ रखेगा", खालिद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं वहाँ से निकला तो अम्मार रदियल्लाहु अन्हु की रज़ामंदी के सिवा मुझे कोई चीज़ ज़्यादा महबूब नहीं थी, मैंने उन्हें राज़ी करने की कोशिश की हत्ता कि वह राज़ी हो गए| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (4 / 89 ح 16938) [و الحاکم (3 / 390391) و صححه و للسند علة ذکرھا الذھبی و لکنھا غیر قادحة]

٦٢٥٧ - (صَحِيح) وَعَن»» أبي عُبَيدةَ أَنَّهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «خَالِدٌ سَيْفٌ مِنْ سُيُوفِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ وَنِعْمَ فَتَى الْعَشِيرَةِ» . رَوَاهُمَا أَحْمد

6257. अबू उबैदाह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने कहा: मैंने रसूल अल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “खालिद अल्लाह अज्ज़वजल की तलवारों में से एक तलवार हैं, और अपने कबिले के अच्छे नोजवान है”| दोनों अहादीस को इमाम अहमद ने रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه احمد (4 / 90 ح 16948) * فيه عبد الملک بن عمير : مدلس ولم اجد تصريح سماعه فالسند ضعيف وقال رسول الله صلی اللہ علیه و آله وسلم فی خالد بن الوليد رضی الله عنه :’’ حتی اخذ الراية سيف من سيوف الله حتی فتح الله عليهم ‘‘ رواه البخاری فی صحيحه (4262) و هذا الحديث يغنی عنه

٦٢٥٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ بُرَيْدَة»» قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى أَمرنِي بِحُبِّ أَرْبَعَةٍ وَأَخْبَرَنِي أَنَّهُ يُحِبُّهُمْ» . قِيلَ يَا رَسُولَ اللَّهِ سَمِّهِمْ لَنَا قَالَ: «عَلِيٌّ مِنْهُمْ» يَقُولُ ذَلِكَ ثَلَاثًا «وَأَبُو ذَرٍّ وَالْمِقْدَادُ وَسَلْمَانُ أَمرنِي بحبِّهم وَأَخْبرنِي أنه يحبُّهم» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

6258. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह तबारक व तआला ने चार शख़्स से मुहब्बत करने का मुझे हुक्म फ़रमाया है, और उस ने मुझे बताया के वह भी उन से मुहब्बत करता है”, अर्ज़ किया गया: अल्लाह के रसूल! हमें उन के नाम बता दें, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अली उनमें से है”, आप ﷺ ने तीन बार उनका नाम लिया ،” (बाकी) अबू ज़र, मिकदाद और सलमान है, उस ने मुझे उन से मुहब्बत करने का हुक्म फ़रमाया है और उस ने मुझे खबर दी है के वह उन से मुहब्बत करता है”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3718) [و ابن ماجه (149)] * شريک القاضی صرح بالسماع عند احمد (5 / 351 ح 22968) و حديثه حسن اذا صرح بالسماع و حدث قبل اختلاطه

٦٢٥٩ - (صَحِيح) وَعَن»» جَابر قا ل: كَانَ عُمَرُ يَقُولُ: أَبُو بَكْرٍ سَيِّدُنَا وَأَعْتَقَ سَيِّدَنَا يَعْنِي بِلَالًا. رَوَاهُ البُخَارِيّ

6259. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, उमर रदियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे: हमारे सरदार अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने हमारे सरदार यानी बिलाल रदियल्लाहु अन्हु को आज़ाद किया| (बुखारी)

رواه البخاری (3754)

٦٢٦٠ - (صَحِيح) وَعَنْ»» قَيْسِ بْنِ أَبِي حَازِمٍ أَنَّ بِلَالًا قَالَ لِأَبِي بَكْرٍ: إِنْ كُنْتَ إِنَّمَا اشْتَرَيْتَنِي لِنَفْسِكَ فَأَمْسِكْنِي وَإِنْ كُنْتَ إِنَّمَا اشْتَرَيْتَنِي لِلَّهِ فَدَعْنِي وَعمل الله. رَوَاهُ البُخَارِيّ

6260. कैस बिन अबी हाज़िम रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के बिलाल रदियल्लाहु अन्हु ने अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु से कहा: अगर तो आप ने मुझे अपने ज़ात के लिए खरीदा है तो फिर आप मुझे रोक रखे, और अगर आप ने मुझे अल्लाह की खातिर खरीदा है तो फिर मुझे छोड़ दे और अल्लाह के रास्ते में अमल करने दें| (बुखारी)

رواه البخاری (3755)

٦٢٦١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم فَقَالَ إِنِّي مَجْهُودٌ فَأَرْسَلَ إِلَى بَعْضِ نِسَائِهِ فَقَالَتْ وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ مَا عِنْدِي إِلَّا مَاءٌ ثُمَّ أَرْسَلَ إِلَى أُخْرَى فَقَالَتْ مِثْلَ ذَلِكَ وَقُلْنَ كُلُّهُنَّ مِثْلَ ذَلِكَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «من يضيفه ويC» فَقَامَ رَجُلٌ مِنَ الْأَنْصَارِ يُقَالُ لَهُ أَبُو طَلْحَةَ فَقَالَ أَنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ فَانْطَلَقَ بِهِ إِلَى رَحْلِهِ فَقَالَ لِامْرَأَتِهِ هَلْ عِنْدَكِ شَيْءٌ قَالَتْ لَا إِلَّا قُوتُ صِبْيَانِي قَالَ فَعَلِّلِيهِمْ بِشَيْءٍ وَنَوِّمِيهِمْ فَإِذَا دَخَلَ ضَيْفُنَا فَأَرِيهِ أَنا نَأْكُل فَإِذا أَهْوى لِيَأْكُلَ فَقُومِي إِلَى السِّرَاجِ كَيْ تُصْلِحِيهِ فَأَطْفِئِيهِ فَفعلت فقعدوا وَأكل الضَّيْف فَلَمَّا أَصْبَحَ [ص:١٧٦ غَدَا عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَقَدْ عَجِبَ اللَّهُ أَوْ ضَحِكَ اللَّهُ مِنْ فُلَانٍ وَفُلَانَةٍ»»» وَفِي رِوَايَةٍ مِثْلَهُ وَلَمْ يُسَمِّ أَبَا طَلْحَةَ وَفِي آخِرِهَا فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى [وَيُؤْثِرُونَ عَلَى أَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ] مُتَّفق عَلَيْهِ

6261. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी रसूल अल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने अर्ज़ किया, मुझे शदीद भूख लगी हुई है, चुनांचे आप ने अपनी किसी ज़ौजा ए मोहतरमा के पास पैग़ाम भेजा तो उन्होंने अर्ज़ किया: उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को हक़ के साथ मबउस फ़रमाया है! मेरे पास तो सिर्फ पानी है, फिर आप ने दूसरी मोहतरमा के पास पैग़ाम भेजा तो उस ने भी इसी तरह कहा, और तमाम अज़वाज ए मूतहरात ने यही जवाब दिया तो रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “जो उसकी मेहमान नवाज़ी करेगा अल्लाह उस पर रहम फरमाएगा”, अंसार में से अबू तल्हा नामी एक आदमी खड़ा हुआ और उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! में, वह इसे अपने घर ले गए और अपने अहलिया से फ़रमाया: क्या तुम्हारे पास (खाने के लिए) कोई चीज़ है? उस ने कहा सिर्फ मेरे बच्चो के लिए खाना है, उन्होंने ने फ़रमाया: किसी चीज़ के ज़रिए उन्हें दिलासा दे कर सुला दो, जब हमारा महमान दाखिल हो तो इसे ज़ाहिर करना के हम खा रहे हैं, जब वह खाने के लिए अपना हाथ बढ़ाए तो चिराग दुरुस्त करने के बहाने इसे बुझा देना, चुनांचे उन्होंने ऐसे ही किया, वह बैठ गए महमान ने खाना खा लिया और इन दोनों (मियां बीवी) ने भूके रह कर रात बसर की, जब सुबह के वक़्त वह रसूल अल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए तो रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह ने फलां मर्द और फलां औरत (के अय्सार) पर ताज्जुब फ़रमाया, या अल्लाह इन दोनों पर हंस पड़ा”, एक दूसरी रिवायत में है: आप ने अबू तल्हा का नाम नहीं लिया, और इस रिवायत के आख़िर में है: अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फरमाई: “वो अपनी जानो पर दूसरे को तरजीह देते हैं अगरचे उन्हें खुद भी ज़रूरत होती है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (4889) و مسلم (172 / 2054)، (5359)

٦٢٦٢ - (ضَعِيف) وَعَنْهُ»» قَالَ: نَزَلْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْزِلًا فَجَعَلَ النَّاسُ يَمُرُّونَ فَيَقُولُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ «مَنْ هَذَا يَا أَبَا هُرَيْرَةَ؟» فَأَقُولُ: فُلَانٌ. فَيَقُولُ: «نِعْمَ عَبْدُ اللَّهِ هَذَا» وَيَقُولُ: «مَنْ هَذَا؟» فَأَقُولُ: فُلَانٌ. فَيَقُولُ: «بِئْسَ عَبْدُ اللَّهِ هَذَا» حَتَّى مَرَّ خَالِدُ بْنُ الْوَلِيدِ فَقَالَ: «مَنْ هَذَا؟» فَقُلْتُ: خَالِدُ بْنُ الْوَلِيدِ. فَقَالَ: «نِعْمَ عَبْدُ اللَّهِ خَالِدُ بْنُ الْوَلِيدِ سَيْفٌ مِنْ سيوف الله» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6262. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हमने रसूल अल्लाह ﷺ के साथ एक जगह पड़ाव डाला तो लोग इधर उधर फिरने लगे, रसूल अल्लाह ﷺ फरमाते: “अबू हुरैरा यह कौन है?” में अर्ज़ करता फलां है, आप ﷺ फरमाते: “ये अल्लाह का बंदा अच्छा है”, आप ﷺ पूछते: “ये कौन है?” में अर्ज़ करता फलां है, आप ﷺ फरमाते: “ये अल्लाह का बंदा बुरा है”, हत्ता कि खालिद बिन वलीद गुज़रे तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये कौन है?” मैंने अर्ज़ किया: खालिद बिन वलीद रदियल्लाहु अन्हु है आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह का बंदा खालिद बिन वलीद अच्छा है, वह अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार है”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (3846)

٦٢٦٣ - (صَحِيح) وَعَنْ»» زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ قَالَ: قَالَتِ الْأَنْصَارُ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ لِكُلِّ نَبِيٍّ أَتْبَاعٌ وَإِنَّا قَدِ اتَّبَعْنَاكَ فَادْعُ اللَّهَ أَنْ يَجْعَلَ أَتْبَاعَنَا منا فَدَعَا بِهِ " رَوَاهُ البُخَارِيّ

6263. ज़ैद बिन अरक़म रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अंसार ने अर्ज़ किया, अल्लाह के नबी! हर नबी के पैरोकार होते हैं, हमने भी आप की इत्तेबा की है, आप अल्लाह से दुआ फरमाइए के वह हमारे मुत्तबीइन को हम में शरीक फरमादे, आप ﷺ ने इस की दुआ फरमाई| (बुखारी)

رواه البخاری (3787)

٦٢٦٤ - (صَحِيح) وَعَنْ»» قَتَادَةَ قَالَ مَا نَعْلَمُ حَيًّا مِنْ أَحْيَاءِ الْعَرَبِ أَكْثَرَ شَهِيدًا أَعَزَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنَ الْأَنْصَارِ. قَالَ: وَقَالَ أَنَسٌ: قُتِلَ مِنْهُمْ يَوْمَ أُحُدٍ سَبْعُونَ وَيَوْمَ بِئْرِ مَعُونَةَ سَبْعُونَ وَيَوْمَ الْيَمَامَةِ عَلَى عَهْدِ أَبِي بَكْرٍ سَبْعُونَ. رَوَاهُ البُخَارِيّ

6264. क़तादाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम क़बीलो अरब में से कोई ऐसा कबिले नहीं जानते जिसके शुहदा की तादाद अंसार से ज़्यादा हो, रोज़ ए कियामत सबसे ज़्यादा मुअज्ज़ज़ कबीला अंसार का कबीला होगा, रावी बयान करते हैं, अनस रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: गज़वा ए उहद में उन के सत्तर आदमी शहीद हुए, बिअरी मउनह के वाकिए में सत्तर शहीद हुए, और अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु के अहद में यमाम की लड़ाई में सत्तर शहीद हुए| (बुखारी)

رواه البخاری (4078)

٦٢٦٥ - (صَحِيح) وَعَن»» قيس بن حَازِمٍ قَالَ: كَانَ عَطَاءُ الْبَدْرِيِّينَ خَمْسَةُ آلَافٍ. وَقَالَ عُمَرُ: لَأُفَضِّلَنَّهُمْ على مَنْ بَعدَهم. رَوَاهُ البُخَارِيّ

6265. कैस बिन अबी हाज़िम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, गज़वा ए बद्र में शरीक होने वाले सहाबा किराम का वज़ीफ़ा पांच पांच हज़ार था, और उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: मैं इन को उन के बाद वालो पर फ़ज़ीलत दूंगा| (बुखारी)

رواه البخارى (4022) * تسمية من سمى من اهل البدر ، فى صحيح البخارى (كتاب المغازى باب : 13 بعد ح 4027) بخارى ، كتاب المغازى ، باب تسمية من سمى من اهل بدر

بَابُ ذِكْرِ الْيَمَنِ وَالشَّامِ وَذِكْرِ أُوَيْسٍ الْقَرَنِيِّ — यमन, शाम और औवेस करनी का बयान

الْفَصْلُ الأول — पहली फस्ल

٦٢٦٦ - (صَحِيح) عَن عمر بن الْخطاب أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " إِنَّ رَجُلًا يَأْتِيكُمْ مِنَ الْيَمَنِ يُقَالُ لَهُ: أُوَيْسٌ لَا يَدَعُ بِالْيَمَنِ غَيْرَ أُمٍّ لَهُ قَدْ كَانَ بِهِ بَيَاضٌ فَدَعَا اللَّهَ فَأَذْهَبَهُ إِلَّا مَوْضِعَ الدِّينَارِ أَوِ الدِّرْهَمِ فَمَنْ لَقِيَهُ مِنْكُمْ فَلْيَسْتَغْفِرْ لَكُمْ "»» وَفِي رِوَايَةٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يَقُولُ: " إِنَّ خَيْرَ التَّابِعِينَ رَجُلٌ يُقَالُ لَهُ: أُويس وَله والدةٌ وَكَانَ بِهِ بَيَاض فَمُرُوهُ فليستغفر لكم ". رَوَاهُ مُسلم

6266. उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “यमन से उवैश नामी शख़्स तुम्हारे पास आएगा, वह यमन में सिर्फ अपने वालिदा को छोड़ आएगा, इसे बरस था, उस ने अल्लाह से दुआ की तो उस ने दीनार या दिरहम के बराबर जगह के अलावा इस मर्ज़ को ख़तम कर दिया, जो शख़्स उस से मुलाकात करे तो वह तुम्हारे लिए उस से दुआएं मगफिरत की दरख्वास्त करे”| एक दूसरी रिवायत में है फ़रमाया मैंने रसूल अल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “ताबेइन में से सबसे बेहतर शख़्स उवैश है, उसकी वालिदा है, इसे बरस का मर्ज़ था तुम उस से दरख्वास्त करना के वह तुम्हारे लिए दुआएं मगफिरत करे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (223 / 2542)، (6490)

٦٢٦٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَتَاكُم أهلُ الْيمن هم أَرقُّ أفئدَةً وَأَلْيَنُ قُلُوبًا الْإِيمَانُ يَمَانٍ وَالْحِكْمَةُ يَمَانِيَةٌ وَالْفَخْرُ وَالْخُيَلَاءُ فِي أَصْحَابِ الْإِبِلِ وَالسَّكِينَةُ وَالْوَقَارُ فِي أهل الْغنم» . مُتَّفق عَلَيْهِ

6267. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “यमन वाले तुम्हारे पास

आए है, वह रकिकुल कल्ब और नरम दिल है, ईमान यमन वालो का है और हिकमत भी यमन वालो की है, फख्र गुरुर ऊंट वालो में होता है, जबकि सकिनत व वक़ार (गरिमा) बकरी वालो में होता है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (4388) و مسلم (8684 / 52)، (184 و 186)

٦٢٦٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «رَأْسُ الْكُفْرِ نَحْوَ الْمَشْرِقِ وَالْفَخْرُ وَالْخُيَلَاءُ فِي أَهْلِ الْخَيْلِ وَالْإِبِلِ وَالْفَدَّادِينَ أَهْلِ الْوَبَرِ وَالسَّكِينَةُ فِي أَهْلِ الْغَنَمِ» مُتَّفق عَلَيْهِ

6268. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "कुफ्र का सर चश्मे मशरिक में है, फख्र गुरुर घोड़े वालो, ऊंट वालो और जागीर दारो जो ऊंट के बालो से बने हुए खैमो में रहते है उनमें होता है और सकिनत बकरी वालो में है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (3301) و مسلم (85 / 52)، (185)

٦٢٦٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الْأَنْصَارِيِّ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مِنْ هَهُنَا جَاءَتِ الْفِتَنُ - نَحْوَ الْمَشْرِقِ - وَالْجَفَاءُ وَغِلَظُ الْقُلُوبِ فِي الْفَدَّادِينَ أَهْلِ الْوَبَرِ عِنْدَ أُصُولِ أَذْنَابِ الْإِبِلِ وَالْبَقَرِ فِي رَبِيعَةَ وَمُضَرَ» مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

6269. अबू मसउद अंसारी रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "इस तरफ यानी मशरिक की तरफ से फितने नमूदार होंगे, जफा और सख्त दिल जंगल में रहने वाले खैमा नशीनो रबिआ और मुज़िर (कबीलों) से ताल्लुक रखने वाले उन लोगों में होगी जो ऊटों और बैलो की दुमो के पीछे चल रहे होंगे"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (3498) و مسلم (81 / 51)، (181)

٦٢٧٠ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «غِلَظُ الْقُلُوبِ وَالْجَفَاءُ فِي الْمَشْرِقِ وَالْإِيمَانُ فِي أَهْلِ الْحِجَازِ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

6270. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "दिलों की सख्ती और जफा मशरिक वालो में है और ईमान अहल हज्जाज़ में है"| (मुस्लिम)

رواہ مسلم (92 / 53)، (193)

٦٢٧١ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي شَامِنَا اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا

فِي يَمَنِنَا» . قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَفِي نَجْدِنَا؟ فَأَظُنُّهُ قَالَ فِي الثَّالِثَةِ: «هُنَاكَ الزَّلَازِلُ وَالْفِتَنُ وَبِهَا يَطْلُعُ قرن الشَّيْطَان» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

6271. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह हमारे शाम में बरकत फरमा, ऐ अल्लाह! हमारे यमन में बरकत फरमा”, सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हमारे नज्द में, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह हमारे शाम में बरकत फरमा, ऐ अल्लाह! हमारे यमन में बरकत फरमा”, उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हमारे नज्द में, मेरा ख़याल है के आप ﷺ ने तीसरी मर्तबा फ़रमाया: “वहां ज़लज़ले और फितने होंगे और शैतान का सिंग वहीं से तुलुअ होगा”| (बुखारी)

رواه البخاری (7095)

بَابُ ذِكْرِ الْيَمَنِ وَالشَّامِ وَذِكْرِ أُوَيْسٍ الْقَرَنِيِّ — यमन, शाम और औवेस करनी का बयान

الْفَصْل الثَّانِي — दूसरी फस्ल

٦٢٧٢ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَنَسٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَظَرَ قِبَلَ الْيَمَنِ فَقَالَ: «اللَّهُمَّ أَقْبِلْ بِقُلُوبِهِمْ وَبَارِكْ لَنَا فِي صاعِنا ومُدِّنا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6272. अनस (र), ज़ैद बिन साबित रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं की नबी ﷺ ने यमन की तरफ देखा तो फ़रमाया: “अल्लाह उन के दिलों को (हमारी तरफ) मुतवज्जे फरमा और हमारे साअ और हमारे मुद में बरकत फरमा”| (हसन)

حسن ، رواہ الترمذی (3934 وقال : حسن غریب)

٦٢٧٣ - (صَحِيح) وَعَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «طُوبَى لِلشَّامِ» قُلْنَا: لِأَيٍّ ذَلِكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: «لِأَنَّ مَلَائِكَةَ الرَّحْمَنِ بَاسِطَةٌ أَجْنِحَتَهَا عَلَيْهَا» رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ

6273. ज़ैद बिन साबित रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “शाम के लिए खुशहाली है”, हमने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! यह किस वजह से है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्योंकि रहमान के फ़रिश्ते उस पर अपने पर फेलाए हुए है”| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ احمد (5 / 184185 ح 21942) و الترمذی (3954 وقال : حسن غریب)

٦٢٧٤ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «سَتَخْرُجُ نَارٌ مِنْ [ص:١٧٦ نَحْوِ حَضْرَمَوْتَ أَوْ مِنْ حَضْرَمَوْتَ تَحْشُرُ النَّاسَ» قُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ فَمَا تَأْمُرنَا؟ قَالَ: «عَلَيْكُم بِالشَّام» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6274. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “ हज़्र मव्त की तरफ या हज़्र मव्त से आग निकलेगी वह लोगों को इकट्ठा करेगी”, हमने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! आप हमें क्या हुक्म फरमाते हैं? आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम शाम की राहे इख़्तियार करना”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذی (2217 وقال : حسن صحيح غريب)

٦٢٧٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّهَا سَتَكُونُ هِجْرَةٌ بَعْدَ هِجْرَةٍ فَخِيَارُ النَّاسِ إِلَى مُهَاجَرِ إِبْرَاهِيمَ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «فَخِيَارُ أَهْلِ الْأَرْضِ أَلْزَمُهُمْ مُهَاجَرَ إِبْرَاهِيمَ وَيَبْقَى فِي الْأَرْضِ شِرَارُ أَهْلِهَا تَلْفِظُهُمْ أَرَضُوهُمْ تَقْذَرُهُمْ نَفْسُ الله تَحْشُرُهُمْ النَّارُ مَعَ الْقِرَدَةِ وَالْخَنَازِيرِ تَبِيتُ مَعَهُمْ إِذَا بَاتُوا وَتَقِيلُ مَعَهُمْ إِذَا قَالُوا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

6275. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूल अल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “अनकरीब हिजरत के बाद हिजरत होगी, बेहतरीन लोग वह होंगे जो इब्राहीम अलैहिस्सलाम की जगह (शाम) की तरफ हिजरत करेंगे”| एक दूसरी रिवायत में है: “ज़मीन वालो में से सबसे बेहतर लोग वह होंगे जिन के ज़्यादातर लोग इब्राहीम अलैहिस्सलाम की जाए हिजरत (शाम) की तरफ हिजरत करेंगे और ज़मीन पर बदतरीन लोग रह जाएँगे, उनकी जगह उन्हें फेंक देगी, अल्लाह उन्हें नापसंद फरमाएगा, आग उन्हें बंदरो और खिंज़िरो के साथ इकट्ठा करेगी, वह (आग) उन के साथ रात बसर करेगी, जब वह रात बसर करेंगे, और जब वह दोपहर का सोना करेंगे तो वह उन के साथ दोपहर का सोना करेगी”| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (2482)

٦٢٧٦ - (صَحِيح) عَن»» ابْنِ حَوَالَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «سيصير الْأَمر إِلَى أَنْ تَكُونُوا جُنُودًا مُجَنَّدَةً جُنْدٌ بِالشَّامِ وَجُنْدٌ بِالْيَمَنِ وَجُنْدٌ بِالْعِرَاقِ» . فَقَالَ ابْنُ حَوَالَةَ: خِرْ لِي يَا رَسُولَ اللَّهِ. إِنْ أَدْرَكْتُ ذَلِكَ. فَقَالَ: «عَلَيْكَ بِالشَّامِ فَإِنَّهَا خِيَرَةُ اللَّهِ مِنْ أَرْضِهِ يَجْتَبِي إِلَيْهَا خِيَرَتَهُ مِنْ عِبَادِهِ فَأَمَّا إِنْ أَبَيْتُمْ فَعَلَيْكُمْ بِيَمَنِكُمْ وَاسْقُوا مِنْ غُدَرِكُمْ فَإِنَّ اللَّهَ تَوَكَّلَ لِي بِالشَّامِ وَأَهْلِهِ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُد

6276. इब्ने हवाला रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “अनकरीब अम्र (अम्र ए इस्लाम या अम्र ए किताल) इस तरह होगा की तुम लश्करो का मजमुआ होगे, एक लश्कर शाम में होगा, एक लश्कर यमन में और एक लश्कर इराक में”, इब्ने हवाला रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! अगर में यह सूरते हाल पा लू तो आप मेरे लिए किसी लश्कर का इंतेखाब फरमादे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम शाम के लश्कर को लाज़िम पकड़ना, क्योंकि वह अल्लाह की सर ज़मीन में एक पसंदीदा खित्ता है और वह अपने पसंदीदा

बंदो को उसकी तरफ लाएगा, हाँ अगर तुम वहां न जाओ तो फिर तुम यमन का रुख करना और अपने होज़ो से सेराब होना क्योंकि अल्लाह अज्ज़वजल ने शाम और अहले शाम की मुहाफ़िज़ की मुझे ज़मानत दिया है"| (हसन)

حسن ، رواه احمد (4 / 110 ح 17130) و ابوداؤد (2483)

بَابُ ذِكْرِ الْيَمَنِ وَالشَّامِ وَذِكْرِ أُوَيْسٍ الْقَرَنِيِّ — यमन, शाम और औवेस करनी का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث — तीसरी फस्ल

٦٢٧٧ - (ضَعِيف) عَنْ»» شُرَيْحِ بْنِ عُبَيْدٍ قَالَ: ذُكِرَ أَهْلُ الشَّام عِنْد عليٍّ [رَضِي الله عَنهُ] وَقيلَ الْعَنْهُمْ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ قَالَ: لَا أَنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «الْأَبْدَالُ يَكُونُونَ بِالشَّامِ وَهُمْ أَرْبَعُونَ رَجُلًا كُلَّمَا مَاتَ رَجُلٌ أَبْدَلَ اللَّهُ مَكَانَهُ رَجُلًا يُسْقَى بِهِمُ الْغَيْثُ [ص:١٧٦ وَيُنْتَصَرُ بِهِمْ عَلَى الأعداءِ وَيصرف عَن أهل الشَّام بهم الْعَذَاب»

6277. शरीह बिन उबैद रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, अली रदियल्लाहु अन्हु के पास अहले शाम का ज़िक्र किया गया, और अर्ज़ किया गया, अमीरुल मोमिनीन इन पर लानत भेजे, उन्होंने ने फ़रमाया: नहीं, क्योंकि मैंने रसूल अल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "अब्दाल शाम में होंगे, और वह चालीस लोग है जब एक आदमी फौत हो जाएगा तो अल्लाह उसकी जगह दूसरे आदमी को ले आएगा, उनकी वजह से बारिश बरसती है, उन के ज़रिए दुश्मनों से बदला लिया जाता है और उनकी वजह से शाम से अज़ाब दूर कर दिया जाता है"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (1 / 112 ح 896) * شريح بن عبيد عن على رضى الله عنه : منقطع ، فالسند ضعيف لانقطاعهوقال سيدنا على رضى الله عنه :'' ستكون فتنة يحصل الناس منها كما يحصل الذهب فى المعدن فلا تسبوا اهل الشام و سبوا ظلمتهم فان فيهم الابدال و سير سل الله اليهم سيبًا من السماء فيغرقهم ،،، '' الخ رواه الحاكم (4 / 553 ح 8658) و صححه و وافقه الذهبى و سنده صحيح

٦٢٧٨ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» رَجُلٍ مِنَ الصَّحَابَةِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " سَتُفْتَحُ الشَّامُ فإذا خُيِّرْتم المنازلَ فِيهَا فَعَلَيْكُم بِمَدِينَة يُقَال لَهُ دِمَشْقُ فَإِنَّهَا مَعْقِلُ الْمُسْلِمِينَ مِنَ الْمَلَاحِمِ وَفُسْطَاطُهَا مِنْهَا أَرْضٌ يُقَالُ لَهَا: الْغُوطَةُ ". رَوَاهُمَا أَحْمَدُ

6278. सहाबा रदियल्लाहु अन्हु में से एक आदमी से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "सर ज़मीन शाम फतह होगी, अगर तुम्हें वहां किसी जगह को पसंद करने का इख़्तियार दिया जाए तो फिर दमिश्क नामी जगह को पसंद करना, क्योंकि वह हर्ब व किताल से मुसलमानों की जाए पनाह है और उस का बड़ा शहर है,

वहां एक जगह है जिसे अल गुवताह कहा जाता है” दोनों अहादीस को इमाम अहमद ने रिवायत किया है| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (4 / 160 ح 17609 فيه ابوبكر بن ابى مريم ضعيف و لحديثه شواهد عند ابى داود (4298) و سنده صحيح) وغيره وبها صح الحديث

٦٢٧٩ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ»» أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْخِلَافَةُ بِالْمَدِينَةِ وَالْمُلْكُ بِالشَّام»

6279. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “खिलाफत मदीना में है जबकि बादशाहत शाम में है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى دلائل النبوة (6 / 447) [و الحاكم (3 / 72 ح 4440فيه سليمان بن ابى سليمان الهاشمى مولى ابن عباس : لايعرف و هيشم مدلس و عنعن

٦٢٨٠ - (صَحِيح) وَعَنْ»» عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «رَأَيْتُ عَمُودًا مِنْ نُورٍ خَرَجَ مِنْ تَحْتِ رَأْسِي سَاطِعًا حَتَّى اسْتَقَرَّ بِالشَّامِ» . رَوَاهُمَا الْبَيْهَقِيُّ فِي «دَلَائِلِ النُّبُوَّة»

6280. उमर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “मैंने अपने सर के नीचे से नुरानी सुतून निकलता हुआ देखा और वह ऊपर को बुलंद हुआ हत्ता कि वह शाम में जा ठहरा”, दोनों रिवायत को इमाम बयहकी ने दलाइलुल नबुवा में रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه البيهقى فى دلائل النبوة (6 / 449) من طريق يعقوب بن سفيان الفارسى وهو فى كتاب المعرفة و التاريخ له (2 / 311) * فيه نصر بن محمد بن سليمان الحمصى ضعيف ضعفه الجمهور و ابوه مجهول الحال فالسند ضعيف ، و للحديث شواهد ضعيفة ، انظر تنقيح الرواة (3 / 274) وغيره

٦٢٨١ - (صَحِيح) وَعَنْ»» أَبِي الدَّرْدَاءِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " إِنَّ فُسْطَاطَ الْمُسْلِمِينَ يَوْمَ الْمَلْحَمَةِ بِالْغُوطَةِ إِلَى جَانِبِ مَدِينَةٍ يُقَالُ لَهَا: دِمَشْقُ مِنْ خَيْرِ مَدَائِنِ الشَّامِ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

6281. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “जंग व जदल के दिन मुसलमानों का गिरोह दमिश्क नामी शहर की जानिब अल गुवताह के मक़ाम पर होगा, यह शाम का सबसे बेहतरीन शहर है”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (4298)

٦٢٨٢ - (ضَعِيف) وَعَنْ»» عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ سُلَيْمَانَ قَالَ: سَيَأْتِي مَلِكٌ مِنْ مُلُوكِ الْعَجَمِ فَيَظْهَرُ عَلَى الْمَدَائِنِ كلّها إلا دمشق. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

6282. अब्दुल रहमान बिन सुलेमान बयान करते हैं, अजमी बादशाह ज़ाहिर होगा तो वह दमिश्क के अलावा तमाम शहरो पर ग़ालिब आ जाएगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4639) * فيه عبد العزيز : لم اجده له ترجمة و لعله عبدالله بن العلاء كما يظهر من تهذيب الكمال و ان صح فالسند صحيح

بَاب ثَوَاب هَذِهِ الْأمة • इस उम्मत के सवाब का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٦٢٨٣ - (صَحِيح) عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " إِنَّمَا أَجَلُكُمْ فِي أَجَلِ مَنْ خَلَا مِنَ الْأُمَمِ مَا بَيْنَ صَلَاةِ الْعَصْرِ إِلَى مَغْرِبِ الشَّمْسِ وَإِنَّمَا مَثَلُكُمْ وَمَثَلُ الْيَهُودِ وَالنَّصَارَى كَرَجُلٍ اسْتَعْمَلَ عُمَّالًا فَقَالَ: من يعْمل إِلَى نِصْفِ النَّهَارِ عَلَى قِيرَاطٍ قِيرَاطٍ فَعَمِلَتِ الْيَهُودُ إِلَى نِصْفِ النَّهَارِ عَلَى قِيرَاطٍ قِيرَاطٍ ثُمَّ قَالَ: مَنْ يَعْمَلُ لِي مِنْ نِصْفِ النَّهَارِ إِلَى صَلَاةِ الْعَصْرِ عَلَى قِيرَاطٍ قِيرَاطٍ فَعَمِلَتِ النَّصَارَى مِنْ نِصْفِ النَّهَارِ إِلَى صَلَاةِ الْعَصْرِ عَلَى قِيرَاطٍ قِيرَاطٍ. ثُمَّ قَالَ: مَنْ يَعْمَلُ لِي مِنْ صَلَاةِ الْعَصْرِ إِلَى مَغْرِبِ الشَّمْسِ عَلَى قِيرَاطَيْنِ قِيرَاطَيْنِ؟ أَلَا فَأَنْتُمُ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ مِنْ صَلَاةِ الْعَصْرِ إِلَى مَغْرِبِ الشَّمْسِ أَلَا لَكُمُ الْأَجْرُ مَرَّتَيْنِ فَغَضِبَتِ الْيَهُودُ وَالنَّصَارَى فَقَالُوا: نَحْنُ أَكْثَرُ عَمَلًا وَأَقَلُّ عَطَاءً قَالَ الله تَعَالَى: هَل ظَلَمْتُكُمْ مِنْ حَقِّكُمْ شَيْئًا؟ قَالُوا: لَا. قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: فَإِنَّهُ فَضْلِي أُعْطِيهِ مَنْ شِئْتُ ". رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

6283. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा रसूल अल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हारा ज़माने पिछली उम्मतो के मुकाबले में ऐसा है जैसे नमाज़ ए असर से गुरूब ए आफ़ताब तक का वक़्त है, और तुम्हारी मिसाल और यहूद व नसारा की मिसाल ऐसे है, जैसे किसी शख़्स ने कुछ मज़दूर काम पर रखे और उस ने कहा: आधे दिन तक एक एक किरात के बदले मेरा काम कौन करेगा? एक एक किरात के बदले में यहूद ने आधे दिन तक काम किया, फिर उस ने कहा: कौन है जो एक एक किरात पर मेरे लिए आधे दिन से नमाज़ ए असर तक काम करेगा? नसारा ने आधे दिन से लेकर नमाज़ ए असर तक एक एक किरात पर काम किया, फिर उस ने कहा: नमाज़ ए असर से गुरूब ए आफ़ताब तक दो दो किरात पर मेरे लिए कौन काम करेगा? सुन लो! वह तुम हो जो नमाज़ ए असर से गुरूब ए आफ़ताब तक काम करोगे, सुन लो! हमारे लिए दुगना अज़्र है, (इस पर) यहूद व नसारा नाराज़ हो गए तो उन्होंने कहा: हम काम ज़्यादा करे और अज्र मज़दूरी कम पाए, अल्लाह तआला ने फ़रमाया: क्या मैंने तुम्हारे हक़ में कोई कमी की है? उन्होंने अर्ज़ किया, नहीं, अल्लाह तआला ने फ़रमाया: यह मेरा फज़ल व मेहरबानी है में उसे जिसे चाहूँगा अता करूँगा”| (बुखारी)

رواه البخارى (3459)

٦٢٨٤ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ مِنْ أَشَدِّ أمتِي لي حُبًّا نَاسا يَكُونُونَ بَعْدِي يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ رَآنِي بِأَهْلِهِ وَمَاله» . رَوَاهُ مُسلم

6284. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "मेरी उम्मत में से मुझ से सबसे ज़्यादा मुहब्बत करने वाले वह लोग हैं जो मेरे बाद होंगे, उनमें से हर एक यह ख्वाहिश रखेगा के काश मेरे अहल व अयाल और मेरे सारे माल के बदले में वह मुझे देख ले"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (12 / 2832)، (7145)

٦٢٨٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن مُعَاوِيَة قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَا يَزَالُ مِنْ أُمَّتِي أُمَّةٌ قَائِمَةٌ بِأَمْرِ اللَّهِ لَا يَضُرُّهُمْ مَنْ خَذَلَهُمْ وَلَا مَنْ خَالَفَهُمْ حَتَّى يَأْتِيَ أَمْرُ اللَّهِ وَهُمْ عَلَى ذَلِكَ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ»» وَذُكِرَ حَدِيثُ أَنَسٍ «إِنَّ مِنْ عِبَادِ الله» فِي «كتاب الْقصاص»

6285. मुआविया रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ को फरमाते हुए सुना: "मेरी उम्मत में से एक जमाअत अल्लाह के दीन पर काइम रहेगी, ना उन्हें बेयारो मददगार छोड़ने वाला उन्हें नुकसान पहुंचा सकेगा न उनकी मुखालिफत करने वाला, हत्ता कि अल्लाह का अम्र (मौत का वक़्त) आ जाएगा और वह इसी हालत पर होंगे"| और अनस (र) से मरवी हदीस ((إِنَّ مِنْ عِبَادِ اللَّهِ (बेशक अल्लाह के कुछ बन्दे))) किताबुल किसास में ज़िक्र की गई है. (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3641) و مسلم (174 / 1037)، (4955) و حدیث انس :'' ان من عباد الله '' تقدم (3460)

بَاب ثَوَاب هَذِه الْأمة • इस उम्मत के सवाब का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٦٢٨٦ - (صَحِيح لطرقه) عَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَثَلُ أُمَّتِي مَثَلُ الْمَطَرِ لَا يُدْرَى أَوَّلُهُ خَيْرٌ أَمْ آخِرُهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

6286. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "मेरी उम्मत की मिसाल बारिश की तरह है, मालुम नहीं उस के अव्वल में खैर है या उस के आख़िर में खैर है"| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (2869 وقال : حسن غریب)

इस उम्मत के सवाब का बयान • بَاب ثَوَاب هَذِه الْأمة

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٦٢٨٧ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ جَعْفَرٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَبْشِرُوا إِنَّمَا مَثَلُ أُمَّتِي مَثَلُ الْغَيْثِ لَا يُدْرَى آخِرُهُ خَيْرٌ أَمْ أَوَّلُهُ؟ أَوْ كَحَدِيقَةٍ أُطْعِمَ مِنْهَا فَوْجٌ عَامًا لَعَلَّ آخِرَهَا فَوْجًا أَنْ يكون أعرَضها عرضا وَأَعْمَقَهَا عُمْقًا وَأَحْسَنَهَا حُسْنًا كَيْفَ تَهْلِكُ أُمَّةٌ أَنَا أَوَّلُهَا وَالْمَهْدِيُّ وَسَطُهَا وَالْمَسِيحُ آخِرُهَا وَلَكِنْ بَين ذَلِك فَيْجٌ أَعْوَجَ لَيْسُوا وَلَا أَنا مِنْهُم» رَوَاهُ رزين

6287. जाफर अपने वालिद से और अपने दादा से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “खुश हो जाओ, खुश हो जाओ, मेरी उम्मत की मिसाल बारिश की तरह है, मालुम नहीं उस के आख़िर में खैर है या उस के अव्वल में खैर है, या एक बाग़ की तरह है, उस में से एक साल एक फ़ौज को खुराक दी गई, फिर एक साल उस में से एक और फ़ौज को खुराक दी गई, शायद के आखिरी फ़ौज पहनाई के एतबार से ज़्यादा वसीअ और गहराई के लिहाज़ से ज़्यादा गहरी हो और खूबसूरती के एतबार से ज़्यादा हसीन हो, वह उम्मत कैसे हलाक होगी जिसके शुरू में मैं हूँ, महदी उस के बिच में है, और मसीह अलैहिस्सलाम उस के आख़िर में है, लेकिन इस दौरान एक गिरोह कजरो और टेढ़ा होगा ना वह मुझ से है न में उन से हूँ”| (मझे नहीं मिली रवाह रजिन.)

لم اجده ، رواه رزين (لم اجده) و انظر الحديث المقدم (3340) * و للحديث شاهد منكر فى تاريخ دمشق (50 / 365 ، 5 / 380) سنده مظلم (انظر الضعيفة للالبانى : 2349)

٦٢٨٨ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَيُّ الْخَلْقِ أَعْجَبُ إِلَيْكُمْ إِيمَانًا؟» قَالُوا: فالنبيون»» قَالَ: «ومالهم لَا يُؤْمِنُونَ وَالْوَحْيُ يَنْزِلُ عَلَيْهِمْ؟» قَالُوا: فَنَحْنُ. قَالَ: «ومالكم لَا تُؤْمِنُونَ وَأَنَا بَيْنَ أَظْهُرِكُمْ؟» قَالَ: فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِن أَعْجَبَ الْخَلْقِ إِلَيَّ إِيمَانًا لَقَوْمٌ يَكُونُونَ مِنْ بَعْدِي يَجِدُونَ صُحُفًا فِيهَا كِتَابٌ يُؤْمِنُونَ بِمَا فِيهَا»

6288. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हारे नज़दीक किस मखलूक का ईमान ज़्यादा अच्छा है?” उन्होंने अर्ज़ किया, फरिश्तो का, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उन्हें क्या है के वह ईमान न लाई जबकि वह अपने रब के पास है”, उन्होंने अर्ज़ किया, फिर अंबिया (अस), आप ﷺ ने फ़रमाया: “उन्हें क्या है के वह ईमान न ले हालाँकि इन पर वही नाज़िल होती है”, उन्होंने अर्ज़ किया, फिर हम, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हें क्या है की ईमान न लाओ जबकि मैं तुम्हारे दरमियान मौजूद हूँ” रावी बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: मेरे नज़दीक उन लोगों का ईमान सबसे अच्छा है जो मेरे बाद होंगे, वह सहिफे पाएंगे उनमें एक किताब होगी वह उसकी हर चीज़ पर ईमान लाएँगे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى دلائل النبوة (6 / 548) * و المغيرة بن قيس : ذكره ابن حبان فى الثقات (9 / 168) وقال ابو حاتم الرازى :’’

منكر الحديث ’’ (الجرح و التعديل 8 / 228) و الجرح فيه مقدم

٦٢٨٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْعَلَاءِ الْحَضْرَمِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي مَنْ سَمِعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّهُ سَيَكُونُ فِي آخِرِ هَذِهِ الْأُمَّةِ قَوْمٌ لَهُمْ مِثْلُ أَجْرِ أَوَّلِهِمْ يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقَاتِلُونَ أَهْلَ الْفِتَنِ»»» رَوَاهُمَا الْبَيْهَقِيّ فِي دَلَائِل النُّبُوَّة

6289. अब्दुल रहमान बिन अल अलाइ ह्ज़्रमी बयान करते हैं, मुझे इस शख़्स ने हदीस बयान की जिस ने नबी ﷺ को फरमाते हुए सुना: “इस उम्मत के आख़िर में कुछ ऐसे लोग होंगे जिन के लिए उन के पहले लोगों का सा अज़र होगा,, वह नेकी का हुक्म करेंगे, बुराई से मना करेंगे और वह फितने वाले से किताल करेंगे”, इमाम बयहकी ने इन दोनों हदीसो को दलाइलुल नबुवा में रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى دلائل النبوة (6 / 513) * السند حسن الى عبد الرحمن بن العلاء الحضرمى و ذكره ابن حبان فى الثقات (5 / 100) وحده فهو مجهول الحال

٦٢٩٠ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي أَمَامَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «طُوبَى لِمَنْ رَآنِي [وَآمَنَ بِي] وَطُوبَى لِمَنْ لَمْ يَرَنِي وَآمَنَ بِي» . رَوَاهُ أَحْمد

6290. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “इस शख़्स के लिए बशारत है जिस ने (हालत ईमान में) मुझे देखा और इस शख़्स के लिए सात मर्तबा बशारत है जिस ने मुझे देखा नहीं, लेकिन वह मुझ पर ईमान लाया”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، احمد (5 / 248 ح 22490 ، 5 / 257) * فيه قتادة مدلس و عنعن عن ايمن بن مالك الاشعرى وله طريق آخر ضعيف عند ابن حبان (الموارد : 2303) و حديث ابن حبان (الموارد : 2302) بلفظ :’’ طوبى لمن رانى و آمن بى و طوبى ثم طوبى لمن آمن بى ولم يرنى ‘‘ و سنده حسن فهو يغنى عنه

٦٢٩١ - (صَحِيح) وَعَن أبي مُحَيْرِيزٍ قَالَ: قُلْتُ لِأَبِي جُمُعَةَ رَجُلٌ مِنَ الصَّحَابَةِ: حَدِّثْنَا حَدِيثًا سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. قَالَ: نَعَمْ أُحَدِّثُكُمْ حَدِيثًا جَيِّدًا تَغَدَّيْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَعَنَا أَبُو عُبَيْدَةَ بْنُ الْجَرَّاحِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ. أَحَدٌ خَيْرٌ مِنَّا؟ أسلمْنا وَجَاهَدْنَا مَعَكَ. قَالَ: «نَعَمْ قَوْمٌ يَكُونُونَ مِنْ بَعْدِكُمْ يُؤْمِنُونَ بِي وَلَمْ يَرَوْنِي» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالدَّارِمِيُّ وَرَوَى رَزِينٌ عَنْ أَبِي عُبَيْدَةَ مِنْ قَوْلِهِ: قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ. أَحَدٌ خَيْرٌ مِنَّا إِلى آخِره

6291. इब्ने मुहयरिज़ रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने सहाबा में से एक आदमी अबू जुमअ से कहा: हमें एक ऐसी हदीस बयान करे जो आप ने रसूल अल्लाह ﷺ से सुनी हो, उन्होंने कहा: ठीक है, मैं तुम्हें एक अच्छी सी हदीस सुनाता हूँ, हमने रसूल अल्लाह ﷺ के साथ खाना खाया, अबू उबैदाह बिन जराह रदियल्लाहु अन्हु भी हमारे साथ थे, उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या हम में से भी कोई बेहतर है? हमने इस्लाम कबूल किया

और आप के साथ मिल कर जिहाद किया, आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ, वह लोग जो तुम्हारे बाद आएँगे और वह मुझ पर ईमान लाएँगे हालाँकि उन्होंने मुझे देखा नहीं”| और रजिन ने अबू उबैदाह रदियल्लाहु अन्हु से उन अल्फाज़ से रिवायत किया है उन्होंने कहा: अल्लाह के रसूल! क्या कोई हम से बेहतर है? आख़िर हदीस तक| (हसन)

حسن ، رواه احمد (4 / 106 ح 17102) و الدارمی (2 / 308 ح 2747) و رزین (لم اجده) [و صححه الحاکم (4 / 85) و وافقه الذھبی و سنده حسن]

٦٢٩٢ - (صَحِيح) وَعَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ قُرَّةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا فَسَدَ أَهْلُ الشَّامِ فَلَا خَيْرَ فِيكُمْ وَلَا يَزَالُ طَائِفَةٌ مِنْ أُمَّتِي مَنْصُورِينَ لَا يَضُرُّهُمْ مَنْ خَذَلَهُمْ حَتَّى تَقُومَ السَّاعَةُ» قَالَ ابْنُ الْمَدِينِيِّ: هُمْ أَصْحَابُ الْحَدِيثِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ

6292. मुआविया बिन कुर्रत अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “जब अहले शाम ख़राब हो जाए तो फिर तुम में (वहां रहने या इस तरफ जाने में) कोई बेहतरी नहीं होगी, मेरी उम्मत का एक गिरोह हमेशा ग़ालिब रहेगा, उन्हें बे यारो मददगार छोड़ देने वाला उनका कोई नुकसान नहीं करेगा हत्ता कि कियामत काइम हो जाए”, इब्ने अल मदिनी ने फ़रमाया: वह अस्हाबुल हदीस है तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है| (सहीह)

اسنادہ صحیح ، رواہ الترمذی (2192)

٦٢٩٣ - (صَحِيح لطرقه) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ اللَّهَ تَجَاوَزَ عَنْ أُمَّتِي الْخَطَأَ وَالنِّسْيَانَ وَمَا اسْتُكْرِهُوا عَلَيْهِ» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه وَالْبَيْهَقِيّ

6293. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक अल्लाह ने मेरी उम्मत से भूलचुक और ऐसे उमूर (यानी गुनाहों) से जिन पर उन्हें मजबूर किया जाए दरगुज़र फ़रमाया है”| (सहीह)

صحیح ، رواہ ابن ماجہ (2043) و البیھقی فی السنن الکبری (7 / 356)

٦٢٩٤ - (حسن) وَعَنْ بَهْزِ بْنِ حَكِيمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ فِي قَوْلِهِ تَعَالَى: [كُنْتُمْ خير أُمَّةٍ أُخرجت للنَّاس] قَالَ: «أَنْتُمْ تُتِمُّونَ سَبْعِينَ أُمَّةً أَنْتُمْ خَيْرُهَا وَأَكْرَمُهَا عَلَى اللَّهِ تَعَالَى» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ

6294. बहज़ बिन हकिम रहिमहुल्लाह अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं की उन्होंने

रसूल अल्लाह ﷺ को अल्लाह तआला के फरमान (كُنْتُمْ خير أُمَّةٍ أَخرجت للنَّاس) “ तुम बेहतरीन उम्मत हो लोगों के लिए निकाले गए हो”, के बारे में फरमाते हुए सुना: “तुम सत्तर उम्मतो का हुसूल हो तुम अल्लाह तआला के यहाँ उन सबसे बेहतर और मुअज्ज़ज़ हो”| तिरमिज़ी, इब्ने माजा दारमी और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3001) و ابن ماجه (4288) و الدارمی (2 / 313 ح 2763)

